

॥ श्रीरामायणम् ॥

॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥

युद्धकाण्डम्

प्रथमखण्डः ॥



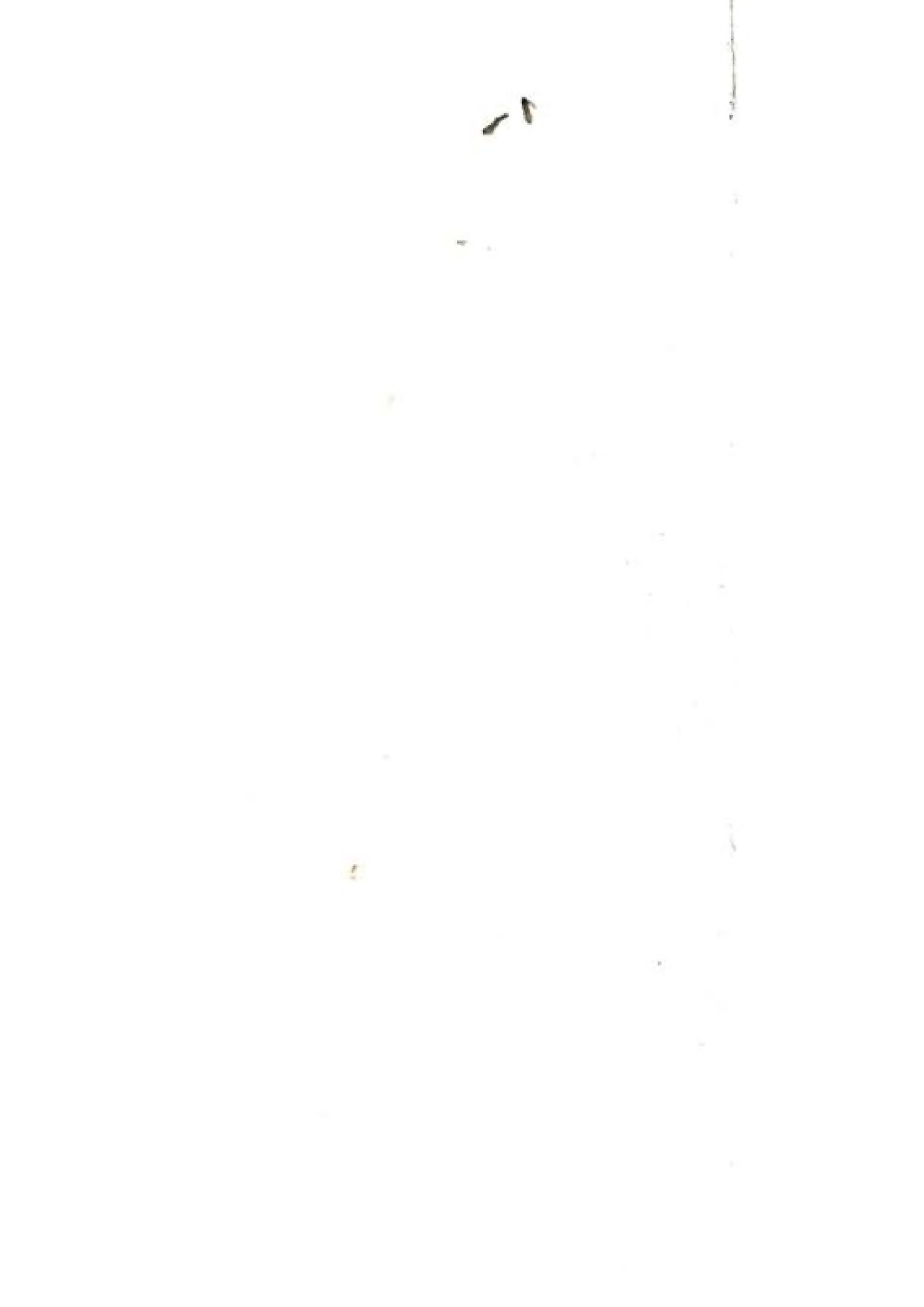
Text in Sanskrit with word for word
Tamil Translation in Prose Order



R. SUBRAHMANYA VADHYAR & SONS.

BOOK-SELLERS & PUBLISHERS.

KALPATHI—PALAYUKKOTTAI.



॥ श्रीरामजयम् ॥
॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥
युद्धकाण्डम्
प्रथमखण्डः ॥

धर्मालयसंस्करणम् ।

The Dharmalaya Edition.

Text in Sanskrit with word for word
Tamil Translation in Prose Order.

By
The Late Rao Sahib P. S. KRISHNASWAMI IYER,
Dharmalaya, Mylapore.

Published with the aid of
Sri. M. N. RAMASWAMI IYER,
Banker, Palghat.

BY
R. SUBRAHMANYA VADHYAR & SONS,
BOOK-SELLERS & PUBLISHERS,
KALPATHI—PALGHAT

PRINTED AT
THE SCHOLAR PRESS,
PALGHAT

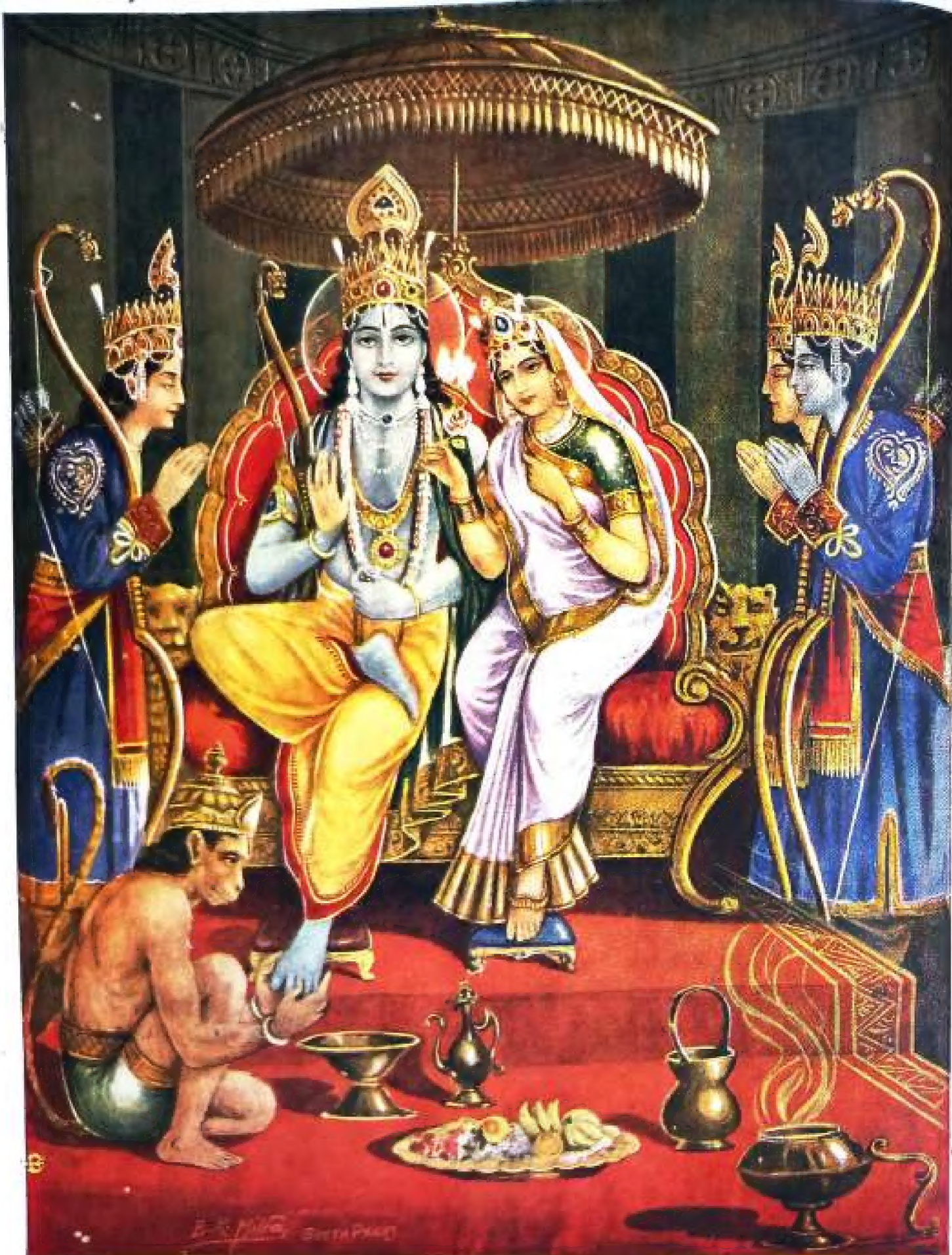
॥ श्रीः ॥

॥ विषयानुक्रमिका ॥

| सर्गः | विषयः | श्लोकसङ्ख्या | |
|-------|------------------------------------|--------------------------|---|
| 1- | हनुमत्प्रशंसा ... | 19 | |
| 1. | सुग्रीवेण श्रीरामप्रोत्साहनम् ... | 26 | |
| 3 | लङ्काया दुर्गादिकथनम् ... | 35 | |
| 4. | ससैन्यस्य समुद्रतीरगमनम् ... | 125 | |
| 5- | श्रीरामविलापः ... | 23 | |
| 6. | रावणमन्त्रालोचनम् ... | 20 | |
| 7. | राक्षसोक्तिः ... | 26 | |
| 8. | प्रहस्तादिवचनम् ... | 24 | |
| 9. | विभीषणोक्तिः ... | 24 | |
| 10. | विभीषणहितोपदेशः ... | 30 | |
| 11. | पुना रावणमन्त्रालोचनम् ... | 32 | |
| 12. | कुम्भकर्णप्रतिज्ञा ... | 42 | |
| 13. | रावणमहापार्श्वसंवादः ... | 21 | |
| 14. | विभीषणेन सीताप्रत्यर्पणकथनम् ... | 22 | |
| 15. | इन्द्रजिह्विभीषणविवादः ... | 14 | |
| 16. | रावणेन विभीषणनिन्दनम् ... | 27 | |
| 17. | विभीषणशरणागतिः ... | 69 | |
| 18. | विभीषणसंग्रहः ... | 40 | 1 |
| 19. | दर्भशयनम् ... | 44 | |
| 20. | शुकसन्देशः ... | 36 | |
| 21. | समुद्रसंक्षोभः (श्रीरामक्रोधः) ... | 37 | 1 |
| 22. | सेतुबन्धः समुद्रतरणं च ... | 91 | |
| 23. | लङ्काप्रस्थानम् ... | 16 | |
| 24. | रावणःत्मश्लाघा ... | 45 | 1 |
| | | विशेषः गीताः श्लोकाः 889 | |
| 25. | शुकसारणवचनम् ... | 35 | 1 |
| 26. | वानरसेनादर्शनम् ... | 53 | 1 |
| 27. | वानरपराक्रमादिकथनम् ... | 49 | |
| 28. | वानरसङ्घाकथनम् ... | 45 | |
| 29. | शार्दूलादिचारप्रेषणम् ... | 33 | |
| 30. | वानरनामनिर्देशः ... | 36 | |
| 31. | सीतामोहनम् ... | 49 | |
| 32. | सीताविलापः ... | 44 | |
| 33. | सीतासमाश्वासनम् ... | 41 | |
| 34. | सरमया रावणाशयकथनम् ... | 29 | |

| सर्गः | विषयः | श्लोकसङ्ख्या | पृष्ठ |
|-------|--------------------------------------|---------------------------------|-------|
| 35. | माल्यवदुपदेशः | 43 | 27 |
| 36. | लङ्कागुप्तिः | 23 | 28 |
| 37. | श्रीरामेण सेनाव्यूहनम् | 41 | 28 |
| 38. | लङ्कादर्शनार्थं सुवेलारोहणम् | 21 | 29 |
| 39. | लङ्कादर्शनम् | 31 | 30 |
| 40. | सुग्रीवरावणयोर्द्वन्द्वयुद्धम् | 34 | 30 |
| 41. | अङ्गददौत्यम् | 104 | 31 |
| 42. | युद्धारंभः | 48 | 33 |
| 43. | द्वन्द्वयुद्धवर्णनम् | 48 | 34 |
| 44. | रात्रियुद्धम् | 46 | 35 |
| 45. | नागपाशबन्धः | 29 | 36 |
| 46. | सुग्रीवाद्यनुशोचनम् | 51 | 36 |
| 47. | सीतायै वीरशयनस्यरामलक्ष्मणप्रदर्शनम् | 26 | 37 |
| 48. | सीताप्रलापः | 41 | 38 |
| 49. | श्रीरामप्रबोधः | 35 | 39 |
| 50. | नागपाशविमोचनम् | 66 | 39 |
| | | एकविंशोऽङ्कः गीताः श्लोकाः 1101 | |
| 51. | धूम्राक्षनिर्गमः | 40 | 40 |
| 52. | धूम्राक्षवधः | 41 | 41 |
| 53. | वज्रदंष्ट्रयुद्धम् | 35 | 42 |
| 54. | वज्रदंष्ट्रवधः | 40 | 43 |
| 55. | अकंपनयुद्धम् | 33 | 43 |
| 56. | अकम्पनवधः | 39 | 44 |
| 57. | प्रहस्तयुद्धम् | 48 | 45 |
| 58. | प्रहस्तवधः | 67 | 46 |
| 59. | रावणमकुटभङ्गः | 157 | 47 |
| 60. | कुम्भकर्णप्रबोधनम् | 106 | 51 |
| 61. | श्रीरामाय कुम्भकर्णवर्णनम् | 43 | 53 |
| 62. | कुम्भकर्णसान्त्वनम् | 28 | 54 |
| 63. | कुम्भकर्णोपदेशः | 59 | 54 |
| 64. | महोदरेण कुम्भकर्णमर्त्सनम् | 36 | 56 |
| 65. | युद्धाय कुम्भकर्णनिर्याणम् | 60 | 56 |
| 66. | कुम्भकर्णयुद्धम् | 36 | 58 |
| 67. | कुम्भकर्णवधः | 187 | 58 |
| 68. | रावणप्रलापः | 24 | 62 |
| 69. | नरान्तकवधः | 104 | 63 |
| 70. | देवान्तकादिवधः | 68 | 65 |





श्रीराम-दरवार

॥ अथ स्मार्तानां श्रीरामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना

हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।

भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना

सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ ३ ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥

यः पिवन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्पम् ॥ ६ ॥

गोष्पदीकृतवारारिं मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ७ ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् । कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ ८ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ९ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।

पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १० ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ११ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १२ ॥

यः कर्णाञ्जलिसंपुटैरहरहः सम्यक् पिवत्यादरात्

वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु ।

जन्मव्याधिजराविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवं

संसारं स विहाय गच्छति पुमान्विष्णोः पदं शाश्वतम् ॥ १३ ॥

तदुपगतसमाससन्धियोगं सममधुरोपनतार्थवाक्यवद्धम् ।

रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ १४ ॥

वाल्मीकिगिरिसंभूता रामसागरगाभिनी । पुनातु भुवनं पुण्या रामायणपहानदी ॥ १५ ॥

श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलम् । काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम् ॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १७ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हेमे महामण्डपे

मध्येपुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं

व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्

॥ १८ ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात्सुमित्रासुतः

शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च ।

सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्

मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्

॥ १९ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।

नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः

॥ २० ॥



॥ पारायणसमापनसमये अनुसन्धेयश्लोकक्रमः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः ॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।

अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ ३ ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥ ४ ॥

शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा । स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते । वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ७ ॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत्पुरा । अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ८ ॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत् । अदितिर्मङ्गलं प्रादात्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥

श्रीन्विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः । यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ १० ॥

ऋतवः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते । मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ १२ ॥



॥ श्रीवैष्णवानां श्रीरामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
 वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
 यः पितृन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनि वन्दे प्राचेतसमकल्पम् ॥ ३ ॥
 गोष्पदीकृतवाराशि मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ४ ॥
 अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् । कर्पाशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ ५ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ ६ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ७ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयत्रियहम् ।

पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ ८ ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ९ ॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासाक्षाद्रामायणात्मना ॥ १० ॥

तदुपगतसमाससन्धियोगं सममधुरोपनतार्थवाक्यबद्धम् ।

रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ ११ ॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।

आजानुवाहुमरविन्दद्रुणायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥ १२ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले ह्येमे महापण्डये

मध्येपुण्यकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।

अये वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं

व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ १३ ॥

॥ पारायणसमापनक्रमः ॥

एवमेतत्पुरावृत्तमाख्याने भद्रमस्तु वः । प्रव्याहरत विस्मय्य बलं विष्णोः प्रवर्धताम् ॥ १ ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः । येषामिन्द्रावरुणायामो हृदये सुप्रतिष्ठितः ॥ २ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः ॥

कावेरी वर्धतां काले काले वर्षतु वासवः । श्रीरङ्गनाथो जयतु श्रीरङ्गर्थाश्च वर्धताम् ॥ ४ ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ ५ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महर्नायगुणाब्धये । चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ ६ ॥
 वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये । पुंसां मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम् ॥ ७ ॥
 विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः । भाष्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम् ॥
 पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया । नन्दिताखिललोकाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥
 त्यक्तसाकेतवासाय चित्रकूटविहारिणे । सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदाराय मङ्गलम् ॥ १० ॥
 सौमित्रिणा च जानक्या चापवाणासिधारिणे । संसेव्याय सदा भक्त्या स्वामिने व्रम मङ्गलम् ॥
 दण्डकारण्यवासाय खण्डितामरशत्रवे । गृध्रराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम् ॥
 सादरं शबरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे । सौलभ्यपरिपूर्णाय सच्चोदित्ताय मङ्गलम् ॥
 हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने । बालिभ्रमधनायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ॥ १४ ॥
 श्रीमते रघुवीराय सेतुलङ्घितसिन्धवे । जितराक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम् ॥ १५ ॥
 आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया । राजाधिराजराजाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥
 मङ्गलाशासनपरमैदाचार्यपुरोगमैः । सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥ १७ ॥



॥ अथ माध्वानां रामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

शुक्रांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥
 लक्ष्मीनारायणं वन्दे तद्भक्तप्रवरो हि यः । श्रीमदानन्दतीर्थारव्यो गुरुस्तं च नमाम्यहम् ॥
 वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा । आदावन्ते च मध्ये च विष्णुः सर्वत्र गीयते ॥
 सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वसिद्धिकरं परम् । सर्वजीवप्रणेतारं वन्दे विजयदं हरिम् ॥ ४ ॥
 सर्वाभीष्टप्रदं रामं सर्वारिष्टनिवारकम् । जानकीजानिमनिशं वन्दे महुरुवन्दितम् ॥ ५ ॥
 अभ्रमं भङ्गनहितमजडं विमलं सदा । आनन्दतीर्थमतुलं भजे तापत्रयापहम् ॥ ६ ॥
 भवति यदनुभावादेडमूकोऽपि वाग्मी जडमतिरपि जन्तुर्जायते प्राज्ञपौलिः ।
 सकलवचनचेतोदेवता भारती सा मम वचसि विधत्तां सन्निधिं मानसे च ॥ ७ ॥
 मिथ्यासिद्धान्तदुर्ध्वान्तविध्वंसनविचक्षणः । जयतीर्थारव्यतरणिभासतां नो हृदम्बरे ॥ ८ ॥
 चित्रैः पदैश्च गर्भारैर्वाक्यैर्मानैरखण्डितैः । गुरुभावं व्यञ्जयन्ती भाति श्रीजयतीर्थवाक् ॥
 कूजन्ते राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरूढ कविताशाखां वन्दे बाल्मीकिकोकिलम् ॥
 बाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
 यः पिवन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्पमम् ॥ १२ ॥
 गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहाबालारजं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ १३ ॥
 अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् । कर्पीशमसहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ १४ ॥

- मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
 वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १५ ॥
- उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
 आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ १६ ॥
- आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
 पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १७ ॥
- यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
 बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ १८ ॥
- वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १९ ॥
- आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
 तदुपगतसमाससन्धियोगं सममधुरोपनतार्थवाक्यवद्धम् ।
 रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वयं निशापयध्वम् ॥ २१ ॥
- वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले ह्येमे महामण्डपे
 मध्येपुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ २२ ॥
- वन्दे वन्द्यं विश्वभवमहेन्द्रादिवृन्दारकेन्द्रैः
 व्यक्तं व्याप्तं स्वगुणगणतो देशतः कालतश्च ।
 धृतावद्यं सुखचितिमयैर्मङ्गलैर्युक्तमङ्गैः
 सानाथ्यं नो विदधदधिकं ब्रह्म नारायणाख्यम् ॥ २३ ॥
- भूपारजं भुवनवलयस्याखिलाश्चर्यरत्नं
 लीलारत्नं जलधिदुहितुर्देवतामौलिरत्नम् ।
 चिन्तारत्नं जगति भजतां सत्सरोजधुरत्नं
 कौसल्याया लसतु मम हृन्मण्डले पुत्ररत्नम् ॥ २४ ॥
- महाव्याकरणाम्भोधिमन्थमानसमन्दरम् । कवयन्तं रामकीर्त्या हनुमन्तमुपास्महे ॥ २५ ॥
- मुख्यमाणाय भीमाय नमो यस्य भुजान्तरम् । नानावीरसुवर्णानां निकषाश्मायितं वर्षो ॥
 स्वान्तस्थानन्तशय्याय पूर्णज्ञानमहार्णसे । उत्तुङ्गवाक्तरङ्गाय मध्वदुग्धाब्धये नमः ॥ २७ ॥
- वाल्मीकेर्गोः पुनीयात्नो महीधरपदाश्रया । यदुग्धमुपजीवन्ति कवयस्तर्णका इव ॥ २८ ॥
- सूक्तिरत्नाकरे रम्ये मूलरामायणार्णवे । विहरन्तो महीयांसः प्रीयन्तां गुरवो मम ॥ २९ ॥
- हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो वदेत् । तस्य निःसरते वाणी जह्नुकन्याप्रवाहवत् ॥ ३० ॥



पारायणसमापनक्रमः ॥

स्वास्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः । येषामिन्द्रावरश्यामो हृदये सुप्रतिष्ठितः ॥ ३ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये । चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ ४ ॥

इत्यादिश्लोकाः श्रीवैष्णवपद्धतिवदनुसन्धेयाः ॥



॥ श्रीमद्रामायणपूजाक्रमः ॥

शुक्रांबरधरं+शान्तये । ॐ भूः+भूर्भुवः सुवरो । ममोपात्त+प्रीत्यर्थं सीता लक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थं श्रीरामचन्द्रप्रसादेन सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये ; यावच्छक्ति पूजां पारायणं च करिष्ये ; तदङ्गं कलश-शङ्खात्मपीठपूजां च करिष्ये ॥

अस्मिन् पुस्तके सीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्रं ध्यायामि, आवा-हयामि, रत्नसिंहासनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्प-यामि, आचमनीयं समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि, वस्त्रं समर्पयामि, यज्ञोपवीतोत्तरीयाभरणार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । गन्धान् धारयामि, अक्षतान् समर्पयामि, पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ अच्युताय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ मधुसूदनाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः
अनन्ताय नमः माधवाय नमः त्रिविक्रमाय नमः दामोदराय नमः
गोविन्दाय नमः गोविन्दाय नमः वामनाय नमः पद्मनाभाय नमः
केशवाय नमः विष्णवे नमः श्रीधराय नमः श्रीरामचन्द्राय नमः

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

धूपमाघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, कदलीफलं निवेदयामि । ताम्बूलं समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि । छत्रचामरादि समस्तोपचारान् समर्पयामि । प्रदक्षिणनम-स्कारान् समर्पयामि ॥



ॐ

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीसीतालक्ष्मणभरतलज्जुहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रस्वामिने नमः ॥

॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥

युद्धकाण्डम्

प्रथमखण्डः ॥



[पुरा कुशलयाभ्यां श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वाविंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
विंशतितमेऽङ्के युद्धकाण्डे प्रथमसर्गमारभ्य चतुर्विंशतिसर्गपर्यन्तं
(14676—15564 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाश्च 889]

ஆகியில் குசன் ஸவன் இயர்கனரல் ஸ்ரீராமஸக்சிதியில் அக்ஷமேதயாக்சாக்ஷியில்
முப்பத்திரண்டு திகாக்களில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
இருபதாவது தினத்தில் யுத்தகாண்டத்தில் 1-வதுஸர்க்கம் முதல் 24 வது
ஸர்க்கம் வரை (14676—15564) காணம் செய்யப்பட்டது.
அன்று காணம் செய்யப்பட்ட சுலோகசங்கியை 889]

प्रथमः सर्गः—முதல் ஸர்க்கம் ॥ १ ॥

हनुमत्प्रशंसा—ஹனுமாரைப் புகழ்வது.

श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं यथावदभिभाषितम् । रामः प्रीतिसमायुक्तो वाक्यमुत्तरपब्रवीत् ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்,
ஹனும: ஹனுமாரின்
யதாவத் உள்ளபடி
அभिभाषितं சொல்லப்பட்ட
वाक्यं பொழியை
श्रुत्वा கேட்டு,

प्रीतिसमायुक्तः மனஸந் துஷ்டடி யுடன்
उत्तर वाक्यं கூடியவராய்
अब्रवीत् பதில்சொல்லை
श्रुत्वा பிரிவருமாறு
मोழிந்தார்:

கृतं हनुमता कार्यं सुपहृषि दुष्करम् । पनसाऽपि यदन्येन न शक्यं धरणीतले ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|------------------|---------|----------------|
| பரணிகலே | "உலகத்திலே | दुष्करं | அரும் |
| अन्येन | மற்றொருவராலும் | सुमहत् | பிகப்பெரிய |
| ममता अपि | மனத்தினாலும் கூட | कार्यं | காரியமானது |
| पत् | எது | भुवि | உலகில் |
| शक्यं न | அரசத்திலேயே அந்த | हनुमता | ஹனுமாரால் |
| | | कृतम् | செய்யப்பட்டது. |

न हि तं परिपश्यामि यस्तरेत महार्णवम् । अन्यत्र गरुडादायोरन्यत्र च हनुमतः ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|--------------|-----------------|
| गरुडात् | "கருடபகவானையின் | यः | எவன் |
| वासोः | வாசுபகவானையின் | महार्णवं हि | பெரும்கடலிலேயே |
| अन्यत्र | தலிற் து | सरेत | தரண்டுவானே |
| हनुमतः च | ஹனுமனாரையும் | तं | அவனை |
| अन्यत्र | தலிற் து வேறு | परिपश्यामि न | நான் கண்டிலேன். |

देवदानवयक्षाणां गन्धर्वोऽगरक्षसाम् । अपभृष्ट्यां पुरीं लङ्कां रावणेन सुरक्षिताम् ॥

प्रविष्टः सख्यभाशित्य जीवन् को नाम निष्कमेत् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------------|--|---------------|-----------------------------|
| देवदानवयक्षाणां | { "தேவர்கள், அசுரர்கள், யக்ஷர்கள் இவர்களுக்கும் | सुरक्षितां | நன்கு பாதுகாக்கப் பட்டதுமான |
| गन्धर्वोऽगरक्षसां | { கந்தர்வர்கள், உரகர்கள், அரக்கர்கள் இவர்களுக்கும் | लङ्कां पुरीं | இலங்கைநகரிலுள்ள |
| अपभृष्ट्यां | புகழடியாததும் | कः नाम | எவன் தான் |
| रावणेन | ராவணனால் | सख्यं भाशित्य | மனோவலிமையைக்கொ |
| | | प्रविष्टः | புகுந்துவிட்டு [ண்டு |
| | | जीवन् | உயிருடன் |
| | | निष्कमेत् | திரும்பிவருவான் ? |

को विशेषसुदुराधर्षां राक्षसैश्च सुरक्षिताम् । यो वीर्यबलसंपन्नो न समः स्याद्हनूमतः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|----------------|--------------------|
| राक्षसैः | "அரக்கர்களால். | हनुमतः | ஹனுமாருக்கு |
| सुदुराधर्षी | ஒருவராலும் புகழடியாததாய் | समः | சிகாரான |
| सुरक्षितां | நன்குக் பாதுகாக்கப் | वीर्यबलसंपन्नः | ஆண்மையும் ஆற்றலும் |
| कः | எவன் [பட்டதினுள் | यः च | எவனும் |
| विशेत् | புகுவான் ? | स्यात् न | இல்லை. |

भृत्यकार्यं हनुमता सुधीवस्य कृतं महत् । एवं विधाय स्वबलं सदृशं विक्रमस्य च ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|------------------|
| हनुमता | "ஹனுமாரால் | भृत्यकार्यं | அடிமைசெய்வவேண் |
| विक्रमस्य | மனோவலிமைக்கு | | டிவகாரியம் |
| सदृशं | ஏற்றதாயிருக்கிற | एवं | இப்படியாய் |
| स्वबलं | தனது சக்தியை | महत् | மெச்சும்வண்ணமாய் |
| विधाय च | நாண்பித்துக்கொண்டு | कृतम् | செய்துமுடிக்கப் |
| सुधीवस्य | சுமீர்வனுக்கு | | பட்டது. |

यो हि भृत्यो नियुक्तः सन्भर्त्रा कर्मणि दुष्करे । कुर्यात्तदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तमम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|----------------------|
| ய: | "எந்த ஒரு | अनुरागेण | { (எஜமானனுக்குகுறை |
| भृत्यः | வேலைக்காரன் | कुर्यात् | வரக்கூடாதெனும்) |
| भर्ता | எஜமானனார் | तं हि | பத்தினமயோடு |
| दुष्करे | கஷ்டமான | पुरुषोत्तमं | செய்துமுடிக்கின் |
| कर्मणि | ஒரு காரியத்தில் | आहुः | அவனைத்தான் [ருளை |
| नियुक्तः सन् | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட | | புருஷோத்தமனை |
| | வனாய் | | பெரியோர்கள் சொல் |
| तद् | அதை | | லியிருக்கின்றார்கள். |

नियुक्तो यः परं कार्यं न कुर्यान्नृपतेः प्रियम् । भृत्यो युक्तः समर्थश्च तमाहुर्मध्यमं नरम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|------------|------------------|
| यः | "எவனைனுமொரு | न कुर्यात् | செய்யவில்லையோ |
| युक्तः | அனுபவசாலியும் | तं | அவனை |
| समर्थः च | சாமர்த்தியசாலியு | मध्यमं | நடுத்தரமான |
| | மான | नरं | மானிடனாக |
| भृत्यः | வேலைக்காரன் | आहुः | பெரியோர்கள் சொல் |
| नियुक्तः | ஒருகாரியத்திலேவப் | | லுகின்றார்கள். |
| | பட்டவனாய் | | |
| परं | பெரும் | | |
| कार्यं | காரியத்தை | | |

नियुक्तो नृपतेः कार्यं न कुर्याद्यः समाहितः । भृत्यो युक्तः समर्थश्च तमाहुः पुरुषाधमम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|------------------|
| यः | "எவனைனுமொரு | न कुर्यात् | அப்படியே செய்யா |
| युक्तः | அனுபவசாலியும் | तं | திருக்கின்றானே |
| समर्थः च | சாமர்த்தியசாலியு | पुरुषाधमं | புருஷாதமனை |
| भृत्यः | வேலைக்காரன் [மான | आहुः | பெரியோர்கள் சொல் |
| नियुक्तः | ஒருகாரியத்திலேவப் | | லுகின்றார்கள். |
| | பட்டவனாய் | | |
| समाहितः च | { எதெதை எப்படிச் | | |
| | செய்யவேண்டுமென் | | |
| | று ஆக்கினைபெற்றவ | | |
| | னாகியும் | | |

तन्नियोगे नियुक्तेन कृतं कृत्यं हनूमता । न चात्मा लघुतां नीतः सुग्रीवश्चापि तोषितः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------------|-----------------|
| तन्नियोगे | "அக்காரியத்தில் | आत्मा च | பிரதிக்குணமும் |
| नियुक्तेन | நியமிக்கப்பட்ட | लघुतां | தாழ்வமைய |
| हनूमता | ஹனுமரால் | नीतः न | அடையச்செய்யப் |
| कृत्यं | செய்யவேண்டிய | | படவிலகிய |
| | காரியம் | सुग्रीवः अपि च | சகீவனும் |
| हन् | செய்துமுடிக்கப் | तोषितः | உள்ளக்குளிர்க் |
| | பட்டது. | | செய்யப்பட்டான். |

अहं च रघुवंशश्च लक्ष्मणश्च महाबलः । वेदेह्या दर्शनेनाद्य धर्मतः परिरक्षिताः ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|----------------------|
| अहं च | "நானும் | धर्मतः | தர்மமே பயனென்ற |
| रघुवंशः च | ரகுசுவமும் | दर्शनेन | கண்டுவந்ததினால் [படி |
| महाबलः | மகா பலசாலியாகிய | अद्य | இப்பொழுது |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனும் | परिरक्षिताः | நன்கு பேருதவி |
| वेदेह्याः | ஐதேகியை | | செய்யப்பெற்றோம். |

इदं तु मम दीनस्य मनो भूयः प्रकर्षति । यदिहास्य प्रियाख्यातुर्न कुर्मि सदृशं प्रियम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-----------|--------------------|
| प्रियाख्यातुः | "प्रियमान समास ரத்தைக்கொன்ன | यत् तु | அப்படி யிருப்பதால் |
| अस्य | இவனுக்கு | दीनस्य | வருத்தப்பட்டுக் |
| सदृशं | ஏற்ற | | கொண்டிருக்கிற |
| प्रियं | உதவியை | मम मनः | எனது மனதை |
| इह | இப்பொழுது | भूयः | பின்னும் |
| न कुर्मि | செய்யமுடியா திருக்கிறேன். | इदं | இது |
| | | प्रकर्षति | வாட்டுகின்றது. |

एष सर्वस्वभूतस्तु परिष्वङ्गो हनूमतः । मया कालमिमं प्राप्य दत्तस्तस्य महात्मनः ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------------|--------------------|
| हमं | "இந்த | हनूमतः | ஹனுமானுக்கு |
| कालं | காலத்தை | सर्वस्वभूतः | எல்லாவற்றினும்மேம் |
| प्राप्य | அடைந்து | | பட்டதான |
| मया | என்னால் | एषः | இந்த |
| महात्मनः | மகா தீமாவாகிய | परिष्वङ्गः तु | ஆலிங்கனம்தான் |
| तस्य | அந்த | दत्तः | செய்யப்படுகிறது." |

इत्युत्त्वा प्रीतिहृष्टाङ्गो रामस्तं परिष्वजे । हनूमन्तं महात्मानं कृतकार्यमुपागतम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------------|-------------|------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | कृतकार्यं | (ஆகவேண்டிய)காரியத் |
| इति | மேற்கண்டவாறு | उपागतं | தை செய்தமுடித்து |
| उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு | महात्मानं | திருப்பிவந்துசேர்ந்த |
| प्रीतिहृष्टाङ्गः | பேருதவியால் உள் னம் பூரித்தவராகி | तं हनूमन्तं | மகா தீமாவான |
| | | परिष्वजे | அந்த ஹனுமானை |
| | | | ஆலிங்கனம் செய்தரு ளினார். |

ध्यात्वा पुनस्वाचेदं वचनं रघुसत्तमः । हरीणापीश्वरस्यैव सुग्रीवस्योपशृण्वतः ॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|----------|------------------|
| रघुसत्तमः | ஸ்ரீராகவர் | ध्यात्वा | சிறிது ஆலோசித்து |
| हरीणां | வானரர்களுடைய | पुनः | அதன்மேல் |
| ईश्वरस्य | மன்னானாகிய | इदं | பின்வரும் |
| सुग्रीवस्य | சுகிரீவன் | वचनं | சொல்லை |
| उपशृण्वतः एव | கேட்டுக்கொண்டிருக்க கும்பொழுதே, | उवाच | மொழிந்தார் : |

सर्वथा सुकृतं तावत्सीतायाः परिमार्गणम् । सागरं तु समासाद्य पुनर्नष्टं मनो मम ॥१६॥

| | | | |
|------------|----------------------------|----------|----------------|
| सीतायाः | "வலைதலை | सागरं | சமுத்திரத்தை |
| परिमार्गणं | தேடிக்கண்டுபிடிப்பது | समासाद्य | நினைத்து |
| सर्वथा | எப்படியும் | मम | எனது |
| सुकृतं | நன்குசெய்துமுடிக்கப்பட்டது | मनः तु | மனமும் |
| सायात् | என்றாலும், | पुनः | மீளவும் |
| | | नष्टम् | கலங்கிவிட்டது. |

कथं नाम समुद्रस्य दुष्पारस्य महाम्भसः । हरयो दक्षिणं पारं गमिष्यन्ति समाहिताः ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|------------|---------------|
| महाम्भसः | "அளவுகடந்த அலைமுடையதும் | दक्षिणं | தென் |
| दुष्पारस्य | தாண்டமுடியாதது | पारं | கரையை |
| | மரண | हरयः | வானர்கள் |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது | समाहिताः | ஒன்றுசேர்ந்து |
| | | कथं नाम | எப்படித்தான் |
| | | गमिष्यन्ति | அடைவார்கள்? |

यद्यप्येष तु वृत्तान्तो वैदेह्या गदितो मम । समुद्रपारगमने हरीणां किमिवात्तरम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-------------|---------------------|
| वैदेह्याः | "ஜானகியின் | हरीणां | வானர்களுடைய |
| पुषः | இந்த | समुद्रपार-} | சமுத்திரத்தின் அக்க |
| वृत्तान्तः | விருத்தாந்தம் | गमने } | கரைய அடைதல் |
| तु | இப்பொழுது | | நிலவத்தில் |
| मम | எனக்கு | उत्तरं इव | உனது தீர்மானத்தான் |
| गदितः | சொல்லப்பட்டது. | किम् | என்ன?" |
| यदि अपि | ஆனாலும் | | |

इत्युक्त्वा शोकसंभ्रान्तो रामः शत्रुनिवर्हणः । हनुमन्तं महाबाहुस्ततो ध्यानमुपागमत् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|---------------|------------------------|
| शत्रुनिवर्हणः | சத்துருக்களை வருத்திப்பவரும் | इति | மேற்கண்டவாறு |
| महाबाहुः | மகாபாகுவுமர் | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| रामः | ராமர் | शोकसंभ्रान्तः | சோகத்தால் கலங்கி வராய் |
| हनुमन्तं | ஹனுமாரைப் | ततः | தப்பொழுது |
| | பார்த்து | ध्यानं | சின்கையில் |
| | | उपागमत् | ஆழ்ந்துவிட்டார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥



द्वितीयः सर्गः—இரண்டாவது ஸர்க்கம் || 2 ||

सुग्रीवेण श्रीरामप्रोत्साहनम्—ஸூக்ரீவன் ஸ்ரீராமரை உற்சாகப்படுத்துவது.

तं तु शोकपरिच्यूनं रामं दशरथात्मजम् । उवाच वचनं श्रीमान्सुग्रीवः शोकनाशनम् ॥१॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------|---------------------|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகிய | रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்ந்து |
| सुग्रीवः | சூக்ரீவன் | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| शोकपरिच्यूनं | சோகத்தால் நகந்து | शोकनाशनं | சோகத்தைப்போக்க |
| | ருகும் | | வல்ல |
| दशरथात्मजं | தசரதரின் புதல்வ | वचनं | சொல்லை |
| | ராகிய | उवाच | பின்வருமாறு |
| तं | அந்த | | மொழிந்தான் : |

किं त्वं संतप्यसे वीर यथाऽन्यः प्राकृतस्तथा ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|----------------|----------|------------------|
| वीर | " வீரரே! | यथा तथा | போலவே |
| अन्यः | மற்ற | त्वं | தேவரீர் |
| प्राकृतः | சாதாரண மானிடன் | किं | ஏன் |
| | | संतप्यसे | வருந்துகின்றீர்? |

मैवं भूस्त्यज संतापं कृतघ्न इव सौहृदम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------|------------------|---------|------------------|
| कृतघ्नः | " நன் நிகொன்றவன் | सन्तापं | மனக்கவலையை |
| सौहृदं | கிணைகத்தை | त्यज | அகற்றுவிடாக. |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் | एवं | இப்படி |
| | வண்ணமே | मा भूः | தேவரீர் இருத்தல் |
| | | | கூடாது. |

संतापस्य च ते स्थानं न हि पश्यामि राघव । प्रवृत्तावुपलब्धायां ज्ञाते च निलये रिपोः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|---------------------|
| राघव | " ஸ்ரீராம! | ज्ञाते च | தெரிந்துகிட்டிருக்க |
| प्रवृत्तौ | தற்காலகிலைமை | | கையிலும், |
| उपलब्धायां च | தெரிந்துகிட்டிருக்க | ते | தேவரீருடைய |
| | கையிலும் | सन्तापस्य | மனக்கவலைக்கு |
| रिपोः | சுத்துருவினது | स्थानं हि | காரணமென்பதையே |
| निलये | இருப்பிடம் | पश्यामि न | நான் அறியவில்லை. |

मतिमाञ्छास्त्रवित्माज्ञः पण्डितश्चासि राघव । त्यजेमां पापिकां बुद्धि कृतात्मेवार्थदूषणीम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|-----------|-------------------|
| राघव | " ஸ்ரீராம! (ஓர்) | कृतात्मा | மனச்சாந்திகண்டவன் |
| मतिमान् | பேரறிவாளர்; | अर्थदूषणी | அடைந்த பயனைக் |
| शास्त्रविद् | சாஸ்திரக்களை நன்க | | கெடுக்கிறதை |
| | றிந்தவர்; | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| पण्डितः च असि | எதையும் ஆராய்ந்து | हमां | இந்த [வண்ணமே |
| | செய்யத்தகுந்தவர்; | पापिकां | நன்மையைத்தராத |
| | எதிலும் சாமர்த்திய | बुद्धि | மனோபாவத்தை |
| | சாஸ்திராயுமிருக்கிறீர். | त्यज | அகற்றியருள்க. |

समुद्रं लङ्घयित्वा तु महानकासमाकुलम् । लङ्कामारोहयिष्यामो हनिष्यामश्च रावणम् ॥६॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|------------|
| महानकासमाकुलं | “ பெரும் முதலைக்கூட்ட டக்களால் திரம்பிய | लङ्का | இலங்கையில் |
| समुद्रं | சமுத்திரத்தை | तु | இப்பொழுது |
| लङ्घयित्वा | தாண்டி | भारोहयिष्यामः | புகுவோம். |
| | | रावणं च | ராவணனையும் |
| | | हनिष्यामः | வதைப்போம். |

निहत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः । सर्वार्था व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|-------------|---------------------------|
| निहत्साहस्य | “ உதேவாஹுத்தைத் கைவிட்டு | सर्वार्थाः | காரியங்களெல்லாம் |
| दीनस्य | மனவக்கங்கொண்டு | व्यवसीदन्ति | பாழாய்விடுகின்றன. |
| शोकपर्याकुलात्मनः | சோகத்தில் முழுவிய ஒருவனுக்கு | व्यसनं च | (எதிர்பாராத) ஆபத் தும் |
| | | अधिगच्छति | விளைகிறது. |

इमे शूराः समर्थाश्च सर्वे नो हरियुथयाः । त्वत्प्रियार्थं कृतोत्साहाः प्रवेष्टुमपि पावकम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|---------------------|---------------------------------|
| नः | “ நமது | सर्वे | எல்லோருமே |
| इमे | இந்த | त्वत्प्रियार्थं अपि | தேவர்களுக்கு நன்மை யேற்படின் |
| शूराः | சூரர்களும்தம் | पावकं च | ஆகியும் |
| समर्थाः | சமர்த்தர்களுமான | प्रवेष्टुं | குதிப்பதற்கு |
| हरियुथयाः | வானரசேனைத்தலை வர்கள் | कृतोत्साहाः | செய்தவர்கள். |

एषां हर्षेण जानामि तर्कश्चास्मिन्दृढो मम ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|--------|-------------------------------|
| एषां | “ இவர்களுடைய | मम | எனது |
| हर्षेण | முகமலர்ச்சியால் | तर्कः | காரணம் |
| जानामि | ஆறிகிறேன். | दृढः च | எப்படியும் ஆகைய வெண்ணுதது. |
| अस्मिन् | இதில் | | |

विक्रमेण समानेभ्ये सीतां हत्वा यथा रिपुम् । रावणं पापकर्माणं तथा त्वं कर्तुमर्हसि ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|------------------------------|
| पापकर्माणं | “ பாபச்செய்ஹுடைய | सीतां | வீதாதேனியை |
| रिपुं | சத்துருவாகிய | समानेभ्ये | கொண்டுவருவேனோ, |
| रावणं | ராவணனை | तथा | அப்படி |
| यथा | எப்படிச்செய்தால் | त्वं | தேவீர் |
| विक्रमेण | பரம்கிரமத்தால் | कर्तुं | ஆக்ரமிக்க |
| हत्वा | கொன்று | अर्हसि | திருவுளம் கொள்ள வேண்டும். |

सेतुत्र यथा बध्येयथा पश्येम तां पुरीम् । तस्य राक्षसराजस्य तथा त्वं कुरु राघव ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------|------------------|
| राघव | "ஸ்ரீராம! | अत | (இப்பொழுதே) இம் |
| तस्य | அந்த | यथा | எப்படி [கேயே |
| राक्षसराजस्य | ராட்சஸமன்னனது | सेतुः | அணை |
| तां | அந்த | बध्येत् | கட்டப்படவேண்டு |
| पुरीं | நகரை | तथा | அவ்வண்ணமே [மே, |
| यथा | எப்படியானால் | त्वं | தேவரீர் |
| पश्येम | மேலில் காண்போமோ | कुरु | ஆக்குமித்தருள்க. |

दृष्ट्वा तां तु पुरीं लङ्कां त्रिकूटशिखरे स्थिताम् । हतं च रावणं युद्धे दर्शनादुपधारय ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-------------|-------------------------|
| त्रिकूटशिखरे | "த்ரிகூடமலையின் சிகரத்தில் | दर्शनात् तु | கண்டதுமே |
| स्थितां | நிர்மிக்கப்பட்டுள்ள | युद्धे | போரில் |
| तां | அந்த | रावणं च | ராவணனையும் |
| लङ्कां पुरीं | இலங்கை நகரை | हतं | மாண்டுபோய்விட்ட வனாக |
| दृष्ट्वा | கண்டு, | उपधारय | முடிவுகொள்ளும். |

अबद्ध्वा सागरे सेतुं घोरे तु वरुणालये । लङ्का न मर्दितुं शक्या सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|---------------|----------------------------------|
| वरुणालये | "வருண லுக்கிருப்பிட மாகிய | सेन्द्रैः | இந்திர லுன்பட |
| घोरे | பயங்கரமான | सुरासुरैः अपि | தேவர்களாலும் அக ரர்களாலுங்கூட |
| सागरे | சமுத்திரத்தில் | लङ्का | இலங்கை நகர் |
| सेतुं | அணையை | मर्दितुं | மேற்கொள்ள |
| अबद्ध्वा तु | கட்டாமல் | न शक्या | முடியாதது. |

सेतुर्वद्धः समुद्रे च यावद्वङ्कासमीपतः । इमे हि समरे शूरा हरयः कामरूपिणः ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|----------------------------|
| लङ्कासमीपतः | "இலங்கை எல்லை வரைக்கும் | कामरूपिणः | கிளைத்த உருவமெங்க கவல்ல |
| समुद्रे | சமுத்திரத்தில் | इमे | இந்த |
| सेतुः | அணை | हरयः | வானர்கள் |
| बद्धः | கட்டியாய்விட்டது. | समरे | போரில் |
| यावत् च | என்றாலுமே | शूराः हि | வெல்ல வல்லவர்களே. |

तदलं विह्वला बुद्धी राजन्सर्वार्थनाशिनी । पुरुषस्य हि लोकेऽस्मिञ्छोकः शौर्यापकर्षणः ॥

| | | | |
|----------------|---|---------------|--------------------------------|
| राजन् | "சக்கிரவர் த்தியே! | हि | ஏனெனில் |
| सर्वार्थनाशिनी | எல்லாக் காரியத்தை யும் பாழாக்குகின்ற | अस्मिन् | இந்த |
| विह्वला | சுலனமாகிற | लोके | உலகில் |
| बुद्धिः | எண்ணமாவது | शोकः | மனவேதனையானது |
| तत् | இப்பொழுதே | पुरुषस्य | ஓர் மனிதனுடைய |
| अलं | முற்றிலுமொழிக்கப் பட்டும். | शौर्यापकर्षणः | ஆற்றலைக் கரைத்து விடுகிறது. |

यत्तु कार्यं मनुष्येण शौण्डीर्यमवलम्बता । अस्मिन्काले महाभाज्ञ सच्चमातिष्ठ तेजसा ॥१६॥

| | | | |
|--------------------------------------|---|---------------------------|--|
| महाभाज्ञ भव शम्बता | "போலித்தேரீ ! ஒரு காரியத்தை ஆர்வ யி,க்கிருக்கிற | सखं तु अस्मिन् काले | மனோதைரியத்தையே இந்த காலத்தில் |
| मनुष्येण यत् शौण्डीर्यं कार्यं | ஓர் மனிதனால் எந்த ஆண்மை கொள்ளத்தக்கதோ அந்த | तेजसा आतिष्ठ | பிறவிக்குணத்தால் மேற்கொண்டான் வீராக. |

शूराणां हि मनुष्याणां त्वद्विधानां महात्मनाम् । विनष्टे वा मनष्टे वा शोकः सर्वार्थनाशनः ॥

| | | | |
|--|--|-------------------|--|
| शूराणां महात्मनां त्वद्विधानां मनुष्याणां विनष्टे वा | "சூரர்களும் மகா தீமர்களுமாய தேவரீர்போன்ற மானிடர்களுக்கு காணாமற்போயிருப்ப தீவர்களுக்கும் | मनष्टे वा शोकः | முற்றிலும் ஒழிந்து விட்டதில் தானாகட்டும் துயரமொன்பது |
| | | सर्वार्थनाशनः हि | { எல்லாக்காரியங்களின் பயனையும் அழிக்கு மே. |

त्वं तु बुद्धिमतां श्रेष्ठः सर्वशास्त्रार्थकोविदः । मद्विधैः सचिवैः सार्धमरिं जेतुमिहाहंसि ॥

| | | | |
|---|--|---|--|
| त्वं तु बुद्धिमतां श्रेष्ठः सर्वशास्त्रार्थ- कोविदः मद्विधैः | "தேவரீரோ பேரறிவாளர்களில் உத்தமர். எல்லா சாஸ்திர துட் பங்களிலும் நிபுணர். என்போன்ற | सचिवैः सार्धं अरिं जेतुं इह अहंसि | மந்திரிகளோடு கூடி, சத்ருவை வெல்ல இப்பொழுது தீர்மானித்தான் வேண்டும். |
|---|--|---|--|

न हि पश्याम्यहं कश्चित्त्रिषु लोकेषु राघव । गृहीतधनुषो यस्ते तिष्ठद्भिसुखो रणे ॥१७॥

| | | | |
|--|---|---|---|
| राघव रणे गृहीतधनुषः ते अभिसुखः यः | "சூரம! போலில் கையில் விற்றடித்த தேவரீருக்கு எதிர்த்து எவன் | तिष्ठत् कश्चिद् हि त्रिषु लोकेषु अहं पश्यामि न | நிற்பானே அப்படிப் ஒருவனையும் [பட்ட முன்று உலகங்களிலும் நான் கண்டேன். |
|--|---|---|---|

वानरेषु समासक्तं न ते कार्यं विपत्स्यते । अचिराद्दृश्यसे सीतां तीर्त्वा सागरमक्षयम् ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| वानरेषु समासक्तं ते कार्यं विपत्स्यते न | "வானர்களிடத்தில் ஒப்படைக்கப்பட்ட தேவரீரது காரியமானது கொடாது. | अक्षयं सागरं तीर्त्वा सीतां अचिरात् दृश्यसे | அழிவற்ற சமுத்திரத்தை தாண்டி வீராதேவியை சீக்கிரத்திலேயே காணப்போகின்றீர். |
|---|--|--|--|

तदलं शोकमालम्ब्य क्रोधमालम्ब्य भूपते । निश्चेष्टाः क्षत्रिया मन्दाः सर्वे चण्डस्य विभ्यति ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------|----------------------|
| भूपते | "சக்கிரவர்த்தியாரே ! | चण्डस्य | கோபங்கொண்டவ |
| मन्दाः | கோழைமனத்தினர் | विभ्यति | ஊக்கு |
| | களும் | तत् | நடுக்குகின் றூர்கள். |
| निश्चेष्टाः | முயற்சிசெய்யாதவர் | शोकं | ஆகையால் |
| | களுமாற | आलम्ब्य | மனவேதனை |
| क्षत्रियाः | சுத்தீசிரியர்கள் | अलं | பற்றியிருந்தது இத்து |
| सर्वे | எல்லோரும் | क्रोधं | டன் கிடப்பபட்டும். |
| | | आलस्य | சினத்தை |
| | | | மேற்கொள்ளும். |

लङ्घनार्थं च घोरस्य समुद्रस्य नदीपतेः । सहास्राभिरिहोपेतः सूक्ष्मबुद्धिर्विचारय ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|--------------|-----------------|
| इह | "இப்பொழுது | घोरस्य | பயக்கரமானதும் |
| अस्माभिः | எங்களைரடு | नदीपतेः | நதீபதியுமான |
| सह | கூட | समुद्रस्य | சமுத்திரத்தை |
| उपेतः | இருந்துகொண்டு | लङ्घनार्थं च | கடக்கும் விஷயம் |
| सूक्ष्मबुद्धिः | துண்ணறிவாளராகிய | | ஒன்றை மட்டும் |
| | தேவரீர் | विचारय | கவனியும். |

सर्वे तीर्णं च मे सैन्यं जितमित्युपधार्यताम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|--------|--------------------|--------------|-------------------|
| मे | "எனது | जितं च इति | ஜெயம்பெற்றுவிட்ட |
| सैन्यं | ஸைனியம் | | தாகவும் |
| सर्वं | எல்லாமும் | उपाधार्यताम् | நிச்சயமாய் எண்ணத் |
| तीर्णं | தாண்டிவிட்டதாகவும் | | தக்கது. |

इमे हि हरयः शूरा विक्रान्ताः कामरूपिणः । तानरीन्विधमिष्यन्ति शिलापादपट्टिभिः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------------|-----------------|
| इमः | "குரர்களும் | अरीन् | சத்துருக்களை |
| विक्रान्ताः | ஆண்மையற்றவர்களும் | शिलापादप-) | பாறை, மரங்கள் இ |
| कामरूपिणः | நினைத்த உருவமெடுக்க | वृष्टिभिः) | வைகளின் வர்ஷக்க |
| | கவல்லவர்களுமான | | ளால் |
| इमे | இந்த | विधमिष्यन्ति | ஊதிவிடப்போகின் |
| हरयः | வானர்கள் | | றூர்கள். |
| तान् | அந்த | हि | இதில் சந்தேகம் |
| | | | வேண்டாம். |

कथञ्चित्संतरिष्यापस्ते वयं वरुणालयम् । हतमित्येव तं मन्ये युद्धे शत्रुनिवर्हण ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------|--------------------|
| शत्रुनिवर्हण | "சத்துருஸம்ஹாரக! | युद्धे | போரில் |
| ते वयं | இந்த நாம் | तं | அவனை |
| वरुणालयं | சமுத்திரத்தை | हतं एव | கொல்லப்பட்டுவிட்ட |
| कथञ्चिन् | எப்படியாவது | | வஞ்சகவே |
| सन्तरिष्यामः | தாண்டியேதிருவோம். | मन्ये | நான் உறுதிக்கொண்டி |
| इति | ஆகவே | | ருக்கிறேன். |

विमुक्त्वा बहुधा चापि सर्वथा विजयी भवान् । निमित्तानि च पश्यामि मनो मे सम्प्रहृष्यति ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------------|----------------------------------|
| बहुधा | “பலவாறு | निमित्तानि च | சபசகூணங்களையும் |
| उन्मथा किं | சொல்லியபயனென்ன? | पश्यामि | நான் காண்கின்றேன். |
| भवान् | தேவரீர், | मे | எனது |
| सर्वथा अपि | எப்படியும் | मनः | மனமுடம் |
| विजयी च | வெற்றிபெற்றவரே. | सम्प्रहृष्यति | உத்தராகத்தூடன் விளங்குகிறது.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे द्वितीयः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14720



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 45

तृतीयः सर्गः—முன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ 3 ॥

लङ्काया दुर्गादिकथनम्—இலங்கையின் தூர்க்கம்முதலியறவற்றைக் சொல்லுது.

सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा हेतुमत्परमार्थवित् । प्रतिजग्माह काकुत्स्थो हनुमन्तपयात्रवीत् ॥१॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-------------|-----------------------------|
| परमार्थवित् | உன்மை பொருளு ணர்ந்தவராகிய | श्रुत्वा | கேட்டு |
| काकुत्स्थः | கூராமர் | प्रतिजग्माह | அங்கீகரித்தார். |
| सुग्रीवस्य | சுகரீவனது | अथ | அதன்பேல் |
| हेतुमत् | யுத்தியுத்தமான் | हनुमन्त | ஹனுமாரைப்பார்ந்து |
| वचः | சொல்லை | अत्रवीत् | யின் வருமாறு மொழிக்கார்: |

तपसा सेतुबन्धेन सागरोच्छोषणेन वा । सर्वथा सुसमर्थोऽसि सागरस्यास्य लङ्घने ॥२॥

| | | | |
|---------------------------|--|----------|-----------------------------|
| तपसा | “தவமசீமையாலே | अस्य | இந்த |
| सेतुबन्धेन | அணைகட்டுவதாலே | सागरस्य | சமுத்திரத்தை |
| सागरो- } च्छोषणेन वा } | ஆல்லது சமுத்திரத் தை வற்றச்செய்வ தாலே, | लङ्घने | கடக்கும்விடயத்தில் |
| सर्वथा | எப்படியோ | सुसमर्थः | முத்திலும் சமர்த்த னாகவே |
| | | असि | நான் இருக்கிறேன். |

कति दुर्गाणि दुर्गाया लङ्काया बृहि तानि मे । ज्ञातुमिच्छामि तत्सर्वं दर्शनादिव वानर ॥

बलस्य परिमाणं च द्वारदुर्गक्रियामपि । शुप्तिकर्म च लङ्काया रक्षसां सदनानि च ॥४॥

| | | | |
|------------------------------|--|--------------|-------------------------------|
| वानर | “வானரரே! | लङ्कायाः | இலங்கையை |
| दुर्गायाः | புகழமுடியாத | शुप्तिकर्म च | பாதுகாக்கும் விதத் தையும், |
| लङ्कायाः | இலங்கைக்கு | रक्षसां | அரக்கர்களின் |
| दुर्गाणि कति | தூர்க்கங்கள் எத்தனை. | सदनानि च | வீடுகளையும் |
| तानि | அவைகளையும் | मे बृहि | எனக்குச் சொல்லும், |
| बलस्य | சைன்யத்தினுடைய | तत् सर्वं | அதெல்லாவற்றையும் |
| परिमाणं च | அளவையும், | दर्शनात् इव | நேரில் கண்டதுபோல |
| द्वारदुर्गक्रियां } अपि } | வாரடிகளின் தூர்க்கங் களின் அமைப்பையும், | शातु इच्छामि | அறியவிரும்புகிறேன். |

यथासुखं यथावच्च लङ्कायामसि दृष्टवान् । सर्वमाचक्ष्व तच्चेन सर्वथा कुशलो ह्यसि ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-----------|-----------------|
| लङ्कायां | “ இலங்கையில் | तच्चेन | எதையும் விடாமல் |
| यथासुखं | ஆமைதியுடனும், | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| यथावत् च | உள்ளபடியும், | आचक्ष्व | கொல்லும். |
| दृष्टवान् भसि | எல்லாவற்றையும் | हि | ஏனெனில் |
| | பார்த்திருக்கின்றனை. | सर्वथा | எவ்வாற்றினும் |
| | | कुशलः भसि | ஈ சமர்த்தன். ” |

श्रुत्वा रामस्य वचनं हनुमान्मारुतात्मजः । प्रणम्य शिरसा रामं प्राञ्जलिः सुसमाहितः ॥

वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठो रामं पुनरथाब्रवीत् ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------------|---------------------|
| मारुतात्मजः | வாயுவின் புதல்வரும் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| वाक्यविदां | சொல்லுட்பகிபுணர் | शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| | களில் | प्रणम्य | நமஸ்கரித்து |
| श्रेष्ठः | உத்தமருமான | रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| हनुमान् | ஹனுமார் | सुसमाहितः | மிகமனக்கமுடையவ |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | | ராகி |
| वचनं | சொல்லை | प्राञ्जलिः | கைதொழுது |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अथ पुनः | பதிலாய் பின்வருமாறு |
| | | वाक्यं अब्रवीत् | மொழிந்தார் : |

श्रूयतां सर्वमाख्यास्ये दुर्गकर्मविधानतः । गुप्ता पुरी यथा लङ्का रक्षिता च यथा बलैः ॥

राक्षसाश्च यथा स्निग्धा रावणस्य च तेजसा । परां समृद्धिं लङ्कायाः सागरस्य च भीमताम् ॥

विभागं च बलौघस्य निर्देशं वाहनस्य च ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------|------------|---------------------------------------|
| दुर्गकर्मविधानतः | “ தர்க்கவகைகளி | समृद्धिं च | } செல்வச்செழிப்பு எவ்வளவோ அவ்வளவையும் |
| यथा | எப்படி [எமைப்பால் | सागरस्य | |
| लङ्का | இலங்கை | भीमतां च | பயக்கரமான தோற்ற |
| पुरी | நகர் | बलौघस्य | மெதுவோ அதையும், |
| गुप्ता | காப்பாற்றப்பட்டிருக் | विभागं च | சேனைசமூகத்தினது |
| यथा | எவ்வாறு [கிறதோ, | वाहनस्य | வகுப்பு எத்தனையோ |
| बलैः च | சைன்யங்களால் | निर्देशं च | அத்தனையையும், |
| रक्षिता | காக்கப்பட்டிருக்கிற | सर्वं | வாஹனத்தின் |
| राक्षसाः | ராஷ்டிரர்கள் [தோ | आख्यास्ये | தொகை எவ்வளவோ |
| यथा | எப்படி | | அதையும் |
| स्निग्धाः च | ஆன்புடனிருக்கிறார் | श्रूयताम् | எல்லாவற்றையும் |
| | களை, | | விண்ணப்பஞ்செய்கின்றேன். |
| रावणस्य | ராவணனுடைய | | செவிகாய்க்கப்பட்ட |
| तेजसा | பிரபாவத்தால் | | இம் ”. |
| लङ्कायाः | இலங்கையின் | | |
| परां | ஆளவுகடந்த | | |

सौवर्णश्च महास्तस्याः प्राकारो दुष्पधर्षणः । मणिविट्ठमवैहूर्यमुक्ताविरचितान्तरः ॥ १४ ॥

| | | | |
|--|---|-------------|-----------------------|
| तस्याः सौवर्णः | “ अथற்கு பொன்னிலெடுக்கப் பட்டதும் | दुष्पधर्षणः | அசைக்கமுடியாத தாய் |
| मणिविट्ठम- वैहूर्यमुक्ता- विरचितान्तरः | } மாணிக்யம், பலழம், வைரீர்யம், முத்து இவைகள் இடைவெ ளிகளில் பதிக்கப் பெற்றதும் | महान् च | பெரிதாய்மிருக்கின்ற |
| | | प्राकारः | ஒரு மதிலிருக்கிறது. |

सर्वतश्च महाभीमाः शीततोयवहाः शुभाः । अगाधा ग्राहवत्यश्च परिखा मीनसंकुलाः ॥

| | | | |
|----------------------|---|--------------|-------------------------------|
| सर्वतः शीततोयवहाः | “ நாற்புறத்திலும் குளிர்ந்த ஜலம் நிரம் பியவைகளும் | ग्राहवत्यः च | முத்தலைகள் நிறைந்த வைகளும் |
| शुभाः | அழகியவைகளும் | मीनसंकुलाः | மீன்கள் நிறைந்தவை களும் |
| अगाधाः | அளவிடமுடியாத ஆ ழுமுடையவைகளும் | महाभीमाः च | மகரபயங்கரமானவை களுமான |
| | | परिखाः | அகழிகள் இருக் கின்றன. |

द्वारेषु तासां चत्वारः संक्रमाः परमायताः । यन्त्रैरुपेता बहुभिर्महद्भिर्गृहपङ्क्तिभिः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------------------------|--|-------------------------------------|--|
| तासां द्वारेषु परमायताः | “ இவைகளின் வாயில்களில் மிக விசாலமானவை களும் | यन्त्रैः गृहपङ्क्तिभिः उपेताः | விசாலமான வீடுவரிசைகளாலும் பக்கவிலிருக்கப்பெற் றனவுமான |
| बहुभिः यन्त्रैः | பல யந்திரங்களாலும் | चत्वारः संक्रमाः | நான்கு பாலங்களிருக்கின்றன. |

त्रायन्ते संक्रमास्तत्र परसैन्यागमे सति । यन्त्रैस्तरवकीर्यन्ते परिखासु समन्ततः ॥ १७ ॥

| | | | |
|-------------------------------|---|----------------------------|---------------------------------------|
| तत्र संक्रमाः त्रायन्ते | “ அவ்விடத்தில் பாலங்கள் நன்கு பாதுகாக்கப் படுகின்றன. | तैः यन्त्रैः समन्ततः | அந்த யந்திரங்களால் எந்முற்றமும் |
| परसैन्यागमे सति | சத்ருவைசெய்யும் வந்த பொழுது | परिखासु अवकीर्यन्ते | அகழிகளில் தள்ளப்படுகின்றன. |

एकस्त्वकम्प्यो बलवान्संक्रमः सुमहादृढः । काञ्चनैर्वहुभिः स्तम्भैर्वेदिकाभिश्च शोभितः ॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| एकः संक्रमः तु सुमहादृढः अकम्प्यः | “ ஒரு பாலம்மட்டும் மிகஉறுதியாய் அசைக்கவொண்ணாத தாய் | बहुभिः काञ्चनैः स्तम्भैः वेदिकाभिः च शोभितः | பல பொன் ஸ்தம்பங்களாலும் திண்டிண்களாலும் அழகுற்று விளங்கு கிறது. |
| बलवान् | ஸ்திரமாயிருக்கிறது. | | |

स्वयं प्रकृतिसम्पन्नो युयुत्सु राम रावणः । उत्थितश्चाप्रमत्तश्च बलानामनुदर्शने ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|------------------------------|
| ராம | "ஸ்ரீராம! | उत्थितः | ஊக்கமுடனிருப்ப |
| रावणः | ராவணன் | बलानां | சைன்யக்களை [வலய] |
| स्वयं | தனது | अनुदर्शने | மேற்பார்வை பார்ப்ப |
| प्रकृतिसम्पन्नः | பிறவிக்குணக்களோடு இவ்வயக்கிக்கொண்டு | अप्रमत्तः च | ஊக்கிரதையுடனுமிருக்கின்றான். |
| युयुत्सुः | பேரரை விருப்பி | | |

लङ्का पुनर्निरालम्बा देवदुर्गा भयावहा । नादेयं पार्वते वान्यं कृषिमं च चतुर्विधम् ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|--|-----------|----------------------|
| लङ्का | "இலங்கைநகர் | पुनः | இதுவுமின்றி |
| निरालम्बा | { எறுவதற்கு ஒருவகை பட்டியப்புமின்றி தனி த்திருக்கிறது. | चतुर्विधं | நான்குவகையாகிற |
| देवदुर्गा | தேவர்களாலும் புகழுடியாதது. | नादेयं | கிரகண், |
| भयावहा | பயங்கரமானது. | पार्वतं | மலைபரண், |
| | | वान्यं | காட்டரண், |
| | | कृषिमं च | நிலவரனுமிருக்கின்றன. |

स्थिता पारे समुद्रस्य दूरपारस्य राघव । नौपथोऽपि च नास्त्यत्र निरादेशश्च सर्वतः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|------------|--|
| राघव | "ஸ்ரீராம! | अत्र | அத்திக்கில் |
| दूरपारस्य | வெகுதூரத்தூக்கப் பால் கரைகளைபுடைய | नौपथः अपि | கப்பல் வழியும் |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது | अस्ति न | இல்லை. |
| पारे | எட்டாக்கையின் மத்தியில் | सर्वतः | எங்கும் |
| स्थिता | இருக்கின்றது. | निरादेशः च | { சமாதானங்களின் பொக்குவாத்தும் அப்படியே இல்லை. |

शैलाम्भे रचिता दुर्गा सा पूर्वपुरोपमा । वाजिवारणसंपूर्णा लङ्का परमदुर्जया ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|-----------------------|--|
| सा | "அந்த | दुर्गा | எவராலும் புகழுடி யாதது ; |
| लङ्का | இலங்கை | देवपुरोपमा | தேவர்களம்பேரன்றது ; |
| पुः | நகர் | वाजिवारण- संपूर्णा | { குதிரைகளாலும், யா கைகளாலும் நிறைந் துள்ளது ; |
| शैलाम्भे | ஊர் மலையின் உச்சியில் | परमदुर्जया | எவ்வகையாலும் வெல்லமுடியாதது. |
| रचिता | ஆமைக்கப்பட்டிருக்கிறது ; | | |

परिखाश्च शतश्लथश्च यन्त्राणि विविधानि च । शोभयन्ति पुरीं लङ्कां रावणस्य दुरात्मनः ॥

| | | | |
|-----------|------------|-------------|--------------------------------|
| दुरात्मनः | "கொடிய | शतश्लथः च | 'சதக்னி' எனும் ஆயு தங்களும் |
| रावणस्य | ராவணனது | विविधानि | மற்றும்பலவித |
| लङ्कां | இலங்கை | यन्त्राणि च | யந்திரங்களும் |
| पुरीं | நகரை | शोभयन्ति | விளக்கச்செய்கின்றன. |
| परिखाः च | அகிற்களும் | | |

अयुतं रक्षसामत्र पूर्वद्वारं समाश्रितम् । शूलहस्ता दुराधर्षाः सर्वे खड्गाग्रयोधिनः ॥ २४ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|----------------|-------------------------------------|
| अयुतं | " இதில் | सर्वे | எல்லோரும் |
| पूर्वद्वारं | கிழக்குவாயிலை | शूलहस्ताः | சூலங்களைக் கையாற்ற கொண்டவர்கள். |
| रक्षसां अयुतं | பதினாயிரம் ஆரக்கர் கள் | दुराधर्षाः | ஒருபொழுதும் வெ ல்லமுடியாதவர்கள். |
| समाश्रितं | காத்துக்கொண்டிருக்க கிறார்கள். | खड्गाग्रयोधिनः | கத்திமுனையால் போர் புரிபவர்கள். |

नियुतं रक्षसामत्र दक्षिणद्वारमाश्रितम् । चतुरङ्गेण सैन्येन योधास्तत्राप्यनुत्तमाः ॥ २५ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|-----------|----------------------------|
| अन | " இதில் | आश्रितं | காக்கின்றார்கள். |
| रक्षसां नियुतं | எசையும் ஆரக்கர்கள் | तत्र | அங்கிடத்தில் |
| दक्षिणद्वारं | தென் வாயிலை | योधाः | போர் வீரர்கள் |
| चतुरङ्गेण | சதுரங்க | अनुत्तमाः | ஒப்புயர்வில்லாதவர் கள். |
| सैन्येन अपि | சையத்தோடு கூட வே | | |

प्रयुतं रक्षसामत्र पश्चिमद्वारमाश्रितम् । चर्मखड्गधराः सर्वे तथा सर्वास्त्रकोविदाः ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|-------------------|---------------------------------------|
| अन | " இதில் | सर्वे | எல்லோரும் |
| रक्षसां प्रयुतं | பத்துஎசையும் ஆரக்கர் | चर्मखड्गधराः | கேடயமும், கத்தியு மேத்தியவர்கள். |
| पश्चिमद्वारं | மேற்குவாயிலை [கள் | सर्वास्त्रकोविदाः | எல்லா ஆஸ்திரக்களி தும் சிபுணர்கள். |
| आश्रितं | காக்கின்றார்கள். | | |
| तथा | அப்படியே | | |

न्यर्बुदं रक्षसामत्र उत्तरद्वारमाश्रितम् । रथिनश्चाश्ववाहाश्च कुलपुत्राः सुपूजिताः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-------------------|-------------------------------------|-------------|---------------------------------------|
| अन | " அதில் | अश्ववाहाः च | குதிரைகளிலிருந்து போர்புரிபவர்கள். |
| न्यर्बुदं रक्षसां | ஆயிரம் எசையும் ஆரக் | कुलपुत्राः | நற்குலத்திற்கிறந்த வர்கள். |
| उत्तरद्वारं | வடக்குவாயிலை [கள் | सुपूजिताः | நன்கு கொள்கிக்கப் பட்டவர்கள். |
| आश्रितं | காக்கின்றார்கள். | | |
| रथिनः च | ரதங்களிலிருந்து போர்புரிபவர்கள். | | |

शतशोऽथ सहस्राणि मध्यमं स्कन्धमाश्रिताः । यातुधाना दुराधर्षाः शतकोटिश्च रक्षसाम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|------------------|-------------------------------|
| शतकोटिः | " நூறுகொடி | स्कन्धं | பிரதேசத்தை |
| यातुधानाः | யாதுதரணர்கள் | आश्रिताः | காக்கின்றார்கள். |
| शतशः | நூற்றுக்கணக்காக | रक्षसां सहस्राणि | ஆயிரம் ஆரக்கர் களும் |
| दुराधर्षाः | எவராலும் வெல்ல முடியாதவர்களாய் | अथ च | அப்படியே காக்கி ன்றார்கள். |
| मध्यमं | மத்திய | | |

वलैकदेशः क्षपितो राक्षसानां दुरात्मनाम्

॥ २९ ॥

दुरात्मनां "ஆவட்டர்களாகிய
ராட்சசனார்களுடைய

வகைகளைக் கிடைத்த இவர்களுக்கு
காசம்பண்ணப்
பட்டது.

ते मया संक्रमा भयाः परिखाश्चावपूरिताः । दग्धा च नगरी लङ्का प्राकाराश्चावसादिताः ॥

मया "என்னால்
ते அந்த
संक्रमाः பாஸ்கள்
भयाः முறிக்கப்பட்டன.
परिखाः च அகிழ்க்கும்
अवपूरिताः தூர்க்கப்பட்டன.

லங்கை இலங்கை
नगरी च ககரும்
दग्धा எரிக்கப்பட்டது.
प्राकाराः च மதில்களும்
अवसादिताः இடிந்து தள்ளப்பட்ட
டன.

येन केन च मार्गेण तराय वरुणालयम्

॥ ३१ ॥

येन "எவ்வீதமாகவாவது
केन च ஏதோ ஒரு
मार्गेण உபாயத்தைக்கொ
ண்ட

वरुणालयं சமுத்திரத்தை
तराय காம் கடந்துவிடு
வோம்.

हतेति नगरी लङ्का वानरैरवधार्यताम्

॥ ३२ ॥

वानरैः "வானரர்களால்
लङ्का இலங்கை
नगरी ககர்

हता அழிக்கப்பட்டுவிட்ட
इति என்று [ட்டது
अवधार्यताम् திருவுள்ளத்தில்
கொள்ளப்பட்டும்.

अङ्गदो द्विविदो मैन्दो जाम्बवान्पनसो नलः । नीलः सेनापतिश्चैव बलशेषेण किं तव ॥
शुवमाना हि गत्वा तां रावणस्य महापुरीम् । सर्पयतवनां भिक्षा सखातां समतोरणाम् ॥
सप्राकारां सभवनामानयिष्यन्ति मैथिलीम्

॥ ३४ ॥

अङ्गदः "அங்கதனும்,
द्विविदः தீவீதனும்,
मैन्दः மைந்தனும்,
जाम्बवान् ஜாம்பவானும்,
पनसः பனஸனும்,
नलः நலனும்
सेनापतिः சேனைத்தலைவனான
नीलः एव நீலனும்
रावणस्य ராவணனது
महापुरी பெரும்ககருக்கு
शुवमानाः हि பாய்க் தே
सखा तां சென்று
तां அனைத

सपयतवनां மலைகளோடும் வனக்க
ளோடும் கூடவும்,
सखातां அகிழ்க்களோடும் கூடவும்
समतोरणां கோட்டைவாயில்க
ளோடும் கூடவும்,
सप्राकारां மதில்களோடும் கூடவும்,
सवनां பாளிகைகளோடு
भिक्षा உருவழித்து [கூடவும்
मैथिली மைதிலியாரை
आनयिष्यन्ति கொண்டுவருவார்கள்.
बलशेषेण மீதியை கைவந்தினால்
किं तव தேவீருக்கு
किं च இப்பொழுது ஆவ
தொன்றுமில்லை

एवमाज्ञापय क्षिप्रं वलानां सर्वसंग्रहम् । मुहूर्तेन तु युक्तेन प्रस्थानमभिरोचय ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|--------------------|
| வலானா | “சைன்யங்களின் | ஆज्ञாபய | ஆக்ஞாபித்தருளும். |
| सर्वसंग्रहं | எல்லாக்கணங்களையும் | युक्तेन | நன்மைபயக்கும் |
| | பார்த்து | मुहूर्तेन तु | முகூர்த்தத்திலேயே |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | प्रस्थानं | பிரயாணப்படுதலை |
| क्षिप्रं | இப்பொழுதே | अभिरोचय | கிச்சயித்தருளும்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे तृतीयः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14755

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 80



चतुर्थः सर्गः—காண்காவது ஸர்க்கம் ॥ ४ ॥

ससैन्यस्य श्रीरामस्य समुद्रतीरगमनम्—சைன்யங்களுடன் ஸ்ரீராமர்
ஸமுத்திரதீரத்தை அடைவது.

श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं यथावदनुपूर्वशः । ततोऽब्रवीन्महातेजा रामः सत्यपराक्रमः ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|------------|-----------------------------|
| महातेजाः | மகா தேஜஸ்வியும் | यथावत् | உள்ளபடியே |
| सत्यपराक्रमः | வீண்படாத பராக்கி ரமசாலியுமான | अनुपूर्वशः | ஒன்றும் விடாது |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| हनुमतः | ஹனுமாருடைய | ततः | அதன்மேல் |
| वाक्यं | சொல்லை. | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தார் : |

यां निवेदयसे लङ्कां पुरीं भीमस्य रक्षसः । क्षिप्रमेनां वधिष्यामि सत्यमेतद्वीमि ते ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|------------------------------|
| भीमस्य | “பயக்கரனுன | क्षिप्रं | இகோ |
| रक्षसः | அரக்கனது | वधिष्यामि | நாசம்பண்ணிவிடப் போகிறேன். |
| यां | எந்த | ते | உனக்கு |
| लङ्कां | இலங்கை | एवम् | இதை |
| पुरीं | நகரை | सत्यं | உறுதியாய் |
| निवेदयसे | தெரிவிக்கின் திரோ | वधिष्यामि | உரைக்கிறேன். |
| एनां | இதை | | |

अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीव प्रयाणमभिरोचय । युक्तो मुहूर्तो विजयः प्राप्तो मन्थ्यं दिवाकरः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|----------|--------------------|
| दिवाकरः | “சூரியபகவான் | विजयः | விக்ரவமெனப்படுவது. |
| मन्थ्यं | உச்சியை | सुग्रीव | சுகரீவ, |
| प्राप्तः | அடைந்திருக்கிறது ஆகிய | अस्मिन् | இந்த |
| मुहूर्तेः | முகூர்த்தமானது | मुहूर्ते | முகூர்த்தத்தில் |
| युक्तः | ஏற்றது. | प्रयाणं | பிரயாணத்தை |
| | | अभिरोचय | ஏற்றுக்கொள்வாயாக. |

अस्मिन्मुहूर्ते विजये प्राप्ते मध्यं दिवाकरे । सीतां हवा तु मे जातु कासौ यास्यति यास्यतः ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|-------------------|
| दिवाकरे | "சூரியபகவான் | यास्यतः | பிரயாணமாகையில், |
| मध्यं | உச்சியை | असौ | இவன் |
| प्राप्ते | அடைந்திருக்கையி | सीतां तु | வீனதையயும் |
| अस्मिन् | இந்த [லே, | हवा | திருடிவிட்டு, |
| विजये | விஜயமெனும் | जातु | எப்படித்தான் |
| मुहूर्ते | முஹூர்த்தத்திலே, | क | எக்குதான் |
| मे | நான் | यास्यति | ஒடிவிடப்போகிறான்? |

सीता श्रुत्वाऽभियानं मे आशामेध्यति जीविते । जीवितान्तेऽमृतं स्पृष्ट्वा पीत्वा विषमिवातुरः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-------------|-----------------|
| विषं | "விஷத்தை | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| पीत्वा | சூடித்துவிட்டு | मे | எனது [வண்ணமே |
| आतुरः | துன்பப்படும் ஒருவன் | अभियानं | பிரயாணத்தை |
| जीवितान्ते | பிராணன் போகும் வேளையில் | सीता | வீனத |
| अमृतं | அமிருதத்தை | श्रुत्वा | கேட்டு |
| स्पृष्ट्वा | கண்டு? | जीविते | பிராணன்பிது |
| | | आशां एष्यति | ஆசையை பெறுவான். |

उत्तराफल्गुनी ह्यथ श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|-------------------|
| अथ हि | "இன்றே | हस्तेन | ஹஸ்தநகைத்திரத் |
| उत्तराफल्गुनी | உத்திரநகைத்திரம்? | | தோடு |
| षः तु | நானே யோவென்றால் | योक्ष्यते | விளக்கப்போகிறது.* |

§ [ஸ்ரீராமருடைய ஜன்மநகைத்திரமாகிய புனர்வசவுக்கு ஆறுவது நகைத் திரமாகையால் இது ஸாதகந்தாரை.]

* [புனர்வசவுக்கு 7-வது நகைத்திரமாகையால் வதந்தாரை]

अभिप्रयाम सुभीव सर्वानीकसमाहृताः

| | | | |
|---------------------------|----------------------------|-----------|-----------------|
| अभिप्रयाम | "சுகீர்வனே! | अभिप्रयाम | நாம் பிரயாணமாகு |
| सुभीव | எல்லா சைன்யங்க | | வேரம் |
| सर्वानीक- } समाहृताः } | ளால் சூழப்பட்டவர் களால் | | |

निमित्तानि च धन्यानि यानि प्रादुर्भवन्ति च । निहत्य रावणं संख्ये ह्यनविष्यामि जानकीम् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------------|------------|--------------------------|
| धन्यानि | "பாக்கியங்களை வினை விக்கும் | हि | ஆண்படியால் |
| निमित्तानि | நற்சூனங்கள் | संख्ये | போரில் |
| यानि च | எனவகளை அவை கள் | रावणं च | ராவணனையும் |
| प्रादुर्भवन्ति | பிரத்யநகைத்தில் தோ ன்றுவென்றன. | निहत्य | கொன்று |
| | | जानकीं | ஜானகியை |
| | | अनविष्यामि | கொண்டுவிடப்போகி றேன். |

उपरिष्ठाद्धि नयनं स्फुरमाणमिदं मम । विजयं समनुभासं शंसतीव मनोरथम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-------------|-------------------|
| மம | "எனது | हि | என்கிற காரணத்தால் |
| इदं | இந்த | मनोरथं | மனோரதமாகிருக்கிற |
| नयनं | கண் | विजयं | வெற்றியை |
| उपरिष्ठात् | மேலே | समनुभासं इव | கிட்டிவிட்டதாகவே |
| स्फुरमाणं | துடித்துக்கொண்டிருக்கிறது. | शंसति | அறிவிக்கிறது." |

ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन च पूजितः । उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविदः ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|-----------------------------|
| अर्थकोविदः | விஷயங்களை நன்கறிந்த | लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணராலும் |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவாகிய | पूजितः | புகழ்ந்துகொண்டாடப்பட்டவராய் |
| रामः | ராமர் | पुनः अपि | மீளவும் |
| ततः | இச்சமயத்தில் | उवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தார் : |
| वानरराजेन | வானரமன்னராலும் | | |

अग्रे यातु बलस्यास्य नीलो मार्गमवेक्षितुम् । वृतः शतसहस्रेण वानराणां तरस्विनाम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------|------------|--------------|
| मीलः | "நீலன் | मार्गं | வழியை |
| तरस्विनां | பலசாலிகளான | अवेक्षितुं | சோதிக்க |
| वानराणां | வானரர்களின் | अस्य | இந்த |
| शतसहस्रेण | நூறுபேரத்தால் | बलस्य | சைன்யத்தின் |
| वृतः | சூழப்பட்டவனாய் | अग्रे | முன்னே |
| | | यातु | செல்லட்டும். |

फलमूलवता नील शीतकाननवारिणा । पथा मधुमता चाशु सेनां सेनापते नय ॥ १२ ॥

| | | | |
|---------------|--|----------|----------------|
| सेनापते | "சேனாபதியாகிய | मधुमता च | தேன் நிறைந்தது |
| नील | நீலனே! | | மான |
| फलमूलवता | { பழங்களும், கிழங்குகளும் நிறைந்துள்ளதும், | पथा | வழியாக |
| शीतकाननवारिणा | { குளிர்ந்த சோலைகளும், நீருழுள்ளதும் | आशु | விசைவில் |
| | | सेनां | சேனையை |
| | | नय | நடத்திச்செல். |

दूषयेयुर्दुरात्मानः पथि मूलफलोदकम् । राक्षसाः परिरक्षेथास्तेभ्यस्त्वं नित्यमुद्यतः ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|-----------------------------|
| दुरात्मानः | "கொடிய | खं | நீ |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| पथि | வழியில் | उद्यतः | ஊக்கிரதையுடையவனாய் |
| मूलफलोदकं | { கிழங்குகளையும் பழங்களையும், ஐஸ்களை யும் | तेभ्यः | அவர்களிடமிருந்து |
| दूषयेयुः | விஷயிட்டுக்கொடுப்பார்கள். | परिरक्षेथाः | பாதுகாத்துக் கொள்ளவேண்டும். |

निम्नेषु वनदुर्गेषु वनेषु च वनौकसः । अभिप्लुत्याभिपश्येयुः परेषां निहतं बलम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|-------------|------------------------------|
| निम्नेषु | “ பள்ளத்தாக்குக ளிலும் | अभिप्लुत्या | பாய்த்து |
| वनदुर्गेषु | ஆடர்ந்த காடுகளி லும் | निहतं | அக்குள்ள |
| वनेषु च | வனங்களிலும் | परेषां | இதரர்களின் |
| वनौकसः | வானர்கள் | बलं | சென்யத்தை |
| | | अभिपश्येयुः | ஆராய்ச்சி செய்ய வேண்டும். |

यच्च फल्गु बलं किञ्चित्तद्वैधोपयुज्यताम् । एतद्धि कृत्यं घोरं नो विक्रमेण प्रयुज्यताम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|--------------|---------------------------|
| यत् | “ ஏந்த | हि | ஏனெனில் |
| बलं | சென்யம் | नः | நமது |
| किञ्चित् | சிறிது | एतत् | இந்த |
| फल्गु | ஆற்றலற்றதோ | घोरं | பயங்கரமான |
| त्तव | அது | कृत्यं | காரியமானது |
| अस एव | இக்கேரேய | विक्रमेण च | ஆண்மைமையாலேயே |
| उपयुज्यतां | இருக்கச்செய்யப் பட்டும். | प्रयुज्यताम् | முடிக்கப்படவேண் டியது. |

सागरौघनिभं भीममयानीकं महाबलाः । कपिसिंहाः प्रकर्षन्तु शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १६ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|-------------|----------------------|
| सागरौघनिभं | “ கடல்கீர்பெருக்குக்குச் சமமானதும் | कपिसिंहाः | வானரத்தலைவர்கள் |
| भीमं | பயங்கரமானதுமான | अथ | இப்பொழுது |
| अयानीकं | சிறந்த சேனையை | शतशः | துற்றுக்கணக்காகவும் |
| महाबलाः | மகா பலசாலிகளாகிய | सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காகவும் |
| | | प्रकर्षन्तु | கடத்திச்செல்லட்டும். |

गजश्च गिरिसङ्काशो गवयश्च महाबलः । गवाक्षश्चाग्रतो यान्तु गवां दृष्टा इवर्षभाः ॥ १७ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|------------------------------|
| गिरिसङ्काशः | “ மனையை நிகர்த்த | अवर्षभाः | எருதுகள் |
| गजः च | கஜனும் | गवां | பசுக்களின் |
| महाबलः | மகா பலம்வொருந்திய | इव | முன்னே எப்படியோ அப்படியே, |
| गवयः च | கவயனும் | अग्रतः | முன்னே |
| गवाक्षः च | கவாக்ஷனும், | यान्तु | செல்லட்டும். |
| दृष्टाः | கொழுத்த | | |

यातु वानरवाहिन्या वानरः पुवतां वरः । पालयन् दक्षिणं पार्श्वमृषभो वानरर्षभः ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|---------------|------------------------|
| पुवतां | “ பாய்த்துசெல்பவர்க ளுக்குள் | वानरवाहिन्याः | வானரச்சேனைக்கு |
| वरः | சிறந்தவனும் | दक्षिणं | வலது |
| वानरर्षभः | வானரோத்தமனுமா | पार्श्वं | பக்கத்தை |
| अवर्षभः | நிஷபன் என்ற [கிய | पालयन् | பாதுகாத்துக் கொண்டு |
| वानरः | வானரன் | यातु | போகட்டும். |

गन्धहस्तीव दुर्धर्षस्तरस्वी गन्धमादनः । यातु वानरवाहिन्याः सव्यं पार्श्वमधिष्ठितः ॥ १९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|---------------|-------------------------|
| दुर्धर्षः | “ வெல்லமுடியாதவ னும் | वानरवाहिन्याः | வானரசேனையின் |
| गन्धहस्ती इव | கொழுத்த யானை யென | सव्यं | இடது |
| तरस्वी | மகா பலசாலியுமான | पार्श्व | பக்கத்தை |
| गन्धमादनः | கந்தமாதனன் | अधिष्ठितः | ஆக்ஞாபிக்கின்றவ னாய் |
| | | यातु | போகட்டும். |

यास्यामि बलमध्येऽहं बलौघमभिर्हर्षयन् । अधिरुह्य हनूमन्तमैरावतमिवेश्वरः ॥ २० ॥

| | | | |
|----------|-------------------------|--------------|-----------------------------|
| अहं | “ நான் | अधिरुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| ईश्वरः | தேவராஜன் | बलौघं | சைன்யவெள்ளத்தை |
| पैरावतं | ஐராவதத்தின்மேல் | अभिर्हर्षयन् | உகலா ஹப்படுத்திக் கொண்டு |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே, | बलमध्ये | சைன்யத்தின் மத்தி யில் |
| हनूमन्तं | ஹனுமான் மீது | यास्यामि | செல்லப்போகிறேன். |

अङ्गदेनैष संयातु लक्ष्मणश्चान्तकोपमः । सार्वभौमेन भूतेशो द्रविणाधिपतिर्यथा ॥ २१ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-----------|------------------------|
| भूतेशः | “ பரம்மகணக்களுக்கு அதிபதியான | अङ्गदेन | அங்கதன் மீது |
| द्रविणाधिपतिः | தனாதிபதி (குபேரன்) | अन्तकोपमः | யம, தர்மராஜனை யொத்த |
| सार्वभौमेन | சார்வபௌமனெனும் யானையின் மீது | एषः | இந்த |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே, | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணன் |
| | | संयातु च | செல்லட்டும். |

जाम्बवांश्च सुषेणश्च वेगदर्शी च वानरः । कुक्षराजो महासत्त्वः कुक्षि रक्षन्तु ते त्रयः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|-------------------|
| ते | “ அந்த | सुषेणः च | ஸுஷேணனும், |
| स्यः | மூவர்களாகிய | वेगदर्शी | வேகதர்சி என்ற |
| कुक्षराजः | குகுடிமன்னனும் | वानरः च | வானரனும் |
| महासत्त्वः | அனலில்லா ஆற்றலு | कुक्षि | வலிற்றுபாகத்தை |
| जाम्बवान् च | ஜாம்பவானும், [டைய | रक्षन्तु | பாதுகாக்கட்டும்.” |

राघवस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवो वाहिनीपतिः । व्यादिदेश महावीर्यान्वानरान्वानरर्षभः ॥ २३ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|--------------------------|
| वाहिनीपतिः | சேனைநாயகனும் | श्रुत्वा | சிறமேற்கொண்டு |
| वानरर्षभः | வானரசோத்தமனு மாகிய | महावीर्यान् | மகாபராக்கிரமசாலி களான |
| सुग्रीवः | சுகிரீவன் | वानरान् | வானரர்களை |
| राघवस्य | ரூராமருடைய | व्यादिदेश | அங்கனமே நியமித் தார். |
| वचः | ஆக்கினையை | | |

ते वानरगणाः सर्वे समुत्पत्य युयुत्सवः । गुहाभ्यः शिखरेभ्यश्च आशु पुपुविरे तदा ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|-------------|--------------------|
| ததா | அப்பொழுது | आशु | வினாவில் |
| ते वानरगणाः | ஆந்த வானரர்கள்கள் | गुहाभ्यः | குகைகளிலிருந்தும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | शिखरेभ्यः च | பர்வதிகரங்களிலி |
| युयुत्सवः | பொலில் ஆசைகொண் டவர்களாய் | समुत्पत्य | கொம்பி [குத்தும் |
| | | पुपुविरे | பறந்துசென்றார்கள். |

ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन च पूजितः । जगाम रामो धर्मात्मा ससैन्यो दक्षिणां दिशम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------|-------------------|
| வானரராஜன் | வானரமன்னனானும் | दक्षिणां | தெற்கு |
| लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணனானும் | दिशं | திக்கை நோக்கி |
| पूजितः | மரியாதை செய்யப்ப | ततः | அப்பொழுது |
| धर्मात्मा | தர்ம தர்மவாகிய[ட்ட | ससैन्यः | சைனியத்தோடு கூட |
| रामः | ராமர் | जगाम | பிரயாணமானார். [வே |

शतैः शतसहस्रैश्च कोटीभिरयुतैरपि । वारणाभैश्च हरिभिर्ययो परिवृतस्तदा ॥ २६ ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-------------|-----------------------|
| ததா | அப்பொழுது | अयुतैः अपि | பதினாயிரக்கணக்காகவும் |
| वारणाभैः | யானைகளை நிகர்த்த | शतसहस्रैः च | லக்ஷக்கணக்காகவும் |
| हरिभिः | வானரர்களால் | कोटीभिः च | கோடிக்கணக்காகவும் |
| शतैः | நூற்றுக்கணக்காகவும் | परिवृतः | சூழப்பட்டவராய் |
| | | ययौ | சென்றார். |

तं यान्तमनुयाति स महती हरिवाहिनी ॥ २७ ॥

| | | | |
|--------|--------------------------|-----------|---------------------|
| யான்த் | எழுந்தருளிச்செல் லும் | महती | அளவுகடந்த |
| तं | அவரை | हरिवाहिनी | வானரச்சேனை |
| | | अनुयाति स | பின்பற்றிச்சென்றது. |

हृष्टाः प्रमुदिताः सर्वे सुग्रीवेणाभिपालिताः । आप्णवन्तः पुवन्तश्च गर्जन्तश्च पुवङ्गमाः ॥

क्ष्वेलन्तो निनदन्तस्ते जग्मुवै दक्षिणां दिशम् ॥ २८ ॥

भक्षयन्तः सुगन्धीनि मधूनि च फलानि च । उद्वहन्तो महावृक्षान्मञ्जरीपुञ्जधारिणः ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|-------------------|----------------------------------|
| சுగிரீவே | சுகிரீவனால் | निनदन्तः | பெரும்கூச்சலிடுகிற வர்களும் |
| अभिपालिताः | பாதுகாக்கப்பட்ட | सुगन्धीनि | நறுமணமுள்ள |
| ते पुवङ्गमाः | ஆந்த வானரர்கள் | मधूनि च | தேன்களையும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | फलानि च | பழங்களையும் |
| हृष्टाः | உற்ஸரஹக்கொண்ட வர்களும் | भक्षयन्तः | புசிக்கின்றவர்களும் |
| प्रमुदिताः | களிப்புற்றவர்களும் | मञ्जरीपुञ्जधारिणः | பூக்கொத்துக்கள் விளக்குகிறதான |
| आप्णवन्तः | சூதிக்கின்றவர்களும் | महावृक्षान् | பெருளிருக்கங்களை |
| पुवन्तः च | கூத்தாடுகின்றவர்க ளும் | उद्वहन्तः च | கையிலேந்தியவர்களு |
| गर्जन्तः | ஆட்டகாசம் செய்கி ன்றவர்களும் | दक्षिणां | தென் [மாக |
| क्ष्वेलन्तः | சூதித்துத்தாளிச் சூதின்றவர்களும் | दिशं | திக்கைநோக்கி |
| | | जग्मुः वै | செல்லுற்றார்கள். |

अन्योन्यं सहसा दृष्ट्वा निर्वहन्ति क्षिपन्ति च । पततश्चाक्षिपन्त्यन्ये पातयन्त्यपरे परान् ॥

दृष्ट्वा: செருக்குற்ற ஆவர்கள்
 सहसा திடீரென
 अन्योन्यं ஒருவனையொருவன்
 निर्वहन्ति தூக்கிக்கொள்கிறார்
 கள்.
 क्षिपन्ति च எறிகிறார்கள்.
 अन्ये சிலர்

पतत: च கிழே விழுந்தவர்க
 कोप्यपार् த்து
 आक्षिपन्ति எனனம்செய்கின்றார்
 கள்.
 अपरे வேறுசிலர்
 परान् மற்றவர்களை
 पातयन्ति கிழே தள்ளுகிறார்கள்.

रावणो नो निहन्तव्यः सर्वे च रजनीचराः ।

रावणः "ராவணன்
 नः நம்மால்
 निहन्तव्यः கொல்லப்படவேண்டி.
 रजनीचराः ராசநிலைகள் [யவன்.
 सर्वे எல்லோரும்
 च அப்படியே கொல்லப்
 படவேண்டியவர்கள்"

इति गर्जन्ति हरयो राघवस्य समीपतः ॥

इति என்று
 हरयः வானரர்கள்
 राघवस्य ஸ்ரீராமரது
 समीपतः அருகில்
 गर्जन्ति அட்டகாசஞ்செய்கின்
 றனர்.

पुरस्ताद्दृष्यो वीरो नीलः कुमुद एव च ।

वीरः வீரனான
 दृष्यो: நிஷ்பனும்,
 नीलः च நீலனும்,
 कुमुदः एव குமுதனும்
 बहुभिः பல

पन्थानं शोधयन्ति स वानरैर्बहुभिः सह ॥

वानरैः வானரர்களோடு
 सह கூட
 पन्थानं வழியை
 पुरस्ताद् முன்பாக
 शोधयन्ति स சேர்த்துத்தார்கள்.

मध्ये तु राजा सुग्रीवो रामो लक्ष्मण एव च ।

रामः च ஸ்ரீராமரும்
 लक्ष्मणः एव லக்ஷ்மணரும்
 सुग्रीवः சுக்ரீவ
 राजा तु மன்னனுமாகிய
 शत्रुनिर्हणा: சத்ருஸம்ஹாரகராகி
 ய இவர்கள்

बहुभिर्वलिभिर्भीमैर्वृताः शत्रुनिर्हणाः ॥

बहुभिः பல
 भीमैः பயங்கரர்களான
 बलिभिः பலிஷ்டர்களால்
 मध्ये நடுவில்
 वृताः சூழப்பட்டிருந்தார்
 கள்.

हरिः शतबलिर्वीरः कोटीभिर्दशमिर्वृतः । सर्वमिको ह्यवष्टभ्य ररक्ष हरिवाहिनीम् ॥ ३४ ॥

वीरः சூரனாகிய
 शतबलिः சதபலியென்ற
 हरिः வானரன்
 दशभिः பத்து
 कोटीभिः கோடிகளால்
 वृतः சூழப்பட்டவனாய்

एकः हि. தான் ஒருவனை
 हरिवाहिनीं வானரசைநியமம்
 सर्वा எல்லாவற்றையும்
 अवष्टभ्य அருகிலிருந்து
 கொண்டு
 ररक्ष காத்தான்.

कोटीशतपरीवारः केसरी पनसो गजः । अर्कश्चातिवलः पार्श्वमेकं तस्याभिरक्षति ॥३५॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|--------|---|
| केसरी | கேசரீ | गजः | கஜனும் |
| कोटीशतपरीवारः | கூறுகோடி பரிவாரக் கனூடைபவனும் | अतिवलः | மகாபலசாலியான |
| तस्य | அதன் | अर्कः | அர்க்கனும் |
| एकं पार्श्व | ஒரு பக்கத்தை | च | அப்படியே (ஒவ்வொருவரும் ஒரு பக்கத்தைப் பாதுகாக்கிறார்கள்). |
| अभिरक्षति | பாதுகாக்கிறான். | | |
| पनसः | பனஸனும் | | |

सुपेणो जाम्बवांश्चैव कक्षैश्च बहुभिर्दृताः । सुग्रीवं पुरतः कृत्वा जवनं संरक्षतुः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|--------------|--------------------|
| सुपेणः च | ஸுபேணனும் | सुग्रीवं | சுகரீவனை |
| जाम्बवान् एव | ஜாம்பவானும் | पुरतः कृत्वा | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| बहुभिः कक्षैः च | பல கசடிகளால் | जवनं | தீன்பக்கத்தை |
| दृताः | சூழப்பட்டவர்களாய் | संरक्षतुः | ரகித்தார்கள். |

तेषां सेनापतिर्वीरो नीलो बानरपुङ्खवः । संपतन्पततां श्रेष्ठस्तद्गलं पर्वपालयन् ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|--------------------|
| तेषां | அவர்களுடைய | नीलः | நீலன் |
| सेनापतिः | சேனாபதியும் | संपतन् | பாய்த்துசென்று |
| वीरः | சூரனும் | तत् | அந்த [கொண்டே |
| पततां | பாய்த்துசெல்பவர் | गलं | சைனியத்தை |
| श्रेष्ठः | தலைவனும் [களில் | पर्वपालयन् | எங்கும் பாதுகாத்து |
| बानरपुङ्खवः | வானரோத்தமனு மாகிய | | வந்தான். |

दरीमुखः मजहुश्च रम्भोऽथ रभसः कपिः ।

| | |
|---------|-------------|
| दरीमुखः | தரீமுகனும் |
| मजहुः च | பிரஜைகளும் |
| रभसः | ரம்பனும் |
| रभसः | ரபஸனெனும் |
| कपिः च | வானரனுமாகிய |
| वीरः | வீரர்கள் |

एवं ते हरिशार्दूला गच्छन्तो बलदर्पिताः ।

सरांसि च सुफुल्लानि तटाकानि वनानि च

| | |
|--------------|--------------------------------|
| ते | அந்த |
| बलदर्पिताः | பலத்தால் செருக் சூற்ற |
| हरिशार्दूलाः | வானரோத்தமர்கள் |
| एवं | இவ்வாறு |
| गच्छन्तः | சென்றுகொண்டே |
| दुमलतायुतं | மரங்களும் கொடி களும் சிறந்த |
| सद्यं | ஸற்றவமெனும் |

सर्वतश्च ययुर्वीरास्त्वरयन्तः पुवङ्गमान् ॥

| | |
|------------|---------------------------|
| सर्वतः | சாற்புறத்திலும் |
| पुवङ्गमान् | வானரர்களை |
| वरयन्तः | தரீதப்படுத்திக் கொண்டு |

अथ ययुः

अपश्यंस्ते गिरिश्रेष्ठं सद्यं द्रुमलतायुतम् ॥

॥ ३९ ॥

| | |
|--------------|-----------------|
| गिरिश्रेष्ठं | மகியானையும் |
| च | இன்னும் |
| ते | அவர்கள் |
| सुफुल्लानि | நன்சூடகலர்ந்த |
| सरांसि | தாமரைநடைகளையும் |
| तटाकानि | தடாகங்களையும் |
| वनानि च | வனங்களையும் |
| अपश्यन् | கண்டார்கள். |

रामस्य शासनं ज्ञात्वा भीमकोपस्य भीतवत् । वर्जयन्नगराभ्याशांस्तथा जनपदानपि ॥
सागरौघनिभं भीमं तद्द्वानरबलं महत् । निःससर्पं महाघोषं भीमघोष इवार्णवः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------|---|--------------|----------------------------------|
| भीमघोषः | பயக்கரச்சப்தமிடும் | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| अर्णवः इव | சமுத்திரம்போல் | शासनं | ஆக்களுகைய |
| महाघोषं | பேரொலியுடையதும் | ज्ञात्वा | கிரமேற்கொண்டு |
| सागरौघनिभं | சமுத்திரத்தின் கீர்ப் பெருக்கை கிகர்த்து | भीतवत् | பயத்துடன்கூடிய தாய் |
| भीमं | பயக்கரமானதும் | नगराभ्याशान् | நகர அருகாமைப்பிர தேசங்களையும் |
| महत् | அளவிற்றத்தமான | तथा | அவ்வண்ணமே |
| तत् | அந்த | जनपदान् अपि | தேசங்களையும் |
| वानरबलं | வானரசேனை | वर्जयत् | விலக்கி |
| भीमकोपस्य | பயக்கரமாய் கோபம் வரும் | निःससर्पं | சென்றது. |

तस्य दाशरथेः पार्श्वे शूरास्ते कपिकुञ्जराः । तूर्णमापुपुवुः सर्वे सदृशा इव चोदिताः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|-----------|--------------------------------|
| ते | அந்த | सदृशाः इव | நற்குதிரைகள் எனவிய விரைவில் |
| शूराः | ஞானர்களாகிய | तूर्णं | அந்த |
| कपिकुञ्जराः | வானரோத்தமர்கள் | तस्य | அந்த |
| सर्वे | எல்லோரும் | दाशरथेः | ஸ்ரீராமரது |
| चोदिताः | உதவா ஹப்படுத்தி ஒட்டப்பட்ட | पार्श्वे | பக்கவில் |
| | | आपुपुवुः | பறந்துசென்றார்கள். |

कपिभ्यामूह्यमानौ तौ शुशुभाते नरोत्तमौ । महद्भवापिव संस्पृष्टौ ग्रहाभ्यां चन्द्रभास्करो ॥

| | | | |
|----------|------------------------------|------------------|---|
| कपिभ्यां | இரு வானரர்களால் | ग्रहाभ्यां | { நூருகிரகங்களோடு (சக்கிரபிரஹஸ்பதி களோடு, |
| उह्यमानौ | ஆக்கிக்கொண்டு போகப்படுகிற | संस्पृष्टौ | கூடிய |
| तौ | அந்த | चन्द्रभास्करो इव | சந்திர சூரியர்கள் போல் |
| नरोत्तमौ | புருஷோத்தமர்கள் | शुशुभाते | விளக்கினார்கள். |
| महद्भवां | மகா | | |

तमद्भृद्गतो रामं लक्ष्मणः शुभया गिरा । उवाच परिपूर्णार्थः स्मृतिमान्प्रतिभानवान् ॥

| | | | |
|---------------|---|----------|-----------------------------|
| परिपूर्णार्थः | { மனத்திருப்தியையே சர்வமுமாய்க்கொண்ட வரும் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| स्मृतिमान् | நல்ல ஞாபகசாலியும் | सं | அந்த |
| प्रतिभानवान् | { மேல்மேலும் விஷயங் கள் விளங்கப்பெற்ற வரும் | रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்ந்து |
| अद्भृद्गतः | அங்கதன்மீது அழக்த ருளியிருந்தவருமான | शुभया | இனிய |
| | | गिरा | கொற்கொண்டு |
| | | उवाच | பின்வருமாறு மொழி ந்தார். |

हतामवाप्य वेदेहीं क्षिप्रं हत्वा च रावणम् । समृद्धार्थः समृद्धार्थापयोध्यां प्रतियास्यसि ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|--------------|-----------------------------------|
| रावणं | “ ராவணனை | समृद्धार्थः | மேலூர்தம் கைகூடப் |
| क्षिप्रं | விரைவில் | | பட்டவராய் |
| हत्वा | கொன்றுவிட்டு, | समृद्धार्था | பொருளால் செழித்த |
| हतां | திருடிந் கொண்டு போகப்பட்ட | अयोध्यां | அயோத்திக்கு |
| वेदेहीं च | வைத்தெகியானாயும் | प्रतियास्यसि | திரும்பியெழுந்தரு ளப்போகிறீர். |
| अवाप्य | அடைந்த, | | |

महान्ति च निमित्तानि दिवि भूषां च राघव । शुभानि तव पश्यामि सर्वाण्येवार्थसिद्धये ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------------|--------------------|
| राघव | “ ஸ்ரீராம! | महान्ति | சிறந்த |
| तव | தேவரீரது | सर्वाणि | எல்லா |
| अर्थसिद्धये | காரியம் கைகூடும்பொ | शुभानि | நல்ல |
| दिवि च | ஆகாசத்திலும் [ருட்டு | निमित्तानि एव | சுருள்களையே |
| भूषां च | பூமியிலும் | पश्यामि | நான் காண்கின்றேன். |

अनुवाति शुभो वायुः सेनां मृदुहितः सुखः

| | | | |
|----------|--------------------------------|---------|-------------|
| वायुः | “ வாயுபகவான் | सुखः | ஐவியராய் |
| शुभः | மக்களகாமாய் | सेनां | சேனைக்கு |
| मृदुहितः | மிருதுவாய் அடிக்கி ன்றவராய் | अनुवाति | விசைன்றார். |

॥ ४७ ॥

पूर्णवल्गुस्वराश्वमे प्रवदन्ति मृगद्विजाः

| | | | |
|--------------|----------------------------|------------------|---------------------------|
| इमे | “ இங்குள்ள | पूर्णवल्गुस्वराः | நிகர்த்த இவிய குவிட்டு |
| मृगद्विजाः च | மிருகங்களும் பகலிக ளும் | प्रवदन्ति | கவகின்றன. |

॥ ४८ ॥

प्रसन्नाश्च दिशः सर्वा विमलश्च दिवाकरः ।

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|---|-------------------------------------|
| दिशः | “ திக்குகள் | उशनाश्च प्रसन्नार्चिरनु स्वां भार्गवो गतः ॥ | |
| सर्वाः च | எல்லாமும் | प्रसन्नार्चिः | தெளிவுற்ற ஒளிபு டைவவரும் |
| प्रसन्नाः | மாசற்ற விளங்குகின் றன. | भार्गवः | மிருகுமஹர்ஷியின் புதல்வருமான |
| दिवाकरः च | சூரியபகவானும் | उशनाः च | சக்கிரரும் |
| विमलः | நிர்மலமாகப்பிரகாசிக் கின்றார். | स्वा अनु गतः | தேவரீரக்கு பின்னை இருக்கின்றார். |

ब्रह्मराशिर्विशुद्धश्च शुद्धाश्च परमर्षयः । अर्चिष्मन्तः प्रकाशन्ते ध्रुवं सर्वे प्रदक्षिणम् ॥५०॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|------------|---------------------|
| ब्रह्मराशिः च | “ ஆருவமண்டலமும் | परमर्षयः | பரமர்ஷிகள் |
| विशुद्धः | மாசற்று விளங்குகி | सर्वे च | எல்லோரும் |
| शुद्धाः | பரிசுத்தர்களும் [தது. | ध्रुवं | தருவரை |
| अर्चिष्मन्तः | மிக்க ஒளிபுடையவர் களுமான | प्रदक्षिणं | வலம் வந்து |
| | | प्रकाशन्ते | விளங்குகின்றார்கள். |

विशङ्कुर्विमलो भाति राजर्षिः सपुरोहितः । पितामहवरोऽस्माकमिक्ष्वाकूणां महात्मनाम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|-----------------|
| महात्मनां | “மகா த்மாக்களாகிய | विशङ्कुः | நீர்சங்கு |
| इक्ष्वाकूणां | இசுத்வாகுவம்சத்த | सपुरोहितः | உபாத்தியாயருடன் |
| अस्माकं | நமது [வர்களுக்கும்] | | கடவே |
| पितामहवरः | சிறந்த மூதாதையரும் | विमलः | நிர்மலமாகவே |
| राजर्षिः | ராஜரிஷியுமான | भाति | விளங்குகிறார். |

विमले च प्रकाशेते विशाखे निरुपद्रवे । नक्षत्रवरमस्माकमिक्ष्वाकूणां महात्मनाम् ॥ ५२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|--------------|--|
| विशाखे | “இரட்டையான விசா கநகூத்திரங்கள் | महात्मनां | மகா த்மாக்களாகிய |
| निरुपद्रवे | க்ரூரக் கிரகசம்பந்த மில்லாதவைகளாய் | इक्ष्वाकूणां | இசுத்வாகுக்களுக்கும் |
| विमले | தெளிவுற்று | अस्माकं च | நமக்கும் |
| प्रकाशेते | பிரகாசிக்கின்றன. | नक्षत्रवरम् | மேன்மைபெற்று விள க்கும் நகூத்திரம்து. |

नैर्ऋतं नैर्ऋतानां च नक्षत्रमभिपीड्यते । मूलो मूलवता सृष्टो धूप्यते धूमकेतुना ॥ ५३ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|------------|---|
| नैर्ऋतं | “நிர்஋தியை தேவதை யாய்க்கொண்டதும் | अभिपीड्यते | பாபக்கிரகங்களால் பீ டிக்கப்பட்டிருக்கிறது. |
| नैर्ऋतानां च | அரக்கர்களுக்கூரியது மான | मूलः | மூலநகூத்திரம் |
| नक्षत्रं | (மூலம்) நகூத்திரமா னது | मूलवता | பக்கலிவிருக்கும் |
| | | धूमकेतुना | தூமகேதுவால் |
| | | सृष्टः | தீண்டப்பட்டதாய் |
| | | धूप्यते | எரிக்கப்படுகின்றது.” |

सर्वं चैतद्विनाशाय राक्षसानामुपस्थितम् । काले कालगृहीतानां नक्षत्रं ग्रहपीडितम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|------------------------------------|
| कालगृहीतानां | யமனுக்காப்பட்டு, | नक्षत्रं | நகூத்திரம் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களின் [விட்ட] | सर्वं च | முழுவதும் |
| विनाशाय | அழிவின்பொருட்டு | ग्रहपीडितं | க்ரஹத்தால் பீடிக்கப் பட்டதாயும் |
| काले | (அந்திக்)காலத்தில் | उपस्थितम् | ஏற்பட்டிருக்கிறது. |
| एतत् | இத்த | | |

प्रसन्नाः सुरसाश्रापो वनानि फलवन्ति च । प्रवान्त्यभ्यधिकं गन्धान्यथर्तुकुसुमा द्रुमाः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|---------------|--|
| भावः | “தீர்த்தங்கள் | यथर्तुकुसुमाः | { ருதுக்களில் எப்படி யோ அப்படியே புஷ் பங்களை யுடையவை களாய் |
| प्रसन्नाः | தெளிவாயும் | | |
| सुरसाः च | நல்ல ருசியுள்ளனவா யுமிருக்கின்றன. | गन्धान् | நதுமணக்களை |
| वनानि | வனங்கள் | अभ्यधिकं | மிகவும் |
| फलवन्ति च | கணிகளால் நிரம்பி யிருக்கின்றன. | प्रवान्ति | வீசுகின்றன. |
| द्रुमाः | விருகூதங்கள் | | |

व्यूहानि कपिसैन्यानि प्रकाशन्तेऽधिकं प्रभां । देवानामिव सैन्यानि सहस्रामे तारकामये ॥

प्रभो "பிரபுவே!
 व्यूहानि அணிரியாகுக்கப்பட்ட
 कपिसैन्यानि வானரசேனைகள்
 संग्रामे போரில்
 तारकामये கரவுத் திரைக்களின்
 மக் கியலை

देवानां தேவர்களுடைய
 सैन्यानि इव கைல்யங்களென
 अधिकं மிகவும்
 प्रकाशन्ते கிராம்குகின்றன.

एवमार्य समीक्ष्यैतान्भावो भवितुपर्देसि । इति भ्रातरमाश्वस्य ह्यः सौमित्रिरब्रवीत् ॥

आर्य "அர்யண்ணு!
 एतान् இவைகளை
 समीक्ष्य கவனித்து
 भीतः மனத்திருத்திகொண்டவராய்
 भवितुं ஆக
 अहंसि திருவுள்ளக்கொண்டனாகொண்டும்.

सौमित्रिः மக்தமணர்
 ह्यः உதலாஹத்துடனிருப்பவராய்
 इति एवं மேற்கண்டவாறும்
 भ्रातरं தமையனரை
 आश्वस्य தேந்தரவுயடுத்தி
 अब्रवीत् பேசினார்.

अथावृत्य महीं कृत्वा जगाम महती चमूः । ऋक्षवानरशार्दूलैर्नखदंष्ट्रायुर्भृता ॥ ५८ ॥

नखदंष्ट्रायुषैः { ககங்களையும் பற்களையும் ஆயுதங்களாகக் கொண்ட
 ऋक्षवानरशार्दूलैः சிறந்த கரடிகளாலும் வானரசர்களாலும்
 वृता கிறைந்துள்ள

महती चमूः பெரும் சேனையானது
 महीं சூழியை
 कृत्वा எங்கும்
 अथ இப்பொழுது
 आवृत्य மறைத்துக்கொண்டு
 जगाम சென்றது.

कराश्वैश्चरणाथैश्च वानरैरुत्थितं रजः । भीममन्तर्द्वेषे लोकं निवार्य सवितुः प्रभाम् ॥ ५९ ॥

वानरैः வானரசர்களால்
 कराश्वैः கைகளின் துணிகளால்
 चरणाथैः च கால்களின் துணிகளால்
 उत्थितं கிளப்பப்பட்ட
 रजः च புழுதி

सवितुः சூர்யபகவானது
 प्रभा ஓங்கிய
 निवार्य மறைத்துக்கொண்டு
 लोकं உலகை
 भीमं பயங்கரமாய்
 अन्तर्द्वेषे இருண்டையச் செய்தது.

सपर्वतवनाकाशां दक्षिणां हरिवाहिनी । छादयन्ती ययौ भीमा घामिबाम्बुदसंततिः ॥

भीमा பயங்கரமான
 हरिवाहिनी வானரசேனை,
 सपर्वत- } பர்வதங்கள், வனங்
 वनाकाशां } கள் வெளிப்பிரதே
 दक्षिणां } சங்களுள்ளிட்ட
 தென் திசையை

अम्बुदसन्ततिः மேகவாரிசை
 छां ஆகாசத்தை
 हव எவ்வண்ணமே
 छादयन्ती மறைத்துக்கொண்டு
 ययौ சென்றது.

उत्तरन्त्यां च सेनायां सन्ततं बहुयोजनम् । नदीस्रोतांसि सर्वाणि सस्यन्दुर्विपरीतवत् ॥

| | | | |
|----------------|----------------|--------------|-------------------|
| सेनायां | சேனை | नदीस्रोतांसि | நதிகளின் பிரவாஹ |
| सन्ततं | இடைவிடாமல் | सर्वाणि | எல்லாமும் [கங்கள் |
| उत्तरन्त्यां च | கடந்துசெல்லும் | बहुयोजनं | பல யோஜனை தூரம் |
| | பொழுது | विपरीतवत् | எதிர்த்து |
| | | सस्यन्दुः | பெருகிண. |

सरांसि विमलाम्भांसि द्रुमाकीर्णांश्च पर्वतान् । समान्भूमिप्रदेशांश्च वनानि फलवन्ति च ॥
मध्येन च समन्ताच्च तिर्यक्चाधश्च साऽऽविशत् ॥ ६२ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------|------------|------------------|
| विमलांभांसि | தெளிந்த நீர் நிரம்பிய | वनानि च | வனங்களையும் |
| सरांसि | தடாகங்களையும், | मध्येन च | இடைவெளியாலே |
| द्रुमाकीर्णां | மரங்களடர்ந்த | समन्तात् च | சற்றியே |
| पर्वतान् च | பர்வதங்களையும் | तिर्यक् च | சூழக்காலே |
| समान् | சமமாகவிருக்கும் | अधः च | கீழாகலே |
| भूमिप्रदेशान् च | பூமிப்பிரதேசங்களே | सा | அது |
| फलवन्ति | கணிகள் நிறைந்த [யும் | आविशत् | புகுந்துசென்றது. |

समावृत्य महीं कृत्वां जगाम महती चमूः ॥ ६३ ॥

| | | | |
|------|-----------|----------|-----------------|
| महती | பெரும் | कृत्वां | முழுவதையும் |
| चमूः | சேனையானது | समावृत्य | மறைத்துக்கொண்டு |
| महीं | உலகம் | जगाम | சென்றது. |

ते हृष्टमनसः सर्वे जग्मुर्मारुतरंहसः । हरयो राघवख्यार्थे समारोपितविक्रमाः ॥ ६४ ॥

| | | | |
|---------|----------------|------------|-----------------------|
| ते | அந்த | समारोपित- | } அர்ப்பணஞ்செய்து |
| हरयः | வானரர்கள் | विक्रमाः | |
| सर्वे | எல்லோரும் | हृष्टमनसः | மனத்திருப்தி கொண் |
| राघवस्य | சூராமருடைய | मारुतरंहसः | டவர்களாய் |
| अर्थे | ஐகங்கர்பத்தில் | जग्मुः | வரம்புகவானது ஆந் |
| | | | சென்றார்கள். [நலுற்று |

हर्षवीर्यबलोद्रेकान्दर्शयन्तः परस्परम् । यौवनोत्सेकजान्दर्पान्विविधांश्चक्रुर्ध्वनि ॥ ६५ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------------|------------------|
| हर्षवीर्य- | } உதஸாஹம், வீர்யம், | यौवनोत्सेकजान् | யௌவனத்தின் பெரு |
| बलोद्रेकान् | | பலம் இவைகளின் | |
| परस्परं | அதிகங்களை | विविधान् | பல |
| | ஒருவர் மற்ருருவரு | दर्पान् | முரட்டுத்தனங்களை |
| | க்கு | अध्वनि | வழியில் |
| दर्शयन्तः | காண்பித்துக்கொண்டு | चक्रुः | வெளிபிட்டார்கள். |

तत्र केचिद्भूतं जग्मुरुत्पेतुश्च तथाऽपरे । केचित्किल्बकिलां चक्रुर्वानरा वनगोचराः ॥ ६६ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------|--|
| वनगोचराः | வனத்தில் வசிப்பவர் | उत्पेतुः | { முன்சென்றவர்களை (நோக்கிப்) பறந்து சென்றார்கள். |
| वानराः | வானரர்கள் [கனாகிய | केचित् | |
| तत्र | அப்பொழுது | किल्बिलां | கில்கிலவெணும் |
| भूतं | வேகமாக | | சத்தத்தை |
| जग्मुः | சென்றார்கள். | चक्रुः | இட்டார்கள். |
| तथा | அப்படியே | | |
| अपरे च | வேறுசிலர் | | |

प्रास्फोटयंश्च पुच्छानि संनिजन्तुः पदान्यपि । भुजान्विक्षिप्य शैलांश्च द्रुमान्ये वभञ्जिरे ॥

| | | | |
|--------------|---|------------|------------|
| पुच्छानि च | வால்களையும் | अन्ये | வேறுசிலர் |
| प्रास्फोटयन् | உதறினார்கள், | भुजान् | கைகளை |
| पशानि अपि | கால்களையும் | विक्षिप्य | பார்ப்பி |
| संनिजन्तुः | { ஒன்றோடொன்றாய் அடித்துக்கொண்ட டார்கள். | शैलान् | மலைகளையும் |
| | | द्रुमान् च | वभञ्जिरे |

आरोहन्तश्च शृङ्गाणि गिरीणां गिरिमोचराः । महानादान्विमुञ्चन्ति श्वेलामन्ये प्रचक्रिरे ॥

| | | | |
|------------|--------------|-------------|--|
| गिरिमोचराः | வனவாசிகளாகிய | महानादान् | பெரும் கோஷக்களை |
| अन्ये | சிலர் | विमुञ्चन्ति | இட்டார்கள். |
| गिरीणां | மலைகளின் | श्वेलां च | மந்தவர்களைப்பார்த்த து பரிசாசத்தையும் |
| शृङ्गाणि | சிகரங்களில் | प्रचक्रिरे | செய்தார்கள். |
| आरोहन्तः | ஏறிக்கொண்டு | | |

ऊरुवेगैश्च ममृदुलताजालान्यनेकशः । जृम्भमाणाश्च विक्रान्ता विचिकीडुः शिलाद्रुमैः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|--------------|----------------------------------|
| ऊरुवेगैः | தொடையின் வேகத் | विक्रान्ताः | பாக்கிரமசாஸிக ளாய் |
| लताजालानि च | தால் | जृम्भमाणाः च | எங்கும் பறந்து கொண்டு |
| अनेकशः | கொடி சமூகங்களையும் ஏராளமாய் | शिलाद्रुमैः | மலைகளையும் மரங்களை யும்கொண்டு |
| ममृदुः | ஆழித்தார்கள். | विचिकीडुः | விளைவாடினார்கள். |

शतैः शतसहस्रैश्च कोटीभिश्च सहस्रशः । वानराणां तु घोराणां यूयैः परिवृता मही ॥७०॥

| | | | |
|----------|-----------------|-------------|--------------------|
| मही | பூமியானது | सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காகவும், |
| घोराणां | பயங்கரமான | शतसहस्रैः च | வந்தக்கணக்காகவும், |
| वानराणां | வானரர்களின் | कोटीभिः च | கொடிக்கணக்காகவும் |
| यूयैः | கூட்டங்களால் | तु | இப்பொழுது |
| शतैः | நூற்றுக்கணக்காக | परिवृता | மறைக்கப்பட்டிருக் |

सा स याति दिवारात्रं महती हरिवाहिनी । हृष्टा ममुदिता सेना सुग्रीवेणाभिरक्षिता ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|------------|-----------------------------|
| सा | ஆந்த | सेना | சேனை |
| हरिवाहिनी | வானரர்களால் நடத் தப்பட்டதும் | हृष्टा | மனத்திருப்தி கொண்டு |
| सुग्रीवेण | ஸுகிரீவனால் | ममुदिता | களித்து |
| अभिरक्षिता | பாதுகாக்கப்பட்டது மன | दिवारात्रं | பகலும் இரவும் |
| महती | பெரும் | याति स | சென்றுகொண்டே விரும்புது. |

वानरास्त्वरितं यान्ति सर्वे युद्धाभिनन्दिनः । सुमोक्षयिषवः सीतां मुहूर्तं कापि नासत ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------------|--------------|-------------------------------------|
| वानराः | வானர்கள் | सीतां | சிதைதெய்வாரை |
| सर्वे | எல்லோரும் | सुमोक्षयिषवः | விடுவிக்க ஆத்திரக் கொண்டவர்களால் |
| युद्धाभिनन्दिनः | போரில் உதனாற்றக் கொண்டவர்களால் | मुहूर्तं अपि | ஒருநிமிஷமேனும் |
| स्वरितं | விரைந்தே | क | எக்கும் |
| यान्ति | சென்றார்கள். | आसत न | தக்கவில்லை. |

ततः पादपसंवाधं नानामृगसमायुतम् । सह्यपर्वतमासेदुर्मलयं च महीधरम् ॥ ७३ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|------------|-----------------|
| ततः | பிறகு | सह्यपर्वतं | ஸற்றுயபர்வதத்தை |
| पादपसंवाधं | மரங்களடர்ந்ததும் | मलयं | மலய [யும்] |
| नानामृगसमायुतं | பலமிருகங்களால் வசி க்கப்பெற்றதுமான | महीधरं च | பர்வதத்தையும் |
| | | आसेदुः | அடைந்தார்கள். |

काननानि विचित्राणि नदीप्रसवणानि च । पश्यन्नभिययौ रामः सह्यस्य मलयस्य च ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|----------------|-----------------------------|
| रामः | ராமர் | काननानि | சோலைகளையும் |
| सह्यस्य | ஸற்றுயமலைஐயுடைய யும் | नदीप्रसवणानि च | நதிகளையும் அருவி களையும் |
| मलयस्य च | மலயமலையுடைய | पश्यन् | பார்த்துக்கொண்டே |
| विचित्राणि | அழகிய [யும்] | अभिययौ | சென்றார். |

धकुलांस्तिलकांश्चूतानशोकान्सिन्धुवारकान् । करवीरांश्च तिमिशान्भञ्जन्ति स धुवङ्गमाः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|---------------|----------------------------|
| धुवङ्गमाः | வானர்கள் | सिन्धुवारकान् | கொச்சிமரங்களையும் |
| धकुलान् | வகுள விருகங்க ளையும் | करवीरान् | அலரிகளையும் |
| तिलकान् | மஞ்சாயமரங்களையும் | तिमिशान् च | திமிசங்களையும் |
| चूतान् | மாமரங்களையும் | भञ्जन्ति स | முறித்துவிழ்த்தினா கள். |
| अशोकान् | அசோகமரங்களையும் | | |

अङ्गोलांश्च करञ्जांश्च पृक्षन्यग्रोधतिन्दुकान् । जम्बूकामलकान्नीपान्भञ्जन्ति स पृवङ्गमाः ॥

| | | | |
|----------------|---|---------------|------------------------|
| पृवङ्गमाः | வானரர்கள் | जम्बूकामलकान् | காவல்மரங்களையும் |
| अङ्गोलांश्च | அழிஞ்சில்களையும் | | செல்லிமரங்களையும் |
| करञ्जान् | புங்குகளையும் | नीपान् च | கடம்புகளையும் |
| पृक्षन्यग्रोध- | } இரளிகளையும், ஆல மரங்களையும் திந்து | भञ्जन्ति स | முறித்துவிட்டுத் தினர் |
| तिन्दुकान् | | | கள். |
| | கமலங்களையும் | | |

प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः । वायुवेगप्रचरिताः पुष्पैस्वकिरन्ति गाम् ॥७७॥

| | | | |
|--------------|----------------|------------------|---------------|
| रम्येषु | அழகிய | वायुवेगप्रचरिताः | வாயுவேகத்தால் |
| प्रस्तरेषु च | சமமான பிரதேசக் | | அரைவனவாய் |
| | களிலும் | पुष्पैः | புஷ்பங்களால் |
| विविधाः | பலவகை | गां | பூமியில் |
| काननद्रुमाः | காட்டுமரங்கள் | अवकिरन्ति | துவின. |

मारुतः सुखसंस्पर्शो वाति चन्दनशीतलः । पर्पदैरनुकूलञ्चिर्वनेषु मधुगन्धिषु ॥ ७८ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|--------------------|
| मारुतः | வாயுபகவான் | सुखसंस्पर्शः | சுகஸ்பரிசுமுதையவ |
| मधुगन्धिषु | தேன்மணம் கமழும் | | ராய் |
| वनेषु | வனங்களில் | चन्दनशीतलः | சந்தனம்போல் குளிர் |
| अनुकूलञ्चिः | இடைவிடாது பாடும் | | ச்சியாய் |
| पर्पदैः | வண்டுகளோடு | वाति | விசகிருர். |

अधिकं शैलराजस्तु धातुभिः सुविभूषितः

॥ ७९ ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|---------------------------|
| शैलराजः तु | மலைபரசும் | अधिकं | மிகவும் |
| धातुभिः | காணிக்கற்களால் | सुविभूषितः | அழகுவாய்த்து விளங்கிற்று. |

धातुभ्यः प्रसृतो रेणुर्वायुवेगविघटितः । सुमहद्वानरानीकं छादयामास सर्वतः ॥ ८० ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|-----------|-----------------|
| धातुभ्यः | காணிக்கற்களினின்றும் | सुमहत् | மிகப்பெரிய |
| प्रसृतः | கிளம்பிய | वानरानीकं | வானரசுகளையை |
| रेणुः | ஆளி | सर्वतः | எதற்புறமும் |
| वायुवेगविघटितः | காற்றின் வேகத்தால் | छादयामास | மறைத்துவிட்டது. |
| | அடிக்கப்பட்டது | | |

गिरिप्रस्थेषु रम्येषु सर्वतः संप्रपुष्पिताः । केतव्यः सिन्धुवाराश्च वासन्त्यश्च मनोरमाः ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|---------------|---------------|
| रम्येषु | அழகிய | केतव्यः | தாழைகளும் |
| गिरिप्रस्थेषु | மலைத்தாழ்வாசை | सिन्धुवाराः च | செய்ச்சிகளும் |
| सर्वतः | எங்கும் [களில் | मनोरमाः | அழகிய |
| संप्रपुष्पिताः | மனமுதலாய்து காவியக் | वासन्त्यः च | முல்லைகளும் |
| | கிட்டுகாண்டிருந்த | | |

माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च पुष्पिताः । चिरिविल्वा मधूकाश्च वकुलाः प्रियकास्तथा ॥
स्फूर्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः । चूताः पाटलयश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥
सुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिशुपाः कुटजास्तथा । धवाः शालमलयश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा ॥
हिन्तालास्तिमिशश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा । नीलाशोकाश्च वरणा अङ्गोलाः पद्मकास्तथा ॥
पुवमानैः पुवङ्गैस्तु सर्वे पर्याकुलीकृताः ॥ ८५ ॥

| | |
|---------------------|-----------------------------------|
| गन्धपूर्णाः | வாசனை நிரம்பிய |
| माधव्यः च | மாதவி எனும் மூலிகைகளும் |
| पुष्पिताः | பூத்த |
| कुन्दगुल्माः च | குருந்தப்புதர்களும் |
| चिरिविल्वाः | புங்கமரங்களும் |
| मधूकाः च | இலுப்பை மரங்களும் |
| वकुलाः | மகிழ்மரங்களும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| प्रियकाः | பந்துகங்களும் |
| स्फूर्जकाः च | ஸ்பூர்ஜகங்களும் |
| तिलकाः एव | திலகங்களும் |
| नागवृक्षाः च | செருகப்பூமரங்களும் |
| पुष्पिताः | நன்குப் பூத்த |
| चूताः च | மாமரங்களும் |
| पाटलयः एव | பாடீரிமரங்களும் |
| पुष्पिताः | பூத்த |
| कोविदाराः च | மலைபகத்திகளும் |
| सुचुलिन्दार्जुनाः च | முசுளிந்தங்களும் மருதமரங்களும் |
| शिशुपाः एव | சிம்சுபங்களும் |

| | |
|----------------|---------------------|
| कुटजाः तथा | வெட்பாலைகளும் |
| धवाः च | தவமரங்களும் |
| शालमलयः एव | இலவுகளும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| रक्ताः | சிவந்த |
| कुरवकाः | மருதாணிகளும் |
| हिन्तालाः च | கந்தற்பனைகளும் |
| तिमिशाः एव | திமிசமரங்களும் |
| चूर्णकाः | சூர்ணகமரங்களும் |
| तथा | அப்படியே |
| नीपकाः | கடம்புகளும் |
| नीलाशोकाः च | நீலாசோகமரங்களும் |
| वरणाः | மரவளிக்கமரங்களும் |
| अङ्गोलाः | அழிஞ்சில்களும் |
| तथा | அப்படியே |
| पद्मकाः | பத்மகங்களும் |
| सर्वे तु | அனைத்தும் |
| पुवमानैः | பறந்துசெல்லும் |
| पुवङ्गैः | வானசர்கனரல் |
| पर्याकुलीकृताः | நிலைகுலைக்கப்பட்டன. |

वाप्यस्तस्मिन्नारौ शीताः पल्वलानि तथैव च । चक्रवाकानुचरिताः कारण्डवनिषेविताः ॥
पुवैः क्रौञ्चैश्च संकीर्णा वराहमृगसेविताः ॥ ८६ ॥
ऋक्षैस्तरक्षुभिः सिंहैः शार्दूलैश्च भयावहैः । व्यालैश्च बहुभिर्भापैः सेव्यमानाः समन्ततः ॥

| | |
|------------------|--|
| वस्मिन् | அதே |
| शिरौ | பர்வதத்தில் |
| चक्रवाकानुचरिताः | { சக்கிரவாகங்களால் வசிக்கப்பெற்றவை களும் |
| कारण्डवनिषेविताः | { காண்டவங்களால் வசிக்கப்பெற்றவை களும் |

| | |
|-------------|---|
| पुवैः | நீர்காக்கைகளாலும் |
| क्रौञ्चैः च | க்ரௌஞ்சங்களாலும் |
| संकीर्णाः | நிரம்பியவைகளும் |
| वराहमृग- | பன்றிகள், மான்கள் இவைகள் வசிக்கப் பெற்றவைகளும், |
| सेविताः | |
| ऋक्षैः | காடிகளாலும் |
| तरक्षुभिः | சிறுத்தைகளாலும் |

| | |
|-------------|----------------|
| सिंहैः | சிங்கங்களாலும் |
| भयावहैः | பயங்கரமான |
| शार्ङ्गैः च | புலிகளாலும் |
| बहुभिः | பல |
| भीमैः | பயங்கரமான |
| प्यालैः च | யானைகளாலும் |

| | |
|------------|--------------------|
| समन्तः | எங்கும் |
| सेवमानाः | சஞ்சரிக்கப்பட்டவை |
| शीताः | குளிர்ந்த [களுமான |
| वाप्यः | நடைவாழிகளும் |
| तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| पल्लवानि च | குட்டைகளுமிருந்தன. |

पञ्चैः सौगन्धिकैः फुल्लैः कुमुदैश्चोत्पलैस्तथा । वारिजैर्विविधैः पुष्पै रम्यास्तत्र जलाशयाः ॥

| | |
|------------|--------------------|
| तत्र | அங்கிடத்தில் |
| फुल्लैः | மலர்ந்த |
| पञ्चैः | தமரைகளாலும் |
| सौगन्धिकैः | செக்கழைநீர்களாலும் |
| कुमुदैः | ஆம்பல்களாலும் |
| तथा | அப்படியே |

| | |
|-----------|-------------------|
| उपलैः | கருநெய்தல்களாலும் |
| विविधैः | பல |
| वारिजैः | ஐந்திலுண்டாகும் |
| पुष्पैः च | புஷ்பங்களாலும் |
| रम्याः | அழகுவாய்ந்த |
| जलाशयाः | ஊடகள் இருந்தன. |

तस्य सातुषु कूजन्ति नानादिजमणास्तथा

॥ ८९ ॥

| | |
|--------|---------------|
| तस्य | அதனது |
| सातुषु | தரழ்வனர்களில் |
| तथा | அப்படியே |

| | |
|-------------|-------------------------|
| नानादिजमणाः | பல பறவைகணங்கள் |
| कूजन्ति | கூய்க்கொண்டிருக்கின்றன. |

स्नात्वा पीत्वोदकान्यत्र जले क्रीडन्ति वानराः । अन्योन्यं ग्रावयन्ति स शैलमारुह्य वानराः ॥

| | |
|-----------|----------------------|
| अथ | அங்கிடத்தில் |
| वानराः | வானரர்கள் |
| स्नात्वा | ஸ்னானம்பண்ணி |
| उदकानि | நீர்த்தங்களை |
| पीत्वा | அருந்தி |
| जले | ஊலத்தில் |
| क्रीडन्ति | விளையாடுகின்றார்கள். |

| | |
|--------------|------------------------|
| वानराः | வானரர்கள் |
| शैलं | மலைமீது |
| आरुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| अन्योन्यं | ஒருவர்மீதொருவர் |
| ग्रावयन्ति स | வாரி இறைக்கின்றார்கள். |

फलान्यमृतगन्धीनि मूलानि कुसुमानि च । बुभुजुर्वानरास्तत्र पादपानां मदोत्कटाः ॥

| | |
|-----------|-----------------|
| तत्र | அங்கிடத்தில் |
| मदोत्कटाः | செருக்குத்த |
| वानराः | வானரர்கள் |
| पादपानां | விருக்தங்களுடைய |

| | |
|-------------|--------------------|
| अमृतगन्धीनि | அமிருதங்கொண்ட |
| फलानि | பழங்கொண்டும் [கும் |
| मूलानि | கீழங்கொண்டும் |
| कुसुमानि च | புஷ்பங்களொண்டும் |
| बुभुजुः | புகித்தார்கள். |

द्रोणमात्रप्रमाणानि लम्बमानानि वानराः । ययुः पिवन्तो हृष्टास्ते मधूनि मधुपिङ्गलाः ॥

| | |
|-------------|--------------------|
| मधुपिङ्गलाः | தேன் போன்ற |
| ते | அந்த [நிறமுடைய |
| वानराः | வானரர்கள் |
| हृष्टाः | களிப்புற்றவர்களாய் |

| | |
|---------------------|-------------------|
| द्रोणमात्रप्रमाणानि | பதக்களவுகொண்டு |
| लम्बमानानि | தொக்கிக்கொண்ட |
| मधूनि | தேன்களை [குக்கும் |
| पिवन्तः | குடித்துக்கொண்டு |
| ययुः | சென்றார்கள். |

पादपानवभञ्जन्तो विकर्षन्तस्तथा लताः । विधमन्तो गिरिवरान्प्रययुः पुवर्गर्षभाः ॥९३॥

புவர்ப்பா: வானரோத்தமர்கள்
 पादपान् விருஷங்களை
 अवभञ्जन्तः முறித்து தள்ளிக்
 கொண்டும்
 तथा அவ்வண்ணமே

लता: கொடிகளை
 विकर्षन्तः இழுத்துக்கொண்டும்
 गिरिवरान् சிறந்த மலைகளை
 विधमन्तः நொறுக்கிக்கொண்டும்
 प्रययुः சென்றார்கள்.

वृक्षेभ्योऽन्ये तु कपयो नर्दन्तो मधुदर्पिताः । अन्ये वृक्षान्प्रपद्यन्ते प्रपतन्त्यपि चापरे ॥

अन्ये अपरे च சிந்திலை
 कपयः வானரர்கள்
 मधुदर्पिताः தேன் வெநிகொண்டி
 नर्दन्तः ஆர்ப்பார்க்கின் தவா
 களாய்
 वृक्षेभ्यः तु மரக்களிலிருந்து

प्रपतन्ति பூமியில் குதிக்கின்றார்
 अन्ये अपि வேறுகிலிரா [கள்,
 वृक्षान् மரக்களில்
 प्रपद्यन्ते பாய்ந்தேறுகின்றார்
 கள்.

वभूव वसुधा तैस्तु संपूर्णा हरियूथपैः । यथा कलमकेदारैः पकैरिव वसुन्धरा ॥ ९५ ॥

वसुधा பூமியானது
 तैः அந்த
 हरियूथपैः வானரச்சிகிரேஷ்டர்
 वसुन्धरा பூமியானது [களால்,
 पकैः கன்றாக முற்றிய

कलमकेदारैः சென்னெற்பயிர்களால்
 यथा तु எவ்வண்ணமே,
 संपूर्णा நிறைந்திருந்ததாய்
 इव முற்றிலும்
 वभूव திகழ்ந்தது.

महेन्द्रमथ संश्राप्य रामो राजीवलोचनः । अध्यारोहन्महाबाहुः शिखरं द्रुमभूषितम् ॥

अथ அப்பொழுது
 महाबाहुः மகாபாகுவும்
 राजीवलोचनः செந்தாமரைக் கண்
 रामः ஸ்ரீராமர் [ணருமாகய
 महेन्द्रं மகேந்திர பர்வதத்தை

संश्राप्य அடைந்து,
 द्रुमभूषितं மரக்களால் அழ
 குற்று விளக்கும்
 शिखरं சிகரத்தில்
 अध्यारोहत् ஏறினார்.

ततः शिखरमारुह्य रामो दशरथात्मजः । कूर्ममीनसमाकीर्णमपश्यत्सलिलाकरम् ॥ ९७ ॥

दशरथात्मजः தசரதர்திருக்குழுமார
 ராஜிய
 रामः ஸ்ரீராமர்
 शिखरं சிகரத்தில்
 आरुह्य ஏறி

ततः அவ்விடத்திலிருந்து
 कूर्ममीनसमाकीर्णं ஆமை, மீன் இவைகள்
 சிரம்பிய
 सलिलाकरं சமுத்திரத்தை
 अपश्यत् பார்த்தார்.

ते सर्वं समतिक्रम्य मलयं च महागिरिम् । आसेदुरानुपूर्व्येण समुद्रं भीमनिस्वनम् ॥९८॥

ते அவர்கள்
 सर्वं சற்றையமகையையும்
 मलयं மலையமென்ற
 महागिरिं च மகாபர்வதத்தையும்

समतिक्रम्य கடந்து
 भीमनिस्वनं பயங்கரமாக ஒலிக்கும்
 समुद्रं கடலை
 अनुपूर्व्येण வரிசை தவறாது
 आसेदुः அடைந்தார்கள்.

अवरुद्ध जगामाशु वेलावनमनुत्तमम् । रापो रमयतां श्रेष्ठः समुग्रीवः सलक्ष्मणः ॥ १९ ॥

| | | | |
|--------------|---|---------|---------------------------|
| ரமயதர் ஷ்ரே: | { வர்ணா ரூடைய மணங்க கொடியும் கவர் கிள் நவர் காநி ரூத் தமராகிய | அவரூடி | இறங்கி |
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | அனுமம் | மிகச்சிறந்த |
| சமூகீவ: | சுக்ரீ கர்ஷ்ணமும் | வேலாவன் | கடற்கரைக்கானகற் திற்கு |
| சலக்ஷ்மண: | வந்திரணரோமும் | ஆசு | விசாரலில் |
| | | ஜகாம | வந்துசெர்ந்தார். |

अथ धौतोपलतलां सोयोधैः सहसोत्थितैः । वेलासासाथ विपुलां रापो वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------|---|---------|--------------|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | விபுலர் | விசாரலமான |
| சஹசோத்திதீ: | திடீர் திடீர் என்று கி | வேலர் | கரையை |
| சோயோதீ: | பேரகைகாரல் [சம்பும் | ஆசாசு | அகடத்து |
| தீதீதீபலதலர் | { நன்கு கழுவுப்பட்ட கற்பா கையேசரக்க கொடியுடைய | வசன் | ஒரு சொல்லை |
| | | அத | பின் வருமாறு |
| | | அபரவீந் | மொழிந்தார் : |

एते वयमनुप्राप्ताः सुग्रीव वरुणालयम् । इहेदानीं विचिन्ता सा या नः पूर्वं समुत्थिता ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-----------|-----------------|
| சுகீவ | * சுக்ரீவ ! | புர்வ | இதற்கு முந்தீ |
| புதீ | இந்த | யா | எந்தவொரு |
| வயம் | காம் | விசிந்தா | கவலையோ, |
| வரூணாலயம் | சமுத்திரத்திற்கு | சா | அதுவே |
| அனுபூதா: | வந்துசெர்ந்துவிட் டோம். | இஹ | இவ்விடத்தில் |
| | | இஹானீ | இப்பொழுது |
| ந: | நமக்கு | சமூத்திதா | உண்டாகிவிட்டது. |

अतः परमतीरोऽयं सागरः सरितां पतिः । न चायमनुपायेन शक्यस्तरितुमर्णवः ॥ १०२ ॥

| | | | |
|-------------|--|---------------|-----------------------------|
| சரீதர் பதீ: | நதிகளின் பதீயும் | அயம் | இக்க |
| பரமதீரீ: | { வெகுதூரத்திற்குப் பால் கரையைவுண்ட யதுமாகிய | அர்ணவ: | ஸமுத்திரமானது |
| சாஹர: | ஸமுத்திரம் | அனுபூதீந வ | நர்ஸித உபாயமும் இல்லாமல் |
| அயம் | இது. | அத: | இக்கிருந்து |
| | | தரீது ந சக்ய: | தாண்ட முடியாதது. |

तदिहैव निवेशोऽस्तु मन्त्रः प्रस्तूयतामिति । यथेदं वानरबलं परं पारमवामुयात् ॥ १०३ ॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------|-------------------------|
| தந் | ஆகையால் | பர் பார் | கக்கரையை |
| இஹ எவ | இவ்விடத்திலேயே | யதா | எவ்வாறு |
| நிவீச: | செணையிறங்குதல் | அவாஸுயாத் | அடையுமோ, |
| அஸ்து | எற்படும். | இதீ | அதைப்பற்றி |
| இஹ | இந்த | மந்த: | மந்திரா கொசுணையா னது |
| வானரவலம் | வானரகைவம் | பரஸூயாத் | செய்யப்பட்டும் ॥ |

इतीव स महाबाहुः सीताहरणकर्षितः । रामः सागरमासाद्य वासमाज्ञापयत्तदा ॥१०४॥

| | | | |
|---------------------|---|-----------|------------------|
| ச: | இந்த | सागरं | சமுத்திரத்தை |
| महाबाहुः | மஹாபாகுவும் | आसाद्य | அடைந்து |
| सीताहरण- कर्षितः | ஸீதாஹேஷ்டின் அப ஹரணத்தால் கிண்த கொந்து கிடக்கின்ற வருமாகிய | तदा | அப்பொழுது |
| | | वासं | தங்குசுலைப்பற்றி |
| | | इति इव | பின்வருமாறு |
| | | आज्ञापयत् | ஆக்ஞாபித்தருளி |
| रामः | ராமர் | | ஊர்: |

सर्वाः सेना निवेश्यन्तां वेलायां हरिपुङ्गव । संपाप्तो मन्त्रकालो नः सागरस्येह लङ्घने ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|-------------|----------------------------|
| हरिपुङ्गव | “வானரேரத்தம்! | लङ्घने | தாண்டும் விஷயத் தில் |
| सर्वाः सेनाः | சேனைகளைல்லாமும் | मन्त्रकालः | ஆலோசனைசெய்யும் காலமானது |
| वेलायां | கரையில் | इह | இப்பொழுது |
| निवेश्यन्तां | இறங்கிவைக்கப் பட்டும்; | नः | நமக்கு |
| सागरस्य | சமுத்திரத்தை | सम्प्राप्तः | வந்துவிட்டது. |

स्वां स्वां सेनां समुत्सृज्य मा च कश्चित्कुतो व्रजेत् । गच्छन्तु वानराः शूरा ह्येयं छन्नं भयं च नः॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|----------|---------------------|
| कश्चित् | “ஒருவனும் | वानराः | வானர |
| स्वां स्वां | அவனவனது | शूराः च | சூரர்கள் மட்டும் |
| सेनां | சைனியத்தை | गच्छन्तु | வெளியில் போகட்டும். |
| समुत्सृज्य | விட்டுவிட்டு | छन्नं | சுடாய் செய்யப்பட்ட |
| कुतः | எக்காரணத்தாக கொண்டும் | भयं | ஆபத்து [முருக்கும் |
| | | नः | நமக்கு |
| मा व्रजेत् | போகக்கூடாது. | इयं च | அறியத்தக்கதே.” |

रामस्य वचनं श्रुत्वा सुग्रीवः सहलक्ष्मणः । सेनां न्यवेशयत्तारे सागरस्य द्रमायुते ॥१०७॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|-----------------|
| सुग्रीवः | சகீவன் | सागरस्य | சமுத்திரத்தினது |
| सहलक्ष्मणः | சஹ்லக்ஷ்மணரோடு கூ | द्रमायुते | மரக்களடர்ந்த |
| रामस्य | ராமருடைய [டவே | तारे | கரையில் |
| वचनं | ஆக்கினையை | सेनां | சேனையை |
| श्रुत्वा | கிரமேற்கொண்டு | न्यवेशयत् | தங்கச்செய்தார். |

विराज समीपस्थं सागरस्य च तद्दलम् । मधुपाण्डुजलः श्रीमान्द्वितीय इव सागरः ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|----------|---------------|
| सागरस्य | சமுத்திரத்தினுடைய | श्रीमान् | அழகிய |
| समीपस्थं | பக்களில் தங்கியிருந்த | द्वितीयः | இரண்டாவது |
| तद् | அந்த | सागरः | சமுத்திரம் |
| दलं | சேனை | इव च | போலவே |
| मधुपाण्डुजलः | தென்போல் பிங்கள வண்ணமுற்ற | विराज | பிரகாசித்தது. |

वेलावनमुपागम्य ततस्ते हरिपुङ्गवाः । निविष्टाः परमे पारं काङ्क्षमाणा महोदधेः ॥१०९॥

| | | | |
|-------------|---------------|--------------|---------------------|
| ते | அந்த | परमे पारं | அக்கரைவைய |
| हरिपुङ्गवाः | வாணரிடத்தினர் | काङ्क्षमाणाः | காண ஆவல்கொண்டு |
| वेलावनं | கணரின் வளத்தை | ततः | அவ்விடத்தில் |
| उपागम्य | அடைந்தது | निविष्टाः | தங்கியிருந்தார்கள். |
| महोदधेः | பெருங்கடலின் | | |

तेषां निविशमानानां सैन्यसन्नाहनिस्वनः । अन्तर्धाय महानादपर्णवस्य प्रशुश्रुवे ॥११०॥

| | | | |
|--------------|---|-------------|-----------------|
| तेषां | அவர்கள் | अर्णवस्य | சமுத்திரத்தினது |
| निविशमानानां | தங்கியிருக்கும் | महानादं | பேரொலியை |
| | பொழுது | अन्तर्धाय | அடக்கிக்கொண்டு |
| सैन्यसन्नाह- | } சைனியங்களின் போ நிலை உற்சாகத்தால் உண்டான சத்தம ளது | प्रशुश्रुवे | கேட்டது. |
| निस्वनः | | | |

सा वानराणां ध्वजिनी सुग्रीवेणाभिपालिता । त्रिधा निविष्टा महती रामस्यार्थपराऽभवत् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|--|
| सुग्रीवेण | சுகிரீவனால் | निविष्टा | தங்கச்செய்யப்பட்ட தது. |
| अभिपालिता | சகிக்கப்பட்ட | सा | அது |
| वानराणां | வானரர்களின் | रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய |
| महती | பெரும் | अर्थपरा | } சைங்கரியம் ஒன்றை யே சர்க்கமாய்க்கொ ண்டதாய் விளங்கிற்று. |
| ध्वजिनी | சேனை | अभवत् | |
| त्रिधा | மூன்று வகுப்பாக | | |

सा महार्णवमासाद्य हृष्टा वानरवाहिनी । वायुवेगसमाधूतं पश्यमाना महार्णवम् ॥ ११२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------------|-----------------------------|
| वामरवाहिनी | வானரசைனியம் | वायुवेगसमाधूतं | வாயுவேகத்தால் அலைப்புண்ட |
| महार्णव | சமுத்திரத்தை | महार्णवं | சமுத்திரத்தை |
| आसाद्य | அடைந்தது | पश्यमाना | பார்ந்தவண்ணமே யிருந்தது. |
| हृष्टा | களிப்புற்றிருந்தது. | | |
| सा | அது | | |

दूरपारमसंवाधे रक्षोगणनिषेवितम् । पश्यन्तो वरुणावासं निषेदुर्हरियूथवाः ॥ ११३ ॥

क्षणक्रयहं घोरं क्षपादौ दिवसज्ञये । हसन्तमिव फेनौर्धर्तुल्यन्तमिव चोर्मिभिः ॥ ११४ ॥

चन्द्रोदयसमाधूतं प्रतिचन्द्रसमाकुलम् । चण्डानिलमहायाहैः कीर्णं तिमितिमिङ्गलैः ॥

दीप्तभोगैरिवाकीर्णं भुजगैर्भुजगालयम् । अवगाढं महासच्चैर्नानाशैलसमाकुलम् ॥

सुदुर्गं दुर्गमार्गं तमगाधमसुरालयम् ॥ ११६ ॥

| | | | |
|--|---|---|--|
| हरियूथपाः दूरपारं | காரனாச்சீரோஷ்டர்கள் வெகுதூரத்திற்கப் பால் கரையுள்ளதும் | चण्डानिल- } महामाहैः } | புயற்காற்றை விகர்த்த கொடிய முதலைகளும் |
| असंबाधं रक्षोगण- निषेवितं } | மிகப் பார்த்ததும் ராட்சஸ்கணங்களால் வசிக்கப்பெற்றதும் | सिभितिमिङ्गुलैः | { திரியெனும் பெரும் மீன்களாலும் திரிக ளைத்தின்னும் பெரு மீன்களாலும் |
| क्षणकप्रहं | { மீன்களும் முதலைகளும் இடக்கர்களெனும் முதலையினக்க ளுமுள்ளதும் | कीर्णं दीप्तभोगैः भुजगैः आकीर्णं भुजगालयं इव | நிறைந்ததும் ஜ்வலிக்கும் உடலுற்ற பாம்புகளால் நிறைந்து பாம்புகளின் இருப் பிடம் போன்றதும் |
| घोरं दिवसक्षये क्षपादौ फेनीषैः हसन्तं इव | பயங்கரமானதும் மாலையில் இரவின் ஆரம்பத்தில் அரை சமூகங்களால் சிரிப்பதுபோலிருக்க கிறதும் | महासाधैः अवगाढं नानाशैलसमाकुलं | பெரிய பிராணிகளால் நிறைந்ததும் பல மலைகளால் நிறைந்ததும் |
| ऊर्मिभिः मृग्यन्तं इव | அலைகளால் குதிக்கிறதுபோல ருக்கிறதும் | सुदुर्गं दुर्गमार्गं अगाधं असुरालयं च तं वरणावासं पश्यन्तः निपेतुः | கிட்ட முடியாததும் கடக்கமுடியாததும் ஆகாதமும் ஆகர்கள் வளிற்கும் அந்த [இடமுமான சமுத்திரத்தை பார்த்துக்கொண்டே தங்கியிருந்தார்கள். |
| चन्द्रोदयसमाधूतं | சந்திரோதயத்தால் பொங்குகிறதும் | | |
| प्रतिचन्द्र- समाकुलं } | பிரதிசும்பங்களாகிற சந்திரன்களால் விள க்கப்பெற்றதும் | | |

मकरैर्नाकभोगैश्च विगाहा वातलोलिताः । उत्पेतुश्च निपेतुश्च प्रवृद्धा जलराशयः ॥११७॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|------------|--------------------------|
| मकरैः | முதலைகளாலும் | प्रवृद्धाः | வளர்ந்தவைகளாய் |
| नाकभोगैः च | சுருமீன்களாலும் பாம்புகளாலும் | जलराशयः | அலைகள் |
| विगाहाः | நிறைந்துள்ளவை களும் | उत्पेतुः च | உயரக்கினம்பின. |
| वातलोलिताः | காற்றால் ஆலைப்புண்டு | निपेतुः च | அடக்கித்தணிக் சென்றன. |

अग्निचूर्णमिवाविद्धं भास्वराम्बु महोरगम् । सुरारिविषयं घोरं पातालविषयं सदा ॥११८॥

सागरं चाम्बरप्रख्यमम्बरं सागरोपमम् । सागरं चाम्बरं चेति निर्विशेषमदृश्यत ॥११९॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| अग्निचूर्णं इव | நெருப்புப்பொசி போன்றனவும் | महोरगं | பெரும்பாம்புகளையு டையதும் |
| आविद्धं | பொங்குகிறதும் | सुरारिविषयं | தேவசத்துருக்கள் வசுக்குமிடமும் |
| भास्वराम्बु | நிர்மலமான ஜலமு டையதும் | | |

| | | | |
|-------------------|--|------------|----------------------------------|
| போர் | பயங்கரமானதும் | अम्बरं च | ஆகாசமும் |
| सदा | எக்காலத்திலும் | सागरोपमं | சமுத்திரத்தை நிகர்த்திருக்கிறது. |
| पाताल- विषयं च | பாதாளலோகங்களில் இருக்கும் இடமான ஆடான | सागरे | சமுத்திரமும் |
| सागरं | சமுத்திரமானது | अम्बरं च | ஆகாசமும் |
| अम्बरस्य | ஆகாசத்தை நிகர்த்திருக்கிறது. | इति | (ஆகிய) இது |
| | | निर्विण्णं | பெதலில்லாமல் |
| | | अदृश्यत | காணப்பட்டது. |

संपृक्तं नभसाऽप्यम्भः संपृक्तं च नभोऽम्भसा । तादृशूपे स हश्येते ताराखसमाकुले ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------|---|
| अंभः | சமுத்திரமானது | ताराखस- | } நகத்திரங்களை ஆம், முத்துகளை ஆம் நி ரைந்த இவ்விரண்டும் |
| नभसा अपि | ஆகாசத்தோடே | माकुले | |
| संपृक्तं | பிணைந்திருக்கிறது. | तादृशूपे | சமமான தோற்றமு கடையவைகளாய் காணப்பட்டன. |
| नभः च | ஆகாசமும் | हश्येते स | |
| अंभसा | கடலோடு | | |
| संपृक्तं | பிணைந்திருக்கிறது. | | |

समुत्पतितमेघस्य वीचिमालाकुलस्य च । विशेषो न द्वयोर्वासीत्सामरस्याम्बरस्य च ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|-----------|-------------------------------|
| समुत्पतितमेघस्य | மேலெழும் மேகங்க ளைக்கொண்ட | सागरस्य च | சமுத்திரத்திற்கும் |
| अम्बरस्य च | ஆகாயத்திற்கும் | द्वयोः | இந்த இரண்டிற்கும் |
| वीचिमालाकुलस्य | ஆலைவரிசைகளின் பெருக்குகளை யுடைய | विशेषः | வேறுபாடு |
| | | भासीत् न | யாதொக்கும்படி, காணப்பட்டன. |

अन्योन्यमाहताः सक्ताः सखनुर्भीमनिखनाः । ऊर्मयः सिन्धुराजस्य महाभेर्ष इवाहवे ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|-----------------|
| आहवे | யுத்தகளைத்தில் | ऊर्मयः | ஆலைகள் |
| महाभेर्षः | பெரிய பேசினகவாத் | अन्योन्यं | ஒன்றுதொன்று |
| इव | போலவே [ங்கள் | आहताः | மோதி |
| सिन्धुराजस्य | சமுத்திரத்தினது | सक्ताः | தடுக்கப்பட்டவைக |
| भीमनिखनाः | பேரொலிக்கொண்ட | सखनुः | ஒலித்தன. [ளாய் |

रौघजलसन्नादं विषक्तमिव वायुना । उत्पतन्तमिव क्रुद्धं यादोगणसमाकुलम् ॥ १२३ ॥

ददृशुस्ते महात्मानो वाताहतजलाशयम् । अनिलोद्भूतभाकाशे प्रवहन्तमिवोर्मिभिः ॥ १२४ ॥

| | | | |
|-------------------|---|-------------|---|
| महात्मानः | மஹாத்மாக்களாகிய | क्रुद्धं | கொத்தொன்று |
| ते | ஆவர்கள் | उत्पतन्त इव | உயரக்கிளம்புகிறது |
| वाताहतजलाशयं | காற்றால் ஆலைப்புண்ட சமுத்திரத்தை | यादोगण- | } நீளமுழைக்கொள்ள நிறைந்துள்ளதாயும் |
| रौघजल- सन्नादं | ரத்தனக்குவிசைகளோ டுகடிய இலத்தின் ஒலிப்புடையதாயும் | अनिलोद्भूतं | |
| वायुना | வாயுவோடு | ऊर्मिभिः | ஆகாயத்தில் |
| विषक्तं इव | கலந்துவிட்டதுபோ லிருக்கிறதுதகவும் | आकाशे | கடக்கிறதுபோன்றதா யார்த்தார்கள். [கவும் |
| | | प्रवहन्त इव | |
| | | दृशुः | |

ततो विस्मयमापन्ना ददृशुर्हरयस्तदा । भ्रान्तोर्मिजलसन्नादं प्रलोलमिव सागरम् ॥१२५॥

| | | | |
|------------------------------|---|------------|---------------|
| तदा | அப்பொழுது | प्रलोलं इव | கலவரப்படுவது |
| हरयः | வானரர்கள் | | போன்றதாகவும் |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | ददृशुः | கண்டார்கள். |
| भ्रान्तोर्मि- जलसन्नादं } | அசையும் அலைகளின் இல ஒசையுடையதா யும் | ततः | அதனால் |
| | | विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| | | आपन्नाः | அடைந்தார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे चतुर्थः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14880

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 205



पञ्चमः सर्गः—ஐந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ५ ॥

श्रीरामचिलापः—ஸ்ரீராமவிலாபம்.

सा तु नीलेन विधिवत्स्वारक्षा सुसमाहिता । सागरस्योत्तरे तीरे साधु सेना निवेशिता ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-------------|------------------|
| स्वारक्षा | நற்காப்பைப்பெற்ற தும் | सागरस्य | கடலது |
| | | उत्तरे तीरे | வடக்கரைகில் |
| सुसमाहिता | அச்சமற்றதுமான | विधिवत् | முறையே |
| सा | அந்த | साधु तु | நன்கு அப்பொழுது |
| सेना | படையானது | निवेशिता | அமைக்கப்பெற்றது. |
| नीलेन | நீலனால் | | |

मैन्द्रश्च द्विविदशोभौ तत्र वानरपुङ्गवौ । विचैरतुश्च तां सेनां रक्षार्थं सर्वतो दिशम् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|------------------|
| वानरपुङ्गवौ | வானரோத்தமர்க | तां | அந்த |
| मैन्द्रः च | டைந்தனும் [சாரன | सेनां | சேனையை |
| द्विविदः च | நவீனிகனுமாயின | रक्षार्थं | பாதுகாப்பதற்காக |
| उभौ | இருவர்களும் | सर्वतः दिशं च | எல்லா திக்கிலும் |
| तस्य | அப்பொழுது | विचैरतुः | சஞ்சரித்தார்கள். |

निविष्टायां तु सेनायां तीरे नदनदीपतेः । पार्श्वस्थं लक्ष्मणं दृष्ट्वा रामो वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|--------------|
| नदनदीपतेः | சமுத்திரத்தினுடைய | पार्श्वस्थं | பக்கவிளிந்து |
| तीरे | கரைகில் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| सेनायां | சேனை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| निविष्टायां तु | தங்கியதும் | वचनं | ஒரு சொல்லை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |

மொழிந்தார்

शोकश्च किल कालेन गच्छता अपगच्छति । मम चापश्यतः कान्तामहृन्महृनि वर्धते ॥

शोकः च
कालेन गच्छता च
अपगच्छति

“சேரகம் என்பது
காலம் கழியக்கழிய
போய்விடுகிறது,
என்று
பெரியோர்கள் சொல்
வதுண்டு.

कान्तां
अपश्यतः
मम हि
अहनि अहनि
वर्धते

காதலியை
காணப்பெறாத
எனக்கொவென்றால்
நாளுக்குநான்
வளருகின்றது.

न मे दुःखं प्रिया दूरे न मे दुःखं हृतेति वा । एतदेवानुशोचामि वयोऽस्या ह्यतिवर्तते ॥

दूरे
प्रिया
मे
दुःखं न

“தூரத்தில்
காதலியிருக்கின்றான்
எனக்கு [என்பது
மனவேதனைையை விளை
விக்கவில்லை,
அபஹரிக்கப்பட்டான்
என்பதும்
எனக்கு
மனக்கவலையை விளை
விக்கவில்லை.

हि
अस्याः
वयः
अतिवर्तते
एतन् एव
अनुशोचामि

ஆனால்,
இவளது
(உயிரோடிருப்பதாய்
பிரதிக்கை செய்பப்
பட்ட) ஜீவிதகாலம்*
கடந்துவருகிறது.
இது ஒன்றைக்கூறிக்
கூததான்
இடைவிடாது மனம்
நொந்துருகுகின்றேன்.

* [சந்தரகாண்டம் 40-ம் ஸர்க்கம் 11, 12 ஸ்லோகங்களில் 'பாரிபாசாமி மாம் து
ஜீவितே வஸுஸூத । மாயாநூஷீ ந ஜீவிஸ்யே த்வயா ஹிநா நுவாஸஜ என்ற சொன்னபடி 'ஒரு மாதமே
உம்பொருட்டு உயிருடெனன் ; அதன்மேல் திண்ணப் பிரிந்து உன் வாழ்வு' என்று
சீதாப்பிராட்டியார் ஹனுமாரிடத்தில் ஸ்ரீராமபிரானுக்கு சொல்லித்தேக உறுதி
மொழிவிது.]

वाहि वात यतः कान्ता तां स्पृष्ट्वा मामपि स्पृश । त्वयि मे गात्रसंस्पर्शश्चन्द्रे वृष्टिसमागमः॥

वात
यतः
कान्ता
वाहि
तां
स्पृष्ट्वा
अपि
मां

“வாயுபகவானே !
எவ்விடத்தில்
காதலியிருக்கிறாளோ
சஞ்சரியும். [(அங்கு)
அவளை
ஸ்பர்சித்துவிட்டு
அதன் பின்னர்
என்னை

स्पृश
चन्द्रे
त्वयि
मे
गात्रसंस्पर्शः
वृष्टिसमागमः

ஸ்பர்சிப்பிராக,
மனோகாமப் பிளக்
தேவரிடத்தில் [கும்
எனக்கு
உடல்ஸ்பர்சமாய்
ஓரணைகதிரியத்தால்
எற்படும்.

तन्मे दहति गात्राणि विषं पीतमिवाशये । हा नाथेति प्रिया सा मां हियमाणा यद्व्रवीत्॥

सा
प्रिया
हियमाणा
मां
हा नाथ
इति
यत्
अववीत्

“அந்த
காதலி
திருடிக்கொண்டு
போகப்படும்பொழுது
என்னை அழைந்து
'ஹா, நா த !'
என்று
எதை
தொண்ணிலை ;

तत्
मे
आशये
पीतं
विषं
गात्राणि
इव
दहति

அது
எனது
உள்ளத்தில்
உட்கொண்ட
விஷமானது
அகவயவங்களை
எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
துப்புறுத்திக்கொண்
டேயிருக்கிறது.

तद्वियोगेन्धनवता तच्चिन्ताविपुलाचिषा । रात्रिदिवं शरीरं मे दहते मदनाग्निना ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------------------|--|------------|-------------------------------|
| तद्वियोगेन्धनवता | “அவளை விட்டுப்பிரி வாகிற விறகையுடை யதும் | सदनाग्निना | அன்பின தீசயமாகிற அக்னியால் |
| | | मे | எனது |
| तच्चिन्ता- विपुलाचिषा | அவளைப்பற்றிய கவ லையாகிற தீக்ஷணமா ன சவாலையுடையது மான | शरीरं | ஆற்றல் |
| | | रात्रिदिवं | இரவுபகலும் |
| | | दहते | வாட்டப்படுகிறது. |

अवगाह्यार्णवं स्वप्स्ये सौमित्रे भवता विना । कथंचित्प्रज्वलन्कामः स मा सुप्तं जले दहेत् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|----------------------------|
| सौमित्रे | “லக்த்மணு! | मा | என்னை |
| भवता | உன்னை | सः | அந்த |
| विना | விட்டுப்பிரிந்து | कामः | மனோதமனனது |
| अर्णवं | சமுத்திரத்தில் | प्रज्वलन् | அணையாது மூண்ட தாய் |
| अवगाह्य | முழுக்கி | कथंचित् | நான் எவ்வபாயம் தேடினும் |
| स्वप्स्ये | தூக்குகின்றேன். | दहेत् | வருத்தியே தீரும். |
| जले | ஜலத்தில் | | |
| सुप्तं | படுத்துத் தூக்கும் | | |

बहेत्कापयानस्य शक्यमेतेन जीवितुम् । यदहं सा च वामोरुरेकां धरणिमाश्रितौ ॥ १० ॥

| | | | |
|---------|----------------|-----------|---|
| वामोरुः | “தொடையழகுற்ற | एतत् | இது |
| सा | அவளும், | बहु | மகா விசேஷமானது. |
| अहं च | நானும் | एतेन | இதனால் |
| एकां | ஒரே | कामयानस्य | { மனோதமொன்றிலே யே மனம்காடிக்கி டக்கும் எனக்கு |
| धरणि | மானிட உலகில் | जीवितुं | உயிர்வைத்திருக்க |
| आश्रितौ | இருக்கின்றோம். | शक्यम् | சாத்தியமாகிறது. |
| यत् | எந்த | | |

केदारस्येव केदारः सोदकस्य निरुदकः । उपस्नेहेन जीवामि जीवन्तीं यच्छृणोमि ताम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------|----------|---------------------------|
| निरुदकः | “நீர்ற்ற | तां | அவளை [எனது |
| केदारः | கழனியானது | जीवन्तीं | உயிருடனிருப்பவ- |
| सोदकस्य | நீருள்ள | शृणोमि | (கேட்டு) அறிகிறேன். |
| केदारस्य | கழனியினது | यत् | (என்பது எதுவோ) |
| उपस्नेहेन | கசியால் | | இதனால்தான் |
| ह्य | எவ்வண்ணமோ | जीवामि | பிழைத்திருக்கின் றேன். |
| | அவ்வண்ணமே | | |

कदा नु खलु सुश्रोणीं शतपत्रायतेक्षणाम् । विजित्य शत्रून् द्रक्ष्यामि सीतां स्फीतामिव श्रियम् ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|------------------------------------|---|
| शत्रून् विजित्य सुश्रोणीं | "சத் துருக்களை வென்று, அற்றொழிப்புடையவ ளும், | स्फीतां श्रियं इव | ஐகத் வ்யாபினியாகிய மகாலக்ஷ்மிபோன்ற வளுமாகிய |
| शतपत्रायतेक्षणां | { தாமரைபித்தம்போன் ற அகன்ற கண்களை யுடையவளும் | सीतां कदा खलु नु द्रक्ष्यामि | சீதையை எப்பொழுதுதான் காணப்பெறுவேனோ ? |

कदा नु चारुविभ्योऽं तस्याः पद्ममिवाननम् । इषदुन्नम्य पास्यामि रसायनमिवातुरः ॥

| | | | |
|--------------|---|--------------------|---|
| तस्याः | "அவளது | रसायनं | { (உயிர் போன்ற காப்பாற்றும்) ரஸா யனத்தை |
| चारुविभ्योऽं | { அழகிய கோவைம் கனிபோன்ற அதரத் தை யுடையதும், | इव | (கண்டால்) எவ்வண்ண மோ அவ்வண்ணமே, கொஞ்சம் |
| पद्मं | தாமரைமலரை | ईषत् | கிமிர்க்குது |
| इव | ஒத்த துமான | उन्नम्य | எப்பொழுதுதான் |
| आननं | முகத்தை | कदा नु पास्यामि | கண்டுரைக்க காணப் பெறுவேனோ ? |
| आतुरः | ஓர் கோயாளி | | |

तस्यास्तु संहतौ पीनौ स्तनौ तालफलोपमौ । कदा नु खलु सोत्कम्पौ हसन्त्या मां भजिष्यतः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|------------|-----------------------------------|
| हसन्त्याः | "புன்முறுவலுற்ற | सोत्कम्पौ | துடித்துக்கொண்டிரு ப்பவைகளுமான |
| तस्याः | அவளது | स्तनौ तु | தனக்களிக்கும் |
| संहतौ | நெருக்கியவைகளும், | मां | என்னை |
| पीनौ | பெருத்தவைகளும், | कदा नु खलु | எப்பொழுதுதான் |
| तालफलोपमौ | பனம்பழத்தை திகர்க் தவைகளும், | भजिष्यतः | களிப்புறச்செய்ய மோ ? |

सा नूनमसितापाङ्गी रक्षोमध्यगता सती । मन्वाथा नाथहीनेव त्रातारं नाधिगच्छति ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|--------------|---|
| असितापाङ्गी | "சரிய கடைக்கண் களை யுடையவளும் | नाथहीना | கணவனில்லாதவள் |
| सती | மகா பதினிரதையு மான | इव | போலவே |
| सा | அவள் | रक्षोमध्यगता | அரக்கிகளின் நடுவில் சிக்கிக்கொண்டவளாய் |
| मन्वाथा | என்னைக்கணவனுக்க கொண்டும் | त्रातारं | தன்னைக் காப்பாற்று பவனை |
| नूनं | இப்பொழுது | अधिगच्छति न | காணப்பெருதிருக் கின்றாள். |

कथं जनकराजस्य दुहिता सा मम भिया । राक्षसीमध्यगा शेते स्तुपा दशरथस्य च ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|---------------|----------------------------------|
| दशरथस्य | "சரசு தசக்கிரவர்ந்தி யாரது | भिया च | கா தயிபுமரண |
| स्तुपा | பருபுகளும் | सा | அவள் |
| जनकराजस्य | ஜனகமன்னரது | राक्षसीमध्यगा | ஆரக்கிகள் நடுவிளிசு நதுகொண்டு |
| दुहिता | பெண்ணும் | कथं | எவ்விதம் |
| मम | எனது | शेते | கண்வளர்ப்பாள் P |

कदा विशोभ्य रक्षांसि सा विधूयोत्पतिष्यति । विधूय जलदानीलाञ्छ शिरेखा शरत्स्विवा ॥

| | | | |
|---------|---------------------|-------------|-------------------------|
| शरसु | "சரசு நீர்தளத்தில் | सा | அவள் |
| नीलान् | கரு | रक्षांसि | ஆரக்கஜனகர்களை |
| जलदान् | மேகங்களை | विशोभ्य | உருங்குலைத்து |
| विधूय | விடக்கிக்கொண்டு | विधूय | உதறிவிட்டு |
| शशिरेखा | சந்திரன் ரேகை | कदा | எப்பொழுது |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | उत्पतिष्यति | வெளிவரப்போகிறது ளோ P |

स्वभावतनुका नूनं शोकेनानशनेन च । भूयस्तनुवरा सीता देशकालविपर्ययात् ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|-------------------|
| स्वभावतनुका | "பிறனியாலேயே மெ | देशकाल- | } இடமும் காலமும் |
| सीता | சீதை [வலியவளமான | विपर्ययात् च | |
| शोकेन | தன் வேதனைபினாலே | नूनं | இப்பொழுது |
| अनशनेन | உணவில்லாமைபினாலும் | भूयः | முன்னி ஓடிக்கொடிய |
| | | तनुवरा | இளைத்திருப்பாள். |

कदा नु राक्षसेन्द्रस्य निधायोरसि सायकान् । सीतां प्रत्याहरिष्यामि शोकमुत्सृज्य मानसम् ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------|------------------|------------------------------------|
| राक्षसेन्द्रस्य | "ரரசுமன்னனது | शोकं. | துயரத்தை |
| उरसि | மார்பில் | उत्सृज्य | களைத்தெறித்து |
| सायकान् | ஆம்புகளை | सीतां | சீதையை |
| निधाय | எற்றிவிட்டு | कदा नु | எப்பொழுதுதான் |
| मानसं | மனதிலேயே அண்டி கிருக்கும் | प्रत्याहरिष्यामि | திரும்பிக்கொண்டுவர ப்போகிறேனோ ? |

कदा नु खलु मे सार्ध्वी सीता सुरसुतोपमा । सोत्कण्ठा कण्ठपालम्ब्य मोक्ष्यत्यानन्दं पयः ॥

| | | | |
|------------|---|---------------|--------------------|
| सुरसुतोपमा | "தெய்வப்பெண் பேரன் தவளைய | सीता | வீதை |
| सार्ध्वी | உலகப்பற்றைக்கடந்த வளும் | मे कण्ठं | என்பக்கவிளிசுத்தலை |
| | { (எப்பொழுது என்னை காணப்பெறுவென் என்று) தியானித்து க்கொண்டிருக்கிறவ ளான | आन्दय | பெற்று |
| सोत्कण्ठा | | आनन्दं पयः | ஆனந்தக்கண்ணீரை |
| | | कदा नु | எப்பொழுதுதான் |
| | | मोक्ष्यति खलु | பெருங்குவளோ ? |

कदा शोकमिमं घोरं मैथिलीविप्रयोगजम् । सहसा विप्रमोक्ष्यामि वासः शुकेतरं यथा ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|-------------------|-------------------|
| शुकेतरं | “அருக்கு | घोरं | அஸற்றயமானிருக்கிற |
| वासः | வாஸ்திரத்தை | इमं | இந்த |
| सहसा | உடனே | शोकं | மனவேதனைவை |
| यथा | மிகவுவது என்படியோ அப்படியே | कदा | எப்பொழுது |
| मैथिली- | } மைதிலீயின் பிரியா | विप्रमोक्ष्यामि | களைந்தெறிவேண்டுமே |
| विप्रयोगजं | | } ஹண்டாபிருக்கும் | |

एवं विलपतस्तस्य तत्र रामस्य धीमतः । दिनक्षयान्मन्दरुचिर्भास्करोऽस्तमुपागमत् ॥२२॥

| | | | |
|--------|--------------------------------|---------------|-------------------|
| तस्य | அப்பொழுது | दिनक्षयान् | பகற்பொழுது கழிந்த |
| तस्य | அந்த | | தரல் |
| धीमतः | பேரறிவை வாய்ந்த | भास्करः | சூரியபகலான் |
| रामस्य | சூராமர் | मन्दरुचिः | ஊனிருகைநந்தவனாய் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | अस्तं उपागमत् | அஸ்தமித்தான். |
| विलपतः | மொழிக் குக்கொண்ட குக்கையில் | | |

आश्वासितो लक्ष्मणेन रामः संध्यामुपाविशत् । स्मरन्कमलपताक्षीं सीतां शोकाकुलीकृतः॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|--------------|---|
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | सीतां | சீதா தேவியை |
| आश्वासितः | தேற்றவு பண்ணப் பட்ட | स्मरन् | நினைத்து |
| रामः | சூராமர் | शोकाकुलीकृतः | { மனவேதனையால் இன் னது செய்கிறதென் று தெரியாதவராய் |
| कमलपताक्षीं | கமலபாக்ஷிதழ்போன்ற கண்களை புடைய | सन्ध्यां | மாலைக்காலியை |
| | | उपाविशत् | உபாவித்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14903



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 228

பகு: சரீ:—சூருவது ஸர்க்கம் ॥ ६ ॥

रावणमन्वालोचनम्—ராவணனைது மந்திராவோசனை.

लङ्कायां तु कृतं कर्म घोरं दृष्ट्वा भयावहम् । राक्षसेन्द्रो हनुमता शक्रेणैव महात्मना ॥

अब्रवीद्राक्षसान्सर्वान्हिया किञ्चिद्वाङ्मुखः

॥ १ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|--------------|
| राक्षसेन्द्रः | ராக்ஷஸரானுன் | दृष्ट्वा | சீர்த்தித்து |
| शक्रेण इव | இந்திரனையெத்த | हिया | வெட்கத்தால் |
| महात्मना | மகாத்மவாகிய | किञ्चिद् | சீர்த்து |
| हनुमता तु | ஹனுமரானேயே | अवाङ्मुखः | தலைதாழ்ந்து |
| लङ्कायां | லங்கையினில் | राक्षसान् | காக்கர்கள் |
| कृतं | எனினி க்கப்பட்ட | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| भयावहं | பயங்கரமானதும் | | பார்த்து |
| घोरं | அஸற்றயமானது | अब्रवीत् | பின் வருமாறு |
| कर्म | செயலை | | மொழிந்தான் : |

धर्षिता च प्रविष्टा च लङ्का दुष्पसहा पुरी । तेन वानरमात्रेण दृष्टा सीता च जानकी ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-----------|----------------------------|
| வானரமாற்றெ | “அற்ப வானரஜாதிய யாகிய | धर्षिता च | உருக்கலைக்கவும் பட்டது. |
| तेन | அதனால் | जानकी | ஜனகரின் மகளாகிய |
| दुष्पसहा | புகழுடியாததாகிய | सीता च | சீதையும் |
| लङ्का पुरी च | இலங்கை நகரும் | दृष्टा | கண்டுக்கொள்ளப் பட்டாள். |
| प्रविष्टा | புகப்பட்டது. | | |

प्रासादो धर्षितश्चैत्यः प्रवरा राक्षसा हताः । आकुला च पुरी लङ्का सर्वा हनुमता कृता ॥

| | | | |
|----------|--|----------|--------------------|
| हनुमता | “ஹனுமான் ஒருவ னால் | राक्षसाः | ராக்ஷஸர்களும் |
| चैत्यः | { குலதெய்வம் ஆவாஹ னம் செய்துவைக்கப் பட்டிருந்த | हताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |
| प्रासादः | ஆலயமும் | लङ्का | இலங்கை |
| धर्षितः | அழிக்கப்பட்டது. | पुरी | நகர் |
| प्रवराः | பெயர்பெற்ற | सर्वा च | முழுவதுமே |
| | | आकुला | உருக்கலைத்ததாய் |
| | | कृता | செய்யப்பட்டது. |

किं करिष्यामि भद्रं वः किं वा युक्तमनन्तरम् । उच्यतां नः समर्थं यत्कृतं च सुकृतं भवेत् ॥

| | | | |
|-----------|--|-----------|------------------|
| भद्रं वः | { “(என்ன ஆனபோதி லும்) உங்களுக்கு ஆ பந்து கிணையாது. | करिष्यामि | இனி நான் செய்ய |
| अनन्तरं | இனி | यत् | எது [வேண்டும்? |
| युक्तं वा | ஏற்றதுதான் | समर्थं | ஏற்றதாய் |
| किं | என்ன ? | कृतं | செய்யப்பட்டு |
| किं | எதை | नः | நமக்கு |
| | | सुकृतं | நன்மை பயப்பதாய் |
| | | भवेत् च | ஆகுமோ (ஆது) |
| | | उच्यताम् | கொல்லப்படட்டும். |

मन्त्रमूलं हि विजयं प्राहुरार्या मनस्विनः । तस्माद्दे रोचये मन्त्रं रामं प्रति महाबलाः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|------------|-------------------------------------|
| महाबलाः | “மகா சக்திவான் களை ! | प्राहुः | கொல்லுகிறார்கள். |
| मनस्विनः | பேரறிவாளராகிய | तस्मात् वै | ஆகையால் |
| आर्याः | பெரியோர்கள் | रामं प्रति | ராமன் விஷயத்தைப் பற்றி |
| विजयं | வெற்றியானது | मन्त्रं | ஆலோசனையை |
| मन्त्रमूलं हि | ஆலோசனையைப்பொ றுத்ததுதானென்று | रोचये | நான் இப்பொழுது விரும்புகின்றேன். |

त्रिविधाः पुरुषा लोके उत्तमाधममध्यमाः

| | | | |
|---------|-----------|-----------------------------------|---|
| लोके | “உலகில் | उत्तमाधम- मध्यमाः त्रिविधाः | } உத்தமர்கள், மத்திமர் கள், அத்தமர்களென்று முன்று வகுப்பினர் கள் ஆவர். |
| पुरुषाः | மனிதர்கள் | | |

तेषां तु समवेतानां गुणदोषौ वदाम्यहम्

॥ ७ ॥

तेषां ஆகார மல்
 समवेतानां तु என்னை ஒருவாய்ப்பல்,

गुणदोषौ குணதேதர வகங்களிண்
 अहं நான் [கூடயும்
 वदामि சொல்லுகிறேன்.

मन्त्रिभिर्हितसंयुक्तैः सपथैर्मन्त्रनिर्णये । मित्रैर्वाऽपि समानार्थैर्वाऽन्यैरपि वा हितैः ॥ ८ ॥
 सहितो मन्त्रायित्वा यः कर्मारभान्प्रवर्तयेत् । दैवे च कुरुते यत् तमाहुः पुरुषोत्तमम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------------|---|------------------|----------------------|
| यः | “எவ்வொருவன் | हितैः | நன்மைபய காடும் |
| हिनसंयुक्तैः | { நன்மைபய செய்வ தில் கருந் துள்ளவர் கருமம் கருமம் தில் } | वान्त्रैः अपि वा | மந்திரங்களோடாவது, |
| मन्त्रनिर्णये | | सहितः | ஒருமித்து |
| सपथैः | ஆலோசித்து | मन्त्रायित्वा | சூலோசித்து |
| मन्त्रिभिः | ஆலோசனை விதிப்ப | कर्मारभान् | காரியப்பிரவர்த்திகளை |
| समानार्थैः | சமர்த்தர்களுமா | प्रवर्तयेत् | செய்கிறோடு, |
| मित्रैः अपि वा | மந்திரிகளோ | दैवे | தெய்வத்தின்மீது |
| | டாவது, | यत् च | பாரத்தையும் |
| | கருதுகங்களிண் சம | कुरुते | வைக்கிறோடு, |
| | மரய் பாகிக்கின்ற | तं | ஆலனை |
| | மித்திரர்களோடா | पुरुषोत्तमं | புருஷோத்தமனை |
| | வது, | आहुः | பெரியோர்கள் |
| | | | சொல்லுகின்றார்கள். |

एकोऽर्थे विमृशेदेको धर्मं प्रकुरुते मनः । एकः कार्याणि कुरुते तमाहुर्पथ्यमं नरम् ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|-----------------|
| अर्थे | “ஒரு காரியத்தை | कार्याणि | காரியங்களை |
| एकः | (தான்) ஒருவனை | कुरुते | செய்கிறவன் |
| विमृशे | ஆராய்கிறவன்; | तं | எவனோ, அந்த |
| एकः | (தான்) ஒருவனை | नरं | மானிடனை |
| मनः | மனதை | मध्यमं | மத்தியமனை |
| धर्मं | தர்மத்தில் | आहुः | பெரியார் சொல்லு |
| प्रकुरुते | செய்யுத்திறவன்; | | கின்றார்கள். |
| एकः | (தான்) ஒருவனை | | |

गुणदोषावनिश्चित्य त्यक्त्वा देवव्यपाश्रयम् । करिष्यामीति यः कायमुपेक्षेत् नराधमः ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|---------------|--------------------|
| यः | “எவ்வொருவன் | करिष्यामि इति | பாரனை செய்கொன்' |
| गुणदोषौ | குணதேதர வகளை | | என்று சொல்லிகிட்டு |
| अनिश्चित्य | ஆராய்ந்தறியாது | उपेक्षेत् | செய்யமுடிவாது |
| देवव्यपाश्रयं | தெய்வம் உண்டென் | | கிற்கிறோடு |
| | பதை | सः | ஆவன் |
| त्यक्त्वा | மறந்து | नराधमः | அதமபுருஷனுவான். |
| कायं | ஒரு காரியத்தை | | |

यथेमे पुरुषा नित्यमुत्तमाधममध्यमाः । एवं मन्त्रा हि विज्ञेया उत्तमाधममध्यमाः ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------------------|--|----------------------|--------------------------------|
| इमे | "இந்த | एवं | அப்படியே |
| पुरुषाः | மாஸிடர்கள் | मन्त्राः हि | மந்திராலோசனைக |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | | ஆறும் |
| यथा | எவ்வாறு | उत्तमाधम- मध्यमाः | உத்தமம், மத்திமம், அதமம் என |
| उत्तमाधम- मध्यमाः | உத்தமர்கள், மத்திமர் கள், அதமர்கள் என ப்படுகிறார்களோ | विज्ञेयाः | அறியத்தக்கவைகள். |

ऐकमत्यमुपागम्य शाखवृष्टेन चक्षुषा । मन्त्रिणो यत्र निरतास्तमाहुर्मन्त्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|---------|----------------------------------|
| मन्त्रिणः | மந்திராலோசனை செய்பவர்கள் | उपागम्य | அடைந்து |
| शाखवृष्टेन | "சா ஸ்திராப்பியாச மென்ற | निरताः | ஆமீனா திக்கிறார்களோ |
| चक्षुषा | கண்ணைக்கொண்டு | तं | அதை |
| यस | எந்தவிடயத்தில் | उत्तमं | உத்தம |
| ऐकमत्यं | ஒற்றுமையை | मन्त्रं | மந்திராலோசனையென |
| | | आहुः | பெரியோர்கள் கொல் லுகிறார்கள். |

बह्व्योऽपि मतयो भूत्वा मन्त्रिणामर्थनिर्णये । पुनर्यत्रैकतां प्राप्ताः स मन्त्रो मध्यमः स्मृतः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-----------|------------------|
| अर्थनिर्णये | "விடயத்தை தீர்ணயி ப்பதில் | पुनः | முடிவில் |
| यस | எதில் | एकतां | ஒற்றுமையை |
| मन्त्रिणां | மந்திரிமார்களுடைய | प्राप्ताः | அடைகின்றனலோ |
| मतयः | அபிப்பிராயங்கள் | सः | அந்த |
| बह्व्यः | பலவிதமாக | मन्त्रः | ஆலோசனை |
| भूत्वा अपि | இருந்தாலும் | मध्यमः | மத்திமமென |
| | | स्मृतः | கொள்ளப்படுகிறது. |

अन्योऽन्यं मतिमास्थाय यत्र संप्रतिभाष्यते । न वैकमत्ये श्रेयोऽस्ति मन्त्रः सोऽधम उच्यते ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|----------|-----------------|
| यस | "எதில் | श्रेयः च | ஒரு முடிவும் |
| अन्योन्यं | அவரவர் | अस्ति न | இல்லையோ, |
| मतिं | அபிப்பிராயத்தை | सः | அந்த |
| आस्थाय | பிடிவா தப்படுத்தி | मन्त्रः | ஆலோசனை |
| संप्रतिभाष्यते | வ்யவகரிக்கப்படுகிற தோ, | अधमः | அதமமென |
| | | उच्यते | (பெரியோர்களால்) |

ऐकम ये तस्मात्सुमन्त्रितं साधु भवन्तो मन्त्रिसत्तमाः । कार्यं संप्रतिपद्यन्तामेतत्कृत्यं मतं मम ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|------------------|----------------------------------|
| तस्मात् | "அடைபதால் | कार्यं | செய்யவேண்டிய காரி யத்தை |
| सुमन्त्रितं | என்று ஆலோசிக்கப் பட்டது | संप्रतिपद्यन्तां | ஒற்றுமையுடன் தீர் மானியங்கள். |
| साधु | உண்மை உடக்குமா. | एनन् कृत्यं | இவ்விதமான காரியம் |
| मन्त्रिसत्तमाः | மந்திரிகளின் சிறந்த | मम | எனக்கு |
| भवन्तः | திக்கள் | ममम् | இவ்வாறானது. |

वानराणां हि वीराणां सहस्रैः परिवारितः । रातोऽभ्येति पुरीं लङ्कामस्माकनुपरोधकः ॥

| | | | |
|-----------|----------------|---------|--------------------------|
| रामः हि | " रामனும் | उपरोधकः | இடைபுறச்செய்கிறவனாய் |
| वानराणां | வானர | लङ्कां | இலங்கை |
| वीराणां | வீரர்களின் | पुरीं | நகரை நோக்கி |
| सहस्रैः | பலசால் | अभ्येति | வந்துகொண்டிருக்கின்றான். |
| परिवारितः | சூழப்பட்டவனாய் | | |
| अस्माकं | நமக்கு | | |

तरिष्यति च सुव्यक्तं राघवः सागरं सुखम् । तरसा युक्तरूपेण सानुजः सवलानुगः ॥

समुद्रमुच्छोषयति वीर्येणान्यत्करोति वा

॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|--|-----------|----------------------|
| राघवः | " रामன் | उच्छोषयति | வற்றச்செய்தாலுந்து |
| सानुजः | தம்பிரியோடுகூடவும் | वीर्येण | சக்தியால் [செய்வான். |
| सवलानुगः | { சைன்யக்கிணரடும் பரிவர சக்திணரடும் | अन्यत् वा | வேறெதைமீயலும் |
| समुद्रं | கூடவும் | करोति | செய்வான். |
| युक्तरूपेण | சமுத்திரத்தை | सागरं च | சமுத்திரத்தையும் |
| तरसा | எற்றதரன் | सुव्यक्तं | விசயமாய் |
| | வல்லகையால் | सुखं | ஆயாசமின்றி |
| | | तरिष्यति | கடந்தே திருவான். |

खरो येन हतः संख्ये तस्य वीर्येण लक्ष्यते

॥ १९ ॥

| | | | |
|--------|----------------|----------|---|
| येन | " எனனால் | तस्य | அவனுடைய |
| संख्ये | போலில் | वीर्येण | சக்தியால் |
| खरः | கரன் | लक्ष्यते | { (என்னால் தீத எல்லா புறம்) கைக்கப்படுகி றது. |
| हतः | கொல்லப்பட்டானோ | | |

अस्मिन्नेवंगते कार्येऽविरुद्धे वानरैः सह । हितं पुरे च सैन्ये च सर्वं समन्वयतां मम ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|------------|------------------------------|
| वानरैः | " வானரர்களைவிட | पुरे च | நகரிலேயுத்திலும் |
| सह | கூட | सैन्ये च | சைன்யவையுத்திலும் |
| अविरुद्धे | விரோதத்திற்கு காரணமில்லாத | हितं | நிச்சயமானது |
| अस्मिन् | இந்த | सर्वं | எல்லாமும் |
| कार्ये | காரியம் | मम | எனக்கு |
| एवंगते | நூப்படிசம்பளிக்கிருக்கையில் | समन्वयताम् | உனது எதித்துரைக்கப்பட்டும்." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे षष्ठः सर्गः ॥



सप्तमः सर्गः—ஏழாவது வர்க்கம். || 7 ||

राक्षसोक्तिः—ராக்கசஸர்களது வசனம்.

इत्युक्त्वा राक्षसेन्द्रेण राक्षसास्ते महाबलाः । उचुः प्राञ्जलयः सर्वे रावणं राक्षसेश्वरम् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|--------------|-------------------------------|
| ते | அந்த | सर्वे | எல்லோரும் |
| महाबलाः | மகா பலவான்களான | प्राञ्जलयः | அஞ்சலிபக்தம் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | | பண்ணிக்கொண்டு |
| राक्षसेन्द्रेण | ராக்கசஸன் னானால் | राक्षसेश्वरं | அரக்கமன்னனாகிய |
| इति | மேற்கண்டவாறு | रावणं | ராவணனைப்பார்த்து |
| उक्त्वाः | வினாவப்பட்டவர்க ளாய் | उचुः | பின்வருமாறு சொன் னார்கள் : |

द्विषत्यक्षमविज्ञाय नीतिवाद्यास्त्वबुद्धयः । अविज्ञाय स्वपक्षं च राजानं भेद्यन्ति हि ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|------------|-------------------|
| नीतिवाद्याः | “நீதிக்குப் புறம்பொ ளவர்களாகிய | स्वपक्षं | தன் பக்கத்தை |
| अबुद्धयः | அறிவினர்கள் | अविज्ञाय च | உள்ளபடி அறியாதும் |
| द्विषत्यक्षं | சுத்துருவினது பக்கத்தை | राजानं | ஓர் மன்னனை |
| अविज्ञाय तु | உள்ளபடி அறியாதும் | भेद्यन्ति | கலக்குகின்றார்கள் |
| | | हि | அன்றே. |

राजन्परिघशक्त्यृष्टिशूलपट्टिशसङ्कुलम् । सुमहन्नो बलं कस्माद्विषादं भजते भवान् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------------------------------|---|-------------|--------------------------------------|
| राजन् | “அரசே! | सुमहत् | மிகத்திரண்டதுமான |
| नः | நமக்கு | बलं | சேனைபிருக்கிறது. |
| परिघशक्त्यृष्टि- शूलपट्टिशसङ्कुलम् | பரிகாயுதம், வேல்கத் தி. சூலம், பட்டயக் கத்தி இவைகளை தரித்ததும் | कस्मात् | எக்காரணத்தால் |
| | | भवान् | தேவரீர் |
| | | विषादं भजते | மனச்சோர்வுக்கிடன் கொடுக்கின்றீர்? |

त्वया भोगवतीं गत्वा निर्जिताः पन्नगा युधि । कैलासशिखरावासी यक्षैर्बहुभिरावृतः ॥

सुमहत्कदनं कृत्वा वश्यस्ते धनदः कृतः ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------------------|---|--------|-----------------|
| भोगवतीं | “போகவதி எனும் | यक्षैः | யக்சர்களால் |
| गत्वा | சென்று [ககருக்கு | आवृतः | சூழப்பட்டவனுமான |
| पन्नगाः | பன்னகர்கள் | धनदः | சுபேரன் |
| युधि | போரில் | सुमहन् | பெரும் |
| त्वया | தேவரீரால் | कदनं | போரை |
| निर्जिताः | வெல்லப்பட்டார்கள். | कृत्वा | செய்து |
| कैलास- शिखरावासी | கைலாஸமலையின் சிக ரத்தில் வசிப்பவனும் | ते | தேவரீருக்கு |
| बहुभिः | பல | वश्यः | அடக்கினவனாக |
| | | कृतः | செய்யப்பட்டான். |

स महेश्वरसख्येन श्लाघमानस्त्वया विभो । निर्जितः समरे रोषाह्लोकपालो महाबलः ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|----------|-----------------|
| महेश्वरसख्येन | "மகேசுவரனது நட பின் காரணத்தால் | विभो | பிரபுவே! |
| महाबलः | மகா பலவாலினையால் | सः | (எவனோ) ஆவனே |
| लोकपालः | லோகபாலனினையால் | त्वया | தேவரீரால் |
| श्लाघमानः | சீரழைக்கப்பட்டவர். | समरे | சொடரில் |
| | | रोषाह् | கேடபத்தால் |
| | | निर्जितः | கொல்லப்பட்டான். |

विनिहत्य च यक्षीघान्विक्षोभ्य च विगृह्य च । त्वया कैलासशिखराद्विमानमिदमाहृतम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|--------|-------------------|
| यक्षीघान् | "யக்சுரமூகங்களை | इदं | இந்த |
| विगृह्य च | ஆடக்கியும், | विमानं | (புறப்பக) விமானம் |
| विक्षोभ्य च | நடுக்கச்செய்தும் | त्वया | தேவரீரால் |
| विनिहत्य च | புறப்படுத்தும் | आहृतम् | பறித்துக்கொண்டு |
| कैलासशिखरात् | கைலாசசிவரத்தி வின்று | | வரப்பட்டது. |

मयेन दानवेन्द्रेण त्वद्दयात्सख्यमिच्छता । दुहिता तव भार्यथि दत्ता राक्षसपुङ्गव ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------|-------------------|
| राक्षसपुङ्गव | "ராக்ஷஸேனத்தால் | मयेन | மயனால் |
| द्वययात् | உக்கரிடத்தினால் | दुहिता | பெண் |
| सख्यं | நட்பை [பயத்தால் | तव | தேவரீருக்கு |
| इच्छता | விரும்பிய | भार्यथि | மனைவியாக |
| दानवेन्द्रेण | ஆசரமன்னனாகிய | दत्ता | கொடுக்கப்பட்டாள். |

दानवेन्द्रो मधुनाम वीर्योत्सिक्तो दुरासदः । विगृह्य वशमानीतः कुम्भीनस्याः सुखावहः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-------------|-----------------------|
| दुरासदः | "எவனானும் வெல்ல முடியாதவனும் | मधुः | மது |
| वीर्योत्सिक्तः | வீர்யத்தால் செருக் குற்றவனும் | नाम | என்ற |
| कुम्भीनस्याः | கும்பீனகக்கு | दानवेन्द्रः | ஆசரமன்னன் |
| सुखावहः | உலகவாழ்வுக்குக் கா ண்புகளுமான | विगृह्य | ஆடக்கி |
| | | वशं | அடிமைத்தளத்தில் |
| | | भानीतः | கொண்டுவரப்பட டான். |

निर्जितास्ते महाबाहो नगा गत्वा रसातलम् । वासुकिस्तक्षकः शङ्खो जयी च वशमाहृताः॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|---------------------------|
| महाबाहो | "மகாபாகுவே! | वासुकिः | வாசுகியும், |
| रसातलं | பாதாளலோகத்திற்கு | स्तक्षकः | தக்தகனும், |
| गवा | சென்ற | शङ्खः | சங்கனும், |
| ते | ஆந்த | जयी च | துடி என்பவனும் |
| नागाः | நாகர்கள் | वशं | அடிமைத்தளத்தில் |
| निर्जिताः | கொல்லப்பட்டார்கள். | आहृताः | கொண்டுவரப்பட்டார் கள். |

अक्षया बलवन्तश्च शूरा लब्धवराः पुनः । त्वया संवत्सरं युद्ध्वा समरे दानवा विभो ॥
स्वबलं समुपाश्रित्य नीता वशपरिन्दम । मायाश्चाधिगतास्तत्र बहवो राक्षसाधिप ॥११॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------------|-----------------------------|
| राक्षसाधिप | "राक्षஸமன்னு! | संवत्सरं | ஒருவருஷகாலம் |
| अरिन्दम | சத் துருசம் ஹரக! | समरे युद्ध्वा | போரிட்டு |
| विभो | பிரபுவே! | श्वया | தேவரீரால் |
| पुनः | மேலும் | वशं | அடிமைத்தனத்தில் |
| लब्धवराः | வரம்பெற்று | नीताः | கொண்டு வரப்பட்ட டார்கள். |
| अक्षयाः | அழிவற்ற | तत्र | அவ்விடத்தில் |
| बलवन्तः | பலசாலிகளும் | मायाः च | மாயா வித்தைகளும் |
| शूराः च | சூரர்களும் | बहवः | பல |
| दानवाः | அசுரர்கள் | अधिगताः | தொந்துக்கொள்ளப் பட்டனர். |
| स्वबलं | தேவரீரது பலத்தை | | |
| समुपाश्रित्य | கொண்டு | | |

शूराश्च बलवन्तश्च वरुणस्य सुता रणे । निर्जितास्ते महाबाहो चतुर्विधबलानुगाः ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------|--------------------|
| महाबाहो | "மகாபாகுவே! | ते | அந்த |
| बलवन्तः च | பலசாலிகளும் | वरुणस्य | வருணனது |
| शूराः च | சூரர்களும் | सुताः | புதல்வர்கள் |
| चतुर्विध- | நான்குகித சேனாபதி | रणे | போரில் |
| बलानुगाः } | வாரங்களை யுடையவர் களும் | निर्जिताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |

मृत्युदण्डमहाग्राहं शाल्मलिद्रुममण्डितम् । कालपाशमहावीचि यमकिङ्करपन्नगम् ॥ १३ ॥

अवगाह्य त्वया राजन्यमस्य बलसागरम् । जयश्च विपुलः प्राप्तो मृत्युश्च प्रतिषेधितः ॥१४॥

| | | | |
|---------------|---|----------------|-------------------------------------|
| राजन् | "அரசே! | यमकिङ्करपन्नगं | யமகிக்கரர்களாகிய பாம்புகளை யுடைய |
| मृत्युदण्ड- | மிருத்யுதண்டமாகிய | यमस्य | யமனது [துமான |
| महाग्राहं } | பெரும் முதுகைகளை யுடையதும் | बलसागरं | சேனாசமுத்திரத்தில் |
| शाल्मलिद्रुम- | சால்மலியெனும் ஆயு | अवगाह्य | புகுந்து |
| मण्डितं } | தக்கனாகிய கிருகந ங்களால் நிறைந்துள் ளதும் | त्वया | தேவரீரால் |
| कालपाशमहावीचि | காலபாசமாகிற போ | विपुलः जयः च | மகத்தான வெற்றியும் |
| | கைகளை யுடையதும் | प्राप्तः | ஆடையப்பட்டது. |
| | | मृत्युः च | எமலும் |
| | | प्रतिषेधितः | ஒட்டி விடப்பட்டான். |

सुषुद्धेन च ते सर्वे लोकास्तत्र सुतोपिताः

॥ १५ ॥

सुषुद्धेन
लोकाः
ते
सर्वे च

“அம்மிடத்தில்
லோகவாசிகள்
அவர்கள்
எல்லோரும்

सुषुद्धेन
सुतोपिताः

நல்ல போதால்
சந்தோஷப்படுத்தப்
பட்டார்கள்.

शत्रियैर्वहुभिर्वीरैः शक्रतुल्यपराक्रमैः । आसीद्वसुमती पूर्णा महद्भिरिव पादपैः ॥ १६ ॥

वसुमती
महद्भिः
पादपैः
इव

“பூலோகவாசிகள்
பெரும்
விருகட்களால்
எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே

शक्रतुल्यपराक्रमैः
वीरैः
बहुभिः
शत्रियैः
पूर्णाः
आसीत्

இந்திரனுக்கொப்பான
ஆண்மைபுற்ற
சூரர்களால்
பல
கந்திரியர்களால்
நிறைந்ததால்
இருந்தது.

तेषां वीर्यगुणोत्साहैर्न समो राघवो रणे । प्रमह्य ते त्वया राजन्हताः परमदुर्जयाः ॥ १७ ॥

राजन्
तेषां
वीर्यगुणोत्साहैः
रणे
राघवः

“அரசே!
அவர்களுக்கு
ஆண்மை, ஆற்றல், கு
ணம், உத்ஸாகமும்
இவைகளில்
போரில்
ராமன்

समः न
परमदुर्जयाः
ते
त्वया
प्रमह्य
हताः

சமமானன்று.
வெல்லற்கரியர்
களாகிய
அவர்கள்
தேவரீரால்
பலதரித்து
கொல்லப்பட்டார்கள்.

तिष्ठ वा किं महाराज श्रमेण तव वानरान् । अयमेको महाबाहुर्न्द्रजित्क्षपयिष्यति ॥ १८ ॥

महाराज
तिष्ठ
महाबाहुः
अयं
इन्द्रजित्
एकः

“மகாராஜரீ!
தேவரீ! இங்கேயே
இருந்தருளலாம்.
மகாபாகுவாகிய
இந்த
இந்திரஜித்து
ஒருவனே

वानरान्
क्षपयिष्यति
तव
अमेण वा किम्

வானர்களை
பாதுகொடுத்தவிடு
வான்.
தேவரீருக்கு
எனக்கெதிரென்பது
தான் ஏன்?

अनेन हि महाराज माहेश्वरमनुत्तमम् । इष्टा यज्ञं वरो लब्धो लोके परमदुर्लभः ॥ १९ ॥

महाराज
अनेन हि
अनुत्तमं
माहेश्वरं
यज्ञं

“மகாராஜரீ!
இவனுடைய
மிகக் திறந்ததாம்
சிவபெருமானுக்கு
பரிசியை விடுவன்க்கி
றதுமான்
யாகத்தை

इष्टा
लोके
परमदुर्लभः
वरः
लब्धः

புரிந்து
உலகில்
மிகவும் கிடைத்தற்
கரியதாகிய
வரமானது
அடையப்பட்டிருக்கி
றது.

शक्तिसमीने च विनिकीर्णान्त्रशैवलम् । गजकच्छपसंबाधमश्वमण्डूकसंकुलम् ॥ २० ॥
 रुद्रादित्यमहाथाहं मरुदसुमहोरगम् । रथाश्वगजतोषौघं पदातिपुलिनं महत् ॥ २१ ॥
 अनेन हि समासाद्य देवानां बलसागरम् । गृहीतो दैवतपतिर्लङ्कां चापि प्रवेशितः ॥ २२ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|---------------------|--|
| शक्तिसमीने | { "சட்டி, தேவர்களை கிற மீன்களையுடைய தும், | ரथाश्व- गजतोषौघं | } ரதங்கள், குதிரைகள், யானைகளாகிற நீர்ப் பெருக்குகளையுடைய தும் |
| विनिकीर्णान्त्रशैवलम् | { சிதழிக்கிடக்கும் நரம் புகளாகிற பாசிகளை யுடையதும், | पदाति- पुलिनं च | } பதா திகளாகிற மணற் குன்றுகளையுடைய துமான |
| गजकच्छपसंबाध | யானைகளாகிற ஆமை களால் நிறைந்ததும், | देवानां | தேவர்களது |
| अश्वमण्डूकसंकुलम् | { குதிரைகளாகிற தவ ளைகளால் நிறைந்த தும், | महत् | பெரும் |
| रुद्रादित्य- महाथाहं | { ருத்திரர்களையும், ஆ தித்யர்களையும் பெ ரும் முதலைகளாக உடையதும், | बलसागरं | சேனாசமுத்திரத்தில் |
| मरुदसु- महोरगं | { மருத்துக்களும், வ ஸுக்களுமாகிய பெ ரும்பாம்புகளையுடைய தும், | समासाद्य | புகுந்து |
| | | अनेन हि | இவனாலேயே |
| | | दैवतपतिः | தேவதந்திரன் |
| | | गृहीतः | கிடைப்படுத்தப்பட்ட டான். |
| | | अपि | இதோடு |
| | | लङ्कां च | இலங்கைக்கும் |
| | | प्रवेशितः | கொண்டு வந்து செர்க்க ப்பட்டான். |

पितामहनियोगाच्च मुक्तः शम्बरवृत्रहा । गतस्त्रिविष्टपं राजन्सर्वदेवनमस्कृतः ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-----------------|----------------------------------|
| राजन् | " அரசே! | पितामहनियोगाच्च | பிரம்மதேவரது ஆக் கிணையால்தான் |
| शम्बरवृत्रहा | { சம்பராகரணையும் விருத்திராகரணையும் கொன்றவனும் | मुक्तः | கிடைவிடுவிக்கப்பட்டு |
| सर्वदेवनमस्कृतः | { எல்லாதேவர்களாலும் நமஸ்கரிக்கப்பட்ட வனுமான ஆவன் | त्रिविष्टपं | இந்திரலோகம் |
| | | गतः | போய்ச்சேர்ந்தான். |

तमेव त्वं महाराज विसृजेन्द्रजितं सुतम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------|-------------|---------------|---------------|
| महाराज | " மகராஜாவே! | इन्द्रजितं एव | இந்திரஜிதனையே |
| सुतं | புதல்வனாகிய | त्वं | தேவரீர் |
| तं | அந்த | विसृज | அனுப்புவிடுக. |

यावद्वा नरसेनां तां सरामां नयति क्षयम् ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------|--------------|------------|------------------|
| यावत् | " தகடணமே | तां | ஆந்த |
| सरामां | ராமனுள்ளிட்ட | वानसेनां | வானரணுகளியத்தை |
| | | क्षयं नयति | ஒழித்துவிடுவான். |

राजत्रापदयुकेयभागता भाकृताज्जनात् । हृदि नैव त्वया कार्या एवं वधिष्यसि राघवम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------|-------------------|
| राजन् | “அங்கே! | वापत् | விளை, |
| भाकृतात् | முடனாவ | त्वया | தேவரீரால் |
| जनात् | ஒருவனிடத்திலி | हृदि | மனதில் |
| | ருந்து | न कार्या | கொள்ளத்தக்கதன்று. |
| भागता | தேவரீருக்கு எட்டியி | एवं एव | தேவரீர்தான் |
| इयं | இந்த [ருக்கிற | राघवं | ராபணை |
| अयुक्ता | எற்றதல்லாத | वधिष्यसि | கொல்லப்போகிறீர்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14949

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 274

अहमः सर्गः—எட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ८ ॥

प्रहस्तादिवचनम्—பிரஸ்தஸ்தன் முதலியவரது வசனம்.

ततो नीलाम्बुदनिभः प्रहस्तो नाम राक्षसः । अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं शूरः सेनापतिस्तदा ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|------------|--------------------|
| ततः | அதற்கப்பால் | प्रहस्तः | பிரஸ்தஸ்தன் |
| तदा | அப்பொழுது | नाम | என்ற |
| नीलाम्बुदनिभः | நீலமேகத்தை நிகர்த்த தவனும் | राक्षसः | அரக்கன் |
| | | प्राञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| शूरः | சூரனும் | वाक्यं | பின்வரும்வாக்யத்தை |
| सेनापतिः | சேனாதிபதியுமான | अब्रवीत् | கொன்னான் : |

देवदानवगन्धर्वाः पिशाचपतगोरगाः । न त्वां धर्षयितुं शक्ताः किं पुनर्वा नरा रणे ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|-----------------|
| देवदानवगन्धर्वाः | “தேவர்கள், அசுரர்கள், கந்தர்வர்கள் இவர்களும் | त्वां | தேவர்களை |
| पिशाचपतगोरगाः | பிசாசர்களும், பாதகர்களும், உரகர்களும் | धर्षयितुं | மெல்ல |
| रणे | போரில் | शक्ताः न | வல்லவர் அல்லர். |
| | | वा नराः | காசர்கள் |
| | | किं | என்றால் |
| | | पुनः | எம்மாத்திரம்? |

सर्वे प्रमत्ता विश्वस्ता वञ्चिताः स्म हनुमता । न हि मे जीवतो गच्छेज्जीवन्त वनगोचरः ॥

| | | | |
|------------|---|--------------|-------------------------------------|
| सर्वे | “எல்லோரும் (கமக்குக் தீங்குசெய்யும் யும் சத்ருக்கள் இல்லை கொண்ட) எல்லோரும் நியமுடையவர்களாய் | वञ्चिताः स्म | எனத்தப்பய்க்கிட்ட தான் [டர்கள். |
| विश्वस्ताः | அஜாக்கிரதையுடைய ருந்தவர்களாய் | मे | உன்முடனிருக்கிற வனமோகும் [ரையில் |
| प्रमत्ताः | | जीवतो | அது |
| | | वनगोचरः | உயிருடன் |
| हनुमता | ஹனுமரால் | सः | திரும்பிப்போகவே |
| | | जीवन् | மாட்டாது. |
| | | गच्छेत् हि न | |

सर्वा सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम् । करोम्यवानरां भूमिमाज्ञापयतु मा भवान् ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|-----------------------|--|
| भवान् | "தேவரீர், | सशैलवन- काननां } | மலைகளையும் காடுகளையும் சேலைகளையும் உள்ளிட்டதுமான |
| मा | அடியேனை | भूमि सर्वा भवानरां | பூமிமுழுவுதையும் வானரப்பூண்டற்ற |
| आज्ञापयतु | ஆக்குநாபித்தருளும். | करोमि | தாய் (ஐதேவ) செய்கிறேன். |
| सागरपर्यन्तां | சமுத்திரம்வரையிலு ன்னதும் | | |

रक्षां चैव विधास्यामि वानराद्रजनीचर । नागमिष्यति ते दुःखं किञ्चिदात्मापराधजम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|----------------------------|---|
| रजनीचर | "அரக்கரே! | आत्मापराधजं | தேவரீர் செய்த பிழை யால் உண்டாகிய |
| वानरान् | குரங்குகளிடத்தி னின்று | दुःखं ते | மனக்கவலைபென்பது தேவரீருக்கு |
| रक्षां च | (யாதொரு) திருக்குவர மையையும் | किञ्चित् एव आगमिष्यति न | கொஞ்சமேனும் சம்பளிக்கப்போவ தில்லை". |
| विधास्यामि | நான் முடித்துவைக்க ப்போகிறேன். | | |

अब्रवीत् सुसंकुडो दुर्मुखो नाम राक्षसः । इदं न क्षमणीयं हि सर्वेषां नः प्रधर्षणम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------------|---------------------------|-------------------------------------|
| दुर्मुखः | தூர்முகன் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழி |
| नाम | என்ற | इदं | "இந்த [ந்தான் : |
| राक्षसः | அரக்கன் | प्रधर्षणं | தூர்மார்த்தம் |
| सुसंकुडः | மிகச் சினங்கொண்ட வனும் | नः | நமக்கு |
| वु | இவ்விஷயத்தில் | सर्वेषां हि क्षमणीयं न | எல்லோருக்குமே பெற்றுக்கத்தகாதது. |

अयं परिभवो भूयः पुरस्यान्तःपुरस्य च । श्रीमतो राक्षसेन्द्रस्य वानरेण प्रधर्षणम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------|-----------------|----------------------|
| पुरस्य | "பட்டணத்தையும், | राक्षसेन्द्रस्य | அரக்கர்மன்னனுக்கு |
| अन्तःपुरस्य च | அந்தப்புரத்தையும் | भूयः | மிக்க |
| वानरेण प्रधर्षणं | ஒரு குரங்கு நாக்கின து | परिभवः | அவமரியாதையாகி றது |
| श्रीमतः | சூரியானாகிய | अयम् | இது. |

अस्मिन्सुहृते हत्वैको निवर्तिष्यामि वानरान् । प्रविशान्सागरं भीमम्बरं वा रसातलम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------|---------------|----------------------------|
| अस्मिन् सुहृते | "இதேசுஷணத்திலே | प्रविशान् | புகுந்துக்கிடக்கின்ற |
| भीमं | பயங்கரமான | वानरान् | வானரர்களை |
| सागरं | சமுத்திரத்திலே | एकः | ஒருவனாக |
| रसातलं | பாதாளலோகத்திலே | हवा | கொன்றுவிட்டு |
| अम्बं वा | ஆகாயத்திலே | निवर्तिष्यामि | திரும்பிவரப்போகி றேன்." |

ततोऽब्रवीत्सुसंकुद्धो वज्रदंष्ट्रो महाबलः । प्रगृह्य परिवं घोरं मांसशोणितरूपितम् ॥ ९ ॥

| | | | | | |
|--------------|-------------------|------------|---|---------------|-----------|
| ततः | அதன்பின் | मांसशोणित- | } | மாம்சத்தாலும் | ரத்த |
| महाबलः | மகா பலம்பொருந்திய | रूपितं | | } | த்தாலும் |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்ஸ்ட்ரனென் | घोरं | | | பயங்கரமான |
| | பலன் | परिवं | | பரிகாயத்ததை | |
| सुसंकुद्धः | மிகக் கிணங்கொண்ட | प्रगृह्य | | பற்றிக்கொண்டு | |
| | வனாகி | अब्रवीत् | | பின்வருமாறு | |
| | | | | மொழிந்தான் : | |

किं नो हनुमता कार्यं कृपणेन तपस्विना । रामे तिष्ठति दुर्धर्षे ससुग्रीवे सलक्ष्मणे ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|----------------------|
| रामे | "ராமன் | तिष्ठति | எதிர்ந்நுவுந்திருக்க |
| ससुग्रीवे | சுகரீவனுடனும், | कृपणेन | அற்புதும் [கையில் |
| सलक्ष्मणे | லக்ஷ்மணனுடனும், | तपस्विना | அப்பாவிபுமான |
| दुर्धर्षे | செருங்கு தலைக்கேறி | हनुमता | ஹனுமாதோடு |
| | பலனாய் | नः | நமக்கு |
| | | किं कार्यम् | ஆவது என்ன ? |

अथ रामं ससुग्रीवं परिवेण सलक्ष्मणम् । आगमिष्यामि हत्वैको विशोभ्य हरिवाहिनीम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------------|
| अथ | "இப்பொழுதே | एकः | நான் ஒருவனாய் |
| रामं | ராமனை | हवा | கொன்றுவிட்டு |
| ससुग्रीवं | சுகரீவனோடுகூடவும் | हरिवाहिनीं | வாணரசைவிடத்த |
| सलक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனோடு | विशोभ्य | நலக்கழுந்தச்செய்து |
| | கூடவும் | आगमिष्यामि | திரும்பிவரப்போகி |
| परिवेण | பரிகாயத்தால் | | தேன். |

इदं मयापरं वाक्यं शृणु राजन्यर्दाच्छसि । उपायकुशलो ह्येव जयेच्छत्रुनतन्द्रितः ॥ १२ ॥

| | | | |
|--------|-----------------|---------------|--------------------|
| राजन् | "அரசே! | शृणु | செவியாய்த்தருளும் |
| मम | எனது | उपायकुशलः | உபாயக்களில் கிபுண |
| अपरं | பற்றொரு | | னாய் |
| वाक्यं | விண்ணப்பமாகிற | अतन्द्रितः हि | நூக்கிரமையுடவிருக் |
| इदं | இதற்கு | | கிற ஒருவன்தான் |
| इच्छसि | இஷ்டப்படுகிறீர் | शत्रुं एव | தந்நுக்களை எல்லோ |
| यदि | என்றால், | जयेत् | வெல்வான். [கையமே |

कामरूपधराः शूराः सुभीमा भीमदर्शनाः । राक्षसानां सहस्राणि राक्षसाधिप निशिताः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|---------------------|
| कामरूपधराः | "காமரூபமென்ன! | भीमदर्शनाः | பயங்கரமான தேர்ந்த |
| शूराः | ஆரக்கர்களுக்கும் | | முடையவர்களெனவும் |
| सुभीमाः | பல | कामरूपधराः | கிணத்த உருவம் எடுக் |
| | சூரர்கள் | | கவல்லவர்களெனவும் |
| | பிரிக்கொடியவர்கள் | निशिताः | தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட |
| | எனவும் | | குக்கிரந்தன். |

काकुत्स्थमुपसंगम्य विभ्रो मानुः वपुः । सर्वे ह्यलंभमा भूत्वा बुवन्तु रघुसत्तमम् ॥१४॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|------------------------------|
| सर्वे | “ எல்லோரும் | काकुत्स्थं | சாமனை |
| मानुषं | மனித | उपसङ्गम्य | அடைந்து |
| वपुः | உருவம் | अलंभमाः हि | பதறாதவர்களாகவே |
| विभ्रतः | கொண்டவர்களாய் | भूत्वा | இருந்துகொண்டு |
| रघुसत्तमं | ரகுஸத்தமனென்ற | बुवन्तु | பின்வருமாறு தெரிவிக்கட்டும். |

प्रेषिता भरतेन स भ्रात्रा तव यवीयसा । स हि सेनां समुत्थाप्य क्षिप्रमेवोपयास्यति ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|------------|---------------------------|
| तव | “ தேவரீரது | यवीयसा | தம்பியோடு (லக்ஷ்மணனோடு) |
| भ्रात्रा | தம்பியாகிய | सेनां | சேனையை |
| भरतेन | பரதனால் | समुत्थाप्य | திரட்டிக்கொண்டு |
| प्रेषिताः स | செய்தியுடன் அனுப்பப்பட்டிருக்கிறோம்.” | क्षिप्रं | கிரைவில் |
| हि | அதனால் | उपयास्यति | அவ்விடம் கோக்கிப் போவான். |
| सः एव | அவனும் | | |

ततो वयमितस्तूर्णं शूलशक्तिगदाधराः । चापवाणासिहस्ताश्च त्वरितास्तत्र याम ह ॥१५॥

| | | | |
|--------------------------|--|------------|-----------------------|
| तत इ | “ அப்பொழுதே | चापवाणासि- | } வில், பாணம், சுத்தி |
| इतः | இவ்விடத்திலிருந்து | हस्ताः च | |
| त्पूर्णं | யிரையில் | | கொண்டவர்களாய் |
| ततः | அவ்விடத்திற்கு | त्वरिताः | வளக்கமுடையவர் |
| वयं | நாம் | याम | கனாய் |
| शूलशक्ति- } गदाधराः } | சூலம், சக்தி, கதை இவைகளை தரித்த வர்களாய் | | செல்வேரம். |

आकाशे गणशः स्थित्वा हत्वा तां हरिवाहिनीम् । अस्त्रशस्त्रमहावृष्ट्या प्रापयाम यमक्षयम् ॥

| | | | |
|-------------------------|------------------------------------|------------|---------------|
| आकाशे | “ ஆகாசத்தில் | तां | அந்த |
| गणशः | கட்டக்கட்டமாக | हरिवाहिनीं | வானரசேனையை |
| स्थित्वा | நின்றகொண்டு | हत्वा | கொன்று |
| अस्त्रशस्त्रमहावृष्ट्या | அஸ்திரசஸ்திரங்க ளின் வர்ஷத்தால் | यमक्षयं | யமனாகத்திற்கு |
| | | प्रापयाम | அனுப்புவோம். |

एवं चेदुपसर्पेतामनयं रामलक्ष्मणौ । अवश्यमपनीतेन जहतामेव जीवितम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|------------------|
| एवं चेत् | “ இப்படியாகில் | अपनीतेन एव | சூழ்க்கியினாலேயே |
| रामलक्ष्मणौ | சாமனும் லக்ஷ்மண | जीविनं | உயிரை |
| अनयं | சூதில் [னும் | अवश्यं | அவச்யம் |
| उपसर्पेतां | சிக்கிக்கொள்வார்கள். | जहताम् | விட்டட்டும்.” |

कौम्भकर्णिस्तनो वीरो निकुम्भो नाम वीर्यवान् । अवर्वात्परमकुद्धो रावणं लोकरावणम् ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|----------|------------------------------|
| கௌம்கர்ணி: | கும்பகர்ணனின் புதல் வனும் | பரமகுடி: | மிகச்சினங்கொண்ட வனும் |
| வீரீவான் | வீர்யவான் | லோகராவண் | உலகைக் கதறச்செய் பும் |
| நிகும:ப: | நிகும்பன் | ராவண் | ராவணனைப்பார்ந்து |
| நாம | என்ற | சத: | அப்பொழுது |
| வீர: | கூர்ன் | அவ்வீர் | பின்வருமாறு மொழி ந்தான் : |

सर्वे भवन्तस्तिष्ठन्तु महाराजेन सङ्गताः । अहमेको हनिष्यामि राघवं सहलक्ष्मणम् ॥

सुग्रीवं च हनुमन्तं सर्वानेव च वानरान्

॥ २० ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|------------|-----------------------|
| भवन्त: | "நீங்கள் | ராவண் | ராமனையும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | சுமீவ் ச | சுக்ரீலனையும் |
| महाराजेन सङ्गताः | மகாராஜரோடுகூடி | ஹனுமன் ச | துறையானையும் |
| तिष्ठन्तु | இக்கேசிய இருக்கன். | வானரான் | வானரர்கள் |
| अहं | நான் | सर्वान् एव | எல்லோரையும் |
| एकः | ஒருவனாகவே | हनिष्यामि | கொல்லப்போகி றேன்." |
| सहलक्ष्मणं | சகலமணிகேளுடிகூட | | |

ततो वज्रहनुर्नाम राक्षसः पर्वतोपमः । क्रुद्धः परिलिहन्वक्त्रं जिह्वया वाक्यमवर्षात् ॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|------------------------------|
| तत: | அதன்பின் | जिह्वा | நாக்கினால் |
| पर्वतोपमः | மலைக்கொப்பான | वक्त्रं | வாய் |
| वज्रहनुः | வஜ்ரஹனு | परिलिहन् | துழானிக்கொண்டு |
| नाम | என்ற | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| राक्षसः | அரக்கன் | अवर्षात् | பின்வருமாறு மொழி ந்தான் : |
| कुद्धः | கிணங்கொண்டவனாகி | | |

स्वैरं कुर्वन्तु कार्याणि भवन्तो विगतज्वराः । एकोऽहं भक्षयिष्यामि तान्सर्वान्हरियूथपान् ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|--------------|----------------------------|
| भवन्त: | "நீங்கள் | एकः | ஒருவனாகவே |
| विगतज्वराः | கவலைப்பொழிந்தவர் களாய் | तान् | அந்த |
| स्वैरं | உக்களது இஷ்டம் போல் | हरियूथपान् | வானரத்தலைவர்க ளையும், |
| कार्याणि | காரியங்களை | सर्वान् | மற்றுமுள்ள எல்லோ ரையும் |
| कुर्वन्तु | செய்யுங்கள். | भक्षयिष्यामि | பசித்துவிடப்போகி றேன். |
| अहं | நான் | | |

स्वस्थाः क्रीडन्तु निश्विन्ताः पिवन्तो मधुवारुणीम्

॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-----------|------------------------|
| निश्विन्ताः | "கவலைபற்றவர்களாய் | पिवन्तः | கூடி, துக்கொண்டு |
| मधुवारुणी | மதுவெள்ளம் வாரா வத்தை | स्वस्थाः | சுறையற்றவர்களாய் |
| | | क्रीडन्तु | பொழுதுபோக்குங் கள். |

अहमेको वधिष्यामि सुधीवं सहलक्ष्मणम् । अङ्गदं च हनूमन्तं रामं च रणकुञ्जरम् ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|----------------|
| अहं | “கான் | सुधीवं | சுகீர்வனையும், |
| एकः | ஒருவனாகவே | हनूमन्तं | ஹனுமனையும், |
| सहलक्ष्मणं | ஸக்த்மணனோடுகூட | अङ्गदं च | அங்கதனையும் |
| रणकुञ्जरं | போர்வீரனாகிய | वधिष्यामि | கொல்லப்போகி |
| रामं च | ராமனையும், | | தேன்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे अष्टमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14973

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 298



नवमः सर्गः—ஒன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ २ ॥

विभीषणोक्तिः—வீபிஷணனது வசனம்.

ततो निकुम्भो रभसः सूर्यशत्रुर्पहावलः । सुप्तघ्नो यज्ञकोपश्च महापार्श्वमहोदरौ ॥ १ ॥

अग्निकेतुश्च दुर्धर्षो रश्मिकेतुश्च राक्षसः । इन्द्रजिच्च महातेजा बलवान्रावणात्मजः ॥ २ ॥

प्रहस्तोऽथ विरूपाक्षो वज्रदंष्ट्रो महाबलः । धूम्राक्षश्चातिकायश्च दुर्मुखश्चैव राक्षसः ॥ ३ ॥

परिवान्पट्टिशान्प्रासाञ्छक्तिशूलपरश्वधान् ।

चापानि च सबाणानि खड्गान्श्च विपुलाञ्छितान् ॥ ४ ॥

प्रमृह्य परमक्रुद्धाः समुत्पत्य च राक्षसाः । अशुबन्नावणं सर्वे प्रदीप्ता इव तेजसा ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------|----------------------------|--|
| ततः | அதன்மேல் | इन्द्रजिच्च | இந்திரஜித்தும் |
| निकुम्भः | நிகும்பனும், | प्रहस्तः अथ | பிரகஸ்தனும் |
| रभसः | ரபஸனும் | विरूपाक्षः | விரூபாக்ஷனும் |
| महाबलः | மகா பலவானாகிய | वज्रदंष्ट्रः च | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரனும் |
| सूर्यशत्रुः | சூர்யசத் துருவும், | महाबलः | மகா பலவானாகிய |
| सुप्तघ्नः | சுப்தக்ஷனும் | धूम्राक्षः च | தூம்ராக்ஷனும் |
| यज्ञकोपः च | யக்ஷகோபனும் | अतिकायः च | அதிகாயனும் |
| महापार्श्वमहोदरौ | மகாபார்ச்வனும் மகோதரனும் | दुर्मुखः | தூர்முகனென்ற |
| | | राक्षसः एव | அரக்கனும் |
| दुर्धर्षः | டுவல்லற்கரிய | सर्वे | ஆகிய எல்லா |
| अग्निकेतुः च | அக்ஷிகேதுவும் | राक्षसाः च | அரக்கர்களுமும் |
| रश्मिकेतुः | ரக்ஷிகேதுவென்ற | परिवान् | பரிவாயுதங்களையும் |
| राक्षसः च | அரக்கனும் | पट्टिशान् | பட்டயக்கத்திகளையும் |
| महातेजाः | மகாபராக்கிரம சாலியும் | प्रासान् | முன்னாயுதங்களையும் |
| | | शक्तिशूल- } परश्वधान् } | வேல்களையும், குலக் களையும், கோடாரி களையும் |
| बलवान् | பலவானும் | सबाणानि | களைகளுடன் கூடிய |
| रावणात्मजः | ராவணனது புதல்வ னான | | |

| | |
|------------|------------------------------|
| चापानि च | விடுகின்றையும் |
| विपुलान् | பெரிய |
| शितान् | கூரிய |
| खड्गान् च | கத்திகளையும் |
| प्रभृष्ट | எடுத்தாக்கொண்டு |
| परमकुट्टाः | பிகச் சினக்கொண்ட வர்களாய் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| समुपत्य | தூள்விக்குதித்து |
| तेजसा | தேஜஸால் |
| मदीसाः इव | ஜலசிக்கின்றவர்க ளாய் |
| रावणं | ராவணனைப்பார்த்து |
| अमुवन् | பின்வருமாறுகொண் டவர்கள் : |

अथ रामं वधिष्यामः सुग्रीवं च सलक्ष्मणम् ।

| | |
|------------|--------------------|
| अथ | "இதோ |
| रामं | ராமனையும் |
| सलक्ष्मणं | என்ஜமணனோடு |
| सुग्रीवं च | சுகரீவனையும் [கடவே |
| येन | எவனால் |
| लङ्का | இலங்கைககர் |

कृपणं च हनूमन्तं लङ्का येन मधर्षिता ॥

| | |
|------------|------------------------------|
| मधर्षिता | தன்புறத்தப்பட்ட தோ அந்த |
| कृपणं | அற்பமான |
| हनूमन्तं च | ஹனுமனையும் |
| वधिष्यामः | நாக்கள் கொல்லப் போகிறோம். |

तान्मृहीतायुधान्सर्वान्वारयित्वा विभीषणः । अत्रवीत्याञ्जलिर्वाक्यं पुनः प्रत्युपवेश्य तान् ॥

| | |
|--------------|----------------------------------|
| विभीषणः | விபிஷணர் |
| तान् | அந்த |
| मृहीतायुधान् | கையிள் ஆயுதக்களை தரித்திருத்த |
| सर्वान् | எல்லோரையும் |
| वारयित्वा | மறுத்து, |

| | |
|--------------------|-------------------------------|
| तान् | அவர்களை |
| प्रत्युपवेश्य पुनः | உட்காரவும்செய்து |
| आञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| वाक्यं | அபிப்பாயத்தை |
| अत्रवीत् | பின்வருமாறு வெளிவிட்டார் : |

अप्युपायैस्त्रिभिस्तात योर्र्थः प्राप्तुं न शक्यते ।

| | |
|------------|--------------------------------------|
| तात | "அண்ணா! |
| यः | எந்த |
| अर्थः | காரியகித்தி |
| त्रिभिः | மூன்று |
| उपायैः भवि | (சாம், தான பேதமெ ன்ற) உபாயங்களாலே |
| प्राप्तुं | பெற |
| शक्यते न | முடியாதிருக்கிறதோ |

तस्य विक्रमकालांस्तान्युक्तानाहुर्मनाधिणः ॥

| | |
|--------------|------------------------------------|
| तस्य अपि | அதற்குத்தான் |
| तान् | அந்த |
| विक्रमकालान् | தண்டனைவிதிகளை |
| युक्तान् | உபயோகப்படுத்தப் படுகின்றவைகளாய் |
| मनाधिणः | பெர்யோர்கள் |
| आहुः | கொல்லிக்குக்கிரூர் கள். |

प्रमत्तेष्वभियुक्तेषु देवेन प्रहतेषु च । विक्रमास्तात सिद्ध्यन्ति परीक्ष्य विधिना कृताः ॥

| | |
|---------------|--|
| तात | "அண்ணா, |
| प्रमत्तेषु | அஜாக்கிரதையுடன் இருப்பவர்கள் இடத் தெய்வத்தால் [தீதும் கைகிடப்பட்ட |
| देवेन | { ஐக்கிரதையுடனிருப் பவர்களிடந்தீதும் தான் |
| प्रहतेषु | |
| अभियुक्तेषु च | |

| | |
|-------------|------------------|
| विधिना | விதியைக்கொண்டு |
| परीक्ष्य | ஆராய்ச்சிசெய்து |
| कृताः | அனுஷ்டிக்கப்பட்ட |
| विक्रमाः | தண்டனைகள் |
| सिद्ध्यन्ति | கித்திக்கின்றன. |

अप्रमत्तं कथं तं तु विजिगीषुं बले स्थितम् । जितरोषं दुरोधं प्रधर्षयितुमिच्छथ ॥१०॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|-----------------------|---------------------------|
| अप्रमत्तं | “ வெகு ஐக்கிரமத யடனிருப்பவரும் | जितरोषं | கொபத்தை வென்ற வரும் |
| विजिगीषुं | ஐயம்பெறும் போர் வீரரும் | दुरोधं | அனுசும்பியாதவரு |
| बले स्थितं | தெய்வபலம் பெற்ற வரும் | तं तु प्रधर्षयितुं | அவரையும் [மரண எதிர்க்க |
| | | कथं | எவ்வளம் |
| | | इच्छथ | நினைக்கின்றீர்கள் ? |

समुद्रं लङ्घयित्वा तु घोरं नदनदीपतिम् । कृतं हनुमता कर्म दुष्करं तर्कयेत वा ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|---|--------------------|---------------------------------------|
| नदनदीपतिं | “ நதன்களுக்கும் நதிக ளுக்கும் புகலிடமா பயங்கரமான [கிய | हनुमता | ஹனுமாரால் |
| घोरं | சமுத்திரத்தையும் | कृतं | செய்யப்பட்ட |
| समुद्रं तु | ஒரே தாண்டாய்த் | दुष्करं | மற்றெவராலும் செய் யமுடியாத |
| लङ्घयित्वा | தாண்டி | कर्म वा तर्कयेत | கரியத்தையாவது நினைத்துப்பாடுங்கள். |

बलान्यपरिमेयानि वीर्याणि च निशाचराः । परेषां सहसाऽवज्ञा न कर्तव्या कथंचन ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|------------|-------------------|
| निशाचराः | “ அரக்கர்களே ! | कथञ्चन | எப்படியும் |
| परेषां | சுத்துருக்களுடைய | सहसा | அவசரப்பட்டு |
| बलानि | சைனியங்களும் | अवज्ञा | அலகூறியம் |
| वीर्याणि च | பெருமைகளும் | कर्तव्या न | செய்யத்தக்கதன்று. |
| अपरिमेयानि | கண்டறியமுடியாத வைகள். | | |

किं च राक्षसराजस्य रामेणापकृतं पुरा । आजहार जनस्थानाद्यस्य भार्या यशस्विनः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|--------------|-----------------------------|
| यशस्विनः | “ மகாபுகழ்படைத்த எவருடைய | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| यस्य | தர்மபத்தினியை | राक्षसराजस्य | ராக்ஷஸமன்னருக்கு |
| भार्या | ஐனஸ்தானத்தினி ருந்து | पुरा | அதற்குமுந்தி |
| जनस्थानात् | திருடிவந்தாரோர், அந்த | अपकृतं च | செய்யப்பட்ட குற்றந் தான் |
| आजहार | | किम् | யாது ? |

खरो यद्यतिवृत्तस्तु रामेण निहतो रणे । अवश्यं प्राणिनां प्राणा रक्षितव्या यथावलम् ॥

| | | | |
|-----------|--|------------|--------------------------------|
| खरः | “ கரன் | प्राणिनां | பிராணிகளின் |
| अतिवृत्तः | வரம்புகடந்து அக்கிர மத்திற்கு வந்தவனாய் | प्राणाः | ப்ராணங்கள் |
| यद्य तु | இருக்கையிலேதான் | यथावलं | தம்மாள் கூடியவட்டும் |
| रणे | போரில் | अवश्यं | அவச்யமாய் |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | रक्षितव्या | ரக்ஷித்துக்கொள்ளத் தக்கனவே. |
| निहतः | கொல்லப்பட்டான். | | |

अयशस्यमनायुष्यं परदारामिमर्शनम् । अर्थक्षयकरं धोरं पापस्य च पुनर्भवम् ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------------|--|----------|-----------------------------------|
| परदारामिमर्शनं | { "பிரதர்மனை வினைய கண்ட நெடுதும் பார்ப்ப தென்பது | धोरं | எதையும் ஒழிக்கும் கொடிய விஷம். |
| अयशस्यं | புதழுக்குக்கேடானது; | पुनः | மேலும் |
| अनायुष्यं | ஆயுளைக் குறைப்பது; | पापस्य च | பாபமெல்லாவற்றிற் கும் |
| अर्थक्षयकरं | புருஷார் தீதங்களை ஒழிப்பது; | भवम् | கைகொடுத்து வளர்ப்பது. |

एतन्निमित्तं वैदेह्या भयं नः सुमहद्भवेत् । आहता सा परित्याज्या कलहायं कृतेन किम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|-------------|---|
| एतन्निमित्तं | "மேற்கண்ட காரணக் காரல் | आहता | அயகர் துக்கொண்டு வரப்பட்டிருக்கும் |
| वैदेह्याः | விதேகமன்னரின் | सा | அவள் |
| नः | நமக்கு [புதல்விதால் | परित्याज्या | திருப்பரிச்சயப்பிக்கப் பட்டுவண்டியவள். |
| सुमहद् | கொஞ்சமும் அதிகக் முடிவாததாகிய | कलहायं | கலகத்தையுண்டிபண் ணுவதற்கான |
| भयं | விபத்து | कृतेन किम् | செய்கையால் என்ன ஆகும்? |
| भवेत् | விளைந்தேதிற்கும். | | |

न नः क्षमं वीर्यवता तेन धर्मानुवर्तिना । वैरं निरर्थकं कर्तुं दीयतामस्य मैथिली ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------|------------------------------|
| धर्मानुवर्तिना | { தர்மத்தை உள்ளள வும் வருவாதுபற்றி கடப்பவரும் | वैरं | துவேவுத்தை |
| वीर्यवता | சிறந்த ஆற்றல் கொ ண்டவருமான | कर्तुं | பாட்டுவது |
| तेन | அவரோடு | नः | நமக்கு |
| निरर्थकं | நன்மால் நிர்வகிக்க இயலாத | क्षमं न | எந்தகன் து. |
| | | मैथिली | மைதிலியார் |
| | | अस्य | இவருக்கு |
| | | दीयताम् | எயர்ப்பித்தனிடப்ப ட்டும். |

यावन्न सगजां साश्वं वहुरन्नसमाकुलाम् । पुरीं दारयते वाणैर्दीयतामस्य मैथिली ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------------------|---|----------------|--------------------------------|
| सगजां | "பானைகள் நிறைந்த தும் | पुरीं | நகரை |
| साश्वं | குதிரைகள் நிறைந்த தும் | वाणिः | பாணக்களால் |
| वहुरन्न- समाकुलां | புரானபானை சந்நைக்க ளால் நிறைந்து விவ ங்குநிற துபானை | दारयते न यावत् | செத அடிக்காமுன் னமேயே |
| | | मैथिली | மைதிலியார் |
| | | अस्य | இவருக்கு |
| | | दीयताम् | எயர்ப்பித்து விடப்ப ட்டும். |

यावत्सुधोरा महती दुर्धर्षा हरिवाहिनी । नावस्कन्दति नो लङ्कां तावत्सीता प्रदीयताम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|------------------------------|---|
| सुधोरा | “ மிக்க பயங்கரமான தும் | लङ्कां | இலங்கையை |
| दुर्धर्षा | வெல்லமுடியாதது மான | नावस्कन्दति यावत् तावत् न | தகைவதற்கு முற்று கையிடுமுன்ன மேயே |
| महती | பெரும் | सीता | சீதாதேவியார் |
| हरिवाहिनी | வானரசேனை | प्रदीयताम् | சமர்ப்பித்துவிடப்ப டட்டும். |
| नः | நமது | | |

विनश्येद्धि पुरी लङ्का शूराः सर्वे च राक्षसाः । रामस्य दयिता पत्नी स्वयं न यदि दीयते ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|-------------------------------|
| रामस्य | “ ஸ்ரீராமருடைய | पुरी | நகர் |
| दयिता | பிரிதிக்குப் பாதிர | विनश्येत् | நாசமாய்விடும். |
| पत्नी | மனைவியார் [மாகிய | शूराः | சூரர்களாகிய |
| स्वयं | தேவரீராலேயே திரு வுளமுவந்து | राक्षसाः | அரக்கர்கள் |
| दीयते यदि न | திருப்பிச்ச சமர்ப்பிக்க ப்படவில்லையென்றால் | सर्वे | எல்லோரும் |
| लङ्का | இலங்கை | च | அப்படியே (நாசமடை வார்கள்.) |
| | | हि | இது திண்ணம். |

प्रसादये त्वां बन्धुत्वात्कुरुष्व वचनं मम । हितं तथ्यं त्वहं ब्रूमि दीयतामस्य मैथिली ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|----------|---|
| बन्धुत्वात् | “ (அண்ணனெனும்) அன்பினால் | अहं | அடியேன் |
| त्वां | தேவரீரை | हितं | நன்மைமையுமே |
| प्रसादये | மனமிசைந்தருள மன் ருடுகின்றேன். | तथ्यं तु | உண்மைமையுமே |
| मम | அடியேனது | ब्रूमि | விண்ணப்பிக்கின் றேன். |
| वचनं | விண்ணப்பத்தை | मैथिली | மைதிலியார் |
| कुरुष्व | அக்கொடுத்தருள் ராக. | अस्य | இவருக்கு |
| | | दीयताम् | திருப்பிச்ச சமர்ப்பித்து விடப்பட்டும். |

पुरा शरत्सूर्यमरीचिसन्निभान्वायपुङ्खान्सुहृद्वात्सल्यजः ।

सृजत्यमोघान्विशिखान्वधाय ते प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली ॥ २२ ॥

| | | | |
|------------------------------|---|------------|---|
| शरत्सूर्य- मरीचिसन्निभान् | “ சரத் சூரலக்கிரவன் கதிர்களை நிகர்த்த வைகளும் | विशिखान् | பாணங்களை |
| नवायपुङ्खान् | தீட்டிய முனைக்கூர் களையுடையவைகளும் | ते वधाय | உம்மை நீறுக்க |
| सुहृद्वात् | மிக உறுதியானவை களும் | नृपात्मजः | கோமானின் திருமக னார் |
| अमोघान् | பொய்க்காதவைகளு மான | सृजति पुरा | பொழியும் முன்னர் |
| | | मैथिली | மைதிலியார் |
| | | दाशरथाय | ஸ்ரீராமருக்கு |
| | | प्रदीयताम् | திருப்பிச்ச சமர்ப்பித்து விடப்பட்டும். |

त्यजाशु कोपं सुखधर्मनाशनं भजस्व धर्मं रतिकीर्तिवर्धनम् ।
प्रसीद जीवेम सपुत्रवान्भवाः प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|--|----------------|--|
| सुखधर्मनाशनं | “सुखத்தைதரும் கண்டு நிலையரும் கலிவுபடு | प्रसीद | எல்லோரையும் அனுக் கொடுத்தருளும். |
| कोपं | கிணத்தை [த்தும் | सपुत्रवान्भवाः | மக்களுடனும் சுற்றக் தாருடனும் |
| आशु | இக்கணமே | जीवेम | நாம் உயிர் வாழ்வோ மாக. |
| त्यज | களைத் துலிடும். | मैथिली | மைதிலியைச் |
| रतिकीर्तिवर्धनं | { மணச்சார் திலையரும் புறநூலும் மணர்க் கின் றதா கிய | दाशरथाय | ஸ்ரீராமருக்கு |
| धर्मं | அறநெறியை. | प्रदीयताम् | திரும்பிச் சமர்ப்பித்து கிடப்படட்டும்.” |
| भजस्व | அனுப்பித் தருளும். | | |

विभीषणवचः श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः । विसर्जयित्वा तान्सर्वान्यविवेश स्वकं गृहम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|--------------------------------|
| राक्षसेश्वरः | ராட்சஸமன்ன ளாகிய | विसर्जयित्वा | விடை கொடுத்தனுப்பி கிட்டு |
| रावणः | ராவணன் | स्वकं | தனது |
| विभीषणवचः | விபிஷணரது சொல்லை | गृहं | மாளிகைக்கு |
| श्रुत्वा | கேட்டுகிட்டு | प्रविवेश | திரும்பிப்போய்ச் சேர்ந்தான் |
| तान् | அந்த | | |
| सर्वान् | எல்லோரையும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

सुद्धकाण्डे नवमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 14997

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 322



दशमः सर्गः—பத்தாவது ஸர்க்கம். ॥ १० ॥

विभीषणहितोपदेशः—விபிஷணனது ஹீதோபதேசம்.

ततः प्रत्युपसि प्राप्ते प्राप्तधर्मार्थिनिश्चयः । राक्षसाधिपतेर्वेश्म भीमकर्मा विभीषणः ॥ १ ॥
शैलाग्रचयसंकाशं शैलशृङ्गमिवोन्नतम् । सुविभक्तमहाकक्ष्यं महाजनपरिग्रहम् ॥ २ ॥
मतिप्रद्विर्महामात्रैरनुरक्तैरधिष्ठितम् । राक्षसैश्चाप्तपर्याप्तैः सर्वतः परिरक्षितम् ॥ ३ ॥
मत्तमातङ्गनिश्वासैर्व्याकुलीकृतमारुतम् । शङ्खघोषमहाघोषं तूर्यनादानुनादितम् ॥ ४ ॥
प्रमदाजनसंवाधं प्रजल्पितमहापथम् । तप्तकाञ्चननिर्गूहं भूषणोत्तमभूषितम् ॥ ५ ॥
गन्धर्वाणामिवावासमालयं मरुतामिव । रत्नसंचयसंवाधं भवनं भोगिनामिव ॥ ६ ॥
तं महाभ्रमिवादित्यस्तेजोविस्तृतरश्मिवान् । अमजस्यालयं वीरः प्रविवेश महाच्युतिः ॥ ७ ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| ततः प्रत्युपसि प्राप्ते | அதன்மேல் மறுநாள் சூரியோதய மானதும், தர்மம், அர்த்தம் இ வைகளில் நிக்சித புத்தியை அடைந்த வரும், | व्याकुलीकृतमाशुं | கலந்து வரும் காற்றையுடையதும், சங்குகோலங்களாலு ண்டாகிய பெரும் முழக்கத்தையுடைய தும், |
| प्राप्तधर्मार्थ- निश्चयः } | எவரும் செய்யாத செயலுடையவரும், | राह्वघोष- महाघोष } | தூர்யவா த்யங்களின் ஒலிகளால் ப்ரதித்வ னி ஒலிக்கப்பெற்ற தும், |
| भीमकर्मा | மகா தேஜஸ்வியும், (தர்ம)வீரருமாகிய விபீஷணர் | त्र्यनादानु- नादित } | கனிப்புற்ற பெண்டிர் களால் நிரம்பப்பெ ற்றதும், |
| महायुतिः वीरः विभीषणः | ராஜாஸமன்னனாகிய தமயனது இருப்பிடமானதும் மலைின் பல சிகரங்க ளை நிகர்த்ததும், மலைச்சிகரத்தை நிகர்த்து உயர்ந்திருக்கிறதும், நன்றாக வருத்துக்கட் டப்பட்ட பெரும் க ட்டுகையுடையதும், பெரியோர்களால் நாடி வரப்பட்டதும், புத்தியிற்சிறந்தவர்க ளும் | प्रमदाजन- संवाध } | ஐனங்களால் கலகல வென்று பேசப்பெ ற்ற ராஜாதிக்கையு டையதும், பத்தரைமாற்றுத்தங் கத்தால் செய்யப்பட்ட கதவுகளையுடையதும் சிறந்த அணிகளால் அணங்கரிக்கப்பெற்ற கந்தர்வர்களின் [தும், மாளிகையை நிகர்த்த தேவதைகளின் [தும், ஆலயத்தை நிகர்த்த தும், |
| राक्षसाधिपतेः अमजस्य आलयं शैलाग्रचय- सङ्काशं शैलशृङ्गं इव उन्नतं सुविभक्त- महाकश्यपं } | மகாஜனபரிமஹ் மதிமதி: அநுரகை: மஹாமாஹை: அபிஷித் ஆசர்யாஸி: ராஜஸை: ச சவீர: பரிரஷித் மனமாதஹ- நிஷாஸி: } | तसकाञ्चन- नियुहं } | பந்தரைமாற்றுத்தங் கத்தால் செய்யப்பட்ட கதவுகளையுடையதும் சிறந்த அணிகளால் அணங்கரிக்கப்பெற்ற கந்தர்வர்களின் [தும், மாளிகையை நிகர்த்த தேவதைகளின் [தும், ஆலயத்தை நிகர்த்த தும், |
| महाजनपरिमहं | நம்பிக்கையானவர்க ளும் சாயர்த்திய காலிகளுமான ஆரக்கர்களாலும் நாற்புறத்திலும் நன்கு பாதுகாக்கப் பட்டதும், கொழுந்த யானை களின் பெருமூச்சு ளோடு | भूपयोत्तम- सुषितं गन्धवाणां आवासं इव महतां आलयं इव भोगिनां रत्नसञ्जयसंवाधं भवन् इव ने वेष्म तेजोविस्तृत- रश्मिवान् आदिष्यः महाभ्रं इव प्रविवेश | சர்ப்பராஜர்களின் ரத்தனக்குயியல்களால் இழைக்கப்பெற்ற மாளிகையை நிகர்த்த அந்த [துமாகிய மாளிகையினுள், ஒளியால் எங்கும் பா வும் கிரணங்களையு சூரியபகவான் [டைய பெரும் மேகத்தினுள் எவ்வண்ணமே, அவ்வண்ணமே புகுந்தார். |

புஷ்யாந்புஷ்யாஹுபாஸ்த் வேதவிங்ரிஹூதாஹூதாந் | ஶுத்ராஶ் ஶுபஹாதேஜா ஶ்ராதுர்விஜயஸந்திதாந் || ௮ ||

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|----------------|-----------------------------|
| சுபஹாதேஜா: | மகா தேஶஸ்த்ரஸ்த்ரீயா கு஡் அஶர் | உஶாஹூதாந் | ஐஶீக்தக்ப்பட்ட |
| வேதவிங்ரி: | வேதவிந் து஡்களால் | புஷ்யாந் | பரிசுத்தமான |
| ஶ்ராது: | தஶமயன து | புஷ்யாஹுபாந் ச | புஷ்யாஹுஶீகோஶதக் கணியும் |
| விஜயஸந்திதாந் | ஶுபந்நைதஶத் தேஶிந் து | ஶுத்ராஶ் | கேட்டார். |

பூஜிதாந்஢ிபாந்ரீஷ் சர்பிஶி: சுமநுஷதீ: | ஡ந்ரவேதவி஢ு விஶாந்஢ி஢்ஷ் ஶுபஹாஶல: || 9 ||

| | | | |
|--------------|---|-------------|--|
| ஡ந்ரவேதவி஢்: | { மந் திரக்த்ரீயா ஶு஡் வேத ந்ரகளிஶு஡் ரிபுணர் க ளரகிய | ஢ிபாந்ரீ: | தஶீர் விஶந்ரந்த பஶத்திரக்த்ரீகோஶு஡் |
| பூஜிதாந் | கோண்டா஢்ப்பட்ட | சர்பிஶி: | கெய்க்ரீகோஶு஡் |
| விஶாந் | { வேதபாராயணம் செ ய்துஶிகோண்டிந்ரந்த அரக்த்ரீகளை | சுமநுஷதீ: ச | புஷ்பரக்த்ரீகோஶுஶ ஶு஡் |
| | | ஶுபஹாஶல: | மகாபஶலாஶுஶ அஶர் கண்டார். |

ஶ பூஜ்ய஡ானு ரஸுஶி஢ி஢ிஶ்ய஡ான: ஶ்ரதேஜஸா | ஶாஸநஸ்த்஡் ஡ஹாஶாஹுஶ்ஶந்஢ு ஢ந஢ாநுஜ஡் ||

| | | | |
|-----------|--------------------------|------------|--|
| ஶ்ரதேஜஸா | தன து ஶுஶீயால் | ஶ: | அஶர் |
| ஶீஶ்ய஡ான: | விளக்த்ருஶிஶவரூ஡் | ஶாஸநஸ்த்஡் | ஶுஸந த்தீஶ் |
| ரஸுஶிஶி: | அரக்த்ரீகளை | ஢ந஢ாநுஜ஡் | ஶிந்ரீந்ரந்த குஶீபரன் த஡்ஶீய (ரஶணனை) |
| பூஜ்ய஡ான: | கோண்டா஢்ப்பட்ட ஢வரூ஡் | ஶ்ரதேஜஸா | ஶேஶித்தார். |

ஶ ராஜ஢்ரஶிஸ்பந்஡஡ாஸந் ஢ே஡ஶூஶித஡் | ஜஶா஡் ஶ஡ு஢ாஶாரஶ் ஡யுஜ்யாஶாரகூவி஢்: || 11 ||

| | | | |
|--------------|------------------------------|--------------------|---|
| ஶாஶாரகூவி஢்: | ஡ரீயரஶைதகளைல் திபு ஶரரகிய | ராஜ஢்ரஶி- ஸ்பந் | { ஡ன்ஶந து கண்டா ஶடயால் ச஡ர்ப்பிக்க ஶ்ப்பட்டத஡் |
| ஶ: | அஶர் | ஢ே஡ஶூஶித஡் | ஢ேஶ்ரஶுஶணக்த்ரீக ஶ்ப்பட்டதுஶான |
| ஶ஡ு஢ாஶாரஶ் | ஡ரீயர தாஶுஶ்஢ா ஶத் ஶத் | ஶாஸந் | ஶுஸந த்தைத |
| ஡யுஜ்ய | ஶேஶ் துஶி஢்஢ு | ஜஶா஡் | ஶஶைத்தார். |

ஶ ரஶரணஶ் ஡ஹாஶ்஡ானஶ் விஜநே ஡ந்ரீஶஸந்ரீயு | ஶஶாஶ ஢ித஡்ஶ்யரீஶ் ஶஶநஶ் ஢ேதுநிஶித஡் || 12 ||

஡ஸாஶ் ஶ்ராதுர் ஜ்யேஸ்த்ரஶ் ஶாந்ரீஶனுஶிதகர஡: | ஢ேஶகாலாரீஶ்ஶா஢ி ஢்ரஶுலூக஡ரஶர: || 13 ||

| | | | |
|------------------------|---|--------------------|---|
| ஢ேஶகாலாரீஶ்- ஸ்ஶா஢ி | { ஶு஢ம், ஶாஶம், ஡ரீயா ஶுஶம் ஶுஶவகளுக்து ந்ரக்த்ரீகஶுஶ ஶுஶஶ ஶுஶம் | ஢்ரஶுலூக- ஡ரஶர: | { ஶுஶகஸ஡்ஶீர தரய அஶு ஶ்஢ாஶக்த்ரீக ஶுஶக நிந்ரஶுஶுஶான |
| | | ஶ: | அஶர் |

| | |
|--------------------------------|--|
| उपस्थितकमः | வந்தனாதிபரியாகை களைச்செய்தவராகி |
| ज्येष्ठं भ्रातरं महात्मानं | தமயனும் மகா ஆற்றலுடையவ னுமான் |
| रावणं सान्त्वेन प्रसाद्य | ராவணனை நல்வார்த்தையால் உள்ளக்குளிரச்செய்து |
| मन्त्रिसंनिधौ | மந்திரிமார்க்கள் முன் னிலையில் |

| | |
|------------------|---|
| विजने | சா, தரணஜனமில்லா தபொழுது |
| हेतुनिश्चितम् | (நன்றோக்கால்) நிச்ச யிக்கப்பட்டதும் |
| अत्यर्थं हितं | அளவில்லாது நன்மைபயக்குகிறது மாகிறது |
| वचनं शवाच | ஒரு மொழியை பின்வருமாறு சொன்னார் : |

यदाप्रभृति वैदेही संप्राप्तेह परन्तप । तदाप्रभृति दृश्यन्ते निमित्तान्यशुभानि नः ॥ १४ ॥

| | |
|---|---|
| परंतप वैदेही इह यदाप्रभृति संप्राप्ता | "சத்ருஸம்ஹாரக! வைதேகியார் இன்னிடத்தில் எப்பொழுது வந்து துழைந்தாரோ |
|---|---|

| | |
|--|---|
| तदाप्रभृति नः अशुभानि निमित्तानि दृश्यन्ते | அதுமுதல் நமக்கு நீங்கையநினைக்கும் அபசருணங்கள் காணப்படுகின்றன. |
|--|---|

सस्फुलिङ्गः सभूमाचिः सभूमकलुषोदयः । मन्त्रसंयुक्षितोऽप्यग्निर्न सम्यगभिवर्धते ॥ १५ ॥

| | |
|--|--|
| अग्निः मन्त्रसंयुक्षितः अपि सस्फुलिङ्गः | "ஓமாக்னிபானது மந்திரங்களால் வளர்க்கப்பட்டதாய் இருக்கையிலும் தீப்பொரிகளோடு கடியதாயும் |
|--|--|

| | |
|---|---|
| सभूमाचिः सभूमकलुषोदयः सम्यक् अभिवर्धते न | { புகையோடுகடிய ஜ்வா லைகளைபுடையதுமா யும் புகையோடு மங்கலாய் வெளிவருகிறதுமாய் நன்றாக வளர்கிறதுதில்லை. |
|---|---|

अग्निष्टेष्वग्निशालासु तथा ब्रह्मस्थलीषु च । सरीसृपाणि दृश्यन्ते हव्येषु च विपीलिकाः ॥

| | |
|---|--|
| अग्निष्टेषु अग्निशालासु ब्रह्मस्थलीषु च | "ஆக்னிகளை உபாஸி க்கும் யாதகால்களிலும் வேதாத்தியயனம் ப ண்ணுமிடங்களிலும் |
|---|--|

| | |
|---|--|
| सरीसृपाणि तथा हव्येषु विपीलिकाः च दृश्यन्ते | பாம்புகளும் அவ்வண்ணமே உறவியங்களில் எறும்புகளும் தென்படுகின்றன. |
|---|--|

गवां पयांसि स्कन्नानि विमदा वीरकुञ्जराः । दीनमन्वाः प्रहेपन्ते न च ग्रासाभिनन्दिनः ॥

| | |
|--|--|
| गवां पयांसि स्कन्नानि वीरकुञ्जराः विमदाः | "பசுக்களின் பால் வற்றிப்போய்கிட்டது. வீரயானைகள் மதமடக்கிக்கிடக்கின் றன. |
|--|--|

| | |
|---|--|
| अन्वाः च ग्रासाभिनन्दिनः न दीनं प्रहेपन्ते | குதிரைகளும் உணவைத்தீண்டாத வைகளாய் எளிமைபாசு களைக்கின்றன. |
|---|--|

खरोद्वाश्वतरा राजन्भिन्नरोमाः सवन्ति नः । न स्वभावेऽवतिष्ठन्ते विधानैरपि चिन्तिताः॥

| | | | |
|----------------|--|--------------------------|---|
| राजन् नः | " ஆரோசு! சமஸ்து | सवन्ति | கண்ணீர் வடிக்கின் றன. |
| खरोद्वाश्वतराः | { கோயிலாறுகழுநீர்தகள் சூட்டகங்கள் ஆர்வ நரங்கள் | विधानैः चिन्तिताः अपि | சிறித்கள்களால் கவனிக்கப்பட்டவை களாக ஆயினும் |
| भिन्नरोमाः | | स्वभावे अवतिष्ठन्ते न | பூர்வாஸ்திதியில் வராமலிருக்கின்றன. |

वायसाः सङ्घुशः क्रूरा व्याहरन्ति समन्ततः । समवेताश्च दृश्यन्ते विमानाद्येषु संघशः ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| वायसाः सङ्घुशः समन्ततः व्याहरन्ति क्रूराः च | " காக்கைகள் கூட்டக்கூட்டமாக எங்கும் கத்துகின் றன. வல்லுறுகளும | संघशः समवेताः विमानाद्येषु दृश्यन्ते | கூட்டக்கூட்டமாக ஒன்றுகூடி விமானங்களின் உச்சி களில் தென்படுகின்றன. |
|---|---|---|---|

गृध्राश्च परिलीयन्ते पुरीमुपरि पिण्डिताः । उपपन्नाश्च सन्ध्ये द्वे व्याहरन्त्यशिवं शिवाः ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| गृध्राः च पिण्डिताः पुरीं उपरि परिलीयन्ते शिवाः च | " கழுநூல்களும் ஒன்றுகூடி நகரின்மீது வட்டமிடுகின்றன. கூடுகளும் | द्वे सन्ध्ये उपपन्नाः अशिवं व्याहरन्ति | காலைபிறும் மாலை யும் அருகில் வந்தவை ஆமக்களமாக [கனாய் வளைமிடுகின்றன. |
|---|---|---|---|

क्रव्यादानां मृगाणां च पुद्गारेषु सङ्घुशः । श्रूयन्ते विपुला घोषाः सविस्फूर्जधुनिःस्वनाः॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| पुद्गारेषु सङ्घुशः क्रव्यादानां मृगाणां विपुलाः | " நகர் வாய்க்களில் கூட்டக்கூட்டமான மாம்சங்களைய் புசிக் கிலக்குகளின் [கும் பெரும் | घोषाः च सविस्फूर्जधु- निःस्वनाः श्रूयन्ते | கோலக்களும் மனவேதனைகளால் மேதவான கர்ஜனை களைரடுகடியவை களாய் கேட்கப்படுகின்றன. |
|---|--|--|---|

तदेवं प्रस्तुते कार्ये प्रायश्चित्तमिदं क्षमम् । रोचते यदि वैदेही राघवाय प्रदीयताम् ॥२२॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| तत् एवं प्रस्तुते कार्ये इदं क्षमं | " தூக்கமால் இல்லாது நடைபெற்ற காரியத்தில் இது வந்த | प्रायश्चित्तं रोचते यदि वैदेही राघवाय प्रदीयताम् | பரிசாரமாக தெயரிருக்குந் தோன் வைத்தெரியார் [முயாகில் பூராமருக்கு (திருப்பிச்ச)சமர்ப்பித் துவிடப்பட்டும். |
|---|--|--|--|

इदं च यदि वा मोहाहोभाद्वा व्याहृतं मया । तत्रापि च महाराज न दोषं कर्तुमर्हसि ॥

| | | | |
|---------------------------|---|---|--|
| महाराज तत्र अपि | “மகாராஜே! (அங்கே என்னாலும்) அங்கேயும் | यदि वा लोभाव व्याहृतं च दोषं कर्तुं अर्हसि न | ஆல்வது பேராசையானே சொல்லப்பட்டதாக தீங்கை வினைவிப்ப கொள்ள [தாய் கூடாது. |
| इदं च मया मोहाद् वा | இதுவும் என்னால் கலவரத்தாலோ | | |

अयं च दोषः सर्वस्य जनस्यास्योपलक्ष्यते । रक्षसां राक्षसीनां च पुरस्यान्तःपुरस्य च ॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| अयं दोषः च रक्षसां च राक्षसीनां अन्तःपुरस्य | “இந்த அசுபக்குறியும் அரக்கர்களுக்கும் அரக்கிகளுக்கும் அந்தப்புரஜனக்க ளுக்கும் | अस्य पुरस्य जनस्य सर्वस्य च उपलक्ष्यते | இந்த பட்டணத்து ஜனம் எல்லோருக்குமே தென்படுகிறது. |
|---|--|--|---|

प्रापणे चास्य मन्त्रस्य निवृत्ताः सर्वमन्त्रिणः । अवश्यं च मया वाच्यं यद्दृष्टमपि वा श्रुतम् ॥

| | | | |
|--------------------------------|--|--|--|
| सर्वमन्त्रिणः | “மந்திரிகளெல்லோ ரும் | दृष्टं अपि | பார்க்கப்பட்டதுதான் ளுகட்டும் |
| अस्य मन्त्रस्य प्रापणे च | இந்த ஆலோசனைகளை செவியிற்றபோடும் விஷயத்தில் | श्रुतं वा यत् च मया अवश्यं वाच्यम् | கேட்கப்பட்டதுதான் ளுகட்டும் எதுவாயினும் அது என்னால் கனதையும் ஒளிக்காமல் தெரிவிக்கப்பட வேண்டியது. |
| निवृत्ताः | தயக்கிநின்ற விட்டார்கள். | | |

संप्रधार्य यथान्यायं तद्भवान्कर्तुमर्हति ॥ २६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------|------------|
| भवान् | “தேவரீர் | तत् | ஆதை |
| यथान्यायं | நியாயம் இன்னதென் | कर्तुं | செய்ய |
| सम्प्रधार्यं | நிச்சயித்து [பதை | अर्हति | வேண்டும்.” |

इति स्र मन्त्रिणां मध्ये भ्राता भ्रातरमृचिवान् । रावणं राक्षसश्रेष्ठं पथ्यमेतद्विभीषणः ॥

| | | | |
|--|--|--|---|
| भ्राता विभीषणः भ्रातरं राक्षसश्रेष्ठं | தம்பியாகிய விபிஷணர் தம்பனும் ராசுஷனோத்தமனு மாகிய | मन्त्रिणां मध्ये इति एतन् पथ्यं उचिवान् स | மந்திரிகளது முன்னிலையில் மேற்கண்டவாறு இந்த நன்மை பயப்பதை சொல்லிமுடித்தார். |
| रावणं | ராவணனை (கொக்கி) | | |

हितं महार्थं मृदु हेतुसंहितं व्यतीतकालायतिसंप्रतिक्षमम् ।

निशम्य तदावयमुपस्थितञ्चरः पसङ्गयानुत्तरमेतद्व्रवीत् ॥ २८ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------------------|--------------|----------------------------|
| हितं | மஹார்த்தம் | तन् | அந்த |
| महार्थं | பெரும்பாபனை வாரியிக க்தக்கமதும் | वाक्यं | சொல்லை |
| मृदु | இனிமையான தும் | निशम्य | கேட்டு, |
| हेतुसंहितं | காரணங்களை ஒருகூடி யதும் | उपस्थितञ्चरः | கொடும் தலைக்கேறிய வளும் |
| व्यतीतकाला- | கடந்ததும் வருவதும் | पसङ्गयान् | பெண்டித்தனும் |
| यतिसंप्रतिक्षमं | நிகழ்வதுமான கால ங்களுக்கேற்ற துமான | एतन् | பின்வரும் |
| | | उत्तरं | பதிலை |
| | | अववीत् | சொன்னான் : |

भयं न पश्यामि कुतश्चिदप्यहं न राघवः प्राप्स्यति जातु पैथिर्ह्याम् ।

सुरैः सहेन्द्रैरपि सङ्गतः कथं ममागतः स्यास्यति लक्ष्मणाग्रजः ॥ २९ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|---------------|----------------------------|
| भहं | "நான் | लक्ष्मणाग्रजः | லக்ஷ்மணன் தமைய குருமவன் |
| कुतश्चित् | எவ்விதத்தினும் | सहेन्द्रैः | இந்திரனும் வீரன் |
| भयं अपि | ஆபத்தென்பதை | सुरैः | கேவர்களை |
| पश्यामि न | காணவில்லை. | सङ्गतः | கூடி வளமாக |
| राघवः | ராமன் | अपि | ஆயினும் |
| जातु | ஒருபொழுதும் | मम भगतः | என்முன் |
| पैथिर्ह्याम् | நூணகைய | कथं | எவ்விதம் |
| प्राप्स्यति न | அடையப்போகிற தில்லை. | स्यास्यति | இந்தபாக்கில்" |

इतीदमुक्त्वा सुरसैन्यनाशनो महाबलः संयति चण्डविक्रमः ।

दशाननो भ्रातरमाप्तवादिनं विसर्जयामास तदा विभीषणम् ॥ ३० ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|-------------|----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | भ्रातरं | பிரதக்ஷை மொழிந்த |
| संयति | போலில் | भ्रातरं | தம்பிராயிய |
| चण्डविक्रमः | அளவுகடந்த ஆண் மைவுற்றவனும் | विभीषणं | விபிஷணரைப் பார்த்து |
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடைய வனும் | इति इहं | இவ்வளிய இதை |
| सुरसैन्यनाशनः | கேவர்களின் கைவ க்களைத் திற அடிக்க | उत्तवा | பகிராய்க்கொல்லி விட்டு |
| दशाननः | சாவணன் [வலுமான | विसर्जयामास | விடைகொடுத்தனுப்பி னான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे दशमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15027

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 352



एकादशः सर्गः—பத்தேராவது ஸர்க்கம். ॥ ११ ॥

पुना रावणमन्त्रालोचनम्—மறுபடியும் ராவணனது மந்திரமலோசனை

स बभूव कृशो राजा मैथिलीकाममोहितः । असंमानाच्च सुहृदां पापः पापेन कर्मणा ॥१॥

| | | | |
|--|--|---|---|
| மேயிலி- காமமோஹித: } ச: பாப: ராஜா பாபேன | மைதிலியா கிடத்தில் காமமலோசனமொன்றி. அந்த [குந்த பாபியாகிய மன்னன் ஆடாத | கர்மணா சுஹ்ரீயா அசமானாச் ச கூசா: வமூவ | காரியமென்பதானும் ஆன்பர்களின் அவமானத்தானும் சிந்தாக்கிராந்தணுக ஆயினன். |
|--|--|---|---|

अतीतसमये काले तस्मिन्ने युधि रावणः । अपाल्यैश्च सुहृद्भिश्च प्राप्तकालममन्यत ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------------------------------|---|---|--|
| ராவண: அதீதசமயே தஸ்மிந் காலே | ராவணன் (ஆலோசிக்கவேண்டிய) காலத்தை கோ ரவிட்ட அந்த காலத்தில் | அமாலி: ச சுஹ்ரி: ச யுதி யே பாஸ்கால அமன்யத | மந்திரமர்களைரிடும் ஆன்பர்களைரிடும் போர்க்கடியத்தில் ஏற்றகாலமாக தீர்மானித்தான். |
|--------------------------------------|---|---|--|

स हेमजालविततं मणिविद्रुमभूषितम् । उपगम्य विनीताश्वमारुह महारथम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| ச: ஹேமஜாலவீததம் மணிவிட்ருமபூஷிதம் | அவன் பொன்சாளரங்கள் நிரம்பியதும் ரத்தனக்களானும் பவ முக்களானும் அவர்க ரிக்கப்பட்டதும் | வினீதாஸ்த் மஹரய் உபகமய விகாரூ | { வேண்டியபடி இணை கிச்செல்லும் குதி சைகளால் பூட்டி பெற்றதுமான சிறந்த ரதமொன்றை அடைந்து ஏறிக்கொண்டான். |
|---|--|--|---|

तमास्थाय रथश्रेष्ठं महामेघसमस्वनम् । प्रययौ राक्षसश्रेष्ठो दशग्रीवः सभां प्रति ॥ ४ ॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| ராஶஸுஷ்ரே: தசாமீவ: மஹாமே- சமஸ்வநம் } ரயுஷ்ரேஸ்த் | ராஶஸுஷ்ரேஸ்த் தபானுகிய ராவணன் பெரும் மேகத்தை நிகர்த்த ஒலியுடன் விளங்கும் சிறந்த ரதமாகிய | த ஆஸ்தாய சமாம் புரதி புரயயூ | அதில் ஏறிக்கொண்டு சபையை கோக்கி சென்றான். |
|--|--|---|--|

असिचर्मधरा योधाः सर्वायुधधरास्तथा । राक्षसा राक्षसेन्द्रस्य पुरतः संप्रतस्थिरे ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------------------------------|--|--|---|
| அசிசுர்மதரா: யோதா சர்வாயுததரா: | கத்திகளையும் கேடய ங்களையும் தரித்தவர் அவ்வண்ணமே [களும் எல்லா ஆயுதங்களையும் தரித்தவர்களுடைய | யோதா: ராஶஸா: ராஶஸேந்ருச்ய புரத: சம்புரதி | பொர்லீசர்களான அரக்கர்கள் அரக்கர் மன்னனது முன்புறத்திலே சென்றார்கள். |
|--------------------------------------|--|--|---|

नानाविकृतवेपाश्च नानाभूषणभूषिताः । पार्श्वतः पृष्टतश्चैनं परिवार्य ययुस्ततः ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|---|----------------|
| नानाविकृत- वेपाः च | } பலவகலாத விதம்வித மகன ஆடைகளைய ணிந்தவர்களும் | ततः | அப்பொழுது |
| नानाभूषण- भूषिताः एनं | | } பல ஆபரணங்களைய ஆணிந்தவர்களும் இவளை | पार्श्वत |
| | | | पृष्टतः च |
| | | परिवार्य | சூழ்ந்துகொண்டு |
| | | ययुः | சென்றார்கள். |

रथैश्चातिरथाः शीघ्रं मत्तैश्च वरवारणैः । अनूपेतुर्दशश्रीवपार्कीडद्विश्च वाजिभिः ॥ ७ ॥

गदापरिघहस्ताश्च शक्तितोमरपाणयः । परश्वधवराश्वान्ये तथाऽन्ये शूरापाणयः ॥ ८ ॥

| | | | |
|----------------------|---|------------------------------|---|
| अतिरथाः | ஆதிரைகள் | शक्तितोमर- पाणयः अन्ये | } சக்திகளையும், தோமர ங்களையும் கையிலு கொள் [டைபவர்களும் |
| रथैः च | ரதங்கள் மீதும் | परश्वधवराः | |
| मत्तैः | கொழுத்த | तथा अन्ये | ஆப்படியே வேறுகொள் |
| वरवारणैः च | சிறந்த யானைகளின் மீதும் | शूरापाणयः च | சூலங்களைக் கையி லெடுத்தவர்களைய |
| आकीडद्विः | காட்டிய | दशश्रीं | பாடணனை |
| वाजिभिः च | குதிரைகளின் மீதும் | शीघ्रं * | விசைவில் |
| गदापरिघ- हस्ताः च | } கதைகளையும், உழை த்தடிகளையும் கையி லுடைபவர்களும் | अनूपेतुः | பின்தொடர்ந்து சென்றார்கள். |

ततस्तूर्यसहस्राणां संज्ञे निखनो महान् । तुमुलः शङ्खशब्दश्च सर्भां गच्छति रावणे ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|-------------|---|
| ततः | மேலும் | महान् | பெரும் |
| रावणे | ராவணன் | निखनः | முடிக்கம் |
| सर्भां | சர்பக்கு | संज्ञे | உண்டாவிற்ற. |
| गच्छति | செல்லும்பொழுது | तुमुलः | உதிகமர |
| तूर्यसहस्राणां | பல தூர்யவாத்யக் களுடைய | शङ्खशब्दः च | { சக்குலின் முடிக்க முத்தப்படியே உண் டாவிற்ற. |

स नेमिघोषेण महान्सहसाऽभिविनादयन् । राजमार्गं श्रिया लुष्टं प्रतिपेदे महारथः ॥१०॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|--------------------------------------|
| महान् | பிரலித்திபெற்ற | अभिविनादयन् | பிரதிக்கவனி ஒலிக்கச் செய்துகொண்டு |
| महारथः | மகாரதனாகும் | श्रिया लुष्टं | செல்வவணப்பு |
| सः | ஆவன் | राजमार्गं * | ராஜவீதிக்கு |
| नेमिघोषेण | எம்மிசைவட்டைகளின் | प्रतिपेदे | வந்துசேர்ந்தான். |
| सहसा | திடீரென [நிலையால் | | |

विमलं चातपत्राणं प्रगृहीतमशोभत । पाण्डुरं राक्षसेन्द्रस्य पूर्णस्ताराधिपो यथा ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------|----------|--------------|
| राक्षसेन्द्रस्य | ராஷ்டிரமன் னனுக்கு | पूर्णः | பூர்ண |
| प्रगृहीतं | பிடிக்கப்பட்ட | ताराधिरः | சந்திரன் |
| विमलं | பரிசுத்தமான | यथा च | போலவே |
| पाण्डुरं चातपत्राणं | வெண்குடை | अशोभत | விளங்கிற்று. |

हेममञ्जरिर्गर्भे च शुद्धस्फटिकविग्रहे । चामरव्यजने चास्य रेजतुः सव्यदक्षिणे ॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------------|---|-------------------------|--|
| अस्य | இவனது | शुद्धस्फटिक- विग्रहे | சுத்தஸ்படிகந்தர வரண தண்டத்தை யுடையவைகளுமான |
| सव्यदक्षिणे | இடதுபுறத்திலும் வலதுபுறத்திலும், | | |
| हेममञ्जरिर्गर्भे च | { நடுவில் பொச்சரங் கள் கட்டப்பெற்ற வைகளும் | चामरव्यजने च | இரு சரமரங்களும் |
| | | रेजतुः | விளங்கின. |

ते कृताञ्जलयः सर्वे रयस्यं पृथिवीस्थिताः । राक्षसा राक्षसश्रेष्ठं शिरोभिस्तं ववन्दिरे ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|----------------|------------------|
| पृथिवीस्थिताः | பூமியில் நின்றகொண் | तं | அந்த |
| ते | அந்த | राक्षसश्रेष्ठं | ராஷ்டிரமன் தமனை |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | कृताञ्जलयः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| सर्वे | எல்லோரும் | शिरोभिः | தலைகளால் |
| रयस्यं | ரதத்தினிருந்த | ववन्दिरे | வணங்கினார்கள். |

राक्षसैः स्तूयमानोऽसौ जयाशीर्भिररिन्दमः । आससाद् महातेजाः सभां विरचितां शुभाम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-----------|------------------------------------|
| अरिन्दमः | சத்ருசம்ஹாரகனும் | स्तूयमानः | தொத்திரம் செய்யப் படுகின்றவனாய் |
| महातेजाः | பகர ஆற்றலுடையவ | शुभां | அழகாய் |
| असौ | இவன் [ஹமரண | विरचितां | நிருமிக்கப்பட்ட |
| राक्षसैः | அரக்கர்களால் | सभां | சபைக்கு |
| जयाशीर्भिः | வெற்றிதரும் வாழ்த் துக்களால் | आससाद् | வந்துசேர்ந்தான். |

सुवर्णरजतास्तीर्णां विशुद्धस्फटिकान्तराम् । विराजमानो वपुषा स्वपपट्टोत्तरच्छदाम् ॥

तां पिशाचशतैः षड्भिरभिगुप्तां सदा शुभाम् । शर्ववेश महातेजाः सुकृतां विश्वकर्मणा ॥

| | | | |
|---------------------|---|---------------------------|---|
| महातेजाः | அதி ஆற்றலுடைய | विशुद्ध- स्फटिकान्तरां | சுத்தமான பளிக்கு கற்களிழைக்கப்பெ ற்ற மத்தியப்பிரதே சங்களை யுடைய தும் |
| वपुषा | சரீரத்தால் [அவன் | | |
| विराजमानः | பிரகாசித்துக்கொண்டு | स्वपपट्टोत्तरच्छदां | தங்கமுலாம் பூசப் பெற்ற மேற்கட்டு களை யுடைய துமாய் |
| विश्वकर्मणा | விசுவகர்மனினால் | | |
| सुवर्णरजतास्तीर्णां | { தங்கந்தாலும் வெள் ளியா ஹமானி தளத் தையுடைய தும் | | |

| | | | |
|----------------|---|-----------------------|---|
| சூழ் முக்தா | ஆழ்வியதாய் கங்கு அனாமக்கப் பட்டதும் | विशाचशतैः अभिगृह्य | நூறுபாசமுறைகளால் பங்கு பரதூகாக்கப் பட்டதுமான் |
| सदा पद्भिः | எக்காலத்திலும் ஆறு | तां प्रविंश | அதனுள் துழைந்தான். |

तस्यां तु वैदूर्यमयं प्रियकाजिनसंवृतम् । महस्त्रोपाश्रयं भेजे रावणः परमासनम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------------------------------|---|--------------------------------------|--|
| रावणः तस्यां तु वैदूर्यमयं | ராவணன் ஆசில் வைநிலயங்கற்களால் செநகக்கப்பெற்றதும் பரியகமெனும் பான் நெளவால் விரிக்கப் பெற்றதும் | सोपाश्रयं महत् परमासनं भेजे | இதர உப ஆசனக்க ஏடைவதாய் விசாலமுமான் சிக்காதனத்தை அடைந்தான். |
| प्रियकाजिनसंवृतं | | | |

ततः शशासेश्वरवह्नीतं ह्युपराक्रमान् । समानयत मे क्षिप्रमिहैतान् राक्षसानि ॥ १८ ॥
कुल्यमस्ति महज्जातं सपर्यमिह नो महत् ॥ १९ ॥

| | | | |
|--|--|--|--|
| इह नः महत् समर्थं | “இப்பொழுது கமக்கு பெருமுயற்சிகொண்டு செய்யவேண்டிய காரிய | राक्षसान् इह क्षिप्रं समानयत | அக்கர்களை இவ்விடத்திற்கு, விசுவாஸில் அகத்தவாரூக் கள்,” |
| महत् कुल्यं जातं अस्ति ततः मे एतान् | அறிய காரியம் சம்பலித்திருக்கிறது. ஆணையால் எனது இந்த | इति उपराक्रमान् दृष्टान् ईधरवत् शशास | என்று வேகமாய்ச் செல்ல வல்ல நூக்களை நோக்கி சகவான்போல ஆக்ரமித்தான். |

राक्षसास्तद्वचः श्रुत्वा लङ्कायां परिचक्रमुः । अनुगेहमवस्थाय विहारशयनेषु च ॥ २० ॥
उद्यानेषु च रक्षांसि चोदयन्तो लङ्कातवत् ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------------------------|---|--|---|
| राक्षसाः तद्वचः श्रुत्वा | அக்கர்கள் அந்த ஆக்கலைவா கிரமேற்கொண்டு விசுவாஸிடக்களி ஆள் படுக்கையான களிஆள் | अभीतवत् हि अनुगेहं अवस्थाय रक्षांसि चोदयन्तः लङ्कायां परिचक्रमुः | தயக்காமலே விடுவிடாக புகுந்து அக்கர்களை எய்கின்றவர்களால் இசங்கையிலெங்கும் சுற்றித்திரிந்தார்கள். |
| विहारशयनेषु च उद्यानेषु च | உட்காண்களிட ஆள் | | |

ते रथान् रुचिरानेके हस्तानेके पृथग् यान् । नागानन्येऽधिरुहुर्जम्भुश्चैके पदातयः ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------|-------------|----------|-------------------|
| ते | ஆவர்கள் | हयान् | சூதிரைகளிலும் |
| एके | சிலர் | अन्ये | வேறுசிலர் |
| रुचिरान् | அழகிய | नागान् | யானைகளிலும் |
| रथान् | ரதங்களிலும் | अधिरुहुः | எறிச்சென்றார்கள். |
| एके | சிலர் | एके | சிலர் |
| पृथक् | தனித்தனியே | पदातयः च | படாதிகளாகவும் |
| हस्तान् | கொழுத்த | जम्भुः | சென்றார்கள். |

सा पुरी परमाकीर्णा रथकुञ्जरवाणिभिः । संपतद्भिर्विरुचे गरुत्मद्भिर्वाग्भ्वम् ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------------------|---|-------------|---------------------------|
| सा | ஆந்த | अग्भ्वं | ஆளாமம் |
| पुरी | பட்டணம் | संपतद्भिः | பதக்கின்ற |
| रथकुञ्जर- वाणिभिः | ரதங்களாலும், யானை களாலும், சூதிரைகளாலும் | गरुत्मद्भिः | கருடன்களால் |
| परमाकीर्णा | முற்றிலும் நிறைந்த தாய், | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே, |
| | | विरुचे | அழகுற்று வினக் கிற்று. |

ते बाहनान्यवस्थाप्य यानानि विविधानि च । सभां पद्भिः प्रविशिशुः सिंहा गिरिगुहामिवा ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|------------|-----------------|
| ते | ஆவர்கள் | सभां | சபைக்குள் |
| बाहनानि | யானைமுதலிய வாக | पद्भिः | கால்கடையாய் |
| विविधानि | பல [வக்களையும், | गिरिगुहां | மலைக்குகைக்குள் |
| यानानि च | சிக்கைமுதலிய வாக னக்களையும் | सिंहाः | சிக்கக்கள் |
| अवस्थाप्य | வேளையில் நிறுத்தி கிட்டு | इव | போலவே |
| | | प्रविशिशुः | நுழைந்தார்கள். |

राज्ञः पादौ गृहीत्वा तु राज्ञा ते प्रतिपूजिताः । पादेष्वन्ये वृसीष्वन्ये भूमौ केचिदुपाविशन् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|----------|-------------------|
| ते | ஆவர்கள் | अन्ये | சிலர் |
| राज्ञः | மன்னனது | पादेषु | பிடங்களிலும் |
| पादौ | கால்களில் | अन्ये | சிலர் |
| गृहीत्वा | கிழுந்தது செலித்த | वृसीषु | தர்பாணன்களிலும் |
| राज्ञा तु | மன்னனாலும் [கிட்டு | केचिन् | சிலர் |
| प्रतिपूजिताः | பதில்பரிபசுதையெற்ற வர்களாய் | भूमौ | தரையிலும் |
| | | उपाविशन् | உட்கார்ந்தார்கள். |

ते समेत्य सभायां वै राक्षसा राजशासनात् । यथार्हमुपतस्थुस्ते रावणं राक्षसाधिपम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|----------------------|
| ते | ஆவர்கள் | यथाहं | ஆவர்களுக்கேற்றபடி |
| राक्षसाः | ஆந்த அரக்கர்கள் | राक्षसाधिपं | ராக்கையமன்னனாகிய |
| राजशासनात् | ராஜனது ஆக்களை | रावणं | ராவணனை |
| सभायां वै | சபையில் [யால் | उपतस्थुः | கற்றிக்காத்து நின்று |
| समेत्य | ஒன்றுகடி | | கொண்டிருந்தார்கள். |
| ते | ஆவர்கள் | | |

मन्त्रिणश्च यथा मुख्या निश्चयार्थेषु पण्डिताः । अमात्याश्च गुणोपेताः सर्वज्ञा बुद्धिदर्शनाः ॥
 समेषुस्तत्र शतशः शूराश्च बहवस्तदा ॥ २६ ॥

तदा
 तत्र
 निश्चयार्थेषु
 पण्डिताः
 मुख्याः
 मन्त्रिणः च
 यथा

அப்பொழுது
 அவ்வகட்டத்தில்
 காரியங்களை நிச்சயித்
 தும் விஷயங்களில்
 நிபுணர்களாகிய
 சிறந்த
 மந்திரிகள்களும்
 அப்படியே

गुणोपेताः
 सर्वज्ञाः
 बुद्धिदर्शनाः च
 अमात्याः
 बहवः शूराः च
 शतशः
 समेषुः

நற்குணங்களையுடைய
 பெற்று
 எல்லாமறிந்தவர்களாக
 அன்புநீட்டினாரும் [அ
 சகாக்களாகிய
 பல சூரர்களும்
 நூற்றுக்கணக்காக
 அவருடையுடைய.

सभायां हेमवर्णायां सर्वार्थस्य सुखाय वै । रम्यायां राक्षसेन्द्रस्य समेषुस्तत्र सङ्घशः ॥

हेमवर्णायां
 रम्यायां
 सभायां
 राक्षसेन्द्रस्य
 सर्वार्थस्य

பெரியநிறமுள்ள
 அழகிய
 சபையில்
 ராக்ஷஸமன்னனது
 சகலகாரியத்தின்

सुखाय वै
 तत्र
 सङ्घशः
 समेषुः

வாஸாவின் பொ
 குட்டு
 அவ்வகட்டத்தில்
 கூட்டக்கூட்டமாய்
 கூடினார்கள்.

ततो महात्मा विपुलं सुयुग्मं वरं रथं हेमविचित्रिताङ्गम् ।

शुभं समास्थाय ययौ यशस्वी विभीषणः संसदमग्रजस्य ॥ २८ ॥

ततः
 महात्मा
 यशस्वी
 विभीषणः
 विपुलं
 सुयुग्मं

அப்பொழுது
 மகாத்மாவும்
 புகழ்பெற்றவருமாகிய
 விபிஷணர்
 விகாசமானதும்
 நல்ல குதிரைகள் பூட்
 டப்பெற்றதும்

हेमविचित्रिताङ्गं
 शुभं
 वरं
 रथं
 समास्थाय
 अग्रजस्य
 संसदं
 ययौ

பெயர் குணங்களைக்
 கட்டிய உருவுடைய
 அழகானதும் [தும்
 சிறந்ததுமான
 ரதமொன்றில்
 வந்திசைக்கண்டு
 தரவந்த
 சபைக்கு
 வந்த இசைக்காரர்.

स पूर्वजायावरजः शशंस नामाथ पथाचरणौ ववन्दे ।

शुकः महस्तश्च तथैव तेभ्यो ददौ यथाह पृथगासनानि ॥ २९ ॥

सः
 अवरजः
 पूर्वजाय
 अथ
 नाम शशंस
 पथात्
 चरणौ
 ववन्दे

அந்த
 தம்பி
 தமையனுக்கு
 முதலில்
 அயிரைதனம் பண்ணி
 னார்.
 அதன்போல்
 காங்களில்
 விழுந்துவிழுந்தார்.

शुकः
 महस्तः च
 तथा एव
 तेभ्यः
 यथाह
 पृथक्
 आसनानि
 ददौ

சகனும்
 பிழைந்தனும்
 அப்படியே செய்தார்
 அவர்களுக்கு [கள்.
 அவ்வாறுகளுக்கு
 தக்கபடி
 தனித்தனியாக
 ஆசனங்களை
 கொடுத்தார்.

सुवर्णनामणिभूषणानां सुवाससां संसदि राक्षसानाम् ।
तेषां परार्ध्यागरुचन्दनानां स्रजश्च गन्धाश्च वबुः समन्तात् ॥ ३० ॥

| | | | |
|---------------------------|--|------------------------------------|---|
| सुवर्णनाम- मणिभूषणानां | } நகங்கத்தினாலும் பல ரத்தணங்கனிஞாலுமா ன ஆபரணங்களை யுடையவர்களும் | राक्षसानां संसदि | அரக்கர்களுடைய சுடையில் |
| सुवाससां | நல்ல ஆடைகளையணிந் தவர்களாலுமான | परार्ध्याग- रुचन्दनानां च | சிந்த அகிற்சந்தணங் களுடையவும் |
| तेषां | ஆந்த | स्रजः च गन्धाः समन्तात् वबुः | மாலைகளினுடையவும் மணங்கள் எங்கும் கடழந்தண. |

न चुक्रुशुर्नानृतमाह कश्चित्सभासदो नैव जजलपुरुषैः ।
संसिद्धार्थाः सर्व एवोयवीर्या भर्तुः सर्वे ददृशुश्चाननं ते ॥ ३१ ॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| सभासदः | ஸுடையில் வந்திருந்த வர்கள் | संसिद्धार्थाः | மனோரதங்கள் வகை டப்பெற்றவர்கள். |
| चुक्रुशुः न उचैः एव जजलपुः न कश्चित् अनृतं | சத்தமிடவில்லை. உரத்த குரலிட்டே பேசவில்லை. ஒருவனும் வெளிகேவடிமான சொல்லை | उयवीर्याः ते सर्वे भर्तुः आननं ददृशुः च | மகத்தான வீர்யம் படைத்தவர்கள். ஆவர்கள் எல்லோருமே எஜமானனான முக்கனத பார்த்தவண்ணமே யிருந்தார்கள். |

स रावणः शस्त्रभृतां मनस्विनां महाबलानां समितौ मनस्वी ।
तस्यां सभायां प्रभया चकाशे मध्ये वसूनामिव वज्रहस्तः ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|-------------|----------------------|
| सः | ஆந்த | शस्त्रभृतां | சஸ்திரபாளி களுடைய |
| मनस्वी | மிகவாதஸ்வபால | समितौ | சங்கத்தில் |
| रावणः | ராவணன் [முடைய | वसूनां | கணுக்களின் |
| तस्यां | ஆந்த | मध्ये | இடையில் |
| सभायां | சுடையில் | वज्रहस्तः | இத்திரன் |
| मनस्विनां | வெகு வக்கத்துட னிருக்கும் | इव | போலவே |
| महाबलानां | மகத்தான ஆற்றலு டைய | प्रभया | குளியால் |
| | | चकाशे | விளக்கினான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे एकादशः सर्गः ॥



ஹாடயா: சரீ:—பன்னிரண்டாவது ஸர்க்கம் ॥ 12 ॥

கும்பகர்ப்பதிஷா—கும்பகர்ணனைது பிரதீக்ஷை.

स तां परिषदं कृत्वां समीक्ष्य सपितृजायः । प्रचोदयामास तदा प्रहस्तं वाहिनीपतिम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|-------------------|
| ததா | ஆய்வொழுது | கூவா் சமீக்ஷ்ய | முற்றும் பார்த்து |
| சமீதிஜாய: | போசில்வெற்றிபெறும் | வாஹினீபதி | சேனாபதியாகிய |
| சா: | ஆவன் | புஹஸ்த் | பிரகஸ்தனை நோக்கி |
| தா் | ஆந்த | புருதுயாமாச | பின்வருமாறு ஆக் |
| பரிஷத் | ஸபையை | | ஞாபித்தான் : |

सेनापते यथा ते स्युः कृतविद्याश्चतुर्विधाः । योधा नगररक्षायां तथा व्यादेष्टुमर्हसि ॥ 2 ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------------|---------------------|
| சேனாபதே | “சேனாபதியே! | யோதா: | போர்வீரர்கள் |
| தே | ஆந்த | நகரரக்ஷாயா் | நகரை ரக்ஷிப்பதில் |
| கூதவித்யா: | மற்றுமத் தேர்ச்சிய | யதா | எப்படிச்செய்தால் |
| | டைந்த | ச்யு: | இருப்பார்களோ |
| சுதுர்வித்யா: | { (தேர்வீரர் யானைவீ ரர், சூதிரைவீரர், காலாள்வீரர் என்ற) நான்குவகை | ததா | ஆப்படியே |
| | | வ்யாதுது மர்ஹசி | கியம்க்கவேண்டும். ” |

स प्रहस्तः प्रणीतात्मा चिकीर्षन् राजशासनम् । विन्वक्षिपद्वलं सर्वं बहिरन्तश्च मन्दिरे ॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|----------------|
| ச: | ஆந்த | மந்நிர் | ஆண்டுகையில் |
| புணீதாதுமா | உத்திரவுப்படி நடக் | யஹி: | வெளியிலும் |
| புஹஸ்த: | பிரஹஸ்தன் [கும் | அஸ்த: ச | உள்ளிலும் |
| ராஜசாஸநம் | மன்னனது ஆக்கினை | வல் | சைன்யம் |
| | யை | சர்வ் | எல்லாவற்றையும் |
| சிகீர்ஷந் | செய்து முடிப்பதில் | விந்வக்ஷிபந் | கொண்டுவந்து |
| | ணக்கமுடையவனாகி | | கிறுத்தினான். |

ततो विनिक्षिप्य बलं पृथङ्नगरगुप्तये । प्रहस्तः प्रमुखे राज्ञो निपसाद् जगाद् च ॥ 4 ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|-------------------|
| புஹஸ்த: | பிரஹஸ்தன் | ராஜ: | மன்னரது |
| தத: | ஆதன்மேல் | புமுக்ஷே | முன்னிலையில் |
| புதக் | வேறு | அஜாது | பின்வருமாறு கிண்ண |
| வல் | சைன்யத்தை | | ப்பஞ்செய்தான். |
| நகரகுப்தயே | நகரத்தைப்பாதுகாப் | ச | ஆதன் பின்னர் |
| | பதில் | நிபஸாது | உட்கார்ந்துகொண் |
| விநிஷிப்ய | கிறுத்தியிட்டு | | டான். |

निहितं बहिरन्तश्च बलं बलवतस्तव । कुरुष्वाविमनाः क्षिप्रं यदभिमेतमस्तु ते ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------|-----------------------------|----------|-------------------------------|
| बलवतः | “ வெகுபலம்பொருள் தீய | क्षिप्रं | விரைவில் |
| तव | தேவரீரது | अविमनाः | யாதொரு கவலையுடில் வாதவராய் |
| बलं | சைனியம் | अभिमेतं | உள்ளத்திலுள்ளதை |
| यहिः | வெளியிலும் | कुरुष्व | செய்வீராக. |
| अन्तः च | உள்ளிலும் | यत् | எதுவோ அது |
| निहितं | அமைக்கப்பட்டிருக் கிறது. | ते | தேவரீருக்கு |
| | | अस्तु | சைகூட்டும்.” |

महस्तस्य वचः श्रुत्वा राजा राज्यहिते रतः । सुखेषुः सुहृदां मध्ये व्याजहार स रावणः ॥

| | | | |
|-----------|--|----------|------------------------------|
| सः | அந்த | राजा | மன்னன் |
| राज्यहिते | ராஜ்யத்தின் நன்மை யில் | महस्तस्य | பிரஹஸ்தனுடைய |
| रतः | வகக்கமுடையவனும் | वचः | சொல்லை |
| सुखेषुः | { தற்கால மனச்சஞ்சல த்திற்குச் சாந்தியைக் கொருபவனுமாகிய | श्रुत्वा | கேட்டுவிட்டு, |
| रावणः | ராவண | सुहृदां | ஸூஹ்ருத்துக்களு |
| | | मध्ये | மத்தியில் [டைய |
| | | व्याजहार | பின் வருமாறு மொழிந்தான் : |

प्रियाप्रिये सुखं दुःखं लाभालाभौ हिताहिते । धर्मकार्यकुच्छेषु यूयमर्हथ वेदितुम् ॥

| | | | |
|------------------------|---|----------|---|
| धर्मकार्य- कुच्छेषु | “ தர்மத்தினுடையவும் காமத்தினுடையவும் பயன்களையடைய ஏற்படும் சங்கடங் களில் | दुःखं | மனதிற்குக் கசந்ததையு யும் |
| प्रियाप्रिये | { நன்மை பயப்பதையும் நன்மை பயக்காத தையும் | लाभालाभौ | { பிரயோஜனமாயிருப் பதையும் நிஷ்பிரயோ ஜனமாயிருப்பதையும் ஏற்றதையும் எனாத நீக்கள் [தையும் |
| सुखं | மனதிற்கு உசந்த தையும் | हिताहिते | பகுத்தறிய |
| | | यूयं | தகுந்தவர்களாயிருக் கிறீர்கள். |
| | | वेदितुं | |
| | | अर्हथ | |

सर्वकृत्यानि युष्माभिः समारब्धानि सर्वदा । मन्त्रकर्मनियुक्तानि न जातु विफलानि मे ॥

| | | | |
|---------------------------|---|--------------|--------------------------|
| सर्वदा | “ எக்காலத்திலும் | मे | எனது |
| युष्माभिः | உங்களால் | सर्वकृत्यानि | காரியங்கள் எனவையும் |
| मन्त्रकर्म- नियुक्तानि | { ஆலோசனைகளின் பய னும் அனுமதிக்கப் பட்டு | जातु | ஒருபொழுதும் |
| | | विफलानि | நிஷ்பிரயோஜனமான வைகளாக |
| समारब्धानि | மேற்கொள்ளப்பட்ட | न | இல்லை. |

स सोमग्रहनक्षत्रैर्मरुद्भिरिव वासवः । भवद्भिरहमत्यर्थं वृतः श्रियमवाप्नुयाम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|------------------|---|-------------|-----------|
| वासवः | "இந்திரன் | भवद्भिः | உங்களால் |
| सोमग्रहनक्षत्रैः | { சந்திரன் முதலிய கிரகங்களாலும் நக்சத் திரங்களாலும் | वृतः | சூழப்பட்ட |
| मरुद्भिः | மருந்தூக்களாலும் | सः | அந்த |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | अहं | நான் |
| | | अत्यर्थं | சூறையற்ற |
| | | श्रियं | செஷமத்தை |
| | | अवाप्नुयाम् | அடைவேன். |

अहं तु खलु सर्वान्वः समर्थयितुमुद्यतः । कुम्भकर्णस्य तु स्वमात्रेणमर्थमचोदयम् ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|---------------|------------------------|
| अहं | "உங்கள் | तु | ஆதிலும் |
| सर्वान् तु | எல்லோருக்கும் | कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது |
| समर्थयितुं | ஒருவிரியத்ததைப் பற்றி அறிவிக்க | स्वमात्रं खलु | தூக்கத்தால்தான் |
| अहं | நான் | इमं | இந்த |
| उद्यतः | ஆவனூடையவனாக யிருந்தேன். | अयं | விரியத்தை |
| | | अचोदयं न | கொள்கிறேன் திருந்தேன். |

अयं हि सुप्तः षण्मासान्कुम्भकर्णो महाबलः । सर्वशस्त्रभृतां मुख्यः स इदानीं समुत्थितः ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-----------------|---------------------|
| अयं | "இந்த | सर्वशस्त्रभृतां | ஆயுதபாணிகளினால் |
| महाबलः | மகா பலவானாகிய | मुख्यः | செந்தவனாகிய |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | सः | அவன் |
| षट् मासान् | ஆறுமா தங்களாய் | इदानीं हि | இப்பொழுதுதான் |
| सुप्तः | தூங்கிக்கொண்டிருந்தான். | समुत्थितः | விழித்துக்கொண்டான். |

इयं च दण्डकारण्याद्रामस्य महिषी प्रिया । रक्षोभिश्चरितादेशादानीता जनकात्मजा ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------|--------------|---------------------|
| इयं च | "அரக்கர்களால் | जनकात्मजा | ஜனகரின் மகளாகிய |
| दण्डकारण्याद्रामस्य | வசிக்கப்பெற்ற | इयं रामस्य | இந்த ராமனது |
| महिषी प्रिया | இடமான | महिषी प्रिया | பட்டமகிஷி |
| रक्षोभिश्चरिता | தண்டகாரணமாகத் திருந்ததான் | आनीता | கொண்டு வரப்பட்டாள். |
| देशान्ता | | | குக்கிரான். |

सा मे न शय्यामारोद्धुमिच्छत्यलसगामिनी ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|----------------------|
| अलसगामिनी | "அழகுநடைபுள்ளி | शय्यां | படுக்கையில் |
| सा | அவள் | आरोद्धुं | ஏற |
| मे | எனது | इच्छति न | இணங்கா திருக்கிரான். |

त्रिषु लोकेषु चान्या मे न सीतासदृशी मता ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----|----------------|
| सीतासदृशी | “சீதைக்கு சிகராகிய | न | நீண்டியென்பது |
| अन्या च | வேறொரு ஸ்திரீயே | मे | எனக்கு |
| त्रिषु | மூன்று | मता | தெரிந்தவிடயம். |
| लोकेषु | உலகங்களிலும் | | |

तनुमध्या पृथुश्रोणी शारदेन्दुनिभानना । हेमविश्वनिभा सौम्या मायेव मयनिर्मिता ॥

| | | | |
|---------------------------|--|--------------|------------------|
| तनुमध्या | “ துண்ணிடையாள் ; | हेमविश्वनिभा | பொற்பதுமை |
| पृथुश्रोणी | பெருமிடைப்புற | | யன்னாள் ; |
| | முடைபாள் ; | सौम्या | மனதை கொள்ளை |
| शारदेन्दु- } निभानना } | சரத்காளத்துத் திங்க ளென முகம்பெற்ற வள் ; | मयनिर्मिता | மயன் ஸ்ருஷ்டித்த |
| | | माया इव | மாடையோன்றவள். |

सुलोहितलौ शृङ्गणौ चरणौ सुप्रतिष्ठितौ । दृष्ट्वा ताम्रनखौ तस्या दीप्यते मे शरीरजः ॥

| | | | |
|-----------|--|---------------|------------------|
| तस्याः | “ அவளது | सुप्रतिष्ठितौ | நல்லமைப்புற்றவைக |
| सुलोहितलौ | { மிகச் சிவந்த சூதிப்பு றங்களை யுடையவை களும் | चरणौ | இரு கால்களையும் |
| ताम्रनखौ | சிவந்த நகங்களையுடைய பவைகளும் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| शृङ्गणौ | நல்வனப்புற்றவைக ளும் | मे | எனது |
| | | शरीरजः | நீன்ப வேட்கை |
| | | दीप्यते | வளர்கிறது. |

हुताग्नेरर्चिसङ्काशमेनां सौरीमिव प्रभाम् । दृष्ट्वा सीतां विशालार्क्षी कामस्य वशमेयिवान् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|--------------|-------------------|
| हुताग्नेः | “ ஹுத்தீயினது | विशालार्क्षी | தடக்கண்ணொருமாகிய |
| अर्चिसङ्काशां | ஐவாளையை சீகர்த்த வனும் | एनां | இந்த |
| सौरी | சூரியபகலா ஹர்க்க உரிய | सीतां | சீதையை |
| प्रभां इव | காந்தியோன்றவனும் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| | | कामस्य | அணக்கனுக்கு |
| | | वशं एयिवान् | ஆட்பட்டுவிட்டேன். |

उन्नसं वदनं बल्यु विपुलं चारुलोचनम् । पश्यंस्तदाऽवशस्तस्याः कामस्य वशमेयिवान् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|-------------|-------------------|
| तस्याः | “ அவளது | विपुलं | பாந்த |
| उन्नसं | நான்கை நிமிர்ந்ததும் | वदनं | முகத்தை |
| चारुलोचनं | நல்லெழில் நயன மறைந்ததும் | पश्यन् तदा | கண்டதுமே |
| बल्यु | அழகுடையதுமான | अवशः | தன்னறிவு குன்றி |
| | | कामस्य | அணக்கனுக்கு |
| | | वशं एयिवान् | ஆட்பட்டுவிட்டேன். |

क्रोधहर्षसमानेन दुर्वर्णकरणेन च । शोकसन्तापनित्येन कामेन कलुषीकृतः ॥ १९ ॥

| | | | |
|----------------------|--|-----------------------|---|
| क्रोधहर्ष- समानेन | “கேட்பதற்கிலும் மற் தோஷத்திலும் ஒரே பா திரியாவிருக்கிற தும் | शोकसन्ताप- नित्येन | மனவேதனைகளிலும் வி யாதிலும் மாறுதி ருக்கிற துமாகிய |
| दुर्वर्णकरणेन च | முடிக்களைப்பக் களை கிறதும் | कामेन कलुषीकृतः | காமத்தால் கலங்குலைக்கப்பெற் றேன். |

सा तु संवत्सरं कालं मामयाचत भामिनी । प्रतीक्षमाणा भर्तारं राममायतलोचना ॥ २० ॥

तन्मया चारुनेत्रायाः प्रतिज्ञातं वचः शुभम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| आयतलोचना भामिनी सा तु समं प्रतीक्षमाणा भर्तारं मां अयाचत | “கழற்கண்ணாளும் கட்டழகியுமான ஆவனோ ராமனை எதிர்பார்க்கின்றவ ளாய் கணவனையே என்றிடம் வேண்டினாள். | तत मया वचः संवत्सरं कालं शुभं चारुनेत्रायाः प्रतिज्ञातम् | அப்பொழுது என்னால் உத்தியோழியொன்று ஒரு வருஷகாலம் வரைக்கும் ஆபத்திற்கிடமாகாத கண்ணழகிக்கு [சாய் வாக்களிக்கப்பட்டிரு க்கிறது. |
|---|--|--|---|

श्रान्तोऽहं सततं कामाद्यातो ह्य इवाध्वनि

| | | | |
|----------------------------|--------------------------------------|-----------------------------------|---|
| अध्वनि यातः ह्यः ह्य | “வெகுதூரம் கடந்த குதிரை! போலவே | सततं कामात् अहं श्रान्तः | இடைவிடாத காமவேட்கையால் நான் களைத்துவிட்டேன். |
|----------------------------|--------------------------------------|-----------------------------------|---|

कथं सागरमक्षोभ्यमुत्तरन्ति वनौकसः । बहुसत्त्वज्ञपाकीर्णं तौ वा दशरथात्मजौ ॥ २३ ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| अक्षोभ्यं बहुसत्त्व- ज्ञपाकीर्णं सागरं | “கலக்கமுடியாததும் பல சீர்வாழ்வுகளால் லும் பெருமீன்களா லும்நிறைந்ததுமான சமுத்திரத்தை | वनौकसः दशरथात्मजौ तौ वा कथं उत्तरन्ति | வானரசர்களானாகட் டும் தசரதரின் இரு புதல் வர்கள்,தானாகட்டும் எத்தனை உட்ப்பர்கள்? |
|---|---|---|---|

अथ वा कपिनैकेन कृतं नः कदनं महत् । दुर्ज्ञेयाः कार्यगतयो ब्रूत यस्य यथा मतिः ॥ २४ ॥

| | | | |
|---|--|---|---|
| अथ वा कपिना एकेन नः महत् कदनं कृतं | அல்லது (வேறொன்று வினை கனவேண்டியது குரங்கு [கான்]. ஒன்றால் நமக்கு அவற்றையாமன அழிவு விளைவிக்கப்பட்டிருக் கிறது. | कार्यगतयो दुर्ज्ञेयाः यस्य यथा मतिः ब्रूत | கார્યத்தின் போக்கு கள் சீர்வா அறிவுமுடியாம லிருக்கின்றன. எவனுக்கு எப்படி அபிப்பிராயம் எற்படுகிறதோ அதை வெளியிடுங்கள். |
|---|--|---|---|

मानुषान्मे भयं नास्ति तथापि तु विमृश्यताम् । तदा देवासुरे युद्धे युष्माभिः सहितोऽजयम् ॥
ते मे भवन्तश्च तथा सुग्रीवप्रमुखान्हरीन् ॥ २५ ॥

परं पारं समुद्रस्य पुरस्कृत्य नृपात्मजौ । सीतायाः पदवीं प्राप्तौ संप्राप्तौ वरुणालयम् ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|------------------|---|
| तदा | "ஒருகால் | नृपात्मजौ | ராஜகுமாரர்களிருவரும் |
| देवासुरे युद्धे | தேவாசுரயுத்தத்தில் | सुग्रीवप्रमुखान् | சுகிரீவனைத்தலைமை யாங்க்கொண்ட |
| युष्माभिः | உங்களோடு | हरीन् | வானரர்களை |
| सहितः | கூட இருந்தவனாய் | पुरस्कृत्य | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| अजयं | நான் வெற்றியடைந்திருக்கிறேன். | समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது |
| भवन्तः च | நீங்கள் தான் | परं पारं | அக்கரையில் |
| ते | அவர்கள். | वरुणालयं तथा | சமுத்திரத்தைதயும் |
| मे तु | எனக்கோ | संप्राप्तौ | கிட்டிவந்துசேர்ந்தி ருக்கின்றார்கள். |
| मानुषान् | மனிதனிடத்திலி | तथा अपि तु | இதெல்லாம் இப்படியி |
| भयं | ஆபத்து [ருந்து | मे | எனக்காக [ருப்பதால் |
| अस्ति न | உண்டாகாது. | विमृश्यताम् | தக்க ஆராய்ச்சிசெய் யப்பட்டும். |
| सीतायाः | சீதைவின் | | |
| पदवीं | இருக்குமிடத்தை | | |
| प्राप्तौ | அறிந்துகொண்ட | | |

अदेया च यया सीता बध्यौ दशरथात्मजौ । भवद्भिर्मन्त्रयतां मन्त्रः सुनीतं चाभिधीयताम् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|------------|------------------------------|
| यया | "எப்படியானால் | मन्त्रः | ராஜாங்க சூழ்ச்சியா |
| सीता | வரிதை | भवन्तिः | உங்களால் [எது |
| अदेया | கொடுக்கப்படவேண்டாமோ | मन्त्रयतां | ஆலோசிக்கப்பட்ட டும்; |
| दशरथात्मजौ | தசரதகுமாரர்க ளிருவரும் | सुनीतं च | நிக்கு வினையாத ராஜ உபாயமே |
| बध्यौ च | கொல்லப்படுவார்க மோ, அப்படியான | अभिधीयताम् | விதிக்கப்பட்டும். |

न हि शक्तिं प्रपश्यामि जगत्स्यन्पस्य कस्यचित् । सागरं वानरैस्तीर्त्वा निश्वयेन जयो मम ॥

| | | | |
|----------|--------------|--------------|------------------|
| जगति | "உலகில் | शक्तिं | சக்தியை |
| अन्पस्य | சாதாரண | प्रपश्यामि न | நான் அறிந்திலேன் |
| कस्यचित् | ஒருவனுக்கும் | हि | ஆகையால் |
| वानरैः | வானரர்களோடு | निश्वयेन | நிச்சயமாய் |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | मम | எனக்கு |
| तीर्त्वा | தாண்டிச்சேர | जयः | வெற்றியே." |

तस्य कामपरीतस्य निशम्य परिदेवितम् । कुम्भकर्णः प्रचुक्रोध वचनं चेदमब्रवीत् ॥ २९ ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|------------|------------------|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | प्रचुक्रोध | பிகச்சினங்கொண் |
| कामपरीतस्य | காமத்தால் கவரப் | इदं | பின்வரும் [டான்; |
| तस्य | அவனது [பட்ட | वचनं च | மொழியையும் |
| परिदेवितं निशम्य | புலம்பலைக் கேட்டு, | अब्रवीत् | மொழிந்தான் : |

यदा तु रामस्य सलक्ष्मणस्य प्रसन्न सीता खलु सा इहाहता ।

सकृत्समीक्ष्यैव सुनिश्चितं तदा भजेत चित्तं यमुनेव यामुनम् ॥ ३० ॥

| | | | |
|----------------------|---|--------------------|--|
| सकृत् सलक्ष्मणस्य | " இ. த. ந். சூ. மு. ந். தி. யே வ. ச. ச். ப. ண. னே. மு. ந். சூ. ம் | तदा तु समीक्ष्य | அ. ப். பொ. மு. நு. தே ந. ன். சூ. ஆ. ர. அ. ய். ச். சி செ. ய். து |
| रामस्य | ர. அ. ம். ணு. டை. ய | चित्तं | உ. த். தி. த. ச. ம. அ. ன. து |
| सा | அ. ந். த | खलु | நி. ச். ச. ய. ம. அ. ய் |
| सीता एव | வ. சி. தை | सुनिश्चितं | ந. ன். சூ. ஒரு. தீ. ர். ம. அ. ன. த் |
| प्रसन्न | ப. ண. ன். ச. ரி. த். து | यमुना | ய. மு. ணு. நு. தி [தி. ல் |
| यदा | அ. ப். பொ. மு. நு | यामुने | (அ. த. ன். ம. டு. வ. அ. சி. ய) |
| इह | இ. வ். னி. ட. த். தி. ந். சூ | इव | ய. மு. ண. மெ. ண். ப. தி. ல் |
| आहता | கொ. ண். டு. வ. ர. ப். ப. ட். டா கோ. ர். | भजेत | (எ. ன். மு. சி. தி. து) பொ. ண. லி. வே வ. ந். தி. நு. க். க. வே. ண். டும். |

सर्वमेतन्महाराज कृतमप्रतिमं तव । विधीयेत सदास्माभिरादावेवास्य कर्मणः ॥ ३१ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|-------------|---|
| महाराज | " ம. க. ர. அ. ஜ. ரீ. ர். | कृतं | க. ரி. ய. த். தை. ப். ப. ந். தி |
| अस्य | இ. ந். த | एतत् | இ. ந். த |
| कर्मणः | க. ரி. ய. த். தி. ன. து | सर्वं | எ. ல். லா. மு. ம் |
| आदौ एव | ஆ. ர. ப். ப. த். தி. லே. யே | अस्मानिः सह | எ. ன். க. கோ. டு. கூ. ட |
| तव | உ. ம. து | विधीयेत | நி. ச். ச. ய். த். க். ப். ப. ட். டி. நு. க். க. வே. ண். டும். |
| अप्रतिमं | நி. க. ர். ந். த | | |

न्यायेन राजकार्याणि यः करोति दशानन । न स संतप्यते पश्चात्त्रिधितार्थमतिर्तृपः ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|--|
| दशानन | " ர. அ. வ. ணு. | राजकार्याणि | ர. அ. ஜ. க. ரி. ய. க். கி. னி |
| यः | எ. ந். த ஒரு | करोति | செ. ப். கி. து. னே |
| नृपः | ம. ண். ண. ன் | सः | அ. வ. ன் |
| न्यायेन | ந. ய. யே. நி. தி. வ. மு. வ. அ. னு | पश्चात् | பி. ன். னு. ல் |
| निश्चितार्थमतिः | { மு. ண். தீ. ர். ம. அ. னி. க். க. ப். ப. ப். ட். அ. சி. ப். சி. ர. அ. ய. மு. டை. ப. வ. ணு. ய் | संतप्यते न | ப. ச். ச. த். த. அ. ப். ப. டு. கி. து னி. ல். லி. |

अनुपायेन कर्माणि विपरीतानि यानि च । क्रियमाणानि दुष्यन्ति हवींष्यप्रयतेष्विव ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|--|
| अनुपायेन | " வ. மு. தி. த. வ. யி | विपरीतानि | அ. னி. ப். ட். த். தை. வி. னி |
| क्रियमाणानि | செ. ய். ய. ப். ப. டு. கி. து | अप्रयतेषु | எ. ன். டி. ன். த. வை. க. ண. ன. அ. ய் |
| कर्माणि | க. ரி. ய. த். தி. க. ண் | हवींषि इव | ஹ். ம். பொ. தி. தி. னி. ஆ. ட. க். |
| यानि च | எ. அ. வ. தி. னி. அ. அ. வ. க. கொ. ண். ண. மு. ம் | दुष्यन्ति | க. அ. த. வ. ர். வி. தி. த. ய. த். தி. ல் |

यः पश्चात्पूर्वकार्याणि कर्माण्यभिचिकीर्षति । पूर्वं चापरकार्याणि न स वेद नयानयौ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------------|--------------|---------------------------------------|
| यः | "எவனொருவன் | अभिचिकीर्षति | செய்யத் தீர்மானிக் கின்றனோ, |
| पूर्वकार्याणि | முன் செய்யவேண்டிய | सः | அவன் |
| कर्माणि | காரியங்களை | नयानयौ | நன்மை பயப்பதையும் நீமை பயப்பதையும் |
| पश्चात् | பின்னும், | वेद न | பகுத்தறியா திருக் கின்றான். |
| अपरकार्याणि | அப்புறம்செய்யவேண் டிய காரியங்களை | | |
| पूर्व च | முன்னமேயும், | | |

चपलस्य तु कृत्येषु प्रसमीक्ष्याधिकं बलम् । क्षिप्रमन्ये प्रपद्यन्ते क्रौञ्चस्य स्वमिव द्विजाः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------------|-------------|------------------------|
| चपलस्य | "முன்னாலோசனை செய் பாச ஒருவனுடைய | द्विजाः | பாஸிகள் |
| अधिकं | அதிகமான | क्रौञ्चस्य | க்ரௌஞ்சமலைபின் து |
| बलं तु | தனது பலத்தையே | सं | நந்திரத்தை |
| प्रसमीक्ष्य | பேரிதாய் எண்ணிய | इव | *எப்படியோ அப்படி யே |
| कृत्येषु | காரியங்களில் | क्षिप्रं | விசுவரவில் |
| अन्ये | மற்றவர்கள் | प्रपद्यन्ते | அடைகின்றார்கள். |

* [உண்முக எம்பிரானால் வேற்களைக்கொண்டு துளைக்கப்பட்ட க்ரௌஞ்சகி
ரிஷின் வளைவழியே அன்னப்பறவைகள் மானஸப்பொய்கைக்கு செல்லுகின்றன
என்று ஸ்காந்தபுராணக்கதை.]

त्वयेद् महदारब्धं कार्यमप्रतिचिन्तितम् । दिष्ट्या त्वां नावधीद्रामो विषमिश्रमिवामिषम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-----------|--------------------------------|
| त्वया | "உன்னால் | विषमिश्रं | விஷங்கலந்த |
| अप्रतिचिन्तितं | முன்னாலோசனை செய் யப்படாததாகிய | आमिषं इव | உணவுபோன்ற |
| इदं | இந்த | रामः | ராமன் |
| महत् | அடாத | त्वां | உம்மை |
| कार्यं | செயலானது | दिष्ट्या | ஆயுற்பாக்கியமிருப்ப தால் |
| आरब्धं | ஆரம்பிக்கப்பட்டது. | अवधीत् न | கொல்லாது விட்டிருக் கினான். |

तस्माच्चया समारब्धं कर्म ह्यप्रतिमं परैः । अहं समीकरिष्यामि इत्वा कञ्चुस्तवानघ ॥३७॥

| | | | |
|----------|--|--------------|----------------------------|
| परैः | "மற்றவர்களோடு | अहं | நான் |
| अप्रतिमं | ஒப்பிடமுடியாதது | तव | உமது |
| त्वया हि | உம்மாலேயே | शक्नु | சத்ருக்களை |
| समारब्धं | ஆரம்பிக்கப்பட்டது. | इत्वा | கொன்று |
| तस्मात् | ஆகையால் | कर्म | காரியத்தை |
| अनघ | { பிறர்களிடமிருந்து ஆபத்திற்கிடமில்லா தவறே ! | समीकरिष्यामि | சரிப்படுத்தப்போகி றேன். |

अहमुत्सादयिष्यामि शत्रुंस्तव विशां पते । यदि शक्रविवस्वन्तौ यदि पावकमारुतौ ॥
तावहं योधयिष्यामि कुबेरवरुणावपि ॥ ३८ ॥

| | | | |
|--------------------|------------------------------------|----------------|-------------------------|
| शक्रविवस्वन्तौ यदि | “ இந்திர குர்பயர்களாகிய ஊம் சரீ | योधयिष्यामि | பொரிய் தாக்குவேன். |
| पावकमारुतौ यदि | அக்னிவாயுக்களாகிய ஊம் சரீ | विशां पते | மன்னரசே ! |
| कुबेरवरुणौ अपि | குபேரவருணர்களாகிய ஊம் சரீ | अहं | நான் |
| तौ | அவ்விருவர்களை | नर | தேவரீரதா |
| अहं | நான் | शत्रुं | சத்ருருக்களை |
| | | उत्सादयिष्यामि | நரசனுடையப்போகி தேன். |

गिरिमात्रशरीरस्य महापरिधयोधिनः । नर्दतस्तीक्ष्णदंष्ट्रस्य विभियाद् वै पुरन्दरः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|---------------------|---|-------------------|--|
| गिरिमात्रशरीरस्य | “ மலைமாவடிசை முண்டையலஊம் | तीक्ष्णदंष्ट्रस्य | கூசிய கடவாய்ப்பத் சளை புண்டையலஊம் |
| महापरि- योधिनः } | பெரும் உழைத்தடித என் பேர்ப்புரிபல ஊம் | नर्दतः | கிம்பராத் துச்செய்கள் நலஊமான என் க்கு |
| | | पुरन्दरः वै | இந்திரஊம் |
| | | विभियात् | கடுக்குவான். |

पुनर्मां स द्वितीयेन शरेण निहनिष्यति । ततोऽहं तस्य पास्यामि रुधिरं कामयाव्सस ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|----------|------------------|
| सः | “ அவன் | तस्य | அவனுடைய |
| द्वितीयेन | இரண்டாவது | रुधिरं | இரத்தச்சதை |
| शरेण | பாணத்தால் | पास्यामि | உறிஞ்சுகின்றேன். |
| मां | என்னை | ततः | அதையால் |
| निहनिष्यति पुनः | அடிக்கும்முன்னாலும் | कामं | இன்பம் |
| अहं | நான் [பே] | आवस्य | சகமெய்கும். |

वधेन वै दाशरथेः सुखावहं जयं तवाहर्तुमहं यतिष्ये ।

हत्वा च रामं सह लक्ष्मणेन खादामि सर्वान्हरियूथमुख्यान् ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|----------------|--------------------------|
| दाशरथेः | “ ராமனுடைய | लक्ष्मणेन सह | லக்ஷ்மண துணிகட |
| वधेन | வதைதலால் | रामं च | ராமனையும் |
| तव | உமக்கு | हरियूथमुख्यान् | வானர சேனைத்தலை வர்கள் |
| सुखावहं | சுகந்தவாணிக்கும் | | |
| जयं | கொற்றியை | | |
| आहर्तुं | விடிக் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| अहं | நான் | हत्वा | கொன்று |
| यतिष्ये वै | இரக்கொதைபுடவிரிந்து கிடுதன். | खादामि | தின்றிடுவேன். |

रमस्व कामं पिव चाय्यवारुणीं कुरुष्व कार्याणि हितानि विज्वरः ।

मया तु रामे गमिते यमक्षयं चिराय सीता वशगा भविष्यति ॥ ४२ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|----------|---------------------|
| காம் | " இஷ்டம்போல் | கூலுவ | செய்யும். |
| रमस्व | இன்பமாய்க் காலைக் கழியும்; | मया तु | என்னாலேயே |
| अय्यवारुणीं च | கிறந்த மதுவையும் | रामे | ராமன் |
| पिव | பருகும். | यमक्षयं | யமனது மாளிகைக்கு |
| विज्वरः | கவலையற்றவராய் | गमिते | அனுப்பப்பட்டிருந்து |
| हितानि | இஷ்டமான | चिराय | முடிவாய் |
| कार्याणि | காரியங்களை | सीता | வீதை |
| | | वशगा | இணங்கியவராய் |
| | | भविष्यति | ஆவான்." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे द्वादशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15101



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 426

वयोदशः सर्गः—பதின்மூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ १३ ॥

रावणमहापार्श्वसंवादः—ராவணனுக்கும் மஹாபார்க்வனுக்கும் நடந்த ஸம்வாதம்.

रावणं क्रुद्धमाज्ञाय महापार्श्वो महाबलः । मुहूर्तमनुसंचिन्त्य प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|-------------------|
| महाबलः | வெகு பலசாலியாகிய | अनुसंचिन्त्य | தனக்குள்ளோடே |
| महापार्श्वः | மகாபார்க்வன் | | ஆலோசனை செய்து |
| रावणं | ராவணனை | प्राञ्जलिः | கூப்பிய கையாலாய் |
| क्रुद्धं | கினக்கொண்டிருப்ப | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| आज्ञाय | அறிந்து [வஞ்ச | अब्रवीत् | பின் வருமாறு சொன் |
| मुहूर्तं | ஒரு முகூர்த்தகாலம் | | னான் : |

यः खल्वपि वनं प्राप्य मृगव्यालसमाकुलम् । न विवेन्मधु संप्राप्तं स नरो वालिशो भवेत् ॥

| | | | |
|------------------|---|------------|--------------------|
| यः | " எந்த ஒரு | संप्राप्तं | கையில் கிட்டிய |
| नरः | மாளிடன் | मधु | தேனை |
| मृग-व्यालसमाकुलं | மரங்களும் துஷ்டமி ருகங்களும் நிறைந்த | विवेत् न | குடிக்காமலிருக்கிற |
| वनं अपि | காட்டையும் | सः खलु | அவன் தான் [இரு |
| प्राप्य | அடைந்து | वालिशः | புல்லறிவாளனாய் |
| | | भवेत् | கொள்ளப்படுகிறான். |

ईश्वरस्येश्वरः कोऽस्ति तव शत्रुनिवर्हण । रमस्व सह वैदेह्या शत्रूनाक्रम्य मूर्धसु ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-------------|---------------|
| शत्रुनिवर्हण | " சத்ருஸம்நாசக! | अस्ति | இருக்கிறான் ? |
| ईश्वरस्य | யாவருக்கும் மேம்பட் டவராகிய | शत्रून् | சத்ருக்களை |
| तव | தேவீருக்கு | मूर्धसु | தலைகளில் |
| ईश्वरः | மேம்பட்டவன் | आक्रम्य | அடித்து, |
| कः | எவன் | वैदेह्या सह | சீதையோடுகூட |
| | | रमस्व | இன்புறவீராக. |

बलात्कुक्कुटवृत्तेन वर्तस्य सुमहाबल । आक्रम्याक्रम्य सीतां वै तथा भुङ्क्व रमस्य च ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------|---------|-----------------------------|
| सुमहाबल | “ மிகக் கவலிப்பையுள்ள வரே ! | सीतां च | சிறைதனையும் |
| कुक्कुटवृत्तेन | வஞ்சகச் செய்கையால் | भुङ्क्व | கொந்தமாக்கிக் கொள்ளும் ; |
| बलान् वर्तस्य | பலா த்கரியும் ; | तथा वै | அப்படியே |
| आक्रम्य आक्रम्य | மெல்ல மெல்லம் கிட்டி | रमस्य | மனம் மகிழும். |

लब्धकामस्य ते पश्चादागमिष्यति यद्भयम् । प्राप्तप्राप्तकालं वा सर्वं प्रतिसहिष्यसि ॥५॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|---------------|------------------------------|
| लब्धकामस्य | “ தேர்நிக்மைகையை சிறைத்திற்க்கொண்ட | आगमिष्यति | வரப்போகிறதொத்து |
| ते | தேவர்களுக்கு | अप्राप्तकालं | சம்பவிக்கமுடியாதது. |
| पश्चात् | அதன்மேல் | प्राप्तं वा | சம்பவத்துவிட்டதாக ஆயினும் |
| यद् | எந்த ஒரு | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| भयं | ஆபத்து | प्रतिसहिष्यसि | தாக்கிக்கொள்ளீர். |

कुम्भकर्णः सहास्राभिरिन्द्रजिच्च महाबलः । प्रतिषेधयितुं शक्तौ सवज्रमपि वज्रिणम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|---------------|--------------------------|
| असाभिः | “ எங்கனோடு | सवज्रं | வஜ்ராயுதத்தோடு வரும்” |
| सह | கூட | वज्रिणं अपि | இந்திரனையும் |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணரும் | प्रतिषेधयितुं | ஒட்டத்தூத்திவிட |
| महाबलः | மகாபலசாலியாகிய | शक्तौ: | வல்லவர்கள். |
| इन्द्रजिच्च | இந்திரஜித்தும் | | |

उपप्रदानं सान्त्वं वा भेदं वा कुशलैः कृतम् । समतिक्रम्य दण्डेन सिद्धिभेषु रोचय ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|------------|-------------------|
| कुशलैः | “ நல்வழிகளால் | भेदं वा | பிரித்துவைத்தனையோ |
| कृतं | ஆளுஷ்டிக்கப்பட்ட | समतिक्रम्य | விட்டொழித்து |
| उपप्रदानं | தரணம் கொடுத்த தனையோ, | अर्थेषु | காரியங்களில் |
| सान्त्वं वा | நல்வாழ்நகைதெதால் வதைதனையோ, | दण्डेन | பொர்உபாயம் ஒன்று |
| | | सिद्धि | கித்தனைய [நிலைய |
| | | रोचय | தீர்மானியும் |

इह प्रासान्वयं सर्वाञ्छत्रंस्तव महाबल । वशे शस्त्रप्रतापेन करिष्यामो न संशयः ॥ ८ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|----------------|------------------------------|
| महाबल | “ மகா பலசாலியே ! | शस्त्रप्रतापेन | சுஸ்திரத்தின் வல்லமைமயால் |
| वयं | நாங்கள் | वशे | நம் வசம் |
| इह | இப்பொழுது | करिष्यामः | ஆக்கிவிடப்போகி ளோம் ; |
| प्रासान् | வந்தனையேற்க்கிருக்கிற | संशयः न | இதற்கையமே இல்லை”. |
| वयं | தேவர்களு | | |
| शस्त्रं | சுத்திரங்கள் | | |
| सर्वान् | எல்லோரையும் | | |

एवमुक्तस्तदा राजा महापार्श्वेन रावणः । तस्य संपूजयन्वाक्यमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ९ ॥

तदा अप்பொழுது
 महापार्श्वेन மஹாபார்ச்வனூல்
 एवं மேற்கண்டவாறு
 उक्तः சொல்லப்பட்டதற்கு
 செவிராய்த்த
 रावणः राजा ராவணமன்னன்

तस्य அவனது
 वाक्यं சொல்லை
 संपूजयन् பிக்கமெச்சி
 इदं பின்வரும்
 वचनं சொல்லை
 अब्रवीत् சொன்னான் :

महापार्श्व निबोध त्वं रहस्यं किञ्चिदात्मनः । चिरवृत्तं तदाख्यास्ये यदवाप्तं मया पुरा ॥

महापार्श्वं "மகாபார்ச்வ!
 आत्मनः என்னைப்பற்றிய
 चिरवृत्तं முண்டந்ததாகிய
 रहस्यं ரஹஸ்யம்
 किञ्चित् ஒன்றிருக்கிறது.
 पुरा முன்னொருக்கால்

मया என்னால்
 यत् எதொன்று
 अवाप्तं அடையப்பட்டதே,
 तत् அதை
 आख्यास्ये சொல்லுகிறேன் ;
 त्वं நீ
 निबोध கவனமாய்க் கேள் :

पितामहस्य भवनं गच्छन्ती पुञ्जिकस्थलाम् । चञ्चूर्यमाणामद्राक्षमाकाशेऽग्निशिखामिव ॥

आकाशे "ஆகாசத்தில்
 अग्निशिखां इव அக்னிஜ்வாலையோன்
 தவளும்,
 पितामहस्य பிரம்மதேவரது
 भवनं திருமாளிகைக்கு
 चञ्चूर्यमाणां பயத்தால் பதுக்கி

गच्छन्ती போய்க்கொண்டிருக்க
 கும்
 पुञ्जिकस्थलां புஞ்சிகஸ்தலையெனும்
 அப்ஸரஸ்கீரைய
 अद्राक्षम् நான் கண்டேன்.

सा प्रसह्य मया भुक्ता कृता विवसना ततः । स्वयंभूभवनं प्राप्ता लोलिता नलिनी यथा ॥

मया "என்னால்
 सा அவள்
 प्रसह्य பலாத்கரிக்கப்பட்டு
 विवसना कृता துயிலுசியப்பட்டு
 भुक्ता அனுபவிக்கப்பட
 டாள்.

लोलिता கசக்கிய
 नलिनी यथा தாமரைக்கொடிபோல்
 ततः அவ்விடந்திலிருந்து
 स्वयंभूभवनं பிரம்மதேவரது திரு
 மாளிகைக்கு
 प्राप्ता போய்க்கொண்டாள்.

तस्य तच्च तदा मन्ये ज्ञातमासीन्महात्मनः । अथ संकुपितो देवो मामिदं वाक्यमब्रवीत् ॥

तदा "அப்பொழுது
 तस्य அந்த
 महात्मनः மகாத்மாவக்கு
 तत् அது
 ज्ञातं च தெரிந்துகிட்டதாக
 வே
 आसीत् ஆகியிட்டது என்று
 मन्ये நான் நினைக்கிறேன்.

अथ अप்பொழுது
 देवः பிரம்மதேவர்
 संकुपितः மிகச்சினங்கொண்ட
 வராய்
 मां என்னைக்குறித்து
 इदं பின்வரும்
 वाक्यं சாபத்தை
 अब्रवीत् இட்டார் :

अद्यप्रभृति यामन्यां बलाचारीं गमिष्यसि । तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|-----------------|
| अद्यप्रभृति | “ இன்று முதல் | तदा | அப்பொழுதே |
| याम्यां | வேறு | ते मूर्धा | உனது தலை |
| यां नारीं | எந்த நூறு கீழ்வைய | शतधा | நூறு சுக்கலாக |
| बलात् | பலா த்கரிந்து | फलिष्यति | வெடித்துவிடும்; |
| गमिष्यसि | உணுகுவாயே | संशयः न | இதற்கையயில்லை. |

इत्थहं तस्य शापस्य भीतः प्रसभमेव ताम् । नारोपये बलात्सीतां वैदेहीं शयने शुभे ॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|----------------------|
| तस्य | “ அந்த | तां | அந்த |
| इति | மேற்கண்ட | सीतां | வரிதையை |
| शापस्य | சாபத்திற்கு | शुभे | இனிய |
| प्रसभं | அவச்யமாய் | शयने | படுக்கையில் |
| भीतः | பயமடைந்திருக்கும் | बलात् एव | பலா த்கரிந்து |
| अहं | நான் | आरोपये न | எந்நினைவக்காமலிருக்க |
| वैदेहीं | விடுத்தஹமன்னரின் | | கிறேன். |
| | புத்தலியான | | |

सागरस्येव मे वेगो मारुतस्येव मे गतिः । नैतदाशरथिवेद ह्यासादयति तेन माम् ॥१६॥

| | | | |
|----------|------------------|---------|-------------------|
| मे वेगः | “ எனது ஆண்கை | दाशरथिः | ராமன் |
| सागरस्य | சமுத்திரத்திற்கு | एतत् | இதை |
| इव | சமமானது; | वेद न | அறியவில்லை; |
| मे | எனது | तेन हि | அதனால்தான் |
| गतिः | போக்கு | मां | என்னை |
| मारुतस्य | வாயுவக்கு | आसादयति | எதிர்க்கவந்துகொண் |
| इव | சமமானது; | | டுக்கிறேன். |

यस्तु सिंहमिवासीने सुप्तं गिरिशुहाशये । कुद्धं मृत्युमिवासीने प्रबोधयितुमिच्छति ॥१७॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|-----------------|
| यः तु | “ எவன் தான் | आसीने | சம்பாதிருக்கும் |
| गिरिशुहाशये | மலைக்குகையில் | कुद्धं | கொடிய |
| सुप्तं | உறக்கி | मृत्यु इव | யமன்போன்றவனுமா |
| आसीने | படுத்திக்கிடக்கும் | प्रबोधयितुं | எழுப்ப [என்னை |
| सिंह इव | சிங்கப்போன்றவனும | इच्छति | தனைவான் ? |

न मत्तो निशितान्वाणान्दिजिह्वानिव पन्नगान् । रामः पश्यति संग्रामे तेन मामभिगच्छति ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--------------------|
| रामः | “ ராமன் | संग्रामे | போரில் |
| निशितान् | கரியவைகளும் | मत्तः | என்னிடமிருந்து |
| दिजिह्वान् | இருகாக்குகளைபுடைய | पश्यति न | கண்டதில்லை. |
| पन्नगान् इव | பாம்புகள்போன்ற | तेन | அதனால் |
| | வைகளினால் | मां | என்னை |
| वाणान् | பாணங்களை | अभिगच्छति | எதிர்க்கவருகிறேன். |

क्षिप्रं वज्रोपपैर्वाणैः शतधा कार्मुकच्युतैः । राममादीपयिष्यामि उल्काभिरिव कुञ्जरम् ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|--------------|---------------------------|
| कार्मुकच्युतैः | “ கில்லிவிருந்து வெ ளிவரும் | कुञ्जरं | ஜர் யானையை |
| वज्रोपपैः | வஜ்ராயுதங்களை நிகர்த்த | उल्काभिः | கொள்ளிக்கட்டை களால் |
| शतधा | நூற்றுக்கணக்கான | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| वाणैः | பாணங்களால் | रामं | ராமனை |
| क्षिप्रं | சீக்கிரமே | आदीपयिष्यामि | எரித்துவிடப்போகி நேன். |

तच्चास्य बलमादास्ये बलेन महता वृतः । उदयन्सविता काले नक्षत्राणामिव प्रभाम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|---------|-----------------|
| काले | “ அதிகாலையில் | महता | பெரும் |
| उदयन् | உதிக்கும் | बलेन | சைனியத்தால் |
| सविता | சூரியன் | वृतः | சூழப்பட்ட நான் |
| नक्षत्राणां | நக்சத்ரங்களுடைய | अस्य | இவனது |
| प्रभां | ஒளியை | तत् | அந்த |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | बलं च | பலத்தையும் |
| | | आदास्ये | வாங்கிவிடுவேன். |

न वासवेनापि सहस्रचक्षुषा युधाऽस्मि शवयो वरुणेन वा पुनः ।
मया त्वियं बाहुबलेन निर्जिता पुरी पुरा वैश्रवणेन पालिता ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|-----------|-----------------|
| भस्मि | “ நான் | पुरा | முற்காலத்தில் |
| सहस्रचक्षुषा | ஆயிரம் கண்ணாகிய | वैश्रवणेन | சூபேரனால் |
| वासवेन भपि | இந்திரனால் தானாகத் டும் | पालिता | பாதுகாக்கப்பட்ட |
| वरुणेन वा पुनः | வருணனால் தானாகத் டும் | इयं | இந்த |
| युधा | போர்ப்புரிய | पुरी | நகர் |
| शवयः न | அனுக்கொண்ணாத வன். | मया तु | என்னாலேயே |
| | | बाहुबलेन | தொள்வலியால் |
| | | निर्जिता | அடையப்பட்டது.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे त्रयोदशः सर्गः ॥



चतुर्दशः सर्गः—பதினான்காவது ஸர்க்கம். || १४ ||

विभीषणेन सीताप्रत्यर्पणकथनम्—விபிஷணன் ஸீதையைத் திருப்பிக் கொடுக்கச் சொல்லுது.

निशाचरेन्द्रस्य निशम्य वावयं स कुम्भकर्णस्य च गर्जितानि ।

विभीषणो राक्षसराजमुख्यमुवाच वावयं हितमर्थयुक्तम्

|| १ ||

| | | | |
|-----------------|----------------|----------------------|--|
| सः | அந்த | राक्षसराज- मुख्यं | } தலைமையென்று விளங்கும் ராசுவலமன்னனைப்பார்த்து |
| विभीषणः | விபிஷணர் | हिनं अर्थयुक्तं | |
| निशाचरेन्द्रस्य | அரக்கமன்னனது | वावयं | சொல்லை |
| वावयं | சொல்லையும் | उवाच | பின்வருமாறு |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | | மொழிந்தார்: |
| गर्जितानि च | கர்ஜிக்களையும் | | |
| निशम्य | கேட்டு, | | |

वृतो हि बाहन्तरभोगराशिचिन्ताविषः सुस्मिततीक्ष्णदंष्ट्रः ।

पञ्चाङ्गुलीपञ्चशिरोतिकायः सीतामहाहिस्ताव केन राजन्

|| २ ||

| | | | |
|--------------------------------|---|------------|---|
| बाहन्तर- भोगराशिः | } “தோள்களின் இடைபாகமாகிய படத்தை யுடையதும் சிந்தையாகிய விவாதத்தை யுடையதும் | सीतामहाहिः | } சீதையாகிய கொடிய விஷமுள்ள சர்ப்பமானது; |
| चिन्ताविषः | | राजन् | |
| सुस्मिततीक्ष्णदंष्ट्रः | புன்சிரிப்பாகிய கோரப்பற்களையுடையதும் | तव | தேவ! நீக்கு |
| पञ्चाङ्गुली- पञ्चशिरोतिकायः | } ஐந்து விரல்களாகிய ஐந்து தலையுடைய கொடிய உருவமுள்ளதுமான | केन हि | யாரத்தானே |
| | | वृतः | बोहकंकिपेदुक्कप पद्दतु ? |

यावन्न लङ्कां समभिद्रवन्ति बर्लासुखाः पर्वतकूटमात्राः ।

दंष्ट्रायुधाश्चैव नखायुधाश्च मदीयतां दाशरथाय मैथिली

|| ३ ||

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|---|--|
| पर्वतकूटमात्राः च | } “பர்வதகிரி பரும னுள்ளவர்களும் | बर्लासुखाः | வாணர்கள் |
| दंष्ट्रायुधाः एव | | लङ्कां समभिद्रवन्ति न यावत् मैथिली | } இலங்கையை காக்கும் முன்னமேயே மைதிலியார் |
| नखायुधाः च | ககற்களை ஆயுதமாக வுடையவர்களுமான | दाशरथाय मदीयताम् | |

यावन्न गृह्णन्ति शिरांसि बाणा रामेरिता राक्षसपुङ्गवानाम् ।

वज्रोपमा वायुसमानवेगाः प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली

॥ ४ ॥

| | | | |
|---------------|---|-------------------|---|
| வஜ்ரோபமா: | “வஜ்ரோபுதத்தை நிகர்த்தவைகளும் | राक्षसपुङ्गवानां | ராட்சஸீஸைத்தமர் களுடைய |
| वायुसमानवेगाः | { காற்கைநப்போல் கடிந் து செல்பவைகளு மான | शिरांसि | சிரங்களை |
| बाणाः | பாணங்கள் | गृह्णन्ति न यावत् | வாக்கும் முன்னரே |
| रामेरिताः | ஸ்ரீராமரால் பிரயோகி க்கப்பட்டவைகளாய் | मैथिली | மைதிலியார் |
| | | दाशरथाय | ஸ்ரீராமருக்கு |
| | | प्रदीयताम् | திருப்பிக்காமர்ப்பிக்க கூடப்பட்டும். |

न कुम्भकर्णेन्द्रजितौ न राजा तथा महापार्श्वमहोदरौ वा ।

निकुम्भकुम्भौ च तथाऽतिक्रायः स्यातुं न शक्ता युधि राघवस्य

॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------------|-----------------------------------|------------------|----------------------------------|
| राघवस्य | “ஸ்ரீராமருடைய | न | அப்படியே வல்லவர் சல்லர். |
| युधि | போரில் | महापार्श्वमहोदरौ | மகாபார்க்கலனும் மடுவதா தரனும் |
| स्यातुं | எதிர்த்துநிற்க | न | வல்லவாசல்லர். |
| निकुम्भकुम्भौ च | நிகும்பனும் சும்பனும் | राजा वा | முன்னரே யாரினும் |
| अतिक्रायः तथा | அதிகரயனும் | तथा | அய்வனம்தான். |
| शक्ताः न | வல்லவாசல்லர். | | |
| कुम्भकर्णेन्द्रजितौ | சும்பகர்ணனும் இந்தி ராஜித்தும் | | |

जीवन्तु रामस्य न मोक्ष्यसे त्वं गुप्तः सवित्राऽप्यथ वा मरुद्भिः ।

न वासवस्याङ्कगतो न मृत्योर्नभो न पातालमनुप्रविष्टः

॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|--------------|-------------------------------|
| त्वं | “தேவரீர், | मृत्योः | மரணுடையவோ |
| सवित्रा | சூர்யபகவானுவோ | अङ्कगतः | மடிமீதமர்ந்தகவாரயி னும் |
| अथवा | அல்லது | न | உயிருடன் திரும்ப மாட்டார். |
| मरुद्भिः | தேவதைகளாலோ | नमः | ஆகாயத்தினும் |
| गुप्तः अपि | பாதுகாக்கப்பட்டவ ராலினும் | न | தப்பிர். |
| रामस्य तु | ஸ்ரீராமரிடமிருந்து மட்டும் | पातालं | பாதாளத்தில் |
| जीवन् | உயிருடையவராய் | अनुप्रविष्टः | புகுந்திகினும் |
| मोक्ष्यसे न | திரும்பமாட்டார். | न | தப்பிர். |
| वासवस्य | இந்திரனுடையவோ | | |

भिच्चा न तावत्प्रविशन्ति कायं प्राणान्तिकास्तेऽशनितुल्यवेगाः ।

शिताः शरा राघवविप्रमुक्ताः प्रहस्त तेनैव विकत्यसे त्वम्

॥ ७ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------------|--------------|---------------------------------|
| प्रहस्त | “ பிரஹஸ்த ! | ते | உனது |
| अशनितुल्यवेगाः | இடியை நிகர்ந்த ஆந் றனுள்ளவைகளும் | कायं | உடலை |
| प्राणान्तिकाः | உயிரை மாய்த்தேற தீருபவைகளும் | भिश्वा | பிரகந்துகொண்டு |
| शिताः | கரியவைபுமான | तावत् | இன்னும் |
| शराः | பாணங்கள் | प्रविशन्ति न | உட்புகவில்லை. |
| राघवविप्रमुक्ताः | ஸ்ரீராமரால் போடப் பட்டவைகளாய் | तेन एव | அதனுல்தான் |
| | | त्वं | தேவரீர் |
| | | विकत्यसे | பெருமையடித்து கொள்ளுகிரீர்.” |

निशम्य वाक्यं तु विभीषणस्य ततः प्रहस्तो वचने वभाषे ।

न नो भयं विश्व न दैवतेभ्यो न दानवेभ्यो ह्यथ वा कुतश्चित्

॥ ८ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|---------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | नः | “ எமக்கு |
| प्रहस्तः | பிரஹஸ்தன் | दैवतेभ्यः भयं | தேவர்களிடமிருந்தும் |
| विभीषणस्य | விபீஷணனு | भयं | ஆபத்தை |
| तु | இங்கிலையத்தில் | विश्व न | நாமறிதோம். |
| वाक्यं निशम्य | உபதேசத்தை கேட்டு, | दानवेभ्यः वा | அசுர்களிடமிருத் |
| वचनं | ஒரு சொல்லை | न | அறிதோம். [தம்கூட |
| वभाषे | மொழிந்தார் : | कुतश्चित् हि | எங்கிருந்தாவது |
| | | न | அறிக்திலோம். ” |

न यक्षगन्धर्वमहोरगेभ्यो भयं न संख्ये पतगोक्षमेभ्यः ।

कथं नु रामाद्भविता भयं नो नरेन्द्रपुत्रात्समरे कदाचित्

॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|------------------|----------------------------|
| संख्ये | “ போரில் | नरेन्द्रपुत्रात् | மாளிடமன்னளின் புதல்வனான |
| यक्षगन्धर्व-) | யக்ஷர், கந்தர்வர், | रामात् | ராமனிடமிருந்து |
| महोरगेभ्यः) | மகோரகரிடமிருந்தும் | नः | நமக்கு |
| भयं | ஆபத்து | भयं | ஆபத்து |
| न | கிடையாது. | कदाचित् नु | எப்பொழுதேனும் |
| पतगोक्षमेभ्यः न | பறப்பவைகளின்றும் | कथं भविता | எப்படி ஏற்படும் ? ” |
| समरे | போரில் [கிடையாது. | | |

प्रहस्तवाक्यं त्वहितं निशम्य विभीषणो राजहितानुकाङ्क्षी ।

ततो महात्मा वचनं वभाषे धर्मार्थकामेषु निविष्टबुद्धिः

॥ १० ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|-------------------|-------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | राजहितानुकाङ्क्षी | அரசுக்கு நன்மை யை நாடியவராய் |
| धर्मार्थकामेषु | தர்மம், அர்த்தம், கா மம் இவைகளில் | अहितं | தீங்கினைவிக்கும் |
| निविष्टबुद्धिः | தேர்ச்சிபெற்ற மனத் தினராகிய | प्रहस्तवाक्यं | பிரஹஸ்தனது சொ கேட்டபின்னர் [ல்லை |
| महात्मा | மகாத்மாவான | निशम्य तु | ஒரு சொல்லை |
| विभीषणः | விபீஷணர் | वचनं | பின்வருமாறு மொழி ந்தார் : |

प्रहस्त राजा च महोदरश्च त्वं कुम्भकर्णश्च यथार्थजातम् ।

ब्रवीथ रामं प्रति तन्न शक्यं यथा गतिः स्वर्गमधर्मबुद्धेः

॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|----------------------|
| प्रहस्त | " பிர ஹஸ்த ! | ब्रवीथ यथा | எவ்வண்ணமுரைக் |
| राजा च | மன்னரும் | तत् | அது [கிறீர்களே |
| महोदरः | மகோதரனும் | अधर्मबुद्धेः | மன தீதுய்மையற்றவ |
| कुम्भकर्णः च | கும்பகர்ணனும் | स्वर्ग | ஸ்வர்க்கத்தை [னுக்கு |
| त्वं च | நீயும் | गतिः | அடைதல் |
| रामं प्रति | ஸ்ரீராமரைப்பற்றி | यथा | எக்கனமோ அக்கன |
| अर्थजातं | மகதிராலோ சீனையை | शक्यं न | சாத்தாமன்று. [மே |

वधस्तु रामस्य मया त्वया वा प्रहस्त सर्वैरपि राक्षसैर्वा ।

कथं भवेदर्थविशारदस्य महार्णवं तर्तुमिवाष्टवस्य

॥ १२ ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|------------------|
| प्रहस्त | " பிர ஹஸ்த ! | सर्वैः अपि वा | எல்லோராலும்மென்ற |
| अर्थविशारदस्य | { இதுவரையில் செய்த காரியங்களில் பிரசித் திபெற்றவராகிய | अष्टवस्य | ஊடில்லாதவனுக்கு |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | महार्णवं | சமுத்திரத்தை |
| वधः तु | வதைபென்பது | तर्तुं | நாண்ட |
| मया | என்னுல்தானாகட்டும் | इव | எப்படியோ |
| त्वया वा | உன்னுல்தானாகட்டும் | कथं भवेत् | அப்படியே |
| राक्षसैः | ஆரக்கர்கள் | | ஒருபொழுதும் |
| | | | முடியாது. |

धर्मप्रधानस्य महारथस्य इक्ष्वाकुवंशप्रभवस्य राज्ञः ।

प्रहस्त देवाश्च तथाविधस्य कृत्येषु शक्तस्य भवन्ति मूढाः

॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------|---|----------------------|---------------------------------|
| प्रहस्त | " பிர ஹஸ்த ! | इक्ष्वाकुवंशप्रभवस्य | இஷ்டகாகுவம்சத்தின் |
| धर्मप्रधानस्य | { புருஷார்த்தங்களில் தர்மமொன்றையே சர்வமுமாய்க் கொ ண்டவரும் | शक्तस्य | அவதரித்தவரும் |
| महारथस्य | மஹாரதனும் மட்ட டம் பெற்றவரும் | राज्ञः | சர்வசக்தனுமாகிய |
| तथाविधस्य | அப்பெர்ப்பட்ட வயா ஐமுடையவராய் | कृत्येषु | மன்னரது |
| | | देवाः च | காரியவிஷயங்களில் |
| | | मूढाः | தேவர்களும் |
| | | भवन्ति | உள்ளபடி அறிய முடியாதவர்களாய் |
| | | | இருக்கின்றார்கள். |

तीक्ष्णा नता यत्तत्र कङ्कषन्ना दुरासदा राघवविप्रमुक्ताः ।

भिच्वा शरीरं प्रविशन्ति बाणाः प्रहस्त ते नैव विकल्पसे स्वम्

॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|--|------------|--------------------------------|
| प्रहस्त | " பிர ஹஸ்த ! | कङ्कषन्नाः | கழுஞ்ச்சிறகு கட்டப் |
| तीक्ष्णाः | காரணவைகளும் | | பட்டவைகளும் |
| नताः | { கொஞ்சம் துளி வளை ந்திருக்கின்றவைக ளும் | दुरासदाः | மோதுசெய்ய முடியாத வைகளுமான் |

| | | | |
|------------------|-----------------------------------|--------------|---------------------------------|
| ते | அந்த | मित्रा | பிரந்துகொண்டு |
| नामाः | பாணங்கள் | प्रविशन्ति न | உட்புகவில்லை. |
| राघवविप्रमुक्ताः | ஸ்ரீராகவரால் போடப் பட்டவைகளாய் | यत् एव | இக்காரணத்தால் |
| तव | உவது | त्वं | நீ [தான் |
| शरीरं | உடலை | विकल्पसे | பெருமையடித்துக் கொள்ளுகிறது. |

न रावणो नातिवल्ग्विशिषीर्षो न कुम्भकर्णोऽस्य सुतो निकुम्भः ।

न चेन्द्राजिदाशरथिं प्रसोदुं त्वं वा रणे शक्रसप्तं समर्थाः

॥ १५ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|--------------|-------------------|
| शक्रसप्तं | “ இம் திரணுக்குச் சமரணராகிய | विशीर्षः न | நிர்நீர்வதுவகான். |
| दाशरथिं | ஸ்ரீராமரை | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணனும் |
| रणे | போரில் | अस्य | இவனது |
| प्रसोदुं | மேற்கொள்ள | सुतः | புதல்வனுடைய |
| समर्थाः | சமர் தந்தர்களாய் | निकुम्भः | நிகும்பனும் |
| रावणः न | ராவணனுமாகான் ; | इन्द्रजित् च | இந்திரஜித்தும் |
| अतिवल्ग्वः | அதிகபலம் பெருந் திய | न | ஆதார்கள். |
| | | त्वं वा | நீயும் |
| | | न | ஆகாய். |

देवान्तको वाऽपि नरान्तको वा तथाऽतिकायोऽतिरथो महात्मा ।

अकम्पनश्चाद्रिसमानसारः स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य

॥ १६ ॥

| | | | |
|------------------|------------------------------|---------------|----------------------------|
| देवान्तकः अपि वा | “ தேவாந்தகன் தானு கட்டும் | अतिरथः | அதிரதன் தானுகட்டும் |
| नरान्तकः वा | நராந்தகன் தானுகட் | अद्रिसमानसारः | மனைய சீகர்த்த உதரீபுடைய |
| तथा | அப்படியே [டும் | अकम्पनः च | அகம்பனன் தானுகட் |
| अतिकायः | அதிகாயன் தானுகட் டும் | युधि | போரில் [டும் |
| महात्मा | மகத்தான ஆற்றலு டைய | राघवस्य | ஸ்ரீராகவருக்கு |
| | | स्थातुं | எதிர்த்துநிற்க |
| | | न शक्ताः | எதிர்த்து ஆதார்கள். |

अयं हि राजा व्यसनाभिभूतो मित्रैर्मित्रप्रतिमैर्भवद्भिः ।

अन्वास्यते राक्षसनाशनार्थे तीक्ष्णः प्रकृत्या वसर्माक्ष्यकारी

॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------------|--|-----------------|----------------------------|
| अयं राजा हि | “ இக்க மன்னரோ | अमित्रप्रतिमैः | அக்தருக்களோ ஆகி |
| प्रकृत्या तीक्ष्णः | பிறையில் கொடியவர் ; | मित्रैः | நிகலோகிய [ன்ற |
| असर्माक्ष्यकारी | முன்யோசியாத தடு க்காய்செய்கிறவர் ; | भवद्भिः | உக்களால் |
| व्यसनाभिभूतः हि | செய்யத்தகாத காரிய ங்களைச் செய்கிறவரோ* | राक्षसनाशनार्थे | ஆக்கர்களின் ஆழி விந்காக |
| | | अन्वास्यते | உணரரிக்கப்படுகிறது. |

* [வைதல், குற்றத்திற்குரிய தண்டனை விதிக்கல், பொருளை நாசஞ்செய்தல், குடி, பரஸ்திரிகாரணம், காணலில்லாத காரத்தில் வேட்டையாடுதல், குது இவையகல் கொண்டவர்.]

अनन्तभोगेन सहस्रमूर्धा नागेन भीमेन महाबलेन ।
बलात्परिक्षिप्तमिमं भवन्तो राजानमुत्क्षिप्य विमोचयन्तु ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|----------------|-----------------------|
| अनन्तभोगेन | " பெரும் உடல் படை க்கப்பெற்றதாம் | परिक्षिप्तं | சுற்றிக்கொள்ளப்பட்ட |
| सहस्रमूर्धा | ஆயிரம் தலைகளைப் படையதாம் | इमं | இந்த [டிருக்கும்] |
| भीमेन | கொடியதாம் | राजानं | மன்னரை |
| महाबलेन | சுடும்பிஷ்டமுடையது | भवन्तः | நீங்கள் |
| नागेन | பாம்பால் [மான்] | बलात् उक्षिप्य | பலாத்கரித்து தூக்கி |
| | | विमोचयन्तु | விடுவிக்கக்கடவீர்கள். |

यावद्धि केशग्रहणात्सुहृद्भिः समेत्य सर्वैः परिपूर्णकामैः ।

निगृह्य राजा परिरक्षितव्यो भूतैर्यथा भीमबलैर्गृहीतः ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------------|---|-------------------|---|
| परिपूर्णकामैः | { வேண்டிய அளவுகள் லாம் வேண்டியபடி பெற்ற | केशग्रहणात् यावत् | குடுமியில் பிடித்திரு ப்பதா லுமென்றாலும் |
| सुहृद्भिः | நண்பர்களாகிய | यथा | எப்படியோ அப்படி |
| सर्वैः | எல்லோராலும் | समेत्य | ஒன்றுசேர்ந்து [யே] |
| भीमबलैः | கொடிய வலியை | राजा | மன்னர் |
| भूतैः | பேய்களால் [கொண்ட] | निगृह्य हि | பலாத்கரித்தும் |
| गृहीतः | பிடிக்கப்பட்டவனெனவன் | परिरक्षितव्यः | ரகலிக்கப்படவேண்டி யவர். |

सुवारिणा राघवसागरेण प्रच्छाद्यमानस्तरसा भवद्भिः ।

युक्तस्त्वयं तारयितुं समेत्य काकुत्स्थपातालमुखे पतन्सः ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------------------|------------|-------------------------------|
| सुवारिणा | " அளவுகடந்த இலமு டைய | सः | அந்த |
| राघवसागरेण | ராமராகிய சமுத்திர த்தினால் | अपं | இவர் |
| प्रच्छाद्यमानः | மறைக்கப்பட்டு | भवद्भिः तु | உங்களாலேயே |
| काकुत्स्थपातालमुखे | ராமராகிற வடவாக்கி னியில் | समेत्य | ஒன்றுசேர்ந்து |
| पतन्सः | விழுந்துக்கொண்டிரு க்கும் | तरसा | பலாத்காரமாய் |
| | | तारयितुं | ஆபத்தினின்றும் தப்பு விக்க |
| | | युक्तः | ஏற்றவர். |

इदं पुरस्यास्य सराक्षसस्य राज्ञश्च पथ्यं समुहजनस्य ।

सम्यग्धि वाक्यं स्वमतं ब्रवीमि नरेन्द्रपुत्राय ददातु मैथिलीम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-----------------|---|
| सराक्षसस्य | " அரக்கர்களோடு | नरेन्द्रपुत्राय | சக்கிரவர் திருமார |
| अस्य | அந்த [சுடிய] | | ருக்கு |
| पुरस्य | நகரத்திற்கும் | ददातु | அவர் திருப்பிக்கொடு த்துவிட்டும்என்கிற |
| समुहजनस्य | நண்பர்களோடுகூடிய | | |
| राज्ञः च | மன்னருக்கும் | इदं वाक्यं | இந்த வாய்மையினை |
| पथ्यं | நன்மை பயக்கிற தாகிற | स्वमतं | என் மனத்திற்கிணைந் |
| मैथिलीं | மையிலியாரை | सम्यक् हि | ஒளியாமலே [தென |
| | | ब्रवीमि | சொல்லுகிறேன். |

परस्य वीर्यं स्ववलं च बुद्ध्या स्थानं क्षयं चैव तथैव वृद्धिम् ।

तथा स्वपक्षेऽप्यनुस्य बुद्ध्या वदेत्क्षयं स्वामिहितं च मन्त्री ॥ २२ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|------------------|
| மணீ | "ஓர் மகத் தீரீயென்ப | தயா | அவ்வண்ணமே |
| परस्य | சுக்கு வினுவைய [மன் | स्वपक्षे अपि | தன்னிடத்திலும் |
| वीर्यं | சத்தியையும் | बुद्ध्या | நுண்ணறிவுகொண்டு |
| स्ववलं च | தனது சத்தியையும் | अनुस्य | ஆராய்க்கதறிந்து, |
| बुद्ध्या | ஆராய்க்கதறிந்து, | | { |
| तथा एव | அப்படியே | स्वामिहितं | |
| स्थानं | உத்தேசத்தையும் | | மை பயக்கத்தக்க |
| क्षयं | பாக்கக்குறையையும் | श्रमं च एव | தையும் |
| वृद्धिं च | தெய்வபலத்தையும் | वदेत् | யுத்தமானதையுமே |
| | | | சொல்லவேண்டும்." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे चतुर्दशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15144



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 469

पञ्चदशः सर्गः—பதினைந்தாவது ஸர்க்கம். 1, 29 ॥

इन्द्रजिह्विभीषणविवादः—இந்திரஜித்திற்கும் விசீஷணனுக்கும் நடந்த விவாதம்.

बृहस्पतेस्तुल्यमतेर्वचस्तन्निशम्य यत्नेन विभीषणस्य ।

ततो महात्मा वचनं वभाषे तत्रेन्द्रजिह्वैर्कृतयोधमुख्यः ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|-----------|-----------------|
| नैर्ऋतयोधमुख्यः | ராசூதையுட்பார்ளிர் | विभीषणस्य | விசீஷணரது |
| | களில் முக்யனுன | तत् | அந்த |
| महात्मा | அளவில்லா ஆற்றலு | वचः | சொல்லை |
| | டைய | यत्नेन | தெஞ்சும் பதைக்க |
| इन्द्रजिह्व | இந்திரஜித்த | निशम्य | கேட்டு |
| तल | அப்பொழுது | ततः | அதன்மேல் |
| बृहस्पतेः | பிருகஸ்பதிக்கு | वचनं | ஒரு மொழியை |
| तुल्यमतेः | ஒப்பான புத்தியை | वभाषे | பின்வருமாறு |
| | யடைய | | மொழிந்தான் : |

किं नाम ते तात कनिष्ठवाक्यमनर्थकं चैव सुभीतवच्च ।

अस्मिन्कुले योऽपि भवेन्न जातः सोऽपीदृशं नैव वदेन्न कुर्यात् ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|---------------------|
| तात | "அப்பா! | यः | எவனேனுமொருவன் |
| कनिष्ठवाक्यं | உமது கடைசித்தம்பி | जातः न | பிறவாதவனாக |
| | யின் உபதேசமானது | भवेन् अपि | இருப்பினும் |
| अनर्थकं च | நன்மை பயக்காததாய் | सः अपि | அவனும் |
| सुभीतवच्चः | பயக்கொள்ளித்தனத் | ईदृशं | இப்படிப்பட்டதை |
| | தைக் காட்டுகின்றதா | वदेत् न एव | சொல்லவும் |
| ते एव | தேவரீருக்கே [யும் | | மாட்டான் ; |
| किं नाम | எவ்வளவு இழிவை | न कुर्यात् | அனுஷ்டிக்கவும் மாட் |
| अस्मिन् | இந்த [விளைவிக்கும்! | | டான். |
| कुले | குலத்தில் | | |

सत्त्वेन वीर्येण पराक्रमेण शौर्येण धैर्येण च तेजसा च ।

एकः कुलेऽस्मिन्पुरुषो विमुक्तो विभीषणस्तात कनिष्ठ एषः

॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|---|----------|---|
| तात | "அப்பா! | तेजसा च | } அவமானத்தை பொறுக்காது மேல்கீழுந்து தாக்கும் தன்மை யாலும் |
| अस्मिन् | இந்த | विमुक्तः | |
| कुले | குலத்தில் | पुरुषः | புருஷர் |
| सत्त्वेन | பிறவிக்குணத்தாலும் | एषः | இந்த |
| वीर्येण | பெருமையாலும் | कनिष्ठः | கடைசித்தம்பியாகிய |
| पराक्रमेण | ஆண்மையாலும் | विभीषणः | விபிஷணர் |
| शौर्येण | ஆற்றலாலும் | एकः च | ஒருவர்தான். |
| धैर्येण | } ஆபத்தில் மனதைச் சிதறவிடா திருக்கும் தன்மையாலும் | | |

किं नाम तौ राक्षस राजपुत्रावस्माकमेकेन हि राक्षसेन ।

सुभाकृतेनापि मत्तौ निहन्तुं शक्यौ कुतो भीषयसे स भीरो

॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------------|-------------------|
| भीरो | "பயக்காளியாகிய | सुभाकृतेन | மகா அன்பனாகிய |
| राक्षस | விபிஷணரே! | राक्षसेन एकेन अपि | அரக்கனொருவனாலே |
| मत्तौ | உம்மால் புகழ்ந்து | निहन्तुं | கொல்வதற்கு [யே |
| | கூறப்பட்ட | शक्यौ | சாத்தியமானவர்கள். |
| तौ | அவ்விரு | हि | ஆன்படியால் |
| राजपुत्रौ | ராஜபுத்திரர்கள் | कुतः | எக்காரணத்தைக் |
| किं नाम | எம்மாத்திரம்? | | கொண்டு |
| वस्माकं | எங்களில் | भीषयसे स | பயமுறுத்தினிடவர்? |

त्रिलोकनाथो ननु देवराजः शक्रो मया भूमितले निविष्टः ।

भयार्दिताश्चापि दिशः प्रपन्नाः सर्वे तथा देवगणाः समघाः

॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|---------------------|
| मया | "என்னால் | सर्वे | எல்லோரும் |
| त्रिलोकनाथः | திரிலோகநாதனும் | समघाः | ஒன்றுகூடி |
| देवराजः | தேவராஜனுமாகிய | भयार्दिताः | பயத்தால் நடுக்கமுற் |
| शक्रः | இந்திரன் | | றவர்களாய் |
| भूमितले | மரவிடஉலகில் | दिशः च | எல்லா திக்குகளிலும் |
| निविष्टः | அடக்கிக்கொண்டுவந் | प्रपन्नाः | ஹடத்தலைப்பட்ட |
| | து சேர்க்கப்பட்டான். | | டார்கள். |
| तथा | அப்படியே | ननु अपि | இது இல்லையா என்ன |
| देवगणाः | தேவகணங்கள் | | சொல்லுமோ |

ऐरावतो विस्वरमुचदन्स निपातितो भूमितले मया तु ।

विकृष्य दन्तौ तु मया प्रसह्य विवासिता देवगणाः समग्राः

॥ ६ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|-----------|---------------------|
| सः | "அந்த | निपातितः | விழுத்தப்பட்டது. |
| ऐरावतः | ஐராவதம் | तथा | அப்படியே |
| दन्तौ | இருதந்தக்கனிணம் | देवगणाः | தேவகணங்கள் |
| विकृष्य | பிடித்திழுத்தது | समग्राः | எல்லாமூலும் |
| मया तु | என்னாலேயே | मया तु | என்னாலேயே |
| भूमितले | பூமிகடத்தில் | प्रसह्य | மெற்கொள்ளப்பட்டு |
| विस्वरं | விஸ்வரமாய் | विवासिताः | தடுக்கச்செய்யப்பட்ட |
| उचदन् | கூச்சலிடுவதாய் | | டனர். |

सोऽहं सुराणामपि दर्पहन्ता दैत्योत्तमानामपि शोकदाता ।

कथं नरेन्द्रात्मजयोर्न शक्तो मनुष्ययोः प्राकृतयोः सुवीर्यः

॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------------|------------------|---------------------------------|
| सुराणां अपि | "தேவர்களுடையவரும் | सः | அந்த |
| दर्पहन्ता | கெடுக்கையொழித்த | अहं | நான் |
| | வணும் | प्राकृतयोः | அற்பர்களான |
| दैत्योत्तमानां अपि | தைத்தியாத்தமர்களுக்கும் | मनुष्ययोः | மானிடரினவர்களைய |
| शोकदाता | ஏக்கமுண்டாக்கியவனும் | नरेन्द्रात्मजयोः | மானிடமன்னனின் |
| सुवीर्यः | வீர்யவனென அறிகின்றதிபெற்றவனுமான | कथं | எவ்வாறு |
| | | शक्तो न | உல்லாசமாக உடையவனாக மாட்டேன் ? " |

अथेन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महौजसस्तद्वचनं निशम्य ।

ततो महार्थं वचनं वभाषे विभीषणः शस्त्रभृतां वरिष्ठः

॥ ८ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|---------|-------------------|
| शस्त्रभृतां | ஆயுதமேந்தியவர்களுக்கும் | तद्वचनं | அம்மொழியை |
| वरिष्ठः | உத்தமரான | निशम्य | கேட்டு |
| विभीषणः | விபிஷணர் | ततः | அப்பொழுது |
| महौजसः | அனலில்லா ஆற்றலுடையவனாய் | अथ | பின்வரும் |
| दुरासदस्य | ஒருவராலும் தகைய முடியாதவனாய் | महार्थं | குறையற்ற நன்மை |
| इन्द्रकल्पस्य | இந்திரனுக்குள் மானவையையளித்தவல்ல | वचनं | நினைதாபுகைக்கதை |
| | மாகிய அவனுடைய | वभाषे | அருளிச்செய்தார் : |

न तात मन्त्रे तव निश्चयोऽस्ति बालस्त्वमद्याप्यविपक्वबुद्धिः ।

तस्माच्चया ह्यात्मविनाशनाय वचोऽर्थहीनं बहु विप्रलसम्

॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|----------------|---------------------------------|
| तात | " குழந்தாய் ! | अविपक्वबुद्धिः | தெனியா அறிவுடை |
| मन्त्रे | ஆலோசனை விஷயத் தில் | तस्मात् हि | அதனால், தான் [யவன். |
| तव | உனக்கு | त्वया | உன்னால் |
| निश्चयः | ஆராய்ந்து பகுத்தறி வென்பது | आत्मविनाशनाय | தனது அழிவு காரணமாய் |
| अस्ति न | இல்லை, | अर्थहीनं | அர்த்தமில்லாத |
| त्वं | நீ | वचः | சொல் |
| बालः | குழந்தை. | बहु | பலவாறு |
| अद्य अपि | இன்னும் | विप्रलसम् | வாயில் வந்தபடி பேச ப்பட்டது. |

पुत्रप्रवादेन तु रावणस्य त्वमिन्द्रजिन्मित्रमुखोऽसि शत्रुः ।

यस्येदं राघवतो विनाशं निश्चय्य मोहादनुमन्यसे त्वम्

॥ १० ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|---------------|--------------------------------------|
| इन्द्रजित् | " இந்திரஜித்தே ! | अनुमन्यसे | ஆனாய திக்கின்றனை. |
| राघवतो | ஸ்ரீராமரிடமிருந்து | तु | அப்படி கிருப்பதால் |
| यस्य | எந்த இவருக்கு | पुत्रप्रवादेन | புத்திரனெனும் வியா ஜக்தால் |
| ईदं | இப்படிப்பட்டதாகிய | मित्रमुखः | மித்திரனென வெளித் தொற்றமுடையவனாய் |
| विनाशं | அழிவென்பதை | त्वं | நீ |
| निश्चय्य | கேட்டு | रावणस्य | ராவணனுக்கு |
| मोहात् | (கிஷய நுட்பக்களையு ணராத)பேதமையால் | शत्रुः | சத்ருவாய் |
| त्वं | நீ | असि | எற்பட்டிருக்கின்றனை. |

त्वमेव वध्यश्च सुदुर्मतिश्च स चापि वध्यो य इहानयत्वाम् ।

बालं दृढं साहसिकं च योऽद्य प्रावेश्यन्मन्त्रकृतां समीपम्

॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|---------------|--|
| सुदुर्मतिः | மிக்க துன்மதிமுடைய | मन्त्रकृतां | மந்திரிகளின் |
| त्वं एव | நீதான் | समीपं | ஸதஸ்ஸில் |
| इह | இப்பொழுது | आनयन् | வரவழைத்தாரோ |
| वध्यः च | கிதிப்பயனை அனுப வித்தே திருவாய். | यः | எவர் |
| यः | எவர் | प्रावेश्यत् च | கூடவும் வைத்துக் கொண்டாரோ |
| बालं | சிறுவனும் | सः अपि | அவரும் |
| साहसिकं | துணிவுள்ளவனும் | अद्य | இப்பொழுது |
| दृढं | கொடியனுமாகிய | वध्यः च | { மாணமாயிற் கிதிப்ப யனைக் கண்டே தீர்ப் போகினார். |
| त्वां च | உன்னையும் | | |

मूढः भगवतोऽविनयोपपन्नस्तीक्ष्णस्वभावोऽल्पमतिर्दुरात्मा ।
 मूर्खस्त्वमत्यन्तसुदुर्मतिश्च त्वमिन्द्रजिह्वाकृतया ब्रवीषि ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------------|--|------------------------------------|--|
| மூட: | " ॥ தர்மவா ம்மைப ஆ நியா தவன் | दुरात्मा | மகா துஷ்டன். |
| भगवतः | { தன்னை இயவர் தது ஏன் றுண்டென ஆ நியா தவன். | मूर्खः अत्यन्त- सुदुर्मतिः च | விலேக ழுன்பன். எப்பொழுதும் தீக்கி றெயே புத்தியைச் செயுத்துபவன். |
| अविनयोपपन्नः | பெரியோர்களுக்கடங் கா சிகாமணி. | इन्द्रजि- ह्वं | இந்திரஜித்தே! சி |
| तीक्ष्णस्वभावः | கொடிய செயலுற்ற வன். | जिह्वाकृत- या | விஷயம் ஆநியாம யால் |
| अल्पमतिः | ஆற்பபுத்தியுடைய வன். | ब्रवीषि | தெரிந்ததுபோல் பிதற்றுசூழும். |

को ब्रह्मदण्डप्रतिमप्रकाशानर्चिष्मतः कालनिकाशरूपान् ।
 सहैत वाणान् यमदण्डकल्पान्समक्षमुक्तान् युधि रावणेण ॥ १३ ॥

| | | | |
|--------------------------------|--|---------------|-------------------------------------|
| ब्रह्मदण्डप्रतिम- प्रकाशान् | { " பிரம்மதண்டத்திற் கொப்பான கார்தியு டை உணங்களும், ஆவாலைப்பெற்றவை களும், எமனை நிகர்த்த உருவ முடையவைகளும், யமதண்டத்தை நிகர த்தவைகளுமான | वाणान् | பாணங்களை |
| अर्चिष्मतः | | युधि | போதில் |
| कालनिकाशरूपान् | | रावणेण | ஸ்ரீராமரால் |
| यमदण्डकल्पान् | | समक्षमुक्तान् | கட்புகளால் விடுக்கப் பட்டவைகளாய் |
| | | कः | எவன் |
| | | सहैत | சகிப்பாள் ? |

धनानि रत्नानि विभूषणानि वासांसि दिव्यानि मणीश्च चित्रान् ।
 सीतां च रामाय निवेद्य देवीं वसेम राजन्निह वीतशोकाः ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------|---|-----------|-----------------------------|
| राजान् | " மன்னவரே! | दिव्यानि | சீதந்த |
| रामाय | ஸ்ரீராமருக்கு | विभूषणानि | ஆபரணங்களையும் |
| सीतां | சீதா | वासांसि च | ஆடைகளையும் |
| देवीं च | தேவியாரையும் | इह | இப்பொழுதே |
| रत्नानि | தம்மால் விடுகநாய்க் கொண்டாடப்பட்ட தனங்களையும் | निवेद्य | சமர்ப்பித்தவிட்டு |
| धनानि | | वीतशोकाः | மனக்கவலையொழிந் தவர்களாய் |
| चित्रान् | உத்திருக்கட்டமான | वसेम | உ.இருடன் வாழ்வோ மாக. |
| मणीन् | தனங்களையும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
 युद्धकाण्डे पञ्चदशः सर्गः ॥



षोडशः सर्गः—பதினாறுவது ஸர்க்கம். || 16 ||

रावणेन विभीषणनिन्दनम्—ராவணன் விபீஷணனை நிந்திப்பது.

सुनिविष्टं हितं वाक्यमुक्तवन्तं विभीषणम् । अब्रवीत्परुषं वाक्यं रावणः कालचोदितः ॥

| | | | |
|----------------------|---|----------|--------------------|
| காலச்சோதित: | யாமனூல் ஆழைக்காய் | விபீஷணம் | விபீஷணரைப் |
| रावणः | ராவணன் [பெற்ற | परुषं | பார்ந்து |
| हितं | நன்மை பயப்பதாகிய | वाक्यं | கர்ணகரோமாயிருக்கிற |
| वाक्यं | ஆலோசனையை | अब्रवीत् | பதிலை |
| सुनिविष्टं उक्तवन्तं | மெஞ்சில் நன்கு பதி யும்படியாய் சொல்லிய | | பின்வருமாறு |
| | | | மொழிந்தான் : |

वसेत्सह सपत्नेन क्रुद्धेनाशीविषेण वा । न तु मित्रप्रवादेन संवसेच्छत्रुसेविना ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------------|---|
| सपत्नेन | “சத்ருவோடு என்றூ | मित्रप्रवादेन | மித்திரனாய் விளங்கிக் |
| क्रुद्धेन | கிளங்கொண்ட [ஆம் | | கொண்டு |
| आशीविषेण वा | பாம்போடு என்றூ ஆம் | शत्रुसेविना तु | { சத்ருவினிடத்தில் விச்வாஸம் உடைய வனோடு மட்டும் |
| सह | கூடி | संवसेत् न | வசிக்கவே கூடாது. |
| वसेत् | வசிக்கலாம். | | |

जानामि शीलं ज्ञातीनां सर्वलोकेषु राक्षस । हृष्यन्ति व्यसनेष्वेते ज्ञातीनां ज्ञातयः सदा ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-------------|--------------------------------|
| ‘राक्षस | “அரக்கா! | एते ज्ञातयः | இந்த ஞாதிக்கள் |
| सर्वलोकेषु | எல்லா உலகங்களிலும் | ज्ञातीनां | (சமது) ஞாதிக்களின் |
| ज्ञातीनां | ஞாதிக்களினுடைய | व्यसनेषु | இக்கட்டுகளில் |
| शीलं | ஸ்பாவத்தை | सदा | எப்பொழுதும் |
| जानामि | நான் நன்றாக அறி வேன். | हृष्यन्ति | உள்ளம் பூசிக்கின்ற ஞர் கள். |

प्रधानं साधनं वैद्यं धर्मशीलं च राक्षस । ज्ञातयो ह्यवमन्यन्ते शूरं परिभवन्ति च ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------|---|-------------|--|
| राक्षस | “அரக்கா! | धर्मशीलं | வழுவாத அறநெறி |
| प्रधानं | குலத்தில் இயேஷ்ட ஆம் | शूरं च | யுற்றவனும் |
| साधनं | காரியக்களை குறைபி ன்றிமுடிக்கின்றவனும் | ज्ञातयः हि | ஞானமாயிய ஒருவனை |
| वैद्यं | கற்றறிந்தவனும் | अवमन्यन्ते | ஞாதிக்கள் மாத்கிரம் |
| | | परिभवन्ति च | அவமதிக்கின் ஞர்கள். ஆபந்தையும் விடாவி க்கின் ஞர்கள். |

नित्यमन्योन्वसंहृष्टा व्यसनेष्वாதतायिनः । प्रच्छन्नहृदया घोरा ज्ञातयस्तु भयावहाः ॥५॥

| | | | |
|-------------------|--|-----------------|----------------|
| ज्ञातयः | “ ஞாதிக்கள் | प्रच्छन्नहृदयाः | கபடமன துடையவர் |
| नित्यं | எக்காலத்திலும் | | களாய் |
| अन्योन्वसंहृष्टाः | கூடிக்குலாவுபவர்க | घोराः | கொடிய |
| व्यसनेषु | ஆபந்தங்களில் [எரய் | भयावहाः तु | தரோகம் பண்ணு |
| आततायिनः | { ஒழிக்க திட்டிய கத்தி யுடன் இருக்கின்ற வர்களாய் | | பவர்களே. |

श्रूयन्ते हस्तिभिर्गीताः श्लोकाः पद्मवने क्वचित् । पाशहस्तान्द्रष्ट्वा शृणु तान्नादतो मम॥

| | | | |
|---------------------|--|-----------|-------------------------|
| क्वचित् | “ ஒருகாலத்தில் | हस्तिभिः | யானைகளால் |
| पद्मवने | பத்மவனமென்ற | गीताः | பாடப்பட்டன என்று |
| नरान् | மனிதர்களை [காட்டில்] | श्रूयन्ते | வழங்கப்படுகின்றன. |
| पाशहस्तान् दृष्ट्वा | கையுக்கையிறுபாக இருப்பவர்களாகப் பார்த்து | तान् | அவைகளை |
| श्लोकाः | பின்னரும் கலைகம் கள் | गदतः | உரைக்கும் |
| | | मम | எனக்கு |
| | | शृणु | செவிகொடுத்துக் கேள். |

नाग्निर्नान्यानि शस्त्राणि न नः पाशा भयावहाः । घोराः स्वार्थप्रयुक्तास्तु ज्ञातव्यो नो भयावहाः॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|-------------------|--|
| नः | “ நமக்கு | ज्ञातव्यः तु | ஞாநிகள்தான் |
| पाशाः | பாசங்கள் | स्वार्थप्रयुक्ताः | { தங்களது நன்மையில் மாத்திரம் சடுபட்ட வர்களாய் |
| भयावहाः न | ஆபத்தை விளைவிப்ப வைகள் அல்ல. | घोराः | கொடியவர்களாய் |
| अग्निः | அக்னியும் | नः | நமக்கு |
| न | இல்லை. | भयावहाः | ஆபத்தை விளைவிக்க கின்றார்கள். |
| अन्यानि शस्त्राणि | வேறு ஆயுதங்களும் | | |
| न | இல்லை. | | |

उपायमेते वक्ष्यन्ति ग्रहणे नात्र संशयः । कृत्स्नाद्भयाद्ज्ञातिभयं सुकष्टं विदितं च नः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-----------|------------------------------|
| एते | “ இவர்கள் | भयात् | ஆபத்தினிட |
| ग्रहणे | பிடிக்கும் விஷயத்தில் | ज्ञातिभयं | ஞாநிகளால் விளையும் தீம்கு |
| उपायं | உபாயத்தை | सुकष्टं | பேதமுடையமானது. |
| वक्ष्यन्ति | சொல்லுவார்கள். | नः | நமக்கு |
| अस | இதில் | विदितं च | துணை தெரிந்த விஷயமே. |
| संशयः न | ஐயமில்லை. | | |
| कृत्स्नात् | எல்லா | | |

विद्यते गोषु संपन्नं विद्यते ब्राह्मणे दमः । विद्यते स्त्रीषु चापत्यं विद्यते ज्ञातितो भयम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|----------|---------------------------------|
| गोषु | “ பசுக்களிடத்தில் | स्त्रीषु | பெண்களிடத்தில் |
| सम्पन्नं | சர்வ பாக்யமும் | चापत्यं | கா.பியில்லாததில் அவசரமென்பது |
| विद्यते | விளங்குகிறது. | विद्यते | விளங்குகிறது. |
| ब्राह्मणे | பிராமணர்களிடத் தில் | ज्ञातितः | ஞாநிகளிடமிருந்து |
| दमः | இந்திரியவிக்கரகம் | भयं | ஆபத்து |
| विद्यते | விளங்குகிறது. | विद्यते | ஏற்படுகிறது. |

ततो नेष्टमिदं सौम्य यदहं लोकसकृतः । ऐश्वर्यमभिजातश्च रिपूणां मूर्धन्यवस्थितः ॥

| | | | |
|------------|--|-----------------|----------------------------------|
| सौम्य | " அப்பா ! | रिपूणां | சத்துருக்களின் |
| अहं | நான் | मूर्धि भवस्थितः | கொட்டபடக்கிவைத் திருக்கிறேன். |
| लोकसकृतः | { உலகத்தாரால் கௌ ரணிக்கப்பட்டிருக்கி றேன். | यत् ततः | என்கிறபடியால், தான் |
| ऐश्वर्यं च | | अभिजातः | इदं |
| | ஸகல சம்பந்தையும் | इदं न | உனக்குப் பிடித்த தாய் இல்லை. |
| | பெற்று விளங்கு கிறேன். | | |

यथा पुष्करपर्णेषु पतितास्तोयविन्दवः । न श्लेषपुपगच्छन्ति तथाऽनार्येषु सौहृदम् ॥११॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|--------------|
| पुष्करपर्णेषु | " தாமரை யிலைகளில் | उपगच्छन्ति न | அடைவதில்லை. |
| पतिताः | விழுந்த | यथा तथा | அப்படித்தான் |
| तोयविन्दवः | நீர் த்துளிகள் | अनार्येषु | அற்பர்களிடம் |
| श्लेषं | ஒட்டுதலை | सौहृदम् | அன்பென்பது. |

यथा मधुकरस्तर्पाद्रसं विन्दन्न विद्यते । तथा त्वमपि तत्रैव तथाऽनार्येषु सौहृदम् ॥१२॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|--------------------|
| मधुकरः | " வண்டு | यथा तथा | அம்மா திரிதான் |
| तर्पात् | ஆசைபால் | त्वं अपि | நீயுமிருக்கின்றனை. |
| रसं | புஷ்பாஸத்தை | अनार्येषु | அற்பர்களிடத்தில் |
| विन्दन् | குடித்துவிட்டு | सौहृदं एव | அன்பென்பதும் |
| तत्र | அங்கிடத்தில் | तथा | அப்படித்தான். |
| विद्यते न | இருக்கிறதில்லை. | | |

यथा पूर्वं गजः स्नात्वा गृह्य हस्तेन वै रजः । दूषयत्यात्मनो देहं तथाऽनार्येषु सौहृदम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|---------------------------------|
| यथा | " எப்படி | आसनः | தனது |
| गजः | ஓர் யானை | देहं | உடலில் |
| पूर्वं | முதலில் | दूषयति | போட்டுக்கொடுத்துக் கொள்கிறதோ |
| स्नात्वा | முழுவிட்டு | तथा | அப்படித்தான் |
| हस्तेन वै | அம்பிக்கையாலேயே | अनार्येषु | அற்பர்களிடத்தில் |
| रजः | மண்ணை | सौहृदम् | அன்பு. |
| गृह्य | வாசி | | |

यथा शरदि मेघानां सिञ्चतामपि गर्जताम् । न भवत्यम्बुसंकेदस्तथाऽनार्येषु सौहृदम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| शरदि | " சாந்காலத்தில் | अम्बुसंकेदः | (பூமியை) மழையால் நனைத்தலென்பது |
| सिञ्चतां | நீருண்டு | न भवति | உண்டாகமாட்டாதோ |
| गर्जतां अपि | பெரும் கர்ஜனைமட் டும் செய்யும் | तथा | அப்படித்தான் |
| मेघानां | மேகங்களுக்கு | अनार्येषु | அற்பர்களிடத்தில் |
| यथा | எப்படி | सौहृदम् | அன்பு. |

अन्यस्त्वेवंविधं वृथाद्वाक्यमेतन्निशाचर । अस्मिन्मुहूर्ते न भवेत्वां तु शिवकुलपांसनम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|----------------------|
| एतत् | “ இந்த | न भवेत् | அகவன் (உயிருடன்) |
| एवंविधं | இப்படிப்பட்டதாகிய | निशाचर | அரக்க! [இரான். |
| वाक्यं | உபநிதரத்தை | कुलपांसनं | குலத்தைதக்கெடுக்கும் |
| अन्यः तु | வேறொருவன் மட்டும் | | (கொடாசலிக்கரம்பாகிய) |
| वृथात् | சொல்வானாகில் | त्वां तु | உன்னைப்போவெனில் |
| अस्मिन् | இந்த | शिव् | கண்ணெடுக்கும் |
| मुहूर्ते | நிமிஷத்தில் | | பாரேன்.” |

इत्युक्तः परुषं वाक्यं न्यायवादी विभीषणः । उत्पपात गदापाणिश्वतुभिः सह राक्षसैः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|----------|----------------------|
| न्यायवादी | சாஜாக்கத்தர்மகெறி | गदापाणिः | கதைகைய கையிலேந்தி |
| | கையே உரைசெய்யும் | | யவராக |
| विभीषणः | விபிஷணர் | श्वतुभिः | காண்கு |
| इति | இதற்கண்ட | राक्षसैः | அரக்கர்களோடு |
| परुषं | நெஞ்சகையறுக்கும் | सह | கூட |
| वाक्यं | சொல்லை | उत्पपात | பூமியிலிருந்து உயரக் |
| उक्तः | கேட்டவராய் | | கிணம்பிணர். |

अश्ववीच तदा वाक्यं जातक्रोधो विभीषणः । अन्तरिक्षगतः श्रीमान्भ्रातरं राक्षसाधिपम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | अन्तरिक्षगतः | ஆகாசத்தைதயடைந்த |
| श्रीमान् | பிரசித்திபெற்றவராய் | भ्रातरं | தமயனாகிய [வராகி |
| विभीषणः | விபிஷணர் [கிய | राक्षसाधिपं | ராட்சஸமன்னனைப் |
| जातक्रोधः | கோபம் மூட்டப்பெற்ற | वाक्यं | ஒருசொல்லை[பார்ந்து |
| | றவராய் | अश्ववीच | பின்வருமாறு மொழி |
| व | அதனால் | | ந்தார்: |

स त्वं भ्राताऽसि मे राजन्ब्रूहि मां यद्यदिच्छसि ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|--------|-------------------|
| राजन् | “ அரசே! | यत् | ஆனபடியால் |
| सः त्वं | அந்த தேவரீர் | मां | அடியேனைப்பார்த்து |
| मे | அடியேனுக்கு | यत् | எதை |
| भ्राता | தமயனாக | इच्छसि | இஷ்டப்படுகிறீரோ |
| असि | இருக்கின் தீர். | ब्रूहि | (அதை) சொல்லணம். |

ज्यैष्ठो मान्यः पितृसमो न च धर्मपथे स्थितः । इदं तु परुषं वाक्यं न क्षमाम्यनृतं तव ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|---------------------|
| ज्यैष्ठः | “ மூத்தவர் | तु | அப்படியிருப்பதால் |
| पितृसमः | தந்தைக்குச்சமான | तव | தேவரீராக |
| | ராய் | अनृतं | தர்மத்திற்கு மாறாதி |
| मान्यः | கொளரகிக்கப்படவே | | குக்கிறதும் |
| च | ஆனாலோ [ண்டியவர். | परुषं | நெஞ்சகையறுக்கிறது |
| धर्मपथे | சான்றார்க்கத்தில் | इदं | இந்த [மாகிய |
| स्थितः न | நிலைநிற்கா இருக்கின் | वाक्यं | சொல்லுக்கு |
| | தீர். | क्षमामि न | உடன்படமுடியாதிரு |
| | | | க்கின்றேன். |

सुनीतं हितकामेन वाक्यमुक्तं दशानन । न गृह्णन्त्यकुतात्मानः कालस्य वशमागताः ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-------------|------------------|
| दशानन | "தசமுதரே! | वाक्यं | ஆலோசனையை |
| हितकामेन | சேஷமொன்றையே | कालस्य | யமனது |
| | நாடியவனால் | वशं | வசையில் |
| वक्तं | விண்ணப்பம் செய்யப் | आगताः | செக்கிக்கொண்ட |
| | பட்ட | अकुतात्मानः | மன அடக்கமில்லாத |
| | | | வர்கள் |
| सुनीतं | { முற்றிலும் தர்மமத் | गृह्णन्ति न | எற்றுக்கொள்ளமாட் |
| | தேரட்டு இயந்ததாயி | | டார்கள். |
| | ருக்கிற | | |

सुलभाः पुरुषा राजन्सततं प्रियवादिनः । अप्रियस्य तु पथस्य वक्त्रा श्रोता च दुर्लभः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|------------------|
| राजन् | "அரசே! | पथस्य तु | நன்மை பயப்பதை |
| प्रियवादिनः | உள்ளங்கூறிக உரைக் | | மட்டும் |
| पुरुषाः | மரணிடர்கள் | वक्त्रा | சொல்லுகிறவன் |
| सततं | எப்பொழுதும் | दुर्लभः | கிடைப்பதரிது. |
| सुलभाः | ஏராளமாய்க் கிடைப் | श्रोता | { சொல்லப்பட்டதை |
| | பார்கள். | | எற்றுக்கொள்ளுகிற |
| | | च | வன் |
| अप्रियस्य | உள்ளத்திற்கினிமை | | அப்படியே கிடைப்ப |
| | வினைவிக்காததாயும் | | தரிது. |

बद्धं कालस्य पाशेन सर्वभूतापहारिणा । न नश्यन्तमुपेक्षेयं प्रदीप्तं शरणं यथा ॥ २२ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-------------|----------------------|
| कालस्य | "யமனது | प्रदीप्तं | தீப்பற்றியெரியும் |
| सर्वभूतापहारिणा | எல்லாப்பிராணிகளி | शरणं | விட்டை |
| | ன் உயிரை மரய்க்கும் | | { கவனியாதது எப்படியி |
| पाशेन | பாசத்தினால் | यथा | ருக்கமுடியாதே |
| बद्धं | கட்டுண்டு | | அப்படியே |
| नश्यन्तं | அழிய இருக்கிற | उपेक्षेयं न | என் கடமைகளைச் செ |
| | தேவரீரை | | ய்யாது நாளிரேன். |

दीसपावकसङ्काशैः शितैः काञ्चनभूषणैः । न त्वामिच्छाम्यहं द्रष्टुं रामेण निहतं शरैः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------|-------------------|
| दीसपावक-) | "கொழுந் துளிட்டு | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| सङ्काशैः) | நீயும் தீபோல் பிரகா | त्वां | தேவரீரை |
| | சிக்கிறவைகளும் | निहतं | கொல்லப்பட்டவராய் |
| शितैः | கரானவைகளும் | द्रष्टुं | (என் கடமைகளைச் |
| काञ्चनभूषणैः | பொண்ணுலகைகரிக்க | | செய்யாது) பார்க்க |
| | ப்பட்டவைகளுமான | | |
| शरैः | பாணங்களால் | अहं इच्छामि न | நான் துணியென். |

शूराश्च बलवन्तश्च कृतास्त्राश्च रणाजिरे । कालाभिपन्नाः सीदन्ति यथा बालुकसेतवः ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------|--------------------|
| रणाजिरे | "போர்க்களத்தில் | कृतास्त्राः च | ஆயுதப்பயிற்சிகலில் |
| बालुकसेतवः | மணலால் கட்டப்பட் | | புணர்களுமான |
| | ட அணிகள் | शूराः च | சூரர்களும் |
| यथा | போலவே | कालाभिपन्नाः | யமனுக்கு ஆப்பட்ட |
| | | | வர்களாய் |
| बलवन्तः च | பலவான்களும் | सीदन्ति | நாசமடைகின்றனர். |

तन्मर्षयतु यच्चोक्तं गुरुवाद्धितमिच्छता । आत्मानं सर्वथा रक्ष पुरीं चेमां सराक्षसाम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|-----------|---------------------|
| हितं इच्छता | " நன்னைப்படிய நாடிய | सर्वथा | எப்படியாவது |
| यत् | எது [என்னால் | सराक्षसां | சாசுதலர்கள் |
| उक्तं | சொல்லப்பட்டதோ | | உள்ளிட்ட |
| तत् च | அதெல்லா உற்றதையும் | इमां | இந்த |
| गुरुवात् | பெரியவராகையால் | पुरीं च | நகரையும் |
| मर्षयतु | தேவரீர் மன்னித்த ருளவேண்டும். | आत्मानं | தேவரீரையும் |
| | | रक्ष | (அழியாது) சகலியும். |

स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि सुखी भव मया विना ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------------|----------|------------------------------|
| गमिष्यामि | " நான் இதைவிட்டு போய்கிடுகிறேன். | मया विना | என்னை விட்டுப் பிரிந்து |
| ते | தேவரீருக்கு | सुखी | சுகந்தவற்ற வாழ்வற்ற வராய் |
| स्वस्ति | சேஷமமே | भव | ஆகுவிடாக. |
| अस्तु | இருக்கக்கூடவது. | | |

निवार्यमाणस्य मया हितैषिणा न रोचते ते वचनं निशाचर ।

परीतकाला हि गतायुषो नरा हितं न गृह्णन्ति सुहृद्भिरारितम् ॥ २७ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-------------|------------------------------|
| निशाचर | " திராசரரே] | गतायुषः | ஆயுள் முடிந்து |
| हितैषिणा | நன்னைப்படியநாடிய | परीतकालाः | யமனால் கட்டுண்டு |
| मया | என்னால் | नराः हि | மனிதர்களோ |
| निवार्यमाणस्य | தடுக்கப்பட்டவராகிய | सुहृद्भिः | நண்பர்களால் |
| ते | தேவரீருக்கு | ईरितं | உரை செய்வப்பட்ட |
| वचनं | என்சொல் | हितं | நலிதமான சொல்லை |
| न रोचते | பிரிக்கவில்லை | गृह्णन्ति न | எற்றக்கொள்ள மாட்டார்கள் " |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे षोडशः सर्गः ॥

अदितः श्लोकाः 15185



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 510

सप्तदशः सर्गः—பதினேழாவது ஸர்க்கம். ॥ १७ ॥

विभीषणद्वारागतिः—விப்பிஷண டரணுகதி.

इत्युत्वा परुषं वाक्यं रावणं रावणानुजः । आजगाम सुहृतेन यत्र रामः सलक्ष्मणः ॥१॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|-----------|---------------------------|
| रावणानुजः | ராவணன் தம்பி கிரி ஷணர் | उत्वा | சொல்லிகிட்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | सुहृतेन | ஒரு முகந்தகரால்த் |
| परुषं | (ராவணன் சொசிக்ரு) ஒவ்வாத | रामः | சீராமர் [திருஞர் |
| वाक्यं | சொல்லை | सलक्ष्मणः | நகத்தமணருடன் |
| रावणं | ராவணனைப் பார்த்து | यत्र | எங்கிருந்தாரோ |
| | | आजगाम | அங்கு வந்துசெர்க்கார். |

तं मेरुशिखराकारं दीप्तामिव शतहृदाम् । गगनस्थं महीस्थास्ते ददृशुर्वा नराधिपाः ॥ २ ॥

| | | | |
|---------------|---|------------|--------------------|
| ते | அந்த | दीपां | பளிச்சென மின்னும் |
| महीस्थाः | பூமியில் நிதிகின்ற | शतहृदां इव | மின்னல் போலவே |
| वानराधिपाः | வானரத்தலைவர்கள் | गगनस्थं | ஆகாசத்திலிருக்கும் |
| मेरुशिखराकारं | { மேருமலைச்சிகரம் போல் உருக்கொண் டவராய் | तं | அவரை |
| | | ददृशुः | கண்டார்கள். |

स हि मेघाचलप्रख्यो महेन्द्रसमविक्रमः । सर्वायुधधरो वीरो दिव्याभरणभूषितः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------------|--|----------------------|--|
| सः हि | அவரே | सर्वायुधधरः | எல்லா ஆயுதங்களை யும் தரித்து |
| मेघाचलप्रख्यः | மேகத்தையும் மலையை யும் நிகர்த்தவர். | दिव्याभरण- भूषितः | தீவ்யமான ஆபரணக் களையணிந்துகொ ண்டிருந்த |
| महेन्द्रसमविक्रमः | இத்திரை நிகர்த்த ஆண்மையுடையவர். | वीरः | ஞாய். |

ये चाप्यनुचरास्तस्य चत्वारो भीमविक्रमाः । तेऽपि सर्वायुधोपेता भूषणैश्चापि भूषिताः ॥

| | | | |
|---------|------------|---------------------------|---|
| तस्य | அவரது | सर्वायुधोपेताः च | எல்லா ஆயுதங்களை யும் தரித்து |
| अनुचराः | கட்டாளிகள் | भूषणैः अपि भूषिताः अपि | ஆபரணங்களாலும் அலங்கரிக்கப்பட்டவர் |
| चत्वारः | நால்வர்கள் | भीमविक्रमाः | களுமான மெச்சத்தக்க ஆண் மையுடையவர்கள். |
| ये च | எவர்களே | | |
| ते अपि | அவர்களும் | | |

तमात्मपञ्चमं दृष्ट्वा सुग्रीवो वानराधिपः । वानरैः सह दुर्धर्षश्चिन्तयामास बुद्धिमान् ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|------------|-----------------------------------|
| वानराधिपः | வானரமன்னனும் | सह | கூட |
| दुर्धर्षः | எகராலும் வெல்லமு டியாதவனும் | अत्मपञ्चमं | ஐவர்களில் ஒருவரை |
| बुद्धिमान् | புத்திரனும் ஆசிய | तं | அவரை [கிய |
| सुग्रीवः | சுகிரீவன் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| वानरैः | வானரர்களோடு | चिन्तयामास | தனக்குள்ளேயே ஆ லோசனை செய்தான். |

चिन्तयित्वा मुहूर्तं तु वानरांस्तानुवाच ह । हनुमत्प्रमुखान्सर्वानिदं वचनमुत्तमम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------|----------|--------------------------|
| मुहूर्तं तु | ஒரு முகூர்த்தகாலம் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| चिन्तयित्वा | ஆலோசனைசெய்து | इदं | மின்வரும் (கேரக்கி) |
| हनुमत्प्रमुखान् | ஹனுமாரைத் தலைமை யாய்க்கொண்ட | वचनं | சொல்லை |
| तान् | அந்த | उत्तमं ह | எதிலும் மேம்பட்ட தாய் |
| वानरान् | வானரர்கள் | उवाच | சொன்னான்: |

एष सर्वायुधोपेतधतुभिः सह राक्षसैः । राक्षसोऽभ्येति पश्यध्वमस्मान्हन्तुं न संशयः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|--------------------|
| एष: | " இந்த | अस्मान् | எம்மை |
| राक्षसः | ஆரக்கள் | हन्तुं | கொல்ல |
| सर्वायुधोपेतः | வேண்டிய ஆயுதம் | अभ्येति | வந்திருக்கிறான். |
| धतुभिः | காண்கு [தரித்தவராய் | संशयः न | நிதிஸ் ஐயமில்லை. |
| राक्षसैः | ஆரக்கர்களோடு | पश्यध्वम् | நீங்களும் கவணியுங் |
| सह | கூட | | கள். " |

सुर्गोवस्य वचः श्रुत्वा सर्वे ते वानरोत्तमाः । सालानुद्यम्य शैलान्श्च इदं वचनमब्रुवन् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|----------|------------------|
| ते | அந்த | सालान् | ஆச்சரமரக்களையும் |
| वानरोत्तमाः | வானரோத்தமர்கள் | शैलान् च | மலைகளையும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | उद्यम्य | வாயிலெடுத்திக்கொ |
| सुर्गोवस्य | சுக்ரீவனது | इदं | பின்வரும் [ண்டு |
| वचः | கொல்லை | वचनं | கொல்லை |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अब्रुवन् | கொன்னார்கள்: |

शीघ्रं व्यादिश नो राजन्वधायैषां दुरात्मनाम् । निपतन्तु हताश्चिते धरण्यामल्पतेजसः ॥

| | | | |
|------------|------------|-----------|---------------------|
| राजन् | " வேந்தே! | व्यादिश | ஆக்கினை தந்தருளும். |
| दुरात्मनां | கெட்ட எண்ண | अल्पतेजसः | அற்பமான ஆற்றலு |
| | முடைய | | டைய |
| एषां | இவர்களை | एते च | இவர்களும் |
| वधाय | கொல்லதற்கு | हताः | கொல்லப்பட்டவர் |
| नः | எங்களுக்கு | धरण्यां | பூமியில் [கரைய |
| शीघ्रं | இப்போதே | निपतन्तु | வந்து விழட்டும். " |

तेषां संभाषमाणानामन्योन्यं स विभीषणः । उत्तरं तीरमासाद्य खस्थ एव व्यतिष्ठत ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|------------------|
| सः | அந்த | उत्तरं | வட |
| विभीषणः | விபீஷணர் | तीरं | கரையை |
| तेषां | ஆவர்கள் | आसाद्य | கடைத்து |
| अन्योन्यं | ஒருவர்க்கொருவர் | खस्थः एव | ஆகாசத்திலிருந்தவ |
| संभाषमाणानां | பேசிக்கொண்டிருக் | | ராகவே |
| | கையில் | व्यतिष्ठत | ஈ த்த வின்றார். |

उवाच च महाप्राज्ञः स्वरेण महता महान् । सुर्गोवं तांश्च संप्रेक्ष्य खस्थ एव विभीषणः ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------|-------------|------------------|
| महाप्राज्ञः | பேரறிவாளரும் | महता स्वरेण | பெருக்குரலால் |
| महान् | மற்றொருமான் | खस्थः एव | ஆகாசத்திலிருந்த |
| विभीषणः | விபீஷணர் | | வண்ணமே |
| सुर्गोवं च | சுக்ரீவனையும் | उवाच | பின் ஒருமறு கொள் |
| तान् च संप्रेक्ष्य | ஆவர்களையும்பார்த்து | | னார் : |

रावणो नाम दुर्वृत्तो राक्षसो राक्षसेश्वरः । तस्याहमनुजो भ्राता विभीषण इति श्रुतः ॥

दुर्वृत्तः “கொடிய நடத்தை உள்ள

अनुजः அன்பாற்பிறந்த

राक्षसेश्वरः ராட்சஸமன்னனாய்

भ्राता தம்பி

रावणः नाम ராவணனென்ற

अहं நான்.

राक्षसः அரக்கனிருக்கிறான்.

विभीषणः விபிஷணன்

तस्य அவனுக்கு

इति என்று

श्रुतः பெயர்ப்புண்டவன்.

तेन सीता जनस्थानादता हत्वा जटायुषम् । रुद्धा च विवशा दीना राक्षसीभिः सुरक्षिता ॥

तेन च “அவளுடையே,

विवशा எதுவும் செய்யமுடி

जटायुषं ஜடாயுவெனும்

हत्वा கொண்டு [கழுதை

दीना உன்னம் கொந்து

जनस्थानात् ஜனஸ்தானத்தி

रुद्धा சிறைப்படுத்தப்பட்ட

लिरुந்து

राक्षसीभिः அரக்கிகளால் [வளரய்

हता அபகரிக்கப்பட்ட

सुरक्षिता ஜாக்கிரதையாய் காவல்

सीता சீதாதேவியார்

காக்கப்படுகிறார்.

तमहं हेतुभिर्वाक्यैर्विविधैश्च न्यदर्शयम् । साधु निर्यात्यतां सीता रामायेति पुनः पुनः ॥

अहं “நான்

विविधैः பல

सीता ‘ஸீதாதேவியார்

हेतुभिः காரணங்களோடு

रामाय ஸ்ரீராமருக்கு

கடிய

निर्यात्यतां திருப்பிக்கொடுத்து

वाक्यैः च சொற்களால்

விடப்படட்டும்’

साधु என்னுடைய நமட்டும்

इति என்று

तं அவனுக்கு

पुनः पुनः மீண்டும் மீண்டும்

न्यदर्शयम् அறிவிட்டினேன்.

स च न प्रतिजग्राह रावणः कालचोदितः । उच्यमानं हितं वाक्यं विपरीत इवौषधम् ॥

कालचोदितः “யமனுக்காட்பட்ட

विपरीतः சாதத் தூணிர்தவன்

सः அந்த

औषधं மருந்தை

रावणः च ராவணனோ

इव எவ்வண்ணமோ அவ்

उच्यमानं சொல்லிய

வண்ணமே

हितं நன்மை பலக்கவல்ல

प्रतिजग्राह न எற்றுக்கொள்ள

वाक्यं சொல்லை

வில்லை.

सोऽहं परुषितस्तेन दासवच्चावमानितः । त्यक्त्वा पुत्रांश्च दारांश्च राघवं शरणं गतः ॥ १६ ॥

तेन “அவனால்

पुत्रान् च புதல்வர்களையும்

परुषितः கடிந்துபேசப்பட்ட

दरान् च மனைவிமர்களையும்

दासवत् அடிமைபோல் [வனும்

त्यक्त्वा துறந்துவிட்டு

अवमानितः च அவமானஞ்செய்யப்

राघवं ஸ்ரீராமரை

பட்டவனுமான

शरणं சரணமாக

सः அந்த

गतः வந்தடைந்துவிட்ட

अहं நான்

டேன்.

सर्वलोकशरण्याय राघवाय महात्मने । निवेद्यत मां क्षिप्रं विभीषणमुपस्थितम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|----------|--------------------|
| सर्वलोकशरण्याय | "எல்லா உலகுக்கும் சரண்பராய் | मां | அடியேனை |
| महात्मने | மகா தீமாவாயின | विभीषणं | விபிஷணனை |
| राघवाय | ஸ்ரீராமருக்கு | क्षिप्रं | காலதாமதமின்றி |
| उपस्थितं | இங்குவந்து சேர்ந்த ருக்கும் | निवेद्यत | தெரிவிப்பீர்களாக." |

एतत्तु वचनं श्रुत्वा सूर्यायो लघुविक्रमः । लक्ष्मणस्यायतो रामं संख्यापिदमवर्षात् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|------------|---------------------------|
| सुमीवः | சுமீவன் | लक्ष्मणस्य | லக்ஷ்மணரது |
| एतत् | இந்த | अग्रतः | முன்னிலையிலே |
| वचनं | வார்த்தையை | संख्यं तु | நெஞ்சும் பதைபதைக்க கவே |
| श्रुत्वा | கேட்டு | इत् | பின்வருமாறு |
| लघुविक्रमः | பறந்துசெல்லுகின்ற வளுகி | अवर्षात् | விண்ணப்பஞ் செய்தார்: |
| रामं | ஸ்ரீராமரிடத்தில் | | |

रावणस्यानुजो भ्राता विभीषण इति श्रुतः । चतुर्भिः सह रक्षोभिर्भवन्तं शरणं गतः ॥

| | | | |
|---------|----------------|-------------|------------------------------|
| रावणस्य | "ராவணனுக்கு | चतुर्भिः | நான்கு |
| अनुजः | பின்பிறந்த | रक्षोभिः सह | அரக்கர்களோடுகூட |
| भ्राता | தம்பியாகிய | भवन्तं | தேவரீரை |
| विभीषणः | விபிஷணன் | शरणं | சரணமாக |
| इति | என்ற | गतः | வந்துசேர்ந்திருக்கி றான். |
| श्रुतः | பெயர் பூண்டவன் | | |

मन्त्रे व्यूहे नये चारे युक्तो भवितुमर्हसि । वानराणां च भद्रं ते परेषां च परन्तप ॥ २० ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|---------------|--|
| परन्तप | "சத்துருக்களை நயி க்க அடிப்பவரே, | नये | நாய்க்கிலும் |
| वानराणां च | வானரர்களுடையவும் | चारे | தர்ம அனுஷ்டானத் திலும் |
| परेषां च | சத்துருக்களுடைய வும் | युक्तः | சூராய்த்து அறிந்த |
| मन्त्रे | உத்தேசத்திலும் | भवितुं अर्हसि | ஆகக்கடவீர். [வராக இப்படிச் செய்திருவு ளாய்கைத்தருள்வீராக |
| व्यूहे | சைனிய அமைப்பிலும் | ते भद्रम् | |

अन्तर्धानगता ह्येते राक्षसाः कामरूपिणः । शूराश्च निकृतिज्ञाश्च तेषु जातु न विश्वसेत् ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|------------------------------|
| एते | "இந்த | शूराः च | சூரர்கள். |
| राक्षसाः हि | அரக்கர்களோ | निकृतिज्ञाः च | உருசனைகளில் நிபுணர்கள். |
| अन्तर्धानगताः | { கண்ணுக்கு தெரியாத படி சஞ்சரிக்கவல்ல வர்கள். | तेषु | அவர்களிடத்தில் |
| कामरूपिणः | { கிணைத்த ரூபமெடுக்க வல்லவர்கள். | जातु | ஒருபொழுதும் |
| | | विश्वसेत् न | நம்பிக்கை வைக்கக் கூடாது. |

प्रणिधी राक्षसेन्द्रस्य रावणस्य भवेदयम् । अनुप्रविश्य सोऽस्मासु भेदं कुर्यान्न संशयः ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|-------------|-----------------|
| अयं | " இவன் | सः | அவன் |
| राक्षसेन्द्रस्य | ராட்சஸமன்னனாகிய | अस्मासु | கம்மிடத்தில் |
| रावणस्य | ராவணனது | अनुप्रविश्य | புகுந்து |
| प्रणिधिः | வேவுகாணாக | भेदं | தீக்கை |
| भवेत् | இருக்கலாம். | कुर्यात् | விளைவிக்கலாம். |
| | | संशयः न | இதில் ஐயமில்லை. |

अथवा स्वयमेवैष छिद्रमासाद्य बुद्धिमान् । अनुप्रविश्य विश्वस्ते कदाचित्प्रहरेदपि ॥२३॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|----------------------|
| अथवा | " இதிலையெனில் | छिद्रं | அணைக்கிரையாயிருக்க |
| बुद्धिमान् | தந்திரசாலியாகிய | | கும் சமயத்தை |
| एषः | இவன் | आसाद्य | கண்டு, |
| अनुप्रविश्य | புகுந்து, | कदाचित् | ஒருக்கால், |
| | (கம்பி) கையாயிரு | स्वयं एव | சிரமம் சிறிதுமின்றி, |
| विश्वस्ते | க்கும் தேவரீர் விஷ | प्रहरेत् अपि | தீக்கு விளைவிக்க |
| | யத்தில் | | கண்டே. |

मित्रादपि बलं चैव मौलं भूत्वबलं तथा । सर्वमेतद्बलं ब्राह्मं वर्जयित्वा द्विषद्बलम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|--------------|------------------|
| द्विषद्बलं | " சத்துருப்படைவை | मित्रान् अपि | கிளைகிதனிடத்திலி |
| वर्जयित्वा | தவிர்த்து | | ருந்துதான் |
| बलं च एव | படையும் | एतत् सर्वं | எதுவும் |
| मौलं | மன்னர்களைச்சேவித்து | बलं | படையாக |
| | அனுபவமுடையதும் | ब्राह्मम् | எற்றுக்கொள்ளத் |
| भूत्वबलं तथा | அடிமையாகியபடையும் | | தக்கது. |

प्रकृत्या राक्षसो ह्येष भ्राताऽमित्रस्य ते प्रभो । आगतश्च रिपोः पक्षात्कथमस्मिन्हि विश्वसेत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------|--------------------|
| प्रभो | " பிரபுவே! | रिपोः | சத்துருவின் |
| एषः हि | இவனே | पक्षात् च | கூழியிலிருந்துநான் |
| प्रकृत्या | இயல்பாகவே | आगतः | வந்துசேர்ந்திருக்க |
| राक्षसः | அரக்கன். | हि | ஆகையால் [கிறான். |
| ते | தேவரீரது | अस्मिन् | இவ்விஷயத்தில் |
| अमित्रस्य | சத்துருவின்து | कथं | எப்படித்தான் |
| भ्राता | தம்பி. | विश्वसेत् | நம்பக்கடும்? |

रावणेन प्रणिहितं तमवेहि विभीषणम् । तस्याहं नियहं मन्ये क्षमं क्षमवतां वर ॥ २६ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------|----------------|
| क्षमवतां वर | " பொறுகையுடையவ | अवेहि | கருதுவீராக. |
| | ரில் சிறந்தவரே! | तस्य | அவனுக்கு |
| तं | அந்த | नियहं | தண்டனை விதிப் |
| विभीषणं | விபிஷணனை | क्षमं | எற்றதாக [படையே |
| रावणेन | ராவணனால் | अहं | நான் |
| प्रणिहितं | அனுப்பப்பட்டவனாக | मन्ये | நினைக்கிறேன். |

राक्षसो जिह्वया बुद्ध्या संदिष्टोऽयमुपागतः । महर्तुं मायया छन्नो विश्वस्ते त्वयि चानय ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------------|-----------|-------------------------------------|
| अनय | “ வஞ்சகமில்லாத விஞ்ஞானத்தவரே ! | छन्नः | மறைந்து |
| अयं | இந்த | विश्वस्ते | கம்பிக்கையால் அதரிய மாயிருக்கும் |
| राक्षसः | அரக்கள் | त्वयि | தேவரிடத்தில் |
| जिह्वया बुद्ध्या | கபட விண்ணத்தோடு | महर्तुं च | தீக்குவிளைவிக்கத் தான் |
| संदिष्टः | அனுப்பப்பட்ட | उपागतः | வந்துசேர்த்திருக்கி றான். |
| मायया | மாயையால் | | |

प्रविष्टः शत्रुसैन्यं हि प्राप्तः शत्रुसर्तकितः । निह्न्यादन्तरं लब्ध्वा उलूक इव वायसान् ॥

| | | | |
|-------------|--|------------|-------------------------|
| प्राप्तः हि | “ வந்திருக்கப்பட்ட வனே | अन्तरं | வற்றசமயத்தை |
| शत्रुः | வாழி. | लब्ध्वा | அடைந்து, |
| असर्तकितः | கம்பால் வதிர்வார்க்கப் பட்டவனில்லை. | उलूकः | ஒரு கோட்டான் |
| शत्रुसैन्यं | சத்ருகைசனியத்தில் | वायसान् | காக்கைகளை |
| प्रविष्टः | புகுந்தவனாய் | इव | எவ்வண்ணமோ ஆய் வண்ணமே |
| | | निह्न्यात् | கொல்வான். |

वध्यतामेष दण्डेन तीव्रेण सचिवैः सह । रावणस्य नृशंसस्य भ्राता ह्येष विभीषणः ॥

| | | | |
|----------|-------------|-----------|------------------------|
| एषः | “ இந்த | एषः | இவன் |
| विभीषणः | விபீஷணன் | सचिवैः सह | மத்திரியர்களை கூட |
| नृशंसस्य | கொடியவனுடைய | तीव्रेण | கொடிய |
| रावणस्य | ராவணனது | दण्डेन | தண்டனையால் |
| भ्राता | தம்பி. | वध्यताम् | கொல்லப்படவேண் டும.” |
| हि | ஆகையால் | | |

एवमुक्त्वा तु तं रामं संरब्धो वाहिनीपतिः । वाक्यज्ञो वाक्यकुशलं ततो मौनमुपागमत् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|--------------|------------------------------------|
| वाक्यज्ञः | உரையாளனாய் | वाक्यकुशलं | மொழிகளின் தட்பங் களை அறிபவராகிய |
| वाहिनीपतिः | சேனைத்தலைவனுமான அவன் | तं रामं | அந்த ஸ்ரீராமரிடம் |
| संरब्धः | பரபாப்புற்றவனாய் | उक्त्वा | எண்ணப்படுத்து அதன்மேல் [விட்டு |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | ततः | அதன்மேல் [விட்டு |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | मौनं उपागमत् | மௌனமாயிருந்தான். |

सुग्रीवस्य तु तदाकथं श्रुत्वा रामो महायशाः । समीपस्थानुवाचेदं हनुमत्प्रमुखान्हरीन् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------------|-------------------------------|
| सुग्रीवस्य | சுகரீவனது | हनुमत्प्रमुखान् | ஹனுமார் முதலிய |
| तदाकथं | அம்மொழிக்கு | हरीन् | வானர்களைப் பார்த்து |
| श्रुत्वा | திருச்செவிசாய்த் தருளிய | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| महायशाः | பெரும்புகழ்படைத்த | इदं | பின்வருமாறு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி றான் : |
| समीपस्थान् | பக்கலிலிருந்த | | |

यदुक्तं कपिराजेन रावणावरजं प्रति । वाक्यं हेतुमदर्थं च भवद्विरपि तच्छतम् ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|-------------|---|
| रावणावरजं प्रति | " रावணன் கடைசுத் தம்பியைப்பற்றி | अर्थे | நமக்குத் தெரிந்திருக் கவேண்டியதாயும் |
| कपिराजेन | வரனரமன்னனால் | उक्तं च | சொல்லப்பட்டதோ |
| यत् वाक्यं | எந்த ஒரு வாழி | तत् | அது |
| हेतुमत् | நல்ல காரணங்களோ | भवद्भिः अपि | உங்களாலும் |
| | டிருப்பதாயும் | शुतम् | செவிகொள்ளப் பட்டது. |

सुहृदा अर्थकृच्छ्रेषु युक्तं बुद्धिमता सता । समर्थेनापि संदेष्टुं शश्वती भूतिमिच्छता ॥ ३३ ॥

| | | | |
|-------------------|--|-------------|--------------------------------|
| अर्थकृच्छ्रेषु हि | { ஒரு காரியத்தை நிர் ணயிக்க முடியாத சமயங்களிலாவெ ன்றால் | सुहृदा | நன்றோக்குடையவ |
| शश्वती | காசுவதமான | बुद्धिमता | புத்திமானும் [னும் |
| भूति | பாக்கியத்தை | सता | நல்லவனும் |
| इच्छता | கருதும் | समर्थेन अपि | சாமர்த்தயகாலியுமாகிய இவனால் |
| | | संदेष्टुं | ஆலோசனை சொல்வத |
| | | युक्तम् | உரிமையுண்டு." [ற்கு |

इत्येवं परिपृष्टास्ते स्वं स्वं मतमतन्द्रिताः । सोपचारं तदा राममूर्च्छितचिकीर्षवः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-----------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | स्वं स्वं | ஆவரவர்கள் |
| इति एवं | மேற்கண்டவாறு | मतं | அபிப்பிராயத்தை |
| परिपृष्टाः | வினாவப்பட்ட | रामं | ஸ்ரீராமருக்கு |
| ते | ஆவர்கள் | सोपचारं | மிக்க வணக்கத்தோடு |
| हितचिकीर्षवः | நன்மையை நாடி | कस्युः | பின்வருமாறு |
| अतन्द्रिताः | ஊக்கங்கொண்டவர்க ளாய் | | தெரிவித்தார்கள் : |

अज्ञातं नास्ति ते किञ्चित्पिषु लोकेषु राघव । आत्मानं सूचयज्ञानन् पृच्छस्यस्मान्सुहृत्तया ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------|-----------|-----------------------------------|
| राघव | " ஸ்ரீராம! | सुहृत्तया | கருணையால் |
| पिषु लोकेषु | முன்னுலகங்களிலும் | आत्मानं | தங்களுக்கே உரிய பிறவிக்குணத்தை |
| ते | தேவரிருக்கு | सूचयन् | வெளிப்படையாய் காட்டுபவராய் |
| अज्ञातं | தெரியாதது | अस्मान् | எங்களை |
| किञ्चिन् अस्ति न | ஒன்றும் இல்லை. | पृच्छसि | வினாவி அருளுகிறீர். |
| जानन् | ஊர்வக்குராகிய தேவரீர் | | |

स्वं हि सत्यव्रतः शूरो धार्मिको दृढविक्रमः । परीक्ष्यकारी स्मृतिमान्निमृष्टात्मा सुहृत्सु च ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|----------|---|
| स्वं हि | " தேவரீரோ | धार्मिकः | { தர்மமொன்றையே சர்வமுமாய்க்கொண் டவர். |
| सत्यव्रतः | சத்தியத்தை நோன் பாகக்கொண்டவர். | | |
| शूरः | (தனி) வீரர். | | |

| | | | |
|--------------|---|-------------|--|
| दृढविक्रमः | { यावताऽप्युम् अकरोत्क वैवाञ्छुः अण् काम्युदयवर्. | स्मृतिमान् | ஞாயகசக்தியமைந் தவர். |
| परीक्ष्यकारी | ஆராய்ந்தறிந்தே எதையும் செய்பவர். | सुहृषु | அடிமைப்பட்டவர் களிடத்தில் |
| | | निगृह्यमा च | { ஆத்மசமர்ப்பணம் பண்ணினவருமாகி ன்றீர். |

तस्मादेकैकशस्तावद्ब्रुवन्तु सचिवास्तव । हेतुतो मतिस्पन्नाः समर्थाश्च पुनः पुनः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|---------------------------|
| तव | “ தேவரீருக்கு | पुनः | ஆன் னும் |
| सावर् | இப்பொழுது | तस्मात् | ஆகையால் |
| पुनः | எங்கோலிட | हेतुतः | காரணத்துடன் |
| समर्थाः | சமர்த்தர்களும் | एकैकशः | ஒவ்வொருவராய் |
| मतिस्पन्नाः च | புத்தியிற் சிந்தித்தவர் களுமான | ब्रुवन्तु | அவர்கள் சொல் லட்டும்”. |
| सचिवाः | { ஆலோசனை சொல்லத் தக்கவர்களிருக்கின் றனர். | | |

इत्युक्ते राघवायाथ पतिमानङ्गदोऽग्रतः । विभीषणपरीक्षार्थमुवाच वचनं हरिः ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|------------------------|--------------------------------------|
| राघवाय | ஆராகவருக்கு | अग्रतः | முதலில் |
| इति वक्ते | இவ்வாறு தெரிவிக்கப் பட்டதும் | विभीषण- परीक्षार्थं | { விபீஷணரை விசாரித் ததும்பொருட்டு |
| मतिमान् | வெகு புத்திமானாகிய | अथ | பின்வரும் |
| अङ्गदः | அங்கதனெனும் | वचनं | சொல்லை |
| हरिः | காரைன் | उवाच | சொன்னான் : |

शत्रोः सकाशात्संभ्राप्तः सर्वथा शङ्क्य एव हि । विश्वासयोग्यः सहसा न कर्तव्यो विभीषणः ॥

| | | | |
|------------|----------------------|---------------|--|
| शत्रोः | “ விபீஷணனோடு | शङ्क्यः एव | சந்தேகிக்கப்படவேண்ட உடனே [டிவகனென, विभीषणः |
| सकाशात् | சந்திரியினது | सहसा | உடனே [டிவகனென, विभीषणः |
| संभ्राप्तः | கனடியிலிருந்து | विश्वासयोग्यः | நம்பிக்கைக்குரியவ னாக |
| हि | வந்தவனுயிருக்கிறான். | कर्तव्यः न | கொள்ளத்தக்கவனு கான். |
| सर्वथा | ஆனபடியால் | | |
| | எல்லாபடியாலும் | | |

छादयित्वाऽऽत्मभावं हि चरन्ति शत्रुबुद्धयः । प्रहरन्ति च रन्ध्रेषु सोऽनर्थस्तत्कृतो भवेत् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-----------|--|
| शत्रुबुद्धयः | “ வஞ்சகநெஞ்சத் தினர்கள் | प्रहरन्ति | தீக்கு விளைவிக்கிறார் ஆகையால் [கள். |
| आत्मभावं | உட்கருத்தை | हि | அந்த |
| छादयित्वा | ஒளித்துக்கொண்டு | अनर्थः | தீக்கு |
| चरन्ति | கடக்கிறார்கள். | तत्कृतः | அவர்களால் விளைந் ததாய் |
| रन्ध्रेषु च | வாய்த்த சாயக்களி லோ | भवेत् | ஏற்படும். |

अर्थानर्थौ विनिश्चित्य व्यवसायं भजेत ह । गुणतः संग्रहं कुर्यादोपतश्च विसर्जयेत् ॥४१॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------|-----------------------------|
| अर्थानर्थौ | "நன்மைதீமைகளை | गुणतः | நன்மையுண்டெனில் |
| विनिश्चित्य | ஆராய்க்தறிந்து | संग्रहं | சம்முடன் சேர்த்துக் கொள்வதை |
| व्यवसायं | ஒரு தீர்மானத்தை | कुर्यात् | செய்யலாம். |
| भजेत ह | ஒருவன் ஆடைய வேண்டும். | दोषतः च | தீயை யாகில் |
| | | विसर्जयेत् | விட்டுவிடவேண்டும். |

यदि दोषो महांस्तस्मिस्त्यज्यतामविशङ्कितम् । गुणान्वापि बहून् ज्ञात्वा संग्रहः क्रियतां नृप ।

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|-----------------------------|
| नृप | "மன்னவரே! | वा | அல்லது |
| तस्मिन् | அவனிடத்தில் | बहून् | பல |
| महान् | பெரும் | गुणान् | குணங்களை |
| दोषः | தொஷம் | ज्ञात्वा अपि | கண்டுவிட்டால் |
| यदि | உண்டெனில் | संग्रहः | சம்முடன் சேர்த்துக் கொள்வது |
| अविशङ्कितं | நம்பாது | क्रियताम् | செய்யப்படும்." |
| सज्यतां | விட்டுவிடப்படும். | | |

शरभस्त्वथ निश्चित्य साध्यं वचनमब्रवीत् । क्षिप्रमस्मिन्नरव्याघ्र चारः प्रतिविधीयताम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------------|-----------------|
| शरभः | சரபன் | नरव्याघ्र | "புருஷோத்தமரே! |
| साध्यं | செய்யவேண்டியதை | अस्मिन् | இவன் விஷயத்தில் |
| निश्चित्य तु | ஆலோசனைசெய்து | क्षिप्रं | இப்போதே |
| अथ | பின்வரும் | चारः | ஓர் ஒற்றன் |
| वचनं | சொல்லை | प्रतिविधीयताम् | அனுப்பப்படும். |
| अब्रवीत् | மொழிந்தான் : | | |

प्रणिधाय हि चारेण यथावत्सूक्ष्मबुद्धिना । परीक्ष्य च ततः कार्यो यथान्याय्यं परिग्रहः॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|---------------|---|
| सूक्ष्मबुद्धिना | "நுண்ணுநிலையுடைய | ततः | அதன்மேல் |
| चारेण हि | ஓர் ஒற்றனுலேயே [ய | परिग्रहः | { (நமது ஆகரவில்) ஏற்றுக்கொள்ள வென்பது |
| यथावत् | முறைப்படி | यथान्याय्यं च | சாத்யமாகில் |
| परीक्ष्य | விசாரித்தறிந்து | कार्यः | செய்யத்தக்கது." |
| प्रणिधाय | ஒருவித தீர்மானத் திங்கு வந்து | | |

जाम्बवांस्त्वथ संप्रेक्ष्य शास्त्रबुद्ध्या विचक्षणः । वाक्यं विज्ञापयामास गुणवदोषवर्जितम् ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|--------------|-----------------------|
| विचक्षणः | சரமர் தீயசாஸிரியிய | दोषवर्जितं | தொஷநிலலாதனும் |
| जाम्बवान् | ஜாம்பவந்தர் | गुणवद् बु | நல்லதுமாகிய |
| शास्त्रबुद्ध्या | சாஸ்திரஞானத்தால் | वाक्यं | மொழியை |
| संप्रेक्ष्य | ஆராய்ச்சிசெய்து | विज्ञापयामास | விஞ்ஞாபனஞ் செய்தார் : |
| अथ | பின்வரும் | | |

बद्धवैराच पापाच्च राक्षसेन्द्राद्विभीषणः । अदेशकाले संघासः सर्वथा शङ्क्यतामयम् ॥४६॥

| | | | |
|-----------------|--|------------|---------------------------------|
| विभीषणः | “ விபிஷணன் தீப்பனைகொண்ட பாபிபுடான [வானம் ராஷ்டிரமன்னனிட மிருந்து | संघासः | வந்தூசெய்திருக்க |
| बद्धवैरात् च | | सर्वथा | எப்படியும் [கிருண். |
| पापात् च | | अयं | இவன்மேல் |
| राक्षसेन्द्रात् | | शङ्क्यताम् | சந்தேகம் கொள்ளப் படவேண்டும். |
| अदेशकाले | காலநிலை க்காலத்தில் | | |

ततो मैन्दस्तु संपेक्ष्य नयापनयकोविदः । वाक्यं वचनसंपन्नो वभाषे हेतुमत्तरम् ॥ ४७ ॥

| | | | |
|-------------------|--|------------|---|
| ततः | அனந்தம் | संपेक्ष्य | நிற்காமலே களை |
| नयापनय- कोविदः | நீதி அநீதிகளில் கிபு ணனும் | हेतुमत्तरं | செய்து கிறத்த காரணக்களோடு டிசைத்த |
| वचनसंपन्नः तु | { எடுத்தாரப்பதில் தேர்ச்சிபெற்றவனு மான | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| मैन्दः | மைந்தன் | वभाषे | பின்வருமாறு மொழிந்தான் : |

वचनं नाम तस्यैष रावणस्य विभीषणः । पृच्छयतां मधुरेणायं शनैर्नरवरेश्वर ॥ ४८ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|-------------------|
| नरवरेश्वर | “ புருஷோத்தம | वचनं | சொன்னதைப்பற்றி |
| पृषः | இந்த [மன்னரோ] | अयं नाम | இவனே |
| विभीषणः | விபிஷணன் | मधुरेण | இனிமையாகவும் |
| तस्य | அந்த | शनैः | மெதுவாகவும் |
| रावणस्य | ராவணனுக்கு | पृच्छयताम् | வினா கப்பட்டதும். |

भावमस्य तु विज्ञाय ततस्तत्त्वं करिष्यसि । यदि दुष्टो न दुष्टो वा बुद्धिपूर्वं नरर्षभ ॥४९॥

| | | | |
|---------|----------------|--------------|--------------------|
| नरर्षभ | “ புருஷோத்தம : | न दुष्टः वा | கல்லவனாகவது |
| ततः | அதனால் | यदि | இருக்கிறதே |
| अस्य | இவனுது | बुद्धिपूर्वं | மனச்சாங்கிக்கேற்ற |
| भावं | உட்கருத்தை | तु | உய்தொழுது [படி |
| विज्ञाय | அறிந்துகொண்டு | तत्त्वं | விடாமலானதை |
| दुष्टः | கூல்டனாகவாவது | करिष्यसि | தெளிர் செய்வீராக " |

अथ संस्कारसंपन्नो हनुमान्सचिवोत्तमः । उवाच वचनं शृङ्खणमथर्वन्मधुरं लघु ॥ ५० ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|-------|-----------------------------|
| अथ | அதன்மேல் | अथर्व | தராத பொருளுடை |
| संस्कारसंपन्नः | சான்றிர தகமலியும் | मधुरं | இனிமையம், [யதும், |
| सचिवोत्तमः | மந்திரிகளில் உத்தமரான மகிய | लघु | தொகையற்ற முமான |
| हनुमान् | ஹனுமான் | वचनं | சொல்லை |
| शृङ्खणं | அழகியதும் | उवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தார் : |

न भवन्तं मतिश्रेष्ठं समर्थं वदतां वरम् । अतिशाययितुं शक्तो बृहस्पतिरपि ब्रुवन् ॥५१॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|-------------|---------------------|
| மதிசுரேஷ்ட் | " புத்தியில் எவருக்கும் மேம்பட்டவரும் | சமர்த்தம் | எதிலும் சமர்த்தரு |
| வததா | பேசுபவர்களில் | भवन्तं | தேவர்களுக்கு [மாகிய |
| वरं | (எவருக்கும்) மேம்பட்டவரும் | बृहस्पतिः | பிருகஸ்பதி |
| | | ब्रुवन् अपि | பேசினபோதிலும் |
| | | अतिशाययितुं | மேம்பட்டவராயிருக்க |
| | | न शक्तः | முடியாது. |

न वादान्नापि सङ्घर्षान्नाधिक्यान्न च कामतः । वक्ष्यामि वचनं राजन्यथार्थं राम गौरवात् ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|--|
| राजन् | " ஸ்வாமியே! | न | இல்லை; |
| राम | ஸ்ரீராம! | सङ्घर्षान् | { எவருக்கும் மேம்பட்டவனாகியிருக்கவேண்டுமெனும் எண்ணத்தாலும் |
| वचनं | ஒரு சொல்லை | न | இல்லை; |
| यथार्थं | எனக்குத் தோன்றுகிறபடியே | आधिक्यात् | மேன்மையானும் |
| गौरवात् अपि | { (தேவரிடத்திலுள்ள) பூஜார்ஹத்தன்மையால் | न | இல்லை; |
| वक्ष्यामि | சொல்வேன்; | कामतः च | பக்தபாதத்தாலும் |
| वादात् | { (பிறர் சொல்லியவைகளை அல்லவென்று) எதிர்நியாயம் எடுத்துரைப்பதால் | न | இல்லை. |

अर्थानर्थनिमित्तं हि यदुक्तं सचिवैस्तव । तत्र दोषं प्रपश्यामि क्रिया न ह्युपपद्यते ॥ ५३ ॥

| | | | |
|-------------------|-------------------------------|------------|----------------------|
| तव | " தேவரீரது | तत्र हि | அதிலே |
| सचिवैः | ஆண்பர்களால் | दोषं | நன்மை பயக்காததாக |
| अर्थानर्थनिमित्तं | குணதோஷக்கணையறியும் விஷயத்தில் | प्रपश्यामि | நான் நினைக்கின்றேன். |
| उक्तं | சொல்லப்பட்டது | क्रिया हि | உபாயமும் |
| पत् | எதுவோ, | उपपद्यते न | சாத்தியமானதாயில்லை. |

ऋते नियोगात्सामर्थ्यमवबोद्धुं न शक्यते ॥ ५४ ॥

| | | | |
|--------------|---|-----------|-----------|
| नियोगात् ऋते | { (ஒரு காரியத்தில்) எவ்வளவுகச்செய்யப்பட்டதாண்டு | सामर्थ्यं | எற்றதை |
| | | अवबोद्धुं | கண்டறிய |
| | | न शक्यते | முடியாது. |

सहसा विनियोगो हि दोषवान्प्रतिभाति मा ॥ ५५ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|-----------|----------------|
| सहसा | " விசாரியாது | दोषवान् | பிசகென |
| विनियोगः हि | ஒரு காரியத்தில் எவ்வளவு | मा | எனக்கு |
| | தென்பதும் | प्रतिभाति | தோன்றுகின்றது. |

चारप्रणिहितं युक्तं यदुक्तं सचिवैस्तव । अर्थस्यासंभवात्तत्र कारणं नोपपद्यते ॥ ५६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|------------------|
| तव | "தேவரீரது | अर्थस्य | (அனுப்பவேண்டிய) |
| सचिवैः | அன்பர்களால் | | அவச்யத்திற்கு |
| चारप्रणिहितं | 'சாரணையனுப்புவது | असंभवात् | இடமில்லாமலிருக்க |
| युक्तं | யுக்த'மென | | கிறபடியால் |
| यदुक्तं | எது சொல்லப்பட்ட | तत्र | இச்சமயத்தில் |
| कारणं | அந்த உபாயம் [தோ | उपपद्यते न | ஏற்றதன்று. |

अदेशकाले संप्राप्त इत्ययं यद्विभीषणः । विवक्षा तत्र मेऽस्तीयं तां निबोध यथापति ॥
स एष देशः कालश्च भवतीति यथा तथा ॥ ५७ ॥

| | | | |
|------------|--|---------|--|
| अयं | "இந்த | अस्ति | இருக்கிறது. |
| विभीषणः | விபிஷணர் | तां | அதற்கு |
| अदेशकाले | { (காஸ்திரபிரமாணங்க ளுக்கு விலகியும்) கால மில்லாதகாலத்தினும் | निबोध | செவிகாய்த்தருள்வீ ராக. |
| संप्राप्तः | வந்திருக்கின்றார் | यथा तथा | முன்பின் ஆராய்ச்சி செய்யுங்கால் |
| इति वत् | என்ற | सः | அந்த |
| तत्र | அவ்விஷயத்தில் | कालः | ஏற்றகாலமென்பது |
| यथापति | கிற்றறிவிக்கெட்டிய வாறு | एषः | இதுதானென |
| मे विवक्षा | அடியேன் தெரிவிக்க வேண்டியதாய் | भवति | விளக்குகிறது. |
| इति | பின் கண்டவாறு | देशः च | { அப்படியே காஸ்திரப் பிரமாணங்களுக்கு கிணுத்தமில்லாததா கவுமிருக்கிறது. |
| इयं | இதொன்று | | |

पुरुषात्पुरुषं प्राप्य तथा दोषगुणावपि । दौरात्म्यं रावणे दृष्टा विक्रमं च तथा त्वयि ॥
युक्तमागमनं तस्य सदृशं तस्य बुद्धितः ॥ ५८ ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|----------------------------------|
| रावणे | "ராவணரிடத்தில் | दृष्टा | ஆராய்ச்சிசெய்து |
| दौरात्म्यं च | துஷ்டஸ்வபாவந் | प्राप्य | ஒருகித தீர்மானத் திற்கு வந்து |
| तथा | அப்படியே [தையும் | पुरुषात् पुरुषं | அற்பனிடமிருந்து மகானிடம் |
| त्वयि | தேவரீரிடத்தில் | आगमनं | போய்ச்சேர்தலென் பது |
| विक्रमं | (ஆதரித்தருளும்) சக்தியையும் | तस्य | அவருக்கு |
| तथा | அவ்வண்ணமே | युक्तं | ஏற்றது. |
| दोषगुणौ अपि | { (தான் செய்யும் காரி யத்தினுள்ள) தோஷ ங்கள், குணங்கள் ஆகிய இவ்விரண் டையும் | तस्य | அவரது |
| | | बुद्धितः | புத்திக்கும் |
| | | सदृशम् | ஏற்றது. |

अज्ञातरूपैः पुरुषैः स राजन्पृच्छवतामिति । यदुक्तमत्र मे भेषा काचिदस्ति समीक्षिता ॥

राजन् "ஸ்வாமியே!
 सः 'ஆவர்
 अज्ञातरूपैः முகப்பரிச்சயமில்லாத
 पुरुषैः நூதர்களால்
 पृच्छयतां வினாவப்பட்டும்'
 इति என்று
 यत् எதொன்று
 उक्तं தெரிவிக்கப்பட்டதோ

अत्र இவ்விவயத்தில்
 मे அடியேனுடைய
 समीक्षिता { தீர்க்காலோசனை
 செய்து முடிவிற்கு
 வந்தநாயுள்ள
 भेषा அபிப்பிராயம்
 काचिद् ஒன்று
 अस्ति இருக்கிறது.

पृच्छयमानो विशङ्केत सहसा बुद्धिमान्वचः । तत्र मित्रं प्रदुष्येत मिथ्या पृष्टं सुखागतम् ॥

बुद्धिमान् "புத்திமானாகும் ஒரு
 सहसा திடீரென
 पृच्छयमानः வினாவப்பட்டவனாய்
 वचः கேள்வியில்
 विशङ्केत சந்தேகங்கொள்ளான்.
 तत्र அப்படியாகில்

सुखागतं நல்ல எண்ணங்கொண்டு
 मित्रं மித்திரன்
 मिथ्या கபடமாக
 पृष्टं வினாவப்பட்டவனாய்
 प्रदुष्येत அநியாயமாய்
 அழிவான்.

अशक्यः सहसा राजन्भावो वेत्तुं परस्य वै । अन्तःस्वभावैर्गीतैस्तैनैपुण्यं पश्यता भृशम् ॥

राजन् "ஸ்வாமியே!
 भृशं மிக
 नैपुण्यं பெருங்காரியங்களில்
 தேர்ச்சியை
 पश्यता वै கண்டறிந்தவனானும்
 तैः அந்த
 अन्तःस्वभावैः உண்மை வெளிப்
 படாதிருக்கும்

गीतैः சொற்களைக்கொண்டு
 परस्य அயனானுடைய
 भावः உட்கருத்து
 सहसा அவசரமாய்
 वेत्तुं உள்ளபடி அறிய
 अशक्यः முடியாது.

न त्वस्य ब्रुवतो जातु लक्ष्यते दुष्टभावता । मसन्नं वदनं चापि तस्मान्मे नास्ति संशयः ॥

अस्य "இவர்
 ब्रुवतः तु பேசும்பொழுதெல்
 जातु ஒருதடவையிலும்
 दुष्टभावता { உள்ளமும் புறமும்
 ஒரேமாதிரியில்லா
 ஸ்வபாவம்
 न लक्ष्यते காணப்படவில்லை.

वदनं अपि முகமும்
 मसन्नं உள்ளத்தில் உள்ளப
 दिये உறுத்துகிறது.
 तस्मात् துக்கையால்
 संशयः च ஆபத்து சம்பளிக்கு
 मे மெலுங்கவலை
 अस्ति न எனக்கு
 இல்லை.

अशङ्कितमतिः स्वस्थो न शठः परिसर्पति । न चास्य दुष्टा वाक् चापि तस्माद्वास्तीह संशयः ॥

शठः "வஞ்சகன்
 अशङ्कितमतिः உத்தேசத்தில் சந்தை
 யற்றவனாய்

स्वस्थः { மேற்கொண்ட காரியம்
 கைகடுமெனும் நம்
 பிக்கையுடையவனாய்

परिसर्पति न
अस्य
वाक् अपि
दुष्टा च
न

துலிந் துலுராண்,
இவரது
விண்ணப்பமும்
குறைவுற்றதாகவும்
இல்லை ;

तमान्
इह
संशयः च

न अस्ति

ஆகையால்
இவ்விஷயத்தில்
ஆபத்திற்கிடமென்
பதே
இல்லை.

आकारश्छाद्यमानोऽपि न शक्यो विनिर्गूहितुम् ; बलाद्धि विवृणोत्येव भावमन्तर्गतं नृणाम् ॥

आकारः
छाद्यमानः अपि
विनिर्गूहितुं
शक्यः न

“முடிக்கு நிபாணது
மறைக்கப்படுகிறதாக
ஆகியும்
பிறர் அநிபாத வண்
ணம் மறைப்பதற்கு
முடியாது.

नृणां
अन्तर्गतं
भावं
बलात् हि
विवृणोति एव

மனிதர்களுடைய
உள்ளத்தில் பதிந்து
சொக்கை [கிடக்கும்
எப்படியோ
வெளியிட்டே விடுகி
றது.

देशकालोपपन्नं च कार्यं कार्यविदां वर । सफलं कुरुते क्षिप्रं प्रयोगेणाभिसंहितम् ॥ ६५ ॥

कार्यविदां वर
देशकालोपपन्नं
प्रयोगेण

“எதையும் உள்ளபடி
அறிபவர்களுள்
உத்தமரே !
பிரமாணங்களுக்கும்
எற்றகாலத்திற்கும்
உபயுத்தமான
காரியமுறைவிதியோடு

अभिसंहितं च
कार्यं
सफलं
क्षिप्रं
कुरुते

முற்றிலும் கூடியிருக்
கிறதமாகிய
ஒரு காரியம்
அதன் பயனை
விரைவில்
அளிக்கிறது.

उद्योगं तव संश्लेष्य मिथ्यावृत्तं च रावणम् । वालिनश्च वधं श्रुत्वा सुग्रीवं चाभिषेचितम् ॥

अमर्षी भ्रातरं त्यक्त्वा भवन्तं शरणं गतः । देशकालोपपन्नश्च तत्कुलीनश्च राक्षसः ॥ ६७ ॥

राज्यं प्रार्थयमानश्च बुद्धिपूर्वमिहागतः

॥ ६८ ॥

देश लोपपन्नः
तकुलीनः च
राक्षसः
रावणं
राज्यं
प्रार्थयमानः
अमर्षी
तव
उद्योगं च

“சாஸ்திரப்பிரமாண
க்களையும் எற்றகால
க்களையும் நன்கு அ
றிந்தவரும்
மகா பிரகீத்தியெற்ற
நற்குலத்தில் பிறந்த
வருமான
அரக்கராகுமிவர்
ராவணனிடம்
செக்கோல் செலுத்
தும் விஷயத்தில்
ப்ரார்த்திப்பவராக
அந்நித்தை பெற்றுக்
கமுடியாதவராகி
தேவரீரது
கடமைக்காரியத்
தையும்

संश्लेष्य च
वालिनः
वधं च
सुग्रीवं
अभिषेचितं च

श्रुत्वा
मिथ्यावृत्तं
भ्रातरं च
त्यक्त्वा
बुद्धिपूर्वं
भवन्तं
शरणं गतः
इह
आगतः

நன்கு ஆராய்ந்து கண்
நிகண்டும்
வாலினது
வதைகளையும்
சுக்ரீவரை
பட்டாபிஷேகமடைந்
தவராகவும்
அறிந்து
கொடிய தொழிலுற்ற
தமையையும்
அறந்து
கபடின்றி
தேவரீரை
சரணமாகக்கொண்டு
இவ்விடத்திற்கு
வந்திருக்கிறார்.

एतावत्तु पुरस्कृत्य युज्यते त्वस्य संग्रहः । यथाशक्ति मयोक्तं तु राक्षसस्यार्जवं प्रति ॥
 त्वं प्रमाणं तु शेषस्य श्रुत्वा बुद्धिमतां वर ॥ ६९ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------|-------------|------------------|
| एतावत् | “இதையெல்லாம் | उक्तं | தெரிவிக்கப்பட்டு |
| तु | இப்பொழுது | | விட்டது. |
| पुरस्कृत्य | தேவரீர் திருவுளத்தில் | बुद्धिमतां | அறிஞரில் |
| | கொளவித்து | वर | உந்தமரே ! |
| अस्य संग्रहः तु | இவரை அங்கீகரிப்ப | श्रुत्वा तु | செவிகொடுத்தது |
| युज्यते | யுத்தமானது [அதான் | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| राक्षसस्य | அரக்கரது | शेषस्य | இனிச்செய்யவேண்டி |
| आर्जवं प्रति | கபடி மைமையப்பற்றி | | டியதற்கு |
| यथाशक्ति | அடியேன் அற்புத்தி | प्रमाणं | சர்வ அதிகாரமும் |
| | க்கெட்டியவரையில் | | வகிக்கின்றவர் |
| मया | அடியேனால் | त्वं तु | தேவரீர் ஒருவரே.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
 युद्धकाण्डे सप्तदशः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 15254

युद्धकाण्डे भादितः श्लोकाः 579



अष्टादशः सर्गः—पतिनेट्टாவது ஸர்க்கம். ॥ १८ ॥

विभीषणसंग्रहः— விபீஷணரை அங்கீகரிப்பது.

अथ रामः प्रसन्नात्मा श्रुत्वा वायुसुतस्य ह । मत्प्रभाषत दुर्धर्षः श्रुत्वानात्मनि स्थितम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|--------------|-----------------------|
| अथ | அச்சந்தர்ப்பத்தில் | वायुसुतस्य | வாயுபுதல்வனுக்கு |
| प्रसन्नात्मा | கருணையான மன | श्रुत्वा | செவிகொடுத்தருளி |
| | முடையவரும், | आत्मनि | திருவுளத்தில் [விட்டு |
| श्रुत्वान् | வேதக்களை உருவெ | स्थितं | சாச்சுவதமாய் குடி கொ |
| | டுத்துவந்தவரும், | | ண்டிருந்ததை |
| दुर्धर्षः | எவராலும் தீங்குசெய் | प्रत्यभाषत ह | { பின்வருமாறுபதிலாய் |
| | ய முடியாதவருமான | | { திருவாய்மலர்ந்தரு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | { ளினார்: |

ममापि तु विवक्षाऽस्ति काचित्प्रति विभीषणम् । श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं भवद्भिः श्रेयसि स्थितैः॥

| | | | |
|---------------|-----------------|------------|---------------------|
| मम अपि | “எனக்கு | श्रेयसि | எனது கேட்கமத்தில் |
| विभीषणं प्रति | விபீஷணனைப்பற்றி | स्थितैः | சடுபட்டுக்கிடக்கும் |
| विवक्षा | முடிவான அபிப்பி | भवद्भिः तु | உங்களாலும் |
| काचित् | ஒன்று [ராயம் | श्रोतुं | கேட்டு (அறிந்து) |
| अस्ति | இருக்கிறது. | | கொள்ள |
| तत् सर्वं | அதை முற்றம் | इच्छामि | விரும்புகிறேன். |

मित्रभावेन संप्राप्तं न त्यजेयं कथञ्चन । दोषो यद्यपि तस्य स्यात्सतामेतदगर्हितम् ॥ ३ ॥

மित्रभाவேன
சம்பாப்தம்
கயञ்சந
ந த்யஜேயம்
தஸ்ய
தோஷ:
சுபிரீவஸ்யத
தஹாக்யமாபாப்ய
ச விஸுஹ்ய ச

“உள்ளுள்ளுபுகொண்டு
வந்தடைந்தவனை
எக்காரணத்தையு
கொண்டும்
நான் கைவிட்டமாத்
அவனுக்கு [டீடன்,
தொஷமென்பது

स्यात् यदि अपि
एतत्
सतां
अगर्हितम्
இருக்கிறதாயிருந்தா
னும் அப்படியே கை
விட்டமட்டேன்.
இதுதான்
பெரியோர்களுக்கு
நித்தனைக்கிடமாகா
தது.”

सुग्रीवस्त्वथ तद्वाक्यमाभाष्य च विमृश्य च । ततः शुभतरं वाक्यमुवाच हरिपुङ्गवः ॥ ४ ॥

अथ
हरिपुङ्गवः
सुग्रीवः
तद्वाक्यं तु
विमृश्य च
आभाष्य च
अथ
हरिपुङ्गवः
सुग्रीवः
तद्वाक्यं तु
विमृश्य च
आभाष्य च

அப்பொழுது
வானரோத்தமனு
ககீவன்
அவரது திருவாக்கை
நன்கு ஆராய்ந்து
தேரினிக்கவேண்டிய
தாய் விண்ணப்பித்
துக்கொண்டு

ततः
शुभतरं
वाक्यं
उवाच
ततः
शुभतरं
वाक्यं
उवाच
அதன்மேல்
கல்வித்தேர்ச்சியை வி
ளக்கக்காட்டுகிற
சொல்லை
பின்வருமாறு
மொழிந்தான்:

सुदुष्टो वाऽप्यदुष्टो वा किमेष रजनीचरः ॥ ५ ॥

पृषः रजनीचरः
सुदुष्टः वा
पृषः रजनीचरः
सुदुष्टः वा

“இவன் அரசக்கன்,
மிகக் கொடியவனுகளை
ருந்தா லுஞ்சரி

॥ ५ ॥
अदुष्टः वा
किं अपि
अदुष्टः वा
किं अपि
துஷ்டனில்லாதவனு
யிருந்தாலுஞ்சரி
நமக்காவதென்ன?

ईहं व्यसनं प्राप्तं भ्रातरं यः परित्यजेत् । को नाम स भवेत्तस्य यमेष न परित्यजेत् ॥

यः
तस्य
ईहं व्यसनं
प्राप्तं
भ्रातरं
परित्यजेत्
यः
तस्य
ईहं व्यसनं
प्राप्तं
भ्रातरं
परित्यजेत्

“எவன்
அவனது [டத்தை
இப்படிப்பட்ட சங்க-
அடைந்திருக்கும்
தமயனை
கைவிட்டானே

सः
कः नाम
न भवेत्
पृषः
यं
परित्यजेत्
सः
कः नाम
न भवेत्
पृषः
यं
परित्यजेत्
அவன்
எம்மட்டுடையவ
னாகத்தான்
ஆகமாட்டான்?
இவன்
யாரையும்
கைவிட்டுவிடுவான்.”

वानराधिपतेर्वाक्यं श्रुत्वा सर्वानुदीक्ष्य च । ईषदुत्सयमानस्तु लक्ष्मणं पुण्यलक्षणम् ॥

इति होवाच काकुत्स्थो वाक्यं सत्यपराक्रमः ॥ ७ ॥

सत्यपराक्रमः
काकुत्स्थः
वानराधिपतेः
वाक्यं
श्रुत्वा
पुण्यलक्षणं
लक्ष्मणं
சதற்கும் சலிவா ஆண்
பூரீராமர் [ஊயுற்ற
வானரமன்னனது
சொல்லை
செவிக்கொண்டு
புண்யமே உருவெரி
த்துவந்த
லயத்தமணரைப்
பார்த்து

॥ ७ ॥
तु
ईषत्
उत्सयमानः
सर्वान् च
उदीक्ष्य
इति वाक्यं
उवाच
इ
அவன் சொல்லில்
கொஞ்சம்
பரிசுத்தால் புண்ண
கைபுரிந்தவராகி,
எல்லோரையும்
பார்த்து
பின்வரும் வாக்கை
திருவாய்மலர்ந்தகுளி
காண். [ஊர்

अनधीत्य च शास्त्राणि वृद्धाननुपसेव्य च । न शक्यमीदृशं वक्तुं यदुवाच हरीश्वरः ॥

हरीश्वरः "வாணரமன்னன்
यत् "எனது
उवाच "சொன்னானை அனாத
शास्त्राणि "காஸ்திரங்களை
अनधीत्य च "ஐதாமலும்

वृद्धान् "பெரிநீயார்களை
अनुपसेव्य च "பணியாமலும்
ईदृशं "இவ்விதமாய்
वक्तुं "சொல்லாதற்கு
न शक्यम् "முடியாது.

अस्ति सूक्ष्मतरं किञ्चिदत्र प्रतिभाति मे । प्रत्यक्षं लौकिकं वाऽपि विद्यते सर्वराजसु ॥

मे "எனக்கு
अस "இவ்விஷயத்தில்
प्रतिभाति "கொன்றுகின்றது
यत् "எதுவோ அந்த
किञ्चित् "ஒன்று
सूक्ष्मतरं "மிக சூக்ஷ்மமாக

अस्ति "இருக்கிறது.
अपि वा "ஆயினும்
सर्वराजसु "எல்லா ராஜாக்களிடத்திலும்
लौकिकं "லோகத்தையாயும்
प्रत्यक्षं "பிரத்யக்ஷமாயும்
विद्यते "விளங்குகிறது.

अमित्रास्तत्कुलीनाश्च प्रातिदेश्याश्च कीर्तिताः । व्यसनेषु महर्तारस्तस्मादयमिहागतः ॥ १० ॥

तत्कुलीनाः च "ஐந்தீகனும்
प्रातिदेश्याः च "பிறநாட்டார்களும்
व्यसनेषु "ஆபத்துகளில்
महर्तारः "துன்பம் விளைவிக்கும்
अमित्राः "சத்துருக்களென

कीर्तिताः "சொல்லப்பட்டிருக்கி
तस्मात् "ஆகையால் [ன்றூர்கள்.
अयं "இவன்
इह "இங்கு
आगतः "வந்துசேர்ந்திருக்கின்
றான்.

अपापास्तत्कुलीनाश्च मानयन्ति स्वकान्हितान् । एष प्रायो नरेन्द्राणां शङ्कनीयस्तु शोभनः ॥

अपापाः "குற்றமற்ற
तत्कुलीनाः "ஐந்தீகள்
हितान् "நன்மை புரியும்
स्वकान् "தனது இனத்தவர்
मानयन्ति "கொண்டாடுகின்றார்
इ "இருத்தபோதிலும்

प्रायः "சாதாரணமாய்
नरेन्द्राणां "மன்னர்களுக்கு
शोभनः "தர்மமே சர்வமுமாய்
एषः "இப்படிப்பட்ட ஐந்தி
शङ्कनीयः च "அவநம்பிக்கைப்பட
வேண்டியவனே.

यस्तु दोषस्त्वया प्रोक्तो ह्यदानेऽरिवलस्य च । तत्र ते कीर्तयिष्यामि यथाशास्त्रमिदं शृणु ॥
न वयं तत्कुलीनाश्च राज्यकाङ्क्षी च राक्षसः ॥ १२ ॥

वयं "நாம்
तत्कुलीनाः च "அவன் குலத்தில்
राक्षसः हि "பிறந்தவராகவும்
अराக்கலும்

राज्यकाङ्क्षी च "ராஜ்யத்தில் ஆசை
न "இல்லை.
वया "உன்னால்

| | | | |
|--|-------------------------------|---------------|--------------------------------|
| அறிவலக்ய | சத்துருகவர் சேர்ந் தவளை | நக | அல்கிஷயத்தில் |
| பாதினே | அங்கிகரிக்கும் கிஷ யத்தில் | யயாசாஸ | சாஸ்திரவிதியெது |
| ய: | எதெரன் று | இந் | இதை [வே |
| ரோப: | தேரநமாச | நெ | உணக்கு |
| மோக: | சொல்லப்பட்டதே ர | கிநிவிஷ்யமி | கிரமாய்ச் சொல்லப் பொகிறேன். |
| பஷ்டிதா ஹி பவிஷ்யந்தி தஸ்யாஹாஸி விர்மாபண: | | சுறு | கவரமாய்ச் கேள். |
| பஷ்டிதா: | "தர்மநூலிகளும் | ॥ १३ ॥ | |
| பவிஷ்யந்தி ஹி | இருப்பார்கள் அன் | விர்மாபண: | விவணன் |
| தஸ்யாத் | ஆலகயால் [வே | மாஷ: | அங்கிகரிக்கப்பட வேண்டியவன். |

அவ்யமாத்ர ப்ரஹ்மாத்ர ந பவிஷ்யந்தி சஹ்தா: | ப்ரணாத்ர ப்ரஹ்மணிப தநாஸ்ய ப்ரமாமாத்ரம் ॥

இதி ப்ரெத் ரபிஷ்யந்தி தஸ்யாஹாஸி விர்மாபண: ॥ १४ ॥

| | | | |
|--------------------|------------------------------------|-----------|--------------------------------|
| சஹ்தா: | "ஒன்றுசேர்ந்து ஆவர்கள் | சர்வ | அபத்து |
| அவ்யமாத்ர: ச | சக்கரவிஸ்வாதவர்க ளாகவும் | பாஸந் | கிட்டியிருக்கிறது. |
| ப்ரஹ்மாத்ர: ச | மணச்சுந்துஷ்டிகொ ண்டவர்களாகவும் | நத: ச | ஆனதுபந்தித்தான் |
| பவிஷ்யந்தி ந ஹி | இருக்கமாட்டார்கள். | ரூப: | இந்த |
| ப்ரெத் | அப்படித்தான் | ப்ரணாத்ர: | (உதவியை வேண்டும்) கப்பாடு |
| ரபிஷ்யந்தி | வினைவை | ப்ரஹ்மணிப | உருக்கமாயிருக்கிறது. |
| ஸ்ய | அண்டகின்றுர்கள். | தஸ்யாத் | ஆலகயால் |
| | அவனுக்கு | விர்மாபண: | விவணன் |
| | | மாஷ: | அங்கிகரிக்கப்பட வேண்டியவன். |

ந சர்வே ஶ்ராதர்ஸ்தாத் பவந்தி பரதோபமா: | மஹிஷா வா பிது: புத்ரா: சுஹ்ரதோ வா பவஹிஷா: ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|------------|------------------|
| தாத | "ஆப்பளை! | பிது: | நர் தக்கையெனிடமி |
| ஶ்ராதர்: | தம்பிமர்கள் | மஹிஷா: | என்போன்ற [ருந்து |
| சர்வ | எல்லோருமே | புத்ரா: வா | புதல்வர்களும் |
| பரதோபமா: | பாதலுக்கு ஒப்பான வர்களாகவும் | பவஹிஷா: | உன்போன்ற |
| | | சுஹ்ரத: வா | பெயர்விவர்களும் |
| | | பவந்தி ந | இல்லை." |

பவமுக்ஷஸ்து ராமேண சுயீவ: சஹ்ரஹ்மண: | உஸ்தாபேத் மஹாபாஹ: ப்ரணதா வாச்யமவவீத் ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------|------------------|
| மஹாபாஹ: | மகாபாஹிசா த்ரஹ்மணிய | உக்: | சொல்லப்பட்டவனும் |
| சுயீவ: | கக்ரீவன் | வ்யாய | எழுந்து |
| சஹ்ரஹ்மண: | ஸஹ்ரஹ்மண: இவருட | ப்ரணத: து | பலிக்கு இன்னும் |
| ராமேண | பூதீராமரால் | இத் வாச்ய | பின்வரும் சொல்லி |
| பவ | வேற்கண்டவரது | மவவீத் | சொன்னான்: |

रावणेन प्रणिहितं तमवेमि विभीषणम् । तस्याहं नियहं मन्ये क्षमं क्षमवतां वर ॥ १७ ॥

क्षமவதா
वर
ते
विभीषणं
रावणेन
प्रणिहितं

“பொறுமை உள்ளவர்
உத்தமரே! [களுள்
அந்த
விசிஷணனை
ராவணனால்
ஆணுப்பப்பட்டவனாய்

अवेमि
तस्य
नियहं
क्षमं
अहं
मन्ये

நான் அறிகின்றேன்.
அவனை
வதைப்பது
நல்லதென
நான்
நினைக்கின்றேன்.

राक्षसो जिह्वया बुद्ध्या संदिष्टोऽयमिहागतः । प्रहर्तुं त्वयि विश्वस्ते प्रच्छन्नो मयि वाऽनघ ॥
लक्ष्मणे वा महाबाहो स बध्यः सचिवैः सह । रावणस्य नृशंसस्य भ्राता शेष विभीषणः ॥

अनघ
महाबाहो
एषः
विभीषणः
नृशंसस्य
रावणस्य
भ्राता
अयं राक्षसः
जिह्वया
बुद्ध्या
विश्वस्ते
त्वयि
मयि वा

“தேரவுரைகிறே!
மகாபாகுவே!
இந்த
விசிஷணன்
கொடிய கருத்துள்ள
ராவணனது
தம்பி,
இந்த அரசர்கள்
கபடான
எண்ணக்கொண்டு
நம்பிக்கைவைத்த
தேவரீர்விஷயத்திலும்
அடியேன் விஷயத்தி
லும்

लक्ष्मणे वा
प्रच्छन्नः
प्रहर्तुं
संदिष्टः
इह
आगतः
हि
सः
सचिवैः सह
बध्यः

லக்ச்மணன் விஷயத்
திலும்
கபடுள்ள தடை நல்வே
ஷத்தால் மறைத்துக்
கொண்டு
தீங்குபுரிய
நியமிக்கப்பட்டவனாய்
இங்கு
வந்துசேர்ந்திருக்கி
ஆனபடியால் [ரான்.
அவன்
மந்திரிமார்களோடு
கூட
கொல்லப்படவேண்டி
யவன்.”

एवमुक्त्वा रघुश्रेष्ठं सुग्रीवो वाहिनीपतिः । वाक्यज्ञो वाक्यकुशलं ततो मौनमुपागमत् ॥ २० ॥

वाहिनीपतिः
वाक्यज्ञः
सुग्रीवः
वाक्यकुशलं

சேனாதிபதியும்
பேசுவதில் சமர்த்த
சுகரீவன், [ஹமாகிய
பேசுவதில்
க்ரோஷ்டனாகிய

रघुश्रेष्ठं
एवं
उक्त्वा
ततः
मौनं उपागमत्

ரகுத்தமரிடம்
மேற்கண்டவாறு
சொல்லிவிட்டு
அதன்பிறகு
மௌனமாயிருந்தான்.

सुग्रीवस्य तु तद्वाक्यं रामः श्रुत्वा विमृश्य च । ततः शुभतरं वाक्यमुवाच हरिपुङ्गवम् ॥

सुग्रीवस्य
तद्वाक्यं श्रुत्वा
रामः
ततः च
तु
विमृश्य

சுகரீவனது
அம்மொழியைக்
ஸ்ரீராமர் [கேட்ட
அப்பொழுதுதான்
தனக்கு வேண்டியபடி
சமயம் கிடைத்ததெ
ன திருவுள்ளத்திற்
கொண்டு

हरिपुङ्गवं
शुभतरं
वाक्यं
उवाच

வானரோத்தமனைப்
பார்த்து
பெருமையை விளக்
கக்காட்டுகிற
திருவாக்கை
யின்வருமாறு திரு
வாய்மலர்ந்தருளிணர் :

स दुष्टो वाऽप्यदुष्टो वा किमेष रजनीचरः । सूक्ष्मप्यहितं कर्तुं पमाशक्तः कथञ्चन ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------------|------------------|
| सः | "அவன் | किं एषः | எனக்கு இவன் |
| दुष्टः | துஷ்டனாயிருந்தா | | எம்மட்டும்? |
| | லும் சரி | कथञ्चन | என்ன பாடுபட்டா |
| अदुष्टः वा | துஷ்டனில்லாதவனா | मम | எனக்கு [லும் |
| | யிருந்தாலும் சரி | अहितं | நினைக்க |
| रजनीचरः वा | அரங்கனாகவேயிருந் | सूक्ष्मं अपि | என்னளவேலும் |
| | தர லும் சரி | कर्तुं अशक्तः अपि | செய்யமுடியாதவனே. |

पिशाचान्दानवान्यक्षान्पृथिव्यां चैव राक्षसान् । अद्भुत्यश्रेण तान्हन्यापिच्छन्दरिगणेश्वर ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------------|------------------|
| हरिगणेश्वर | "வானர கண மன்னு! | तान् | அந்த |
| पृथिव्यां | உலகில் | राक्षसान् एव | அரக்கர்களுக்கும் |
| पिशाचान् | பிசாசுகளையும் | इच्छन् | கருகினால் |
| दानवान् | அடவர்களுக்கும் | अद्भुत्यश्रेण | விரல்துளியால் |
| यक्षान् च | யக்ஷர்களுக்கும் | हन्याम् | (எனக்கு) ஒழிக்க |
| | | | முடியும். |

श्रूयते हि कपोतेन शत्रुः शरणमागतः । अर्चितश्च यथान्यायं स्वैश्च मांसैर्निमन्त्रितः ॥२४॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|---------------------|
| शत्रुः | "சத்ரு | सैः | தனது |
| शरणं आगतः | சரணமடைந்தவனாகி | मांसैः च | மாம்சங்களைக் |
| कपोतेन हि | ஒரு புறவினாலேயே | | கொண்டே |
| यथान्यायं | சாஸ்திர விதிப்படி | निमन्त्रितः | விருந்தண்ணாடிக்கப் |
| अर्चितः च | அர்ச்சிக்கப்பட்ட | | பட்டான் என்று |
| | வனாய் | श्रूयते | வந்திக்கப்படுகிறது. |

(ஓர் வேடன் ஓர் வானத்தில் விலங்கினங்களுக்கும் புள்ளிவைக்கலையும் வருத்தி வாய் வளர்க்கும் கொடியனாய் வாழும்வான், புயலொடு மழைபொருவான் பொழிய குளிர்நடுக்கங்கொண்ட ஆவ்வேடன் வழியில் மழையால் மதிமடல்க்கிடக்கும் ஓர் பெண்புறவை கண்டெடுத்து, கூட்டில் அடைத்துக்கொண்டு குளிர்காயவும் பசி தீர்க்கவும் வழிகாணுதலையும், அருகில் ஓர் மரத்தடிக்கே, அங்கு தனது புறப்பெடு வாய் வருத்தத்தால் வாயும் ஆண்புறவை போக்கி, கூட்டிலிருக்கும் பெண்புற, நான் "இதே மரத்தருகைப்பட்டேன். எனக்காக வருந்தாதே. சந்துருவாயிலும் இவன் குளிவாப்போக்கவும் உணவை வேண்டியும் நமது மரத்தடிக்கு அதிதியாய் வந்திருக்கிறான். அவனை உபசரித்து நலம் பெறுவாய் என்று சொல்லக்கேட்ட ஆண்கேரதம் விரகுகளைக் கூட்டித் தீவாட்டி வேடனவேண்டி குளிர்காய்வித்து உணவின் பொருட்டு உடையுடைய பீண்டும் சரகுகளைக் கொளுத்தி அதில் விழ்ந்திறந்தது என்பது கதை).

स हि तं प्रतिजग्राह भार्याहर्तारमागतम् । कपोतो वानरश्रेष्ठ किं पुनर्मद्विधो जनः ॥२५॥

வானரश्रेष्ठ
ச:
कपोतः हि
भार्याहर्तारि
आगतं
तं

“வானரோத்தம!
ஆந்த
ஒரு புறாவை
மனை வினையக்கவர்க்கு
திரும்பிவந்தடைந்த
ஆவனை

प्रतिजग्राह
जनः
मद्विधः
किं पुनः

ஏற்றுக்கொண்டது.
மாணிடஞ்சிய
என் போன்றவன்
{ ஏற்றுக்கொள்ளா திரு
த்தலும் தர்மமாகு
மோ ?

ऋषेः कण्वस्य पुत्रेण कण्डुना परमर्षिणा । शृणु गाथां पुरा गीतां धर्मिष्ठां सत्यवादिनीम् ॥

पुरा
कण्वस्य ऋषेः
पुत्रेण
कण्डुना
परमर्षिणा
गीतां

“முன்னொருகால்
கண்வரிஷியினது
புதல்வரும்
கண்டுவினனும்
முனிவர் பெருமானால்
பாடப்பெற்றதும்

धर्मिष्ठां
सत्यवादिनीं
गाथां
शृणु

உத்தமதர்மத்தை
உபதேசிப்பதுமான
{ சாஸ்திர விதிகளின்
ஸ்திசத்தமத த்வத்தை
பிரதர்சிப்பதுமா
பாட்டை [ன
(சொல்லுகிறேன்)
கேள்.

बद्धाञ्जलिपुटं दीनं याचन्तं शरणागतम् । न हन्यादानुशंस्यार्थमपि शत्रुं परन्तप ॥ २७ ॥

परन्तप
शत्रुं अपि
बद्धाञ्जलिपुटं
दीनं

“படைவரைத் தடிக்
கச்செய்பவனை!
சத்ருவாயிருந்தாலும்
கைகப்பியவனும்
ஏழையாய்

याचन्तं
शरणागतं
आनुशंस्यार्थं
न हन्यात्

இரந்து
சரண்புகுந்தவனை
கருணையின் பிரயோ
ஜனமாய்
கைவிடலாகாது.

आतो वा यदि वा ह्यः परेषां शरणागतः । अरिः प्राणान्परित्यज्य रक्षितव्यः कृतात्मना ॥

आतः
ह्यः यदि वा
परेषां
शरणागतः
अरिः वा

“கொந்தவனுயிருந்தாலும் சரி
செருக்குற்றவனுயிருந்தாலும் சரி
இதரர்களுடைய
உதவியை வேண்டி
வந்தடைந்தவன்
சத்ருவாயினும்

कृतात्मना
प्राणान्
परित्यज्य
रक्षितव्यः

{ தர்மத்திற்கு விடக்கா
னதில் புகாத சித்த
முடைய ஒருவனால்
உயிரை
கொடுத்தும்
ரஷிக்கப்படவேண்டி
யவன்.

स चेद्भयाद्वा मोहाद्वा कामाद्वाऽपि न रक्षति । स्वया शक्त्या यथासत्त्वं तत्पापं लोकमर्हितम् ॥

सः
भयात् वा
मोहात् वा
कामात् अपि वा
यथासत्त्वं

“ஆவன்
பயத்தாலோ
அறிவாமையாலோ
(வேறு) மனப்போக்
காலோ
தன்னால் இயன்ற
மட்டும்

स्वया
शक्त्या
रक्षति न चेत्
तत्
पापं
लोकमर्हितम्

தனது
சக்தியைக்கொண்டு
ரகலியா திருக்கின்ற
ஆந்த [னென்றால்
குற்றம்
உலகவித்தனைக்குட்
பட்டதாகும்.

विनष्टः पश्यतस्तस्य रक्षिणः शरणागतः । आदाय सुकृतं तस्य सर्वं मच्छेदरक्षितः ॥

| | | | |
|---------|----------------------------------|--------------|-------------------------|
| रक्षिणः | “ காப்பாற்ற சுத்தி புண்டய | अरक्षिनः | காப்பாற்றப்படாது, |
| तस्य | அவன் | विनष्टः | ஆபத்தை அடைந்த வரால், |
| पश्यतः | பார்த்துக்கொண்டிரு க்கையிலேயே | तस्य | அவனது |
| शरणागतः | சரணாகதன் | सुकृतं सर्वं | புண்யசமுச்சயத்தை |
| | | आदाय मच्छेत् | அழித்துகொடுவான். |

एवं द्रोणो महानत्र प्रपन्नानापरक्षणे ॥ ३१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|--------|------------------|
| प्रपन्नानां | “ தஞ்சமாய் வந்த டைந்தவர்களை | अत्र | இவ்விடயத்தில் |
| अपरक्षणे | காப்பாற்றாது கைவிடும் | एवं | மேற்சொல்லியபடி |
| | | महान् | மகத்தான |
| | | द्रोणः | தேவமிகுக்கிறான். |

अस्वर्ग्यं चायशस्यं च बलवीर्यविनाशनम् । करिष्यामि यथार्थं तु कण्ठोर्वचनमुत्तमम् ॥

| | | | |
|----------------|---|-----------|------------------------|
| अस्वर्ग्यं च | “ ஸ்வர்க்கத்தை தரா த இது. | तु | இவ்விடயத்தில் |
| अयशस्यं च | புகழை ஒழிக்கவல்ல து இது. | कण्ठोः | கண்டுகரிஷ்யினது |
| बलवीर्यविनाशनं | { ஆற்றலாண்மை இவ் விரண்டையுமகற்று வது இது. | उत्तमं | சர்வோத்திருவடி மரிய |
| | | वचनं | உபதேசத்தை |
| | | यथार्थं | உள்ளபடி |
| | | करिष्यामि | செய்யப்படுகிறேன். |

धर्मिष्ठं च यशस्यं च स्वर्ग्यं स्यात् फलोदये ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|--------------|--|
| धर्मिष्ठं च | “ தர்மத்தை வளர்க் கும் அது | फलोदये | தர்மத்தில் பயன் பலிக்கும் வேளையில் |
| यशस्यं च | புகழைத்தருவதும் அது | स्वर्ग्यं तु | ஸ்வர்க்கத்தை அளிப் பதும். [பதாகவும் |
| | | स्यात् | |

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्दत्तं मम ॥ ३४ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|----------------|---------------------------------|
| प्रपन्नाय | “ கட்டமடைந்து | सर्वभूतेभ्यः च | எல்லாப்பிராணிகளிடத்திலிருந்தும் |
| तव अस्मि | ‘உனது பொருள் கான்’ | अभयं | அபயத்தை |
| इति | என்று | ददामि | கொடுக்கிறேன். |
| याचते | வேண்டுகிறவனுக்கு | एतत् | இது |
| सकृदेव | எக்காலத்திலுமே | मम | எனது |
| | | वतम् | சங்கல்பம். |

आनयैनं हरिश्रेष्ठ दत्तमस्याभयं मया । विभीषणो वा सुग्रीव यदि वा रावणः स्वयम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|--------------------|
| हरिश्रेष्ठ | “வானரோத்தம! | स्वयं | ஸாஸனாத் |
| मया | என்னால் | रावणः यदि वा | ராவணனாகத்தரணி |
| अस्य | இவனுக்கு | | ருக்கட்டும் |
| अभयं | அபயமானது | एनं | இவனை (வந்திருக்கிற |
| दत्तं | கொடுத்துவிடப் | | வனை) |
| सुग्रीव | சுகீவ! [பட்டது. | आनय | ஈ அழைத்துவருவா |
| विभीषणः वा | விபீஷணனாகத்தர | | யாக.” |
| | ணிருக்கட்டும் | | |

रामस्य तु वचः श्रुत्वा सुग्रीवः पुत्रमेश्वरः । प्रत्यभाषत काकुत्स्थं सौहार्देन प्रचोदितः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|---------------------|
| पुत्रमेश्वरः | வானரமன்னனாகிய | प्रचोदितः | தூண்டப்பட்டவனாய் |
| सुग्रीवः | சுகீவன் | तु | இப்பொழுது |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு |
| वचः | சொல்லை | काकुत्स्थं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| सौहार्देन | அன்பினதீசயத்தால் | प्रत्यभाषत | பின்வருமாறு பதி |
| | | | துரைத்தான் : |

किमत्र चित्रं धर्मज्ञ लोकनाथ सुखावह । यन्वमार्यं प्रभाषेथाः सन्वयान्सत्यथे स्थितः ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|-------------------|
| धर्मज्ञ | “தர்மமறிந்தவரே! | स्थितः | பிறழாத ஒழுக்கும் |
| लोकनाथ | லோகநாதரே! | एवं | தேவரீர் |
| सुखावह | யாவருக்கும் நன்மை | यत् | எந்த |
| | பளிப்பவரே! | अयं | பூதூர் தறச்சொல்லை |
| सन्वयान् | சத்துவகுணமே | प्रभाषेथाः | அருளினீரோ |
| | உருக்கொண்டு | अस्य | இதில் |
| सत्यथे | தர்மநெறியில் | किं चित्रम् | ஆச்சர்யமென்ன? |

मम चाप्यन्तरात्माऽयं शुद्धं वेत्ति विभीषणम् । अनुमानाच्च भावाच्च सर्वतः सुपरीक्षितः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------------|-----------------|
| अनुमानात् च | “முன்னடவடிக்கை | मम | அடியேனது |
| | யின் ஒற்றுமையாலும் | अयं अन्तरात्मा च | இந்த உள்ளமும் |
| भावान् च | தற்கால நடவடிக்கை | विभीषणं | விபீஷணரை |
| | யாலும் | शुद्धं अवि | உள்ளும் புறமும் |
| सर्वतः | சர்வப்பிரகாரத்திலும் | | ஒரேமாதிரியென |
| सुपरीक्षितः | நன்கு மனதினால் ஆ | वेत्ति | உணர்கிறது. |
| | ராய்ச்சிசெய்யப்பட்ட | | |

तस्मात्क्षिप्रं सहास्राभिस्तुल्यां भवतु राघव । विभीषणो महाप्राज्ञः सखित्वं चाभ्युपैतु नः॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|-----------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | तुल्यः | சமமானதாக |
| तस्मात् | ஆகையால் | भवतु | ஆகட்டும். |
| क्षिप्रं | தாமதமின்றி | नः | நமது |
| सहास्राज्ञः | மகா புத்திமானாகிய | सखित्वं च | சகாவாழிருக்கும் |
| विभीषणः | விபீஷணர் | | தன்மைமையயும் |
| अस्माभिः सह | எங்களோடுகூட | अभ्युपैतु | அடைபட்டும்.” |

ततस्तु सुग्रीववचो निशम्य तद्वरीश्वरेणाभिहितं नरेश्वरः ।
विभीषणेनाशु जगाम सङ्गमं पतत्रिराजेन यथा पुरन्दरः

॥ ४० ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|---------------------------|
| नरेश्वरः | புருஷோத்தமன் | पतत्रिराजेन | கருடபகவானோடு |
| सतः | அப்பொழுது | यथा | எல்லவண்ணமோ அவ்வண்ணமே, |
| तम् | அந்த | हरीश्वरेण | காரணமடன்றனனால் |
| सुग्रीववचः | சுமீரீவனது சொல்லீடு | अभिहितं | பாற்றுக்கொள்ளப் பட்டதாகிய |
| निशम्य तु | கேளிக்கொண்ட | सङ्गमं | சேனகலாவத்தை |
| आशु | தசைண்ணமே | जगाम | அடைந்தார். |
| विभीषणेन | விபிஷணனோடு, | | |
| पुरन्दरः | இந்திரன் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे अष्टादशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15294

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 619



एकोनविंशः सर्गः—பத்தொன்பதாம் எண்க்கம். ॥ २९ ॥

वृक्षशयनम्—தர்ப்பைபகளில் படுப்பது.

राघवेणाभये दत्ते संनतो रावणानुजः । विभीषणो महाप्राज्ञो भूमिं समवलोकयत् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-----------|----------------------------|
| राघवेण | புரீராமனால் | विभीषणः | விபிஷணர் |
| अभये दत्ते | அபயம் அளிக்கப் பட்டவளவில் | सन्नतः | உத்தேசம் கைகடப் பெற்றவராய் |
| रावणानुजः | ராவணன் தம்பியும் | भूमिं | பூமியை |
| महाप्राज्ञः | மகா புத்திமான்முகிய | समवलोकयत् | பார்த்தார். |

खात्पपातावनीं हृष्टो भक्तैरनुचरैः सह ॥ २ ॥

| | | | |
|---------|---------------------|-------|-------------------|
| हृष्टः | உள்ளம் பூரித்தவராகி | खात् | சுகூடத்தினின்றும் |
| भक्तैः | பக்திமான்களாகிய | अवनीं | பூசல்க்கீழ் |
| अनुचरैः | மக்திபாளர்களைட்டு | पपात | வந்திரக்கீழார். |
| सह | கூட | | |

स तु रामस्य धर्मात्मा निपपात विभीषणः । पादयोः शरणान्वेषी चतुर्भिः सह राक्षसैः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|----------|----------------------|
| सः | அந்த | राक्षसैः | கொக்கர்களோடு |
| शरणान्वेषी | (மாவரும்) புகுவிடத் தாதத் தோடும் | सह | கூட |
| धर्मात्मा | தர்மம், நர்மாவாகிய | रामस्य | புரீராமாது |
| विभीषणः | விபிஷணர் | पादयोः | திருவடிகளில் |
| चतुर्भिः | நான்கு | तु | தீப்பொழுது |
| | | निपपात | விழுந்து செவித்தார். |

अब्रवीच्च तदा रामं वाक्यं तत्र विभीषणः । धर्मयुक्तं च युक्तं च सांप्रतं संप्रहर्षणम् ॥४॥

ததா
தத
விभीஷண:
ராமம்
धर्मयुक्तं च
युक्तं च

அதன்மேல்
அவ்விடத்தில்
விபிஷணர்
ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
தர்மத்தை ஒத்திருக்கிறதும்
ஏற்றதாயிருக்கிறதும்

சாம்பரம்
சம்பஹ்ஷணம் ச
வாக்யம்
அவ்விதம்
யுக்தம் ச

இப்பொழுது
எல்லோருக்கும் சந்தேகத்தை விளைவிக்கிறதான ஒரு சொல்லை பின்வருமாறு மொழிந்தார் :

अनुजो रावणस्याहं तेन चाप्यवमानितः । भवन्तं सर्वभूतानां शरण्यं शरणागतः ॥ ५ ॥

அஹம்
ராவணஸ்ய
அனுஜ:
தென ச
அவமானித:
அவமானித:

“அடியேன்
ராவணனது
தம்பி.
அவனாலும்
அவமதிக்கப்பட்டேன்.

சர்வபூதானாம் அபி
சரண்யம்
भवन्तं
शरणागतः

எல்லா பிராணிகளுக்கும்
அடைக்கலமாகிய
தேவரீரை
சரணமாக அடைந்திட்டேன்.

परित्यक्ता मया लङ्का मित्राणि च धनानि वै । भवद्गतं मे राज्यं च जीवितं च सुखानि च ॥

மயா
லங்கா
परित्यक्ता
मित्राणि
धनानि वै
च

“அடியேனால்
இலங்கை நகர்
கைகழுவப்பட்டது.
மித்திரர்களும்
ஸர்வஸுவமும்
அப்படியே கைகழுவப்பட்டன.

மே
राज्यं च
भवद्गतं
जीवितं
च
सुखानि
च

அடியேனது
ராஜ்யமும்
தேவரீரஜினம்,
உயிரும்
அப்படியே தேவரீரஜிநந்திகளும் [னம்,
தேவரீர் திருவுளமே.”

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामो वचनमब्रवीत् । वचसा सान्त्वयित्वैनं लोचनाभ्यां पिबन्निव ॥

ராம:
तस्य
तद्वचनं
श्रुत्वा
लोचनाभ्यां
पिबन् इव

ஸ்ரீராமர்
அவரது
அம்மொழியை
செவியுற்று,
இரு திருக்கண்களாலும்
குளிசக் கடாவிப்பதா
லுறிஞ்சிப் பருகு
பவர்போன்றாகி

वचसा
एनं
सान्त्वयित्वा
वचने
अब्रवीत्

முகமன்மொழி
கொண்டு
இவரை
உள்ளங்குளிசச்
செய்து
ஓர் மொழியை
பின்வருமாறு மொழி
ந்தார் :

आख्याहि मम तच्चेन राक्षसानां बलाबलम् ॥ ८ ॥

राक्षसानां
बलाबलं
मम

“அரக்கர்களது
பலாபலத்தை
எனக்கு

सर्वेन
आख्याहि

உள்ளது உள்ளவாறு
நீர் விளக்கச்
செல்லும்.”

एवमुक्तं तदा रक्षो रामेणाक्रिष्टकर्मणा । रावणस्य वलं सर्वमाख्यातुमुपचक्रमे ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|----------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | रावणस्य | ராவணனது |
| अक्रिष्टकर्मणा | செய்யாதகாரியங்களையும் செய்வதில்ல | वलं | பலத்தைப்பற்றி |
| रामेण | ராமனால் | सर्वं | எதையும் விடாது |
| एवं | இவ்வாறும் | आख्यातुं | பின்வருமாறு விளக்க |
| उक्तं | வினாவப்பட்ட | | கச்சொல்ல |
| रक्षः | அரக்கர், | उपचक्रमे | தலைப்பட்டார்: |

अवध्यः सर्वभूतानां गन्धर्वासुररक्षसाम् । राजपुत्र दशश्रीवो वरदानास्स्वयंभुवः ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|--------------------|---|
| राजपुत्र | “சக்கிரவர்த்தி திரும கனுரீர! | गन्धर्वासुररक्षसां | கந்தர்வர், அசுரர், அரக்கர் இவர்களுக்கும் |
| दशश्रीवः | தசசீரவன் | सर्वभूतानां | { பிரமனது சிருஷ்டிக் குட்பட்ட ஏவ்வனக பிராணிக்ளும் |
| स्वयंभुवः | பிரம்மதேவரிடமிருந் | अवध्यः | கொல்லமுடியாதவன். |
| वरदानात् | கிடைத்த வரத்தினால் | | |

रावणानन्तरो भ्राता मम ज्येष्ठश्च वीर्यवान् । कुम्भकर्णो महातेजाः शक्रप्रतिवयो युधि ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------------|-------------------------------|
| रावणानन्तरः | “ராவணனுக்கு கோரி கோய | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| भ्राता | தம்பியும் | युधि | போரில் |
| मम | அடியேனுக்கு | शक्रप्रतिवयः | இந்திரனை எதிராகக் கொள்ளத்தக்க |
| ज्येष्ठः च | தனம்பலமுள்ள | महातेजाः | மகத்தான ஆற்ற ஹைடீயான். |
| वीर्यवान् | பல சக்கிரமசர விளக்கிய | | |

राम सेनापतिस्तस्य प्रहस्तो यदि वा श्रुतः । कैलासे येन संग्रामे माणिभद्रः पराजितः ॥

| | | | |
|----------|------------------|-----------|---|
| राम | “ராமன்! | माणिभद्रः | { குப்பிரமனது சேனாதிப தியாகிய மாண்பத் திரன் |
| सस्य | அவனுக்கு | पराजितः | கொந்தடிக்கப்பட்டான். |
| सेनापतिः | சேனாபதி | यदि वा | இது தேவீரும் |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தனென்பவன். | श्रुतः | கேள்வியற்றிருக்கக் கூடும். |
| येन | எந்த இவனால் | | |
| कैलासे | கைலாஸத்தில் | | |
| संग्रामे | போரில் | | |

बद्धगोधाङ्गुलित्राणस्त्वध्यकवचो युधि । धनुरादाय यस्तिष्ठन्नदृश्यो भवतीन्द्रजित् ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------|------------|---------------------------|
| इन्द्रजित् | “இந்திரஜித்து என்பவன் | अवध्यकवचः | பொக்கவொண்ணாத கவசம் பூண்டு |
| यः | எவனோ அவன் | धनुः | தனுசை |
| युधि | போரில் | आदाय | கைநிலைத்திக் |
| बद्धगोधाङ्गुलि-} | உடம்புத்திரகாளரை | तिष्ठन् तु | நின்றவாதே [கொண்டு |
| त्राणः | கிய விற்றதென | अदृश्यः | பிரகருக்குக்கட்புலனா |
| | யலிந்து | भवति | ஆகிறது. [காதவனால் |

संश्रामसमयव्यूहे तर्पयित्वा हुताशनम् । अन्तर्धानगतः शत्रूनिन्द्रजिह्वन्ति राघव ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------------------|---|
| राघव | "ஸ்ரீராம! | संश्राम- समयव्यूहे | } போர்புரியும் வேளை வணிகருக்கப்பட்ட படையினிடையில் |
| इन्द्रजित् | இந்திரஜித்து | अन्तर्धानगतः | |
| हुताशनं | அக்னிபகவானை | शत्रून् | |
| तर्पयित्वा | உள்ளங்குளிரச்செய்து | हन्ति | |

महोदरमहापाशैः राक्षसश्चाप्यकम्पनः । अनीकस्थास्तु तस्यैते लोकपालसमा युधि ॥ १५ ॥
दश कोटिसहस्राणि रक्षसां कामरूपिणाम् । मांसशोणितभक्षणां लङ्कापुरनिवासिनाम् ॥

| | | | |
|------------------------|--|-----------------------|--|
| तस्य | "அவனது | कामरूपिणां | தினைத்த உருவமெடுக்க க வல்லவர்களும், |
| अनीकस्थाः तु | சேனையினுள்ள | मांसशोणित- भक्षणां | } ஊனையும், உதிரத்தை யமுணவாய்க்கொண்ட டவர்களும், |
| महोदर- महापाशैः अपि | மகோதரனைப்பவ னும், மகரபாச்சுவ னைப்பவனும், | लङ्कापुरनिवासिनां | |
| अकम्पनः | அகம்பனனென்ற | रक्षसां | அரக்கர்களின் |
| राक्षसः च | அரக்கனுமாகிய | दश कोटिसहस्राणि च | பதினாயிரம் கோடியும் அக்கனமே லோகபா ஸர்களை நிகர்த்தது. |
| एते | இவர்களெல்லாம் | | |
| युधि | போரில் | | |
| लोकपालसमाः | லோகபாஸர்களை நிகர்த்தவர்கள். | | |

स तैस्तु सहितो राजा लोकपालानयोधयत् ॥ १७ ॥

| | | | |
|------|-----------|-----------|-------------------|
| सः | "அந்த | सहितः तु | சேர்க்கிதே |
| राजा | மன்னன் | लोकपालान् | லோகபாஸர்களை |
| तैः | அவர்களோடு | अयोधयत् | போரிலெதிர்த்தான். |

सह देवैस्तु ते भग्ना रावणेन महात्मना ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------|------------|----------|---|
| ते | "அவர்கள் | महात्मना | மகத்தான ஆற்றலு டவனானால் [டைய முறியடிக்கப்பட்டார் கள்.] |
| देवैः | தேவர்களோடு | रावणेन | |
| सह तु | கூடவே | भग्नाः | |

विभीषणवचः श्रुत्वा रामो दृढपराक्रमः । अर्वाक्ष्य मनसा सर्वमिदं वचनमर्वात् ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|------------|-------------------------------|
| दृढपराक्रमः | எதற்கும் சலியா ஆண்மைபுடைய | मनसा | மனதினுள்ளேயே |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अर्वाक्ष्य | ஆராய்க்கது |
| विभीषणवचः | விபிஷணனது சொல் | इदं | பின்வரும் |
| श्रुत्वा | செவிக்கொண்டு [லை | वचनं | திருவாய்க்கை |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் | अर्वात् | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார் : |

यानि कर्मापदानानि रावणस्य विभीषण । आख्यातानि च तच्चेन ह्यवगच्छामि तान्यहम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|---------------|
| विभीषण | " விभीஷண ! | तानि च | அவைகளை |
| रावणस्य | ராவணனது | तच्चेन | உன்னால் |
| कर्मापदानानि | சூரத்தொழில்களாய் | अहं | நான் |
| यानि | எவைகள் | अवगच्छामि | இப்பொழுது அறி |
| अख्यातानि हि | சொல்லப்பட்டவை | | கின்றேன். |
| | கனோ | | |

अहं हत्वा दशग्रीवं समहस्ते सवान्धवम् । राजानं त्वां करिष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|-----------------|
| अहं | " நான் | राजानं | மன்னரை |
| दशग्रीवं | தசகிரிவளை | करिष्यामि | ஆக்கப்போகிறேன். |
| समहस्ते | பிரகஸ்தனூடனும் | एतत् | இதை |
| सवान्धवं | பந்துக்களுடனும் | ते | உனக்கு |
| हत्वा | கொன்று | सत्यं | சத்தியமாக |
| त्वां | உன்னை | ब्रवीमि | சொல்லுகிறேன். |

रसातलं वा प्रविशेत्पातालं वाऽपि रावणः । पितामहसकाशं वा न मे जीवन्विमोक्ष्यते ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|-------------------|
| रावणः | " ராவணன் | पितामह- | பிரம்மதேவரின் சன் |
| रसातलं वा | ரஸாதலத்திற்குத்தா | सकाशं वा) | னிதிக்குத்தானாகத் |
| | னாகட்டும் | प्रविशेत् अपि | சென்றாலும் [டும் |
| पातालं वा | பாதாளத்திற்குத் | जीवन् | உயிருடன் |
| | தானாகட்டும் | मे | எனக்கு |
| | | विमोक्ष्यते न | தப்பான். |

अहत्वा रावणं संख्ये सपुत्रबलवान्धवम् । अयोध्यां न प्रवेक्ष्यामि त्रिभिस्तैर्भ्रातृभिः शपे ॥

| | | | |
|-----------|---|-----------------|-------------------|
| संख्ये | " போரில் | प्रवेक्ष्यामि न | புகப்போகிறதில்லை. |
| रावणं | ராவணனை | तैः | அந்த |
| सपुत्रबल- | புத்திரர்களுடனும், சேனைகளுடனும், பந்துக்களுடனும், | विभिः | முன்று |
| वान्धवं | | भ्रातृभिः | தம் சார்தனின்மீது |
| अहत्वा | கொல்லாது | शपे | ஆணையிட்டுச்சொல் |
| अयोध्यां | அயோத்திய நகருக் | | குகின்றேன்." |
| | குள் | | |

श्रुत्वा तु वचनं तस्य रामस्याक्रिष्टकर्मणः । शिरसाऽऽवन्य धर्मात्मा वक्तुमेवोपचक्रमे ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|-----------|-------------------|
| अक्रिष्टकर्मणः | எளிதில் எதையும் செய்யவில்லை | धर्मात्मा | தர்ம தமவராகுமவர் |
| तस्य | அந்த | शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | आवन्य तु | நமஸ்கரித்தபின்னர் |
| वचनं | சொல்லை | वक्तु एव | பின்வருமாறு பதிலை |
| श्रुत्वा | கேட்டு | | யமுரைக்க |
| | | उपचक्रमे | தலைப்பட்டார்: |

राक्षसानां वधे साह्यं लङ्कायाश्च प्रधर्षणम् । करिष्यामि यथाप्राणं प्रवेक्ष्यामि च वाहिनीम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------------|--------------------|
| राक्षसानां | “அரசர்க்களுடைய | यथाप्राणं | என்னுடையன்றமட்டும் |
| वधे | வளைநிலையத்தில் | करिष्यामि | செய்யப்போகிறேன். |
| साह्यं | துணைபுரிவதையும் | वाहिनीं च | சேனாரிலும் |
| लङ्कायाः च | இலங்கையின் | प्रवेक्ष्यामि | ஒருவனாகச் சேரப் |
| प्रधर्षणं | அழித்தலையும் | | போகிறேன்”. |

इति ब्रुवाणं रामस्तु परिष्वज्य विभीषणम् । अत्रवीर्यह्मणं प्रीतः समुद्राज्जलमानय ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------|-------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | | பார்த்து |
| इति | மேற்கண்டவாறு | अत्रवीर्य | அங்குள்ளபித்தார்: |
| ब्रुवाणं | சொல்லுகிற | समुद्रात् | “சமுத்திரத்திலி |
| विभीषणं | விபீஷணரை | | ருந்து |
| परिष्वज्य | தழுவிக்கொண்டு | जलं | தீர்த்தத்தை |
| प्रीतः | மணச்சந்துஷ்டி | आनय | கொண்டுவருவாயாக |
| | கொண்டவராகி | | |

तेन चेमं महाप्राज्ञमभिषिञ्च विभीषणम् । राजानं रक्षसां क्षिप्रं प्रसन्ने मयि मानद ॥२७॥

| | | | |
|-------------|--|----------|-----------------|
| मानद | “ பெரியோர்களிடத் தில் மரியாதையாய் ருப்பவனை ! | विभीषणं | விபீஷணரை |
| मयि | | तेन च | அதைக்கொண்டே |
| प्रसन्ने | நான் | रक्षसां | அரசர்க்களின் |
| इमं | உள்ளமுதவந்திருக் | राजानं | மன்னனாக |
| महाप्राज्ञं | இந்த [கிறபடியால் | क्षिप्रं | இப்போதே |
| | மகாப்பிரசங்கஞ்சாகிய | अभिषिञ्च | அபிஷேகம் செய்து |
| | | | வைப்பாயாக”. |

एवमुक्तस्तु सौमित्रिरभ्यषिञ्चद्विभीषणम् । मध्ये वानरमुख्यानां राजानं रामशासनात् ॥

| | | | |
|---------------|---------------|-------------|---------------------|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | मध्ये | நடுவில் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | रामशासनात् | ஸ்ரீராமரது கட்டளைப் |
| उक्तः | ஆக்கினைபெற்ற | | படி |
| सौमित्रिः | வசந்தமணர் | राजानं | மன்னராக |
| विभीषणं | விபீஷணரை | अभ्यषिञ्चत् | அபிஷேகம் செய்து |
| वानरमुख्यानां | வானரோத்தமர்க | | வைத்தார். |
| | ளவுடைய | | |

तं प्रसादं तु रामस्य दृष्ट्वा सद्यः पृवङ्गमाः । प्रचुक्रुशुर्महात्मानं साधु साध्विति चाब्रुवन् ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------------|-----------------|
| तु | அப்பொழுது | महामानं | மகாத்மாவைப் |
| पृवङ्गमाः | வானரர்கள் | | பார்த்து |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | साधु साधु | “ நன்று நன்று ” |
| सद्यः | ஒரு கொடிப்பொழு | इति | என்று |
| तं | அந்த | अब्रुवन् | புகழ்ந்தார்கள். |
| प्रसादं | அணுகிரகத்தை | प्रचुक्रुशुः च | ஆணந்தகொடிமு |
| दृष्ट्वा | கண்டு | | மிட்டார்கள். |

अवधीच हनुमांश्च सुग्रीवश्च विभीषणम्

॥ ३० ॥

சுமீவ: ச
ஹனுமான் ச
விभीஷணம் ச

சக்கீவனும
ஹனுமானும்
விபிஷணரைப்பார்,த்து

अवधीत्

பின்வருமாறு வினாவி
னார்கள் (ஆர்ஷம்):

कथं सागरमक्षोभ्यं तराम वरुणालयम् । सैन्यैः परिहृताः सर्वे वानराणां महौजसाम् ॥

மஹீவஸா
வானராணா
சैन्यै:
परिहृता:
सर्वे

“ மகாபலசாஸிகளான
வானரார்களுடைய
சேனைகளால்
சூழப்பட்டிருக்கும்
நரம் எல்லோரும்

अक्षोभ्यं

கலக்கமுடியாததும்
வருணனுக்கிருப்பிட
முமாகிய

वरुणाक्षयं

வருணனுக்கிருப்பிட
முமாகிய

सागरं

சமுத்திரத்தை

कथं

எப்படி

तराम

தாண்டுவேரம்?

उपायं नाधिगच्छामो यथा नदनदीपतिम् । तराम तरसा सर्वे ससैन्या वरुणाद्यम् ॥

एवमुक्तस्तु धर्मज्ञः प्रयुवाच विभीषणः

॥ ३२ ॥

சசैन்யா:
सर्वे
नदनदीपतिं
वरुणाक्षयं
तरसा
यथा
तराम

“ சேனைகளோடுகூடிய
நரம்களெல்லோரும்
கதங்களுக்கும் கதிக
ளுக்கும் நரயகளுக
விளங்கும்
சமுத்திரத்தை
வேகமாய்
எப்படி
தாண்டுவேரமோ

(அந்த)

उपायं

உபாயத்தை

अधिगच्छामः न

காணாதிருக்கிறோம்.”

एवं

இப்படியாய்

उक्तः

வினாவப்பட்ட

धर्मज्ञः

தர்மக்குராகிய

विभीषणः

விபிஷணர்

तु

இவ்வியதத்தில்

प्रयुवाच

பின்வருமாறு பதிலு

ரைத்தார்:

समुद्रं राघवो राजा शरणं गन्तुमर्हति

॥ ३३ ॥

ராஜா
राघवः
समुद्रं

“ சக்கிரவர்த்தியாகிய
ஸ்ரீராமர்
சமுத்திரத்தை

शरणं

சரணமாக

गन्तुं

அடைய

अर्हति

திருவுளங்கொள்ள

வேண்டும்.

खानितः सगुरेणायमप्रमेयो महोदधिः । कर्तुमर्हति रामस्य ज्ञात्वा कार्यं महामतिः ॥३४॥

अप्रमेयः
अयं
महोदधिः
सगुरेण
खानितः
महामतिः

“ அளவிடமுடியாத
இந்த
சமுத்திரமானது
சகரமன்னரால்
கெட்டி உண்டாக்கப்
பட்டது.
பேரறிவுடைய அது

रामस्य

ஸ்ரீராமரது

कार्यं

காரியத்தை

ज्ञात्वा

உணர்ந்து

कर्तुं

ஏற்று கைம்மாறு

செய்ய

अर्हति

உடன்படவேண்டும்.”

एवं विभीषणेनोक्तो राक्षसेन विपश्चिता । आजगामाथ सुग्रीवो यत्र रामः सलक्ष्मणः ॥

அய
விப்சிதா
ராக்ஷசேன
விபிஷணேன
எவ்
உக்த:
ஆப்பொழுது
மகா ஞானியாகிய
அரக்கரான
விபிஷணரால்
மேற்கண்டவாறு
சொல்லப்பட்டதற்கு
செவிசாற்றிய

சுமீவ:
ராம:
சலக்ஷ்மண:
யத்
ஆஜமாம
சுக்ரீவன்,
ஸ்ரீராமர்
லக்ஷ்மணருடன்
எங்கு இருந்தாரோ
அங்கு,
வந்துசேர்ந்தான்.

ततश्चाख्यातुमारेभे विभीषणवचः शुभम् । सुग्रीवो विपुलग्रीवः सागरस्योपवेशनम् ॥

प्रकृत्या धर्मशीलस्य राघवस्याप्यरोचत

॥ ३६ ॥

விபுலமீவ:
சுமீவ:
சுய்
விபிஷணவச:
தத:
ஆख्याது
ஆரேபே
பெருங்கழுத்தை
சுக்ரீவன் [யுடைய
நல்லதாயிருக்கிற
விபிஷணாறு
ஆலோசனைகளை
அவ்விடத்தில்
தெரிவிக்க
ஊக்கக்கொண்டான்.

धर्मशीलस्य
राघवस्य अपि
सागरस्य
उपवेशनं च
प्रकृत्या
अरोचत
தர்மஸூழ்க்கமுடைய
ஸ்ரீராமருக்கும்
ஸமுத்திரராஜனை
சரணமடைதலானது
மூலிடப்பிற்றி
என்பதால்
திருவுளத்திற்கிசைந்
திருந்தது.

स लक्ष्मणं महातेजाः सुग्रीवं च हरीश्वरम् । सत्क्रियार्थं क्रियादक्षः स्मितपूर्वमुवाच ह ॥

क्रियादक्षः
महातेजाः
सः
लक्ष्मणं
हरीश्वरं
कारியங்களில்
நிபுணரும்
மகாபராக்கிரம,
அவர் [சாஸ்திரமாகிய
லக்ஷ்மணரையும்
வானரமன்னனாகிய

सुग्रीवं च
सत्क्रियार्थं ह
स्मितपूर्वं
उवाच
சுக்ரீவனையும்
பார்த்து
நற்காரியத்தின்
விஷயமாய்
புன்னகையுடன்
பின்வருமாறு
வினாவினார் :

विभीषणस्य मन्त्रोऽयं मम लक्ष्मण रोचते ।

ब्रूहि त्वं सहसुग्रीवस्तवापि यदि रोचते ॥

लक्ष्मण
विभीषणस्य
अयं मन्त्रः
मम
रोचते
“லக்ஷ்மணா!
விபிஷணாறு
இந்த ஆலோசனை
எனக்கு
பிடித்திருக்கிறது.

त्वं
सहसुग्रीवः
तवापि
रोचते यदि
ब्रूहि
நீ
சுக்ரீவனுடன் கலந்து
உனக்கும்
சம்மதமாயிருக்கும்
சொல்லு. [பக்கத்தில்

सुग्रीवः पण्डितो नित्यं भवान्मन्त्रविचक्षणः । उभाभ्यां संप्रधायार्थं रोचते यत्तदुच्यताम् ॥

सुग्रीवः
नित्यं
पण्डितः
भवान्
मन्त्रविचक्षणः
अयं
“சுக்ரீவன்
எப்பொழுதும்
வெகு புத்தியான்.
நீ
ஆலோசனை சொல்லு
வதில் சமர்த்தன்.
காரியத்தை

संप्रधायं
उभाभ्यां
यत्
रोचते
तत्
उच्यताम्
திர்க்காலோசனை
செய்து
உக்கலிருவர்களுக்கும்
எதொன்று
பிடிக்கிறதோ
அது
சொல்லப்பட்டும்.”

एवमुक्तौ तु तौ वीराबुभौ सुग्रीवलक्ष्मणौ । समुदाचारसंयुक्तमिदं वचनमूचतुः ॥ ४० ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-----------|------------------|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | इदं | பின்வரும் |
| उक्तौ | கிணுவப்பட்ட | वचनं | பதிகளை |
| वीरौ | ஞானர்களும் | समुदाचार- | } பெரியோர்களிடம் |
| सुग्रीवलक्ष्मणौ | சுகிரீவனும் எகத்தபண | संयुक्तं | |
| तौ | ஆக்த [ஊழலாகிய | | சொன்னார்கள். |
| उभौ तु | இருவர்களும் | उचतुः | |

किमर्थं नौ नरव्याघ्र न रोचिष्यति राघव । विभीषणेन यच्चोक्तमस्मिन्काले सुखावहम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|-------------------|
| मरुत्याघ्र | “புருஷோத்தம! | विभीषणेन | விபிஷணனால் |
| राघव | ஸ்ரீராம! | उक्तं च | சொல்லப்பட்டதோ |
| अस्मिन् | இந்த | | ஆகி |
| काले | காலத்தில் | नौ | எங்களிருவருக்கும் |
| सुखावहं | நன்மை பயக்கத்தக்கதாய் | किमर्थं | என் |
| | | रोचिष्यति न | பிரயாசல் போய் |
| यत् | எதொன்றி | | விடும்? |

अबद्ध्वा सागरे सेतुं घोरेऽस्मिन्वरुणालये । लङ्का नासादितुं शक्या सेन्द्रैरपि सुरासुरैः॥

| | | | |
|----------|-----------------------|---------------|-------------------------------|
| अस्मिन् | “இந்த | अबद्ध्वा | கட்டாமல் |
| घोरे | பயங்கரமான | सेन्द्रैः | இந்திரனையன்றிட்ட |
| वरुणालये | வருணனது இருப்பிடமாகிய | सुरासुरैः अपि | தேவர்களாலும் ஆசுரர்களாலும்கூட |
| सागरे | ஸமுத்திரத்தில் | लङ्का | இலங்கை |
| सेतुं | ஆணையொன்றை | आसादितुं | கிட்ட |
| | | शक्या न | முடிந்ததாக ஆகாது. |

विभीषणस्य शूरस्य यथार्थं क्रियतां वचः । अलं कालात्ययं कृत्वा समुद्रोऽयं नियुज्यताम्॥ यथा सैन्येन गच्छामः पुरीं रावणपालिताम् ॥ ४३ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-------------|----------------------------|
| शूरस्य | “ஞானாகிய | पुरीं | நகருக்கு |
| विभीषणस्य | விபிஷணனால் | यथा | எப்படியானால் |
| वचः | சொல் | सैन्येन | சைனியத்தோடு |
| यथार्थं | சொல்லப்பட்டவண்ணமே | गच्छामः | காம் போய்ச்சேருவோமோ அப்படி |
| क्रियतां | ஆணுகட்டப்படும் | अयं | இந்த |
| कालात्ययं | காலதாமதம் [ஊழலாகிய | समुद्रः | சமுத்திரத்தை |
| कृत्वा अलं | செய்தது போதும். | नियुज्यताम् | பார்ந்திக்கப்பட்டும்கூட |
| रावणपालिताम् | இராவணனால் பாதுகாக்கப்படும் | | |

एवमुक्तः कुशास्तीर्णे तीरे नदनदीपतेः । संविवेश तदा रामो वेशामिव हुताशनः ॥४४॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|--------------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | तीरे | கரையில் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | कुशास्तीर्णे | தர்ப்பைப்படுக்கையில் |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டதற்குச் செளகாந்திய | वेशां | யாகவே திகையில் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | हुताशनः | அக்னிபகவான் |
| नदनदीपतेः | சமுத்திரத்தின் | इव | போல் |
| | | संविवेश | சயனித்து விட்டார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15338



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 663

विंशः सर्गः—இருபதாவது ஸர்க்கம். ॥ 20 ॥

शुकसन्देशः—சுகனிடம் தூதனுப்புவது.

ततो निविष्टां ध्वजिनीं सूर्यावेणाभिपालिताम् । ददर्श राक्षसोऽभ्येत्य शार्दूलो नाम वीर्यवान् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|-------------------|
| सूर्यावेण | சூர்யவனல் | वीर्यवान् | ஆதிபராக்கிரமமுள்ள |
| अभिपालितां | பாதுகாக்கப்பட்ட | शार्दूलः नाम | சார்த்தூலன் என்ற |
| ततः | அவ்விடத்தில் [டதும் | राक्षसः | அரக்கன் |
| निविष्टां | தங்கியிருந்ததுமாய | अभ्येत्य | கிட்டி |
| ध्वजिनीं | சேணையை | ददर्श | பார்த்தான். |

चारो राक्षसराजस्य रावणस्य दुरात्मनः । तां दृष्ट्वा सर्वतो व्यथं प्रतिगम्य स राक्षसः ॥

प्रविश्य लङ्कां वेगेन रावणं वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-----------|-------------------|
| राक्षसराजस्य | அரக்கர்கள் மன்ன னும், | दृष्ट्वा | பார்த்துவிட்டு |
| दुरात्मनः | தூராத்மாவுமான | वेगेन | விவரையில் |
| रावणस्य | ராவணனுடைய | प्रतिगम्य | திரும்பி |
| चारः | ஒற்றனாகிய | लङ्कां | லங்கைக்கு |
| सः | அந்த | प्रविश्य | வந்துசேர்ந்து |
| राक्षसः | அரக்கன் | रावणं | ராவணனைப் பார்த்து |
| तां | அதை | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| सर्वतो | முழுமையும் | अब्रवीत् | பின் வருமாறு |
| व्यथं | கவனமாய் | | மொழிந்தான்: |

एष वानरकुक्षौघो लङ्कां समभिवर्तते । अगाधश्चाप्रमेयश्च द्वितीय इव सागरः ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|--------------|--|
| अगाधः | “உள்ளே பிரவேசிக்க முடியாததும் | वानरकुक्षौघः | { வானரர்களும் கரடிக ளுடங்கிய பெரும் திரளானது |
| अप्रमेयः च | அளவிடமுடியாததும் | लङ्कां | இலங்கையை நோக்கி |
| द्वितीयः | இரண்டாவது | समभिवर्तते | வந்துகொண்டிருந் கிறது. |
| सागरः | சமுத்திரம் | | |
| इव च | போலிருக்கிறதுமான | | |
| एषः | இந்த | | |

पुत्रौ दशरथस्येभौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । उत्तमायुधसंपन्नौ सीतायाः पद्मागतौ ॥ ४ ॥

दशरथस्य "தசரதனது
 पुत्रौ புதல்வர்களுடும்
 भ्रातरौ சகோதரர்களும்,
 उत्तमायुध-} சிறந்த ஆயுதங்களுடன்
 संपन्नौ } விளங்குகுவின்றவருடும்

रामलक्ष्मणौ பூர்வமலகத்தமணர்க
 इमौ இவர்கள் [களுமரண
 सीतायाः சிதையின்
 पद्म இரும்பிட,த்தை
 आगतौ கண்டுக்கொண்டுவிட்டு
 டர்கள்

॥ ५ ॥

एतौ सागरमासाद्य संनिविष्टौ महायुती

महायुती "மகாதேஜஸ்விகனா
 एतौ இவ்விருவர்களுள் [சிய
 सागरं சமுத்திரத்தை

आपाद्य அண்டர் து
 संनिविष्टौ காத்துத்தங்கியிருக்க
 இன்னுர்கள்.

बलमाकाशमावृत्य सर्वतो दशयोजनम् । तत्त्वभूतं महाराज क्षिप्रं वेदितुमर्हसि ॥ ६ ॥

महाराज "மகாராஜரீர!
 बलं வலையையானது
 आकाशं சுற்றுப்பிரதேசத்தை
 सर्वतः காற்புறத்திலும்
 दशयोजनं பத்தாயோஜனை ஆரம்

आवृत्य மறைத்துக்கொண்டு
 तत्त्वभूतं உள்வடி இருப்பதை
 क्षिप्रं விரைவில்
 वेदितुं தெரிந்துகொள்ள
 अर्हसि வேண்டும்.

॥ ७ ॥

तव दूता महाराज क्षिप्रमर्हन्त्यवेक्षितुम्

महाराज "மகாராஜரீரே!
 तव दूताः தேவரீரது துதர்கள்
 क्षिप्रं விரைவில்

अवेक्षितुं மேல்உக்கவேண்டிய
 अर्हन्ति எதக்கண்டறிய
 வேண்டும்.

उपप्रदानं सान्त्वं वा भेदो वाऽथ प्रयुज्यताम् ॥ ८ ॥

अत्र "இவ்விஷயத்தில்
 उपप्रदानं திருப்பிக்கொடுத்து
 सान्त्वं वा விடுதலையோ
 भेदो वा சுவார் கதைச் சொல்
 प्रयुज्यताम् லி இணங்குகலையோ

भेदः वा { அவர்களுக்குள் ஒரு
 प्रयुज्यताम् வருக்கொருவர் பே
 தம்செய்தலையோ
 ஆளுங்க்கப்பட
 வேண்டும்.

शार्दूलस्य वचः श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः । उवाच सहसा व्यग्रः संप्रधार्यमात्मनः ॥ ९ ॥

शार्दूलस्य वचः श्रुत्वा "ராசுதலையின் வகுதிய
 रावणः ராவணன்
 शार्दूलस्य वचः श्रुत्वा சார் துவனது சொல்
 सहसा உடனே [கிண்கீகட்டு
 व्यग्रः மனக்கழறடை யவனுவி
 अर्थ விஷயத்தை
 आत्मनः தனக்குள்
 संप्रधार्य { ஒருவகையா ம் தீர்
 மாணம். கண்ணிக்
 கொண்டு

तदा அப்பொழுது
 अर्थविरां கா ரியமறிந்தவர்களுக்குள்
 वरं சிறந்தவளுகிய
 शुकं नाम சுதன் என்ற
 राक्षः அரசுக்கணைப்பார் து
 वाक्यं ஒரு மொழியை
 उवाच பின்வருமாறு
 மொழிந்தான் :

सुग्रीवं ब्रूहि गत्वा त्वं राजानं वचनान्मम । यथासंदेशपत्नीवं शृङ्गणया परया गिरा ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|-----------|-----------------|
| त्वं | "ஹி | यथासंदेशं | ஆக்கிரைப்படி |
| मम | எனது | परया | மிக |
| वचनात् | ஆக்கிரையைக் கொண்டு | शृङ्गणया | இனிய |
| गत्वा | சென்று | गिरा | கொற்கொண்டு |
| सुग्रीवं | சுகிரீவ | अपत्नीवं | மனைதச் சிதறவிடா |
| राजानं | மன்னலிடம் | ब्रूहि | கொல்லு. |

त्वं वै महाराज कुलप्रसूतो महाबलश्चक्षरजःसुतश्च ।

न कश्चिदर्थस्तव नास्त्यनर्थस्तथा हि मे भ्रातृसमो हरीश ॥ ११ ॥

अहं यद्यहरं भार्या राजपुत्रस्य धीमतः । किं तत्र तव सुग्रीव किष्किन्धां प्रतिगम्यताम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|---------------|---------------------------------------|
| हरीश | "வானரேசுவரா! | अहरं | ஆபகரித் துவந்திருக் |
| सुग्रीव | சுகிரீவ! | यदि | என்றால் [கிறேன்] |
| महाराज | மகாராஜரே! | तव | இவ்விஷயத்தில் |
| त्वं वै | நீரே | तव | உமக்கு |
| कुलप्रसूतः | உயர்குலத்தில் பிறந்தவர். | किं | என்ன சம்பந்தம்? |
| अक्षरजःसुतः | சிக்ஷரஜனின் புதல்வர். | तव | உமக்கு |
| महाबलः | மிகுந்த பலமுடைய | अर्थः | ஆகவேண்டியது |
| च | இதன்றி [கன். | कश्चिद हि | ஒன்றுமே |
| मे | எனக்கு | न | இல்லை. |
| भ्रातृसमः | பராதரவுக்குச் சமமான மானவர். | अनर्थः च | நஷ்டமென்பதும் |
| धीमतः | புத்திமானான | अस्ति न | இல்லை. |
| राजपुत्रस्य | ராஜகுமாரனது | तथा | இப்படியெல்லாமிருப் பதால் |
| भार्या | மனைவியை | किष्किन्धां | கிஷ்கின்தைக்கு |
| अहं | என் | प्रतिगम्यताम् | உம்பால் திரும்பிச் செல்லப்பட்டும். |

न हीयं हरिभिर्लङ्का शवया प्राप्तुं कथञ्चन ।

देवैरपि सगन्धर्वैः किं पुनर्नरवानरैः ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|----------|--|
| हयं | "இந்த | शवया न | முடியாதது. |
| लङ्का | இலங்கை நகர் | हि | ஆகையால் |
| सगन्धर्वैः | கந்தர்வர்கள் உள்ளிட்ட | हरिभिः | மானிடர்களாலும் |
| देवैः अपि | தேவர்களாலும்கூட | नरवानरैः | { மானிடர்களுக்குச் சமமானவையான பர்களாலும் |
| कथञ्चन | என்ன பாடுபட்டா | कि पुनः | எவ்வாறு புகமுடியும்? " |
| प्राप्तुं | ஆடைய [ஆம்] | | |

स तथा राक्षसेन्द्रेण संदिष्टो रजनीचरः । शुको विहङ्गमो भूत्वा तूर्णमाप्तुत्य चाम्बरम् ॥
 स गत्वा दूरमध्वानमुपर्युपरि सागरम् । संस्थितो ह्यम्बरे वाक्यं सुधीवमिदमब्रवीत् ॥
 सर्वमुक्तं यथादिष्टं रावणेन दुरात्मना ॥ १५ ॥

ராட்சசேந்திரேண
 தயா
 சந்திஷ்ட:
 ச:
 சூக:
 ரஜனீசர:
 விஹங்கம:
 பூவா
 தூர்
 அம்பர:
 அபூத்ய
 சாஹர்
 உபரூபரி
 தூர் அபுவான
 த் மாபயந்த் வசன
 தூர்ணமாபூத்ய
 வானரா:
 மாபயந்த
 திவ்
 சிம
 லோஸு
 ஹந்து
 ச
 திவ்
 தூர்
 அபூத்ய
 மாபயந்த

சென்று
 ஆகாசத்தில்
 ரீநகின் தவனாகவே
 அவன்
 தூரத்தொவரகிய
 சாவணனால்
 ஆக்குமித்தவன்
 ணமே
 உக்
 ஹ்
 வாக்ய
 சர்வ
 ச
 சுகீவனிதம்
 தெரிவித்தான்.
 சொல்லப்பட்ட
 இந்த
 சொல்
 எல்லாவற்றையும்
 சுகீவனிதம்
 தெரிவித்தான்.
 புடைக்கவும்
 வதைக்கவும்
 ஆகாசத்தில்
 சடக்கென
 பாய்ந்து
 குழிந்துகொண்டார்
 கள்.

तं प्रापयन्तं वचनं तूर्णमाप्तुत्य वानराः । मापयन्त दिवं क्षिप्रं लोसुं हन्तुं च मुष्टिभिः ॥
 वचनं
 प्रापयन्तं
 तं
 वानराः
 मुष्टिभिः
 क्षिप्रं
 स तैः प्रवृद्धैः प्रसभं निगृहीतो निशाचरः । गगनाद्भूतले चाशु परिगृह्य निपातितः ॥ १७ ॥
 सः निशाचरः
 तैः
 प्रवृद्धैः
 प्रसभं
 परिगृह्य
 वानरैः
 पीड्यमानस्तु शुको वचनमब्रवीत् । न दूतान्घ्नन्ति काकुत्स्थ वार्यन्तां साधु वानराः ॥
 वानरैः
 पीड्यमानः
 शुकः तु
 वचनं
 अब्रवीत्
 काकुत्स्थ

புடைக்கவும்
 வதைக்கவும்
 ஆகாசத்தில்
 சடக்கென
 பாய்ந்து
 குழிந்துகொண்டார்
 கள்.
 கட்டப்பட்டவனாய்
 ஆகாசத்திலிருந்து
 பூமிப்பிரதேசத்தில்
 விகாசில்
 வீழ்த்தவும்பெற்றான்.
 தூது கொண்டுலந்த
 வர்களை
 கொல்வதில்லை.
 வானரர்கள்
 ஏற்றபடி
 தடுக்கப்படட்டும்.

स तैः प्रवृद्धैः प्रसभं निगृहीतो निशाचरः । गगनाद्भूतले चाशु परिगृह्य निपातितः ॥ १७ ॥
 सः निशाचरः
 तैः
 प्रवृद्धैः
 प्रसभं
 परिगृह्य
 वानरैः
 पीड्यमानस्तु शुको वचनमब्रवीत् । न दूतान्घ्नन्ति काकुत्स्थ वार्यन्तां साधु वानराः ॥
 वानरैः
 पीड्यमानः
 शुकः तु
 वचनं
 अब्रवीत्
 काकुत्स्थ

கட்டப்பட்டவனாய்
 ஆகாசத்திலிருந்து
 பூமிப்பிரதேசத்தில்
 விகாசில்
 வீழ்த்தவும்பெற்றான்.
 தூது கொண்டுலந்த
 வர்களை
 கொல்வதில்லை.
 வானரர்கள்
 ஏற்றபடி
 தடுக்கப்படட்டும்.

वानरैः पीड्यमानस्तु शुको वचनमब्रवीत् । न दूतान्घ्नन्ति काकुत्स्थ वार्यन्तां साधु वानराः ॥
 वानरैः
 पीड्यमानः
 शुकः तु
 वचनं
 अब्रवीत्
 काकुत्स्थ

தூது கொண்டுலந்த
 வர்களை
 கொல்வதில்லை.
 வானரர்கள்
 ஏற்றபடி
 தடுக்கப்படட்டும்.

यस्तु हित्वा मतं भर्तुः स्वमतं संप्रभाषते । अनुक्तवादी दूतः सन्स दूतो वधमर्हति ॥१९॥

| | | | |
|------------|--|------------|-------------------------|
| दूतः सन् | " தூதுகொண்டு வந்த வனுயிருக்கூகொண்டு | हित्वा | விட்டு |
| अनुक्तवादी | சொல்லாததைச் சொல்லுகின்றவனுய் | स्वमतं | தனது அபிப்பிராயத் தை |
| यः तु | எவனெனாவான் | संप्रभाषते | சொல்லுகின்றனென |
| भर्तुः | எஜமானனது | सः दूतः | அந்த தூதன் |
| मतं | அபிப்பிராயத்தை | वधं | கொலைக்கு |
| | | अर्हति | பாத்திரமாகிறான்." |

शुकस्य वचनं श्रुत्वा रामस्तु परिदेवितम् । उवाच मा वधिष्ठेति घ्नतः शाखामृगर्षभान् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|----------------|------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | घ्नतः | புடைக்கும் |
| शुकस्य | சுகனது | शाखामृगर्षभान् | வானரோத்தமர்களைப் பார்த்து |
| परिदेवितं | அழுகைக்குரலுடன் வந்த | मा वधिष्टेति | 'கொல்ல தீர்கள்' |
| वचनं | சொல்லை | इति | என்று |
| श्रुत्वा तु | கேட்டதுமே | उवाच | ஆக்குறாபித்தார். |

स च पत्रलघुर्भूत्वा हरिभिर्दर्शिते भये । अन्तरिक्षस्थितो भूत्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥२१॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|-----------------|------------------------------|
| हरिभिः | வானரர்களால் | अन्तरिक्षस्थितः | ஆகாசத்தில் நிற்கின்ற வனாக |
| भये दर्शिते | அச்சமுறுத்தப்பட்டி ருக்கையில் | भूत्वा च | ஆகியும் |
| सः | அவன் | पुनः | இன்னும் |
| पत्रलघुः | சிறகுகளால் வேகம் சொல்லுகின்றவனாக | वचनं | ஒரு சொல்லை |
| भूत्वा | ஆகி | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |

सुग्रीव सत्त्वसंपन्न महाबलपराक्रम । किं मया खलु वक्तव्यो रावणो लोकरावणः ॥२२॥

| | | | |
|--------------|---|----------|--------------------------------------|
| सत्त्वसंपन्न | "நற்குணமையுடைய வரே! | लोकरावणः | உலகத்தைக்கடந்த ராவணன் [அடிக்கும்] |
| महाबलपराक्रम | { மகத்தான ஆற்றலு பாண்டையுமுடைய வரே! | रावणः | என்னால் |
| सुग्रीव | சுகர்வரே! | किं खलु | என்னதான் |
| | | वक्तव्यः | சொல்லப்படவேண்டி- யவன்?" |

स एवमुक्तः प्रवगाधिपस्तदा प्रवङ्गमानामृषभो महाबलः ।

उवाच वाक्यं रजनीचरस्य चारं शुकं तूर्णमदीनसत्त्वः ॥ २३ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|------------------------------------|
| सदा | அப்பொழுது | महाबलः | மகத்தான ஆற்ற லுடையவனும் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | अदीनसत्त्वः | எதற்கும் சலியா ஆண் மையுடையவனும் |
| उक्तः | வினாசப்பட்டவனும் | | |
| प्रवङ्गमानां | வானரர்களுக்குள் | | |
| वचनमः | உத்தமனும் | | |

| | |
|-----------|-----------------|
| பூவாதிப: | வானரமன்னனுமாயிய |
| ச: | அவன் |
| ரஜநிசரஸ்ய | அரக்கனது |
| சாரீ | துதனாகிய |

| | |
|-------|-----------------|
| சுகம் | சுகனைப்பார்ந்து |
| வாய் | ஒருமொழியை |
| சூர் | உடனே |
| உவாச | பின்வருமாறு |
| | மொழிந்தான்: |

न मेऽसि मित्रं न तथाऽनुकम्प्यो न चोपकर्ताऽसि न मे प्रियोऽसि ।

அரிசு ராமஸ்ய சஹானுபந்த: ச மெ:ஸி வாலீவ வபாஹீ வஹ்ய: ॥ 24 ॥

| | |
|--------------|---------------------|
| மே | “எனக்கு |
| மித்ர | சினேகிதனாக |
| அசி ந | ஆகமாட்டாய். |
| தथा | அப்படியே |
| அனுகம்ப்ய: ந | கருணைக்குப் பாத்திர |
| | னுமாகாய். |
| உபகர்தா ச | உபகாரம்புரிந்தவனும் |
| அசி ந | நீ இல்லை. |
| மே | எனக்கு |
| பிரிய: | இஷ்டமானவனும் |
| அசி ந | நீ இல்லை. |

| | |
|--------------|--------------------|
| ராமஸ்ய | ஸ்ரீராமரது |
| அரி: | சந்துரு. |
| சஹானுபந்த: ச | பந்துக்களோடு |
| மே | எனது [கடவே |
| வஹ்ய: | வதைக்குப் பாத்திர |
| ச: | அந்த [னாக |
| வபாஹீ | கொலைக்குப் பாத்திர |
| வாலீ | வாஸி [னுனவனே! |
| ஹ்ய | எவ்வண்ணமோ |
| | அவ்வண்ணமே |
| அசி | ஆகின்றன. |

निहन्म्यहं त्वां ससुतं सवन्धुं सज्ञातिवर्गं रजनीचरेश ।

லஹ்நா ச சவா மஹதா வலென சிபிர கரிஷ்யாமி சமேத்ய மஸ்ய ॥ 25 ॥

| | |
|------------|------------------|
| ரஜநிசரேச | “அரக்கர் மன்னு! |
| அஹ் | நான் |
| த்வா | உன்னை |
| சசுத | புதல்வர்களோடு |
| | கூடவும் |
| சவந்ஹு | பந்துக்களோடு |
| | கூடவும் |
| சஜ்நாதிவரீ | தரயாதிக்கூட்டங்க |
| | ளோடுகூடவும் |

| | |
|-----------|------------------|
| சிபிர | இதோ |
| நிஹ்நி | கொல்லுகின்றேன். |
| மஹதா | பெரும் |
| வலென | எளையத்தோடு |
| சமேத்ய | வந்துசேர்ந்து |
| லஹ்நா | இலக்கை |
| சவா ச | முழுவதையுமே |
| மஸ்ய | சாம்பளாக |
| கரிஷ்யாமி | செய்வப்போகிறேன். |

न मोक्षयसे रावण राघवस्य सुरैः सहेन्द्रैरपि मूढ गुप्तः ।

அந்தஹித: சூர்யபயம் கதோ வாதீவ பாதாலமநுபிரிபு: ॥ 26 ॥

| | |
|-----------|-------------------|
| மூஹ | “மூடா! |
| ராவண | ராவணு! |
| சஹேந்ரே: | இந்திரனை உள்லிட்ட |
| சூரே: அபி | தேவர்களாலும் |
| குப்த: | பாதுகாக்கப்பட்டவ |
| | னாக ஆயினும் |
| சூர்யபயம் | சூர்யபகவானது த்வா |
| கத: | அடைந்து [சந்தை |

| | |
|-----------------|-------------------|
| அந்தஹித: | மறைந்துகொண்ட |
| | வனாக ஆயினும் |
| பாதாஹ் | பாதாளலோகத்தில் |
| அநுபிரிபு: வாதீ | புகுந்துகொண்டவ |
| | னாகத் தானாகட்டும் |
| தथा एव | எப்படியாகினும் |
| ராவஸ்ய | ஸ்ரீராமருக்கு |
| மோஹஸே ந | நீ தப்பமாட்டாய். |

तस्य ते त्रिषु लोकेषु न पिशाचं न राक्षसम् । शत्रातारमनुपश्यामि न गन्धर्वं न चासुरम् ॥

तस्य "அந்த
ते உன்னை
त्रिषु மூன்று
लोकेषु உலகங்களிலும்
शत्रातारं காக்கும் சரமர்ந்
தியமுள்ள
पिशाचं பிசாசனொருவனை

अनुपश्यामि न நான் அறிக் திலேன்.
राक्षसं அரசர்க்கொருவனை
न நான் அறிக் திலேன்.
गन्धर्वं கந்தர்வனொருவனை
न நான் அறிக் திலேன்.
असुरं च அசுரனொருவனையும்
न நான் அறிக் திலேன்.

अवधीर्यज्जराहृद्भक्षमं किं जटायुपम् ॥ २८ ॥

जराहृद् "முதுமையால்
தளர்ந்து
भक्षमं போருக்குத்திறமை
யற்ற

जटायुषं ஜடாயுளவ
अवधी: நீ கொண்டுவிட்டனை.
यत् இந்த இது
किम् எம்மாந்திரம்

किं नु ते रामसन्निध्ये सकाशे लक्ष्मणस्य वा । हता सीता विशालाक्षी यां त्वं गृह्य न बुध्यसे ॥

विशालाक्षी "அகன்ற கண்களை
யுடைய
सीता வீதரதேவியார்
रामसन्निध्ये ஸ்ரீராமருடைய முன்
னிவியிலாவது
लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணருடைய
सकाशे वा முன்னிலையிலாவது
ते உன்னால்

हता किं न அபலுமரிக்கப்பட்ட
டனளா என்ன ?
यां எந்த அவளை
गृह्य கவர்ந்து
त्वं நீ
न बुध्यसे இப்போதும் நல்லறிவு
பெறுகிருக்கின்றனை.

महाबलं महात्मानं दुर्धर्ममरैरपि । न बुध्यसे रघुश्रेष्ठं यस्ते प्राणान्हरिष्यति ॥ ३० ॥

यः "எவரொருவர்
ते உனது
प्राणान् உயிரை [ரோ அந்த
हरिष्यति வாக்கினிடப்போகிரு-
रघुश्रेष्ठं ரகுத்தமரை
महाबलं மகத்தான ஆற்றலு
டையவரெனவும்

महात्मानं மகாத்மாவெனவும்
अमरैः अपि தேவர்களா ஆய்நகட
दुर्धर्मं தகைய முடியாதவ
ரெனவும்
बुध्यसे न நீ அறியாதிருக்கின்
றனை."

ततोऽब्रवीद्वालिमुतस्त्वङ्गदो हरिसत्तपः । नायं दूतो महाराज चारिकः प्रतिभाति मे ॥

ततः அச்சமயத்தில்
वालिमुतः வாலியின் புதல்வனும்
हरिसत्तपः வானரோத்தமனு
மாகிய

महाराज "மகாராஜரே!
अयं இவன்
दूतः न தூதுகொண்டுவந்த
வனல்லன் எனவும்

अङ्गदः அங்கதன்
अब्रवीत् பின்வருமாறு
मोழிந்தான்:

चारिकः तु வேவுகாரன் எனவும்
मे எனக்கு
प्रतिभाति தோன்றுகின்றது.

तुलितं हि बलं सर्वमनेनात्रैव तिष्ठता । गृह्यतां मा गमल्लङ्कामेतद्धि मम रोचते ॥ ३२ ॥

| | | | |
|--------|--------------------|----------|-------------------|
| திட்டா | “ இடேதா இருக்கும் | ஹி | ஆகையால் |
| அனேன | இவனால் | லக்ஷா | லங்கைக்கு |
| பல எவ | இவ்விடத்தில் | மா கமந் | இவன் போகவேண் |
| பல | சேனை | | டாம். |
| சर्व | எல்லாமும் | गृह्यतां | பிடித்துவைக்கப்பட |
| | | एतन् हि | இததான் [ட்டும். |
| तुलितं | { இவ்வளவேன்று கண் | मम | எனக்கு |
| | { இகொண்டுவிடப்பட்ட | रोचते | இவ்விடமாயிருக் |
| | டது. | | கிறது.” |

ततो राज्ञा समादिष्टाः समुत्सृत्य वलीमुखाः । जगृह्युश्च बबन्धुश्च विलपन्तमनाथवत् ॥ ३३ ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | अनाथवत् | அனாதகனின்நி |
| राज्ञा | ராஜாவினால் | विलपन्तं | கதறாமவளை |
| समादिष्टाः | கட்டளை யிடப்பட்ட | जगृह्युः च | பிடித்துக்கொண்டார் |
| वलीमुखाः | வானரர்கள் | | கள். |
| समुत्सृत्य | பாய்ந்து | बबन्धुः च | கட்டியும் விட்டார்கள். |

शुकस्तु वानरैश्चण्डैस्तत्र तैः संप्रपीडितः । व्याक्रोशत महात्मानं रामं दशरथात्मजम् ॥ ३४ ॥

लुप्येते मे बलात्पक्षौ भियेते च तथाऽक्षिणी

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|-------------------|
| तस्य | அப்பொழுது | व्याक्रोशत | பின் வருமாறு சொல் |
| चण्डैः | கோபாவேசத்திலி | मे | லிக்கதறினால் : |
| तैः | அந்த [ருக்கும் | पक्षौ | “ எனது |
| वानरैः | வானரர்களால் | बलात् | இறகுகளிரண்டும் |
| संप्रपीडितः | மிக்க துன்புறுத்தப் | लुप्येते | முட்டுத்தனமாய் |
| शुकः तु | சுகனும், [பட்ட | तथा | குத்தப்படுகின்றன. |
| दशरथात्मजं | தசரதரின் திருமக | अक्षिणी च | அப்படியே |
| | னாரும் | भियेते | கண்களிரண்டும் |
| महात्मानं | மஹா தீமாவும் | | துன்புறுத்தப்படு |
| रामं | ஸ்ரீராமரை நோக்கி, | | கின்றன. |

यां च रात्रिं मरिष्यामि जाये रात्रिं च यामहम् । एतस्मिन्नन्तरे काले यन्मया ह्यशुभं कृतम् ॥ ३५ ॥

सर्वं तदुपपद्येथा जघ्नां चेद्यदि जीवितम्

| | | | |
|----------------|-------------------|------------|---------------------|
| जीवितं | “ உயிரை | अन्तरे | இடைபிணை |
| जघ्नां चेद्यदि | நான் விடுகின்றே | काले | வாழ்காலில் |
| | னென்றால் | यत् | எந்த ஒரு |
| यां रात्रिं | எந்த இரவில் | अशुभं | பாபமானது |
| अहं जाये च | நான் ஜனிக்கிறேனோ, | मया | என்னால் |
| यां | எந்த | कृतं | செய்யப்பட்டதோ |
| रात्रिं | இரவில் | तत् | அது |
| मरिष्यामि च | சாகின்றேனோ | सर्वं हि | எல்லாவற்றையும் |
| एतस्मिन् | இந்த | उपपद्येथाः | நீர் அடைபவேண்டும்.” |

नाघातयत्तदा रामः श्रुत्वा तत्परिदेवनम् । वानरानब्रवीद्रामो मुच्यतां दूत आगतः ॥३६॥

| | | | |
|-------------|----------------------|----------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | वानरान् | வானர்களைப் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दूतः | 'தூதனாக [பார்த்து |
| तत्परिदेवनं | அவனது புலம்பலை | आगतः | வந்த இவன் |
| श्रुत्वा | கேட்டு | मुच्यतां | விட்டுவிடப்படட்டும்' |
| अघातयत् न | கொல்லாது தப்பு | | என்று |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [வித்தார். | अब्रवीत् | ஆக்ரூபித்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये वृद्धकाण्डे विंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15374



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 699

एकविंशः सर्गः—இருபத்தொன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ २२ ॥

समुद्रसंक्षोभः श्रीरामकोधः—சமுத்திரத்தின் திசில்; ஸ்ரீராமரது கோபம்.

ततः सागरवेलायां दर्भान्नास्तूर्य राघवः । अञ्जलिं प्राङ्मुखः कृत्वा प्रतिशिश्ये महोदधेः ॥
जातरूपमयैश्चैव भूषणैर्भूषितं पुरा । बाहुं भुजगभोगाममुपधायारिसूदनः ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------|---------------|-------------------|
| अरिसूदनः | சத்தருசம்ஹாராக | जातरूपमयैः | தக்கமயமான |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் [ரான | भूषणैः | ஆபரணங்களால் |
| सागरवेलायां | சமுத்திரக்கரையில் | भूषितं च | அலங்கரிக்கப்பெற்ற |
| दर्भान् भास्तूर्य | தர்ப்பைகளைப் பரப்பி | | தும் |
| महोदधेः | சமுத்திரத்திற்கு | भुजगभोगामं एव | பாம்பின் உடல்போல |
| प्राङ्मुखः | எதிர்முகமாகி | बाहुं | கையை [றதுமான |
| अञ्जलिं कृत्वा | அஞ்சலியைச் செய்து | उपधाय | தலையணையாக வைத் |
| ततः | அப்பொழுது | | துக்கொண்டு |
| पुरा | இதற்குமுன் | प्रतिशिश्ये | படுத்துவிட்டார். |

वरकाञ्चनकेयूरमुक्ताम्वरभूषणैः । भुजैः परमनारीणामभिमृष्टमनेकधा ॥ ३ ॥

चन्दनागरुभिश्चैव पुरस्तादधिवासितम् । वाल्मसूर्यप्रतीकाशैश्चन्द्रनैरुपशोभितम् ॥ ४ ॥

शयने चोत्तमाङ्गेन सीतायाः शोभितं पुरा । तक्षकस्येव संभोगं गङ्गाजलनिषेवितम् ॥ ५ ॥

संयुगे युगसङ्काशं शत्रूणां शोकवर्धनम् । सुहृदानन्दनं दीर्घं सागरान्तव्यपाश्रयम् ॥ ६ ॥

अस्यता च पुनः सव्यं ज्याघातविगतत्वचम् । दक्षिणो दक्षिणं बाहुं महापरिघसन्निभम् ॥

गौसहस्रप्रदातारमुपधाय महद्भुजम् । अथ मे वरणं वाऽथ तरणं सागरस्य वा ॥ ८ ॥

इति रामो मतिं कृत्वा महाबाहुर्महोदधिम् । अधिशिश्ये स विधिवत्प्रयतो नियतो मृनिः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------------|--|
| दक्षिणः | சாமர் தியசாஸியும் | वरकाञ्चन- | } சிறந்த தக்கக்கணகவ கோகனா லும் சிறந்த முத்திரபரணங்க ளாலுமலங்கரிக்கப் பெற்ற |
| महाबाहुः | மகாபாஹுவமான | केयूरमुक्ताम्वर- | |
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | भूषणैः | |
| अनेकधा | பலமுறை | | |
| परमनारीणां | உத்தம தாய்மார்க | | |

| | | | |
|--------------------|--|------------------|--|
| புனை: | கரங்களால் | புன: | அடிக்கடி |
| अभिसृष्टं | { வாந்ஸல்யத்தால் கு ணவித்தட்டிக்கொ டுக்கப்பெற்றதும், | सख्यं | இடப்பக்கமாக |
| पुरस्तात् | இதற்குமுன் | अस्यता | (பாணங்களை) எறிவதால் |
| चन्दनारुभिः | சந்தனம் அகில் முத லியவைகளால் | आवातविगतवचं | { நாணிழுந்து உண்டா ன தழும்பையுடைய தும், |
| अधिवासितं च | வாசனையுண்டாக்கப் பெற்றதும், | महापरिवसनिभं | பெரும் உழல்தடி போன்றதும், |
| बाहसूर्यपतीकाशैः | பாஸூரியனது ஒளிபோன்ற | गोसहस्रप्रदातारं | { பசுக்களை ஆரோக்கண க்கரக தானஞ்செய்த தம், |
| चन्दनैः | சந்தனங்களால் | महसुतं | பூனாற்றுமரனாகிய மரகிய |
| उपशोभितं एव | அலங்கரிக்கப்பெற்ற தும், | दक्षिणं | வலது |
| पुरा | இதற்குமுன் | बाहुं | கையை |
| शयने | படுக்கையில் | उपवाय च | தலையணையாக வைத்துக்கொண்டு |
| सीतायाः | சிதாதேவியின் | विधिवत् | காஸ்தீரமுறைப்படி. |
| उत्तमाङ्गल | கிரஸால் | प्रयतः | வணக்கமுடையவ ராகவும் |
| शोभितं च | விளங்கப்பெற்றதும், | नियतः | நியமனமுடையவ ராகவும் |
| गङ्गाजलनिषेवितं | கங்காஜலநிஷேவிருக் கும் | सुनिः | மனஅடக்கமுடைய வராகவுமாகி |
| तक्षकस्य | தக்சகனெனும் ஸர்ப் பாஜனது | अथ | இப்பொழுது |
| संभोगं इव | உடலை ஒத்திருக்கிற தும், | मे | 'எனக்கு |
| युगसङ्काशं | துகத்தடிபோன் றதும், | सागरस्य | சமுத்தீரத்தை |
| संयुगे | போரில் | तरणं वा | கடத்தலாவது |
| शरूणां | சத்ருக்களுடைய | अथ वा | அல்லது |
| शोकवर्धनं | துயரத்தை வளர்க் கிறதும், | मरणं | மாணமாவது ஏற்பட வேண்டும்' |
| सुहृदानन्दनं | { நண்பர்களுக்கு ஆனந் தத்தைப் பெருக்கு கிறதும், | इति | என்று |
| दीवं | நீண்டதும், | मति | சங்கல்பத்தை |
| सागरान्तथ्यपाश्रयं | { சமுத்தீரப் வகையில் முடிக்கு ஆதாரமா னதும், | कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| | | सहोश्चि | சமுத்தீரராஜனை உத்தேசித்து |
| | | अधिशिशो | படுத்துகிட்டார். |

तस्य रामस्य सुप्तस्य कुशास्तीर्णे महीतले । नियमादप्रपत्तस्य निशास्तिस्रोऽतिचक्रमुः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|---------------------------|
| तस्य | அந்த | कुशास्तीर्णे | தர்ப்பைப் படுக் கையில் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமர் | सुप्तस्य | படுத்திருக்கும் |
| अप्रपत्तस्य | ஊக்கங்கொண்டு | तिशः | மூன்று [பொழுது |
| नियमात् | நோன்பு வழுவாது | निशाः | இரவுகள் |
| महीतले | பூப்பிரதேசத்தில் | अतिचक्रमुः | கழிந்தன. |

स त्रिरात्रोपितस्तत्र नयज्ञो धर्मवत्सलः । उपासत तदा रामः सागरं सरितां पतिम् ॥

| | | | |
|------------|---|----------------|---------------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | त्रिरात्रोपितः | மூன்றிரவு சயனித்து கொண்டிருக்கின்ற |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | सरितां | நதிகளின் [வராய் |
| नयज्ञः | { ஸம்பிரதாய அனுஷ்ட டானங்களை நன்கறிந் தவரும் | पतिं | நாதனுகிய |
| धर्मवत्सलः | தர்மவதஸஸருமாகிய | सागरं | சமுத்திரராஜனை உத்தேசித்து |
| सः | அந்த | उपासत | தலம் புரிந்தார். (ஆர்வம்). |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | |

न च दर्शयते रूपं तदा रामस्य सागरः । प्रयतेनापि रामेण यथाहिमभिपूजितः ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|-----------|-----------------|
| प्रयतेन | நோன்புமுறை வழி வாத | सागरः | சமுத்திரராஜன் |
| रामेण अपि | ஸ்ரீராமராலேயே | रामस्य च | ஸ்ரீராமருக்கும் |
| यथाहिं | தகுதிக்கு ஏற்றபடி | रूपं | உருவத்தை |
| अभिपूजितः | பிரார்த்திக்கப்பட்ட டவரான | तदा | அப்பொழுது |
| | | दर्शयते न | காட்டவில்லை. |

समुद्रस्य ततः क्रुद्धो रामो रक्तान्तलोचनः । समीपस्थमुवाचेदं लक्ष्मणं शुभलक्षणम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-----------|------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | शुभलक्षणं | சிறந்த குணங்கள் மைந்த |
| समुद्रस्य | சமுத்திரராஜன் மீது | लक्ष्मणं | எக்தமணரைப் பார்த் |
| रक्तान्तलोचनः | கடைக்கண் சிவக்க | इदं | பின் வருவாது [து |
| क्रुद्धः | சினங்கொண்டவரான | उवाच | திருவாய்மலர்ந் தருளிஞர் : |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | |
| समीपस्थं | அருகிலிருக்கும் | | |

अवलेपः समुद्रस्य न दर्शयति यत्स्वयम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------------|-----------|----------------------------------|
| अवलेपः | சமுத்திரராஜனுக்கு செருக்கு அதிகம். | स्वयं | செரில் |
| समुद्रस्य | “சமுத்திரராஜனுக்கு | न दर्शयति | பிரத்தியகூழமாகா திருக்கிறான். |
| यत् | அக்காரணத்தால்தான் | | |

प्रशमश्च क्षमा चैव आर्जवं प्रियवादिता । अस्वामर्थ्यं फलन्त्येते निर्गुणेषु सतां गुणाः ॥

| | | | |
|----------|--------------------|----------------|--------------------------|
| सतां | “ பெரியோர்களின் | प्रियवादिता एव | இனியவாதிகளாக |
| गुणाः | குணங்களாகிய | | பேசுதலும் |
| एते | யின்கண்ட | निर्गुणेषु | அற்பர்கள் விஷயத் தில் |
| प्रशमः च | செய்யபயின்றாமையும் | अस्वामर्थ्यं | சுயமர்ந்தியமின் மைமைய |
| क्षमा च | பெருமையும் | फलन्ति | விளைவிக்கின்றன. |
| आर्जवं | பணிவும் | | |

आत्मप्रशंसिनं दुष्टं धृष्टं विपरिधावकम् । सर्वत्रोत्सृष्टदण्डं च लोकः सत्कुरुते नरम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|-----------------|-------------------------------|
| लोकः | “ உலகம் | सर्वत्र | எல்லாநிடத்திலும் |
| आत्मप्रशंसिनं | தற்புகழ்ச்சியுடையவ | उत्सृष्टदण्डं च | செருக்கைக்காட்டுகிற வனுமான |
| दुष्टं | அற்பனும் [னும் | | |
| धृष्टं | முடனும் | नरं | மனிதனை |
| विपरिधावकं | யாரையும் கிட்ட அணு கவிடாதவனும் | सत्कुरुते | கொளவிக்கறது. |

न साक्षा शक्यते कीर्तिर्न साक्षा शक्यते यशः । प्राप्तुं लक्ष्मण लोकेऽस्मिञ्जयो वा रणमूर्धनि ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|-----------|-----------------|
| लक्ष्मण | “ லக்ஷ்மணு! | साक्षा | ஸாக்ஷமாயத்தால் |
| अस्मिन् | இந்த | प्राप्तुं | அடைவ |
| लोके | உலகில் | शक्यते न | முடியாது. |
| रणमूर्धनि | போர்முகத்தில் | यशः | புகழும் |
| यशः | சத்ருவை அடக்கி விடுதல்தரானாகட்டும் | साक्षा | ஸாக்ஷமாயத்தால் |
| कीर्तिः वा | புகழுகானாகட்டும் | शक्यते न | உண்டாகமாட்டாது. |

अत्र मद्भागनिभिर्नैर्मकरैर्मकरालयम् । निरुद्धतोयं सौमित्रे पुवद्भिः पश्य सर्वतः ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|-------------------------------|
| सौमित्रे | “ லக்ஷ்மணு! | मद्भागनिभिः | எனது பாணங்களால் |
| अत्र | இப்பொழுது | | பிளவுண்டு |
| मकरालयं | சமுத்திரத்தை | पुवद्भिः | தனையில் வீழ்த்த துடிக்கும் |
| सर्वतः | முற்றிலும் | मकरैः | சுரமிக்கனோடு |
| निरुद्धतोयं | நீரொழிந்ததாய் | पश्य | பார். |

महाभोगानि मत्स्थानां करिणां च करानिह । भोगिनां पश्य नागानां मया छिन्नानि लक्ष्मण ॥

| | | | |
|------------|--|----------|--|
| लक्ष्मण | “ லக்ஷ்மணு! | छिन्नानि | செதிக்கப்பட்டவை களாகவும் |
| मत्स्थानां | மீன்களுடையவும் | करिणां | கீர்யாணிகளின் |
| भोगिनां | கடற்பாம்புகளுடை யவும் | करान् | துதிக்கைகளையும் |
| | (மனிதமுகமும்பாம்பும் பீனாடலுமுடைய)கா கக்களுடையவும் | च | உய்ப்படியே செதிக்கப் பட்டவைகளாகவும் |
| महाभोगानि | பெரும் உடல்களை | इह | இப்பொழுது |
| मया | என்னால் | पश्य | பார். |

सशङ्खशुक्तिकाजालं समीनमकरं शरैः । अथ युद्धेन महता समुद्रं परिशोषये ॥ २० ॥

| | | | |
|------------------------|--|----------|-------------------|
| सशङ्ख- शुक्तिकाजालं | } "சங்கக்கன், முந்துக் சிப்பிகள் இவைக ளின் தொகுதிகளை புடைபதும் மீன்களோடும் முதலை களோடும் கூடியது மரண | समुद्रं | சமுத்திரத்தை |
| समीनमकरं | | शरैः | பாணங்களைக் கொண்டு |
| | | महता | அஸுஹ்யமான |
| | | युद्धेन | புடைத்தலால் |
| | | अथ | இதோ |
| | | परिशोषये | வற்ற அடிப்பேன். |

क्षमया हि समायुक्तं माययं मकरालयः । असमर्थं विजानाति धिक् क्षमामीदृशे जने ॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-------------|-------------------|
| अयं | "இந்த | विजानाति | எண்ணுகிறான். |
| मकरालयः | சமுத்திரராஜன் | ईदृशे | இப்படிப்பட்ட |
| क्षमया | பொறுமையுடன் | जने | ஜனத்தினிடம் |
| समायुक्तं | கடியிருக்கும் | क्षमां धिक् | பொறுமையை காட்டி |
| मां हि | என்றையும் | | எது அசட்டுத்தனம். |
| असमर्थं | கையாலாகாதவனாக | | |

न दर्शयति साम्ना मे सागरो रूपमात्मनः ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------|----------------|-----------|----------------------|
| सागरः | "சமுத்திரராஜன் | आत्मनः | தனது |
| मे | எனது | रूपं | ரூபத்தை |
| साम्ना | ஸாமோபாயத்தால் | दर्शयति न | காட்டா திருக்கிறான். |

चापमानय सौमित्रे शरांश्चाशीविषोपमान् । सागरं शोषयिष्यामि पद्भ्यां यान्तु पुवङ्गमाः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-----------------|-------------------|
| सौमित्रे | "லக்த்மண! | सागरं | சமுத்திரத்தை |
| चापं | வில்லையும் | शोषयिष्यामि | வற்ற அடிக்கப்போகி |
| आशीविषोपमान् | சர்ப்பங்களை விகர்த்த | पुवङ्गमाः | வானர்கள் [நேன். |
| शरान् च | பாணங்களைபும் | पद्भ्यां यान्तु | காலால் நடந்து |
| आनय | எடுத்துக்கொண்டுவர். | | செல்லட்டும். |

अद्याक्षोभ्यमपि क्रुद्धः क्षोभयिष्यामि सागरम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|-----------------|
| क्रुद्धः | "கிணக்கொண்ட நான் | अथ | இப்பொழுதே |
| अक्षोभ्यं | கலக்கமுடியாததாகிய | क्षोभयिष्यामि | கலக்கிவிடப்போகி |
| सागरं अपि | சமுத்திரத்தையும் | | நேன். |

वेलासु कृतमर्यादं सहसोर्मिसमाकुलम् । निर्मर्यादं करिष्यामि सायकैर्वरुणालयम् ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-------------|------------------|
| वेलासु | "கரைகளில் | सायकैः | பாணங்களால் |
| कृतमर्यादं | புரண்டோடாததாகிய | निर्मर्यादं | கரைபுரண்டோடும் |
| उर्मिसमाकुलं | சங்கல்பமுடையதும் | | சங்கல்பமுடையதாய் |
| वरुणालयं | ஆலைகளில் திவறந் துள்ள துமான | सहसा | வலுக்கொண்டு |
| | சமுத்திரத்தை | करिष्यामि | செய்யப்போகிறேன். |

महार्णवं शोभयिष्ये महादानवसङ्कुलम्

महार्णवसङ्कुलं * பெரியதரணங்கள்
கிரம்பிவிருக்கும்

॥ २६ ॥

महार्णवं
शोभयिष्ये

பெருக்கடலை
கலக்கிவிடப்போகி
மேன் *

एवमुक्त्वा धनुष्पाणिः क्रोधविस्फारितेक्षणः । वभूव रामो दुर्धर्षो युगान्ताशिरिव ज्वलन् ॥

दुर्धर्षः எதற்கும் சரியாத
रामः பூரணர்
एवं மேற்கண்டவாறு
उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
धनुष्पाणिः வில்லைக்கையிலேந்தி
யவராய்

क्रोध-
विस्फारितेक्षणः }

கொபத்தரல் விழித்த
கண்களையுடையவ
ராய்

युगान्ताशिः इव
ज्वलन्
वभूव

ஊழித்தீயைன
ஜ்வலித்துக்கொண்டு
விளங்கினார்.

संपीड्य च धनुर्घोरं कम्पयित्वा शरैर्जगत् ।

घोरं பயங்கரமான
धनुः संपीड्य விலலை வளைத்து
शरैः பாணங்களால்
जगत् च உலகமுழுவதையும்
कम्पयित्वा கடுக்கச்செய்து
शतक्रतुः நூத்திரன்

सुमोच विशिखानुग्रान् वज्रानिव शतक्रतुः ॥

वज्रान् வஜராயுதங்களை
इव எவ்வண்ணமோ
अव्वண்ணமே
उग्रान् கொடுமைசெய்யும்
विशिखान् பாணங்களை
सुमोच விடுத்தார்.

ते ज्वलन्तो महावेगास्तेजसा सायकोत्तमाः ।

महावेगाः மகா சக்தியுடையவை
ते அந்த [கரண
सायकोत्तमाः உந்தமமான பாணங்
तेजसा தேஜஸால் [கள்
ज्वलन्तः ஜ்வலிக்கின் தலைவர
ளாய்

प्रविशन्ति समुद्रस्य सलिलं त्रस्तपन्नगम् ॥

समुद्रस्य சமுத்திரத்தினது
सलिलं தலத்தில்
त्रस्तपन्नगं சர்ப்பங்கள் கடுக்கும்
படி
प्रविशन्ति போய் விழுந்தன.

तोयवेगः समुद्रस्य सनक्रमकरो महान् ।

तदा அப்பொழுது
समुद्रस्य சமுத்திரத்தினது
तोयवेगः போலைபோனது
सनक्रमकरः { முதல்கைகளோடும் மீன்
களோடும் கூடினதாய்

संवभूव महाघोरः समारुतरवस्तदा ॥ ३० ॥

महान् மிகப்பெரிதாய்
समारुतरवः காத்து ஒலியுடன்
கடினதாயும்
महाघोरः மிகப்பயக்கரமாயும்
संवभूव தொன்றிற்று.

महोर्मिमालाविततः शङ्खशुक्तिसमावृतः । सधूमपरिवृत्तोर्मिः सहसाऽऽसीन्महोदधिः ॥ ३१ ॥

महोदधिः பெருக்கடலானது
महोर्मिमाला- } பெரும் அலைகளால்
विततः } எங்கும் கரைபுரளு
கிறதாகவும்
शङ्खशुक्ति- } சங்குகளும் சிப்பிக
समावृतः } ளும் சூழும்பிக்கிடக்
கிறதாகவும்

सधूमपरि-
वृत्तोर्मिः }

புகைமுடிய அலைக்
கொடுகடியிருக்கிற
தாகவும்

सहसा
आसीन्

ஒரு கொடிப்பொழு
தில்
இருந்தது.

व्यथिताः पन्नगाश्चासन्दीप्तास्या दीप्तलोचनाः । दानवाश्च महावीर्याः पातालतलवासिनः॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|---------------|---|
| दीप्तास्याः | ஜ்வலிக்கும் முகமு டையவைகளும் | पातालतलवासिनः | பாதாளத்தில் வலிக்கும் |
| दीप्तलोचनाः | ஜ்வலிக்கும் கண்களை யுடையவைகளுமான | महावीर्याः | மஹாவீர்யசாலிக ளான |
| पन्नगाः | சர்ப்பங்கள் | दानवाः च | தர்னவர்களும் |
| व्यथिताः | துன்பமடைந்தவை களாய் | च | { அப்படியே துன்பம் டைந்தவர்களாக ஆயினர். |
| आसन् | ஆயின. | | |

उर्मयः सिन्धुराजस्य सनक्रमकरास्तदा । विन्ध्यपन्दरसङ्काशाः समुत्पेतुः सहस्रशः ॥

| | | | |
|-------------------------------|---|---------------------------|--|
| सिन्धुराजस्य उर्मयः तदा | சமுத்திரத்தினது அலைகள் அப்பொழுது | विन्ध्यपन्दर- सङ्काशाः | { விந்தியமலையைமும் மந் தரமலையைமும் நிகர் த்தவைகளாகவும் |
| सनक्रमकराः | { முதலைகளோடும் மீன்களோடும் கூடி னவைகளாகவும் | सहस्रशः समुत्पेतुः | ஆயிரக்கணக்காக உயர்த்தினப்பின. |

आघूर्णिततरङ्गौघः संभ्रान्तोरगराक्षसः । उद्धर्तितमहाप्राहः संवृत्तः सलिलाशयः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|------------------|---|--------------------------------|--|
| सलिलाशयः | சமுத்திரமானது | संभ्रान्तोरग- राक्षसः | { குழப்பமடைந்த பரம் புகளையும் அரக்கர்க ளையமுடையதாகவும் |
| आघूर्णिततरङ्गौघः | { சுழலுகின்ற அலைவரி ரைகளை யுடையதாக வும் | उद्धर्तितमहाप्राहः संवृत्तः | உயரெக் கினம்பிய வன்முதலைகளை யுடை ஆயிற்று. [வதாய் |

ततस्तु तं राघवमुग्रवेगं प्रकर्षमाणं धनुरप्रमेयम् ।

सौमित्रिस्त्यस्य समुच्छ्वसन्तं मा मेति चोक्त्वा धनुरालम्बवे ॥ ३५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|-----------|-----------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | तं | அந்த |
| सौमित्रिः | ஸகந்தமணர் | राघवं | ஸ்ரீராமரைப்பார்ந்து |
| अप्रमेयं | இத்தன்மையதென்று அறிவிக்கெட்டாத | उत्पत्य | எழுந்து |
| धनुः | வில்லை | मा | 'வேண்டாம் |
| समुच्छ्वसन्तं | பெருமூச்சு விட்டுக் கொண்டு | मा | 'வேண்டாம்' |
| उग्रवेगं | மிகக்கடினமாய் | इति | என்று |
| प्रकर्षमाणं | வளைத்துக்கொண்டு சுக்கும் | उक्त्वा च | கொல்லிவிட்டு |
| | | धनुः तु | தனுசையும் |
| | | आलम्बवे | கையால் பற்றிக் கொண்டார். |

एतद्विनाऽपि ह्युदधेस्तवाद्य संपत्स्यते वीरतमस्य कार्यम् ।

भवद्विधाः क्रोधवशं न यान्ति दीर्घं भवान्पश्यतु साधुवृत्तम् ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|----------|-----------------------|
| वीरतमस्य | " நிறந்த வீர்தம் படைக்கப்பெற்ற | भवद्भिः | தேவிர்போன்ற வர்கள் |
| तव | தேவீருடைய | नोवयं | கொபத்திற்காட்படுவ |
| कायं | காரியமானது | यान्ति न | ஆடையார்கள். [இத |
| अथ | இப்பொழுது | भवान् | தேவீர் |
| उद्यैः | சமுத்திரத்திற்கு | साधुवत् | சான்றோர்களின் |
| एतत् | இது | | ஆணுஷ்டானத்தை |
| विना अपि | இல்லாமலேயே | दीवं | எக்காலத்திலும் |
| संपश्यते हि | கைகூடுமே. | पश्यतु | பந்துவீராக". |

अन्तर्हितैश्चापि तथाऽन्तरिक्षे ब्रह्मर्षिभिश्चैव सुरर्षिभिश्च ।

शब्दः कृतः कष्टमिति ब्रुवद्भिर्मा मेति चोक्त्वा महता स्वरेण

॥ ३७ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|--------------|----------------|
| तथा | ஆப்படியே | सुरर्षिभिः च | தேவரிஷிகளாலும் |
| अन्तरिक्षे | ஆகாசத்தில் | महता | பெரும் |
| अन्तर्हितैः च | மறைந்திருந்தவர்களும் | स्वरेण | சூரனோடு |
| कष्टं | 'ஐயோ, இது என்ன | मा | 'வேண்டாம் |
| इति | என்று [ஆபத்து' | मा | வேண்டாம்' |
| ब्रुवद्भिः अपि | சொல்லுகின்றவர்களு | इति च | என்றும் |
| | மான | उक्त्वा | சொல்லி |
| ब्रह्मर्षिभिः च | பிரமரிஷிகளாலும் | शब्दः एव | சூரவாசஸ்தமும் |
| | | कृतः | இடப்பட்டது. |

इत्यर्पे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15411

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 736



द्वाविंशः सर्गः—இருபத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ २२ ॥

सेतुबन्धः समुद्रतरणं च—அணை கட்டுவதும், ஸமுத்திரத்தைத் தாண்டுவதும்.

अथोवाच रघुश्रेष्ठः सागरं दारुणं वचः । अद्य त्वां शोषयिष्यामि सपातालं महार्णव ॥१॥

| | | | |
|-------------|----------------|-------------|-------------------|
| रघुश्रेष्ठः | ஸ்ரீ ரகுத்தமர் | महार्णव | " பெருங்கடலே! |
| सागरं | சமுத்திரத்தைப் | त्वां | உன்னை |
| | பார்த்து | सपातालं | பாதாளலோகமுள் |
| अथ | பின்னரும் | | பட |
| दारुणं | கடுமையான | अथ | இப்பொழுது |
| वचः | சொல்லை | शोषयिष्यामि | வற்ற அடிக்கப்போகி |
| उवाच | மொழிந்தார் : | | மேன் |

शरनिर्दग्धतोयस्य परिशुष्कस्य सागर । मया शोषितसच्चस्य पांसुरुत्पद्यते महान् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|------------------------------------|--------------|---------------------------------------|
| सागर | "ஸாகரா ! | शोषितसच्चस्य | ஐஸ்ஸுந்துக்கள் மாண் டதாய் (உணக்கு) |
| मया | என்னால் | महान् | பெரும் |
| शरनिर्दग्धतोयस्य | பாணங்களால் ஐஸம் கொதிப்புண்டதாய் | पांसुः | புழுதி |
| परिशुष्कस्य | வறண்டதாய் | उत्पद्यते | உண்டாகப்போகின் றது. |

मत्कार्मुकविरुष्टेन शरवर्षेण सागर । पारं तेऽद्य गमिष्यन्ति पद्भिरेव पुवङ्गमाः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------------|------------|------------------------|
| सागर | "ஸாகரமே ! | ते | உணது |
| पुवङ्गमाः | வானர்கள் | पारं | அக்கரைவைய |
| मत्कार्मुकविरुष्टेन | எனது கொதண்டத்தி லிருந்து வெளிவரும் | पद्भिः एव | கால்நடையாகவே |
| शरवर्षेण | பாணசமூகத்தால் | अद्या | இப்பொழுது |
| | | गमिष्यन्ति | அடையப்போகிறார் கள். |

विचिन्वन्नाभिजानासि पौरुषं वाऽपि विक्रमम् । दानवालय सन्तापं मत्तो नाधिगमिष्यसि ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|---------------|------------------------------------|
| दानवालय | "தானவர்களின் இரு ப்பிடமே ! | अभिजानासि न | நீ அறியாதிருக்கின் றனை. |
| पौरुषं | எனது ஆற்றலைத் தானாகட்டும் | विचिन्वन् अपि | தீர்க்காலோசனை செய் கிறவனாகியும் |
| विक्रमं वा | எனது ஆண்மையை த்தானாகட்டும் | मत्तोः | என்னால் விளையும் |
| | | सन्तापं | ஆபத்தை |
| | | अधिगमिष्यसि न | நீவறியப்போவதில்லை." |

ब्राह्मोणास्त्रेण संयोज्य ब्रह्मदण्डनिभं शरम् । संयोज्य धनुषि श्रेष्ठे विचर्क्य महाबलः ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|--------------------|----------------------|
| महाबलः | மகா சக்திமானாகு | शरं | பாணத்தை |
| श्रेष्ठे | சிறந்த [மவர் | ब्राह्मोण अस्त्रेण | பிரம்மாஸ்திரத்தினால் |
| धनुषि | வில்லில் | संयोज्य | அடிமந்திரித்து |
| ब्रह्मदण्डनिभं | பிரமதண்டத்திற் கொப்பான | विचर्क्य | இழுக்கலானார். |

तस्मिन्विकृष्टे सहसा राघवेण शरासने । रोदसी संपफालेव पर्वताश्च चकम्पिरे ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|-----------|--|
| राघवेण | ஸ்ரீராமரால் | रोदसी | ஆகாயமும் பூமியும் |
| सहसा | வலுக்கொண்டு | संपफाल इव | { பினந்து விட்டவைகள் போலிருந்தன. (ஒரு - மை ஆர்வம்) |
| तस्मिन् | அந்த | पर्वताः च | பர்வதங்களும் |
| शरासने | வில் | चकम्पिरे | நடுநடுங்கின. |
| विकृष्टे | நானேற்றி இழுக்கப் பட்டபொழுது | | |

तमथ लोकमात्रे दिशथ न चकाशिरै । परिचुभुभिरै चाशु सरांसि सरितस्त्वथा ॥ ७ ॥

லोकம் ச உலகமென்கூடும்
 தம: இருள்
 आववे முடிவிட்டது.
 दिशः च திசைகள் எல்லாமும்

चकाशिरै न ஒளியத்திருத்தன.
 सरांसि பொய்கைகளும்
 सरितः तथा ஆறுகளும்
 आशु च தந்தஷணத்திலேயிய
 परिचुभुभिरै குழம்பிக்கிட்டன.

तिर्यक् सह नक्षत्रैः सङ्गतौ चन्द्रभास्करो । भास्करांशुभिरादीप्तं तपसा च समावृतम् ॥
 प्रचकाशे तदाऽऽकाशमुल्काशतविदीपितम् । अन्तरिक्षाच्च निर्वाता निर्जम्भुरतुलस्वनाः ॥

चन्द्रभास्करो சந்திரஞ்சூரியர்கள்
 नक्षत्रैः நக்சத் திரங்களை
 सह கூட
 तिर्यक् च வந்திரமாகிலை
 सङ्गतौ திரங்கடையிட்டார்கள்.
 तदा அப்பொழுது
 आकाशं ஆகாசம்
 भास्करांशुभिः சூரியகிரணங்களால்
 आदीप्तं சிறிது ஒளிக்கொண்டு
 तपसा இருவால்

समावृतं च மூடப்பட்டதாகவும்
 उल्काशत- } பல கொள்ளிக்கட்டை
 विदीपितं } களால் எரிக்கப்பட்ட
 प्रचकाशे விளக்கிறது. [காசவும்
 निर्वाताः च இடங்களும்
 अन्तरिक्षान् ஆகாயத்திலிருந்து
 (காதுகொடுத்து)
 अनुलस्वनाः { கேட்கமுடியாத ஒலி
 (முழுக்கம்) உடைய
 வைகளால்
 निर्जम्भुः வெளியத்தன.

॥ १० ॥

पुस्फुरुथ घना दिव्या दिवि मारुतपङ्कयः

दिवि ஆகாயத்தில்
 मारुतपङ्कयः புயற்காற்றுகளும்,

दिव्याः घनाः च மகா மேகங்களும்
 पुस्फुरः சிவமென்று
 தென்றின.

वभञ्ज च तदा वृक्षाञ्जलदानुद्बहन्पि । अरुजंश्चैव शैलायाञ्छिखराणि प्रभञ्जनः ॥११॥

प्रभञ्जनः புயற்காற்றுண்டை
 तदा அப்பொழுது
 जलदान् மேகங்களை
 उद्बहन् अपि தூக்கிச்செல்லின்ற
 वृक्षान् च மரங்களைபும் [தாய்

वभञ्ज முறித்தத்தள்ளிற்று.
 शैलायान् च மலைக்கிடைக்கொடும்
 छिखराणि एव சிறு குன்றுகளைபும்
 प्रभञ्जन् வெட்டிக்கத்தள்ளிற்
 டு (பல்மை ஆர்கும்).

दिविस्पृशो महामेघाः सङ्गताः समहास्वनाः । सुमुचुर्वैवृतानर्थास्ते महाशनयस्तदा ॥१२॥

दिविस्पृशः ஆகாயத்தைதயனாரவும்
 महामेघाः பெருமேகங்கள்
 * समहास्वनाः மேகொலிப்புடன் கூடி
 னவைகளால்
 तदा அப்பொழுது

सङ्गताः ஒன்றுமேசுந்தன.
 ते அந்த
 महाशनयः மேகங்கள்
 वैवृतान् மின்னல்களாகிய
 अर्थान् கெடுப்புகளை
 सुमुचुः உண்டாக்கின.

यानि भूतानि दृश्यानि चुकुशुश्वाशनेः समम् । अदृश्यानि च भूतानि मुमुचुर्भैरवस्वनम् ॥

दृश्यानि कண்ணुக்குப்புலப்
படும்
भूतानि பிராணிகள்
यानि च எவைகளோடு ஆவை
अशनेः இடிக்கு [கள்
समं ஒப்பாய்

चुकुशुः அலறின்.
अदृश्यानि கண்ணுக்குப் புலப்
படாத
भूतानि च பூதங்களும்
भैरवस्वनं பேரொலியை
मुमुचुः இட்டன.

शिष्येरे चापि भूतानि संव्रस्तान्युद्विजन्ति च । संप्रविव्यथिरे चापि न च पश्यन्दिरे भयात् ॥

भूतानि च பிராணிகளெல்லாமும்
संव्रस्तानि च பிக்க அச்சமடைந்த
வைகளாய்
शिष्येरे படுத்தவிட்டன;
उद्विजन्ति च தயராடடைந்தன;

अपि च அதோடு
संप्रविव्यथिरे பிக்க மன ஏக்கம்
கொண்டன.
भयात् भपि பயத்தினாலேயே
पश्यन्दिरे न நகரா திருந்தன.

सह भूतैः सतोयोर्मिः सनागः सह राक्षसः । सहसाऽभूत्ततो वेगाद्भीमवेगे महोदधिः ॥

महोदधिः சமுத்திரமானது
ततः அப்பொழுது
वेगात् படும்பாட்டால்
भूतैः பூதங்களோடு
सह கூடவும்
सतोयोर्मिः நீரோடும் அலைகளோ
டும் கூடவும்

सनागः பாம்புகளோடுகூடவும்
सह राक्षसः அரக்கர்களோடு கூட
வும்
सहसा திடீரென
भीमवेगः மிகவும் தத்தளிக்கிற
தாக
अभूत् ஆயிற்று.

योजनं व्यतिचक्राम वेलाभन्यत्र संप्रवात् । तं तदा समतिक्रान्तं नातिचक्राम राघवः ॥

समुद्रतमपिहृद्यो रामो नदनदीपतिम् ॥ १६ ॥
வேலா் அந்யவ கரையை விட்டு
संप्रवात् நீர்ப்பெருக்கால்
योजनं ஒரு யோஜனை தூரம்
व्यतिचक्राम பின்வாங்கி ஓடிற்று.
राघवः ரகுலதலைகளும்
अमिहृद्यः சந்துருக்களை ஒழிப்
பவருமாகிய
रामः ஸ்ரீராமர்

॥ १६ ॥
समुद्रतं செருக்கடைந்திருந்
ததும்
तदा அப்பொழுது
समतिक्रान्तं பின்வாங்கி ஓடுகிறது
तं அந்த [மான
नदनदीपतिं சமுத்திரத்தை
अतिचक्राम न துன்புறுத்தா திருந்
தார்.

ततो मध्यात्समुद्रस्य सागरः स्वयमुत्थितः । उदयन्दि महाशैलान्मेरोरिव दिवाकरः ॥

ततः அச்சமயத்தில்
सागरः சமுத்திரராஜன்
समुद्रस्य கடலினது
मध्यात् மத்தியிலின்றி,
महाशैलान् மகாவர்வதமாகிய

मेरोः மேருவிலிருந்து
उदयन् உதயமாகும்
दिवाकरः १४ சூரியபகவான் போல,
स्वयं दि தானே
उत्थितः தோன்றினான்.

पन्नगैः सह दीप्तास्यैः समुद्रः प्रत्यदृश्यत । स्निग्धवैर्हृयसंकाशो जाम्बूनदविभूषितः ॥१८॥
 रक्तमाल्याम्बरधरः पद्मपत्रनिभेक्षणः । सर्वपुष्पमयीं दिव्यां शिरसा धारयन्स्त्रजम् ॥१९॥
 जातरूपमयैश्चैव तपनीयविभूषितैः । आत्मजानां च रत्नानां भूषितो भूषणोत्तमैः ॥ २० ॥
 धातुभिर्मण्डितः शैलो विविधैर्हिमवानिव । एकावलीमध्यगतं तरलं पाण्डुरप्रभम् ॥ २१ ॥
 विपुलेनोरसा विभ्रत्कौस्तुभस्य सहोदरम् । आधूर्णिततरङ्गौघः कालिकानिलसङ्कुलः ॥
 देवतानां सुरूपाणां नानारूपाभिरीश्वरः । गङ्गासिन्धुप्रधानाभिरापगाभिः समावृतः ॥

| | | | |
|--|--|--|---|
| स्निग्धவैர்ஹ்- सङ्काशः | } वल्लुवமுப்பரண வை ரீயங்களை நிகர்த்த வணும், | கौस्तुभस्य सहोदरं पाण्डुरप्रभं | கௌஸ்துபமணியோ உண்டானதும் [டு பெண்கார்தியுடைய துமான |
| जाम्बूनदविभूषितः | பொன்னுலலக்கரிக்க ப்பட்டவணும், | तरलं | நடுநாயகமணியை |
| रक्तमाल्याम्बरधरः | { சிறந்த மாலிகளையும் வஸ்திரங்களையும் தரித்தவணும், | एकावलीमध्यगतं | { முதல் தூமரையின் நடு வில் பதிக்கப்பெற்ற தாய் |
| पद्मपत्रनिभेक्षणः | { தாமரையிதழுபோன்ற கண்களைப் பெற்றவ ணும், | विपुलेन उरसा विभ्रत् | அகன்ற மார்பில் தரித்துக்கொண்டிரு க்கிறவணும் |
| सर्वपुष्पमयीं | சர்வவித புஷ்பங்கள் சேர்த்துக்கட்டப்பெற் அழகிய மாலையை [ற தலையில் | आधूर्णिततरङ्गौघः | { சலிக்கும் அலைகளின் சமுதங்களைக் குடி னவணும், |
| दिव्यां शिरसा धारयन् | அணிந்திருக்கிற வணும், | कालिकानिल- सङ्कुलः | } பேக்கரினாகளை ரடும் காற்றோடும் கூடின வணும், |
| जातरूपमयैः | பொன்னுலிகளைக்கப் பெற்ற | सुरूपाणां देवतानां ईश्वरः | நல்ல உருவமுடைய தேவதைகளுக்கு யதுமானும், |
| आत्मजानां रत्नानां भूषणोत्तमैः च | தன்னிடத்திலுண் டான ரத்தினங்களுடைய சிறந்த ஆபரணங் களாலும் | नानारूपाभिः गङ्गासिन्धु- प्रधानाभिः | பலவகை கங்கை, சிந்து இளை களை பிரதானமாக வுடைய |
| तपनीयविभूषितैः एव विविधैः धातुभिः मण्डितः हिमवान् शैलः इव भूषितः | } பொன்னுலரன ஆபர ணங்களாலும் பலவித காணிக்கங்களால் நிறைந் துணிக்ஞும் இமயமலைபோல அலக்கரிக்கப்பட்ட வணும், | आपगाभिः समावृतः च समुद्रः दीप्तास्यैः | ததிகளால் சூழப்பட்டவனுமான சமுத்திரராலுண் ஜ்வலிக்கும் வாய்களை யுடைய |
| पन्नगैः सह प्रत्यदृश्यत | சர்ப்பங்களோடு கூட கட்புலனுயினுண். | पन्नगैः सह प्रत्यदृश्यत | சர்ப்பங்களோடு கூட கட்புலனுயினுண். |

उद्धृतिमहाग्राहः संभ्रान्तोरगराक्षसः । सागरः सद्गुपकम्ब पूर्वमामन्त्र्य वीर्यवान् ॥२४॥

अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वावयं राघवं शरपाणिनम्

॥ २५ ॥

उद्धृति- } துள்ளும் பெருமுத
 महाग्राहः } கைகொடியுடையவனும்
 संभ्रान्तोरग- } குழப்பமடைந்த பரம்
 राक्षसः } புகளையும் ராக்ஷஸர்
 कौशिकीयमुद्रणाय
 वीर्यवान् வீர்யவானுபாண
 सागरः சமுத்திரராஜன்
 शरपाणिनं பாணமும் கையுடைய
 निरुक्तम्

राघवं ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
 प्राञ्जलिः கைகூப்பிக்கொண்டு
 सद्गुपकम्ब கிட்டி
 पूर्व முதலில்
 आमन्त्र्य முகமன் கூறி
 वावयं ஓர் விண்ணப்பத்தை
 अब्रवीत् பின்வருமாறு தெரி
 வித்தான் :

पृथिवी वायुराकाशमापो ज्योतिश्च राघव । स्वभावे सौम्य तिष्ठन्ति शाश्वतं मार्गमाश्रिताः॥

सौम्य "சாந்தமூர்த்தியே !
 राघव ஸ்ரீராம !
 पृथिवी பூமி,
 वायुः வாயு,
 आकाशं ஆகாசம்,
 आपः ஜலம்,
 ज्योतिः च அகனி ஆகிய இவை
 எல்லாம்

शाश्वतं எப்பொழுதும் முள்ள
 मार्गं அனுஷ்டானத்தை
 आश्रिताः பற்றியவைகளாய்
 स्वभावे இயற்கையில்
 तिष्ठन्ति பிரளாமலிருக்கின்
 றன.

तत्स्वभावो ममाप्येष यद्ग्राहोऽहमप्लवः । विकारस्तु भवेद्वाथ एतत्ते प्रवदाम्यहम् ॥ २७ ॥

अहं "நான்
 अप्लवः (ஒரு தாண்டலாய்)
 தாண்டமுடியாதவன்,
 अग्राहः ஆழும் அளவிடமுடிய
 யாதவன்
 यद् तत् अपि எதுவோ அதுதான்
 मम எனது
 स्वभावः இயற்கை குணம்.

ग्राहः தரைகரணப்படுபவ
 भवेत् तु ஆகினில் [அக
 एषः இது
 विकारः சிருஷ்டிகுணத்திற்கு
 மாறானதாகும்.
 एतत् இதை
 ते தேவீருக்கு
 प्रवदामि தெரிவிக்கின்றேன்.

न कामान्न च लोभाद्वा न भयात्पार्थिवात्मज । आहनक्राकुलजलं स्तम्भयेयं कथञ्चन ॥

पार्थिवात्मज "சக்கிரவர்த்திக் திரு
 மகனே!
 आहनक्राकुलजलं { பெரிய பீன்களாலும்
 முதலீன்களாலும் நிரம்
 कथञ्चन { பியுள்ள ஜலத்தை
 नान् என்ன பிரயா
 कामान् { கைகொண்டாலும்
 न स्तम्भयेयं { பக்தியைக்கொண்டும்
 नान् { நான் ஸ்தம்பனம்
 செய்யமுடியாது.

वा அல்லது
 लोभात् च கிட்டாததைப் பெற
 முயன்றாலும்
 न { (அர்ப்படியே நான்
 ஸ்தம்பனம்செய்ய)
 முடியாது.
 भयात् { (ஆபத்தில்) பயத்தாலும்
 न { (நான் ஸ்தம்பனம்
 செய்ய) முடியாது.

विधास्ये राम येनापि विषहिष्ये एवं तथा । ग्राहा न प्रहरिष्यन्ति यावत्सेना तरिष्यति ॥
 हरीणां तरणे राम करिष्यामि यथास्थलम् ॥ २९ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|-----------------|---------------------|
| ராம | " ஸ்ரீராம! | ग्राहा: | முதலைகள் |
| येन | எப்படியானால் | प्रहरिष्यन्ति न | திக்கு செய்யமாட்டா. |
| अहं अपि | யானும் | राम | ஸ்ரீராம! |
| विषहिष्ये | மொறுப்படுவேனோ | हरीणां | வானரர்களுடைய |
| तथा हि | அவ்வண்ணமே | तरणे | கடக்கும் விஷயத்தில் |
| विधास्ये | செய்வேன். | यथास्थलं | எப்படியானால் ஒரு வ |
| सेना | சேனையானது | करिष्यामि | ழியெற்படுமோ அதை |
| तरिष्यति यावत् | அக்கரை செரும்பரி யந்தம் | | செய்வேன்". |

तमब्रवीत्तदा राम उद्यतो हि नदीपते । अमोघोऽयं महाबाणः कस्मिन्देशे निपात्यताम् ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|-------------|----------------------------|
| तदा | அச்சமயத்தில் | अयं | இந்த |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | महाबाणः | மஹாபாணமானது |
| तं | அவனைப் பார்த்து | अमोघः | வினாக்காதது. |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு வினாவினார். | हि | ஆனபடியால் |
| नदीपते | " சமுத்திரராஜனே! | कस्मिन् | எந்த |
| उद्यतः | தொடுக்குவிட்ட | देशे | இடத்தில் |
| | | निपात्यताम् | கீழ்க் தப்படவேண் டும்?" |

रामस्य वचनं श्रुत्वा तं च दृष्ट्वा महाशरम् । महोदधिर्महातेजा राघवं वाक्यमब्रवीत् ॥३१॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|------------------|
| महातेजा: | மஹா தேஜஸ்கியாகிய | महाशरं | மஹாபாணத்தையும் |
| महोदधि: | சமுத்திரராஜன் | तं | அந்த |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | राघवं च | ஸ்ரீராமரையும் |
| वचनं | வாக்கை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | மொழிந்தான்: |

उत्तरेणावकाशोऽस्ति कश्चित्पुण्यतमो मम । दूमकुल्य इति ख्यातो लोके ख्यातो यथा भवान्॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|--|
| मम | " எனக்கு | यथा ख्यातः | { பிரசித்திபெற்று கிள க்குகிறீரே அப் படியே |
| पुण्यतमः | மிக்கப் புண்யதல | दूमकुल्यः | |
| कश्चित् | ஒரு [மாகிய | इति | எனப் பெயர் பூண்டு |
| अवकाशः | பிரதேசமானது | ख्यातः | பிரசித்திபெற்று கிள க்குகிறது. |
| उत्तरेण अस्ति | வடக்கிலிருக்கிறது. | | |
| भवान् | தேவரீர் | | |
| लोके | உலகில் | | |

उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तत्र दस्यवः । आभीरप्रमुखाः पापाः पिवन्ति सलिलं मम ॥३३॥

| | | | |
|------------------|---|--------------|---|
| सल | “அவ்விடத்தில் | आभीरप्रमुखाः | { *ஆபிரர் என்பவர்களை தலைமையாய்க் கொண்டவர்களாய், எதற்குமஞ்சரது யாவர்க்கும் தீங்குபுரிப எனது [வர்களாய், ஜலத்தை குடிக்கின்றார்கள். |
| बहवः | பலர் | दस्यवः | |
| उग्रदर्शनकर्माणः | { கொடிய தோற்றத்தை யும் தொழில்களையு முடையவர்களான | मम | |
| पापाः | பாபிகள் | सलिलं | |
| | | पिवन्ति | |

* [பிரமணனுக்கும் அற்பஜாதிய் பெண்களுக்கும் பிறந்தவர் ஆபிரர் என்பவர்கள்.]

तैस्तु संस्पर्शनं प्राप्तैर्न सहे पापकर्मभिः । अमोघः क्रियतां राम तत्र तेषु शरोत्तमः ॥३४॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|------------------|
| प्राप्तैः | “அங்கிருக்கும் | राम | ஸ்ரீராம! |
| पापकर्मभिः | தீத்தொழில் புரியும் | तस्य | அவ்விடத்தில் |
| तैः | அவர்களால் | तेषु | அவர்கள் மீது |
| संस्पर्शनं तु | தொடுதலையும் | शरोत्तमः | உத்தமபாணமானது |
| न सहे | நான் பொறேன். | अमोघः | விண்டோகாததாக |
| | | क्रियताम् | செய்யப்பட்டும்.” |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सागरस्य स राघवः । मुमोच तं शरं दीप्तं वीरः सागरदर्शनात् ॥

| | | | |
|---------|-----------------|--------------|-------------------|
| वीरः | வீரரான | श्रुत्वा | செவிக்கொண்டு |
| सः | அந்த | दीप्तं | ஜ்வலித்துக்கொண்ட |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | तं | அந்த [ருந்த |
| तस्य | அந்த | शरं | பாணத்தை |
| सागरस्य | சமுத்திரரானது | सागरदर्शनात् | சமுத்திரரானது |
| तद्वचनं | அந்த விண்ணப்பத் | मुमोच | விண்ணப்பத்தின்படி |
| | தை | | விடுத்தார். |

तेन तन्मरुकान्तारं पृथिव्यां खलु विश्रुतम् । निपातितः शरो यत्र दीप्ताशनिसमप्रभः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|--------------|------------------|
| दीप्ताशनि-) | ஜ்வலிக்கும் இயக்குச் | तस्य | அந்த பாதேசம் |
| समप्रभः) | சமானமான ஒலி | तेन | அதனால் |
| | கொண்ட | पृथिव्यां | உலகில் |
| शरः | பாணமானது | मरुकान्तारं | மருகாந்தாரமென |
| यस्य | எவ்விடத்தில் | विश्रुतं खलु | பெயருடன் விளங்கு |
| निपातितः | வீழ்த்தப்பட்டதோ | | வதன்றே! |

ननाद च तदा तत्र वसुधा शल्यपीडिता । तस्माद्द्रुणमुखात्तोयमुत्पपात् रसातलात् ॥३७॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | तस्मात् | அந்த |
| तस्य | அவ்விடத்தில் | द्रुणमुखात् | பிளப்புகளின் |
| शल्यपीडिता | பாணத்தால் பிடிக்கப் | | வாயிலிருந்து |
| वसुधा | பூமியானது [பட்ட | रसातलात् | பாதாளத்திலிருந்து |
| ननाद च | அலறிற்று. | तोयं | ஜலமானது |
| | | उत्पपात् | பொங்கிவந்தது. |

स बभूव तदा कूपो व्रण इत्यभिविधुतः । सततं चोत्थितं तोयं समुद्रस्येव दृश्यते ॥

अवदारणशब्दश्च दारुणः समपद्यत

॥ ३८ ॥

सः अது
तदा அதுமுதல்
वणः कूपः इति वிரண கூபம் என
अभिविधुतः பெயர்கொண்டு
விளக்கிற்று.

तोयं च ஜலமானது
समुद्रस्य इव சுமுத்திரத்தைப்
போன்றதாக

सततं என்கரலத்திலும்
उत्थितं பொக்கிரும்

दृश्यते காணப்படுகிறது.
अवदारणशब्दः च பிரக்கும்சுப்பதமானது
दारुणः மிக பயங்கரமாய்
समपद्यत உண்டாயிற்று

तस्मात्तद्वाणपातेन त्वपः कुक्षिष्वशोपयत्

॥ ३९ ॥

तस्मात् அக்காரணத்தால்
तत् அப்பொழுது
वाणपातेन பாணத்தின் விழுத
செயினால்

कुक्षिषु பள்ளத்தாக்குகளில்
अपः तु ஜலங்களையும்
अशोपयत् வற்ற அடித்தார்.

विख्यातं त्रिषु लोकेषु परुकान्तास्मेव तत् । शोपयित्वा ततः कुक्षि रामो दशरथात्मजः ॥

वरं तस्मै ददौ विद्वान्मरुवेऽपरविक्रमः

॥ ४० ॥

तत् अது
त्रिषु மூன்று
लोकेषु உலகங்களிலும்
मरुकान्तास् एव மருகாந்தாரமென்றே
विख्यातं பிரசித்திபெற்று
வழங்கிவருகிறது.
दशरथात्मजः தசரதரின் திருக்
குமாரராய்
अपरविक्रमः தெய்வசக்திகொண்ட

विद्वान् ஸர்வஞ்ஞான
रामः ஸ்ரீராமர்
ततः அங்கிடத்தில்
कुक्षि பள்ளத்தாக்கை
शोपयित्वा வற்றச்செய்துகிட்டு
तस्मै அந்த
मरुवे மருகாந்தாரத்திற்கு
वरं ஓர் வரத்தை
ददौ அளித்தார்

पशव्यश्चाल्परोक्ष फलमूलरसायुतः । बहुस्नेहो बहुक्षीरसुगन्धिविविधौषधः ॥ ४१ ॥

एवमेतैर्गुणैर्युक्तो बहुभिः सततं मरुः । रामस्य वरदानाच्च शिवः पन्था बभूव ह ॥ ४२ ॥

रामस्य ஸ்ரீராமரது
वरदानात् வரம்பெற்றதனாலேயே
मरुः மருகாந்தாரரானது
पशव्यः च பசுக்களுக்கு நன்மை
பயப்பதரயும்

बहुक्षीर- } ஸர்வமான பாடிய
सुगन्धिः } டையதாயும் நறுமண
வகையுடையதாயும்
विविधौषधः பலவகை ஓஷதிகளை
யுடையதாகவும்

अल्परोगः च { வியதி என்பதே
அழர்வமாய் விளக்
குறிதாயும்
* फलमूलरसायुतः { கனி, கீழங்கு, தேவ
இவைகள் நிரம்பிய
தாயும்

एव இப்படியாய்
एते: மேற்கண்ட
बहुभिः गुणैः பல நற்குணங்களால்
सततं என்கரலத்திலும்
युक्तः च விளக்குகிறதாய்
शिवः पन्था: மக்களகரமான
बभूव ह ஆயிற்று. [இடமாத

बहुस्नेहः ஸர்வமான வெய்ய
டையதாயும்

तस्मिन्दग्धे तदा कुक्षौ समुद्रः सरितां पतिः । राघवं सर्वशास्त्रपिदं वचनमववीत् ॥४३॥

| | | | |
|---------|--------------------|--------------|---------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | समुद्रः | சமுத்திரராஜன் |
| तस्मिन् | அந்த | सर्वशास्त्रं | எவ்வசாஸ்திர நிபுணராகிய |
| कुक्षौ | பள்ளத்தாக்கு | राघवं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| द्गधे | எரிக்கப்பட்டவனவில் | इदं | பின்வரும் |
| सरितां | நதிகளுக்கு | वचनं | மொழியை |
| पतिः | நரபுகனாகிய | अववीत् | மொழிந்தான் : |

अयं सौम्य नलो नाम तनुजो विश्वकर्मणः । पित्रा दत्तवरः श्रीमान्प्रतिभो विश्वकर्मणा ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|----------------|
| सौम्य | "சாந்தமூர்த்தியே! | तनुजः | புதல்வன். |
| अयं | இயிகா இருக்குமிவன் | पित्रा | தந்தையால் |
| नलः | நளனென்ற | दत्तवरः | வரம்பெற்ற |
| नाम | பெயருடையவன். | श्रीमान् | பாக்கியசாலி. |
| विश्वकर्मणः | விசுவகர்மரவினுடைய | विश्वकर्मणा | விசுவகர்மாவோடு |
| | | प्रतिभः | சமனமானவன். |

एष सेतुं महोत्साहः करोतु मयि वानरः । तमहं धारयिष्यामि तथा ह्येष यथा पिता ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|-------------------------------|
| एषः | "இந்த | तं | அதை |
| वानरः | வானரன் | धारयिष्यामि | ஐக்கிரதையாய் பாதுகாப்பேன். |
| महोत्साहः | நிக ஊக்கக்கொண்டு | पिता | தந்தை |
| सेतुं | ஓர் அணையை | यथा | எப்படியோ |
| मयि | என்மீது | तथा हि | அப்படியேதான் |
| करोतु | கட்டட்டும். | एषः | இவனும்." |
| अहं | நான் | | |

एवमुक्त्योदधिर्नष्टः समुत्थाय नलस्तदा । अर्बुवाद्दानस्थेष्टो वाक्यं रामं महाबलः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|---------|--------------------------|--------------|-----------------------------|
| उदधिः | சமுத்திரராஜன் | वानरश्रेष्ठः | வானரோத்தமனு |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | नलः | நளன் [மாகிய |
| उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு | समुत्थाय | எழுந்து |
| नष्टः | அந்தர்த்தானமாயி னான். | रामं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| | | वाक्यं | ஒரு மொழியை |
| तदा | அப்பொழுது | अववीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தான் : |
| महाबलः | மகாசக்திமானும் | | |

अहं सेतुं करिष्यामि विस्तीर्णं वरुणालये । पितुः सामर्थ्यमास्थाय तन्वमाह महोदधिः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|---------------|
| अहं | "நான் | सेतुं | அணையை |
| विस्तीर्णं | விஸ்தாரமான | करिष्यामि | கட்டுவேன். |
| वरुणालये | சமுத்திரத்தின்மீது | महोदधिः | சமுத்திரராஜன் |
| पितुः | தந்தையினது | सर्वं | உள்ளதை உள்ள |
| सामर्थ्यं | சாமர்த்தியத்தை | | எடியே |
| आस्थाय | கைப்பற்றி | आह | சொன்னான். |

दण्ड एव वरो लोके पुरुषस्येति मे मतिः । भिक्षु क्षमापकृतज्ञेषु सान्त्वं दानमथापि वा ॥

| | | | |
|----------|------------------|--------------|--------------------------|
| लोके | "உலகில் | अकृतज्ञेषु | நன்றிகெட்டவர்கள் |
| पुरुषस्य | ஹர் மானிடனுக்கு | क्षमां अपि | விஷயத்தில் |
| दण्डः एव | தண்டோபாயத்தான் | सान्त्वं अपि | பொறுமைகையாவது |
| वरः | எதிலும் சிறந்தது | | நல்லார் தகையை |
| हति | என்பது | | யானது |
| मे | எனது | दानं वा | தானத்தையாவது |
| मतिः | கொள்கை. | भिक्षु | காட்டுவது அசட்டுத் தனமே. |

अयं हि सागरो भीमः सेतुकर्म दिदक्षया । ददौ दण्डभयाद्द्वयं राघवाय महोदधिः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|--|
| अयं | "இந்த | ददौ | தந்தைக் காப்பாற்றிக் கொள்ள வேண்டுமெனும் எண்ணத்தாலேயே |
| सागरः | சகரமன்னரால் உண்டான | दिदक्षया हि | |
| भीमः | பயங்கரமான | सेतुकर्म | சேதுகாரியத்திற்காக |
| महोदधिः | சமுத்திரராஜன் | राघं | பேடுபூமியை |
| दण्डभयात् | தண்டனைக்குப் பயந்து | राघवाय | பூராமருக்கு |
| | | ददौ | கொடுத்தான். |

मम मातुर्वरो दत्तो मन्दरे विश्वकर्षणा । औरसस्तस्य पुत्रोऽहं सदृशो विश्वकर्षणा ॥५०॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|------------------|
| मन्दरे | "மந்தரமலையில் | अहं | நான் |
| विश्वकर्षणा | விசுவகர்மானினால் | तस्य | அவரது |
| मम | எனது | औरसः | ஒளரஸ |
| मातुः | அன்னைக்கு | पुत्रः | புத்திரன். |
| दत्तः | கொடுக்கப்பட்ட | विश्वकर्षणा | விசுவகர்மானினால் |
| वरः | அனுக்கிரகமாகிய | सृशः | சமரமானவன். |

स्मारितोऽस्म्यहमेतेन तत्रमाह महोदधिः । न चाप्यहमनुक्तो वै प्रवृषामात्मनो गुणान् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|------------|-------------------------|
| महोदधिः | "சமுத்திரராஜன் | अपि च | அன்றியும் |
| तत्रं | உள்ளது உள்ளபடியே | अनुक्तः | பிரதால் சொல்லப் |
| आह | கொன்னான். | आत्मनः | எனது [படாதவனும் |
| एतेन | இவனால் | गुणान् | குணங்களை |
| अहं | நான் | अहं वै | எனவே |
| स्मारितः | நினைப்பூட்டப்பட்ட | प्रवृषां न | சொல்லிக்கொள்ள மாட்டேன். |
| अस्मि | ஆகிறேன். [வனாக | | |

समर्थथाप्यहं सेतुं कर्तुं वै वरुणालये । कामपथैव बभन्तु सेतुं वानरपुङ्गवाः ॥ ५२ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|--------------|------------------|
| वरुणालये अपि | "சமுத்திரத்தின்மீது | कामं च | கம்புகிருப்பதால் |
| सेतुं | சேதுவை [கட்ட | अथ एव | இப்பொழுதே |
| कर्तुं | கட்ட | वानरपुङ्गवाः | வானரோத்தபர்கள் |
| अहं | நான் | सेतुं | சேதுவை |
| समर्थः वै | வாய்மையான [நல்லவன். | बभन्तु | கட்டட்டும்." |

ततोऽतिष्ठत्वा रामेण सर्वतो हरियूथपाः । अभिषेत्तुर्महाराज्यं हृष्टाः शतसहस्रशः ॥ ५३ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|---------------------|
| ततः | அதன்மேல் | शतसहस्रशः | நூற்றுக்கணக்காகவும் |
| रामेण | ராமரால் | सर्वतः | ஆகாக்கணக்காகவும் |
| अतिष्ठत्वा | விடைகொடுத்துவிடு | हृष्टाः | நாற்புறமும் |
| | க்கப்பட்ட | | மனச்சுந்துஷ்டிகொ |
| हरियूथपाः | வானரசேனைத்தலைவர்க | महाराज्यं | டவர்களால் |
| | கள் | अभिषेत्तुः | பெரும்பாட்டிற்கு |
| | | | ஒடிச்சென்றார்கள். |

ते नगान्नगसंकाशाः शाखामृगगर्षभाः । वभञ्जुर्वा नरास्तत्र प्रचक्रुश्च सागरम् ॥ ५४ ॥

| | | | |
|-----------------------|---------------------|-----------|------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | नगान् | விருகுகங்களே |
| ते | அந்த | वभञ्जुः | வேரோடு பெயர் த் |
| नगसंकाशाः | மலைகளை திகர்த்தவர்க | | தார்கள். |
| | களும் | सागरं | சமுத்திரத்திற்கு |
| शाखामृग- गर्षभाः च | வானரக்கட்டத்தலை | प्रचक्रुः | இழுத்துக்கொண்டு |
| वानराः | வர்களாபான | | வந்தார்கள். |
| | வானர்கள் | | |

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्विशैश्च वानराः । कुटजैर्जुनेस्तालैस्तिलकैस्तिमिशैरपि ॥ ५५ ॥

विल्वैश्च सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः । चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ ५६ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|-------------------|
| ते | அந்த | तिमिशैः अपि | தமிழகங்களாலும் |
| वानराः | வானர்கள் | विल्वैः च | பில்வமாங்களாலும் |
| सालैः च | ஆர்சாமரங்களாலும் | सप्तपर्णैः च | எழிலைப்பாலையாங் |
| अश्वकर्णैः च | அச்வகர்ணமங்களாலும் | | களாலும் |
| | லும் | पुष्पितैः | மலர்கள் நிறைந்த |
| धवैः | தவமங்களாலும் | कर्णिकारैः च | கர்ணிகாமங்களாலும் |
| वंशैः च | முக்கில்களாலும் | | லும் |
| कुटजैः | கெட்பாலையாளாலும் | चूतैः च | மாமங்களாலும் |
| अजुनेः | அஜுனாமங்களாலும் | अशोकवृक्षैः च | அசோகமங்களாலும் |
| तालैः | பாலையாளாலும் | सागरं | சமுத்திரத்தை |
| तिलकैः | திலகமங்களாலும் | समपूरयन् | நிரப்பினார்கள். |

समूलांश्च विमूलांश्च पादपान्हरिसत्तमाः । इन्द्रकेतुनियोजय्य प्रजहूर्हरयस्तरुन् ॥ ५७ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|-----------------|
| हरिसत्तमाः | வானரேரத்தமர்களாகிய | विमूलान् | வேரில்லாமலும் |
| | | इन्द्रकेतुन् | இந்திரத்தவஜுகளை |
| हरयः | வானர்கள் | इव | போலவே |
| पादपान् च | சிலமங்களாக | उचय्य | ஏந்தித் தூக்கி |
| समूलान् | வேருடலும் | प्रजहुः | கொண்டு வந்துச் |
| तरुन् च | சிலமங்களாக | | சேர்த்தார்கள். |

தாலாந்ரூபிமகுலமாங்க நாரிகேலாந்விபீதகாந் | வகூலாந்ரூபிமகுலமாங்க: சமந்நத: ||

சமந்நத: ளங்கூலிசூந்ரூபி
தாலாந்ரூபி
தாஐிமகுலமாந்ரூபி
நாரிகேலாந்ரூபி
விபீதகாந்ரூபி

வகூலாந்ரூபி
லாஐிராந்ரூபி
விபாந்ரூபி
சமாந்நத:
கேர்த்நதாரகன்.

ஹஸ்திமாந்ரூபிமகுலமாங்க: பாபாநாங்க்ரூபி மஹாஸலா: | பரீதாங்க்ரூபி சமூலாஐயி யந்ரூபி: பரீவஹ்நி ச ||

மஹாஸலா: ச
ஹஸ்திமாந்ரூபி
பாபாநாந்ரூபி

பரீதாந்ரூபி
சமூலாஐயி
யந்ரூபி:
பரீவஹ்நி

பரீஸிப்யமாந்ரூபி: சஹஸா ஜலமூலதம் | சமூலபரிதமாகாசமூலபரிததஸ்த: || 60 ||

சஹஸா
பரீஸிப்யமாந்ரூபி:
பரிதத:
பரிததம்

ஜலம்
பரிததம்
சமூலபரித
பரிதத:
பரிததம்

ஆபூவந்நத: பூவந்நத: கர்ஜந்நத: பூவஐயி: | சமூல ஶோபயாமாஸூலாந்ரூபி சமந்நத: ||

சூலாப்யந்யே பரீஐயி வ்யாயதம் சதயோஜநம்

|| 61 ||

ஆபூவந்நத:
பூவந்நத: ச
கர்ஜந்நத: ச
பூவஐயி:
வாஸராரகன்

சமந்நத:
சமூல
ஶோபயாமாஸூ:
அந்யே
வாஸரா: ச
வ்யாயதம்
சதயோஜநம்
சூலாபி
பரீஐயி

நலாந்ரூபி மஹாஸேதும் பரீயே நடநடீபதே: | ச தபா க்ரீயதே சேதூலாந்ரூபி: || 62 ||

நலாந்ரூபி
நடநடீபதே:
பரீயே
மஹாஸேதும்
சகே
ச:

சேதூலாந்ரூபி:
வாஸரா:
தபா
க்ரீயதே

दण्डानन्ये प्रगृह्णन्ति विचिन्वन्ति तथा परे

॥ ६३ ॥

अन्ये
दण्डान्
प्रगृह्णन्ति

கிலர்
அணவுகொல்களை
பிடிக்கின்றார்கள்.

तथा
परे
विचिन्वन्ति

அப்படியே
வேறுகிலர்
குதியல் குதியலாய்
செர்க்கின் றர்கள்.

वानराः शतशस्तत्र रामस्याज्ञापुरस्सराः । मेघामैः पर्वताग्रैश्च तृणैः काष्ठैर्वन्धिरे ॥ ६४ ॥

तत्र
वानराः
शतशः
रामस्य
भाज्ञापुरःसराः

அப்பொழுது
வானர்கள்
நூற்றுக்கணக்காக
ஸ்ரீராமரது
ஆக்கைகுப்புடி நடக்
கின்றவர்களாய்

मेघामैः
पर्वताग्रैः
तृणैः
काष्ठैः च
वन्धिरे

மேகக்களை நிகர்த்த
மலைத்திரைக்களாலும்
நாணல்களாலும்
கட்டைகளாலும்
கட்டி றார்கள்.

पुष्पिताग्रैश्च तरुभिः सेतुं बध्नन्ति वानराः

॥ ६५ ॥

वानराः
पुष्पिताग्रैः

வானர்கள்
புஷ்பித்த றனிக
குற்ற

तरुभिः च
सेतुं
बध्नन्ति

மரங்களாலும்
சேதுவை
கட்டுகின்றார்கள்.

पाषाणांश्च गिरिप्रख्यान गिरीणां शिखराणि च । दृश्यन्ते परिधावन्तो गृह्य वारणसन्निभाः॥

वारणसन्निभाः
गिरिप्रख्यान
पाषाणान् च

பாளைகளை நிகர்த்த
வர்கள்
மலைகளை நிகர்த்த
பெரும் கற்பாறைக
ளையும்

गिरीणां
शिखराणि च
गृह्य
परिधावन्तः
दृश्यन्ते

பர்வதங்களுடைய
சிகரங்களையும்
கையிலேநிற்கொண்டு
ஐடிச்செல்பவர்களாய்
காணப்படுகின்றார்கள்.

शिलानां क्षिप्यमाणानां शैलानां च निपात्यताम् । बभूव तुमुलः शब्दस्तदा तस्मिन्महोदधौ॥

तदा
तस्मिन्
महादधौ
शिलानां
क्षिप्यमाणानां

அப்பொழுது
அந்த
சமுத்திரத்தில்
பாறைகள்
எறியப்படுகையிலும்

शैलानां
निपात्यतां च
तुमुलः
शब्दः
बभूव

மலைகள்
விழுந்தப்படுகையி
பெரிய [லும்
சுப்பமாளது
உண்டாயிற்று.

सहेलं हनुमाञ्छैलं यं यं विपुलमाक्षिपत् । तं तं करेण वामेन सलीलं जग्द्वे नलः ॥६८॥

हनुमान्
यं यं
विपुलं
शैलं
सहेलं
आक्षिपत्

நானுமார்
எந்தெந்த
பெரிய
கற்பாறையை
அனாயாமாய்
எறிந்தாரோ

तं तं
नलः
वामेन करेण
सलीलं
जग्द्वे

அகதை
நளன்
இடது கையினால்
அனாயாமாய்
பிடிந்துகொண்
டான்.

कृतानि प्रथमेनाह्वा योजनानि चतुर्दश । प्रहृष्टैर्गजसंकाशैस्स्वर्माणैः पुवङ्गमैः ॥ ६९ ॥

| | | | |
|------------|--|------------------------------|---|
| प्रहृष्टैः | பணசக்துலிஷ்டிகொண் டவர்களுமும் | पुवङ्गमैः | வரணரர்களால் |
| गजसङ्काशैः | யானைகளின் சிகர்த்த வர்களுமும் | प्रथमेन अह्वा | முதலாவதுகொண் |
| स्वर्माणैः | பாபரப்புடன் தொழில் புரிசிறவர்களுமான | चतुर्दश योजनानि कृतानि | பதின்னான்கு யோஜனைகள் கட்டப்பட்டன. |

द्वितीयेन तथा चाह्वा योजनानि तु विंशतिः । कृतानि पुवर्गैस्तूर्ण भीमकायैर्महाबलैः ॥

| | | | |
|---------------------|-------------------------------|------------------------------|------------------------------------|
| भीमकायैः तु | பெரும் சீரமுடைய வர்களுமும் | तथा | அப்படியே |
| महाबलैः च | மஹா பலவான்களு மான | द्वितीयेन अह्वा | இரண்டாவது தினத்தில் |
| पुवर्गैः स्तूर्ण | வரணரர்களால் விசைவில் | विंशतिः योजनानि कृतानि | இருபது யோஜனைகள் கட்டப்பட்டன. |

अह्वा तृतीयेन तथा योजनानि कृतानि तु । त्वर्माणैर्महाकायैरेकविंशतिरेव च ॥ ७१ ॥

| | | | |
|------------------------------|---|--------------------------------|--|
| तथा एव द्वितीयेन अह्वा | அப்படியே முன்னாவது தினத்தில் | महा बलैः च | பெரும் சீரமுடைய வர்களுமான அவர் களால் |
| स्वर्माणैः तु | பாபரப்புடன் தொ ழில் புரிசின் மவர்க ளும் | एकविंशतिः योजनानि कृतानि | |

चतुर्थेन तथा चाह्वा द्वाविंशतिरथापि च । योजनानि महावेर्गैः कृतानि त्वरितैस्तु तैः ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|----------------------------------|---|
| महावेर्गैः अपि | மஹா சாமர்த்திய முடையவர்களும் | तथा च | அப்படியே |
| त्वरितैः तु | பாபரப்புடனிருந்த வர்களுமான | चतुर्थेन अह्वा | நான்காவது தினத்தில் |
| तैः च अथ | அவர்களையே அப்பொழுது | द्वाविंशतिः योजनानि कृतानि | இருபத்திரண்டு யோஜனைகள் கட்டப்பட்டன. |

पञ्चमेन तथा चाह्वा पुवर्गैः क्षिप्रकारिभिः । योजनानि त्रयोविंशत्सुबेलमधिकृत्य वै ॥ ७३ ॥

| | | | |
|---------------------------|---|---------------------------------|---|
| क्षिप्रकारिभिः | விசைவில் காரியங்களை முடிக்கும் | अधिकृत्य वै | முடிவு எல்லையாக வைத்துக்கொண்டு |
| पञ्चमेन अह्वा सुबेल | ஐந்தாவது தினத்தில் சுவேலையாகத்தனை | त्रयोविंशत् योजनानि तथा च | இருபத்துமுன்று யோஜனைகள் அப்படியே கட்டிமுடி க்கப்பட்டன. |

स वानरवरः श्रीमान्विश्वकर्मात्मजो बली । वबन्ध सागरे सेतुं यथा चास्य पिता तथा ॥

வானரவர்: வானரோத்தமனும்
 श्रीमान् பூமினும்
 बली வெகுபலசாலியும்
 विश्वकर्मात्मजः விசுவகர்மாவின்
 पुत्रஸ்வனுமான

யथा எப்படிப்பட்டவனோ
 तथा च அப்படிப்பட்டவனோ
 மாண
 सः அவன்
 सागरे சமுத்திரத்தில்
 सेतुं சேதுவை
 वबन्ध கட்டிமுடித்தான்.

अस्य इवान्तु
 पिता தந்தை

स नलेन कृतः सेतुः सागरे मकरालये ।

नलेन நளனால்
 मकरालये கரையின்கள் வசிக்ஞ
 मीढमाकिय

शुशुभे सुभगः श्रीमान्स्वातीपथ इवाम्बरे ॥

स्वातीपथः ஸ்வாதிபாதத்தில்
 செல்லும் வழி
 इव போலவே
 श्रीमान् மகிமைபொருந்திய
 தரகவும்
 सुभगः அழகுவாய்ந்ததாக
 வும்
 शुशुभे கிளங்கிற்று.

सागरे सप्तुத்திரத்தில்
 कृतः கட்டப்பட்ட
 सः அந்த
 सेतुः சேதுவானது
 अम्बरे ஆகாசத்தில்

ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः । आगम्य गगने तस्थुर्द्रष्टुकामास्तद्द्रुतम् ॥७६॥

ततः அப்பொழுது
 सगन्धर्वाः கந்தர்வர்களுள்ளிப்ட
 देवाः தேவர்களும்
 सिद्धाः சித்தர்களும்
 परमर्षयः च மகரிஷிகளும்
 तत् अந்த

अद्भुतं அதிசயத்தை
 द्रष्टुकामाः பார்க்க அவர்க்கொண்
 डलர்களாய்
 गगने ஆகாசத்தில்
 आगम्य வந்து
 तस्थुः நின்றார்கள்.

दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम् । ददृशुर्देवगन्धर्वा नलसेतुं सुदुष्करम् ॥ ७७ ॥

देवगन्धर्वाः தேவர்களும் கந்தர்வர்
 कण्टुम्
 दशयोजनविस्तीर्णं பத்துயோஜனை அகல
 முள்ளதும்
 शतयोजनं நூறு யோஜனை
 आयतं நீளமுள்ளதும்

सुदुष्करं வேறு எவராலும் செ
 ய்யமுடியாததுமான
 नलसेतुं னளனால் கட்டப்பட்ட
 சேதுவை
 ददृशुः கண்ணொரக் கண்டார்
 கள்.

तदचिन्त्यमसह्यं च अद्भुतं रोमहर्षणम् । ददृशुः सर्वभूतानि सागरे सेतुबन्धनम् ॥ ७८ ॥

सर्वभूतानि எல்லாப்பிராணிகளும்
 सागरे சமுத்திரத்தில்
 अचिन्त्यं நினைக்கமுடியாததும்
 असह्यं செய்ய அருளின்
 न्नि
 रोमहर्षणं முடிக்கமுடியாததும்
 मयिर्क्षित्तिर्पेपेथियப்
 पண்ணुसिप்ததும்

अद्भुतं च ஆச்சரியகரமானது
 மாண
 तत् அந்த
 सेतुबन्धनं சேதுபந்தத்தை
 ददृशुः பிரத்தியக்ஷமாகப்
 பார்க்கிறார்கள்.

तानि कोटिसहस्राणि वानराणां महौजसाम् । बध्नन्तः सागरे सेतुं जम्बुः पारं महोदधेः ॥

மஹௌசாம்
வானராணாம்
தானி
கோடிக் கணக்கான

பலமும்

सागरे

சமுத்திரத்தில்

विशालः सुकृतः श्रीमान्सुभूमिः सुसमाहितः ।

மஹாஸேதுவானது
விசாலமாயும்
சுகூத: உறுதியாநிறுப்பதா
சுரிமான் அழகியதாயும் [யும்
சுசுமி: மேடுபள்ளமில்லாத
தாயும்

செது
வத்ந: கட்டிமுடித்தவர்க
ளாய்
மஹோதே:
பாரே
ஜம்பு:
பிரயாணமானுர்கள்.

अशोभत महासेतुः सीमन्त इव सागरे ॥

சுவமஹித:
சாஹரே
சீமந்த: இவ
அசோமத
வெடுப்பில்லாததாயும்
சமுத்திரத்தில்
உச்சிக்கூந்தலின்
வகிந்தலென
விளங்கிற்று.

ततः पारे समुद्रस्य गदापाणिर्विभीषणः । परेषामभिधातार्यमतिष्ठत्सचिवैः सह ॥ ८१ ॥

தத:
சமூத்ரஸ்ய
பாரே
விபிஷண:
கடாபாணி:
சசிவீ:

அப்பொழுது
சமுத்திரத்தின்
அக்கரையில்
விபிஷணர்
கடாயு சமுக்கையுமாக
மத்திரிமாரர்களோடு

சஹ
பரேயாம்
அமிதாநார்யம்
அதிஸ்து
கூடவே
சத்தருக்களை
வதைப்பதின்
பொருட்டு
காத்துநின்றகொண்
டிருந்தனர்.

सुग्रीवस्तु ततः प्राह रामं सत्यपराक्रमम् । हनुमन्तं त्वमारोह अङ्गदं चापि लक्ष्मणः ॥ ८२ ॥

சுஹீவஸ்து
சுஹீவ:
சவ்யபராஹ்மம்
ராமம்
பாஹ்

அப்பொழுது
சுகிரீவன்
விண்மேகாப் பராக்
கிரமமுடைய
ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
பின்வருமாறு விண்ண
ப்பஞ்செய்தான்.

ஹ்
ஹுமந்த்
அரோஹ்
லக்ஷ்மண:
அங்குத
அபி ச
“தேவரீர்
ஹனுமான்மீதே
ஏறிக்கொள்கிராக,
உத்தமணர்
அக்கதன்மீது
அப்படியே ஏறிக்
கொள்ளட்டும்.

अयं हि विपुलो वीर सागरो मकरालयः

வீர
அயம்
மகராலய:

“சூரரே!
இந்த
கருமீன் களுக்கிருப்
பிடமாகிய

॥ ८३ ॥

सागरः हि
विपुलः

சமுத்திரமே
மிக நீண்டது.

वैहायसौ युवामेतौ वानरौ तारयिष्यतः

வீஹாயஸௌ
ஏதௌ

“ஆகாசமார்க்கமாய்ச்
செல்லும்
இந்த

॥ ८४ ॥

वानरौ
युवां
तारयिष्यतः

வானரர்களிருவரும்
உக்களிருவர்களை யும்
தாண்டுவிப்பார்கள்.”

अग्रतस्तस्य सैन्यस्य श्रीमात्रामः सलक्ष्मणः । जगाम धन्वी धर्मात्मा सुर्यावेण समन्वितः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|---------------------|
| तस्य | அந்த | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| सैन्यस्य | சேனைக்கு | सलक्ष्मणः | என்தமண்சேர இகூட |
| अग्रतः | முன்பாக | सुर्यावेण | சூர்யரால் |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமாளும் | समन्वितः | சென்பற்றப்பட்டவராய் |
| धन्वी | வில்வீரனும் | | |
| धर्मात्मा | தர்மர தர்மவுடையான் | जगाम | செல்லலானார். |

अन्ये मध्येन गच्छन्ति पार्श्वतोऽन्ये पुवङ्गमाः । सलिले प्रपतन्त्यन्ये मार्गमन्ये न लेभिरे ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|-----------------------|
| अन्ये | சில | अन्ये | வேறுசிலர் |
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | सलिले | ஐலத்தில் |
| मध्येन | நடுவிலும் | प्रपतन्ति | நீர் திச்சென்கின்றார் |
| अन्ये | வேறுசிலர் | अन्ये | வேறுசிலர் [கள். |
| पार्श्वतः | பக்கக்களரினும் | मार्ग | போகும்வழியை |
| गच्छन्ति | செல்லுகின்றார்கள். | लेभिरे न | பெறவில்லை. |

केचिद्वैहायसगताः सुपर्णा इव पुपुवुः

| | | | |
|----------|---------------|------------|-------------------------|
| केचिद् | சிலர் | वैहायसगताः | ஆதாசத்தை அடைந்தவர்களாய் |
| सुपर्णाः | கருடபகவான்கள் | पुपुवुः | பறந்துச்சென்றார்கள். |
| इव | போலவே | | |

घोषेण महता तस्य सिन्धोर्घोषं समुच्छ्रितम् । भीममन्तर्दधे भीमा तरन्ती हरिवाहिनी ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|---------------------|
| भीमा | பயக்கரமான் | तस्य सिन्धोः | அந்த சமுத்திரத்தின் |
| हरिवाहिनी | வானரசேனையானது | भीमं | பயக்கரமாய் |
| तरन्ती | கடந்துசெல்கிறதாய் | समुच्छ्रितं | கொம்பும் |
| महता | பெரும் | घोषं | சத்தத்தை |
| घोषेण | சத்தத்தால் | अन्तर्दधे | அடக்கியிட்டது. |

वानराणां हि सा तीर्णा वाहिनी नलसेतुना । तीरे निविविशे राज्ञो बहुमूलफलोदके ॥

| | | | |
|----------|-------------------------|---------------------|--|
| वानराणां | வானரர்களின் | तीर्णा हि | கடந்துவந்து |
| राज्ञः | மன்னனது | | சேர்ந்ததாய் |
| सा | அந்த | बहुमूल- फलोदके } | பல கிழக்குகளும், கனிகளும் நீர்த்தங்களுக்கும் நிறைந்த |
| वाहिनी | சேனை | | |
| नलसेतुना | நளன் கட்டிய லேதுவழியாய் | तीरे | அக்கரைவில் |
| | | निविविशे | இறக்கிற்று. |

तद्भुतं राघवकर्म दुष्करं समीक्ष्य देवाः सह सिद्धचारणैः ।

उपेत्य रामं सहसा महर्षिभिः समभ्यपिञ्चन् सुशुभैर्जलैः पृथक् ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|--------------|--------------------------------|
| देवाः | தேவர்கள் | अद्भुतं | அசுரயத்ததை |
| सिद्धचारणैः | சித்தர்களினோடும் சாரணர்களினோடும் | समीक्ष्य | பார்த்து |
| महर्षिभिः | மகர்ஷிகளோடும் | सहसा | தகவலமே |
| सह | கூட்டுவ | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| सर्व | அந்த | उपस्य | கிட்ட |
| दुष्करं | பிதரால் செயற்கரிய | सुशुभैः | மிகப்புண்ணிய |
| राघवकर्म | ஸ்ரீராமரது காரியமுமாய | नलेः | தீர்த்தங்களால் |
| | | पुणक् | தனித்தனியே |
| | | समन्वयिञ्चन् | அடிகலக்கம் செய்து வைத்தார்கள். |

जय स्वशत्रुनरदेव मेदिनीं ससागरां पालय शाश्वतीः समाः ।

इतीव रामं नरदेवसंस्कृते शुभैर्वचोभिर्विविधैरपूजयन्

॥ ९१ ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|-------------------------------|
| नरदेवसंस्कृते | { மாணிடர்களாலும் தேவர்களாலும் வணங்கப்படுகிறது | मेदिनीं | உலகை |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து | शाश्वतीः समाः | பல்லாண்டு பல்லாண்டாய் |
| नरदेव | "சகலரவந்தீதியே! | पालय | பரிபாலனம் பண்ணி அருளவேண்டும்" |
| स्वशत्रुन् | தேவரீரது சந்ருக்களை | इति एव | இப்படியும், இன்னும் |
| जय | ஒழிப்பிராக. | विविधैः | பல |
| ससागरां | "முத்திரக்கருள் ளிட்ட | शुभैः | மக்கள் |
| | | वचोभिः | ஆசிரியோழிகளால் |
| | | अपूजयन् | கொண்டாடினார்கள். |

इत्यापि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15502

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 827



त्रयोविंशः सर्गः—இருபத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ २३ ॥

लङ्काप्रस्थानम्—இலங்கைக்குப் புறப்படுவது.

निमित्तानि निमित्तज्ञो दृष्ट्वा लक्ष्मणपूर्वजः । सौमित्रि संपरिष्वज्य इदं वचनमब्रवीत् ॥१॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------------|-------------|---------------------|
| निमित्तज्ञः | சகுலசாஸ்திரத்திற் சிபுனரும் | सौमित्रि | உக்தமணரைப் பார்த்து |
| लक्ष्मणपूर्वजः | லக்ஷ்மணருக்குத் தாய் யனருமாயிய ஆயர் | संपरिष्वज्य | தழுவிக்கொடுத்து |
| निमित्तानि | சகுலக்களை | इदं | பின்வரும் |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | वचनं | கொல்லை |
| | | अब्रवीत् | கொண்டார். |

परिशुद्धोदकं शीतं वनानि फलवन्ति च । बलौघं संविभज्येयं व्युह्य तिष्ठेम लक्ष्मण ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|-------------------|
| लक्ष्मण | “ வசுத்தமண ! | इमं | இந்த |
| शीतं | குளிர்ந்த | बलौघं | சேனைசமூகத்தை |
| उदकं | தீர்ந்ததத்தையும் | संविभज्य | பிரித்து |
| फलवन्ति | கனிகள் நிரம்பிய | व्यूह्य | அணிவகுத்து |
| वनानि च | சேனைகளையும் | तिष्ठेम | நாமிக்கிருப்போம். |
| परिशुद्ध | கண்டுகொண்டு | | |

लोकक्षयकरं भीमं भयं पश्याम्युपस्थितम् । निर्वहणं प्रवीराणामृक्षवानररक्षसाम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------------------|--|------------|-------------------------------------|
| प्रवीराणां | பிகச் சூரர்களாகிய | लोकक्षयकरं | உலகத்திற்கே அழி வைச் செய்கிறதும் |
| ऋक्षवानर- रक्षसां } | கடியகளுக்கும், வான ரர்களுக்கும், அரசு கர்களுக்கும் | भीमं | பயங்கரமான துமான |
| निर्वहणं | நாசத்தை விளைவிக்கி றதும் | भयं | பெரும் விபத்தை |
| | | उपस्थितं | நெருங்கிட்டதாக |
| | | पश्यामि | நான் பார்க்கிறேன். |

वाताश्च कलुषा वान्ति कम्पते च वसुन्धरा । पर्वताग्राणि वेपन्ते पतन्ति च महीरुहाः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|----------------------------|
| वाताः | காற்றுகள் | पर्वताग्राणि | புனிச்சிகரங்கள் |
| कलुषाः च | புழுதியுண்டவைக | वेपन्ते | குலுக்குகின்றன. |
| वान्ति | விசுகின்றன. [எரய] | महीरुहाः च | விருகடிக்களும் |
| वसुन्धरा च | பூமியும் | पतन्ति | (முறித்து) விழுகின் றன. |
| कम्पते | நடுநடுக்குகின்றது. | | |

मेघाः क्रव्यादसङ्काशाः परुषा परुषस्वनाः । क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति मिश्रं शोणितविन्दुभिः ॥

| | | | |
|------------------|--|----------------|------------------------|
| मेघाः | மேகங்கள் | क्रूराः | பயங்கரமானவைகளு மாய் |
| क्रव्यादसङ्काशाः | பேய்பிசாசுகளை நிகர் ந்தவைகளாய் | शोणितविन्दुभिः | சத்தபிந்துக்களோடு |
| परुषाः | { கண்டெடுத்துப் பார்க்கவொண்ணா தவைகளாய் | मिश्रं | கலந்ததாய் |
| परुषस्वनाः | கர்ணகரேமரக கர்ஜிக் கின்றவைகளாய் | क्रूरं | அஸுற்றயமாய் |
| | | प्रवर्षन्ति | வர்ஷிக்கின்றன. |

रक्तचन्दनसङ्काशा सन्ध्या परमदारुणा । ज्वलतः प्रपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|-------------|-------------------|
| सन्ध्या | ஸந்தியரகாலமானது | ज्वलतः | ஜுவலிக்கும் |
| रक्तचन्दनसङ्काशा | செஞ்சந்தனத்தை நிகர்ந்ததாய் | आदित्यात् | சூர்யபகவானிட |
| परमदारुणा | பிகப் பயங்கரமாய் யிருக்கிறது. | एतत् | இந்த [யிருந்து] |
| | | अग्निमण्डलं | அக்னிமண்டம் |
| | | प्रपतति | பிறிடி விழுகிறது. |

दीना दीनस्वराः क्रूराः सर्वतो मृगपक्षिणः । मत्यादित्यं विनर्दन्ति जनयन्तो महद्भयम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|---------------|---------------------------------|
| क्रूराः | அதிக ஆண்களைய புடைப | मद्भु भयं | அதிக பயத்தை |
| मृगपक्षिणः | மிருகங்களும் பாக்ஷி களும் | सर्वतः | எக்கும் |
| दीनाः | ஏக்கம்பிடித்தவை களாய் | जनयन्तः | உண்டுபண்ணுகின்ற வைகளாய் |
| दीनस्वराः | பரிதாபமான குரலுந் றவைகளாய் | आदित्यं प्रति | சூரியபகவானைப் பார் ந்தவண்ணமே |
| | | विनर्दन्ति | பேரொலிசெய் கின்றனர். |

रजन्यामप्रकाशस्तु सन्तापयति चन्द्रमाः । कुष्णरक्तांशुपर्यन्तो लोकक्षय इवोदितः ॥

ह्रस्वो रूक्षोऽप्रशस्तश्च परिवेषः सुलोहितः

॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|----------------------------|--|
| चन्द्रमाः | “சந்திரனும் | कुष्णरक्तांशु- पर्यन्तः | } கறுத்துச் சிவந்த நு ணிக்கிரணங்களைய டையதாய் |
| अप्रकाशः तु | ஒளி குன்றியவனா கவே | ह्रस्वः | |
| रजन्या | சூழவில் | रुक्षः | கொடுமையாகவும் |
| सन्तापयति | தழிக்கச்செய்கிறான். | सुलोहितः | மிகச் சிவந்ததாயும் |
| परिवेषः | சந்திரனது ஊர் கொள் | अप्रकाशः च | ஆமங்களமாயும் |
| | | लोकक्षये इव उदितः | உலகத்திற்கழிடுவன தொன்றிற்று. |

आदित्ये विमले नीलं लक्ष्म लक्ष्मण दृश्यते

॥ ९ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|---------|----------------|
| लक्ष्मण | “லக்ஷ்மணா! | नीलं | நீலமான |
| विमले | நிர்மலமான | लक्ष्म | களக்கம் |
| आदित्ये | சூரியபகவானிடத்தில் | दृश्यते | காணப்படுகிறது. |

रजसा महता चापि नक्षत्राणि हतानि च । युगान्तमिव लोकानां पश्य शंसन्ति लक्ष्मण ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|----------------------------------|
| लक्ष्मण | “லக்ஷ்மணா! | लोकानां अपि | உலகங்களுக்கெல்லா |
| नक्षत्राणि | நக்சத்திரங்களும் | युगान्तं च | நாசத்தையே [முமே |
| महता | பெரும் | शंसन्ति इव | சூசிக்கின்றனபொளி குக்கின்றது. |
| रजसा | புழுதியால் | पश्य | (பிடிப்) கவனி. |
| हतानि च | ஒடிப்பட்டவைகளாய் | | |

काकाः श्येनास्तथा गृध्रा नीचैः परिपतन्ति च । शिवाश्चाप्यशिवाद्नादान्दन्ति सुमहाभयान् ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|----------------------------|
| काकाः | “காக்களும் | अपि | இன்னும் |
| श्येनाः | பருந்துகளும் | शिवाः च | சீசளும் |
| • तथा | ஆப்படியே | सुमहाभयान् | மிகப் பயங்கரமான வைகளும் |
| गृध्राः च | கழுஞ்சுளும் | अशिवान् | ஆமங்கள்கரமானவை |
| नीचैः | கீழ்நோக்கி | नादान् | சத்தங்களை [களுமான |
| परिपतन्ति | விழுவின்றனர். | नर्दन्ति | வணையிடுகின்றனர். |

शैलैः शूलैश्च खड्गैश्च विसृष्टैः कपिराक्षसैः । भविष्यत्यावृता भूमिर्मांसशोणितकर्दमा ॥ १२ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|----------------------|---|
| भूमिः | “ பூமியானது | खड्गैः च | கத்திகளாலும் |
| कपिराक्षसैः | வரணரர்களாலும் அரக்கர்களாலும் | भावृता | நிரம்பியதாயும் |
| विसृष्टैः | எறியப்பட்ட | मांसशोणित- कर्दमा | } மாம்சம், சத்தம் இவை கவரலான சேறை யுடையதாய் |
| शैलैः | மலைகளாலும் | भविष्यति | |
| शूलैः च | குலங்களாலும் | | |

क्षिप्रमयैव दुर्धर्षां पुरीं रावणपालिताम् । अभियाम जवेनैव सर्वतो हरिभिवृताः ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|-------------------|
| हरिभिः | “ வானரர்களால் | रावणपालितां | ராவணனால் பாது |
| सर्वतः | காங்கு பக்கங்களில் லும் | | காக்கப்பட்டதுமான |
| वृताः | குழப்பட்டவர்களால் | पुरीं | (இலக்கை) நகருக்கு |
| दुर्धर्षां | { (இது வரையில்) ஒருவர் ரா லும் தடைகயப்படா திருந்ததும் | अथ एव | இப்பொழுதே |
| | | क्षिप्रं | காலினம்பம் ரெய்யா |
| | | जवेन एव | ஆதிநேகமாகவே [து |
| | | अभियाम | றாம் செல்வோமாக”. |

इत्येवमुक्त्वा धर्मात्मा धन्वी संग्रामहर्षणः । प्रतस्थे पुरतो रामो लङ्कामभिमुखो विभुः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|----------|-------------------|
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவும் | इति एवं | மேற்கண்டவாறு |
| धन्वी | வில்லி சரும் | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு, |
| विभुः | சர்வவ்யாபகரும் | लङ्कां | இலக்கையை |
| संग्रामहर्षणः | போரில் உத்ஸாஹம் படுபவருமான | अभिमुखः | தொக்கி |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | पुरतः | யாஸருக்கும்முன்னே |
| | | प्रतस्थे | பிரயாணமாணர். |

सविभीषणसुग्रीवास्ततस्ते वानरर्षभाः । प्रतस्थिरे विनर्दन्तो निश्चिता द्विषतां वधे ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------------------|---|------------|---------------------------------|
| सविभीषण- सुग्रीवाः | } விபிஷணனையும் சுக்ரீ வணையும் உள்ளிட்ட | निश्चिताः | சந்தேகமென்பதே |
| ते | | विनर्दन्तः | தோன்றாதவர்களால் |
| वानरर्षभाः | ஆந்த | | ஆட்டகாசம் செய்கின் றவர்களால் |
| द्विषतां | வானரோ த் தமர்கள் | ततः | ஆப்பொழுது |
| वधे | சத்தூருக்களை வதைப்பதில் | प्रतस्थिरे | சென்றார்கள். |

राघवस्य मियार्थं तु धृतानां वीर्यशालिनाम् । हरीणां कर्मचेष्टाभिस्तुतोष रघुनन्दनः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|---------------|--------------------|
| रघुनन्दनः | ஸ்ரீராமர் | वीर्यशालिनां | வீர்யசாலிகளான |
| राघवस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | हरीणां | வானரர்களின் |
| मियार्थं तु | நன்மைக்குக் காரணம் என்கிறபடியால் | कर्मचेष्टाभिः | காரியமுயற்சிகளால் |
| धृतानां | ஊக்கமுடைய | तुतोष | சந்தேகவழபடைத்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे त्रयोविंशः सर्गः ॥

चतुर्विंशः सर्गः—இருபத்துநான்காவது ஸர்க்கம். || 24 ||

रावणान्मरुताघा—ராவணனது தற்புகழ்ச்சி.

सा वीरसमिती राज्ञा विरराज व्यवस्थिता । शशिना शुभनक्षत्रा पौर्णमासीव शारदी ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-----------|--------------------------|
| सा | அந்த | पौर्णमासी | பௌர்ணமாளாஷா இரவு |
| वीरसमितिः | வீரர்களின் சமூகமாவனது | शशिना | சந்திரனால் |
| व्यवस्थिता | அணிவகுக்கப்பட்ட | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| शारदी | சாதாரணத்து [காய் | राज्ञा | ஸர் வஸ்வாமியால் |
| शुभनक्षत्रा | நிசம்ஸந்தித்திரக்கணையுடைய | विरराज | (இராகவனால்) விளங்கிற்று. |

प्रचवाल च वेगेन व्रस्ता चैव वसुन्धरा । पीड्यमाना बलौघेन तेन सागरवर्चसा ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|-------------|------------------------------|
| वसुन्धरा | பூமியானது | वेगेन | கடுமையாய் |
| तेन | அந்த | पीड्यमाना च | மிதியுண்டதாய் |
| सागरवर्चसा | சமுத்திரம்பீடால்அவ்விடமுடியாதிருந்த | व्रस्ता एव | நடுங்கியதாய் |
| बलौघेन च | சேகைசமூகத்தால் | प्रचवाल | கிடுகிடுண்டு அசைந்துவிட்டது. |

ततः शुश्रुवुराकुष्ठं लङ्कायां काननौकसः । भेरीमृदङ्गसंघुष्टं तुमुलं रोमहर्षणम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------|---------------------|--------------------|--------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | रोमहर्षणम् | மயிர்க்கச்செறியும்படியானிருக்கிறதமான |
| काननौकसः | வானர்கள் | भेरीमृदङ्गसंघुष्टं | பேரிநிசுதக்கங்களின் முழக்கத்தையும் |
| लङ्कायां | இலங்கையில் | शुश्रुवुः | கேட்டார்கள். |
| आकुष्ठं | தோலாகலத்தையார், | | |
| तुमुलं | அதிகமாயிருக்கிறதும் | | |

बभ्रुवुस्तेन घोषेण संहृष्टा हरियूथयाः । अभृष्यमाणास्तं घोषं विनेदुघोषवत्तरम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|-------------|--------------------------|
| हरियूथयाः | வானரசேகைத்தலைவர்கள் | तं | அந்த |
| तेन | அந்த | घोषं | கோலத்தை |
| घोषेण | முழக்கத்தால் | अभृष्यमाणाः | பொறுக்க மனம் வாதவர்களாய் |
| संहृष्टाः | சந்தேசவுபடைத்தவர்களாக | घोषवत्तरं | அதிசூமதிகமான கோலத்தை |
| बभ्रुवुः | ஆயினர். | विनेदुः | செய்தார்கள். |

राक्षसास्तु पुवङ्गानां शुश्रुवुश्चापि गर्जितम् । नर्दतापिव दृप्तानां मेघानामम्बरे स्वनम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|---------------|--------------|
| राक्षसाः तु | ராக்ஷஸர்களும் | इव | நிகர்த்து |
| दृप्तानां | செருக்குற்று | नर्दतां | கர்ஜிக்கும் |
| अम्बरे | ஆகாசத்தில் | पुवङ्गानां | வானர்களளுடைய |
| मेघानां | மேகக்களுடைய | गर्जितं च अपि | கர்ஜனையையும் |
| स्वनं | இயல்பொலியை | शुश्रुवुः | கேட்டார்கள். |

दृष्ट्वा दाशरथिर्लङ्कां चित्रध्वजपताकिनीम् । जगाम मनसा सीतां द्यूमानेन चेतसा ॥

| | | | |
|---------------------------|---|-----------|-----------------------------|
| दाशरथिः | சூராமர் | द्यूमानेन | மொந்தூகிடக்கின்ற |
| चित्रध्वज- } पताकिनी } | அழகிய த்வஜங்களோடும் கொடிங்களோடும் விளங்கும் | चेतसा | மனதால் |
| लङ्कां | இலங்கை நகரை | सीतां | சீதாதேவியைப்பற்றி |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | मनसा जगाम | பின்வருமாறு கிரீனத்தார். |

अत्र सा मृगशाबाक्षी रावणेनोपरुध्यते । अभिभूता ग्रहेणो लोहिताङ्गेन रोहिणी ॥ ७ ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|-----------------------------------|
| अत्र | "இவ்விடத்தில் | ग्रहेण | கிரகத்தால் |
| मृगशाबाक्षी | { மான்குட்டியின் கண் கள்போன்ற கண்களையுடைய | अभिभूता | பிடிக்கப்பட்ட |
| सा | அவள் | रोहिणी इव | ரோகினிபோல் |
| लोहिताङ्गेन | அங்காரக | रावणेन | ராவணனால் |
| | | उपरुध्यते | சிறைப்படுத்தப்பட்டிருக்கின்றாள்." |

दीर्घमुष्णं च निश्वस्य समुद्रीक्ष्य च लक्ष्मणम् । उवाच वचनं वीरस्तत्कालहितमात्मनः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------|-------------------------------|
| वीरः | சூராரும் அவர் | आत्मनः | தனக்கு |
| दीर्घं | தீர்க்கமாகவும் | तत्कालहितं | அக்காலத்திற்கேற்ற தாயிருக்கிற |
| उष्णं च | உஷ்ணமாகவும் | वचनं | ஒரு சொல்லை |
| निश्वस्य च | பெரு மூச்சுவிட்டு | उवाच | பின்வருமாறு |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை | | மொழிந்தார் : |
| समुद्रीक्ष्य | பார்த்து | | |

आलिखन्तीमिवाकाशमुत्थितां पश्य लक्ष्मण । मनसेव कृतां लङ्कां नगाये विश्वकर्मणा ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|-------------|-------------------------|
| आलिखन्ती | "எழுதிவந்து! | विश्वकर्मणा | விசுவகர்மானினால் |
| उत्थितां | மகிழ்ச்சியில் உச்சியில் | मनसा इव | மனத்தாலேயே |
| पश्य | ஆகாசத்தை | कृतां | சிருஷ்டிக்கப்பட்ட தாகிய |
| लक्ष्मण | உராய்கிறது | लङ्कां | இலங்கை நகரை |
| इव | போலவே | पश्य | பார். |
| उत्थितां | உயரக்கொம்பியிருக்கிறதாய் | | |

विमानैर्बहुभिर्लङ्कां सङ्कीर्णां हि विराजते । विष्णोः पद्मिवाकाशं छादितं पाण्डुरैर्घनैः ॥

| | | | |
|------------|--------------|---------|---------------|
| लङ्का | "இலங்கை நகர் | छादितं | மறைக்கப்பட்ட |
| बहुभिः | பல | विष्णोः | சூர்யபகவானது |
| विमानैः | மானிகைகளால் | पद्मं | இருப்பிடமாகிய |
| सङ्कीर्णां | சிறைத்ததாய் | आकाशं | ஆகாசம் |
| पाण्डुरैः | வெண் | इव हि | போலவே |
| घनैः | மேகங்களால் | विराजते | விளங்குகிறது. |

पुष्पितैः शोभिता लङ्का वनैश्वरयोपमैः । नानापतङ्गसङ्घैः फलपुष्पोपमैः शुभैः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------------|--|---------------|---|
| लङ्का | "இலங்கை நகர் | वनैश्वरयोपमैः | } குயோனது ஊசகர் சதமெனும் உத்தியா னத்தை நிகர் த்தவை களுமா ன |
| पुष्पितैः | நன்கு புஷ்பித்தவை களும் | शुभैः | |
| नानापतङ्गसङ्घैः | } பலவிதப் பறவைக ளால் சப்திம்கப் பெற்றவைகளும் | फलपुष्पोपमैः | அழகுவாய்ந்ததாய் |
| शुभैः | | சிறந்த | |

पश्य मत्तविहङ्गानि प्रलीनभ्रमराणि च । कोकिलाकुलपण्डानि दोषवीति शिवोऽनिलः ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------------|------------|---|
| अनिलः | "காற்று | कोकिलाकुल- | } தாமதமாய் தீர்பும் கோகிலங்களின் எழு சகமாய் [கங்களையும் அசைக்கிறது பார்." |
| मत्तविहङ्गानि | கொழுந்த பறவை களையும் | पण्डानि च | |
| प्रलीनभ्रमराणि | அடங்கிக்கிடக்கும் வண்டுகளையும் | पश्य | |

इति दाशरथी रामो लक्ष्मणं समभाषत ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------|--------------------------|---------------|---------------------------------|
| दाशरथिः | தசரதரின் புதல்வ ராகிய | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | इति समभाषत | மேற்கண்டவாறு பேசியுடித்தார். |

बलं च तद्वै विभजञ्छास्त्रदृष्टेन कर्मणा । शशास कपिसेनाया बलमादाय वीर्यवान् ॥ १४ ॥

अङ्गदः सह नीलेन तिष्ठेदुरसि दुर्जयः ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|------------|------------------------|
| शास्त्रदृष्टेन | சாஸ்திரத்திற்கண்ட | वीर्यवान् | வீர்பவானாகிய |
| कर्मणा वै | விதிப்படி | अङ्गदः | அங்கதன் |
| तद् | அந்த | नीलेन | நீலனோடு |
| बलं च | சேனையை | सह | கூட |
| विभजन् | அணிவகுக்கிறவராய் | बलं | தனது சேனையை |
| शशास | பின்வருமாறு கட்ட னையிட்டார் : | आदाय | கூட வைத்துக் கொண்டு |
| दुर्जयः | "எவரும் வெல்ல முடியாத | कपिसेनायाः | காசரசேனையின் |
| | | उरसि | மார்பின் ஸ்தானத்தில் |
| | | तिष्ठेत् | இருக்கட்டும்." |

तिष्ठेद्वा नरवाहिन्या वानरौघसमावृतः । आश्रित्य दक्षिणं पार्श्वमृषभो वानरर्षभः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|------------------|-------------------|
| वानरर्षभः | "வானரோத்தமனாகிய ரிஷபன் | वानरवाहिन्याः | வானரசைவந்தி |
| रूपमः | ரூபமான் | दक्षिणं पार्श्वं | வந்துயக்கத்தை[னது |
| वानरौघ- | } வானரங்கூட்டத்தால் | आश्रित्य | ஆடைந்து |
| समावृतः | | சூழப்பட்டவரால் | तिष्ठेत् |

गन्धहस्तीव दुर्धर्षस्तरस्वी गन्धमादनः । तिष्ठेद्वा नरवाहिन्याः सव्यं पार्श्वं समाश्रितः ॥
मूर्ध्नि स्थास्याम्यहं युक्तो लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------|------------------------------|
| गन्धहस्ती | " மதயானை | समाश्रितः | அடைந்து |
| इव | போல | तिष्ठेत् | அங்கு இருக்கட்டும். |
| दुर्धर्षः | அணுகமுடியாதவ னும் | अहं | நான் |
| तरस्वी | ழிக்கப் பலவாணமான | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனுடன் |
| गन्धमादनः | கந்தமாதனன் | समन्वितः | கூட |
| वानरवाहिन्याः | வானரச்சேனைப்பின் | युक्तः | ஐரக்கிரமையடனிருப்ப பவனும் |
| सव्यं | இடது | मूर्ध्नि | தலைப்பக்கத்தில் |
| पार्श्वं | பக்கத்தை | स्थास्यामि | நிற்கின்றேன். |

जाम्बवांश्च सुषेणश्च वेगदर्शी च वानरः । ऋक्षमुख्या महात्मानः कुक्षि रक्षन्तु ते त्रयः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|---------------------|
| ते | " அந்த | सुषेणः च | சுசேணனும் |
| महात्मानः | மகாத்மாக்களும் | वानरः | வானரனாகிய |
| ऋक्षमुख्याः | ஋க்ஷுகளின் தலைவர்கள் | वेगदर्शी च | வேகதர்க்கியும் |
| त्रयः | மூவர்களான [ளும் | कुक्षि | வயிற்றுப்பாகத்தை |
| जाम्बवान् च | ஜாம்பவானும் | रक्षन्तु | பாதுகாத்துவரட்டும். |

जघनं कपिसेनायाः कपिराजोऽभिरक्षतु । पश्चार्धमिव लोकस्य भवेतास्तेजसा वृतः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|-------------------------|
| तेजसा | " தேஜஸுடன் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| वृतः | விளங்கும் | कपिराजः | வானரமன்னன் |
| भवेताः | வருண்பகவான் | कपिसेनायाः | வானரச்சேனையின் |
| लोकस्य | உலகின் | जघनं | பின்பாகத்தை |
| पश्चार्धं | மேற்குப்பாகத்தை | अभिरक्षतु | ரகழித்துவரட்டும்." |

सुविभक्तमहाव्यूहा महावानररक्षिता । अनीकिनी सा विवभौ यथा द्यौः साभ्रसंभ्रवा ॥

| | | | |
|----------------------------|--|--------------|--------------------------------|
| सा | அந்த | अनीकिनी | சேனை |
| सुविभक्त- } महाव्यूहा } | நன்கு பிரிக்கப்பட்ட அணிவகுப்பையுடைய தும் | साभ्रसंभ्रवा | மேகக்கூட்டங்களு டன் கூடியன. |
| महावानररक्षिता | கிறந்த வானரர்களால் ரகழிக்கப்பட்டதுமான | द्यौः यथा | ஆகாசமேன |
| | | विवभौ | விளங்கிற்று. |

प्रवृद्ध गिरिशृङ्गाणि महत्श्च महीरुहान् । आसेदुर्वानरा लङ्कां विपर्दयिषवो रणे ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|-------------------------|
| வானரா: | வானரர்கள் | गिरिशृङ्गाणि | மலைச்சிகரங்களையும் |
| लङ्कां | இலங்கையை | महतः | பெரும் |
| रणे | போரில் | महीरुहान् च | மரங்களையும் |
| विपर्दयिषवः | அழித்துவிடவுவது | प्रवृद्ध | வகவிரிவந்திக் கொண்டு |
| | நறவர்களாய் | आसेदुः | காத்துநின்றனர். |

शिवरैर्विकिरामैनां लङ्कां मुष्टिभिरेव वा । इति स्म दधिरे सर्वे मनांसि हरिसत्तमाः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------------|-------------------|
| हरिसत्तमाः | வானரோத்தமர்கள் | एनां लङ्कां एव | இந்த இலங்கையையும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | विकिराम | பொடியாக்கிண்டு |
| शिवरैः | மலைச்சிகரங்களாலும் | इति | என்று [வேளாம் |
| मुष्टिभिः वा | முஷ்டிகளாலும் | मनांसि दधिरे स्म | களைத்தார்கள். |

ततो रामो महातेजाः सुग्रीवमिदमब्रवीत् । सुविभक्तानि सैन्यानि शुक एव विमुच्यताम् ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-------------|-----------------------------------|
| महातेजाः | மகாதேஜஸ்சியாகிய | सुविभक्तानि | நன்கு அணிவகுக்கப் பட்டுகிட்டன. |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | ततः | ஆனபடிபால் |
| सुग्रीवं | சுகிரீவனைப் பார்த்து | एवः | இந்த |
| इदं | பின்வருமாறு | शुकः | சுகன் |
| अब्रवीत् | சொன்னார் : | विमुच्यताम् | விட்டுவிடப்படும்." |
| सैन्यानि | "சேனைகள் | | |

रामस्य वचनं श्रुत्वा वानरेन्द्रो महाबलः । मोचयामास तं दूतं शुकं रामस्य शासनात् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|----------|----------------|
| महाबलः | மகாபலசாஸியாகிய | शासनात् | ஆக்கிரை எங்கிற |
| वानरेन्द्रः | வானரமன்னன் | तं | அந்த [படிபால் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமாறு | दूतं | தூதனாகிய |
| वचनं श्रुत्वा | ஆக்கிரைவைக்கேட்டு, | शुकं | சுகனை |
| रामस्य | ஸ்ரீராமாறு | मोचयामास | விடுகீத்தான். |

मोचितो रामवाक्येन वानरैश्चाभिपीडितः । शुकः परमसंत्रस्तो रक्षोऽधिपमुपागमत् ॥२५॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|------------|----------------------------|
| वानरैः | வானரர்களால் | रामवाक्येन | ஸ்ரீராமாறு ஆக்கிரை பால் |
| अभिपीडितः च | மிகத் துன்புறுத்தப் பட்டவனும் | मोचितः | ஸ்வதந்திரம் பெற்ற |
| * | | शुकः | சுகன் [வனுமரண |
| परमसंत्रस्तः | மிகந்த நடுநடுக்கிக் கிடந்தவனும் | रक्षोधिप | ராசூதனமன்னனிடம் |
| | | उपागमत् | வந்துசேர்ந்தான். |

रावणः प्रहसन्नेव शुकं वाक्यमभाषत । किमिमौ ते सितौ पक्षौ लूनपक्षश्च दृश्यसे ॥
कच्चिन्नानेकचित्तानां तेषां त्वं वशमागतः ॥ २६ ॥

| | |
|------------|----------------------------|
| रावणः | ராவணன் |
| शुकं | சுகனைப்பார்ந்து |
| प्रहसन् एव | பரிகாசமாய் நகைத்துக்கொண்டே |
| वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| अभाषत | பின்வருமாறு மொழி |
| ते | "உனது [ந்தரன் : |
| इमौ पक्षौ | இவ்விரண்டு சிறகுக |
| किं | ஏன் [னும் |
| सितौ | சுட்டப்பட்டிருக்கின் |

| | |
|---------------|---|
| लूनपक्षः च | { काय्यப்படுத்தப்பட்ட சிறகுகளையுடையவனாகவும் |
| दृश्यसे | காணப்படுகின்றனை. |
| त्वं | நீ |
| अनेकचित्तानां | மனம் ஒரு நிலையில்நில் |
| तेषां | அவர்களுடைய [லாத |
| वशं आगतः न | { अநினைத்தில் சிக்கிக் கொண்டு விட்டவனாய் இல்லையென |
| कच्चिद् | நான் நினைக்கின்றேன்." |

ततः स भयसंविशस्तथा राजाऽभिचोदितः । वचनं प्रत्युवाचेद् राक्षसाधिपमुत्तमम् ॥ २७ ॥

| | |
|-----------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| भयसंविशः | பயத்தால் நடுநடுக்கி |
| | இடந்தவனுட் |
| राजा | மன்னனால் |
| तथा | மேற்கண்டவாறு |
| अभिचोदितः | கேட்கப்பட்டவனு |
| सः | அவன் [மான |

| | |
|-------------|----------------|
| उत्तमं | பெரியவனாகிய |
| राक्षसाधिपं | ஆரக்கமன்னனைப் |
| | பார்த்து |
| इदं | பின்வரும் |
| वचनं | சொல்லை |
| प्रत्युवाच | பதிலாய்க் சொன் |
| | னான் : |

सागरस्योत्तरे तीरे ब्रुवंस्ते वचनं तथा । यथा सन्देशमच्छिष्टं सान्त्वयं श्लक्ष्णया गिरा ॥

| | |
|---------|-----------------|
| सागरस्य | "சமுத்திரத்தின் |
| उत्तरे | வட |
| तीरे | கரையில் |
| ते | தேவரீரது |
| सन्देशं | ஆக்கினையாகிற |
| वचनं | சொல்லை |
| यथा तथा | சொன்னபடியே |

| | |
|------------|------------------|
| ब्रुवन् | சொல்லுகின்றவனாய் |
| अच्छिष्टं | தேரியமாய் |
| श्लक्ष्णया | இனிய |
| गिरा | சொற்கொண்டு |
| सान्त्वयम् | சமாதானமாய் கூறி |
| | னான்." (ஆர்ஷம்). |

कुक्षैस्त्वैरहमुत्प्लुत्य दृष्ट्वात्रैः पुवङ्गमैः । गृहीतोऽस्म्यपि चारब्धो हन्तुं लोभं च मुष्टिभिः ॥

| | |
|---------------|---------------------|
| दृष्ट्वात्रैः | "கண்டுவிட்டவர்களும் |
| कुक्षैः | கிளங்கொண்டவர்க |
| | ளுமான |
| तैः | அந்த |
| पुवङ्गमैः | வானரசர்களால் |
| उत्प्लुत्य | கிளம்பி |
| अहं | நான் |

| | |
|--------------|----------------------------|
| गृहीतः अस्मि | பிடிக்கப்பட்டவனாக ஆயினேன். |
| अपि च | இதோடுகூட |
| मुष्टिभिः | முஷ்டிகளால் |
| लोभं | புடைக்கவும் |
| हन्तुं च | மற்றப்படி துன்புறுத் |
| | தப்படவும் |
| आरब्धः | ஆளாயினேன். |

नैव संभाषितुं शक्याः संप्रश्नोऽत्र न लभ्यते । प्रकृत्या कोपनास्तीक्ष्णा वानरा राक्षसाधिपः॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------------|--------------|----------------------------|
| राक्षसाधिपः | “राक्षஸமಂஸு!” | संप्रश्नः | முக்கொடுத்து |
| वानराः | வானரர்கள் | | பேசுதலென்பது |
| प्रकृत्या | இயல்பாகவே | असं | இவர்கள் விஷயத்தில் |
| कोपनाः | கேரபமுள்ளவர்க ளாகவும் | लभ्यते न | கிடைக்கமாட்டாது. |
| | | संभाषितुं एव | எதையும் சொல்வ தற்கும் |
| तीक्ष्णाः | கொடியவர்களாகவு மிருக்கின்றார்கள். | न शक्याः | சாத்தியமானவர்கள் இல்லை. |

स च हन्ता विराधस्य कबन्धस्य खरस्य च । सुग्रीवसहितो रामः सीतायाः पदमागतः॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|---------|------------------------------|
| विराधस्य | “விராதனையும் | सः | அந்த |
| कबन्धस्य | கபந்தனையும் | रामः | ராமன் |
| खरस्य च | கரனையும் | सीतायाः | சீதைமீன் |
| हन्ता | கொன்றவனும் | पदे च | இருப்பிடத்தை |
| सुग्रीवसहितः | சுகிரீவனுடன் கூட்டுற வுகொண்டவனுமான | भागतः | அறிந்துக்கொண்டு கிட்டான். |

स कृत्वा सागरे सेतुं तीर्त्वा च लवणोदधिम् । एष रक्षांसि निर्भूय धन्वी तिष्ठति राघवः॥

| | | | |
|---------|----------------|-------------|--------------------------------------|
| सः | “அந்த | तीर्त्वा | தாண்டிவிட்டு |
| राघवः | ராமன் | रक्षांसि च | அரக்கர்களையும் |
| सागरे | சமுத்திரத்தில் | निर्भूय | திருணமாய்க்கிணத்து |
| सेतुं | சேதுவை | धन्वी | வில்லும் கையுமாய் |
| कृत्वा | சுட்டி | एषः तिष्ठति | இதேகா வந்துசேர்க்கி ருக்கின்றான். |
| लवणोदधि | உவர்கடலை | | |

ऋक्षवानरसङ्घानामनीकानि सहस्रशः । गिरिमेषनिकाशानां छादयन्ति वसुन्धराम् ॥३३॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-----------|-----------------------------|
| गिरिमेष-) | “பர்வதக்களையும் மே | सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான |
| निकाशानां) | கக்களையும் திகர்த்த | अनीकानि | சேனைகள் |
| ऋक्षवानर-) | காடிகளுடையவும் | वसुन्धरां | புயிவை |
| सङ्घानां) | வானரர்களுடைய வும் கூட்டங்களின் | छादयन्ति | முடிக்கொண்டிருக் கின்றன. |

राक्षसानां बलौघस्य वानरेन्द्रबलस्य च । नैतयोर्विद्यते सन्धिर्देवदानवयोरिव ॥ ३४ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|-------------------|---------------------------|
| देवदानवयोः | “தேவர்களுக்கும் அசுரர்களுக்கும் | बलौघस्य | சேனைசமூகத்திற்கும் |
| •इव | எப்படியோ அப்ப டியே | वानरेन्द्रबलस्य च | வானரமன்னனது சேனைக்கும் |
| एतयोः | இவ்விரண்டான | सन्धिः | ஒற்றுமையுட னிருத்தல் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களுடைய | विद्यते न | கிடைக்கமாட்டாது. |

पुरा प्राकारमायान्ति क्षिप्रमेकतरं कुरु । सीतां वाऽस्मै प्रयच्छाशु सुयुद्धं वा प्रदीयताम् ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|-------------|----------------------------|
| प्राकारं | "மதிநகவரைநோக்கி | कुरु | செய்வீராக. |
| आयान्ति | வந்துகொண்டிருக்கின்றார்கள். | आशु | உடனே |
| पुरा | வந்துசேர்வதற்கு முந்தியே | सीतां वा | சீதையைப்பாவது |
| क्षिप्रं | காலதாமதமின்றி | अस्मै | இவருக்கு |
| एकतरं | பின்வரும் இரண்டிலொன்றை | प्रयच्छ | திருப்பிக்கொடுத்து விடும். |
| | | वा | அல்லது |
| | | सुयुद्धं वा | பெரும் போரானது |
| | | प्रदीयताम् | விதிக்கப்பட்டும்." |

शुकस्य वचनं श्रुत्वा रावणो वाक्यमब्रवीत् । रोषसंरक्तनयनो निर्दहन्निव चक्षुषा ॥३६॥

| | | | |
|---------------|------------------------|----------------|------------------------------|
| शुकः | சுகனது | रोषसं(क्तनयनः) | கொபத்தால் கண்கள் சிவந்தவனாய் |
| वचनं श्रुत्वा | சொல்லைக் கேட்டு | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| चक्षुषा | கண்ணால் | अब्रवीत् | புகன்றான். |
| निर्दहन् इव | எரிந்துகொடுபவன் போன்று | | |

यदि मां प्रति युद्धेयन्देवान्धर्वदानवाः । नैव सीतां प्रदास्यामि सर्वलोकभयादपि ॥३७॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------------|-------------------|---|
| देवान्धर्वदानवाः | "தேவர்கள், கந்தர்வர்கள், அசுர்கள் | सर्वलोकभयात्- अपि | எல்லா லோகங்களிலிருந்து பயம் ஏற்படுகிறது என்றாலும்சரி; |
| मां प्रति | என்னை எதிர்த்து | सीतां एव | சீதையை மட்டும் திரும்பிக்கொடேன். |
| युद्धेयन् | போர்புரிசின்றார்கள் | प्रदास्यामि न | |
| यदि | என்றாலும்சரி; | | |

कदा नामाभिधावन्ति राघवं मामकाः शराः । वसन्ते पुष्पितं मत्ता भ्रमरा इव पादपम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------|--------------------|------------------------------------|
| वसन्ते | "வஸந்தகாலத்தில் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| मत्ताः | கொழுத்த | मामकाः | என்னால் விடப்படும் |
| भ्रमराः | வண்டுகள் | शराः | பாணங்கள் |
| पुष्पितं | புஷ்பித்திருக்கும் | राघवं | சூரமாரை |
| पादपं | ஓர் மரத்தை | कदा नाम अभिधावन्ति | எப்பொழுதுதான் மொய்க்கப்போகின்றனவோ? |

कदा तूणीशयैर्दीर्घैर्गणशः कार्मुकच्युतैः । शरैरादीपयाम्येनमुल्काभिरिव कुञ्जरम् ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|----------------|------------------------------------|
| दीर्घः | "எரிநின்றவைகளும் | गणशः | கட்டக்கட்டமாக |
| तूणीशयैः | அம்புருத்துணியில் சிடப்பவைகளும் | कार्मुकच्युतैः | வில்லிலிருந்து வெளிவருகின்றவைபுமான |

| | | | |
|----------|-------------------------|----------|--------------------|
| शीः | பாணக்களை | कुअरे | யானையை |
| एने | இவளை | इव | எப்படியோ, எப்படியே |
| उल्कामिः | கொண்டிருக்கட்டை கனல் | कदा | எப்பொழுது |
| | | आदीपयामि | கொளுத்துவேனோ? |

तचास्य बलपादास्ये बलेन महता वृतः । ज्योतिषापिव सर्वेषां प्रभामुद्यन्दिवाकरः ॥४०॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|---------|-------------------|
| उचन् | “உதயமாகும் | महता | பெரும் |
| दिवाकरः | சூரியன் | बलेन | சேனையால் |
| सर्वेषां | மற்றுள்ள எல்லா | वृतः | குழப்பட்டவனாய் |
| ज्योतिषां | கிரகங்களுடைய | अस्य | இவனது (நான்) |
| प्रभां | ஒளியை | तन् | அந்த |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | वत् च | பலத்தையும் |
| | | आदास्ये | வாக்கிக் கொடுவன். |

सागरस्येव मे वेगो मारुतस्येव मे गतिः । न हि दाशरथिवेद तेन मां योद्धुमिच्छति ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|------------|---------------------------|
| मे | “எனது | दाशरथिः हि | ராமன் மாதிரி |
| वेगः | ஆற்றல் | वेद न | இதை அறியாதிருக்க கொள். |
| सागरस्य इव | சமுத்திரத்திற்கு நிகரானது ; | तेन | அதனுடைய |
| मे | எனது | मां | என்னுடன் |
| गतिः | போக்கு | योद्धुं | போர்ப்புரிய |
| मारुतस्य इव | வாயுவிற்குநிகரானது ; | इच्छति | துணிகொள். |

न मे तूष्णीशयान्वाणान्सविषानिव पन्नगान् । रामः पश्यति संग्रामे तेन मां योद्धुमिच्छति॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|----------|---------------|
| रामः | “ராமன் | पन्नगान् | பாம்புகளை |
| संग्रामे | போரில் | इव | நகர்த்தவைகளென |
| मे | எனது | पश्यति न | அறிந்தான். |
| तूष्णीशयान् | அம்புறுத்தூணியி லிருக்கும் | तेन | அதனுடைய |
| वाणान् | பாணக்களை | मां | என்னுடன் |
| सविषान् | விஷத்தேகாடுகடிய | योद्धुं | போர்ப்புரிய |
| | | इच्छति | துணிகொள். |

न जानाति पुरा वीर्यं मम युद्धे स राघवः

॥ ४३ ॥

| | | | |
|--------|--------|----------|-------------|
| सः | “அந்த | मम | எனது |
| राघवः | ராமன் | वीर्यं | வீரத்தை |
| युद्धे | போரில் | पुरा | இதற்குமுன் |
| | | जानाति न | கண்டதில்லை. |

मम चापमयीं वीणां शरकोणैः प्रवादिताम् । ज्याशब्दतुमुलां धोरामर्तिभीतमहास्वनाम् ॥
नाराचतलसन्नादां तां ममाहितवाहिनीम् । अवगाह्य महारङ्गं वादयिष्याम्यहं रणे ॥४५॥

| | | | | |
|-------------|------------------------------------|-----------------------|---|--|
| अहं | “நான் | ज्याशब्दतुमुलां | { | நானொலியாகிய அட ர்ந்த ஒசையுடைய தும் |
| रणे | போரில் | | | |
| मम | எனது | आर्तभीत- महास्वनां | } | பீடிக்கப்பட்டுப் பயந்த வர்களின் பேரொலி யையுடையதும் |
| तां | அந்த | | | |
| अहितवाहिनीं | பணகவர்களின் சேனையாகிற | नाराचतल- सन्नादां | } | நாராசபாணத்தின் கோசமுடையதாவி ருக்கிற |
| महारङ्गं | நரடகமேடையில் | चापमयीं | | வில்லாகிய |
| अवगाह्य | புகுந்து | वीणां | | வினையை |
| शरकोणैः | சரங்களாகிற(மீட்டும்) கருவிகளால் | वादयिष्यासि | | வாசிக்கப்போகிறேன். |
| प्रवादितां | மீட்டப்பெற்றதும் | | | |
| धोरां | பயங்கரமாய் | | | |

न वासवेनापि सहस्रचक्षुषा यथाऽस्मि शक्यो वरुणेन वा स्वयम् ।
यमेन वा धर्षयितुं शराग्निना महाहवे वैश्रवणेन वा पुनः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|--------------|--------------------|
| सहस्रचक्षुषा | “ஆயிரம் கண்கள் படைத்த | वैश्रवणेन वा | சூபோனஸ் தானாகத் |
| वासवेन अपि | இந்திரனால் | महाहवे | பெரும்போரில் [டும் |
| स्वयं | ஸாசனாகத் | शराग्निना | களைத்தீயால் |
| वरुणेन वा | வருணனால் தானாகத் டும் | यथा पुनः | எப்படியும் |
| यमेन वा | யமனால் தானாகத் டும் | धर्षयितुं | அடக்க |
| | | अस्मि | நான் |
| | | शक्यः न | முடியாதவன். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे चतुर्विंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15564

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 889

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे विशेषेण वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்வீதம் ஆதியில் சூசன் லலன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸநீதியில் அச்வமேத
யாகசாலையில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபதாவது
தினத்தில் காணம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[पुरा कुशलवाभ्यां श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वाविंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
एकविंशोऽङ्गि युद्धकाण्डे पञ्चविंशसर्गमारभ्य पञ्चाशसर्गपर्यन्तं
(15565—16665 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाश्च 1101]

ஆதிரில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸநிதரில் ஆர்வமதயாககாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
இருபத்தேதாராவது தினத்தில் புத்தகாண்டதில் 25-வது ஸர்க்கம் முதல்
50-வது ஸர்க்கம் வரை (15565—16665) காணம் செய்யப்பட்டது.
ஆன்று காணம் செய்யப்பட்ட சுலோகசங்கிவை 1101]

पञ्चविंशः सर्गः—இருபத்தைத்தாவது ஸர்க்கம். || 25 ||

शुकसारणवचनम्—சுகஸாரணர்களது வசனம்.

सबले सागरं तीर्णे रामे दशरथात्मजे । अमाल्यौ रावणः श्रीमानन्नवाच्छुकसारणौ ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|-----------------------------------|
| दशरथात्मजे | தசரதரின் திருமகளு | रावणः | ராவணன் |
| रामे | ஸ்ரீராமர் [ராமிய | अमाल्यौ | மந்திரிகளான |
| सबले | சேனை யுடன் | शुकसारणौ | சகலையும், சாரணனை யும் பார்த்து |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | अववीन् | பின்வருமாறு |
| तीर्णे | தாண்டியதும் | | மொழிந்தான் : |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமரணிய | | |

समग्रं सागरं तीर्णे दुस्तरं वानरं बलम् । अभूतपूर्वं रामेण सागरे सेतुबन्धनम् ॥ २ ॥

| | | | |
|---------|----------------|-------------|-----------------------------------|
| वानरं | “வானர | सागरे | சமுத்திரத்தில் |
| बलं | சேனை | रामेण | ராமனொருவனால் |
| समग्रं | எல்லாமும் | अभूतपूर्वं | இதவரையம் ஒருவ ரும் செய்திராத |
| दुस्तरं | தாண்டமுடியாத | सेतुबन्धनम् | தனைக்கட்டு ஏற்பட் பிருக்கிறது. |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | | |
| तीर्णे | தாண்டிவிட்டது. | | |

सागरे सेतुबन्धं तु न श्रद्दध्यां कथञ्चन । अवश्यं चापि संख्येयं तन्मया वानरं बलम् ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|-----------|---------------------------------|
| सागरे | “சமுத்திரத்தில் | अपि तु | ஆனால் இப்பொழுதோ |
| सेतुबन्धं च | ஆனைகட்டுதலென்ப தையே | तत् | அந்த |
| कथञ्चन | யார் சொல்லிரிஞ்சுந்த போதிலும் | वानरं बलं | வானரசேனை |
| श्रद्दध्यां न | கான் கம்பிக்கை கொள்ளேன். | मया | என்னால் |
| | | अवश्यं | அவசியமாய் |
| | | संख्येयम् | கணக்கிடத்தக்கதா யிருக்கிறது. |

भवन्तौ वानरं सैन्यं प्रविश्यानुपलक्षितौ । परिमाणं च वीर्यं च ये च मुख्याः पुवङ्गमाः ॥
मन्त्रिणो ये च रामस्य सुग्रीवस्य च सम्मताः । ये पूर्वमभिवर्तन्ते ये च शूराः पुवङ्गमाः ॥
स च सेतुर्यथा बद्धः सागरे सलिलार्णवे । निवेशं च यथा तेषां वानराणां महात्मनाम् ॥
रामस्य व्यवसायं च वीर्यं प्रहरणानि च । लक्ष्मणस्य च वीरस्य तच्चतो ज्ञातुमर्हथः ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|------------------------------------|
| भवन्तौ | "நீக்கனிசுவர்களும், | ये च | எவர்களை அவர்களை |
| वानरं सैन्यं | வானரசேனைக்குள் | | யும், |
| अनुपलक्षितौ | { அவர்களால் கண்டு கொள்ளப்படாத வர்களாய், | सलिलार्णवे | நீர் நிரம்பிய |
| प्रविश्य | புகுந்து | सागरे | சமுத்திரத்தில் |
| परिमाणं च | அளவையும், | सः | அந்த |
| वीर्यं च | வீரத்தையும், | सेतुः | அணை |
| मुख्याः | தலைமையான | यथा बद्धः च | எப்படிக் கட்டப்பட்ட கே அனையும், |
| पुवङ्गमाः | வானர்கள் | महात्मनां | மகா ஆற்றலுடைய |
| ये च | எவர்களை அவர்களை | तेषां | அந்த |
| | யும், | वानराणां | வானர்கள் |
| रामस्य | ராமனுடையவும், | निवेशं | வாழ்மிடம் |
| सुग्रीवस्य | சுகீரனுடையவும், | यथा च | எதுவே அனையும், |
| सम्मताः | இஷ்டமான | रामस्य च | ராமனுடையவும் |
| मन्त्रिणः | மந்திரிகள் | वीरस्य | ஞானிய |
| ये च | எவர்களை அவர்களை | लक्ष्मणस्य च | எந்தமணனுடையவும் |
| | யும், | व्यवसायं | உபாயத்தையும் |
| पूर्वं | முதலில் | वीर्यं | வீரத்தையும் |
| ये | எவர்கள் | प्रहरणानि च | ஆயுதங்களை யும் |
| अभिवर्तन्ते च | நிற்கின்றார்களோ | सर्वतः | உள்ளபடி |
| | அவர்களையும், | ज्ञातुं | அறிந்துகொள்ள |
| पुवङ्गमाः | வானர் | अर्हथः | கடவீர்கள். |
| शूराः | ஞானர்கள் | | |

कश्च सेनापतिस्तेषां वानराणां महौजसाम् । एतज्ज्ञात्वा यथातन्त्रं शीघ्रमागन्तुमर्हथः ॥८॥

| | | | |
|----------|----------------|------------|-------------|
| महौजसां | "மகா ஆற்றலுடைய | एतत् च | இனையும் |
| तेषां | அந்த | यथातन्त्रं | உள்ளபடி |
| वानराणां | வானர்களுக்கு | ज्ञात्वा | கண்டுகொண்டு |
| सेनापतिः | சேனபதி | शीघ्रं | விரைவில் |
| कः | யார் ? | आगन्तुं | திரும்பிவர |
| | | अर्हथः | கடவீர்கள். |

इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ । हरिरूपधरौ वीरौ प्रविष्टौ वानरं बलम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|--------------|----------------|--------------------------------------|
| वीरौ | வீரர்களாகிய | प्रतिसमादिष्टौ | இவ்வியயத்திலாக்கி ண்பெற்றவர்களாய் |
| शुकसारणौ | சுகசாரண | हरिरूपधरौ | வானரவுரு எடுத்துக் கொண்டு |
| राक्षसौ | ஆரக்கர்கள் | वानरं बलं | வானரசேனைக்குள் |
| इति | மேற்கண்டவாறு | प्रविष्टौ | புகுந்தார்கள். |

ततस्तद्वानरं सैन्यमचिन्त्यं रोमहर्षणम् । संख्यातुं नाध्यगच्छेतां तदा तौ शुकसारणौ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|----------------|--------------------------------------|
| तौ | அந்த | रोमहर्षणं | மயிர்த்தகிரிக்கடர் செய் கிறதமாகிய |
| शुकसारणौ | சுகனும் சாரணனும் | वानरं सैन्यं | வானரசேனையை |
| तदा | அப்பொழுது | संख्यातुं | இவ்வளவெனத் தொகையிட |
| ततः | அவ்விடத்தில் | अध्वगच्छेतां न | முடிவல்லீலை. |
| तन् | அந்த | | |
| अचिन्त्यं | மனதால் நினைக்க வொண்ணாததும் | | |

संस्थितं पर्वताश्रेषु निर्क्षरेषु गुहासु च । समुद्रस्य च तीरेषु वनेषुपवनेषु च ॥ ११ ॥

तरमाणं च तीर्णं च तर्तुकामं च सर्वशः । निविष्टं निविशच्चैव भीमनादं महाबलम् ॥

तद्दलार्णवमक्षोभ्यं ददृशाते निशाचरो ॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-------------|--------------------------------------|
| सत् | அந்த | तरमाणं च | தாண்டிக்கொண்டிருக் கிறதாகவும், |
| अक्षोभ्यं | கலக்கமுடியாத | तीर्णं च | தாண்டிட்டதாகவும் |
| बलार्णवं | சேனைசமுத்திரமாகிய | तर्तुकामं च | தாண்டத்தயாட்செய் கிறதாகவும் |
| महाबलं | பெருஞ்சேனையை | निविष्टं | உட்கார்த்தவிட்டதா கவும், |
| पर्वताश्रेषु | மலையின் சிறகுகளி னும் | निविशत् च | உட்காரணிருக்கிறதா எத்தும் [கவும், |
| निर्क्षरेषु | மலைபுருளிகளினும் | सर्वशः | உட்கொலி செய்திற தாகவும், |
| गुहासु च | குகைகளினும் | भीमनादं एव | காக்கர்களிருவர் களும் |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தின் | ददृशाते | கவனித்தார்கள். |
| तीरेषु च | கரைகளினும் | | |
| वनेषु | காடுகளினும் | | |
| उपवनेषु च | தேரட்டங்களினும் | | |
| संस्थितं | இருப்பதாகவும், | | |

तौ ददर्श महातेजाः प्रच्छन्नौ च विभीषणः ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-------|----------------------|
| महातेजाः | மகா தேஜஸ்வியான | तौ च | அவ்விருவர்க்கினையும் |
| विभीषणः | விபிஷணர் | ददर्श | கண்டுகொண்டு |
| प्रच्छन्नौ | மாறுகொண்ட | | |

விருக்கும்

கிட்டார்.

आचक्षेऽथ रामाय गृहीत्वा शुकसारणौ ।

॥ १४ ॥

अथ
शुकसारणौ
अप्युपொழுது
சுகசாரணையும் ஸாரணனையும்

गृहीत्वा
रामाय
आचक्षे
பிடித்துக்கொண்டு
ராமருக்கு
பின்வருமாறு
தெரிவித்தார் :

तस्येमौ राक्षसेन्द्रस्य मन्त्रिणौ शुकसारणौ ।

लङ्कायाः समनुप्राप्तौ चारौ परपुरञ्जय ॥

परपुरञ्जय
इमौ
शुकसारणौ
तस्य
“சத்துருக்களின் நகர்
களை வெல்லுபவரே!
இந்த
சுகனும் ஸாரணனும்
அந்த

राक्षसेन्द्रस्य
मन्त्रिणौ
लङ्कायाः
समनुप्राप्तौ
चारौ
அரக்கர் மன்னனது
மந்திரிகள்;
லங்கையிலிருந்து
இங்கு வந்திருக்கும்
ஓற்றர்கள்.”

तौ दृष्ट्वा व्यथितौ रामं निराशौ जीविते तदा ।

कृताञ्जलिपुटौ भीतौ वचनं चेदमूचतुः ॥

तौ
रामं दृष्ट्वा
तदा
व्यथितौ
जीविते
निराशौ
அவ்விருவர்களும்
ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
அப்பொழுது
உள்ளம் அவிந்து
உயிரின்மேல்
ஆகை ஒழிந்தவர்க
ளாய்

भीतौ च
कृताञ्जलिपुटौ
इदं वचनं
अचतुः
அச்சமடைந்தவர்க
ளாயும்
கூராஜலிபுண்டி
கொண்டு
பின்வரும் சொல்லை
சொன்னார்கள் :

आवामिहागतौ सौम्य रावणप्रहिताबुभौ । परिज्ञातुं बलं कृत्स्नं तवेदं रघुनन्दन ॥ १७ ॥

सौम्य
रघुनन्दन
आवां उभौ
तव
इदं
बलं
“சாந்தமூர் த்தியே!
ஸ்ரீராம!
நாங்கள் இருவர்களும்
தேவரீரது
இந்த
சேனையைப்பற்றி

कृत्स्नं
परिज्ञातुं
रावणप्रहितौ
इह
आगतौ
எல்லா வற்றையும்,
நன்கு அறிவதற்காக
ராவணனால் அனுப்பப்
பட்டவர்களாக
இங்கு
வந்திருக்கின்றோம்”

तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा रामो दशरथात्मजः । अवर्षात्प्रहसन्वाक्यं सर्वभूतहिते रतः ॥ १८ ॥

दशरथा-सजः
सर्वभूतहिते
रतः
रामः
தசரதசக்கிரவர்த்தி
யின் திருமகனும்
எல்லாப்ராணிகளின்
நன்மையில்
ஊக்கமுடையவரு
மரன்
ஸ்ரீராமர்

तयोः
तत् वचनं
श्रुत्वा
प्रहसन्
वाक्यं
अवर्षात्
அவ்விருவர்களுடைய
அந்த சொல்லை
செவிக் கொண்டு
புன்னகைகொண்டு
ஒரு சொல்லை
பின்வருமாறு
மொழிந்தார் :

यदि दृष्टं बलं कृत्स्नं वयं वा सुसमीक्षिताः । यथोक्तं वा कृतं कार्यं छन्दतः प्रतिगम्यताम् ॥

வல் கருத்
ஔ
வய்
சுசமீக்ஷிதா: வா
கார்ய
"சேனை எல்லா முழு
கண்டறியப்பட்டதா
நாகங்கள் [கவும்
விசாரித்தறியப்பட்ட
வர்களுக்கவும்,
வந்த காரியம்

யதோக
கூந்
யதி வா
ஊந்த:
புதிமய்தாம்
நியமனம்பெற்றவா ஓ
முடிந்ததாகவும்,
இருக்குமாயின்
இங்ங்ங்ங்ங்ங்
திரும்பிச்செல்லப்
பட்டும்.

अथ किञ्चिद्दृष्टं वा भूयस्तद्द्रष्टुमर्हथः

भूयः
अदृष्टं
किञ्चित्
" இன்னும்
கண்டறியாதது
எதெனும்பொன்று

॥ २० ॥

வா
தந்
ஔ
" இருக்குமாகில்
அதையும்
கண்டறியக்கடவீர்
கள்.

विभीषणो वा कात्स्येन भूयः संदर्शयिष्यति

वा
विभीषणः
" வேண்டுமானால்
விபிஷணர்

॥ २१ ॥

காச்யேந
भूयः
संदर्शयिष्यति
எதையும் விடாமல்
இன்னும்
காட்டுவார்.

न चेद् ग्रहणं प्राप्य भेतव्यं जीवितं प्रति ।

इदं
ग्रहणं
प्राप्य
जीवितं प्रति
भेतव्यं न
न्यस्तशस्त्रौ
" இந்த
கைதித்தன்மையை
ஆடைந்து
உயிரைப்பற்றி
கிந்தையறவேண்டாம்.
கைவிடாபுதமின்றாத
வர்களுக்கும்

न्यस्तशस्त्रौ गृहीतौ वा न दूतौ वधमर्हथः ॥

गृहीतौ च
दूतौ वा
वधं
अर्हथः न
பிடிபட்டவர்களுமான
ஓ தர்களைசிய நிகை
விருவர்களுக்கும்
கொலைக்கு
உரியவர்களைதீர்கள்.

पृच्छमानो विमुञ्चैतो चारो रात्रिचराबुधौ । शत्रुपक्षस्य सततं विभीषण विकर्षणौ ॥२३॥

विभीषण
सततं
शत्रुपक्षस्य
विकर्षणौ
" விபிஷண!
எக்காலத்திலும்
சந்ருபக்ஷத்திற்கு
ஆறுதம் செய்பவர்
களும்

चारो
रात्रिचरौ
पतौ वभौ
पृच्छमानौ
विमुञ्च
வேவுசாரிகளும்
ஆக்கர்களுமாய்
இந்த இருவர்களையும்
கேள்செய் பிரித்திக
கிந்தவர்களாய்
கிட்டுடாட்டிவிடும்.

प्रविश्य नगरीं लङ्कां भवद्भ्यां धनदानुजः । वक्तव्यो रक्षसां राजा यथोक्तं वचनं मम ॥

लङ्कां
नगरीं
प्रविश्य
भवद्भ्यां
रक्षसां
राजा
" இலங்கை
நகருக்கு
சென்று,
உக்களிநுவர்களாயும்
ஆரக்கர்களின்
மன்னுரை

धनदानुजः
मम
वचनं
यथोक्तं
वक्तव्यः
குபேரனது தம்பியார்
எனது [(ராவணன்)
கொல்லை
நான் சொல்லுகிறபடி
சொல்லப்படவேண்
டி உவன்

यद्बलं च समाश्रित्य सीतां मे हृतवानसि । तदर्शय यथाकामं ससैन्यः सहवान्धवः ॥२५॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------|---------------------|
| यद् बलं च | “எந்த பலத்தையே | ससैन्यः | சைனியக்களுடன் |
| समाश्रित्य | பெரிதாய்ப் பாராட்டி | | கூடினவனாயும் |
| मे | என்று | सहवान्धवः | பந்துக்களினாடுகூடின |
| सीतां | வரித்தையை | | வனாயும், |
| हृतवान् भसि | அபஹரித்தவனாய் | यथाकामं | இயன்றமட்டும் |
| | ஆசிரையோ | दर्शय | நீ கோரில் காட்டுவா |
| तद् | அதை | | யாக. |

श्वः काल्ये नगरीं लङ्कां सप्राकारां सतोरणाम् । राक्षसं च बलं पश्य शरैर्विध्वंसितं मया ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|---------------------|
| श्वः | “காலே | राक्षसं | ஆரக்க |
| काल्ये | காலையில் | बलं | சேனையையும் |
| मया | என்னால் | च | ஆகிய எல்லாவற்றை |
| शरैः | பாணங்களால் | | யும் |
| लङ्कां नगरीं | இலங்கைநகரை | विध्वंसितं | நாசம்பண்ணிவிடப் |
| सप्राकारां | மதிற்குவர்களுடனும் | | பட்டதாக |
| सतोरणां | தோரணவாயில் | पश्य | (நீ பரத்யகூதத்தில்) |
| | களுடனும் | | பார்ப்பாயாக. |

घोरं रोषमहं मोक्ष्ये बलं धारय रावण । श्वः काल्ये वज्रवान्वज्रं दानवेष्विव वासवः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|----------|------------------|
| रावण | “ராவண! | घोरं | அலற்றயமாய் |
| वज्रवान् | வஜ்ரபாணியாகிய | | விளக்கும் |
| वासवः | இந்திரன் | रोषं | கோபாவேசத்தை |
| दानेषु | அசுரர்கள் பீடூ | मोक्ष्ये | வெளிக்காட்டப் |
| वज्रं | வஜ்ராயுதத்தை | | போகின்றேன். |
| इष | எவ்வண்ணமோ | बलं | சைன்யத்தை |
| | அவ்வண்ணமே | धारय | கேர்த்துவைத்துக் |
| अहं | நான் | | கொள்.” |
| श्वः काल्ये | நானைக் காலையில் | | |

इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ । जयेति प्रतिनन्द्यैतौ राघवं धर्मवत्सलम् ॥

आगम्य नगरीं लङ्कामवृतां राक्षसाधिपम्

॥ २८ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|--------------|----------------------|
| इति | மேற்கண்டவாறு | राघवं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| प्रतिसमादिष्टौ | இவ்விஷயத்தில் | जय | “ஜெயம்பெறுகிராக” |
| | நியமனம்பெற்ற | इति | என்று |
| राक्षसौ | ஆரக்கர்களான | प्रतिनन्द्य | வாழ்த்திவிட்டு |
| एतौ | இந்த | लङ्कां नगरीं | இலங்கைநகருக்கு |
| शुकसारणौ | சுகனும் சாரணனும் | आगम्य | திரும்பிச்சென்று |
| धर्मवत्सलं | தர்மத்தில் சலியப் | राक्षसाधिपं | ஆரக்கமன்னரிடம் |
| | பற்றடைய | भवताम् | பின்வருமாறு தெரி |
| | | | வித்தார்கள் : |

विभीषणमृहीतो तु वधाहौ राक्षसेश्वर । दृष्ट्वा धर्मात्मना मुक्तौ रामेणामितेजसा ॥२९॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|---------------------|
| राक्षसेश्वर | “ ஆரக்காமன்னு ! | अमितेजसा | அமிதேஜஸ ஆற்றஜஸ |
| वधाहौ | வகைதக்குரியவர் | | டைய |
| दृष्ट्वा | கண்டு [கொண்ட | धर्मात्मना | தர்மா தர்மா தாய கிய |
| | விபிஷணரால் பிடிக்க | रामेण | ராமரால் |
| विभीषणमृहीतो | { ப்பட்டவர்களான | तु | அப்பொழுது |
| | காங்கனிஞுவர்களும் | मुक्तौ | விடுவிக்கப்பட்டோம். |

एकस्थानगता यत्र चत्वारः पुरुषर्षभाः । लोकपालोपमाः शूराः कृतास्त्रा दृढविक्रमाः ॥
रामो दाशरथिः श्रीमान्छक्ष्मणश्च विभीषणः । सुग्रीवश्च महातेजा महेन्द्रसप्तविक्रमः ॥३१॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------------|--------------------|
| पुरुषर्षभाः | “ புருஷோத்தமர் | महातेजाः | மகாதேஜஸ்கியும் |
| | களும் | महेन्द्रसप्तविक्रमः | துந்திரனை நிகர்த்த |
| लोकपालोपमाः | லோகபாலர்கள்க்கு | | விசரமசானியும் |
| | நிகரணவர்களும் | श्रीमान् | ஸக்தமீகடாசுதமுடை |
| कृतास्त्राः | அஸ்திர வித்தைபில் | रामः | ராமனும் [யவனுமான |
| | தேர்ச்சியுடைய | छक्ष्मणः | ஸக்தமணனும் |
| शूराः | சூரர்களும் | विभीषणः च | விபிஷணனும் |
| दृढविक्रमाः | சலிய ஆண்மைமுடைய | सुग्रीवः च | சுகீவனும் |
| | யவர்களமுமான | यस | ஒரிடத்தில் |
| चत्वारः | நால்வர்களாகிய, | एकस्थानगताः | ஒன்றுசேர்த்துவிட்ட |
| दाशरथिः | தசரதரின் மகனும் | | டர்கள். |

एते शक्ताः पुरीं लङ्कां सभाकारां सतोरणाम् । उत्पाद्य संक्रामयितुं सर्वे तिष्ठन्तु वानराः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|-------------------|
| एते | “ இவர்கள் | उत्पाद्य | உத்பாதி பெயர்ந்து |
| लङ्कां पुरीं | இலங்கை நகரை | संक्रामयितुं | விசை எறிவதற்கு |
| सभाकारां | மதிர்கலர்களிடலும் | शक्ताः | சமர்த்தர்கள். |
| सतोरणां | தொரணவாயில்களு | वानराः | வானர்கள் |
| | டனும், | सर्वे | எல்லோரும் |
| | | तिष्ठन्तु | திருக்கட்டும். |

यादृशं तस्य रामस्य रूपं प्रहरणानि च । वधिष्यति पुरीं लङ्कामेकस्तिष्ठन्तु ते त्रयः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|---------------------|
| तस्य | “ அந்த | एकः | அவன் ஒருவனை |
| रामस्य | ராமரது | लङ्कां पुरीं | இலங்கை நகரை |
| रूपं | வடிவமுக்கும் | वधिष्यति | அழித்துவிடுவான். |
| प्रहरणानि च | ஆயுதங்களும் ஆகிய | ते त्रयः | அந்த மற்று மூவர்கள் |
| | இடுதல்களும் | तिष्ठन्तु | திருக்கட்டும். |
| यादृशं | எப்படிப்பட்டது ! | | |

रामलक्ष्मणगुप्ता सा सुग्रीवेण च वाहिनी । वभूव दुर्धर्षतरा सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------------------|---------------|--|
| सुग्रीवेण च | "சுக்ரீவனானும் | सुरासुरैः अपि | தேவர்களானும் அசுரர்களானும் கூட |
| रामलक्ष्मणगुप्ता | ராமனானும், எகத்தாமனானும் பரிபாலிக்கப் | दुर्धर्षतरा | { என்ன பாடுபட்டாலும் அணுகமுடியாத தராய் |
| सा | அந்த [பட்ட | वभूव | விளங்குகிறது. |
| वाहिनी | சேனையானது | | |
| सेन्द्रैः | இத்திரனூட்பட்ட | | |

महृष्टरूपा ध्वजिनी वनौकसां महात्मनां संप्रति योद्धुमिच्छताम् ।
अलं विरोधेन शपो विधीयतां प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली ॥ ३५ ॥

| | | | |
|---------------------------|--|-------------|--|
| संप्रति योद्धुं इच्छतां | "இப்பொழுது போர்புரிய துணிவுகொண்டிருக்கிற | विरोधेन अलं | { கிரோதத்தால் (இது வகையில்) ஆனது போதும். |
| महात्मनां वनौकसां ध्वजिनी | பகர் ஆற்றலுடைய வானரர்களின் சேனையானது | शपो | சமாதானம் |
| प्रहृष्टरूपा | உதவாகக்குறிகளுடன் விளங்குகிறது. | विधीयतां | விதிக்கப்பட்டதும். |
| | | दाशरथाय | ராமனுக்கு |
| | | मैथिली | வீதை |
| | | प्रदीयताम् | திருப்பிக்கொடுத்து விடப்பட்டதும்." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 15599

युद्धकाण्डे भादितः श्लोकाः 924

पञ्चविंशः सर्गः—இருபத்தாறாவது ஸர்க்கம். ॥ २६ ॥
वानरसेनादर्शनम्—வானரசேனையைக் காண்பிப்பது.

तद्वचः पथ्यमह्नीवं सारणेनाभिभाषितम् । निशम्य रावणो राजा पर्यभाषत सारणम् ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|----------------------------|
| रावणः राजा | ராவணமன்னன் | अह्नीवं | சிறந்த தராயிருக்கிறது |
| सारणेन | ஸாரணனால் | वचः | சொல்லை [மொழி |
| अभिभाषितं | சொல்லப்பட்ட | निशम्य | கேட்டு |
| तव् | அந்த | सारणं | ஸாரணனைப் பார்த்து |
| पर्य | ஹிதமாயிருக்கிறது | पर्यभाषत | பின் வருமாறு [மொழிந்தான் : |

यदि मामभियुञ्जीरन्देवगन्धर्वदानवाः । नैव सीतामहं दद्यां सर्वलोकभयादपि ॥ २ ॥

| | | | |
|-----------------------|---------------------------------------|-----------------------|--|
| देवगन्धर्व- दानवाः | { "தேவர்கள், கந்தர்வர் கள், அசுரர்கள் | सर्वलोक- भयात् अपि | { எல்லா உலகத்தினின் றும் ஆபத்து சம்ப விக் கிறது என்று தும் |
| मां | என்னுடன் | अहं | நான் |
| अभियुञ्जीरन् | போர்புரிய வருகின் றார்கள் | सीतां एव | வீதையைமட்டும் |
| यदि | என்றாலும் சரி | दद्यां न | திருப்பிக்கொடுக்க மாட்டேன். |

त्वं तु सौम्य परिव्रस्तो हरिभिस्तर्जितो भृशम् । प्रतिप्रदानमथैव सीतायाः साधु मन्यसे ॥

சௌம்ய "சைதர்யமற்றவனே !
 त्वं நீ
 हरिभिः வரணரர்களால்
 तर्जितः மிரட்டப்பட்டவனாய்
 भृशं மிகவும்

परिव्रस्तः तु உன்வாங்கெடுக்கியவனாய்
 ஆகிவிட்டமைவால்
 अथ एव இப்பொழுதே
 सीतायाः சீதையை
 प्रतिप्रदानं திருப்பிக்கொடுத்தலை
 साधु நல்லதென
 मन्यसे நினைக்கின்றனை.

को हि नाम सपत्नो मां समरे जेतुमर्हति

समरे "மேளையில்
 मां என்னை
 जेतुं வெல்ல

॥ ४ ॥

सपत्नः சத் துருவாகிய
 कः नाम हि எவன் தான்
 अर्हति வல்லவானானான் ?

इत्यब्रवीत्स परुषं रावणो राक्षसाधिपः

राक्षसाधिपः ராட்சஸமன்னனாகிய
 सः ஆந்த
 रावणः ராவணன்

॥ ५ ॥

इति மேற்கண்டவாறு
 परुषं மறுக்க இடமின்றி
 अब्रवीत् பேசியுத்தான்.

आरूरोह ततः श्रीमान्प्रासादं हिमपाण्डरम् । बहुतालसमुत्सेधं रावणोऽथ दिदक्षया ॥ ६ ॥

अथ ஆதல்மேல்
 श्रीमान् ஸ்ரீமன்னாகிய
 रावणः ராவணன்
 ततः அன்றிடத்திலிருந்து
 हिमपाण्डरं வெண்ணிறமரன்

बहुतालसमुत्सेधं பல பனைமரக்களினு
 யர்த்தையுடைய
 प्रासादं மாளிகையில்
 दिदक्षया நெரில் காணவேண்டு
 மென்ற ஆவானினால்
 आरूरोह ஏறினான்.

ताभ्यां चराभ्यां सहितो रावणः क्रोधमूर्च्छितः । पश्यमानः समुद्रं च पर्वतान् च वनानि च ॥

ददर्श पृथिवीदेशं सुसंपूर्णं पुवङ्गमैः

रावणः ராவணன்
 क्रोधमूर्च्छितः சினம் தலைக்கேறியவ
 आयुं
 समुद्रं च சுமுத்திரத்தையும்
 पर्वतान् च மலைகளையும்
 वनानि च வனங்களையும்
 ताभ्यां ஆவானிரு

॥ ८ ॥

चराभ्यां ஒற்றர்களோடு
 सहितः கூடவே
 पश्यमानः பார்க்கின்றவனாய்
 पुवङ्गमैः வானரர்களால்
 सुसंपूर्णं சீரப்பெற்ற
 पृथिवीदेशं பூம்பிரதேசத்தை
 ददर्श கண்டான்.

तदपारमसङ्ख्येयं वानराणां महद्वलम् । आलोक्य रावणो राजा परिपश्यच्छ सारणम् ॥

रावणः राजा ராவணமன்னன்
 वानराणां வானரர்களுடைய
 सत् ஆந்த
 अमारं எல்லை காணமுடியா
 तदसंख्येयं தனும்
 आलोक्य காண்க்கிடமுடியாதது

महत् பெரும்
 बलं சைன்யத்தை
 आलोक्य பார்த்து
 सारणं வானரைகளை
 परिपश्यच्छ சின்வருமாறு

एषां वानरमुख्यानां के शूराः के महाबलाः । ॥ १० ॥

வானரமுக்யானா
एषां
शूराः के
“வானரோத்தமராகிய
இவர்களுள்
சூரர்கள் எவர்கள் ?

महाबलाः के
மகா பலிவீரர்கள்
எவர்கள் ?

के पूर्वमभिवर्तन्ते महोत्साहाः समन्ततः ॥ ११ ॥

समन्ततः
महोत्साहाः
“எப்பொழுதும்
மிகவும் உச்சாகம்
கொண்டவர்களாய்

पूर्व
के
अभिवर्तन्ते
முதலில்
எவர்கள்
நிற்கின் ஞர்கள் ?

केषां शृणोति सुग्रीवः के वा यूथपयूथपाः ॥ १२ ॥

सुग्रीवः
केषां
शृणोति
“சகீவன்
எவர்களை
(சொல்லி)
கேட்டுறான் ?

यूथपयूथपाः
के वा
சேனைக்கூட்டங்க
ளின் தலைவர்
யாவர் ?

सारणाचक्ष्व मे सर्वे के प्रधानाः पुवङ्गमाः ॥ १३ ॥

सारण
प्रधानाः
पुवङ्गमाः
“ஸாரண !
முக்கிய
வானரர்

के
सर्वे
मे
आचक्ष्व
யாவர் ?
எல்லாவற்றையும்
எனக்கு
விளங்க விளம்பு.”

सारणो राक्षसेन्द्रस्य वचनं परिपृच्छतः । आचक्षेऽथ मुख्यज्ञो मुख्यांस्तत्र वनौकसः ॥

मुख्यज्ञः
सारणः
परिपृच्छतः
राक्षसेन्द्रस्य
अथ
“முக்கியமானவர்களை
நன்கறிந்திருந்த
ஸாரணன்,
வினாவும்
ராக்ஷஸமன்னனுக்கு
அப்பொழுது

तत्र
मुख्यान्
वनौकसः
वचनं
आचक्षे
அங்கு
முக்கியமான
வானரர்களைப்பற்றி
பதிலை
பின்வருமாறு தெரி
வித்தான் :

एष योऽभिमुखो लङ्कां नर्दस्तिष्ठति वानरः । यूथपानां सहस्राणां शतेन परिवारितः ॥
यस्य घोषेण महता सभाकारा सतोरणा । लङ्का प्रवेपते सर्वा सशैलवनकानना ॥ १६ ॥
सर्वशाखासृगेन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः । बलायै तिष्ठते वीरो नीलो नामैष यूथपः ॥

यः
वानरः
लङ्कां
अभिमुखः
नर्दन्
तिष्ठति
यूथपानां
सहस्राणां
शतेन
“எந்த
வானரன்
இலங்கைக்கு
எதிர் முகமாக
கர்ஜித்துக்கொண்டு
நிற்கிறானோ,
சேனையின்
ஆயிரங்களின்
அற்குல்

परिवारितः
सर्वशाखासृगेन्द्रस्य
महात्मनः
सुग्रीवस्य
बलायै
तिष्ठते
குழப்பப்பட்டுக்கொ
ளே,
எல்லா வானரர்களுக்
கும் மன்னனுக்
மகா ஆற்றலுடைய
சுகீவனது
சேனையின் முன்னி
டையில்
நிற்கிறானோ,

| | | | |
|----------|------------------|----------|------------------|
| யஸ்ய | எவனது | சுதேவன- | மலைகளுடனும் வணக் |
| மஹத் | பெரும் | கானநா | களுடனும் சேரலைக |
| ஓபேண | கர்ணனை யால் | | ளுடனும் |
| லஹா | இலங்கைநகர் | ஸ்வேபநே | கடுகடுக்குறறதேச, |
| சர்வா | முற்றிலும் | ஔ: நேச: | இவன், நிலனை |
| சமராகாரா | மதிநகவர்களுடனும் | நாம | பெயர்புனைந்தவன். |
| சதோரணா | தேவாரணவாயில் | ஔ: சூயப: | இவன் சேனைத்தலை |
| | ளுடனும் | வீர: | ஞான. [வன். |

வாஹு மயூஷ்ய ய: பஜ்யா மஹி கச்சதி வீரீயவான் । லஹாமபிமூல: கோபாத்மபிஷ்ணம் ச விஜும்பதே ॥
 கிரிஷ்டுஷ்யஸ்தீகாச: பவகிஜ்ஜல்கசாநிப: ॥ 19 ॥
 ஸ்போத்யத்யபிஸர்ஸவோ லாஹுலம் ச புன: புன: । யஸ்ய லாஹுலசவ்நேன ஸ்வநந்தி பரிஷா ட்ஷ ॥
 ஔ வானரராஜேன சூரீவேணாபிஷேசித: । யீவராஜ்யே஽ஹா நாம த்வாமாஹயதி சயுகே ॥ 20 ॥
 வாலின: சடூச: புத்ர: சூரீவஸ்ய சதா ப்ரிய: । ராஜவாஸ்தே பராகாந்த: சகாஸ்தே வரூணோ யதா ॥
 ஔஸ்ய சா மதி: சர்வா யதூஷ்டா ஜனகாஹ்மஜா । ஹநூமதா வேமவதா ராஜவஸ்ய ஹிதேபிணா ॥ 22 ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|-----------|-------------------------|
| வீரீயவான் | வீரீயகாலியும் | ட்ஷ பரிஷ: | பத்துதிக்குகரும் |
| கிரிஷ்டு- | மலைச்சிகரத்தை | ஸ்வநந்தி | எதிரொலிக்கின்ற |
| ஸ்தீகாச: | யொத்தவனும் | ஔ: | இவன் [னிலை, |
| பவகிஜ்ஜ- | மலர்ந்த தாமரை | அஹா: | அங்கதனை |
| சாநிப: | போன்றவனுமரன | நாம | பெயர்புனைந்தவன். |
| ய: | எவன் | வானராஜேன | வானரமன்னனு |
| வாஹு | இருகரங்களையும் | சூரீவேண | தக்ரீவனும் |
| மயூஷ்ய | உயர்த்தி, | யீவராஜ்யே | இளவரசுப்பட்டத்தில் |
| பஜ்யா | கால்களால் | அபிஷேசித: | முடிசூட்டப் பெற |
| மஹி | பூமியில் | வாலின: | வாசிக்கு [மவன் ; |
| கச்சதி | கடத்துகொண்டிருக்கிறானே, | சடூச: | எந்த |
| லஹா | இலங்கையை | புத்ர: | புகல்வன் ; |
| அபிமூல: | பார்த்துக்கொண்டு | சதா | எப்பொழுதும் |
| கோபாத் | கோபாலேசத்தால் | சூரீவஸ்ய | சகீவனுக்கு |
| அபிஷ்ணம் | அடிக்கடி | ப்ரிய: | மனக்கொணுது கடக்கிறவன் ; |
| விஜும்பதே ச | கூன்றுகிறானே, | சகாஸ்தே | சூத்திரன் விஷயத்தில் |
| அபிஸர்ஸவ: | அதி உக்கிரம்கொண் | வரூண: | வருணபகவான் |
| லாஹுலம் ச | வரூணும் [டவனும் | யதா | எவ்வண்ணப்போ அவ்வண்ணமே |
| புன: புன: | மீண்டும் மீண்டும் | ராஜவாஸ்தே | சூரீராயர் கைக்காயத் |
| ஸ்போதயதி | கமுற்றி அடிக்கிறானே, | | தில் |
| யஸ்ய | எவனது | பராகாந்த: | திடக்கொண்டவன் ; |
| லாஹுலசவ்நேன | வானிலைசையால் | | |

| | | | |
|-----------|-------------------------|----------|-------------------|
| राघवस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | यत् | என்பதெதுவோ |
| हितैविना | நன்மைசெய்யவேண்டி | सा सर्वा | அதெல்லாமும் |
| वेगवता | ஆண்மைபுற்று விளங்கிய | एतस्य | இவனது |
| हन्मता | ஹனுமாளால், | मतिः | நண்ணறிவு; |
| जनकात्मजा | ஜானகி | त्वां | தேவரீரை |
| दृष्टा | காணப்பட்டாள் | संयुगे | போர்க்கிமித்தமாய் |
| | | आह्वयति | அழைக்கவுகிறாள். |

बहूनि वानरेन्द्राणामेष यूथानि वीर्यवान् । परिगृह्णाभियाति त्वां श्वेनानीकेन दुर्जयः ॥
 अनु वालिसुतस्यापि बलेन महता वृतः । वीरस्तिष्ठति संग्रामे सेतुहेतुरयं नलः ॥ २४ ॥
 ये तु विष्टभ्य गात्राणि श्वेलयन्ति नदन्ति च । उत्थाय च विजृम्भन्ते क्रोधेन हरिपुङ्गवाः॥
 एते दुष्पसहा घोराश्चण्डाश्चण्डपराक्रमाः । अष्टौ शतसहस्राणि दशकोटिशतानि च ॥२६॥
 य एनमनुगच्छन्ति वीराश्चन्दनवासिनः । एषैवाशंसते लङ्कां श्वेनानीकेन मर्दितुम् ॥२७॥

| | | | |
|------------------|--|----------------|-------------------------------|
| ये | “எந்த | वीराः | வீரர்களும் |
| हरिपुङ्गवाः | வானரர்கள் | एनं | இவரை |
| गात्राणि | அவயவங்களை | अनुगच्छन्ति | பின்பற்றி வருகின் றார்களோ, |
| विष्टभ्य | முறித்துக்கொண்டு | अयं एव | இவன்தான் |
| श्वेलयन्ति | விளையாடுகின்றார் களோ, | सेतुहेतुः | சேதுவிற்குக் காரண மரண |
| नदन्ति च | சூசலிடுகின்றார் களோ, | नलः | நளன் என்ற |
| क्रोधेन | கோபத்தால் | वीर्यवान् | வீரியவாள். |
| उत्थाय | எழுந்து | एषः | இவன் |
| विजृम्भन्ते च | துள்ளிக்குதிக்கின்றார் களோ ஆவர்களும், | वानरेन्द्राणां | வானரோத்தமர் களின் |
| दुष्पसहाः | ஆணுகவொண்ணாத வர்களும், | बहूनि | பல |
| घोराः | பயங்கரமானவர்களும் | यूथानि | கூட்டங்களை |
| चण्डाः | கொடியவர்களும், | परिगृह्य | திரட்டிக்கொண்டு |
| चण्डपराक्रमाः | மகாபராக்கரமசாலி களும்மரண | श्वेन | தனது |
| एते | இவர்களும், | अनीकेन | சேனையால் |
| अष्टौ शतसहस्राणि | எண்ணூறுபிரக்களும் | दुर्जयः | பிறர் ஆணுகமுடியா தவனாய் |
| दश कोटिशतानि च | பத்து தூறுகொடி களும், | त्वां | தேவரீரை |
| ये | எந்த | अभियाति | எதிர்த்துவருகிறான். |
| चन्दनवासिनः | சந்தனக்காட்டில் வாசிக்கும் | वालिमुत्स | வாலிமைத்தனுக்கு |
| | | अनु अपि | பின்னாக |
| | | महता | பெரும் |
| | | बलेन | சேனையால் |
| | | वृतः | நூழப்பட்டவனாய் |

| | | | |
|---------|--------------------|-----------|-----------------|
| சங்காமே | பேராரின் சிமித்தம் | அநீகென து | சேனைகளைக்கொண்டே |
| திஷ்டி | காத்தூகிரிநகரம். | சங்கா | இலங்கையை |
| வீர: | வீரலாகிய | மரீசு | உருவழிக்க |
| புஷ: | இவன் | அநீகென | உத்தேசம் கொண்ட |
| சேன | தனது | | ருக்கிரன். |

श्वेतो रजतसंकाशश्चपलो भीमविक्रमः । बुद्धिमान्वानरो वीरस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥ २८ ॥

तूर्णं सुग्रीवभागस्य पुनर्गच्छति सत्वरः । विभजन्वानरीं सेनामर्नाकानि प्रहर्षयन् ॥२९॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|------------|-------------------|
| சேன: | "சீவதனென்ற | வானரீ சேனா | வானரசேனையை |
| வானர: | வானரன் | சத்வர: | பரபரப்படன் |
| ரஜதசங்காச: | வெள்ளிறின் | விபஜந் | அணிவகுத்துக் |
| | பிறமுற்றவன். | | கொண்டு |
| சுபல: | வேகமடையுற்றவன். | அநீகானி | சேனைகளை |
| பீமவிக்ரம: | வெகு கொடிய பராக்கிரமசாலி. | புறஃயந் | நஞ்சாகப்படுத்திக் |
| | | | கொண்டு |
| புத்திமானு | புத்திகூர்மையுள்ளவன். | சுக்ரீவ | சகீவனை |
| வியு லோகேபு | முன்று உலகங்களிலும் | பாகமய | கண்டுவிட்டு |
| வீர: | வீரனென | புன: | திரும்பி |
| விசுத்: | பிரசித்திபெற்றவன். | தூர் | வேகமாய் |
| | | வசுத்தி | வந்துகொண்டிருக்கி |
| | | | ருன். |

यः पुरा गोमतीतीरे रम्यं पश्यति पर्वतम् । नाम्ना सङ्कोचनो नाम नानानगद्युतो गिरिः ॥

तत्र राज्यं प्रशास्येप कुमुदो नाम युथपः । योऽतो शतसहस्राणां सहस्रं परिकल्पति ॥३१॥

यस्य वाला बहुव्यासा दीर्घा लाङ्गलमाश्रिताः ।

ताम्राः पीताः सिताः श्वेताः प्रकीर्णा घोरदर्शनाः ॥ ३२ ॥

अदीनो रोषणश्चण्डः संग्राममभिकाङ्क्षति । एषोऽप्याशंसते लङ्कां सेनानीकेन मर्दितुम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------------|--------------------|
| கோமதிதீரி | "கோமதிக்கரைமீல் | தர | அகில் |
| நானாநகயுத: | பல சிறு குன்றுகளு | ரஜ்ய் ப்ராஸ்தி | பாதுமபரிபாஸனத்தை |
| நாநா | பெயரால் [டன் கூடிய | | செய்தவருகிருக்கின, |
| சங்கோசன: நாம | சங்கோசனம் என்ற | ய: | எவன் |
| | பிரசித்திபெற்ற | சனசஹ்ராணா | வசுத்தின் |
| கிரி: | ஹர் மகேநிருக்கிறதூ. | சஹ்ர | ஆயிரத்தை |
| ய: | எவன் | பரிகல்பதி | கொண்டுவந்திருக்கி |
| புரா | இதற்குமுன் | | ருகின, |
| ரமய் | அழகிய | யசு | எவனுடைய |
| பவீத | இந்த மலையில் | லாங்குல் மாஸ்தி: | வாஸினிருக்கின்ற |
| பயீதி | சஞ்சாரித்து வருகி | வாலா: | மயிர்கள் |
| | ருகின, | பஹுவ்யா: | பல் மார்பளவு |

| | | | |
|------------|--------------------------------------|-------------|--------------------------------------|
| दीर्घोः | நீண்ட வலகனாய் | शेषणः | கொடுக்கடன். |
| ताम्राः | கிவந்தும் | चण्डः | கொடியவன். |
| पीताः | பஞ்சள் நிறமுற்றும் | असौ | இவன் |
| श्वेताः | வெளுத்தும் | स्यमं | போரை |
| सिताः | சுருண்டு | अभिकांक्षति | எதிர்பார்த்துக் கொண்டிருக்கிறான். |
| प्रकीर्णाः | அடர்ந்து | एषः | இவன் |
| घोरदर्शनाः | பார்க்க பயக்கரமாய் இருக்கின்றனவோ, | खेन | தனது |
| एषः | இவன் | अनीकेन अपि | சேனை யைக்கொண்டே |
| कुमुदः नाम | குமுதனென்று பெயர் பூண்ட | लङ्कां | இலங்கையை |
| यूथपः | சேனைத்தலைவன் ; | मर्दितुं | உருவழிக்க |
| अदीनः | எதற்கும் சலியாத வன். | आशंसते | உத்தேசிக்கொண்டி- ருக்கிறான். |

यस्त्वेष सिंहसङ्काशः कपिलो दीर्घकेसरः । निभृतः मेक्षते लङ्कां दिधक्षन्निव चक्षुषा ॥
विन्ध्यं कृष्णगिरिं सखं पर्वतं च सुदर्शनम् । राजन्सततमध्यास्ते रम्भो नामैष यूथपः ॥
शतं शतसहस्राणां त्रिशच हरिपुङ्गवाः । यमेति वानराः शूराश्चण्डाश्चण्डपराक्रमाः ॥
परिवार्यानुगच्छन्ति लङ्कां मर्दितुमोजसा ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-------------|---|---------------|--------------------------------------|
| राजन् | “ஆரசே ! | शतसहस्राणां | } மூலாயிரம் லக்ஷம் |
| सिंहसङ्काशः | கிங்கத்தை நிகர்த்தவ கயிலவர்ணனாய் [னாய் | शतं त्रिशच | |
| कपिलः | கயிலவர்ணனாய் [னாய் | शूराः | சூரர்களும |
| दीर्घकेसरः | நீண்டமயிருடையவ னாய் | चण्डाः | கொடியவர்களும |
| निभृतः | த்ருட்சித்தனான | चण्डपराक्रमाः | மஹா பாய்க்ரமசாலி களும |
| यः | எவன் | हरिपुङ्गवाः च | வானரர்களில் கிறந்தவர்களுமான |
| लङ्कां | இலங்கையை | वानराः | வானரகள் |
| चक्षुषा | கண்ணால் | परिवार्यं | சூழ்ந்து |
| दिधक्षन् इव | எரித்து விடுகிறவன் போலவே | अनुगच्छन्ति | பின்பற்றி வருகின்றனர் |
| मेक्षते | பார்த்துக்கொண் டிருக்கிறான், | एषः | இவன் [களை |
| विन्ध्यं | விந்தியமலைமீதும் | यूथपः | சேனைத்தலைவனாகிய |
| कृष्णगिरिं | கருஷ்ணமலைமீதும் | रम्भः | ரம்பன் |
| सुदर्शनं | மிக்க அழகிய | नाम | எனப் பெயர் பூண்டவன். |
| सखं | ஸற்றயமெனும் | एषः तु | இவனும் |
| पर्वतं च | பர்வதத்திடும் | ओजसा | ஆற்றலால் |
| सततं | எப்பொழுதும் | लङ्कां | இலங்கையை |
| अध्यास्ते | வசிக்கவருகிறோனோ, எவளை | मर्दितुं एति | உருவழிக்க வந்து கொண்டிருக்கிறான். |
| यं | | | |

यस्तु कर्णो विवृणुते जम्भते च पुनः पुनः । न च संविजते मृत्योर्न च युद्धादिभावति ॥
प्रकम्पते च रोषेण तिर्यक् च पुनरीक्षते । पश्यन्त्याङ्गुलमपि च क्ष्वेलते च महाबलः ॥३८॥
महाजयो वीतभयो रम्यं साल्वेयपर्वतम् । राजन्सततमध्यास्ते शरभो नाम यूथपः ॥३९॥

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| राजन् | " அரசரிசு! |
| महाबलः | மஹாபலசாலியும் |
| महाजयः | மஹாஜெயகசாலியும் |
| वीतभयः | பயத்தை ஒழித்தவ |
| यः | எவன் [ஹமான |
| कर्णो | காணுகளிரண்டையும் |
| विवृणुते | அகற்றிக்கொண்டி ருக்கிருநீன, |
| पुनः पुनः | மீண்டும் மீண்டும் |
| जम्भते च | தூள்விக்குதிக்கின் ருநீன, |
| मृत्योः | எமனுக்கு |
| संविजते न च | பயப்படாதிருக் கிருநீன, |
| युद्धाद् | போரில் நின்ற |
| विधावति न च | புறக்காட்டி ஓடாதிரு க்கிருநீன, |

| | |
|---------------|---------------------------------|
| रोषेण | கேபத்தால் |
| प्रकम्पते च | அடித்துக்கொண் டிருக்கிருநீன, |
| पुनः च | மீண்டும் மீண்டும் |
| तिर्यक् | குறுக்காக |
| ईक्षते | பார்க்கிருநீன, |
| आङ्गुलं अपि | வாங்குமும் |
| पश्यन् च | பார்க்குக்கொண்டே |
| क्ष्वेलते च | சில்கதா தம் செய்கி ருநீன, |
| सततं | எப்பொழுதும் |
| रम्यं | அழகிய |
| साल्वेयपर्वतं | சாலவேயபர்வதத்தில் |
| अध्यास्ते तु | வசிக்கிருநீன, இவன் தான் |
| शरभः नाम | சரபென்ற |
| यूथपः | சேனைத் தலைவன். |

एतस्य बलिनः सर्वे विहारा नाम यूथपाः ।

राजञ्छतसहस्राणि चत्वारिंशत्तयैव च ॥

| | |
|---------|-----------------|
| राजम् | " ராஜன்! |
| तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| एतस्य | இவனது |
| यूथपाः | சேனைத்தலைவர்கள் |
| सर्वे च | எல்லோருமே |

| | |
|-------------|---------------------------------------|
| बलिनः | மகாபலசாலிகள். |
| चत्वारिंशत् | } நாற்பது எண்கும் |
| शतसहस्राणि | |
| विहाराः नाम | விஹாரர்கள் என்ற பெயர் பூண்டவர்கள். |

यस्तु मेघ इवाकाशं महानाट्यं तिष्ठति । मध्ये वानरवीराणां सुराणामिव वासवः ॥४१॥
भेरीणामिव सन्नादो यस्यैष श्रूयते महान् । घोषः शाखाभृगेन्द्राणां संशामभिकाङ्कताम् ॥
एष पर्वतमध्यास्ते पारियात्रमनुत्तमम् । युद्धे दुष्प्रसहो नित्यं पनसो नाम यूथपः ॥४२॥

| | |
|-------------|-----------------|
| यः | " எவன் |
| सुराणां | தேவர்களுக்கும் |
| वासवः इव | இத்திரன்போலவே, |
| वानरवीराणां | வானர வீரர்களின் |
| मध्ये | நடுவில் |
| महान् मेघः | பெரும் மேகம் |

| | |
|----------|---------------------------------------|
| आकाशं इव | { ஆகாசத்தை எவ்வண் ணமே அவ்வண் மே |
| भावृत्य | |
| तिष्ठति | உறைத்துக்கொண்டு நிற்கிருநீன, |
| यस्य | எலனைச்சேர்ந்த |

| | | | |
|-------------------|-----------------------|------------|-----------------|
| संभ्रामं | பேரருக்கு | पाशियात्रं | பாசியா த்ரமென்ற |
| अभिकांक्षतां | கா த்துகிறக்கும் | पर्वतं | பர்வதத்தில் |
| शाखासृगेन्द्राणां | வானரோத்தமர்க ளுடைய | अध्यास्ते | வசிக்கின்றோடு, |
| महान् घोषः | பெரும் கோஷமானது | एषः तु | இவன் தான் |
| भेरीणां | பேரிவாத்தியங்களின் | पनसः नाम | பனஸன் என்ற |
| सनादः इव | பேரொலிபோன்ற தாய் | यूथपः | சேனைத்தலைவன். |
| श्रूयते | கேட்கப்படுகிறது, | एषः | இவன் |
| अनुत्तमं | (எவன்) சிறந்த | निस्त्रं | எப்பொழுதும் |
| | | युद्धे | போரில் |
| | | दुष्प्रसहः | அசுறுபமானவன். |

एनं शतसहस्राणां शतार्थं पर्युपासते । यूथपा यूथपश्रेष्ठं येषां यूथानि भागशः ॥ ४४ ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------------|--------------|-------------------------------|
| येषां | "எவைகளின் | यूथपाः | சேனைத்தலைவர்களோ ஆவர்கள், |
| यूथानि | சமூகங்கள் | यूथपश्रेष्ठं | சேனைத்தலைவர்களின் ஆத்தமனான |
| भागशः | அணிவகுக்கப்பட்ட படியே | एनं | இவனிடம் |
| शतसहस्राणां शतार्थं | ஐம்பதுலட்சம் | पर्युपासते | காத்துகிற்கின்றார் கள். |

यस्तु भीमां प्रवल्गन्तीं चमूं तिष्ठति शोभयन् । स्थितां तीरे समुद्रस्य द्वितीय इव सागरः॥
एष दर्दरसंकाशो विनतो नाम यूथपः । पिवंश्चरति पर्णासां नदीनामुत्तमां नदीम् ॥४६॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-----------|----------------------|
| दर्दरसंकाशः | "தர்தரமையை நிகர்த்தவனும் | चमूं | சேனையை |
| द्वितीयः | இரண்டாவது | शोभयन् | விளங்கச்செய்துகொ |
| सागरः | சமுத்திரம் | तिष्ठति | இருக்கின்றோடு, [ண்டு |
| इव | போன்றவனுமான | नदीनां | நதிகளுள் |
| यः | எவன் | उत्तमां | சிறந்த |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது | पर्णासां | பர்ணாஸம் என்ற |
| तीरे | கரையில் | नदीं | நதிதீர்ந்தந்தை |
| स्थितां | தங்கியிருக்கிறது | पिवन् | சுடித்துக்கொண்டு |
| भीमां | பயங்கரமானதும் | चरति | வசித்துவருகின்றோடு, |
| प्रवल्गन्तीं | குதித்துக்கொண்ட ருக்கிறதுமான | एषः तु | இவன் தான் |
| | | विनतः नाम | வினதன் என்ற |
| | | यूथपः | சேனைத்தலைவன். |

षष्टिः शतसहस्राणि बलमस्य पुवङ्गमाः ॥ ४७ ॥

| | | | |
|------------|-----------|------------|-------------|
| षष्टिः | "இவனுக்கு | षष्टिः | அறுபது |
| शतसहस्राणि | சேனை, | शतसहस्राणि | லட்சம் |
| पुवङ्गमाः | | पुवङ्गमाः | வானரர்களின் |

त्वामाह्वयति युद्धाय क्रोधनो नाम यूथपः । विक्रान्ता बलवन्तश्च यथायूथानि भागशः ॥

| | | | |
|---------------------|---|-----------|---------------------|
| யாயூயானி भागशः च | “கட்டங்கட்டமாய் ஆணிவகுக்கப்பட்டி. குக்கின்றன. | கோபன: நாம | கீரோ, தனனென்ற |
| बलवन्तः | மகா ஆற்றலுடைய வர்கள். | யூதப: | சேனை த்தலைவர் |
| विक्रान्ता: | மகா ஆண்மைபுடைய பவர்கள். | ஸ்வா | தேவாரீகா |
| | | युद्धाय | போருக்கு |
| | | आह्वयति | அவற்றை வலுவிடுவான். |

यस्तु गैरिकवर्णाभं वपुः पुष्पति वानरः । अवमत्य सदा सर्वान्वानरान्वलदर्पितान् ॥४९॥
गवयो नाम तेजस्वी त्वां क्रोधादभिवर्तते । एनं शतसहस्राणि सप्ततिः पशुपासते ॥५०॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|------------|---|
| यः | “எந்த | पुष्पति तु | வளரக்கெய்துகொண்ட புருக்கிருணை, (ஆவந்தான்) கவயன் |
| तेजस्वी | ஆற்றலுடைய | गवयः नाम | என்ற பெயர்ப்புனைத் தவன். |
| वानरः | வானர்கள் | एनं | இவனை |
| बलदर्पितान् | பலத்தால் செருக் | सप्ततिः | எழுபது |
| वानरान् | வானர்கள் [குற்ற | शतसहस्राणि | லக்ஷத்தவர்கள் |
| सर्वान् | எல்லோரையும் | पशुपासते | சேவிக்கின்றார்கள். |
| सदा | எப்பொழுதும் | त्वां | தேவாரீகா |
| अवमत्य | ஏளனஞ்செய்து கொண்டு | क्रोधात् | கிணத்தால் |
| गैरिकवर्णाभं | காவிக்கல்போன்ற காந்தியுடைய | अभिवर्तते | அணுகியிருக்கிறான். |
| वपुः | உடலை | | |

एष त्वाशङ्कते लङ्कां खेनानीकेन मर्दितुम् ॥ ५१ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------|------------------------------|
| एषः | “இவன் | मर्दितुं | உருவழிக்க |
| खेन | தனது | आशङ्कते | உத்தேசம்கொண்ட குக்கிறான். |
| अनीकेन तु | சேனை மையக்கொண்டே | | |
| लङ्कां | இலங்கையை | | |

शतं शतसहस्राणि शतकोटिशतानि च । हरीणां यूथपाः सन्ति बलिनां च महौजसाम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|---------------|------------------------------------|
| बलिनां च | “மிக சக்தியுடைய வர்களுக்கும் | शतं | தாற்றுக்கணக்காக வும், |
| महौजसां | மிக ஆற்றலுடையவர் சொருமனை | शतसहस्राणि | லக்ஷக்கணக்காகவும், |
| हरीणां | வானர்களின் | शतकोटिशतानि च | பத்தினூயிரக்கொடிக்க கணக்காகவும் |
| यूथपाः | சேனை த்தலைவர்கள், | सन्ति | இருக்கின்றார்கள். |

एते दुष्पसहा घोरा बलिनः कामरूपिणः । यूथपा यूथपश्रेष्ठा एषां यूथानि भागशः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|-----------|--------------------------------------|
| एते | "இந்த | बलिनः | பகா ஆற்றலுடைய வர்கள் ; |
| यूथपाः | சேனை த்தலைவர்கள் | कामरूपिणः | கிளை த்த உருவமெ டுக்க வல்லவர்கள். |
| यूथपश्रेष्ठाः | சேனை த்தலைவர்களில் உத்தமர்கள் ; | एषां | இவர்களுடைய |
| दुष्पसहाः | போரில் ஆணுகமுடி யாதவர்கள் ; | यूथानि | சேனைகள் |
| घोराः | கொடிய வல்லமை யுடையவர்கள் ; | भागशः | ஆஸியஸாரிக நிற்கின்றன." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15652

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 977



सप्तविंशः सर्गः—இருபத்தியேழாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௩ ॥

वानरपराक्रमादिकथनम्—வானரர்களது பராக்கிரமம் முதலியவற்றைச் சொல்வது.

तांस्तु तेऽहं प्रवक्ष्यामि प्रेक्षमाणस्य यूथपान् । राघवार्थे पराक्रान्ता ये न रक्षन्ति जीवितम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|---------------|--------------------------|
| राघवार्थे | "ராமனைக்கர்ப்பத்தில் | तान् | அந்த |
| पराक्रान्ताः | தீடக்கொண்டவர்க ளாய் | यूथपान् तु | சேனை த்தலைவர்களை யும் |
| ये | எவர்கள் | प्रेक्षमाणस्य | பார்த்துக்கொண்ட |
| जीवितं | உயிரை | ते | தேவர்களுக்கு [குக்கும் |
| रक्षन्ति न | பொருட்படுத்தாதி ருக்கின்றார்களோ, | अहं | நான் |
| | | प्रवक्ष्यामि | சொல்லுவேன். |

स्निग्धा यस्य बहुव्यामा बाला लङ्कालमाश्रिताः ।

ताम्राः पीताः सिताः श्वेताः प्रकीर्णा घोरकर्मणः ॥ २ ॥

प्रपृहीताः प्रकाशन्ते सूर्यस्यैव परीचयः । पृथिव्यां चानुकृष्यन्ते तारो नामैष यूथपः ॥

यं पृष्ठतोऽनुगच्छन्ति शतशोऽथ सहस्रशः । दृमानुद्यम्य सहसा लङ्कारोहणतत्पराः ॥

यूथपा हरिराजस्य किङ्कराः समुपस्थिताः ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------|------------|-----------------------------|
| घोरकर्मणः | "கொடுந்தொழிலை | ताम्राः | சிவத்தும் |
| यस्य | ஏவனுடைய [யுடைய | पीताः | பஞ்சால் கிறமுற்றும் |
| लङ्कालमाश्रिताः | வாஸிநிருக்கின்ற | श्वेताः | வெளுத்தும் |
| बालाः | மயிர்கள் | सिताः | சுருண்டும் |
| स्निग्धाः | மழுமழவென்றும், | प्रकीर्णाः | அடர்ந்துமிருக்கின்ற வனோ, |
| बहुव्यामाः | பலமார்பளவுள்ள வைகளாகவும், | | |

| | | | |
|----------------|---------------------|-----------|-------------------|
| சூர்யஸ்ய | சூரியபகவானது | ஐமானு | விருக்யங்களை |
| பரஹீதா: | பரப்பாட்ட | உரம்ய | எடுத்துக்கொண்டு |
| மரீசய: ஐவ | கிரணங்கள்போலவே | சஹாரோஹ-} | இலக்கையின்மீது |
| பகாஸந்நே | விளக்குகின்றனவே, | சுபரா: } | எறுவதொன்றிலே |
| பூவிய்வா | பூமியில் | | பேமனங்களை நாட |
| அநுகூப்யந்நே ச | இழுபடுகின்றனவே, | சமுபஸிதா: | முயலர்களைய |
| ய | எவ்வை | | சித்தமாயிருந்து |
| ஹரிராஜஸ்ய | வானரமன்னனது | | கொண்டு |
| கிஹூரா: | கிண்காரர்களென்ற | பூஹ: | பின் |
| யூபரா: | சேவனைத்தலைவர்கள் | அநுராஹநி | பற்றி வருகின்றார் |
| பாதபா: | நூற்றுக்கணக்காகவும் | ப்ய: அய | இவன் தான் [களை, |
| சஹஸ்ய: | ஆயிரக்கணக்காகவும் | தார: நாம | தாரன் என்ற |
| சஹஸா | எகத்தாயின் தி | யூப: | சேவனைத்தலைவன். |

नीलानिव महामेषांस्तिष्ठतो यांस्तु पश्यसि । अमिताञ्जनसङ्काशान्युदे सत्यपराक्रमान् ॥
 असंख्येयाननिर्देश्यान्परं पारमिवोद्भे: । नखदंष्ट्रायुधान वीरांस्तीक्ष्णकोपान् भयावहान् ॥
 पर्वतेषु च ये केचिद्विषमेषु नदीषु च । एते त्वामभिवर्तन्ते राजभृक्षा: सुदारुणा: ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------|-----------------|-------------------|
| ராஜந் | “அரசே! | வீரானு | விள்களும் |
| மஹமேஷாந் ஐவ | நீருண்ட மேகங்கள் | தீக்ஷகோபாந் | கடுக்கொபங்கொண்ட |
| | போல | | வர்களும், |
| நீலாந் | கறுத்தநிறமுடைய | மயாவஹாந் ச | பயத்தைத் தருகின்ற |
| | வர்களும், | | வர்களுமான |
| அமிதாஞ்ஜந-} | கறுத்த மையை | யாந் து | எவர்களை யே |
| சஹாஸாந் } | விசுத்தவர்களும், | பஷ்யஸி | தேவரீர்பார்க்கின் |
| யுடே | போலில் | | தீசே, |
| சத்யபராஹ்மாந் | சலியாப்பராக்ரமம் | பர்வதேபு | பர்வதங்களிலும், |
| | கொண்டு | விபமேபு | பள்ளத்தாக்குகள் |
| திஹ: | நிற்கின்றவர்களும், | | லும், |
| உட்பே: | சமுத்திரத்தின் | நதீபு | நதிகளிலும், |
| பரே பாரே ஐவ | அக்கரைபைப் | யே கேபித ச | எவர்கள் சிறுநுண் |
| | போலவே | | டே, |
| அநிர்देश்யாந் | காணமுடியாதவர்க | एते | இந்த |
| | ளும், | सुदारुणा: | யிக்கொடிய |
| அசंख्येयாந் | கணக்கிடமுடியாத | भृक्षा: | கரடிகள் |
| | வர்களும், | यां अभिवर्तन्ते | தேவரீரை எதிர்த்து |
| नखदंष्ट्रायुधान् | { ககங்களைமும் பற்களை | | வருகின்றார்கள். |
| | மும் ஆயுதமாயுடைய | | |
| | வர்களும், | | |

एषां मध्ये स्थितो राजन्भीमाक्षो भीमदर्शनः । पर्जन्य इव जीमूतैः समन्तात्परिवारितः ॥
ऋक्षवन्तं गिरिश्रेष्ठमध्यास्ते नर्मदां पिबन् । सर्वक्षाणामधिपतिर्धूम्रो नामैष यूथपः ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|----------------------------|---|
| राजन् | “அரசே ! | एषः | இவன் |
| पर्जन्यः | மழைக்கடவுள் | यूथपः | சேனைத் தலைவனாகிய |
| जीमूतैः | மேகங்களால் | धूम्रः नाम | தூம்ரிசனென்ற பெயர் புனைந்தவன். |
| समन्तात् | நாற்புறமும் | सर्वक्षाणां } अधिपतिः } | கரடிகளெல்லோருக்கும் அதிபதி. |
| परिवारितः इव | சூழப்பட்டிருப்பது போல், | | |
| एषां मध्ये | இவர்களுடையநடுவில் | नर्मदां पिबन् | { கர்மதாநதியின் தீர்த்தத்தை சூடித்துக் கொண்டு |
| भीमाक्षः | பயங்கரமான கண்களுடையவனுய் | | |
| भीमदर्शनः | பயங்கரமான தோற்றமுடையவனுய் | ऋक्षवन्तं | ரிசுஷ்வான் என்ற |
| स्थितः | நின்றனுகொண்டிருக்கின்ற | गिरिश्रेष्ठं | கிந்த மலையில் |
| | | अध्यास्ते | வசுத்துவருகிறான். |

यवीयानस्य तु भ्राता पश्यैनं पर्वतोपमम् । भ्रात्रा समानो रूपेण विशिष्टस्तु पराक्रमैः ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|--------------|------------------------------|
| अस्य | “இவனுக்கு | पराक्रमैः तु | பரக்கிரமங்களி |
| यवीयान् भ्राता | இளைய சம்பி | विशिष्टः | இலோ அவனினும் மேம்பட்டவன். |
| रूपेण तु | உருவத்தினுள்மட்டும் | पर्वतोपमं | பர்வதத்தை நிகர்த்த |
| भ्रात्रा समानः | சுதேறாதரனுக் கொப்பாவைவன். | एनं | இவனை (தேவரிர்) |
| | | पश्य | பார்ப்பீராக. |

स एष जाम्बवान्नाम महायूथपयूथपः । प्रशान्तो गुरुवर्ती च संप्रहारेष्वभर्षणः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|-------------|-------------------------------|
| सः एषः च | “இந்த இவனை | गुरुवर्ती | ஆசானிடம் அமைந் தொழுகுபவன். |
| जाम्बवान् नाम | ஐப்பவான் என்ற | संप्रहारेषु | போர்களில் |
| महायूथपयूथपः | சேனைத் தலைவர்களில் தலைமைத் தலைவன். | अभर्षणः | வெல்லக்கரியன். |
| प्रशान्तः | மாசந்த மனத்தினன். | | |

एतेन साष्टं सुमहत्कृतं शक्रस्य धीमता । दैवासुरे जाम्बवता लब्धाश्च बहवो वराः ॥१२॥

| | | | |
|----------|------------------|---------------|----------------|
| धीमता | “ புத்திபாலாகிய | सुमहत् साष्टं | பெருதனி |
| एतेन | இந்த | कृतं | புரியப்பட்டது. |
| जाम्बवता | ஐப்பவானால் | च | அக்காரணத்தால் |
| दैवासुरे | தேவாசுரத்தத்தில் | बहवः वराः | பல வரங்களும் |
| शक्रस्य | இந்திரனுக்கு | लब्धाः | அடையப்பட்டன. |

आरुह्य पर्वताग्नेभ्यो महाभ्रविपुलाः शिलाः । मुञ्चन्ति विपुलाकारा न मृत्योरुद्विजन्ति च ॥
 राक्षसानां च सदृशाः पिशाचानां च लोमशाः । एतस्य सैन्या बहवो विचरन्त्यग्नितेजसः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|----------------|---------------------------------|
| एतस्य | “ இவ்வளவு | सदृशाः | ஒப்பானவர்களாய் |
| विपुलाकाराः | பெருமுடலுண்ட வயர்களாகும் | मृत्योः | எமலுக்கும் |
| अग्नितेजसः | அக்னிஜ்வலையுடையவர் | उद्विजन्ति न | அஞ்சாதிருக்கின்றார் |
| बहवः | பல [சமூகமான | आरुह्य | எறி [கள். |
| सैन्याः | சேனைகள் | पर्वताग्नेभ्यः | மலைகளின் உச்சிகளிலி ன்றின்று |
| विचरन्ति | திரிந்துகொண்டிருக்கின்றார்கள். | महाभ्रविपुलाः | மகா மேகங்கள்போல் |
| लोमशाः | மயிரடர்ந்த இவர்கள் | शिलाः | மலைகளே [பெருந்த |
| राक्षसानां च | அரக்கர்களுக்கும் | मुञ्चन्ति च | வீசிபும் எறிகின்றார் கள். |
| पिशाचानां च | பிசாசர்களுக்கும் | | |

यं त्वेनमभिसंरब्धं पुवमानपिव स्थितम् । मेक्षन्ते वानराः सर्वे स्थिता युथपयुथपम् ॥१५॥
 एष राजन्सहस्राक्षं पर्युवास्ते हरीश्वरः । बलेन वल्संपन्नो दम्भो नामैष युथपः ॥ १६ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|-------------|----------------------|
| राजन् | “ மன்னா! | सर्वे | எல்லோரும் |
| यं | எந்த | मेक्षन्ते | பார்க்குக்கொண்ட |
| अभिसंरब्धं | பிகழ் கிணங்கொண்டு | एषः | இந்த [ருக்கிரர்களே, |
| पुवमान इव | துள்ளிக்குதிக்கின்ற வனாகவே | युथपः तु | சேனைத் தலைவர் தான் |
| स्थितं | இருக்கின்றவனும் | दम्भः नाम | தம்பனெனப் பெயர் |
| युथपयुथपं | சேனைத்தலைவர்களுக் குத் தலைவனுமான | एषः | இந்த [கொண்டவன். |
| एनं | இவனை | बलसम्पन्नः | பரிபூர்ணபலசாலியா |
| स्थिताः | அக்கிருக்கும் | हरीश्वरः | வானரோத்தமன் [ன |
| वानराः | வானரர்கள் | बलेन | தனது பலத்தால் |
| | | सहस्राक्षं | இக்கிரகை |
| | | पर्युवास्ते | ஆசாயித்திருக்கிறான். |

यः स्थितं योजने शैलं गच्छन्पार्श्वेन सेवते । ऊर्ध्वं तथैव कायेन गतः प्राप्नोति योजनम् ॥
 यस्मान्न परमं रूपं चतुष्पादेषु विद्यते । श्रुतः सन्नादनो नाम वानराणां पितामहः ॥१८॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|-------------|-----------------|
| यः | “ எவன் | प्राप्नोति | அடைகிறான். |
| योजने स्थितं | ஒரு யோஜனை தூரத் | यस्मात् | எகளைவிட |
| शैलं | மலைக்கு [திரிநுக்கும் | परमं रूपं | பெரியதான வடிவம் |
| गच्छन् | ஒரு அடி வைத்தவ | चतुष्पादेषु | கிலக்குகளில் |
| पार्श्वेन | பக்களில் [னாய் | विद्यते न | கிடையாதோ, அவன் |
| सेवते | இருக்கிறானே, | वानराणां | வானரர்களுக்கு |
| तथा एव | அப்படியே | पितामहः | பாட்டனாய் |
| कायेन | உடலைக்கொண்டு | श्रुतः | பிரசித்தபெற்ற |
| ऊर्ध्वं गतः | உயரே நின்று நவனாய் | सन्नादनो | சன்னாதனை |
| योजनं | ஒரு யோஜனை அளவு | नाम | பெயர்கொண்டவன். |

येन युद्धं पुरा दत्तं रणे शक्रस्य धीमता । पराजयश्च न प्राप्तः सोऽयं यूथपयूथपः ॥१९॥

| | | | |
|--------------|----------------------|--------------|--------------------------------|
| पुरा | முன் காலத்தில் | पराजयः च | தோல்வியும் |
| धीमता | “புத்திமனாகிய | प्राप्तः न | அடையப்படவில்லை |
| येन | எவனால் | | போ, |
| शक्रस्य | இந்திரனது | सः यूथपयूथपः | அப்படிப்பட்ட சேனைத்தலைத்தலைவன் |
| रणे | போரில் | अयम् | இவன். |
| युद्धं दत्तं | போர் செய்யப்பட்ட கோ, | | |

यस्य विक्रममाणस्य शक्रस्येव पराक्रमः । एष गन्धर्वकन्यायामुत्पन्नः कृष्णवर्त्मनः ॥२०॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|-----------------|--|
| तदा | “அப்பொழுது | शक्रस्य इव | இந்திரனுக்கு சமமான மார்பிருந்ததே தா அந்த |
| दैवासुरे | தேவர்களுக்கும் அசுரர்களுக்கும் நடந்த | एषः | இவன் |
| युद्धे | போரில் | त्रिदिवौकसां | தேவர்களுக்கு |
| विक्रममाणस्य | பாக்கிரமத்தை காட்டுகின்ற | साक्षार्थं | உதவி புரிவதற்காக |
| यस्य | எவனது | कृष्णवर्त्मनः | கிருஷ்ணவர் தம் |
| पराक्रमः | பாக்கிரமமானது | गन्धर्वकन्यायां | இன்பவனுக்கு |
| | | उत्पन्नः | கந்தர்வஸ்திரீயினிடம் உண்டானவன். |

यस्य वैश्रवणो राजा जम्बूद्वीपनिषेवते । यो राजा पर्वतेन्द्राणां बहुकिन्नरसेविनाम् ॥२२॥

विहारसुखदो नित्यं भ्रातुस्ते राक्षसाधिप । तत्रैष वसति श्रीमान्बलवान्वानरर्षभः ॥२३॥

युद्धेष्वकथनो नित्यं कथनो नाम यूथपः । वृतः कोटिसहस्रेण हरीणां समुपस्थितः ॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|--------------------------------------|
| राक्षसाधिप | “ராஷ்டிரமன்னா! | एषः | இந்த |
| यस्य | என்னிடத்திலிருக்கும் | कथनः नाम | கதனைனென்ற பெயர் புனைந்தவன் |
| जम्बू | காவல்விருகூத்ததை | वसति | வசிக்கிறான். |
| वैश्रवणः राजा | குப்பிரமன்னர் | श्रीमान् | பிரகப்பிரகித்திபெற்ற |
| उपनिषेवते | சேவிக்கிறாரோ, | बलवान् | மிக்க பலசாலி. [வன்: |
| यः | எது | वानरर्षभः | வானரர்களிலுத்தமன். |
| बहुकिन्नरसेविनां | பல கின்னரர்களால் | यूथपः | சேனைத்தலைவன். |
| | வசிக்கப்பெற்ற | नित्यं | எக்காலத்திலும் |
| पर्वतेन्द्राणां | சிறந்த பர்வதக்க | युद्धेषु | போர்களில் |
| राजा | அரசனே, [எனக்கு | अकथनः | தற்புகழ்ச்சி செய்யவாதவன். |
| ते | (எது) தேவிரது | हरीणां | வானரர்களுடைய |
| भ्रातुः | தமயனுக்கு | कोटिसहस्रेण | ஆயிரம் கோடி வால் |
| नित्यं | எக்காலத்திலும் | वृतः | சூழப்பட்டவனாய் |
| विहारसुखदः | { உல்லாசமாய் காலக்கழிக்கிற கைத்தைத் தருகிறதே, இன்னிடத்தில் | समुपस्थितः | (போருக்குத்தவாராய்) வந்திருக்கிறான். |
| तस्य | | | |

யோ गङ्गामनु पर्वति त्रासयन्हस्तियूथपान । हस्तिनां वानराणां च पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥२५॥

एष यूथपतिर्नेता गच्छन्गिरिमुहाशयः । गजान्योधयते वन्यान्गिरीश्वेव महीरुहान् ॥२६॥

हरीणां वाहिनीमुख्यो नदीं हैमवतीमनु । उशीरर्कोजमाश्रित्य पर्वतं मन्दरोपमम् ॥

रमते वानरश्रेष्ठो दिवि शक्र इव स्वयम् ॥ २७ ॥

एनं शतसहस्राणां सहस्रमनुवर्तते । वीर्यविक्रमहसानां नदीतां वलशालिनाम् ॥ २८ ॥

स एष नेता चैतेषां वानराणां महात्मनाम् ॥ २९ ॥

स एष दुर्धरो राजन्प्रमाथी नाम यूथपः । वातेनेवोद्धतं मेघं यमेनमनुपश्यसि ॥ ३० ॥

अनीकमापि संरब्धं वानराणां तर्गस्त्रिनाम् । उद्धृतमरुणाभासं पवनेन समन्ततः ॥

विवर्तमानं बहुधा यत्रैतद्बहुलं रजः ॥ ३१ ॥

| | |
|---------------|-----------------------------|
| राजन् | "அரசே |
| ய: | எவன் |
| हस्तिनां | யானைகளுக்கும் |
| वानराणां च | வானரர்களுக்கும் |
| पूर्ववैरं | முன்னுள்ள தீவை வத்களை |
| अनुस्मरन् | பாராட்டி |
| गङ्गां अनु | கங்காப்பிரதேசத்தில் |
| हस्तियूथपान् | யானைக்கூட்டங்களை |
| त्रासयन् | நடுக்கமுறச்செய்து கொண்டு |
| पर्वति | திரிந்துகொண்டிருக்கின்றனோ, |
| वातेन | காற்றால் |
| उद्धृतं | கிளம்பப்பட்ட |
| मेघं हव | மேகம்போன்ற |
| यं | எந்த |
| एनं | இவனையும் |
| तरस्त्रिनां | மகர ஆற்றலுடைய |
| वानराणां | வானரர்களுடைய |
| उद्धृतं | கிளம்பப்பட்ட |
| एतत् | இந்த |
| बहुलं | அதிகமான |
| अरुणाभासं रजः | செம்பழுதியை |
| *बहुधा | பலவாறும் |
| समन्ततः | எங்கும் |
| पवनेन | காற்றோடு |
| विवर्तमानं | வாழிந்து வந்ததும் |

| | |
|------------------------|--|
| संरब्धं | தருதுருவென்றிருக்கின்றதுமான |
| अनीकं अपि | சேனைவாயும் |
| यस्य | எவ்விடத்தில் |
| अनुपश्यसि | தேவரீர் பர்க்கின் தீசேர, |
| सः | அந்த |
| एषः | இவன் |
| प्रमाथी नाम | பிரயாதி என்ற |
| यूथपः | வாயுத்தலைவன். |
| एनं | இவனை |
| वलशालिनां | பலசாலிகளும் |
| नदीतां | கூட்டநதாளும் பண்ணும் |
| वीर्यविक्रम- हसानां | ஆற்றல், ஆண்மை இவைகளால் செருக்கூற்றவர்களுடைய |
| शतसहस्राणां | எகாத்தின் |
| सहस्रं | சூட்டங்கள் |
| अनुवर्तते | கொண்டு தந்துகின்ற கின்றார்கள். |
| सः | அந்த |
| एषः च | இவன் தான் |
| एतेषां | இந்த |
| महात्मनां | அளவுகடந்த ஆற்றலுடைய |
| वानराणां | வானரர்களுக்கும் |
| नेता | எழுமானன். |

| | | | |
|---------------------------------------|---|-----------------------------------|--|
| दुर्धरः | எவராலும் அணுக முடியாதவன். | महीरुहान् | விடுகடிக்களை யும் |
| यूथपतिः | சேனைகளுக்கும் தலைவன். | योधवते | எதிர்த்துத் தாக்குகின்றான். |
| नेता | அடக்கி ஆளுகிறவன். | हैमवती नदी अनु | கங்கா நதியைச் சார்ந்ததும் |
| गिरिगुहाशयः | மலைகளின் குகைகளில் வசிப்பவன். | मन्दरोपमं | மந்தரமலையை நிகர்த்ததுமாவ |
| हरीणां वाहिनीमुख्यः | வானரர்களுடைய சேனையில்ச் சிறந்தவன். | उशीरशीतं पर्वतं | உசிரசீஜமென்றும் மலையை |
| वानरश्रेष्ठः | வானரர்களினுத்தமன். | आश्रित्य दिवि स्वयं शक्रः इव रमते | அடைந்து தேவலோகத்தில் ஸாக்ஷாத் இத்திரன் எவ்வண்ணமோ ஆவ்வண்ணமே காலக்கழிக்கிறான். |
| एषः गच्छन् वन्यान् राजान् च गिरीन् एव | இவன் நடந்துகொண்டே காட்டு யானைகளையும் மலைகளையும் | | |

एतेऽसितमुखा घोरा गोलाङ्गला महाबलाः । शतं शतसहस्राणि दृष्ट्वा वै सेतुबन्धनम् ॥
गोलाङ्गलं महावेगं गवाक्षं नाम यूथपम् । परिवार्याभिवर्तन्ते लङ्कां मर्दितुमोजसा ॥ ३३ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------------|-----------------------|-----------------------------------|
| एते असितमुखाः | இந்த கருப்பு வர்ணமான முகமுடையவர்களும் | महावेगं | மகாசக்தியுடையவனும் |
| घोराः | பயங்கரமானவர் களும் | यूथपं गोलाङ्गलं | சேனைத்தலைவனுமான கோலாங்கலவானரனாகிய |
| महाबलाः | மகாபலம் பொருந்த | गवाक्षं नाम परिवार्यं | கவாசக்திமென்பவனை சூழ்ந்துகொண்டு |
| शतं शतसहस्राणि | நூறு [தியவர்களும்] லக்ஷம் | ओजसा लङ्कां मर्दितुं | ஆற்றலால் இலங்கையை உருவழிக்க |
| गोलाङ्गलाः | கோலாங்கலமென்ற வானரர்கள் | अभिवर्तन्ते वै | எதிர்த்து வருகின்றார்கள். |
| सेतुबन्धनं दृष्ट्वा | சேதுபந்தனைந்தை பார்த்து | | |

भ्रमराचरिता यत्र सर्वकामफलद्रुमाः । यं सूर्यस्तुल्यवर्णाभिमनु पर्वति पर्वतम् ॥ ३४ ॥
यस्य भासा सदा भान्ति तद्वर्णा मृगपक्षिणः । यस्य मस्थं महात्मानो न त्यजन्ति महर्षयः ॥
सर्वकामफला वृक्षाः सदा फलसमन्विताः । मधूनि च महार्हाणि यस्मिन्पर्वतसत्तमे ॥ ३६ ॥
तत्रैव रमते राजन्नम्ये काञ्चनपर्वते । मुख्यो वानरमुख्यानां केसरी नाम यूथपः ॥ ३७ ॥

राजन्
यस्य
श्रमराचरिताः
सर्वकाम-
फलदुःखाः
ये
नुह्यवर्णाभि
पर्वतं
सूर्यः
अनु पर्वेति
यस्य
भासा
सृगपक्षिणः
तद्वर्णाः
सदा
भान्ति
यस्य
प्रस्थं
“अरासिने !
எ நிலை
வண்டினம் மொழிக்
கும்
விருப்பிய பழங்கள்
யா காற்றையுமளிக்
கும் தருக்கனிசூக்
எந்த [கின்றனவோ,
தனக்கு திகராண
ஒளியற்ற
பர்வதத்திற்கு
சூரியன்
அருகில் செல்லுகின்
எதனுடைய [குறை,
காத்திடால்
மீருகங்களும் பகலி
களும்
அதன் நிறக்கொண்ட
வைகளால்
எப்பொழுதும்
பிரகாசிக்கின்றனவோ,
எதனது
காழ்வரையை

षष्टिर्गिरिसहस्राणां रम्याः काश्चनपर्वताः ।
अनघ
गिरिसहस्राणां
षष्टिः
रम्याः
काश्चनपर्वताः
रक्षसां
तत्रैते कपिलाः
एव उत्तमगिरौ
एते
कपिलाः
श्वेताः
ताम्रास्याः
“முறையற்றவரே !
அறபதினாயாம் மலைத்
தொடருற்ற
அழகிய
காஞ்சனபர்வதங்கள்
இருக்கின்றன.
அரக்கர்களுக்கும்
“அந்த மலையரசில்
இந்த
கபிலநிறமுடையவர்
களும்
வெள்ளைநிறமுடைய
வர்களும்
சிவந்த வரையுடைய
வர்களும்

तत्रैते कपिलाः श्वेतास्ताम्रास्या मधुपिङ्गलाः ।
एव उत्तमगिरौ
एते
कपिलाः
श्वेताः
ताम्रास्याः
निवसन्त्युत्तमगिरौ तीक्ष्णदंष्ट्रा नखायुधाः ॥
मधुपिङ्गलाः
तीक्ष्णदंष्ट्राः
नखायुधाः
निवसन्ति
“அந்த மலையரசில்
இந்த
கபிலநிறமுடையவர்
களும்
வெள்ளைநிறமுடைய
வர்களும்
சிவந்த வரையுடைய
வர்களும்

महामानः
महर्षयः
त्यजन्ति न
यस्मिन्
पर्वतसप्तमे
सर्वकामफलाः
सदा फल-
समन्विताः
वृक्षाः
महाहाणि
मधुनि च
तत्र
रम्ये
काश्चनपर्वते
वानरमुख्यानां
सुख्यः
यूथपः
केसरी नाम
एव
रमतं
மஹா க்மரக்களான
மஹாமுனிவர்கள்
விட்டகலாதிருக்கின்
எந்த [றனவோ,
உயர்மலையில்
கோரிய பரவும் கொடு
க்கவல்லதும்
எக்காலத்தும் பழங்க
ளை யுடையவைகளு
மரங்களும் [மரன
மிகச்சிறந்த
தேனடைகளுமிருக்
அந்த [கின்றனவோ,
மனதைக்கவரும்
காஞ்சனமலையில்
வானரத்தலைவர்
தலைவனான
சேனாபதியை
கேஸரி என்ற
இவன்
இன்பமாய் வசித்து
வருகிறான்.

तेषां मध्ये गिरिवरस्त्वामिवानय रक्षसाम् ॥
एव
इव
तेषां
मध्ये
गिरिवरः
“தேவரீர்
எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
அனகலின்
ரகினில்
மலைதொன்றிருக்
கிறது.

निवसन्त्युत्तमगिरौ तीक्ष्णदंष्ट्रा नखायुधाः ॥
मधुपिङ्गलाः
तीक्ष्णदंष्ट्राः
नखायुधाः
निवसन्ति
தென்போன்ற பிங்க
லநிறமுடையவர்க
ளும்
கரிய கோரைப்பற்க
ளுடையவர்களும்
நகக்களை ஆயுதமாக
வுடையவர்களும்
வசிக்கின்றார்கள்.

सिंहा इव चतुर्दशा व्याघ्रा इव दुरासदाः । सर्वे वैश्वानरसमा ज्वलिताशीविषोपमाः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|-------------------------|
| सर्वे | “எல்லோரும் | दुरासदाः | அணுகமுடியாதவர் |
| सिंहाः | சிங்கங்கள் | | கள். |
| इव | போன்ற | वैश्वानरसमाः | அக்னிக்ஞ்ச்சமானர் |
| चतुर्दशाः | நான்கு கோரைப்பற்க | | கள். |
| | ளுடையவர்கள். | ज्वलिता- | } சீறிவரும் சர்ப்பங்கள் |
| व्याघ्राः इव | வேக்கைகள்போலவே | शीविषोपमाः | |

सुदीर्घाञ्चितलाङ्गुला मत्तमातङ्गसन्निभाः । महापर्वतसङ्काशा महाजीमूतनिस्वनाः ॥४१॥

| | | | |
|----------------|---------------------|----------------|-----------------------|
| सुदीर्घाञ्चित- | } “மிக நீண்ட அழகிய | महापर्वत- | } பெரும் பர்வதங்களைப் |
| लाङ्गुलाः | | வால்களை யுடைய | |
| मत्तमातङ्ग- | } மதம்பிடித்த யானைக | महाजीमूत- | } பெரும் மேகங்களின் |
| सन्निभाः | | ளுக்கொப்பானவர் | |
| | கள். | निस्वनाः | } வர்கள். |

वृत्पिङ्गलरक्ताक्षा भीमभीमगतिस्वराः । मर्दयन्तीव ते सर्वे तस्युर्लङ्कां समीक्ष्य ते ॥४२॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|-------------------|------------------|
| वृत्पिङ्गल- | } “உருண்டு, சிக்களவர் | सर्वे | எல்லோரும் |
| रक्ताक्षाः | | ணமாகவும், சிவப்பா | ते |
| | கவுமிருக்கும் கண்க | लङ्कां | இலக்கைகளை |
| | ளை யுடையவர்கள். | समीक्ष्य | பார்த்து |
| भीमभीम- | } அதிபலக்கரமான செ | मर्दयन्ति इव | இப்பொழுதே அழிக |
| गतिस्वराः | | யலும் குரலுமுடை | |
| ते | அவர்கள் [பவர்கள். | तस्युः | சிற்கின்றார்கள். |

एष चैषामधिपतिर्मध्ये तिष्ठति वीर्यवान् । ॥ ४३ ॥
 जयार्थी नित्यमादित्यमुपतिष्ठति बुद्धिमान् ॥ ४४ ॥
 नाम्ना पृथिव्यां विख्यातो राजञ्छतवलीति यः । एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|-------------------|
| राजन् | “அரசே! | बुद्धिमान् | துண்ணறிவானவன். |
| एषां | இவர்களின் | नित्यं | எக்காலத்திலும் |
| मध्ये | நடுவில் | जयार्थी | ஜயத்தைக்கொரியவ |
| अधिपतिः | நாயகனாய் | आदित्यं | சூர்யபகவானை [னாய் |
| यः | எவன் | उपतिष्ठति | உபா சிக்கிறான். |
| तिष्ठति | நிற்கிறானே, | एषः | இவன் |
| एषः च | இவன் தான் | स्वेन | தனது |
| शतवलीः इति | சதவலி என்ற | अनीकेन एव | சேனை யைக்கொண்டே |
| नाम्ना | பெயரால் | लङ्कां | இலக்கையை |
| पृथिव्यां | உலகில் | मर्दितुं | உருவழிக்க |
| विख्यातः | பிரசித்திபெற்றவன். | आशंसते | உத்தேசங்கொண்டி |
| वीर्यवान् | வீரீயசாலி. | | ருக்கிறான். |

विक्रान्तो बलवान्छूरः पौरुषे स्वे व्यवस्थितः । रामप्रियार्थं प्राणानां दयां न कुरुते हरिः॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|---------------|--------------------------------|
| विक्रान्तः | * மிக ஆண்டவையுடைய புலனும் | हरिः | வானரனுமாயிய இவன் |
| बलवान् | மிக ஆற்றலுடைய | रामप्रियार्थं | ராமனுக்கு கன்மை செய்யவேண்டி |
| शूरः | சூரனும் [வனும் | प्राणानां | உயிரினும் |
| स्वे | தனது | दयां | ஆசை |
| पौरुषे | பராக்கிரமத்தில் | न कुरुते | கொள்ளவில்லை. |
| व्यवस्थितः | முற்றிலும் கம்பிக்கை புடையவனும் | | |

गजो गवाक्षो गवयो नलो नीलश्च वानरः । एकैक एव यूथानां कोटिभिर्दशभिर्वृतः ॥

| | | | |
|---------|------------|---------|----------------------------|
| गजः | * கஜனும், | एकैक एव | ஒவ்வொருவனும் தனித்தனியே |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனும் | यूथानां | சேனைகளின் |
| गवयः | கவயனும் | दशभिः | பத்து |
| नलः | நலனும் | कोटिभिः | கோடிகளால் |
| वानरः | வானரனாகிய | वृतः | சூழப்பட்டிருக்கிறான். |
| नीलः च | நீலனும் | | |

तथाऽप्ये वानरश्रेष्ठा विन्ध्यपर्वतवासिनः । न शक्यन्ते बहुत्वात्तु संख्यातुं लघुविक्रमाः ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------------------------|--------------|--|
| तथा | * அப்படியே | लघुविक्रमाः | { ஓரிடத்திலிருந்து ஒரு பவண்ணடிகளும் பவர்கள். |
| अप्ये | மற்ற | बहुत्वात् तु | அதிகமாகிருப்ப கணக்கிட [தாளும் |
| वानरश्रेष्ठाः | வானரோத்தமர்கள் | संख्यातुं | முடியாதவர்கள். |
| विन्ध्यपर्वतवासिनः | விந்தியபரீதியில் வசிப்ப பவர்கள். | शक्यन्ते न | |

सर्वे महाराज महाप्रभावाः सर्वे महाशैलनिकाशकायाः ।

सर्वे समर्थाः पृथिवीं क्षणेन कर्तुं प्रविध्वस्तविकीर्णशैलाम् ॥ ४९ ॥

| | | | |
|-----------------------|---|------------------------------|--|
| महाराज | * மகாராஜோ | क्षणेन | ஒரு சொழிப்பொழுது |
| सर्वे | எல்லோரும் | पृथिवीं | உலகை [தில் |
| महाप्रभावाः | மிக மகிமையுள்ளவர் | प्रविध्वस्त- विकीर्णशैलां | பொடியாக்கி இரைக்க செய்யப்பட்ட மலைகளையு டைபதாய் |
| सर्वे | எல்லோருமே [கள். | कर्तुं | செய்வ |
| महाशैल- निकाशकायाः | பெரும் மலையை நிகர்த்த த உடலுற்றவர்கள். | समर्थाः | வல்லவர்கள். |
| सर्वे | எல்லோரும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे सप्तविंशः सर्गः ॥



अष्टविंशः सर्गः—இருபத்தெட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ २८ ॥

वानरसङ्घाकथनम्—வானரர்களது கணக்கைச் சொல்வது.

सारणस्य वचः श्रुत्वा रावणं राक्षसाधिपम् । बलमादिश्य तत्सर्वं शुको वाक्यमथाब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|----------|---------------------|
| शुकः | சுகன் | तत् | அந்த |
| सारणस्य | சாரணனுடைய | वक्तं | சேனை |
| वचः | விண்ணப்பத்தை | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| श्रुत्वा | செவிகொடுத்துக் கேட்டுவிட்டு, | आदिश्य | விரலால் ஆட்டிக்கொட் |
| राक्षसाधिपं | ராட்சாசமன்னனாகிய | वाक्यं | ஒரு மொழியை [டி] |
| रावणं | ராவணனுக்கு | अथ | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | மொழிந்தான் : |

स्थितान्पश्यसि यानेतान्मत्तानिव महाद्विपान् । न्यग्रोधानिव गाङ्गेयान्सालान्हेमवतानिव ॥

एते दुष्पसहा राजन्वलिनः कामरूपिणः । दैत्यदानवसङ्काशा युद्धे देवपराक्रमाः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------------------|---|
| राजन् | “அரசே! | दुष्पसहाः | எவராலும் வெல்ல முடியாதவர்கள் ; |
| यान् | எந்த | वलिनः | மறைய பலராலிகள் ; |
| मत्तान् | கொழுந்த | कामरूपिणः | { இவ்வடமான உருவம் கொள்ளும் வல்லமை உள்ளவர்கள் ; |
| महाद्विपान् | பெரும் பாலைகளை | दैत्यदानव- सङ्काशाः } | { (திதியின் புதல்வர்க ளான) கைத்தியர்க ளுக்கும் (தகழரின் புதல்வியான தனுவு க்கும்காச்யபருக்கும் பிறந்த) தானவர்களு க்கும் சமமானவர் |
| इव | போலிருப்பவர்களும், கங்கைக் கரையில் முளைத்துள்ள | युद्धे | போரில் [கள் ; |
| गाङ्गेयान् | அந்திமரக்களை | देवपराक्रमाः | { தேவர்களுக்கொப்ப என பராக்கிரமம் படை க்கப்பெற்றவர்கள். |
| न्यग्रोधान् | போலிருப்பவர்களும் இமையமலையில் முளைத்துள்ள | | |
| इव | ஆச்சரமரக்களைப் போலிருப்பவர்களும் | | |
| हेमवतान् | கண்முன் நிற்கின்ற வர்களுமான | | |
| सालान् इव | இவர்களை பார்க்கின்றதீரே, இவர்கள் | | |
| स्थितान् | | | |
| पृतान् | | | |
| पश्यसि | | | |
| एते | | | |

एषां कोटिसहस्राणि नव पञ्च च सप्त च । तथा शङ्खसहस्राणि तथा वृन्दशतानि च ॥

| | | | |
|------------------|-------------------|--------------|--|
| एषां | “இவர்களுடைய | शङ्खसहस्राणि | ஆரீசர் சக்கக்கணக் |
| नव पञ्च च सप्त च | இருபத்தேராயிரம் | तथा | அம்மாதிரியே [சூகளும் |
| कोटिसहस्राणि | கொடிக்கணக்குகளும் | वृन्दशतानि च | { தூறு நிருத்தக்கணக் சூகளும் இருக்கின்ற ர்கள். |
| तथा | அப்படியே | | |

[இக்கணக்குகளின் அளவை வால்பீகிபகவானே இந்த ஸர்க்கத்தின் முடிவில் மிகக்க அருளிச் செய்திருக்கிறார்.]

एते सुग्रीवसचिवाः किष्किन्धानिलयाः सदा । हरयो देवगन्धर्वैस्त्यक्त्वाः कामरूपिणः ॥

एते இந்த
हरयो வானர்கள்
सदा எப்பொழுதும்
किष्किन्धानिलयाः கிஷ்கிந்தாவாசிகள்.
सुग्रीवसचिवाः சுமீர்வனுண்டய
மந்திரிகள்.

कामरूपिणः கிளைத்த உருவம்
எடுக்க வல்லவர்கள்.
देवगन्धर्वैः தேவர்களாலும் கந்தர்
வர்களாலும்
स-पत्न्याः சிருஷ்டிக்கப்பட்ட
உவர்கள்.

यौ तौ पश्यसि तिष्ठन्तौ कुमारौ देवरूपिणौ । मैन्द्रश्च द्विविदथोभौ ताभ्यां नास्ति समो युधि ॥

यौ “எந்த
देवरूपिणौ தேவ அழகுற்றவர்க
ளாய்
कुमारौ இளமைப்பருவத்திலி
ருக்கின்றவர்களுமாவ
उभौ * இரூவர்களை
तिष्ठन्तौ எதிரில் நிற்கின்றவர்க
ளாய்

पश्यसि பார்க்கின் திரோ,
तौ च ஆவ்விருவர்கள் தான்
मैन्द्रः மைந்தனைப் பவனும்
द्विविदः च துவிதனைப் பவனும்.
युधि யோரின்
ताभ्यां ஆவ்விருவர்களுக்கு
समः சமமானாகிய
अस्ति न ஒருவன் கிடையாது.

ब्रह्मणा समनुज्ञातावमृतप्राशिनावुभौ । आशंसेते युधा लङ्कामेतौ मर्दितुषोजसा ॥ ७ ॥

एतौ उभौ “இவ்விருவர்களும்
ब्रह्मणा பிரம்மதேவரால்
समनुज्ञातौ அனுமதிக்கப்பட்டவர்
களாய்
अमृतप्राशिनाौ அமிருதம் உண்டவர்
கள்.

युधा யுதா
ओजसा ஆத்தொல்
लङ्कां தூலக்கையை
मर्दितुं உருவழிக்க
आशंसेते உத்தேசிப்போனார்.
ருக்கின்றனர்.

यं तु पश्यसि तिष्ठन्तं प्रभिन्नमिव कुञ्जरम् । यो बलाक्षोभयेत्कुक्षुः समुद्रमपि वानरः ॥

एषोऽभिगन्त्वा लङ्काया वैदेयास्तव च प्रभो । एनं पश्य पुरा दृष्टं वानरं पुनरागतम् ॥

यं “எவனை
प्रभितं மதம் பிடித்த
कुञ्जरं பாணையை
इव போலவே
तिष्ठन्तं எதிரிலிருக்கின்ற
வனாய்

प्रभो பிரபுவே!
लङ्कायाः இலக்கையையும்
वैदेयाः வீதேயையும்
तव च தேவர்களையும்
अभिगन्त्वा கோரில் கண்டதிக்
தவன்.

पश्यसि பார்க்கின் திரோ,
कुक्षुः சினங்கொண்ட
यः वानरः எந்த வானரன்
बलात् சக்தியால்
समुद्रं अपि சமுத்திரத்தையும்
क्षोभयेत् கலக்கிவிடுவானோ,
एषः तु இவன் தான்

पुरा முன்னம்
दृष्टं பார்க்கப்பட்ட
एनं இந்த
वानरं வானரை
पुनः திரும்பி
आगतं வந்திருக்கிறவனாய்
पश्य கவனிப்பீராக.

ज्येष्ठः केसरिणः पुत्रो वातात्मज इति श्रुतः । हनुमानिति विख्यातो लङ्घितो येन सागरः॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|----------|------------------------------------|
| केसरिणः | “கேஸரியின் | इति | என்று |
| ज्येष्ठः पुत्रः | முத்த புதல்வன். | विख्यातः | பெயர்கொண்டு ப்ரஸி த்திபெற்றவன். |
| वातात्मजः | ‘வாயுபுதல்வன்’ | येन | (எவனோ) இவனால் |
| इति | என்று | सागरः | சமுத்திரமானது |
| श्रुतः | பிரசித்திபெற்றவன். | लङ्घितः | தாண்டப்பட்டது. |
| हनुमान् | ‘ஹனுமான்’ | | |

कामरूपी हरिश्रेष्ठो बलरूपसमन्वितः । अनिवार्यगतिश्चैव यथा सततगः प्रभुः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|----------------|----------------------------------|
| कामरूपी | “நினைக்கும் உருவம் கொள்ள வல்லவன். | प्रभुः | பிரபுவாகிய |
| हरिश्रेष्ठः | காணரர்களின் தலைவன். | सततगः | வாயுபுகவான் |
| बलरूपसमन्वितः | ஆற்றலுமழகுமமைய ப்பெற்றவன். | यथा एव | போலவே |
| | | अनिवार्यगतिः च | எங்கும் தடைபடாத போக்குள்ளவன். |

उद्यन्तं भास्करं दृष्ट्वा बालः किल पिपासितः । त्रियोजनसहस्रं तु अध्वानमवतीर्य हि ॥
आदित्यमाहरिष्यामि न मे क्षुत्प्रतियास्यति । इति संचिन्त्य मनसा पुरैष बलदर्पितः ॥
अनाधृष्यतमं देवमपि देवर्षिदानवैः । अनासाद्यैव पतितो भास्करोदयने गिरौ ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|--------------------------|--|
| पुरा | “முன்னொருகால் | इति | என்று |
| बालः | கைக்குழந்தையாயி ருந்த | मनसा सचिन्त्य | நினைத்து |
| एषः | இவன் | सियोजनसहस्रं | மூவாயிரம் யோஜனை தூரம் |
| पिपासितः | பாப்பருக ஆசையுற்ற வனாய் | अध्वानं | வழியை |
| बलदर्पितः | பலத்தால் செருக்குற தவனாய் | अवतीर्य तु | கடந்தும் |
| उद्यन्तं | உதயமாகும் | देवर्षिदानवैः } अपि } | தேவர்கள், ரிஷிகள், தானவர்கள் இவர்க ளா ளுக்கட |
| भास्करं | சூர்யபகவானை | अनाद्यतमं | கிட்டமுடியாத |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | देवैः | கடவுளை |
| आदित्यं | ‘சூரியனை | अनासाद्य एव | அடையாமலே |
| आहरिष्यामि | பறித்தவரப்போகி றேன். | भास्करोदयने | சூர்யபகவான் உதய மாகும் |
| हि | அப்படியாகில் | गिरौ | மலையில் |
| मे | எனக்கு | पतितः | விழுந்து விட்டான் என்று |
| क्षुत् | பசி | किल | எனக்குச் சொல்லக் கொள்வி. |
| प्रतियास्यति न | இராது. | | |

पतितस्य कपेरस्य हनुरेका शिलातले । किञ्चिद्भिन्ना दृढहनुर्हनुमानेन तेन वै ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------|---------------------------|
| दृढहनुः | "உறுதியான கன்னம் | किञ्चित् | கொஞ்சம் |
| अस्य | இந்த [கரியுடைய | भिन्ना | முறிந்தது. |
| कपेः | வானரன் | तेन वै | அதனுடையதான் |
| शिलातले | மலைப்பிரதேசத்தில் | एषः | இவன் |
| पतितस्य | விழுந்தவொழுது | हनुमान् | ஹனுமான்னைப் படுகிறான். |
| एका हनुः | ஒரு கன்னம் | | |

सत्यमागमयोगेन ममैष विदितो हरिः । नास्य शक्यं वलं रूपं प्रभावो वापि भाषितुम् ॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|---------|---------------------------------------|
| एषः | "இந்த | अस्य | இவனது |
| हरिः | வானரன் | अलं | பலந்தானாகட்டும், |
| आगमयोगेन | முன்வந்த காரணத் தால் | रूपं | பிறவிசூணர்தா னாகட்டும் |
| मम | எனக்கு | प्रभावः | பிரபாவம் தானாகட்டும் |
| सत्यं | உள்ளபடி | अपि वा | இதிலேதவும் |
| विदितः | எல்லாந்தெரிந்தவனு யிருக்கிறான். | भाषितुं | உள்ளபடி வர்ணிக்க நசக்யம் முடியாது. |

एष आशंसते लङ्कामेको मर्दितुमोजसा । येन जाज्वल्यतेऽसौ वै धूमकेतुस्तवाय वै ॥

लङ्कायां निहितश्चापि कथं विस्मरसे कपिम्

॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|----------------------------------|
| एषः | "இவன் | निहितः च | இடப்பட்டதாகிய |
| एकः | தான் ஒருவனாகவே | असौ | இந்த |
| ओजसा | ஆற்றலால் | धूमकेतुः वै | அக்னிபும் |
| लङ्कां | இலங்கையை | अथ अपि | இன்னும் |
| मर्दितुं | உருவழிக்க | जाज्वल्यते | எரிந்துகொண்டிருக் கிறதே, அந்த |
| आशंसते | உத்தேசங்கொண்டி | कपिं | குரங்கை |
| येन | எவனால் [ருக்கிறான். | कथं | எப்படி |
| तव | தேவரீரது | विस्मरसे | மறப்பீர் ? |
| लङ्कायां वै | இலங்கைக்காரிலேயே | | |

यश्चैषोऽनन्तरः शूरः श्यामः पद्मनिभेक्षणः । इक्ष्वाकूणामतिरथो लोके विख्यातपौरुषः ॥

यस्मिन्न चलते धर्मो यो धर्मं नातिवर्तते । यो ब्राह्मणस्त्वं वेदाश्च वेद वेदविदां वरः ॥२०॥

यो भिन्याद्गगनं वाणैः पर्वतानपि दारयेत् । यस्य मृत्योरिव क्रोधः शक्रस्येव पराक्रमः ॥

यस्य भार्या जनस्थानात् सीता चापहृता त्वया । स एष रामस्त्वां योद्धुं राजन् समभिवर्तते ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|--------------------------------------|
| शूरः | குரனும் | इक्ष्वाकूणां | இக்ஷ்வாகுவம்சத் தவர்களுள் |
| श्यामः | சீவாமனநிறமுடைய யவனும் | अतिरथः | அதிரதனும் |
| पद्मनिभेक्षणः | { தாமரையிதழுக்கொப் பரண கண்களணைந் தவனும் | लोके | உலகில் |
| | | विख्यातपौरुषः | பெயர்பெற்ற பராக்கி ரமமுள்ளவனுமான் |

यः
 अनन्तरः
 यस्मिन्
 धर्मः
 चलते न

எவன்
 பக்கலி லிருக்கிறான்,
 வகலிடத்தில்
 தர்மமானது
 தடுமாறுகிறாக்கிற
 கோ,

यः
 धर्म
 धनिवर्ति न
 यः
 बाह्यं अहं

எவன்
 தர்மத்தை
 மீறுகிறாக்கிறான்,
 எவன்
 ப்ரம்மான் திரத்தை
 யும்

वेदान् च
 वेद्
 वेद्विदां
 वरः
 यः
 बाणैः
 रागान्
 मिथ्यान्
 पर्वतान् अपि
 हारयेत्

மக்திரக்களையும்
 கற்றுணர்ந்தவனோ,
 வேதமறிந்தவர்களுள்
 உந்தமனோ,
 எவன்
 பாணக்களால்
 ஆகாசத்தை
 கிழித்து விடுகிறானோ,
 பர்வதக்களையும்
 மீறாதவன் இகிறானோ,

यस्यैष दक्षिणे पाशे सुहजाम्बूनदम्भः ।
 पश्य
 दक्षिणे
 पाशे
 एषः
 सुहजाम्बूनदम्भः

“(எந்த) இவனது
 வலது
 பக்கலி லிருக்கும்
 இவன்
 பத்தரை மாற்றுத்தல்
 கருணிகொண்டவன்.

एषोऽस्य लक्ष्मणो नाम भ्राता शपासदः शिशुः । नये युद्धे च कुशलः सर्वशास्त्रविहारदः ॥
 लक्ष्मणः नाम
 एषः
 अस्य
 भ्राता
 शपासदः

“லக்ஷ்மணன் எனப்
 பெயர் பூண்டவன்.
 இவன்
 இவனுக்கு
 (ராமனுக்கு)
 தம்பி.
 உயிருக்கு திகரான
 வன்.

यस्य
 शोधः
 मूलोः इव
 परास्यः
 शक्य
 इव
 यस्य
 भार्या
 सीता
 जन्मस्थानात्

எவனது
 கோபமானது
 மூலமுடையதற்கு
 திகரானதோ,
 பராக்கிரமமானது
 இந்திரனுடையதற்கு
 திகரானதோ,
 எவனுடைய
 தருமபத்தியாகிய
 வரிகை
 ஜனஸ்தானத்தி
 லிருந்து

इक्ष
 अपहृता
 नः
 एषः च
 रामः
 राजन्
 एषः
 त्वा
 शौचं
 समभिवर्तते

தேவரீரால்
 கவர்ந்துவாப்பட்டா
 அந்த [கோ,
 இவன் தான்
 ராமன்,
 ஆரசே!
 இவன்
 தேவரீருடன்
 போர்புரிய
 வந்திருக்கிறான்.

विशालवक्षास्ताम्राक्षो नीलकुञ्चितमूर्धनः ॥
 विशालवक्षाः
 ताम्राक्षः
 नीलकुञ्चितमूर्धनः

அகன்ற பார்புடைய
 வன்.
 கிவந்த கண்களுற்ற
 வன்.
 கறுத்த கருண்ட தலை
 மயிருடையவன்.

शिरः
 नद
 युद्धे च
 कुशलः
 सर्वशास्त्र-
 विशारदः

எக்காலத்தும் மனக்
 கோணுது நடப்பவன்.
 நீதிசாஸ்திரத்திலும்
 போலிலும்
 திபுணன்.
 சாஸ்திரக்கொல்லா
 வற்றையும் கன்ரு
 அறிந்தவன்.

அமர்பா டுர்ஜயோ ஜேதா விஶ்ணுந் துடிபாந் வரீ | ராமஸ்ய டதிரிபா வாரூர்மிஸ்தி மார்பா வறிஷ்ர: ||

| | | | |
|----------|--|--------------|--------------|
| அமர்பா | "அமரபா திரிசை அய விஶ்ணுந் துடிபாந் வரீ. | வாரூர்மிஸ்தி | வாரூர்மிஸ்தி |
| துர்ஜய: | துர்ஜய: துர்ஜய: வரீ. | மார்பா | மார்பா |
| ஜேதா | ஜேதா | வறிஷ்ர: | வறிஷ்ர: |
| விஶ்ணுந் | விஶ்ணுந் | வாரூர்மிஸ்தி | வாரூர்மிஸ்தி |

ந ஶ்யே ராஶ்வஸ்யார்பே ஜீவீதீந் பரிரக்ஷதீ

| | |
|---------------|---------------|
| ஏப: | "இவன் |
| ராஶ்வஸ்யார்பே | ராஶ்வஸ்யார்பே |

|| 26 ||

| | |
|-----------|-----------|
| ஜீவீதீந் | ஜீவீதீந் |
| பரிரக்ஷதீ | பரிரக்ஷதீ |

ஏபேவாஸீஸதே யுடே நிஶ்ணுந் சர்வரக்ஷஸாந்

| | |
|--------|-------|
| ஏப: ஏவ | "இவனே |
| யுடே | யுடே |

|| 27 ||

| | |
|--------------|--------------|
| சர்வரக்ஷஸாந் | சர்வரக்ஷஸாந் |
| நிஶ்ணுந் | நிஶ்ணுந் |
| மாஸீஸதே | மாஸீஸதே |

யஸ்து சந்யமஸீ பக்ஷம் ராமஸ்யாஶ்ரீத்ய திஶ்டதீ |

| | |
|---------------|---------------|
| ய: | "எவன் |
| ராமஸ்ய | ராமஸ்ய |
| ஶ்ரீத்ய | ஶ்ரீத்ய |
| சந்யம் பக்ஷம் | சந்யம் பக்ஷம் |
| திஶ்டதீ | திஶ்டதீ |
| அஸீ | அஸீ |

ரக்ஷோமணபரிரக்ஷிஸ்தோ ராஜா ஶ்யேப விஶீபண: ||

| | |
|---------------------|---------------------|
| ரக்ஷோமணபரிரக்ஷிஸ்த: | ரக்ஷோமணபரிரக்ஷிஸ்த: |
| ஏப: | இந்த |
| விஶீபண: | விஶீபண: |
| ராஜா | ராஜா |
| ஶ்யேப | ஶ்யேப |
| விஶீபண: | விஶீபண: |

ஶ்ரீமதா ராஜராஜேந லக்ஷ்மாயாமஶிபேஶித: |

| | |
|-----------|-----------|
| ஶ்ரீமதா | "ஸ்ரீமாதா |
| ராஜராஜேந | ராஜராஜேந |
| லக்ஷ்மாயா | லக்ஷ்மாயா |
| ஶிபேஶித: | ஶிபேஶித: |

லாமேய பரீதீஸர்வஶ்யோ யுஶ்டாபேபாஸிஶ்வரீதே || 28 ||

| | |
|---------------|---------------|
| ஏப: ஏவ | இவனும் |
| பரீதீஸர்வஶ்யோ | பரீதீஸர்வஶ்யோ |
| யுஶ்டா | யுஶ்டா |
| ஶிபேஶிதே | ஶிபேஶிதே |

யே து பஶ்யஸி திஶ்டந்ந் மஶ்யே மிரிர்மிவாஶ்ரீதம் | சர்வஸாஸ்யாமுமேந்ராணா் மஶீரமபரஶஜிதம் ||
 தஜஸா யஸஸா யுஶ்டயா ஜானேநாஶிஜனேந ஶ | ய: கபீநதீவஶ்ராஜ ஶிமஶானிவ பவதாந் ||
 கிர்ஷிஶ்யா ய: சமஶ்யாஸ்தே குஶா் ஶமஶந்ரமாம | டுரா பவதடுர்ஜஸ்யா் மஶானே: சஶ ரூபே: ||
 யஸ்யேபா காஶ்ரீநீ மாலா சாஶதே ஶநபுஷ்கரா | கான்தா தேவமஸுஷ்யாணா் யஸ்யா் லக்ஷ்மீ: பரீதீஶிதா ||
 ஏதா் ஶ மாலா் தாரா் ஶ கபிமஜயே ஶ ஶாஶ்வதம் | ஶுஶீயா வாலிநே ஶநா ராமேண பரீதீஶித: ||

| | |
|--------------------------------|--------------------------------|
| सधे | "கடிகில் |
| अचलं | அசையாத |
| गिरिं | மலையை |
| इव | போலவே |
| तिष्ठन्तं | இருக்கிறவனும், |
| सर्वशाखा- } सूगेन्द्राणां } | எல்லா வானரோத்த மர்களுக்கும் |
| अपराजितं | ஒருவராலும் வெல்ல முடியாத |
| भतारं | எஜமாதலமாகிய |
| यं | எவளை |
| पश्यसि तु | பார்க்கின் தீரேர, |
| यः | எவன் |
| पर्वतान् | பர்வதங்களை |
| हिमवान् इव | இமையமலை எப்படி யோ அப்படியே |
| तेजसा | ஆற்றலாலும் |
| यशसा | புகழாலும் |
| बुद्ध्या | தண்ணறிவாலும், |
| ज्ञानेन | சாஸ்திரக்ஞானத்தி னாலும் |
| अभिज्ञानेन च | உன்னதபிதம்பாலும் |
| कपीन् | வானரர்களை |
| अतिब्रह्मज्ञान | அதிகயித்து விளங்கு கிறானே, |
| यः | எவன் |
| प्रधानैः | சிறந்த |
| यूथैः सह | சேனைத்தலைவர்களோ டுகூட |
| सगहनदुर्मा | அடர்ந்த மரங்களை யுடையதும் |
| पर्वतदुर्गस्थां | மலையரணுடனிருக்கி றதும் |

| | |
|---------------|---|
| दुर्गा | பிறரால் கிட்டுவதற் கரியதுமான |
| किष्किन्धां | கிஷ்கிந்தை என்ற |
| गुहां | சூகையில் |
| समध्यास्ते | வசித்துக்கொண்ட ருக்கிறானே, |
| यस्यां | எதில் |
| लक्ष्मीः | லக்ஷ்மி |
| प्रतिष्ठिता | சூடிக்கொண்டு விளங் குகிறானோ |
| देवमनुष्याणां | தேவர்களுக்கும் மனிதர்களுக்கும் |
| कान्ता | ஆசைகொள்ளத் தக்கதோ, |
| पृथा | இந்த |
| शतपुष्करा | நூறு தாமரைமலர் |
| काञ्चनी | பொன் [களையுடைய |
| माला | மலை |
| यस्य | எவனுக்கு |
| शोभते | { அவனுக்கென்றே ஓர் அழகுடன் விளங்கு கிறதோ அந்த |
| सुभीचः | சுகீவன் |
| रामेण | ராமனால் |
| वालिनेन | வாலியை |
| हवा | கொன்று |
| एतां | இந்த |
| मालां च | மலையையும் |
| तारां च | தாரையையும் |
| कपिराज्यं च | வானரராஜ்யத்தையும் |
| शाश्वतं | சாசுவதமாய் |
| प्रतिपादितः | அளிக்கப்பட்டான். |

शतं शतसहस्राणां कोटिमाहूर्पनापिणः । शतं कोटिसहस्राणां शङ्ख इत्यभिधीयते ॥ ३५ ॥

| | |
|-------------|------------------|
| मनीषिणः | "அறிஞர்கள் |
| शतसहस्राणां | நூறுபீரக்களின் |
| शतं | நூற்ற |
| कोटिं | கோடியை |
| आहुः | சொல்லுகிறார்கள். |

| | |
|---------------|------------------|
| कोटिसहस्राणां | ஆயிரம் கோடிகளின் |
| शतं | நூறு |
| शङ्खः | "சங்கம்" |
| इति | என்று |
| अभिधीयते | சொல்லப்படுகிறது. |

शतं शङ्खसहस्राणां महाशङ्ख इति स्मृतः । महाशङ्खसहस्राणां शतं बृन्दमिति स्मृतम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|------------------|------------------|
| शङ्खसहस्राणां | "ஆயிரம் சங்கங்களின் | महाशङ्खसहस्राणां | ஆயிரம் மகாசங்கக் |
| शतं | நூறு | शतं | நூறு [களின் |
| महाशङ्खः | "மஹாசங்கம்" | बृन्दं | "பிரந்தம்" |
| इति | என்று | इति | என்று |
| स्मृतः | சொல்லப்பட்டது. | स्मृतम् | சொல்லப்பட்டது. |

शतं बृन्दसहस्राणां महाबृन्दमिति स्मृतम् । महाबृन्दसहस्राणां शतं पद्ममिति स्मृतम् ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-------------------|--------------------|
| बृन्दसहस्राणां | "ஆயிரம் பிரந்தக் | महाबृन्दसहस्राणां | ஆயிரம் மஹாபிரந்தக் |
| | களின் | | தங்களின் |
| शतं | நூறு | शतं | நூறு |
| महाबृन्दं | "மஹாபிரந்தம்" | पद्मं | "பத்மம்" |
| इति | என்று | इति | என்று |
| स्मृतं | சொல்லப்பட்டது. | स्मृतम् | சொல்லப்பட்டது. |

शतं पद्मसहस्राणां महापद्ममिति स्मृतम् । महापद्मसहस्राणां शतं खर्वमिदोच्यते ॥ ३८ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|------------------|------------------|
| पद्मसहस्राणां | "ஆயிரம் பத்மங்களின் | महापद्मसहस्राणां | ஆயிரம் மகாபத்மக் |
| शतं | நூறு | शतं | நூறு [களின் |
| महापद्मं | "மஹாபத்மம்" | खर्वं | "கர்வம்" என்று |
| इति | என்று | इह | இவ்விலகில் |
| स्मृतं | சொல்லப்பட்டது. | उच्यते | சொல்லப்படுகிறது. |

शतं खर्वसहस्राणां महाखर्वमिति स्मृतम् । महाखर्वसहस्राणां समुद्रमभिधीयते ॥ ३९ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|------------------|------------------|
| खर्वसहस्राणां | "ஆயிரம் கர்வங்களின் | महाखर्वसहस्राणां | ஆயிரம் மகாகர்வக் |
| शतं | நூறு | | களின் நூறு |
| महाखर्वं | "மஹாகர்வம்" | समुद्रं | "சமுத்திரமென" |
| इति | என்று | अभिधीयते | சொல்லப்படுகிறது. |
| स्मृतं | சொல்லப்பட்டது. | | |

शतं समुद्रसाहस्राण्य इत्यभिधीयते । शतबोधसहस्राणां महीष इति विभ्रुतः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|------------------|
| शतं | "நூறு | ओषसहस्राणां | ஆயிரம் ஓசங்களின் |
| समुद्रसाहस्रं | ஆயிரம் சமுத்திரம் | शतं | நூறு |
| ओषः | "ஓசம்" | महीषः | "மகாஓசம்" |
| इति | என்று | इति | என்று |
| अभिधीयते | சொல்லப்படுகிறது. | विभ्रुतः | சொல்லப்படுகிறது. |

एवं कोटिसहस्रेण शङ्खानां च शतेन च । महाशङ्खसहस्रेण तथा वृन्दशतेन च ॥ ४१ ॥

महावृन्दसहस्रेण तथा पञ्चशतेन च । महापद्मसहस्रेण तथा खर्वशतेन च ॥ ४२ ॥

समुद्रेण शतेनैव महौघेन तथैव च । एवं कोटिमहौघेन समुद्रसदृशेन च ॥ ४३ ॥

विभीषणेन सचिवै राक्षसैः परिवारितः । सुग्रीवो वानरेन्द्रस्त्वा युद्धार्थमभिवर्तते ॥

महाबलवृतो नित्यं महाबलपराक्रमः

॥ ४४ ॥

वानरेन्द्रः " वा ன ரே ன் டிர னும்
மகத்தான ஆற்றலும்
ஆண்மையும் படைக்
கப்பெற்றவனுமான
சுகீவன்
சுப்பொழுதும்
பெருஞ்சேனையால்
சூழப்பட்டவனாயும்
இப்படியே
ஆயிரக்கோடிக்கணக்க
சகக்களரின் [காகவும்
நூற்றுக்கணக்காகவும்
ஆயிரம் மகாசகக்க
கணக்காகவும்
அப்படியே
நூறு பிருத்தக்கணக்
காகவும்
ஆயிரம் மகாபிருத்தக்
கணக்காகவும்
அப்படியே
நூறு பத்மக்கணக்
காகவும்

மஹாபத்மசஹ்ரேண ஆயிரம் மகாபத்மக்
கணக்காகவும்
தथा அப்படியே
खर्वशतेन च நூறு கர்வக்கணக்
காகவும்
शतेन समुद्रेण एव நூறு சமுத்திரக்கண
तथा அப்படியே [ககாகவும்
महौघेन एव மகா ஓகக்கணக்கா
एवं இப்படியே [கவும்
कोटिमहौघेन च கோடி மகா ஓகக்கணக்
காகவும்
समुद्रसदृशेन च சமுத்திரத்தை ஒத்த
கணக்காகவும்
विभीषणेन விபிஷணனோடும்
सचिवैः மந்திரிகளான
राक्षसैः அரசர்களால்
परिवारितः சூழப்பட்டவனுயிருந்
துகொண்டு
त्वा தேவரீருடன்
युद्धार्थं போர்புரிய
अभिवर्तते வந்திருக்கிறான்.

इमां महाराज समीक्ष्य बाहिनीमुपस्थितां प्रज्वलितग्रहोपमाम् ।

ततः प्रयत्नः परमो विधीयतां यथा जयः स्यान्न परैः पराजयः ॥ ४५ ॥

महाराज "महाराजुडே!
प्रज्वलितग्रहोपमां கொடிய கிரகக்களாக்
கொப்பாக
उपस्थितां इमां வந்திருக்கும் இத்த
बाहिनीं வசன்னியத்தை
समीक्ष्य பார்த்து
ततः அதன்மேல்
यथा எப்படியானால்

जयः स्यात् ஜெயம் உண்டாகுமோ
परैः சந்நருக்களால்
पराजयः தோல்வி
न உண்டாகாதோ,
परमः அப்படிப்பட்டதாகிய,
प्रयत्नः முயற்சி [எந்ந
विधीयताम् மேற்கொள்ளத்
தக்கது."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे अष्टाविंशः सर्गः ॥

एकोनविंशः सर्गः — இரூபத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ 29 ॥

शार्दूलादिचारप्रेषणम् — சார்டூலன் முதலிய காண்களையணுப்புவது.

शुकेन तु समाख्यातांस्तान्दृष्ट्वा हरियूथपान । सर्पापस्थं च रामस्य भ्रातरं स्वं विभीषणम् ॥
 लक्ष्मणं च महावीर्यं भुजं रामस्य दक्षिणम् । सर्वानरराजं च सुग्रीवं भीमविक्रमम् ॥ २ ॥
 गजं गवाक्षं गवयं मैन्दं द्विविदमेव च । अङ्गदं चैव बलिनं वज्रहस्तात्मजात्मजम् ॥ ३ ॥
 हनूमन्तं च विक्रान्तं जाम्बवन्तं च दुर्जयम् । सुषेणं कुमुदं नीलं नलं च पूवगर्षभम् ॥ ४ ॥
 किञ्चिदाविग्रहद्वयो जातक्रोधश्च रावणः । भर्त्सयामास तौ वीरौ कथान्ते शुकसारणौ ॥

| | |
|---|------------------------------------|
| रावणः | ராவணன் |
| शुकेन | சுகனால் |
| समाख्यातान् | சூறிப்பிட்டுச் சொல்வ |
| तान् | அந்த [ப்பட்ட |
| हरियूथपान् | வானரகேளைத் தலை வர்களை யும் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு |
| समीपस्थं | பக்களில் கிற்கும் |
| स्वं भ्रातरं | தனது தம்பியாகிய |
| विभीषणं च | விபீஷணனையும் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| दक्षिणं भुजं | வலதுகையாகிய |
| महावीर्यं | மகா வீரவசாலியாகிய |
| छदमणं च | லக்தமணனையும் |
| भीमविक्रमं | மகத்தான ஆண்மை யுடைய |
| सर्वानरराजं | எல்லா வானரர்களுக் கும் அரசனாகிய |
| सुग्रीवं च | சுக்ரீவனையும், |
| गजं | கஜனையும், |
| गवाक्षं | கவாக்ஷனையும், |
| गवयं | கவயனையும், |
| मैन्दं एव | மைந்தனையும், |
| अधोमुखौ तौ प्रणतावब्रवीच्छुकसारणौ । रोषगद्गदया वाचा संरब्धः परुषं वचः ॥ ६ ॥ | |
| अधोमुखौ | தலைகுனிந்து |
| प्रणतौ | வணங்கிநிற்கும் |
| तौ | அந்த |
| शुकसारणौ | சுகஸாரணர்களைப் பார்த்து |
| संरब्धः | படபடத்தவனாய் |

| | |
|---|----------------------------------|
| द्विविदं च | தவிவிதனை யும், |
| वज्रहस्तात्मजात्मजं | வஜ்ஹஸ்தாத்தமனின் புத்திரனும், |
| बलिनं च | பலசாலியுடைய |
| अङ्गदं एव | அங்கதனையும், |
| विक्रान्तं | மகா ஆண்மையற்ற |
| हनूमन्तं च | ஹனுமனையும் |
| दुर्जयं | கெல்லற்கரிய |
| जाम्बवन्तं च | ஜாம்பவந்தனையும், |
| सुषेणं | சுசேணனையும், |
| कुमुदं | குமுதனையும், |
| नीलं तु | நீலனையும், |
| पूवगर्षभं | பூவனரோத்தமனாகிய |
| नलं च द्रुप | நலனையும் ட்ரூபுத்து |
| किञ्चित् | கிஞ்சித் |
| आविग्रहद्वयः | காவிஹ்ரத இரூபத்த இரூபம் |
| जातक्रोधः च | கொபம் கொண்டு |
| कथान्ते | கவர்கள் சொல்லின் |
| तौ | அந்த [முடிவில் |
| वीरौ | வீரர்களாகிய |
| शुकसारणौ | சுகஸாரணர்களை |
| भर्त्सयामास | பீர்த்தனான். |
| रोषगद्गदया वाचा संरब्धः परुषं वचः ॥ ६ ॥ | |
| रोषगद्गदया | கொபத்தால் தழுதழு |
| वाचा | சொற்கொண்டு [த்த |
| परुषं | கொடிய |
| वचः | சொல்லை |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு புகள் ரூண் : |

न तावत्सदृशं नाम सचिवैर्यजीविभिः । विप्रियं वृपतेर्वक्तुं निग्रहप्रग्रहे प्रभोः ॥ ७ ॥

| | | | |
|----------------|--|-------------|-----------------------|
| निग्रहप्रग्रहे | “தண்டிப்பதிலும் அருள்புரிவதிலும் | उपजीविभिः | ஆண்டிப்பிழைக்கும் |
| प्रभोः | எஜமானனாகிய | सचिवैः | மந்திரிமார்களால் |
| वृपतेः | மன்னனுக்கு | वक्तुं | பேசப்படுவது |
| विप्रियं | செலிக்கொடுத்துக் கேட்கப்பிடிக்காததை | तावरं | முற்றும் |
| | | न सदृशं नाम | பொருத்தமாகா தன்றே. |

रिपूणां प्रतिकूलानां युद्धार्थमभिवर्तताम् । उभाभ्यां सदृशं नाम वक्तुमप्रस्तवे स्तवम् ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------|--|-----------|--------------------------|
| युद्धार्थं | “போரைஉந்தேசத்து வந்தவர்களையிருக்கின்ற | सव | புகழை |
| अभिवर्ततां | கண்ணெடுத்துப்பார் க்கவும் அஸுறுயமா யிருக்கின்ற | अप्रस्तवे | காலமில்லாத காலத் தில் |
| प्रतिकूलानां | சத்ருக்களின் | उभाभ्यां | உக்களிசுவர்களாலும் |
| रिपूणां | | वक्तुं | சொல்லப்படுவது |
| | | सदृशं नाम | நியமயமாகுமா ? |

आचार्या गुरवो वृद्धा वृथा वां पर्युपासिताः । सारं यद्राजशाखाणामनुजीव्यं न गृह्यते ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------------|--------------|--|
| वां | “உக்களால் | पर्युपासिताः | செலிக்கப்பெற்றனர். |
| आचार्याः | கல்வி கற்பித்தவர் களும் | यत् | ஏனென்றால் |
| गुरवः | மாதாபிதாக்கள் முதலிய பெரியோர்களும் | राजशाखाणां | ராஜசாஸ்திரங்களின் |
| वृद्धाः | ஆண்பவமுதிர்ச்சி பெற்றவர்களும் | सारं | சாரமாகிய |
| वृथा | பிரயோஜனமின்றி | अनुजीव्यं | { எஜமான் மனக்கொ ணுது நடக்கிறதென் பது |
| | | गृह्यते न | தெரிந்துகொள்ளப் படவில்லை. |

गृहीतो वा न विज्ञातो भारो ज्ञानस्य वोह्यते ॥ १० ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|----------|------------------------------|
| गृहीतः | “செலிக்கொள்ளப் பட்டது | ज्ञानस्य | படிப்பின் |
| विज्ञातः न वा | மனதிற்கொள்ளப்பட வில்லைபோலும். | भारः वा | சுமை மாதிரி |
| | | उह्यते | வகிக்கப்பட்டிருக்கிற தது. |

ईदृशैः सचिवैर्युक्तो मूर्खैर्दिष्ट्या धराम्यहम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------|---------------|----------|-----------------------------------|
| ईदृशैः | “இப்படிப்பட்ட | अहं | நான் |
| मूर्खैः | முடர்களான | दिष्ट्या | ஏதோ தைவவசத் தால்தான் |
| सचिवैः | மந்திரிகளோடு | धरामि | ராஜ்யத்தை வறியித் துவருகிறேன். |
| युक्तः | கூடிய | | |

किंनु मूलोर्भयं नास्ति वक्तुं मां परुषं वचः । यस्य मे शासतो जिह्वा प्रयच्छति शुभाशुभम् ।

| | | | |
|-----------|----------------------------|----------|------------------------|
| यस्य | "எந்த | परुषं | கண்ணகிரை மறியிருக்கும் |
| शासतः | ஆக்காளுமீடும் | वचः | சொல்லும் |
| मे | எனது | शुभाशुभं | சொல்வதற்கு |
| जिह्वा | மூவு | सूयोः | எமனிடமிருந்து |
| शुभाशुभं | நன்மைமையையும் தீமைமையையும் | भयं | பயம் |
| प्रयच्छति | கொடுக்கிறதேதா, அந்த | प्रसि व | இல்லை. |
| मां | என்னைப்பார்த்து | किनु | என்ன? |

अप्येव दहनं स्पृष्ट्वा वने तिष्ठन्ति पादपाः । राजदोषपरामृष्टास्तिष्ठन्ते नापराधिनः ॥१३॥

| | | | |
|----------------|--------------------|------------------|---------------------------|
| वने | "காட்டில் | राजदोषपरामृष्टाः | மன்னர்கள் துரோகம் நினைத்த |
| दहनं | காட்டுத்தீமைய | अपराधिनः एव | குற்றவாளிகள் மட்டும் |
| स्पृष्ट्वा अपि | ஊபரிசுத்தும் | तिष्ठन्ते न | உயிருடனிருக்கமாட்டார்கள். |
| पादपाः | விருகட்கள்கள் | | |
| तिष्ठन्ति | உயிருடனிருக்கலாம். | | |

हन्यामहं त्विमौ पापौ शत्रुपक्षप्रशंसकौ । यदि पूर्वोपकारैस्तु न क्रोधो मृदुतां व्रजेत् ॥१४॥

| | | | |
|---------------|--|-------------------|-------------------------------|
| पूर्वोपकारैः | { "முன் செய்திருக்கும் உபகாரங்களைக் கொண்டு | शत्रुपक्षप्रशंसकौ | சத்ருக்களுடைய கடிமையப்புகழும் |
| क्रोधः | கினமானது | पापौ | பாபிகளாகிய |
| मृदुतां | சாந்தத்தன்மையை | इमौ तु | இவ்விருவர்களையும் |
| व्रजेत् न यदि | அடைந்திராவிடில் | तु | ஊம்பவே |
| | | अहं | நான் |
| | | हन्याम | கொள் துனிடுவேன். |

अपध्वंसत गण्डध्वं सन्निकर्षादितो मम । न हि वां हन्तुमिच्छामि सराम्युपकृतानि वाम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|--------------|-----------------------|
| वां | "உங்களின் | अपध्वंसत | எக்கேடுசெட்டு |
| उपकृतानि | உபகாரங்களை | | ஒழிபுகள். |
| सरामि | நினைக்கின்றேன். | हतः | இவ்விடத்தினின்றும் |
| हि | ஆகலால் | मम | எனது |
| वां | உங்களை | सन्निकर्षात् | எதிரிவிருந்து |
| हन्तुं | கொல்ல | गण्डध्वम् | ஒழித்துபோய்விடுகுகள். |
| न इच्छामि | நான் தீர்மானிக்க வில்லை. | | |

हतावेव कृतघ्नौ तौ मयि स्नेहपराङ्मुखौ

| | | | |
|---------|-----------------|----------------|----------------|
| मयि | "என் விஷயத்தில் | ॥ १६ ॥ | |
| कृतघ्नौ | செய்கன்றி மறந்த | स्नेहपराङ्मुखौ | அன்பு மாறியவர் |
| तौ | அவர்கள் | | களாய் |

॥ १६ ॥

| | |
|--------|------------------|
| हतौ एव | நலனழிந்தவர்களே." |
|--------|------------------|

एवमुक्तौ तु सत्रीदौ तावुभौ शुकसारणौ । रावणं जयशब्देन प्रतिनन्द्याभिनिःसृतौ ॥१७॥

एवं
उक्तौ
तौ
शुकसारणौ
उभौ तु
सत्रीदौ

மேற்கண்டவாறு
சொல்லப்பட்ட
அந்த
சுகன், ஸாரணனென்
இருவர்களும் [ந
வெட்கமடைந்தவர்
களாய்

यजशब्देन
रावणं
प्रतिनन्द्या
अभिनिःसृतौ

{ 'ஜயம் பெற்று விளக்
குளிராக' என்ற
சொற்கொண்டு
ராவணனை
வாழ்த்திவிட்டு
அப்பால் சென்று
விட்டார்கள்.

अब्रवीत्तु दशग्रीवः समीपस्थं महोदरम् । उपस्थापय मे शीघ्रं चारान्नीतिविशारदान् ॥

दशग्रीवः
समीपस्थं
महोदरं
तु
अब्रवीत्

தாவணன்
பக்கத்திலிருந்த
மகோதரனைப் பார்
இப்பொழுது [க்து
பின்வருமாறு ஆக்
கினைசெய்தான்.

नीतिविशारदान्
चारान्
शीघ्रं
उपस्थापय

நீதிசாஸ்திரங்கள்
நன்கறிந்த
வேவுகாரர்களை
காலதாமதஞ்செய்
பாது
கொண்டுவந்து நிறுத்
துவாயாக'

मे

महोदरस्तथोक्तस्तु शीघ्रमाज्ञापयच्चरान्

तथा
उक्तः
महोदरः तु

அவ்வண்ணம்
நியமணம் பெற்ற
மகோதரனும்

॥ १९ ॥
चरान्
शीघ्रं
आज्ञापयत्

வேவுகாரர்களை
தகவுணமே
கட்டளையிட்டான்.

ततश्चाराः संत्वरिताः प्राप्ताः पार्थिवशासनात् । उपस्थिताः प्राञ्जलयो वर्धयित्वा जयाशिषा ॥

चाराः
पार्थिवशासनात्
संत्वरिताः
ततः
प्राप्ताः

வேவுகாரர்கள்
மன்னனது ஆக்கினை
என்கிறபடியால்
காலதாமதம் செய்
பாதவர்களாய்
அப்பொழுது
வந்துசேர்ந்து

प्राञ्जलयः
जयाशिषा
वर्धयित्वा
उपस्थिताः

ஹைகூப்பிக்கொண்டு
{ ('பல்லாண்டு பல்லா
ண்டு' என்ற) ஆசிச்
சொற்கொண்டு
வாழ்த்திவிட்டு
ஆக்ஷேபை எதிர்பார்
க்துக் காத்துநின்றார்
கள்.

तानब्रवीत्ततो वाक्यं रावणो राक्षसाधिपः । चारान्प्रत्यायिताञ्छूरान्भक्तान्विगतसाध्वसान् ॥

राक्षसाधिपः
रावणः
तान्
प्रत्यायितान्
शूरान्
विगतसाध्वसान्

அரக்கர் மன்னனாகிய
ராவணன்
அந்த
நம்பத்தகுந்தவர்க
ளும்
சூரர்களும்
எதிலும் மனஞ்சலியா
தவர்களும்

भक्तान्
चारान्
ततः
वाक्
अब्रवीत्

யஜமானவிச்வரூபன்
ளவர்களுமான்
வேவுகாரர்களைப்
பார்த்து
அப்பொழுது
ஒரு சொல்லை
பின்வருமாறு
மொழிந்தான்

इतो गच्छत रामस्य व्यवसायं परीक्षथ । पन्त्रिष्वभ्यन्तरा येऽस्य प्रीत्या तेन समागताः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------------|
| इतः | "இக்கிருந்து | समागताः | கட்டுறவுகொண்ட |
| गच्छत | செல்லுங்கள். | अस्य | இவனுக்கு [வர்களாய் |
| रामस्य | ராமனுடைய | अभ्यन्तराः | அந்தரங்கமானவர்கள் |
| व्यवसायं | மடவாய்க்கைகளையும் | ये | எவர்களோட, அவர்க |
| मन्त्रिषु | மந்திரிகளில் | | ளையும் |
| तेन | அவரினாடு | परीक्षथ | பரிசோதித்தறிவிர் |
| प्रीत्या | அன்பால் | | களரக. |

कथं स्वपिति जागर्ति कियन्वच्च करिष्यति । विज्ञाय निपुणं सर्वमागन्तव्यमशेषतः ॥२३॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|-----------------|
| कथं | "எப்படி | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| स्वपिति | தூக்குகிறான் ? | अशेषतः | எதையும் மீடாமல் |
| जागर्ति | விழிக்குகிறான் | निपुणं | தூட்பமாக |
| | கிறான் ? | विज्ञाय | அறிந்துகொண்டு |
| अन्यत् च | இன்னும் | आगन्तव्यम् | திரும்பிவந்துகொ |
| किं करिष्यति | எதைச் செய்கிறான் ? | | வேண்டியது. |

चारेण विदितः शत्रुः पण्डितैर्वसुधाधिपैः । युद्धे स्वल्पेन यत्नेन समासाद्य निरस्यते ॥२४॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------|---------------------|
| पण्डितैः | "புத்தகார தூயமுள்ள | शत्रुः | சுற்று |
| वसुधाधिपैः | மண்ணர்களால் | युद्धे | போரில் |
| चारेण | வேலுகாரணம் | समासाद्य | எதிர்த்து |
| | கொண்டு | स्वल्पेन | அற்ப |
| विदितः | எல்லாமறிந்துகொள் | यत्नेन | முயற்சியால் |
| | எப்பட்ட | निरस्यते | ஒழிக்கப்படுகிறான்." |

चारास्तु ते तथेत्युक्त्वा महृष्टा राक्षसेश्वरम् । शार्दूलमयतः कृत्वा ततश्चक्रुः प्रदक्षिणम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------|---------------|-------------------|
| ते | அந்த | इति | என்று |
| चाराः | வேலுகாரர்கள் | उक्त्वा | சொல்லிட்டு |
| महृष्टाः | மனச்சுந்துஷ்டி | शार्दूलः | சார் தூலனை |
| | கொண்டவர்களாய் | अमयतः | முதலிலிருப்பவளுக |
| राक्षसेश्वरं | அரக்கமன்னனைப் | कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| | பார்த்து | ततः | அதன்மேல் |
| तथा | "அப்படியே செய் | प्रदक्षिणं तु | பிரதக்ஷிணத்தையும் |
| | கிறோம்" | चक्रुः | செய்தார்கள். |

ततस्ते तं महात्मानं चारा राक्षससत्तमम् । कृत्वा प्रदक्षिणं जग्मुर्वत्र रामः सलक्ष्मणः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|-------------------|
| ते | அந்த | कृत्वा | செய்துவிட்டு |
| चाराः | வேலுகாரர்கள் | रामः | ராமர் |
| महात्मानं | மகா ஆற்றலுடைய | सलक्ष्मणः | சக்தமணருடன் |
| राक्षससत्तमं | அரக்கர்களில் உத்தம | यत्र | எங்கிருந்தாரோ |
| तं | அவனுக்கு [ஐய | ततः | அவ்விடத்திற்கு |
| प्रदक्षिणं | பிரதக்ஷிணத்தை | जग्मुः | வந்துசென்றார்கள். |

ते सुवेलस्य शैलस्य समीपे रामलक्ष्मणौ । प्रच्छन्ना ददृशुर्गत्वा ससुग्रीवविभीषणौ ॥२७॥

மச்சந்நா: மாறுவெய்தம் பூண்
ஒருந்த
சு
சுவேலச்ய அலர்கள்
சுசுவலமென்ற
சுசுலயின்
சமீபே அருகாமையில்.

ரங்கா வந்துசென்றது
சசுசுரிவவிபிஷணு ககர்வனுடனும் விபி
ஷணனுடனுபிருந்த
ராமலக்ஷ்மணு ஸ்ரீராமசையும் லக்ஷ்
மணசையும்
தது: கண்டார்கள்.

प्रेक्षमाणाश्चमूं तां च बभूवुर्भयविक्रवाः । ते तु धर्मात्मना दृष्टा राक्षसेन्द्रेण राक्षसाः ॥२८॥

தா அந்த
சமூ ச னைன்யத்தையும்
பிரேக்ஷமாணா: பார்த்துக்கொண்ட
ருக்கின்றவர்களாய்
பயவிக்ரவா: அச்சத்தா னுள்ள
கலங்கியவர்களாய்
பஹூ: ஆணர்கள்.

ராஷசா: அரக்கர்கள் சிய
தே து அவர்களும்
ராஷசேந்த்ரேண ராஷசேனாத்தமராகிய
பர்மாத்தமா வான
(விபிஷணரால்)
தூ: சுண்டுகொள்ளப்
பட்டார்கள்.

विभीषणेन तत्रस्था निगृहीता यदृच्छया । शार्दूलो ग्राहितस्त्वेकः पापोऽयमिति राक्षसः ॥

मोचितः सोऽपि रामेण वध्यमानः पुवङ्गमैः
आनृशंस्येन रामस्य मोचिता राक्षसाः परे

॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥

विभीषणेन விபிஷணனால்
யதृக்ஷயா தன திஷ்டப்படியே
தஸ்யா: அங்கு வந்திருந்த
வர்கள்

ஹி ளன்சிறகாரணத்தால்
வஹ்யமான: அபி புடைக்கப்படுகிறவனு
ச: அவன் யிருக்கையில்
ராமேண ஸ்ரீராமரால்
மோசித: விடுவிக்கப்பட்டான்.
பரே மற்றுமுள்ள
ராஷசா: அரக்கர்களும்
ராமஸ்ய ஸ்ரீராமருடைய
ஆனூச்யேன தண்ணளியால்
மோசிதா: விடுவிக்கப்பட்டார்
கள்.

निगृहीता: பிடிக்கப்பட்டார்கள்.
ग्राहितः பிடிக்கப்பட்ட
शार्दूल: சார்தூலமென்ற
राक्षसः அரக்கன்
एकः तु ஒருவன் மட்டும்
पुवङ्गमैः வானரர்களால்
अयं पापः 'இவன் பாபி'

वानरैर्ददितास्ते तु विक्रान्तैर्लघुविक्रमैः । पुनर्लङ्कामनुप्राप्ताः श्वसन्तो नष्टचेतसः ॥ ३२ ॥

விக்ரானு: பரக்கிரமசாலிகளும்
லஹுவிக்ரமே: து
வானரே: வானரர்களால்
ஹ்ரிதா: ஹிம்சிக்கப்பட்ட
தே அவர்கள்

நஷ்சேதச: மனம்பதைத்தவர்க
ளாய்
ஷ்வஸந்த: பெருமூக்குறித்து
புன: மீளவும் [கொண்டு
லக்ஷ்: இலங்கைக்கு
அனுபாசா: வந்துசென்றார்கள்.

ततो दशमीवमुपस्थितास्तु ते चारा वहिर्नित्यचरा निशाचराः ।

गिरेः सुवेलस्य समीपवासिनं न्यवेदयन्भीमवलं महाबलाः

॥ ३३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|------------|-----------------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | दशमीवं | பாலவணலை |
| वहिः | வெளியில் | उपस्थिताः | கிட்புனவர்களாகி |
| नित्यचराः | எக்காலத்திலும் | भीमवलं | பெரும் ஊசனியத்தை |
| | திரிபுவர்களுக்கும் | सुवेलस्य | சுவேல |
| महाबलाः | மிக்஑ பலவாண்஑களுக்கும் | गिरेः | மகிளரின் |
| निशाचराः तु | அரங்கர்களுமான | समीपवासिनं | சமீபத்தில் தங்கிபிருக் கிறதாய் |
| ते | அந்த | न्यवेदयन् | அறிக்கை செய்தார் |
| चाराः | வேவுகாரர்கள் | | கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकोनत्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकः 15779

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकः 1104



त्रिंशः सर्गः—முப்பதாம் ணர்க்கம் ॥ ३० ॥

बानरनामनिर्देशः—வானரர்களுடைய பெயர்களைச் சொல்லுக.

ततस्तमक्षोभ्यवलं लङ्काधिपतये चराः । सुवले राघवं शैले निविष्टं प्रत्यवेदयन् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|-----------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | अक्षोभ्यवलं | கலக்கமுடியாத ஊசனியத்தைப்பற்றியும் |
| चराः | வேவுகாரர்கள் | निविष्टं | அக்கிடத்தில் தங்கி பிருத்த |
| लङ्काधिपतये | இலங்கைமன்னனுக்கு | राघवं | பூதீராமரைப்பற்றியும் |
| सुवले | சுவேல | प्रत्यवेदयन् | விவரமாய் தெரிவித்தார்கள். |
| शैले | மகிளரின் | | |
| ते | அந்த | | |

चाराणां रावणः श्रुत्वा रामं रायं महाबलम् । जानोद्देगोऽभवत्किञ्चिच्छादुलं वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|------------|---------------------------|
| रावणः | பாலவண் | जानोद्देगः | சூச்சரிபம் கொண்ட வனாய் |
| महाबलं | மகாபலவாணுகிய | अभवत् | ஆயினன். |
| रामं | பூதீராமரை | शादुलं | சரிதானிப்ப பார்த்து |
| प्राहं | வந்துசேர்க்துவிட்ட வராய் | वाचं | ஒரு சொல்லை |
| चाराणां | வேவுகாரர்களிடம் | अब्रवीत् | பின்வருபாறு |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | | சொல்லுண் : |
| किञ्चिन् | கொஞ்சம் | | |

अथवावच्च ते वर्णो दीनश्चासि निशाचर । नासि कश्चिदमित्राणां क्रुद्धानां वशमागतः ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|-------------|----------------------|
| निशाचर | "அரக்கனே ! | क्रुद्धानां | கோபித்தடர்களாகிய |
| ते | உனது | अमित्राणां | சந்ருக்களுடைய |
| वर्णः | முதவொளி | वशं | கையில் |
| अथवात् च | எப்பொழுதும் உள்ள | आगतः | சிக்கிக்கொண்டுவிட்ட |
| | தற்கு மாறாயும் | | டவனாய் |
| दीनः च | மனக்கவலையுற்றவனாகவும் | असि न | நீ ஆகிவிட்ட இல்லையென |
| | | कश्चित् | நான் கிணக்கின் |
| असि | இருக்கின்றாய். | | நேன்." |

इति तेनानुशिष्टस्तु वाचं मन्दसुदैर्यत् । तदा राक्षसशार्दूलं शार्दूलो भयविह्वलः ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | मन्दं | மெல்லிய குரலுடன் |
| तेन | அவனால் | वाचं | ஒரு சொல்லை |
| इति | மேற்கண்டவாறு | राक्षसशार्दूलं तु | இராசுஷஸப்புலியைப் |
| अनुशिष्टः | கினுவப்பட்ட | | பார்த்து |
| शार्दूलः | சார் தூலன் | उदैर्यत् | பின் வருமாறு |
| भयविह्वलः | பயத்தால் நெஞ்சம் | | சொன்னான் : |
| | பதைக்க | | |

न ते चारयितुं शक्या राजन्वानरपुङ्गवाः

॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|----------------|
| राजन् | "ராஜன் ! | चारयितुं | வேவுத்தொழிலால் |
| वानरपुङ्गवाः | வானரோத்தமர் | | அறிய |
| ते | அவர்கள் [களாகும்] | शक्याः न | ஒண்ணாதவர்கள். |

विक्रान्ता बलवन्तश्च राघवेण च रक्षिताः । नापि संभाषितुं शक्याः संश्रोऽत्र न लभ्यते ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|---------------------|
| विक्रान्ताः | "சலியர மனத்தினர் | संभाषितुं अपि | வாய்திறந்து பேசவும் |
| | களும்த | | கூட |
| बलवन्तः | மகா ஆற்றலுடை | शक्याः न | இடக்கொடுப்பவர் |
| | யவர்களும்த | | களல்ல. |
| राघवेण | ராமனால் | अत्र | இவர்கள் விஷயத்தில் |
| रक्षिताः च | பாதுகாக்கப்பட்டவர் | संश्रोः च | நல்வார்த்தைகொண்டு |
| | களுமான அவர்கள் | लभ्यते न | விசாரித்தென்பதும் |
| | | | அடையப்படவில்லை. |

सर्वतो रक्ष्यते पन्था वानरैः पर्वतोपमैः । प्रविष्टमात्रे ज्ञातोऽहं बले तस्मिन्नचारिते ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|----------------|-------------------|
| पर्वतोपमैः | "மலைக்கொப்பரன | बले | சைனியம் |
| वानरैः | வானரர்களால் | अचारिते | வேவுகொள்ளப்படா |
| सर्वतः | நாற்புறமும் | | திருக்கையில் |
| पन्थाः | வழியானது | प्रविष्टमात्रे | துழைந்தமாதிரித் |
| रक्ष्यो | பாதுகாக்கப்பட்டிருக்க | | தினேயே |
| अहं | நான் [கிறது. | ज्ञातः | இன்னுனென்று கண் |
| तस्मिन् | உந்த | | டுகொள்ளப்பட்டேன். |

बलाद्गृहीतो रक्षोभिर्वहुभाऽस्मि विचालितः । जानुभिर्मुष्टिभिर्दन्तैस्तलैश्चाभिहतो भृशम् ॥
परिणीतोऽस्मि हरिभिर्वलवद्भिरमर्षणैः । परिणीय च सर्वत्र नीतोऽहं रामसंसदम् ॥ ९ ॥

அஹ்
ரக்ஷோமி: "நான்
கூட வந்த இராக்ஷ
ஸர்களுடன்
வலவந்நி: பலசரீரிகளும்
அமர்ஷணை: அடக்காச்சினம்கொ
ண்டவர்களுமான்
ஹரிமி: குரங்குகளால்
வலாத் முட்டித்தனமாய்
ரூஹித: பிடிக்கப்பட்டேன்.
வஹுபா பலவாலும்
விவாலித: அசிம் அல்லல் படுத்தப்
பட்டேன்.

ஜானுமி: முழக்கால்களாலும்,
முஷ்டிமி: முஷ்டிகளாலும்
வந்நை: பற்களாலும்
தலை: வள்ளக்கைகளாலும்
புரம் மிக
அபிஹத: புடைக்கப்பட்டேன்.
சர்வவ எங்கும்
பரிணீய இழுக்கப்பட்டு
பரிணீத: அசிம் ஒட்டிக்கிடப்பட்டேன்.
ராமசंसदं ராமன் சபைக்கு
நீத: வ கொண்டு வந்து நிறுத்
தவும் பட்டேன்.

रधिरादिग्धसर्वाङ्गो विह्वलश्चलितेन्द्रियः ।

राघवेण परित्रातो जीवापीति यहच्छया

रधिरादिग्धसर्वाङ्ग: "உடல் முழுதும் கு
குதி வழிந்தவனாய்

विह्वल: மேனி தளர்ந்தவனாய்

चलितेन्द्रिय: च புலன் மருண்டவனாய்

हरिभि: குரங்குகளால்

वध्यमान: புடைக்கப்பட்டு

कृताञ्जलि: கைகம்பி

हरिर्भिवध्यमानश्च याचमानः कृताञ्जलिः ॥

॥ ११ ॥

याचमान: உயிருக்கு மன்றூடு
கிட்டுதன்.

इति என்ற காரணத்தால்

राघवेण ராமனால்

परित्रात: காப்பாற்றப்பட்டு

यहच्छया ஏதோ கிதிவசமாய்

जीवामि நான் செத்துப்பிழைத்
டுதன்.

एष शैलैः शिलाभिश्च पूरयित्वा महार्णवम् ।

शैलै: "பர்வதங்களாலும்,
शिलाभि: च பாறைகளாலும்

महार्णवं பெருக்கடலை

पूरयित्वा தூர்ந்து

लङ्काया: இலங்கையின்

द्वारमाथित्य लङ्काया रामस्तिष्ठति सायुधः ॥

द्वारं வாய்க்கை:

आथित्य அடைந்து

सायुध: ஆயுதத்தொடுகூட

राम: ராமன்

एष: तिष्ठति தூதோ கிற்கின்றான்.

गरुडव्यूहमास्थाय सर्वतो हरिभिवृतः । मां विसृज्य महातेजा लङ्कामेवाभिवर्तते ॥१३॥

गरुडव्यूहं "கருடவ்யூகத்தில்

आस्थाय இருந்துகொண்டு

सर्वत: காற்புறமும்

हरिभि: குரங்குகளால்

वृत: சூழப்பட்டவனாய்

महातेजा महाஜா ஆற்றலுடைய
வனாகும் ஆவன்

मां என்னை

विसृज्य போக விடுத்துவிட்டு

लङ्कां एष இலங்கையை

தொக்கியே

अभिवर्तते வந்துகொண்டிருக்கி
ருண்.

पुरा माकारमायाति क्षिप्रमेकतरं कुरु । सीतां वाऽऽपै प्रयच्छाशु सुयुद्धं वा प्रदीयताम् ॥

மாசார்
ஆயாதி புரா
“மதில்கவனா
அடையும் முன்ன
காலதரமதரின் நி
பின் கண்ட இரண்டி
செய்வீராக.
உடனே

சீதா வா
அசுமீ
பயசு
“சீதையை யாவது
இவருக்கு
திரும்பிக்கொடுத்து
விடும்.
இதில்லை என்றாலே
கடும்போரானது
தரப்படட்டும்.”

मनसा सन्ततापाथ तच्छुत्वा राक्षसाधिपः । शर्दूलस्य महदावयमथोवाच स रावणः ॥

ராசாசாதிப:
ராவணன்
சாடூலச்ய
தர்
மஹ
வாக்ய ஶுரவா
“ராக்ஷஸமன் னனுகிய
ராவணன்
சரீர்தூலனது
அந்த
சிறந்த
சொல்லிக்குகட்டு

அய
மனசா சந்தாப
அய
ச:
தவாச
அப்பொழுது
உள்ளக்கலங்கினான்.
அதன்மேல்
அவன்
பின்வருமாறு
மொழிந்தான் :

यदि मां प्रति युद्धयेरन्देवगन्धर्वदानवाः । नैव सीतां प्रदास्यामि सर्वलोकभयादपि ॥१६॥

देवगन्धर्वदानवाः
मां
प्रति
युद्धयेरन् यदि
“தேவர்களும், கந்தர்வர்க
களும், தானவர்கள்
என்னை
எதிர்த்து
போர்புரிகின்றார்கள்
என்றாலும்

सर्वलोकभयात्
अपि
सीतां एव
प्रदास्यामि न
எல்லா உலகத்தினரின்
தும் ஆபத்துண்டா
சிறது என்றாலும்
சீதையை மட்டும்
நான் திரும்பிக்கொடு
க்கமாட்டேன்.”

एवमुक्त्वा महातेजा रावणः पुनरब्रवीत् । चारिता भवता सेना कैऽत्र शूराः पुत्रङ्गमाः ॥

மஹாதேஜா:
ராவணன்
ஏவ்
உசுவா
புன:
அவசீந்
“மகா ஆற்றலுடைய
ராவணன்
தேற்கண்டவாறு
சொல்லிவிட்டு
மீளவும்
பின்வருமாறு வினாவு
வரனான் :

भवता
सेना
चारिता
अत्र
शूराः
पुत्रङ्गमाः
के
“உன்னால்
சேனை
சுற்றிப்பார்க்கப்
புதில் [பட்டகா ?
சூரர்கள் ரகிய
வானர்கள்
எவர்கள் ?

कीदृशाः किंप्रभाः सौम्य वानरा ये दुरासदाः । कस्य पुत्राश्च पौत्राश्च तत्त्वमाख्याहि राक्षसः ॥

சௌம்ய
ராசுஸ
தூராசதா:
வானரா:
யே
கீதூசா:
“கொண்டே தென்சம்
படைக்கப்பெற்ற
அரக்க !
எவராலும் அணுக
வானர்கள் [முடியாத
எவர்களை அவர்கள்
எம்மா திரியானவர்
கள் ?

किंप्रभाः
कस्य
पुत्राः च
पौत्राः च
तत्त्व
आख्याहि
என்ன சந்திக்கொண்
டவர்கள் ?
யாருடைய
புதல்வர்கள் ?
பொன்மார்கள் ?
உள்ளதை
சொல்லு.

तथाऽत्र प्रतिपत्स्यामि ज्ञात्वा तेषां बलावलम् । अवश्यं बलसंख्याने कर्तव्यं युद्धमिच्छताम् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|-------------|--------------------------|
| तेषां | “ஆவர்களுடைய | युद्धं | போரில் |
| बलावलं | பலா பலத்தை | इच्छतां | துணிபவர்களுக்கு |
| ज्ञात्वा | ஆதிக் துகொண்டு | अवश्यं | அவசியமாய் |
| अस | இவ்விஷயத்தில் | कर्तव्यं | செய்யப்படவேண்டியது |
| तथा | ஏற்றபடி | बलसंख्यानम् | சம்துருணைகளையத் திணைவு.” |
| प्रतिपत्स्यामि | வேண்டிய ஏற்பாடு செய்வேன். | | |

तथैवमुक्तः शार्दूलो रावणेनोत्तमश्वरः । इदं वचनपारेभे वक्तुं रावणसन्निधौ ॥ २० ॥

| | | | |
|---------|--------------|-------------|------------------------|
| रावणेन | ராவணனால் | शार्दूलः | சார்தூலன் |
| तथा एवं | மேற்கண்டவாறு | रावणसन्निधौ | ராவணனது முன்னிலையில் |
| वक्तुः | கிணாவப்பட்ட | इदं वचनं | இவ்வரும் சொல்லை |
| उत्तमः | சிறந்த | वक्तुं आरभे | சொல்வத்தலைப் பட்டான் : |
| श्वरः | ஒற்றனாகிய | | |

अथर्क्षरजसः पुत्रो युधि राजा सुदुर्जयः । गद्गदस्वाथ पुत्रोऽत्र जाम्बवानिति विभ्रुतः ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|---------------|---------------------|
| युधि | “போரில் | पुलः अथ | குமாரனே! |
| सुदुर्जयः | எவராலும் வெல்ல முடியாதவனாகிய | अस | இதேதான் இருக்கும் |
| राजा | ராஜா, சுக்கீவன் | जाम्बवान् इति | ‘ஜாம்பவான்’ என்று |
| ऋक्षरजसः | ரிசுதாஜஸன் என்பவரின் | विभ्रुतः अथ | ப்சித்தி பெற்றவனும் |
| | | गद्गदस्य | கக்கதென்பவனு |
| | | पुलः | புதல்வன்.” [உடய |

गद्गदस्यैव पुत्रोऽन्यो गुरुपुत्रः शतक्रतोः । कदनं यस्य पुत्रेण कृतमेकेन रक्षसाम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------|------------|-----------------------|
| गद्गदस्य एव | “கக்கதனுக்கே | रक्षसां | அரக்கர்களுக்கு |
| अस्यः | இன்னொரு | कदनं कृतं | கடனம் கிளைவிக்கப்பட்ட |
| पुलः | புதல்வன் | | உதேதான் அவன் |
| यस्य | எவனுடைய | शतक्रतोः | இத்தனைது |
| पुत्रेण | புதல்வன் | गुरुपुत्रः | குருவாகிய இருகன்ப |
| एकेन | ஒருவனாகியே | | தீயின் புதல்வன்.” |

सुषेणश्चापि धर्मात्मा पुत्रो धर्मस्य वीर्यवान् । सौम्यः सोमात्मजश्चात्र राजन्द्धिमुखः कपिः ॥

| | | | |
|---------------|----------------|------------|---------------------|
| धर्मात्मा अपि | “தர்மாத்மாவும் | राजन् | அரசே! |
| वीर्यवान् च | வீர்யவா ஓமாவிய | अस | இவ்விடத்தில் |
| सुषेणः | சுசேணன் | सौम्यः | அழகுற்றுவிளங்கும் |
| धर्मस्य | தர்மவானது | द्धिमुखः च | ததிமுகனென்ற |
| पुलः | குமாரனே. | कपिः | வானரன் |
| | | सोमात्मजः | சந்திரனின் மைந்தன். |

सुमुखो दुर्मुखश्चात्र वेगदर्शी च वानरः । सृत्युर्वानररूपेण नूनं सृष्टः स्वयंभुवा ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|----------------|------------|-------------------------------|
| अस | " இதில் | दुर्मुखः च | தூர் முகனென்றவனாகவும் |
| स्वयंभुवा | பிரம்மதேவரால் | वेगदर्शी च | வேகதர்சி என்றவனாகவும் |
| वानररूपेण | வானரரூக்கொடுத் | सृष्टः | ஸ்ருஷ்டிக்கப்பட்டிருக்கிறான். |
| सृत्युः नूनं | எமனே [சு | | |
| सुमुखः | சுமுகனென்ற | | |
| वानरः | வானரனாகவும் | | |

पुत्रो हुतवहस्याथ नीलः सेनापतिः स्वयम् । अनिलस्य च पुत्रोऽत्र हनुमानिति विश्रुतः ॥

| | | | |
|-----------------|---------------|------------|--------------------|
| नीलः | " நீலனென்ற | हनुमान् | ஹனுமான் |
| सेनापतिः | சேனாபதி | इति | என்று |
| हुतवहस्य | அக்னிபகவானது | विश्रुतः च | பிரசித்திபெற்றவன். |
| स्वयं पुत्रः अथ | ஒளரஸபுதல்வனே, | अनिलस्य | வாயுவின் |
| अस | இதில் | पुत्रः | பைந்தன். |

नप्ता शक्रस्य दुर्धर्षो बलवानङ्गदो युवा । मैन्द्रश्च द्विविदशोभौ बलिनावश्विसंभवौ ॥२६॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|--------------------|
| युवा | " சிறுவனும் | बलिनौ | பலசாலிகளாகிய |
| बलवान् | பலசாலியும் | मैन्द्रः च | மைந்தனைன்பவனும் |
| दुर्धर्षः | எவராலும் தகையமு | द्विविदः च | துவிதனைன்பவனும் |
| | டிபாதவனுமான | | ஆகிய |
| अङ्गदः | அங்கதன் | शभौ | இருவர்களும் |
| शक्रस्य | இந்திரனது | अश्विसंभवौ | அக்ஷிளிதேவதை |
| नप्ता | பேரன். | | களின் புதல்வர்கள். |

पुत्रा वैवस्वतस्यात्र पञ्च कालान्तकोपमाः । गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः ॥

| | | | |
|---------|------------------|---------------|----------------------|
| अस | " இதில் | गन्धमादनः | கந்தமாதனைன்ப |
| गवः | சதுனைன்பவனும், | | வனுமான |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனைன்பவனும் | कालान्तकोपमाः | காலாந்தகால் எமனுக்கே |
| गवयः | கவயனைன்பவனும் | | ஒப்பானவர்களான |
| शरभः | சரபனைன்பவனும் | पञ्च | ஐவர்களும் |
| | | वैवस्वतस्य | எமனது |
| | | पुत्राः | புதல்வர்கள். |

दश कोट्यो वानराणां शूराणां युद्धकाङ्क्षिणाम् । श्रीमतां देवपुत्राणां शेषं नाख्यातुमुत्सहे ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------|-----------|-------------------|
| शूराणां | " சூரர்களும் | वानराणां | வானரர்களின் |
| युद्धकाङ्क्षिणां | { யுத்தத்தை எதிர்பார் | दश कोट्यः | பத்துகோடிகளிருக் |
| | ந்து நித்கின்றவர்க | | கின்றன. |
| | களும் | शेषं | மற்றபடி ஆனதை |
| श्रीमतां | ஸ்ரீமான்களும் | आख्यातुं | விளக்க விளம்ப |
| देवपुत्राणां | தேவர்களின் புதல்வர் | उत्सहे न | கான் முடியாதிருக் |
| | களுமான | | கின்றேன். |

पुत्रो दशरथस्यैव सिंहसंहननो युवा । दूपणो निहतो येन खरश्च त्रिशिरास्तथा ॥ २९ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|-------------------|
| येन | " எவனுல் | तथा | அப்படியே கொல்லப் |
| दूपणः | துஷணன் | पुत्रः | இவன் [பட்டாளே, |
| निहतः | கொல்லப்பட்டானே, | दशरथस्य | தசரதனது |
| खरः च | கான் அப்படியே | पुत्रः | மகன் ; |
| | கொல்லப்பட்டானே, | विहसंहननः | கிண்கம்பொன்ற சரீர |
| त्रिशिराः | தரிசிரஸ்ஸம் | | முண்டயவன் ; |
| | | युवा | யுவன். |

नास्ति रामस्य सदृशो विक्रमे भुवि कश्चन । विराधो निहतो येन कबन्धश्चान्तकोपमः ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|---------|-----------|
| येन | " எவனுல் | रामस्य | ராமனுக்கு |
| विराधः | விராதன் | विक्रमे | போரில் |
| निहतः | கொல்லப்பட்டானே | भुवि | உலகில் |
| अन्तकोपमः | எமனை நிகர்த்த | सदृशः | நிகரானவன் |
| | { கபந்தனும் அப்படியே | कश्चन | ஒருவனும் |
| कबन्धः च | { கொல்லப்பட்டானே, | अस्ति न | இல்லை. |
| | { (அந்த) | | |

वक्तुं न शक्तो रामस्य नरः कश्चिद्गुणान्क्षितौ । जनस्थानगता येन यावन्तो राजसा हताः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|---------------|
| येन | " எவனுல் | रामस्य | ராமனது |
| जनस्थानगताः | ஜனஸ்தானத்திலி | गुणान् | விசேஷகுணங்களை |
| राजसाः | ராஜஸர்கள் [முந்த | क्षितौ | உலகில் |
| यावन्तः | எவ்வளவுநேரமே | कश्चिद् नरः | மனிதனெவனும் |
| हताः | கொல்லப்பட்டார் | वक्तुं | வரணிக்க |
| | களை, (அந்த) | शक्तः न | முடியாது. |

लक्ष्मणश्चात्र घर्मात्मा मातङ्गानामिवर्षभः । यस्य बाणपथं प्राप्य न जीवेदपि वासवः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|---------------|
| अत्र | " இதில் | यस्य | எவனுடைய |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனே | बाणपथं | பாணபாதக்கை |
| घर्मात्मा | தர்மநெறியை விட்டு | प्राप्य | அடைந்து |
| | அகலாதவன். | वासवः अपि | இத்திரங்கட |
| मातङ्गानां | யானைகளின் | जीवेत् न | உயிருடனிரான். |
| वर्षभः इव | அரசுபோன்றவன். | | |

भेतो ज्योतिर्मुखश्चात्र भास्करस्यात्मसंभवौ । वरुणस्य च पुत्रोऽन्यो हेमकूटः प्लवङ्गमः ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------|----------------|
| भेतः | " இதில் | वरुणस्य | வருணனின் |
| ज्योतिर्मुखः च | சுவேதனைப் பவனும் | अन्यः | மற்றொரு |
| भास्करस्य | ஜ்யோதிர்முகனைச் | पुत्रः च | புத்திரன் தான் |
| आत्मसंभवौ | சூர்யனது [மவனும் | हेमकूटः | ஹேமகூட்டுணன்ற |
| | புதல்வர்கள். | प्लवङ्गमः | வானான். |

विश्वकर्मसुतो वीरो नलः पुवगसत्तपः । विक्रान्तो बलवानत्र वसुपुत्रः सुदुर्धरः ॥ ३४ ॥

புவகஸ்தம: "வானரோத்தமனும்
 வீர: சூரனுமாகிய
 நல: நன்னென்பவன்
 विश्वकर्मसुत: விசுவகர்மரின் புதல்
 வன்.
 अत्र இதில்

विक्रान्त: மிக ஆண்டவனுடைய
 வனும்
 बलवान् மிக ஆற்றலுடையவ
 நுடான
 सुदुर्धरः ஸூதர் தந்தரென்ப
 वसुपुत्रः வசுவின் மகன். [வன்

राक्षसानां वरिष्ठश्च तव भ्राता विभीषणः । परिगृह्य पुरीं लङ्कां राघवस्य हिते रतः ॥

तव "தேவரீரது
 भ्राता தம்பிரியம்
 राक्षसानां அரக்கர்களுக்குள்
 वरिष्ठः च மகா பொல்லாதவனு
 विभीषणः விபிஷணன் [மாகிய

लङ्कां पुरीं இலங்கைநகரை
 परिगृह्य பெற்றுக்கொண்டு
 राघवस्य ராமனுக்கு
 हिते நன்மை புரிவதில்
 रतः ஈடுபட்டுவிட்டான்.

इति सर्वं समाख्यातं त्वेदं वानरं बलम् । सुवेलेऽधिष्ठितं शैले शेषकार्ये भवान्गतिः ॥

सुवेले "சுவேல
 शैले மகையில்
 अधिष्ठितं தங்கியிருக்கும்
 इदं இந்த
 वानरं வானர
 बलं சைன்னியம்
 सर्वं எல்லாமும்
 तव தேவரீருக்கு

समाख्यातं விளக்க விளம்பிவிடப்
 பட்டது.
 इति இதெல்லாம் இப்படி
 இருக்கின்றமையால்
 शेषकार्ये இனி ஆகவேண்டிய
 कार्यात् காரியத்தில்
 भवान् தேவரீர்தான்
 गतिः சர்வா திகாரமும் பெற
 துவிளக்குகிறவர்."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे त्रिंशः सर्गः ॥

भावितः श्लोकाः 15815

युद्धकाण्डे भावितः श्लोकाः 1140



एकत्रिंशः सर्गः—முப்பத்தொன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ३१ ॥

सीतामोहनम्—சீதையை மோஹிப்பிப்பது.

ततस्तपक्षोभ्यबलं लङ्काधिपतये चराः । सुवेले राघवं शैले निविष्टं प्रत्यवेदयन् ॥ १ ॥

ततः அக்சமயத்தில்
 चराः மற்றுமுள்ள வேவுகா
 ரர்கள்,
 सुवेले சுவேல
 शैले மகையில்
 राघवं ராமனை

निविष्टं வந்து தங்கியிட்டவ
 ने அதை [நாமவும்
 अक्षोभ्यबलं கலக்கமுடியாத சேனை
 யெனவும்
 लङ्काधिपतये இலங்கைமன்ன நலுக்கு
 प्रत्यवेदयन् தெரிவித்தார்கள்.

चाराणां रावणः श्रुत्वा प्राप्तं रामवचं महत् । जातोद्दिगोऽभवत्किञ्चित्सचिवानिदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|----------------------|
| रावणः | ராவணன் | किञ्चित् | கொஞ்சம் |
| महत् | பெரும் | जातोद्दिगः | அச்சம் கொண்ட |
| रामवचं | ராமரது வசனத்தைய | अभवत् | ஆயினான். [வரைய] |
| प्राप्तं | வந்து சேர்ந்துகிட்ட | सचिवान् | மந்திரிகளைப்பார்த்து |
| चाराणां | சாரர்களிடம் | इदं | பின்வருமாறு |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अब्रवीत् | பொழிந்தான். |

मन्त्रिणः शीघ्रमायान्तु सर्वे वै सुसमाहिताः । अयं नो मन्त्रकाण्डे हि संप्राप्त इति राक्षसाः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|--------------|-------------------|
| नः | “ நமக்கு | सुसमाहिताः | பக்திமாண்களும் |
| मन्त्रकाण्डः | மந்திரர்களைசேனை பண்ணும் காலம் | मन्त्रिणः वै | மந்திரிமார்களுமான |
| अयं | இதேய | राक्षसाः | ராக்ஷஸர்கள் |
| संप्राप्तः | வந்துகிட்டது, | सर्वे | எல்லோரும் |
| इति हि | என்கிற காரணத்தால் | शीघ्रं | காலதாமதமின்றி |
| | | आशान्तु | வந்துகூட்டும்.” |

तस्य तच्छासनं श्रुत्वा मन्त्रिणोऽभ्यागमन्हुतम् । ततः स मन्त्रयामास सचिवै राक्षसैः सह ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-------------|------------------|
| मन्त्रिणः | மந்திரிகள் | अभ्यागमन् | வந்துகடினார்கள். |
| तस्य | அவனு | सः | அவன் |
| तत् | அந்த | सचिवैः | மந்திரிகளான |
| शासनं | ஆக்கிரமையை | राक्षसैः सह | அரக்கர்களைகூட |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | ततः | அப்பொழுது |
| हुतं | வினாவின | मन्त्रयामास | ஆலோசனைசெய்தான். |

मन्त्रयित्वा स दुर्धर्षः क्षमं यत्समनन्तरम् । विसर्जयित्वा सचिवान्प्रविवेश स्वमालयम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|--------------|--------------------------|
| दुर्धर्षः | எவர்க்குமடங்கா | मन्त्रयित्वा | ஆலோசனை செய்து கிட்டு, |
| सः | அவன் | सचिवान् | மந்திரிகளை |
| समनन्तरं | உடனே ஆரவேண்டிய காய் | विसर्जयित्वा | விடைகொடுத்தனுப்பி |
| क्षमं | சமயத்திற்கேற்றகாயி ருக்கிறது | स्व | தனது [விட்டு, |
| यत् | எதுவோ அதை | आलयं | தமன்மனைக்கு |
| | | प्रविवेश | போய்ச்சேர்ந்தான். |

ततो राक्षसमाहूय विवृजिह्वं महाबलम् । मायाविदं महाभायः प्राशिशयन्न मैथिली ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-----------|------------------------|
| महाभायः | மகா மாயாவிவாகும வன் | राक्षसं | அரக்கனை |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து | आहूय | அழைத்துக்கொண்டு |
| महाबलं | மகாபலவாணம் | मैथिली | மூலகியார் |
| मायाविदं | மாயாவித்தைகளை நன்கறிந்தவனுமான | यत् | எங்கிருந்தனனோ அங்கு |
| विवृजिह्वं | விடயிலிருந்துவென்ற | प्राशिशत् | போய்ச்சேர்ந்தான். |

विद्युज्जिह्वं च मायाज्ञमब्रवीद्राक्षसाधिपः । मोहयिष्यावहे सीतां मायया जनकात्मजाम् ॥

| | | | |
|-------------------------|---|-------------------|----------------------------|
| राक्षसाधिपः मायाज्ञं | அரக்கர் மன்னன் மாயையின் திபுணனு கிவ | जनकामजां सीतां | "ஜனகனின் மகனாகிய லீதையை |
| विद्युज्जिह्वं च | வித்யுஜ்ஜிஹ்வைப் பார்ந்து | मायया | மாயையால் |
| अमवीत् | அம்வீட்டு பின் வருமாறு மொழி ந்தான்: | मोहयिष्यावहे | கிந்தை சிதறவடிப் போம். |

शिरो मायामयं गृह्य राघवस्य निशाचर । त्वं मां समुपतिष्ठस्व महच्च सशरं धनुः ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------|---------------|--------------|-----------------|
| निशाचर | "அரக்கனே! | महत् | கிறந்த |
| त्वं | நீ | धनुः च | கோதண்டத்தையும் |
| राघवस्य | ராமனுடைய | मायामयं | மரபாமயமாய் |
| शिरो | சிரையும | गृह्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| सशरं | பாணத்தோடுகடிய | मां | என்னிடம் |
| | | समुपतिष्ठस्व | வந்துசேர். |

एवमुक्तस्तथेत्याह विद्युज्जिह्वो निशाचरः । तस्य तुष्टोऽभवद्राजा प्रददौ च विभूषणम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-----------|----------------------------|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | राजा | மன்னன் |
| उक्तः | கியமனம்பெற்ற | तुष्टः | மணச்சந்துவீடி கொண்டவனாக |
| विद्युज्जिह्वः | வித்யுஜ்ஜிஹ்வ | अभवत् | ஆயினன். |
| निशाचरः | அரக்கன் [நென்ற | तस्य | அவனுக்கு |
| तथा इति | 'அங்கனமே செய் கின்றேன்' என்று | विभूषणं च | ஆபரணத்தையும் |
| आह | பதில் சொன்னான். | प्रददौ | பரிசாய் அளித்தான். |

अशोकवनिकायां तु सीतादर्शनलासः । नैर्ऋतानामधिपतिः संविवेश महाबलः ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------------------|-------------------------------------|--------------|-------------------|
| महाबलः | மகா பலவானும் | नैर्ऋतानां | அரக்கர்களின் |
| सीतादर्शन- लासः तु | சீதைகாண ஆவ னுடனிருப்பவனு மான் | अधिपतिः | மன்னன் |
| | | अशोकवनिकायां | அசோகவனத்திற் |
| | | संविवेश | புகுந்தான். [குள் |

ततो दीनामदैन्याहो ददर्श धनदानुजः । अयोमुखी शोकपरामुपविष्टां महीतले ॥ ११ ॥
भर्तारमेव घ्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् । उपास्यमानां घोराभी राक्षसीभिरितस्ततः ॥
राक्षसीभिर्वृतां सीतां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् । उत्पलमेघजालाभिश्चन्द्ररेखाभिवाहताम् ॥
भूषणैरुत्तमैः कैश्चिन्मङ्गलार्थमलंकृताम् । चरन्तीं मारुतोद्भूतां क्षिप्तां पुष्पलतामिव ॥ १४ ॥
हर्षशोकान्तरे मग्नां विषादस्य विन्मृगणाम् । स्तिमितामिव गाम्भीर्यान्नदीं भागीरथीमिव ॥

| | | | |
|--|---|-------------------------|--|
| धनदानुजः | குடேபான் தம்பி (ராவணன்) | वोरधिः | கொடிய |
| पूर्णचन्द्र- निभाननां } | முழுமதிடேபான்ற தி ருமுகமண்டலத்தை பெற்றவனும் | राक्षसीभिः | அரக்கிகளோடு |
| अशोकवनिकां गतां | அசோகவனத்தில் வந்துசேர்ந்து | उपास्यमानां | கால்வகழித்துக்கொ ண்டிருப்பவனும், |
| मङ्गलार्थं | சமக்கலி என்பதற் கறிகுறியாய் | उपानमेष- शान्दाभिः } | அசுப ரூசகமான மே கவரிசைகளால் |
| उत्तमैः | அவச்யமாய் அணிய வேண்டிய | आवृतां | முடிண்ட |
| कैथित् | சில (திருமங்கல்யம், சிலம்புமுதலிய) | चन्द्रकेलां इव | சந்திரகலைபோலிருப் பவனும், |
| भूषणैः अलंकृतां | ஆபரணக்களால் அலங்கரிக்கப்பட்டவ னும் | मारुतोद्भूतां | காற்றால் பிடுங்கப் பட்டு |
| अद्वैत्याह्नीं | அவமரியாதையைக் கண்டிராதவனும், | शिरां | எறியப்பட்ட |
| वीनां | எளியநிலைமையிலிருப் பவனும், | पुण्ड्रतां इव | பூக்கொடிபோலிருப் பவனும் |
| शोकपरां अधोमुखीं महीतले उपविष्टां भतारं एव | சோகத்தில் முழுதி தலைகுனிந்து வெறுத்தனாயில் உட்கார்ந்துகொண்டு கணவர் ஒருவரையே ஸர்வமுறைய்க்கொண் டு தியானித்துக்கொ ண்டிருப்பவனும், | चरनीं | கடித்துக்கொண்டி |
| ध्यावन्तीं | எப்பறமும் | भागीरथीं | கக்கை [ருப்பவனும் |
| इतस्ततः राक्षसीभिः वृतां | அரக்கிகளால் குழப்பட்டு | मदीं | நதியை |
| | | इव | போலவே |
| | | गाम्भीर्यात् | காம்பீரியத்தால் |
| | | इव | முற்றிலும் |
| | | स्तिमितां | லிம்பதிக்கொண்டவ |
| | | विषादस्य | துக்கச்சீர்து [னும், |
| | | विलक्षणं | உப்புரப்பட்டவனும் |
| | | हर्षोकांतरं | சந்தோசத்தையும், துக்கத்தையும் த னித்த தன்னையில் முழுக்கிடந்தவளு மன |
| | | मघां | |
| | | सीतां | சிதாதேவியாரை |
| | | ततः | உப்பொழுது |
| | | ददशी | கண்டான். |

उपसृत्य ततः सीतां प्रहर्षं नाम कीर्तयन् । इदं च वचनं धृष्टमुवाच जनकात्मजाम् ॥१६॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|---------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सीतां च | சிதாதேவியாரையும் |
| प्रहर्षं | மிகச் சந்தோஷமாய் | उपसृत्य | கூறுகி |
| नाम | பெயரை (சொல்லி) | इदं | பின்வரும் |
| कीर्तयन् | அழைத்துக்கொண்டு | धृष्टं | மனதையறுக்கும் |
| जनकात्मजां | ஐணகரின் திருச்செல் வியாகல் | वचनं | சொல்லை |
| | | उवाच | சொன்னான் : |

सान्त्वयमाना मया भद्रे यमुपाश्रित्य बलासे । खरहन्ता स ते भर्ता राघवः समरे इतः ॥

| | | | |
|--------------|---|----------|--------------------------------|
| भद्रे | " பாக்கியவதியே ! | बलासे | பெருமை பாராட்டி. |
| मया | என்னால் | सः | அக்க [வருகிறயோ |
| सान्त्वयमाना | { எவ்வளவே நன்வார் தனது சொல்லி வே ண்டப்படுகிறீ | खरहन्ता | கரனைக் கொன்ற, |
| य | எவனை | ते भर्ता | உனது கணவனாகிய |
| उपाश्रित्य | உன்னுடையவனாகக் கொண்டு | राघवः | ராமன் |
| | | समरे इतः | போரில் கொன்றுவிட ப்பட்டான். |

छिन्नं ते सर्वतो मूलं दर्पस्ते विहतो मया । व्यसनेनात्मनः सीते मम भार्या भविष्यसि ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|----------|-------------------|
| ते | " உனது | सीते | சீதாய் ! |
| मूलं | ஆதரவானது | आत्मनः | உனது |
| सर्वतः | அடியோடு | व्यसनेन | பாடிடல்லாம் பயன்ற |
| छिन्नं | கிணக்கப்பட்டு கிட் | | றதாகிவிட்டபடியால் |
| ते दर्पः | உனது கர்வம் [டது. | मम | எனக்கு |
| मया | என்னால் | भार्या | மனைவியாய் |
| विहतः | நிஷ்பந்தயோஜனமாய் ஆகிவிட்டது. | भविष्यसि | இனி ஆகிவிடுவாய். |

विमृजेमां मतिं मूढे किं मृतेन करिष्यसि । भद्रे त्वं भव भार्याणां सर्वासामीश्वरी मम ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-----------|----------------|
| मूढे | " பேதாய் ! | भद्रे | பாக்கியவதியே ! |
| इमां मतिं | இந்த மனோபாவத்தை | मम | எனது |
| विमृज | ஒழித்துவிடு. | भार्याणां | மனைவியார்கள் |
| मृतेन | இறந்தவனைக் கொண்டு | सर्वासां | யாவருக்கும் |
| किं करिष्यसि | நீ என்னசெய்ய முடியும் ? | ईश्वरी | தனையாக |
| | | रव भव | நீ ஆளுவாயாக. |

अल्पपुण्ये निवृत्तार्थे मूढे पण्डितमानिनि । शृणु भर्तृवधं सीते धीरं वृत्रवधं यथा ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------|--|----------|--|
| अल्पपुण्ये | { புண்ணியத்தை வே ண்டுமனவு செய்வா தவளை ! | धीरं | கொடிய |
| निवृत्तार्थे | எதிர்பார்த்தவண்ண மே மறியவளை ! | वृत्रवधं | கிருத்திராகரனது |
| पण्डितमानिनि | எல்லாமறிந்தவளை ன் ற அகந்தைகொண்ட ஆசடாகிய சீதை ! | यथा | போன்ற [வதத்தை |
| मूढे सीते | | मन्वधं | கணவன் வதைப்ப பற்றி |
| | | शृणु | (நெய்லுமெனக்கு செ வினொடுக்கும்) கேள். |

रुमायातः समुद्रान्तं मां हन्तुं किल राघवः । वानरेन्द्रप्रणीतेन बलेन महता वृतः ॥ २१ ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------------------|-------------|-------------------|
| राघवः | " ராமன் | महता | பெரும் |
| मां किल | என்கையே | बलेन | சேனையால் |
| हन्तुं | கொல்ல | वृतः | குழப்பட்டவனால் |
| वानरेन्द्रप्रणीतेन | வானரனால் கடத்தி வரப்பட்ட | समुद्रान्तं | சமுத்திரக்கரைக்கு |
| | | समायातः | வந்துசென்றான். |

स निविष्टः समुद्रस्य पीड्य तीरमथोत्तरम् । वलेन महता रामो ब्रजत्यस्तं दिवाकरे ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-------------|------------------|
| ச: | அந்த | उत्तरं तीरं | வடக்குக் கரையில் |
| रामः | ராமன் | महता | பெரும் |
| दिवाकरे | சூரியன் | वलेन | சைனியத்தால் |
| अस्तं मत्रति | அஸ்தமிக்கிற சூரியன் | पीड्य अथ | முற்றுக்காரிட்டு |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது | निविष्टः | தங்கினான். |

अथाध्वनि परिश्रान्तमर्धरात्रे स्थितं वलम् । सुखमंसुप्रपासाद्य चारितं प्रथमं चरैः ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|---------|-----------------------|
| अथ | “ அப்பொழுது | स्थितं | இருந்த |
| अध्वनि | வழிநடந்து | वलं | சேனியானது |
| परिश्रान्तं | இளைப்புற்று | प्रथमं | முதலில் |
| अर्धरात्रे | பாதிராத்திரியில் | चरैः | ஒற்றர்களால் |
| सुखसंसुप्तं | மெய்யறந்து வித்தி சாசெய்துகொண்டு | आसाद्य | கிட்டி |
| | | चारितम् | கொடி பார்க்கப்பட்டது. |

तत्पहस्तप्रणीतेन वलेन महता मम । वलमस्य इतं रात्रौ यत्र रामः सलक्ष्मणः ॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------------|---------------|
| रामः | “ ராமன் | प्रहस्तप्रणीतेन | பிரகஸ்தனான் |
| सलक्ष्मणः | சலக்ஷ்மணனாடன் | | நடத்தப்பெற்ற |
| यत्र | எங்கிருந்தானோ அவ் | मम | எனது |
| रात्रौ | இரவில் [விடத்தில்] | महता | பெரும் |
| अस्य | இவனது | वलेन | சைனியத்தால் |
| तत् | அந்த | हलम् | மடியச்செய்யப் |
| वलं | சேனை | | பட்டது. |

पट्टिशान्परिघांश्चक्रान्दण्डान्बद्धान्महायसान् । बाणजालानि शूलानि भास्वरान् कूटमुद्गरान् ॥

यष्टीश्च तोमराञ्छक्त्याश्चक्राणि सुसलानि च । उद्यम्योद्यम्य रक्षोभिर्वानरेषु निपातिताः ॥

| | | | |
|--------------|---|-----------------|------------------------------|
| पट्टिशान् | “ பட்டி க்கத்திசனையும் | यष्टीः | கத்திசனையும், |
| परिघान् | உழலைத்தடிசனையும், | तोमरान् | தோமரக்களையும் |
| चक्रान् | சிறிய சக்கிரக்களையும் | शक्तीः | வேலாயுதக்களையும் |
| दण्डान् | தடிசனையும், | चक्राणि च | பெரிய சக்கிரக்களையும் |
| बद्धान् | கத்திக்களையும், | | யும் |
| महायसान् | பெருமிருப்புத்தடி களையும், | सुसलानि च | உலக்கைகளையும் |
| बाणजालानि | பாணவரிசைகளையும் | उद्यम्य उद्यम्य | துக்கித்துக்கி |
| शूलानि | நுலக்களையும் | वानरेषु | வானர்கள்மீது |
| भास्वरान् | ஒளிர்விறந்த | रक्षोभिः | அரக்கர்களால் |
| कूटमुद्गरान् | { இருப்புப்பூண்ட முக்காடுமென்னும் ஆயுதங்களையும் | निपातिताः | (அவைகளை) கீழ்த்தப் பட்டன. |

अथ सुप्तस्य रामस्य प्रहस्तेन प्रमाथिना । असक्तं कृतहस्तेन शिरश्छिन्नं महासिना ॥२७॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|---------|---------------------------------|
| अथ | "அப்பொழுது | रामस्य | ராமனது |
| प्रमाथिना | யாரையும் கதறவடிக்கும் | शिरः | தலையானது |
| कृतहस्तेन | வைதேர்ந்த | महासिना | பெருக்கத்தியால் |
| प्रहस्तेन | ப்ரஹஸ்தனால் | असक्तं | இடைபூறுக்கிடம் கொடாதபடி. |
| सुप्तस्य | நன்றாகத் தூங்கிக் கொண்டிருந்த | छिन्नम् | வெட்டி, த்தள்ளினிடப் பட்டது. |

विभीषणः समुत्पत्य निगृहीतो यहच्छया । दिशः प्रवाजितः सर्वैर्लक्ष्मणः पुत्रगैः सह ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|--------------------------|
| विभीषणः | "விபிஷணன் | पुत्रगैः | வானரர்கள் |
| समुत्पत्य | மேல் விழுந்து தாக்கி | सर्वैः सह | எல்லாரோடும் கூட |
| यहच्छया | தற்செயலாய் | दिशः | தாரதேசத்திற்கு |
| निगृहीतः | கிணறப்படுத்தப்பட்ட. | प्रवाजितः | தூரத்திவிடப் பட்டான். |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணன் [டான். | | |

सुग्रीवो ग्रीवया सीते भग्नया पुत्रगाधिपः । निरस्तहनुकः शेते हनुमान् राक्षसैर्हतः ॥२९॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|---------------------------|
| सीते | "சீதாய்! | शेते | கெட்டுந்துயில் கொண்டு |
| पुत्रगाधिपः | வானரமன்னனாகிய | हनुमान् | ஹனுமான் [விட்டான். |
| सुग्रीवः | சுகரீவன், | निरस्तहनुकः | கன்னம் முறிந்தவனுய் |
| भग्नया | முறிந்த | राक्षसैः | அரக்கர்களால் |
| ग्रीवया | கழுத்துடன் | हतः | கொல்லப்பட்டு விட்டான். |

जाम्बवानथ जानुभ्यामुत्पतन्निहतो युधि । पट्टिशैर्वहुभिश्छिन्नो निकृत्तः पादपो यथा ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-----------|----------------------------------|
| युधि | "போலில் | छिन्नः | வெட்டப்பட்டு |
| जानुभ्यां | இரு முழங்கால்களையு | निकृत्तः | வெட்டி வீழ்த்தப் |
| उत्पतन् | தாக்கும் [கொண்டு | पादपः यथा | மரமென [பட்ட |
| जाम्बवान् अथ | ஜாம்பவானும் | निहतः | கொன்று சாய்த்து விடப்பட்டான். |
| बहुभिः पट्टिशैः | பலபட்டாக்கத்திகளால் | | |

मैन्द्रश्च द्विविदश्रोभौ निहतौ वानरर्षभौ । निश्वसन्तौ रुदन्तौ च रुधिरेण परिपुतौ ॥

असिना व्यायतौ छिन्नौ मध्ये हरिनिपूदनौ ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|--------------|----------------------------------|
| व्यायतौ | "மகாசக்திமாக்களும், | असिना | கத்தியால் |
| अरिनिपूदनौ | சந்துருசய் ஹாரகர்க ளும் | छिन्नौ | வெட்டப்பட்டவர்க |
| वानरर्षभौ | வானரோத்தமர்களு மான | रुधिरेण | ரத்தத்தால் [ளாய் |
| मैन्द्रः च | மைந்தனென்பவனும் | परिपुतौ | பூசப்பட்டவர்களாய் |
| द्विविदः च | துவிதனென்பவனு | रुदन्तौ | அழுதுகொண்டு |
| उभौ हि | இருவர்களும் [மான | निश्वसन्तौ च | பெருமூச்சு கிடுகின்ற வர்களாய் |
| मध्ये | இடையிலே | निहतौ | கொன்று வீழ்த்தப் பட்டார்கள். |

अनुतिष्ठति मेदिन्यां पनसः पनसो यथा

॥ ३२ ॥

पनसः "பனஸன்

पनसः यथा

பலாப்பழமென

मेदिन्यां பூயிரவில்

பின வுண்டு

अनुतिष्ठति

கிடக்கிறான்.

नाराचैर्बहुभिश्छिन्नः शेते द्रवीं दरीमुखः

॥ ३३ ॥

दरीमुखः "தரிமுகன்

छिन्नः

தூண்டிக்கப்பட்டவ

बहुभिः பல

द्रवीं

பன்னத்தாக்கில் [ரூய்

नाराचैः नाराच பாணங்களால்

शेते

விழுந்திடக்கின்

ரூன்.

कुमुदस्तु पहातेजा निष्कूजः सायकैः कृतः

॥ ३४ ॥

महातेजा "மகா ஆற்றலுடைய

निष्कूजः

பேச்சுமூச்சு ஒழிந்த

कुमुदः तु குமுதலும்

வனாக

सायकैः பாணங்களால்

कृतः

செய்யப்பட்டான்.

अद्भुदो बहुभिश्छिन्नः शरैरासाद्य राक्षसैः ।

पतितो रुधिरोद्दारी क्षितौ निपतिताद्भुदः ॥

अद्भुदः "அங்கதன்

निपतिताद्भुदः

தோள்வளைகள் சிதறி

राक्षसैः ஆரக்கர்களால்

க்கிடக்க

आसाद्य கிட்டி

रुधिरोद्दारी

இரத்தத்தை கக்கிக்

बहुभिः பல

கொண்டு

शरैः பாணங்களால்

क्षितौ

பூயிரில்

छिन्नः தூண்டிக்கப்பட்டவ

पतितः

விழ்த்தப்பட்டான்.

ரூய்

हरयो मथिता नागै रथजातैस्तथाऽपरे । शायिता मृदिताश्चाश्वैर्वायुवेर्गैरिवाम्बुदाः ॥ ३६ ॥

तथा "ஆப்பாடியை

वायुवेर्गैः

புவற்காற்றுகளால்

अपरे மற்றுமுள்ள

अम्बुदाः

மேகங்கள்

हरयः வானர்கள்

इव

போலவே,

नागैः யானைகளாலும்

मृदिताः

தூசைக்கப்பட்டு

रथजातैः ரதவரிசைகளாலும்

मथिताः

கொல்லப்பட்டு

अश्वैः च குதிரைகளாலும்,

शायिताः

படுக்கச்செய்யப்பட்

டார்கள்.

महताश्वापरे व्रस्ता हन्यमाना जघन्यतः । अभिद्रुतास्तु रक्षोभिः सिंहैरिव महाद्विपाः ॥

व्रस्ताः "பயந்தாகிடந்த

अभिद्रुताः

தாத்தப்பட்டவர்

अपरे மந்தவர்கள்,

களாய்

सिंहैः சிக்கக்கொளல்

जघन्यतः

பின்பக்கங்களில்

महाद्विपाः பெரும் யானைகள்

महताः च

புடைக்கப்பட்டவர்

களாய்

इव போலவே,

हन्यमानाः

கொல்லப்பட்டார்

रक्षोभिः

ஆரக்கர்களால்

கள்.

सागरे पतिताः केचित्केचिद्गगनमाश्रिताः । कक्षा वृक्षानुपारूढा वानरीं वृत्तिमाश्रिताः ॥

| | | | |
|----------|---------------------------|----------|--------------------------|
| केचित् | “ கிலர் | कक्षाः | கரடிகள் |
| सागरे | சமுத்திரத்தில் | वानरीं | வானரர்கள் து |
| पतिताः | விழுந்த மூண்டார் | वृत्ति | செய்கையை |
| केचित् | கிலர் [கள். | आश्रिताः | ஆளுக்படித்தவர்களாய் |
| गगनं | ஆகாசத்தில் | वृक्षान् | மரங்களில் |
| आश्रिताः | கிளம்பி ஓடி விட்டார் கள். | उपारूढाः | ஏறிக்கொண்டுவிட்ட டர்கள். |

सागरस्य च तीरेषु शैलेषु च वनेषु च । पिङ्गलास्ते विरूपाक्षैर्बहुभिर्बहवो हताः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|---------------------------|
| सागरस्य | “ சமுத்திரத்தினது | बहवः | பல |
| तीरेषु | கரைகளிலும் | पिङ्गलाः च | வானரர்களும் |
| शैलेषु च | மலைகளிலும் | बहुभिः | பல |
| वनेषु च | வனங்களிலும் | विरूपाक्षैः | அரக்கர்களால் |
| ते | அந்த | हताः | கொல்லப்பட்டுவிட்ட டர்கள். |

एवं तव हतो भर्ता ससैन्यो मम सेनया । क्षतजादौ रजोध्वस्तपिदं चास्याहृतं शिरः ॥४०॥

| | | | |
|---------|------------------------|------------|----------------------------|
| मम | “ எனது | क्षतजादौ | குதுதிவழிந்ததும் |
| सेनया | சேனையால் | रजोध्वस्तं | புழுதிபடிந்ததுமாகிய |
| तव | உனது | अस्य | இவனது |
| भर्ता | கணவன் | शिरः च | தலையும் |
| ससैन्यः | சைனியக்களோடுகூட | इदं | இதோ |
| एवं | இப்படியாய் | आहतम् | கொண்டுவரப்பட்டிருக்கிறது.” |
| हतः | கொல்லப்பட்டுவிட்ட டன். | | |

ततः परमदुर्धर्षो रावणो राक्षसाधिपः । सीतायामुपभृण्वन्त्यां राक्षसीमिदमववीत् ॥ ४१ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------------|---------------------|
| ततः | அதன்பிறகு | सीतायां | வரிதை |
| परमदुर्धर्षः | மகா முரடனாகிய | उपभृण्वन्त्यां | கேட்கும்படி |
| राक्षसाधिपः | ராக்ஷஸமன்னனாகிய | राक्षसी | ஓர் அரக்கியைப் பார் |
| रावणः | ராவணன் | इदं | பின்வருமாறு [த்து |
| | | अववीत् | ஆக்ஞாபித்தான் : |

राक्षसं क्रूरकर्माणं विद्युज्जिह्वं त्वमानय । येन तद्राघवशिरः संग्रामात्स्वयमाहतम् ॥ ४२ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|----------------|---------------------|
| येन | “ எவனால் | क्रूरकर्माणं | கடுந்தொழிப்புரியும் |
| तत् | அந்த | विद्युज्जिह्वं | வித்யுஜ்ஜிஹ்வனென்ற |
| राघवशिरः | ராமன் தலை | | |
| संग्रामात् | போர்க்களத்திலிருந்து | राक्षसं | அரக்களை |
| स्वयं | தேரில் | त्व | நீ |
| आहतं | கொண்டுவரப்பட்டிருக்கிறது, அந்த | भानय | அழைந்துவா. |

विच्युजिह्वस्ततो वृष शिरस्तत्सशरासनम् । मणावं शिरसा कृत्वा रावणस्याग्रतः स्थितः ॥

| | |
|--------------|-----------------------|
| ततः | அதனுல் |
| विच्युजिह्वः | வித்யுஜிஹ்வன் |
| वृष | அந்த |
| शिरः | தலைமைய |
| सशरासनं | வில்லுடன் கூட |
| वृष | ஊரில் வைத்துக் கொண்டு |

| | |
|---------|-----------------|
| रावणस्य | ராவணனுக்கு |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| मणासं | மணஸ்காரத்தை |
| कृत्वा | செய்துவிட்டு, |
| अग्रतः | முன்னிலையில் |
| स्थितः | காத்தூரின்றான். |

तमवधीत्ततो राजा रावणो राक्षसं स्थितम् ।

| | |
|----------------|----------------------------|
| ततः | அப்போழுது |
| रावणः राजा | ராவணமன்னன் |
| महाजिह्वं | நீண்ட கரக்குடைய, |
| समीपपरिवर्तिनं | முன்னிலையில் வந்து சென்றது |

विच्युजिह्वं महाजिह्वं सर्पापपरिवर्तिनम् ॥

| | |
|--------------|-------------------|
| स्थितं | காத்தூரின்றுகொண் |
| ते | அந்த [அந்த, |
| विच्युजिह्वं | வித்யுஜிஹ்வ |
| | சென்ற |
| राक्षसं | அரக்கனைப்பார்ந்து |
| अवधीत् | கட்டளைபிட்டான்: |

अग्रतः कुरु सीतायाः शीघ्रं दाशरथेः शिरः । अवस्थां पश्चिमां भर्तुः कृपणा साधु पश्यतु ॥

| | |
|------------------|---------------|
| दाशरथेः शिरः | “ராமனது தலையை |
| शीघ्रं | காலதாமதமின்றி |
| सीतायाः | சிதைவினது |
| अग्रतः | முன்னிலையில் |
| कुरु | ஊர, |
| भर्तुः | கணவனது |
| पश्चिमां अवस्थां | மரணநகையை |

| | |
|--------|---|
| कृपणा | { தன்னால் துளிசெய்யக் கூடியதொன்றுமில்லாதவென்று உணர்ந்தவளாய் அவள் சந்தேகமற |
| साधु | (முத்யகூந்தில்) |
| पश्यतु | பார்க்கட்டும்.” |

एवमुक्तं तु तद्रक्षः शिरस्तत्पियदर्शनम् । उपनिक्षिप्य सीतायाः क्षिप्रपन्तर्यायत ॥४६॥

| | |
|-----------|-------------------|
| एवं | இவ்வாறும் |
| उक्तं | நிவமனம்பெற்ற |
| तत् | அந்த |
| रक्षः | அரக்கன் |
| तु | அப்போது |
| पियदर्शनं | அழகுற்று விளங்கிய |

| | |
|-------------|------------------|
| तत् | அந்த |
| शिरः | தலைமைய |
| सीतायाः | சிதைவினது |
| उपनिक्षिप्य | தன்முன் வைத்து |
| क्षिप्रं | தகவரென [விட்டு |
| अन्तर्णीयत | மறைத்துவிட்டான். |

रावणश्चापि चिक्षेप भास्वरं कार्मुकं महत् । त्रिषु लोकेषु विख्यातं सीतापिदमुवाच च ॥

| | |
|---------------|------------------------------|
| रावणः | ராவணன் |
| त्रिषु लोकेषु | மூவுலகங்களிலும் |
| विख्यातं | பிரசித்திபெற்றதும், |
| महत् | பூஜார் நமமானதும், |
| भास्वरं च | ஒளிசெய்க்கு விளங்குகிறதானால் |
| कार्मुकं | கொதண்டத்தை |

| | |
|---------|------------------------------------|
| चिक्षेप | { உன் கைமெடுத்து வைத்துக்கொண்டான். |
| अपि च | அதற்கொன் |
| सीतां | சிதைவினையப்பார் |
| रं | பின்வருமாறு [ந்து |
| उवाच ह | மொழிந்தான்: |

इदं तच्च रामस्य कार्मुकं ज्यासमायुतम् । इह महस्तेनानांतं हत्वा तं निशि मानुषम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|---------|----------------|
| इदं | "இது | निशि | இரவில் |
| तच्च | உனது | हत्वा | கொன்றுவிட்டு |
| रामस्य | ராமனது | इह | இப்பொழுது |
| ज्यासमायुतं | நானேற்றப்பட்ட | तच्च | அது |
| कार्मुकं | கோதண்டம். | महस्तेन | பிரஹஸ்தனால் |
| मानुषं | மானிடனாகிய | आनीतम् | கொண்டுவரப்பட்ட |
| तं | அவனை | | டிருக்கிறது." |

स विद्युजिह्वेन सहैव तच्छिरो धनुश्च भूपौ विनिकीर्य रावणः ।
विदेहराजस्य सुतां यशस्विनीं ततोऽब्रवीत्तां भव मे वशानुगा ॥ ४९ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|-------------------|
| सः | அந்த | ततः | அதன்மேல் |
| रावणः | ராவணன் | विदेहराजस्य | விதேஹமன்னரது |
| विद्युजिह्वेन | வித்யுஜிஹ்வேன | यशस्विनीं | மகாபுகழ்படைத்த |
| सहैव | கூடவே | सुतां | புதல்விபாகிய |
| तत् | அந்த | तां | அவளைப்பார்த்து |
| शिरः | தலையையும் | मे | "எனக்கு |
| धनुः च | கிலையையும் | वशानुगा | ஆடக்கி நடக்கிறவ |
| भूमौ | தரையில் | भव | ஆகிவிடு" என்று |
| विनिकीर्य | விசுத்தள்ளிவிட்டு | अबवीत् | கொல்லிமுடித்தான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकत्रिंशः सर्गः ॥

आदित. लोकाः 15864

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1189



द्वात्रिंशः सर्गः—முப்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ३२ ॥

सीताविलापः—ஸீதா விலாபம்.

सा सीता तच्छिरो दृष्ट्वा तच्च कार्मुकमुत्तमम् । सुर्यावर्षातिसंसर्गमाख्यातं च हनूमता ॥
नयने मुखवर्णं च भर्तुस्तत्सदृशं मुखम् । केशान्केशान्तदेशं च तं च चूडामणिं शुभम् ॥
एतैः सर्वैरभिज्ञानैरभिज्ञाय सुदुःखिता । विजगद्दंष्ट्र कैकेयीं काशन्ती कुररी यथा ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------|--------------|----------------|----------------------------|
| सा | அந்த | कार्मुकं च | கோதண்டத்தையும் |
| सीता | வீதாதேவியார் | हनूमता | ஹனுமாரால் |
| तत् | அந்த | आख्यातं | தெரிவிக்கப்பட்ட |
| शिरः | தலையையும் | सुर्यावर्षाति- | சூரியனது பக்கிரின் |
| तत् | அந்த | संसर्गं च | |
| उत्तमं | உத்தமமான | | பயனால் விளைந்த கடந்தவையும் |

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|------------------|
| நயநே | கண்களிரண் ணையும் | சீயி: | எல்லா |
| சுலவரீ ச | முதத்தின் ஓளியை | அபிஜானி: | அடையாளங்களால் |
| | யும் | அபிஜாய | நம்பி, |
| நயநே | அதற்கே கடாசிய | சுரு:சிவா | மிக்கமனம் கொந்தவ |
| அரு: | கணவாறு | | ளாகி, |
| சுல | முதத்தையும் | குரீ | அமுதூரல் இன்றில் |
| கேசானு | கொக்களையும் | யயா | போலவே |
| கேசானுவதேச ச | கெற்றியையும் | கோசனி | அமுசின் தவராய் |
| தீ | அந்த | அச | இவ்விவரத்தில் |
| சும | அழகிய | கேயி | கைகேயிதெய்வகரப் |
| சூதாமரி ச | சூடாமணியையும் | | பற்றி |
| சூதா | கவனித்து. | விஜயி | பிணகண்டபடி மணக் |
| சூதி: | இந்த | | குதையற்றான். |

சகாமா பவ கீகேயி ஹதோச்ய் குலநந்ந: | குலமுரஸாதித் சர்வ் நவயா கலஹ்ஷாலயா ||

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|-------------------|
| கீகேயி | "கைகேயி! | குலம் | குலம் |
| சகாமா | உத்தேசம் சிதைவேறி | சர்வ் | எல்லாமும் |
| | னவளாக | கலஹ்ஷாலயா | கலகமொன்றையே |
| பவ | ஆகு | | கொழிலாகவுடைய |
| குலநந்ந: | குலவிளக்காகும் | நவயா | உம்மால் |
| அச்ய் | இவர் | ஹஸாதிசம் | வேகுடனழிக்கப்பட்ட |
| ஹத: | கொல்லப்பட்டார். | | டது. |

ஆரீயேண கித் தே கீகேயி க்ருத் ராமேண விபிரயம் | யந்நயா சீரவசநஸ்தவயா பஸ்யாபிதா வநம் ||

| | | | |
|-----------|--------------------|--------|----------------------|
| கீகேயி | "கைகேயி! | விபிரய | அடாத காரியம் |
| யந் | எக்காரணத்தால் | தே | உமக்கு |
| நவயா | உம்மால் | ஆரீயேண | { எல்லாதர்மங்களிலும் |
| சீரவசந: | மரவுரியணிக் தவராய் | | { எக்காலத்திலும் வழு |
| வந் | காட்டிற்கு | | { காது நடக்கும் |
| மயா | என்றேனுதி | ராமேண | பூராமால் |
| பஸ்யாபித: | அனுப்பப்பட்டாரோ | க்ருத் | செய்யப்பட்டது |
| | அப்படிப்பட்ட | கிம் | என்ன? |

ஏவயுக்தவா து வேதேஹி வேபமானா தபஸ்தினி | ஜகாம ஜகரீ வாஜா திந்நா து கதலி யயா ||

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|-------------------|
| வாலா | மதறா பரிசுத்தையும் | உக்தவா து | கொல்லிகிட்டு |
| தபஸ்தினி | மதறா கந்ததகையிலி | திந்நா | கெட்டப்பட்ட |
| | ருக்கிறவளுமொன | கதலி | வாகழமாம் |
| வேதேஹி து | ஜானகிதெய்வாரும் | யயா | போலவே |
| வேபமானா | உடல் நடுக்கி | ஜகரீ | பூமியில் |
| ஏவ் | கொற்கண்டவாறு | ஜகாம | கிழுக்துகிட்டான். |

सा सुहृत्समाश्वस्य प्रतिलभ्य च चेतनाम् ।

பாஸ்தேஷ்ணா
சா
சுஹ்ர்தாஹ்
சமாஸ்வஸ்ய
சேதநாம் ச

செடுக்கக் கண்ணாரண
அவள்
சிறிதுகூட சந்திந்துள்
மூர்க்கை தெளிந்து
தன்னறிவையும்

तच्छिरः समुपाघ्राय विललापायतेक्षणा ॥

பதிலப்ய
நர் சிர:
சமூபாஹ்ய
விலலாப
அடைந்து
அந்தத் தலையை
முகூத்து
பின்வருமாறு புலம்பி
அழுதாள்:

हा हताऽस्मि महाबाहो वीरव्रतमनुव्रत । इमां ते पश्चिमावस्थां गताऽस्मि विधवा कृता ॥

மகாபாஹு
வீரவ்ரத்
அநுவ்ரத்

“மகாபாஹுவே!
போரில் வீரனுயிருக்
கும் வீரமொன் னற
யே கைக்கொண்ட
வரே!

ते
इमां
पश्चिमावस्थां
गता अस्मि
विधवा कृता

தேவரீரது
இந்த
மரணத்திதியை
பார்த்தவளாகி
தேனே!

हा हता अस्मि
प्रथमं मरणं नार्या भर्तुर्वैशुण्यमुच्यते ।

அந்தோ!
நான் கெட்டேனே!

विधवा कृता
कणवनिपिपुक्कप
பெற்றேனே!

सुवृत्त साधुवृत्तायाः संवृत्तस्त्वं मयाघतः ॥ ९ ॥

भर्तुः
प्रथमं
मरणं
नार्याः
वैशुण्यं
उच्यते

“கணவனுக்கு
முதலில்
மரணமென்பது
மனை வியினுடைய
புண்ணியபாக்கியத்
தின் குறையென
சாஸ்திரங்களில் சொ
ல்லப்பட்டிருக்கிறது.

सुवृत्त
त्व
साधुवृत्तायाः
मम
अघतः
संवृत्तः

மகர புண்ணியாத்
மாவே!
தேவரீர்
தர்மானுஷ்டான
முடைய
அடியானுக்கு
முந்தியே
போய்விட்டார்.

दुःखादुःखं मयन्नाया मन्नायाः शोकसागरे । यो हि मामुद्यतस्त्रातुं सोऽपि स्वं विनिपातितः॥

दुःखार्
दुःखं
मयन्नायाः
शोकसागरे
मन्नायाः
मां

“துக்கத்தின்மேல்
துக்கத்தை
அடைந்து
சோகசாகரத்தில்
முழுகிக்கிடக்கையில்
அடியானே

यः
वातुं
उद्यतः हि
सः
त्वं अपि
विनिपातितः

எவரொருவர்
தூக்கிவிட
யத்தனித்தாரோ
அந்த
தேவரீரும்
ஒழித்து விடப்பட்டார்.

सा श्वश्रूमम कौसल्या त्वया पुत्रेण राघव ।

ராவ்
புத்ரேண த்வயா
மம
ஷ்ஷூ:
வஸஸா
सा

“ஸ்ரீராமா!
புதல்வராகிய தேவரீ
எனக்கு [ரால்,
மாமியாரும்,
நினைவெல்லாம் புத்தி
ரண்மீதே உள்ளவ
அந்த [குமான்

वत्सेनेव यथा धेनुर्विवत्सा वत्सला कृता ॥

कौसल्या
धेनुः
वत्सेन यथा इव
विवत्सा
कृता

கொச்சைதேவியார்
ஒரு பசு
கண்ணைகிட்டுப் பிரிக்க
ப்பட்டா வெவ்வண்ண
மே அவ்வண்ணமே
ஒரே பிள்ளையுபிழந்
தவளாக
செய்யப்பட்டனள்.

आदिष्टं दीर्घमायुस्ते यैरचिन्त्यपराक्रम । अनृतं वचनं तेषामत्यायुरसि राघव ॥ १२ ॥

அகிந்ய- } "மனக்கூறுமும் (இவ்வ
பராகரம } னவெனவும் இத்தன்
மைவதெனவும்) அநி
யமுடிவாத பராக்கிர
மம் பெற்ற

राघव श्रीराम!
अथायुः ஆற்ப ஆயுளுள்ள
असि இருக்கின்றீர் [வராய்

ते तेवरीरुக்கு
दीर्घं தீர்க்கமான
आयुः ஆயுளுள்ள
यैः எவர்களால்
आदिष्टं முன் கூறப்பட்டதோ
तेषां அவர்களைய
वचनं வாக்கு
अनृतम् பொய்யாக முடிந்தது.

अथवा नश्यति मज्ञां मज्ञस्यापि सतस्तत्र । पचत्येनं यथा कालो भूतानां प्रभवो ह्ययम् ॥

सतः "புண்ணியா த்மாவும்
मज्ञस्य मज्ञा துண்ணறியா
வருமாறிய

तव अति தேவீரூக்கும்
मज्ञा முன்னெச்சரிக்கை
* என்பது

नश्यति இல்லாதிருந்திருக்க
* இறந்து;

अथवा இது ஒரு ஆச்சரியம்
இல்லை.

यथा ஏனென்றால்
भूतानां பிராணிகளுக்கு
प्रभवः எனதவும் விளைவிக்கிற
अयं இந்த
कालः ஸர்வேச்வரன்
एनं இந்த
दि தேவீரையும்
पचति அனுபவிக்கச்

செய்கிறார்.

अदृष्टं मृत्युमापन्नः कस्मात्त्वं नयशास्त्रवित् ।

नयशास्त्रवित् { "சாதுகந்திரக்களைப்
பந்திய சாஸ்திரக்க
ளில் சிபுணரும்

व्यसनानां ஸம்பவிக்கக்கூடிய
ஆபத்துக்களை

वर्जने வினையாதபடி விலக்
கும் விஷயத்தில்

उपायज्ञः உபாயங்களை ஆறீந்த

व्यसनानामुपायज्ञः कुशलो ह्यसि वर्जने ॥

कुशलः சாமர்த்தியசாலியுமா
त्वं தேவரீர் [கிய
कस्मात् द्वि எக்காரணத்தால்
தரவே

अदृष्टं ஐரக்கிரமதபுடன்
தவிர்க்கக்கூடிய

मृत्युं மரணத்தை

आपन्नः असि அடைந்தவராகின்றீர்.

तथा त्वं संपरिष्वज्य रौद्रयाऽतिवृशंसया । कालरात्र्या ममाच्छिद्य हतः कमललोचनः ॥

कमललोचनः "சரணாக் கண்ண
ராகும்

त्वं தேவரீர்

तथा ஆப்படியிருப்பதால்

रौद्रया கொடியவனும்

अतिवृशंसया மகிரக்காயில்லாதவளு
ளாகிய

कालरात्र्या { எமனது உடன்பிறந்
தாளாகிய (காலராத்
திரிஎன்பவனால்,

मम என்னிடமிருந்து

आच्छिद्य பிரித்துவிட்டு

संपरिष्वज्य நன்கு தழுவிக்கொ
ண்டு

हतः கொண்டுபோகப்பட்டு
விட்டார்.

उपशेषे महाबाहो मां विहाय तपस्विनीम् । प्रियामिव शुभां नारीं पृथिवीं पुरुषर्षभ ॥

महाबाहो "மகாபாகுவே!
पुरुषर्षभ புருஷோத்தம!
तपस्विनी பதினையக்காணாது கத
प्रियां தர்மபத்னியாகிய[றும்
मां அடியாளே

विहाय துறந்து
शुभां பாக்கியசாலியாகிய
पृथिवीं नारीं நிலமகளை
उपशेषे इव ஏற்றுக்கொண்டிருக்க
கின்றின்போலும்.

अर्चितं सततं यन्नाहन्धमाल्यैर्मया तव । इदं ते मत्प्रियं वीर धनुः काञ्चनभूषणम् ॥१७॥

वीर "நாதா!
ते தேவரீருக்கும்
मत्प्रियं எனக்கும் செல்வமா
काञ्चनभूषणं பொன்னுலலங்கரிக்கப்
பெற்றதும்

गन्धमाल्यैः சந்தனபுகழ்பாதிச
यज्ञान् பக்தியுடன் [எால்
सततं எப்பொழுதும்
अर्चितं அர்க்கிக்கப்பட்டது
तव தேவரீரது [மான
धनुः கோதண்டம்
इदम् இது.

पिता दशरथेन त्वं श्वशुरेण ममानघ । सर्वैश्च पितृभिः सार्धं नूनं स्वर्गे समागतः ॥१८॥

अनघ "பாபங்களை நினைவா
पिता தந்தையும் [தவரே!
मम எனது
श्वशुरेण மாமனான
दशरथेन தசாதரோடும்

पितृभिः பிதருக்கள்
सर्वैः च सार्धं எல்லோருடனும் கூட
स्वर्गे ஸ்வர்க்கத்தில்
त्वं தேவரீர்
समागतः नूनम् கோர்ந்துண்டீரோ?

दिवि नक्षत्रभूतस्त्वं महत्कर्मकृतां प्रियम् । पुण्यं राजपिवंशं त्वमात्मनः समुपेक्षसे ॥१९॥

दिवि "ஆகாசத்தில்
त्वं தேவரீர்
नक्षत्रभूतः நக்சத்திர உருவங்
கொண்டுள்ளீயர்.

आत्मनः தேவரீருடையதும்
पुण्यं பரிசுத்தமானதும்
प्रियं கிடைத்ததற்கரியது
[மான

महत्कर्मकृतां { மகத்தான புண்ணிய
கர்மங்களைப் புரிந்த
வர்களுடையவும்

राजपिवंशं ராஜரிஷிசூலத்தை
त्वं தேவரீர்
समुपेक्षसे அசட்டைசெய்கிறீர்.

किं मां न प्रेक्षसे राजन्किं मां न प्रतिभाषसे । बालां बाल्येन संप्राप्तां भार्यां मां सहचारिणीम् ॥

राजन् "என்னரே!
मां என்னை
किं ஏன்
प्रेक्षसे न கண்ணெடுத்தும் பா
ராதிருக்கின்றீர்?
बाल्येन संप्राप्तां இளமைப்பருவமுற்ற
बालां பேதைமையாகிய

मां என்னிடம்
सहचारिणीं { எக்கரமியங்களுமும்
கூடவேரெருந்து கூட
த்தவேண்டிய
भार्या தர்மபத்னியாகிய
मां என்னிடம்
किं ஏனே
न प्रतिभाषसे மறுமொழி கூறுதிருக்
கின்றீர்?

संश्रुतं गृह्यता पाणि चरिष्यामिति यत्त्वया । स्मर तन्मम काकुत्स्थ नय मामपि दुःखिताम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|----------------------|
| पाणि गृह्यता | "பணங்கொண்ட | तत् | அதை |
| त्वया | தேவரீரால் | स्मर | நினைவுகூர்த்தருளும். |
| चरिष्यामि | 'வதைபும்கடவே | काकुत्स्थ | கருந்த குலத்தவரே ! |
| इति | என்று [செய்வேன்.] | दुःखितां | பிரிவால் துயருறும் |
| यत् | எது | मां अपि | என்னையும் |
| मम | அடியானுக்கு | नय | அழைத்துக்கொள் |
| संश्रुतं | வாக்களிக்கப்பட்ட | | |

தேர

கிராக.

कस्मान्मामपहाय त्वं गतो गतिमतां वर । अस्माद्धोकादमुं लोकं त्यक्त्वा मामपि दुःखिताम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------|---------------------|
| गतिमतां वर | "செறிமுறையுள்ள | मां | என்னை |
| | ருன் உத்தமனே! | त्यक्त्वा अपि | மறந்தும் |
| त्वं | தேவரீர் | अस्मात् | நிந்த |
| मां | என்னை | लोकान् | லோகத்திலிருந்து |
| अपहाय | துறந்தும் | अमुं लोकं | ஸ்வர்க்கலோகத்திற்கு |
| दुःखितां | பிரிவால் துயருறும் | कस्मात् | எக்காரணத்தால் |
| | | गतः | சென் தவிட்டார்? |

कल्याणैरुचितं यत्त्वरिष्यक्तं मयैव तु । कव्यादैस्तच्छरीरं ते नूनं विपरिकुष्यते ॥ २३ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------------|----------------------|
| कल्याणैः | "உத்தமக்குறிகளால் | तत् | அந்த |
| उचितं | எல்லாரின் மணக்களை | ते | தேவரீரது |
| यत् | எதுவே [கவருகிறது | शरीरं | திருடென |
| तत् तु | ஆதலும், | कव्यादैः | மாம்ஸபகநிகளான |
| मया एव | என் ஒருவனாலேயே | | மிருகக்களால் |
| परिष्यक्तं | அணைக்கப்பெற்றது | विपरिकुष्यते नूनम् | அக்குமிக்குமிழுக்கப் |

மான்

படுகிறதே.

अग्निहोमादिभिर्यज्ञैरिष्टवानापन्नदक्षिणैः । अग्निहोत्रेण संस्कारं केन त्वं तु न लप्स्यसे ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|--------------|-------------------|
| त्वं तु | "தேவரீரும் | इष्टवान् | செய்தமுடித்தவராகி |
| आसदक्षिणैः | சுறையின்றி தகவிலை | अग्निहोत्रेण | அக்னிஹோத்திர |
| | கள் கொடுக்கப்பெற்ற | | அக்னியினால் |
| अग्निहोमादिभिः | அக்னிஹோமம் | संस्कारं | ஸம்ஸ்காரத்தை |
| | முதலான | केन | எக்காரணத்தால் |
| यज्ञैः | யாகக்களை | लप्स्यसे न | பெறாதவராகிநீர்? |

प्रयज्यामुपपन्नानां त्रयाणामेकमागतम् । परिप्रक्ष्यति कौसल्या लक्ष्मणं शोकलालसा ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------------|-------------------|
| प्रयज्यां | "வனவாஸத்தை | लक्ष्मणं | எந்தமணரைப்பா |
| उपपन्नानां | ஆண்டந்த | | ர்த்து |
| त्रयाणां | மூவர் கருக்குள் | कौसल्या | கொசலைதேவியார் |
| एकं | தனிமையாய் | शोकलालसा | சோகத்தில் மூழ்கிய |
| आगतं | மேலும் சேர்க்க | परिप्रक्ष्यति | வராகி |

விகாசிக்கப்போகிறார்.

स तस्याः परिपृच्छन्त्या वधं विप्रबलस्य ते । तव चारुवास्यते नूनं निशायां राक्षसैर्वधम् ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------|------------|---------------|
| तस्याः | “அவர் (கோசலை) | वधं | அழிவையும் |
| परिपृच्छन्त्याः | அப்படி கேட்கும் பொழுது | राक्षसैः | அரக்கர்களால் |
| सः | அவர் | निशायां | நூரலில் |
| ते | தேவரீரது | तव | தேவரீருடைய |
| मित्रबलस्य | கட்டாலிரின் வலன் யத்தின் | वधं च | மாணத்தையும் |
| | | नूनं | நிச்சயமாய் |
| | | आस्थास्यते | தெரிவிப்பார். |

सा त्वां सुप्तं हतं श्रुत्वा मां च रक्षोगृहं गताम् । हृद्येनावदीर्णेन न भविष्यति राघव ॥

| | | | |
|--------|------------------------|------------|-------------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராகவ! | रक्षोगृहं | அரக்கனது மாளிகை யில் |
| सा | அவர் (கோசலை) | गतां | சிக்கிக்கொண்டவ |
| सुप्तं | நுங்கிக்கொண் | श्रुत्वा | கேட்டு [அரகவும்] |
| त्वां | தேவரீரை [டிருந்த | हृद्येन | மன்னம் |
| हतं | கொல்லப்பட்டவர கவும் | भवदीर्णेन | உறுதி |
| मां च | எண்ணையும் | भविष्यति न | உயிர் தரியார். |

मम हेतोरनार्याया ह्यनहं; पार्थिवात्मजः । रामः सागरमुत्तीर्य वीर्यवान्गोष्पदे हतः ॥२८॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|----------|--------------------------------|
| अनार्यायाः | “அபதார்த்தமாகிய | रामः हि | ஸ்ரீராமரே |
| मम हेतोः | எனக்காக | सागरं | சமுத்திரத்தையும் |
| अनहं: | நன்மையல்லாததெ | उत्तीर्य | முற்றிலும் தாண்டி விட்டு |
| पार्थिवात्मजः | சக்கிரவர்த்தியின் திருமகனாகும் | गोष्पदे | ஒரு கிரகங்காய்க்குடைத் தில் |
| वीर्यवान् | விண்வீரகரத செய ஆற்றவருமாகிய | हतः | மாண்டார். |

अहं दाशरथेनोढा मोहात्स्वकुलपांसनी । आर्यपुत्रस्य रामस्य भार्या मृत्युरजायत ॥२९॥

| | | | |
|--------------|---|--------------|-------------------------------------|
| स्वकुलपांसनी | “தேவரீருலத்திற்கே அபதீர்த்தி கொண்டு யரும் மரன் | उदा | கலியாணம் செய்து கொள்ளப்பட்டிடன். |
| अहं | | आर्यपुत्रस्य | சர்வோத்தமமாகிய |
| दाशरथेन | ஸ்ரீராமனால் | रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு |
| मोहात् | (இப்படிப்பட்டவளை என விஷயம்) தெரிந் திராமையால் | भार्या | மனைவி |
| | | मृत्युः | எமனாய் |
| | | अजायत | வாய்த்தனள். |

नृनमन्यां मया जाति वारिं दानमुत्तमम् । याऽहमवेह शोचापि भार्या सर्वान्तिथेरिह ॥

नन्यां जाति "பூர்வகுலச் சாதியில்"
उत्तमं உக்தமஸ்தமம்
दानं தானமாதானம்
मया என்னால்
वारिं தடுக்கப்பட்டது.
नृनं அக்காரணத்தால்
इह இவ்வூழலில் தான்

सर्वान्तिथे: {எல்லாக் காலங்களிலும் தன்
या அடித்தியாய்க் கொ
भदे ண்டாடுபவருக்கு
इह பார்வைய
अय एलவே, அந்த
शोचापि நான்
இவ்வூழலில்
இப்பொழுது
தக்தலிம்க்கேதல்.

साधु पातय मां क्षिप्रं रामस्योपरि रावण । सशानय पतिं पत्न्या कुरु कल्याणमुत्तमम् ॥

रावण "ராவணு!"
रामस्य சூரமாத
उपरि உர்யபரய்
मां என்னை
क्षिप्रं துப்பொழுது
साधु சுதம்படியால்
पातय கொண்டு விழ்த்தி
अभि.

पति कணவனர
पत्न्या மனைவியோடு
समानय செல்பார்.
उत्तमं உக்தமம்
कल्याण இத்த ஒரு புண்ணிய
कुरु கட்டிக்கொள்.
इति.

शिरसा मे शिरश्चास्य कार्य कावेन योजय

मे "எனது"
शिरः சிரசை
अस्य இவரது
शिरसा சிரசோடு
कार्य உடலை
कावेन च உடலோடு

रावणानुगमिष्यापि गति भर्तुमहात्मनः ॥

योजय செல்த்தலை.
रावण ராவணு!
महात्मनः மஹாத்மனாகிய
भर्तु: கணவனின்
गति கதியை
अनुगमिष्यामि பின்பிட்டு வேகல்.

इति सा दुःखसन्तप्ता विललापाकुलेन्द्रिया । भर्तुः शिरो धनुस्तत्र सर्माक्ष्य च पुनः पुनः॥

आकुलेन्द्रिया இத்திரியக்களெல்லாம்
दुःखसन्तप्ता துக்கத்தால் பரிதவித்
सा அந்
तस अप்பொழுது
पुनः पुनः மீண்டும் மீண்டும்

भर्तुः கணவனது
शिरः தலையடி
धनुः தேவனாடத்தையம்
सर्माक्ष्य च பரித்தய்பார்த்து
इति செல்த்தலவாறு
विललाप एல்லித்தக்தலெல்.

एवं लालप्यमानायां सीतायां तत्र राक्षसः । अभिचक्राम भर्तारमनोकथं: कृताञ्जलिः ॥

एवं இவ்விதமாத
सीतायां சீதாதேவியார்
लालप्यमानायां புலம்பி அழுது
अभिक्रम: கொண்டு வருகின்றார்
भर्तारमनोकथं: பரிதவித்தார்.

राक्षसः சூரன்களும்
अभिक्रम: அழுகின்றார்
तस அவ்வி — கத்திரு
कृताञ्जलिः கைகய்ப்பிக்கொண்ட
अभिक्रम: தாதுகொடுக்கொண்ட.

विजयस्यार्यपुत्रेति सोऽभिवाद्य प्रसाद्य च । न्यवेदयदनुप्राप्तं प्रहस्तं वाहिनीपतिम् ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------------|-------------|-------------------------------------|
| आर्यपुत्र | “மகர புண்ணியாத் மா பெற்ற புகல்வரே! | च | அதன்மேல் |
| विजयस्य | ஜயம்பெற்று விளங்கு | वाहिनीपति | சேனாபதியாகிய |
| इति | என்று [வி. 34.]” | प्रहस्तं | பிரஹஸ்தனை |
| सः | அவன் | अनुप्राप्तं | வந்து காத்துநின்று |
| अभिवाद्य | ஆசிகூறி | न्यवेदयत् | கொண்டிருக்கிறவனாக |
| प्रसाद्य | உள்ளங்கூறிக் செய்து | | பின்வருமாறு தெரிய ப்படுத்தினான்: |

अमात्यैः सहितैः सर्वैः प्रहस्तः समुपस्थितः । तेन दर्शनकामेन वयं प्रस्थापिताः प्रभो ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|--------------|------------------------------|
| प्रहस्तः | “பிரஹஸ்தர் | प्रभो | பிரபுவே! |
| सहितैः | எதிரூர் சேர்க்க ஆ லோசனைபுரியும் | दर्शनकामेन | நேரில் பர்க்க விரும்பிய |
| अमात्यैः | மந்திரிகள் | तेन | அவரால் |
| सर्वैः | எல்லோருடனும் | वयं | நானும் சிலரும் |
| समुपस्थितः | வந்து காத்துநிற்கின் றார். | प्रस्थापिताः | அனுப்பப்பட்டிருக் கிறோம். |

नूनमस्ति महाराज राजभावात्क्षमान्वितम् । किञ्चिदात्ययिकं कार्यं तेषां त्वं दर्शनं कुरु ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|------------|-------------------|
| महाराज | “மகாராஜ! | किञ्चित् | ஏதோ ஒரு |
| राजभावात् | மன்னரது திருவுளத் தை எதிர்பார்த்து | कार्यं | காரியம் |
| क्षमान्वितं | தயக்கிவைக்கப்பட்ட தாயும் | अस्ति नूनं | இருக்கிறதுபோலும். |
| आत्ययिकं | உடனே செய்யவேண் டியதுமாகிய | तेषां | அவர்களுக்கு |
| | | त्वं | தேவரீர் |
| | | दर्शनं | நரிசனம் |
| | | कुरु | ஆளிப்பிராக.” |

एतच्छ्रुत्वा दशमीवो राक्षसप्रतिवेदितम् । अशोकवनिकां त्यक्त्वा मन्त्रिणां दर्शनं ययौ ॥

| | | | |
|-------------------|-------------------|------------|--------------------|
| दशमीवः | தசகண்டன் | अशोकवनिकां | அசோகவனத்தை |
| एतत् | இந்த | त्यक्त्वा | விட்டுப்புறப்பட்டி |
| राक्षसप्रतिवेदितं | ராக்ஷஸனால் சொல்ல | मन्त्रिणां | மந்திரிகளுக்கு |
| श्रुत्वा | கேட்டு, [ப்பட்டதை | दर्शनं ययौ | முண்டேரன் தினான். |

स तु सर्वं समर्थैव मन्त्रिभिः कृत्यमात्मनः । सभां प्रविश्य विदधे विदित्वा रामविक्रमम् ॥

| | | | |
|---------------|--|------------|------------------------|
| सः | அவன் | आमनः | தனது |
| सभां प्रविश्य | சபையில் புகுந்து | मन्त्रिभिः | மந்திரிமார்களைவி |
| रामविक्रमं एव | ஸ்ரீராமருடைய பராக் கிரமத்தையும் | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| | | समर्थं | ஆலோசித்துவிட்டு |
| | | कृत्यं | ஆகவேண்டிய காரியத்தை |
| विदिष्यति तु | { (தணக்குள்ளேயே) ஆராய்ந்தறிந்து கொண்டு | विदधे | நிரூபித்தான். |

अन्तर्धानं तु तच्छीर्षं तच्च कामुंरुमुत्तमम् । जगाम रावणस्यैव निर्याणसमनन्तरम् ॥४०॥

रावणस्य रावணனது
निर्याणसमनन्तरं வெளியில் செல்லுகை
க்கு பின்னாலும்,
एव ,தகவுண்டே
तत् शीर्षं அந்த தலை

अन्तर्धानं जगाम மறைந்து போயிற்று.
तत् அந்த
उत्तमं உத்தமமான
कामुंरुं तु கோதண்டமும்
च அப்படியே மறைந்து
போயிற்று.

राक्षसेन्द्रस्तु तैः सार्धं मन्त्रिभिर्भीमविक्रमैः । संमन्त्रयामास तदा रामकार्यविनिश्चयम् ॥

राक्षसेन्द्रः राசுதண்டராஜன்
भीमविक्रमैः கொடிய படை வீரர்
तैः அந்த [சாஸ்திரிகளாகிய
मन्त्रिभिः மந்திரிகளோடு
सार्धं கூட
तदा அப்பொழுது

तु இயல்பாய்
रामकार्य-) ராமர் விஷயத்தில் (செ
विनिश्चयं) ய்ப்பவேண்டிய காரிய
த்தில் தனது தீர்மானத்தை
சம்பந்தப்படுத்தி
संमन्त्रयामास கலந்து பேசினான்.

अविदूरस्थितान्सर्वान्वलाध्यक्षान्हितैपिणः । अवशीत्कालसदृशो रावणो राक्षसाधिपः ॥

कालसदृशः யமனுக்குச் சமமான
இசைய
राक्षसाधिपः ராசுதண்டமன்னனாகும்
रावणः ராவணன்,
अविदूरस्थितान् பக்கவில் இருந்தவர்
களும்

हितैपिणः { மனைக்கொண்டு நடப்ப
பதில் ஊக்கமுடைய
வர்களுமான
செனாதிபதிகள்
வல்லவர்களுடையபார்ந்து
பின் வருவாது
ஆக்கு பித்தர்கள் :

वलाध्यक्षान्
सर्वान्
अवशीत्
भवशीत्

शीघ्रं भेरीनिनादेन स्फुटकोणाहतेन मे । समानयध्वं तैन्यानि वक्तव्यं च न कारणम् ॥

मे "எனது
तैन्यानि செனைகளை
शीघ्रं உடனேயே
स्फुटकोणाहतेन உறுதியான குணில்
களால் அடிக்கப்பட்ட

भेरीनिनादेन பேரீசைகளின் பெரு
முடிக்கத்தால்
समानयध्वं நீங்கள் திட்டவிரிக
कारणं च காரணம்மட்டும்[னாக,
वक्तव्यं न சொல்லப்பட்டவெண்
டியதில்லை.

ततस्तथेति प्रतिगृह्य तद्वचो बलाधिपास्ते महदात्मनो बलम् ।

समानयध्वैव समागमं च ते न्यवेदयन्भर्तुरि युद्धकाङ्क्षिणि ॥ ४४ ॥

ततः அப்பொழுது
ते बलाधिपाः அந்த செனாதிபதிகள்
तथा 'அப்படியே செய்கி
इति என்னுடையவாழி [பேரும்
तत् वचः அந்த வியாஜை சுவை
प्रतिगृह्य கிரமேற்கொண்டு
आमनः च கன்கன்கள்

महन् बलं एव பெரும் செனையையும்
समानयन् செட்டவர்க்காரர்கள்.
समागमं च வரையையும்
युद्धकाङ्क्षिणि யுத்தத்தை விரும்பும்
भर्तुरि சமூகமானவரின்
ते அவர்கள்
न्यवेदयन् தெரிவித்தார்கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे ऋषिः सर्गः ॥

त्रयस्त्रिंशः सर्गः—முப்பத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம். || 33 ||

सीतासमाश्वासनम्—ஸீதையை சமாதானப்படுத்துவது.

सीतां तु मोहितां दृष्ट्वा सरमा नाम राक्षसी । आससादाद्यु वैदेहीं प्रियां प्रणयिनीं सखीम् ॥

सरमा नाम
राक्षसी
तु
प्रियां
प्रणयिनीं
सखीं
वैदेहीं

ஸரமை என்ற
ஆரக்கன்மனைசி
அப்பொழுது
இனியவளும்
யாவருக்குள் நிற்கத்
தைகோருபவளும்
உற்றதேதாழியும்
விதேதஹமன்னரின்
புதல்கியுமாகிய

सीतां
मोहितां
दृष्ट्वा
आसु
आससाद

சீதாதேவியை
இல்லாததை நம்பி ஏக்
கம் பிடித்திருக்கின்
றவளாய்
அறிந்துகொண்டு
தகந்ணமே
அருகில் வந்துசேர்ந்
தாள்.

मोहितां राक्षसेन्द्रेण सीतां परमदुःखिताम् । आश्वासयामास तदा सरमा मृदुभाषिणी ॥

तदा
मृदुभाषिणी
सरमा
राक्षसेन्द्रेण

அப்பொழுது
இனியசொற்கொ
ண்டு பேசும்
சரமை
ராக்ஷஸமன்னனால்

मोहितां
परमदुःखितां
सीतां
आश्वासयामास

வஞ்சிக்கப்பட்டு
அலைவறயமாய் தயரு
றும்
சீதாதேவியானா
பலவிதமாய் தேற்ற
ரவுடடுத்தினாள்.

सा हि तत्र कृता मित्रं सीतया रक्ष्यमाणया । रक्षन्ती रावणादिष्टा सानुकोशा दृढवता ॥

सा
तत्र
रावणादिष्टा
रक्षन्ती
सानुकोशा

அவள்
அல்லிடத்தில்
ராவணனால் நியமிக்க
ப்பட்ட
காவற்காரிகளில்
ஒருத்தி,
பிரன்படும் கஷ்டத்
தை சகிபாதவள்.

दृढवता
हि
रक्ष्यमाणया
सीतया
मित्रं
कृता

(கஷ்டப்படுபவர்கள்
விஷயத்தில் தன்னுள்
யன்ற உதவிபுரியும்)
உறுதிகொண்டவள்.
ஆனபடியால்
காவலினிருக்கும்
சீதாதேவியால்
(ஆபத்தில் என்கவி
டாத்) தேரழியாய்
கொன்னப்பட்டாள்.

सा ददर्श ततः सीतां सरमा नष्टचेतनाम् । उपावृत्त्यास्थितां ध्वस्तां बहवाभिव पांसुषु ॥

ततः
सा
सरमा
सखीं
सीतां
नष्टचेतनां
पांसुषु

அப்பொழுது
அந்த
ஸரமை
தோழியாகிய
ஸீதாதேவியை
கல்லறிவு இழந்த
மணல்களில் [வளாய்,

उपावृत्त्या
उस्थितां
बहवां इव
ध्वस्तां
ददर्श

புரண்டு
எழுந்த
பெண்குதிரையைப்
போலவே
தூள் படிந்திருக்கின்
றவளாய்
கவனித்தாள்.

तां समाश्वसयामास सर्वास्त्रेहेन सुवता

॥ ५ ॥

| | | | |
|-------|---|----------------|--|
| सुवता | { ஸர்வோத்திரகந்தமா ன சேரல்புடைபு அகாள் அகாளை (வலிமை, தயை) } | सर्वास्त्रेहेन | தொழியெனும் |
| तां | | समाश्वसयामास | { (அல்வாச் சதை சேரல் ளி) பின்வருமாறு தே ற்றரவு படுத்தினான்: } |

समाश्वसिहि वैदेहि मा भूते मनसो व्यथा । उक्त्वा यद्रावणेन त्वं प्रत्युक्तं च स्वयं त्वया ॥

सर्वास्त्रेहेन तर्हीरु मया सर्वं प्रतिश्रुतम्

॥ ६ ॥

लीनया गगने शून्ये भयमुत्सृज्य रावणात् । तव हेतोर्विशालाक्षि न हि मे जीवितं प्रियम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|--------------|----------------------|
| रावणेन | “ ரா வணனூல் | उत्सृज्य | பொருட்படுத்தா து |
| यत् | எதொன்று | लीनया | பதைந்துகொண்டிருக் |
| त्वं | நீ | | தவளாய் |
| उक्त्वा | சொல்லப்பட்டனை | मया | என்னால் |
| | யோ, | प्रतिश्रुतम् | சூற்றுக் கேட்கப்பட்ட |
| व्यथा | உன்னால் | | டது. |
| स्वयं | தானாகவே | विशालाक्षि | தடக்கண்ணாய்! |
| प्रत्युक्तं च | எதொன்று சொல்லப் | तव | உனக்கு |
| | பட்டதோ, | हेतोः | கன்மைபெளில் |
| तत् | அது | मे | என்னுடைய |
| सर्वं | எல்லாமும், | जीवितं हि | உயிரும் |
| भीरु | பயசிகையே! | प्रियं न | பெரிதாகாது. |
| सर्वास्त्रेहेन | தொழியினிடத்திலு | ते | உனது |
| | ள்ள வா த்றல்லயத்தால் | मनसः | மனசிற்கு |
| शून्ये | நிரீழாமான | व्यथा | தயரம் |
| गगने | ஆகாசத்தில், | मा भूत् | கெண்டாம். |
| रावणात् | ராவணனிடத்தி | वैदेहि | காண்க! |
| | லிருந்து | समाश्वसिहि | விடப்பதியாய்க்கு. |
| भयं | ஆபத்தை | | |

स संभ्रान्तश्च निष्क्रान्तो यत्कृते राक्षसाधिपः । तव मे विदितं सर्वपभिनिष्क्रम्य मैथिलि ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------------|---------------------|
| मैथिलि | “ மைதிலி! | अभिनिष्क्रम्य | வெளியில் வந்து |
| राक्षसाधिपः | ஆரக்கர்மன்னனாகிய | निष्क्रान्तः च | ஓங்கிடத்தை விட்டுப் |
| सः | அவன் | तत् | அது [போனானோ, |
| यत्कृते | எதற்காக | सर्वं च | எல்லாமும் |
| संभ्रान्तः | மிக்க மனக்குழப்ப | मे | எனக்கு |
| | மடைத்து | विदितम् | உள்ளபடி தெரியும். |

न शक्यं सौप्तिकं कर्तुं रामस्य विदितात्मनः

॥ ९ ॥

विदितात्मनः “ ஸர்வக்ஞராகிய

சૌப்திக் கர்து

ஆக்கத்தில் தாக்குவ
தென்பது

रामस्य “ ஸ்ரீராமரை

शक्यं न

ஆகக்கடியகாரியமல்ல.

वधश्च पुरुषव्याघ्रे तस्मिन्नैवोपपद्यते

॥ १० ॥

तस्मिन् “ அந்த
पुरुषव्याघ्रे एव “ புருஷோத்தமரிடத்
தில் மாத்திரம்

वधः च

வதைதென்பது

उपपद्यते न

ஆகக்கடியதில்லை.

न त्वेव वानरा हन्तुं शक्याः पादपयोधिनः ।

सुरा देवर्षभेणैव रामेण हि सुरक्षिताः ॥

पादपयोधिनः “ யிருகைக்களைக்கொ
ண்டு போர்புரியும்

सुराः

தேவர்கள்

वानराः एष

देवर्षभेण

இந்திரனால்

वु “ இப்பொழுது

एव

எவ்வண்ணமே

हन्तुं “ ஓகொல்வதற்கு

रामेण

ஸ்ரீராமரால்

शक्याः न “ அசாத்தியமானவர்

सुरक्षिताः

நன்கு பாதுகாக்கப்

हि “ ஏனெனில் [கள்.]

படுகின்றார்கள்.

दीर्घवृत्तभुजः श्रीमान्महोरस्कः प्रतापवान् । धन्वी संहननोपेतो धर्मात्मा भुवि विभुतः ॥

विक्रान्तो रक्षिता नित्यमात्मनश्च परस्य च । लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा कुशली नयशास्त्रवित् ॥

हन्ता परबलौघानामचिन्त्यबलपौरुषः । न हतो राघवः श्रीमान्साते शत्रुनिबर्हणः ॥ १४ ॥

सीते “ ஸீதே !

नित्यं

எக்காலத்திலும்

दीर्घवृत्तभुजः { நீண்டும் உருண்டு
முன்ன திருக்கரக்க
ளை யுடையவரும்,

आत्मना च

தன்னையும்

श्रीमान् “ குறையற்ற வாழ்வற்ற
வரும்,

परस्य च

பிறரையும்

महोरस्कः “ அகன்ற மார்புடைய
வரும்,

रक्षिता

குறையின்றிக் காப்ப
வரும்,

प्रतापवान् “ தீவ்யகர்த்திபெற்றவ
ரும்,

नयशास्त्रवित्

ராஜதீபாஸ்திரத்தில்
பிடிணரும்,

धन्वी “ யில்லா வரியும்,
संहननोपेतः “ திருமேனி அழகியவ
உலகில் [ரும்,

परबलौघानां

சத்தருசைசரிய
சமூகங்களை

भुवि “ தர்மா த்மாவென
பிரகித்திபெற்றவரும்,

हन्ता

வேரோடொழிப்பவ
ரும்,

धर्मात्मा “ தர்மாத்மாவென
विभुतः “ பிரகித்திபெற்றவரும்,
विक्रान्तः “ (போரில் எவராலும்)
வெல்லமுடியாதவரும்

अचिन्त्यबल-
पौरुषः

} எண்ணாதற்குமுடியா
த ஆற்றலுமாண்மை
யுமுடையவரும்,

शत्रुनिबर्हणः

சத்துருக்களை நாசம்
செய்கிறவரும்,

| | | | |
|----------|------------------------------------|------------------------------------|--|
| श्रीमान् | திரிவிரகப்பிரகித்தி பெற்றவருமான | श्राचा लक्ष्मणेन सह कुशली | தம்பிரயாகிய லக்ஷ்மணரோடு கூட சேஷமமாக இருக்க கின்றார். |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | | |
| हतः न | கொல்லப்படாது | | |

अयुक्तबुद्धिकृत्येन सर्वभूतविरोधिना । इयं प्रयुक्ता रौद्रेण माया पायाविदा त्वयि ॥

| | | | |
|---------------------|-------------------------------------|-----------|-----------------------|
| अयुक्तबुद्धिकृत्येन | "அடாத எண்ணமும் செயலுமுற்றவனாய் | रौद्रेण | கொடியனான ராவண னால் |
| सर्वभूतविरोधिना | சகலப்பிராணிகளுக் கும் எதிராவும், | त्वयि | உன் நிமித்தமாய் |
| मायाविदा | மாயாவித்தை தெரிந் தவனுமான | इयं | இந்த |
| | | माया | மாயை |
| | | प्रयुक्ता | பிரயோகிக்கப்பட்டது. |

शोकस्ते विगतः सर्वः कल्याणं त्वामुपस्थितम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------|------------|-----------|----------------|
| ते | "உனது | विगतः | ஒழிந்தது. |
| शोकः | மனத்துயரம் | त्वां | உனக்கு |
| सर्वः | எல்லாமும் | कल्याणं | நல்லதனை |
| | | उपस्थितम् | கிட்டிவிட்டது. |

ध्रुवं त्वां भजते लक्ष्मीः प्रियं प्रीतिकरं शृणु ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|-----------|--------------------------------------|
| त्वां | "உன்னிடம் | प्रीतिकरं | மனச்சுந்தகூடியவை விளைவிக்கிறதாகிய |
| लक्ष्मीः | ஸௌபாக்யலக்ஷ்மி | प्रियं | நல்லசெய்தியை |
| ध्रुवं | நுடையருது | शृणु | கேள். |
| भजते | குடிக்கொண்டிருக்கின் றார். | | |

उत्तीर्य सागरं रामः सह वानरसेनया । सन्निविष्टः समुद्रस्य तीरमासाद्य दक्षिणम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|--------------------|
| रामः | "ஸ்ரீராமர் | समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினது |
| वानरसेनया | வானரசேனையோடு | दक्षिणं | தென் |
| सह | கூட | तीरं | கரையை |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | आसाद्य | அடைந்து |
| उत्तीर्य | கடந்து | सन्निविष्टः | சக்கிரிசுக்கிரார். |

दृष्टो मे परिपूर्णार्थः काकुत्स्थः सहलक्ष्मणः ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------------|--|--------|-------------------------------------|
| काकुत्स्थः | "ஸ்ரீராமர் | मे | என்னால் |
| सहलक्ष्मणः | லக்ஷ்மணருடன் கூட | दृष्टः | தெரிந்துகொள்ளப் பட்டிருக்கிறார். |
| परिपूर्णार्थः | எக்காரியத்திலும் எக் குறையுமின்றி தகராசர் | | |

स हि तैः सागरान्तस्थैर्बलैस्तिष्ठति रक्षितः ॥ २० ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|------------------------------|
| ச: | “அவர் | ரक्षित: ஹி | ஐக்கிரகைதயுற்றவர கவே |
| सागरान्तस्थैः | சமுத்திரக்கரைக்கு | तिष्ठति | சுகமே வாழ்ந்து வருகிறார். |
| तैः | அந்த [வந்துசேர்ந்த | | |
| बलैः | சைன்யங்களோடு | | |

अनेन भेषिता ये च राक्षसा लघुविक्रमाः । राघवस्तीर्ण इत्येव प्रवृत्तिस्तरिहाहता ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|---------------|---------------------------------|
| लघुविक्रमाः | “கிரகையில் எங்கும் செல்லவல்ல | राघवः | *ராமன் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | तीर्णः | சமுத்திரத்தை கடந் துவிட்டான் |
| ये | எவர்கள் | इति | என்கிற |
| अनेन | இவனால் | प्रवृत्तिः एव | சமசாரந்தான் |
| भेषिताः च | கிடுக்கப்பட்டார் களோ | इह | இப்பொழுது |
| तैः | அவர்களால் | आहता | கொண்டுவரப் பட்டது. |

स तां श्रुत्वा विशालाक्षि प्रवृत्तिं राक्षसाधिपः । एष मन्त्रयते सर्वैः सचिवैः सह रावणः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------------|----------------------------------|
| विशालाक्षि | “விசாலாட்சி! | तां | அந்த |
| राक्षसाधिपः | ராக்கசாமின்னனாகிய | प्रवृत्तिं श्रुत्वा | செய்தியைக் கேட்டு, மந்திரிகள் |
| सः | அந்த | सचिवैः | எல்லோருடன்கூட |
| एषः | இந்த | सर्वैः सह | மந்திராவோசனை |
| रावणः | ராவணன், | मन्त्रयते | செய்கின்றான்.” |

इति ब्रुवाणा सरमा राक्षसी सीतया सह । सर्वोद्योगेन सैन्यानां शब्दं शुश्राव भैरवम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|--------------|----------------------------|
| इति | மேற்கண்டவாறு | सर्वोद्योगेन | பரிபூர்ண உதவையு த்தால், |
| ब्रुवाणा | பேசிக்கொண்டிருக் கும் | भैरवं | பயங்கரமான |
| राक्षसी | அரக்கன், மனைவி | शब्दं | சத்தத்தை |
| सरमा | ஸரமை [பாகிய | सीतया सह | சினையோடுகூட |
| सैन्यानां | சேனைகளின் | शुश्राव | கேட்டான். |

दण्डनिर्घातवादिन्याः श्रुत्वा भेर्या महास्वनम् । उवाच सरमा सीतापिदं मधुरभाषिणी ॥

| | | | |
|----------------------|--|----------|--------------------------|
| मधुरभाषिणी | மதுரமாகப் பேசும் | महास्वनं | பெரிய சத்தத்தை |
| सरमा | ஸரமை | श्रुत्वा | கேட்டு |
| दण्डनिर्घातवादिन्याः | குணிக்களால் அடிக்க ப்பட்டு சப்திக்கின்ற | सीतां | வீதாதேவியைப் பார்ந்து |
| भेर्याः | பேரிகளின் | इदं | பின்வருமாறு |
| | | उवाच | சொன்னான்: |

सन्नाहजननी शेषा भैरवा भीरु भेरिका । भेरीनादं च गम्भीरं शृणु तोषदनिस्वनम् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|------------|------------------------------|
| भीरु | “ பயசீகையே ! | शृणु | கேள். |
| गंभीरं | கம்பீரமாயும் | भैरवा | பயங்கரமான |
| तोषदनिस्वनं च | மேகத்தை நிகர்ந்த சூரியநீற்றமாவன | एषा | இந்த |
| भेरीनादं | பேரிகையின் சத்தம் | भेरिका हि | பேரிகையதான் |
| | வாத | सन्नाहजननी | போருக்குச்சித்தமாக சுவது. |

कल्पयन्ते मत्तमातङ्गा युज्यन्ते रथवाजिनः । हृष्यन्ते तुरगारूढाः प्रासहस्ताः सहस्रशः ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|-------------|---|
| मत्तमातङ्गाः | “ மதமாதீகைகள் | प्रासहस्ताः | கட்டையை கையில் கொண்டவர்கள் |
| कल्पयन्ते | தமர் செய்யப்படுகி ன்றனர். | सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காக |
| रथवाजिनः | தேர்க்குதிரைகள் | तुरगारूढाः | குதிரைகள்மீது ஏறிக் செல்லுகின்றவர்களுடைய |
| युज्यन्ते | பூட்டப்படுகின்றனர். | हृष्यन्ते | மகிழ்ச்சிக்குறிகள். |

तत्र तत्र च सन्नद्धाः संपतन्ति पदातयः । आपूर्यन्ते राजधार्गाः सैन्यैरद्भुतदर्शनैः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------------|---------------|--------------------------|
| पदातयः | “ காணட்கள் | ॥ २७ ॥ | |
| सन्नद्धाः च | போர்க்கோலம் கொ ண்டவர்களாய் | नद्वि. च | தீரைகின்றவைகளு மான |
| तत्र तत्र | ஆங்காக்கு | तोयोवैः | அலைக்கூட்டங்களால் |
| संपतन्ति | கும்பங்கும்பலாய் கூடுகின்றார்கள். | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே, |
| सागरः | சமுத்திரமானது | अद्भुतदर्शनैः | அழகுத்துவிரங்கும் |
| वेगवद्भिः | வேகமுடையவைக ளும் | सैन्यैः | சேனைகளால் |
| | | राजधार्गाः | ராஜாதிதிகள் |
| | | आपूर्यन्ते | நிரம்பப்படுகின்றன. |

शस्त्राणां च मसन्नानां चर्मणां वर्मणां तथा । रथवाजिगजानां च भूषितानां च रक्षसाम् ॥

प्रभां विस्मृतां पश्य नानावर्णां समुत्थिताम् । वनानिर्दहता घर्मे यथा रूपं विभावसाः ॥

| | | | |
|----------------|--|---------------|----------------------------|
| मसन्नानां | “ பனபனவென விரிந்த கும் | प्रभां | சூரியை |
| शस्त्राणां च | ஆயுதக்களுடையவும் | विस्मृतां | பாப்புகின்ற |
| चर्मणां | கெடயக்களுடைய வும் | भूषितानां | அலங்காரக்கொண்ட |
| वर्मणां तथा | கவசக்களுடையவும், ரதங்கள், குதிரைகள், பாசிகைகள் இவைக ளுடையவும் | रक्षसां च | அரக்கர்களுடையவும் |
| रथवाजिगजानां च | } | रूपं | தேரத்தகதை |
| समुत्थितां | | வெளிக்கொட்டிய | घर्मे |
| नानावर्णां | பலவண்ணக்களை யு டைய | वनं | பற்றி எரிக்கின்ற |
| | | निर्दहतः | நெருப்பினது தேரத் தத்தை |
| | | विभावसोः | பொலிருப்பதாய் கவணி. |
| | | यथा | |
| | | पश्य | |

घण्टानां शृणु निर्वोषं रथानां शृणु निस्वनम् । हयानां हेवमाणानां शृणु तूर्यध्वनिं यथा ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------------|--------------------|
| घण्टानां | "மணிகளின் | हयानां | சூதிரைகளுடையவும் |
| निर्वोषं | பெரும் கோஷத்தை | निस्वनं | சத்தத்தையும் |
| शृणु | கேள். | शृणु | கேள். |
| रथानां | தேர்களுடையவும் | तूर्यध्वनिं यथा | தூர்யவாத்தியத்தின் |
| हेवमाणानां | களைக்கும் | शृणु | கேள். [அரவத்தையும் |

उद्यतायुधहस्तानां राक्षसेन्द्रानुयायिनाम् । संभ्रमो रक्षसामेष तुमुलो रोमहर्षणः ॥३१॥

| | | | |
|-----------------------------|---|-----------|---|
| उद्यतायुध- हस्तानां | "தயாராய் ஆயுதக்க ளைக் கையில் கொண் டவர்களுள் | रक्षसां | அரக்கர்களின் |
| राक्षसेन्द्रानु- यायिनां | ராக்ஷஸமன்னன் சொந்தபடி நடப்பவர் களுமான | संभ्रमः | இத்த சன்னுகம் |
| | | तुमुलः | நெருக்கமாகவும் |
| | | रोमहर्षणः | மயிர்ச்சிகிளிப்பனையும் படியாய்மிருக்கிறது. |

श्रीस्त्वां भजति शोकघ्नी रक्षसां भयमागतम् ॥ ३२ ॥

| | | | |
|---------|-------------------------|---------|----------------|
| श्रीः | "உன்னை | भजति | அடைகிறது. |
| शोकघ्नी | கஷ்டத்தை யொழிக் கும் | रक्षसां | அரக்கர்களுக்கு |
| भयः | (சந்தோஷ)லகத்தமி | भयं | ஆபத்து |
| | | आगतम् | கிட்டிவிட்டது. |

रामः कमलपत्राक्षो दैत्यानामिव वासवः । विनिर्जित्य जितक्रोधस्त्वामचिन्त्यपराक्रमः ॥

रावणं समरे हत्वा भर्ता त्वाऽधिगमिष्यति ॥ ३३ ॥

| | | | |
|--------------------|--|------------------|--|
| रामः | "தாமரைக்கண்ணரும் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| कमलपत्राक्षः | எண்ணுதற்கொண் ணுத பரக்கிரம முடையவரும் | रावणं हत्वा | ராவணனைக் கொன்று |
| भक्ति- पराक्रमः | கணவருமாகிய | त्वां | உன்னை |
| भर्ता | ஸ்ரீராமர் | विनिर्जित्य | { (எதற்கும் மேம்பட்ட தாகிய) வெற்றியின் குறியாய்ப் பெற்று |
| रामः | போரில் | जितक्रोधः | கினமொழித்தவராய் |
| समरे | இந்திரன் | त्वा अधिगमिष्यति | உன்னைக் காண்பார். |
| वासवः | அகார்களை | | |
| दैत्यानां | | | |

विक्रमिष्यति रक्षसु भर्ता ते सहलक्ष्मणः । यथा शत्रुषु शत्रुघ्नो विष्णुना सह वासवः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|--------------|------------------------------------|
| विक्रमिष्यति | "சத்துருக்களையொ இந்திரன் [ழிக்கும் | ते | உனது |
| रक्षसु | சத்துருக்களிடத்தில் | भर्ता | கணவர் |
| भर्ता | விஷ்ணுபகவானோடு | सहलक्ष्मणः | லகத்மணருடன் |
| ते | கூட | रक्षसु | அரக்கர்களிடம் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | विक्रमिष्यति | வல்லமையைக் காட்டி ப்போகின்றார். |

आगतस्य हि रामस्य क्षिपमङ्कगतां सतीम् । अहं द्रक्ष्यामि सिद्धार्थी त्वां शत्रौ विनिपातिते ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|-------------|--------------------------------------|
| ராமச्य | "ஸ்ரீராமர் | சரீர் | உத்தரவியாரகிய |
| आगतस्य | போசில் வரவும், | त्वां | தேவரீகா |
| शत्रौ हि | சத் துருவும் | अङ्कगतां | அவர் மடியில் எழுந் தருளிகிட்டவனாக |
| क्षिपं | தகடிணமே | अहं | நான் |
| विनिपातिते | கொண் டுளி ழ்த்தப் படவும் | द्रक्ष्यामि | கண்ணறப் பார்க்கப் போகின்றேன். |
| सिद्धार्थी | மனோதம் க்கக்கடப் பெற்ற | | |

अभूथानन्दजानि त्वं वनेषिव्यसि शोभने । समागम्य परिव्यज्य तस्योरसि महोरसः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|----------------------------|
| शोभने | "கட்டழகியே! | तस्य | அவரது |
| त्वं | தேவரீர் | उरसि | பார்பில் |
| समागम्य | ஆடைந்து | आनन्दजानि | } ஆனந் = க்கண்ணரீர் களை |
| परिव्यज्य | தழுவிக்கொடுத்து | अद्यनि | |
| महोरसः | விசாலமான மார்புற்ற | वनेषिव्यसि | வடிக்கப்போகிறீர். |

अचिरान्मोक्ष्यते सीते देवि ते जघनं गताम् । धृतामेतां बहुमासान्वेषीं रामां महाघरः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|---|
| सीते देवि | "வந்தாதேவியாரே! | जघनं गतां | } பின் தட்டுவனாரில் தொங்கிக்கொண்ட குக்கிறதமான |
| महाघरः | மகாசக்திமரணுகும் | एतां | |
| रामाः | ஸ்ரீராமர் | वणीं | உந்தலை |
| बहून् | பல | अचिरान् | சிக்கிரமே |
| सासान् | மாதங்கனாய் | मोक्ष्यते | அழித்துவிடுவார். |
| एतां | பின்னிவிடப்பட்டுக் | | |
| ते | உவது [கிடசகிறதும், | | |

तस्य दृष्ट्वा मुखं देवि पूर्णचन्द्रमिवोदितम् । मोक्ष्यसे शोकजं वारि निर्मोकमिव पद्मगी ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|-----------------------|
| देवि | "தேவி! | पद्मगी | ஓர் சர்ப்பமானது |
| उदितं | உதித்த | निर्मोकं | தொலை |
| पूर्णचन्द्रं | பூர்ணசந்திரகிள | हव | எப்படியோ உப்படியே |
| हव | போலிருக்கும் | शोकजं | சோகத்தாலுண்டா கும் |
| तस्य | அவரது | वारि | கண்ணீரை |
| मुखं | திருமுக்கமண்டலத்தை | मोक्ष्यसे | அழித்தப்போகிறீர். |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | | |

रावणं समरे हत्वा नचिरादेव मैथिलि । त्वया समयः प्रियया सुखाहो लप्स्यते सुखम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------|--------------|
| मैथिलि | "ஐரவி! | प्रियया | காதலியான |
| सुखाहोः | சுகந்திற்கே உரிய | त्वया | உன்னோடு |
| नचिरात् एव | சிக்கிரமே [அவர் | समयः | சேர்த்து |
| समरे | போசில் | सुखं | மனச்சாந்தியை |
| रावणं हत्वा | ராவணனைக் கொண்டு | लप्स्यते | ஆடைவார். |

समागता त्वं वीर्येण मोदिष्यसि महात्मना । सुवर्षेण समायुक्ता यथा सस्येन मेदिनी ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|--------------------|
| सुवर्षेण | " கல்ல மழையால் | महात्मना | மகா தமர்வாகிய |
| समायुक्ता | நனைக்கப்பட்ட | | அவரால் |
| मेदिनी | பூமியானது | समागता | அடையப்பட்ட |
| सस्येन | பயிரால் | | டவளாய் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் | वीर्येण | வீர்யத்தை நினைந்து |
| त्वं | நீ [வண்ணமே | मोदिष्यसि | களிப்பை அடைவாய். |

गिरिवरमभितोऽनुवर्तमानो ह्य इव मण्डलमाशु यः करोति ।

तमिह शरणमभ्युपेह देवं दिवसकरं भवो ह्ययं प्रजानाम्

॥ ४१ ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|------------------|
| यः | " எவர் | तं | அந்த |
| गिरिवरं | பர்வதச்சேஷ்டருக்கு (மேருபர்வதத்திற்கு) | दिवसकरं | சூரிய |
| अभितः | காற்புறமும் | देवं | பகவானை |
| अनुवर्तमानः | சுற்றிக்கொண்டு | इह | இப்பொழுதே |
| ह्यः इव | குதிரை போலவே | शरणं | சரணமாக |
| आशु | விரைவாக | अभ्युपेहि | நியடைவாயாக. |
| मण्डलं | வலம் வருவதை | हि | எனெனில் |
| करोति | செய்கிறாரே, | अयं | இவர் |
| | | प्रजानां | பிரான்களுக்கு |
| | | भवः | எதையுமளிப்பவர்." |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 15949

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1274



अनुस्त्रिंशः सर्गः—முப்பத்துநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ३४ ॥

सरमया रावणाशयकथनम्—ஸரமை ராவணனது அபிப்பிராயத்தைச் சொல்வது.

अथ तां जातसन्तापां तेन वाक्येन मोहिताम् । सरमा ह्यादयामास पृथिवीं द्यौरिवाम्भसा॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-------------|----------------------------|
| सरमा | ஸரமை | पृथिवीं | பூமியை |
| अथ | அப்பொழுது | अम्भसा | மழையால் |
| मोहितां | சிந்தை கலங்கி | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| जातसन्तापां | தபித்துக்கொண்டு கிடந்த | तेन | அந்த |
| तां | அவளை (வீதைகைய) | वाक्येन | சொல்லால் |
| द्यौः | ஆகாசமானது | ह्याश्यामास | உள்ளம்முளிரச் செய்தான். |

ततस्तस्या हितं सख्याधिकीर्पन्ती सखी वचः । उवाच काले कालज्ञा स्मितपूर्वाभिभाषिणी ॥

स्मितपूर्वाभि- } புன்னையுடன் மது
 भाषिणी } சமாய் பேசுபவனும்
 कालज्ञा } சமயோகிதமாய் நடக்
 क.த்.தெரிந்தவனுமான
 सखी } தோழி
 ततः } இன்னும்
 तस्याः } அந்த

सगयाः } தோழிக்கு
 हितं } நலிதமனதை
 विकीर्पन्ती } செய்யவெண்ணி
 काले } ஏற்றசமயத்தில்
 वचः } ஒரு சொல்லை
 उवाच } பின்வருமாறு

மொழிந்தான் :

उत्सहेऽपहं गत्वा त्वद्वाचयमसितेक्षणे । निवेद्य कुशलं रामे पतिच्छन्ना निवर्तितुम् ॥ ३ ॥

असितेक्षणे } “கருக்கண்ணைய !
 अहं } நான்
 पतिच्छन्ना } ஒருவர்கண்ணிலும்
 } படாதவனாய்
 रामे } ஸ்ரீராமரிடம்
 गत्वा } சென்று

कुशलं } சேடிமமான
 त्वद्वाच्यं } உனது சமாசாரத்தை
 निवेद्य } தெரிவித்துவிட்டு
 निवर्तितुं } திரும்பிவந்துசேரவும்
 उःसहेऽपहम् } மாட்டுவேன்.

न हि मे क्रममाणाया निरालम्बे विहायसि । समयो गतिमन्वेतुं पवनो गरुडोऽपि वा ॥

निरालम्बे } “பிடிப்பற்ற
 विहायसि } ஆகாசத்தில்
 मे } நான்
 क्रममाणायाः } செல்லுகையில்
 गतिं } போகளை
 अन्वेतुं } பின்பற்ற

गरुडः } கருடபகவான்
 वा } என்னாலும்
 समयः } வல்லவராக
 न } ஆகார் ;
 पवनः हि } வாய்பகவானும்
 अरि } அப்படியே (ஆகார்).”

एवं ब्रुवाणां तां सीता सरमां पुनरब्रवीत् । मधुरं श्लक्ष्णया वाचा पूर्वं शोकाभिपन्नया ॥

सीता } வீதா தேவியார்
 एवं } மேற்கண்டவாறு
 ब्रुवाणां } பேசும்
 तां } அந்த
 सरमां } ஸரமையைப்பார்த்து
 पूर्वं } முந்தியே

श्लक्ष्णया } { உன்னத்திலுள்ளதை
 } { உன்னபடி தெரிவிக்க
 } { கிறதான
 वाचा } சொற்கொண்டு
 मधुरं } மதுரமாக
 पुनः } பதிலாய்

शोकाभिपन्नया } { சோகத்தை அகற்றி
 } { விட்டதை நன்குவிள
 } { க்கக்காட்டுகிறதும்

अब्रवीत् } பின்வருமாறு மொ
 } ழிந்தான் :

समर्था गगनं गन्तुमपि वा त्वं रसातलम् । अवगच्छाम्यकर्तव्यं कर्तव्यं ते मदन्तरे ॥ ६ ॥

गगनं } “ஆகாயம் மட்டுமல்ல
 रसातलं अपि वा } பா.தாளனோகத்திற்
 गन्तुं } செல்ல [கென்னாலும்
 त्वं समर्था } நீ சாமர்த்தியமுள்ள
 } வன் ;

मदन्तरे } என்கிமித்தமாய்
 अवगच्छाम्यं } பிறரொருவராலும்
 } செய்யமுடியாததை
 ते } உனக்கு
 कर्तव्यं } செய்யமுடிந்ததாய்
 अवगच्छामि } நானறிவேன்.

मत्प्रियं यदि कर्तव्यं यदि बुद्धिः स्थिरा तव । ज्ञातुमिच्छामि तं गत्वा किं करोतीति रावणः॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|---------|--------------------------|
| मत्प्रियं | "எனது அபிப்பிராய மனது | रावणः | 'ராவுணன் |
| कर्तव्यं यदि | செய்யத்தக்கதாக இருப்பினும் | किं | எதை |
| तव | உனது | करोति | செய்கிறது செய்யுகிறது |
| बुद्धिः | அபிப்பிராயமும் | इति | என்பதை |
| स्थिरा | அதையனுசரிக்கிற தரக | तं | அவனை |
| यदि | இருக்கும்பொழுத்தில் | गत्वा | அடைந்து |
| | | ज्ञातुं | அறிந்துகொள் |
| | | इच्छामि | வேண்டுகிறேன். |

स हि मायाबलः क्रूरो रावणः शत्रुरावणः । मां मोहयति दुष्टात्मा पीतमात्रेव वारुणी ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|--------------|--|
| मायाबलः | "மாயாசக்தியுடைய வலம் | सः रावणः | சரவுணன் |
| दुष्टात्मा | கொடிய எண்ணமு டைவவனும் | वारुणी | மயக்கத்தை விளைவிக்க கும் சாராயம் |
| क्रूरः | கொடிய செயலுடை யவனும் | पीतमात्रा इव | { உட்கொள் எப்பட்ட தாமே எப்படியோ அப்படியே |
| शत्रुरावणः हि | கூன்றுருக்களைக்கதற அடிக்கிறவனுமான் | मां | என்னை |
| | | मोहयति | துயருறச்செய்கிறான். |

तर्जापयति मां नित्यं भर्त्सापयति चासकृत् । राक्षसीभिः सुघोराभिर्या मां रक्षन्ति नित्यशः॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|-------------|--|
| वाः | "எவர்கள் | मां | என்னை |
| मां | என்னை | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| नित्यशः | இடைவிடாது | असकृत् च | விட்டுவிட்டு |
| रक्षन्ति | காவல்காத்துவருகி றார்களோ, அந்த | तर्जापयति | செய்கைகளால் பயமு றுத்தச்செய்கிறான். |
| सुघोराभिः | மிகக்கொடிய | भर्त्सापयति | வாயில் வந்தபடியெல் லாம் ஏசச்செய்கிறான். |
| राक्षसीभिः | ஆரக்கிகளால் | | |

उद्दिष्टा शङ्किता चास्मि न स्वस्य च मनो मम । तद्द्रवाच्चाहमुद्दिष्टा अशोकवनिका गता ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-------------|--|
| अहं | "நான் | शङ्किता च | { முடிவு கல்லைடிவாக வேண்டுமென்பதில் சந்தேகமுற்று |
| अशोकवनिकां | அசோகவனத்தில் | उद्दिष्टा च | கவலையில் முழுசின வளராதவை |
| गतं | சிக்கிக்கொண்டவ ளாய் | अस्मि | இருக்கின்றேன். |
| तद्रवात् | அவனிடமுள்ள அச்சத்தால் | मम मनः | எனது மனம் |
| उद्दिष्टा च | உள்ளங்கலக்கினவ ளாய் | स्वस्य | கவலையொழிந்ததாக இல்லை. |
| | | न | |

यदि नाम कथा तस्य निश्चितं वाऽपि यद्भवेत् । निवेदयेथा: सर्वं तत्परो मे स्यादनुग्रहः॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|------------|-------------------------|
| तस्य | " அவனது | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| कथा | சம்பாஷனை | निवेदयेथा: | நீ தெரிவிப்பாயாக. |
| यदि नाम | எதுவாயிருந்தாலும் | तत् | அது |
| | சரி | मे | எனக்கு |
| निश्चितं | முடிவாய் தீர்மானிக் கப்பட்டது | परः | என்றோ தங்குஷ்ட மாகிய |
| यत् वा | எதுவாகத்தான் | अनुग्रहः | உதவியாய் |
| संवेत् भवि | இருப்பினும் | स्यात् | ஆகும்." |

सा त्वेवं ब्रुवती सीतां सरमा वल्गुभाषिणी । उवाच वदनं तस्याः स्पृशन्ती वाष्पविक्रमम्॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|--------------|----------------------|
| वल्गुभाषिणी | மதுசமாய்ப் பேசும் | तस्याः | அவளது |
| सा | அந்த | वाष्पविक्रमं | கண்ணீர் வழிந்த |
| सरमा | ஸரமை | वदनं | முகத்தை |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | स्पृशन्ती तु | துடைத்துக் கொண்டே |
| ब्रुवती | மொழியும் | उवाच | பின்வருமாறு |
| सीतां | சீதாதேவியைப் பார்த்து | | மொழிந்தாள்: |

एष ते यद्यभिप्रायस्तदा गच्छामि जानकि

॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|---------|----------------|
| जानकि | " ஜானகி! | एषः | இது |
| ते | உனது | यदि | என்றால் |
| अभिप्रायः | அபிப்பிராயம் | तदा | இதே |
| | | गच्छामि | போய்வருகிறேன். |

गृह्य शत्रोरभिप्रायसुपावृत्तां च पश्य माम्

॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|-----------------------|
| शत्रोः | " சந் துருவினது | उपावृत्तां च | திரும்பிவந்துசேர்ந்து |
| अभिप्रायं | அபிப்பிராயத்தை | | கிட்டவனாகவே |
| गृह्य | அறிந்துகொண்டு | पश्य | உணர்வாயாக." |
| माम् | என்னை | | |

एवमुक्त्वा ततो गत्वा समीपं तस्य रक्षसः । शुभाचं कथितं तस्य रावणस्य समन्त्रिणः ॥

| | | | |
|---------|-------------------|------------|----------------------------|
| एवं | இவ்வாறு | गत्वा | சென்று |
| उक्त्वा | கொண்டுகிட்டு | समन्त्रिणः | மந்திரிமார்களுடனிடமிருந்து |
| ततः | அங்கிருந்து | तस्य | அந்த [ருந்த |
| तस्य | அந்த | रावणस्य | ராவணனுடைய |
| रक्षसः | அரக்கனின் | कथितं | சம்பாஷனையை |
| समीपं | அருகாமையிலிருந்து | शुभाचं | ஒற்றுக்கொட்டாள். |

सा श्रुत्वा निश्चयं तस्य निश्चयज्ञा दुरात्मनः । पुनरेवागपत्क्षिप्रपशोकवनिकां तदा ॥१६॥

| | |
|------------|---------------------------------|
| सा | அவள் |
| दुरात्मनः | இவ்வடனாகிய |
| तस्य | அவனது |
| निश्चयं | தீர்மானத்தை |
| श्रुत्वा | ஒற்றுக்கேட்டுவிட்டு |
| निश्चयज्ञा | தீர்மானமின்னதென்பதை அறிந்தவளாகி |

| | |
|-------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது |
| क्षिप्रं एव | வினாவினெனவே |
| अशोकवनिकां | அசோகவனத்திற்கு |
| पुनः | திரும்பி |
| आगमत् | வந்துசேர்க்தான். |

सा प्रविष्टा पुनस्तत्र ददर्श जनकात्मजाम् । प्रतीक्षमाणां तामेव भ्रष्टपद्मामिव श्रियम् ॥

| | |
|------------------|--|
| तत्र | அவ்விடத்தில் |
| पुन. प्रविष्टा | திரும்பிவந்துசேர்க்த |
| सा | அவள் |
| प्रतीक्षमाणां एव | { தன்னையே யெதிர்பார்த்துக்கொண்டிருப்பவளும் |

| | |
|------------|--------------------|
| अष्टपदां | தாமரைமலரை விட்டு |
| श्रियं | மகானகத்தினைய [வந்த |
| इव | போன்றவளுமாயின |
| तां | அந்த |
| जनकात्मजां | இரானகிகேனியான |
| ददर्श | கண்டான். |

तां तु सीता पुनः प्राप्तां सरमां बल्लुभाषिणीम् । परिष्वज्य च सुस्निग्धं ददौ च स्वयभासनम् ॥

| | |
|-----------------|----------------------|
| सीता | ஸீதாதேவியார் |
| बल्लुभाषिणीं तु | இனிமையாகப்பேசும் |
| पुनः प्राप्तां | மீளவும் திரும்பிவந்த |
| तां | அந்த |
| सरमां | ஸரமையை |
| सुस्निग्धं | அன்புடன் |

| | |
|-----------|---|
| परिष्वज्य | கட்டிக்கொண்ட |
| च | அதன் பின்னர் |
| आसने च | உட்காருமிடமொன் |
| स्वयं | தானே [ஊறயும் |
| ददौ | (பின்வருமாறு சொல்லி) கட்டிக்கொட்டினான். |

इहासीना सुखं सर्वमाख्याहि मम तत्त्वतः । क्रूरस्य निश्चयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः ॥

| | |
|-----------|------------------------|
| तस्य | “அந்த |
| दुरात्मनः | கொடிய எண்ணமுடையவனும் |
| क्रूरस्य | கொடிய செயலுடையவனுமாயின |
| रावणस्य | ராவணனது |
| निश्चयं | தீர்மானத்தை |
| इह | இவ்விடத்தில் |

| | |
|----------|------------------|
| आसीना | உட்கார்ந்துகொண்ட |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| सुखं | நிம்மதியால் |
| तत्त्वतः | உள்ளபடி |
| मम | எனக்கு |
| आख्याहि | ஈ விளம்புவாயாக.” |

एवमुक्त्वा तु सरमा सीतया वेषमानया । कथितं सर्वमाचष्ट रावणस्य समन्त्रिणः ॥ २० ॥

| | |
|----------|-----------------------|
| वेषमानया | கடுக்க முற்றிருக்கும் |
| सीतया | சீதாதேவியாரால் |
| तु | இவ்விடத்தில் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு |
| उक्त्वा | சொல்லப்பட்ட |
| सरमा | ஸரமார் |

| | |
|------------|-----------------------|
| समन्त्रिणः | மத்திரியுடனிருந்த |
| रावणस्य | ராவணனது |
| कथितं | சம்பவத்தை |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| आचष्ट | பின்வருமாறு சொன்னான்: |

जनन्या राक्षसेन्द्रो वै त्वन्मोक्षार्थं बृहद्वचः । अविद्वेन च वैदेहि मन्त्रिवृद्धेन बोधितः ॥
 वैदेहि "ஹைதேஹி!
 राक्षसेन्द्रः वै "राक्षसेन्द्रமான் னன் ராஜ்யம்
 त्वन्मोक्षार्थं { உன்னைத் திருப்பிச் சீதர் த் துயிடும் விந்ந யத்தில் மான
 जनन्या "மாதா விந்நஜ்யம்
 मन्त्रिवृद्धेन "மந்திரிகளில் பெரிவ வரரான
 अविद्वेन च "அவித்தொன்பவ
 बृहन् "சரீரோத்திரவந்த
 वचः "உபதேசமொழியை
 बोधितः "பின்வருமாறு உணர் ததப்பட்டான்:

दीयतामभिसत्कृत्य मनुजेन्द्राय मैथिली । निदर्शनं ते पर्याप्तं जनस्थाने यद्वदतम् ॥२२॥
 मैथिली "மேதை
 मनुजेन्द्राय "மானிடமண்ணனுக்கு
 अभिसत्कृत्य "நல்வார்த்தை சொல்லி
 दीयतां "திருப்பிக்கொடுத்து விடப்பட்டும்.
 जनस्थाने "ஜனஸ்தானத்தில்
 अन्तुं { மானிடர்கள் செய்ய முடியாததாய் செய்து
 यन् "எதுபோது
 ते "உனக்கு
 पर्याप्तं "பொதுமான
 निदर्शनम् "அத்தாட்சி.

लङ्घनं च समुद्रस्य दर्शनं च हनुमतः । वधे च रक्षसां युद्धे कः कुर्यान्मानुषो भुवि ॥
 समुद्रस्य "சமுத்திரத்தை
 लङ्घनं च "தாண்டுகளையும்
 दर्शनं च "கொளில் பார்த்தலையும்
 युद्धे "போரில்
 रक्षसां "அரக்கர்களின்
 वधे च "அழிவையும்
 भुवि "உலகில்
 हनुमतः "நானுமானத்தகிர
 मानुषः "மானிடனுய்ப்பிந்த
 कः "எவன்
 कुर्यात् "செய்வான்"

एवं स मन्त्रिवृद्धैश्च मात्रा च बहु बोधितः । न त्वामृतसदने मोक्षमर्थमर्थयो यथा ॥२३॥
 मन्त्रिवृद्धैः च "மந்திரிமார்களில் பெரியோர்களாலும்
 मात्रा च "தாயராலும்
 एवं "மேற்கண்டவாறு
 बहु "பலவிதமாக
 बोधितः "நற்புத்திரசொல்லப்
 सः "அவன் [பட்டவனான
 न त्वामृतसदने मोक्षमर्थमर्थयो यथा ॥२३॥
 अधिपाः "பொருளாசையற்ற
 अर्थ "பொருளை [வன்
 यथा "எவ்வண்ணமோ அவ்
 त्वां "உன்னை [வண்ணமே
 मोक्षुं "திருப்பிக்கொடுத்து விட
 उरुसहते न "இரண்டகனிப்பை.

नोत्सहत्यमृतो मोक्षुं युद्धे त्वामिति मैथिलि । सामात्यस्य नृशंसस्य निशयो ह्येष वर्धते ॥
 मैथिलि "ஹைதிலி!
 युद्धे अमृतः "போரில் பாண்டலை
 त्वां "உன்னை [யாதவனாய்
 मोक्षुं "திருப்பிக்கொள்பித்து விட
 उरुसहति न "அவன் இரண்டகனிப்பை
 इति एषः हि "என்றேறி இதுதான்
 सामात्यस्य "மந்திரிமார்தொகு
 नृशंसस्य "கொடியவனுடைய
 निशयो "நீர்மொண்டாக
 वर्धते "வற்பட்டிருக்கிறது.

तदेषा निश्चिता बुद्धिर्मृत्युलोभादुपस्थिता । भवान्न शक्तस्त्वां मोक्तुमनिरस्तस्तु संयुगे ॥

राक्षसानां च सर्वेषामात्मनश्च वधेन हि

॥ २६ ॥

तत् "இப்பொழுது
 एषा இந்த
 निश्चिता எவ்வாறு உடையவரும்
 முடியும் திருக்கிற

आमनः च तन्नुடையவும்
 वधेन வதைதயால்
 अनिरस्तः तु கீழே விழுந்ததப்படி
 தவனுமட்டும்

बुद्धिः தீர்மானமானது

त्वां உன்னை

मृत्युलोभात् { எமன் வரவை எதிர்
 பார்த்துக்கொண்ட
 குப்பதால்

मोक्तुं திருப்பிக்கொடுக்க

उपस्थिता ஏற்பட்டிருக்கிறது.

भवान् { வரும் கேட்டை எண்

संयुगे போரில்

ணி (முன்னெச்சரிக்க

राक्षसानां ஆரக்கர்கள்

வை) பயமொன்றால்

सर्वेषां च எல்லோருடையவும்,

शक्तः न हि துண்ணறிவுடைய

வன் இல்லவேயில்லை.

निहत्य रावणं संख्ये सर्वथा निश्चितैः शरैः ।

प्रतिनेष्यति रामस्त्वामयोध्यामसितेक्षणे ॥

असितेक्षणे "கருங்கண்ணாய்"

संख्या பூண்டிடவில்லாதவரது

रामः ஸ்ரீராமர்

निहत्य கொண்டு வந்திரு

संख्ये போரில்

शर्वा உன்னை

निश्चितैः शरैः கூரிய பாணங்களால்

अयोध्यां அயோத்தியநகருக்கு

रावणं ராவணனை

प्रतिनेष्यति அழைத்துப்போவார்.

एतस्मिन्नन्तरे शब्दो भेरीशङ्खसमाकुलः । श्रुतो

वानरसैन्यानां कम्पयन्धरणीतलम् ॥ २८ ॥

एतस्मिन् अन्तरे இதே சபயத்தில்

धरणीतलं பூமியை

वानरसैन्यानां வானர சேனைகளு

कम्पयन् நடங்கக்கொய்து

शब्दः பேரி, சங்கம் மாதிரி
 நிச்சத்திக்கப்பெற்ற

श्रुतः கேட்கப்பட்டது.

श्रुत्वा तु तद्वा नरसैन्यशब्दं लङ्कागता राक्षसराजभृत्याः ।

नष्टौजसा दैन्यपरीतचेष्टाः श्रेयो न पश्यन्ति नृपस्य दोषे

॥ २९ ॥

लङ्कागताः இலங்கையிலிருந்த

दैन्यपरीतचेष्टाः மனங்கக்கொண்ட

राक्षसराजभृत्याः ராஜ்யஸபன்னனது

नृपस्य மன்னனது

शब्दः வேலையாளர்களும்

दोषे அபாயத்தொழிலில்

नृ. அந்த

श्रेयो: तु விளையும் நன்மை

वानरसैन्यशब्दं வானர வாகனியத்தின்

पश्यन्ति न வெரண்கறையும்

श्रुत्वा கேட்டு, சத்தத்தை

कौशिकः கௌமார நியமர்களால்

नष्टौजसः களைமட நியமர்களால்

पश्यन्ति न காணுகிறந்தனர்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे चतुस्त्रिंशः सर्गः ॥



पञ्चविंशः सर्गः—முப்பத்தைந்தாவது ஸர்க்கம். || 32 ||

माल्यवदुपदेशः—மால்யவானது உபதேசம்.

तेन शङ्खविमिश्रेण भेरीशब्देन राघवः । उपयाति महाबाहु रामः परपुरञ्जयः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|---------------|---------------------------------|
| परपुरञ्जयः | பகைவர் நகரை வெல் பலரும் | शङ्खविमिश्रेण | சங்குகள்வத்தேகாடு |
| राघवः | ரகுசுமாரரும் | तेन | அந்த [கலந்த |
| महाबाहुः | மகாபாஹுமான் | भेरीशब्देन | பேரிகையின் சத்தத் தேரடு |
| रामः | ராமர் | उपयाति | கிட்டி வந்துகொண்டி ருந்தார். |

तं निनादं निशम्याथ रावणो राक्षसेश्वरः । सुहूर्तं ध्यानमास्थाय सचिवानभ्युदक्षत ॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------------|--------------|
| राक्षसेश्वरः | ராசுதஸமன் னனூயிப | निशम्य | கேட்டு. |
| रावणः | ராவணன் | सुहूर्तं | சற்றுதேரம் |
| अथ | அப்பொழுது | ध्यानं आस्थाय | ஆயோசனைசெய்து |
| तं | அந்த | सचिवान् | மந்திரிகளை |
| निनादं | சத்தத்தை | अभ्युदक्षत | பார்த்தான். |

अथ तान्सचिवांस्तत्र सर्वानाभाष्य रावणः । सभां सन्नादयन्सर्वामित्युवाच महाबलः ॥

जगत्सन्तापनः क्रूरो गर्हयन्राक्षसेश्वरः ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|-----------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | सर्वान् | எவ்வோரையும் |
| तत्र | அங்கிடத்தில் | सभां | சபை |
| महाबलः | மகாபலசாலியும் | सर्वान् | எங்கும் |
| जगत्सन्तापनः | உலகத்தை தடுக்கச் செய்கிறவனும் | सन्नादयन् | சமீகிக்கச்செய்த கொண்டு |
| क्रूरः | கொடியவனும் | आभाष्य | உரத்த குரலுட னழைக்க |
| राक्षसेश्वरः | ராசுதஸமன் னனூ மாயி | गर्हयन् | எனைன்செய்கின்ற வனாகி |
| रावणः | ராவணன் | इति | பின்வருமாறு |
| सान् | அந்த | उवाच | மொழிந்தான் : |
| सचिवान् | மந்திரியர்கள் | | |

तरणं सागरस्यापि विक्रमं बलसञ्चयम् । यदुक्तवन्तो रामस्य भवन्तस्तन्मया श्रुतम् ॥४॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|-----------|-------------------------|
| रामस्य | ராமனது | यत् | எதை |
| विक्रमं | ஆண்மைமையப் பற்றியும் | भवन्तः | நீங்கள் |
| सागरस्य | சமுத்திரத்தை | उक्तवन्तः | கொண்டீர்களோ |
| तरणं | தாண்டி யதைப் பற்றியும் | तत् | அது |
| बलसञ्चयं अपि | சைன்யத்தின் திரட்சி மையற்றியும் | मया | என்னால் |
| | | श्रुतम् | செவிகொள்ளப்பட்ட உது. |

भवतश्चाप्यहं वैचि युद्धे सत्यपराक्रमान् । तूष्णीकानीक्षतोऽन्योन्यं विदित्वा रामविक्रमम् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------------|-----------------|-------------------|
| भवतः | "உங்களை | विदिवा | நினைத்து |
| युद्धे | போரில் | तूष्णीकान् | வாயை மூடிக்கொண்டு |
| सत्यपराक्रमान् | உண்மையான பராக் கிரமமுடையவர்கள் | अन्योन्यं | ஒருவரையொருவர் |
| अपि | | எனையிருப்பினும் | ईक्षतः च |
| रामविक्रमं | ராமனுடைய பராக் கிரமத்தை | अहं | நான் [கிறவர்களாக |
| | | वेचि | அறிகிறேன்". |

ततस्तु सुमहामाज्ञो माल्यवान्नाम राजसः । रावणस्य वचः श्रुत्वा मातुः पैतामहोऽब्वीत् ॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------|------------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | राजसः | அரசர்கள் |
| सुमहामाज्ञः | வெகுபுத்திமானும் | रावणस्य | ராவணனது |
| मातुः | தாயருக்கு | वचः | சொல்லை |
| पैतामहः सु | கிற்றப்பனுமான் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| माल्यवान् नाम | மால்யவானெனும் | अब्वीत् | பின்வருமாறு சொழி ந்தான் : |

विधास्वभिविनीतो यो राजा राजभयानुगः । स शास्ति चिरमैश्वर्यमरीश्व कुरुते वशे ॥

| | | | |
|-----------|--|------------|------------------|
| राजन् | "அரசே! | सः | அவன் |
| यः राजा | எந்த அரசன் | चिरं | வெகுநாளும் |
| विधासु | வித்தைகளில் | ऐश्वर्यं | ராஜாதிசயத்தை |
| अभिविनीतः | நன்கு கிணங்கப்பெற்ற வனும் | शास्ति | செலுத்துகிறான். |
| नयानुगः | உய்யத்தை அனுசரிக்க கிறவனாக இருக்கிற னே | अरीन् च | சத்துருக்களையும் |
| | | वमै कुरुते | वशे कुरुते |

संदधानो हि कालेन विगृह्यशारिभिः सह । स्वपक्षवर्धनं कुर्वन्महदैश्वर्यमभ्युते ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|---------------|----------------------------|
| कालेन | "காலத்திற்குந் தக்க படி | स्वपक्षवर्धनं | தன்பக்கத்தின் செழி ப்பை |
| अरिभिः सह | சத்துருக்களோடுகூட | कुर्वन् हि | கவலிக்கிறவன் தான் |
| संदधानः | சந்திபண்ணிக்கொண் டும் | महत् | அழிபாத |
| विगृह्य च | போட்பிரிந்தகொண் டும் | ऐश्वर्यं | பாக்யத்தை |
| | | अभ्युते | அனுபவிக்கிறான். |

हीयमानेन कर्तव्यो राज्ञा संधिः समेन च । न शत्रुमवमन्येत ज्यायान्कुर्वीत विग्रहम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|----------|-----------------------------|
| शत्रुं | "ஓர் சத்துருவை | राज्ञा | மன்னனும் |
| अवमन्येत न | அவமனியதாக எண்ண க்கூடாது. | सन्धिः | சந்திபண்ணிக்கொண் டல் |
| हीयमानेन | தான் தாழ்த்தவனுதாரி ருந்தா ழும்சரி | कर्तव्यः | அவசியம் செய்யத்தக் கும். |
| समेन च | தான் சமனனாகவீரு ந்தா ழும்சரி | ज्यायान् | மேம்பட்டவன் [கழு, போரை |
| | | विग्रहं | செய்யவேண்டும். |
| | | कुर्वीत | |

तन्मद्यं रोचते संधिः सह रामेण रावण । यदर्थमभियुक्ताः स्व सीता तस्मै प्रदीयताम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|----------------|---------------------------------------|
| रावण | “ ராவணா! | यदर्थं | எவன் காரணமால் |
| तत् | ஆகையால் | भभियुक्ताः स्व | பணககொண்டோமோ |
| रामेण सह | ராமனோடுகூட | | அந்த |
| संधिः | சந்திபண்ணிக்கொள் | सीता | வரிதை |
| मद्यं | எனக்கு [எல் | तस्मै | அவனுக்கு |
| रोचते | (எல்லதாம) இதரன்று கின்றது. | प्रदीयताम् | திரும்பிக்கொடுத்தது கிடப்பபட்டும். |

यस्य देवर्षयः सर्वे गन्धर्वाश्च जयैषिणः । विरोधं मा गमस्तेन संधिस्ते तेन रोचताम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|---------------------------|
| देवर्षयः | “ தேவர்களும | मा गमः | நீ அடையாதே. |
| गन्धर्वाः च | கந்தர்வர்களுமாகிய | ते | உனக்கு |
| सर्वे | எல்லோரும் | तेन | அவனோடு |
| यस्य | எவனுக்கு | सन्धिः | சந்திபண்ணிக் கொள்ளுதல் |
| जयैषिणः | வெற்றியைக்கொருகின் | रोचताम् | மனமொப்பினதாக ஆகட்டும். |
| तेन | அவனோடு [நிற்கினோ | | |
| विरोधं | விவாதத்தை | | |

असृजद्भगवान्पक्षौ द्वावेव हि पितामहः । सुराणामसुराणां च धर्माधर्मौ तदाश्रयौ ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|-------------|--------------------------------|
| पितामहः | “ பிரம்ம | तदाश्रयौ हि | அவர்களை ஆர்யரித்த வைகளாயும் |
| भगवान् | தேவர் | धर्माधर्मौ | தர்மம் அதர்மம்என்ற |
| सुराणां | தேவர்களுக்காகவும், | द्वौ एव | இரண்டையுமே |
| असुराणां च | அசுரர்களுக்காகவும், | असृजत् | சிருஷ்டித்தார். |
| पक्षौ | தனித்தனியே அவரவ ர்க்குரியவைகளாயும் | | |

धर्मो हि श्रूयते पक्षो ह्यमराणां महात्मनाम् । अधर्मो रक्षसां पक्षो ह्यसुराणां च रावण ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|-------------------|
| रावण | “ ராவணா! | अधर्मः हि | அதர்மமென்பதே |
| धर्मः हि | தர்மமென்பதே | असुराणां | அசுரர்களுடையவும் |
| महात्मनां | மகாத்மாக்களாகிய | रक्षसां च | அடக்கர்களுடையவும் |
| अमराणां | தேவர்களுடைய | पक्षः | பக்கமாகவும் |
| पक्षः हि | பக்கமாகவும், | श्रूयते | சொல்லப்படுகிறது. |

धर्मो वै यसतेऽधर्मं ततः कृतमभूयुगम् । अधर्मो यसते धर्मं ततस्तिष्यः प्रवर्तते ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|-----------------|
| धर्मः वै | “ தர்மமானது | अधर्मः | அதர்மம் |
| अधर्मं | அதர்மத்தை | धर्मं | தர்மத்தை |
| यसते ततः | கிழங்கும்பொழுது | यसते ततः | கிழங்கும்பொழுது |
| कृतं युगं | கிருதயுகமானது | तिष्यः | கலியுகமானது |
| अभूत् | நடைபெறுகிறது. | प्रवर्तते | ஆரம்பமாகிறது. |

तच्चया चरता लोकान्धर्मो विनिहतो महान् । अधर्मः प्रगृहीतश्च तेनास्मद्भलिनः परे ॥

तन् "அப்பொழுது
लोकान् चरता திக்கிலுயம்செய்த
त्वया உன்னால்
महान् சிறந்த
धर्मः தர்மமானது
विनिहतः நாசஞ்செய்யப்பட்ட

-உது.

अधर्मः च அதர்மமும்
प्रगृहीतः கைக்கொள்ளப்பட்ட
तेन அதனால் - [உது.
परे சத்துருக்கள்
भस्वत् நம்மைவிட
बलिनः அதிக பலசாலிகளாயி
ருக்கின்றார்கள்.

स प्रमादाद्विद्वस्ते ह्यधर्मो ग्रसते च नः । विवर्धयति पक्षं च सुराणां सुरभावनः ॥१६॥

सः अधर्मः हि "அந்த அதர்மமே
ते உனது
प्रमादात् தப்பு எண்ணத்தால்
विद्वद्ः வளர்த்ததால்
नः கம்மை
ग्रसते விழுக்குகிறது.
च அன்றியும்

सुरभावनः च { தேவர்களுக்குவேண்டி
பயதைத் தருகிறதா
கவுமாகி
सुराणां தேவர்களுடைய
पक्षं பக்தத்தை
विवर्धयति செழிப்பிக்கின்றது.

विषयेषु ग्रसन्तेन यत्किञ्चित्कारिणा त्वया । ऋषीणामभिकल्पानामुद्देशो जनितो महान् ॥

विषयेषु "சிறிறின்பங்களில்
ग्रसन्ते சடுபட்டவனாய்
यत्किञ्चित्कारिणा கிளைக்கவும் கூடாத
தொழில்களைப்பூரியும்
त्वया உன்னால்

अभिकल्पानां அக்கனிக்கொப்பான
வர்களாகிய
ऋषीणां முனிவர்களுக்கு
महान् அஸுறியமாயிருக்கிற
उद्देशः துயரம்
जनितः கிளைவிக்கப்பட்டது.

तेषां प्रभावो दुर्धर्षः प्रदीप्त इव पावकः । तपसा भावितात्मानो धर्मस्यानुग्रहे रताः ॥

तेषां "அவர்களுடைய
प्रभावः சக்தி
प्रदीप्तः கொழுத்துவிட்ட
டெரியும்
पावकः इव அக்கனிபோன்றதாய்
दुर्धर्षः அணுகமுடியாதது.

तपसा தவத்தால்
भावितात्मानः பரமாத்மனானிகளாய்
धर्मस्य தர்மத்தை
अनुग्रहे வளர்ப்பதில்
रताः ணக்கமுடையவர்கள்.

मुख्यैर्यज्ञैर्यजन्येते नित्यं तैस्तैर्दिजातयः । जुह्वत्यर्थाश्च विधिवद्देदांश्चैरधीयते ॥ १९ ॥

एते दिजातयः "இந்த அந்தணர்கள்
तैः तैः அந்தந்த
मुख्यैः சிறந்த
यज्ञैः யாகங்களால்
नित्यं எப்பொழுதும்
यजन्ति தேவர்களை ஆராதிக
கின்றார்கள்.

विधिवत् முறைப்படி
अधीयते அக்கனிகளிலும்
जुह्वति ஜோமம்பண்ணுமின்
ரர்கள்.
वेदान् च வேதங்கடையும்
उधैः உயர்ந்த குரலால்
अधीयते ஒதுகின்றார்கள்.

अभिभूय च रक्षांसि ब्रह्मवोषानुदैरयन् । दिशोऽपि विद्रुताः सर्वाः स्तनयिन्नुरिवोष्णगे ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|----------------|---------------|
| रक्षांसि | “அரக்கர்களை | स्तनयि: नु: इव | மேகம்பிபாலவே |
| अभिभूय | அவமானம்செய்து | सर्वाः | எல்லா |
| ब्रह्मवोषान् च | பிரம்மவாபங்களைபும் | दिशः अपि | திக்குகளிலும் |
| उदैरयन् | இட்டார்கள், | विद्रुताः | மறைந்தார்கள். |
| उष्णगे | வெயிற்சூலைத்தில் | | |

ऋषीणामभिकल्पानामग्निहोत्रसमुत्थितः । आदत्ते रक्षसां तेजो धूमो व्याप्य दिशो दश ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------|---------|---------------|
| अभिकल्पानां | “ அக்ஸிக்குடியானர்க ளான | दश | பத்து |
| ऋषीणां | ரிஷிகளுடைய | दिशः | திக்குகளிலும் |
| अग्निहोत्रसमुत्थितः | அக்ஸிஹோத்திரத்தி னில் உண்டான | व्याप्य | பரவி |
| धूमः | புகையானது | रक्षसां | அரக்கர்களுடைய |
| | | तेजः | தேஜஸ்களை |
| | | आदत्ते | கவர்சின்றது. |

तेषु तेषु च देशेषु पुण्येष्वेव दृढवर्तैः । चर्यमाणं तपस्तीव्रं सन्तापयति राक्षसान् ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------|--|-----------|--------------------|
| तेषु तेषु | “ அந்தந்த | चर्यमाणं | அனுஷ்டிக்கப்படுகிற |
| पुण्येषु | புண்ணிய | तीव्रं | உக்கிரமான |
| देशेषु च | கேஷத்திரங்களிலேயே | तपः | தவமானது |
| दृढवर्तैः एव | { சூதையற்ற தர்மானு ஷ்டான்களைபுடைய அடிகளாகையே | राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| | | सन्तापयति | சுதற அடிக்கிறது. |

देवदानवयक्षेभ्यो गृहीतश्च वरस्त्वया

॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------|-----------------------|
| देवदा | உன்னால் | वरः | உன் பிரார்த்தனை |
| नवयक्षेभ्यः | “ தேவர்கள், தானவர்க ள், யக்ஷர்கள் இ வர்களால் | | (மரணமின்மை) |
| च | | गृहीतः | அடைவப்பட்டிருக்கிறது. |

मानुषा वानरा ऋक्षा गोलाङ्गुला महाबलाः । बलवन्त इहागम्य गर्जन्ति दृढविक्रमाः ॥

| | | | |
|-------------|--|-------------|------------------------------|
| महाबलाः | “ மகாபலசாலிகளும் | गोलाङ्गुलाः | முசுக்களெனும் வானரர்களும் |
| दृढविक्रमाः | { எதற்கும் சலியாத ஆண்மைபுடையவர் களெனான | बलवन्तः | மேம்பட்டவர்களாய் |
| मानुषाः | மனிதர்களும் | इह | இவ்விடத்திற்கு |
| वानराः | வானரர்களும் | आगम्य | வந்து |
| ऋक्षाः | கரையுள்ளும் | गर्जन्ति | கர்ஜிக்கிறார்கள். |

उत्पातान्विविधान्दृष्ट्वा घोरान्वहुविधांस्तथा ।

विविधान्
उत्पातान्
तथा
बहुविधान्

“பலவகையான
உ. தீய தகைகளையும்
அவ்வண்ணமே
பலவகை

घोरान्

{ தீங்கை விளைவிக்கும்
சாஸ்திரோத்தரான
காபல்களையும்

विनाशमनुपश्यामि सर्वेषां रक्षसामहम् ॥

दृष्ट्वा
रक्षसां
सर्वेषां
विनाशं
अहम्
अनुपश्यामि

கவனித்து
அரக்கர்கள்
எல்லோருக்கும்
அழிவை
நான்
சம்பளிக்கப்படுவாகிற
தாய் என்கிறதேறன்.

खराभिस्तनिता घोरा मेघाः प्रतिभयङ्कराः ।

घोराः

“கொடிய உருவமு
டையவைகளும்,

प्रतिभयङ्कराः

மிக்க பயத்தை விளை
விக்கின்றவைகளும்

खराभिस्तनिताः

சுதிமையாய் இடிக்கின்
றவைகளான

शोणितेनाभिवर्षन्ति लङ्कामुष्णेन सर्वतः ॥

मेघाः
लङ्कां
सर्वतः
उष्णेन
शोणितेन
अभिवर्षन्ति

மேகங்கள்
இலங்கையில்
எங்கும்
கொதிக்கின்ற
ரத்தத்தை
அர்ஷிக்கின்றன.

रुदां वाहनानां च प्रपतन्त्यस्रविन्दवः । ध्वजा ध्वस्ता विवर्णाश्च न प्रभान्ति यथा पुरा ॥

रुदां

“அழுகின்ற

वाहनानां

வாகனப்பிராணிக
ளின்

अस्रविन्दवः च

கண்ணீர் த் துளிகளும்

प्रपतन्ति

கீழே விழுமின்றன.

ध्वजाः

துவழக்கள்

ध्वजाः

அழுககடைத்தவை
களாய்

विवर्णाः च

நிறம் மாறியவைக
ளாயும்

यथा पुरा

முன்போல்

न प्रभान्ति

விளக்காமலிருக்கின்
றன.

व्याला गोमायवो वृधा वाश्यन्ति च सुभैरवम् ॥ २८ ॥

व्यालाः

“கொடிய

गोमायवः

சரிகளும்,

वृधाः च

சழுக்குகளும்,

सुभैरवं

வெகு பயங்கரமாக

वाश्यन्ति

வளையிடுகின்றன.

भविश्य लङ्कामनिशं समवायांश्च कुर्वते

भनिशं

எப்பொழுதும்

लङ्काम्

இலங்கையில்

॥ २९ ॥

प्रविश्य

புகுந்து

समवायान् च कुर्वते

கூட்டம் கூடுகின்றன.

कालिकाः पाण्डुरैर्दन्तैः प्रहसन्त्ययतः स्थिताः । स्त्रियः स्वप्नेषु मुष्णन्त्यो गृहाणि प्रतिभाष्य च ॥

कालिकाः

“கருந்தமுள்ள

स्त्रियः

ஸ்த்ரீகள்

स्वप्नेषु

கனவுகளில்

गृहाणि

மனைவிமார்களின்

भसतः

எதிரில்

स्थिताः

நிற்கின்றவர்களாய்

मुष्णन्त्यः

பிரயிக்கக்கொத்து

प्रतिभाष्य च

கூடக்கூட எதிர்த்துப்
பேசு

पाण्डुरैः

வெள்ளையான

दन्तैः

பற்களைக் காட்டி

प्रहसन्ति

கிரிக்கின்றார்கள்.

गृहाणां बलिकर्माणि श्वानः पर्युपभुञ्जते ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|---------------|---------------|
| गृहाणां | " ⁴ வீடுகளில் | श्वानः | நாய்கள் |
| बलिकर्माणि | தீவிரமகர்மக் காரிய | पर्युपभुञ्जते | தீண்டுகின்றன. |

खरा गोषु प्रजायन्ते मूपिका नकुलैः सह ॥ ३२ ॥
माजारा द्वीपिभिः सार्धं सूकराः शुनकैः सह । किन्नरा राक्षसैश्चापि समीयुर्मानुषैस्सह ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------|-------------|----------------|
| खराः | " ⁴ கழுநூதிகள் | मूपिकाः | பன்றிகள் |
| गोषु | பசுக்களிடம் | शुनकैः सह | நாய்களோடும் |
| प्रजायन्ते | பிறக்கின்றன. | किन्नराः | கின்னரர்கள் |
| मूपिकाः | எலிகள் | राक्षसैः च | ஆரக்கர்களோடும் |
| नकुलैः सह | தீர்ப்பிவ்வகையோடும் | मानुषैः अपि | மனிதர்களோடும் |
| माजाराः | பூனைகள் | सह | கூட |
| द्वीपिभिः सार्धं | புகள்களோடும் | समीयुः | தேரிகின்றன. |

पाण्डुरा रक्तपादाश्च विहङ्गाः कालचोदिताः । राक्षसानां विनाशाय कपोता विचरन्ति च ॥

| | | | |
|-------------|--|------------|------------------------------|
| पाण्डुराः | வெண்ணிறமுள்ள வைகளும் | विहङ्गाः च | பறவைகளும், |
| रक्तपादाः च | { கால்கள் மாத்திரம் சுவப்புவிதமுள்ள வைகளும், கடுபாதம் என்ற | कालचोदिताः | எமனது அணுமதி பெற்றவைகளாய் |
| कपोताः | கடுபாதம் என்ற | राक्षसानां | அரக்கர்கள் |
| | | विनाशाय | அழிவுகாரணாய் |
| | | विचरन्ति | தீர்கின்றன. |

वीचीकूर्चीति वाश्यन्त्यः शारिका वेश्मसु स्थिताः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|---------|--------------------------|-------------|---------------------------------|
| वेश्मसु | " ⁴ வீடுகளில் | वीचीकूर्चि | ' ⁴ விசிசூசி ' |
| स्थिताः | இருக்கும் | इति | என்று |
| शारिकाः | நாகணவாய்ப் பறவை கள் | वाश्यन्त्यः | மறைந்து கொண்டு கூடிக்கின்றன. |

पतन्ति यथिताश्चापि निर्जिताः कलहैपिणः । पक्षिणश्च मृगाः सर्वे मत्वादित्यं रुदन्ति च ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-------------|----------------------------|
| मृगाः | " ⁴ பிருகங்கள் | अपि च | ஆகிலும் |
| पक्षिणः | பகழிகள் | कलहैपिणः | கலகையே கொடுபு வைகளாய் |
| सर्वे च | எல்லாமும் | पतन्ति | குதிக்கின்றன. |
| अथिताः | காயம்பட்டு | मत्वादित्यं | தங்கையே பார்க்கு |
| निर्जिताः | தொல்லியடைந்தவை கள் | रुदन्ति च | அழுது வரையுமிடு கின்றன. |

करालो विकटो मुण्डः परुषः कृष्णपिङ्गलः । काशे गृहाणि सर्वेषां काले कालेऽन्वेष्यते ॥

| | | | |
|--------------|---|------------|--------------------------------------|
| करालः | " பயங்கரமானவனும், | काशः | எமன் |
| विकटः | செருக்குற்றவனும், | सर्वेषां | எல்லாருடைய |
| मुण्डः | தலைமயில்வாதவனும், | गृहाणि | விடுகனிலும் |
| परुषः | பார்க்க அணற்றய மானவனும், | काले काले | நிமிஷந்தேதாறும் |
| कृष्णपिङ्गलः | { கரும்பும் மஞ்சளும் கலந்த நிறமுடையவ னுமான் | अन्वेष्यते | எதிர்பார்த்தாக் கொண்டிருக்கிறான். |

एतान्यन्यानि दुष्टानि निमित्तान्युत्पत्तन्ति च । विष्णुं मन्यामहे रामं मानुषं रूपमास्थितम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------|--------------|-----------------|
| एतानि | " இவைகளும் | रामं | ராமனை |
| अन्यानि | மற்றவைகளுமான் | मानुषं | மானிட |
| दुष्टानि | அமல்கள் கரமான | रूपं आस्थितं | உருவமெடுத்தவந்த |
| निमित्तानि च | சொளக்களை | विष्णुं | விஷ்ணுவாக |
| उत्पत्तन्ति | தோன்றுகின்றன. | मन्यामहे | நினைக்கிறோம். |

न हि मानुषमात्रोऽसौ राघवो दृढविक्रमः । येन बद्धः समुद्रस्य स सेतुः परमाद्भुतः ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-------------|-----------------------------|
| वेन | " எனனால் | असौ | இந்த |
| परमाद्भुतः | பரம ஆச்சரப்பகரமா பிருக்கின்ற | दृढविक्रमः | எதற்கும் சலிபா ஆண்மைபற்ற |
| सः | ஆந்த | राघवः | ராமன் |
| सेतुः | சேது | मानुषमात्रः | மானிடத்தன்மை புற்றவனாக |
| समुद्रस्य | சமுந்திரத்திற்கு | न हि | இல்லவேலில்லை. |
| बद्धः | கட்டப்பட்டதோ | | |

कुरुष्व नरराजेन सन्धि रामेण रावण । ज्ञात्वा प्रथमं कार्याणि क्रियतामायतिक्षमम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|---------|-------------------------|
| कार्याणि | " விஷயங்களை | रावण | ராவண! |
| ज्ञात्वा | அறிந்துகொண்டு | नरराजेन | மன்னிடர்களுக்கு |
| आयतिक्षमं | வருங்காலத்திற் கேற்றதை | रामेण | ராமனோடு [ராமனான |
| प्रथमं | நிச்சயித்து | सन्धि | சந்திபண்ணிக் கொள்ளலை |
| क्रियतां | செய்யப்பட்டும். | कुरुष्व | நீ செய்வாயாக. |

सीतार्थं ते महामात्र महद्भयमुपस्थितम्

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|----------------|
| महामात्र | " மகாபுத்திரராயே! | महत् | பெரும் |
| ते | உனக்கு | भयं | ஆபத்து |
| सीतार्थं | சீதைகாரணமாய் | उपस्थितम् | கிட்டிவிட்டது. |

॥ ४१ ॥

इदं वचस्तत्र निशम्य माल्यवान्परीक्ष्य रक्षोऽधिपतेर्षनः पुनः ।

अनुत्तमेषुत्तमपौरुषो बली बभूव तूष्णीं समवेक्ष्य रावणम्

॥ ४२ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------------|----------------------|
| अनुत्तमेषु | சிறந்தவர்களில் | तत | அப்பொழுது |
| उत्तमपौरुषः | சிறந்த ஆற்றலுடையவனும் | रक्षोऽधिपते: | அரசுக்கமன்னனது |
| बली | வெகு சக்தியுடையவ | मनः | மனதையும் |
| माल्यवान् | மால்யவான் [லுமான | परीक्ष्य | சவணித்தறிந்து |
| इदं | மேற்கண்ட | पुनः | இன்னும் |
| वचः | சொல்லை | रावणम् | ராவணனையும் |
| निशम्य | செனியில் போட்டு | समवेक्ष्य | சரியாயறிந்து |
| | விட்டு | तूष्णीं बभूव | வாயை மூடிக்கொண்டான். |

स तद्वचो माल्यवता प्रभाषितं दशाननो न प्रतिशुश्रुवे तदा ।

भृशं जगर्ह च सुदुष्टमानसो मुनूर्ध्वरत्युच्चवचांस्युर्दारयन्

॥ ४३ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|---------------|-----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | सुदुष्टमानसः | கொடிய எண்ணங் கொண்ட |
| मुमुक्षुः | சாக்ருங்காலங்கிட்டிய | सः | அவன் |
| दशाननः | சவணன் [வளுன | अत्युच्चवांसि | வன்பொழிசளை |
| माल्यवता | மால்யவானும் | उदीरयन् | சொல்லிக்கொண்டு |
| प्रभाषितं | சொல்லப்பட்ட | भृशं च | வாயில்வந்தபடியெல்லாம் |
| तन् | அந்த | जगर्ह | எழுமம் |
| वचः | சொல்லை | | |
| प्रतिशुश्रुवे न | எற்றுக்கொள்ளவில்லை. | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16021

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1346



பத்ரிச: சர்ட:—முப்பத்தாறுவது ஸர்க்கம் ॥ ३६ ॥

சட்காறுதி:—இலங்கையைக் காப்பது.

तत्तु माल्यवतो वाक्यं हितमुक्तं दशाननः । न मर्षयति दुष्टात्मा कालस्य वशमागतः ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|---------------|-----------|---------------|
| कालस्य | எமலுக்கு | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| वशं आगतः | ஆப்பட்டுவிட்ட | हितं | நிதிமாய் |
| * दुष्टात्मा | அடிடனாகிய | उक्तं | சொல்லப்பட்ட |
| दशाननः | சவணன் | माल्यवतः | மால்யவானின் |
| तन् | அப்பொழுது | वाक्यं | சொல்லை |
| | | मर्षयति न | சகிக்கவில்லை. |

स बद्ध्वा भुङ्कुटिं वक्त्रे क्रोधस्य वशमागतः । अमर्षात्परिवृत्ताक्षो माल्यवन्तमथाब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|-------------------------|
| ச: | அவன் | அமர்ஷா: | கேரபத்தால் |
| क्रोधस्य | கேரபத்திற்கு | परिवृत्ताक्षः | கண்கள் சுழல |
| वशं आगतः | ஆடப்பட்டவனாகி | माल्यवन्तं | மால்யவானைப் பார்த்து |
| भुङ्कुटिं | புருவத்தை | अव | பின்வருவது |
| वक्त्रे | கெற்றியில் | अब्रवीत् | சொன்னான் : |
| बद्ध्वा | கெறித்து | | |

हितबुद्ध्या यदहितं वचः परुषमुच्यते । परपक्षं प्रविश्यैव नैतच्छ्रोत्रं गतं मम ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|-------------|-------------------|
| परपक्षं | " சத்துருபக்சத்தில் | परुषं | காதுகுடுத்துகெட்க |
| प्रविश्य एव | சென்றதுகொண்டே | वचः | வொண்ணாததுமாயிய |
| हितबुद्ध्या | உன்னுடைய நறிதத் தில் கோக்கால் | उच्यते | சொல்லப்பட்டதோ |
| यत् | எதொன்று | एतत् | இது |
| अहितं | எனக்கு கன்மை பயக் காத்ததும் | मम श्रोत्रं | எனது காத்தில் |
| | | गतं न | ஏறவில்லை. |

मानुषं कृपणं राममेकं शाखामृगाश्रयम् । समर्थं मन्यसे केन त्यक्तं पित्रा वनालयम् ॥४॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|--------|-------------------|
| मानुषं | " மானிடனும், | एकं | எகாகியும், |
| पित्रा | தந்தையால் | वनालयं | வனத்தில் திரிபவனு |
| त्यक्तं | கைவிடப்பட்டவனுப் | रामे | ராமனை [மரண |
| कृपणं | திக்கற்றவனும், | केन | எதைக்கொண்டு |
| शाखामृगाश्रयं | சூரக்குகளின் உதவி பெயக்கொண்ட | समर्थं | சமர்த்தனாக |
| | | मन्यसे | நீ நினைக்கின்றனை? |

रक्षसार्भीश्वरं मां च देवतानां भयङ्करम् । हीनं मां मन्यसे केन ह्रीनं सर्वविक्रमैः ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|--------|-------------------|
| देवतानां च | " தேவர்களுக்கும் | अहीनं | குறையற்றிருக்கிறவ |
| भयङ्करं | நடுக்கமுண்டாக்குகிற | | னுமான |
| रक्षसां | அரக்கர்களுது[வனாகிய | मां हि | என்னையோவெனில் |
| ईश्वरं | மன்னனாகிய | हीनं | தாழ்த்தவனாக |
| मां | என்னை | केन | எக்காரணத்தால் |
| सर्वविक्रमैः | எல்லா பரக்கிரமங் களாலும் | मन्यसे | நினைக்கின்றாய்? |

वीर्यद्वेषेण वा शङ्के पक्षपातेन वा रिपोः । त्वयाऽहं परुषाण्युक्तः परशोत्साहनेन वा ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------|---------|--------------------------|
| त्वया | " உன்னால் | अहं | நான் |
| वीर्यद्वेषेण वा | எனது வீர்யத்தில் | परुषाणि | சொல்லத்தகாத சொ ற்களை, |
| | பொருமைமயாவோ | उक्तः | சொல்லப்பட்டேன் |
| रिपोः | சத்துருவிடம் | | என்று |
| पक्षपातेन वा | பகஷ்பாதத்தாலோ | शङ्के | நினைக்கிறேன். |
| परशोत्साहनेन वा | பகைவர்களுடைய ஏவுதலினாலோ | | |

प्रभवन्तं पदस्थं हि परुषं कोऽभिधास्यति । पण्डितः शास्त्रतन्त्रो विना प्रोत्साहनाद्रिपोः ॥

ரீபு: "சத்தருவினுடைய
 பிரோசாதனாத் வினா எழுதலாகல்லாத
 ஷாஸ்திரவன்: காண்திரங்கலின் துட்
 பங்களைப்பறிந்த
 பண்த: பண்டிதனுக்கும்
 க: ஹி எவன்நான்

புமவன் வல்லமைபுற்று
 பதஸ்த் { உத்தமபதவிரிவிருக்
 கின்ற ஒருவனைப்
 பார்த்து
 புரூ அடாதசொல்லி
 அபிதாஸ்யதி சொல்வான்.

आनीय च वनात्सीतां पश्यानापि श्रियम् । किमर्थं प्रतिदास्यामि राघवस्य भयादहम् ॥

அஹி "நான்
 வனாத் காட்டிலிருந்து
 பசுயானா தாயலாமைவிட்டு
 தனித்திருக்கிற
 சிறிவ் ஹி மகாலக்ஷ்மியைப்போ
 லிருக்கும்

சீதா வரீதைதலை
 அனீய ச கொண்டு வந்து சிட்டு
 ராவஸ்ய சாமனுக்கு
 மயாத் கிமய் பயத்தோ
 புதிதாஸ்யமி திருப்பிக்கொடுப்
 பேம்! "

वृत्तं वानरकोटीभिः समुप्रायं सलक्ष्मणम् । पश्य कैश्चिद्दहोभिस्त्वं राघवं निहतं मया ॥९॥

வ் "ஹி
 மயா என்னால்
 வானகோட்டிभि: கோடிக்கணக்கான
 வானசர்க்களால்
 வுத் சூழப்பட்டவனு
 ராவ் ராமனை

சமூபிரய் சுகீவனோடுகூடவும்,
 சலக்ஷ்மணனோடுகூட
 கேசித் சில [வும்
 அஹி: தினக்களில்
 நிஹத் கொல்லப்பட்டவனாக
 புச்ய பார்ப்பாய்.

दृष्ट्वै यस्य न तिष्ठन्ति दैवतान्यपि संयुगे । स कस्माद्रावणो युद्धे भयमाहारयिष्यति ॥

யசு "எவனு
 ட்ருத் டெரந்த
 சயுगे புத்தத்தில்
 டீவதானி அபி தேவர்கள்கூட
 திஸ்தி ந எதிர்த்து திற்கமாத்
 டார்களை

ச: அப்போக்கொத்த
 ராவண: ராவணன்
 கஸாத் எக்காரணத்தால்
 யுத் புத்தத்தில்
 மய் அஹாரயிஷ்யதி பயங்கொள்வான்?

॥ ११ ॥

द्विधा भज्येयमप्येवं न नमेयं तु कस्यचित्

द्विधा "திரண்டு தண்டாய்
 மஜ்யேய அபி காண் பிளவுபட்ட
 னும்

எவ் து அந்நிதமேயன்றி
 கஸ்யித் ஒருவனுக்கும்
 நமேய் ந தலைகுனிபேன்.

॥ १२ ॥

एष मे सहजो दोषः स्वभावो दुरतिक्रमः

ஏய: "ஐது
 மே காணது
 சவாவ: பிராணக்குணம்;

சஹ: பிராணி
 டோய: குறை
 துரதிகம: தீவர்த்திக்கமுடியாதது.

यदि तावत्समुद्रे तु सेतुर्वद्धो यहच्छया । रामेण विस्मयः कोऽत्र येन ते भयमागतम् ॥

| | | | |
|---------|--------------------------|--------------|-------------------|
| येन | “எந்த | यद्दृश्या तु | தனதாற்றவாஸல்லை |
| रामेण | ராமனால் | | து அகஸ்மாத்தாய் |
| ते | உனக்கு | वदः | கட்டப்பட்டது ; |
| भयं | பயம் | यदि तावत् | இதொன்றுண்டெனினும் |
| आगतं | ஏற்பட்டிருக்கிறதோ அவனால் | अत्र | இதில் |
| समुद्रे | சமுத்திரத்தில் | कः | என்ன |
| सेतुः | சேது | विस्मयः | ஆச்சர்யம். |

स तु तीर्त्वाऽर्णवं रामः सह वानरसेनया । प्रतिजानामि ते सत्यं न जीवन्प्रतियास्यति ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------------|------------------------------|
| वानरसेनया | வானரசேனையோடு | तु - | நீங்கள் |
| सह | கூட | जीवन् | உயிருடன் |
| सः | அந்த | प्रतियास्यति न | திரும்பிப்போகப் போகிறதில்லை. |
| रामः | ராமன் | ते | உனக்கு |
| अर्णवं | சமுத்திரத்தை | सत्यं प्रतिजानामि | சபதம்செய்து சொல்லுகிறேன்.” |
| तीर्त्वां | கடந்து | | |

एवं ब्रुवाणं संख्यं रुष्टं विज्ञाय रावणम् । व्रीडितो माल्यवान् वाक्यं नोत्तरं प्रत्यपद्यत ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------------|-----------------|
| माल्यवान् | மால்யவான் | रुष्टं | கொள்கொண்டிருப்ப |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | विज्ञाय | அறிந்து [வனுக |
| ब्रुवाणं | பேசும் | व्रीडितः | வெட்கி |
| रावणं | ராவணனை | उत्तरं | மறுமொழி |
| संख्यं | தலைகாப்புரியாது | वाक्यं | சொல்லை |
| | | प्रत्यपद्यत न | சொல்லவில்லை. |

जयाशिया च राजानं वर्धयित्वा यथोचितम् । माल्यवान्भ्यनुज्ञातो जगाम स्वं निवेशनम् ॥

| | | | |
|-----------|--|----------------|------------------|
| माल्यवान् | மால்யவான் | वर्धयित्वा | வாழ்த்திக்விட்டு |
| राजानं | ஆரசனை | अभ्यनुज्ञातः च | விடைபெற்றுக் |
| यथोचितं | முறைப்படி | स्वं | தனது [கொண்டு |
| जयाशिया | “நீ வெற்றிபெற்று விளக்குவாயாக” என்கிற ஆகி சொற்கொண்டு | निवेशनं | மாலிகைக்கு |
| | | जगाम | சென்றான். |

रावणस्तु सहामात्यो मन्त्रयित्वा विमृश्य च । लङ्कायापतुल्यां गुप्तिं कारयामास राक्षसः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------|---------------------------|
| राक्षसः | ஆரக்கனாகிய | विमृश्य तु | நிச்சயித்து |
| रावणः | ராவணன் | लङ्कायां | இலங்கையில் |
| सहामात्यः च | மந்திரிமார்களுடன் | अतुल्यां | ஒப்புயர்வில்லாத |
| | சேர்த்தவனால் | गुप्तिं | பாதுகாப்பை |
| मन्त्रयित्वा | ஆலோசித்து | कारयामास | யின்வருமாறு செய்வித்தான்; |

स व्यादिदेश पूर्वस्यां प्रहस्तं द्वारि राक्षसम् । दक्षिणस्यां महावीर्यं महापार्श्वमहोदरौ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|----------|
| ச: | அவன் | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |
| பூவ்யா | கிழக்கு | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |
| தாரி | வாயிலில் | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |
| பஹஸ்தம் | பிரஸ்தம் தனென்ற | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |
| ராஶஸம் | அரக்கனையும் | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |
| தக்ஷிணஸ்யா | தெற்கில் | மகாபரீரீ | மகாபரீரீ |

पश्चिमायामथो द्वारि पुत्रमिन्द्रजितं तथा । व्यादिदेश महामार्यं बहुभी राक्षसैर्दृत्म् ॥१९॥

| | | | |
|-----------|---------------|-------------|---------------|
| ததா | அப்படியே | இந்திரஜிதன் | இந்திரஜிதன் |
| அதோ | அப்பொழுதே | பல | பல |
| பஸ்சிமாயா | மேற்கு | ராஶஸீ: | அரக்கர்களால் |
| தாரி | வாயிலில் | வூதம் | குழப்பட்டவனாக |
| புத்ரம் | புதல்வனும் | வ்யாதிதேச | கியமித்தான். |
| மஹாமரீ | மகா மாரியுமான | | |

उत्तरस्यां पुरद्वारि व्यादिश्य शुकसारणौ । स्वयं चात्र भविष्यामि मन्त्रिणस्तानुवाच ह ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------------------|----------------------|
| उत्तरस्यां | வடக்கு | மந்திரிகளைப்பார்த்து | மந்திரிகளைப்பார்த்து |
| புரதாரி | கோட்டைவாயிலில் | ஸ்வயம் ஹ | ‘நானே |
| சூகஸாரணீ | சுக்கனையும், ஊரண | அஸ ச | இங்கேயே |
| | னையும் | மவிஷ்யாமி | இருக்கப்போகிறேன்’ |
| வ்யாதிஸ்ய | கியமித்துவிட்டு | உவாச | என்றும். |
| தானு | அந்த | | |

राक्षसं तु विरुपाक्षं महावीर्यपराक्रमम् । मध्यमेऽस्थापयद्गुल्मे बहुभिः सह राक्षसैः ॥२१॥

| | | | |
|---------------------------|---|-----------|------------------|
| மஹாவீரீ- } பராஶம் து) | அளவுகடந்த ஆண் மையுமாற்றலுமு டையவனாகிய | பல | பல |
| விரூபாஶம் | விருபாகுதனென்ற | ராஶஸீ: சஹ | அரக்கர்களோடுகூட |
| ராஶஸீ | அரக்களை | மத்யமே | நடு |
| | | குல்மே | கோட்டையில் |
| | | அஸ்தாபயத் | இருக்க வைத்தான். |

एवं विधानं लङ्कायां कृत्वा राक्षसपुङ्गवः । कृतकृत्यमिवात्मानं मन्यते कालचोदितः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|---------------|-------------------------------------|
| ராஶஸபுங்஑வ: | ராஶஸஸோத்தம னாகும் அவன் | கால஑ோதித: | எமனுக்கரப்பட்டவ தன்னை [னாய் |
| லங்காயா | இலங்கையில் | கூதகூத்யம் ஐவ | தான் செய்யவேண்டிய கடமைகளை செய்து |
| ஏவ் | மேற்கண்டவாறு | மன்யதே | முடித்துவிட்டவ னாகவே |
| விதானம் | ஏற்பாட்டை | மன்யதே | எண்ணிக்கொண் டான். |
| கூதூவ | செய்துவிட்டு, | | |

विसर्जयामास ततः स मन्त्रिणो विधानमाज्ञाप्य पुरस्य पुष्कलम् ।

जयाशिषा मन्त्रिणगेन पूजितो विवेश चान्तःपुरमृद्धिमन्महत

॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|---|-------------|------------------------|
| सः | அவன் | पूजितः | தென்காண்கப்பட்டவ |
| पुरस्य | ககருக்கு | मन्त्रिणः | மந்திரிகளை [ஞய் |
| पुष्कलम् | சிறந்த | विसर्जयामास | கிடைக்கொடுத்தனுப்பி |
| विधानं | ஏற்பாட்டை | ततः | அதன்பின்னர் [ஞன். |
| आज्ञाप्य | ஆகஞாபித்துவிட்டு | महत् च | மிகவும் |
| मन्त्रिणगेन | மந்திரிவர்க்குத்தால் | ऋद्धिमन् | செல்வம்மல்கிய |
| जयाशिषा | { 'சி ங்மம்பெற்றுவினக் சுவாபாக' என்று ஆசிர்ச்சொற்கொண்டு | अन्तःपुरं | அந்தப்புரத்தினுள் |
| | | विवेश | போய்ச் செந்துவிட்டான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे षट्त्रिंशः सर्गः ॥

भाविः श्लोकः 16644

युद्धकाण्डे भाविः श्लोकः 1369



सप्तविंशः सर्गः—முப்பத்தேழாவது ஸர்க்கம் ॥ २७ ॥

श्रीरामेण सेनाव्यूहनम्—புரீராமர் வேளையை பிரித்து சிறுத்துவது.

नखानरराजौ तौ स च वायुसुतः कपिः । जाम्बवानृक्षराजश्च राक्षसश्च विभीषणः ॥१॥

अङ्गदो वालिपुत्रश्च सौमित्रिः शलभः कपिः । सुषेणः सहदायादो मैन्दो द्विविद एव च ॥

गजो गवाक्षः कुमुदो नलोऽय पनसस्तदा । अमित्रविषयं प्राप्ताः समवेताः समर्थयन् ॥

| | | | |
|----------------|---|-------------|--|
| तौ | அந்த | कपिः | காணரஞம் |
| नखानर- राजौ | } மாஸிடர்களின் மண் னரும் வானசர்க ளின் மண்ணஞம் (புரீ ராமரும் அக்ரீவஞம்) | सहदायादः | சற்றத்தாருடனிருந்த |
| | | सुषेणः | ஸுஷேணஞம் |
| वायुसुतः | வாயுவின் குமாரஞம் | मैन्दः च | மைந்தஞம் |
| कपिः | காணரும்கிய | द्विविदः एव | தீவிதஞம் |
| सः च | அவரும்(ஞஞமரும்) | गजः | கஜஞம் |
| ऋक्षराजः | கரடிமண்ணகிய | गवाक्षः | கவாக்ஷஞம் |
| जाम्बवान् च | ஜம்பவாஞம் | कुमुदः | குமுதஞம் |
| राक्षसः | அக்கராகிய | नलः अथ | நலஞம் |
| विभीषणः च | விபிஷணரும் | पनसः तथा | பனஸஞம் |
| वालिपुत्रः | வாலிபின் புதல்வஞ | अमित्रविषयं | அத்காருதசத்திற்கு |
| अङ्गदः च | அங்கதஞம் [பிய | प्राप्ताः | வந்துசென்றவர்க |
| सौमित्रिः | ஸம்மணரும் | समवेताः | ஞன் தகடி [ஞய் |
| शलभः | சலபனென்ற | समर्थयन् | பின்வருமாறு விவாய மாய்ப் பேசினார்கள். |

इयं सा लक्ष्यते लङ्का पुरी रावणपालिता । सासुरोऽगन्धर्वैर्मरैरपि दुर्जया ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|----------|------------------------|
| रावणपालिता | "நா வண னுள் ளா துரை க்கப்பட்டுத் தாம் | दुर्जया | இயிர்க்கக்கடி வ மான து |
| सासुरोऽग- न्धर्वैः } | ஆசுரர்கள், உடர்கள், கந்தர்வர்கள், இவர் களைட்டுகூட | सा | ஆக்த [முகிய |
| अमरैः अपि | தேவர்களை னும்கூட | लङ्का | இலங்கை |
| | | पुरी | நகர் |
| | | इयं | இதோ |
| | | लक्ष्यते | காணப்படுகிறது. |

कार्यसिद्धिं पुरस्कृत्य मन्त्रपथं विनिर्णये ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|------------|----------------------------|
| कार्यसिद्धिं | "காரிய சித்தியை | विनिर्णये | முன் எத்பாடுகிற யத்தில் |
| पुरस्कृत्य | முடிவாகக்கொண்டு | मन्त्रपथम् | ஆதீன சிபுக்கள். |

नित्यं सन्निहितो ह्यत्र रावणो राक्षसाधिपः ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------|---------------|
| राक्षसाधिपः | "ரா க்ஷஸாடிபன் ன னுடைய | नित्यं | எப்பெழுதும் |
| रावणः | ராவணன் | सन्निहितः | வசிக்கிறான்." |
| अस हि | இதில்தான் | | |

तथा तेषु मुवाणेषु रावणावरजोऽब्रवीत् । वाक्यमप्राप्त्यपदवस्तुष्कलार्थं विभीषणः ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-----------------|--|
| तथा | மேற்கண்டவாறு | आप्राप्त्यपदवत् | } நாகரிகமா கிய சொற் களுடன் விளக்கு கிறது கொருள் தீரம்பியது முகிய |
| तेषु | ஆள்கள் | पुष्कलाथं | |
| मुवाणेषु | பேசிக்கொண்டிருந் கையில் | वाक्यं | ஒரு மொழியை |
| रावणावरजः | ராவணான து தாம்பி யாகிய | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தான் : |
| विभीषणः | விபிஷணன் | | |

अनलः शरभश्चैव संपातिर्विहगस्तथा । गत्वा लङ्कां महामात्याः पुरीं पुनरिहागताः ॥

भूत्वा शकुनयः सर्वे प्रविष्टाश्च रिपोर्वल्गुम् । विधानं विहितं यच्च तद्दृष्ट्वा समुपस्थिताः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|--------------|------------------------------|
| अनलः | "அனலனும் | अलं | சேனையை |
| शरभः च | சரபனும் | समुपस्थिताः | கிட்டி |
| संपातिः एव | சம்பாதி யும் | प्रविष्टाः च | தனதுந்த |
| विहगः तथा | விஹாகனை னு பிணி ந்தனும் | विहितं | செய்யப்பட்டிருக்கிற |
| महामात्याः | பெரும் மந்திரிகள் | विधानं | எத்பாடு |
| सर्वे | எல்லோரும் | यत् | எதுவோ |
| शकुनयः | பறவைகளை | तत् च | அது எல்லாவற்றை ஆம் |
| भूत्वा | உருங்கொண்டு | दृष्ट्वा | கண்டுகொண்டு |
| लङ्कां | இலங்கை | पुनः | மீண்டும் |
| पुरीं | நகருக்கு | इह | இவ்விடத்திற்கு |
| गत्वा | சென்று | आगताः | திரும்பிவந்துள்ள டார்கள். |
| रिपोः | ரத்தருகிலை து | | |

संविधानं यदाहुस्ते रावणस्य दुरात्मनः । राम तद्रुवतः सर्वं यथा तत्त्वेन मे शृणु ॥१०॥

| | |
|-----------|-----------------|
| राम | " பூராம! |
| दुरात्मनः | தூராத்தமாவாகிய |
| रावणस्य | ராவணனது |
| संविधानं | எற்பாடுகள் |
| यत् | எதென்றை |
| ते | அவர்கள் |
| आहुः | சொன்னார்கள் |

| | |
|--------------|-------------------|
| तत् | அது |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| यथा तत्त्वेन | கேட்டபடியே |
| रुवतः | சொல்லும் |
| मे | எனக்கு |
| शृणु | செவிசாய்ந்தருள்வி |

ராக.

पूर्व महस्तः सबल्यो द्वारमासाद्य तिष्ठति
दक्षिणं च महार्वायौ महापार्श्वमहोदरौ

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

| | |
|---------|---------------------|
| महस्तः | " பிரகஸ்தன் |
| सबल्यः | சேலையுடன் |
| पूर्व | கிழக்கு |
| द्वारं | வாயிலை |
| आसाद्य | அடைந்து |
| तिष्ठति | காத்துநிற்கின்றான். |

| | |
|------------------|------------------|
| महार्वायौ | மகாநீர்வாயிலை |
| | கனாகிய |
| महापार्श्वमहोदरौ | மகாபார்ச்வனும் |
| | மதேவரதரனும் |
| दक्षिणं | தெற்கில் |
| च | அப்படியே காத்து |
| | நிற்கின்றார்கள். |

इन्द्रजित्पश्चिमद्वारं राक्षसैर्वहुभिर्वृतः । पट्टिशसिधनुष्यद्भिः शूलमुद्गरपाणिभिः ॥

नानाप्रहरणैः शूरैरावृतो रावणात्मजः

॥ १३ ॥

| | |
|------------------------------|--|
| पट्टिश- } सिधनुष्यद्भिः } | " பட்டியம், சுத்தி, வீல் இலைகளைக் கையிலே நதியவர்களும் |
| शूलमुद्गर- } पाणिभिः } | சூலம், முத்திரம் இ லைகளைக் கையிலே நதியவர்களும், |
| नानाप्रहरणैः | இன்னும் பல ஆயுதங் களை தந்தவர்களும் |
| शूरैः | சூரர்களான |

| | |
|--------------|--------------------------|
| बहुभिः | பல |
| राक्षसैः | ஆரக்கர்களால் |
| आवृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| रावणात्मजः | ராவணனின் புதல்வ னாகிய |
| इन्द्रजित् | இந்திரஜித்து |
| पश्चिमद्वारं | மேற்குவாயிலை |
| वृतः | ஆசரயித்திருக்கிறான். |

राक्षसानां सहस्रैस्तु बहुभिः शस्त्रपाणिभिः । युक्तः परमसंविमो राक्षसैर्वहुभिर्वृतः ॥

उत्तरं नगरद्वारं रावणः स्वयमास्थितः

॥ १४ ॥

| | |
|---------------|------------------------------|
| राक्षसानां | " ஆரக்கர்களின் |
| बहुभिः | பல |
| शस्त्रपाणिभिः | ஆயுதபாணிகளான |
| सहस्रैः | ஆயிரக்கணக்கானவர் களோடு |
| युक्तः तु | கூடியவனாகவும் |
| परमसंविमः | மிகவும் உன்னம் பதறியவனும் |

| | |
|-----------|--------------------|
| बहुभिः | பல |
| राक्षसैः | ஆரக்கர்களால் |
| वृतः | காத்திருக்கப்பெற்ற |
| रावणः | ராவணன் |
| उत्तरं | வடக்கு |
| नगरद्वारं | நகரவாயிலை |
| स्वयं | தானே |
| आस्थितः | காத்துநிற்கிறான். |

विरुपाक्षस्तु महता शूलखड्गधनुष्मता । वलेन राक्षसैः सार्धं मध्यमं गुल्ममास्थितः ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------------|----------|--------------------|
| विरुपाक्षः तु | "விருபாக்ஷணம் | राक्षसैः | ஆரக்கர்க்கினாரும் |
| शूलखड्गधनुष्मता | சூலம், கத்தி, வில் இவைகளை யோத்திய | सार्धं | கூடி |
| महता | பெரும் | मध्यमं | நடு |
| वलेन | சேனையோடும் | गुल्मं | கொட்டைவய |
| | | आस्थितः | அடைந்திருக்கிறான். |

एतानेवंविधान्गुल्मान्छङ्कायां समुदीक्ष्य ते । मामकाः सचिवाः सर्वे पुनः शीघ्रमिहागताः॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|--------------------------------|
| ते | "அந்த | गुल्मान् | கூபத்தவாரதபடிவேண்டிய ரக்ஷணைகளை |
| मामकाः | மகனது | समुदीक्ष्य | பார்த்துவிட்டு |
| सचिवाः | மந்திரியர்கள் | शीघ्रं | சீக்கிரமே |
| सर्वे | எல்லோரும் | पुनः | திரும்பி |
| छङ्कायां | இலக்கையில் | इह | இவ்விடத்திற்கு |
| एवंविधान् | மேற்கொள்ளிய | आगताः | வந்துவிட்டார்கள். |
| एतान् | இந்த | | |

गजानां च सहस्रं च रथानामयुतं पुरे । हयानामयुते द्वे च सायकौटिश्च रक्षसाम् ॥१७॥

| | | | |
|----------|-----------------------|--------------|--------------------------------------|
| पुरे | "நகரில் | हयानां | குதிரைகள் |
| गजानां | யானைகள் | द्वे अयुते च | இருபதினாயிரக்கணக்காகவும் |
| सहस्रं च | ஆயிரக்கணக்காகவும் | रक्षसां | ஆரக்கர்கள் |
| रथानां | ரதங்கள் | सायकौटिः च | கொடிக்கணக்கிற்கெதிகமாகவும் குத்திவை. |
| अयुतं च | பதினாயிரக்கணக்காகவும் | | |

विक्रान्ता बलवन्तश्च संयुगेष्वात्तायिनः । इष्टा राक्षसराजस्य नित्यमेते निशाचराः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|--------------|----------------|
| पूते | "இந்த | आत्तायिनः च | எதிரின் உயிரை |
| निशाचराः | ஆரக்கர்கள் | राक्षसराजस्य | காக்குவதில் |
| विक्रान्ताः | மகா ஆண்டையுடையவர்களாய் | नित्यं | என்றாகத்திலும் |
| बलवन्तः | மகா ஆற்றலுடையவர்களாய் | इष्टाः | கைவிடக்கூடாது |
| संयुगेषु | போர்களில் | | தர்கள். |

एकैकस्यात्र युद्धार्ये राक्षसस्य विशां पते । परिवारः सहस्राणां सहस्रमुपतिष्ठते ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------------|----------------------|
| विशां पते | "சக்கிரவர்த்தியாரே | युद्धार्ये | போருக்கென்றே |
| अत्र | இதில் | सहस्राणां सहस्रं | பத்துவகையும் |
| एकैकस्य | ஒவ்வொரு | परिवारः | பரிவாரம் |
| राक्षसस्य | ஆரக்கனுக்கும் | उपतिष्ठते | சித்தமாயிருக்கிறது." |

एतां प्रवृत्तिं लङ्कायां मन्त्रिप्रोक्तां विभीषणः । एवमुक्त्वा महाबाहू राक्षसांस्तानदर्शयत् ॥

மஹாபாஹு: மகாபாஹுவான
 विभीषणः விபிஷணன்
 मन्त्रिप्रोक्तां மந்திரிகளால் சொல்ல
 ப்பட்ட

एवं
 उक्त्वा
 तान्
 राक्षसान्
 अदर्शयत्
 மேற்கண்டவாறு
 சொல்லிவிட்டு
 அந்த
 அரக்கர்களை
 பிரிந்தெண்ணுவந்து
 நிறுத்தினான்.

लङ्कायां सचिवैः सर्वे रामाय प्रत्यवेदयत् ॥ २१ ॥

लङ्कायां
 सर्वे
 இலங்கை விஷயமாகிய
 எல்லாவற்றையும்

सचिवैः
 रामाय
 प्रत्यवेदयत्
 மந்திரிகளைக்கொண்டு
 ஸ்ரீராமரிடம்
 தெரிவித்தார்.

रामं कमलपत्राक्षपिदिसुत्तरमब्रवीत् । रावणावरजः श्रीमान् रामपिप- } चिकीर्षया } ॥ २२ ॥

रावणावरजः
 श्रीमान्
 रामपिप- }
 चिकीर्षया }
 ராவணனது தம்பியர்
 ஸ்ரீமான்முகிய அவன்
 ஸ்ரீராமருக்கு ஹிதம்
 செய்வதினான் அ
 வாகினால்

उत्तरं
 हर्षं
 कमलपत्राक्षं
 रामं
 अब्रवीत्
 இன்னும்
 பின்வருமாறும்
 தாமரைக்கண்ணாரான
 ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
 சொன்னான் :

कुवेरं तु यदा राम रावणः प्रत्यबुध्यत । षष्टिः शतसहस्राणि तदा निर्यान्ति राक्षसाः ॥

राम
 रावणः
 यदा
 कुवेरं
 प्रत्यबुध्यत
 " ஸ்ரீராம!
 ராவணன்
 எப்பொழுது
 குவேரை
 ப்ரயோகி
 எதிர்த்துப் போர்
 புரிந்தானோ

तदा
 षष्टिः
 शतसहस्राणि
 राक्षसाः तु
 निर्यान्ति
 அப்பொழுது
 அறுபது
 ஶதசஹசிரி
 அரக்கர்களும்
 வெளிவந்தார்கள்.

पराक्रमेण वीर्येण तेजसा सत्त्वगौरवात् । सदृशा वैश्र दर्पेण रावणस्य दुरात्मनः ॥ २४ ॥

अस
 वै
 पराक्रमेण
 वीर्येण
 सत्त्वगौरवात्
 " இவ்விடத்தில்
 எவர்களை அடவர்கள்
 ஆற்றலும்
 ஆண்மைமயமும்
 பிறவிக்குணப் பெரு
 கையாலும்

तेजसा
 वैर्येण
 दुरात्मनः
 रावणस्य
 सदृशाः
 तेஜசா
 வீரேயம்
 துராத்மனான
 ராவணனுக்கு
 சமமானவர்கள்.

अत्र मन्युर्न कर्तव्यो रोषये त्वां न भीषये ॥ २५ ॥

अस
 मन्युः
 कर्तव्यः न
 भीषये
 " இவ்விஷயத்தில்
 கோபமானது
 கொள்ளத்தக்கதன்று.
 தேவீரை

रोषये
 भीषये न
 சண்டையிடச்
 செய்கின்றேன்.
 நான் பயப்படுத்
 தவில்லை.

समर्थो ह्यसि वीर्येण सुगणामपि निग्रहे

॥ २६ ॥

वीर्येण " ஆண்மைபால்
சுரமர் களுடையவும்
நிग्रहे கொட்டப்படற்கும்
விஷயத்தில்

समर्थः समர் த்தராய்
असि இருக்கிறீர்.
दि இது பிரசித்தம்.

तद्दवांश्चतुरङ्गेण वलेन महता वृतः । व्यूढेदं वानरानीकं निर्मथिष्यति रावणम् ॥ २७ ॥

तद् " இப்பொழுது
इदं இந்த
वानरानीकं வானரோடுகூடிய
व्यूह्य ஆணியகூத்து
चतुरङ्गेण நான்கு பாகமாகப்
பிரிக்கப்பட்ட

महता பெரும்
वलेन செலையால்
वृतः சூழப்பட்டவராய்
रावणं சரவணனை
मवान् தேவரீர்
निर्मथिष्यति நாசஞ்செய்வீர்."

रावणावरजे वाक्यमेवं हुवति राघवः । शत्रूणां प्रतिघातार्थमिदं वचनमब्रवीत् ॥ २८ ॥

रावणावरजे राவணனது தம்பி
एवं மேற்கண்ட
वाक्यं சொல்லை
हुवति சொல்லிய பின்னர்
राघवः ஸ்ரீராமர்

शत्रूणां சத்தருக்களை
प्रतिघातार्थं அழிக்கும் விஷயத்
इदं பின்வரும் [தில்
वचनं கட்டளையை
अब्रवीत् இட்டார் :

पूर्वद्वारे तु लङ्काया नीलो वानरपुङ्गवः । प्रहस्तप्रतियोद्धा स्याद्वाனர்बहुभिर्वृतः ॥ २९ ॥

लङ्कायाः " இலங்கையின்
पूर्वद्वारे கிழ்வாரிலில்
वानरपुङ्गवः வானரோத்தமனாகிய
नीलः நீலன்
बहुभिः பல

वाனர்: வானரர்களால்
वृतः तु சூழப்பட்டவனாகவே
प्रहस्तप्रतियोद्धा } பிரகஸ்தனை எதிர்த்த
स्यात् } னாய் போர்புரிபவனாக
கட்டும்.

अङ्गदो वालिपुत्रस्तु वलेन महता वृतः । दक्षिणे वाधतां द्वारे महापार्श्वमहोदरौ ॥ ३० ॥

वालिपुत्रः " வாலிபுத்திரனாகிய
अङ्गदः அங்கதன்
महता பெரும்
वलेन சைனியத்தால்
वृतः तु சூழப்பட்டவனாகவே

दक्षिणे தெற்கு
द्वारे வாயிலில்
महापार्श्वमहोदरौ மகாபாரச்சுவளையும்
மகோதரனையும்
वाधताम् எதிர்த்துநிற்கட்டும்.

हनुमान्पश्चिमद्वारं निपीड्य पवनात्मजः । प्रविशत्वप्रमेयात्मा बहुभिः कपिभिर्वृतः ॥ ३१ ॥

पवनात्मजः " வாயுபகவானின்
மைந்தனும்
अप्रमेयात्मा அநியாவொண்ணாக ஆ
ண்மைபுற்றவனுமான
हनुमान् ஹனுமான்

बहुभिः कपिभिः பல வானரர்களால்
वृतः சூழப்பட்டவனாய்
पश्चिमद्वारं மேலைவாயிலை
निपीड्य தாக்கி
प्रविशतु துழையட்டும்.

दैत्यदानवसङ्घानामृषीणां च महात्मनाम् । विप्रकारमियः क्षुद्रो वरदानवद्वान्वितः ॥३२॥
परिक्रामति यः सर्वलोकान्सन्तापयन्प्रजाः । तस्याहं राक्षसेन्द्रस्य स्वयमेव वधे धृतः ॥

| | | | |
|--------------------------|---|-----------------|-----------------------------|
| यः | "எவன் | प्रजाः | பிரானுக்களை |
| वरदानवद्वान्वितः | வரம்பெற்றதால் செ ருக்குற்றவனுக்கிய | संतापयन् | தடுக்கச்செய்து கொண்டு |
| दैत्यदानव- सङ्घानां } | திதியின் புதல்வர்கள் சுணவின் புதல்வர் ஆகிய கூட்டக்களுக் கும் | सर्वान् | எல்லா |
| | | लोकान् | உலகங்களிலும் |
| | | परिक्रामति | திரிகிருணை, |
| | | तस्य | அந்த |
| क्षुद्रः | அற்புணை | राक्षसेन्द्रस्य | ராஷ்டிரமன்னனை |
| महात्मनां | மகாத்மாக்களாகிய | स्वयं एव | நானே தேசில் |
| ऋषीणां च | ரிஷிகளுக்கும் | वधे | வதைப்பதில் |
| विप्रकारमियः | { திக்குசெய்வதில் மன தைச் செலுத்துகி ருணை, | अहं | நான் |
| | | एतः | முடிவுகொண்டிருக் கிறேன். |

उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह । निपीड्याभिप्रवेक्ष्यामि सबलो यत्र रावणः ॥३४॥

| | | | |
|---------------|------------------|------------------|-------------------|
| अहं | "நான் | यत्र | எங்கிருக்கின்றது |
| सौमित्रिणा सह | ஸக்திமணனுடன் கூட | उत्तरं | வடக்கு [அந்த |
| रावणः | ராவணன் | नगरद्वारं | கொட்டைவாய்க்கி |
| सबलः | சேணியுடன் | निपीड्या | தாக்கி |
| | | अभिप्रवेक्ष्यामि | உட்புகப்போகிறேன். |

वानरेन्द्रश्च बलवानृषाजश्च वीर्यवान् । राक्षसेन्द्रानुजयैव गुल्मे भवतु मध्यमे ॥ ३५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|---------------------|---|
| बलवान् | "பலவாளியாகிய | वीर्यवान् | வீரயவாளாகிய |
| वानरेन्द्रः च | வானரராஜன் | ऋषाजः च | கரிடமன்னனும் |
| मध्यमे गुल्मे | சேணியின் மத்தியம் பிரதேசத்தில் | राक्षसेन्द्रानुजः } | ராஷ்டிரமன்னனின் |
| | | एव च | தம்பியும் அப்படியே சேணியின் நடுவில் இருக்கட்டும். |
| भवतु | இருக்கட்டும். | | |

न चैव मानुषं रूपं कार्यं हरिभिराहवे ॥ ३६ ॥

एषा भवतु संज्ञा नो युद्धेऽस्मिन्वानरे बले ॥ ३७ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------|-------------------|
| आहवे | "போசில் | वानरे बले | வானரராளியத்தில் |
| हरिभिः | வானரர்களால் | एषा च | இதுவே |
| मानुषं रूपं | மனிதஉருவமானது | नः एव | நம் எல்லோருக்கும் |
| न कार्यं | கொள்ளக்கக்கடந்து. | संज्ञा | அறிகுறியாக |
| अस्मिन् युद्धे | இந்தப் போசில் | भवतु | இருக்கட்டும். |

वानरा एव नश्चिह्नं स्वजनेऽस्मिन्भविष्यति ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------|---------------------------------|
| अस्मिन् | "இந்த | नः | நமக்கு |
| स्वजने | நமது ஜனவியத்தில் | चिह्नं | எளிதில் அறிகு கொள்ளக்கூதனமாக |
| वानराः एव | வானரர்கள் தான் | भविष्यति | இருக்கும். |

वयं तु मानुषेणैव सप्त योत्स्यामहे परान् । अहमेव सह भ्रात्रा लक्ष्मणेन महौजसा ॥
आत्मना पञ्चमथायं सखा मम विभीषणः ॥ ३९ ॥

महौजसा "மகா ஆற்றலுடைய
ஜாஸா தம்பியாகிய
லக்ஷ்மணேன வந்தமணனோடு
சஹ கூட
ஏவ: இந்த
அஹ் நாணும்
ஆத்மனா தன்னோடு
பஞ்சம: ஐந்தாமவனாக இருக்கும்
மம எனது [கிறவனும்
சகா நண்பனுமாகிய

வயம் இந்த
வி.பி.பண: ச வி.பி.பண ஐமாளா
வயம் நான்கள்
சஹ து வழுபேர்கள்
மாத் திரம்
மானுஷே ஏவ மானிட உருவம்
கொண்டே
பரானு சந்தானுக்களை
யோத்யாமஹ் எதிர்த்துப் போர்
புரிவோம்."

स रामः कृत्यसिद्धयर्थमेवमुक्त्वा विभीषणम् । सुवेदाराहणे बुद्धिं चकार मतिमान्प्रभुः ॥
रमणीयतरं दृष्ट्वा सुवेदस्य गिरेस्तदम् ॥ ४० ॥

प्रभुः யாவரையும் ஆக்கு
பிக்க உரிமையுற்ற
மதிமானு தண்ணறிவாளராகிய
ச: ராம: அந்த ஸ்ரீராமர்
விभीषणம் விபிஷணரைப்
பார்த்து
கृत्यसिद्धयर्थं காரியம் கைகூட்டுதல்
பொருட்டு
ஏவ் மேற்கண்டவாறு

उक्त्वा ஆக்குபித்துவிட்டு
सुवेदस्य गिरि: சுவேடமலைபின்
तदं தாழ்வரையை
रमणीयतरं மிக்க அழகுற்று
விளங்குகிறதாய்
दृष्ट्वा கவனித்து
सुवेदारोहणे சுவேடமலையில்
ஏதும் விஷயத்தில்
बुद्धिं चकार விசும்பக்கொண்டார்.

ततस्तु रामो महता बलेन प्रच्छाद्य सर्वां पृथिवीं महात्मा ।

महोरूपोऽभिजगाम लङ्कां कृत्वा मतिं सोऽरिवधे महात्मा

॥ ४१ ॥

ततः அப்பொழுது
महात्मा மஹாத் தான ஆற்றலு
டையவரும்
महोरूपः உத்தமாதமே பிறவிக்
குணமாயுடையவரும்
तु ஆணதால்
महात्मा மஹாத் தானவரான
स: राम: அந்த ஸ்ரீராமர்
अरिवधे சந்தானுவை ஒழிக்கும்
விஷயத்தில்

मतिं தீர்மானத்தை
कृत्वा செய்துக்கொண்டு
महता பெரும்
बलेन சைவியத்தால்
पृथिवीं பூமியை
सर्वां முற்றும்
प्रच्छाद्य மறைத்துக்கொண்டு
लङ्कां இலங்கையை நோக்கி
अभिजगाम எழுந்தருளினார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे सप्तविंशः सर्गः ॥

अष्टमिः सर्गः—முப்பத்தேட்டாவது ஸர்க்கம். || 34 ||

लङ्कादर्शनार्थं सुवेलारोहणम्—இலங்கையைப் பார்க்க ஸுவேல மலையில் ஏறுவது.

स तु कृत्वा सुवेलस्य मतिमारोहणं प्रति । लक्ष्मणानुगतो रामः सुग्रीवमिदमब्रवीत् ॥ १ ॥
विभीषणं च धर्मज्ञमनुरक्तं निशाचरम् । मन्त्रज्ञं च विधिज्ञं च शृङ्गया परया गिरा ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|---|
| लक्ष्मणानुगतः | { लक्ष्मणानुगताள் பின் தொடரப்பட்டவராகிய | मन्त्रज्ञं च | மந்திராலோசனைகளில் தீபுணரணம் |
| सः | அந்த | विधिज्ञं च | { அனுஷ்டானமுறைகளில் தேர்ச்சிபெற்றவனுமான |
| रामः | ராமர் | विभीषणं तु | விபிஷணனையும் பார்த்து |
| सुवेलस्य | சுவேலபர்வதந்தை | परया | மிக |
| मारोहणं प्रति | ஏறுவதைப்பற்றி | शृङ्गया | இனிய |
| मति कृत्वा | எண்ணங்கொண்டு | गिरा | சொற்கொண்டு |
| सुग्रीवं | சுகிரீவனையும் | इदं | பின்வருமாறு |
| धर्मज्ञं | தர்மமறிந்தவனும் | अब्रवीत् | மொழிந்தார்: |
| अनुरक्तं | பக்தனுமாகிய | | |
| निशाचरं च | அரக்கனும் | | |

सुवेलं साधुशैलेन्द्रमिमं धातुशतैश्चितम् । अध्यारोहामहे सर्वे वरस्यापोऽत्र निशामिमाम् ॥

| | | | |
|----------------------------|--|------------------------|-----------------------------------|
| इमं धातुशतैः | * இந்த பலவகை தாதுப்பொருள்களால் | सर्वे अध्यारोहामहे | சரம் எல்லோரும் ஏறுவோம். |
| विशं साधुशैलेन्द्रं सुवेलं | நீரம்பிய அழகிய மலையரசாகிய சுவேலமலையில் இரு | इमां निशां भव वरस्यामः | இந்த இரகை இவ்விடத்தில் கழிப்போம். |

लङ्कां चालोकियव्यामो निलयं तस्य रक्षसः । येन मे मरणान्ताय हता भार्या दुरात्मना ॥

| | | | |
|-------------------------|--|---|--|
| येन दुरात्मना मरणान्ताय | * எந்த துராத்மாவால் மாணப் பயனைப் பெறுவதென்பொருட்டு | हता तस्य रक्षसः निलयं लङ्कां च आलोकियव्यामः | திருடப்பட்டவனோ அந்த அரக்கனது வாழ்விடமாகிய லங்கா ச அலோகியவ்யாம் பார்ப்போம். |
| मे भार्या | எனது மனைவி | | |

येन धर्मो न विज्ञातो न वृत्तं न कुलं तथा । राक्षस्या नीचया बुद्ध्या येन तद्द्रहितं कृतम् ॥
तस्मिन्मे वर्तते रोषः कीर्तिते राक्षसाधमे । यस्यापराधार्त्नाचस्य वधं द्रक्ष्यामि रक्षसाम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|------------|--|
| येन | எவனால் | गहिंन | என்னோசாலும் |
| धर्मः | தர்மமானது | कृतं | கீர்த்திக்கப்படும் காரி |
| विज्ञातः न | இன்னதென அறியப் படா திருக்கிறதோ, | यस्य | யமானது |
| तथा | அப்படியே | नीचस्य | செய்யப்பட்டதோ, |
| वृत्तं | சல்லொழுக்கமும் | अवराधात् | எந்த |
| न | அறியப்படா திருக்கி றதோ, | रक्षसां | அற்பனது |
| कुलं | குலப்பெருமைமயம் | वर्ष | குற்றத்தால் |
| न | அப்படியே அறியப் படா திருக்கிறதோ, | इश्यामि | அசக்கர்களுடைய |
| येन | எவனால் | तरिमन् | அழிகை |
| राक्षस्या | அசக்கனுடன் கூடப் பிறந்த | राक्षसावमे | நான் தீர்மானிக்கின் றேனே |
| नीचया | அற்ப | कीर्तिते | அந்த |
| बुद्ध्या | புத்தியைக்கொண்டு | मे | ராஜ்யப்பதர் |
| तत् | அந்த | रोयः | பேர்தொன்னமாத்தி |
| | | वर्तते | எனக்கு [ரத்தில் கொயம் பொக்குகின்றது. |

एको हि कुस्ते पापं काशपाशवमं गतः । नीचेनात्पापचारेण कुलं तेन विनश्यति ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|--------------------|
| कालपाशवमं | எமனது பாசத்தில் | सन | அந்த |
| गतः | சிக்கிக்கொண்ட | नीचन | அற்பனால் |
| एकः | ஒருவன் | आमापचारेण | தான் செய்த பாபந் |
| पापं | பாபத்தை | कुलं हि | குலமே [தால் |
| कुस्ते | செய்கிறான். | विनश्यति | நசிக் துவிடுகிறது. |

एवं संमन्वयन्नेव सकोधो रावणं प्रति । रामः सुवेष्टं वासाय चित्रसानुसुपारुहत् ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|--|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | चित्रसानुं | அழகிய தாழ்வரை |
| रावणं प्रति | ராவணனை நிரீனந்து | सुवेष्टं | அமைந்த |
| सकोधः | கொண்டொண்டவராகி | वासाय | சுவைமகிழ்சில் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | उगसहत् | இரவைக்கழிப்பதின் எதிருள். [பொருட்டு |
| संमन्वयन् एव | சொல்லிக்கொண்டு | | |

पृष्ठतो लक्ष्मणश्चैनमन्वगच्छत्समाहितः । सशरं चापमुच्यम्य सुवहद्विक्रमे रतः ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|----------------------------|
| सुमहद्विक्रमे | அதிலிசேவையாகிய என்றுக் கொற்றிபெ றும் சக்தியில் | चां | என்கீ [கொண்டு |
| रतः | பாவராலும் கொண் டபடப்படும் | उच्यम्य | கையில் பற்றிக்- |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | समाहितः च | கனவாமென்பதே இல்லாதவராய் |
| सशरं | சரணத்துடன் கூட | एवं | துவரை |
| | | पृष्ठतः | பின்பக்கத்தில் |
| | | अगसहत् | கொடர்ந்துசென்றார். |

तमन्वरोहत्सुग्रीवः सामात्यः सविभीषणः ॥ १० ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|--------------------|
| सुग्रीवः | சுக்ரீவன் | सविभीषणः | விவிஷணனுடனும் |
| सामात्यः | மந்திரிகளுடனும் | त | அவரை |
| | | अन्वरोहत् | தொடர்க்கே ஏறினார். |

हनुमानङ्गदो नीलो मैन्दो द्विविद एव च । गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः ॥
 पनसः कुमुदश्चैव हरो रम्भश्च यूथपः । जाम्बवांश्च सुषेणश्च करम्भश्च महावृतिः ॥ १२ ॥
 दुर्मुखश्च महातेजास्तथा शतबलिः कपिः । एते चान्ये च बहवो वानराः शीघ्रगामिनः ॥
 ते वायुवेगप्रवणास्तं गिरिं गिरिचारिणः । अध्यारोहन्त शतशः सुवेलं यत्र राघवः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------------|---|
| हनुमान् | ஹனுமாரும், | दुर्मुखः च | தர்முகனும் |
| अङ्गदः | அங்கதனும். | तथा | அப்படியே |
| नीलः | நீலனும், | कपिः | வானானுமாகிய |
| मैन्दः एव | மைந்தனும், | शतबलिः च | சதபலியுமான |
| द्विविदः च | தீவிதனும், | एते | இவர்களும் |
| गजः | கஜனும், | ते | அந்த |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனும், | अन्ये च | மற்றுமுள்ளவர்களும் |
| गवयः | கவயனும், | गिरिचारिणः | { மலைகளில் சுந்துரிக் கும் அனுபவமுடை யவர்களும், |
| शरभः | சரபனும், | वायुवेगप्रवणाः | வாயுவேகம்படைக்கப் பெற்றவர்களும் |
| गन्धमादनः | கந்தமாதனனும், | शीघ्रगामिनः | மிக்க வேகம் செல்ல வல்லவர்களுமான |
| पनसः एव | பனஸனும், | बहवः | பல |
| कुमुदः च | குமுதனும், | वानराः च | வானரர்களும் |
| ह्रः | ஹரனும், | शतशः | தூத்துக்கணக்காக |
| यूथपः | யூதப த்தலைவனுக்கிய | राघवः | ரூராமர் |
| रम्भः च | ரம்பனும், | यसु | எக்கிருந்தனரோ |
| जाम्बवान् | ஜாம்பவானும், | तं सुवेलं गिरिं | அந்த சுவைமலையில் |
| सुषेणः च | ஸுஷேணனும், | अध्यारोहन्त | ஏறினார்கள். |
| महावृतिः | மகா தேஜஸ்வியாகிய | | |
| करम्भः च | கரம்பனும், | | |
| महातेजाः | மகா பராக்கிரமசாலி யாகிய | | |

ते त्वदीपेण कालेन गिरिमास्त्र्य सर्वतः । ददृशुः विश्वरे तस्य विपक्तामिव खे पुरीम् ॥

| | | | |
|-----------------|----------------|-------------|-----------------------------------|
| ते | அவர்கள் | पुरी | பட்டணத்தை |
| अदीपेण कालेन तु | சுடுதீபி வேளைய | सर्वतः | முற்றிலும் |
| गिरिं | மலையில் | खे | ஆகாசத்தில் |
| मास्त्र्य | ஏறி | विपक्तां इव | கட்டப்பட்டிருக் கிறது போன்றதாக |
| तस्य | அதனது | ददृशुः | கவனித்தார்கள். |
| दि.खरे | சிகரத்தில் | | |

तां शुभां प्रवरद्वारां प्राकारपरिशोभिताम् । लङ्कां राक्षससंपूर्णां ददृशुर्हरियूथपाः ॥ १६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|-------------------|--|
| हरियूथपाः | வானரசேனைத்தலை வர்கள் | प्राकारपरिशोभितां | { மதிற்கவர்களால் எல் லாப் பக்கக்களிலும் விளக்குகிறதாய் |
| तां | அந்த | राक्षससंपूर्णां | { அரசர்களால் நிரம்பி யதாய் |
| लङ्कां | இலங்கைநகரை | शुभां | அழகுற்று விளக்கு வதாய் |
| प्रवरद्वारां | நிறந்த வாயில்வாயு டைவதாய் | ददृशुः | கவனித்தார்கள். |

प्राकारचयसंस्थैश्च तदा नीलैर्निशाचरैः । ददृशुस्ते हरिश्रेष्ठाः प्राकारपरं कृतम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------------|--|----------|-----------------------|
| ते | அந்த | निशाचरैः | அரசர்களினக் கொண்டு |
| हरिश्रेष्ठाः | வானரோத்தமர்கள் | अपरं | இன்னுமொரு |
| तदा | அப்பொழுது | प्राकारं | மதற்கவணா |
| प्राकारचयसंस्थैः | மதிற்கவர்களின் மே டைகளில் நிற்கின்ற | कृतं | கட்டப்பெற்றிருப்ப |
| नीलैः च | கருநிறமுடைய | ददृशुः | எண்ணினார்கள். [தாக |

ते दृष्ट्वा वानराः सर्वे राक्षसान्युद्धकाङ्क्षिणः । सुसुचुर्विविधानादांस्तत्र रामस्य पश्यतः ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------|---------------|---------------------|
| ते | அந்த | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| युद्धकाङ्क्षिणः | போர்புரிய ஆவன விரும்புகின்ற | तत्र | அங்கு அங்கு |
| वानराः | வானர்கள் | रामस्य पश्यतः | ஸ்ரீராமர் முன்பாகவே |
| सर्वे | எல்லோரும் | विविधान् | பலவித |
| राक्षसान् | அரசர்களின | नादान् | கூச்சங்களை |
| | | सुसुचुः | இட்டார்கள். |

ततोऽस्तमगमसूर्यः सन्ध्यया प्रतिरञ्जितः । पूर्णचन्द्रप्रदीप्ता च क्षया समभिवर्तते ॥ १९ ॥

| | | | |
|--------------|---------------|----------------------|---|
| सन्ध्यया | ஸந்தியால் | क्षया च | இரவும் |
| प्रतिरञ्जितः | சென்றிதழைந்த | पूर्णचन्द्रप्रदीप्ता | பூர்ணசந்திரனால் பிர காதித்துக்கொண்டு |
| सूर्यः | சூரியன் | समभिवर्तते | விளக்கிற்று. |
| अस्तं भगमन् | அஸ்தமித்தான். | | |
| ततः | அப்பொழுது | | |

सुवेलपृष्ठं प्राप्ता सा महती राघवानुगा । शुशुभे वानरी सेना प्रदोषसमये स्थिता ॥२०॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-----------|----------------------------|
| सुवेलपृष्ठं | கவேலமலைபின் உச்சிகில் | राघवानुगा | ஸ்ரீராமர் சொற்படி |
| प्रदोषसमये | ஸாயங்காலத்தில் | महती | பெரும் [உக்கும் |
| प्राप्ता | வந்துசேர்ந்து | वानरी | வானர |
| स्थिता | நிற்கும் | सेना | சேனையானது |
| वा | அந்த | शुशुभे | தேஜோமயமாய் விளக்கிற்று. |

ततः स रामो हरिवाहिनीपतिर्विभीषणेन प्रतिनन्द्य सत्कृतः ।

सलक्ष्मणो यूथपयूथसंवृतः सुबेलपृष्ठे न्यवसद्यथासुखम्

॥ २१ ॥

| | | | | |
|---------------|-------------------|---------------|---|------------------|
| सलक्ष्मणः | ஸலக்ஷ்மணனுடன் கூட | यूथपयूथसंवृतः | { | சைனியத்தலைவர்களா |
| सः | அந்த [விருந்த | सुबेलपृष्ठे | { | லும் சேனைகளாலும் |
| हरिवाहिनीपतिः | { | | { | சூழப்பட்டவராய் |
| | { | | { | சுவேலமலைபின் |
| | { | | { | உச்சியில் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | ततः | | அப்பொழுது |
| विभीषणेन | விபீஷணனால் | यथासुखं | | சுகமே |
| प्रतिनन्द्य | பொற்றிப்புகழ்ந்து | न्यवसम् | | அன்றிரவைவக் |
| सत्कृतः | கௌரவிக்கப்பட்ட | | | கழித்தார். |
| | வராய் | | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्येयुद्धकाण्डे अष्टत्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16106



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1431

एकोनचत्वारिंशः सर्गः—முப்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ २१ ॥

लङ्कादर्शनम्—இலங்கைக்க காட்சி.

तां रात्रिष्पृषितास्तत्र सुबेले हरिपुङ्गवाः । लङ्कायां ददृशुर्वीरा वनान्युपवनानि च ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|----------------|-----------|----------------|
| वीराः | வீரர்களான | उषिताः | உழித்தவர்களாய் |
| हरिपुङ्गवाः | வாணரோத்தமர்கள் | लङ्कायां | இலங்கையில் |
| तत्र | அப்பொழுது | वनानि | வனங்களையும் |
| सुबेले | சுவேலமலையில் | उपवनानि च | தொட்டங்களையும் |
| तां | அந்த | ददृशुः | கண்டார்கள். |
| रात्रिं | இரவை | | |

सप्तसौम्यानि रम्याणि विशालान्यायतानि च । दृष्टिरम्याणि ते दृष्ट्वा बभूवुर्जातविस्मयाः॥

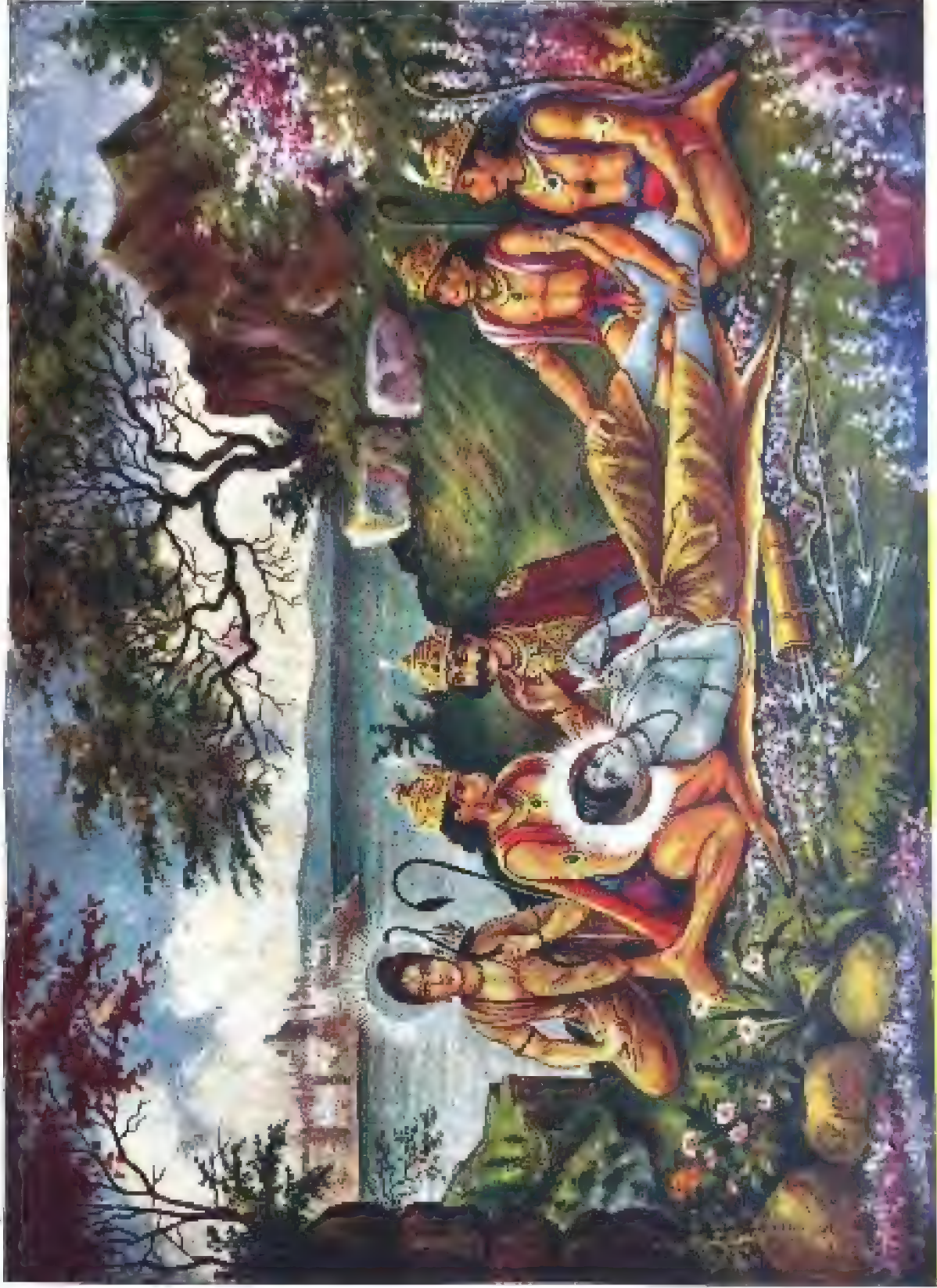
| | | | |
|---------------|-----------------|-------------|------------------|
| ते | அவர்கள் | रम्याणि | அழகுற்று விளங்கு |
| | | | வனவாய், |
| सप्तसौम्यानि | { | विशालानि | விகாலமானவை |
| | { | | யாயும், |
| | { | आयतानि च | நீண்டவைகளாயும் |
| | { | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| दृष्टिरम्याणि | கண்களைக் கவரும் | जातविस्मयाः | ஆச்சர்யமடைந்தவர் |
| | வண்ணமாய் | बभूवुः | ஆனார்கள். [கனரக |

चम्पकाशोकपुन्नागसालतालसमाकुला । तमालवनसंछन्ना नागपालासमावृता ॥ ३ ॥

हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपणैश्च पुं पतैः । तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ ४ ॥

शुशुमे पुष्पतामैश्च लतापारगतैर्द्रुमैः । लङ्का बहुविधैर्दिव्ययथेन्द्रस्थापरावती ॥ ५ ॥

सुवेल-पर्वतपर श्रीगणपती झाँकी



प्रमदुक्त झाँका कर्पाचा उच्छ्वा । वाम दहिन दिशि चाप निर्पंगा ॥ दुहुँ कर कमल सुधारत वाना । कद लेंकडा मंत्र लागि कोना ॥
 बढभागी अंगद हनुमाना । चरण कमल चापत त्रिधि नाना ॥ प्रभु पाँळे लक्ष्मण वीरासन । कटि तिरंग कर वान गरासन ॥



विचित्रकुसुमोपेतै रक्तकोमलपल्लवैः । शादूलैश्च तथा नीलैश्चित्राभिर्वनराजिभिः ॥ ६ ॥

| | |
|-----------------------------------|---|
| लङ्का | இலக்கை, |
| वभकाशोरुपुत्राग- सालनालसमाकुला | சண்பகம், அசோகம், புள்ளை, ஆச்சரப்பனை இவைகளால் நிறைந் ததாயும், |
| तमालवनसंल्ला | தமாலவனக்கட்டங் கள் செறிந்ததாயும், |
| नागमालसमावृता | நாகமேலைமரங்களால் சூழப்பெற்றதாயும், |
| हिमालैः | ஹிம்தாலமரங் களாலும், |
| अशुनैः | மருதமரங்களாலும் |
| नीपैः | கடம்பமரங்களாலும் |
| ससरणैः च | எழிலைப்பாலை மரங்க ளும் |
| पुष्पितैः | பூத்த [எரலும் |
| तिलकैः | திலகமரங்களாலும் |
| फर्णिकारैः च | சரக்கொன்றை மரங்களாலும் |
| पादलैः च | பாதிரிமரங்களாலும் |

| | |
|--------------------|---------------------------------|
| समन्ततः | எங்கும் |
| पुष्पितामैः | நனிகளில் பூந்து |
| सतापरिगतैः | கொடிகள் படர்ந்து |
| विचित्रकुसुमोपेतैः | அழகியமலர் நிறைந்து |
| रक्तकोमलपल्लवैः | செவ்விய இனத்தளி குற்றவைகளால் |
| दिव्यैः | சிறந்த |
| बहुविधैः | பலவகை |
| द्रुमैः च | விரிசுதகங்களாலும் |
| यथा | அப்படியே |
| नीलैः | கறுத்த |
| शादूलैः च | இளம் புற்றரைக ளாலும் |
| चित्राभिः | பனகைதக் சுவரும் |
| वनराजिभिः | தோட்டவரிசைக |
| इन्द्रस्य | இந்திரனது [எரலும் |
| अमरावती | அமராவதிக்கர் |
| यथा | எனவே |
| शुशुभे | திசுழந்தது. |

गन्धाढ्यान्यभिरम्याणि पुष्पाणि च फलानि च । धारयन्त्यगमास्तत्र भूषणानीव मानवाः॥

| | |
|--------------|--------------------------|
| तस्य | அவ்விடத்தில் |
| अगमाः | மரங்கள் |
| गन्धाढ्यानि | வாசனை நிறைந்தவை களும் |
| अभिरम्याणि च | மிக அழகுற்றவைக ளுமான |
| पुष्पाणि | புஷ்பங்களையும் |

| | |
|----------|------------------------------|
| फलानि च | கனிகளையும் |
| मानवाः | மானிடர்கள் |
| भूषणानि | ஆபரணங்களை |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| धारयन्ति | தரித்துக்கொண்டி ருந்தனர். |

तच्चैत्ररथसङ्काशं मनोज्ञं नन्दनोपमम् । वनं सर्वतुंकं रम्यं शुशुभे पट्पदायुतम् ॥ ८ ॥

| | |
|---------------------|---|
| तत् | அந்த |
| वनं | வனமானது |
| चैत्ररथ- सङ्काशं | (சூப்போனது) சைத் திராதமேனும் வனத் திற்கு நிகராகவும் (இந்திரனது) நந்தன வனத்திற்கு நிகராக வும் |
| नन्दनोपमं | |

| | |
|------------|-------------------------------------|
| पट्पदायुतं | வண்டுகள் மொய்க்கப் பெற்று |
| सर्वतुंकं | எல்லா குறுக்களிலும் செழிப்புற்று |
| मनोज्ञं | மனத்தைக்கவரும் வண்ணம் |
| रम्यं | அழகுற்று |
| शुशुभे | விளக்கிற்று. |

नत्यूहकोयष्टिभकैर्नृत्यमानैश्च बर्हिणैः । रुतं परभृतानां च शुश्रुवुर्वननिर्झरे

॥ ९ ॥

वननिर्झरे
नत्यूहकोयष्टिभकैः
नृत्यमानैः

காட்டாற்றில்
நீர்க்காக்கைககிளைமும்
நாவரகனோடும்
ஆடும்

बर्हिणैः च
परभृतानां च
रुतं
शुश्रुवुः

மயில்கனோடும்
குயில்களின்
சத்தத்தை
கேட்டார்கள்.

नित्यमत्तविहङ्गानि भ्रमराचरितानि च । कोकिलाकुलण्डानि विहगाभिरुतानि च ॥१०॥
भृङ्गराजाभिगीतानि भ्रमरैः सेवितानि च । कोणालकविघुष्टानि सारसाभिरुतानि च ॥
विविशुस्ते ततस्तानि वनान्युपवनानि च । हृष्टाः प्रमुदिता वीरा हरयः कामरूपिणः ॥

ते
कामरूपिणः
हरयः
वीराः
तानि
नित्यमत्त-
विहङ्गानि }
भ्रमराचरितानि च
कोकिलाकुल-
ण्डानि }
विहगाभि-
रुतानि च }
भृङ्गराजाभि-
गीतानि च }

அந்த
நினைத்த உருவமெடு
க்க வல்ல
வானர
வீரர்கள்
அந்த
எக்காலத்திலும் கொ
ழுத்த பறவைகளை
யுடையவைகளும்,
வண்டுகள் மொய்க்கப்
பெற்றவைகளும்,
கோகிலங்கள் நிறைந்த
தோப்புக்கொடியை
வைகளும்,
பறவைகள் சப்திக்கப்
பெற்றவைகளும்,
நிறந்த வண்டுகள் ஓ
லிக்கப்பெற்றவைக
ளும்,

भ्रमरैः
सेवितानि च
कोणालक-
विघुष्टानि }
सारसाभि-
रुतानि च }
वनानि
उपवनानि च
हृष्टाः
प्रमुदिताः
ततः
विविशुः

வண்டுகளால்
வசிக்கப்பெற்றவை
களும்,
கோணலகமென்ற நீர்
ப்பறவைகளால் சப்
திகப்பெற்றவைக
ளும்,
சாரசப்பறவைகளால்
சப்திக்கப்பெற்றவை
களுமான
வனங்களிலும்,
தேரட்டங்களிலும்,
மனத்திருப்தினெண்
டவர்களால்
உள்ளக்களித்தவர்
களால்
அப்பொழுது
புகுந்துநிரிந்தார்கள்.

तेषां प्रविशतां तत्र वानराणां महौजसाम् । पुष्पसंसर्गसुरभिर्ववौ घ्राणसुखोऽनिलः ॥१३॥

तस्य
तेषां
महौजसां
वानराणां
प्रविशतां
अनिलः

அவ்விடத்தில்
அந்த
மிக ஆற்றலுடைய
வானரர்கள்
புகுகையில்
காற்று

पुष्पसंसर्गसुरभिः
घ्राणसुखः
ववौ

{
புஷ்பங்களின் சம்பக்
தத்தாறுண்டாகும்
பரிமளத்துடன்
நாவலிகத்திரியத்திற்
கு இனிமையாக
விசிந்து.

अन्ये तु हरिवीराणां यूथान्निष्कम्प यूथपाः । सुधीवेणाभ्यनुज्ञाता लङ्कां जग्मुः पताकिनीम् ॥
विश्रासयन्तो विहगांश्चासयन्तो मृगद्विषान् । कम्पयन्तश्च तां लङ्कां नार्दंस्ते नदतां वराः ॥
कुर्वन्तस्ते महावेगा महीं चरणपीडिताम् ॥ १६ ॥

| | |
|---------------|--------------------------------------|
| हरिवीराणां | வானர வீரர்களுக்குள் |
| யூதபா: | வேளைத்தலைவர்களால் விருந்தவர்களும் |
| நடதா: | கர்ஜிப்பவர்களுக்கூள் |
| வரா: | கிரகதவர்களும், |
| மகாவேகா: | மிக வேகமாய் செல்ப வர்களுமரண |
| अन्ये तु | சிலர் மாதிரி |
| सुधीवेण | சுந்தீவனும் |
| अभ्यनुज्ञाता: | விடைகொடுக்கப்பட்ட |
| ते | அவர்கள் [டவர்களால் |
| नार्दं: | கர்ஜனைகளால் |
| तां | அந்த |
| लङ्कां च | இலங்கைககரையும் |
| कम्पयन्तः | நடுக்கச்செய்து கொண்டும் |

| | |
|--------------|------------------------------------|
| से | அவர்கள் |
| महीं | பூமிவை |
| चरणपीडितां | கால்களால் தவம்ஸம் பண்ணப்பட்டதாக |
| कुंभसः | செய்துகொண்டும் |
| विहगान् | பறவைகளை |
| विश्रासयन्तः | பயமுறுத்திக் கொண்டும் |
| मृगद्विषान् | மரண்களையும் வான களையும் |
| सासयन्तः | வெருண்டுடாடச் செய்தும் |
| यूथान् | சைனியத்திலிருந்து |
| निष्कम्प | வெளிப்புறப்பட்டு |
| पताकिनीं | கொடிகள் பறக்கும் |
| लङ्कां | இலங்கையில் |
| जग्मुः | திரிந்தார்கள். |

रजश्च सहसैवोर्ध्वं जगाम चरणोत्थितम् ॥ १७ ॥

| | |
|------------|---------------------------|
| चरणोत्थितं | கால்களால் இளம்பய் பட்ட |
| रजः च | சூரியும் |

॥ १७ ॥

| | |
|---------|-----------------|
| रजसा एव | மிக உச்சிமாதிரி |
| उर्ध्वं | உயர் |
| जगाम | இளம்பித்த. |

ऋक्षाः सिंहा वराहाश्च महिषा वारणा मृगाः । तेन शब्देन विवस्ता जग्मुर्भीता दिशो दश ॥

| | |
|----------|--------------|
| ऋक्षाः | காடிகளும் |
| सिंहाः | சிங்கங்களும் |
| वराहाः | பன்றிகளும் |
| महिषाः | எருமைகளும் |
| मृगाः | மரண்களும் |
| वारणाः च | வானைகளும் |

| | |
|------------|-----------------|
| तेन शब्देन | அந்த சத்தத்தால் |
| भीताः | வெருண்டு |
| विस्तारः | ஒரு தலைப்பட்டவை |
| दश | பத்து [களாய் |
| दिवः | திசைகளிலும் |
| जग्मुः | ஒடிவிட்டன. |

शिवरं तत्तुकूटस्य प्रांशु चैकं दिविस्पृशम् । समन्तात्पुष्पसंछन्नं महारजतसन्निभम् ॥
शतयोजनविस्तीर्णं विमलं चारुदर्शनम् । शृङ्गणं श्रीमन्महर्षेव दुष्पापं शकुनैरपि ॥ २० ॥
मनसाऽपि दुगरोहं किं पुनः कर्मणा जनैः ॥ २१ ॥

| | |
|------------------|--|
| त्रिकुटस | தீரிகுட்டமலைகள் |
| तव | அந்த |
| एकं | ஒரு |
| शिखरे च | சிகரமே |
| प्रांशु | வெகு உயரமாவிற்குள் தது. |
| दिविपुशं | ஆகாயத்தையுமணர்வி |
| समन्तात् | எங்கும் [யது. |
| पुष्पसंछलं | புஷ்பங்களால் மறைக்க சுப்பட்டிருந்தது. |
| महारजतसन्निभं | பொண்ணை நிகர் த்தி ருந்தது. |
| शतयोजनविस्तीर्णं | நூறுயோஜனை விள திர்ணமுள்ளது. |
| विमलं | நிர்மலமானது. |

| | |
|-----------------|--|
| चारदर्शने | காண்பதற்கழுவானது. |
| सुहृन् | மழமழப்பானது. |
| श्रीमत् च | சகல சம்பத்தாலும் நிறைபப்பெற்றது. |
| महत् एव | மிகப்பிரசித்தி பெற்றது. |
| शकुनेः अपि | பறவைகளாலுங்கூட |
| दुष्पार्थं | புறமுடிவாதது. |
| जनैः | மானிடர்களால் |
| मनसा अपि | மனதாலுங்கூட |
| दुरारोहं | ஏற நினைக்கமுடியா தது. |
| कर्मणा किं पुनः | { பிரத்யஷ்டத்தில் ஏறிவி டுவதென்பது எப்ப டி முடியும்? |

निविष्टा तत्र शिखरे लङ्का रावणपालिता । शतयोजनविस्तीर्णा त्रिशयोजनमायता ॥ २२ ॥

| | |
|------------|-------------------------------|
| तव | அந்த |
| शिखरे | சிகரத்தில் |
| रावणपालिता | ராவணனால் பரிபாலி க்கப்பட்ட |
| लङ्का | இலங்கைநகர் |

| | |
|------------------|-------------------------------|
| शतयोजनविस्तीर्णा | நூறு யோஜனை விள முள்ளதாயும் |
| त्रिशयोजनं | முப்பது யோஜனை நூரம் |
| आयता | அகலமுள்ளதாயும் |
| निविष्टा | நிசுமிக்கப்பட்டிருந் தது. |

सा पुरी गोपुरैरुच्चैः पाण्डुराम्बुदसन्निभैः । काञ्चनेन च सालेन राजतेन च शोभिता ॥

| | |
|-----------------------|-----------------------------|
| सा | அந்த |
| पुरी | நகர் |
| उच्चैः | உயர்ந்த |
| पाण्डुराम्बुदसन्निभैः | வெண்மேகங்களின் நிகர் த்த |
| गोपुरैः | கோபுரங்களாலும் |

| | |
|------------|--------------------------|
| काञ्चनेन च | பொவ்ஞானனதும் |
| राजतेन च | வெள்ளிபாலானது மான |
| सालेन | மதில்கவராலும் |
| शोभिता | அழகுற்று விளக்கிற்று. |

प्रासादैश्च विमानैश्च लङ्का परमभूषिता । घनैरिवातपापाये मध्यमं वैष्णवं पदम् ॥ २४ ॥

| | |
|-------------|---|
| लङ्का | இலங்கைநகர் |
| प्रासादैः च | { பல உப்பரிசைகளையு டைய ஆண்மனை களாலும் |
| विमानैः च | எழு மரபுகளையுடைய மானிகைகளாலும் |
| आतपापाये | மறைமுகவாத்தினூரம் பத்தில் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| वैष्णवं | விஷ்ணுவின் |
| मध्यमं | இரண்டாவது |
| पदं | அடி. (ஆகாசம்) |
| घनैः | மேகங்களால் |
| इव | எவ்வண்ணமோ அங் வண்ணமே |
| परमभूषिता | மிக அழகுற்று விளக்கிற்று. |

यस्यां स्तम्भसहस्रेण भासादः सपल्लूतः । कैलासशिखराकारो दृश्यो खमिशोल्लिखन् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|----------------|-------------------------|
| யச்யா | எதுவோ இடத்தில் | कैलासशिखराकारः | கைலாசசிவராசார்த் தளத்த |
| स्तम्भसहस्रेण | ஆயிரக்கணக்கானவா துண்டுகளால் | ख | ஆகாதத்தை [கிரந்தம்] |
| समल्लूतः | அலங்கரிக்கப்பட்ட | उल्लिखन् | முட்டிக்கொண்டிருக்கிறது |
| भासादः | ஓர் அரண்மனை | दृश्य | போல |
| | | दृश्यते | காணப்படுகிறது. |

चैत्यः स राक्षसेन्द्रस्य बभूव पुरभूषणम् । वनेन रक्षसां नित्यं यः सपदेण रक्ष्यते ॥२६॥

| | | | |
|----------|---------------------|-----------------|---------------------|
| यः | எது | सः | அந்த |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | राक्षसेन्द्रस्य | ராக்ஷஸேந்திரன் னனது |
| समश्रेण | ஆரண்மனை | चैत्यः | மடலினை |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | पुरभूषणं | புகழ்க்கெட ஆபரணம் |
| वनेन | வனவரியத்தால் | | மாக |
| रक्ष्यते | பாதுகாக்கப்படுகிறது | बभूव | விளக்கிற்று. |

मनोज्ञां काञ्चनवर्णां पर्वतरूपशोभिताम् । नानाधातुविचित्रैश्च उद्यानैरुपशोभिताम् ॥२७॥
 नानाविहगसंघुष्टां नानामृगनिपेदिताम् । नानाकाननसन्तानां नानाराक्षसेदिताम् ॥२८॥
 तां समृद्धां समृद्धार्थी लक्ष्मीवाञ्छुक्ष्मगायजः । रावणस्य पुरीं रामो ददर्श सह वानरैः ॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------------|-----------------------------|---|
| मनोज्ञां | மனத்ததைக் கவாசிற தும், | नानाकानन- सन्तानां | பல சேரலைகளை இடை யிடையெகொண்டுள்ள தும், |
| काञ्चनवर्णां | பொன்பயமானதும், | नानाराक्षसेदितां | பல அரக்கர்களால் காக்கப்பெற்றதும் |
| पर्वतैः | பர்வதக்களால் | समृद्धार्थी | பலமான பொரு ளுடையதும் |
| उपशोभितां | ஆழகுந்து விளக்கு கிறதுமும், | समृद्धां च वां | துறையற்றதமான கூடி |
| नानाधातुविचित्रैः | பலவித தாதுக்களால் பல விதமுடைய | रावणस्य | ராவணனது |
| उद्यानैः | கிங்கார வனக்களால் | पुरीं | நகரம் |
| उपशोभितां | ஆழகுந்து விளக்கு கிறதுமும், | लक्ष्मीवाञ्छु क्ष्मगायजः | லக்ஷ்மணருக்குத் தமையனாரும் |
| नानाविहगसंघुष्टां | பலவிதப்பறவைகளால் கவப்பெற்றதும், | रामः | ராமர் |
| नानामृगनिपेदितां | பல விலங்குகளால் கவப்பெற்றதும். | वानरैः सह ददर्श | வானர்களோடுகூட கண்டுநோர். |

तां महागृहसंवाधां दृष्ट्वा लक्ष्मणपूर्वजः । नगरीमपरप्रख्यो विस्मयं प्राप वीर्यवान् ॥३०॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|---------------|----------------------|
| अमरप्रख्यः | தேவர்களுக்கொப்பள னவரும் | महागृहसंवाधां | பெரும் மாளிகைகளை |
| वीर्यवान् | வீர்புகரலியுமான | तां | அந்த [டர்ந்திருக்கிற |
| लक्ष्मणपूर्वजः | லக்ஷ்மணரின் தம்ப னார் (ஸ்ரீராமர்) | नगरीं | நகரை |
| | | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| | | विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| | | प्राप | அடைந்தார். |

तां रत्नपूर्णां बहुसंविधानां प्रासादमालाभिरलङ्कतां च ।

पुरीं महायन्त्रकवाटमुख्यां ददर्श रामो महता बलेन

॥ ३१ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------------|----------------|--|
| महता बलेन | பெரும் சேனைடியோடு | अलङ्कतां | அழகுற்று விளங்கு கிறதாயும் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | महायन्त्र- | } கிறந்த யந்திரங்களா கவாட்முఖ्यां च) ளும், கோட்டைகா யில் கதவுகளாலும் |
| तां पुरीं | அந்த நகரை | कवाटमुख्यां च) | |
| रत्नपूर्णां | ரத்னங்களால் நிறைந் ததாகவும் | | சிறப்புற்று விளங்கு கிறதாகவும் |
| बहुसंविधानां | பலவகையால் ஆமைந் கப்பெற்றதாகவும் | | கவனித்தார். |
| प्रासादमालाभिः | பெரும் மாளிகை களின் வரிசைகளால் | ददर्श | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकोनचत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16137

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1462



चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ४० ॥

सुग्रीचरावणयोर्द्वन्द्वयुद्धम्—ராவணனும் சக்ரீவனும் போர் புரிதல்.

ततो रामः सुबेलायं योजनद्वयमण्डलम् । आरुरोह ससुग्रीवो हरियूथपसंहृतः ॥ १ ॥

| | | | |
|----------------|--|----------------|---|
| ततः | அதன்மேல் | योजनद्वयमण्डलं | { இரண்டு யோசனை சற்றளவுத்து வட்ட மாரிருக்கிற |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | |
| ससुग्रीवः | சக்ரீவனுடன் | सुबेलायं | சவேலாமலைபுள்ளியில் |
| ह रियूथपसंहृतः | { வானரசேனைத்தலை வர்களால் குழப்பந் டவரால் | आरुरोह | ஏறினர். |

स्थित्वा मुहूर्तं तत्रैव दिशो दश विलोकयन् । त्रिकूटशिखरे रम्ये निर्मितां विश्वकर्मणा ॥

ददर्श लङ्कां सुन्यस्तां रम्यकाननशोभिताम् ॥ २ ॥

तस्यां गोपुरशृङ्गस्थं राक्षसेन्द्रं दुरासदम् ॥ ३ ॥

श्वेतचामरपर्यन्तं विजयच्छत्रशोभितम् । रक्तचन्दनसंलितं रत्नाभरणभूषितम् ॥ ४ ॥
 नीलजीभूतसङ्काशं हेमसंछादिताम्बरम् । ऐरावतविषाणादौकृष्टकृष्णवक्षसम् ॥ ५ ॥
 शशलोहितरागेण संवातं रक्तवाससा । सन्ध्यातपेन संच्छन्नं मेघराशिषिवाम्बरे ॥ ६ ॥

தச எவ அங்கேயே
 முஹீந் சந்நிலைகரம்
 சிவ்வா நின்றுகொண்டு
 டச பந்து
 விசா: நிக்ஞுகவி னும்
 விலோகயந் கண்டினுக்குமவர்
 ரமே அழகிய
 சிகுரசிவரே த்ரிகூடசிகரத்தில்
 ரமயகான- } அழகிய கோலைகளால்
 ஶோமிதா } அழகுறவாய்து விள
 க்குகிறதாகவும்,
 சூந்யஸா நல்ல அமைப்புற்ற
 தாகவும்
 விசுகமேளா சிவ்வகர்மாவால்
 நிமிதா நிருமிக்கப்பட்டது
 மான
 ககூர் இலக்கைகளையும்,
 தஸா அதில்
 கோபுரத்தினும்செவில
 கோபுரமகூஸ்ய் } நின்றுகொண்ட
 ரூப்பவனும்
 துராஸ்ய் எவராலும் அணுக
 முடியாதவனும்,
 வெண்சாமரம் பக்கக்
 களில் விசப்பெற்றவ
 னும்,
 விஜயச்சத் } அழகிய குடையால்
 ஶோமித } அழகுற்று விளக்கு
 கிறவனும்,
 மான

ரக்தசுந்நலிதம் செஞ்சுந்தனத்தால்
 பூசப்பெற்றவனும்,
 ரத்நமயபரண ஆபா
 ரணங்களால் தூலக்க
 ரிக்கப்பட்டவனும்,
 நீலஜீமூதசங்காச
 கருமேகத்தை
 சிகரத்தவனும்,
 ஹேமசங்காதிதாம்பர
 தக்கச் சரிகைகளால்
 செய்யப்பட்ட ஆடை
 களையுடையவனும்,
 ஐராவத- } (இந்திரனது யானையா
 விஷாணா: } கிய) ஐராவதத்தின்
 தந்தங்களின் துளி
 களால்
 உண்டான வடுக்க
 கோடுகடிய மார்பு
 டையவனும்
 சசலோஹிராगेण முயலாத் தகம்போல்
 சென்றமுடைய
 ரக்தவாஸஸா சிவப்பு ஆடையால்,
 அம்பர ஆகாயத்தில்
 சந்நியாதபேன சாயங்காலவெயிலால்
 சங்கரம் மூடுண்ட
 மேகவரிசையை
 ஐவ போனவே,
 சங்கீத குழப்பெற்றவனு
 மான
 ரக்சசேந் தரக்கர்க்கு மன்ன
 டாஸி பார்த்தார். [இளயும்
 மான

पश्यतां वानरेन्द्राणां राघवस्यापि पश्यतः । दर्शनाद्राक्षसेन्द्रस्य सूर्यावः सहसोत्थितः ॥
 सूर्यावः: ககீவன்
 राक्षसेन्द्रस्य ஆரக்கர்மன்னனை
 दर्शनात् கண்டதும்
 वानरेन्द्राणां வானரர்க்கேக்டர்கள்
 पश्यतां பார்க்கையினும்

राघवस्य अपि श्रीरामरुम्
 पश्यतः பார்க்கையினும்
 सहसा திடீரென
 उत्थितः உயரவெழும்பினார்.

क्रोधवेगेन सन्तप्तः सत्वेन च बलेन च । अचराद्यादथोत्थाय पुषुवे गोपुरस्थले ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|------------|---------------------|
| सन्तप्तः | மணக்கொ தீப்புற்ற அவன் | अचराद्यात् | மலைச்சிகரத்திலின்றி |
| क्रोधवेगेन | கோபாவேசத்தோடும் | अथ | அப்பொழுது |
| सत्वेन च | செஞ்சுறுப்புடும் | उत्थाय | தள்ளியெழுந்து |
| बलेन च | வலிகையோடும் | गोपुरस्थले | கோபுரநிலையில் |
| | | पुषुवे | பாய்ந்தான். |

स्थित्वा सुहूर्तं संश्लेष्य निर्भयेनान्तरात्मना । तूर्णाकृत्य च तद्रक्षः सोऽब्रवीत्यखं वचः ॥

| | | | |
|-------------------|-------------------|---------------|----------------|
| सः | அவன் | अन्तरात्मना च | உள்ளத்தோடேயே |
| सुहूर्तं स्थित्वा | சுற்றுப் பொறுத்து | संश्लेष्य | கூசுந்துகொக்கி |
| तत् | அந்த | पखं | கண்டிப்பான |
| रक्षः | அரக்களை | वचः | சொல்லி |
| तूर्णाकृत्य | அற்பமாய் நினைத்து | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| निर्भयेन | அச்சமற்ற | | சொன்னான். |

लोकनाथस्य रामस्य सखा दासोऽस्मि राक्षस ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|------------|--------|----------------|
| राक्षस | " இராக்ஷஸ! | रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு |
| अस्मि | நான் | दासः | தொண்டுபுரியும் |
| लोकनाथस्य | இலகநாதிய | सखा | அடிமைவாரும் |
| | | | தொழன். |

न मया मोक्ष्यसेऽद्य त्वं पाथिवेन्द्रस्य तेजसा ॥ ११ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|-------------|-------------------|
| त्वं | " நீ | तेजसा | அழகு வாய்ந்தியால் |
| अद्य | இக்கணம் | मया | எனக்கு |
| पाथिवेन्द्रस्य | இராஜா திராஜனின் | मोक्ष्यते न | தப்பமாட்டாய். |

इत्युक्त्वा सहसोत्पत्य पुषुवे तस्य चोपरि ॥ १२ ॥

| | | | |
|---------|---------|-------------|-------------|
| इति | இவ்வாறு | उपत्य | தாவி |
| उत्त्वा | உரைத்து | तस्य उपरि च | அவன்மேல் |
| सहसा | சடக்கொ | पुषुवे | பாய்ந்தான். |

आकृष्य मुकुटं चित्रं पातयामास तद्भुवि ॥ १३ ॥

| | | | |
|--------|-----------|----------|------------|
| चित्रं | அழகிய | आकृष्य | இழுத்தி |
| मुकुटं | கிரீடத்தை | भुवि | தளையில் |
| तत् | அப்பொழுது | पातयामास | எறிந்தான். |

समीक्ष्य तूर्णमायान्तमावभाषे निशाचरः ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------|----------------|----------|-------------|
| निशाचरः | அரக்கன் | समीक्ष्य | கொக்கி |
| तूर्णं | வேகமாய் | आवभाषे | பின்வருமாறு |
| आयान्तं | எதிர்த்தாவரும் | | புகன்னான். |
| | அவனை | | |

सुर्ग्यवस्त्वं परोक्षं मे हीनर्ग्यीवो भविष्यसि ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------|---------------|-------------|--------------------|
| மே | “எனக்கு | सुर्ग्यवः | அழகிய கழுத்துடன் |
| परोक्षं | கட்புலனாகாதபொ | चं | நீ [எனக்கும் |
| | சூது | हीनर्ग्यीवः | கழுத்து இழந்தவனாய் |
| | | भविष्यसि | இனி ஆகிவிடுவாய்.” |

इत्युक्तवोत्थाय तं क्षिप्रं बाहुभ्यामाक्षिपत्तले ॥ १६ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|-------------------|
| इति | என்று | तं | அவனை |
| उत्तथा | சாற்றி | बाहुभ्यां | இடுகரங்களால் |
| क्षिप्रं | சடக்கென | तले | தரையில் |
| उत्थाय | தான் றியெழுந்து | आक्षिपत् | எசுறித்தன்னினான். |

कन्तुवत्तं समुत्थाय बाहुभ्यामाक्षिपद्दरिः ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|--------------|
| हरिः | வானரன் (சகீவன்) | बाहुभ्यां | கைகளால் |
| समुत्थाय | எதிர்த்தெழுந்து | कन्तुवत् | பந்தைப்போல |
| तं | அவனை | आक्षिपत् | எசுறித்தனன். |

परस्परं स्वेदविदिग्धगात्रौ परस्परं शोणितदिग्धदेहौ ।

परस्परं श्लिष्टनिरुद्धचेष्टौ परस्परं शाल्मलिकिशुकौ यथा ॥ १८ ॥

सुष्टिमहारैश्च तल्पहारैरत्रिघातैश्च करामघातैः

तौ चक्रतुर्युद्धमसह्यरूपं महाबलौ वानरराक्षसेन्द्रौ ॥ १९ ॥

| | | | |
|----------------------|---------------------|----------------|-------------------|
| शौ | அந்த | शाल्मलिकिशुकौ | இலவமரமும் பூவரசு |
| महाबलौ | மகா பலசாலிகளாகிய | | மரமும் |
| वानरराक्षसेन्द्रौ | வானரமன்னனும் | यथा | போன்றவர்களாய், |
| | அரக்கமன்னனும் | सुष्टिमहारैः च | முட்டிக்குத்துகளா |
| परस्परं | ஒருவரொருவர் | | லும், |
| स्वेदविदिग्धगात्रौ | வேர்வையாற்றாத தேக | तल्पहारैः | உள்ளக்கை அறைக |
| | முற்றவர்களாய் | | ளாலும், |
| परस्परं | ஒருவரோடொருவர் | अत्रिघातैः | ஒரக்கைவெட்டுகளை |
| शोणितदिग्धदेहौ | குருதிவழிந்த உடலு | | லும், |
| | டையவர்களாய் | करामघातैः च | தனிக்கையடிக்களை * |
| परस्परं | ஒருவர் க்கொருவர் | | லும், |
| श्लिष्टनिरुद्धचेष्टौ | { மோதித் தனகப்புற்ற | असह्यरूपं | காணவொண்ணு |
| | செயல்கொண்டவர் | | காட்சிகொண்ட |
| | களாய், | युद्धं | போரை |
| परस्परं | ஒன்றையொன்று | चक्रतुः | புரித்தனர். |

कृत्वा नियुद्धं भृशमुग्रवेगौ कालं चिरं गोपुरवेदिमध्ये ।
उत्क्षिप्य चाक्षिप्य विनम्य देहौ पादक्रमाद्गोपुरवेदिलशौ ॥
अन्योन्यमादिध्य विलम्बदेहौ तौ पेततुः सालनिखातमध्ये ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|---------------|--------------------|
| தौ | அவர்கள் | विनम्य | வணைத்து |
| गोपुरवेदिमध्ये | கோபுரமேடையின் | पादक्रमात् | காற்பிடியால் |
| | மத்தியில் | | |
| चिरं कालं | கீண்டகாலம் | गोपुरवेदिलशौ | { கோபுரத்தின் கொடு |
| भृशं | மிச | | க்கயிர் தொக்கிக் |
| | | | கொண்டு |
| उग्रवेगौ | { உக்கிரமான மனவெ | अशोन्वं | ஒருவரை ஒருவர் |
| | ழுக்கிகொண்டவர்க | आक्षिप्य | தாக்கி |
| | ளாய் | विलम्बदेहौ | உடலை பதுக்கிக்கொ |
| नियुद्धं कृत्वा | போரிட்டு | | ண்டவர்களாய் |
| उत्क्षिप्य | உயரவெறிந்து | सालनिखातमध्ये | மதில்கவருக்கும் அக |
| आक्षिप्य च | உதறித்தள்ளியும் | | ழிக்கும் மத்தியில் |
| देहौ | உடல்களை | पेततुः | குதித்தார்கள். |

उत्पेततुर्भूतलमस्पृशन्तौ स्थित्वा मुहूर्तं त्वभिनिषसन्तौ ।

आलिङ्ग्य चावलय च बाहुयोक्त्रैः संयोजयामासतुराह्वे तौ ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|----------------------|
| तौ | அவ்விருவர்கள் | उत्पेततुः | உயரக்கிளம்பினார்கள். |
| अभिनिषसन्तौ | பெருழுச்செறித்தவர் | आह्वे | பேசில் |
| | களாய் | बाहुयोक्त्रैः | கைகளும் கயிறு |
| | | | களால் |
| मुहूर्तं तु | சற்று | आलिङ्ग्य च | இறுக்கியும் |
| स्थित्वा | தலங்கிதின்று | आवलय च | அகைத்தீழுத்தும் |
| भूतलं | பூமியை | संयोजयामासतुः | பிணைத்துருண்டார்கள். |
| अस्पृशन्तौ | விட்டு | | |

संरम्भशिक्षाबलसंप्रयुक्तौ संचेरतुः संप्रति युद्धमार्गैः ।

शार्दूलसिंहाविष जातदपौ गजेन्द्रपोताविष संप्रयुक्तौ ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------------------------|-----------------------|-----------------|--------------------|
| संरम्भशिक्षाबल- संप्रयुक्तौ | { ஊக்கம், சினைவு உடல் | संप्रयुक्तौ | உதனாறுப்படுத்தப் |
| | { வலிமைஇவைகளினால் | | பட்ட |
| | உடிய அவ்விருவரும் | गजेन्द्रपोता इव | இரு பானைக்குட்டி |
| जातदपौ | செருக்குற்ற | | கள் போலவும் |
| शार्दूलसिंहौ इव | இரு சிறந்த வேங்கை | युद्धमार्गैः | போர்விதிகளுடன் |
| | கள் போலவும் | संप्रति | இப்பொழுது |
| | | संचेरतुः | போர்புரிந்தார்கள். |

संहत्य चापीड्य च तावुमोभ्यां निपेतुर्वै युगपद्धरण्याम् ।

उद्यम्य चान्योन्यमभिक्षिपन्तौ संचक्रमाते बहुबुद्धमार्गैः

॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------------|--------------------|
| தீ | அவ்விருவர்களும் | उद्यम्य | எழுந்து |
| उरोभ्यां | மார்புகளால் | अन्योन्यं च | ஒருவரைபொருவர் |
| आपीड्य च | மோதி | अभिक्षिपन्तौ | தூக்கி எறிகின்றவர் |
| संहत्य च | அடித்துக்கொண்டு | | களால் |
| युगपत् वै | ஒரே சமயத்தில் | बहुबुद्धमार्गैः | பலவித போர்விதிக |
| धरण्यां | பூமியில் | | ளோடு |
| निपेतुः | விழுந்தார்கள். | संचक्रमाते | போர்புரிந்தார்கள். |

व्यायामशिक्षाबलसंयुक्तौ कृमं न तौ जग्मतुराशु वीरौ ।

बाहूत्तमैर्वारणवारणाभैर्निवारयन्तौ वरवारणाभौ

॥ २४ ॥

| | | | |
|------------------------------|--|-------------|--------------------------------|
| व्यायामशिक्षाबल- संयुक्तौ | தேகப்பலிற்சி, சி ஸக்த, தேகவலிமை இணைகளையுடைய வர்களும், | वारणवारणभैः | யானை து திக்கைகளை பிகர்த்த |
| वरवारणाभौ | சிறந்த யானைகளைப் போன்றவர்களும், | बाहूत्तमैः | சிறந்த கைகளால் |
| वीरौ | வீரர்களையான | निवारयन्तौ | தள்ளிக்கொண்டிருந்த வர்களால் |
| तौ | அவ்விருவர்களும் | आशु | இலேசில் |
| | | कृमं | களைப்பை |
| | | जग्मतुः न | அடையவில்லை. |

चिरेण कालेन तु संयुक्तौ संचैरतुर्मण्डलमार्गमाशु ॥ २५ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|------------|---------------|
| चिरेण कालेन | வெகுநேரம் | मण्डलमार्ग | மண்டலமார்பாத |
| संयुक्तौ तु | போர்புரிந்த அவ்விரு வர்களும் | आशु | கிடுகிடுவன |
| | | संचैरतुः | எழுந்தார்கள். |

तौ परस्परमासाद्य यत्तावन्योन्यसूदने । मार्जारादिव भक्षार्थे वितस्थाने सुहृसुहृः ॥ २६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|-------------|--------------------------|
| तौ | அவ்விருவர்களும் | मार्जारी | இரு பூனைகள் |
| अन्योन्यसूदने | ஒருவரை ஒருவர் கொல்லும்விஷயத்தில் | इव | எவ்வண்ணமோ * அவ்வண்ணமே |
| यत्ता | எந்த சமயத்தாகத்தே டுகின்றவர்களால் | परस्परं | ஒருவரை ஒருவர் |
| भक्षार्थे | தீன்பண்டந்தைக் கயரும்விஷயத்தில் | आसाद्य | கிட்டியும் |
| | | सुहृः सुहृः | அடிக்கடி |
| | | वितस्थाने | கிஸியும் தின்றார்கள். |

मण्डलानि विचित्राणि स्थानानि विविधानि च । गोमूत्रिकाणि चित्राणि गतप्रत्यागतानि च ॥
 तिरश्चीनगतान्येव तथा वक्रगतानि च । परिमोक्षं महाराणां वर्जनं परिधावनम् ॥ २८ ॥
 अभिद्रवणमाश्लावमास्थानं च सविग्रहम् । परावृत्तमपावृत्तमवद्रुतमवधुतम् ॥ २९ ॥
 उपन्यस्तमपन्यस्तं युद्धमार्गविशारदौ । तौ संचेरतुरन्योन्वं वानरेन्द्रश्च रावणः ॥ ३० ॥

| | | | |
|-------------------|--|--------------------|--|
| युद्धमार्गविशारदौ | போர்க்கிதிகளில் தேர்ந்தவர்களான | महाराणां परिमोक्षं | உதைகளுக்கும் கப்பரிவிடுதல்களையும் |
| वानरेन्द्रः | வானரமன்னனும் | वर्जनं | சந்து விலகியிருத்தலையும் |
| रावणः च | ராவணனுமாகிய | परिधावनं | கோக்கி ஒடுதலையும் |
| तौ | அவ்விருவர்களும் | अभिद्रवणं | கிட்ப்புடைத்தலையும் |
| विचित्राणि | பலவித | आश्लावं | எறிந்தாவுதலையும் |
| मण्डलानि | { ஒருவரைபொருவர் சந்திரனும் நடைகளையும் | सविग्रहं | கெதுப்புடன் கடிய |
| विविधानि | பலவகை | आस्थानं च | ஐயக்கிரமையுடனிருத்தலையும் |
| स्थानानि च | திற்றல்களையும் | परावृत्तं | சத்துருவைவிட்டுவிட்டு அணுகுதிறமையும் |
| विज्ञानि | பலவகை | अपावृत्तं | பதுக்கிப்பரவ்விடதையும் |
| गोमूत्रिकाणि | { த்வந்தயுத்தத்தில் பாதுக்கிப்பதுக்கியும் வளைந்து வளைததும் செல்லும் கடைகளையும் | अवद्रुतं | சத்துருவைவிட்டு விளகியிருத்தலையும் |
| गतप्रत्यागतानि च | { கிட்டுகிறதும் பின்வாங்குகிறதமான கடைகளையும் | अवधुतं | ஒரோ பாய்ச்சலாய்ப்பாய்கிறதையும் |
| तिरश्चीनगतानि एव | குறுக்குப்பாய்ச்சல் | उपन्यस्तं | கிட்ப்புச் சலியாது ஒரிடத்திலிருத்தலையும் |
| तथा | அப்படியே ॥களையும் | अपन्यरते | விலகி காத்து திற்பனதையும் |
| वक्रगतानि च | { பிடிபடுகிறவன்போலாகி ஏமாற்றிவிடும் பாய்ச்சல்களையும் | अन्योन्वं | ஒருவர் பொருட்டொருவர் |
| | | संचेरतुः | அடைந்தார்கள். |

एतस्मिन्नन्तरे रक्षो मायाबलमयात्मनः । आरब्धुमुपसंपेदे ज्ञात्वा तं वानराधिपः ॥ ३१ ॥
 उत्पपात तदाऽऽकाशं जितकाशी जितकृमः । रावणः स्थित एवात्र हरिराजेन वञ्चितः ॥

| | | | |
|-----------------|---------------|-----------|-----------------------|
| एतस्मिन् अन्तरे | இச்சமயத்தில் | तदा | அப்பொழுது |
| रक्षः | அரக்கன் | वानराधिपः | வானரமன்னன் |
| अथ | அப்பொழுது | जितकाशी | ஐயரினனும் |
| आत्मनः | தனது | जितकृमः | கிரமங்கூட இல்லாதவனும் |
| मायाबलं | மாயாசக்தியை | तं | அதை |
| आरब्धुं | கைப்பற்ற | ज्ञात्वा | கண்டுக்கொண்டு |
| उपसंपेदे | தலைப்பட்டான். | | |

| | | | |
|--------|--------------------------|---------|------------------|
| பாபநர் | ஆபாசத்தின் | शिवतः | சைத்திரின் துகை |
| अपपाव | கடவுக்கொம்பினிட டரன், | शरणः | சாவணன் [ஊழருந்த |
| अस एव | அவ்விடத்திலேயே | हरिभोजन | வாணரமன்னனும் |
| | | वञ्जितः | வாய்நறப்பட்டான். |

अथ हरिवरनाथः प्राप्य संयावकीर्तिं निश्चिचरपतिमानो योजयित्वा श्रमेण ।

गगनपतिविशालं लङ्घयित्वाकर्मसुहृद्विरगणमध्ये रामपार्श्वं जगाम ॥ ३३ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|----------------|--|
| हरिवरनाथः | சிறந்த வானார்களுக் கு நரதனும் | संयावकीर्तिं | பொலில் சிந்தினைய யும் |
| अर्कसूनुः | சூரியபகவானின் புதல்வனுமான அவன் | प्राप्य | அடைந்து |
| अथ | அப்பொழுது | अतिविशालं | மிகப்பெரித |
| आजी | பொலில் | गगनं | ஆகாசத்தை |
| निश्चिचरपतिं | அசக்கர்களை வேந்தனை | लङ्घयित्वा | கடந்து |
| श्रमेण | களைப்புடன் | हृद्विरगणमध्ये | வானவோக்துமர்களின் கூட்டத்தின் கடுவில் |
| योजयित्वा | கலக்கமுறச்செய்து விட்டு | रामपार्श्वं | ஸ்ரீராமது பக்கத்தில் |
| | | जगाम | இறங்கினான். |

इति स सवितृसूनुस्तत्र तरकमे कृत्वा पवनगतिरनीकं प्राविशरमेमहृष्टः ।

रघुवरनृपसूनोवर्धयन्पुद्गहर्षे तरुमृगमणमुख्यैः पूजयमानो ह्रीन्द्रः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|---------------|---|
| सवितृसूनुः | சூரியபகவானின் புதல்வனார், | पूजयमानः | கொண்டாடப்படுகிற வனும் |
| पवनगतिः | வாய்பகவானின் போக்குடைபவனும், | संरहृष्टः | மகமனக்களிப்புற்ற வனாகி |
| ह्रीन्द्रः | வானரமன்னனுமாகிய அவன் | रघुवरनृपसूनोः | { ரகுவரபகவான்தின் யாரின் புதல்வனுக்கு (ஸ்ரீராமருக்கு) |
| तव | அப்பொழுது | युद्धर्षे | போரினுத்தலாறமத் தை |
| तत् कर्म | அச்செயலை | वर्धयन् | களைவித்துக்கொண்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | अनीकं | செனக்குள் |
| कृत्वा | செய்துவிட்டு | प्राविशत् | புகுந்தான். |
| तरुमृगमणमुख्यैः | வானரக்கூட்டத்தின் பெரியோர்களால் | | |

इत्यापि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे चत्वारिंशः सर्गः ॥

भावितः श्लोकाः 1617।

युद्धकाण्डे भावितः श्लोकाः 1496



एकचत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்தொன்றாவது ஸர்க்கம். || 41 ||

अङ्गदौत्यम्—அங்கதனை தூதனுப்புதல்.

अथ तस्मिन्निमित्तानि दृष्ट्वा लक्ष्मणपूर्वजः । सुग्रीवं संपरिष्वज्य तदा वचनमब्रवीत् ॥१॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------------|-------------|-----------------|
| तथा | அப்பொழுது | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| लक्ष्मणपूर्वजः | லக்ஷ்மணரின் தமைய ணர் (ஸ்ரீராமர்) | सुग्रीवं | சுகிரீவனை |
| तस्मिन् | அவன் மீது | संपरिष्वज्य | தழுவிக்கொடுத்து |
| निमित्तानि | பேர்க்குறிகளை | वचनं | ஒரு சொல்லை |
| | | अथ | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | மொழிந்தார் : |

असंमन्य मया सार्धं तदिदं साहसं कृतम् । एवं साहसयुक्तानि न कुर्वन्ति जनेश्वराः ॥

| | | | |
|------------|--|--------------|----------------------|
| मया सार्धं | “என்னோடுகூட | कृतं | செய்யப்பட்டுவிட்டது. |
| असंमन्य | ஆலோசியாமல் | जनेश्वराः | அரசர்கள் |
| तत् | அந்த | एवं | இப்படியாய் |
| इदं | இந்த | साहसयुक्तानि | அவசரமான காரியங்களை |
| साहसं | { முன்பின் ஆலோசியாத அவசரப்பட்டு செய்யும் காரியம் | कुर्वन्ति न | செய்யமாட்டார்கள். |

संशये स्थाप्य मां चेदं बलं च सविभीषणम् । कष्टं कृतमिदं वीर साहसं साहसप्रिय ॥

| | | | |
|-----------|--|---------|------------------------------|
| साहसप्रिय | { “ஸாஹஸத்தொழில் களில் மனதைச்செய்யுத்தம் | संशये | மனக்கலவரத்தில் |
| वीर | ஔரணே! | स्थाप्य | நிறுத்திவிட்டு |
| सविभीषणं | விபிஷணரையும் | इदं | இந்த |
| मां च | என்னையும் | कष्टं | அபாயகரமான |
| इदं | இந்த | साहसं | அவசரகாரியமானது |
| बलं च | ஔரணையையும் | कृतम् | உன்னால் செய்துவிட்டப்பட்டது. |

इदानीं मा कृथा वीर एवंविधमचिन्तितम् । त्वयि किञ्चित्समापन्ने किं कार्यं सीतया मया ॥
भरतेन महाबाहो लक्ष्मणेन यवीयसा । शत्रुघ्नेन च शत्रुघ्न स्ववारीरेण वा पुनः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|----------|-------------------------|
| वीर | “ஔரணே! | महाबाहो | மகாபாகுவே! |
| इदानीं | இக்காலத்தில் | शत्रुघ्न | சத்துருக்களை ஒழிப்பவனே! |
| एवंविधं | இப்படிப்பட்ட | त्वयि | நீ |
| अचिन्तितं | ஆலோசியாததை | समापन्नं | மாண்டுவிட்டால் |
| मा कृथाः | செய்யாதே. | | |

सीत्या वरीனதயா ஹம்,
भरतेन பரதனா ஹம்,
यवीयसा தம்பி
लक्ष्मणेन வசந்தாமணனா ஹம்,
शत्रुघेन च சத்ருகுக்ஷனா ஹம்,

स्वशरीरेण वा पुनः என் சரீரத்தால்தா
कार्ये னுகவேண்டியகாரியம்
किञ्चिन् என்னாவதுதான்
किम् என்ன இருக்கிறது.

स्वयि चानागते पूर्वमिति मे निश्चिता मतिः । जानतश्चापि ते वीर्यं महेन्द्रवरुणोपम ॥ ६ ॥

महेन्द्रवरुणोपम { "இந்திரனுக்கும் வகு
ணனுக்கும் சமமான
மானவனே !
ते உனது
वीर्यं பரவக்கிரமத்தை
जानतः अपि च அறிந்தவனுமறிஞர்
தர ஹம்

स्वयि நீ
चानागते च வந்து சேராதபொ
इति பின்னடைந்துதான்
निश्चिता ஆனோசனையின்றி
मे எனது [நில் முடிவான
मतिः தீர்மானம்.

हत्वाऽहं रावणं युद्धे सपुत्रवलवाहनम् । अभिषिच्य च लङ्कायां विभीषणमथापि च ॥
भरते राज्यमावेक्ष्य त्यक्ष्ये देहं महाबल ॥ ७ ॥

महाबल "மகா பலசாலியே]
अहं நான்
युद्धे போரில்
रावणं ராவணனை
सपुत्रवलवाहनं च { புத்திரர்களுடனும்,
சேனைகளுடனும், வா
றணகளுடனும்
हत्वा கொன்று
अपि अपि அதன்பிறகு

विभीषणं च கிரிவணனையே
लङ्कायां இலங்கையில்
अभिषिच्य முடிசூட்டிவிட்டு
भरते பரதனிடம்
राज्यं राज्यத்தை
आवेक्ष्य ஒப்பித்தகிட்டு
देहं உடலை
त्यक्ष्ये துறப்பேன்."

तमेववादिनं रामं सुग्रीवः प्रत्यभाषत ॥ ८ ॥

सुग्रीवः சுக்ரீவன்
एववादिनं இவ்வாறு சொழியும்
तं அந்த

रामं ஸ்ரீராமரைப் பர்த்து
प्रत्यभाषत பின்வருமாறு பதி
ஹரைத்தான் :

तव भार्यापह्तारिं दृष्ट्वा राघव रावणम् । मर्षयामि कथं वीर जानन्यौरुषमात्मनः ॥ ९ ॥

राघव "ஸ்ரீராம!
तव தேவரீரது
भार्यापह्तारिं மனைகிளையக்கவர்ந்து
சென்றவனாகிய
रावणं ராவணனை
दृष्ट्वा கண்முன்கண்டு,

वीर கிரீரே !
आत्मनः எனது
पौरुषं ஆத்தமை
जानन् அறியும் நான்
कथं எவ்வாறு
मर्षयामि சகித்து கம்மா
பிடுப்பேன்."

इत्येवादिनं वीरमभिनन्द्य स राघवः । लक्ष्मणं लक्ष्मिपञ्चमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १० ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|---------------|
| सः राघवः | இந்த ஸ்ரீராமர் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனாரைப் |
| एवादिनं | இப்படியாகப் மொழி | | பார்த்து |
| वीरं | ஞானை | इदं | இப்பொழுது |
| अभिनन्द्य | கொண்டார். | इति | பின்வரும் |
| | { தான் மேற்கொண்ட | वचनं | மொழியை |
| लक्ष्मिपत्रं | { காரியத்தைக் குறை | अब्रवीत् | மொழிந்தார்: |
| | { யின்றி முடிப்பதான | | |
| | { ண்டாகும் பேரைப் | | |
| | { பெற்றவராகிய | | |

परियुद्धोदकं शीतं वनानि फलवन्ति च । बलौघं संविभज्येयं व्यूहं तिष्ठेम लक्ष्मण ॥ ११ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------|-----------------|
| लक्ष्मण | " லக்ஷ்மணா! | इमं | இந்த |
| फलवन्ति | கனிகள் நினதந்த | बलौघं | சேனைக்கூட்டத்தை |
| वनानि | சோலைகளையும் | संविभज्य | பிரித்து |
| शीतं | குளிர்க்க | व्यूहं | அணிலகுத்து |
| उदकं च | ஐலத்தையும் | तिष्ठेम | நாம் தயாராக |
| परियुद्ध | தேடிக்கண்டுகொண்டு | | இருப்போம். |

लोकक्षयकरं भीमं भयं पश्याम्युपस्थितम् । निर्वहणं प्रवीराणामृक्षवानररक्षसाम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|----------|------------------------|
| लोकक्षयकरं | " உலகுக்கு நாசத் | निर्वहणं | அழிவை விளைவிக்கிற |
| | தை விளைவிக்கிறதும் | | துமாகிய |
| प्रवीराणां | மிக்க ஞானர்களாகிய | भीमं | பயங்கரமான |
| रक्षवानररक्षसां | { காடிகள், வானர்கள், | भयं | ஆபத்து |
| | { அரக்கர்கள் இவர் | उपस्थितं | கிட்டி கிட்டி குக்கிற- |
| | களுக்கு | पश्यामि | நான் கினைக்கிறேன். |

वाताश्च परुषा वान्ति कम्पते च वसुंधरा । पर्वताग्राणि वेपन्ते नदन्ति धरणीधराः ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|------------------|
| वाताः | " காற்றுகள் | पर्वताग्राणि | மலைரினுச்சிகள் |
| परुषाः | கடுமையாக | वेपन्ते | குதுங்குகின்றன. |
| वान्ति | விளக்கின்றன. | धरणीधराः च | மலைகளும் |
| वसुंधरा च | ஐயும் | नदन्ति | அவசந்தாடுகின்றன. |
| कम्पते | நடுங்குகின்றது. | | |

मेघाः क्रव्यादसंकाशाः परुषाः परुषस्वनाः । क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति मिथं शोणितविन्दुभिः ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------|----------------|--------------------|
| मेघाः | " மேகங்கள் | क्रूराः | பயங்கரமானவை |
| क्रव्यादसंकाशाः | பேய்ச்சாசுக்களை | | களாய் |
| | நிகர்த்தவைகளாய் | शोणितविन्दुभिः | சத்திரிந்துக்களைவி |
| परुषाः | { கண்டெண்டுத்துப் பார் | मिथं | கலந்தனவாய் |
| | { க்குவொண்ணுதவை | क्रूरं | அஸஹ்யமாய் |
| | களாய் | प्रवर्षन्ति | வர்ஷிக்கின்றன. |
| परुषस्वनाः | கர்ணகடோரமாய் கர் | | |
| | ஷிக்கின்றவைகளாய் | | |

रक्तचन्दनसङ्काशा सन्ध्या परमदासगा । अवच निपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ॥१५॥

| | | | |
|------------------|------------------------------------|---------------|----------------------|
| सन्ध्या | " சந்திரனும் | आदित्यात् | சூர்யபகவரனிட |
| रक्तचन्दनसङ्काशा | செஞ்செந் தன ச்சைத நிகர் த்தகரய் | अवच | அவசிக்ஞும் [மிருந்து |
| परमदासगा | மிக பவக்கரமாயிருக் கிறதா. | पुनः | இந்த |
| | | अग्निमण्डलं च | அக்னிமண்டலமும் |
| | | निपतति | நிழை விழுக்கிறது. |

आदित्यमभिवाश्यन्ति जनयन्तो महद्भयम् । दीना दीनस्वरा घोरा अपशस्ता मृगद्विजाः॥

| | | | |
|------------|----------------------------|--------------|-----------------------------|
| घोराः | " கொடியவைகளும் | दीनस्वराः | பரிதாபமான சூரலுத் |
| अपशस्ताः | இழிவானவைகளு கன | महत् | மிக [தவைகளாய் |
| मृगद्विजाः | மிருகங்களும் பகலி களும் | भयं | பயத்தை |
| दीनाः | ஏழைப் பிரிந்தவை களாய் | जनयन्तः | உண் டிபண்ணுகின்ற வைகளாய் |
| | | आदित्यं | சூர்யபகவரனைப் பார்த்து |
| | | अभिवाश्यन्ति | வணியிடுகின்றன. |

रजन्याममकाशश्च सन्तापयति चन्द्रमाः । कुण्णरक्तांशुपर्यन्तो यथा लोकस्य संक्षये ॥

ह्रस्वो रुद्धोऽपशस्ताश्च परिवेषः सुलोहितः ॥ १७ ॥

| | | | |
|-----------------------|--|-------------|---------------------------|
| चन्द्रमाः | " சந்திரனும் | ह्रस्वः | சுருக்கினதாயும் |
| अमकाशः च | ஒளிசூன் நியவனாகவே | अपशस्ताः | ஆயத்தனமாயும் |
| रजन्यां | இரவில் | सुलोहितः | மிகச் சிவந்ததாயும் |
| सन्तापयति | தயக்கச்செய்கிறான். | लोकस्य | உலகத்திற்கு |
| परिवेषः | சந்திரனா ஊர்கோள் | संक्षये यथा | அழிவென |
| कुण्णरक्तांशुपर्यन्तः | { கறுத்துச் சிவந்த து ளிக்கிரணக்கிரையு டைவதாயும் | रुद्धः च | கொடுமைவாகவிருக் கிறது. |

आदित्यमण्डले नीलं लक्ष्म लक्ष्मण दृश्यते । दृश्यन्ते न यथावच्च नक्षत्राण्यभिवर्तते ॥

युगान्तपिव लोकस्य पश्य लक्ष्मण शंसति ॥ १८ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|-----------------------------|
| लक्ष्मण | " லக்ஷ்மணன்! | यथावच् | முன்போல் |
| आदित्यमण्डले | சூர்யமண்டலத்தில் | न दृश्यन्ते | காணப்படவில்லை. |
| नीलं | நீலமரண | लोकस्य | உலகிற்கு |
| लक्ष्म | கனக்கம் | युगान्तं | பிரளயகாலம் |
| दृश्यते | காணப்படுகிறது. | अभिवर्तते च | கிட்டியிருக்கிறது என |
| लक्ष्मण | லக்ஷ்மணன்! | शंसति इव | சூசிப்பதுபோலி ருக்கிறது. |
| नक्षत्राणि | நகரத்திரங்கள் | पश्य | பேயும் கவனி. |

काकाः श्येनास्तथा गृध्रा नीचैः परिपतन्ति च ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------|--------------|-----------|---------------|
| काकाः | "காக்ஸககளும் | गृध्राः च | கழுஞ்சுகளும் |
| श्येनाः | பருந்துகளும் | नीचैः | கீழ்நோக்கி |
| तथा | ஆப்படியே | परिपतन्ति | விழுதிகின்றன. |

शिवश्चाप्यशिवा वाचः प्रवदन्ति महास्वनाः ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|----------------|
| अपि | "இன்னும் | अशिवाः | அமக்களாகாமான |
| शिवाः च | சரிகளும் | वाचः | சத்தங்களை |
| महास्वनाः | பேரொலிக்கொண்டு | प्रवदन्ति | வளையிடுகின்றன. |

शैलैः शूलैश्च खड्गैश्च विमुक्तैः कपिराक्षसैः । भविष्यत्यावृता भूमिमांसशोणितकर्दमा ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|----------------------|--|
| भूमिः | "பூமியானது | खड्गैः च | கத்திகளாலும் |
| कपिराक्षसैः | வானரசர்களாலும் அரக்கர்களாலும் | आवृता | நிரம்பியதாயும் |
| विमुक्तैः | எறியப்பட்ட | मांसशोणित- कर्दमा | மாம்சம், இரத்தம் இவைகளைலான சேறையுடையதாய் |
| शैलैः | மலைகளாலும் | भविष्यति | ஆகப்போகிறது. |
| शूलैः च | சூலங்களாலும் | | |

क्षिप्रमद्य दुराधर्षां लङ्कां रावणपालिताम् । अभियाम जवेनैव सर्वतो हरिभिवृताः ॥ २२ ॥

| | | | |
|------------|--|-------------|-------------------------------------|
| हरिभिः | "வானரசர்களால் | रावणपालितां | ராவணனால் பாதுகாக்கப்பட்டதுமான |
| सर्वतः | நன்குபக்கங்களிலும் | लङ्कां | இலங்கையினுள், |
| वृताः | சூழப்பட்டவர்களால், | अद्य एव | இப்பொழுதே |
| दुराधर्षां | { இதுவரையில் ஒருவராலும் தகைக்கப்படாதிருந்ததும் | क्षिप्रं | காலனியம்பஞ்செய் |
| | | जवेन | அதிவேகமாக [பாதுகாக்கும் செவ்வோமாக.] |
| | | अभियाम | |

इत्येवं संवदन्वीरो लक्ष्मणं लक्ष्मणाग्रजः । तस्माद्वातरच्छीघ्रं पर्वताग्रान्महाबलः ॥ २३ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|--------------|-------------------------|
| लक्ष्मणाग्रजः | ஸக்தமணரின் தமைய | इति एवं | மேற்கண்டவாறு |
| वीरः | வீரரும் [ஞானம், | संवदन् | சொல்லிக்கொண்டு |
| महाबलः | மகா பலசாலியுமாகிய அவர் | तस्माद् | அந்த |
| लक्ष्मणं | ஸக்தமணரைப் பார்த்து | पर्वताग्रान् | மலையினுச்சிகியிலிருந்து |
| | | शीघ्रं | சடுதிகில் |
| | | अवातरत् | கீழிறங்கினார். |

अवतीर्य च धर्मात्मा तस्माच्छैलास्त राघवः । परैः परमदुर्घर्षं ददर्श बलमात्मनः ॥ २४ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|--------------|--------------------------------|
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவாகிய | परमदुर्घर्षं | என்ன பாடுபட்டாலும் வெல்லற்கரிய |
| सः राघवः | அந்த ஸ்ரீராமர் | आत्मनः | தனது |
| तस्मात् शैलात् | அந்த மலையினின்றும் | बलं | சைன்யத்தை |
| अवतीर्य च | இறங்கிய பின்பு | ददर्श | கண்டதுற்றார். |
| परैः | சத்தஞ்சூக்களால் | | |

सन्नह्य तु ससुग्रीवः कपिराजबलं महत् । कालज्ञो राघवः काले संयुगायाभ्यचोदयत् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|---------------------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | संनह्य | ஸன் ன த் த மாக க ி ரு க் கச்செய்து |
| ससुग्रीवः तु | சசுக்ரீவனுடன் கூடவே | कालज्ञः | காலமறிந்தவராய் |
| महत् | பெரும் | काले | வந்தகாலத்தில் |
| कपिराजबलं | வானரராஜனது சேனையை | अभ्यचोदयत् | உத்ஸாஹப்படுத்தி ஞர். |
| संयुगाय | போருக்கு | | |

ततः काले महाबाहुर्वलेन महता वृतः । प्रस्थितः पुरतो घन्वी लङ्कामभिमुखः पुरीम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-----------|---------------|
| ततः | அதன்மேல் | लङ्का | இலங்கை |
| महाबाहुः | மகாபாகுவும் | पुरी | புரைய |
| घन्वी | வில்லீரகுமாரன் அவர் | अभिमुखः | நோக்கி |
| महता | பெரும் | पुरतः | முன்னே |
| वलेन | சேனையால் | काले | உசிதகாலத்தில் |
| वृतः | சூழப்பட்டவராய் | प्रस्थितः | சென்றார். |

ते विभीषणसुग्रीवौ हनुमाञ्जाम्बवान्नलः । ऋक्षराजस्तथा नीलो लक्ष्मणश्चान्वयुस्तदा ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|------------|-----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | नलः | நளனும், |
| ते | அவரை | तथा | அப்படியே |
| विभीषणसुग्रीवौ | விபிஷணனும் சசுக்ரீவ | नीलः | நீலனும், |
| हनुमान् | ஹனுமாளும், [னும், | लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனும் |
| ऋक्षराजः | ஋க்ஷராஜனாகிய | अन्वयुः | பின்பற்றிக்கொண்டார் கள். |
| जाम्बवान् | ஜாம்பவானும், | | |

ततः पश्चात्सुमहती पृतनार्क्षवनौकसाम् । प्रच्छाद्य महतीं भूमिमुयाति स राघवम् ॥२८॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|------------|---------------------|
| ततः पश्चात् | அதற்குப்பிதகு | पृतना | சேனை |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | महतीं | பெரிய |
| ऋक्षवनौकसां | ஋க்ஷவன்கள், வானரர்கள் இவர்களுடைய | भूमि | பூமியை |
| सुमहती | பெரும் | प्रच्छाद्य | மறைத்துக்கொண்டு |
| | | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| | | अनुयाति स | பின்பற்றிக்கொன்றது. |

शैलशृङ्गाणि वतशः प्रवृद्धांश्च महीरुहान् । जग्दुः कुञ्जरप्रख्या वानराः परवारणाः ॥२९॥

| | | | |
|----------------|--|-------------|--------------------------------|
| कुञ्जरप्रख्याः | யானைகளை விகர்த்த வர்களுக்கும் | प्रवृद्धान् | பெருந்த |
| परवारणाः | சந்தூருக்களை கத்தடுக்க வல்லவர்களுமான் | महीरुहान् च | மரங்களையும் |
| वानराः | வானரர்கள் | वतशः | தூற்றுக்கணக்காக |
| शैलशृङ्गाणि | மலைச்சிகரங்களை யும் | जग्दुः | கையிலெடுத்துக்கொ ண்டார்கள். |

तौ तु दीर्घेण कालेन भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । रावणस्य पुरीं लङ्कामासेदतुररिदमौ ॥३०॥

अस्मिदमौ
तौ
भ्रातरौ
रामलक्ष्मणौ तु
சத்தூருக்களை நானும்
ஆந்த [சொல்பும்
பிரந்தாக்களாகிய
ஸ்ரீராமரும் வசுந்தமண
ரும்

रावणस्य
सङ्गं
पुरीं
अदीर्घेण कालेन
आसेदतुः
ராவணனது
இலங்கை
நகரை
சிற்றூதிரைத்திணையே
அடைந்தார்கள்.

पताकमालिनीं रम्यामुद्यानवनशोभिताम् । चित्रवर्षां सुदुष्प्रापामुच्चैः प्राकारतोरणाम् ॥
तां सुरैरपि दुर्धर्षां रामवाक्यप्रचोदिताः । यथानिवेशं संपीड्य न्यविशन्त वनौकसः ॥३१॥

पताकमालिनीं
रम्यां
उद्यानवन- }
शोभितां }
चित्रवर्षां
सुदुष्प्रापां
उच्चैः
प्राकारतोरणां
சொடிகளை வரிவசவரி
சையாக உடையதும்
அழகியதும்
உத்யானவனக்களாவ
முகுந்துவிளங்குகிற
தும்
அழகிய வரையிற்கதவு
களைபுடையதும்
ஒருவராலும் அடைய
முடியாததும்
உயர்ந்த
மதில்களையும் தோர
ணவரையில்களைபுமு
டையதும்

सुरैः भवि
दुर्धर्षां
तां
रामवाक्य- }
प्रचोदिताः }
वनौकसः
संपीड्य
यथानिवेशं
न्यविशन्त
தெவர்க்காரதும்
வெல்லற்கரியதுமான
அகைந
ஸ்ரீராமது ஆக்கினை
வயக்கொண்டு ஏற்ப
டுத்தப்பட்ட
வானர்கள்
முற்றுகையிட்டுக்
கொண்டு
விதிக்கப்பட்ட
இடத்திற்
நக்சிவிட்டார்கள்.

लङ्कायास्तूत्तरद्वारं शैलमृङ्गमिवोन्नतम् । रामः सहानुनो घन्वी जुगोप च शरीष च ॥३२॥

घन्वी
रामः
सहानुनः
शैलमृङ्ग इव
उन्नतं
வில்லி ராகிய
ஸ்ரீராமர்
தம்பிரியோடுகூட
மலைமீன் கொடுமுடி
யை நிகர்த்து
உயர்ந்திருக்கிற

लङ्कायाः
उत्तरद्वारं
शरीष च
तु
जुगोप च
இலங்கையின்
வடக்குவாயிலை
தடைத்தார்.
இப்பொழுது
ஐயத்தவராதபடி
தன்னையும் பாதுகா
ந்துக்கொண்டார்.

लङ्कासुपनिविष्टश्च रामो दशरथात्मजः । लक्ष्मणानुचरो वीरः पुरीं रावणपालिताम् ॥

उत्तरद्वारमासाद्य यत्र तिष्ठति रावणः
वीरः
दशरथात्मजः
लक्ष्मणानुचरः च
रामः
रावणपालितां
குரரும்
தசரதரின் திருமக
னும்
வசுந்தமணரைக்கூட
டாவிவாகயுடையவ
ஸ்ரீராமர் [ருமான
ராவணனால் பாது
காக்கப்பட்ட

॥ ३४ ॥
लङ्कां पुरीं आसाद्य
रावणः
यस्य
तिष्ठति
उत्तरद्वारं
उपनिविष्टः
இலங்கைநகரைக்கிட்டி
ராவணன்
யசுக்கு
திருந்காடுனு ஆந்த
வடக்குவாயிலில்
வசுக்கத் துடன்
நின்றுவிட்டார்.

नान्यो रामाद्दि तद्द्वारं सवर्षः परिरक्षितुम् । रावणाधिष्ठितं भीमं वरुणेनैव सागरम् ॥
सायुधै राक्षसैर्भीमैराभिगुप्तं समन्ततः । लघूनां त्रासजननं पातालमिव दानवैः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-------------|-------------------|
| सागरं | சமுத்திரத்தை | सायुधैः | ஆயுதத்தரித்த |
| वरुणेन | வருணபகவானால் | भीमैः | கொடிய |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | राक्षसैः | அரக்கர்களால் |
| रावणाधिष्ठितं | ராவணனால் பாதுகாக்கப்பட்டதும், | समन्ततः | நாற்புறமும் |
| भीमं | பயங்கரமானதும், | अभिगुप्तं | பாதுகாக்கப்பட்டது |
| लघूनां | ஆற்பத்திடலுற்ற கூர்சூக்கு | तत्र | அந்த |
| त्रासजननं | தடுக்கத்தடை விளைவிக் கிறதும் | इरे | வாயிலை |
| दानवैः | தரணவர்களால் | परिरक्षितुं | நிர்ப்படுத்திக் |
| पातालं | பாதாளலோகத்தை | रामान् | ஸ்ரீராமரைத்தக்கீர |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | अन्यः हि | வேறொருவனும் |
| | | समर्थः न | வல்லனாகான். |

विन्ध्यस्तानि च योधानां बहूनि विविधानि च । ददर्शाभ्युधजालानि तथैव कवचानि च ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|----------------|-------------------|
| विन्ध्यस्तानि | அவ்விடத்தில் வைக்கப்பட்டிருந்த, | आभ्युधजालानि च | ஆயுதசமூகங்களையும் |
| योधानां | போர்வீரர்களுடைய | तथा एव | அப்படியே |
| बहूनि | அனேக | कवचानि च | கவசங்களையும் |
| विविधानि च | பலவகைகளான | ददर्श | கண்ணுற்றார். |

पूर्वं तु द्वारमासाद्य नीलो हरिचमूपतिः । अतिष्ठत्सह मैन्देन द्विविदेन च वीर्यवान् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------|-----------------|
| हरिचमूपतिः | வாஸரகேசனுபதியும் | सह | கூட |
| वीर्यवान् | வீர்யவாலியுடைய | पूर्वं | கிழக்கு |
| नीलः | நீலன் | द्वारं | வாயிலை |
| मैन्देन तु | மைந்தனோடும் | आसाद्य | தகைத்த |
| द्विविदेन च | தனித்தனியும் | अतिष्ठत् | காத்த கொண்டான். |

अङ्गदो दक्षिणद्वारं जग्राह सुपहाबलः । ऋपमेण गवाक्षेण गजेन गवयेन च ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------|------------------|--------------|--------------|
| सुपहाबलः | மிக்கபலசாலியாகிய | गजेन | கஜனோடும் |
| अङ्गदः | அங்கதன் | गवयेन च | கவயனோடும் |
| ऋपमेण | நிஷ்பயனோடும் | दक्षिणद्वारं | தெற்குவாயிலை |
| गवाक्षेण | கவாக்ஷனோடும் | जग्राह | தடுத்தான். |

हनुमान्पश्चिमद्वारं ररक्ष बलवान्कपिः । पश्चाधिपशसाभ्यां च वीरैरन्यैश्च तंगतः ॥ ४० ॥

बलवान् } பலசாலியான
 कपिः } வானரராகிய
 हनुमान् } ஹனுமார்
 पश्चाधि- } பிரமாதி, பிரகசன்
 पशसाभ्यां च } இவ்விருவர்களைகளும்

अन्यैः } வேறு
 वीरैः च } வீரர்களோடும்
 सङ्गतः } சேர்க்கு
 पश्चिमद्वारं } மேற்குவாயிலை
 ररक्ष } கீர்ப்படுத்தினார்.

मध्ये च स्वयं गुल्मे सुग्रीवः समतिष्ठत । सह सर्वैरिन्द्रैः सुपर्णश्वसनोपमैः ॥ ४१ ॥

सुग्रीवः } சுக்ரீவன்
 स्वयं च } தானே
 मध्ये } ४०
 गुल्मे } கூசல்யத்தில்

सुपर्णश्वसनोपमैः } { சுருட்பகவானையும்
 } வாயுபகவானையும்
 } நிகர்த்த
 हरिभेष्टैः } வானரோத்தமர்கள்
 सर्वैः सह } எல்லோரோடும்கூட
 समतिष्ठत } நின்றான்.

वानराणां तु षट्त्रिंशत्कोट्यः प्रख्यातयूथपाः । निषीद्वोपनिविष्टाश्च सुग्रीवो यत्र वानरः॥

वानराणां } வானரர்களுக்கூட
 षट्त्रिंशत् } முப்பத்தாறு
 कोट्यः तु } கோடிக்கணக்கான
 प्रख्यातयूथपाः } புகழ்பெற்ற சேனைத்
 } தலைவர்கள்

सुग्रीवः वानरः } சுக்ரீவவானரன்
 यत्र च } எங்கிருந்தானோ அங்கம்
 निषीद्व } முற்றுகையிட்டிரு
 उपनिविष्टाः } ணக்கத்துடனிருந்
 } தார்கள்.

शासनेन तु रामस्य लक्ष्मणः सविभीषणः । द्वारे द्वारे हरीणां तु कोटिं कोटिं न्यवेशयत्॥

रामस्य } ஸ்ரீராமருக்கூட
 शासनेन तु } ஆக்கிரமையக்கொண்
 } டே
 लक्ष्मणः } லக்ஷ்மணர்
 सविभीषणः } சிவபிஷணருடன்

द्वारे द्वारे तु } இடைவெளிகளிலெக்
 } கும்
 हरीणां } வானரர்களுக்கூட
 कोटिं कोटिं } ஒவ்வொரு கோடியை
 न्यवेशयत् } நிறுத்தினார்.

पश्चिमेन तु रामस्य सुग्रीवः सहजाम्बवान् । अद्रान्मध्ये गुल्मे तस्थौ बहुबलानुगः ॥

सुग्रीवः } சுக்ரீவன்
 सहजाम्बवान् } ஜம்பவானுடனும்
 बहुबलानुगः } பலசேனைவால் சின்
 } தொடரப்பட்டவரையும்
 मध्ये } ४०

गुल्मे } சேனையில்
 रामस्य } ஸ்ரீராமருக்கு
 पश्चिमेन } மேற்கிலும்
 अद्रान् तु } அருகாமையிலும்
 तस्थौ } நின்றான்.

ते तु वानरशार्दूलाः शार्दूला इव दंष्ट्रिणः । गृहीत्वा द्रुमशैलाग्रान् हृष्टा युद्धाय तस्थिरे ॥

शार्दूलाः इव } வேக்கககன்போலவே
 दंष्ट्रिणः } கோரைப்பற்களைப்
 } கூடவர்களையும்
 वानरशार्दूलाः तु } வானரோத்தமர்களு
 ते } அவர்கள் {மர
 युद्धाय } போசிட

हृष्टाः } உத்தமநாம்கொண்ட
 } வர்களாய்
 द्रुमशैलाग्रान् } மரங்களையும் மலைச்சி
 } கால்களையும்
 गृहीत्वा } கையிலேகொடுத்திக்
 तस्थिरे } கொண்டு
 } தயாராய் நின்றனர்.

सर्वे विकृतलाङ्गुलाः सर्वे दंष्ट्रानखायुधाः । सर्वे विकृतचित्राङ्गाः सर्वे च विकृताननाः ॥

| | | | |
|------------------|--|------------------|---|
| सर्वे | எல்லோரும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| विकृतलाङ्गुलाः | நெயிலை தூக்கப்பட்ட வாங்களை யுடையவர் | विकृतचित्राङ्गाः | பலவகை அழகிய உரு வழுவையவர்கள் ; |
| सर्वे | எல்லோரும் [கள் ; | सर्वे च | எல்லோரும் |
| दंष्ट्रानखायुधाः | { கோரப்பற்களையும் நகங்களை யும் ஆயுத மாகவுடையவர்கள் ; | विकृताननाः | { இதுவகையில் கண்டி ராத முகமுடையவர் கள். |

दशनामत्रयाः केचित्केचिदशगुणोत्तराः । केचिन्नागसहस्रस्य वभूयुस्तुल्यविक्रमाः ॥४७॥

| | | | |
|--------------|--|---------------|--------------------------------|
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் |
| दशनामत्रयाः | பத்து யானைகளின் பலமுள்ள வர்களுக்கும் | नागसहस्रस्य | ஆயிரம் யானைகளை |
| केचित् | சிலர் | तुल्यविक्रमाः | நிகர்த்த பலமுடைய வர்களையும் |
| दशगुणोत्तराः | { அதிகமும் பதின்மடக் கு அதிகமுள்ளவர் களாயும் | वभूयुः | இருந்தார்கள். |

सन्ति चौघवलाः केचित्केचिच्छतगुणोत्तराः । अग्रमेयवलाश्चान्ये तत्रासन्दहरियूथपाः ॥

| | | | |
|--------------|--|-------------|----------------------------------|
| सन्ति | சிலர் | सन्ति | இருந்தார்கள். |
| चौघवलाः च | { பல கோடிகளடங்கிய ஒகடுமீளும் எண்ணி க்கையாணவர்களின் பலமுடையவர்களா கவும் | तत्र | அதில் |
| केचित् | சிலர் | अन्ये | மற்றுமுள்ள |
| शतगुणोत्तराः | நூறுமடக்கு மேம்பட் டவர்களாகவும் | हरियूथपाः च | வானரத்தலைவர் கணொடுவதில் |
| | | अग्रमेयवलाः | அளவிடமுடியாத பல முடையவர்களால் |
| | | आसन् | இருந்தார்கள். |

अद्भुतश्च विचित्रश्च तेषामासीत्समागमः । तत्र वानरसैन्यानां शैलानामिव सङ्घमः ॥४९॥

| | | | |
|---------------|-----------------|------------|--|
| तत्र | அங்கிடத்தில் | इव | போலவும் |
| तेषां | அந்த | अद्भुतः च | { இதுவகையில் என் தம் பார்த்திராததா கவும் |
| वानरसैन्यानां | வானரத்தோலைகளின் | विचित्रः च | பித்த அழகாகவும் |
| समागमः | சங்கமமானது | आसीत् | கொண்டிருந்தது. |
| शैलानां | பர்வதங்களின் | | |
| सङ्घमः | சங்கமம் | | |

परिपूर्णमिवाकाशं सञ्छन्नेव च मेदिनी । लङ्कामुपनिविष्टैश्च संपतद्भिश्च वानरैः ॥५०॥

| | | | |
|--------|-------------|-------------|---|
| लङ्का | லங்கைகையில் | संपतद्भिश्च | மறைக்கப்பட்டது போலிருந்தது. |
| वानरैः | வானரர்களால் | अकाशः च | பற்றில்லாதவர்களால் |
| मेदिनी | மூடியானது | परिपूरी इव | ஆகாசமும் நிறைக்கப்பட்டது போலிருந்தது. |

शतं शतसहस्राणां पृथग्वृक्षवनोंकसाम् । लङ्काद्वाराण्युपाजग्मुरन्ये योर्दुं समन्ततः ॥ ५१ ॥

| | | | |
|-----------------------------------|---|--|--|
| शतसहस्राणां शतं अन्ये पृथक् | காடி, வானார் இவர் களுடைய கொடிக்கணக்கான வேறு பலர் தனித்தனியே | योर्दुं लङ्काद्वाराणि समन्ततः उपाजग्मुः | போர்புரிய இலங்கைவாய்க்களை சுற்றிக்கொறி திரிந்தார்கள். |
|-----------------------------------|---|--|--|

आवृतः स गिरिः सर्वैस्तैः समन्तात्प्लवङ्गमैः ॥ ५२ ॥

| | | | |
|-------------------------|-------------------------------|--------------------------------------|--|
| सः गिरिः समन्तात् | அந்த பர்வதமானது எங்கும் | तैः प्लवङ्गमैः सर्वैः आवृतः | அந்த வானார்கள் எல்லோராலும் குழப்பங்குந்தது. |
|-------------------------|-------------------------------|--------------------------------------|--|

अयुतानां सहस्रं च पुरीं तामभ्यवर्तत ॥ ५३ ॥

| | | | |
|--------------------------|---------------------------------|--------------------|-----------------------------|
| अयुतानां सहस्रं च तां | கொடிக்கணக்கான அந்த [கவையும்] | पुरीं अभ्यवर्तत | பட்டணத்தை சுற்றியின்றது. |
|--------------------------|---------------------------------|--------------------|-----------------------------|

वानरैर्वलवद्भ्यश्च बभूव द्रुमपाणिभिः । संवृता सर्वतो लङ्का दुष्पवेशाऽप वायुना ॥ ५४ ॥

| | | | |
|--|---|--|---|
| वायुना दुष्पवेशा लङ्का अपि द्रुमपाणिभिः | வாயுபகவானாலும் புகழுடியா திருந்த இலங்கையும் மரங்களை வககளி வேந்திய | वलवद्भिः वानरैः सर्वतः च संवृता बभूव | பலவாடிகளான வானர்களால் எங்குமே தடைப்புண்டதாய் ஆயிற்று. |
|--|---|--|---|

राक्षसा विस्मयं जग्मुः सहसाऽभिनिर्षादिताः । वानरैर्दंघसङ्काशैः शक्रतुल्यपराक्रमैः ॥

| | | | |
|--|--|--|---|
| राक्षसाः मैघसङ्काशैः शक्रतुल्य- पराक्रमैः | அரக்கர்கள் மேகத்தை நிகர்த்த கவகளும் இந்திரனுக்கொப்பா ன ஆர்நல் பெற்ற வர்களான | वानरैः सहसा अभिनिर्षादिताः विस्मयं जग्मुः | வானர்களால் பலங்கொண்டு முத்தகையிடப்பட்ட வர்களால் மிகைத் துண்டீட்டார்கள். |
|--|--|--|---|

महाच्छब्दोऽभवत्तत्र बलौघस्याभिवर्ततः । सागरस्येव भिन्नस्य यथा स्यात्सलिलस्वनः ॥

| | | | |
|---|--|---|--|
| भिन्नस्य सागरस्य सलिलस्वनः यथा स्यात् इव | கொந்தளிக்கும் கடலின் நீரோசை எவ்வாறு இருக்கு மோ அவ்வாறு | तत्र अभिवर्ततः बलौघस्य मदान शब्दः अभवत् | அப்பொழுது எதிர்த்துநிற்கும் சேனை வெள்ளத்தி னது பெரும் முழக்கம் உண்டாயிற்று. |
|---|--|---|--|

तेन शब्देन महता सभाकारा सतीरणा । लङ्का प्रचलिता सर्वा सशैलवनकानना ॥५७॥

| | | | |
|---------|---------------|----------|-------------------|
| तेन | அந்த | सतीरणा | தேராளனவாசிகள் |
| महता | பெரும் | | னோடும், |
| शब्देन | முழுக்கத்தால் | सशैलवन- | மலைகளோடும், காணக் |
| लङ्का | இலங்கை | कानना } | கனோடும், கோகை |
| सर्वा | முற்றும் | | னோடும், |
| सभाकारा | மதில்களோடும், | प्रचलिता | அதிர்த்தது. |

रामलक्ष्मणगुप्ता सा सुर्धवेण च बाहिनी । वभूव दुर्धर्पतरा सर्वैरपि सुरासुरैः ॥ ५८ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|--------------------|
| सुर्धवेण | சுக்ரீவனுடும், | सुरासुरैः | தேவர்கள் அசுரர்கள் |
| रामलक्ष्मण- | ஸ்ரீராமரடும், லக்ஷ் | सर्वैः अपि | யாவராதும் |
| गुप्ता च } | மணரடும் ரகசிக்க | दुर्धर्पतरा | எப்பாடுகொண்டும் அ |
| सा | அந்த [ப்பட்ட | | னுக்கொண்ணுத்தாய் |
| बाहिनी | சேனை | वभूव | இருந்தது. |

राघवः सन्निवेश्यैव सैन्यं स्वं रक्षसां वधे । सम्पन्न्य मन्त्रिभिः सार्धं निश्चित्य च पुनः पुनः ॥

आनन्तर्यमभिप्रेप्सुः क्रमयोगार्थतत्त्ववित् ॥ ५९ ॥

विभीषणस्यानुमते राजधर्ममनुस्मरन् । अङ्गदं वालितनयं समाहूयेदमन्त्रवीत् ॥ ६० ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|------------|-----------------------|
| क्रमयोगार्थ- | முறைதவளுது செய் | पुनः पुनः | பலவாறு |
| तत्त्ववित् } | | सम्पन्न्य | ஆலொசித்து |
| | யும் காரியங்களால் | च | பின்னர் |
| | வினையும் பல்லை உள் | राजधर्म | மன்னரது தெரியை |
| | உணர்ந்த | अनुस्मरन् | அறிபுதுத்துகிறவ |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | | ராய் |
| स्वं | தனது | निश्चित्य | ஒர்சிதம் தீர்மானித்து |
| सैन्य | சேனையை | विभीषणस्य | விபிஷணரின் |
| सन्निवेश्य एव | தக்கவிடத்தில் சிற் | अनुमते | அங்கிகாரத்தின் |
| | கச்செய்தபின்னர் | | பேரில் |
| रक्षसां वधे | அரக்கர்களை அழித் | वालितनयं | வாலியின் புதல்வனு |
| | தல் விவயத்தில் | अङ्गदं | அங்கதனை [கிய |
| आनन्तर्य | மேல்படத்தவேண்டிய | समाहूय | அழைத்து |
| | தை | इदं | பின்வருமாறு |
| अभिप्रेप्सुः | நடத்த எண்ணக் | अमन्त्रीत् | கட்டளைவிட்டார்; |
| | கொண்டு | | |
| मन्त्रिभिः सार्धं | மத்திரிகளோடுகூட | | |

गत्वा सौम्य दशमीवं ब्रूहि मद्रचनात्कपे । लङ्कयित्वा पुरीं लङ्कां भयं त्यक्त्वा गतव्यथः॥

| | | | |
|--------------|----------------|--------------|------------------|
| सौम्य | “அப்பா | गतव्यथः | மனச்சஞ்சலம் எது |
| कपे | வாரா! | | வும் இன்றி |
| भयं | பயத்தை | दशमीवं गत्वा | ராவணனைக் கிட்டி |
| त्यक्त्वा | விட்டொழித்து | मद्रचनात् | நானுரைத்ததாக |
| लङ्कां पुरीं | இலங்கைககருள் | ब्रूहि | பின்வருமாறு சொல் |
| कह्यमिवा | நாவிக்குகித்து | | லக்கடவாய். |

अष्टश्रीक गतैश्वर्यं सुसूपो नष्टचेतन । कृपीणां देवतानां च गन्धर्वाप्सरसां तथा ॥ ६२ ॥
 नागानामथ यक्षाणां राज्ञां च रजनीचर । यच्च पापं कृतं मोहादवल्लिप्तेन राक्षस ॥
 तस्य पापस्य संभासा व्युष्टिरस्य दुरासदा ॥ ६३ ॥

अष्टश्रीक " கணியிழந்தவனே !
 गतैश्वर्यं அரவிழந்தவனே !
 सुसूपो சாவுநெருங்கியவனே !
 नष्टचेतन அறிவுகுன்றியவனே !
 रजनीचर திருட்டு
 राक्षस அரக்கா !
 कृपीणा முனிவர்களுக்கும்,
 देवतानां च தேவர்களுக்கும்,
 गन्धर्वाप्सरसां तथा கந்தர்வர்களுக்கும்
 अम्बरांशुकளுக்கும்,
 नागानां अथ னாகர்களுக்கும்,
 यक्षाणां யக்ஷர்களுக்கும்,

राज्ञां च மன்னர்களுக்கும்,
 यत् पापं எந்த தீங்கானது
 मोहात् மூடத்தனத்தாலும்,
 अवलिप्तेन செருக்காலும்
 कृतं உன்னால் புரியப்பட்ட
 तस्य அந்த [தீதா
 अस्य இந்த
 पापस्य பாபத்தின்
 व्युष्टिः च பாலனும்
 दुरासदा எவராலும் தடுக்க
 முடியாததாய்
 संभासा சிந்திப்பது.

नूनमद्य गतो दर्पः स्वयंभूवरदानजः । यस्य दण्डधरस्तेऽहं दाराहरणकश्चितः ॥

दण्डं धारयमाणस्तु लङ्काद्वारे व्यवस्थितः ॥ ६४ ॥
 यस्य " எந்த
 ते உனக்கு
 दाराहरणकश्चितः மனைவி திருடப்பட்ட
 டதால் மனம் கொந்த
 काणे
 अहं तु படைபைய
 दण्डं திரட்டிக்கொண்டு
 धारयमाणः இலங்கையின் வாயிலில்

व्यवस्थितः வந்து நின்று
 दण्डधराः தண்டனை விதிக்கத்
 தயாராயிருக்கிறேனோ
 नूनं ஆணையால்
 स्वयंभूवर- } பிரம்மாவிடம் வரம்
 दानजः } வாங்கியதாலுண்
 दर्पः செருக்கு [உன்
 अद्य गतः இன்றே ஒழிந்தது.

पदवीं देवतानां च महर्षीणां च राक्षस । राजर्षीणां च सर्वेषां गमिष्यसि मया हतः ॥

राक्षस " அரக்கா !
 मया என்னால்
 हतः கொல்லப்பட்டீ
 देवतानां च தேவர்களுடையவும்

महर्षीणां च மற்றறிவிடங்களுடைய
 राजर्षीणां ராஜரிஷிகள் [வும்
 सर्वेषां च எல்லோருடையவும்
 पदवीं கதியை
 गमिष्यसि அடைவாய்.

बलेन येन वै सीतां मायया राक्षसाधम । मामतिक्रामयित्वा त्वं हतवांस्तन्निदर्शय ॥६६॥

राक्षसाधम " ராக்ஷஸப்பதனே !
 त्वं நீ
 मायया மாயையால்
 मां என்னை
 भतिक्रामयित्वा அப்புறம் செல்லச்
 सीतां வந்ததையை [செய்து

येन எந்த
 बलेन वै பலத்தைக்கொண்டு
 हतवान् திருடிச்சென்றாயோ
 त्वं அதை
 निदर्शय எனது கையில் காட்டு
 வாயாக.

अराक्षसमिमं लोकं कर्तास्मि निश्चितैः शरैः । न चेच्छरणमभ्येपि मामुपादाय मैथिलीम् ॥

| | |
|--------------------------|--------------------------------------|
| मां | "என்னைடம் |
| मैथिलीं | சூரணகிணய |
| उपादाय | திரும்பிச்சமர்ப்படுத்து எய்திட்டு |
| शरणं अभ्येपि } न चेत् | சீ சரணம் புறாத பாஷத்தில் |

| | |
|-----------|-------------------|
| निश्चितैः | கூரிய |
| शरैः | பாணங்களால் |
| इमं | இந்த |
| लोकं | உலகை |
| अराक्षसं | ராட்சஸர்களற்றதாய் |
| कर्तास्मि | செய்துவிடுவேன். |

धर्मात्मा राक्षसश्रेष्ठः संप्राप्तोऽयं विभीषणः

॥ ६८ ॥

| | |
|----------------|-------------------------------|
| धर्मात्मा | "தர்மாத்மாவும் |
| राक्षसश्रेष्ठः | அரக்கர்களில் உத்த மனுமாவிய |

| | |
|------------|------------------------------|
| अयं | இந்த |
| विभीषणः | விபிஷணன் |
| संप्राप्तः | என்னை ஆசிரயித்து எய்தான். |

लङ्केश्वर्यै ध्रुवं श्रीमानयं प्राप्नोत्यकण्टकम्

॥ ६९ ॥

| | |
|----------|---------------|
| श्रीमान् | "புதிமானாகும் |
| अयं | இவன் |
| अकण्टकं | இடைபூற்றற்ற |

| | |
|--------------|------------|
| लङ्केश्वर्यै | இலங்கையரசை |
| ध्रुवं | சார்வதமாய் |
| प्राप्नोति | அடைகிறான். |

न हि राज्यमधमेण भोक्तुं क्षणमपि त्वया ।

शक्यं मूर्खसहायेन पापेनाविदितात्मना ॥

| | |
|--------------|--|
| मूर्खसहायेन | "மூர்க்கர்களாகிய மந் நிரிசனை உதவிபாகக் கொண்டவனும் |
| अविदितात्मना | |
| पापेन | தான் இம்மட்டுமெண் று அறிபாதவனாய் பாபத்தொழிவியே புரியும் |

| | |
|----------|-----------------|
| शक्यं | உன்னால் |
| क्षणमपि | ஒருகிழிவுமேனும் |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| अधमेण हि | அதர்மத்தடனையே |
| भोक्तुं | அனுபவிக்க |
| शक्यं न | முடியாது. |

युद्धयस्व वा धृतिं कृत्वा शौर्यमालम्ब्य राक्षस ॥ ७१ ॥

| | |
|--------|---------------------------------|
| राक्षस | "அரக்க! |
| शौर्यं | பேரஞ்சுக்குவேண்டிய வல்லமையைய |

| | |
|-----------|-----------------|
| आलम्ब्य | அடைந்து |
| धृतिं | மடுனுகைதரியத்தை |
| कृत्वा वा | கொண்டும் |
| युध्यस्व | பொர்புரி. |

मच्छरैस्त्वं रणे शान्तस्ततः पूतो भविष्यसि

॥ ७२ ॥

| | |
|---------|-----------------|
| रणे | "போரில் |
| त्वं | நீ |
| मच्छरैः | எனது பாணங்களால் |
| शान्तः | மாண்டவனாய் |

| | |
|----------|-----------------------------|
| ततः | அதனால் |
| पूतः | செய்த பாபங்களொ ழிந்தவனாக |
| भविष्यसि | ஆகிவிடுவாய். |

यदा विशसि लोकांस्त्रीन्पक्षिभूतो मनोजवः । मम चक्षुष्यं प्राप्य न जीवन्प्रतियास्यसि ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|----------------|--------------------------------|
| पक्षिभूतः | " 'பறவை உருவம் கொண்டவனாய் | मम | எனது |
| मनोजवः | மனோவேகமுற்றும் | चक्षुष्यं | கண்மீனாக்கை |
| वीन् | மூன்று | प्राप्य | அடைந்தபிறகு |
| लोकान् | உலகங்களுக்கும் | जीवन् | உயிருடன் |
| विशसि | புதுநடக்கிடுகின்றாய் | प्रतियास्यसि न | நீ திரும்பிப் போக மாட்டாய். |
| यदा | என்கிறதென்றால் | | |

अवीमि त्वां हितं वाक्यं क्रियतामौर्ध्वदैहिकम् ॥ ७४ ॥

| | | | |
|--------|------------------|--------------|-------------------------------|
| त्वां | " 'உனக்கு | और्ध्वदैहिकं | உத்திரக்கிரியை யானது |
| हितं | நன்மை பயப்பதாகிய | क्रियताम् | செய்துமுடிக்கப் பட்டிடும். |
| वाक्यं | ஒரு சொல்லை | | |
| अवीमि | சொல்லுகிறேன். | | |

सुदृष्टा क्रियतां लङ्का जीवितं ते मयि स्थितम् ॥ ७५ ॥

| | | | |
|--------|--------------|-----------|-------------------------------|
| ते | " 'உனது | लङ्का | இலங்கைநகர் |
| जीवितं | உயிர் | सुदृष्टा | ஆசைநீர்ப்பார்க்கப் பட்டதாக |
| मयि | எனதநீனத்தில் | क्रियताम् | செய்துவிடப்பட்ட இடம்." |
| स्थितं | இருக்கிறது. | | |

इत्युक्तः स तु तारेयो रामेणाक्रिष्टकर्मणा । जगामाकाशमाविश्य मूर्तिमानिव हव्यवाद् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|----------|--------------|
| अक्रिष्टकर्मणा | எனதையும் தோல்வாறிய தமாய்ச்செய்யும் | हव्यवाद् | அக்னிபகவான் |
| रामेण | ராமரால் | इव | போலிருக்கும் |
| तु | இவ்வியயத்தில் | सः | அந்த |
| इति | இவ்வாறு | तारेयः | அங்கதன் |
| उक्तः | கியமனம்பெற்று | आकाशं | ஆகாசத்தில் |
| मूर्तिमान् | உருவெடுத்தவந்த | अविश्य | கிளம்பி |
| | | जगाम | சென்றான். |

सोऽतिपत्यं मुहुर्तेन श्रीमान्नावणमन्दिरम् । ददर्शासीनपद्मं रावणं सचिवैः सह ॥ ७७ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------|------------------------|
| धीमान् | சீமானாகும் | सचिवैः | மந்திரிமார்களை |
| सः | அவன் | सह | கூட |
| मुहुर्तेन | ஒருகொடிய்பொழு தில் | अवधे | வெகுஜாக்கிரதை யுடன் |
| रावणमन्दिरं | ராவணனது மாளிகையை | आसीनं | விழ்ந்திருக்கும் |
| अविश्य | பறந்தடைந்து | रावणं | ராவணனை |
| | | दर्शनं | கண்டான். |

ततस्तस्याविदूरे स निपत्य हरिपुङ्गवः । दीप्ताग्निमश्शस्तस्यावद्भद्रः कनकाद्भद्रः ॥ ७८ ॥

| | | | |
|----------------------|--|------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | हरिपुङ्गवः | வாணரோத்தரனுமா |
| कनकाद्भद्रः | பொன்சேதான்வளைக வேயணிக் திருந்தவனும் | सः भद्रः | அந்த அங்கதன் [சிய |
| दीप्ताग्नि- सदृशः | கொழுந்துவிட்டு யும் அக்கனிகைய நிக ர்த்தவனும் | तस्य | அவனது |
| | | अविदूरे | சமீபத்தில் |
| | | निपत्य | குதித்து |
| | | तस्थौ | நின்றான். |

तद्रामवचनं सर्वमनुताधिकमुत्तरम् । समाख्यं श्रावयामास निवेद्यात्मानपात्मना ॥ ७९ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|-------------|---|
| समाख्यं | மக்திரிமாத்களோபயகு க்குமவனுக்கு | उत्तरम् | சிறந்த |
| श्रावयामास | நாளோ | रामवचनं | ஸ்ரீராமரது சொல் |
| निवेद्य | நாளின்னுணைப்ப தை | सर्वे | எல்லாவற்றையும் |
| तत् | தெரிவித்துவிட்டு | अन्युनादिकं | எதொன்றையும் விடா மலும் சேர்க்காமலும் |
| | அந்த | श्रावयामास | பின்வருமாறு அறிவித்தான் : |

दूतोऽहं कौसलेन्द्रस्य रामस्याक्रिष्टकर्मणः । शत्रुपुत्रोऽङ्गदो नाम यदि ते श्रोत्रमागतः ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|----------------|-----------------------------|
| अक्रिष्टकर्मणः | “எனதயும்சேதாவகாணி தமாய்ச்செய்யும் | वा लपुत्रः | வாலியின் குமாரன். |
| कौसलेन्द्रस्य | கோசலன்டிரமன்ன னுகிய | अङ्गदो नाम | அங்கதனென்பது எனது பெயர். |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | ते | உனது |
| दूतः | தூதன் | श्रोत्रे मागतः | காதில்விழுந்தவனாக |
| अहं | நான். | यदि | இருந்தாலிருக்க லாம். |

आह त्वां राघवो रामः कौसल्यानन्दवर्धनः । निष्पत्य प्रतिवृद्धस्य नृशंस पुरुषाधम ॥

| | | | |
|-------------------|--|---------------|---|
| कौसल्यानन्दवर्धनः | “கொல்லாதேவியா குக்கு ஆனந்தத்தைக பெருக்குபவனுய் | नृशंस | “கொடிய கொஞ்சம் படைக்கப்பெற்ற |
| राघवः | ரகுலத்தில் பிறந் | पुरुषाधम | { புருவாதமனை! (உத்தம குலத்திலுய் பிறந்த உத்தமத்த காமாதாரனை!) |
| रामः | ஸ்ரீராமன் [சிருக்கிற | निष्पत्य | பெளிவது |
| त्वां | உன்னிடம் | प्रतिवृद्धस्य | கேட்கின்ற போர் புரிவாயாக. |
| आह | பின்வருமாறு சொல் லிவிட்டுச்சிருக்கின்றேன். | | |

हन्तास्मि त्वां सहामात्यं सपुत्रज्ञातिवान्धवम् ॥ ८२ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|---------------------------|---|
| त्वां | “உன்னை | सपुत्रज्ञाति- वान्धवम् | { புத்திரர்களுடனும் நாயகிகளுடனும் பத்துக்களுடனும் |
| सहामात्यं | மக்திரிகளுடனும், | हन्तास्मि | கொல்லப்போகிறேன். |

निरुद्धिप्राज्ञयो लोका भविष्यन्ति हते त्वयि

॥ ८३ ॥

त्वयि ५: 8
 हते माண்டுவிடவும்
 वयः மூன்று

लोका: உலகங்களும்
 निरुद्धिमा: கவலையெழித்தவைகளாய்
 भविष्यन्ति ஆகப்போகின்றன.

देवदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् । शत्रुपयोद्धरिष्वामि त्वामृषीणां च कण्टकम् ॥

देवदानवयक्षाणां ५: 9 தேவதானவக்ஷத்
 கணுக்கும்
 गन्धर्वोरगरक्षसां கந்தர்வராகராக்ஷஸர்
 शत्रुं கைவரியும் [கணுக்கும்]

ऋषीणां முனிவர்களுக்கு
 कण्टकं च கண்டகணுமான
 त्वा உன்னை
 भय இப்பொழுது
 उद्धरिष्यामि வேருடன் களைவேன்.

विभीषणस्य वैश्वर्यं भविष्यति हते त्वयि ।

न वेत्सत्कृत्य वैदेहीं प्रणिपत्य प्रदास्यसि ॥

त्वयि ५: 10
 हते माண்டுவிடவும்
 विभीषणस्य च விபிஷணனுக்குத்
 தான்

न वेत् இதுவேண்டாமெனில்
 सक्त्य பூழித்த
 प्रणिपत्य அடிபணிந்து
 वैदेहीं சீதைகையை
 प्रदास्यसि நீ திருப்பிச் சமர்ப்பித்
 துவிடு."

वैश्वर्यं ५: 11
 भविष्यति ஏற்படப்போகிறது.

इत्येवं परुषं वाक्यं ब्रुवाणे हरिपुङ्गवे । अमर्षवशमापन्नो निशाचरगणेश्वरः ॥ ८६ ॥

एवं इति இப்படியாய்
 परुषं वाक्यं கண்டிப்பான சொல்லை
 हरिपुङ्गवे வானரோத்தமன்
 ब्रुवाणे மொழிகையில்

निशाचरगणेश्वरः 8: 11
 अमर्षवशा கோபத்தால் மெய்
 மறந்திருத்தலை
 भावन्नः அடைந்தான்.

ततः स रोषताम्राक्षः शशास सचिवांस्तदा ।

गृह्यतामेव दुर्मेधा वध्यतामिति चासकृत् ॥

तदा 8: 12
 ततः அதனால்
 सः அவன்
 रोषताम्राक्षः கோபத்தால் கண்கண்
 சிவக்க
 सचिवान् மக்திரிமார்களைப் பார்
 हति பின்வருமாறு [க்த

गृह्यतामेव 8: 12
 दुर्मेधा: "அறிவு குழம்பியவனான
 एव: இவன் [கிய
 वध्यतामिति: பிடிக்கப்பட்டும்.
 चासकृत्: விட்டுவிட்டு
 वध्यताम: செத்திரவதை செய்யப்
 படட்டும்"

रावणस्य वचः श्रुत्वा दीप्ताप्रिसमतेजसः ।

जग्दुस्तं ततो घोराश्वत्वारो रजनीचराः ॥

दीप्ताप्रिसम- } பற்றியெரியும் தீகைய
 तेजसः } நீகாத்த ஒளியுடைய
 வர்களும்
 घोरा: கொடியவர்களுமான
 वचः காண்கு
 रजनीचरा: ஆரக்கர்கள்

रावणस्य वचः 8: 13
 श्रुत्वा 8: 13
 ततः 8: 13
 रं 8: 13
 जग्दुः 8: 13

ब्राह्म्यामास तारेयः स्वयमात्मानमात्मवान् । बलं दर्शयितुं वीरो यातुधानगणे तदा ॥८९॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|---------------|------------------------------------|
| ब्राह्मवान् | ஊதாரியகரணியும் | बलं | தல தூசக்திவல |
| वीरः | வீர ஜூதமான | दर्शयितुं | கண்டடாகக்காட்ட |
| तारेयः | அங்கதன் | आमानं | தன்னை |
| यातुधानगणे | ஆரக்கர்களுகூகட்ட டத்தில் | स्वयं | தானே இஷ்டப்பட்டு |
| | | ब्राह्म्यामास | பிடித்துக்கொள்ள இடங்கொடுத்தான். |

स तान्बाहुद्वये सक्तानादाय पतगान्वि । प्रासादं शैलशृङ्गाशमुत्पवाताङ्गदस्तदा ॥ ९० ॥

| | | | |
|---------|-----------------|------------|------------------|
| सः | அந்த | पतगान् | பதங்களை |
| अङ्गदः | அங்கதன் | इव | எவ்வாறே அம்வாறே |
| तदा | அப்பொழுது | आदाय | தூக்கிக்கொண்டு |
| सक्तान् | சகக்காரிசண்டில் | शैलशृङ्गाश | மலைமேசுந்த |
| तान् | அவர்களை | प्रासादं | உப்பரிசைகொண்டிது |
| | | दापवात | தாவிச்சென்றான். |

तेऽन्तरिक्षाद्विनिर्धूतास्तस्य वेगेन राक्षसाः । भूमौ निपतिताः सर्वे राक्षसेन्द्रस्य पश्यतः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------------|----------------------------|
| ते | அந்த | विनिधिताः | உதறிவெறியப்பட்ட வர்கள். |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | राक्षसेन्द्रस्य | ராக்ஷஸமன்னன் |
| सर्वे | எல்லோரும் | पश्यतः | பார்த்துக்கொண்டிரு |
| तस्य | அவனது | भूमौ | பூமியில் [சகக்காரியேயே |
| वेगेन | வலுவால் | निपतिताः | விழுந்தார்கள். |
| अन्तरिक्षात् | ஆகாசத்திலிருந்து | | |

ततः प्रासादशिखरं शैलशृङ्गमिवोन्नतम् । ददर्श राक्षसेन्द्रस्य वालिपुत्रः प्रतापवान् ॥९१॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|--------------|--------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | इव | போல் |
| प्रतापवान् | பிரதாபகாரியாகிய | उन्नतं | உயர்மான |
| वालिपुत्रः | அங்கதன் | प्रासादशिखरं | கூண்டினைபின் சிகரத்தை |
| राक्षसेन्द्रस्य | அரக்கர்மன்னனது | ददर्श | பார்த்தான். |
| शैलशृङ्गं | மலைச்சிகரத்தை | | |

तत्पफाल पदाक्रान्तं दशमीवस्य पश्यतः । पुरा हिमवतः शृङ्गं वज्रिणेव विदारितम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|---------------------------------|
| तत् | அது | शृङ्गं इव | சிகரம்போலவே |
| पदाक्रान्तं | காலால் உதைக்கப் | दशमीवस्य | தசமீவன் |
| पुरा | முன்பு [பட்டு | पश्यतः | பார்த்துக்கொண்டிருக்கும்பொழுது |
| वज्रिणा | இந்திரனால் | पफाल | சக்கலாய் வெடித்து விழுந்தது. |
| विदारितं | பிளக்கப்பட்ட | | |
| हिमवतः | ஹிமவாசியின் | | |

भङ्क्त्वा प्रासादशिखरं नाम विश्राव्य चात्मनः । विनय सुमहानादमुत्पपात विहायसम् ॥

பாசாடசிஹரம்
 அரண்மனையின்
 சிகரத்தை
 மஹுவா
 பொடிபாக்கித்தன் றி
 விட்டு
 ஶாஶ்ந:
 தனது
 நாம
 பெயரை

விஷ்நவ்
 விஷ்நவ்
 சும்ஹானா
 வினய வ
 விஹாயத்
 உபபாத
 விம்சலமாய் எல்லோ
 ரும் கேட்டுமவண்
 ணம் கூறிவிட்டு
 பொந்தோடிக்கைத
 ிட்டுக்கொண்டும்
 ஆகாசத்தில்
 கிளம்பினான்.

व्यथयन्ब्राह्मसान्सर्वान्हर्षयंश्चापि वानरान् । स वानराणां मध्ये तु रामपार्श्वसुपागतः ॥

ஸ:
 அலன்
 ராஶ்ஸாந்
 அரக்கர்கள்
 சவாந்
 எல்லோரையும்
 வ்யதயந் வ
 மனக்கலங்கச்செய்து
 கொண்டும்
 வானரான்
 வானரர்களை

ஶவ்யந் அவி
 களிப்புறச்செய்துக்
 கொண்டும்
 வானரா
 ஶம்யே
 நடுவில்
 ராமபா
 ஶ்ஶு
 ஶ்ரீராமரது பக்கவி
 ஶேயே
 உபபாத:
 வந்து இறங்கினான்.

रावणस्तु परं चक्रे क्रोधं प्रासादधर्षणात् । विनाशं चात्मनः पश्यन्निश्वासपरमोऽभवन् ॥

ராஶ்ண:
 ராவணனும்
 பாசாடதர்ஷணா
 சிகரம் இடிக்கப்
 பட்டதால்
 பரம் க்ரோ
 ஶம்
 அளவகடத்த சினக்
 க்ரே
 கொண்டான். [தை
 வ
 ஆயினும்
 ஶாஶ்ந:
 தனது

வினா
 ஶம்
 பश्यन्
 நிஷா
 ஶபரம:
 அமவந்
 நாசத்தை
 எதிர்பார்க்கின்றவ
 னாய்
 நீண்ட பெருமூச்சு
 விடுகிறவனாக
 ஆயினான்.

रामस्तु बहुभिर्हृष्टैर्निनदद्भिः प्लवङ्गमैः । वृत्तो रिपुवधाकाङ्क्षी युद्धार्थवाभ्यवर्तत ॥ ९७ ॥

ராம:
 ஶ்ரீராமரோ
 ஶ்ரீ:
 உன் றம்பூரித்து
 நினத
 ஶி:
 கொலையிடும்
 பஹு
 ப்லவ
 ஶ்ரீ:
 வானரர்களால்

ஶு:
 ரிபுவ
 வாத்
 யு
 ஶ
 குழப்பப்பட்டவராய்
 சத்துருவின் வதை
 ஶய விச்சயித்தவராய்
 புத்தத்திற்கே
 முன் நோக்கிச்சென்
 னான்.

सुषेगस्तु महावीर्यो गिरिकूटोपमो हरिः । बहुभिः संवृणस्तत्र वानरैः कामरूपिभिः ॥ ९८ ॥

சு
 ஶே
 ஶ:
 மஹா
 விரிகூ
 ஶம:
 மலையின் சிகரத்தை
 ஶரி:
 கழிவகர்ணமுடைய
 வனும்,
 ஶு
 ஶ்
 பிறரால் வெல்லமுடி
 யாதவனுமான

சு
 ஶே
 ஶ:
 காம
 ஶ
 வ
 வான
 ஶ
 சுவேணனென்ற
 வானரன்
 அப்பொழுது
 நினைத்த உருவமெ
 பல் [டுக்கவல்ல
 வானரர்களால்
 குழப்பப்பட்டவனாய்

| | |
|--|--|
| सुभीदवचनात् | சுபீதவனது ஆபீகினை சிறி |
| अनुद्वांगणि | நான்கு வாயில்கள் |
| सर्वाणि तु | எல்லாவற்றையும் |
| तेषामशौहिणिशतं समवेक्ष्य वनौकसाम् । | |
| राक्षसा विस्मयं जग्मुस्त्रासं जग्मुस्तथाऽपरे । | |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் |
| लङ्कां | இலங்கையை |
| उपनिविष्टानां | கிட்புபிழுக்கிறவர்க |
| सागरं | சமுத்திரத்தை [ஈழம்] |
| अभिवर्ततां च | எதிர்ப்பார்க்கிறவர்க |
| तेषां | அந்த [ஈழரை] |
| वनौकसां | வனவார்களின் |
| अशौहिणशतं | { அகௌகிணிக்ஞன் எ ஷௌகரின் அ கௌகத்தை |

| | |
|---|----------------------------------|
| चन्द्रमाः | சந்திரன் |
| नक्षत्राणि | நக்சத், திரங்களை |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| पर्यकामत | கந்தித்திரிந்தான். |
| लङ्कामुपनिविष्टानां सागरं चाभिवर्तताम् ॥ | |
| अपरे समराद्दर्पाद्दर्पमेव प्रपेदिरे ॥ १०१ ॥ | |
| समवेक्ष्य | பார்ந்து |
| विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| जग्मुः | அடைந்தார்கள். |
| तथा अपरं | அப்படியே சினர் |
| क्षालं | நடுக்கத்தை |
| जग्मुः | அடைந்தார்கள். |
| अपरे | பிறகு சினர் |
| समोद्दर्पात् | மேலிலுள்ள மணக்கி சார்க்கியால் |
| हयं एव | களிப்பையே |
| प्रपेदिरे | அடைந்தார்கள். |

कृत्स्नं हि कर्पिभिवर्षाम् प्राकारपरिखान्तरम् ।

| | |
|-------------------|--|
| वीनाः | மலையக்கங்கொண்ட |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் |
| प्राकारपरिखान्तरं | மதிற்கவருக்கும் அக ழுக்கும் இடைவெளி |
| कुन्धं | எல்லாவற்றையும் |

हाहाकारं प्रकुर्वन्ति राक्षसा भयमोहिताः

| | |
|-----------|--------------------|
| भयमोहिताः | பயந்தால் மெய்மதந்த |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் |

तस्मिन्महाभीषणके प्रवृत्ते कोलाहले राक्षसराजधान्याम् ।

प्रगृह्य रक्षसि महायुधानि युगान्तवाता इव संविचेरुः

॥ १०४ ॥

| | |
|------------------|--------------------|
| राक्षसराजधान्यां | ராக்ஷசரரசூதாளிலில் |
| तस्मिन् | அந்த |
| महाभीषणके | அதிலங்கொண்ட |
| कोलाहले | கொல், ஹலமானது |
| प्रवृत्ते | தொன்றியபோது |
| रक्षसि | ஆரக்கர்கள் |
| महायुधानि | பெரும் ஆயுதங்களை |

ददशू राक्षसा दीनाः प्राकारं वानरीकृतम् ॥

| | |
|-------------|--------------------------|
| कर्पिभिः | வானர்களால் |
| व्यासं | நிரம்பியிருப்பதால் |
| वानरीकृतं | வானர்களால்செய்த செய்த |
| प्राकारे हि | மதிற்கவருவெ |
| ददशुः | எண்ணூர்கள். |

॥ १०३ ॥

| | |
|--------------|----------------------|
| हाहाकारं | ஹாஹா எனும் கூக் |
| प्रकुर्वन्ति | சூட்டார்கள். [குரலை] |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकचत्वारिंशः सर्गः ॥

द्विचत्वारिंशः सर्गः—கார்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். || 14 ||

युद्धारंभः—போர் தொடங்கல்.

ततस्ते राक्षसास्तत्र गत्वा रावणमन्दिरम् । न्यवेदयन्पुरीं रुद्रां रामेण सह वानरैः ॥१॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|-----------------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | पुरीं | நகரை |
| ततः | அங்கிடத்தின் | वानरैः सह | வானர்களோடுகூட |
| ते | அந்த | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | रुद्रां | முற்றுக்காவிடப் பட்டதாய் |
| रावणमन्दिरं | ராவணன் து | न्यवेदयन् | நெரிவித்தார்கள். |
| गत्वा | சென்று [மாளிகைக்கு | | |

रुद्रां तु नगरीं श्रुत्वा जातक्रोधो निशाचरः । विधानं द्विगुणं कृत्वा प्रासादं सोऽध्यरोहता ।

| | | | |
|-------------|-----------------------------|-----------|----------------------|
| सः | அந்த | जातक्रोधः | சினம் மூண்டவனாய் |
| निशाचरः | அரக்கன் (ராவணன்) | विधानं | பாதுகாப்பின் அமைப்பு |
| नगरीं | நகரை | द्विगुणं | இருமடக்காய் [பை |
| रुद्रां | முற்றுக்காவிடப் பட்டதாய் | कृत्वा | செய்துகிட்டு |
| | | प्रासादं | உட்பரிகை மீது |
| श्रुत्वा तु | கேட்டதுமே | अधरोहत | ஏறி நின்றான். |

स ददर्शाहतां लङ्कां सशैलवनकाननाम् । असंख्यैर्हरिगणैः सर्वतो युद्धकाङ्क्षिभिः ॥३॥

| | | | |
|-------------------|-------------------------------------|------------------|-----------------|
| सः | அவன் | युद्धकाङ्क्षिभिः | போரை கிரும்பும் |
| सशैलवन- काननां | மலைகளும் காடுகளும் சேலைகளும் உள் | असंख्यैः | அளவிடமுடியாத |
| लङ्कां | இலங்கையை [ஸிட்ட | हरिगणैः | வானரகணக்களால் |
| सर्वतो | எங்கும் | आवृतां | முடப்பட்டதாக |
| | | दरशी | கண்ணுற்றான். |

स दृष्ट्वा वानरैः सर्वां वसुधां कवलीकृताम् । कथं क्षपयितव्याः स्युरिति चिन्तापरोऽभवत् ॥

| | | | |
|-----------|---|--------------------|---|
| सः | அவன் | वृष्ट्वा | கவலித்து |
| वसुधां | பூமி | कथं | எவ்வாறு |
| सर्वां | எங்கும் | क्षपयितव्याः स्युः | இவர்கள் கொல்லப்பட பட்டவர்களாவார்கள் |
| वानरैः | வானர்களால் | इति | என்று |
| कवलीकृतां | { இடைவெளியின்றி பறைக்கப்பட்டிருப் பதாய் | चिन्तापरः | நினைத்து ஏக்கப்படுத்தி ஆயினான். [நவனாக |
| | | अभवत् | |

स चिन्तयित्वा सुचिरं धैर्यमान्म्य रावणः । राघवं हरियुथांश्च ददर्शायतलोचनः ॥५॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| सः रावणः | அந்த ராவணன் | राघवं | ஸ்ரீராமரையும் |
| सुचिरं | வெகுநேரம் | हरियुथान् च | வானரச்சேனைகளையும் |
| चिन्तयित्वा | கவலையில் முழுசு | अयतलोचनः | கண்களை மலங்க விழி த்துக்கொண்டு |
| धैर्यं आत्मन्य | ஞானமுடையவாய் இத்திக்கொண்டு | ददर्श | பார்த்தான். |

राघवः सह सैन्येन मुदितो नाम पुत्रुवे

॥ ६ ॥

राघवः ஸ்ரீராமர்
 सैन्येन சேனையோடு
 सह கூட

नाम சர்வப்பிரகாரத்தா
 ளும்
 सुविनः உன்னம்பூரித்தவராகி
 पुत्रुवे குறித்தார்.

लङ्कां ददर्श गुप्तां वै सर्वतो राक्षसैर्युताम्

॥ ७ ॥

लङ्कां இலங்கையை
 सर्वतो वै எங்கும்
 राक्षसैः ராட்சஸர்களால்

युतां நிரம்பியதாயும்
 गुप्तां பாதுகாக்கப்பட்ட
 ददर्श கவனித்தார். [தாயும்

दृष्ट्वा दाशरथिर्लङ्कां चित्रध्वजपताकिनीम् । जगाम सहसा सीतां द्यमानेन चेतसा ॥८॥

दाशरथः ஸ்ரீராமர்
 चित्रध्वज- } கொடிசொடங்கும் சிசா
 पताकिनी } ன்கொடங்கும் கிணங்
 लङ्कां இலங்கையை [கும்
 दृष्ट्वा பார்த்து
 सहसा தகவலமே

द्यमानेन படைத்துக்கொண்ட
 குக்கும்
 चेतसा உள்ளத்தோடு
 सीतां சீதா தேவியாரை
 जगाम பின்வருமாறு சிந்திக்க
 ளானார் :

अत्र सा मृगशावाक्षी मरुकुते जनकात्मजा । पीड्यते शोकसन्तप्ता कुशा स्थण्डिलशायिनी ॥

अत्र "இங்கே
 मृगशावाक्षी மால்விழியாளைய
 सा அந்த
 जनकात्मजा ஜானகி
 मरुकुते என்னியித்தமாக

शोकसन्तप्ता சோகத்தால் தடுத்த
 कुशा மெய்காடி
 स्थण्डिलशायिनी தரையிற்படுத்திக்
 கிடக்கிறவளாய்
 पीड्यते தன்புறுகிறது "

पीड्यमानां स धर्मात्मा वैदेहीमनुचिन्तयन् । क्षिप्रमाज्ञापयामास वानरान्द्विषतां वधे ॥१०॥

धर्मात्मा தர்மம் தமவாகும்
 सः அவர்
 वैदेहीं ஜாவகிணய
 पीड्यमानां தன்ப்ப்பட்டுக்கொ
 ண்டிருப்பவளாய்

द्विषतां கிணாயில்
 वधे சத்துருக்களை
 வதைக்கும்விஷயத்
 தில்
 वानरान् வானர்களை
 आज्ञापयामास கட்டளைபிட்டார்.

एवमुक्ते तु वचने रामेणाह्लिष्टकर्मणा । सङ्घर्षमाणाः प्लवगाः सिंहनादैरनादयन् ॥ ११ ॥

अह्लिष्टकर्मणा சிதைதையை எப்பொழு
 தும் சிதைக்கிடாத
 रामेण ஸ்ரீராமரால்
 एवं மேற்கண்டவாறு
 वचने ஆக்கினை
 उक्ते तु விடுகப்பட்டதும்
 प्लवगाः பிள்ளைகள்

सङ्घर्षमाणाः { சான் முன்னே சான்
 முன்னே என்ன
 போட்டியிடுகின்ற
 வர்களாய்
 सिंहनादैः சிக்கராதங்களால்
 अनादयन् எதிரேசொலிபட்
 செய்தார்கள்.

शिवरैर्विकिरामैनां लङ्कां मुष्टिभिरेव वा । इति स्य दधिरे सर्वे मनांसि हरियूथपाः ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------------|-----------------|
| हरियूथपाः | வானரகேணத் தலைவர்கள் | मुष्टिः एव वा | முஷ்டிகளையேயாவ |
| सर्वे | எல்லோரும் [கன் | विकिराम | பொடிபொடியாய்த் |
| एतां | இந்த | | செய்தவிடுவேம்' |
| लङ्कां | இலங்கையை | इति | என்று |
| शिवरैः | மலைச்சிகரங்களின்க | मनांसि इधिरे स्य | மனவுறதிகொண்டார் |
| | கொண்டோ | | கள். |

उद्यम्य गिरिमृङ्गाणि शिखराणि महान्ति च । तस्योत्पाद्य विविधांस्त्यष्टन्ति हरियूथपाः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|-----------------------|
| उद्यम्य | வாணரகேணத் | विधिधानि | படி |
| गिरिमृङ्गाणि | தலைவர்கள் | तस्य च | விருக்தங்களையும் |
| शिखराणि च | பர்வதங்களின் சிகரங் | उत्पाद्य | விருடண் பிடுங்கி |
| | களையும் | उद्यम्य | கையிலெடுத்தி |
| महान्ति | பெரிய | | கொண்டு |
| शिखराणि च | பாறைகளையும் | तिष्ठन्ति | சித்தமாக நின்றுர்கள். |

प्रेक्षतो राक्षसेन्द्रस्य तान्यनीकानि भागशः । राघवप्रियकामार्थं लङ्कामारूढस्तदा ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|-------------|------------------|
| प्रेक्षतो | ஆப்பொழுது | राघवप्रिय-} | ஸ்ரீராமருடைய |
| राक्षसेन्द्रस्य | கந்த | कामार्थं } | இஷ்ட |
| तान्यनीकानि | சேனைகள் | | மானிய மனோரத்த |
| भागशः | சீரிக்கப்பட்டவண் | | தைச்செய்யக்கருதி |
| | ணமே | लङ्कां | இலங்கையில் |
| राक्षसेन्द्रस्य | ராட்சஸமன்னன் | आरूढः | தாவினார்கள். |

ते ताम्रवक्त्रा हेमाभा रामार्थं त्यक्तजीविताः । लङ्कामेषाभ्यवर्तन्त सालतालशिन्यायुधाः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|-------------------|
| ताम्रवक्त्राः | சிலந்த முகமுடைய | सालताल-} | ஆச்சி. பனை, கற்பா |
| हेमाभाः | வர்களுக்கும், | शिन्यायुधाः} | தை இலைவகையிய |
| ते | தங்கதிறமுடையவாக | | ஆயுதமாய் உடைய |
| रामार्थं | அவர்கள் [ராமரண | | வர்களாய் |
| | ஸ்ரீராமருடைய | लङ्कां | இலங்கையை |
| त्यक्तजीविताः | கைக்கர்பத்திற் | एव | கொக்கிரவண்ணமே |
| | உலிளையும். பொருட்ப | अभ्यवर्तन्त | சென்றுர்கள். |
| | டுத்தாதவர்களாய் | | |

ते द्रुपैः पर्वताग्रैश्च मुष्टिभिश्च पुवङ्गपाः । प्राकाराद्याण्यरण्यानि पमन्धुस्तोरणानि च ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|--------------|-------------------|
| ते | அந்த | मुष्टिभिः च | முஷ்டிகளாலும், |
| पुवङ्गपाः | வானரர்கள் | प्राकाराणानि | நிலவாண்களின் சிகர |
| द्रुपैः | விருக்தங்களாலும், | | ங்களையும், |
| पर्वताग्रैः च | பர்வதங்களின் சிகரங் | अरण्यानि | காட்டரண்களையும், |
| | களாலும், | स्तोरणानि च | வெளிவாடிகளையும், |
| | | पमन्धुः | உருவழித்தார்கள். |

परिखाः पूर्यन्ति स्म प्रसन्नसलिलायुताः । पांसुभिः पर्वताथैश्च तृणैः काष्ठैश्च वानराः ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------|---------------|----------------------|
| वानराः | வானரர்கள் | पर्वताथैः च | பர்வதாதிசைக்களராலும் |
| प्रसन्नसलिलायुताः | தெளிந்த நீர் கிரம்பிய | तृणैः | புற்பூண்டுகளாலும், |
| परिखाः | நிரரண்களை | काष्ठैः | கட்டைகளாலும் |
| पांसुभिः | மண்கட்டிகளாலும், | पूर्यन्ति स्म | தூர்த்தார்கள். |

ततः सहस्रपुयाश्च कोटियुथाश्च वानराः । कोटीशतयुताधान्ये लङ्कामारुरुहस्तदा ॥१८॥

| | | | |
|------------|---------------|---------------|-----------------|
| ततः | அதன்மேல் | कोटियुथाः च | கோடிக்கணக்கான |
| सश | அப்பொழுது | | சேனைகளாகவும் |
| अमो | மற்றுமுள்ள | कोटीशतयुथाः च | நூறுகோடிகளையு |
| वानराः च | வானரர்களும் | | கடியவர்களாகவும் |
| सहस्रपुथाः | ஆயிரக்கணக்கான | लङ्का | இலங்கையினுள் |
| | சேனைகளாகவும் | आरुरुहः | புகுந்தார்கள். |

काञ्चनानि प्रमृदन्तस्तोरणानि पुवङ्गमाः । कैलासनिखराभाणि गोपुराणि प्रमथ्य च ॥

आपुवन्तः पुवन्तश्च गर्जन्तश्च पुवङ्गमाः । लङ्कां तामभिधावन्ति महावारणसन्निभाः ॥२०॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|----------------------|
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | पुवङ्गमाः | வானரர்கள் |
| काञ्चनानि | பொன்னுண்ட | गर्जन्तः च | அட்டகாசம் செய்து |
| स्तोरणानि | வெளிவாயில்களை | | கொண்டே |
| प्रमृदन्तः | பொடியாக்கிக்கொண்டு | आपुवन्तः | ஒரேபூச்சில் தாவிக்கு |
| | | | திக்கின்றவர்களாகவும் |
| कैलासनिखरा-} | கயிலைமலைமீன் சிகரக் | पुवन्तः च | பறந்துசெல்லிறவர் |
| भाणि | களை நிகர்த்த | | களாகவும் |
| गोपुराणि | கோபுரங்களை | त् | அந்த |
| प्रमथ्य च | உருவழித்துக்கொண்டு | लङ्कां | இலங்கையை இடவி |
| | | | டாது |
| महावारण-} | மகாயான்களை | अभिधावन्ति | தன்புதுத்திக்கொண்ட |
| सन्निभाः | யொத்த | | புகுந்தார்கள். |

जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः । राजा जयति सुधीवो राघवेणाभिपालितः ॥

इत्येवं घोषयन्तश्च गर्जन्तश्च पुवङ्गमाः । अभ्यधावन्त लङ्कायाः प्राकारं कामरूपिणः ॥२२॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-------------|----------------------|
| कामरूपिणः | கிளைத்த உருவமெடுக் | राघवेण | ஸ்ரீராமால் |
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | अभिपालितः | பாதுகாக்கப்பட்ட |
| अतिबलः | மிகப்பலம்பொருந்திய | सुधीवः राजा | சுமீவ மன்னர் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अपति | செந்திபெற்று கிளைக் |
| जयति | வெந்திபெற்று விளங்கி | एति एव | இங்கடியாம் குகினார். |
| | குகினார். | वोषयन्तः च | புகுந்துகொண்டும் |
| महाबलः | மகாபலம் படைத்த | गर्जन्तः च | பெரும்புகலிட்டிக் |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணரும் | | கொண்டும் |
| च | அப்படியே விளங்கு | लङ्कायाः | இலங்கையின் |
| | கினார். | प्राकारं | மதில்சுவரை |
| | | अभ्यधावन्त | தாக்கினார்கள். |

वीरबाहुः सुबाहुश्च नलथ वनगोचरः । निपीड्योपनिविष्टास्ते प्राकारं हरियूथपाः ॥
एतस्मिन्नन्तरे चक्रुः स्कन्धावारनिवेशनम् ॥ २३ ॥

ते
हरियूथपाः
वीरबाहुः
सुबाहुः च
वनगोचरः
नलः च

ஆந்த
வானர்களைத்தலைவர்
களாகிய
விரபாகுவும்
சுபாகுவும்
வனத்தில்கள்கரிக்கும்
நளனும்

प्राकारं
निपीड्य
उपनिविष्टाः
एतस्मिन् अन्तरे
स्कन्धावारनिवेशनं
चक्रुः

மதில்களரை
இடித்துத்தள்ளி
உப்புசூந்தவர்களாய்
ஆந்த இடைவெளியில்
படைபின் ஓர் வகுப்பு
க்குத்தக்குபிடத்தை
செய்தார்கள்.

पूर्वद्वारं तु कुमुदः कोटिभिर्दशभिर्वृतः । आवृत्य बलवांस्तस्थौ हरिभिर्जितकाशिभिः ॥

बलवान्
कुमुदः तु
जितकाशिभिः
दशभिः कोटिभिः

பலசாலியாகிய
குமுதனுவெனில்
வெற்றிக்கொண்டு எப்
பொழுதும் விளக்கு
கிறவர்களான
பத்து கோடி

हरिभिः
वृतः
पूर्वद्वारं
आवृत्य
तस्थौ

வானர்களால்
சூழப்பட்டவனாய்
கிழக்குவாய்க்கை
தகைந்துக்கொண்டு
நின்றான்.

साहाय्यार्थं तु तस्यैव निविष्टः प्रघसो हरिः । पनसश्च महाबाहुर्वानरैर्बहुभिर्वृतः ॥ २५ ॥

प्रघसः
हरिः
तस्य एव
साहाय्यार्थं
निविष्टः
महाबाहुः

பிரகஸனென்ற
வானன்
அவனுக்கே
உதவியெய்வவேண்டி
கூடவிருந்தான்.
மகாபாகுவாகிய

पनसः तु
बहुभिः
वानरैः
वृतः
च

பனஸனும்
பல
வானர்களால்
சூழப்பட்டவனாய்
அப்படியே அவனுக்
குக்கூடவிருந்தான்.

दक्षिणं द्वारमागम्य वीरः शतबलिः कपिः । आवृत्य बलवांस्तस्थौ विशल्या कोटिभिर्वृतः ॥

बलवान्
वीरः
शतबलिः
कपिः
विशल्या कोटिभिः

பலசாலியும்
விரனுமான
தசபலி என்ற
வானன்
இருபது கோடி களால்

वृतः
दक्षिणं द्वारं
आगम्य
आवृत्य
तस्थौ

சூழப்பட்டவனாய்
தெற்குவாய்க்கை
கிட்டி
தகைந்து
நின்றான்.

सुषेणः पश्चिमद्वारं गतस्तारापिता हरिः । आवृत्य बलवांस्तस्थौ पश्चिकोटिभिरावृतः ॥

सुषेणः
हरिः
पश्चिकोटिभिः

பலசாலியும்
தாராயின் தந்தையு
மான்
ஸுஷேணனென்ற
வானன்
அறுபதுகோடி களால்

आवृत्य
पश्चिमद्वारं
गतः
आवृत्य
तस्थौ

சூழப்பட்டவனாய்
மேற்குவாய்க்கை
அடைந்து
தகைந்துக்கொண்டு
நின்றான்.

उत्तरं द्वारमासाद्य रामः सौमित्रिणा सह । आवृत्य वलवांस्तस्थौ सुर्यीवथ हरीश्वरः ॥

| | | | |
|---------------|----------------|----------|-------------------|
| வலவான் | பலகாலியாகிய | आवृत्य | தகைகந்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तस्थौ | நின்றார். |
| सौमित्रिणा सह | சக்திமணலோடுகூட | हरीश्वरः | வானரமன்னனாகிய |
| उत्तरं | வடக்கு | सुर्यावः | சகீர்வனும் |
| द्वारं | வாசிலை | य | அப்படியே தகைகந்து |
| आसाद्य | அடைந்து | | நின்றான். |

गोलाङ्गुलो महाकायो गवाक्षो भीमदर्शनः । वृतः कोट्या महावीर्यस्तस्थौ रामस्य पार्षतः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|---------|----------------|
| महावीर्यः | மகாவீர்யவாளும் | गवाक्षः | கவாக்ஷன் |
| गोलाङ्गुलः | கொண்டைமுசுரினத் தனும் | कोट्या | கோடியால் |
| भीमदर्शनः | பார்க்கப்பயங்கரமான | वृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| महाकायः | பெருமுடல் படைக்க ப்பெற்றவனுமான | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| | | पार्षतः | பக்கலில் |
| | | तस्थौ | நின்றான். |

कक्षाणां भीमवेगानां धूम्रः शत्रुनिवर्हणः । वृतः कोट्या महावीर्यस्तस्थौ रामस्य पार्षतः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|----------|-----------------|
| शत्रुनिवर्हणः | பகைவரை அழிக்க வல்ல | कक्षाणां | காடி களுடைய |
| महावीर्यः | மகாவீர்யவாளான | कोट्या | கோடியால் |
| धूम्रः | தூமிரன் | वृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| भीमवेगानां | அளவுகடந்த ஆற்ற லுடைய | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| | | पार्षतः | மற்றொருபக்கலில் |
| | | तस्थौ | நின்றான். |

सन्नद्धस्तु महावीर्यो गदापाणिर्विभीषणः । वृतो यत्तैस्तु सचिवैस्तस्थौ तत्र महाबलः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|-----------|-----------------------------|
| सन्नद्धः | அவ்விடத்திலேயே | सन्नद्धः | சன்னத்தனும் |
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடைய வரும் | यत्तैः | சன்னத்தர்களையிருக் கின்ற |
| महावीर्यः तु | மகா ஆண்மையுடைய | सचिवैः तु | மந்திரிகளாகையேயும் |
| विभीषणः | விபிஷணன் [வருமான | वृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| गदापाणिः | கதாயுதத்தைக் கைகா லேத்திக்கொண்டு | तस्थौ | நின்றான். |

गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः । समन्तात्परिधावन्तो ररक्षुर्हरिवाहिनीम् ॥३२॥

| | | | |
|-----------|----------------|------------|-----------------------------|
| गजः | கஜனும், | समन्तात् | எங்கும் |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனும், | परिधावन्तः | பறந்து ஓடுகின்றவர் களாய் |
| गवयः | கவயனும், | हरिवाहिनीं | வானரச்சேனையை |
| शरभः | சரபனும், | ररक्षुः | ரகழித்தார்கள். |
| गन्धमादनः | கந்தாமாதனனும், | | |

ततः कोपपरीतात्वा रावणो राक्षसेश्वरः । निर्याणं सर्वसैन्यानां द्रुतमाज्ञापयत्तदा ॥३३॥

तदा: अप्‌பொழுது
 ततः: அதனால்
 कोपपरीतात्वा: கோபந்தலைக்கேற்றி
 राक्षसेश्वरः: ராக்ஷஸன் னானடிய

रावणः: ராவணன்
 द्रुं: சீக்கிரமே
 सर्वसैन्यानां: எல்லாச் சேனைகளின்
 निर्याणं: போருக்குப்புறப்படு
 भाज्ञापयत्: கட்டினயிட்டான்.

एतच्छ्रुत्वा ततो वाक्यं रावणस्य मुखोद्गतम् । सहसा भीमनिर्वोषमुद्दृष्टं रजनीचरैः ॥३४॥

रावणस्य: ராவண னுடைய
 मुखोद्गतं: வாயினிருந்துவந்த
 एतत्: இத்த
 वाक्यं: சொல்லைக் கேட்டு,
 ततः: அதன்மேல்

रजनीचरैः: அரசுக்கர்களால்
 सहसा: ஏககாலத்தில்
 भीमनिर्वोषं: பயங்கரமான சிம்ம
 उद्दृष्टम्: இடப்பட்டது.

ततः प्रचोदिता भैर्यश्चन्द्रपाण्डुरपुष्कराः । हेमकोणाहता भीमा राक्षसानां समन्ततः ॥३५॥

ततः: அப்பொழுது
 राक्षसानां: அரசுக்கர்களுடைய
 भैर्यः: பேரிவாதியங்கள்
 चन्द्रपाण्डुर- }
 पुष्करा: } சந்திரன் போல வெளு
 த்த தோல்முக்கங்களை
 புடையவைகளால்

भीमा: பயங்கரமாய்
 समन्ततः: நாற்புறமும்
 हेमकोणाहता: பொற்கோல்களால் அ
 டிக்கப்பட்டவைகளால்
 प्रचोदिता: அறிக்கைசெய்தன.

विनेदुश्च महाघोषाः शङ्खाः शतसहस्रशः । राक्षसानां सुघोराणां मुखमारुतपूरिताः ॥३६॥

शङ्खाः: சங்குகள்
 शतसहस्रशः: நூறுபிரக்கணக்காய்
 सुघोराणां: மிகக்கொடிய
 राक्षसानां: அரசுக்கர்களுடைய

मुखमारुतपूरिताः: வாய்க்காற்றினால் நிர
 ப்பப்பட்டவைகளால்
 महाघोषा: च: மிகதேரவும் செய்கின்
 றவைகளையும்
 विनेदुः: ஒலித்தன.

ते वभुः शुभनीलाङ्गाः सशङ्खा रजनीचराः । विष्णुमण्डलसन्नद्धाः सवलाका इषाम्बुदाः ॥

ते: அந்த
 शुभनीलाङ्गाः: அழகிய கறுத்த மோனி
 களை புடையவர்களும்
 सशङ्खा: சங்கங்களுடனிருந்த
 वरकणुमण
 रजनीचरा: அரசுக்கர்கள்

विष्णुमण्डलसन्नद्धाः: பின்னல்கொடுக்களை
 டு சேர்ந்த
 सवलाका: கொக்குகளுடனிருந்த
 इषाम्बुदा: கார்பீடங்கள்கள்
 इव: போலவே
 वभुः: விளக்கினார்கள்.

निष्पतन्ति ततः सैन्या हृष्टा रावणचोदिताः । समये पूर्यमाणस्य वेगा इव महोदधेः ॥

ततः: அப்பொழுது
 सैन्या: சேனைகள்
 रावणचोदिता: ராவணனால் கட்டின
 யிடப்பட்டவைகளால்
 हृष्टा: களிப்புற்றவைகளால்

पूर्यमाणस्य: பொக்கும்
 महोदधे: கடலின்
 वेगा: इव: அலைகள் போலவே
 समये: ஏற்ற சமயத்தில்
 निष्पतन्ति: இளம்பின.

ततो वानरसैन्येन मुक्तो नादः समन्ततः । मलयः पूरितो येन ससानुप्रस्थकन्दरः ॥३९॥

| | | | |
|-------------|----------------|-------------|---------------------|
| ततः | அப்பிபாழுடை | येन | அந்த அந்நால் |
| वानरसैन्येन | வானரசேனையால் | सानुप्रस्थ- | } வனக்களையும், தரழ் |
| समन्ततः | எங்கும் | कन्दरः | |
| नादः | பெரும் ஆரவாரம் | मलयः | களையுமுள்ளிட்ட |
| मुक्तः | இடப்பட்டது. | पूरितः | திரிகுடபர்வதமரணது |
| | | | சிறைந்துவிட்டது. |

शङ्खदुन्दुभिसंघुष्टः सिंहनादस्तरस्विनाम् । पृथिवीं चान्तरिक्षं च सागरं चाभ्यनादयत् ॥
गजानां बृंहिनैः सार्धं हयानां हेपितैरपि । रथानां नेमिघोषैश्च रक्षसां पादानिस्वनैः ॥४१॥

| | | | |
|---------------------------|--|--------------|------------------------------|
| तरस्विनां | மிக ஆற்றலுடைய | रथानां | ரதக்களுடைய |
| रक्षसां | அரக்கர்களுடைய | नेमिघोषैः च | சக்கிரங்களினோடும் |
| शङ्खदुन्दुभि- संघुष्टः | } சங்கம், துந்தாழி இ கைகளின் பேரொலி | पादानिस्वनैः | காஷ்டவைப்புகளின் |
| | | | சத்தக்களோடும் |
| सिंहनादः | சிக்கரதமரணது | साधं | சூட |
| गजानां | யானைகளுடைய | पृथिवीं च | பூமியையும், |
| बृंहिनैः | வீறிடுதல்களோடும் | अन्तरिक्षं च | ஆகாசத்தையும், |
| हयानां | குதிரைகளின் | सागरं च | சமுத்திரத்தையும் |
| हेपितैः अपि | களைப்புகளோடும் | अभ्यनादयत् | எதிரொலி ஒலிக்கச் செய்தது. |

एतस्मिन्नन्तरे घोराः संश्रामः समपद्यत । रक्षसां वानराणां च यथा देवासुरे पुरा ॥४२॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|----------|-----------------|
| एतस्मिन् भन्तरे | இதேசமயத்தில் | देवासुरे | தேவர்களுக்கும் |
| रक्षसां | அரக்கர்களுக்கும், | यथा | அசுரர்களுக்கும் |
| वानराणां च | வானரர்களுக்கும் | घोराः | எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| पुरा | முற்காலத்தில் | संश्रामः | பயங்கரமான |
| | | समपद्यत | போர் |
| | | | செய்தது. |

ते गदाभिः प्रदीप्ताभिः शक्तिशूलपरश्वधैः । निजघ्नान्नरान्वोराः कथयन्तः स्वविक्रमान् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------------|---|
| घोराः | கொடியவர்களைய | प्रदीप्ताभिः | யளபளவென்றிருக் |
| ते | அவர்கள் | गदाभिः | கதைகளாலும் [கிற |
| स्वविक्रमान् | தங்களது பரக்கிரம | शक्तिशूलपरश्वधैः | } சக்திகளாலும் குலக் களாலும் கொடாவி களாலும் |
| | க்களை | | |
| कथयन्तः | தற்புகழ்ச்சி செய்து | वानरान् | வானரர்களை |
| | கொண்டு | निघ्नन्तुः | புடைத்தார்கள். |

राजा जयति सुर्याव इति शब्दो महानभूत्

| | | |
|----------|---------------------|-------------|
| सुर्यावः | "சூரியர்" | ॥ ४४ ॥ |
| राजा | மன்னர் | इति |
| जयति | வெற்றிபெற்று விளங்க | महान् शब्दः |
| | குறிஞ்சர்" | अभूत् |

| | |
|-------------|----------------|
| इति | என்ற |
| महान् शब्दः | பெரும் சொல்லம் |
| अभूत् | உண்டாயிற்று. |

राजञ्जय जयत्युत्त्वा स्वस्वनामकथान्ततः । तथा वृक्षैर्महाकायाः पर्वतायैश्च वानराः ॥
निजघ्नस्तानि रक्षांसि नखैर्दन्तैश्च वेगिताः ॥ ४५ ॥

महाकायाः பெரும் உடல் படைக்
கப்பட்ட
வானரா: வானரர்கள்
स्वस्वनाम- }
कथान्ततः } अक्षரவர்கள் பெயர்க
} கதை கொல்லிய பின்னர்
राजन् 'ராஜாவே!
जय வெற்றிபெற்று கிளக்
குளிப்பாக!
जय வெற்றிபெற்று கிளக்
குளிப்பாக!
इति என்று

उपवा वरुத்தினிட்டு
वेगिता: ஆத்திரங்கொண்ட
வர்களாய்
वृक्षै: மரங்களாலும்,
पर्वतायै: च பரிகச்சிகரங்களாலும்,
नखै: तथा நகங்களாலும்,
दन्तै: च தந்தங்களாலும்,
तानि அந்த
रक्षांसि அரக்கர்களை
निजघ्न: புடைத்தார்கள்.

राक्षसास्त्वपरे भीमाः प्राकारस्था महीगतान् । भिण्डिपालैश्च खड्गैश्च शूलैश्च व्यदारयन् ॥

अपरे सिल
प्राकारस्था: பிராகாரத்தில் நின்ற
भीमा: கொடியவர்களான
राक्षसाः सु अரக்கர்களும்
महीगतान् சூழியில் நின்றவர்களை

भिण्डिपालै: च பிண்டிபாலமென்ற ஓர்
வகை கதைகனாலும்
खड्गै: च கத்திகளாலும்
शूलै: च एव சூலங்களாலும்
व्यदारयन् வெட்டித்தள்ளினார்
கள்.

वानराश्चापि संक्रुद्धाः प्राकारस्थान्महीगताः । राक्षसान्पातयामासुः समाप्तुत्य पुवङ्गमाः ॥

महीगता: சூழியிலிருந்தவர்களும்
पुवङ्गमा: பாய்ந்துசெல்ல வல்ல
வர்களான
வானரா: च வானரர்களும்
संक्रुद्धा: மிகச்சினக்கொண்ட
வர்களாய்

प्राकारस्थान् மதில்கவர்களில் நின்ற
राक्षसान् अपि அரக்கர்களையும்
समाप्तुत्य ஒரே பாய்ச்சலாய்
பாய்ந்து
पातयामासु: இழையிழுத்துத்
தள்ளினார்கள்.

स संहारस्तुमुलो मांसशोणितकर्दमः । रक्षां वानराणां च संवभूवाद्भुतोपमः ॥ ४८ ॥

रक्षां अரக்கர்களுடையவும்
वानराणां च வானரர்களுடையவும்
स: அந்த
संहार: போர்
तुमुल: உக்கிரமாகவும்

मांसशोणित- } மலம்சக்கனாலும் சக்
कर्दमः } தக்கரலும் சேருபி
} குக்கிறதாகவும்
अद्भुतोपमः சிகரந்ததாகவும்
संवभूव इரூந்தது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥

विचत्वारिंशः सर्गः—சாற்பத்தீழ்முன்றாவது ஸர்க்கம். || ४३ ||

इन्द्रयुद्धवर्णनम्—தவந்த்வயத்தத்தை வர்ணிப்பது.

युध्यतां तु ततस्तेषां वानराणां महात्मनाम् । रक्षसां संवभूवाथ वलकोपः सुदारुणः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | वानराणां तु | வானரர்களுக்கும் |
| युध्यतां | போர்செய்துகொண் டிருந்த | रक्षसां अथ | ஆரக்கர்களுக்கும் |
| तेषां | அந்த | सुदारुणः | மிக உக்கிரமான |
| महात्मनां | மஹாத்மாக்களாகிய | वलकोपः | பெருக்கோபமானது |
| | | संवभूव | உண்டாபிற்று. |

ते ह्यैः काञ्चनापीडैर्ध्वजैश्चाग्निशिखोपमैः । रथैश्चादित्यसङ्काशैः कवचैश्च मनोरथैः ॥ २ ॥

निर्ययू राक्षसव्याघ्रा नादयन्तो दिशो दश । राक्षसा भीमकमाणो रावणस्य जयैषिणः ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|--|
| भीमकमाणः | கொடிய செயலுடைய யவர்களுக்கும் | काञ्चनापीडैः | { பொன்னால் செய்யப் பட்ட குஞ்சலக்களை யணிக்த |
| राक्षसव्याघ्राः | ராக்கலோத்தயர் | ह्यैः | குதிரைகளின் பேரிலும் |
| ते | அந்த [களுமான | आदित्यसङ्काशैः | சூரியனை நிகர்த்த |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | रथैः च | ரதங்களின் பிதுமேறி க்கொண்டு |
| रावणस्य | ராவணனுக்கு | वश | பத்து |
| जयैषिणः | வெற்றியைப் பிரார்த திக்கின்றவர்களாய் | दिशः | திக்குகளையும் |
| मनोरथैः | அழகிய | नादयन्तः | பிரதிந்வனியொலிக்க செய்துகொண்டு |
| कवचैः च | கவசங்களோடும் | निर्घुः | வெளிக்கொம்பினூர் கள். |
| अग्निशिखोपमैः | { கொழுத்துவிட்டெரி யும் அக்னிணைப் போன்ற | | |
| ध्वजैः च | தலையுடையவோடும் | | |

वानराणामपि चमूर्च्छती जयमिच्छताम् । अभ्यधावत तां सेनां रक्षसां कामरुपिणाम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|----------|------------------|
| जय इच्छतां | வெற்றியைக் கோரும் | रक्षसां | ராக்கலவர்களின் |
| वानराणां | வானரர்களுடைய | तां | அந்த |
| मूर्च्छती | பெரும் | सेनां | சேனையை |
| चमूः अपि | சேனையும் | अभ्यधावत | எதிர்த்துபுடைத்த |
| कामरुपिणां | கிளைத்த உருவமொ டுக்கவல்ல | | |

एतस्मिन्नन्तरे तेषामन्योन्यमभिधावताम् । रक्षसां वानराणां च इन्द्रयुद्धमवर्तत ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|------------------|
| एतस्मिन् | “இந்த | अन्योन्यं | ஒருவரை ஒருவர் |
| अन्तरे | சமயத்தில் | अभिधावतां | தாக்கும்பொழுது |
| तेषां रक्षसां | அந்த ஆரக்கர்களும், | इन्द्रयुद्धं | தவந்த்வயத்தமானது |
| वानराणां च | வானரர்களும் | अवर्तत | உண்டாபிற்று. |

अङ्गदेनेन्द्रजित्सार्धं वालिपुत्रेण राक्षसः । अयुध्यत महातेजाऽयम्बकेण यथाऽन्तकः ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|---------------|-------------|----------------------|
| अन्तकः | "यமன் | इन्द्रजित् | இந்திரஜித் |
| अयम्बकेण | முக்கண்ணனோடு | वालिपुत्रेण | வாலியின் புதல்வனாகிய |
| यथा | எவ்வண்ணமே | | |
| | அவ்வண்ணமே | अङ्गदेन | அங்கதனோடு |
| महातेजाः | மகா ஆற்றலுடைய | सार्धं | கூட |
| राक्षसः | அரக்கனாக | अयुध्यत | போரிட்டான். |

प्रजङ्घेन च संपातिर्नित्यं दुर्मर्षणो रणे । जम्बुपालिनमारब्धो हनुमानपि वानरः ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|--|-------------|--------------------------|
| रणे | "போரில் | आरब्धः | பொருதினான். |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | वानरः | வானரராகிய |
| दुर्मर्षणः | சரியாத | हनुमान् अपि | ஹனுமாரும் |
| संपातिः | { ஸம்பாதி (விடுவண ரின் மந்திரிகளிலொ ருவன்) | जम्बुपालिनं | ஜம்புபாலியுடன் |
| प्रजङ्घेन | பாஜங்கனோடு | च | அப்படியே பொரு தினார். |

संगतः सुमहाक्रोधो राक्षसो रावणानुजः । समरे तीक्ष्णवेगेन मित्रघ्नेन विभीषणः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|--------------|-----------------------|
| रावणानुजः | ராவணனுத தம்பிரியும் | तीक्ष्णवेगेन | கொடிய வல்லமை யுற்ற |
| राक्षसः | அரக்கனுமாகிய | मित्रघ्नेन | மித்திரக்கனோடு |
| विभीषणः | விபிஷணன் | समरे | போரில் |
| सुमहाक्रोधः | அளவுகடந்த சினம் கொண்டவனாகி | सङ्गतः | கைகலந்தான். |

तपनेन गजः सार्धं राक्षसेन महाबलः । निकुम्भेन महातेजा नीलोऽपि समयुध्यत ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|------------------------------|
| महाबलः | மஹா பலசா சரியாகிய | समयुध्यत | போர் புரிந்தான். |
| गजः | கஜன் | महातेजाः | மஹா ஆற்றலுடைய |
| तपनेन | தபனென்ற | नीलः | நீலன் |
| राक्षसेन | அரக்கனோடு | निकुम्भेन | நிகும்பனோடு |
| सार्धं | கூட | अपि | அப்படியே போர் புரிந்தான். |

वानरेन्द्रस्तु सुभीवः प्रघसेन समागतः । संगतः समरे श्रीमान्विरूपाक्षेण लक्ष्मणः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|---------------|
| वानरेन्द्रः | வானரமன்னனாகிய | श्रीमान् | சீமானாகிய |
| सुभीवः तु | சகீவனும் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| प्रघसेन | பிரகனனோடு | समरे | போரில் |
| समागतः | போர் புரிந்தான். | विरूपाक्षेण | விருபாக்ஷனோடு |
| | | सङ्गतः | கைகலந்தார். |

अग्निकेतुश्च दुर्धपो रश्मिकेतुश्च राक्षसः । सुप्तप्रो यज्ञकोपश्च रामेण सह संगताः ॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------|---|------------|---------------|
| दुर्धपो: | { இதுவனாரிலும் என ராணும் வெல்லப்ப டாதவனான | सुप्तः | ஸுப்தகண்ணனும் |
| अग्निकेतुः च | அக்னிகேதுவும் | यज्ञकोपः च | யக்னுகோபனும் |
| रश्मिकेतुः | ரச்மிகேது என்ற | रामेण | ஸ்ரீராமரோடு |
| राक्षसः च | அரக்கனும் | सह | கூட |
| | | सङ्गताः | ஐக்கலந்தனர். |

वज्रघृष्टिस्तु मैन्देन द्विविदेनाशनिप्रभः । राक्षसाभ्यां सुयोराभ्यां कपिसुख्यौ समागतौ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|--------------|-----------------|
| वज्रघृष्टिः | வஜ்ரமுடிஎன்பவன் | कपिसुख्यौ | கபிசுகுயர் |
| मैन्देन | மைந்தனோடும் | | இருவர்களும் |
| अशनिप्रभः | அசனிப்பரனென்ப வன் | सुयोराभ्यां | சுகோராய் |
| | | राक्षसाभ्यां | அரக்கர்களிருவர் |
| द्विविदेन | தீவிதனோடும் | | கனோடு |
| तु | என்றபடி | समागतौ | ஐக்கலந்தார்கள். |

वीरः प्रतपनो घोरो राक्षसो रणदुर्धरः । समरे तीक्ष्णवेगेन नलेन समयुध्यत ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|--|--------------|----------------------------|
| वीरः | பயங்கரமானவனும் | राक्षसः | அரக்கன் |
| रणदुर्धरः | { போரில் சலபத்தில் வெல்ல முடியாதவ னும் | तीक्ष्णवेगेन | கடும் ஆவேசத்துட னிருந்த |
| वीरः | ஞானமான | नलेन | நனனோடு |
| प्रतपनः | பிரதபனென்ற | समरे | போரில் |
| | | समयुध्यत | எதிர்த்துநின்றான். |

धर्मस्य पुत्रो बलवान्पुत्रेण इति विश्रुतः । स विद्युन्मालिना सार्धमयुध्यत महाकपिः ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------|------------------------------|----------------|------------------|
| धर्मस्य | தர்மரானது | पुत्रेणः | புத்திரனன் |
| पुत्रः | புதல்வனும் | इति | என்ற |
| बलवान् | பலசாலியும் | सः | சுவன் |
| विश्रुतः | பிரசித்திபெற்றவனும் | विद्युन्मालिना | விசுபுன்மாலிபோடு |
| महाकपिः | வானரர்களில் சிறந்த வனுமான | सार्ध | கூட |
| | | अयुध्यत | போர்புரிந்தான். |

वानराश्चापरे भीमा राक्षसैरपरैः सह । द्वन्द्वं समीयुर्वहुधा युद्धाय बहुभिः सह ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|--------------|-----------|---------------------|
| वानराः | வானரர்கள் | अपरैः | கிரகோடு |
| बहुभिः | பல | सह च | கூடவும் |
| राक्षसैः | அரக்கர்களோடு | बहुधा | பலவிதமாய் |
| सह | கூடவும் | युद्धाय | போர்புரிவதற்கு |
| भीमाः | பயங்கரர்களான | द्वन्द्वं | இரட்டை இரட்டை |
| अपरैः | கிரகர் | समीयुः | கேர்த்தார்கள். [யாக |

तत्रासीत्सुमहद्युद्धं तुमुलं रोमहर्षणम् । रक्षसां वानराणां च वीराणां जयविच्छताम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|---|
| तत्र | அப்பொழுது | सुमहत् | மிகவும்பெரியதாகவும் |
| जयं इच्छतां | ஜயத்தைக் கோரும் | तुमुलं | ஆதி உக்கிரமாகவும் |
| रक्षसां | அரக்கர்களுடையவும் | रोमहर्षणं | பார்ப்பவர்களை மயிச் சுச்செறிய செய்வ தாகவும் |
| वीराणां | வீரர்களான | आसीत् | |
| वानराणां च | வானரர்களுடையவும் | | |
| युद्धं | போர் | | |

हरिराक्षसदेहेभ्यः प्रभूताः केशशादृशाः । शरीरसङ्घाटवहाः प्रसुभ्युः शोणितापगाः ॥ १७ ॥

| | | | | |
|------------------------|---|----------------|---|--------------------------|
| हरिराक्षस- देहेभ्यः | வானரர்கள், ராக்ஷஸர் கள் இவர்களின் உட உண்டான [விட்டுருந்து சத்தாதிகள் கேசங்களை புற்களாக உடையவைகளாகவும், | शरीरसङ्घाटवहाः | உருப்பு கரைகிற கட் டைகளை யுமிழ்த்து ச்செல்லுகின்றவை களாகவும் | |
| प्रभूताः | | प्रसुभ्युः | | பெருக்கெடுத்தோ டினர். |
| शोणितापगाः | | | | |
| केशशादृशाः | | | | |

आजघानेन्द्रजित्कुट्टो वज्रणेव शतक्रतुः । अद्भुतं गदया वीरं शत्रुसैन्यविदारणम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------------------|--|----------|------------------------|
| इन्द्रजित् | இந்திரஜித்து | गदया | கைதயால் |
| कुट्टः | கிணங்கொண்டவனுய் | शतक्रतुः | இந்திரன் |
| शत्रुसैन्य- विदारणं | சத்துருசैन्यத்தை கதற ஆடித்துக் கொண்டிருக்கிற | वज्रण | வஜ்ராயுதத்தால் |
| वीरं | | ह्र | எல்லண்ணமோ ஆவ்வண்ணமே |
| अद्भुतं | சூரணுகிய ஆக்கதனை | आजघान | புடைத்தான். |

तस्य काञ्चनचित्राङ्गं रथं सान्धं ससारथिम् । जघान समरे श्रीमानद्भुतो वेगवान् कपिः ॥

| | | | |
|----------|-------------------|------------------|---------------------------------|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமான்னும் | काञ्चनचित्राङ्गं | பொன்னுழைய சக் கிரங்களை யுடைய |
| वेगवान् | மகா சக்தியுடையவனு | रथं | சத்ததை |
| कपिः | வானரனுகிய [மான் | सान्धं | சூதிரைகளுடனும் |
| अद्भुतः | ஆக்கதன் | ससारथि | ஸாரதியுடனும் |
| समरे | போரில் | जघान | ஒழித்தான். |
| तस्य | அவனுது | | |

संपातिस्तु त्रिभिर्वाणैः प्रजङ्घेन समाहृतः । निजघानाश्वकर्णेन प्रजङ्घं रणमूर्धनि ॥ २० ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|--------------------------------|
| संपातिः तु | ஸம்பாதியும் | रणमूर्धनि | போர்க்களத்தில் |
| प्रजङ्घेन | பிரஜங்களுல் | अश्वकर्णेन | ஆசுவகர்ணவிருகைத் தைக்கொண்டு |
| त्रिभिः | மூன்று | प्रजङ्घं | பிரஜங்களை |
| वाणैः | பாணக்கள்கொண்டு | निजघान | புடைத்தான். |
| समाहृतः | ஆடிக்கப்பட்டவனுய் | | |

जम्बुपाली रथस्थस्तु रथशक्त्या महाबलः । विभेद समरे क्रुद्धो हनुमन्तं स्तनान्तरे ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-------------------------|
| மஹாவல: | மஹாதபலசாலியாகிய | ஹனுமன் | ஹனுமாவார் |
| जम्बुपाली | ஜம்புமாலி | स्तनान्तरं | மார்புப்புறத்தெருத்தில் |
| रथस्य: तु | ரதத்திலிருந்தவன் | रथशक्त्या | ரதத்திலிருந்த சக்தி |
| समरे | போரில் [ஊழை | | எனும் ஆயுதத்தால் |
| क्रुद्धः | கிளங்கொண்டவனாகி | विभेद | குத்தினான். |

तस्य तं रथमास्थाय हनुमान् पारुतात्मजः । प्रमपाथ तलेनाशु सद तेनैव रक्षसा ॥२२॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|------------------------|
| मारुतात्मजः | வாயுபகவானின் புதல் | रक्षसा | அரக்கனாடு |
| हनुमान् | ஹனுமார் [வராகிய | सह एव | கூடவே |
| तस्य | அவனது | तं | அதை |
| तं | அந்த | आशु | கிரகையில் |
| रथे | ரதத்தில் | तलेन | முட்டியினால் |
| आस्थाय | ஏறி | प्रमपाथ | பொடியாக்கித்தள்ளினான். |
| तेन | அந்த | | |

नदन्वतपनो घोरो नलं सोऽप्यन्वभावत्

॥ २३ ॥

| | | | |
|---------|----------|-----------|-----------------|
| घोरः | பயங்கரான | नदन् | கர்த்துக்கொண்டே |
| सः | அந்த | नलं अपि | நளனை கோக்கியே |
| प्रतपनः | பிரதபனன் | अन्वभावत् | எதித்தொடினான். |

नलः प्रतपनस्याशु पातयामास चक्षुर्षी । भिन्नगात्रः शरैस्त्रैः क्षणैः क्षिप्रहस्तेन रक्षसा ॥२४॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|-----------|-------------------|
| क्षिप्रहस्तेन | கை சுறுசுறுப்புள்ள | नलः | நளன் |
| रक्षसा | அரக்கனால் | प्रतपनस्य | பிரதபனனுடைய |
| शीर्षणैः शरैः | கூரிய பாணங்களால் | चक्षुषी | இரு கண்களையும் |
| भिन्नगात्रः | கிரணப்படுத்தப்பட்ட உடனுடையவனாய் | आशु | கூடக்கொண்டே |
| | | पातयामास | கொக்கி எறிந்தான். |

निजघानाद्रिशृङ्गेण तपनं वेगवान् गजः

॥ २५ ॥

| | | | |
|---------|----------------------|--------------|---------------|
| वेगवान् | வேகமர்ந்தியசாலியாகிய | तपनं | தபனனை |
| | கிவ | अद्रिशृङ्गेण | மலைக்கொத்தால் |
| गजः | கஜன் | निजघान | கொன்றான். |

मसन्तमिव सैन्यानि प्रघसं वानराधिपः । सुभीषः सप्तपर्णेन निविभेद जघान च ॥ २६॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|------------------------------|
| वानराधिपः | வானரமன்னனாகிய | प्रघसं | பிரகஸனை |
| सुभीषः | சுமீஷன் | सप्तपर्णेन | ஏழிலிப்பாலை என்ற மாத்தால் |
| सैन्यानि | சேனைகளை | निविभेद | பிளந்தான். |
| मसन्तं | விழுக்கவிடுகொண்டான் | जघान च | கொன்றும்விட்டான். |
| इव | போலிருக்கும் | | |

मपीडय शरवर्षेण राक्षसं भीमदर्शनम् । निजवान विरूपाक्षं शरेणैकेन लक्ष्मणः ॥ २७ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|---------------|
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | शरवर्षेण | பாணவர்ஷத்தால் |
| भीमदर्शनं | பார்க்க பயக்காண | मपीडय | துன்புறுத்தி |
| विरूपाक्षं | விரூபாஷ்டினென்ற | एकेन | ஒரே |
| राक्षसं | அரக்களை | शरेण | பாணத்தால் |
| | | निजवान | கொண்டு. |

अग्निकेतुश्च दुर्धर्षो रश्मिकेतुश्च राक्षसः । सुप्तो यज्ञकोपथ रामं निर्विभिदुः शरैः ॥ २८ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|-------------|----------------|
| दुर्धर्षः | தனையமுடியாதவனாய் விளங்கிய | सुप्तः | சுத்தகனனும், |
| अग्निकेतुः च | அக்னிகேதுவும் | यज्ञकोपः च | யக்னுகோபனும் |
| रश्मिकेतुः | ரஷ்மிகேது என்ற | रामं | ராமரை |
| राक्षसः च | அரக்கனும், | शरैः | பாணங்களால் |
| | | निर्विभिदुः | புடைத்தார்கள். |

तेषां चतुर्णां रामस्तु शिरांसि निशितैः शरैः । क्रुद्धश्चतुर्भिश्चिच्छेद घोरेरग्निशिखोपमैः ॥

| | | | |
|---------------|--|----------|-------------------|
| रामः तु | ராமரே எனில் | चतुर्भिः | நான்கு |
| क्रुद्धः | கிருட்கொண்டவராகி | शरैः | பாணங்களால் |
| अग्निशिखोपमैः | கொழுந்துவிட்டெரியும் அக்னியை நிகர்த்த | तेषां | அந்த |
| घोरेः | பயக்கரமான | चतुर्णां | நால்வர்களுடைய |
| निशितैः | கூரிய | शिरांसि | தலைகளை |
| | | चिच्छेद | வெட்டியெறிந்தார். |

वज्रमुष्टिस्तु मैन्देन मुष्टिना निहतो रणे । पपात सरथः सान्धः पुराह इव भूतले ॥ ३० ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|----------|------------------|
| पुराहः | மதிந்கவரின்மீது கட டப்பட்ட கோபுரம் | मुष्टिना | முஷ்டியால் |
| इव | போல் விளங்கிய | सरथः | தேருடனும் |
| वज्रमुष्टिः तु | வஜ்ரமுஷ்டியும் | सान्धः | குதிரைகளுடனும் |
| मैन्देन | மைந்தனில் | निहतः | கொல்லப்பட்டவனாய் |
| रणे | போரில் | भूतले | பூமியில் |
| | | पपात | விழுந்தான். |

निकुम्भस्तु रणे नीलं नीलाञ्जनचयप्रभम् । निर्विभेद शरैस्तीक्ष्णैः करैर्मेषिवांशुमान् ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|-----------|---------------|
| रणेः | போரில் | अंशुमान् | சூரியபகவான் |
| नीलाञ्जनचयप्रभं | கறுத்த மைக்குன்று | करैः | கிரணங்களால் |
| नीलं तु | நீலணையும் [போன்ற | मेषं | மேகத்தை |
| निकुम्भः | நிகும்பன் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| तीक्ष्णैः | கூரிய | | அவ்வண்ணமே |
| शरैः | பாணங்களால் | निर्विभेद | வாடுருகினான். |

पुनः शरशतेनाथ क्षिप्रहस्तो निशाचरः । विभेद समरे नीलं निकुम्भः प्रजहास च ॥३२॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|-------------------------|
| क्षिप्रहस्तः | கை சுறுசுறுப்புள்ள | अथ | அப்பொழுது |
| निकुम्भः | நிகும்பனென்ற | पुनः | இன்னும் |
| निशाचरः | ஆரக்கன் | शरशतेन | அநேக பாணங்களால் |
| समरे | போரில் | विभेद | வாடுகிறான். |
| नीलं | நீலனை | प्रजहास च | கிரிக்கவும் கிரித்தான். |

तस्यैव रथचक्रेण नीलो विष्णुरिवाहवे । शिरश्चिच्छेद समरे निकुम्भस्य च सारथेः ॥३३॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|-------------------|
| नीलः | நீலன் | निकुम्भस्य | நிகும்பனுடைய |
| आहवे | போரில் | शिरः | தலையையும் |
| विष्णुः | விஷ்ணுபகவான் | सारथेः च | வாரதிரிஷ்டையையும் |
| इव | எவ்வண்ணமோ அல் | समरे | போரில் |
| तस्य | அவனது [கண்ணமே | चिच्छेद | துணித்துத்தள்ளி |
| रथचक्रेण एव | ரதச் சக்கரவாகம் | | இன். |
| | கொண்டே | | |

वज्राशनिसमस्पर्शो द्विविदोऽप्यशनिप्रभम् । जघान गिरिशृङ्गेण मिषतां सर्वरक्षसाम् ॥३४॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|------------------------|
| वज्राशनि | } வஜ்ராயுதத்தையும் | मिषतां अपि | } விழித்துப்பார்த்துக் |
| समस्पर्शः | | | |
| द्विविदः | துணிக்தன் | अशनिप्रभं | அசனிப்பிரபண |
| सर्वरक्षसां | ராஷ்டிரங்களெல்ல | गिरिशृङ्गेण | மலைச் சிகரத்தால் |
| | கொளும் | जघान | புடைத்தான். |

द्विविदं वानरेन्द्रं तु नागयोधिनमाहवे । शरैरशनिसङ्काशैः स विव्याधाशनिप्रभः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|--------------|-------------------|
| सः | அந்த | वानरेन्द्रं | வானரோர்த்தமனுடைய |
| अशनिप्रभः | அசனிப்பிரபன் | द्विविदं तु | தவிவிதனையும் |
| आहवे | போரில் | अशनिसङ्काशैः | இடிகளை சிகர்த்த |
| नागयोधिनं | மலைகளையெடுத்துப் | शरैः | பாணங்களால் |
| | போர்புரியும் | विषया | துன்புறுத்தினான். |

स शरैरतिविदाङ्गो द्विविदः क्रोधमूर्च्छितः । सालेन सरथं साध्वं निजघानाशनिप्रभम् ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|-----------|-----------------|
| शरैः | பாணங்களால் | सालेन | ஆச்சாமரமொன்றைக் |
| अतिविदाङ्गः | உடலெங்கும் அசிகர | | கொண்டு |
| | யப்படுத்தப்பட்ட | अशनिप्रभं | அசனிப்பிரபண |
| सः | அந்த | सरथं | தேருடனும், |
| द्विविदः | துணிக்தன் | साध्वं | குதிரைகளுடனும் |
| क्रोधमूर्च्छितः | கொபந்தலைக்கேறிய | निजघान | கொன்றான். |
| | வாடு | | |

विद्युन्माली रथस्थस्तु शरैः काञ्चनभूषणैः । सुपेणं ताडयामास ननाद च मुहुर्मुहुः ॥३७॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-------------|--------------------------|
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலி | सुपेणं | சுபேணனை |
| रथस्थः तु | ரதத்திலிருந்த வண்ணமே | ताडयामास | புடைத்தான். |
| काञ्चनभूषणैः | பொற்கட்டுகளிட | मुहुः मुहुः | அடிக்கடி |
| शरैः | பாணங்களால் | ननाद च | அட்டகாணமும் செய்தான். |

तं रथस्थमथो दृष्ट्वा सुपेणो वानरोत्तमः । गिरिशृङ्गेण महता रथमाशु न्यपातयत् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|--------------------------|
| वानरोत्तमः | வானரோத்தமனாகிய | महता | பெரும் |
| सुपेणः | சுபேணன் | गिरिशृङ्गेण | மலைச்சிகரத்தால் |
| अथो | அப்பொழுது | रथं | ரதத்தை |
| तं | அவனை | आशु | சடக்கொன |
| रथस्थं | ரதத்திலிருப்பவனாக | न्यपातयत् | முறித்துவிழ்த்தி னன். |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | | |

छाघवेन तु संयुक्तो विद्युन्माली निशाचरः । अपक्रम्य रथानूर्णं गदापाणिः क्षितौ स्थितः॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|-----------------|
| छाघवेन | சறுகறுப்போடு | रथात् | ரதத்திலிருந்து |
| संयुक्तः | கூடிய | अपक्रम्य | தப்பிக்குதித்து |
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலியென்ற | क्षितौ | பூமியில் |
| निशाचरः | அரக்கன் | गदापाणिः | கதைபயங்கையுமாக |
| तूर्णं तु | தகடினமே | स्थितः | நின்றவிட்டான். |

ततः क्रोधसमाविष्टः सुपेणो हरिपुङ्गवः । शिलां सुमहतीं गृह्य निशाचरमभिद्ववत् ॥ ४० ॥

| | | | |
|----------------|----------------|-----------|-----------------|
| ततः | அதனால் | सुमहतीं | மிகப்பெரிய |
| हरिपुङ्गवः | வானரோத்தமனாகிய | शिलां | கற்பாறை ஒன்றை |
| सुपेणः | சுபேணன் | गृह्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| क्रोधसमाविष्टः | கொபாந்தரத்தனாக | निशाचरं | அரக்கனை |
| | | अभिद्ववत् | தூரத்தினான். |

तमापतन्तं गदया विद्युन्माली निशाचरः । वक्षस्यभिजघानाशु सुपेणं हरिसत्तमम् ॥४१॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------|-------------|
| निशाचरः | அரக்கனாகிய | सुपेणं | சுபேணனை |
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலி | गदया | ஓர் கதையால் |
| आपतन्तं | தூரத்திக்கொண்டு | आशु | விரைவில் |
| तं | அந்த [வரும்] | वक्षसि | மார்பில் |
| हरिसत्तमं | வானரோத்தமனாகிய | अभिजघान | புடைத்தான். |

गदाप्रहारं तं घोरमचिन्त्यं प्लवगोत्तमः । तां शिलां पातयामास तस्योरसि महामृधे ॥४२॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|-----------------|
| गदाप्रहारं | பெரும்போரில் | गदाप्रहारं | கதையின் அடியை |
| तं | அந்த | अचिन्त्यं | பொருட்படுத்தாது |
| प्लवगोत्तमः | வானரோத்தமனாக மவன் | तां शिलां | அந்த கற்பாறையை |
| घोरं | அசந்ரயமாயிருக்கும் | तस्य | அவனது |
| तं | அந்த | वरसि | மார்பில் |
| | | पातयामास | எறிந்தான். |

शिलाप्रहासभिहतो विद्युन्माली निशाचरः । निष्पिष्टहृदयो भूमौ गतासुनिपपात इ ॥

निशाचरः அரக்கனாகும்
 விद्यுन्மாலி வித்யுன்மாலி
 शिलाप्रहासभिहतः சுற்பாசாறரின் விழுச்
 சியால் நகக்குண்டு

निष्पिष्टहृदयः மாவெனப்போன்ற
 நயிருதமுடையவனாகி
 गतासुः உயிர்போய்
 भूमौ பூமியில்
 निपपात इ சாய்ந்துவிட்டான்.

एवं तैर्वाனர்ः शूरैः शूरास्ते रजनीचराः । इन्द्रे विमुदितास्तत्र दैत्या इव दिवोकसैः ॥

एवं அப்பொழுது
 तैर्वाனர்ः அரசர்கள்
 शूरैः தேவர்களால்
 शूरास्ते எவ்வண்ணமோ
 रजनीचराः அந்த [அவ்வண்ணமே
 சூரர்களான
 अरककर्कशः அரக்கர்கள்

इन्द्रे சூரர்களான
 विमुदिताः அந்த
 तत्र வானர்களால்
 दैत्या தவந்தயத்தத்தில்
 इव மேற்கண்டவாறு
 दिवोकसैः உருக்குலைக்கப்பட்ட
 டர்கள்.

भ्रमैः खड्गैर्गदाभिश्च शक्तितोमरपट्टिभिः । अपविद्धैश्च भिन्नैश्च रथैः सांशामिकैर्हयैः ॥४५॥

निहतैः कुञ्जरैर्मत्सैस्तथा वानरराक्षसैः । चक्राक्षयुगदण्डैश्च भ्रैधरणिशंथितैः ॥

बभूवायोधनं घोरं गोमायुगणसङ्कुलम्

आयोधनं போர்க்களமானது
 भ्रमैः முறிந்துவிழுந்த
 खड्गैः சுத்திகளாலும்
 गदाभिः च கதைகளாலும்
 शक्तितोमरपट्टिभिः { சுத்திகளாலும், தேரம்
 ர்களாலும், பட்டி
 சங்களாலும்
 अपविद्धैः च ஞுடிந்து
 भिन्नैः च கொளுக்கிப்போன
 रथैः ரதங்களாலும்
 तथा அப்படியே
 निहतैः கொல்லப்பட்ட
 सांशामिकैः போர்
 हयैः குதிரைகளாலும்

॥ ४६ ॥

ससैः மத
 कुञ्जरैः யானைகளாலும்
 वानरराक्षसैः வானர்களாலும்
 அரக்கர்களாலும்
 भ्रमैः உருவொழிந்து
 धरणिशंथितैः பூமியில் சிதறிச்
 சிடந்த
 चक्राक्षयुगदण्डैः च { சக்கிரங்களாலும் அச்
 சக்களாலும் நகத்த
 டிகளாலும் எற்கால்
 களாலும்
 घोरं பார்க்கப் பயக்காமல்
 गोमायुगणसङ्कुलं கரிக்கட்டங்களால்
 நிறையப்பெற்றதாய்
 बभूव திருந்தது.

कवन्धानि समुत्पेतुर्दिक्षु वानररक्षसाम् । विमर्दे तुमुले तस्मिन्देवासुररणोपमे ॥ ४७ ॥

देवासुररणोपमे { தேவர்களுக்கும் அரச
 ர்களுக்கும் நடந்த
 போரை சிகர்த்த
 तस्मिन् அந்த
 तुमुले கடுமையான
 विमर्दे போரில்

वानररक्षसां வானர்களுடையவும்
 அரக்கர்களுடையவும்
 कवन्धानि தலைமீட்டா உடல்கள்
 दिक्षु எல்லா திக்குகளிலும்
 समुत्पेतुः சிதறிக்கிடந்தன.

विद्युन्माली रथस्थस्तु शरैः काञ्चनभूषणैः । सुपेणं ताडयामास ननाद च मुहुर्मुहुः ॥३७॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-------------|---------------------------|
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலி | सुपेणं | சுபேணனை |
| रथस्थः तु | ரதத்திலிருந்த வண்ணமே | ताडयामास | புடைத்தான். |
| काञ्चनभूषणैः | பொற்கட்டுகாமிட்ட | मुहुः मुहुः | அடிக்கடி. |
| शरैः | பாணக்களால் | ननाद च | அட்டகாலமுதல் செய்தான். |

तं रथस्थमथो दृष्ट्वा सुपेणो वानरोत्तमः । गिरिशृङ्गेण महता रथमाशु न्यपातयत् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|---------------------------|
| वानरोत्तमः | வானரோத்தமனுதிய | महता | பெரும் |
| सुपेणः | சுபேணன் | गिरिशृङ्गेण | மலைச்சிகரத்தால் |
| अथो | அப்பொழுது | रथे | ரதத்தை |
| तं | அவனை | आशु | சுடக்கொன |
| रथस्थं | ரதத்திலிருப்பவனாக | न्यपातयत् | முறித்துவிடுத்தி னான். |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | | |

लाघवेन तु संयुक्तो विद्युन्माली निशाचरः । अपक्रम्य रथाचूर्णं गदापाणिः क्षितौ स्थितः॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|-----------------|
| लाघवेन | சுறுகறுப்போடு | रथात् | ரதத்திலிருந்து |
| संयुक्तः | கூடிய | अपक्रम्य | தப்பிக்குதிந்து |
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலியென்ற | क्षितौ | பூமியில் |
| निशाचरः | அரக்கன் | गदापाणिः | கதைபயங்கையுடைய |
| तूर्णं तु | தசுந்நமே | स्थितः | நின்றவனிடான். |

ततः क्रोधसमाविष्टः सुपेणो हरिपुङ्गवः । शिलां सुमहतीं गृह्य निशाचरमभिद्रवत् ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|-----------|-----------------|
| ततः | அதனால் | सुमहतीं | மிகப்பெரிய |
| हरिपुङ्गवः | வானரோத்தமனுதிய | शिलां | கற்பாறை ஒன்றை |
| सुपेणः | சுபேணன் | गृह्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| क्रोधसमाविष्टः | கொபாக்கரத்தனாகி | निशाचरं | அரக்கனை |
| | | अभिद्रवत् | அரத்தினான். |

तमापतन्तं गद्या विद्युन्माली निशाचरः । वक्षस्यभिजघानाशु सुपेणं हरिसत्तमम् ॥४१॥

| | | | |
|--------------|----------------|---------|-------------|
| निशाचरः | அரக்கனாகிய | सुपेणं | சுபேணனை |
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலி | गद्या | ஓர் கதையால் |
| आपतन्तं | அரத்திக்கொண்டு | आशु | விசையில் |
| तं | அந்த [வரும்] | वक्षसि | மார்பில் |
| हरिसत्तमं | வானரோத்தமனுதிய | अभिजघान | புடைத்தான். |

गदाप्रहारं तं घोरमचिन्त्यं प्रवृत्तोत्तमः । तां शिलां पातयामास तस्योरसि महामृधे ॥४२॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|------------|-----------------|
| महामृधे | பெரும்பொசில் | गदाप्रहारं | கதையின் அடியை |
| प्रवृत्तोत्तमः | வானரோத்தமனுது மவன் | अचिन्त्यं | பொருட்படுக்தாது |
| घोरं | அசந்நயமாமிருக்கும் | तां शिलां | அந்த கற்பாறையை |
| तं | அந்த | तस्य | அவனது |
| | | वरसि | மார்பில் |
| | | पातयामास | எறிந்தான். |

शिलाप्रहाराभिहतो विद्युन्माली निशाचरः । निष्पिष्टहृदयो भूमौ गतासुर्निष्पात ह ॥

| | | | |
|------------------|--|----------------|-----------------------------------|
| निशाचरः | அசுக்களுக்கும் | निष्पिष्टहृदयः | பாவெனப்போன்ற றுற்றமுடையவனுக்கி |
| विद्युन्माली | வித்யுன்மாலி | गतासुः | உயிச்சோய் |
| शिलाप्रहाराभिहतः | கற்பாறையின் கீழ்க் சியால் நசுக்குண்டு | भूमौ | பூமியில் |
| | | निष्पात ह | சாய்ந்துகிட்டான். |

एवं तैर्वाचरैः शूरैः शूरास्ते रजनीचराः । इन्द्रे विमृदितास्तत्र दैत्या इव दिवोकसैः ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|--------------------------------|
| तस | அப்பொழுது | शूरैः | சூரர்களான |
| दैत्याः | அசுரர்கள் | तैः | அந்த |
| दिवोकसैः | தேவர்களால் | वाचरैः | வானர்களால் |
| इव | எவ்வண்ணமே | इन्द्रे | இவந்தயுத்தத்தில் |
| ते | அந்த [அவ்வண்ணமே | एवं | மெற்கண்டவாறு |
| शूराः | சூரர்களான | विमृदिताः | உருக்குலைக்கப்பட்ட டார்கள். |
| रजनीचराः | அரக்கர்கள் | | |

भयैः खड्गैर्गदाभिश्च शक्तितोमरपट्टिभिः । अपविद्धैश्च भिन्नैश्च रथैः सांप्रामिकहयैः ॥४५॥

निहतैः कुञ्जरैर्मत्तैस्तथा वानरराक्षसैः । चक्राक्षयुगदण्डैश्च भयैर्धरणिसंश्रितैः ॥

| | | | |
|-------------------|--|---------------------|---|
| भयोधम | போச்சுக்களமானது | मत्तैः | மத |
| भयैः | முறிந்துகிழந்த | कुञ्जरैः | யானைகளாலும் |
| खड्गैः | சத்திகளாலும் | वानरराक्षसैः | வானர்களாலும் அரக்கர்களாலும் |
| गदाभिः च | கதைகளாலும் | भयैः | உருவொழிந்து |
| शक्तितोमरपट्टिभिः | { சத்திகளாலும், தேசம ரக்களாலும், படப்பு சக்களாலும் | धरणिसंश्रितैः | பூமியில் சிதறிச் கிடந்த |
| अपविद्धैः च | ஒடிந்து | चक्राक्षयुगदण्डैः च | { சக்கிரங்களாலும் அச் சக்களாலும் அகத்த யுகளாலும் எந்தால் களாலும் |
| भिन्नैः च | பெரறுக்கிப்போன | घोरं | பார்க்கப் பயக்காமாய் |
| रथैः | ரதங்களாலும் | गोमायुगणसकुलं | சர்க்குட்டங்களால் |
| तथा | அப்படியே | वभूव | நிறையப்பெற்றதாய் இருந்தது. |
| निहतैः | கொல்லப்பட்ட | | |
| सांप्रामिकैः | போர் | | |
| हयैः | சூதிகைகளாலும் | | |

कवन्धानि समुत्पेतुर्दिक्षु वानररक्षसाम् । विमर्दे तुमुले तस्मिन्देवासुररणोपमे ॥ ४७ ॥

| | | | |
|---------------|---|-------------|--------------------------------------|
| देवासुररणोपमे | { தேவர்களுக்கும் அசு ரர்களுக்கும் நடந்த போரை நிகர்த்த | वानररक्षसां | வானர்களுடையவும் அரக்கர்களுடையவும் |
| सस्मिन् | அந்த | कवन्धानि | தலைநிலை உடல்கள் |
| तुमुले | கடுமையான | विभु | எல்லா திக்குகளிலும் |
| विमर्दे | போரில் | समुत्पेतुः | சிதறிக்கிடந்தன. |

विदार्यमाणा हरिपुङ्गवैस्तदा निशाचराः शोणितदिग्धगात्राः ।

पुनः सुपुङ्गं तरसा समास्थिता दिवाकरस्यास्तमयाभिकाङ्क्षिणः ॥ ४८ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|--------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | पुनः | இன்னும் |
| हरिपुङ्गवैः | வானரோத்தமர்கள் | सुपुङ्गं | பெரும்பேரில் |
| विदार्यमाणाः | முறிக்கப்படும் [ளால் | दिवाकरस्य | சூரியமகவானுடைய |
| निशाचराः | அரக்கர்கள் | अस्तमयामि- | அஸ்தமனத்தை எதிர்பார்த்துகொண்டு |
| शोणित- | சந்தத்தால் பூசப்பட்ட | काङ्क्षिणः | ஆவிரத்திதரட்டு |
| दिग्धगात्राः | ட்ட உடனுடையவர்களாக | तरसा | எதிர்த்துநின்றார்கள். |
| | | समास्थिताः | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16371



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1696

चतुश्चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்திகாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ४४ ॥

रात्रियुद्धम्—ராதிரியுத்தம்

युद्धयतामेव तेषां तु तदा वानररक्षसाम् । रविस्संगतो रात्रिः प्रवृत्ता प्राणहारिणी ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|-------------|----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | रविः | சூரியன் |
| तेषां | அந்த | असङ्गतः | அஸ்தமித்தான். |
| वानररक्षसां तु | வானரர்களும் அரசர்களும் | प्राणहारिणी | பலர் ஏககாலத்தில் மரணமடைகிற |
| युध्यतां एव | போர்செய்துகொண்டிருக்கையிலேயே | रात्रिः | இரவு |
| | | प्रवृत्ता | துடக்கிற்று. |

अन्योन्यं बद्धवैराणां घोराणां जयपिच्छताम् । संप्रवृत्तं निशायुद्धं तदा वानररक्षसाम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|-------------------|
| अन्योन्यं | ஒருவர் பிதொருவர் | वानररक्षसां | வானரர்களாக்கும் |
| बद्धवैराणां | தவெலும் பாராட்டி | | சாக்ஷஸ்களுக்கும் |
| जयं | ஜயத்தை | तदा | அப்பொழுது |
| पिच्छतां | கேடும் | निशायुद्धं | சாத்திரிப்போரானது |
| घोराणां | பயங்கரமானவர்களான | संप्रवृत्तम् | மடைபெற்றது. |

राक्षसोऽसीति हरयो हरिश्चासीति राक्षसाः । अन्योन्यं समरे जघ्रस्तस्मिस्तमसि दारुणे ॥

| | | | |
|----------|------------------------|-----------|-------------------------|
| समरे | போரில் | इति च | என்று சொல்லிக் கொண்டும் |
| हरयः | வானர்கள் | अन्योन्यं | ஒருவரை ஒருவர் |
| राक्षसः | 'அரக்களாய்' | तस्मिन् | அந்த |
| असि | கிண்கிராய்' | दारुणे | பயங்கரமான |
| इति | என்று சொல்லிக்கொண்டும் | तमसि | இருளில் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் [ண்டும் | जघ्नुः | புடைத்துக்கொண்டார்கள். |
| हरिः | 'வானரளாய்' | | |
| असि | கிண்கிராய்' | | |

जहि दारय चैहीति कथं विद्वसति च । एवं सुतुमुदः शब्दस्तस्मिस्तपसि शुश्रुवे ॥४॥

| | | | |
|-----------|---------------|----------|----------------|
| जहि | ‘கொள்ளு’, | एवं | இப்படியாய் |
| दारय | ‘வெட்டு’, | सुतुमुदः | மிகக்கலவரமான |
| एहि इति च | ‘வா’ என்றும், | शब्दः | சுத்தம் |
| कथं | ‘என்’ | तस्मिन् | அந்த |
| विद्वसति | ‘ஓடுகிறது’ | तपसि | இருளில் |
| इति च | ‘என்றும்’ | शुश्रुवे | செட்கப்பட்டது. |

कालाः काञ्चनसन्नाहास्तस्मिस्तपसि राक्षसाः । संपादयन्त शैलेन्द्रा दीप्तौपविता इव ॥

| | | | |
|----------------|--|--------------|--|
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | दीप्तौपविताः | { இயலிக்கும் கொடி இளமைய நாட்டு டன் கடியவைக ளள |
| तस्मिन् तपसि | அந்த இருளில் | शैलेन्द्राः | |
| कालाः | கருப்புநிறமுடையவர் களாய் | इव | போலவே |
| काञ्चनसन्नाहाः | { பொன்னுலர்ன போர னிவருடையிருந்த வர்களாய் | संपादयन्त | காணப்பட்டார்கள். |

तस्मिस्तपसि दुष्यारे राक्षसाः क्रोधमूर्च्छिताः । परिपेतुर्देहावेगा भक्षयन्तः प्रवृजमान् ॥

| | | | |
|------------------|----------------|------------|-----------------------------------|
| तस्मिन् | அந்த | महावेगाः | மிக ஆத்திரத்தடனி குப்பவர்களாய் |
| दुष्यारे | அடர்ந்த | प्रवृजमान् | வானர்களை |
| तपसि | இருளில் | भक्षयन्तः | எழுந்திக்கொண்டு |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | परिपेतुः | எக்கும் திரிதார்கள். |
| क्रोधमूर्च्छिताः | கொபந்தனைக்கேறி | | |

ते ह्यान्काञ्चनापीडान्ध्वजाश्रमिशिखोपमान् । आभृत्य दशनैस्तीक्ष्णैर्भीमकोपा व्यदारयन् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|-----------------|-------------------------------|
| ते | ஆவர்கள் (வானர்கள் கள்) | अश्रिमिशो रमान् | அக்ளியன் இகாலை களை உகர்த்த |
| भीमकोपाः | மிகக் கிணங்கொண்ட வர்களாகி | ध्वजान् च | தகடக்களையும் |
| काञ्चनापीडान् | பொன்னுள் செய்க தலையணிகளைப்படைபவ | आभृत्य | கொட்டிக் கிட்ட |
| ह्यान् | குதிரைகளையார் | तीक्ष्णैः | உரிய |
| | | दशनैः | பற்களால் |
| | | व्यदारयन् | கிழ்த்தெறித்தார்கள். |

वानरा बलिनो युद्धेऽशोभयन्नासती चमूम् ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------|----------------|---------|--------------------|
| बलिनः | பலகர சிலவர்கள் | राक्षसी | ஆரக்க |
| वानराः | வானர்கள் | चमूम् | சேனையை |
| युद्धे | போரில் | अशोभयन् | காக்கிவிட்டார்கள். |

कुञ्जरान्कुञ्जरारोहान्पताकाभ्रजिनो रथान् । चकर्षुश्च ददंशुश्च दशनैः क्रोधमूर्च्छिताः ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|----------|-----------------------------|
| क्रोधमूर्च्छिताः | கோபம் தலைக்கேறிய வர்களால் | रथान् च | ரதங்களையும் |
| कुञ्जरान् | யானைகளையும் | चकर्षुः | இழுத்துத் தள்ளி னார்கள். |
| कुञ्जारोहान् | யானைவீரர்களையும் | दशनैः | பற்களால் |
| पताकाभ्रजिनः | கொடிகளையும் நிசான் களையுமுடைய | ददंशुः च | கடிக்கவும் கடித்தார்கள். |

लक्ष्मणश्चापि रामश्च शरैराशीविषोपमैः । दृश्यादृश्यानि रक्षंसि पवराणि निजघ्नतुः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|--------------------------|
| रामः च | சீராமரும் | पवराणि | முக்கிய |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும் | रक्षंसि | அரக்கர்களை |
| आशीविषोपमैः | சர்ப்பங்களே நிகர்த்த பரணங்களால் | निजघ्नतुः | கொன்று தள்ளி னார்கள். |
| शरैः | கட்புலனுயிருந்தவர்க ளும், கட்புலனாகா மகற்றது பதங்கிக் கிடந்தவர்களுமள | | |

तुरङ्गपुरविध्वस्तं रथनेमिसमुत्थितम् । क्रोध कर्णनेत्राणि युद्धयतां घग्णीरजः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------------|---|--------------|-----------------------------|
| तुरङ्गपुर विध्वस्तं | குதிரைக் குளம்புக ளால் பொடிபண் ணப்பட்டு | घग्णीरजः | பூமித் தூளியானது |
| रथनेमिसमुत्थितं | ரதசக்கிரங்களால் கிளப்பப்பட்ட | युधयतां | போர்புரிபவர்களின் |
| | | कर्णनेत्राणि | காதல்களையும் கண்க ளையும் |
| | | क्रोध | வருத்திற்று. |

वर्तमाने महाघोरे संग्रामे रोमहर्षणे । रुधिरौदा महाघोरा नद्यस्तत्र प्रसुम्बुः ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|---|------------|------------------------|
| रोमहर्षणे | பார்ப்பவர்கள் மயிர்க் கச்செறியும்படி | तत्र | அப்பொழுது |
| महाघोरे | மிகப்பயங்கரமாய் | रुधिरौदाः | ரத்தத்தை ஜலமாக உடைய |
| वर्तमाने | நடைபெறும் | महाघोराः | மிகப்பயங்கரமான |
| संग्रामे | போரில் | नद्यः | நதிகள் |
| | | प्रसुम्बुः | பெருகி ஓடின. |

ततो भेरीसूदृङ्गानां पणवानां च निस्वनः । शङ्खेषुस्वनोन्मिथः संवभूवाद्भुतोपमः ॥

| | | | |
|-----------------|---|-------------|---|
| ततः | அப்பொழுது | शङ्खेषु- | சக்கங்கள், புல்லாக்கு ழல்கள் இவைகளின் கோலங்களோடு கலந்ததாய் |
| भेरीसूदृङ्गानां | பேரிகள் மிருகக்கங் கள் இவைகளுடைய வும் | स्वनोन्मिथः | |
| पणवानां च | பணவமென்ற வாத்ய ங்களாகையவும் | संवभूवाः | மிக ஆச்சரியமாய் |
| निस्वनः | ஓலியானது | भुतोपमः | நடைபெற்றது. |

हतानां स्तनमानानां राक्षसानां च निम्बनः । शस्तानां वानराणां च संभूवातिदारुणः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|-------------------|
| हतानां | புடைக்கப்பட்ட | शस्तानां | கரயப்படுத்தப்பட்ட |
| स्तनमानानां | கதறிக்கொண்டிருக்கும் | वानराणां च | வானரர்களுடையவும் |
| | கும் | निम्बनः | கட்குரவானது |
| राक्षसानां च | ராட்சஸர்களுடைய | अतिदारुणः | மிகக்கடுமையாக |
| | வும் | संभूव | இருந்தது. |

हतैर्वानरवीरैश्च शक्तिशूलपरश्वधैः । निहतैः पर्वताग्रैश्च राक्षसैः कामरूपिभिः ॥ १५ ॥
शस्त्रपुष्पोपहारा च तत्रासीद्युद्धमेदिनी । दुर्ज्ञेया दुर्निवेशा च शोणितास्रावकर्दमा ॥ १६ ॥

| | | | |
|------------------|---|----------------------------|---|
| तत्र | அப்பொழுது | कामरूपिभिः | களைத்த உருவமெடுத்த இருந்த |
| युद्धमेदिनी | யுத்தமூடியானது | राक्षसैः च | அரக்கர்களாலும் |
| शक्तिशूलपरश्वधैः | { சக்திகளாலும் சூலக் களாலும் கோடாலி களாலும் | दुर्निवेशा | புகழுழலாததாயும் |
| हतैः | கொல்லப்பட்ட | दुर्ज्ञेया | காணக்கூடாததாயும் |
| वानरवीरैः च | வானரவீரர்களாலும் | शस्त्रपुष्पो- पहारा च } | சஸ்தரங்கள்கிற புகம்பயலைகளை சூடி னதாயும் |
| पर्वताग्रैः | பர்வதசிகரங்களால் | शोणितास्रावकर्दमा च | சுத்தப்பெருந்தால் சேதந்ததாயும் |
| निहतैः | கொல்லப்பட்ட | आसीत् | இருந்தது. |

सा वभूव निशा घोरा हरिराक्षसहारिणी । काजरात्रीव भूतानां सर्वेषां दुरतिक्रमा ॥

| | | | |
|-----------------|---|------------|----------------------------------|
| सा | அந்த | भूतानां | புதைகளுடைய |
| घोरा | பயங்கரமான | दुरतिक्रमा | எப்படியும் தடுக்க முடியாததாயே |
| हरिराक्षसहारिणी | { வானரர்களுக்கும் அரக் கர்களுக்கும் கொண்டு போகிறதான | काजरात्री | கிராமகால இரவு |
| निशा | இரவு | एव | போலவே |
| सर्वेषां | எல்லா | वभूव | இருந்தது. |

सतस्ते राक्षसास्तत्र तस्मिस्तमसि दारुणे । राममेवाभ्यवर्तन्त संसृष्टाः शरवृष्टिभिः ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------|--------------|-------------|-----------------------|
| तत्र | அங்கூடத்தில் | तमसि | இருளில் |
| सतः | அப்பொழுதில் | शरवृष्टिभिः | பாணவர்களைகொண்டு |
| ते | அந்த | संसृष्टाः | கூடினவர்களாய், |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | राम एव | ஸ்ரீராமனையே |
| तस्मिन् | அந்த | अभ्यवर्तन्त | எதிர்த்துவிட்டுக்கள். |
| दारुणे | பயங்கரமான | | |

तेषामापततां शब्दः क्रुद्धान्प्रभिगर्जताम् । उद्वेगं इव समानां समुद्राणां मशुभ्रुवे ॥१९॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|------------|--------------------|
| क्रुद्धानां | கிணங்கொண்டு | उद्वेगं | பிரணயகாலத்தில் |
| अभिगर्जतां | கர்ஜித்து அட்டகாசம் செய்துகொண்டு | समानां | எழு |
| आपततां | விளைந்தோடிவரும் | समुद्राणां | சமுத்திரங்களுடையது |
| तेषां | அவர்களுடைய | इव | போன்றதாக |
| शब्दः | சப்தமானது | मशुभ्रुवे | கேட்கப்பட்டது. |

तेषां रामः शरैः षड्भिः षड् जघान निशाचरान् । निमेषान्तरमात्रेण शितैरग्निशिखोपमैः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|-------------------|-------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तेषां | அவர்களுக்குள் |
| अग्निशिखोपमैः- | அக்னிஜ்வலகைகளை உகந்த | षड् | ஆறு |
| शितैः | கூரிய | निशाचरान् | அரக்கர்களை |
| षड्भिः | ஆறு | निमेषान्तरमात्रेण | கண்ணிமைப்பொழுதி ளேயே |
| शरैः | பாணங்களால் | जघान | புடைத்தார். |

यमशनुश्च दुर्षवो महापार्श्वमहोदरौ । वज्रदंष्ट्रौ महाकायस्तौ चोभौ शुकसारणौ ॥ २१ ॥
ते तु रामेण वाणौघैः सर्वे मर्मसु ताडिताः । युद्धादपसृतास्तत्र सावशेषायुषोऽभवन् ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|-------------|---------------------------------|
| ते | அந்த | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| दुर्षवैः | இதுவகையில் வெல்ல ப்படாதிருந்த | वाणौघैः | பாணவர்க்களால் |
| यमशनुः च | யமசத்துருவும் | मर्मसु | மர்மஸ்தானங்களில் |
| महापार्श्वमहोदरौ | மகாபார்கவனும் மகோதரனும் | ताडिताः | புடைக்கப்பட்டார்கள். |
| महाकायः | பெருமுடல் உடைய | तत्र | அப்பொழுது |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்பித்தரனும் | सर्वे तु | அவர்களெல்லோரும் |
| तौ | அந்த | युद्धात् | யுத்தத்திலிருந்து |
| दभौ च | இருவர்களாகிய | अपसृताः | ஒடினவர்களால் |
| शुकसारणौ | சுகலும் சாரணனும் | सावशेषायुषः | உயிர்மட்டும் தப்பிய வர்களால் |
| | | अभवन् | ஆணர்கள். |

तत्र काश्चनचित्राङ्गैः शरैरग्निशिखोपमैः । दिशश्चकार विमलाः प्रदिशश्च महाबलः ॥२३॥

| | | | |
|-------------------|---|-----------|--------------------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | शरैः | பாணங்களால் |
| महाबलः | மகாசக்தியானருமவர் | दिशः | திக்குகளையும் |
| काश्चनचित्राङ्गैः | { தங்கத்தால் செய்த ய்சித்திரமான உரு கொண்ட | प्रदिशः च | விதிக்குகளையும் |
| अग्निशिखोपमैः | அக்னிஜ்வலகைகளை உகந்த | विमलाः | பிரகாசமாய் விளங்கு உறையகளாக |
| | | चकार | செய்தார். |

ராக்ஷஸாஹிதீவாணீவ்யாஸி த்ரஹமஹலம்

|| 23 ||

தல ரஹமஹலம்
ரஹஸாஹிதீ:
அந்த போர்க்களம்
ஸ்ரீராமரது திருநெல்வேலி
வாஸியப்பட்ட

வாணீ:
வ்யாஸம்
பரணங்களரல்
நிகறத் திருந்தது.

யே த்வந்யே ராக்ஷஸா ஶீஸா ரஹஸ்யாஹிஸுஸ்யே ஸ்திதா: | தைஶி நஸா: சமஶாஸ்ய ஶதஜ்ஜா இவ ஶாஶகம் ||

யே
த்வந்யே
ஶீஸா:
ராக்ஷஸா:
ரஹஸ்ய
ஹிஸுஸ்யே
சமஶாஸ்ய
எந்த
வேறுகில
கொடிய
அரக்கர்கள்
ஸ்ரீராமருக்கு
முன் லிகிலில்
எதிர்ந்து

ஸ்திதா: து
நே ஹி
ஶாஶகம்
ஶதஜ்ஜா:
இவ
நஸா:
நிலை நூர்களை
அவர்களும்
அந்நியில்
கிட்டில்கள்
எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமோ
பாண்டர்கள்,

சுஶர்ணபுஶ்டீ விஸிஸீ: சஶநதீ: சஹஸநா: | ஶபூர ரஜநீ சிவா ஶவ்யோதீஸிவ ஶாரதீ || 24 ||

சஹஸநா:
சஶநதீ:
சுஶர்ணபுஶ்டீ:
விஸிஸீ:
ரஜநீ
ஆரீசக்கணக்காய்
கெளரிக்கிளம்பிலந்த
பொன்பூணிட்ட
பரணங்களரல்
இரவு

ஶவ்யோதீ:
ஶாரதீ
இவ
சிவா
ஶபூர
நீண்டிதீயூச்சிகளரல்
கர்த்தாவத்தியது
பேர
அழகுற்றதாய்
கிளக்கிறது.

ராக்ஷஸானாं ச நிநதீஹீராணாं சாஶி நிஸ்வநீ: | சா ஶபூவ நிஸா ஶிரா ஶூயோ ஶிரதரா ததா ||

சா
ஶிரா
நிஸா
ராக்ஷஸானாं
நிநதீ: ச
ஶிராணாं
அந்த
பரண்களமரண
இரவு
அரக்கர்களுடைய
கொடிக்களரலும்
வாஸாக்களுடைய

நிஸ்வநீ: ச
தரா
ஶூய: ஹி
ஶிரதரா
ஶபூவ
சத்தக்களரலும்
அப்பொழுது
இன்னும்
அதிலவக்களராத
இருந்தது.

தேந ஶவ்நேந ஶஹதா ஶஹ்நேந சஶந்நத: | திரகூட: கந்நராகீரீ: ஶவ்யாஹரதிவாசல: || 25 ||

சஶந்நத:
ஶஹ்நேந
தேந
ஶஹதா
ஶவ்நேந
எக்கும்
கிளம்பில
அந்த
பெரும்
சத்தத்தால்

கந்நராகீரீ:
திரகூட:
ஶவல:-
ஶவ்யாஹர இவ
குடைக்கள் நிகறத்த
கிரகட
மகி
நெசமதுபோலிருந்
தது.

ஶோலாஶூலா ஶஹாகாஸாஸ்தமஸா துத்யவர்தஸ: | சஶரிஸ்வஜ்ய ஶாஹுஶ்யா ஶஶயஸநஜநீசரந ||

ஶஹாகாஸா:
தமஸா
துத்யவர்தஸ:
ஶோலாஶூலா:
பெருந்தேகமமைந்து
இருளை நிகர்த்தவர்
ணமுள்ளவர்களரண
கொளக்கருமென்ற
வர்கள்

ஶரிஸ்வஜ்ய
ஶாஹுஶ்யா
ஶஶயஸந
சரிஸ்வஜ்ய
ஶாஹுஸ்யா
ஶஶயஸ்
அரக்கர்களை
கைகளரல்
கட்டிப்பிடிந்து
நீண்டுகள்.

अङ्गदस्तु रणे शत्रुं निहन्तुं समुपस्थितः । रावणिं निजघानाशु सारथिं च हयानपि ॥

अङ्गदः तु
रणे
शत्रुं
रावणिं
निहन्तुं

அங்கத்தனோடுவானில்
போரில்
சுத்குலாகிய
இந்திரஜித்தை, த
கொல்ல

समुपस्थितः
भाशु
सारथिं च
हयान् अपि
निजघान

எதிர்க்கின் நவனாகி
கிணரவில்
வாரதிகளையுள்
குதிரைகளையும்
ஒழித்தான்.

वर्तमाने तदा घोरे संग्रामे भृशदारुणे । इन्द्रजित्त्वं रथं त्यक्त्वा हताश्वो हतसारथिः ॥

अङ्गदेन महापायस्तत्रैवान्तरधीयत्

॥ ३१ ॥

तदा
भृशदारुणे
घोरे
वर्तमाने
संग्रामे
अङ्गदेन
हताश्वः

அப்பொழுது
மிகக்கடுமையாய்
பலங்கரமாகி
வளம்பெறும்
போரில்
அங்கதனால்
குதிரைகளைச் சரக்கக்

கொடுத்தவனும்

हतवारथिः एव
महापायः
इन्द्रजित्त्वं तु
रथं
रथं
त्यक्त्वा
अन्तरधीयत्

வாரதிகைய சரக்கக்கொ
டுத்தவனுமான
மகா மாயாகியாகிய
இந்திரஜித்தும்
ரத
அவ்விடத்தின்
ரதத்தை
விட்டழந்து
கட்புலனாகாது

எறந்தான்.

तत्कर्म वालिपुत्रस्य सर्वे देवाः सहर्षिभिः । तुष्टुवुः पूजनाहस्य तौ चोभौ रामलक्ष्मणौ ॥

देवाः
सर्वे
सह ऋषिभिः
तौ
रामलक्ष्मणौ

தேவர்கள்
எல்லோரும்
சிஷிகளோடுகூடவும்
அந்த
ஸ்ரீராமரும் லக்ஷ்மண
ரும் கிய

उभौ च
पूजनाहस्य
वालिपुत्रस्य
तत् कर्म
तुष्टुवुः

இருவர்களும்
கொண்டாடுதற்குரிய
வாலிபுத்தல்வனது
அச்செயலை
மெச்சினார்கள்.

प्रभावं सर्वभूतानि विदुरिन्द्रजितो युधि । अहस्यः सर्वभूतानां यो रणोऽभूच्च दुर्जयः ॥

सर्वभूतानि
इन्द्रजितः
युधि
प्रभावं
विदुः
रणे
दुर्जयः

எல்லாப்பிராணிகளும்
இந்திரஜித்தினது
போரில்
வல்லமையை
அறிவார்கள்.
போரில்
கொல்லமுடியாதவன்

यः च
सर्वभूतानां
अहस्यः
भभुत्

எவனோ அவனை
எல்லாப்பிராணிக
ளும்
கட்புலனாகாது மறை
ந்துவிட்டவனாக
ஆய்விட்டான்.

॥ ३४ ॥

तेन ते तं महात्मानं तुष्टा दृष्ट्वा प्रथर्षितम्

ते
महात्मानं
तं
तेन

அவர்கள்
மகத்தான சூற்றன
அவனை [வைய
அவனும்

प्रथर्षितं
दृष्ट्वा
तुष्टा

அவமானமடைந்தவ
னாக
கண்டு
கனித்தார்கள்.

ततः प्रहृष्टाः कपयः समुग्रीवविभीषणाः । साधु साध्विति नेदुश्च दृष्ट्वा शत्रुं प्रधर्षितम् ॥

ततः இப்பொழுது
சமூகிவ- } கம்பிவீரையும் கிரிஷ
விभीஷणा: } ணையமுள் கிட்ட
கபய: ௪ வானரர்களும்
शत्रुं சத்ருவை

प्रधर्षितं அவ்வானரைடைந்த
दृष्ट्वा கண்டு [வஞ்ச
प्रहृष्टा: உற்சாகம்கொண்டவர்
साधु साधु 'பேஷ் பேஷ்' [கனாய்
इति என்று
नेदु: கத்தினார்கள்.

इन्द्रजित्तु तदा तेन निर्जितो भीमकर्षणा ।

तदा இப்பொழுது
इन्द्रजित्तु இத்திரஜித்தேயன்
संयुगे போரில் [ளில்
भीमकर्षणा பெருஞ்செயல் செய்ய
வல்ல

संयुगे वालिपुत्रेण कोपे चके मुदाहणम् ॥

वालिपुत्रेण வாலியின புதல்வனால்
निर्जितः தோல்வி அடைந்தவ
னாய்
मुदाहणं பொறுக்கமுடியாத
कोपे சினத்தை
चके அடைந்தான்.

तेन अर्क्ष

एतस्मिन्नन्तरे रामो वानरान्वाक्यमब्रवीत्

एतस्मिन् இந்த
अन्तरे சமயத்தில்
रामः ஸ்ரீராமர்

॥ ३७ ॥

वानरान् வானரர்களைப் பார்த்
वाक्यं ஒரு சொல்லை [து
अब्रवीत् பின்வருமாறு அருளி
ச்செய்தார் :

सर्वे भवन्तस्तिष्ठन्तु कपिराजेन सङ्गताः

भवन्तः " சீல்கள்
सर्वे எல்லோரும்
कपिराजेन வானரமன்னோடு

॥ ३८ ॥

सङ्गताः சேர்ந்து இருக்கின்ற
तिष्ठन्तु வர்களாய்
ஒரிடத்தில் நின்றுக்
கள்.

स ब्रह्मणा दत्तवस्त्रैर्लोक्यं वाधते भृशम्

ब्रह्मणा " பிரம்மதேவரால்
दत्तवस्त्रै: வரம்பெற்றிருக்கிற
स: அவன்

॥ ३९ ॥

लोक्यं பூகலகையும்
भृशं மிகவும்
वाधते தீம்கிக்கொள்.

भवतापर्यसिद्ध्यर्थं कालेन स समागतः

भ.ता " உக்களது
अर्थसिद्ध्यर्थं மனோதம் கைகூடு
[முது

॥ ४० ॥

स: அவன்
कालेन உமனால்
समागतः துக்கு வந்துசேர்ந்தி
ருக்கொள்.

अथैव क्षमितव्यं मे भवन्तो विगतज्वराः

अथ एव " இப்பொழுதுதான்
क्षमितव्यं எனக்கு
எதிர்த்தும் நேரம்.

॥ ४१ ॥

भवन्तः சீல்கள்
विगतज्वराः காலையற்றிருக்கள்."

सोऽन्तर्धानगतः पापो रावणो रणकर्कशः । अदृश्यो निशितान्वाणान्मुबोचाशनिवर्चसः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|--------------|-------------------------|
| पापः | பாபியும் | निशितान् | கடரிய |
| रणकर्कशः | போரிலெதற்கும் கூணிக் தலையாண | वाणान् | பாணங்களை |
| सः | ஆந்த | अन्तर्धानगतः | மறைந்திருந்து கொண்டு |
| रावणिः | இந்திரஜித்த | अदृश्यः | மறைந்தவண்ணிடி |
| अशनिवर्चसः | இடிவிரிவெரிவெண்ட | मुसोच | பிரியாகித்தான். |

स रामं लक्ष्मणं चैव घोरैर्नागमयैः शरैः । विभेद् समरे कुट्टः सर्वगणेषु राक्षसः ॥४३॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|-----------------------------|
| सः | ஆந்த | घोरैः | மிகத்தீக்குவிளைகிக் கும் |
| राक्षसः | ஆரக்கன் | नागमयैः | ஊர்ப்பம்பமரண |
| समरे | போரில் | शरैः | பாணங்களால் |
| कुट्टः | கிணங்கொண்டவனும் | सर्वगणेषु | உடல் முற்றினும் |
| रामं च | ஓராமையும் | विभेद् | களைத்தான். |
| लक्ष्मणं एव | லக்ஷ்மணனையும் | | |

मायया संवृतस्तत्र मोहयन्वायसौ युधि । अदृश्यः सर्वभूतानां कूटयोधी निशाचरः ।
वबन्ध शरबन्धेन भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ ४४ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-------------|---------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | रावणौ | ராகுப்பின்னைகளைசெய |
| मायया | மாயையால் | रामलक्ष्मणौ | ஓராமலக்ஷ்மணர்களைசெய |
| संवृतः | மறைக்கப்பட்டவனும் | भ्रातरौ | ஊதிரதரர்களைநில |
| सर्वभूतानां | எல்லாப்பிராணிகளுடைய | युधि | போரில் [கூடியும்] |
| अदृश्यः | கண்ணுக்குப்புலப்படாதவனும் | मोहयन् | கலவரமடையச் செய்து |
| कूटयोधी | ஆதர்மப்போர்புரியும் | शरबन्धेन | சரங்களாகிதகரித்தால் |
| निशाचरः | ஆரக்கன் | वबन्ध | கட்டிக்கிட்டான். |

तौ तेन पुरुषव्याघ्रौ क्रुद्धेनाशीविषैः शरैः । सहसा निहतौ वीरौ तदा मैक्षन्त वानराः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|----------|-----------------------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | आशीविषैः | பாம்பின் விஷப்பற்களின் விஷங்கொண்ட |
| वाटराः | வானர்கள் | शरैः | பாணங்களால் |
| क्रुद्धेन | கிணங்கொண்ட | सहसा | தியசென |
| तेन | அவனால் | निहतौ | கட்டப்பட்டவர்களால் |
| पुरुषव्याघ्रौ | புருஷவாத் தமர்களும் | मैक्षन्त | கவனித்தார்கள். |
| वीरौ | வீரர்களுமாய | | |
| तौ | அவ்விருவர்களை | | |

प्रकाशरूपस्तु यदा न शक्तस्तौ बाधितुं राक्षसराजपुत्रः ।

मायां प्रयोक्तुं समुपाजगाम वबन्ध तौ राजसुतो महात्मा

॥ ४६ ॥

| | | | |
|-----------------|--|------------|------------------------|
| राक्षसराजपुत्रः | ஆரக்கரன் னாரின் புதல்வனான ஆவன் | बाधितुं | வருத்த |
| राजसुतो | சக்கரவர்த்தித் திருமக குமாரர்களாகிய | मकः न यदा | முடியாமற்போன பொழுது |
| तौ | அவ்விருவர்களை | मदा-मा | தணிவுற்றவனாய் |
| प्रकाशरूपः तु | கட்புலனாகும் தோற்ற முடையவனுந்ருந்து கொண்டு | मायां | மாயையை |
| | | प्रयोक्तुं | பிரயோகிக்க |
| | | समुपाजगाम | தலைப்பட்டான்; |
| | | तौ | அவ்விருவரையும் |
| | | वबन्ध | கட்டிவிட்டான். |

इत्यर्थे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 16417



युद्धकाण्डे भादितः श्लोकाः 1742

पञ्चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்தைத்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ४५ ॥

नागपाशवन्धः—நாகபாசத்தால் கட்டுவது.

स तस्य गतिमन्विच्छन्न जपुत्रः प्रतापवान् । दिदेशातिवलो रामे दश वानरसूयवान् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-------------|-------------------------|
| प्रतापवान् | பிரதாபசாலியும் | गति | பேரக்கை |
| अतिवलः | பலிவலரும் | अन्विच्छन् | கண்டுபிடிக்க |
| राजपुत्रः | சக்கரவர்த்தித் திருமக குமாரன் | दश | பத்து |
| सः | அந்த | वानरसूयवान् | வானர சூயத்தலை வர்களை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दिदेश | கூக்குறித்தருவினார். |
| तस्य | அவனது | | |

हौ सुपेणस्य दायदौ नीलं च पुवर्गपभम् । अङ्गदं बालिपुत्रं च शरभं च तर्गस्विनम् ॥

विनतं जाम्बवन्तं च सानुप्रस्यं महाबलम् । रूपभं चपेभस्कन्धमादिदेश परन्तपः ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|--|--------------|-----------------------------------|
| परन्तपः | சந்துருந்தலைக் கடத்த அடிக்கும் அவர் | तर्स्विनं | மிருத்தயாகாமகாலி |
| सुपेणस्य | சுபேணனுடைய | शरभं च | சரபனையும், [வாகிய |
| दायदौ | புதல்வர்கள் | विनतं | வினதனையும், |
| हौ | இருவர்களுடைய, | जाम्बवन्तं च | ஜாம்பவானையும், |
| पुवर्गपभम् | வானரோத்தமனாகிய | महाबलं | மிக்க பலம்பொருந்திய |
| नीलं च | நீலனையும், | सानुप्रस्यं | சானுப்பிரஸ்தனையும் |
| बालिपुत्रं | வாலியின் புதல்வனான | रूपभं च | ரூபனையும், |
| अङ्गदं च | அங்கதனையும், | चपेभस्कन्धं | சிவபஸ்கந்தனையும் |
| | | आदिदेश | (துக்காபியத்தால்) நியமித்தார். |

ते संप्रहृष्टा हरयो भीमानुद्यम्य पादयान् । आकाशं विविशुः सर्वे मार्गमाणा दिशो दश ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|--------------------|
| ते | அந்த | மார்மாணா: | தேடிக்கொண்டு |
| हरयः | காணார்கள் | भीमान् | பெரிய |
| सर्वे | எல்லோரும் | पादयान् | விருகடங்களை |
| संप्रहृष्टा: | களிப்புற்றவர்கள் | उद्यम्य | கைரிவேந்திக்கொண்டு |
| दश | பத்து | आकाशं | ஆகாயத்தில் |
| दिशः | திசைகளிலும் | विविशुः | புகுந்தார்கள். |

तेषां वेगवतां वेगमिषुभिवेगवत्तरैः । अस्त्रवित्परमास्त्रैस्तु वारयामास रावणिः ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|---------------------|
| अस्त्रवित् | அஸ்திரங்களில் சிபு | वेगं | வேகத்தை |
| | ஊனாகிய | वेगवत्तरैः | அதிவேகமுடைய |
| रावणिः | இந்திரஜித்த | इषुभिः | அம்புகளாலும் |
| वेगवतां | வேகமாய்ச் செல்லும் | परमास्त्रैः तु | சிறந்த அஸ்திரங்க |
| तेषां | அவர்களுடைய | वायामास | தடுத்தான். [னாலும்] |

तं भीमवेमा हरयो नाराचैः क्षतविग्रहाः । अन्यकारे न ददृशुर्मघैः सूर्यमिवाहृतम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-----------|--------------------|
| भीमवेगाः | மகாவேகங்களினால் | आवृत् | மறைக்கப்பட்ட |
| हरयः | காணார்கள் | सूर्यं | சூரியன் |
| नाराचैः | நாராசங்களால் | अ-वकरे इव | இருளில் காணமுடியாத |
| क्षतविग्रहाः | உடல்புண், பட்டவர்கள் | | ததுபோல |
| मेघैः | மேகங்களால் | ते | அவளை |
| | | दृशुः न | காணமுடியவில்லை. |

रामलक्ष्मणयोरेव सर्वदेहभिदः शरान् । भृशमावेशयामास रावणिः समितिञ्जयः ॥ ७ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------------|----------------|
| समितिञ्जयः | பேரில் வெற்றிபெற்ற | शरान् | பாணங்களை |
| | வனாகிய | रामलक्ष्मणयोः एव | சூராமலக்ஷ்மணர் |
| रावणिः | இந்திரஜித்த | | களிடத்திலேயே |
| सर्वदेहभिदः | எல்லா உடையவர்களை | भृश | அதிகமாக |
| | யும் துடைக்கும் | अवेशयामास | விடுத்தான். |

निरन्तरशरीरौ तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । क्रुद्धेनेन्द्रजिता वीरौ पन्नगैः शरतां गतैः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|------------------|
| तौ | அந்த | इन्द्रजिता | இந்திரஜித்தால் |
| भ्रातरौ | சகோதரர்களும் | शरतां | பாணகுபத்தை |
| वीरौ | வீரர்களினால் | गतैः | கொண்ட |
| रामलक्ष्मणौ | சூராமலக்ஷ்மணர்கள் | पन्नगैः | சர்ப்பங்களால் |
| | இருவரும் | निरन्तरशरीरौ | இடைவெளியற்ற |
| क्रुद्धे | சினக்கொண்ட | | உட்கிணர் ஆயினர். |

तयोः क्षतजमार्गेण सुखाय रुधिरं बहु । तावुभौ च प्रकाशेते पुष्पिताविव किञ्चुको ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|-------------------|
| तयोः | அய்ளி நவர்களுடைய | तौ | அந்த |
| क्षतजमार्गेण | புண்களின் வழியாய் | वभौ | இருவரும் |
| रुधिरं | இரத்தம் | किञ्चुकी | இரண்டுபலாசமரங்கள் |
| बहु | அதிகமாக | पुष्पिभौ इव | பூச்சிருப்பனபோல் |
| सुखाय | பெருகிற்று. | प्रकाशेते | விளங்கினார்கள். |
| च | இரத்தமும் | | |

ततः पर्यन्तरक्ताक्षो भिन्नाङ्गनचयोपमः । रावणिभ्रातरौ वाक्यमन्तर्धानगतोऽवसीत् ॥ १० ॥

| | | | |
|------------------|---|--------------|---|
| ततः | அப்பொழுது | भ्रातरौ | சகோதரர்கள் இரு |
| पर्यन्तरक्ताक्षः | முற்றிலும் சிவந்த கண்களுற்றவனும் | वाक्यं | வகையும் பார்த்து |
| भिन्नाङ्गनचयोपमः | பிளவுற்ற அஞ்சன மணியை நிகர் க்தவனு மான | अन्तर्धानगतः | ஒரு சொல்லை மறைவிட்டுருந்து கொண்டே |
| रावणिः | இந்திரஜிதன் | अवसीत् | (பின்வருமாறு) மொழிந்தான். |

पुद्ध्यमानपनालक्ष्यं शक्रोऽपि त्रिदशेश्वरः । द्रष्टुमासादितुं वाऽपि न शक्तः किं पुनर्दुवाम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------------|------------------|
| विद्योष्वरः | "தேவர்களுக்கிட புணை | आसादितुं | கொடுக்கவும் |
| शक्रः अपि | இந்திரனும் | द्रष्टुं वा अपि | காணவக்கூட |
| अनालक्ष्यं | கட்புலனாகாமல் | शक्तः नः | திறையற்றவன். |
| पुद्ध्यमानं | பேர்ப்புரியும் என்கை | युवां | நீங்கள் இருவரும் |
| | | कि पुनः | எம் மாதிரும் ? |

मावृताविषुजालेन राघवौ कङ्कपत्रिणा । एष रोषपरीतात्वा नयामि यपसादनम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------------|--------------|--|
| इषुजालेन | "சரக்கூட்டத்தால் | रोषपरीतात्वा | கிணங்கொண்டே |
| मावृता | மறைக்கப்பட்ட | कङ्कपत्रिणा | முந்த மனத்தனாகி |
| राघवौ | சகோதரர்கள் சிய உக்கரிசுவகையுள் | यपसादने | ஒரு கர்ப கணியால் |
| एषः | இந்த நான் | नयामि | யமனது இல்லத்திற்கு கொடுப்புகிறேன்." |

एवमुक्त्वा तु धर्मज्ञौ भ्रातरौ रामरक्षणौ । निर्विभेद शितैर्वाणैः प्रजहर्ष ननाद् च ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|------------|--------------------------|
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | शितः | கூரிய |
| उक्त्वा तु | சொல்லியபிறகு | वाणिः | நினைகனால் |
| धर्मज्ञौ | தம்மத்தில் பந்தனைய | निर्विभेद | தனே க்தான். |
| भ्रातरौ | சகோதரர்களான | ननाद् | காழித்தார்கள். |
| रामरक्षणौ | சூராமலகந்தமனவரப் பார்த்து | प्रजहर्ष च | ஆனந்தக்கத்தாடி ஒன்றி. |

भिन्नाङ्गनचपश्यापो विस्फार्य विपुलं धनुः । भूयो भूयः शरान्वोरात्विससर्ज महासृष्टे ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|---------------------|
| மஹாசூதே | } பெரும் போரில் பிளவுண்ட அஞ்சல பர்வதத்தை சிகர்த் துக் கறுத்த அவன் | விசுபார்ய | டங்காரம் செய்து, |
| भिन्नाङ्गनचप- | | போரன் | தீயமாக விளைவிக்கும் |
| श्यामः | | சரான் | பாணக்களை |
| विपुलं | பீண்ட | भूयः भूयः | பீண்டும் பீண்டும் |
| धनुः | கிண்கி | विषमर्षे | எய்தான். |

ततो मर्मसु मर्मज्ञो मज्जयन्निशितान्छरान् । रामलक्ष्मणयोर्वीरो ननाद च मुहुर्मुहुः ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|----------------|
| மர்மசு: | மர்மம் தெரிந்த | निशितान् | கூரிய |
| वीरः च | வீரனான அவன் | शरान् | பாணக்களை |
| रामलक्ष्मणयोः | ராமலட்சுமணன் | मज्जयन् | பாய்ச்சியவனாய் |
| | களுகைய | ततः | அதனால் |
| मर्मसु | மர்மம், தான்களில் | मुहुः मुहुः | மேன்மேலும் |
| | | ननाद | ஆரவாரித்தான். |

वद्धौ तु शरबन्धेन तावुभौ रणमूर्धनि । निमेषान्तरमात्रेण न शोकतुस्तीक्ष्णितुम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------------|---------------------|
| வடூ | அந்த | निमेषान्तरमात्रेण | ஓர் இணைப்பொழுதி |
| उभौ | இருவரும் | | லேயே |
| रणमूर्धनि | போர் முனையில் | श्रीक्षितुं तु | கண்டிழித்தாய் |
| शरबन्धेन | கண்களாகிய கட்டி | | பார்க்கவும் |
| | ஊல் | न शोकतुः | சக்தியற்றவர்களானார் |
| वद्धौ | கட்டப்பட்டவர் | | கள். |
| | களாய் | | |

ततो विभिन्नसर्वाङ्गौ शरशल्याचितावुभौ । ध्वजाधिव महेन्द्रस्य रज्जुमुक्तौ प्रकम्पितौ ॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|-----------------------|
| ततः | அப்பொழுது | रज्जुमुक्तौ | கவித்திரினின்றும் அகி |
| उभौ | அவ்விருவரும் | | ழ்த்துவிடப்பட்ட |
| शरशल्याचितौ | { பாணக்கூர் முனை களால் பிடிக்கப் பெற்றவர்களாய் | महेन्द्रस्य | மேட்ரேய், திரளது |
| | { உடல்முழுதும் கரையப் படுத்தப் பெற்றவர் | ध्वजौ इव | கொடிகள் போன்றவர் |
| विभिन्नसर्वाङ्गौ | களாய் | | களாய் |
| | | प्रकम्पितौ | சடுக்கமுற்றார்கள். |

तौ संप्रचलितौ वीरौ मर्मभेदेन कश्चितौ । निपेततुर्द्वेषासौ जगत्यां जगतीपती ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------|------------------|------------|---------------------|
| जगतीपती | கோககரத்தர்களும், | मर्मभेदेन | உயர்கிண்கிற் அடிபட் |
| महेशासौ | சிறந்த கிண்கிணி | कश्चितौ | வாட்டமுற்று [உதால் |
| | களுள், | संप्रचलितौ | உடல் சடுக்கமுற்றது |
| वीरौ | வீரர்களான | जगत्यां | தனையில் |
| तौ | அவ்விருவரும் | निपेततुः | சாய்ந்தனர். |

वीरशयने वीरौ शयानौ रुधरोक्षितौ । शरवे हृतसर्वाङ्गावातौ परमपादितौ ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------------|---|
| वीरौ | வீரர்களான | शरवेहितसर्वाङ्गौ | { <ul style="list-style-type: none"> உடல்முற்றிலும் ஆம் புதைக்கப்பட்டவர் களாய் } |
| नौ | அவ்விருவர்களும் | परमपादितौ | |
| वीरशयने | வீரப்படுக்கையில் | आतौ | மிகவும் வாட்டமுற்று மனம் கசிந்தனர். |
| शयानौ | படுத்து | | |
| रुधरोक्षितौ | சத்தகத்தில் தேய்ந்து | | |

न अविद्धं तयोर्गत्रि बभूवाङ्गुलपन्तरम् । नानिनिम्नं न चास्तव्यपाकराम्रादजिह्वगैः ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|----------|--------------------------|
| तयोः | அவ்விருவர்களது | न बभूव | இல்லை. |
| गत्रि | உடலில் | अनिमिष न | துணைக்கப்பட்டதது மிக்கி. |
| आ-राम्रात् | நகம் முதற்கொண்டு | अजहं च | புண்ணாசாத இடமும் |
| अंगुलं अन्तरं द्वि | விரங்கிடையாவது உட | न | இல்லை. |
| अविह्वगैः | பாணக்களால் | | |
| अविद्धं | அடிபடாததாக | | |

सौ तु क्रूरेण निहतौ रक्षसा कापरुपिणा । अमृद् सुसुवतुस्तीव्रं जलं पञ्चवणावित्र ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|----------|-----------------------|
| कूरेण | கொடியவனும் | पञ्चवणौ | இரண்டு அருளிகள் |
| कामरुपिणा | வேண்டுகோடி வடிவக் கொ | जल | இலக்கை |
| | ள்ளவல்லவனுமான | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே, |
| रक्षसा | அசக்கனும் | अमृक् | இரத்தத்தை |
| निहतौ | புன்படுத்தப்பட்ட | सं | உதிரமாக |
| सौ तु | அவ்விருவர்களும், | सुसुवतुः | பெருக்கினர். |

पयात् प्रथमं रामो विद्धो मयसु मार्गणैः । कौशादिन्द्रजिता येन पुरा शक्रो विनिर्जितः ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|---------------------|
| पुरा | முன்னொருக்கால் | कौशात् | கொங்கொண்டு |
| येन | எவனும் | मयसु | உயிர்வீசுகளில் |
| शक्रः | இந்திரன் | मार्गणैः | அப்புகளால் |
| विनिर्जितः | ஐதீக்கப்பட்டானே, | विद्धः | அடிக்கப்பட்ட |
| | அந்த | रामः | ராமர் |
| हन्द्रजिता | இந்திரஜித்தால் | प्रथमं | முதலில் |
| | | पयात् | சொல்லில் சரவந்தார். |

स्वमपुद्गैः भसन्नादैर्योगतिभिराशुगैः । नारा वैरिनाराचैर्भहैरञ्जलिकैरपि ॥

विष्याथ वत्सदन्तैश्च सिंहदंष्ट्रैः क्षुरैस्तथा ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------------|--------------------|
| स्वमपुद्गैः | பெண் முகைகளை | भहैः | பள்ளமென்பனவும் |
| | புகைபனவும் | अशक्तिकैः अपि | உந்துகலிகமென் |
| भसन्नादैः | பண்பணப்பாண முகை | वत्सदन्तैः च | வசுதைத்தமென் |
| | களைபுகைபனவும் | | பணவும் |
| अधोगतिभिः | ஆழ்க்குது பாடல்கள் த | सिंहदंष्ट्रैः | வயிற்றுதற்க்குட்டி |
| | கைகளும்த | | மென்பனவும் |
| नागचैः | நகராமென்பனவும் | क्षुरैः तथा | கூர்மென்பனவு |
| अभनाराचैः | அந்தந்தகாரகமென்ப | आशुगैः | பாணக்களால் [முனை |
| | களையும் | विष्याथ | துணைத்தார்கள். |

स वीरशयने शिशये विप्रमादाय कार्मुकम् । भिन्नमुद्रिपरीणाहं त्रिणतं स्वमभूषितम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|--------------------|--------------------|
| ச: | அவர் | भिन्नमुद्रिपरीणाहं | தளர்த்திய கைப்பிடி |
| स्वमभूषितं | பொன்னால் அலங்கரிக்கப்பட்டதும் | विप्रमादाय | வையடைபதாயும் |
| त्रिणतं | மூன்றிடங்களில் வளைவுற்றதுமான | भादाय | நான் விழுந்ததாயும் |
| कार्मुकं | கோதண்டத்தை | वीरशयने | கையிற்கொண்டவண்ணமே |
| | | शिशये | விசப்படும்வகையில் |
| | | | படுத்தினிட்டவர். |

वाणपातान्तरे रामं पतितं पुरुषर्षभम् । स तत्र लक्ष्मणो दृष्ट्वा निराशो जीवितेऽभवत् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|----------|----------------|
| तत्र | அப்பொழுது | पतितं | விழுந்தவராக |
| सः लक्ष्मणः | அந்த லக்ஷ்மணர் | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| पुरुषर्षभं | புருஷர்த்தமாயிய | जीविते | உயிரின்மீது |
| रामं | ராமரை | निराशः | ஆகையொழிந்தவராக |
| वाणपातान्तरे | சரண்களாலாய படுக்கையில் | अभवत् | ஆனார். |

रामं कमलपत्राक्षं शरब्धपरिक्षतम् । शुशोच भ्रातरं दृष्ट्वा पतितं धर्णीतले ॥ २६ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|----------|--------------------|
| कमलपत्राक्षं | தாமரைக்கண்ணாலும் | धर्णीतले | தளையில் |
| भ्रातरं | தகையனான | पतितं | விழுந்துவிட்டவராய் |
| रामं | ராமரை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| शरब्धपरिक्षतम् | பாணக்கட்டுகளால் செயலற்றவராய் | शुशोच | மனம் துடித்தார். |

हरयश्चापि तं दृष्ट्वा संतापं परमं गताः । शोकात्तश्चुक्रुशुर्घोरमदुपूरितलोचनाः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|----------------------|
| हरयः च अपि | வானர்களும் | शोकात्: | கோகத்தில் முழுகி |
| तं | அவரை | मदुपूरित | } கண்ணீரால் நிரம்பிய |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | लोचनाः | |
| परमं संतापं | மிகுந்த துயரத்தை | घोः | அவழிப்பராய் |
| गताः | அடைந்தார்கள். | चुक्रुशुः | சதறத்தலைப்பட்டனர். |

बद्धौ तु वीरौ पतितौ शयानौ तौ वानराः संपरिवार्य तस्थुः ॥ २८ ॥

| | | | |
|--------|-------------------|------------|-------------------|
| बानराः | வானர்கள் | वी वीरौ तु | அந்த இரண்டு வீரர் |
| पतितौ | கட்டுண்டு | सपरिवार्य | குழந்து [கணையும்] |
| शयानौ | கிடை விழுந்து | तस्थुः | நின்றனர். |
| वानराः | படுத்திக்குக்கும் | | |

समागता वायुसुतमसुख्या विषादमार्ताः परमं च जम्बुः ॥ २९ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------|--------|-----------------------------|
| वायुसुतमसुख्याः च | வானுமார் முதலிய வர்களும் | परमं | இன்னது செய்கது என்று அறியாத |
| समागताः | வந்தகேர்த்து | विषादं | ஏக்கத்தை |
| मार्ताः | கோகத்தில்முழுகி | जम्बुः | எய்தினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाण्डे पञ्चत्वारिंशः सर्गः ॥



षट्चत्वारिंशः सर्गः—சாற்பத்தாருவது ஸர்க்கம். || 14 ||

सुग्रीवाद्यनुशोचनम्—சுகிரீவர் முதலியவரது தயரம்.

ततो ह्यं पृथिवीं चैव वीक्षमाणा वनौकसः । ददृशुः सन्ततो वार्ष्णेभ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|---------|--------------------------------------|-------------|------------------------------|
| सतः | அப்பொழுது | रामलक्ष्मणौ | ஸ்ரீராமரையும் லக்ஷ்மணரையும் |
| वनौकसः | வானைகள் | वीक्षमाणाः | வெருண்டு பார்க்கின் |
| वाग्नेः | பாணங்களால் | ह्यं च | தவர்களால் |
| सन्ततो | இடைவெளியின் தி முடப்பட்டிருக்கும் | पृथिवीं च | ஆகாயத்தையும் |
| भ्रातरौ | சகோதரர்களான | दृशुः | பூமியையும் பார்த்தார்கள். |

वृष्टेषोपरते देवे कृतकर्मणि राक्षसे । आजगामाथ तं देशं समुग्रीवो विभीषणः ॥ 2 ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|-----------|------------------|
| देवे | (மணமுக்)கடவுள் | तं | அந்த |
| वृष्टा इव | மணமுபோழித்தது போல | देशं | இடத்திற்கு |
| राक्षसे | ஆரக்கன் | अथ | அப்பொழுது |
| कृतकर्मणि | தன் தொழிலைச்செய் துமுடித்தவராய் | विभीषणः | விபிஷணன் |
| उपरते | ஒய்த்தவுடன் | समुग्रीवः | சுகிரீவ ஸகோதராய் |
| | | आजगाम | வந்து சென்றார். |

नीलद्विविदमैन्द्राश्च सुपेणसुमुखाङ्गदाः । तूर्णं हनुपता सार्धमन्वशोचन्त राघवौ ॥ 3 ॥

| | | | |
|--------------------------|--|------------|----------------------------------|
| नीलद्विविदमैन्द्राः | நீலன், தலியிதன், எமந்தன் இவர்கள் | तूर्णं | கிரைவில் |
| सुपेण- सुमुखाङ्गदाः च | ஸுபேணன், ஸுமு கன், அங்கதன் இ வர்களும், | सार्धं | சுட |
| हनुपता | ஹனுபரரு -ன் | राघवौ | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர் களை சேனைத்து |
| | | अन्वशोचन्त | வருத்தினார்கள். |

अचेष्टौ मन्दनिश्वासौ शोणितेन परिप्लुतौ । शरजालाचितौ स्तब्धौ शयानौ शरतल्पयोः ॥
निश्वसन्तो यथा सपौ निशेष्टौ मन्दविक्रमौ । रुधिरस्त्रावदग्धाङ्गौ तापनीयाविव ध्वजौ ॥
तौ वीरशयने वीरौ शयानौ मन्दचेष्टौ । यूथैस्सौः परिप्लुतौ वाष्पव्याकुललोचनैः ॥ ६ ॥
राघवौ पतितौ दृष्ट्वा शरजालसप्लुतौ । बभूवुर्व्यथिताः सर्वे वानराः सविभीषणाः ॥७॥

| | | | |
|------------------|--|------------|--------------------------|
| सविभीषणाः | விபிஷணனுடனிருந்த | परिप्लुतौ | முடிப்பட்டவர்களாய் |
| वानराः | வானைகள் | व रशयने | விடப்படுக்கையில் |
| सर्वे | எல்லோரும் | मन्दचेष्टौ | செயங்குன்றியவர் களாய் |
| सैः | அந்த | शयानौ | படுத்திருக்கும் |
| वीरव्याकुललोचनैः | கண்ணீரால் கண்களைய கண்களை மூடிக்கும் | वीरौ | வீரர்களான |
| वृष्यैः | சேனைத்தலைவர்களால் | तौ | அந்த |

| | | | |
|--------------------|------------------------------------|-----------------|--|
| राज्यी | ஸ்ரீராமனாரயும் ஸகந்தம ணையும | मन्त्रविद्या | சீதார்த்து |
| अवेष्टी | அவைசுவந்தவர்களையும | विशाला- शिखी | இன்னும் பொலிந்த கொண்டிருக்கும் சத் தக்கையுட்பெற்ற பாணங்களைரடுகடிய சரீரங்களைபுடைய வர்களையும் |
| मन्दिवासौ | பலவீனமாய் மூச்சு விடபவர்களையும் | सप्तशय्या | தங்கமயமான |
| शोणितेन परिहृतौ | இரத்தத்தால் சுத்தவர்களையும் | ध्वजौ | இரண்டு தவண்களை |
| शरणाकारिणी | பாணக்களால் பாயப் பெற்ற | इव | போல் இருக்கிறவர்க ளையும் |
| सख्यौ | எக்கும் புண்பட்டு | शरणासमाहृतौ | பாணக்குவியல்களால் மறைக்கப்பட்டவர் களையும் |
| शरतक्षयोः | பாணக்களாரண படுக்கைகளில் | पतितौ | தலையில் வீழ்ந்து கிடப்பவர்களையும் |
| शयानौ | படுத்துக்கிடக்கிறவர் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| सर्पौ | பாம்புகள் [களையும் | अधिताः | அதிசீரோகனைபுற்ற |
| यथा | போலவே | वभूतुः | ஆனார்கள். [வர்களாய் |
| निभसन्तौ | பெருமூக்கவிடுபவர் களையும் | | |
| निशेष्टी | வணுவொடுக்கி | | |

अन्तरिक्षं निरीक्षन्तो दिशः सर्वाश्च वानराः । न चैनं माययाच्छन्नं ददृशु रावणिं रणे ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|----------|-------------------------------------|
| वानराः | வானர்கள் | रणे | போரில் |
| अन्तरिक्षं | ஆகாயத்தையும் | मायया | மாயையால் |
| दिशः | திக்குகள் | च्छन्नं | மறைக்கப்பட்டிருந்த |
| सर्वाः च | எல்லாவற்றையும் | एवं | இந்த |
| निरीक्षन्तः | உற்றுப்பார்க்கின்ற வர்களாகி | रावणिं च | இந்திராஜித்தை மட்டும் காணவில்லை. |
| | | ददृशुः न | |

ते तु मायाप्रतिच्छन्नं माययैव विभषणः । वीक्षणो दृशथि भ्रतुः पुत्रव्यस्थितम् ॥

| | | | |
|------------------|------------------|----------|---------------------------------|
| भव | அப்பொழுது | पुत्रं | புதல்வனுடைய |
| विभीषणः तु | விபீஷணர் மட்டும் | तं | அவனை |
| मायाप्रतिच्छन्नं | மாயையால் மறைந்து | मायया एव | மாயையினாலேயே |
| भवसिधत् | நின்ற | वीक्षणोः | கவனித்துப்பார்க்கின்ற நவராய் |
| भ्रातुः | தமையனது | दृशो | கண்டுக்கொண்டார். |

सप्तमतिमकर्माणमपतिद्वन्द्वमाह्वये । ददृशन्तहितं वीरं चरदानाद्विर्भाषणः ॥
तेजसा यशसा चैव विक्रमेण च संयुतम् ॥ १० ॥

विभीषणः
अप्रतिमकवीर्यं
आहूये
अपनिहृष्ट
वशमात्
तेजसा च

விபிஷணர்
ஒப்பற்ற செயல்புரி
வனும்,
பேரில்
நிகரற்றவனும்,
வாழ்விப்பற்றதால்
ஆண்மையானும்,

वशा एव
विक्रमेण च
संयुतं
धीर
ते
अमर्हि
इदं

புறநூலும்,
ஆற்றலானும்
சூடிய
கீரணை
அவனை
மறைநீதிருப்பவனாக
கவனித்தார்.

इन्द्रजिन्वात्मनः कर्म तौ शयानौ समीक्ष्य च ।

इन्द्रजिन्
आत्मनः
कर्म तु
च
शयानौ
तौ
समीक्ष्य

இந்திரஜிந்தன்
தனது
செயலையும்,
அதனும்
படுத்துக்கிடக்கும்,
அவ்விருவர்களையும்
கவனித்த

उवाच परमप्रोतो हर्षयन्सर्वनैकतान् ॥

उवाच
परमप्रोतः
सर्वनैकतान्
हर्षयन्
उवाच

மிகமனப்பீதிகொண்டவனாக
அரக்ககொல்லவேண்டிய
உற்சாகப்படுத்திக்
கொண்டு
பின்வருமாறு
கொன்னான் :

दूषणस्य च हन्तारौ खरस्य च महाबलौ ।

दूषणस्य च
खरस्य च
हन्तारौ
महाबलौ

“தூஷணனையும்,
கரனையும்,
கொன்ற
மிகுந்த பலசாலிகள்
என்ன

सादितौ मामकैर्वागैर्भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥

सादितौ
मामकैः
वागैः
भ्रातरौ

ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்கள்
என்கிற
இரு ஸநேஹாதாரர்
எனது [களும்
பாணக்களரல்
ஒழிக்கப்பட்டார்கள்.

नेमौ मोक्षयितुं शक्यावेतस्मादिषुवन्धनात् ।

नेमौ
मोक्षयितुं
शक्यैः
समागम्य अपि

“நீவிடுகண்களையும்
சரிட்ட
தேவர்கள் அஸூரர்
என்றோராலும் [கள்
ஒன்றுதேர்த்ததுகூட

सर्वैरपि समागम्य सर्विसहैः सुरासुरैः ॥

सर्वैरपि
समागम्य
सर्विसहैः
सुरासुरैः

இந்த
பாணக்கட்டிணின்ற
விடுவிக்க
இவ்விருவர்கள்
முடியாதவர்கள்.

यत्कृते चिन्तयानस्य शोकात्स्य पितृषु । अस्पृष्टा शयनं मात्रैस्त्रियामा याति शर्वरी ॥

कृत्स्नेयं यत्कृते लङ्का नदी वर्षाश्ववाकुला । सांड्यं मृदहरोऽनर्थः सर्वेषां निहतो मया ॥

यत्कृते
चिन्तयानस्य
शोकात्स्य
मम
पितुः

“எவன் காரணமாய்
கவலைபற்று
துயரத்தில் மூழ்கிக்
கிடக்கும்
எனது
தகைதக்கு

श्रियामा
शर्वरी
शयनं
मात्रैः
याति

மூன்று யாபங்களை உள்
சியதான
இரவு
படுக்கையை
உடலைச் சாய்க்காமலே
கழித்ததோ,

| | | | |
|--------|-------------------------|--------|-------------------|
| யுக்தே | எய்தினருவன் காரணமாய் | ஆகூலா | களக்கிவிட்டதோ, |
| ஓய் | இந்த | ஸி: | அபக்டர்ப்பட்ட |
| உஹா | இலக்கை | சுவேயா | எல்லையுக்கும் |
| ஊயா | எல்லாமும் | மூலஹ: | மூலவேலையறுத்து |
| யயாது | மனமுக்காலங்களில் | அநயி: | தீவகுவினாவிக்கும் |
| மயி | நதியானது | யயி | இவன் |
| ஓய | எப்படியோ அப்படி | யயா | என்னும் |
| | | நிஹ: | கொல்லப்பட்டான். |

रामस्य लक्ष्मणस्यापि सर्वेषां च वनौकसाम् । विक्रमा निष्फलाः सर्वे यथा शरदि तोषदाः॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------|-----------------|
| ராமஸ்ய | * ராமனுடையவும் | சर्वே | எல்லாம் |
| லக்ஷ்மணஸ்ய அபி | லக்ஷ்மணனுடையவும் | சாரதி | சரக்காலத்தில் |
| வனௌகஸாம் | வனவர்கள் | தோஷதா: | மேகங்கள் |
| சர்வேயா | எல்லோருடையவும் | யதா | போலவே |
| விக்ரமா: | போர்முயற்சிகள் | நிஷ்கலா: | பயனற்றவைபாலின.* |

एवमुक्त्वा तु तान्सर्वास्त्राक्षसान्परिपार्श्वतः । यूयपानपि तान्सर्वास्ताडयामास रावणिः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|--|
| ராவணி: | இந்திரஜித்து | ஏவ் | மேற்கண்டவாறு |
| பரிபாஸ்த: | தன்பக்கத்திலிருந்து | உக்தவா | கொல்லிவிட்டு |
| தான் | அந்த | தான் | அந்த |
| ராஸ்தான் | அரக்கர்கள் | யூயபான் | செனைத்தலைவர்கள் |
| ஸர்வான் து | எல்லோரையும் | ஸர்வான் அபி | எல்லோரையும் |
| | (பார்க்கு) | ஸாடியாமாஸ | யின்வருமாறு புடைத்து கொழிக்கவானான். |

नीलं नवभिराहत्य पैन्दं च द्विविदं तथा । त्रिभिस्त्रिभिरद्विविद्वस्तताप मवरेषुभिः ॥१८॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|---------------|---------------------------|
| அநிஹ: | சுதருளப் பறாடகளுண் அவன் | தயா | அப்படியே |
| நயபி: | ஒன்பது | பைன்ட் | வயந்தினையும், |
| மவரேஷுபி: | சிறந்த பாணிகளால் | திரிவித் ய | த்கிவிதனையும் |
| மீக | கீவண | திரிபி: விபி: | மும்மூன்று பாணக் களால் |
| பாஹ்ய | அடித்துவிட்டு | ஸதாப | புண்படுத்தினான். |

जाम्बवन्तं महेश्वसो विद्ध्वा बाणेन वक्षसि । हनुमतो वेगवतो विससर्ज शरान्द्रश ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------|-----------------------|
| மஹேஸாஸ: | சிறந்த வில்லாளியான | வேகவத: | கடு வேகமுள்ள |
| ஜாம்பவந்த் | இம்பவரண [அவன் | ஶர | பத்து |
| வாணேன | ஒரு பாணத்தால் | சரான் | களைகளை |
| வக்ஷஸி | மார்பில் | ஹனுமத: | தூண்டாமுக்கு |
| விஶ்வ | கூவித்து | விசஸர்ஜ | குறிவைத்து எய்தினான். |

गवाक्षं शरभं चैव द्वावप्यमितवेजसौ । द्वाभ्यां द्वाभ्यां महावेगो विव्याध युधि रावणिः ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|------------------|
| யுधि | போசில் | அமிதவேசை | அனவுகடந்த தேஜ |
| மகவேச: | மகத்தான சக்தி | | ஸ்கிகளான |
| | படைத்த | ஐ அபி | அவ்விருவகையும் |
| ராவணி: | இந்திரஜித்து | ஐயா ஐயா | இரண்டிரண்டு பாண |
| கவாக்ஷ ச | கவாக்ஷன் என்றும் | | ய்களால் |
| சரம் எவ | சரபினென்றும் | விவ்யா | தன்புறுத்தினான். |

गोलाङ्गलेश्वरं चैव बालिपुत्रपथाङ्गदम् । विव्याध बहुभिर्बाणैस्त्वरमाणोऽय रावणिः ॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------|--------------------|
| அய | அகன்மேல் | வாலிபுத் | வாலியின் புதல்வனான |
| ராவணி: | இந்திரஜித்து | அஹர் எவ | அக்கதனையும் |
| த்வரமண: | பாபாப்புற்றவனாய் | பஹி: | பல |
| கோலாங்கலேசர் ச | கொண்ட முகறு | வாண: | பாணங்களால் |
| | களின் தலைவனையும் | விவ்யா | தன்புறுத்தினான். |

तान्वानरवरान्भिस्त्वा शरैरग्निशिखोपमैः । ननाद बलवांस्तत्र महासन्वः स रावणिः ॥

| | | | |
|----------|------------------|---------------|----------------|
| தன | அப்பொழுது | வானவரன் | வானரோத்தமர்களை |
| வகவந் | மிக்க பலசாலியும் | அग्निशिखोपमैः | அக்ளிஷுவகிகளை |
| மகாசன்வ: | மிக ஆண்மைபுடைய | | கொத்த |
| | வனுமான் | சரீ: | பாணங்களால் |
| ச: | அந்த | விவ்யா | வெருட்ட |
| ராவணி: | இந்திரஜித்து | நநாத் | அட்டகாசம் செய் |
| சாந் | அந்த | | தான். |

तानर्दयित्वा बाणोष्खासयित्वा च वानरान् । मजहास महाबाहुर्वचनं चेदमब्रवीत् ॥२३॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|--------------|
| மகாசாஹு: | தேவன் வலிமையுற்ற | காசயிவா ச | பயமுறுத்தி |
| சாந் | அந்த [அகன் | மஜஹா | கொக்கத்தான். |
| வானரன் | வானரர்களை | இவ் | சின்வரும் |
| வாணோச: | பாணவருவங்களால் | வசன ச | கொக்கையும் |
| அர்ଦயிவா | தன்புறுத்திவிட்டு | அவரீத் | கொன்னான்: |

शरब्धेन घोरेण मया बद्धौ चमूमुखे । सहितौ भ्रातरावेतौ निशामयत राक्षसाः ॥२४॥

| | | | |
|---------|------------------|----------|---------------------|
| ராக்ஷச: | "அரக்கர்கள்! | घोरेण | வின்போகாத |
| சமூமுகை | கொக்களைத்தில் | சரப்-தென | பாணக்கட்டால் |
| சஹிதௌ | இணையினாத | மயா | என்றும் |
| அநரௌ | சகோதரர்கள். இவ | வஹௌ | கட்டப்பட்டுவிட்டார் |
| ஸௌ | இவ்வருவர்களையும் | நிசாமயத | பாருங்கள்." [கண்; |

एवमुक्तास्तु ते सर्वे राक्षसाः कूटपोथिनः । परं विस्मयमाजन्मुः कर्मणा तेन हर्षिताः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|----------|----------------|
| एवं | இவ்வீதம் | तेन | அந்த |
| उक्ताः | கொல்லப்பட்ட | कर्मणा | செய்வால் |
| ते | அந்த | हर्षिताः | களிப்படைந்தவர் |
| कूटपोथिनः तु | வஞ்சகமாய் போர்புரி வதில் தோந்த | परं | அனைந்தந்த |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| सर्वे | எல்லோரும் | आजन्मुः | அடைந்தார்கள். |

विनेदुश्च महानादान्सर्वतो जलदोषमाः । इतो राम इति ज्ञात्वा रावणिं समपूजयन् ॥ २६ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|----------------------|
| जलदोषमाः | பேசுக்களை சீகர்த்த | सर्वतोः | எங்கும் |
| रामः | 'ஸ்ரீராமர்' [அரக்கள் | महानादान् | பேரொலிகளை |
| इतः | கொல்லப்பட்டார் | विनेदुः | இட்டனர். |
| इति | என்று | राणि च | இந்திரஜித்தையும் |
| ज्ञात्वा | நினைத்து | समपूजयन् | போற்றிய புகழ்த்தனர். |

निष्पन्दौ तु तदा दृष्ट्वा तावुभौ रामलक्ष्मणौ । वसुधायां निरुक्ष्वासौ इतादित्यन्वमन्यता ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | रामलक्ष्मणौ | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்கள் |
| निष्पन्दौ | அசையாது | उभौ दृष्ट्वा | இருவரையும் பார்த்து |
| वसुधायां | தரையில் | इती इति तु | மாண்டு இட்டனர் |
| निरुक्ष्वासौ | ஒச்சுக்கிடமுடியாதி | | எனவெ |
| तौ | அந்த [குந்த | अन्यमन्यत | சிக்கமித்துவிட்டனர். |

हर्षेण तु समाविष्ट इन्द्रजित्समितिजयः । भविवेश पुरीं लङ्कां हर्षयन्सर्वनैर्कृतान् ॥ २८ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|---------|-------------------|
| समितिजयः | பேரில் வெற்றி பெற்ற | हर्षयन् | உற்சாகப்படுத்திக் |
| इन्द्रजित् | இந்திரஜித்து | | கொண்டு |
| हर्षेण | சந்தேகவக்தால் | लङ्कां | இலங்கை |
| समाविष्टः तु | மெய்மறந்து | पुरीं | நகரம் |
| सर्वनैर्कृतान् | ஆரக்கர்களோடெல்லாம் | भविवेश | புகுந்தான். |

रामलक्ष्मणयोर्दृष्ट्वा शरीरे सायकैश्चित् । सर्वाणि चाङ्गोपाङ्गानि सुर्यावं भयमाविशत् ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------|-------------------|
| सायकैः | பாணங்களால் | सर्वाणि | எல்லா கூற்றையும் |
| चित् | கைக்கப்பட்ட | दृष्ट्वा च | கூர்ந்து கவனித்து |
| रामलक्ष्मणयोः | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர் | | பின்னர் |
| | களுடைய | सूर्यावं | ஸூர்யவளிடம் |
| शरीरे | உடலில் | भयं | பயமானது |
| आङ्गोपाङ्गानि | அங்கங்கள்கள் உருப்பு | आविशत् | குடிக்கொண்டது. |
| | கள் இவை | | |

तद्युवाच परिव्रसं वानरेन्द्रं विभीषणः । सवाष्पवदनं दीनं क्रोधव्याकुललोचनम् ॥३०॥

| | | | |
|-------------------|--|-------------|---------------------------|
| विभीषणः | விபிஷணன் | परस्मिन् | மணக்கலங்கிவிருப்பவ |
| क्रोधव्याकुललोचनं | கொடுங்குதரல் கனக்கிய கண்வருண்டயவானும் | नं | அந்த [ஐயவன் |
| दीनं | தீனம் | वानरेन्द्रं | வானரமன் வானேய் |
| सवाष्पवदनं | சவாஷ்பி பெருகும் முத்தகடன் | उवाच | பேசுகொண்ட பொழிந்தான் : |

अलं त्रासेन सूर्याव वाष्पवेगो निगृह्यताम् । एंश्रायाणि युद्धानि विजयो नास्ति नैष्टिकः॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------------|----------------|
| सूर्याव | "சூர்யை! | युद्धानि | போர்கள் |
| त्रासेन अलं | தரக்காதே. | एश्रायाणि | இப்போர்க்கொத்த |
| वाष्पवेगः | கண்ணீர்ப் பெருக்கு | विजयः | வெற்றி [எனவே. |
| निगृह्यतां | கிழத்தபடு வட்டும். | नैष्टिकः नास्ति | முடிவானதன்று. |

सशेषभग्पतास्माकं यदि वीर भविष्यति । मोहमेतीं महास्येते महान्मानो महावयो ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-----------|------------------------------------|
| वीर | "ஆளுகிறவனாக இரு | महावयौ | மிகுந்த ஆந்த ஆந்த வர்களும், |
| अस्माकं | எங்களுக்கு [எட்டமாவதிலே! | महान्मानौ | மகாத்மர்களுமான |
| सशेषभग्पता | புண்களியப்பவனின் சேவையானது | एतौ | இவனிருவரும் |
| भविष्यति यदि | உண்டெனின் | मोह | (தந்தான்)ஆர்க்கைய |
| | | महास्येते | (இதை) விட்டொழிக் கப்போகின்றனர். |

पर्यवस्थापयात्मानमनर्थं मां च वानर । सत्यधर्माभिरक्तानां नास्ति मृत्युकृतं भयम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|--------------|---|
| वानर | "வானர! | सत्यधर्माभि- | } உதயம் தீரம் இவை காலம் மிஞ்சியபற்று டைபோர்க்கு |
| आ-मां | தன்னை | रक्तानां | |
| पर्यवस्थापय | சேத்தறிக்கொள். | मृत्युकृतं | என்னுள்செய்யப்பட்ட |
| अनार्थं | தனீரது வந்திருக்கும் | भय नास्ति | கிபத்து இல்லை. |
| मां च | என்னையும் அக்கன மே தேற்றினவ. | | |

एवमुक्त्वा ततस्तस्य जलह्रिन्नेन पाणिना । सूर्यं वयं शुभे नेत्रे प्रममार्जं विभीषणः ॥

| | | | |
|---------|----------------|--------------------|----------------|
| विभीषणः | விபிஷணன் | सुशोचस्य | சுசீவனது |
| एवं | போற்கண்டவாறு | शुभे | அழகான |
| वक्त्वा | கொல்லிக்கிட்டு | नेत्रे | இரு கண்களையும் |
| ततः | அதன்மேல் | जलह्रिन्नेन पाणिना | சுக்கையால் |
| तस्य | அந்த | प्रममार्जं | தூண்டத்தார். |

ततः सलिलमादाय विद्यया परिजप्य च । सुशोचनेत्रे धर्मात्मा स प्रमार्जं विभीषणः*॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|------------------------------------|
| सः | அந்த | विद्यया | பணக்கலங்கையொழி க்குட உச்சாடனைத் |
| धर्मात्मा | தாய்க்மாமனை | परिजप्य च | ஐபிந்து [தால் |
| विभीषणः | விபிஷணன் | सुशोचनेत्रे | சுசீவனது இருண்டு கண்களினும் |
| ततः | அதன்மேல் | प्रमार्जं | பிரொசுத்தார். |
| सलिलं आदाय | தீர்த்தத்தை எடுத்து | | |

प्रमुञ्च वदनं तस्य कपिराजस्य भीमतः । अमरीत्कालसंघाप्तमसंभ्रममिदं वचः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------------|
| तस्य | அந்த | कालसमाप्तं | ஸமயக் கிற்கேற்றபடி |
| भीमतः | புதிதெரிமையான | इदं | பிசுவாகும் |
| कपिराजस्य | காணாமல் காணாத | वचः | சொல்லீ |
| वदनं | முகத்தின் | असंभ्रमं | அசமதியாக |
| प्रमुञ्च | புறேகவித்தகவிட்டு | अमरीत् | மெழுகதார் : |

न कालः कपिराजेन्द्र वैकुण्ठमनुवर्तितुम् । अतिक्रोहोऽप्यकालेऽस्मिन्वराणायोपकल्पते ॥

| | | | |
|--------------|----------------|---------------|------------------|
| कपिराजेन्द्र | “வானசேவன் சீத! | अकाले | நெருக்கடியான |
| वैकुण्ठं | ஏக்கக்களை | | வேலையில் |
| अनुवर्तितुं | மேற்கொள்ள | अतिक्रोहः अपि | அளவிடத்த நட்பும் |
| कालः न | இதுசமயமன்று. | मरगाव | மரணத்திற்கு |
| अस्मिन् | இந்த | उपकल्पते | நேறுதலாகும். |

तस्माद्दुस्त्यज्य वैकुण्ठं सर्वकार्यविनाशनम् । हितं रामपुरोगातां सैन्यानामनुचिन्त्यताम् ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|----------------|----------------|
| तस्मात् | “ஆகையால் | रामपुरोगातां | ஹீராமரை உதமான |
| सर्वकार्यविनाशनं | எல்லாக் காரியக்களை | | ஒருக்கொண்ட |
| | யும் நாசம்செய்யும் | सैन्यानां | சேனையைக்கு |
| वैकुण्ठं | ஏக்கத்தை | हितं | அதுஉலமானது |
| दुस्त्यज्य | உதறித்தள்ளி | अनुचिन्त्यताम् | ஆலோசிக்கப்படட் |
| | | | டும். |

अथ वा रक्ष्यतां रामो यावत्संज्ञादिपर्ययः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------------------|-------------------|-----------|---|
| रामः | “ஹீராமர் | रक्ष्यतां | { காக்கிறதையுடன் பாசப்பிக்கப்பட வேண்டியது |
| संज्ञादिपर्ययः यावत् | பிரக்களையிழந்தவரை | अथ वा | |

लक्ष्मणं हि काकुत्स्थो भयं नो व्यपनेष्यतः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-------------|--------------------|
| काकुत्स्थो हि | “ஹீராமலக்ஷ்மண | नः | நமது |
| | குமீ | भयं | துயரத்தை |
| लक्ष्मणं | பிரக்களையெற்றவர் | व्यपनेष्यतः | அகற்றினிடுவார்கள். |
| | களாய் | | |

नैतिकचन रामस्य न च रामो ह्यूर्ध्वति । न हेनं हास्यते लक्ष्मीर्दुर्लभा या गतायुषाम् ॥

| | | | |
|-----------------|---------------|--------------|------------------------|
| रामस्य | ஹீராமருக்கு | गतायुषां | ஆயுள் முடிந்தவர் |
| एतत् | இது | वा | எந்த ஒரு [கருக்கு |
| किञ्चन न | ஒன்றுமில்லை. | लक्ष्मीः | முக்கக்களை |
| रामः | ஹீராமர் | दुर्लभा | இராதேர அது |
| ह्यूर्ध्वति च न | பாண்டுபோகமாட் | एने | இவரை |
| | டார். | हास्यते न हि | கிட்டுப்பிரியவேயில்லை. |

तस्मादाश्वासयात्मानं बलं चाश्वासय स्वकम् । यावत्कार्याणि सर्वाणि पुनः संस्थापयाम्यहम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-------------------|--------------------------------|
| तस्मात् | "ஆணையால் | संस्थापयामि यावत् | செய்துமுடிக்கும்வரை |
| अहं | நான் | आःमानं | தன்னை |
| कार्याणि | ஆக்கவேண்டிய காரியங் | आश्रय | தேற்றிக்கொள். |
| | கன | स्वकं | தனது |
| सर्वाणि | எல்லாவற்றையும் | बलं च | செய்யவும், ஆவன மேல் தேற்று. |
| पुनः | மீண்டும் | आश्वासय | |

एते हि कुष्ठनयनास्त्रासादागतसाध्वसाः । कर्णे कर्णे प्रकथिता हरयो हरिसत्तम ॥४३॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|-------------|--|
| हरिसत्तम | "வானரேந்திரன் ! | कुष्ठनयनाः | மன கிழித்த |
| एते | இந்த | कर्णे कर्णे | காதோடு காதாய் |
| हरयः हि | வானரர்களே | | ஒருவரோடொருவர் பேசிக்கொள்கின்ற னர். |
| आवात् | ஆசைத்தால் | प्रकथिताः | |
| आगतसाध्वसाः | பிகக் கலவரம் ஆடைந் தவர்களாய் | | |

पां तु दृष्ट्वा मधावन्तनीकं संपहर्षितुम् । त्यजन्तु हरयस्त्रासं भुक्तपूर्वाभिव सजम् ॥४४॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-------------|-----------------|
| अनीकं | "சாணியத்தை | पां | பயத்தை, |
| संपहर्षितुं | உற்சாகப்படுத்த | भुक्तपूर्वा | பசுவும் |
| मधावन्तं | சென்றுகொண்டிருக்க கிற | एव | பூமாவைய |
| | | | எவ்வண்ணமோ |
| मां | என்னை | | ஆவ்வண்ணமே, |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | तु | உடனே |
| हरयः | வானரர்கள் | त्यजन्तु | ஒழிக்கட்டும். " |

समाश्रास्य तु सुमीवं राक्षसेन्द्रो विभीषणः । विदुतं वानरानीकं तस्माश्वासयत्पुनः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|--------------|
| राक्षसेन्द्रः | ராசநிரேந்திரனாகிய | विदुतं | கனவரமடைந்த |
| विभीषणः | விபிஷணன் | तत् | அந்த |
| सुमीवं | சுமீவனை | वानरानीकं | வானரச்சேனையை |
| समाश्रास्य | தேற்றி | पुनः पु | உய்யடிவே |
| | | समाश्रासयत् | தேற்றினார். |

इन्द्रजित् महापायः सर्वसैन्यसमृत्नः । दिवेश नगरीं लङ्कां पितरं चाभ्युपागमत् ॥ ४५ ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------|-------------|----------------|
| महापायः | பெரியபாசனாகிய | लङ्कां | இலங்கை |
| इन्द्रजित् पु | இந்திரஜித்தன் | नगरीं | ககரத்தான் |
| सर्वसैन्यसमृत्तः | சேனைகளாற்சூழப் பட்டவனும் | दिवेश | தலைநகரன்; |
| | | पितरं च | தந்தையையும் |
| | | अभ्युपागमत् | சென்றடைந்தான். |

तत्र रावणपासीनमभिवाद्य कृतञ्जलिः । आचक्षे प्रियं पित्रे निहतौ रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-------------|--------------------------------|
| तत्र | அங்கு | पित्रे | தந்தையிடம் |
| भासीनं | விற்றிருக்கும் | रामलक्ष्मणौ | ராமலக்ஷ்மணர்கள் |
| रावणं | ராவணனை | निहतौ | கொல்லப்பட்டுவிட்ட னர் என்று |
| अभिवाद्य | நமஸ்கரித்து | प्रियं | நந்திரய்தியாக |
| कृतञ्जलिः | கூசுப்பி | आचक्षे | தெரிசித்தான். |

रावणो रक्षसां मध्ये श्रुत्वा शत्रू निपातितौ । उरुपात ततो हृष्टः पुत्रं च परिपश्यजे ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|----------------------|
| रावणः | ராவணன் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| शत्रू | சுத்துக்களிருவாரயும் | नतः | அகனூல் |
| निपातितौ | கொல்லப்பட்டவர் | हृष्टः | உள்ளம் பூரித்து |
| | காரக | उरुपात | குதித்தெழுந்தான். |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | पुत्रं च | புதல்வனையும் |
| मध्ये | மத்திரில் | परिपश्यजे | மார்புறந் தழுவினான். |

उपाधाय स मूर्धन्येन पपच्छ प्रीतमानसः ॥ ४९ ॥

| | | | |
|----------|-------|------------|-------------------------------------|
| सः | அவன் | उपाधाय | மேலாந்து |
| एनं | இவனை | प्रीतमानसः | உள்ளத்துளிர் |
| मूर्ध्नि | உக்தி | पपच्छ | எல்லாவற்றையும் பற்றி வினாவினான். |


पृच्छते च यथावृत्तं पित्रे सर्वं न्यवेदयत् । यथा तौ शत्रुन्धेन निक्षेष्टौ निष्पभौ कृतौ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-----------|--------------------------|
| पृच्छते | வினாவினார் | कृता च | செய்யப்பட்டவர் என்பது |
| पित्रे | தந்தைக்கு | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| तौ | அவ்விருவரும் | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| शत्रुन्धेन | பாணக்கயிற்றால் | यथावृत्तं | அதுவாறவெனும் காமல் |
| निक्षेष्टौ | அகையற்றவர்களையும் | न्यवेदयत् | தெரிசித்தான். |
| निष्पभौ | குளிப்பற்றவர்களையும் | | |

स हर्षवेगानुगतान्तरात्मा श्रुत्वा वचस्तस्य महारथस्य ।

जहौ ज्वरं दाशरथेः समुत्थितं प्रहृष्य वाचाऽभिनन्द पुत्रम् ॥ ५१ ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|-----------|-------------------|
| सः | அவன் | दाशरथेः | சீராமரிடமிருந்து |
| तस्य | அந்த | समुत्थितं | ஏற்பட்ட |
| महारथस्य | மகாரதனது | जहौ | ஈனக்கலகையை |
| वचः | கொல்லை | जहौ | விட்டுடாழித்தான். |
| श्रुत्वा | கேட்டு | प्रहृष्य | உற்சாகமுற்று |
| हर्षवेगानु- } गतान्तरात्मा } | ஸக்தேகாஹிதிரயத் தால் பற்றப்பட்ட பாணத்தினால் | पुत्रं | புதல்வனை |
| | | वाचा | வாயாற புகழ்த்து |
| | | अभिनन्द | கொண்டாடினான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे पृचस्वारिंशः सर्गः ॥
 भादिकः श्लोकाः 16497  युद्धकाण्डे भादिकः श्लोकाः 1822

सप्तचत्वारिंशः सर्गः—எழுபத்தேழாவது சர்க்கம், ॥ ४७ ॥

सीतायै वीरशयनस्य रामलक्ष्मणप्रदर्शनम्—சீதைக்கு போர்க்களத்தில் கிடக்கும் பூநீராமலக்ஷ்மணர்களைக் காண்பிப்பது

मतिपविष्टे लङ्कां तु कृतार्थे रावणात्मजे । राघवं परिवर्त्यातां ररुर्वा नरर्षभाः ॥ १ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|----------|-------------------|
| रावणात्मजे | ராவணன் தாயுக்கல்வனை | नरर्षभाः | நானிரீர்த்தமர்கள் |
| कृतार्थे | நீனைத்த காரியம் என | आर्ताः | மனவேகனை யுற்று |
| | கூடப்பெற்றவனும் | राघवं | பூநீராமரை |
| लङ्कां | இலங்கைக்கு | परिवे | சூழ்த்துகொண்டு |
| मतिपविष्टे तु | திரும்பிச்சென்றதும் | ररुर् | பரமார்த்தகர்கள். |

हनुमानङ्गदो नीलः सुषेणः कुमुदो नलः । गजः गशाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः ॥

जाम्बवानृषभः स्कन्धो रम्भः शतबलिः पृथुः ॥ २ ॥

व्यूहानां काश्च यत्ताश्च द्रुमानादाय संवतः । वक्ष्यमाणा दिशः सर्वास्तिवर्गूर्ध्वं च वानराः ॥

तृणेष्वपि च चेष्टसु राक्षसा इति मेनिरे ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------------|--------------------|
| हनुमान् | ஹனுமார், | व्यूहानां काः च | ஆணியகுத்தவர் |
| अङ्गदः | அங்கதன், | यत्ताः च | களாய் |
| नीलः | நீலன், | संवतः | ஜாக்கைதயுடனிருப்ப |
| सुषेणः | சுசுஷணன், | द्रुमान् | வர்களாய் |
| कुमुदः | குமுதன், | आशय | எல்லாண்டங்காளி |
| नलः | நலன், | तिवर्क् | மரங்களை [சூழ்தும் |
| गजः | கஜன், | उर्ध्वं | எடுத்துக்கொண்டு |
| गशाक्षः | கவாசுதன், | दिशः | சுற்றிலும் |
| गवयः | கவயன், | सर्वाः च | மேலும் |
| शरभः | சரபன், | वक्ष्यमाणाः | திக்குகள் |
| गन्धमादनः | கந்தமாதனன், | तृणेषु | எல்லாவற்றையும் |
| जाम्बवान् | ஜாம்பவான் | चेष्टसु अपि | கவனித்துப்பார்க்கி |
| रुषभः | ரூசபன், | राक्षसाः | ன்றவர்களாய் |
| स्कन्धः | ஸ்கந்தன், | इति च | புர்பூண்டுகள் |
| शतबलिः | சதபலி, | मेनिरे | கரைக்காலும் |
| पृथुः | பிடுது | | கரக்கர்கள் |
| वानराः | என்ற வானரர்கள் | | என்ற |
| | | | எண்ணிரர்கள். |

रावणश्चापि संहृष्टो विसृज्येन्द्रजितं सुतम् । आजुहाव ततः सीतारक्षिणां राक्षसांस्तदा ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|-------------------|
| रावणः च अपि | இராவணனும் | ततः | தக்கிருந்தபடியே, |
| संहृष्टः | மனம் பூரித்தவனும் | तदा | கப்பொழுது |
| सुतं | புதல்வனான | सीतारक्षिणीः | உய்கைக்குக் காவல் |
| इन्द्रजितं | இந்திரஜிதனாக | राक्षसीः | அரக்களை [புரியும் |
| विसृज्य | ஆறுப்பரிசிட் | आजुहाव | வரவழைத்தான். |

राक्षस्यस्त्रिजटा चैव शासनात्समुपस्थिताः ॥ ५ ॥

शासनात् कट्टணைப் பயியே
राक्षस्यः च அரக்கிகளும்

त्रिजटा एव त्रीணையும
समुपस्थिताः வந்துகொண்டவர்கள்.

ता उवाच ततो हृष्टो राक्षसी राक्षसाधिपः ॥ ६ ॥

ततः अप்தொழுது
राक्षसाधिपः ராட்சதையமன் னன்
हृष्टः மனக்களிப்புற்றவ
னும்

ताः அந்த
राक्षसीः அரக்கிகளைப்
उवाच பாசீத்து
பின்வருமாறு
कट्टणैयिप्ताன் :

हताविन्द्रजिताऽऽख्यात वैदेह्या रामलक्ष्मणौ ॥ ७ ॥

रामलक्ष्मणौ " रामனும் லக்ஷ்மண
னும்

हती கொல்லப்பட்டனர்
वैदेह्याः வீகைதக்கு [என்று
आख्यात தெரிவியுங்கள்.

हन्द्रजिता இஹிந்திரஜித்தால்

पुष्पकं च समारोप्य दर्शयध्वं हतौ रणे ॥ ८ ॥

पुष्पकं " புஷ்பகத்தில்
समारोप्य ஏற்றிகவைத்து
रणे போரில்

हतौ च கொல்லப்பட்ட
दर्शयध्वम् அவர்களை
(போரில்) காட்டுங்கள்.

यदाश्रयादवष्टब्धा नेयं मामुपतिष्ठति । सोऽस्या भर्ता सह भ्रात्रा निरस्तो रणमूर्धनि ॥

इयं " இவள்
यदाश्रयात् எவளது ஆதரவால்
अवष्टब्धा திமிர்சிறித்தவளால்
मां என்கை
उपतिष्ठति न அணுகவில்லையோ,
सः அப்போர்ப்பட்ட

भस्याः இவளது
भर्ता கணவன்
भ्रात्रा தம்பிரியோடு
सह கூட
रणमूर्धनि போர்க்களத்தில்
निरस्तः நழிக்கப்பட்டார்.

निर्विशङ्का निरुद्धिमा निरपेक्षा च मैथिली । मामुपस्थास्यते सीता सर्वाभरणभूषिता ॥

मैथिली " மிதிலைமன்னனின்
மகளான
सीता च வீகையும
निरुद्धिमा கணவனது நிரைவெர
ழித்தவளால்
निर्विशङ्का கவலைற்றவளால்

निरपेक्षा எதிலும் ஆசையற்ற
वளராய்
सर्वाभरणभूषिता பலகல ஆபரணக்களை
புமணிகிறது
मां என்கை
उपस्थास्यते அகூடவாள்.

अद्य कालवशं प्राप्तं रणे रामं सलक्ष्मणम् । अपेक्ष्य विनिवृत्ताशा चान्यां गतिमपश्यती ॥
अनपेक्षा विशालाक्षी मामुपस्थास्यते स्वयम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|------------|----------------------------|
| படி | " இப்பொழுது | ரதி ச | கதியையும் |
| சலஹ்மணி | வசந்தமணனேடுகடிய | அபश्यती | காணாதவளாய் |
| ராம | சாமண | அபेक्षा | வேறு எதிலும் ஆசை யற்று |
| காலவன் பாக் | யமனுக்கு வசமுற்றுக் கிடப்பதை | विनालाक्षी | அகன்ற கண்களையு டைய அவள் |
| அபेक्ष्य | தேரில் கண்டு, | मां | என்னை |
| विनिहृताशा | அவளை ஆசை ஒழிந்தவளாய் | स्यं | தானே |
| अन्यां | வேறு | उपस्थासते | அடைவாள். " |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रावणस्य दुरात्मनः । राक्षस्यस्तालधेत्युत्वा जम्बुवै यत्र पुष्पकम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------|---------|-----------------------------|
| ताः | அந்த | शुवा | கேட்டு, |
| राक्षस्यः | அரக்கிகள் | तथा इति | அப்படியே செய் கிடுமென்று |
| दुरात्मनः | தூராந்மாவான | उक्त्वा | சொல்லிக்ட்டு |
| तस्य | அந்த | पुष्पकं | புஷ்பகம் |
| रावणस्य | ராவணனது | यत्र वै | எங்கு இருக்கிறதோ |
| तत् | அந்த | जम्बुः | சென்றனர். [அங்கு |
| वचनं | கட்டளைகைய | | |

ततः पुष्पकमादाय राक्षस्यो रावणाज्ञया । अशोकवनिकास्थां तां मैथिलीं समुपानयन् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|----------------|-----------------------------|
| राक्षस्यः | அரக்கிகள் | आदाय | எடுத்துக்கொண்டு |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து | अशोकवनिकास्थां | அசோகவளைத் |
| रावणाज्ञया | ராவணனது ஆக்கள பின்பேரில் | तां | அந்த [திருள்ள வரிதைபிடம் |
| पुष्पकं | புஷ்பகத்தை | मैथिलीं | கொண்டு சேர்த்தனர். |
| समुपानयन् | | समुपानयन् | |

तामादाय तु राक्षस्यो भर्तृशोकपराजिताम् । सीतापारोपयामासुर्विमानं पुष्पकं तदा ॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------------|-------------|----------------|
| तदा | அப்பொழுது | तां | அந்த |
| राक्षस्यः तु | அரக்கிகளை | सीतां | ஸீதாதேவியை |
| पुष्पकं विमानं | புஷ்பக விமானத்தில் | आदाय | ஆக்கி |
| भर्तृशोकपराजितां | கணவனது சோகத் தரல்மெய்மறந்திருந்த | आरोपयामासुः | எற்றிவைத்தனர். |

ततः पुष्पकमारोप्य सीतां त्रिजटया सह । जम्बुर्दशीयितुं तस्यै राक्षस्यो रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|-------------|-----------------------|
| राक्षस्यः | அரக்கிகள் | तस्यै | அவனுக்கு |
| त्रिजटया | திரிஜடயோடு | रामलक्ष्मणौ | ராமலக்ஷ்மணர் & தனை |
| सह | கூட | ततः | அதிலிருந்தே |
| सीतां | ஸீதாதேவியை | वरीयितुं | காண்டிக்க |
| पुष्पकं | புஷ்பகவிமானத்தில் | जम्बुः | பேரணர்கள். |
| आरोप्य | எற்றிவைத்துக் கொண்டு | | |

प्राघोपयत हृष्ट्य लङ्कायां राक्षसेश्वरः ॥ १६ ॥
 रावणोऽकारयलङ्कां पताकाध्वजमालिनीम् ॥ १७ ॥
 राघवो लक्ष्मणश्चैव इताविन्द्रजिता रणे ॥ १८ ॥

राक्षसेश्वरः अரக்கமன் எனான
 रावणः रा வணன்
 हृष्टः உள்ளம்பூரித்து
 लङ्कां இளங்கையை
 पताकाध्वज- } கொடிக்களையும் வெ
 मालिनी } றிஸ்தம்பககளை
 अकारयत् } ளும் அழகுற்றதாய்
 च } செய்வித்தான்.
 इताविन्द्रजिता } இடவந்தியும்

राघवः च சரமனும்
 लक्ष्मणः एव லக்ஷ்மணனும்
 रणे ரெ டோரில்
 इन्द्रजिता இந்திரஜித்தரல்
 हतौ கொல்லப்பட்டனர்
 लङ्कायां இளங்கையில்
 प्राघोपयत தண்டோரா போடச்
 செய்தான்.

विमानेनापि सीता तु गत्वा त्रिजट्या सह । ददर्श वानराणां तु सर्वे सैन्यं निपातितम् ॥

सीता तु வீதாதேவியே
 त्रिजट्या सह திரிஜடையே இகட
 विमानेन अपि விமானத்தின்மீதே
 राघवा சென்று

वानराणां வானரர்களுடைய
 सैन्यं சேனை
 सर्वे तु எல்லாவற்றையும்
 निपातितं தாறுபாடுய் கிடப்ப
 वद्री பார்த்தான். [தாய்]

महृष्टमनसश्चापि ददर्श पिशिताशनान् । वानरांश्चापि दुःखार्तान्नामरक्ष्मणपार्श्वतः ॥२०॥

अपि च அடுத்தகூட
 पिशिताशनान् அரக்கர்களை
 महृष्टमनसः च உற்சாகங்கொண்டவர்
 वानरान् வானரர்களை

रामलक्ष्मणपार्श्वतः ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்
 दुःखार्तान् अपि துக்கத்தால் தளிக்கி
 दद्री கவனித்தான்.

ततः सीता ददर्शोभौ शयानौ शरत्त्वयोः । लक्ष्मणं चापि रामं च विसृज्यौ शरपीडितौ ॥
 विध्वस्तकवचौ वीरौ विप्रविद्धशरासनौ । सायकैश्छन्नसर्वाङ्गौ शरस्तम्बमयौ क्षितौ ॥

ततः தப்பிப்பொழுது
 सीता வீதாதேவியார்
 रामं च ஸ்ரீராமரும்
 लक्ष्मणं अपि च லக்ஷ்மணருமாகிற
 उभौ वीरौ இருவீரர்களையும்
 शरपीडितौ பாணக்களால் அடியு
 विसृज्यौ பிரக்களையற்று
 विध्वस्तकवचौ கவசமற்று
 विप्रविद्धशरासनौ கில் சமுதி

सायकैः பாணக்களால்
 छिन्नसर्वाङ्गौ துளைக்கப்பட்ட
 शरस्तम्बमयी அம்புகளால் ஆன
 क्षितौ பூமியில்
 शरत्त्वयोः அம்புகளாலான படுக்
 शयानौ கிடப்பவர்களாய்
 वद्री கண்டான்.

तौ दृष्ट्वा भ्रातरौ तत्र वीरौ सा पुरुषर्षभौ । शयानौ पुण्डरीकाक्षौ कुमाराविव पावकी ॥
शरत्त्वगतौ वीरौ तथाभूतौ नरर्षभौ । दुःखार्ता सुभृत् सीता सुचिरं विललाप ह ॥२४॥

| | | | |
|---------------|--|------------|---------------------------------|
| सा சீதா | ஆந்தரணி தாதேவியா | புருஷர்ஷி | புருஷோத்தமர்களு மரகிய |
| புண்டரீகாक्षौ | { தாமரைமிகழ்ப்போன் நகண்களுடையவர் களும் | तौ | ஆவ்விருவர்களை |
| वीरौ | தேவலீகையகண்டாராத | तत्र | அப்பொழுது |
| वीरौ | வீரர்களென | तथाभूतौ | அப்படியாகி |
| नरर्षभौ | மானிடர்களில் மேன் மைபுந்நவர்களும் | शरत्त्वगतौ | அம்புகளான படுக் கையை அடைந்து |
| पावकी | அக்கினிபகவானின் புதல்வர்களான | शयानौ | படுகதுக்கிடப்பவர் களாய் |
| कुमारी | இருகப்பிரமணியக் கடவுளை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| इव | போன்றவர்களும் | सुभृत् | மிகவும் |
| भ्रातरी | சகோதரர்களும் | दुःखार्ता | துயரத்தில் மூழ்கி |
| | | सुचिरं | வெகுநேரம் |
| | | विललाप | கண்ணீருகுத்தான், கரண்! |
| | | ह | |

भर्तारमनवशाङ्गी लक्ष्मणं चासितेक्षणा । मेक्ष्य पांसुषु वेष्टन्तौ करोद् जनकात्मजा ॥२५॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------|------------|--------------------|
| भर्तारमनवशाङ्गी | கரிய கண்களுடைய வளும் | लक्ष्मणं च | சகம்பண்ணியும் |
| अनवशाङ्गी | பரிசுத்த மனமுடைய வளமுடைய | पांसुषु | புழுதியில் |
| जनकात्मजा | வந்தாதேவியா | वेष्टन्तौ | கொண்டுக்கிடப்பவர்க |
| भर्तारि | கணவனையுடைய, | मेक्ष्य | கண்டு [நரப் |
| | | करोद् | அழுதான். |

सा वाष्पशोकाभिहता समीक्ष्य तौ भ्रातरौ देवसमप्रभावौ ।
वितर्कयन्ती निधनं तयोः सा दुःखान्विता वाक्यमिदं जगाद् ॥ २६ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|----------------|---|
| सा | மகாலக்ஷ்மியான | निधनं | நாசமென |
| सा | அவள் | वितर्कयन्ती | சங்கெத்து |
| देवसमप्रभावौ | தேவர்களுக்கொப்பா ன மகனையுடைய | दुःखान्विता | துயரத்தில் மூழ்கி |
| भ्रातरी | ஸதேவரதர்களான | वाष्पशोकाभिहता | கண்ணீராலும் சேரக த்தாலும் மேம்பறந் தவளாகி |
| तौ | ஆவ்விருவர்களையும் | वाक्यं | சொல்லி |
| समीक्ष्य | பார்த்து | जगाद् | தனக்குள்ளே சொல் லிக்கொண்டாள். |
| इदं | இதை, | | |
| तयोः | ஆவ்விருவர்கள்க்கும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे सप्तचत्वारिंशः सर्गः ॥



अष्टवत्वारिंशः सर्गः—எட்டுபத்தேட்டாவது ஸர்க்கம். || ४८ ||

सीताप्रलापः—ஸீதாப்ரலாபம்.

भर्तारं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महारथम् । विरुताप भृशं सीता करुणं शोककशिता ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|----------|-------------------------------|
| सीता | ஸீதாதேவி | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| भर्तारं | கணவரை | शोककशिता | கேதத்தால் மெய் |
| निहतं | கொல்லப்பட்டவராக | भृशं | மிகவும் [மறந்து |
| महारथं | மகாரதரதிர [வும் | करुणं | பரிதாபமாய் |
| लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணனையும் அப் படியே ஆணவராகவும் | विरुताप | (பின்வருமாறு) புலம்பினான்: |

उचुर्ऋक्षिणो ये मां पुत्रिण्यविध्वेति च । तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|------------|-----------------|
| ये | “எந்த | उचुः | கொன்னுக்களை |
| ऋक्षिणः | சுமூத்ரிகா ஸகஷணம் உணர்ந்தவர்கள் | ते | அந்த |
| मां | என்னை | ज्ञानिनः | ஆறினர்கள் |
| पुत्रिणी | புத்திரபாக்யமுடைய வளையவும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| अविधवा | நிதம்பலாமக்கதி | रामे | ஸ்ரீராமர் |
| इति च | எனவும் | हते | கொல்லப்பட்டமை |
| | | अथ | இப்பொழுது [யால் |
| | | अनृतवादिनः | பொய்யர்களே. |

यजनो महिषी ये मासूनुः पत्नी च सत्रिणः । तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः॥

| | | | |
|---------|---|------------|-----------------------|
| ये | “எவர்கள் | पत्नी च | மனைவியை |
| मां | என்னை | उचुः | கொன்னுக்களை |
| यजनः | { 'அக்ஷமேசம்' என் னும் யாகத்தை செய் பவருடையவும் | ते | அந்த |
| सत्रिणः | { 'ஸத்ரம்' என்னும் யாகத்தைச் செய்ப வருடையவும் | ज्ञानिनः | ஆறினர்கள் |
| महिषी | பட்டமறிகிபாய் விளக்கும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| | | रामे | ஸ்ரீராமர் |
| | | हते | கொல்லப்பட்ட மையால் |
| | | अथ | இப்பொழுது |
| | | अनृतवादिनः | பொய்யர்களே. |

उचुः संश्रवणे ये मां द्विजाः कार्तान्तिकाः शुभाम् । तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः॥

| | | | |
|-----------------------|----------------------------------|------------|-----------------|
| ये | “எந்த | ते | அந்த |
| कार्तान्तिकाः द्विजाः | கோதிட அந்தணர்கள் | ज्ञानिनः | ஆறினர்கள் |
| मां | என்னை | सर्वे | எல்லோரும் |
| शुभां | எப்பொழுதும் மால் கல்யமுடையவளை | रामे | ஸ்ரீராமர் |
| संश्रवणे | என் முன்னிலையில் | हते | கொல்லப்பட்டமை |
| उचुः | கொன்னுக்களை | अथ | இப்பொழுது [யால் |
| | | अनृतवादिनः | பொய்யர்களே. |

वीरपार्थिवपत्नी त्वं ये धन्येति च मां विदुः । तेऽय सर्वे ह्ये रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ॥

| | | | |
|----------------------|------------------|-------------|-----------------|
| ये | "எவர்கள் | ते ज्ञानिनः | ஆந்த அறிஞர்கள் |
| मां | என்னைப்பார்த்து | सर्वे | எல்லோரும் |
| त्वं वीरपार्थिवपत्नी | 'நீ வீரமன்னனின் | रामे | ராமர் |
| धन्या | பாக்காளி' [மனைவி | इते | கொல்லப்பட்டமை |
| इति च | என்றெல்லாம் | अथ | இப்பொழுது [யால் |
| विदुः | கொண்டிருக்கிறார் | अनृतवादिनः | பொய்யர் கிளை. |

इमानि खलु पद्यानि पादयोः कुलस्त्रियः । आधिराज्येऽभिपिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिः सह ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------------|------------------|
| कुलस्त्रियः | "குலப்பெண்கள் | अभिपिच्यन्ते | அபிஷேகஞ்செய்யப் |
| ये: | எனவகளை | | படுகிறார்களோ |
| नरेन्द्रैः | மன்னர்களை | पद्यानि | ஆந்த பத்யரேகைகள் |
| पतिभिः सह | கணவர்களை | पादयोः | பாதங்களில் |
| आधिराज्ये | பட்டமறையிலிப்பதனியில் | इमानि खलु | இதொன்றெல்லாம் |

वैधव्यं यान्ति यैर्नार्यो लक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः । नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती इतलक्षणा ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|-------------------|
| नार्यः | "பெண்கள் | इतलक्षणा | நீள்பலமான சபலகூ |
| ये: लक्षणे: | எந்தக் குறிகளால் | | ணக்களை யுடைய நான் |
| भाग्यदुर्लभाः | பாக்கியம் குன்றி | पश्यन्ती | தெடிப்பார்த்தும் |
| वैधव्यं | கைம்மையை | आत्मनः | எனக்கு |
| यान्ति | அடைகின்றனரோ | तानि | அனைவரை |
| | | पश्यामि न | காண்கிறேன். |

सत्यनामानि पद्यानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणैः । तान्यद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|---------|-----------------|
| लक्षणैः | "லக்ஷணை | तानि | அனைவரை |
| स्त्रीणां | ஸ்திரீகளின் [எால் | रामे | ராமர் |
| पद्यानि | பத்யரேகைகள் | निहते | கொல்லப்பட்டமை |
| सत्यनामानि | தவறாத நற்பயன் | अथ | இப்பொழுது [யால் |
| | அளிப்பவைவென | मे | எனக்கு |
| उक्तानि | கொல்லப்பட்டிருக்கின்றன. | वितथानि | பலவற்றைகளை |
| | | भवन्ति | ஆகின்றன. |

केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासङ्गते मम । वृत्ते चारोमशे जङ्घे दन्ताश्चाविरला मम ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|---|
| सम | "எனக்கு | जङ्घे | { கணக்கா லுக்கும் மூ டுதா லுக்கும் மத தியிலுள்ள பாகங்க ளிரண்டும் தகைப்பற்றுள் எனவாயும் |
| केशाः | கூந்தல்மயிர்கள் | वृत्ते | |
| सूक्ष्माः | தடிக்காதவை; | अरोमशे च | உரோமயற்றவைகளா, |
| समाः | ஒத்தவை; | दन्ताः | கவும் இருக்கின்றன. |
| नीलाः | கறுத்தவை; | अविरलाः च | பற்கள் |
| भ्रुवौ | புருகங்களிரண்டும் | | இடைவெளியில் |
| आसङ्गते च | கேராதிருக்கின்றன. | | மல் இருக்கின்றன. |
| मम | எனது | | |

शङ्खे नेत्रे करौ पादौ गुल्फावूरु च मे चितौ । अनुवृत्तनखाः श्लिधाः समाश्वाङ्गुलयो मया ॥

மே "எனது
 शङ्खे நெற்றியினிருப்புறங்க
 नेत्रे கண்களும், [ஞாள்,
 करौ கைகளும்,
 पादौ கால்களும்,
 ऊरु च தொடைகளும்
 चितौ சதைப்பற்றுடையன
 வாயிருக்கின்றன.

மே எனது
 अंगुलयः கிரல்கள்
 अनुवृत्तनखाः வட்டமான கைமுடை
 श्लिधाः பளகராயும்,
 समा; च மிருதாவரணைவகரை
 யும்,
 இருக்கின்றன.

स्तनौ चाविरली पीनौ ममे गै ममचूचुकौ । मया चोत्सङ्घिनी नाभिः पाश्वोरस्कं च मे चितम् ॥

மம "எனது
 इमौ இரத்த
 स्तनौ தனங்களிரண்டும்
 चाविरली இடைவெளியின்றி
 पीनौ பருத்து
 ममचूचुकौ च காம்புகள் உள்ளடங்க
 ப்பெற்றிருக்கின்றன.
 मे எனது

नाभिः உந்தியானது
 मया ஆழ்த்தும
 चोत्सङ्घिनी च வாய்பு தடித்தும்
 இரக்கின்றது.
 पाश्वोरस्कं च { விவப்பக்கங்களும்
 விட்ட மார்பின் மேற்
 புறமும்
 चितम् ததைப்பற்றுள்ளகா
 ளிருக்கின்றது.

मम वर्णो मणिनिभो मृद्वन्यङ्गुहाणि च । प्रतिष्ठितां द्वादशभिर्मातृभुः शुभलक्षणाम् ॥

மம "எனது
 वर्णः நிறம்
 मणिनिभः மாணிக்கத்தையொத்
 திருக்கின்றது.
 मृद्वङ्गुहाणि உரோமங்கள்
 च மிருதுவாயிருக்கின்
 றன.

द्वादशभिः { (பத்து கிரல்களாலும்
 இரு உள்வக்கால்
 களாலும் ஆகப்) பன்
 விரண்டால்
 प्रतिष्ठितां பூமியில் படியப்பெற்ற
 शुभलक्षणां உத்தமலக்ஷணம்
 பொருந்தியவளென
 मां என்னைப்பார்த்து
 कसु: சொன்னார்கள்.

समप्रथमच्छिद्रं पाणिपादं च वर्णवत् । मन्दस्मितेव्येव च मां कन्यालक्षणिनो विदुः ॥

पाणिपादं च "உள்ளக்கைகளும்
 உள்ளகால்களும்
 समप्रथमं பூர்ணமான வல்களைக்
 களையுடையன.
 मच्छिद्रं இடைவெளியற்றன.
 वर्णवत् செந்திறம் வாய்த்தன.

कन्यालक्षणिनः பெண்ணுடைய லக்ஷண
 க்களை யறிந்தவர்கள்
 मां என்னைப்பார்த்து
 मन्दस्मिता एव எப்பொழுதும் புன்ன
 கையுடையவள்
 इति च என்றும்
 विदुः சொல்லியிருக்கிறார்
 கள்.

आधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह । कृतान्तकुशलैरुक्तस्तत्सर्वं वितथीकृतम् ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|------------|-------------------------|
| कृतान्तकुशलैः | "சேர திடத்தில் சிபுணர் காலாள் | आधिराज्ये | பட்டமகிஷிப்பதவி யில் |
| ब्राह्मणैः | சேர திரைக்காலாள் | अभिषेकः | அபிஷேகமாகும் என் |
| मे | எனக்கு | उक्तः | சொல்லப்பட்டது. [து |
| पतिना सह | கணவனுடன் கூட | नव सर्वं | அது எல்லாம் |
| | | वितथीकृतम् | வினாக்கப்பட்டது. |

शोधयित्वा जनस्थानं प्रवृत्तिमुपलभ्य च । तीर्त्वा सागरपक्षोभ्यं भ्रातरौ गोष्पवे हतौ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|------------|-------------------|
| भ्रातरौ | "சேர நாரிருவரும் | अक्षोभ्यं | கலக்கமுடியாத |
| जनस्थानं | ஜனஸ்தானத்தை | सागरं | கடலை |
| शोधयित्वा | நன்மைமயில் சாட்டி விட்டு | तीर्त्वा च | கடகதும் |
| प्रवृत्ति | இருக்குமிடத்தை | गोष्पदे | குளபப்பு இயத்தில் |
| उपलभ्य | கண்டுகொண்டு | हतौ | மரண்டனர். |

ननु वारुणमग्नेयमैन्द्रं वायव्यमेव च । अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चैव राघवो मत्स्यपथताम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-----------------|----------------------------------|
| राघवौ | "ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்கள் | वायव्यं पुत्र | வாயவ்யா ஸ்திரத்தை |
| वार्णम | வானுணுஸ்திரத்தை யும் | अस्त्रं च | பிரம்மசிரமென்ற அஸ்திரத்தையும் |
| अग्नेयं | ஆக்னியா ஸ்திரத் தையும் | मत्स्यपथतां ननु | கன்குணர்கதவர்களை சிந்தித்தே! |
| ऐन्द्रं च | ஐந்திராஸ்திரத்தை யும் | | |

अदृश्यमानेन रणे मायया वासवोपमौ । मम नाथावनाथाया निहतौ रामलक्ष्मणौ ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|-------------|------------------------|
| अनाथायाः | "வேறுகதியற்ற | रामलक्ष्मणौ | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணரும் |
| मम | எனக்கு | रणे | போரில் |
| नाथौ | சக்தகர்களும் | मायया | மாயாவித்தைகினால் |
| वासवोपमौ | இந்திரனை சிகர்த்தவர் களுமான் | अदृश्यमानेन | சம்புலனாகாத அவ னால் |
| | | निहतौ | சொல்லப்பட்டனர். |

न हि दृष्टिपथं प्राप्य राघवस्य रणे रिपुः । जीवन्मति निर्वर्तेत यद्यपि स्यान्मनोजवः ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|----------------------|---------------------|
| राघवस्य | "ஸ்ரீராமரை | प्राप्य | பெற்று |
| रिपुः | சந்ரு | मनोजवः | மனோவேகமுள்ளவர் |
| रणे | போரில் | स्वाव यदि अपि | இருப்பினும் [இது |
| दृष्टिपथं | கண்டுபிடிக்கும் புலனாக இருப்பதை | जीवन् | உயிருடன் |
| | | प्रतिनिर्वर्तेत न हि | திரும்புவேமாட்டான். |

न कालस्यातिभारोऽस्ति कृतान्तश्च सुदुर्जयः । यत्र रामः सह भ्रात्रा शेते युधि निपातितः॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|-------------------|
| ராம: | " ஸ்ரீராமர் | காலசு | காலத்திற்கு |
| भ्रात्रा सह | தம்பிரியோடுகூட | भतिभारः | முடிபாத சுவை என் |
| युधि | போரில் | भस्ति न | ஒன்றுமில்லை. [பது |
| निपातितः | விழுந்ததப்பட்டு | कृतान्तः च | பயமும் |
| शेते | கிடக்கிறார் | सुदुर्जयः | ஐயிக்கெவ்வாண்னாக |
| यत्र | எனில் | | வனே. |

न शोचामि तथा रामं लक्ष्मणं च महाबलम् । नात्मानं जननीं वापि यथा भ्रश्रू तपस्विनीम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|--------------------|
| तपस्विनीं | " மனமுறித்துகிடக் | लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணனைப்பற்றி |
| | கும் | | பாவது |
| भ्रश्रू | மாமியாசைப்பற்றி | जननीं वा | தாயாசைப்பற்றி |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | | பாவது |
| तथा | அவ்வண்ணமே | शोचामि न | நான் வருந்தவில்லை. |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப்பற்றி | आत्मानं अपि | என்னைப்பற்றியும் |
| | பாவது | न | வருந்தவில்லை. |
| महाबलं | மகாபலிக்ஷணை | | |

साऽनुचिन्तयते नित्यं समाप्तव्रतमागतम् । कदा द्रक्ष्यामि सीतां च लक्ष्मणं च सराधवम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|---|
| सा | " அவள் | कदा | எப்பொழுது |
| समाप्तवतं | பிரதிக்ஷணையமு | द्रक्ष्यामि च | காணப்பெறுகேவனென |
| सराधवं | சாகவருடன் [டித்து | नित्यं | எப்பொழுதும் [ண்டு |
| आगतं | திருப்பிவந்த | अनुचिन्तयते | { அடுத்தான்றையே நினை த்துக்கொண்டிருக்க கிறான்." |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனையும் | | |
| सीतां च | ஸீதைதையையும் | | |

परिदेवयमानां तां राक्षसी त्रिजटाऽब्रवीत् ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------|----------------|
| त्रिजटा | தரிஜடையென்னும் | तां | அவளைப்பார்த்து |
| राक्षसी | அரக்கி | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| परिदेवयमानां | புலம்பிக்கொண்ட | | மொழிந்தான் : |
| | ருக்கும் | | |

मा विषादं कृया देवि भर्ताऽयं तव जीवति ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|-------|-----------------------|
| देवि | " தேவீ! | अयं | இந்த |
| विषादं मा कृयाः | நீ துயரப்படாதே. | भर्ता | கணவனார் |
| तव | உனது | जीवति | பிழைத்திருக்கின்றார். |

कारणानि च वक्ष्यामि महान्ति सदृशानि च । यथेपौ जीवतो देवि भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------|--------------------|
| देनि | " தேவீ! | जीवतः | பிழைத்திருக்கிறார் |
| भ्रातरौ | பிராநாக்களான | | கனோ அந்த |
| इमी | இந்த | महान्ति च | சிறந்தவையும் |
| रामलक्ष्मणौ | ஸ்ரீராமரும் லக்ஷ்மண | सदृशानि च | பொருத்தமானவையு |
| | ரும் | कारणानि च | காரணங்களை [மான |
| यथा | எக்காரணங்களினால் | वक्ष्यामि | கூறுகிறேன். |

नहि कोपरीतानि हर्षयुस्तुकानि च । भवन्ति युधि योधानां मुखानि निहते पतौ ॥

| | | | |
|---------|------------------|------------------|---|
| पतौ | " உறுமாவன் | कोपरीतानि | கோபத்தால் பற்றப் |
| युधि | போரில் | | பட்டவைகளால் |
| निहते | கொல்லப்பட்டிருந் | हर्षयुस्तुकानि च | { மகிழ்ச்சியுற்றுத்தெளிந்து விளக்குவனவாய் |
| योधानां | போர் வீரர்களுடைய | भवन्ति न हि | இருக்கமாட்டா. |
| मुखानि | முகங்கள் | | |

इदं विमानं वैदेहि पुष्पकं नाम नामतः । दिव्यं त्वां धारयेन्नवं ययेतौ गतजीवितौ ॥२६॥

| | | | |
|----------|------------------|-------------|---------------------|
| वैदेहि | " வைதேகி! | पुष्पकं नाम | புஷ்பகமெனப் குரகித் |
| एतौ | இவ்விருவர்களும் | इदं | இந்த |
| गतजीवितौ | உயிரிழந்தவர்கள் | विमानं | விமானம் |
| यदि | என்றால் | त्वां | உன்னை |
| दिव्यं | தெய்வத்தன்மையுள் | एवं | இவ்விதம் |
| | எனதும் | धारयेन् न | தரிக்கமாட்டாது. |
| नामतः | பெயரால் | | |

हतवीरमथाना हि हतांस्ताहा निरुथमा । सेना भ्रमति संख्येषु इतरुणेंव नौजते ॥२७॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------|----------------|
| हतवीरमथाना | " முக்கியப் போர்வீர | संख्येषु | போர்க்களத்தில் |
| | கிளப்பறிகொடுத்த | जते | சீரில் |
| सेना हि | சேனையோவெனில் | इतरुणां | மாணியற்ற |
| हतोऽसाहा | உற்சாகம் குன்றி | नौः | மாக்களம் |
| निरुथमा | செயலற்று | इव | போல |
| | | भ्रमति | தத்தலிக்குர். |

इयं पुनरसंभ्रान्ता निरुद्दिशा तरस्विनी । सेना रक्षति काकुत्स्थौ मया पीत्या निवेदितौ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|-----------------|
| इयं | " இந்த | पीत्या | பக்தியுடன் |
| सेना पुनः | சேனையோவெனில் | निवेदितौ | காண்பிக்கப்பட்ட |
| असंभ्रान्ता | குழப்பமின்றியும் | काकुत्स्थौ | சீராமலக்ஷ்மணர் |
| निरुद्दिशा | அச்சமின்றியும் | | களை |
| तरस्विनी | மயிலொலாதரியமுடைய | रक्षति | பாதுகாத்துவரு |
| मया | என்னால் [கரையும் | | கிறது. |

सा त्वं भव सुविस्मया अनुमानैः सुखोदयैः । अहतौ पश्य काकुत्स्थौ स्नेहादेतद्द्वयमि ते ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|------------|--------------------|
| सुखोदयैः | " ன்மைமைய ஊக்கிப் | अहतौ | மாறாதிருக்கும் |
| | பிக்கின்ற | काकुत्स्थौ | சீராமலக்ஷ்மணர்களை, |
| अनुमानैः | கின்னக்களைக் | पश्य | (கண்குளிரப்) பார். |
| | கொண்டு | एतव् | இதை |
| सुविस्मया | முற்றிலும் நம்பிக்கை | ते | உனக்கு |
| | கொண்டவனாக | स्नेहात् | பக்தியால் |
| सा त्वं | அந்த நீ | अवीमि | கொல்லுகிறேன். |
| भव | ஆகுசு. | | |

त्यज शोकं च मोहं च दुःखं च जनकात्मजे । रामलक्ष्मणयोरर्थं नाद्य शक्यमजीवितुम् ॥

जनकात्मजे " ஜானகி !
रामलक्ष्मणयोः श्रीராமலக்ஷ்மணர்
अर्थे விஷயத்தில் [கனின்
शोकं च துயர தீமைதரும்
मोहं च தப்பெண்ண தீமைதரும்

दुःखं च மனக்கவலைகளையும்
त्यज விட்டுவிட்டு
अद्य இப்பொழுது
अजीवितुं மரண
शक्यं न முடியாது."

श्रुत्वा तु वचनं तस्याः सीता सुरसुतोपमा । कृताञ्जलिस्वाचेदमेवमस्त्विति मैथिली ॥

मैथिली மிதிலைமன் னனின்
शुरसुतोपमा திருமகனும்
செய்வப்பெண்ணும்
கொப்பானவருமான
सीता வலிதாதேவி
तस्याः அவளது
वचनं சொல்லை

श्रुत्वा கேட்டு
कृताञ्जलिः तु கைகுவித்தவண்ணமே
एवं 'அவ்வண்ணமே'
अस्तु 'இருக்கட்டும்'
इति என்த
इदं இதை
उवाच பதிலாய்ச்சொன்னார்.

विमानं पुष्पकं तत्तु संनिवर्त्य मनोजवम् । दीना त्रिजट्टया सीता लङ्कामेव प्रवेशिता ॥

दीना பரிதர்பமான நிலையி
सीता சிதாதேவி [நிருக்கும்
त्रिजट्टया த்ரிஜுடையால்
मनोजवं மனோமேவகமாய்ச்
செல்லவல்ல

तत् अந்த
पुष्पकं विमानं புஷ்பகவிமானத்தை
सन्निवर्त्य तु திருப்பிய பின்னர்
लङ्का एव இலங்கையிலேயே
प्रवेशिता புதுகிக்கப்பட்டார்.

ततस्त्रिजट्टया सार्धं पुष्पकादवरुह्य सा । अशोकवनिकामेव राक्षसीभिः प्रवेशिता ॥ ४० ॥

सा அவள்
ततः அப்பொழுது
त्रिजट्टया सार्धं த்ரிஜுடையுடன் கூட
पुष्पकात् புஷ்பகவிமானத்தி
லின்றும்

अवरुह्य இறங்கியபின்
राक्षसीभिः அரக்கினால்
अशोकवनिका एव அசோகவனத்தி
லேயே
प्रवेशिता புதுகிக்கப்பட்டார்.

प्रविश्य सीता बहुवृक्षषण्डां तां राक्षसेन्द्रस्य विहारभूमिम् ।

संप्रेक्ष्य संचिन्त्य च राजपुत्रौ परं विषादं समुपाजगाम ॥ ४१ ॥

सीता வலிதாதேவியார்
बहुवृक्षषण्डां பலவிரிசூதநிலை
राक्षसेन्द्रस्य அரக்கமன்னனது
तां அந்த
विहारभूमिं சிங்கராவனத்தில்
प्रविश्य புதுக்கு

संप्रेक्ष्य வெருகி பிழித்து
राजपुत्रौ அரசகுமாரர்களிருவர்
संचिन्त्य च தீனர்துவினைத்து
परं மிகுந்த
विषादं துயரத்தை
समुपाजगाम அடைந்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे अष्टत्वारिंशः सर्गः ॥



एकोनपञ्चाशः सर्गः—காற்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் || 49 ||

श्रीरामप्रबोधः—ஸ்ரீராமர் விழித்துக்கொள்வது.

धौरेण शरवन्धेन बद्धौ दशरथात्मजौ । निश्वसन्तौ यथा नागौ शयानौ रुधिरोक्षितौ ॥
सर्वे ते वानरश्रेष्ठाः ससुग्रीवा महाबलाः । परिवार्य महात्मानौ तस्थुः शोकपरिप्लुताः ॥२॥

| | | | |
|---------------|--------------------|---------------|---------------------|
| சசுமீவா: | ஸசுமீவையுள்ளிட்ட | निश्वसन्ती | பெருமூச்செறிந்து |
| महाबलाः | மகாபலசாரிகளும் | | கொண்டு |
| वानरश्रेष्ठाः | வானரேசாத்தமர்களும் | शयानौ | படுத்துக்கிடங்கும் |
| ते | ஆவர்கள் | महामानौ | மகாத்மாக்களான |
| सर्वे | எல்லோரும் | दशरथात्मजौ | தசரதகுமாரர்களிரு |
| धौरेण | கொடிய | | வரையும் |
| शरवन्धेन | பாணக்கட்டால் | परिवार्य | சூழ்ந்துகொண்டு |
| बद्धौ | கட்டுண்டு | शोकपरिप्लुताः | துயரத்தில் மூழ்கியவ |
| रुधिरोक्षितौ | ரத்தம்தொய்ந்து | | ர்களாய் |
| नागौ यथा | இருசர்ப்பக்கள்போல | तस्थुः | காத்தூரின்றுர்கள். |

एतस्मिन्नन्तरे रामः प्रत्यबुध्यत वीर्यवान् । स्थिरत्वात्सत्त्वयोगाच्च शरैः सन्धानितोऽपि सन् ॥

| | | | |
|-------------------|-------------------|--------------|----------------|
| वीर्यवान् | வீர்யவானாகிய | सखयोगान् च | தெய்வத்தன்மையா |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | கூடும் |
| शरैः | பாணக்களால் | एतस्मिन् | இந்த |
| सन्धानितः अपि सन् | கட்டுண்டவராயிருக் | अन्तरे | சமயத்தில் |
| | ளகயிலுக்கூட | प्रत्यबुध्यत | தன்னறிவையடைந் |
| स्थिरत्वात् | அழிவில்மையாகும் | | தரர். |

ततो दृष्ट्वा सरुधिरं विषण्णं मादमर्षितम् । भ्रातरं दीनवदनं पर्यदेवयदातुरः ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|------------|-----------------|
| ततः | உடனே | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| भ्रातरं | தம்பியை | आतुरः | மெய்யானந்த ஆவர் |
| मादं | மிகவும் | विषण्णं | பிகப்பரிதாபமாய் |
| अर्षितं | ஆடியுண்டு | पर्यदेवयत् | பின்வருமாறு |
| सरुधिरं | ரத்தம் தொய்ந்து | | புலம்பினார் : |
| दीनवदनं | வாடிய முகத்தனய் | | |

किं नु मे सीतया कार्यं किं कार्यं जीवितेन वा । शयानं योऽद्य पश्यामि भ्रातरं बुधि निर्जितम् ॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------------|-------------------|
| अथ | “ இப்பொழுது | पश्यामि | பார்க்கிறேனே ஆந்த |
| भ्रातरं | தம்பியை | मे | எனக்கு |
| बुधि | பொலில் | सीतया | வீணதயால் |
| निर्जितं | தொல்லியுந்து | कार्यं किं नु | ஆவதென்ன ? |
| शयानं | படுத்துக்கிடப்பவனாய் | जीवितेन वा | உயிரினுல்தான் |
| चः | எந்த தான் | कार्यं किम् | ஆவதென்ன ? |

शक्या सीतासमा नारी मर्यादोके विविच्यता । न लक्ष्मणसमो भ्राता सचिवः सांपरायिकः॥

मर्यादोके
विविच्यता " மானிடவழிகில்
தேடிப்பார்க்கும் என்
னும்

लक्ष्मणसमः
भातृमणा நன்கொட்ப
பாசிய

सीतासमा
नारी
शक्या
" வினாத மகொட்பாசிய
ஒரு பெண்
காணமுடியும்.

सचिवः
सांपरायिकः
भ्राता
न
மந்திரியும்
பொருளீர நுபாயகிய
தம்பிரி
காணமுடியாது.

परित्वक्ष्याम्यहं प्राणं वानराणां तु पश्यताम् ।

सुमितानन्दवर्धनः
पञ्चशं
क्षायन्नः यदि
अहं
" லக்ஷ்மணன்
மரணத்தை
எய்தினிடீயான் எனில்
நான்

यदि पञ्चत्वमापन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः ॥

वानराणां
पश्यतां तु
प्राणं
परित्वक्ष्यामि
வானரர்கள்
பார்க்குதுகொண்டிருக்க
உயிரை [கொடுவேலிய
ஒழிக்கப்படுகிறேன்.

किं नु वक्ष्यामि कौसल्यां मातरं किं नु कैकर्याम् । कथमभ्यां सुमित्रां च पुत्रदर्शनलासाम् ॥

कौसल्यां
किं नु
वक्ष्यामि
कैकर्यां
मातरं
किं नु
" கௌசலாதேவியா
என்ன [குக்கு
சொல்லுவேன் ?
வகடுகையி
ஆம்மா ஒருக்கு
என்ன சொல்லுவேன் ?

पुत्रदर्शनलासां
सुमित्रां
अभ्यां च
कथम्
புதல்வனைக்கொண்டபதி
சேலியை ஒருத்துற்ற
கயித்திரை
ஆம்மா ஒருக்குத்தான்
என்னகிதம் பதில்
அளிப்பேன்.

विचरसां श्रेयमानां च क्रोशन्तीं कुररीषिव । कथमाभासयिष्यामि यदि यास्यामि तं विना ॥

तं विना
यास्यामि यदि
विचरसां
कुररी हव
" அவனில்லாமல்
சொல்லவேணையானில்
கன்றிமுத்த
பெண்மாதிரிப்போல

श्रेयमानां
क्रोशन्तीं च
कथं
आभासयिष्यामि
அடிஅடித்து
கதறுமவளை
எக்கவளம்
தேற்றாவுகொடுவேன்.

कथं वक्ष्यामि शत्रुघ्नं भरतं च यशस्विनम्

यशस्विनं
भरतं
शत्रुघ्नं च
" மகா புகழ்படைத்த
பாதலிடமும்
சக்குக்கனலிடமும்

॥ १० ॥

कथं
वक्ष्यामि
எப்படி
முகன்கொடுத்தப்
பேசுவேன் ?

मया सह वनं यातां विना तेन गतः पुनः । उपालम्भं न शक्यामि सोढुं वन सुमित्रया ॥

मया
सह
वनं
याताः
तेन विना
पुनः
गतः
" என்னுடன்
கூடவே
காட்டிநீடு
வந்தவன் ஆவன்.
ஆவனில்லாமல்
திரும்பி
சென்றவன் நான்.

सुमितया
उपालम्भं
सोढुं
शक्यामि न
वत
கயிக்கையாலேற்படும்
கொடுமமக்கொற்களை
கடிக்க
வல்லவனல்லேன்.
ஆந்தோ என்ன
கஷ்டம்!

इहैव देहं त्यक्ष्यामि न हि जीवितुमुत्सहे

॥ १२ ॥

इह एव
देहं
त्यक्ष्यामि

“ இவ்விடத்திலேயே
உடலை
ஒழித்துவிடுகிறேன்.

जीवितुं हि
उत्सहे न

உயிருடனிருக்கவே
நான் விரும்பவில்லை.

विद्धि मां दृष्टकर्मणमनार्यं यत्कृते ह्यसौ ।

लक्ष्मणः पतितः शेते शरतल्पे गतासुवन् ॥

यत्कृते
असौ
लक्ष्मणः
शरतल्पे
पतितः
गतासुवन्

“ எவனுக்காக
இந்த
லக்ஷ்மணன்
பாணங்களால்
விழுந்து [படுக்கையில்]
உயிரற்றவன்போல்

शेते
दृष्टकर्मणं
अनार्यं
मां
विद्धि

கிடக்கின்றானே அந்த
நீவிடப்படியும்
பாபியான
என்னை
வைத்துப்பொசுக்க
வேண்டும்.

त्वं नित्यं स विषणं मामाश्वासयसि लक्ष्मण
गतासुनाद्य सक्रोधि मामार्तमभिभाषितुम्

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

लक्ष्मण
विषणं
मां
नित्यं
आश्वासयसि
सः

“ லக்ஷ்மண !
துயரமடைந்த
என்னை
எப்பொழுதும்
நீ தேற்றுவாய்.
அப்படிப்பட்ட

त्वं
अस्य
गतासुः
आर्तं
मां
अभिभाषितुं
सकरोषि न

நீ
இப்பொழுது
உயிரிழந்தவனாகி
புலம்பித்தவிக்கும்
என்னிடம்
பேசுவதற்கு
முடியாதிருக்கின்றனை.

येनाद्य निहता युद्धे राक्षसा विनिपातिताः । तस्यामेव क्षितौ वीरः स शेते निहतः परैः ॥

येन
अद्य
युद्धे
राक्षसाः
निहताः
विनिपातिताः

“ எனனால்
இப்பொழுது
போரில்
அரக்கர்கள்
கொல்லப்பட்டு
விழுந்தப்பட்டார்
ளோ

सः
वीरः
तस्यां एव
क्षितौ
परैः
निहतः
शेते

அப்பேர்ப்பட்ட
வீரன்
அதே
தரையில்
சுற்றுக்களால்
விழுந்தப்பட்டவனாய்
கிடக்கிறான்.

शयानः शरतल्पेऽस्मिन्स्वशोभितपरिभूतः । शरजालक्षितो भाति भास्करोऽस्त्वमिव व्रजन् ॥

अस्मिन्
शरतल्पे

“ இந்த
சரங்களால்
படுக்கையில்

चितः
अस्तं
व्रजन्

ஸதக்கப்பட்டவனாய்
அந்தமனத்தை
அடைந்துகொண்ட
சூக்கும்

शयानः
स्वशोभितपरिभूतः
शरजालैः

கிடக்கும் இவன்
தன் சத்தம் தோய்ந்து
பாணங்களால்

भास्करोऽस्त्वमिव
इव
भाति

சூரியன்
போல
விளங்குகிறான்.

वाणाभिहतमर्मत्वान् शक्रोऽस्यभिभाषितुम् । रुजा चाब्रुवतोऽप्यस्य दृष्टिरागेण सूच्यते ॥

| | | | |
|---|---|--|---|
| वाणाभिहत- मर्मत्वात् अभिभाषितुं शक्रोति न अपि च अब्रुवतः | “மர்மம் தரணத்தில் அடியுண்டிருப்பதால் பேச முடிபாதிருக்கிறான், மேலும் வாய்திறந்து பேசா திருக்கும் | दृष्टिरागेण अस्य रुजा सूच्यते | பரிதாபமான பார்வை யாலே இவனுக்கு பொறுக்கமுடியாத கொவு இருப்பதாகக் காணப்படுகிறது. |
|---|---|--|---|

यथैव मां वनं यान्तमनुयातो महाश्रुतिः । अहमप्यनुयास्यामि तथैवं यमक्षयम् ॥ १९ ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| महाश्रुतिः वनं यान्तं मां यथा एव अनुयातः | “மிக்க தேஜோவானுண் காட்டிற்கு [இவன், பிரயாணமான என்னை எப்படி பின்பற்றிவந்தானே | तथा एव अहं अपि एवं यमक्षयं अनुयास्यामि | அப்படியே நானும் இவனை யமனது மாளிகைக்கு பின்பற்றிக் செல்வேன். |
|---|--|--|--|

इष्टवन्धुजनो नित्यं मां च नित्यमनुव्रतः । इमामच गतोऽवस्थां ममानार्यस्य दुर्नयैः ॥ २० ॥

| | | | |
|---|--|---|--|
| नित्यं इष्टवन्धुजनः मां च नित्यं अनुव्रतः अथ | “எக்காலத்திலும் உடன்பிறந்தவனிடம் உகந்த இவன் என்னையே ஸதா பின்பற்றியவன். இப்பொழுது | अनार्यस्य सम दुर्नयैः इमां अवस्थां गतः | அதற்குரிமையற்ற எனது திர்க்கதரிசனமற்ற செயல்களால் இந்த கதியை எய்தினன். |
|---|--|---|--|

सुरष्टेनापि वीरेण लक्ष्मणेन न संसरे । परुषं विप्रियं वाऽपि श्रावितं तु कदाचन ॥ २१ ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| वीरेण सुरष्टेन लक्ष्मणेन कदाचन अपि | “குரணும் அதிகர்சினங்கொண் டிருப்பவனுடைய வசந்தமணலால் ஏதேனுமொரு சமயத் திலேனும் | विप्रियं अपि परुषं वा श्रावितं तु संसरे न | தருமவிடோதமான கொல்தானுகட்டும் கண்டதமான் கொல் தானுகட்டும் செனில் போடப்பட்ட டதாகக் கூட என்னைப்பறவினில். |
|---|--|--|--|

विससर्जैकवेगेन पञ्च वाणशतानि यः । इष्वस्त्रैर्वधिकस्तस्मात्कार्तवीर्याच्च लक्ष्मणः ॥ २२ ॥

| | | | |
|--|---|--|---|
| यः पञ्च वाणशतानि एकवेगेन विससर्ज तस्मान् | “எவன் ஐந்து துபாணங்களை ஒரே தடவையில் விடுத்தானே அப்பெரிக்கொத்த | कार्तवीर्यात् च लक्ष्मणः इष्वस्त्रै अधिकः | கார்த்தவீரனைக் காட்டிலும் வசந்தமணன் பானுஸ்திரங்களில் மேம்பட்டவன். |
|--|---|--|---|

अस्त्रैस्त्राणि यो हन्याच्छक्रस्यापि महात्मनः । सोऽयमुर्व्यां इतः शेते महार्हशयनोचितः ॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------------|---------------------|
| यः | "எவன்" | सः | அந்த |
| महात्मनः | மகா ஆற்றலுடைய | महार्हशयनोचितः | விடையுயர்ந்த படுக்க |
| शक्रस्य | இருக்கிரனது | अयं | இவன் [அகம்சூரிய |
| अस्त्राणि अपि | அஸ்திரங்களைக்கூட | इतः | கொல்லப்பட்டவனாய் |
| अश्वैः | அஸ்திரங்களாலேயே | उर्व्यां | தரைவில் |
| हन्यात् | அழிப்பானே | शेते | கிடக்கிறான். |

तच्च मिथ्या प्रलसं मां प्रवक्ष्यति न संशयः । यन्मया न कृतो राजा राक्षसानां विभीषणः

| | | | |
|------------|------------------|-------------|-----------------|
| विभीषणः | "விபீஷணன்" | तत् | அந்த |
| राक्षसानां | ஆரக்கர்களுக்கும் | मिथ्या | பயனற்ற |
| राजा | அரசனாக | प्रलसं च | பேச்சும் |
| मया | என்னால் | मां | என்னை |
| न कृतः | செய்யப்படவில்லை | प्रवक्ष्यति | எரிக்கின்றது. |
| यत् | எதுவோ [யென்பது | संशयः न | இதில் ஐயமில்லை. |

अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीव प्रतियातुमितोऽहंसि

| | | | |
|------------------|------------------|------------|--------------------|
| सुग्रीव | "சுகிரீவ! " | इतः | இவ்விடத்திலிருந்து |
| अस्मिन् मुहूर्ते | இந்தசமயணத்திலேயே | प्रतियातुं | திரும்பி |
| | | अहंसि | நீ செல்லவேண்டும். |

॥ २५ ॥

स तु हीनं मया राजन्नावणोऽभिद्रवेद्वली

| | | | |
|-------|-------------|-------------|-----------------------|
| राजन् | "அரசே! " | मया हीनं तु | என்னை கிட்டிப்பிரிந்த |
| मया | பலசாலியாகிய | | திருக்கும் உன்னை |
| सः | அந்த | अभिद्रवेत् | இப்பொழுது தன்பு |
| रावणः | ராவணன் | | றுத்துவான். |

॥ २६ ॥

अद्भुतं तु पुरस्कृत्य ससैन्यः समुहजनः । सागरं तर सुग्रीव नीलेन च नलेन च ॥२७॥

| | | | |
|---------|--------------|------------|-----------------|
| सुग्रीव | "சுகிரீவ! " | समुहजनः | நண்பர்களோடும், |
| नीलेन च | நீலவேண்டும், | अद्भुतं तु | அங்கதனையும் |
| नलेन च | நளவேண்டும், | पुरस्कृत्य | அழைத்துக்கொண்டு |
| ससैन्यः | சேனைகளோடும், | सागरं | சமுத்திரத்தை |
| | | तर | தாண்டுகிறது. |

कृतं हनुमता कार्यं यदन्यैर्दुष्करं रणे । कक्षराजेन तुष्यामि गोलाङ्गुलाधिपेन च ॥२८॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------------|----------|---------------------------|
| हनुमता | "ஹனுமாதானும்" | दुष्करं | செய்யமுடியாத |
| कक्षराजेन | கரடிமன்னானும், | कार्यं | காரியம் |
| गोलाङ्गुलाधिपेन च | கோலாங்குலபெனும், காரணமன்னானும், | यत् | எதுவோ அது |
| रणे | போரில் | कृतं | செய்யப்பட்டது. |
| अन्यैः | பிறரால் | तुष्यामि | நான் சந்தோஷமடை கிறேன். |

अङ्गदेन कृतं कर्म मैन्देन द्विविदेन च । युद्धं केसरिणा संख्ये घोरं संपातिना कृतम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|----------|----------------|
| अङ्गदेन | " அங்கதனாலும் | संपातिना | சம்பாதினாலும், |
| मैन्देन | மைந்தனாலும், | केसरिणा | கேசரியாலும், |
| द्विविदेन च | தவிவிதனாலும் | संख्ये | போர்க்களத்தில் |
| कर्म | பெருஞ்செயல் | युद्धं | யுத்தம் |
| कृतं | புரியப்பட்டது. | घोरं | பயங்கரமாக |
| | | कृतम् | புரியப்பட்டது. |

गवयेन गवाक्षेण शरभेण गजेन च । अन्यैश्च हरिभिर्युद्धं मदर्थे त्यक्तजीवितैः ॥

न चातिक्रामितुं शक्यं दैवं सुग्रीव मानुषैः ॥ ३० ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------------|--------------------|
| गवयेन | " கவயனாலும், | त्यक्तजीवितैः | உயிரை மதியாதவர் |
| गवाक्षेण | கவாக்ஷனாலும், | | கவாக்ஷ |
| शरभेण च | சரபனாலும், | युद्धं | போர்புரியப்பட்டது. |
| गजेन च | கஜனாலும் | सुग्रीव | சுகிரீவ! |
| अन्यैः | மற்ற | मानुषैः | மானிடர்களால் |
| हरिभिः च | வானரர்களாலும் | दैवं | விதியானது |
| मदर्थे | எனக்காக | अतिक्रामितुं | கடக்க |
| | | शक्यं न | சாத்தியமானதன்று. |

यत्तु शक्यं वयस्येन सुहृदा च परन्तप । कृतं सुग्रीव तत्सर्वं भवता धर्मभीरुणा ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|--------------|----------------|
| परन्तप | " சந்ருக்களைத்தடிக் கச்செய்யும் | वयस्येन च | வயசையினாலும் |
| सुग्रीव | சுகிரீவ! | भवता | உன்னால் |
| धर्मभीरुणा | தர்மத்திற்கு அஞ்சிய | यत् शक्यं तु | எது சாத்தியமோ |
| सुहृदा | அன்பார்க்கு [வனும், | तत् सर्वं | அதெல்லாம் |
| | | कृतम् | செய்யப்பட்டது. |

मित्रकार्यं कृतमिदं भवद्विवांनरर्षभाः । अनुज्ञाता मया सर्वे यथेष्टं गन्तुमर्हथ ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------------|--------------|--------------------------------|
| वानरर्षभाः | " வானரோத்தமர் | सर्वे | எல்லோரும் |
| भवन्तिः | உங்களால் [களை] | मया | என்னால் |
| मित्रकार्यं | கண்பனுக்குச் செய்ய வேண்டிய கடமை | अनुज्ञाताः | விடைகொடுக்கப்பட்ட டவர்களால் |
| इष्टं | இப்பொழுது | यथेष्टं | சுயேச்சையாய் |
| कृतं | செய்யப்பட்டது. | गन्तुं अर्हथ | செல்லுங்கள்." |

शुश्रुवुस्तस्य ते सर्वे वानराः परिदेवनम् । वर्तयाञ्चक्रभूणि नैत्रैः कृष्णोतरेक्षणाः ॥ ३३ ॥

| | | | |
|----------|-------------|-----------------|-----------------|
| ते | அந்த | शुश्रुवुः | கேட்டனர். |
| वानराः | வானரர்கள் | कृष्णोतरेक्षणाः | கண்கள் சிவந்து, |
| सर्वे | எல்லோரும் | नैत्रैः | கண்களால் |
| तस्य | அவரது | अभूणि | கண்ணீரை |
| परिदेवनं | புகழ்ப்புகை | वर्तयांचक्रुः | செரிந்தனர். |

ततः सर्वाण्यनीकानि स्थापयित्वा विभीषणः । आजगाम गदापाणिस्त्वरितो यत्र राघवः॥

| | | | |
|--------------|--------------------|----------|---------------------|
| विभीषणः | விபிஷணன் | यत्र | எங்கிருந்தாரோ அங்கு |
| अनीकानि | சேனைகள் | | விடத்திற்கு |
| सर्वाणि | எல்லாவற்றையும்கூட | गदापाणिः | கடையும் கையுமாய் |
| स्थापयिष्यति | நிறுத்திக் கொட்டு, | स्वरितः | வேகமாய் |
| राघवः | ராமர் | ततः | அப்பொழுது |
| | | आजगाम | வந்தார். |

तं दृष्ट्वा त्वरितं यान्तं नीलाञ्जनचयोपमम् । वानरा दुद्रुवुस्सर्वे मन्यमानास्तु रावणिम् ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------|----------------------|
| वानराः | வானரர்கள் | यान्तं | வந்துகொண்ட |
| सर्वे | எல்லோரும் | तं | அவரை [ருக்கும் |
| नीलाञ्जनचयोपमं | கறுத்து அஞ்சனமலை | दृष्ट्वा | பார்த்து, |
| | வை நிகர்த்தவராய் | रावणिं तु | இந்திராஜித்தனவே |
| स्वरितं | வேகமாய் | मन्यमानाः | நினைத்தவர்களாய் |
| | | दुद्रुवुः | எக்குமெழுந்துள்ளனர். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16599



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1924

पञ्चाशः सर्गः—ஐம்பதாவது ஸர்க்கம். || 50 ||

नागपाशविमोचनम्—நாகபாசத்திலிருந்து விடுதலை.

अथोवाच महातेजा हरिराजो महाबलः । किमियं व्ययिता सेना सूडवातेव नौर्जले ॥१॥

| | | | |
|----------|----------------|---------|---------------------|
| महातेजाः | மகா ஆண்மைபுடைய | इयं | “இந்த |
| | வனும் | सेना | சேனை |
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடையவ | जले | இலத்தில் . |
| | னுமான் | सूडवाता | சுழந்தாற்றிலைப்பட்ட |
| हरिराजः | வானரமன்னன், | नौः इव | ஓர் ஓடம்போல் |
| अथ | பின்வருமாறு | किं | என் |
| उवाच | வினாவினான்: | व्ययिता | தத்தளிக்கின்றது ? |

सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा वालिपुत्रोऽद्भुदोऽभ्रवीत् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|----------------------|
| वालिपुत्रः | வாலிபின்புத்தல்வன | वचः श्रुत्वा | வார்த்தைதனயக்கேட்டு, |
| अद्भुतः | அங்கதன், [கிய | अभ्रवीत् | பின்வருமாறு சொன் |
| सुग्रीवस्य | சுகிரீவனு | | னான் : |

न त्वं पश्यसि रामं च लक्ष्मणं च महाबलम् । शरजालाचितौ वीराबुभौ दशरथात्मजौ ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|-----------------------|
| शरजालाचितौ | “பாணசூழகங்களால் | दशरथात्मजौ | தசரதசக்கிரவர்த்தி |
| | கட்டுண்டவர்களும், | | பின் புத்தல்வர்களும், |
| वीरौ | வீரர்களும், | महामानौ | மகாத்மாக்களும், |

| | | | |
|--------------|---------------------------|--------------|---------------------|
| शरतस्ये | பரணங்காளரண படுக்கையில் | महाबले | மகாபலசாஸியாகிய |
| कृषिरोक्षितौ | சுத்தம் தேராய்ந்து | रुद्धमर्णं च | வந்தமணருமாகிய |
| शयानौ | படுத்துக்கிடப்பவர் க | उभौ | இருவரையும் |
| रामं च | ஸ்ரீராமரும் [ருமாகிய | खं | கீர் |
| | | पश्यसि न | கவனியாதிருக்கிறீர்! |

अथाब्रवीद्धानरेन्द्रः सुधीवः पुत्रमङ्गदम् । नानिपिचिद्विद्ं मन्ये भवितव्यं भयेन तु ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|---------------------|
| धानरेन्द्रः | வானரசமன்னனுமிய | अनिसितं | தருந்த காரணமின்றி |
| सुधीवः | சுதீவன் | | யேற்பட்டதென |
| पुत्रं | புத்தவனுமிய | मन्ये न | நான் தீனைக்கவில்கை. |
| अङ्गदं | அங்கதனைப் பார்த்து | भयेन तु | பயம் காரணமாகவே |
| अथ | பின்வருமாறு | भवितव्यम् | இது ஏற்பட்டிருக்க |
| अब्रवीत् | பதிலுரைத்தான்; | | வேண்டும். |
| इदं | "இது | | |

विषण्णवदना ह्येते त्यक्तप्रहरणा दिशः । मपलायन्ति हरयस्त्रासादुत्फुल्ललोचनाः ॥ ५ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|----------------|-----------------------|
| एते | "இந்த | त्यक्तप्रहरणाः | ஆபுதக்களையெறிந்து |
| हरयः | வானசர்கள் | | கிட்டு |
| विषण्णवदनाः | வாடிய முகத்தினராய் | सासात् दि | பயத்தால்தான் |
| उत्फुल्ललोचनाः | மருட்சியால் விழிந்து கொண்டு | दिशः | எல்லாத் திக்குகளிலும் |
| | | मपलायन्ति | துடிகின்றனர். |

अन्योन्यस्य न लज्जन्ते न निरीक्षन्ति पृष्ठतः । विमकर्षन्ति चान्योन्यं पतितं लडुयन्ति च ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|---------------------|
| अन्योन्यस्य | "ஒருவர் க்கொருவர் | विमकर्षन्ति | இழுத்துக்கொண்டிருந் |
| लज्जन्ते न | வெட்கப்படவில்லை. | | கள். |
| पृष्ठतः | திரும்பி | पतितं च | விழுந்தவனை |
| निरीक्षन्ति न | பார்க்கவில்லை. | लडुयन्ति | தாண்டிச்சென்று |
| अन्योन्यं च | ஒருவர் க்கொருவரை | | கிடுகிருக்கள்." |

एतस्मिन्नन्तरे वीरो गदापाणिर्विभीषणः । सुधीवं वर्धयामास राघवं च निरैक्षत ॥ ७ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|-----------------|
| एतस्मिन् | இந்த | सुधीवं | சுதீவனுக்கு |
| अन्तरे | சமயத்தில் | वर्धयामास | முகமன்கூறினார். |
| विभीषणः | விபிஷணர் | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| गदापाणिः | கதையும் கையுமாக | निरैक्षत च | கண்டொட்டாமற் |
| | | | பார்த்தார். |

विभीषणं तं सुधीवो दृष्ट्वा वानरभीषणम् । ऋक्षराजं समीपस्थं जाम्बवन्तमुवाच ह ॥८॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|--------------------|
| सुधीवः | சுதீவன், | समीपस्थं | பக்கவிதிருக்கும் * |
| तं विभीषणं | அந்த விபிஷணரை, | ऋक्षराजं | கரடிகள் மன்னனுள் |
| वानरभीषणं | வானரர்களுக்கு பயத் | जाम्बवन्तं | ஜம்பவாநிடம் |
| | தை விளைவித்தவராய் | उवाच ह | பின்வருமாறு சொ |
| दृष्ट्वा | அறிந்து | | ழிந்தான்: |

विभीषणोऽयं संप्राप्तो यं दृष्ट्वा वानरर्षभाः । व्यद्रवंस्तु परिव्रस्ता रावणात्मजशङ्कया ॥९॥

வானரர்ஷபா: * வானரீராத் தமர்கள்,
ய் எவனை
தூடா பார்த்து
ராவணன் புதல்வனெ
னும் எண்ணத்தால்

பரிவ்ரஸ்தா: மிகப்பயந்தவர்களாய்
வ்யத்வந் து ஓடினார்களேர,
அய் இர்த
விभीषण: விபிஷணன்
संवाप्त: வந்திருக்கிறான்.

शीघ्रमेतान्सुसंत्रस्तान्वहुधा विप्रधावितान् । पर्यवस्थापयारख्याहि विभीषणमुपस्थितम् ॥

उपस्थितं "வந்திருப்பவன்
विभीषणं விபிஷணனை
शीघ्रं சீக்கிரமாக
आख्याहि தெரிவியும்!
सुसंत्रस्तान् மிக வெருண்டு

बहुधा பலவாறும்
विप्रधावितान् எங்குமோடும்
एतान् இவர்களை
पर्यवस्थापय மனவமைதியுறச்
செய்யும்."

सुग्रीवैर्भवमुक्तस्तु जाम्बवानृक्षपार्थिवः । वानरान्सान्त्वयामास संनिवार्य प्रभावतः ॥११॥

सुग्रीविणं சுகரீவனுல்
एवं மேற்கண்டவண்ணம்
उक्तः சொல்லப்பட்ட
ऋक्षपार्थिवः கரடிமன்னனுள்
जाम्बवान् ஜாம்பவான்,

तु அப்பொழுது
प्रभावतः சித்தியோடும்
वानरान् வானரர்களை
सन्निवार्य தடுத்த
सान्त्वयामास சமாதானப்படுத்தி
னான்.

ते निवृत्ताः पुनः सर्वे वानरास्त्यक्तसंभ्रमाः । ऋक्षराजवचः श्रुत्वा तं च दृष्ट्वा विभीषणम् ॥

ते वानराः அந்த வானரர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
ऋक्षराजवचः கரடிமன்னனுள்
श्रुत्वा கேட்டும் [சொல்லி
तं அந்த

विभीषणं விபிஷணனை
दृष्ट्वा च பார்த்தும்
पुनः மீளவும்
त्यक्तसंभ्रमाः பயந்தெளித்தவர்க
निवृत्ताः திரும்பினார்கள். [எாய்

विभीषणस्तु रामस्य दृष्ट्वा गात्रं शरैश्चितम् । लक्ष्मणस्य च धर्मात्मा बभूव व्यथितेन्द्रियः ॥

धर्मात्मा தர்மாத்மாவான
विभीषणः விபிஷணர்
रामस्य ஸ்ரீராமருடையவும்,
लक्ष्मणस्य च லக்ஷ்மணருடையவும்
गात्रं உடல்

शरैः பாணக்களரல்
चितं கைக்கப்பட்டிருப்
दृष्ट्वा பார்த்து [பதை
तु உடனே
व्यथितेन्द्रियः மெய்சீசார்த்தவாய்
बभूव ஆனார்.

जलक्षिप्त्वेन हस्तेन तयोर्नेत्रे प्रमृज्य च । शोकतर्पीडितपना सरोद् विललाप च ॥ १४ ॥

शोकतर्पीडित- } கோகத்தால் மிகக்
मनः } கலக்கிய மனமுண்ட
य अवर् அவர்
तयोः அவர்களுடைய
नेत्रे கண்களை

जलक्षिप्त्वेन हस्तेन ளக்கையால்
प्रमृज्य च துடைத்து
सरोद् அழுதார்;
विललाप च பின்வருமாறு
புலம்பினார்:

इमौ तौ सन्वसंपन्नौ विक्रान्तौ म्रियमंयुगौ । इमामवस्थां गमितौ राक्षसैः कूटयोधिभिः ॥

इमौ " இவர்கள்
सन्वसम्पन्नौ மகா ஆற்றலுடைய
வர்கள்,
विक्रान्तौ மகா ஆண்டவருடைய
வர்கள்,
म्रियमंयुगौ போரில் திறந்தவர்கள்,
तौ அப்படிப்பட்டவர்கள்

कूटयोधिभिः கபடப்போர்புரியும்
राक्षसैः அரக்கர்களால்
इमां இந்த
अवस्थां நிலைமக்கு
गमितौ கொண்டுவரப்பட்ட
னர்.

भ्रातुः पुत्रेण मे तेन दुष्टुत्रेण दुरात्मना । राक्षस्या जिह्वया बुद्ध्या वञ्चिताव्युविक्रमौ ॥

अव्युविक्रमौ " தர்மபுத்தம் செய்யும்
இவ்விருவர்கள்
मे எனது
भ्रातुः தமையனது
पुत्रेण புதல்வனும்
दुष्टुत्रेण கெட்ட புதல்வனும்

दुरात्मना பாபியமான
तेन அவனும்
राक्षस्या அரக்கர்களுடைய
जिह्वया கிதானல்
बुद्ध्या புத்திகொண்டு,
वञ्चितौ வஞ்சிக்கப்பட்டனர்.

शरिषावलं विद्वौ रुधिरेण समुक्षितौ । वसुधायामिमौ सुप्तौ दृश्येने शल्यकावि ॥१७॥

इमौ " இவ்விருவர்களும்
शरैः பாணங்களால்
अलं வேண்டிய அளவு
विद्वौ அடியுண்டு
रुधिरेण இரத்தத்தால்
समुक्षितौ தோயப்பெற்றிருக்
கின்றனர்.

वसुधायां தலையில்
सुप्तौ படுத்துக்கிடக்கும்
इमौ இவ்விருவரும்
शल्यकौ इव இரண்டு முள்ளம்
பன்றிகள்போல
दृश्येते தொன்றுகின்றனர்.

ययोर्वीर्यसुपाश्रित्य प्रतिष्ठा काङ्क्षिता मया । तावुभौ देहनाशाय मसुप्तौ पुरुषर्षभौ ॥१८॥

ययोः "எந்த இருவர்களு
वीर्यं வீரயத்தை [டைய
उपाश्रित्य ஆதரவாகக்கொண்டு
मया என்னால்
प्रतिष्ठा கிர்த்தி
काङ्क्षिता கோரப்பட்டதோ

तावुभौ அவர்
देहनाशाय புருஷோத்தமர்களால்
मसुप्तौ இவ்விருவரும்
पुरुषर्षभौ { உடலழியும்வண்ணம்
படுத்துக்கிடக்கின்
றனர்.

जीवन् विपन्नोऽस्मि नष्टराज्यमनोरथः । प्राप्तपतिश्च रिपुः सकामो रावणः कृतः ॥

अथ " இப்பொழுது,
नष्टराज्यमनोरथः சாதுயத்தையும் மட்டு
ரதத்தையும் இழந்து
जीवन् உயிருடன்
विपन्नः கடக்கும் பிண்பாடி
अस्मि இருக்கிறேன்.

रिपुः சத்தருகான
रावणः ராவணன்
प्राप्तपतिश्च பத்திக்கொடுகிறதென்ற
ப்பெற்றவனாயும்
सकामः च மனோதம் கைகடப்
பெற்றவனாயும்
कृतः செய்யப்பட்டான்."

एवं विलपमानं तं परिष्वज्य विभीषणम् । सुग्रीवः सत्त्वसंपन्नो हरिराजोऽब्रवीदिदम् ॥ २० ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------|--------------|
| हरिराजः | வாராஜமன்னனும் | तं | அந்த |
| सत्त्वसम्पन्नः | மிக ஆண்டையுடைய | विभीषणं | விபிஷணரை |
| सुग्रीवः | சுகரீவன் [வனுமான] | परिष्वज्य | கட்டித்தழுவி |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | इदं | பின்வருமாறு |
| विलपमानं | புலம்பும் | अब्रवीत् | மொழிந்தான்: |

राज्यं प्राप्स्यसि धर्मज्ञ लङ्कायां नात्र संशयः ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|-----------------|
| धर्मज्ञ | "தர்மமுணர்ந்தவனே! | प्राप्स्यसि | ஆடையப்போகிதீர். |
| लङ्कायां | இலங்கையில் | अस | இவ்விஷயத்தில் |
| राज्यं | ராஜ்யரிமைமைய | संशयः न | ஐயமில்லை. |

रावणः सह पुत्रेण स कामं नेह लप्स्यते ॥ २२ ॥

| | | | |
|---------|------------|------------|--------------|
| सः | "அந்த | कामं | மனோதத்தை |
| रावणः | ராவணன் | इह | இவ்வுலகில் |
| पुत्रेण | புதல்வனோடு | लप्स्यते न | ஆடையாட்டான். |
| सह | கூட | | |

न हजापीडितावेताबुभौ राघवलक्ष्मणौ । त्यक्त्वा मोहं वधिष्येते सगणं रावणं रणे ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-----------|------------------|
| एतौ | "இந்த | मोहं | மூர்ச்சையை |
| राघवलक्ष्मणौ | இராமலக்ஷ்மணர்கள் | त्यक्त्वा | விட்டெழுந்து |
| उभौ | இருவரும் | रणे | போரில் |
| हजापीडितौ | மரணநேரமால் பிடிக்கப்பட்டவர்கள் | रावणं | ராவணனை |
| न | இல்லை. | सगणं | கூட்டத்தாரோடுகூட |
| | | वधिष्येते | வதைசெய்வார்கள்." |

तमेवं सान्त्वयित्वा तु समाश्रास्य च राक्षसम् । सुपेणं श्वशुरं पार्श्वे सुग्रीवस्तमुवाच ह ॥

| | | | |
|------------------|------------------|-----------|--------------------------|
| सुग्रीवः | சுகரீவன் | पार्श्वे | அருகாமையிலிருந்த |
| तं | அந்த | श्वशुरं | மாமனாரான |
| राक्षसं | அரக்கனை | तं सुपेणं | அந்த ஸ-மேஷணனைப் பார்த்து |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | उवाच ह | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |
| सान्त्वयित्वा तु | நல்லவார்த்தைகூறி | | |
| समाश्रास्य च | தேற்றிவிட்டு | | |

सह शूरैर्हरिणैर्लब्धसंज्ञावरिन्दमौ । गच्छ त्वं भ्रातरौ शूरा किष्किन्धां रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|------------------------|
| भरिन्दमौ | "சத்ருஸம்நாரர்கள் | शूरा | ஆழைத்துக்கொண்டு, |
| " | கரும் | शूरैः | சூரர்களான |
| भ्रातरौ | பிரதரக்களுமாகிய | हरिणीः सह | வானரக்கூட்டங் களோடுகூட |
| इमौ | இந்த | तं | நீ |
| लब्धसंज्ञौ | மூர்ச்சைதெளிந்த | किष्किन्धां | கிஷ்கிந்தைக்கு |
| रामलक्ष्मणौ | இராமலக்ஷ்மணர் | गच्छ | செல். |
| | களை | | |

अहं तु रावणं हत्वा सपुत्रं सहवान्धवम् । मैथिलीमानयिष्यामि शक्रो नष्टापिव श्रियम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|------------------------|
| அஃ து | "நான் ஒருவரையே | मष्टं | தன்னை விட்டுப் பிரிந்த |
| रावणं | சொல்லாதவரை | श्रियं | பாங்குபாணம் பத்தனத்த |
| सपुत्रं | புத்திரர்களுமே இடம் | इव | எவ்வண்ணமோ அங் |
| सहवान्धवं | இணத்தாடுமே இடம் | | வண்ணமே, |
| हत्वा | கொண்டது, | मैथिलीं | மயிதலி தேவியை |
| शक्रः | தேவகுத்திரன் | आनयिष्यामि | கொண்டு வருகிறேன்." |

श्रुत्वाैतद्दानरेन्द्रस्य सुपेणो वाक्यमब्रवीत् । देवासुरं महयुद्धमनुभूतं सुदारुणम् ॥ २७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------|----------------------|
| सुपेणः | ஸுபேணன், | देवासुरं | "தேவர்களுக்கும் அசு |
| वानरेन्द्रस्य | வானரமன் னானது | | ரர்களுக்கும் கடந்த |
| पुत्रम् | இந்த | सुदारुणं | மிக்கபயங்கரமான |
| वाक्यं | மொழியை | महत् | பெரும் |
| श्रुत्वा | சேட்டு, | युद्धं | போர் |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு சொன் | अनुभूतम् | என்னால் பார்க்கப்பட் |
| | னான்: | | டிருக்கிறது. |

तदा स दानवा देवाञ्छरसंस्पर्शकोविदाः । निजधनुः शस्त्रविदुषश्छादयन्तो मुहुर्मुहुः ॥

| | | | |
|-------------------|------------------|--------------|---------------------|
| तदा | "அப்பொழுது | छादयन्ताः | கட்புனளுகா திருந்து |
| शरसंस्पर्शकोविदाः | பாணப்பிரயோகக் | | கொண்டே |
| | களில் திபுணர்களை | शस्त्रविदुषः | சுஸ்திரங்களில் வல்ல |
| दानवाः | அசுரர்கள், | देवान् | தேவர்களை |
| मुहुः मुहुः | பலமுறை | निजधनुः स | வதைத்தனர். |

तानार्ताञ्छृत्வसंज्ञांश्च परासूंश्च बृहस्पतिः । विद्याभिर्षन्वयुक्ताभिरोषधीभिश्चिकित्सति ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|--------------------|
| बृहस्पतिः | "பிடுகஸ்பதியானவர், | सान् | அவர்களை |
| आर्तान् | பிடைபுற்று | विद्याभिः | மந்திரங்களாலும் |
| नष्टसंज्ञान् | முறச்சித்தவர்களுள் | मन्वयुक्ताभिः | மந்திரிக்கப்பட்ட |
| परासूंश्च | உயிரிழந்தவர்களு | ओषधीभिः च | முலிகைகளாலும் |
| | மான | चिकित्सति | சிகிதையை செய்தார். |

तान्यौषधान्यानयितुं क्षीरोदं यान्तु सागरम् । जवेन वानराः शीघ्रं संपातिपनसादयः ॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------------|--------------|
| सम्पातिपनसादयः | "சம்பாதி, பாசனம் | औषधानि | முலிகைகளை |
| | முதலிய | आनयितुं | கொண்டுவர |
| वानराः | வானரர்கள் | क्षीरोदं सागरं | பாற்கடலுக்கு |
| शीघ्रं | காலதாமதமின்றி | जवेन | வேகமாய் |
| यानि | அந்த | यान्तु | செல்லட்டும். |

हरयस्तु विजानन्ति पार्वतीं तां महौषधीम् । सञ्जीवकर्णी दिव्यां विशल्यां देवनिर्मिताम् ॥

| | | | |
|----------|------------------------------|--------------|--|
| हरयः | “வானார்கள்” | देवनिर्मितां | { தேவர்களுக்காக உண் பண்ணப்பட்டது மான |
| पार्वतीं | பர்வதத்தின் கிடைக் கும் | तां | அந்த |
| महौषधीं | சிறந்த மூலிகை பாகியதும், | सञ्जीवकर्णीं | ஸஞ்ஜீவகரணியையும், |
| दिव्यां | தெய்வத்தன்மை வாய்ந்ததும், | विशल्यां तु | விசல்யந்தையும் |
| | | विजानन्ति | நன்கறிவார்கள். |

चन्द्रश्च नात्रा द्रोणश्च क्षीरोदे सागरोत्तमे । अमृतं यत्र मथितं तत्र ते परमौषधी ॥३२॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|---------|-----------------------------|
| सागरोत्तमे | “கடல்களுட்சிறந்த பரங்கடலில், | यत्र | எந்தவிடத்தில் |
| क्षीरोदे | சக்திரென்ற மலையும், | अमृतं | அமிர்தமானது |
| चन्द्रः च | திரோணென்ற மலையும், | मथितं | கடையப்பட்டதோ |
| द्रोणः च | பெருடன் விளக் குகின்றன. | तत्र | அங்கு |
| नात्रा | | ते | அந்த இரண்டு |
| | | परमौषधी | மூலிகைகளும் இருக்கின்றன. |

तस्मिंस्ते निहिते देवैः पर्वते परमौषधी । अयं वायुसुतो राजन्हनुमांस्तत्र गच्छतु ॥३३॥

| | | | |
|---------|-------------------------------|----------|-----------------------------|
| राजन् | “அரசே!” | निहिते | வைக்கப்பட்டிருக்கின் றன. |
| ते | அந்த | अयं | இந்த |
| परमौषधी | சிறந்த மூலிகைகள் இரண்டும், | वायुसुतः | வாயுகுமாரனான |
| तस्मिन् | அந்த | हनुमान् | ஹனுமான் |
| पर्वते | மலையில் | तत्र | அங்கு |
| देवैः | தேவர்களால் | गच्छतु | செல்கீட்டும்.” |

एतस्मिन्नन्तरे वायुर्मेघांश्चापि सविद्युतः । पर्यस्यन्सागरे तोयं कम्पयन्निव पर्वतान् ॥३४॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|--------------------------------|
| एतस्मिन् | இந்த | पर्यस्यन् | கொந்தளிக்கச்செய்து |
| अन्तरे | சமயத்தில் | पर्वतान् | மலைகளை [கொண்டு |
| सविद्युतः | மின்னலுடன் கூடிய | कम्पयन् इव | குலுக்கச்செய்து கொண்டும் |
| मेघान् च | மேகங்களையும் | वायुः | ஒரு பெருங் காற்றை அடித்தது. |
| सागरे | சமுத்திரத்தில் | | |
| तोयं अपि | ஐவத்தையும் | | |

महता पक्षवातेन सर्वद्वीपमहाद्रुमाः । निपेतुर्भिन्नविटपाः समूला लवणाम्भसि ॥३५॥

| | | | |
|---------------------|--------------------------------|-------------|---------------------|
| महता | “பெரும்” | भिन्नविटपाः | கிளைகள் முறிந்து, |
| पक्षवातेन | சிறகுக்காற்றால் | समूलाः | மேருடன் (பெயர்ந்து) |
| सर्वद्वीपमहाद्रुमाः | தீவிலெங்குமுள்ள பெருமரங்கள் | लवणाम्भसि | உவர்க்கடலில் |
| | | निपेतुः | விழுந்தன. |

अभवन्पद्मगास्त्रस्ता भोगिनस्तत्रवासिनः । शीघ्रं सर्वाणि यादांसि जग्मुश्च लवणार्णवम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|-------------------|
| तत्रवासिनः | அவ்விருந்த | यादांसि | இவ்வூர் துக்கள் |
| भोगिनः | சிறந்தவுடனுண்டவ | सर्वाणि च | எல்லாறும் |
| पद्मगाः | சர்ப்பங்கள் | शीघ्रं | சீகரவில் |
| लवणः | நடுநடுக்கியவைகளாக | लवणार्णवं | உவர் க்கடலினுள்ளே |
| अभवन् | ஆயின. | जग्मुः | முழுகிவிட்டன. |

ततो मुहूर्ताद्दरुदं वैनतेयं महाबलम् । वानरा ददृशुः सर्वे ज्वलन्तपिव पावकम् ॥ ३७ ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|---------------------|
| ततः | பிறகு | वैनतेयं | வினகையின் புதல் |
| मुहूर्ताद् | குறு கொடிப்பொழு | ज्वलन्तं | இவ்விக்கும் [வரும், |
| वानराः | வானரசர்கள் [தில் | पावकं इव | தீயைப்போலிடுப்பவரு |
| सर्वे | எல்லோரும் | गुरुदं | கருடபகவானை [மான |
| महाबलं | மகா சக்தியுடைய | दृशुः | கண்டார்கள். |

तमागतमभिषेक्ष्य नागास्ते विप्रदुद्रुवुः । यैस्तौ सत्पुरुषौ वदौ शरभूर्तेमहाबलौ ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|----------------------|
| शरभूतैः | சரவுருக்கொண்ட | वदौ | கட்டப்பட்டிருந்தன |
| यैः | எவைகளால் | ते नागाः | அந்த பாம்புகள் [தேர, |
| महाबलौ | மிக்க பலவாண்களும், | आगतं | அங்கு வந்துற்ற |
| सत्पुरुषौ | ஸத்புருஷர்களுமான | ते अभिषेक्ष्य | அவரைப்பார்த்து |
| तौ | அவ்விருவரும் | विप्रदुद्रुवुः | பயந்தேடிவிட்டன. |

ततः सुपर्णः काकुत्स्थौ दृष्ट्वा प्रत्यभिनन्दितः । विमर्शं च पाणिभ्यां मुखे चन्द्रसमप्रभे ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|---------------|-------------------|
| ततः | பிறகு | पाणिभ्यां | இரு கைகளாலும் |
| सुपर्णः | கருடபகவான் | चन्द्रसमप्रभे | சந்திரன் போல் |
| काकुत्स्थौ | சூரீராமலக்ஷ்மணர் இ | | விளக்கிய |
| दृष्ट्वा | பார்த்து [ருவாரையும் | मुखे च | இரு முகக்களையும் |
| प्रत्यभिनन्दितः | சந்தேசாஜித்து | विमर्शं | தடவிக்கொடுத்தார். |

वैनतेयेन संस्पृष्टास्तयोः संरुहहूर्त्रणाः । सुवर्णे च तन् स्निग्धे तयोराशु बभूवतुः ॥४०॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------|------------------|
| तयोः | அவ்விருவர்களுடைய | आशु | தச்சூணமே |
| वर्णाः | விசைங்கள் | तयोः | அவ்விருவர்களுடைய |
| वैनतेयेन | கருடபகவானால் | तन् च | திருமேனிகளும் |
| संस्पृष्टाः | தடவிக்கொடுக்கப் | सुवर्णे | சுவர்ணமயமால் |
| | பட்டவைகளால் | स्निग्धे | வழுவுமுப்பாய் |
| संरुहः | ஆறிவிட்டன. | बभूवतुः | ஆயின. |

तेजो वीर्यं बलं चोज उत्साहश्च महागुणः । प्रदर्शने च बुद्धिश्च स्मृतिश्च द्विगुणं तयोः ॥

| | | | |
|---------|------------------|-------------|--|
| तयोः | அவ்விருவர்களுடைய | उत्साहः च | உற்சாஹமும் |
| तेजः | ஒளியும் | प्रदर्शनं च | உண்ணதிரவும் |
| वीर्यं | வீர்யமும் | बुद्धिः च | விவேகமும் |
| बलं | ஆற்றலும் | स्मृतिः च | ஞாபகசக்தியும் |
| ओजः च | மேககலாந்தியும் | द्विगुणम् | { முன்னிருந்ததைவிட இரட்டிப்பாய் விளக் கின. |
| महागुणः | சிறந்த குணமாகிய | | |

तावुत्थाप्य महावीर्यौ गरुडो वासवोपमौ । उभौ तौ सखजे हृष्टौ रामश्चैनमुवाच ह ॥४२॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|--------|-----------------------------|
| गरुडः | கருடபகவான் | तौ उभौ | அவ்விருவர்களுக்கும் |
| महावीर्यौ | மகா வீரர்களும் | सखजे | தழுவிக்கொண்டார். |
| वासवोपमौ | இந்திரனுக்குச் சம ணர்களுமான | राम; च | ஸ்ரீராமரும் |
| तौ | அவ்விருவர்களுக்கும் | एनं | இவரைப் பார்த்து |
| उत्थाप्य | எழுப்பி | उवाच | பின்வருமாறு வினா வினார். |
| हृष्टौ | சந்தோஷமடைந்த | ह | காண். |

भवत्प्रसादाद्दृश्यसनं रावणिप्रभवं महत् । आवामिह व्यतिक्रान्तौ पूर्ववद्भ्रान्तौ कृतौ ॥४३॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|---------------|-----------------|
| आवां | “நாக் கனி ருவரும் | व्यसनं | ஆபத்தை |
| भवत्प्रसादात् | தேவரீரின் கருணை யால் | व्यतिक्रान्तौ | கடந்தவர்களால் |
| रावणिप्रभवं | இந்திரஜித்தரல் உண் டாகிய | इह | இப்பொழுது |
| महत् | பெரிய | पूर्ववत् | முன்போலவே |
| | | व्रान्तौ | பலமுடையவர்களால் |
| | | कृतौ | செய்யப்பட்டோம். |

यथा तातं दशरथं यथाऽज्ञं च पितामहम् । तथा भवन्तमासाद्य हृदयं मे प्रसीदति ॥४४॥

| | | | |
|---------|------------------------|----------|------------------|
| तातं | “தந்தையாகிய | तथा च | அப்படியே |
| दशरथं | தசரதரை | भवन्तं | தேவரீரை |
| यथा | அடைந்தால் எப்படி | आसाद्य | அடைந்து |
| पितामहं | பாட்டனாரான [யோ | मे | எனது |
| अज्ञं | அஜரை | हृदयं | மனம் |
| यथा | அடைந்தால் எப்படி யோ | प्रसीदति | தேறுதலையடைகிறது. |

को भवाञ्छूपसंपन्नो दिव्यस्त्रगनुलेपनः । वसानो विरजे वस्त्रे दिव्याभरणभूषितः ॥४५॥

| | | | |
|-------------------------|--|----------------------|--|
| रूपसंपन्नः | “அழகிய திருமேனி யுடையவரும் | वस्त्रे | வேஷ்டியையும், உத் தரியத்தையும் |
| दिव्यस्त्रगनु- लेपनः | } தேவர்களது மகர்மா கையையும் சந்தனப் பூச்சையும் அணிந் தவரும் | वसानः | தரித்தவரும் |
| | | दिव्याभरण- भूषितः | } திவ்யபாபணங்களால் அலங்கரிக்கப்பட்ட |
| विरजे | கிர்மலமான | भवान् | |

तमुवाच महातेजा वैनतेयो महाबलः । पतत्रिराजः श्रीतास्मा हर्षपर्याकुलेक्षणः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------------|-----------------------------------|
| महातेजाः | மகாதேஜன்களையும் | हर्षपर्याकुलेक्षणः | ஆனந்தத்தால் பூரித்த கண்களுற்று |
| महाबलः | மகாசக்திமானும் | तं | அவரைப் பார்த்து |
| पतत्रिराजः | பகதிராஜனுமாகிய | उवाच | பின்வருமாறு பதிலு ரைத்தார்: |
| वैनतेयः | கருடபகவான் | | |
| श्रीतास्मा | உன்னம் பூரித்தவராகி | | |

अहं सखा ते काकुत्स्थ मिथः प्राणो बहिध्वरः । गरुत्मानिह संमाप्नो युवयोः साद्यकारणात् ॥

காகுத்த
கருமானு
அஃ
தே
மித:
சகா
வஹிதர்:

"ஸ்ரீராம!
கருதமான் என்ற
அடியேன்
தேவரீரது
திருமூலம் கோணுது
தேவதன். [நடக்கும்
வெளியில் சஞ்சரிக்கும்

பிராணன்.
உக்களிஞுவர்
கருடைய
உதவிசெய்தல்
பொருட்டு
இவ்விடம்
வந்தேன்.

असुरा वा महावीर्या दानवा वा महाबलाः । सुराश्चापि सगन्धर्वाः पुरस्कृत्य शतक्रतुम् ॥
नेपं मोक्षयितुं शक्ताः शरवन्धं मुदास्वप् । मायाबलादिन्द्रजिता निमित्तं क्रूरकर्मणा ॥

கூர்கர்மண
இन्द्रஜிதா
மாபாபலாநு

"கொடிய செயல்புரி
இத்திரஜித்தால் [யும்
மாய வித்தைதின்
சக்தியால்

நிமித்த
இம்
சுதாஸந்
சரவந்
மோஷயித
மஹாவிர்யா:

செய்யப்பட்ட
இந்த
மிகக்கொடிய
பாணக்கட்டை
அழிப்பதற்கு
அதிக வீர்யம்
பொருத்திய

அசுரா: வா
மஹாவிரா:
தானவா: வா
சகந்நர்வர்களை
யுள்ளிட்ட

சுரா: ச
சதகர்து
புரஸ்குதபி
கொண்டுக்கூட
சக்தா: ந
வல்லவல்லர்.

एते नागाः काद्रवेयास्तीक्ष्णदंष्ट्रा विषोल्वणाः । रक्षोमायाप्रभावेन शरा भूत्वा त्वदाश्रिताः॥

ரக்ஷோமாபா-
பாபாவேந }
காட்வேயா:
வீஷந்ஷ்ட்ரா:

"காஷ்டஸனது மாய
வித்தைதின் சக்தி
யால்

காட்வேயா:
வீஷந்ஷ்ட்ரா:
கூரிய கோரைப்பற்
களையுடையவைகளும்

சத்திரவின் புதல்வர்
கருடம்

விஷோல்வணா:
எதே
நாगा:
शरा: भूत्वा
विश्राशिता:

{ கொடிய வித்தைதக்
கக்குவின் தவைகரு
மான

இந்த
சாகக்கள்
பாணவடிவங்கொண்டு
உக்களிஞுவர்களை யும்
அடைந்தன.

सभाग्यश्वासि धर्मज्ञ राम सत्यपराक्रम । लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा समरे रिपुघातिना ॥५१॥

ராம
தர்மஜ
சத்யபராஹ்ம
சமரே

"ஸ்ரீராம!
தர்மத்தையுணர்ந்
தவரே!
உண்மையும் பராக்ரம
மும் அமைந்தவரே!
பொரில்

ரிபுஹிதா
பாசா ச
லக்ஷ்மணேந
சஹ
சமாய: அசி

சத்ருசம்நாசகரும்
தம்பிடியுமான்
கஷ்டபணரோடு
கூட
கொலுத்த வரழ்வுட
ளிஞக்கின் தீர்.

इमं श्रुत्वा तु वृत्तान्तं त्वरमाणोऽहमागतः । सहसा युवयोः स्नेहात्सखित्वमनुपालयन् ॥

अहं "अடியேன்
इमं இந்த
वृत्तान्तं श्रुत्वा செய்தினைக் கேட்டு,
युवयोः तु உக்களிநுலர்களிடத்
स्नेहात् பக்தியாக் [திலும்

सखित्वं தோழ உரிமையை
अनुपालयन् காக்குமாறு
त्वरमाणः பாபரப்புற்று
सहसा தந்தகூணமே
आगतः இங்கு வந்தேன்.

मोक्षितौ च महाघोरादस्मात्सायकबन्धनात् । अप्रमादश्च कर्तव्यो युवाभ्यां नित्यमेव हि ॥

अस्मात् "இந்த
महाघोरात् மிகக் கொடிய
सायकबन्धनात् च பாணக்கட்டினின்றும்
मोक्षितौ விடுவிக்கப்பட்டீர்கள்.
च ஆயினும்

नित्यं एव எப்பொழுதும்
युवाभ्यां हि உக்களிநுலர்களாலும்
अप्रमादः ஜாக்ரதையுடனிருத்
தல்

कर्तव्यः அனுஷ்டிக்கத்தக்கது.

प्रकृत्या राक्षसाः सर्वे संग्रामे कूटयोधिनः । शूराणां शुद्धभावानां भवतामार्जवं बलम् ॥

शुद्धभावानां "பரிசுத்த மனமுள்ள
शूराणां சூரர்களாகிய
भवतां உங்களுக்கு
संग्रामे போரில்
आर्जवं தர்மநெறிவழுவாமை

बलं சர்வவசன்யமாயிருக்
राक्षसाः அரக்கர்கள் [கிறதும்
सर्वे எல்லோரும்
प्रकृत्या இயல்பாகவே
कूटयोधिनः கபடப்போர் புரிபவர்கள்.

तत्र विश्वसितव्यं वो राक्षसानां रणाजिरे । एतेनैवोपमानेन नित्यं जिह्मा हि राक्षसाः ॥

रणाजिरे "போர்க்களத்தில்
राक्षसाः அரக்கர்கள்
नित्यं எப்பொழுதும்
जिह्माः அதர்மநெறியில்
तिर्भवர்கள்.

एतेन இந்த
उपमानेन एव உபமானத்தாலேயும்
वः உங்களுக்கு
राक्षसानां ராக்ஷஸர்களது
विश्वसितव्यं திக்குகேரது எனும்
न கடாது." [எண்ணம்

तद्व हि ஆண்படியாலும்

एवमुक्त्वा ततो रामं सुपर्णः सुमहाबलः । परिश्वज्य सुहृत्स्त्रिभ्यमाप्रष्टुमुपचक्रमे ॥ ५६ ॥

सुमहाबलः மிக்க சக்திமானான
सुपर्णः கருடபகவான்
ततः அப்பொழுது
एवं மேற்கண்டவாறு
उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
सुहृत्स्त्रिभ्यं தொண்டர்களிடத்தில்
वरात्ஸல்லமுடைய

रामं ஸ்ரீராமரை
परिश्वज्य தழுவிக்கொண்டு
आप्रष्टुं போக விடைபயலிக்க
उपचक्रमे பின்வருமாறு வேண்டி
டிக்கொண்டார் :

सखे राघव धर्मज्ञ रिपूणामपि वत्सल । अभ्यनुज्ञातुमिच्छामि गमिष्यामि यथागतम् ॥

सखे, "தோழரே!
धर्मज्ञ தர்மமறிந்தவரே!
रिपूणां अपि சந்ருக்களிடமும்
वत्सल காருண்யமுடைய
राघव ஸ்ரீராம! [வரே!

यथागतं வந்தபடியே
गमिष्यामि போய்வருகிறேன்.
अभ्यनुज्ञातुं போக விடைபயலிக்க
इच्छामि நான் பிரார்த்திக்ககின்
றேன்.

न च कौतूहलं कार्यं सखित्वं प्रति राघव । कृतकर्मा रणे वीर सखित्वमनुवेत्स्यसि ॥५८॥

ராஹவ
சகிதவ் ப்ரதி
கூதூஹல் ச
கார்ய ந

"ஸ்ரீராம!
தேரமுத்தன்மை
கிவபாத் தில்
என்னம் தெரிந்து
கொள்ளவேண்டும்
என்னும் ஆவா
இப்பொழுது கொள்
ளத்தக்கதன்று.

வீர
ரணே
கூதகர்மா
சகிதவ்
அநுவேத்யசி

கூரணே
பேரில்
கெய்யவேண்டியதைச்
செய்துமுடித்தவராய்
தேழு உரிமையை
உள்ளபடி தெரிந்து
கொள்வீர்.

बालवृद्धावशेषां तु लङ्कां कृत्वा शरोर्मिभिः । रावणं च रिपुं हत्वा सीतां समुपलप्स्यसे ॥

शरोर्मिभिः
रिपुं
रावणं च
हत्वा
लङ्कां तु

"பாணங்களின் தொ
குதிகளால்
சத்ருவாகிய
ராவணனையும்
கொன்று
லக்கையையும்

बालवृद्धावशेषां
कृत्वा
सीतां
समुपलप्स्यसे

{ குழந்தைகளும் கிழ
வர்களும் பிச்சமரிருக்
குமாயு
செய்துவிட்டு
வந்தாதேவியை
தேவரீர் அடையப்
போகிறீர்.

इत्येवमुक्त्वा वचनं सुपर्णः शीघ्रविक्रमः । रामं च विरुजं कृत्वा मध्ये तेषां वनौकसाम् ॥
प्रदक्षिणं ततः कृत्वा परिष्वज्य च वीर्यवान् । जगामाकाशमाविश्य सुपर्णः पवनो यथा ॥

सुपर्णः
पवनः यथा
शीघ्रविक्रमः
वीर्यवान् च
सुपर्णः
इति एवं
वचनं
उक्तवा
तेषां
वनौकसां

கிறந்த கிறஞுகள்
படைக்கப்பெற்று
வாய்ப்பகவான்போல்
கிரகந்துசெல்லும்
தன்மையுள்ள
பரமசரமசாலியாகிய
கருட பகவான்
மேற்கண்ட
சொல்லை
கொல்லிவிட்டு
அந்த
வானரர்களின்

मध्ये
रामं
विरुजं
कृत्वा
ततः
प्रदक्षिणं
कृत्वा
परिष्वज्य च
आकाशं
आविश्य
जगाम

முன்னிகையில்
ஸ்ரீராமரை
வேதனை யொழிந்தவ
செய்துவிட்டு [ராம
அதன் மேல்
பிரதக்ஷிணத்தையும்
செய்து
தின்னொருதாம் தழு
விக்கொடுத்துவிட்டு
ஆகாசத்தில்
எழுந்த
சென்றார்.

विरुजौ राघवौ दृष्ट्वा ततो वानरयूथपाः । सिंहनादांस्तदा नेदुर्लाङ्गलान्दुभुवुथ ते ॥६२॥

तदा
ते
वानरयूथपाः
राघवौ
विरुजौ

அப்பொழுது
அந்த
வானரகூடனை த்தலைவர்
கள்
ஸ்ரீராமரையும் லக்ஷ்ம
ணரையும்
தேகசெளக்க்யத்துடன்
விளங்குபவர்களாய்

दृष्ट्वा
ततः
सिंहनाशान्
नेदुः
लाङ्गलान् च
दुभुवुः

பார்த்து
அதனால்
சிங்கநாதங்களை
இட்டார்கள்.
வாங்களையும்
ஆட்டினார்கள்.

ततो भेरीः समाजधनुर्मृदङ्गांश्चाप्यनादयन् । दध्मुः शङ्खान्संप्रहृष्टाः क्ष्वेलन्त्यपि यथापुरम् ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-----------------|-----------------------|
| ततः | அப்பொழுது | शङ्खान् च | சங்கவா த்யங்களை யும் |
| यथापुरं | முன்போலவே | दध्मुः | ஊதினூர்கள். |
| भेरीः | பறைகளை | संप्रहृष्टाः | மனக்களிப்புற்றவர் |
| समाजधनुः | அடித்தார்கள். | | களாய் |
| मृदङ्गान् अपि | மத்தளங்களை | क्ष्वेलन्ति अपि | துள்ளியும் குதித்தார் |
| अनादयन् | கொட்டினார்கள். | | கள். |

वास्फोट्यास्फोट्य विक्रान्ता वानरा नगयोधिनः ।

द्रमानुत्पाद्य विविधांस्तस्युः शतसहस्रशः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|-------------------|--------------------|
| नगयोधिनः | மலைகளை க்கொண்டு போர்புரியும் | शतसहस्रशः | எனதுக்கணக்காக |
| विक्रान्ताः | விக்கிரமகாலிகளாகிய | अवाप्य | வேருடன் பெயர்ந்து |
| वानराः | வானரர்கள் | आस्फोट्य आस्फोट्य | ஓயாது தோளைத் |
| विविधान् | பல | | தட்டிக்கொண்டு |
| द्रमान् | கிருஷ்டங்களை | तस्युः | போருக்குத் தயாராய் |
| | | | நின்றார்கள். |

विमृजन्तो महानादांस्त्रासयन्तो निशाचरान् । लङ्काद्वाराण्युपाजमुर्यादुकामाः पुवङ्गमाः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|---------------|------------------------|
| पुवङ्गमाः | * வானரர்கள் | निशाचरान् | அரக்கர்களை |
| योदुकामाः | போர்புரிய ஆவல் கொண்டவர்களாய் | आसयन्तः | பயமுறுத்திக் கொண்டு |
| महानादान् | பெருஞ்சத்தங்களை | लङ्काद्वाराणि | லங்கையின்வாயில் |
| विमृजन्तः | இட்டுக்கொண்டு | उपाजमुः | கடினார்கள். [எனில் |

ततस्तु भीमस्तुमुलो निनादो बभूव शाखासृगयूथपानाम् ।

क्षये निदाघस्य यथा घनानां नादः सुभीषो नदतां निशीथे ॥ ६६ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------|-------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | नदां | கள்ளிக்கும் |
| शाखासृगयूथपानां | வானரச்சேனைத் தலைவர்களுடைய | घनातां | மேகக்கூட்டங்களது |
| निनादः | சத்தமானது | सुभीषः | மிக பயங்கரமாகிய |
| निदाघस्य क्षये | வரலாகாததில் | नादः यथा | பேரிடிபோன்றதாய் |
| निशीथे | கள்ளிரவில் | भीमः | பயங்கரமாயும் |
| | | स्तुमुलः तु | அடர்ந்ததாயும் |
| | | बभूव | இருந்தது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकान्ये युद्धकाण्डे पञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16665

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 1990

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे एकविंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் சூதியில் சூசன் லவன் இவர்களால் பூரிமார் ஸந்தியில் அர்வமேத
யாகசாலையில் காணம் செய்யப்பட்ட பூரிமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தேராவது
தினத்தில் காணம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[पुरा कुशलवाभ्यां श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवादे द्वाविंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
द्वाविंशोऽङ्गि युद्धकाण्डे एकपञ्चाशसर्गमारभ्य सप्ततिसप्तसर्गपर्यन्तं (16666-17916
श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाश्च 1215.]

ஆதியில் சூசன் வயன் இவர்களால் சூரியமலர்நீடுமில் அக்வயைதயாகரையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் காணம் செய்யப்பட்ட சூமக் ராமாயணத்தில்
இருபத்திரண்டாவது தினத்திலயுத்தகாண் - தில் 5]-வது ஸர்க்கம் முதல்
70-வது ஸர்க்கம் வரை (16666—17916) காணம் செய்யப்பட்டது.
அன்று காணம் செய்யப்பட்ட சுனேகசங்கியை 1251]

एकपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தொராவது ஸர்க்கம். || 42 ||

धूम्राक्षनिर्गमः—தும்ராக்கனது வரவு.

तेषां सुतमुलं शब्दं वानराणां महौजसाम् । नदतां राक्षसैः सार्धं तदा शुश्राव रावणः ॥

| | | | |
|----------|------------------|-----------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | सुतमुलं | மிகப்பெரும் |
| नदतां | பெரும்சத்தமிடும் | शब्दं | சத்தத்தை |
| महौजसां | சிறந்த ஆற்றலுடைய | रावणः | ராவணன் |
| तेषां | அந்த | राक्षसैः सार्धं | அரக்கர்களோடு |
| वानराणां | வானரர்களுடைய | शुश्राव | கேட்டான், [கூடவே |

स्निग्धगम्भीरनिर्घोषं श्रुत्वा स निन्दं भृशम् । सचिवानां ततस्तेषां पथ्ये वचनमवधीत् ॥

| | | | |
|-----------------------|---|----------|----------------------------|
| सः | அவன் | सचिवानां | மந்திரிகளின் |
| स्निग्धगम्भीरनिर्घोषं | { உதலாதமையும் கம்பீரமையும் கொஷி க்கின்ற | पथ्ये | நடுவில் |
| भृशं | பெரும் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| निन्दं | சத்தத்தை | वचनं | ஒரு சொல்லை |
| तेषां | அந்த | ततः | அப்பொழுது |
| | | अवधीत् | மீள்வருமாறு மொழிக்கான்: |

यथाऽसौ संप्रहृष्टानां वानराणां समुत्थितः । बहूनां सुमहानादो मेघानामिव गर्जताम् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------|-----------------------------|
| संप्रहृष्टानां | "மெகு ஆனந்தத்தில் | गर्जतां | கர்ஜிக்கின்ற |
| बहूनां | பல [முழுவிய | मेघानां | கோக்கள் ளுடைய |
| वानराणां | வானரர்களுடைய | इव यथा | சத்தம் உட்படியோ அப்படியே |
| असौ | இக்க | समुत्थितः | கொம்பிட்டுக்கின்றது. |
| सुमहानादः | பெருஞ்சத்தமானது | | |

व्यक्तं सुमहती प्रीतिरेतेषां नात्र संशयः ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|---------|--------------------|
| एतेषां | "இவர்களுக்கு | व्यक्तं | உற்பட்டிருக்கிறது. |
| सुमहती | மிகப்பெரிய | अत्र | இதில் |
| प्रीतिः | களிப்புக்குகாரணம் | संशयः न | சந்தேகமில்லை. |

तथा हि विपुलैर्नादैश्चुक्षुभे वरुणालयः

॥ ५ ॥

विपुलैः "பெரும்
 नादैः சத்தங்களால்

वरुणालयः तथा சமுத்திரமும்
 चुक्षुभे हि கலங்கிவிட்டதே!

तौ तु वदौ शरैस्तीक्ष्णैर्भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । अयं च सुमहान्नादः शङ्कां जनयतीव मे ॥

तौ "ஆந்த
 भ्रातरौ பிராதாக்களாகிய
 रामलक्ष्मणौ तु रामனும் லக்ஷ்மணனும்
 तीक्ष्णैः கொடிய [மோவெனில்
 शरैः பாணங்களால்
 वदौ கட்டப்பட்டிருக்கின்
 ரர்கள்.

अयं இந்த
 सुमहान् மிகப் பெரிய
 नादः சத்தமானது
 मे च எனக்கும்
 शङ्कां கலவரத்தை
 जनयति इव உண்டாக்குகிறதே | १

एतच्च वचनं चोक्त्वा मन्त्रिणो राक्षसेश्वरः । उवाच नैर्ऋतांस्तत्र समीपपरिवर्तिनः ॥ ७ ॥

राक्षसेश्वरः राக்ஷஸமன்னன்
 एतच्च இந்த
 वचनं சொல்லை
 उक्त्वा च சொல்லினிட்டு
 तत्र அப்பொழுது

समीपपरिवर्तिनः அருகிலிருந்த
 नैर्ऋताश्च அரக்க
 मन्त्रिणः तु மந்திரிகளைப் பார்த்து
 उवाच பின்வருமாறு
 मोपृथित्तान् :

ज्ञायतां तूर्णमेतेषां सर्वेषां वनचारिणाम् । शोककाले समुत्पन्ने हर्षकारणमुत्थितम् ॥ ८ ॥

एतेषां "இந்த
 वनचारिणां வானரர்கள்
 सर्वेषां எல்லோருக்கும்
 शोककाले துக்கப்படவேண்டிய
 காலம்
 समुत्पन्ने வந்திருக்கையில்

उथितं செந்திருக்கிற
 हर्षकारणं சந்தோஷத்தின்
 कारणமானது
 तूर्णं விரைவில்
 ज्ञायताम् அறிந்துவரப்
 படும்.

तथोक्त्वास्तेन संभ्रान्ताः प्राकारमधिख्यते । ददृशुः पालितां सेनां सुधीवेण महात्मना ॥

तेन அவனால்
 तथा மேற்கண்டவாறு
 उक्त्वा: நியமனம்பெற்ற
 ते ஆவர்கள்
 संभ्रान्ताः பரபரப்புற்று
 प्राकारं மதிக்கவந்தது
 अधिख्यते ஏறி

महात्मना மகா ஆற்றலுடைய
 सुधीवेण சுசீவனால்
 पालितां சூதிக்கப்பட்ட
 सेनां சேனையை
 ददृशुः கவனித்துப்பார்த்து
 தரர்கள்.

तौ च मुक्तौ सुघोरेण शरवन्धेन राघवौ । समुत्थितौ महाभागौ विषेदुः प्रेक्ष्य राक्षसाः ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|-------------------------------|
| राक्षसाः | ஆரக்கர்க்கள் | महाभागौ | மாதொரு குறைபு |
| राघवौ | சூரிய மகன் | | மின்றி |
| तौ च | அவ்விருவர்களையும் | समुत्थितौ | நின்றுகொண்டிருக்கின்றவர்களாய் |
| सुघोरेण | மிகக் கொடிய | प्रेक्ष्य | பார்த்து |
| शरवन्धेन | பாணக்கட்டால் | विषेदुः | துக்கமடைந்தார்கள். |
| मुक्तौ | விடப்பட்டு | | |

संवस्तुहृदयाः सर्वे प्राकारादवस्थ्य ते । विषण्णवदना घोरा राक्षसेन्द्रमुपस्थिताः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|---------------|-----------------------|
| घोराः | கொடியவர்களாகிய | प्राकारात् | மதிநகவரினின்றி |
| सर्वे | இவர்கள் | अवस्थ्य | இறங்கி |
| संवस्तुहृदयाः | உள்ளங்கலங்கியவர் | विषण्णवदनाः | முகம் வாடியவர் |
| | களாய் | राक्षसेन्द्रं | ராக்ஷஸமன்னனிடம் |
| | | उपस्थिताः | வந்துசேர்க்கிறார்கள். |

तदपियं दीनमुखा रावणस्य निशाचराः । कुत्सं निवेदयामासुर्यथावदाक्यकोविदाः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|------------------------------|
| वाक्यकोविदाः | பேசுவதில் வல்லவர் | अपियं | அனியுடசய்கதி |
| | களாவ | कुत्सं | முழுவதையும் |
| निशाचराः | ஆரக்கர்க்கள் | रावणस्य | ராவணனுக்கு |
| दीनमुखाः | வாய்பு முகமுடைய | यथावत् | உள்ளபடி |
| तत् | அந்த | निवेदयामासुः | பின்வருமாறு தெரிவித்தார்கள். |

यौ ताविन्द्रजिता युद्धे भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । निवदौ शरवन्धेन निष्कम्पभुजौ कृतौ ॥

विमुक्तौ शरवन्धेन तौ दृश्येते रणाजिरे । पाशानि व गजौ छिच्चा गजेन्द्रसमविक्रमौ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|--------------------|---|
| युद्धे | போரில் | तौ | அவ்விருவர்களும் |
| यौ | எந்த | रणाजिरे | போர்க்களத்தில் |
| तौ भ्रातरौ | அந்த பிரதாக்களர் | पाशान् | கயிறுகளை |
| रामलक्ष्मणौ | சிய ராமனும் லக்ஷ்மணனும் | छिच्चा | அறுத்து |
| इन्द्रजिता | இந்திரஜித்தால் | गजौ इव | இருயானைகள் போன்றவர்களாய் |
| शरवन्धेन | பாணக்கட்டால் | शरवन्धेन | பாணக்கட்டால் |
| निवदौ | கட்டப்பட்டு | विमुक्तौ | விடுபட்டவர்களாய் |
| निष्कम्पभुजौ | கைகளை யசைக்க முடியாது | गजेन्द्रसम-विक्रमौ | யானையரசர்களை நிகர்த்த ஆற்றலுடையவர்களாய் |
| कृतौ | செய்யப்பட்டார் | दृश्येते | காணப்படுகின்றார்கள். |

तच्छुत्वा वचनं तेषां राक्षसेन्द्रो महाबलः । चिन्ताशोकसमाक्रान्तो विषण्णवदनोऽभवीत् ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-------------|-----------------------------|
| महाबलः | மகாபலசாஸியான | चिन्ताशोक- | } சிந்தையுற்றகொண்ட |
| राक्षसेन्द्रः | ராக்ஷஸ்யன்னைன் | समाक्रान्तः | |
| तेषां | அவர்களுடைய | विषण्णवदनः | முகம் வாடியவனாய் |
| तत् वचनं | இந்த சொல்லை | अभवीत् | பின்வருமாறு சொ ழிந்தான்: |
| शुत्वा | கேட்டு | | |

घोरैर्दत्तवरैर्वदो शरैराशीविषोपमैः । अमोघैः सूर्यसङ्काशैः प्रमध्येन्द्रजिता युधि ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|---------------|--------------------------------------|
| घोरैः | "வெகுபலக்கரமான வைகளும் | सूर्यसङ्काशैः | சூர்யனுக்கொப்பான வைகளுமான |
| दत्तवरैः | வரமாய்ப் பெற்றவை களும் | शरैः | பாணங்களால் |
| आशीविषोपमैः | சர்ப்பங்களுக்கு ஒப் பானவைகளும் | इन्द्रजिता | இந்திரஜித்தால் |
| अमोघैः | வின்போகாதவை களும் | युधि | போரில் |
| | | प्रमथ्य | ஒடுக்கி |
| | | वदो | அவ்விருவர்களும் கட்டப்பட்டார்கள். |

तदस्त्रबन्धमासाद्य यदि मुक्तौ रिपू मम । संशयस्थमिदं सर्वमनुपश्याम्यहं बलम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|------------|------------------|
| मम | "எனது | यदि | என்றால் |
| रिपू | சத்துருக்களிருவரும் | इदं | இந்த |
| सर्व | அப்பேர்ப்பட்ட | बलं | சக்தி |
| अस्त्रबन्ध | அஸ்திரக்கட்டை | सर्व | எல்லாவற்றையும் |
| आसाद्य | அடைந்து | संशयस्थं | நம்பிக்கையற்றதாக |
| मुक्तौ | தப்பித்துக்கொண்டு விட்டார்கள் | अहं | நான் |
| | | अनुपश्यामि | கிணக்கின்றேன். |

निष्फलाः खलु संवृताः शरा वासुकितेजसः । आदत्तं यैस्तुसङ्ग्रामे रिपूणां मम जीवितम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|--------------------------------------|
| घैः | "எவைகளைக்கொண்டு | वासुकितेजसः | அந்த வாசுகியை திகர் ந்த ஆற்றலுடைய |
| सुसंग्रामे | பெரும்போரில் | शराः | பாணங்கள் |
| मम | எனது | निष्फलाः | பிரயோஜனமற்றவை |
| रिपूणां | சத்துருக்களது | संवृताः खलु | ஆடுகிறவை!" [கனாய் |
| जीवितं | உயிர் | | |
| आदत्तं | கவரப்பட்டதோ, | | |

एवमुक्त्वा तु संक्रुद्धो निश्वसन्नुरगो यथा । अवर्षाद्रक्षसां मध्ये धूम्राक्षं नाम राक्षसम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------------|--------------------|
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| मध्ये | முள்ளிலையில் | उपवा | சொல்லிவிட்டு |
| उरगः यथा | பரம்புபோலவே | धूम्राक्षं नाम | தூம்ராக்ஷஸின் ந |
| संकुद्धः | கிணக்கொண்டு | राक्षसं | அரக்களைப் பார்த்து |
| निश्वसन् | பெருமூச்சுநீக்கு | अभवीत् | பின்வருமாறு |
| तु | இவ்வியற்பத்தில் | | * கட்டளைவிட்டான்: |

बलेन महता युक्तो रक्षसां भीमविक्रम । त्वं वधायाभिनिर्वाहि रामस्य सह वानरैः ॥२०॥

ரக்சாஸர்
भीमविक्रम
त्वं
महता बलेन
युक्तः

"ஆரக்கர்களுக்கும்
மகா பலவீரம்
நீ [சாலியே!
பெரும்பலையுடன்
கடியவனாய் [தேரடு

रामस्य
वानरैः सह
वधाय
अभिनिर्वाहि

ராமனை
வானரர்களுடன் கூட
குழிப்பதற்கு
ஐப்பொழுதே
சென்று."

एवमुक्तस्तु धूम्राक्षो राक्षसेन्द्रेण भीमता ।

भीमता
राक्षसेन्द्रेण
एवं
उक्तः
धूम्राक्षः
संहारः

புத்திமாளைய
ராக்ஷஸைண்டனனால்
என்
உக்த:
தூம்ராக்ஷன்
மிகக் களிப்புற்றவனாய்

अभिनिष्क्रम्य तद्द्वारं बलाध्यक्षमुवाच ह ।

तद् द्वारं
अभिनिष्क्रम्य
बलाध्यक्षं
उवाच ह

அந்த வாயிலை
விட்டு வெளியிவந்து
சேனாபதியைப்
பார்த்து
பின்வருமாறு
கட்டளைபிட்டான் :

धूम्राक्षवचनं श्रुत्वा बलाध्यक्षो बलानुगः ।

बलानुगः
बलाध्यक्षः
धूम्राक्षवचनं
श्रुत्वा

சைன்யத்துடன் கூட
வேயிருக்கும்
சேனாபதி
தூம்ராக்ஷனுடைய
கேட்டு [சொல்லை

ते बद्धमण्डा बलिनो घोररूपा निशाचराः ।

विविधायुधहस्ताश्च शूलमुद्गरपाणयः

ते
घोररूपाः
बलिनः
निशाचराः
बद्धमण्डाः

அந்த
பயக்காமான தேரற்ற
முள்ளவர்களுக்கும்
பலசாஸிகளுமான்
ஆரக்கர்கள்
விசக்கமுல்களை

विविधायुधहस्ताः

அணிந்த வர்களையும்,
பல ஆயுதங்களைக் கை
யிலேந்தியவர்களையும்,

कृत्वा प्रगामं संहृष्टो निर्जगाम नृपालयात् ॥

प्रगामं कृत्वा
नृपालयात् तु
निर्जगाम

மமல்காரம் செய்து
விட்டு
மன்னனது மாளிகை
விசிரிந்து
வெளிக்கிளம்பினான்.

त्वरयस्य बलं तूर्णं किं चिरेण युयुत्सतः ॥

बलं
तूर्णं
त्वरयस्य
युयुत्सतः
किं चिरेण

"சேனையை
விசைவில்
சிக்கப்படுத்து.
போகை விரும்பும்
எனக்கு
என் காலதாமதம்?"

बलमुद्योजयामास रावणस्याज्ञया द्रुतम् ॥

रावणस्य
आज्ञया
बलं
द्रुतं
उद्योजयामास

ராவணனது
சிவமனமாய்படிபால்
சேனையை
விசைவில்
தயார்செய்தான்.

विगर्जमानाः संहृष्टा धूम्राक्षं परिवारयन् ॥

॥ २५ ॥

शूलमुद्गर-
पाणयः च)
संहृष्टाः
विगर्जमानाः

சூலக்களையும், முத்
காக்களையும் கையி
தேர்த்தியவர்களையும்
மிக்கக் களிப்புற்று
சிக்கரைதந்துசெய்து
கொண்டு

धूम्राक्षं
परिवारयन्

தூம்ராக்ஷனை
சூழ்ந்து மிகைண்டார்
கள்.

गदाभिः पट्टिर्दण्डैरायसैर्मुसलैर्भृशम् । परिवैर्भिन्दिपालैश्च भृष्टैः प्रासैः परश्वयैः ॥ २६ ॥
 निर्ययू राक्षसा दिग्भ्यो नर्दन्तो जलदा यथा ॥ २७ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|------------|----------------------------|
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | भृष्टैः | பஸ்ஸமெணுராயுதங் களோடும் |
| दिग्भ्यः | பல திக்குகளிலிருந்து | प्रासैः | சட்டிகளோடும் |
| गदाभिः | கதைகளோடும் | परश्वयैः च | கோடாசலிகளோடும் |
| पट्टिर्दण्डैः | பட்டயக்கத்தி களோடும் | जलदाः | மேகங்கள் |
| दण्डैः | வெறுத்தடி களோடும் | यथा | போலவே |
| आयसैः | இரும்பு | भृशं | மிக |
| सुसलैः | உலக்கைகளோடும் | नर्दन्तः | கர்ஜித்துக்கொண்டு |
| परिवैः | உழைத்தடி களோடும் | निर्ययूः | வெளிக்கிளம்பினார் கள். |
| भिन्दिपालैः | பிந்திபாலமெணும் ஆயுதங்களோடும் | | |

रथैः क्वचिनस्त्वन्ये ध्वजैश्च समलङ्कृतैः । सुवर्णजालविहितैः खरैश्च विविधाननैः ॥ २८ ॥
 हयैः परमशीघ्रैश्च गजेन्द्रैश्च मदोत्कटैः । निर्ययू राक्षसव्याघ्रा व्याघ्रा इव दुरासदाः ॥

| | | | |
|----------------------------------|---|--------------|---|
| दुरासदाः | அணுகமுடியாத | विविधाननैः | பலவித முகக்களுற்ற |
| व्याघ्राः इव | புலிகள் போன்ற | खरैः च | கோவேறுகழுதை |
| अन्ये | சில | परमशीघ्रैः | களிலேறிக்கொண்டும் மிக வேகமாய்ச் செல்லவல்ல |
| राक्षसव्याघ्राः | அரக்கப்புலிகள் | हयैः च | குதிரைகளிலேறிக்கொண்டும் |
| क्वचिनः | கவசமணிந்தவர் | मदोत्कटैः | மதம்பிடித்த |
| ध्वजैः | தவஜங்களால் [களாய் | गजेन्द्रैः च | யானை யாசுகளின் மீதேறிக்கொண்டும் |
| समलङ्कृतैः च | நன்கு அலக்கரிக்கப் பட்டவைகளும் | निर्ययूः | வெளிக்கிளம்பினார் கள். |
| सुवर्णजाल- विहितैः तु रथैः | பொன்சரளரங்களு வடயவைகளுடான ரதங்களில் ஏறிக்கொண்டும் | | |

वृकसिंहमुखैर्व्युक्तं खरैः कनकभूषणैः । आरुरोह रथं दिव्यं धूम्राक्षः खरनिखनः ॥ ३० ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|--------------|---|
| खरनिखनः | கோவேறுகழுதை குரல்கொண்ட | वृकसिंहमुखैः | { செக்காய் சிக்கம் இவைகள் முகம் கொண்ட |
| धूम्राक्षः | தூம்ராசுஷன், | खरैः | கோவேறுகழுதை |
| कनकभूषणैः | பொன்னுபாணங்கள் கூண்டு | व्युक्तं | பூட்டப்பெற்ற [ளால் |
| | | दिव्यं रथं | மகத்தான ரதத்தில் |
| | | आरुरोह | ஏறினான். |

स निर्यातो महावीर्यो धूम्राक्षो राक्षसैर्वृतः । हसन्वै पश्चिमद्वाराद्दनुमान्यत्र तिष्ठति ॥३१॥

| | | | |
|------------|----------------------------|----------------|-----------------------------|
| महावीर्यः | மகாபீர கக்கிரமாளி பாகிய | पश्चिमद्वारान् | மேற்குறையின்வழி |
| सः | அந்த | हनुमान् | ஹனுமார் [பாக |
| धूम्राक्षः | தூம்ராக்ஷன், | यस तिष्ठति | யக்கு நிற்சின்ருரோ அங்கு |
| राक्षसैः | அரக்கர்களால் | हसन् वै | சிரித்துக்கொண்டே |
| वृतः | சூழப்பெற்றவனாய் | निर्यातः | வந்துசென்றான். |

रथप्रवरमास्थाय स्वरयुक्तं स्वरस्वनम्

॥ ३२ ॥

प्रयान्तं तु महाघोरं राक्षसं भीमदर्शनम् ।

अन्तरिक्षगता घोराः शकुनाः प्रत्यपेक्षयन् ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|----------------|---|
| स्वरस्वनम् | கோலைறுகமுறைகள் சத்தமுற்று | भीमदर्शनं तु | பயங்கரமான கோற்ற முடையவனுமான |
| धनयुक्तं | பேரொலியிடுகிறதான | राक्षसं | அரக்களை |
| रथप्रवरं | சிறந்த சதத்தில் | अन्तरिक्षगताः | ஆகாசத்தில் வட்ட மிட்ட |
| आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு | घोराः | அசுபசூசகமான |
| प्रयान्तं | வந்துகொண்டிருக்க கிறவனும் | शकुनाः | பறவைகள் |
| महाघोरं | மிகக்கொடியவனும் | प्रत्यपेक्षयन् | சூறுக்குறொடுக்காய் தீரித்து சடுக்கன. |

रथशीर्षे महान्भीमो गृध्रश्च निपपात ह । ध्वजाग्रे ग्रथिताश्चैव निपेतुः कुणपाशनाः ॥३४॥

| | | | |
|----------|---------------------|--------------|------------------------|
| महान् | பெரிய | ध्वजाग्रे च | கொடியின் தளியி ளும் |
| भीमः | பயங்கரமான | कुणपाशनाः एव | பிணைத்தென்னிக்கூகு |
| गृध्रः च | ஒரு கழுஞ்சு | ग्रथिताः | வரிசையாக [கஞ்சு |
| रथशीर्षे | சதத்தின் சிகரத்தில் | निपेतुः | வந்து உட்கார்த்தன. |
| निपपात ह | விழ்ந்தது. | | |

रुधिरार्द्रो महाञ्ज्वलेतः कबन्धः पतितो भुवि । विस्वरं चोत्सृजन्नाद् धूम्राक्षस्य समीपतः ॥

| | | | |
|--------------|----------------|--------------|----------------|
| रुधिरार्द्रः | சத்தம் தேய்ந்த | नाद् | சத்தத்தை |
| महान् | ஓர் பெரிய | उत्सृजन् च | துட்டுக்கொண்டே |
| ज्वेतः | வெண்ணிறமான | धूम्राक्षस्य | தூம்ராக்ஷனது |
| कबन्धः | கபந்தம் | समीपतः | முன்னிலையில் |
| विस्वरं | கேட்கவொண்ணாத | भुवि | தரையில் |
| | | पतितः | விழ்ந்தது. |

ववर्ष रुधिरं देवः सञ्चाल च मेदिनी । प्रतिलोमं ववौ वायुर्निर्घातसमनिस्वनः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|----------|--------------|------------|---------------------|
| देवः | மணமுத்தேவன் | वायुः | காற்று |
| रुधिरं | சந்தத்தை | निर्घातसम- | } இடக்குச்சமமான சத் |
| ववर्षं | பொழிந்தான். | निस्वनः | |
| मेदिनी च | பூமியும் | प्रतिलोमं | எதிராய் |
| सञ्चाल | நடுக்கிற்று. | ववौ | விசிற்று. |

तिमिरौषावृतास्तत्र दिशश्च न चकाशिरे

॥ ३७ ॥

सः अप்பொழுது
 दिशः च திக்குகளைல்லாம்

तिमिरौषावृताः அடர்ந்த இரூளால்
 முடப்பட்டவைகளால்
 चकाशिरे न புலப்படா திருந்தன.

स तृप्यातांस्तदा दृष्ट्वा राक्षसानां भयावहान् । प्रादुर्भूतान्सुघोरांश्च धूम्राक्षो व्यथितोऽभवत् ॥

सः அந்த
 धूम्राक्षः पु தூம்ராக்களும்
 राक्षसानां அரக்கர்களுக்கு
 भयावहान् பயத்தைத் தருகிற
 प्रादुर्भूतान् உண்டான
 தம்

सुघोराश्च மிக்க ஆகாதவைகளு
 மான
 तृप्यातां அபசகுணக்கிர
 तदा अप்பொழுது
 दृष्ट्वा பார்த்து
 व्यथितः மனங்கலங்கியவனாக
 अभवत् ஆயினான்.

सुसुहू राक्षसाः सर्वे धूम्राक्षस्य पुरःसराः

॥ ३९ ॥

धूम्राक्षस्य தூம்ராக்களுடைய
 पुरःसराः கட்டாளிகளான

राक्षसाः அரக்கர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 सुसुहूः மதிகலங்கினர்கள்.

ततः सुभीमो बहुभिर्निशाचरैर्वृतोऽभिनिष्कम्य रणोत्सुको वली ।

ददर्श तां राघवबाहुपालितां समुद्रकल्पां बहुवानरीं चभूम्

॥ ४० ॥

सुभीमः மிகப் பயக்கரமான
 வனும்,
 रणोत्सुकः போருக்காகைப்படு
 பலனும்
 वली பலசா சியுமான
 ஆவன்
 बहुभिः பல
 निशाचरैः அரக்கர்களால்
 वृतः சூழப்பட்டவரால்
 ततः அங்கிடத்தினின் று

अभिनिष्कम्य வெளியிப்புறப்பட்டு
 राघवबाहु- } ஸ்ரீராமனுடைய பாசு
 पालितां } ாலத்தால் சுகழிக்கப்
 பட்டனும்
 समुद्रकल्पां சமுத்திரத்திற்கு
 சிகரான துமான
 तां அந்த
 बहुवानरी பல வானரர்களுடைய
 चभूम् சேகிரைய
 ददर्श பார்த்தான்.

इत्यापे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकपञ्चाशः सर्गः ॥



द्विपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். || 42 ||

धूम्राक्षवधः—தூம்ராக்கடி வதம்.

धूम्राक्षं प्रेक्ष्य निर्यान्तं राक्षसं भीमविक्रमम् । विनेदुर्बानराः सर्वे महृष्टा युद्धकाङ्क्षिणः ॥

| | | | |
|-----------------|--|------------|----------------------------|
| युद्धकाङ्क्षिणः | யுத்தந்கைக எதிர்பார் ந் துக் கா த்துமின்ற | राक्षसं | அரக்களை |
| बानराः | வானரர்கள் | निर्यान्ते | வந்துகொண்டிருக் |
| सर्वे | எவ்வென்றும் | प्रेक्ष्य | பார்த்து [கிறவனாக |
| भीमविक्रमं | அஞ்சாதக்க பாக்கர மம் பொருந்திய | महृष्टाः | உள்ளம் பூரித்தவர் களாய் |
| धूम्राक्षं | தூம்ராக்கடி என்ற | विनेदुः | ஆரவாரம் செய்தார் கள். |

तेषां सुतमुलं युद्धं सञ्जज्ञे हरिरक्षसाम् । अन्योन्यं पादपैर्वीरं निघ्नतां शूलमुद्गरैः ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|--------------------------------------|
| पार्श्वैः | மரக்களைக்கொண்டும் | हरिरक्षसां | வானரர்களுக்கும் ராக்கடிகளுக்கும் |
| शूलमुद्गरैः | { குலங்களைக்கொண் டும் முத்தகைக்களைக் கொண்டும் | वीरं | பயக்கரமான தம் |
| अन्योन्यं | ஒருவரையொருவர் | सुतमुलं | மிகக் குழப்பத்துட னிருக்கிற துமான |
| निघ्नतां | புடைக்கும் | युद्धं | போர் |
| तेषां | அந்த | सञ्जज्ञे | உண்டாபிற்று. |

घोरैश्च परिधैश्चित्रैस्त्रिशूलैश्चापि संहतैः । राक्षसैर्वानरा घोरैर्विनिकृताः समन्ततः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|-----------|-------------------------------|
| घोरैः | கொடிய | राक्षसैः | அரக்கர்களால் |
| विधैः च | பலவித | संहतैः | ஒன்றுகூடி |
| परिधैः च | உழுவிலத்தடி களாலும் | वानरा | வானரர்கள் |
| त्रिशूलैः अपि | முத்தகைச் சூலங்களா லும் | समन्ततः | சுர்புறங்களிலும் |
| घोरैः | கொடிய | विनिकृताः | கெட்டித்தள்ளப் பட்டார்கள். |

वानरै राक्षसाश्चापि द्रुमैर्भूषौ समीकृताः । राक्षसाश्चापि संक्रुद्धा वानराश्चिशितैः शरैः॥४॥

विष्वधुर्वोरसङ्क्राशैः कङ्कपत्रैरजिह्वगैः ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|-------------|--|
| राक्षसाः च | அரக்கர்களும் | कङ्कपत्रैः | கழுஞ்சுதளம் திறஞ்சு ளை யுடை உலைகளும், |
| द्रुमैः अपि | விஞ்சுதளங்களாலேயே | अजिह्वगैः | குறிதப்பாது பாய வள்ளவைகளும், |
| वानरैः | வானரர்களால் | निशितैः अपि | சுரணவைகளுமரண பாணங்களாலேயே |
| सूरी | தரைவுடன் தரையாக | शरैः च | கொடும் தலைக்கேறிய வர்களால் |
| समीकृताः | விழுத்தப்பட்டார்கள். | संक्रुद्धाः | கொடும் தலைக்கேறிய வர்களால் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | वानरान् | வானரர்களை |
| घोरसङ्क्राशैः | பயக்கரந்தே, தாற்ற முடைபடைகளும், | विष्वधुः | துளைத்தார்கள். |

ते गदाभिश्च भीमाभिः पट्टिशैः कूटमुद्गरैः । विदार्यमाणा रक्षोभिर्वा नरास्ते महाबलाः ॥
अमर्षान्नितोद्धर्षाश्चक्रुः कर्माण्यभीतवत् ॥ ७ ॥

रक्षोभिः अரக்கர்களால்
भीमाभिः பயங்கரமான
गदाभिः च கதைகளைக்கொண்டும்
पट्टिशैः பட்டயக்கத்தினைக்
கொண்டும்,
कूटमुद्गरैः கூடமுக்கரமெனும் ஆயுதங்களைக்கொண்டும்
विदार्यमाणा: துளைக்கப்படும்
ते ते அந்தந்த

महाबलाः மகா பலசாலிகளான
वानराः வானரர்கள்
अमर्षान् அயமர்ஷனை
सहियामेयवत् சகியமெயவல்
जनितोद्धर्षाः உத்தேசகக்கொண்ட
வர்களாய்
अभीतवत् சிந்திதும் அச்சப்பிணி
कर्माणि அரிய செயல்களை
चक्रुः செய்தனர்.

शरनिभिन्नगात्रास्ते शूलनिभिन्नदेहिनः । जगृहुस्ते द्रुमांस्तत्र शिलाश्च हरियूथपाः ॥ ८ ॥

ते அந்த
हरियूथपाः வானரசேனைத்தலை
तस अप्पொழுது [வர்கள்
शरनिभिन्नगात्राः { பாணங்களால் துளை
க்கப்பட்ட சரீர
முடையவர்களாய்

शूलनिभिन्न-} குலத்தால் குத்தப்
देहिनः } பட்ட தேகமுடைய
வர்களாகி
द्रुमान् மரங்களையும்,
शिलाः च மலைகளையும்
जगृहुः கைக்கொண்டனர்.

ते भीमवेगा हरयो नर्दमानास्ततस्ततः । ममन्धू राक्षसान्भीमात्रामानि च वभाषिरे ॥९॥

ते அந்த
भीमवेगा: மகா சக்திமாவக
हरयः வானரர்கள் [எளிய
ततस्ततः எக்கும்
नर्दमाना: அட்டகாசம் செய்து
கொண்டு

भीमान् கொடிய
राक्षसान् அரக்கர்களை
ममन्धुः தவம்சம்செய்தார்கள்.
नामानि च பெயர்களையும்
वभाषिरे சொல்லிக்கொண்ட
டார்கள்.

तद्बभूवाद्भुतं घोरं युद्धं वानररक्षसाम् । शिलाभिर्विविधाभिश्च बहुभिश्चैव पादपैः ॥१०॥

वानररक्षसां வானரர்களுக்கும்
ராக்ஷஸர்களுக்கும்
तत् அந்த
घोरं युद्धं பயங்கரமான போர்
विविधाभिः பலவகை

शिलाभिः च கற்பலகைகளாலும்
बहुभिः பல
पादपैः च एव விருகங்களைகளும்
अद्भुतं அற்புதமாக
बभूव இருந்தது.

राक्षसा मथिताः केचिद्दानरैर्जितकाशिभिः । प्रवेमू रुधिरं केचिन्मुखै रुधिरभोजनाः ॥

जितकुशिभिः வெற்றியால் கிடைக்கிய
दानरैः வானரர்களால்
केचिद् राक्षसाः சில அரக்கர்கள்
मथिताः பிண்டமாக்கப்
பட்டார்கள்.

रुधिरभोजनाः ரத்தத்தைக் குடிப்ப
केचिद् சிலர் [வர்களான
मुखैः வாய்களால்
रुधिरं ரத்தத்தை
प्रवेसुः கக்கினார்கள்.

पार्श्वेषु दारिताः केचित्केचिद्राशीकृता द्रुपैः । शिलाभिश्चूर्णिताः केचिन्केचिदन्तैर्विदारिताः ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|-----------|----------------------|
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் |
| पार्श्वेषु | விடையக்கங்களில் | शिलाभिः | கற்பலகைகளால் |
| दारिताः | துண்டிக்கப்பட்டார் | चूर्णिताः | பொடிபாக்கப்பட்டார் |
| केचिद् | சிலர் [கன். | | கன். |
| द्रुपैः | விருகுநகர்களால் | केचित् | சிலர் |
| राशीकृताः | குடியலராய்க் குடிக்கப் பட்டார்கள். | दन्तैः | பற்களால் |
| | | विदारिताः | கிழிக்கப்பட்டார்கள். |

ध्वजैर्विमथितैर्भयैः खरैश्च विनिपातितैः । रथैर्विध्वंसितैश्चापि पतितै रजनीचरैः ॥ १३ ॥

गजेन्द्रैः पर्वताकारैः पर्वताग्रैर्वनौकसाम् । मथितैर्वाजिभिः कीर्णं सारोर्हैर्वसुधातलम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|--------------|--------------------|
| विमथितैः | முறித்து | रजनीचरैः अपि | அரக்கர்களாலும் |
| भयैः | ஞடிக்கப்பட்ட | पर्वताकारैः | பலைகளை நிகர்த்த |
| ध्वजैः | தலைகளைகளாலும் | मथितैः | மாண்ட |
| विनिपातितैः | கிழை கீழ்த்தப்பட்ட | गजेन्द्रैः | யானைகளாலும் |
| खरैः | கோலைறுகமுறை களாலும் | सारोर्हैः | சாரதிமுடன்கடிய |
| विध्वंसितैः | உருவழிக்கப்பட்ட | वाजिभिः | குதிரைகளாலும் |
| रथैः च | ரதங்களாலும் | वनौकसां | வானரர்களுடைய |
| पतितैः | இறந்துகிடந்த | पर्वतामैः च | பலைச்சிகரங்களாலும் |
| | | वसुधातलं | பூதலம் |
| | | कीर्णम् | நிரம்பியிருந்தது. |

वानरैर्भीषविक्रान्तैराप्तुत्याप्तुत्य भेगितैः । राक्षसाः करजैस्तीक्ष्णैर्मुखेषु विनिकर्तिताः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------|--------------|----------------------|
| भीषविक्रान्तैः | அளவுகடந்த ஆற்ற ஊடையவர்களும் | तीक्ष्णैः | கூரிய |
| भेगितैः | உதலாஹும் மிகுந்த வர்களுமரண | करजैः | கைங்களால் |
| वानरैः | வானரர்களால் | राक्षसाः | அரக்கர்கள் |
| आप्तुत्य आप्तुत्य | ஆள்வித்துள்ளி | मुखेषु | முகங்களில் |
| | | विनिकर्तिताः | பிடிக்கப்பட்டார்கள். |

विवर्णवदना भूयो विप्रकीर्णशिरोरुहाः । मृदाः शोणितगन्धेन निपेतुर्धरणीतले ॥ १६ ॥

| | | | |
|---------------------|------------------------------|-------------|-----------------|
| सूयः | அதிகமரய் | शोणितगन्धेन | சத்தநாற்றத்தால் |
| विवर्णवदनाः | முகவெள்ளிகுன்றிய வர்களாய் | मृदाः | மடக்கங்கொண்டவர் |
| विप्रकीर्णशिरोरुहाः | தலைமயிர்கள் கலைப | धरणीतले | பூமியில் [களாய் |
| | | निपेतुः | விழுந்தார்கள். |

अन्ये परमसंकुद्धा राक्षसा भीमनिख्वाः । तलैरेवाभिधावन्ति वज्रस्पर्शसमैर्हरीन् ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|----------------|-----------------------------|
| अन्ये | சில | वज्रस्पर्शसमैः | வஜ்ராயுதத்தின் உறு |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | | தியை நிகர்த்த |
| परमसंकुद्धाः | மிகச்சினங்கொண்ட வர்களாய் | सलैः एव | உள்ளங்கைகளால் |
| भीमनिख्वाः | பயங்கரமாய் அட்டகா சம் செய்துகொண்டு | हरीन् | வேயே |
| | | अभिधावन्ति | வானரர்களை புடைத்தார்கள். |

वानरैरापतन्तस्ते वेगिता वेगवत्तरैः । मुष्टिभिश्चरणैर्दन्तैः पादपैश्चावपोथिताः ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-----------|------------------------------|
| वेगिताः | வேகிக்கொண்டு | मुष्टिभिः | முஷ்டிகளால் |
| आपतन्तः | எதிர்த்தாவரும் | चरणैः | கால்களால் |
| ते | அவர்கள் | दन्तैः | பற்களால் |
| वेगवत्तरैः | அவர்களாலும் அதிக வேகிக்கொண்ட | पादपैः च | விடுகாட்களால் |
| वानरैः | வானரர்களால் | अवपोथिताः | துன்புறுத்தப்பட்ட டர்கள். |

वानरैर्हन्यमानास्ते राक्षसा विप्रदुद्रुवुः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------------|--------------------------------------|
| वानरैः | வானரர்களால் | राक्षसाः | அரக்கர்கள் |
| हन्यमानाः | ஹிம்சிக்கப்படும் | विप्रदुद्रुवुः | புறங்காட்டியோடத் தலைப்பட்டார்கள். |
| ते | அந்த | | |

सैन्यं तु विद्रुतं दृष्ट्वा भूमाक्षो राक्षसर्षभः । क्रोधेन कदनं चक्रे वानराणां युयुत्सताम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|---------------------------|
| राक्षसर्षभः | ராஷ்டிரேஸா தந்தரஸ்ய | युयुत्सतां | போருக்கு உதவாகம் கொண்ட |
| भूमाक्षः | தூம்ஸாஷ்டன் | वानराणां | வானரர்களை |
| सैन्यं | சேனையை | क्रोधेन | கொபத்தால் |
| विद्रुतं तु | அஞ்சி ஒடுவதாய் | कदनं चक्रे | அழிக்கத் தலைப்பட டன். |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | | |

मासैः प्रमथिताः केचिद्दानराः शोणितस्रवाः । मुद्गरैराहताः केचिस्पतिता धरणीतले ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|----------|----------------------|
| केचित् | சில | केचित् | சிலர் |
| वानराः | வானரர்கள் | मुद्गरैः | இரும்புலக்கைகளால் |
| मासैः | சட்டிகளால் | आहताः | அடிபுண்டவர்களாய் |
| प्रमथिताः | குத்தப்பட்டு | धरणीतले | பூமியில் |
| शोणितस्रवाः | ரத்தத்தை வழிய விட்டார்கள். | पतिताः | சாய்ந்து விட்டார்கள் |

परिर्वर्षयिता: केचिद्दिन्द्रिपालैर्विदारिता: । पट्टिशैराहता: केचिद्दिहलन्तो गतासवः॥२२॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|---------------------|
| केचित् | சிலர் | विदारिता: | கிழிக்கப்பட்டவர் |
| परिवै: | உழுததைத்தடி களால் | | களாயும் |
| मथिता: | பிண்டமாக்கப்பட்ட | पट्टिशै: | பட்டயக்கத்திகளால் |
| | டார்கள். | आहता: | குத்தப்பட்டவர்களால் |
| केचित् | சிலர் | | யும் |
| मिन्द्रिपालै: | பித்திபாலமெயும் ஆ | विहलन्त: | மதிகலக்கி |
| | யுத்தங்களால் | गतासव: | மாண்டார்கள். |

केचिद्दिनिहता: शूले रुधिरार्द्रा वनौकस: । केचिद्दिद्राविता नष्टा: सबलै राक्षसैर्बुधि ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-------------|---------------------|
| केचित् | சிலர் | बुधि | போலில் |
| वनौकस: | வானார்கள் | सबलै: | செனைகளுடனிருக் |
| शूले: | சூலக்களால் | | கும் |
| विनिहता: | குத்தப்பட்டவர் | राक्षसै: | ஆரக்கர்களால் |
| | களாய் | विद्राविता: | தூரத்தியடிக்கப்பட்ட |
| रुधिरार्द्रा: | ரத்தத்தைப் பெருக்கி | केचित् | சிலர் |
| | னார்கள். | नष्टा: | மறைந்துவிட்டார்கள். |

विभिन्नहृदया: केचिदेकपाशेन दारिता: । विदारितास्त्रिशूलैश्च केचिदान्त्रैर्विनिःसृता: ॥

| | | | |
|---------------|------------------|---------------------|---------------------|
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் |
| एकपाशेन | ஒரு விளாப்பக்கம் | सिशूलै: च | முத்தலைச் சூலக் |
| दारिता: | நொறுக்கி | | களால் |
| विभिन्नहृदया: | ஹிருதயம் பிளவுண் | विदारिता: | குத்தப்பட்டவர்களால் |
| | டவர்களானார்கள். | आन्त्रै: विनिःसृता: | சூல் பிதுக்கியவர் |
| | | | களானார்கள். |

तत्सुभीमं महायुद्धं हरिराक्षससङ्कुलम् । प्रवभौ शब्दबहुलं शिलापादपसङ्कुलम् ॥ २५ ॥

| | | | | |
|------------------|------------|----------------------|---|--|
| हरिराक्षससङ्कुलं | { | शिलापादप- सङ्कुलं | } | கற்பாறைகளும், கிரு ஷுங்களும் சூலியல் சூலியலாய் நிரம்பிய தாகவும் |
| तत् | அந்த | शब्दबहुलं | | பெரும் சத்தத்தை யுடையதாகவும் |
| महायुद्धं | பெரும்போர் | सुभीमं | | மிக்க பயக்கரமாகவும் |
| | | प्रवभौ | | இருந்தது. |

धनुर्ज्यातन्त्रिमधुरं हिकातालसमन्वितम् । मन्दस्तनितसङ्गीतं युद्धगान्धर्वाभावभौ ॥ २६ ॥

| | | | | |
|-----------------------|---|------------------------|---|--|
| युद्धगान्धर्वं | { | मन्दस्तनित- सङ्गीतं | } | சனஸ்வரப்பேச்சுகளை இராகமாகக்கொண் டதாகவும் |
| धनुर्ज्यातन्त्रिमधुरं | { | | } | இருந்தது. |
| हिकाताल- समन्वितं | { | आभावौ | | |
| | { | | | |

धूम्राक्षस्तु धनुष्पाणिर्वा'नरात्रणमूर्धनि । हसन्विद्रावयामास दिशस्तु शरदृष्टिभिः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------------|----------------------|
| रणமூர்धனி | போர்முனையினில் | हसन् तु | கிரித்துக்கொண்டே |
| धूम्राक्षः | தூம்ராக்கடன் | धनरान् | வானரர்களை |
| धनुष्पाणिः | கையில் கீர்ப்பிடித்தவ | दिशः तु | எல்லாத்திக்குகளிலும் |
| शरदृष्टिभिः | சரமாசிகளால் [ஊய்] | विद्रावयामास | தூரத்தியடித்தான். |

धूम्राक्षेणार्दितं सैन्यं व्यथितं दृश्य मारुतिः । अभ्यवर्तत संकुद्रः प्रगृह्य विपुलां शिलाम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--------------------|
| मारुतिः | ஹனுமான் | संकुद्रः | பிகச் சினங்கொண்டு |
| धूम्राक्षेण | தூம்ராக்கடனால் | विपुलां | பெரிய |
| सैन्यं | சேனையை | शिलां | பாறையொன்றை |
| अर्दितं | தன்புறுத்தப்பட்டு | प्रगृह्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| व्यथितं | கலங்கிவிட்டதாய் | अभ्यवर्तत | எதிர்த்துக்கொண்டு. |
| दृश्य | பார்த்து | | |

क्रोधाद्द्विगुणताम्राक्षः पितृत्व्यपराक्रमः । शिलां तां पातयामास धूम्राक्षस्य रथं प्रति ॥

| | | | |
|-------------------|--|--------------|------------------|
| पितृत्व्यपराक्रमः | தந்தைக்கொப்பான பாக்காமமுடைய | तां | ஆந்த |
| क्रोधात् | கோபத்தால் [அவர்] | शिलां | பாறையை |
| द्विगुणताम्राक्षः | { முன்னிலை இருமட க்கு சிவந்த கண்களு டையவராய் | धूम्राक्षस्य | தூம்ராக்கடனது |
| | | रथं प्रति | தேவாக்குறிவைத்து |
| | | पातयामास | எறிந்தார். |

आपतन्तीं शिलां दृष्ट्वा गदामुद्यम्य संभ्रमात् । रथादापृत्य वेगेन वसुधायां व्यतिष्ठत् ॥

| | | | |
|-----------|----------------|--------------|--------------------|
| शिलां | கற்பாறையை | उद्यम्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| आपतन्तीं | மேல்நிழ வருவதை | रथात् | ரதத்தினின்றும் |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | वेगेन आपृत्य | விசாரவில் குதித்து |
| संभ्रमात् | ஊக்கத்தால் | वसुधायां | பூமியில் |
| गदां | கதைையை | व्यतिष्ठत् | நின்றாவிட்டான். |

सा प्रमथ्य रथं तस्य निपपात शिला भुवि । सचक्रकूर्वरं साध्वं सध्वजं सशरासनम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|---------|----------------|
| सा शिला | ஆந்தக் கற்பாறை | सध्वजं | கொடிகளோடும் |
| तस्य रथं | அவனது ரதத்தை | सशरासनं | கிற்களோடும் |
| सचक्रकूर्वरं | சக்கரங்களோடும் எர்க்கால்களோடும் | प्रमथ्य | கொறுக்கிவிட்டு |
| साध्वं | குதிரைகளோடும் | भुवि | பூமியில் |
| | | निपपात | நிழுந்தது. |

स भङ्क्त्वा तु रथं तस्य हनुमान्मारुतात्मजः । रक्षसां कदनं चक्रे सस्कन्धविटपैः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|-----------------------------------|
| मारुतात्मजः | வாயுபகவானது | सस्कन्धविटपैः | அடிபாக்களோடும் கிளைகளோடும்கடிய |
| सः | ஆந்த [புதல்வராகிய] | दुमैः तु | விருஷங்களைமேலேயே |
| हनुमान् | ஹனுமார் | रक्षसां | ஆசக்கர்களை |
| तस्य रथं | அவனது ரதத்தை | कदनं चक्रे | அழிக்கத் தலைப்பட்ட டார். |
| भङ्क्त्वा | கொறுக்கிவிட்டு | | |

विभिन्नशिरसो भूत्वा राक्षसाः शोणितोक्षिताः । द्रुमैः प्रव्यथिताश्चान्ये निपेतुर्धरणीतले ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|---------------------------------|
| अन्ये | சில | शोणितोक्षिताः | ரத்தத்தைப் பெருக் கிக்கொண்டு |
| राक्षसाः च | அரக்கர்களும் | प्रव्यथिताः | திராந்துக்கக்கொண் டவர்களாய் |
| द्रुमैः | மரங்களால் | धरणीतले | பூமியில் |
| विभिन्नशिरसः | தலைகளுடைய களாய் | निपेतुः | நிழைந்தார்கள். |
| भूत्वा | ஆகி | | |

विद्राव्य राक्षसं सैन्यं हनुमान्मारुतात्मजः । गिरेः शिखरमादाय भूम्नाक्षमभिद्रुवै ॥३४॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|----------------------------|
| मारुतात्मजः | வாயுசூமாரனாகும் | शिखरं | சிகரமொன்றை |
| हनुमान् | ஹனுமான் | आदाय | கையிலெடுத்துக் கொண்டு |
| राक्षसं | ராட்சஸ | भूम्नाक्षं | தூம்ராட்சஸை |
| सैन्यं | படைபடை | अभिद्रुवै | புடைக்கத்தலைப் பட்டார். |
| विद्राव्य | பறக்க அடித்துவிட்டு | | |
| गिरेः | மலையின் | | |

तमापतन्तं भूम्नाक्षो गदामुद्यम्य वीर्यवान् । विनर्दमानः सहसा हनुमन्तमभिद्रवन् ॥ ३५ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|-----------|----------------|
| वीर्यवान् | வீரனாகிய | आपतन्तं | எதிர்த்துவரும் |
| भूम्नाक्षः | தூம்ராட்சஸ் | ते | அந்த |
| गदां | கதைபடை | हनुमन्ते | ஹனுமனரை |
| उद्यम्य | ஓங்கிக்கொண்டு | सहसा | வதுக்கொண்டு |
| विनर्दमानः | அட்டகாசம் செய்கின் றவனாய் | अभिद्रवत् | தாக்கினான். |

ततः क्रुद्धस्तु वेगेन गदां तां बहुकण्टकाम् । पातयामास भूम्नाक्षो पस्तके तु हनुमतः ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|---------------|
| भूम्नाक्षः | தூம்ராட்சஸ் | वेगेन तु | வேகமாகத்தானே |
| बहुकण्टकां | பல முட்களுற்ற | हनुमतः | ஹனுமனருடைய |
| तां | அந்த | पस्तके | தலையில் |
| गदां तु | கதைபடையே | ततः | அப்பொழுது |
| क्रुद्धः | கினைக்கொண்டானாய் | पातयामास | பாடிக்கினான். |

ताडितः स तथा तत्र गद्या भीमरूपया

॥ ३७ ॥

| | | | |
|----------|-----------|--------|------------------|
| सः | அவர் | तथा | அந்த |
| तत्र | அப்பொழுது | गद्या | கதைபடால் |
| भीमरूपया | பலங்கரமான | ताडितः | அடிக்கப்பட்டார். |

स कपिर्मातृवल्लस्तं महारमचिन्तयन् । धूम्राक्षस्य शिरोमध्ये गिरिशृङ्गमपातयन् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|--------------|----------------------|
| मातृवल्लः | வாயுபகவானுற்றல் கொண்ட | अचिन्तयन् | பொருட்படுத்தாதவ |
| कपिः | வானரராகும் | धूम्राक्षस्य | தூம்ராக்கூனது [ராய்] |
| सः | அவர் | शिरोमध्ये | நடுத்தலையில் |
| तं महारं | அந்த அடினைய | गिरिशृङ्गं | மலைச்சிகரத்தை |
| | | अपातयन् | எறிந்தார். |

स विह्वलितसर्वाङ्गो गिरिशृङ्गेण ताडितः । पपात सहसा भूमौ विकीर्ण इव पर्वतः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------|-----------|------------|
| गिरिशृङ्गेण | மலைச்சிகரத்தால் | विकीर्णः | சிதறுண்ட |
| ताडितः | அடிபுண்ட | पर्वतः इव | மலை எனவே |
| सः | அவன் | सहसा | சடக்கென |
| विह्वलितसर्वाङ्गः | உருப்புக்கொல்லாம் சிதற | भूमौ | பூமியில் |
| | | पपात | ஊழ்ந்தான். |

धूम्राक्षं निहतं दृष्ट्वा हतशेषा निशाचराः । त्रस्ताः प्रविविशुल्बं बध्यमानाः पुनः पुनः ॥ ४० ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|--------------------------------|
| हतशेषाः | மடியாது எஞ்சிய | त्रस्ताः | திசிலடைந்தவர்களாய் |
| निशाचराः | அரக்கர்கள் | पुनः पुनः | வானரர்களால் |
| धूम्राक्षं | தூம்ராக்கூனை | बध्यमानाः | புடைக்கப்படுகின்ற வர்களாகவே |
| निहतं | மாண்டுவிட்டவனாக | दृष्ट्वा | எங்கைக்கு |
| पुनः पुनः | பார்த்து | प्रविविशुः | திரும்பிச்சொன்னார்கள். |

स तु पवनसुतो निहत्य शत्रुं क्षतजवहाः सरितश्च संनिकीर्य ।

रिपुवधजनितश्रमो महात्मा मुदमगमत्कपिभिः सुपूज्यमानः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|--------------|---|
| महात्मा | மகாத்மாவாகும் | रिपुवधजनित-) | சத்ருவைக்கொன்றதர ஊண்டாகிய ஆயாச த்தடனிருக்கையி லும் |
| सः | அந்த | शमः तु | |
| पवनसुतः | வாயுகுமாரர் | कपिभिः | வானரர்களால் |
| सरितः | நதிகளை | सुपूज्यमानः | கொண்டாடப்படுகிற வராய் |
| क्षतजवहाः) | ரத்தப்பிபருக்கெடுத்த து ஓடச்செய்து | शत्रुं च | சத்ருவையும் |
| संनिकीर्य) | | निहत्य | निहत्य |
| | | अगमन् | அடைந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे द्विपञ्चाशः सर्गः ॥



विपञ्चाशः सर्गः - ஐம்பத்துமூன்றுவது ஸர்க்கம். || 43 ||

वज्रदंष्ट्रयुजम्—வஜ்ரதம்ஷ்டிர யுத்தம்.

धूम्राक्षं निहतं श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः । क्रोधेन महताऽऽविष्टो निश्वसन्नुरगो यथा ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|------------------|
| राक्षसेश्वरः | ராட்சஸபன்னனனாகும் | यथा | போலவே |
| रावणः | ராவணன் | निश्वसन् | பெருமூச்செறிந்து |
| धूम्राक्षं | தும்ராட்சனை | महता | பெரும் |
| निहतं | மாண்டுவிட்டவனாக | क्रोधेन | கோபத்தால் |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | आविष्टः | பற்றப்பட்டான். |
| उरगः | சர்ப்பம் | | |

दीर्घमुष्णं विनिश्वस्य क्रोधेन कलुषीकृतः । अन्नयीद्राक्षसं वृरं वज्रदंष्ट्रं महाबलम् ॥ 2 ॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|-----------------------------|
| दीर्घं | தீர்க்கமாயும் | महाबलं | மகாபலசாலியும் |
| उष्णं | வெப்பமாயும் | वृरं | ஞானமாகிய |
| विनिश्वस्य | பெருமூச்சவிட்டு | वज्रदंष्ट्रं | வஜ்ரதம்ஷ்டிரனைன்ற |
| क्रोधेन | கோபத்தால் | राक्षसं | அரக்கனைப்பார்த்து |
| कलुषीकृतः | மதிமயக்கிய அவன் | अववीत् | பின்வருமாறு கட்டினபிட்டான்: |

गच्छ त्वं वीर निर्याहि राक्षसैः परिवारितः । जहि दाशरथिं रामं सुग्रीवं वानरैः सह ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------|-------------------|
| वीर | "வீரனே ! | दाशरथिं | தசரதின் புதல்வனாக |
| त्वं | நீ | रामं | ராமனையும் |
| गच्छ | எகுவாய். | सुग्रीवं | சுகிரீவனையும் |
| राक्षसैः | அரக்கர்களால் | वानरैः सह | வானரர்களுடனாக |
| परिवारितः | ஞழப்பட்டவனாய் | जहि | கொன்றுமா." |
| निर्याहि | நீ புறப்பட்டுச்செல் | | |
| | வாயாக. | | |

तथेत्युक्त्वा द्रुततरं मायावी राक्षसेश्वरः । निर्गाम बलैः सार्धं बहुभिः परिवारितः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|----------------|
| मायावी | மாயாவியாகிய | उक्त्वा | கொல்லிவிட்டு |
| राक्षसेश्वरः | ராட்சஸத்தலைவனாக | बहुभिः | பல |
| | மான் | बलैः | கேளைகளோடு |
| सथा | "அப்படியே செய்தி | सार्धं | சுடி |
| | நேன்" | परिवारितः | ஞழப்பட்டவனாய் |
| इति | என்று | द्रुततरं | வெகுசுடுதிரில் |
| | | निर्गाम | புறப்பட்டான். |

नागैरश्वैः खरैश्चैः संयुक्तः सुसमाहितः । पताकाध्वजचिवैश्च रथैश्च समलङ्कृतः ॥ ५ ॥
ततो विचित्रकेयूरमकुटैश्च विभूषितः । तनुत्राणि च संरुद्धय सधनुर्निर्ययो द्रुतम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------------------------|--|
| नागैः | யானைகளாலும் | विचित्रकेयूर- मकुटैः च | அழகிய கைவளையல் களாலும் கிரீடங்க ளாலும் |
| अश्वैः | குதிரைகளாலும் | विभूषितः | அலங்கரிக்கப்பட்டவ கவசங்களை [ரூயும் |
| खरैः | கோவேறுகழுதை களாலும் | तनुत्राणि च | தரித்துக்கொண்டு |
| वष्टैः च | ஒட்டகங்களாலும் | संरुध्य | வில்லைநதியவனாய் |
| संयुक्तः | விளக்குபவரூயும் | सधनुः | சர்வப்ரகாரத்திலும் |
| पताकाध्वजचिवैः | { பலவகை நிசான்களை யும் கொடுகளை யு முடைய | सुसमाहितः | சித்தமாயிருந்த அவன் வினாந்து |
| रथैः च | ரதங்களாலும் | मुतं | அப்பொழுது |
| समलङ्कृतः | அழகுற்றுவினக்கு பவரூயும் | ततः | வெளிக்கிளம்பினான். |
| | | निर्ययौ | |

पताकालङ्कृतं दीप्तं तप्तकाञ्चनभूषणम् । रथं प्रदक्षिणं कृत्वा समारोहचमूपतिः ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------------|----------------------|
| पताकालङ्कृतं | தாவணங்களால் அலங் கரிக்கப்பட்டதும் | रथं | ரதத்தை |
| दीप्तं | ஜ்வலிக்கின்றதும் | प्रदक्षिणं कृत्वा | வலம்வந்து |
| तप्तकाञ्चनभूषणं | { பந்தகாரபாற்றுத்தக் கத்தால் அழகுற்று விளக்குகிறதமான | चमूपतिः | சேனைத்தலவனான அவன் |
| | | समारोह्य | ஏறினான். |

यष्टिभिस्तोमरैश्चिवैः शूलैश्च मुसलैरपि । भिन्दिपालैश्च पाशैश्च शक्तिभिः पट्टिशैरपि ॥ ८ ॥
खड्गैश्चकैर्मदाभिश्च निशितैश्च परश्वधैः । पदातयश्च निर्यान्ति विविधाः शस्त्रपाणयः ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|--------------|---------------------|
| यष्टिभिः | பல | पाशैः च | பாசக்கயிறுகளோடும், |
| पदातयः च | காளட்படைகளும் | शक्तिभिः | சக்திகளோடும், |
| शस्त्रपाणयः | ஆயுதபாணிகளாய் | पट्टिशैः अपि | பட்டயக்கத்திகளோ |
| यष्टिभिः | தழைகளோடும் | खड्गैः | வளங்களோடும், [டும், |
| तोमरैः | தேரமரங்களோடும் | चकैः | சக்கரங்களோடும், |
| चिवैः | பல | मदाभिः च | கதைகளோடும், |
| शूलैः च | சூலங்களோடும் | निरितैः | கூரான |
| मुसलैः अपि | உலக்கைகளோடும், | परश्वधैः च | கோடாலிகளோடும் |
| भिन्दिपालैः च | பிந்திபாலங்களோடும், | निर्यान्ति | புறப்பட்டார்கள். |

विचित्रवाससः सर्वे दीप्ता राक्षसपुङ्गवाः ॥ १० ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|--------------|------------------------|
| राक्षसपुङ्गवाः | ராட்சஸிணைத்தாரர்கள் | विचित्रवाससः | அழகிய ஆடைக ளாடுத்து |
| सर्वे | எல்லோரும் | दीप्ताः | ஜ்வலித்தாரர்கள். |

गजा मदोत्कटाः शूराश्चलन्त इव पर्वताः । ते युद्धकुशलै रूढास्तोमराङ्कुशपाणिभिः ॥११॥

| | |
|-----------|---------------|
| ते | அந்த |
| मदोत्कटाः | மதம் மிகுந்து |
| शूराः | செருக்குத்தர, |
| चलन्तः | கடக்கும் |
| पर्वताः | மலைகள் |
| इव | போன்ற |

| | |
|------------------------|---|
| गजाः | யானைகள் |
| सोमराङ्कुश- पाणिभिः | தோமரங்களையும் ஆக் குசங்களையும் கை வில்கொண்ட |
| युद्धकुशलैः | போரில் சிறந்தவர் களால் |
| रूढाः | ஏறப்பட்டு நுந்தன. |

अन्ये लक्षणसंयुक्ताः शूरा रूढा महाबलाः

| | |
|---------|--------------------------|
| अन्ये | வேறுசில |
| महाबलाः | மிக ஆற்றலுடைய வைகளால் |

| | |
|----------------|---------------------------------|
| ॥ १२ ॥ | |
| शूररूढाः | சூரர்களால் ஏறப் பெற்றவைகளால் |
| लक्षणसंयुक्ताः | நல்ல குறிகளுடன் வளக்கினை. |

तद्राक्षसबलं घोरं विप्रस्थितमशोभत । प्रावृत्काले यथा मेघा नर्दमानाः सविद्युतः ॥१३॥

| | |
|--------------|-----------------|
| तत् | அந்த |
| विप्रस्थितं | வெளிப்புறப்பட்ட |
| घोरं | பயங்கரமான |
| राक्षसबलं | இராட்சஸசேனை |
| प्रावृत्काले | மழைக்காலத்தில் |

| | |
|-----------|--------------|
| सविद्युतः | மின்னலுடன் |
| नर्दमानाः | கர்ஜிக்கும் |
| मेघाः | மேகங்கள் |
| इव | போலவே |
| अशोभत | விளக்கிற்று. |

निःसृता दक्षिणद्वारादङ्गदो यत्र यूथपः । तेषां निष्क्रममाणानामशुभं समाजायत ॥ १४ ॥

| | |
|----------------|---|
| दक्षिणद्वारात् | தெற்குவாயிலிலிருந்து |
| यूथपः | சேனைத்தலைவனான |
| अङ्गदो | அங்கதன் |
| यत्र | எவ்விடத்திலிருந்து, அங்கு அவ்விடத்திற்கு |

| | |
|-----------------|--------------------|
| निःसृताः | வெள்க்கினைப்பினால் |
| तेषां | அவர்கள் [கள். |
| निष्क्रममाणानां | புறப்படுகையில் |
| अशुभं | அபசகுணம் |
| समाजायत | உண்டாயிற்று. |

आकाशाद्विद्यनात्तीव्रा उल्काश्चाभ्यपतन्तस्तदा । वमन्त्यः पावकज्वालाः शिवा घोरं ववाशिरे ॥

| | |
|-----------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது |
| विद्यनात् | மேகமற்ற |
| आकाशात् | ஆகாயத்திலிருந்து |
| तीव्राः | திவிரமான |
| उल्काः | கொள்ளிக்கட்டைகள் |
| अभ्यपतन् | விழுந்தன. |

| | |
|-------------|------------------|
| शिवाः च | சிகளும் |
| पावकज्वालाः | செருப்புத்துவகளை |
| वमन्त्यः | கக்கிக்கொண்டு |
| घोरं | பயங்கரமாக |
| ववाशिरे | எனையிட்டன. |

व्याहरन्ति मृगा घोरा रक्षसां निधने तदा । समापतन्तो योधास्तु प्रास्वलन्भयमोहिताः ॥

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது |
| घोराः मृगाः | கொடிய விலக்குகள் |
| रक्षसां | அரக்கர்களுக்கு |
| निधने | நாசத்தை |
| व्याहरन्ति | ஸ்திரிப்பித்துச் செய்த மிட்டன. |

| | |
|------------|------------------------------------|
| योधाः तु | போர்வீரர்களும் । |
| समापतन्तः | கடந்துகொண்டிருக்க கின்றவர்களால் |
| भयमोहिताः | பயத்தால் மோகித்து |
| प्रास्वलन् | கால் இடறினார்கள். |

एतानौत्पातिकान्दृष्ट्वा वज्रदंष्ट्रो महावज्रः । धैर्यमात्मव्य तेजस्वी निर्जगाम रणोत्सुकः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-----------|------------------------------------|
| महाबलः | மகா சக்திமாளும் | दृष्ट्वा | பார் த் து |
| तेजस्वी | மகா ஆற்றலுடைய வனுமான | धैर्यं | ஆண்மையொன் |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்சுட்டன் | आत्मव्य | தம்பி [ஹையே |
| एतान् | இந்த | रणोत्सुकः | யுத்தமென் றிசேலயர் சையுன்னவனுய் |
| औत्पातिकान् | ஆபசஞானங்களை | निर्जगाम | புறப்பட்டான். |

तांस्तु निष्क्रमतो दृष्ट्वा वानरा जितकाशिनः । मणोदुः सुमहानादान्पूरयंश्च दिशो दश ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-------------|-----------------------------|
| जितकाशिनः | வெற்றியுடன் விளக்கிய | दृष्ट्वा तु | பார் த் த துமே |
| वानराः | வானர்கள் | सुमहानादान् | பேரொளிகளை |
| तान् | அவர்களை | मणोदुः | இட்டார்கள். |
| निष्क्रमतः | வெளிக்கிளம்பிவரு கின்றவர்களாக | दश | பத்து |
| | | दिशः च | திக்குகளையும் |
| | | पूरयन् | கிரப்பினார்கள். (ஆர்வம்) |

ततः प्रवृत्तं तुमुलं हरीणां राक्षसैः सह । घोराणां भीमरूपाणामन्योन्यवधकाङ्क्षिणाम् ॥

| | | | |
|----------------------------|---|-------------|----------------|
| ततः | அப்பொழுது | हरीणां | வானர்களுக்கு |
| घोराणां | கொடியவர்களும் | राक्षसैः सह | ஆர்க்கிரோடுகூட |
| भीमरूपाणां | பயங்கரமான உருவ முடையவர்களும் | तुमुलं | கலவரமான போர் |
| अन्योन्यवध- काङ्क्षिणां | வதைக்கும் விஷயத் தில் நான் முன்னே, நான் முன்னே என்று உதலாகக்கொண்ட வர்களுமான | प्रवृत्तम् | தொடங்கிற்று. |

निष्पतन्तो महोत्साहा भिन्नदेहशिरोधराः । रुधिरोक्षितसर्वाङ्गा न्यपतञ्जगतीतले ॥ २० ॥

| | | | |
|------------------|---|-----------------------|---------------------------------------|
| महोत्साहाः | மிகுந்த உதலாகக் கொண்டவர்களாய் | रुधिरोक्षितसर्वाङ्गाः | எல்லா அங்கங்களும் ரத்தம் தீதாய் து |
| निष्पतन्तः | வெளியில் வந்தவர்கள் | जगतीतले | மண்டலையில் |
| भिन्नदेहशिरोधराः | உடல்களும் தலை களும் வேறுபட்ட வர்களாய் | न्यपतन् | விழுந்தார்கள். |

केचिदन्योन्यमासाद्य शूराः परिघपाणयः । चिक्षिपुर्विविधं शस्त्रं समरेष्वनिवर्तिनः ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|--|----------------|----------------------------------|
| परिघपाणयः | உழைத்தடிக்கைக் கையில் கொண்டவர் களும் | शूराः | ஔர்கள் |
| समरेषु | போர்களில் | अन्योन्यं | நான் முன்னே நான் முன்னே என்று |
| अनिवर्तिनः | புறக்காட்டி ஓடாத | आसाद्य | தாக்கி |
| केचिन् | சில [வர்களுமான | विविधं शस्त्रं | பலவித சஸ்திரத்தை |
| | | चिक्षिपुः | எறிந்தார்கள். |

द्रुमाणां च शिलानां च शस्त्राणां चापि निस्वनः । श्रुयते सुमहांस्तत्र घोरो हृदयभेदनः॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------------|----------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | सुमहान् | அதிகமாகவும் |
| द्रुमाणां च | மரக்களுடையவும் | घोरः | பயங்கரமாகவும் |
| शिलानां च | பாறைகளுடையவும் | हृदयभेदनः अरि | நெருக்கடிவைதப்படுதல் |
| शस्त्राणां च | ஆயுதக்களுடையவும் | | பதாகவும் |
| निस्वनः | சந்தமாவது | श्रुयते | கேட்க்கப்பட்டது. |

रथनेभिस्वनस्तत्र धनुषश्चापि निस्वनः । शङ्खभेरीमृदङ्गानां वभूव तुमुलः स्वनः ॥ २३ ॥

| | | | |
|--------------------|--------------------------|--------|----------------|
| तत्र | அப்பொழுது | स्वनः | ஒலியும் |
| रथनेभिस्वनः | ரதசக்கங்களின் சத்தம் | अपि च | ஆகிய எல்லாமும் |
| धनुषः निस्वनः | வில்வொலியும் (மும் | तुमुलः | குழப்பமாக |
| शङ्खभेरीमृदङ्गानां | சங்கம், யோர், மிருதங்கம் | वभूव | இருந்தது. |
| | கம் இவைகளுடைய | | |

केचिदस्त्राणि संसृज्य बाहुयुद्धमकुर्वत ॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-----------------|
| केचित् | சிலர் | बाहुयुद्धं | கைச்சண்டையை |
| अस्त्राणि | ஆஸ்திரங்களை | अकुर्वत | செய்யலானார்கள். |
| संसृज्य | பிரயோகித்தவிட்டு | | |

तलैश्च चरणैश्चापि मुष्टिभिश्च द्रुमैरपि । जानुभिश्च हताः केचिद्भिन्नदेहाश्च राक्षसाः ॥२५॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|--------------------|
| केचित् | சிலர் | जानुभिः च | முதுந்தாள்களாலும் |
| राक्षसाः | ஆசுரர்கள் | द्रुमैः अपि च | விழுந்துள்ளதாலும் |
| तलैः च | உள்ளங்கைகளாலும் | भिन्नदेहाः | உடல் பிணவுண்டவர் |
| चरणैः अपि च | கால்களாலும் | | களால் |
| मुष्टिभिः च | முஷ்டிகளாலும் | हताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |

शिलाभिश्चूर्णिताः केचिद्धानरैर्धुद्धदुर्मदैः ॥ २६ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-----------|--------------|
| केचित् | சிலர் | शिलाभिः | கற்பாறைகளால் |
| सुद्धदुर्मदैः | பேரளவில் செறுக்குத்த | चूर्णिताः | பொடிமாக்கப் |
| धानरैः | வானரர்களால் | | பட்டார்கள். |

वज्रदंष्ट्रो भृशं धाणै रणे विनासयन्हरीन् । चचार लोकसंहारे पाशहस्त इवान्तकः ॥२७॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------|--------------|
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரன் | हरीन् | வானரர்களை |
| लोकसंहारे | பிரளயகாலத்தில் | चाणैः | பாணங்களால் |
| पाशहस्तः | பாசையுடையதைய | भृशं | மிகவும் |
| अन्तकः | யமன் | विनासयन् | பயமுறுத்திக் |
| श्व | பேரளவே | | கொண்டு |
| रणे | பேரளவில் | चचार | திரிந்தான். |

बलवन्तोऽस्त्रविदुषो नानाप्रहरणा रणे । जघ्नुर्वानरसैन्यानि राक्षसाः क्रोधमूर्च्छिताः ॥

ரணே
நானாபஹரணா: பல ஆயுதங்களோக்களை யில்கொண்டவர்களும்
அஸ்திரவிதுஷ: அஸ்திரங்களிலும் சிபுணர்களும்
பலவந்த: பலசாலிகளுமான

ராஷஸா: அரக்கர்கள்
கோபமூர்ச்சிதா: கோபமுண்டவர்கள்
வானசையானி வானரச்சேனைகளை
ஜஹு: புடைத்தார்கள்.

निघ्नतो राक्षसान्द्रष्ट्वा सर्वान्वालिस्तुतो रणे ।

ரணே
வாலிஸுத: வாலியின் புதல்வன்
ராஷஸான் அரக்கர்கள்
சர்வான் எல்லோரையும்
நிஹத: புடைக்கின்றவர்கள்
ஐஷ்டா கவனித்து [எாய்

क्रोधेन द्विगुणाविष्टः संवर्तक इवानलः ॥

சுவர்தக: பிரளயகாலத்திய
அனல: இவ அக்ளியேலவே
கோவே சினத்தால்
द्विगुणाविष्टः { முன்னிலும் இருமடங் கு ஆவேசத்துடன் சினக்கினான்.

ताव्राक्षसगणान्सर्वान्द्रुभमुद्यम्य वीर्यवान् ।

चकार कदनं घोरं शक्रतुल्यपराक्रमः
शक्रतुल्यपराक्रमः { இக்கிரகை சிகர்த்த ஆண்மைமயுடையவ னும்
वीर्यवान् மகா ஆற்றலுடைய
अङ्गद: அக்கதன் [வலுமான
क्रोधताम्राक्ष: கோபத்தால் சிவந்த கண்களையுடையவனாகி
बुध उद्यम्य ஓர் மரத்தை எடுத்து
तान् அந்த [க்கொண்டு

अङ्गदः क्रोधताम्राक्षः सिंहः क्षुद्रमृगानिव ॥

॥ ३१ ॥
ராஷஸகணான் ராசுதலகணங்கள்
சர்வான் எல்லோரையும்
சிஹ: ஒரு சிக்கம்
क्षुद्रमृगान् அந்நயிருகங்களோ
इव எய்வண்ணலோ ஆய் வண்ணமே
घोरं அசுத்தமாய்
कदनं चकार அழிக்கத்தலைப்பட டான்.

अङ्गदाभिहतास्तत्र राक्षसा भीमविक्रमाः ।

तत्र
अङ्गदाभिहता: அங்கதனால் புடைக் கப்பட்ட
भीमविक्रमा: மகாபராக்கமரளி
राक्षसा: அரக்கர்கள் [கராகிய

विभिन्नशिरसः पेतुर्विकृता इव पादपाः ॥

विभिन्नशिरस: தலைகளுடைந்து
विकृता: வேருடன் வெட்டப்
पादपा: மரங்கள் [பட்ட
इव போலவே
पेतु: விழுந்தார்கள்.

रथैरश्वैर्ध्वजैश्चित्रैः शरैर्हरिरक्षसाम् । रुधिरेण च सञ्जञ्जन्ना भूमिर्मयकरी तदा ॥ ३३ ॥

ரய
भूमि: பூமியானது
रथै: ரதங்களாலும்
अश्वै: குதிரைகளாலும்
चित्रै: பல் கொடிக்களாலும்

हरिरक्षसं
शरीरै: வானரர்களுடையவும் அரக்கர்களுடையவும் உடல்களாலும்
रुधिरेण ரத்தத்தாலும்
भयकरी பார்ப்பவர்களுக்கு பயத்தைத் தருகிற
सञ्जञ्जन्ना முடிக்கிடந்தது. [தாய்

हारकेयूरवस्त्रैश्च शस्त्रैश्च समलङ्कृता । भूमिर्भाति रणे तत्र शारदीव यथा निशा ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------------|--|------------|------------------|
| तल | அப்பொழுது | शस्त्रैः च | சஸ் திரங்களாலும் |
| रणे | போரில் | समलङ्कृता | அலங்கரிக்கப்பட்ட |
| भूमिः | பூமியானது | | தரம் |
| हारकेयूरवस्त्रैः च | { தரரச்க்கள், கைவளைகள், வஸ்திரக்கள் இவைகளாலும் | शारदी इव | சர தகாலத்திய |
| | | निशा यथा | இரவுபோலவே |
| | | भाति | கிரள்க்கிறது. |

अङ्गदस्य च वेगेन तद्राक्षसवलं महत् । प्राकम्पत तदा तत्र पवनेनाम्बुदो यथा ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|------------|
| तल | அவ்விடத்தில் | वेगेन | ஆந்தலால் |
| तदा | அப்பொழுது | अम्बुदः | மேகம் |
| तत्र | அந்த | पवनेन | காற்றால் |
| महत् | பெரும் | यथा | எவ்வண்ணமோ |
| राक्षसवलं च | ராட்சஸச்சேனையும் | | அவ்வண்ணமே |
| अङ्गदस्य | அங்கதனது | प्राकम्पत | சீதலிற்று. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16781

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 2106



चतुःपञ्चाशः सर्गः—ஐப்பத்துநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ५४ ॥

वज्रदंष्ट्रवधः—வஜ்ரதம்ஷ்டிர வதம்.

बलस्य च निघातेन अङ्गदस्य जयेन च । राक्षसः क्रोधमाविष्टो वज्रदंष्ट्रो महाबलः ॥१॥

| | | | |
|--------------|---------------|----------------|-----------------|
| महाबलः | மிக ஆற்றலுடைய | निघातेन च | அழிவாலும் |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்ஷ்டிர | अङ्गदस्य | அங்கதனது |
| | னென்ற | जयेन च | வெற்றியாலும் |
| राक्षसः | ஆரக்கன் | क्रोधं आविष्टः | மிகத் திணங்கொண் |
| बलस्य | சேனையின் | | டான். |

स विस्फार्य धनुष्योरं शक्राशनिमस्यनम् । वानराणामनीकानि प्राकिरच्छरवृष्टिभिः ॥

| | | | |
|---------------------------|------------------------------------|-------------|--------------|
| सः | அவன் | विस्फार्य | சுரணேற்றி |
| धोरं | பலங்கரமான | वानराणां | வானரர்களுடைய |
| धनुः | விடையை | अनीकानि | சேனைகளை |
| शक्राशनि- } समस्यनम् } | { இத்திரனது இடி போன்ற ஒலியுடையதால் | शरवृष्टिभिः | சரவரிகளால் |
| | | प्राकिरन् | பொழிந்தான். |

राक्षसाश्चापि मुख्यास्ते रथेषु समवस्थिताः । नानाप्रहरणाः शूराः प्रायुध्यन्त तदा रणे ॥

| | | | |
|--------------|----------------|--------------|----------------|
| ते | அந்த | रथेषु | ரதங்களில் |
| नानाप्रहरणाः | பல ஆயுதங்களைக் | समवस्थिताः | இருந்துகொண்டே |
| मुख्याः | சிறந்த [கொண்ட | तदा | அப்பொழுது |
| शूराः च अपि | ஞான்களுமான | रणे | போரில் |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | प्रायुध्यन्त | கைகலந்தார்கள். |

वानराणां तु शूरो ये सर्वे ते प्रवर्गर्षभाः । आयुध्यन्त शिलाहस्ताः समवेताः समन्ततः ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|------------|---------------------|
| वानराणां | வானரர்களுக்கும் | तु | அப்பொழுது |
| शूराः | ஞான்கள் | शिलाहस्ताः | கற்பாறைகளைக் கை |
| ये | ஏவர்களோ | | யில் ஏந்தியவர்களாய் |
| ते | அந்த | समन्ततः | நாற்புறத்திலும் |
| प्रवर्गर्षभाः | வானரோத்தமர்கள் | समवेताः | ஒன்றுகூடி |
| सर्वे | எல்லோரும் | आयुध्यन्त | போர்புரிந்தார்கள். |

तत्रायुधसहस्राणि तस्मिन्नायोधने भृशम् । राक्षसाः कपिसुख्येषु पातयांचक्रिरे तदा ॥

| | | | |
|----------|------------|---------------|------------------|
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | आयुधसहस्राणि | அனைக ஆயுதங்களை |
| तदा | அப்பொழுது | कपिसुख्येषु | வானரோத்தமர்கள் |
| तस्मिन् | அந்த | | மீது |
| आयोधने | போரில் | तस | அங்கிடத்தில் |
| भृशं | ஏராளமாய் | पातयांचक्रिरे | விழுத்தினார்கள். |

वानराश्चापि रक्षःसु गिरीन्वृक्षान्महाशिलाः । प्रवीराः पातयामासुर्मत्तवारणसन्निभाः ॥

| | | | |
|------------------|------------------|--------------|--------------------|
| मत्तवारणसन्निभाः | கொழுத்த யானைகளை | रक्षःसु | ஆரக்கர்கள்மீது |
| | சிகர்த்த | गिरीन् | மலைகளையும் |
| प्रवीराः | சிறந்த போர்வீரர் | वृक्षान् | மரங்களையும் |
| | களாகிய | महाशिलाः अपि | பெரும்பாறைகளையும் |
| वानराः च | வானரர்களும் | पातयामासुः | வீசி எறிந்தார்கள். |

शूराणां युध्यमानानां समरेष्वनिवर्तिनाम् । तदाक्षसगणानां च सुयुद्धं समवर्तत ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------------|--------------------|
| समरेषु | போர்களில் | तदाक्षसगणानां च | அவர்களுக்கும் அரசு |
| अनिवर्तिनां | புறங்காட்டி ஓடாது | | கணவர்களுக்கும் |
| युध्यमानानां | போர்புரிசின்ற | सुयुद्धं | பெரும்போர் |
| शूराणां | ஞான்களான | समवर्तत | கடைபெற்றது. |

प्रभिन्नशिरसः केचिद्भिन्नैः पादैश्च बाहुभिः । शस्त्रैरपितदेहास्तु रुधिरंण समुक्षिताः ॥

| | | | |
|---------------|--------------|--------------------|--------------------|
| कोऽन् | கிலர் | बाहुभिः तु | கைகளோடும் |
| प्रभिन्नशिरसः | தலைகளுடைந்து | अपितदेहाः | விழுத்தப்பட்ட உடல் |
| शस्त्रैः | ஆஸ்தரங்களால் | | களைபுடைபவர்களாய் |
| भिन्नैः | முறிந்த | रुधिरंण समुक्षिताः | ரத்தம் தொடங்கு |
| पादैः च | கால்களோடும் | | கிடந்தார்கள். |

हरयो राक्षसाश्चैव शेरेते गां समाश्रिताः । कङ्कपृथ्वरैराख्या गोमायुगणसंकुलाः ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|--|-----------------|-------------------|
| हरयः च | வானரர்களும் | गोमायुगणसंकुलाः | கரிக்கட்டங்களால் |
| राक्षसाः एव | ஆரக்கர்களும் | | சூழப்பட்டவர்களாய் |
| कङ्कपृथ्वरैः | { கழுஞ்சுவிரைமும், பருந்துகளைமும், காக்கைகளைமும் | गां | பூமியில் |
| आख्याः | கடலிருக்கப்பெற்ற வர்களாய் | समाश्रिताः | கிழந்து |
| | | शेरेते | கிடந்தார்கள். |

कवन्धानि समुत्पेतुर्भीरूणां भीषणानि वै

| | | | |
|--|-------------|------------|----------------------------------|
| कवन्धानि | கவந்தங்கள் | ॥ १० ॥ | |
| भीरूणां | பயந்தவர்களை | भीषणानि वै | இன்னும் பயமுறுத் துகிறவைகளாய் |
| भुजपाणिशिरश्छिन्नाश्छिन्नकायाश्च भूतले | | समुत्पेतुः | எழுந்தன. |

भुजपाणिशिरश्छिन्नाश्छिन्नकायाश्च भूतले । वानरा राक्षसाश्चापि निपेतुस्तत्र वै रणे ॥

| | | | |
|------------------------------|---|--------------|------------------|
| तत्र रणे | அந்தப் பேரளில் | छिन्नकायाः च | அறுப்புண்ட உடலை |
| वानराः च | வானரர்களும் | | புடையவர்களாயும், |
| राक्षसाः अपि | ஆரக்கர்களும் | भूतले वै | தலையில் |
| भुजपाणि- } शिरश्छिन्नाः } | { தேரளிகள், கைகள், தலைகள் அறுப்புண் டவர்களாய் | निपेतुः | கிழந்தார்கள். |

ततो वानरसैन्येन हन्यमानं निशाचरम् । प्राभश्यत बलं सर्वं वज्रदंष्ट्रस्य पश्यतः ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|-----------|----------------------|
| ततः | அப்பொழுது | निशाचरं | நாகுலம் |
| वानरसैन्येन | வானரசேனையால் | बलं | செனை |
| वज्रदंष्ट्रस्य | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரன் | सर्वं | எல்லாமும் |
| पश्यतः | பார்த்துக்கொண்ட ருக்கும்போதே | हन्यमानं | துள் புறுத்தப்படுகிற |
| | | प्राभश्यत | சிதற்றது. [தாய் |

राक्षसान्भयवित्रस्तान्हन्यमानान्पुवङ्गमैः । दृष्ट्वा स रोषताम्राक्षो वज्रदंष्ट्रः प्रतापवान् ॥

प्रविवेश धनुष्पाणिस्त्रासयन्हरिवाहिनीम् । शरैर्विदारयामास कङ्कपृथ्वैरभिहगैः ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|-------------|---------------------------------------|
| प्रतापवान् | மிக்க பராக்ரமசாலி | धनुष्पाणिः | கையும் கிள்ளுபாக |
| सः | ஆந்த [வான | हरिवाहिनीं | வானரசேனையை |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரன் | सासयन् | பயமுறுத்திக் கொண்டு |
| राक्षसान् | ஆரக்கர்கள் | प्रविवेश | புகுந்தான். |
| पुवङ्गमैः | வானரர்களால் | कङ्कपृथ्वैः | கழுஞ்சுவிரைகள் கட் டப்பெற்றவைகளும் |
| हन्यमानान् | புடைக்கப்பட்டி | अभिहगैः | குறிதப்பாது செலை வல்லவைகளுமான |
| भयवित्रस्तान् | பயத்தால் தெறித் தொடுகின்றவர்களாய் | शरैः | பீரணக்களால் |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | विदारयामास | பிணந்தான். |
| रोषताम्राक्षः | கேடபத்தால் கண்கள் கவக்க | | |

विभेद वानरांस्तत्र सप्ताष्टौ नव पञ्च च । विव्याध परमकुट्टो वज्रदंष्ट्रः प्रतापवान् ॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------|---------------------|
| प्रतापवान् | மகா வீரனாகிய | सप्त | எழுக்களாகவும் |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ர தம்ஷ்ட்ரன் | अष्टौ | எட்டுகளாகவும் |
| तत्र | அப்பொழுது | नव | ஒன்பதுகளாகவும் |
| परमकुट्टः | மிகச்சினங்கொண்ட | पञ्च | ஐந்துகளாகவும் |
| | வனராய் | विव्याध | கொன்றான். |
| वानरान् | வானரர்களை | विभेद च | தூரத்தியுமடித்தான். |

त्रस्ताः सर्वे हरिगणाः शरैः संकुत्तदेहिनः । अङ्गदं संप्रभावन्ति प्रजापतिमिव प्रजाः ॥ १६ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|--------------|---------------------|
| हरिगणाः | வானரக்கூட்டங்கள் | वस्ताः | நடுநடுக்கியவர்களாகி |
| सर्वे | எல்லோரும் | प्रजाः | பிரானுகள் |
| शरैः | பாணங்களால் | प्रजापति | பிரம்மதேவனை |
| संकुत्तदेहिनः | வெட்டுக்காயமுண்ட | इव | எப்படியோ அப்படி |
| | உடலுண்டவர்களாய் | अङ्गदं | அக்கதனை |
| | | संप्रभावन्ति | நாடி ஓடின. |

ततो हरिगणान्भ्रமन्दृष्ट्वा वालिसुतस्तदा । क्रोधेन वज्रदंष्ट्रं तमुदीक्षन्तमुदैक्षत ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|------------------|--------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | क्रोधेन | கினத்துடன் |
| वालिमुतः | வாலிமந்தன் | उदीक्षन्ते | இமைகொட்டாது |
| हरिगणान् | வானரக்கூட்டங்களை | तं | அந்த |
| भ्रमन् | சிறுதுண்டவைகளாய் | वज्रदंष्ट्रं | வஜ்ர தம்ஷ்ட்ரனை |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | उदैक्षत | கண்கொட்டாது கிழி |
| ततः | அதனால் | | த்துப்பார்த்தான். |

वज्रदंष्ट्रोऽङ्गदश्वोभौ सङ्गतौ हरिराक्षसौ । चेरतुः परमकुट्टौ हरिमत्तगजाविव ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|---------------|-------------------|
| हरिराक्षसौ | வானரமும் அரக்கமும் | हरिमत्तगजाविव | சிம்மமும், மதயானை |
| | மாகிய | इव | பொலவே [யும் |
| अङ्गदः | அக்கதனும் | परमकुट्टौ | மிகச்சினங்கொண்ட |
| वज्रदंष्ट्रः च | வஜ்ர தம்ஷ்ட்ரனுமான | सङ्गतौ | பொருதி [வர்களாய் |
| श्वभौ | இருவர்களும் | चेरतुः | எககலந்தார்கள். |

ततः शरसहस्रेण वालिपुत्रं महाबलः । जघान मर्मदेशेषु मातङ्गमिव तोमरैः ॥ १९ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| मातङ्गः | மிக்க பலராலியாகிய | | வண்ணமே |
| | அவன் | मर्मदेशेषु | மர்மன்தானங்களில் |
| वालिपुत्रं | வாலிபுதல்வனை | शरसहस्रेण | பாணங்களின் அடுக |
| तोमरैः | அக்குச்சங்களால் | | கத்தால் |
| जघान | ஓர் யானையை | जघान | தன்புதுத்தினான். |

रुधिरौक्षितसर्वाङ्गो वालिस्युर्मुहाबलः । चिक्षेप वज्रदंष्ट्राय वृक्षं भीमपराक्रमः ॥ २० ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|----------------------|---|
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடையவ னும் | रुधिरौक्षितसर्वाङ्गः | உடம்பெல்லாம் ரத் தம் தேராய், தவளுவி வஜ்ர தம்ஷ்ட்ரணைக் குறிவைத்து |
| भीमपराक्रमः | மகா ஆண்மைபுடைய வனுமான | वज्रदंष्ट्राय | ஜர்மரத்தை எறிந்தான். |
| वालिः | வாலிமகன் | वृक्षं चिक्षेप | |

दृष्ट्वा पतन्तं तं वृक्षमसंभ्रान्तश्च राक्षसः । चिच्छेद् बहुधा सोऽपि निकृत्तः पतितो भुवि ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------|----------|---------------|
| राक्षसः | ஆரக்ஷன் | चिच्छेद् | துண்டித்தான். |
| तं | அந்த | सः अपि | ஆனுவும் |
| वृक्षं | மரத்தை | बहुधा | பல துண்டுகளாக |
| पतन्तं | எழுந்துவருகிறதாக | निकृत्तः | வெட்டுண்டு |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | भुवि | தரையில் |
| असंभ्रान्तः च | மனம் சிதறுதவனு கவே | पतितः | விழுந்தது. |

तं दृष्ट्वा वज्रदंष्ट्रस्य विक्रमं भुवर्गर्षभः । प्रगृह्य विपुलं शैलं चिक्षेप च ननाद् च ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|-----------|--------------------------|
| भुवर्गर्षभः | வானரோத்தமனுள் அவன் | विपुलं | பெரிய |
| वज्रदंष्ट्रस्य | வஜ்ர தம்ஷ்ட்ரனுடைய | शैलं | மலையொன்றை |
| तं | அந்த | प्रगृह्य | எடுத்து |
| विक्रमं | வல்லமையை | चिक्षेप च | எறிந்தான். |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | ननाद् च | அட்டகாசமும் செய்தான். |

समापतन्तं तं दृष्ट्वा रथादाभुस्य वीर्यवान् । गदापाणिसंभ्रान्तः पृथिव्यां समतिष्ठत् ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|----------------|
| वीर्यवान् | மகா வீரனுள் அவன் | गदापाणिः | ஊதும் கைதயுமாக |
| तं | அதை | रथात् | ரதக்கினின்று |
| समापतन्तं | மேல்கிழ வருவதாக | आभुस्य | குதித்து |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | पृथिव्यां | தரையில் |
| असंभ्रान्तः | சலியாமனத்தனும் | समतिष्ठत् | கின்றான். |

साङ्गदेन गदाऽऽक्षिप्त्वा गत्वा तु रणमूर्धनि । सचक्रकूर्वरं साधुं प्रथमाथ रथं तदा ॥ २४ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|-------------------------------------|
| साङ्गदेन | அக்கதனும் | तदा | அப்பொழுதே |
| रणमूर्धनि | போர்முனையில் | रथं | ரதத்தை |
| गत्वा | புழுந்து | सचक्रकूर्वरं | சக்கரக்கனோடும் ஏர்க் கால்கனோடும் |
| सा गदा तु | அந்த கைதயும் | साधुं | குதிரைகளோடும் |
| आक्षिप्त्वा | பரிசுவித்துக் காறித் துப்பப்பட்டது. | प्रथमाथ | பொடியாக்கினான். |

ततोऽन्यं गिरिमाक्षिप्य विपुलं द्रुमभूपितम् । वज्रदंष्ट्रस्य शिरसि पातयामास सोऽङ्गदः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------------|---------------------|
| ततः | அதன்மேல் | विपुलं | பெரிய |
| सः | அந்த | गिरिं | மலையொன்றை |
| अङ्गदः | அங்கதன் | आक्षिप्य | பெயர்ந்துப்பிடுங்கி |
| द्रुमभूपितं | மரங்களுடன் சீராக | वज्रदंष्ट्रस्य | வஜரதம்ஷ்ட்ரனது |
| | இய | शिरसि | தலையில் |
| अन्यं | வேறொரு | पातयामास | எறிந்தான். |

अभवच्छोणितोद्गारी वज्रदंष्ट्रः स मूर्च्छितः । मुहूर्तेमभवन्मूढो गदामालिङ्ग्य निश्वसन् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|--------------------|
| सः | அந்த | मुहूर्ते | ஒரு முகூர்த்தகாலம் |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜரதம்ஷ்ட்ரன் | गदां | கதைபய |
| शोणितोद्गारी | சத்தத்தைக்கக்கி | आलिङ्ग्य | தழுவிக்கொண்டு |
| | கொண்டு | निश्वसन् | பெருமூச்சு விடுபவ |
| मूर्च्छितः | மூச்சைசயடைந்த | | னாய் |
| | வனாக | मुहः | ஒன்றுந்தோன்றாத |
| अभवत् | ஆயினான். | अभवत् | இருந்தான். [வனாக |

स लब्धसंज्ञो गदया बालिपुत्रमवस्थितम् । जघान परमकुड्यो वक्षोदेशे निशान्तरः ॥२७॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|--------------|
| सः | அந்த | अवस्थितं | முன் சின்ற |
| निशान्तरः | அசக்கன் | बालिपुत्रं | வாலிபுதல்வனை |
| लब्धसंज्ञः | மூச்சைசெய்தவீர்து | वक्षोदेशे | மார்பில் |
| परमकुड्यः | மிகச் சினங்கொண்ட | गदया | கதையால் |
| | வனாக | जघान | புடைத்தான். |

गदां त्यक्त्वा ततस्तत्र मुष्टियुद्धमवर्तत । अन्योन्यं जघ्नतुस्तत्र तावुभौ हरिराक्षसौ ॥ २८ ॥

| | | | |
|------------|----------------|----------------|-------------------|
| तस्य | அப்பொழுது | जघ्नतुः | அடித்துக்கொண்டார் |
| हरिराक्षसौ | ஹரனாலும் அசக்க | तस्य | அப்பொழுது [கன். |
| | னுமாகிய | गदां त्यक्त्वा | கதையின்றி |
| तौ | அந்த | ततः | அதன்மேல் |
| वभौ | இருவர்களும் | मुष्टियुद्धं | முஷ்டியுத்தம் |
| अन्योन्यं | ஒருவரைபொருவர் | अवर्तत | நிகழ்த்தது. |

रुधिरोद्गारिणौ तौ तु महारैर्जनितश्रमौ । बभूवतुः सुविक्रान्तावद्गारकबुधाविव ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------------|---------------------|
| अङ्गारकबुधौ | அக்காரகன் புதன் | महारैः | அடி களால் |
| | இவர்கள் | जनितश्रमौ | ஆயாசமேற்பட்டவர் |
| हव | போன்ற | | களாகி. |
| सुविक्रान्तौ | மகாபராக்காமசாஸி | रुधिरोद्गारिणौ | சத்தத்தைக்கக்குகின் |
| | களான | | றவர்களாய் |
| तौ तु | அவ்விருவர்களும் | बभूवतुः | ஆனார்கள். |

ततः परमतेजस्वी अद्भुदः कपिकुञ्जरः । उत्पाद्य वृक्षं स्थितवान्वहुपुष्पफलाञ्चितम् ॥३०॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-------------------|--|
| ततः | அப்பொழுது | अहुपुष्पफलाञ्चितं | வெகுபுஷ்பங்களும் |
| परमतेजस्वी | அளவுகடந்த ஆற்ற லுடைய | वृक्षं | பழங்களும் நிறைந்த |
| कपिकुञ्जरः | வானரோத்தமனாகும் | उपाद्य | மரமொன்றை |
| अद्भुदः | அக்கதன் | स्थितवान् | பெயர் த்தெடுத்தாக் கொண்டு எதிர்த்துநின்றான். |

जग्राह चार्पभं चर्म खड्गं च विपुलं शुभम् । किङ्किणीजालसंछन्नं चर्मणा च परिष्कृतम् ॥
वज्रदंष्ट्रोऽथ जग्राह सोऽद्भुदोऽप्यसिचर्मणी ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-------------------------|-----------------------------------|----------------|------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | शुभं | அழகுற்ற தமாயிய |
| वज्रदंष्ट्रः | வஜ்ர தாண்டீரன் | खड्गं च | கத்தியையும் |
| आर्पभं | எருதின் தேரலா | जग्राह | எடுத்துக்கொண் டான். |
| चर्म च | கேடயத்தையும் [வான | सः अद्भुदः अपि | அந்த அக்கதனும் |
| किङ्किणीजाल- संछन्नं | சிறிய மணிவரிசைக ளால் நிரைக்கப் | असिचर्मणी | கத்தியையும் கேட யத்தையும் |
| चर्मणा | கோலால் [பெற்றதும் | जग्राह | எடுத்துக்கொண் டான். |
| परिष्कृतं च | உறைபூண்டதும் | | |
| विपुलं | பெரியதும் | | |

विचित्राश्विस्तुर्मागान्नुषितो कपिराक्षसो । जघ्नतुथ तदाऽन्योन्यं निर्दयं जयकाङ्क्षिणो ॥३३॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|--------------|------------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | जयकाङ्क्षिणो | வெல்ல எண்ணியவர் |
| कपिराक्षसो च | வானரனும் அரக்க னும் | विचित्रान् | பலவகை [களாய் |
| रुषितो | கோபம் தலைக்கேறிய வர்களாகி | मार्गान् | போரப்பியாசங்களிள புரிந்தார்கள். |
| अन्योन्यं | ஒருவனையொருவன் | वेस्तुः | ஆவேசத்தடனே |
| | | निर्दयं | புடைத்துக்கொண் டார்கள். |
| | | जघ्नतुः | |

व्रणैः साक्षैरशोभेतां पुष्पिताविव किंशुकौ । युध्यमानौ परिश्रान्तौ जानुभ्यापवनीं गतौ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|---|
| साक्षैः | சத்தம் வழியும் | युध्यमानौ | போர்புரிந்த அவ் நிகுவர்களும் |
| व्रणैः | புண்களால் | परिश्रान्तौ | செத்து களைத்தவர் களாய் |
| पुष्पितौ | புஷ்பித்த | जानुभ्यां | குத்கால்களைஎன்றி ழுவில் சிவ்ருர்கள். |
| किंशुकौ इव | பலாசமரங்கள் போல | अवनीं गतौ | |
| अशोभेतां | கிளக்கினார்கள். | | |

निमेषान्तरमात्रेण अद्भुदः कपिकुञ्जरः । उदतिष्ठत दीप्ताक्षो दण्डाहत इवोरगः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------|------------|---|
| निमेषान्तरमात्रेण | ஒரு கணப்பொழுதிற் குள் | उरगः इव | பாம்புபோலவே |
| कपिकुञ्जरः | வானரோத்தமனாகும் | दीप्ताक्षः | கெடுப்புப்பொறி பறக்கும் கண்களை யுடையவனாய் |
| अद्भुदः | அக்கதன் | उदतिष्ठत | சீறிக்கிளம்பினான். |
| दण्डाहतः | தடியால்சீண்டப்பட்ட | | |

निर्मलेन सुधीतेन खड्गेनास्य महच्छिरः । जघान वज्रदंष्ट्रस्य वालिसूनुर्महाबलः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|----------|---------------------------|
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடைய | निर्मलेन | பளபளவென்றிருக் கிறதும் |
| वालिः | வாலி, தனயன் | सुधीतेन | கன்கு தூக்கப்பட்ட |
| खड्गः | இந்த | खड्गेन | கத்தியால் [டதுமரண |
| वज्रदंष्ट्रस्य | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரனது | जघान | அறுத்தான். |
| महश्चिरः | பெரும் தலைவ | | |

हविरोक्षितगात्रस्य बभूव पतितं दिशः । सरोषपरिवृत्ताक्षं शुभं खड्गहतं शिरः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------------------------|-------------------|--|
| हविरोक्षितगात्रस्य | உடலெல்லாம் சத்தம் தொய்ந்த அவனு | सरोषपरिवृत्ताक्षं | { கோபத்தால் வெரு ண்டுவிழித்த கண் களோடு |
| शुभं शिरः | அழகிய தலை [டைய | दिशः | தனித்து |
| खड्गहतं | கத்தியால் வெட்டுண் டதாய் | पतितं बभूव | விழுந்தது. |

वज्रदंष्ट्रं हतं दृष्ट्वा राक्षसा भयमोहिताः । वस्ताः प्रत्यपतल्लङ्कां बध्यमानाः पुत्रदुर्मैः ॥ ३८ ॥

विषण्णवदना दीना हिया किञ्चिदवाक्कुखाः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|--------------|----------------------------------|
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | अवाहमुखाः | தலைகுளிக் தவர்களாய் |
| वज्रदंष्ट्रं | வஜ்ரதம்ஷ்ட்ரனை | पुत्रदुर्मैः | வாணரர்களால் |
| हतं | மாண்டுவிட்டவனாக | बध्यमानाः | புடைக்கப்படுகின்ற வர்களாய் |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | दीनाः | பரிதாபமாய் |
| भयमोहिताः | பயத்தால் மெய் மறந்து | वस्ताः | பயந்தோடுகின்றவச் |
| विषण्णवदनाः | முகம்வரடியவர்களாய் | लङ्कां | லங்கைக்கு [களாய் |
| हिया | வெட்கத்தால் | प्रत्यपतन् | திரும்பிப்போய்க் செந்தார்கள். |
| किञ्चित् | கொஞ்சம் | | |

निहत्य तं वज्रधरप्रभावः स वालिसूनुः कपिसैन्यमध्ये ।

जगाम हर्षं महितो महाबलः सहस्रनेत्रश्चिदशैरिवावृतः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|---------------|------------------------------|
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடைய வனும் | आवृतः | சூழப்பட்ட |
| वज्रधरप्रभावः | இந்திரனைப்போன்ற சாமர்த்தியசாலியும் | सहस्रनेत्रः | இந்திரன் |
| वालिः | வாலிபுதல்வனுமாய் | इव | போலவே |
| सः | அவன் | कपिसैन्यमध्ये | வாணரக்கேணிமத்தி யில் |
| तं | அவனை | महितः | மெச்சிக்கொண்ட டப்பட்டவனாக |
| निहत्य | கொன்று | हर्षं | சந்தோஷத்தை |
| चिदशैः | தேவர்களால் | जगाम | அடைந்தான். |

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे चतुःपञ्चाशः सर्गः ॥

पञ्चपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தைத்தாவது ஸர்க்கம். || 55 ||

अकंपनयुद्धम्—அகம்பன யுத்தம்.

वज्रदंष्ट्रं हतं श्रुत्वा वालिपुत्रेण रावणः । बलाध्यक्षमुवाचेदं कृताञ्जलिमवस्थितम् ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|------------|-----------------|
| रावणः | ராவணன் | अवस्थितं | பக்கலில் நின்று |
| वालिपुत्रेण | வாலிபுத்தல்வனனால் | | கொண்டிருந்த |
| वज्रदंष्ट्रं | வஜ்ரதம்ஸ்ட்ரணை | बलाध्यक्षं | சேனுபதியைப் |
| हतं | கொல்லப்பட்டவனாக | | பார்த்து |
| श्रुत्वा | அறிந்து | इदं | பின்வருமாறு |
| कृताञ्जलिं | அஞ்சலிபண்ணிக் கொண்டு | उवाच | கட்டளையிட்டான்: |

शीघ्रं निर्यान्तु दुर्धर्पा राक्षसा भीमविक्रमाः । अकम्पनं पुरस्कृत्य सर्वशस्त्रपकोविदम् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------------|------------|-------------------------------|
| भीमविक्रमाः | “மகர ஆண்மைபுடை பவர்களும் | अकम्पनं | அகம்பனனை |
| दुर्धर्पाः | வெல்ல முடியாதவர் | पुरस्कृत्य | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள்/களுமான | शीघ्रं | சுடுதலில் |
| सर्वशस्त्रपकोविदं | எல்லா சஸ்திரக்களரி லும் தேர்ந்த | निर्यान्तु | புறப்பட்டுச் செல் ஸட்டும். |

एष शास्ता च गोप्ता च नेता च युधि संमतः । भूतिकामश्च मे नित्यं नित्यं च समरप्रियः॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|-------------|-----------------------------|
| एषः | “இவன் | नित्यं | எக்காலத்திலும் |
| शास्ता च | சிகழிக்கிறவன் ; | मे | எனது |
| गोप्ता च | பாதுகாக்கிறவன் ; | भूतिकामः च | சேஷமத்தை நாடுபவன் ; |
| युधि | போரில் | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| नेता च | முற்றிலும் செய்து முடிப்பவன் என | समरप्रियः च | போரில் உதவாதும் உள்ளவன். |
| संमतः | பிரசுத்திபெற்றவன் ; | | |

एष जेष्यति काकुत्स्थौ सूर्यावं च महाबलम् । वानरांश्चापरान्घोरान्हनिष्यति परन्तपः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|------------|---------------|
| परन्तपः | “பலவலரை த்தடிக்கச் செய்யும் | सूर्यावं च | சூர்யனையும் |
| एषः | இவன் | जेष्यति | வெல்லவான். |
| काकुत्स्थौ | காமனையும் லகந்தமண னையும் | अपरान् | மற்றுமுள்ள |
| महाबलं | மகா பலவலரையாகிய | घोरान् | கொடிய |
| | | वानरान् च | வானரர்களையும் |
| | | हनिष्यति | வதைப்பான். |

परिपृष्ट स तामाज्ञां रावणस्य महाबलः । बलं सन्त्वरयामास तदा लघुपराक्रमः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|---------------------|
| महाबलः | மகா பலம் பொருக் தீயவனும் | रावणस्य | ராவணன் து |
| लघुपराक्रमः | { கருகருப்போடுகடிய ஆண்கையுடையவ னுமான | तां आज्ञां | அந்த ஆக்கினையை |
| सः | அவன், | परिपृष्ट | கிரமெற்கொண்டு |
| | | तदा | அப்பொழுது |
| | | बलं | சைன்யத்தை |
| | | सन्त्वरयामास | துரிதப்படுத்தினான். |

ततो नानाप्रहरणा भीमाक्षा भीमदर्शनाः । निष्पेतू रक्षसां मुख्या बलाध्यक्षप्रचोदिताः ॥

| | | | |
|--------------------------|--|--------------|---|
| ततः | அப்பொழுது | भीमदर्शनाः | பயங்கரமான தீதாற்ற முடையவர்களுமான |
| बलाध्यक्ष- प्रचोदिताः | { சேனாகுபதியால் ஆக் ளுபிக்கப்பட்டவர் களும் | रक्षसां | ஆரக்கர்களில் |
| भीमाक्षाः | பயங்கரமான கண் களுடையவர்களும் | मुख्याः | கிறந்தவர்கள் |
| | | नानाप्रहरणाः | { பலவகைப் படைக் கலக்களையுடையவர் களால் |
| | | निष्पेतुः | புறப்பட்டார்கள். |

रयमास्थाय विपुलं तप्तकाञ्चनकुण्डलः । मेघाभो मेघवर्णश्च मेघस्वनमहास्वनः ॥ ७ ॥
राक्षसैः संवृतो भीमैस्तदा निर्यात्यकम्पनः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------------------|---|----------------------|--|
| तदा | அப்பொழுது | मेघस्वन- महास्वनः | { மேகஇடியோசை போன்ற பெரும் முழக்கம் இடுபவனு |
| तप्तकाञ्चन- कुण्डलः | { சுத்தப் பொன்குண் டலங்கள் அணிந்தவ னும் | अकम्पनः | அகம்பனன் [மான |
| मेघाभः | மேக உருக்கொண் டவனும் | विपुलं रयं | பெரிய ரகத்தில் |
| मेघवर्णः च | மேக நிறத்தவனும் | आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு |
| | | भीमैः राक्षसैः | கொடிய ஆரக்கர்க |
| | | संवृतः | புடைகுழ [ஊர் |
| | | निर्याति | வெளிப்போந்தான். |

न हि कम्पयितुं शक्यः सुरैरपि महामृष्टे । अकम्पनस्ततस्तेषामादित्य इव तेजसा ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------|----------------|-----------|---------------|
| अकम्पनः | அகம்பனன் | ततः हि | அக்காரணத்தால் |
| तेषां | அவர்களுக்கும், | महामृष्टे | பெரும்பொரில் |
| तेजसा | ஆற்றலால் | सुरैः अपि | தேவர்களாலும் |
| आदित्यः | சூரியன் | कम्पयितुं | அசைக்க |
| इव | போன்றவன். | शक्यः न | முடியாதவன். |

तस्य निर्धावमानस्य संख्यस्य युयुत्सया । अकस्माद्दैन्यमागच्छद्दयानां रथवाहिनाम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|-----------|------------------------------|
| युयुत्सया | போரில் உத்ஸாஹம் கொண்டு | रथवाहिनां | ரதத்தை இழுத்துச் செல்லும் |
| तस्य | அவன் | दयानां | குறிக்காலுக்கு |
| संख्यस्य | பாபாப்புடைமகனும் | अकस्मान् | ஒருநாளானமுயில்லா |
| निर्धावमानस्य | வெளிப்புறப்படுகை யில் | दैन्यं | மனஏக்கம் [மல் |
| | | भागवत् | எற்பட்டது. |

व्यसुरक्षयने चास्य सव्ये युद्धाभिनन्दिनः । विवर्णो मुखवर्णश्च गद्गदश्चाभवत्स्वनः ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|------------|--------------|
| युद्धाभिनन्दिनः | போரில் ஆகசப்பட்ட | मुखवर्णः च | முகவொளியும் |
| अस्य | இவனது | विवर्णः | குன்றிற்று. |
| सव्ये | இடது | स्वनः च | சூரமும் |
| नयने च | கண்ணும் | गद्गदः | தழுதழுத்ததாக |
| व्यसुरक्ष | சுடித்தது. | अभवत् | ஆயிற்று. |

अभवत्सुदिने काले दुर्दिने रक्षमास्तम् । ऊचुः खगा मृगाः सर्वे वाचः क्रूरा भयावहाः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|---------|------------------------------|
| सुदिने | சூரியன் கன்கு பிர காசிக்கின்ற | खगाः | பறவைகளும் |
| काले | சமயத்தில் | मृगाः | மிருகங்களும் |
| दुर्दिने | இருண்டந்ததினமா கவும் | सर्वे | எல்லாமும் |
| रक्षमास्तम् | புபற்காந்துடன் கடியதாகவும் | भयावहाः | பயத்தை உண்டாக்கு பவைகளாய் |
| अभवत् | ஆயிற்று. | क्रूराः | வீகரமான |
| | | वाचः | சத்தங்களை |
| | | ऊचुः | இட்டன. |

स सिंहोपचितस्कन्धः शार्दूलसमविक्रमः । तानुत्पातानचिन्त्यैव निर्जगाम रणाजिस् ॥

| | | | |
|-----------------------|--|--|--------------------|
| सिंहोपचित- स्कन्धः | } சிம்மத்தினதுபோன்ற பெருந்த தோள் களையுடையவனும் | सः | அவன் |
| शार्दूलसम- विक्रमः | | } வேர்க்காயை விகரித்த ஆற்றலுடையவனு டான | तान् |
| | | | उत्पातान् |
| | | अचिन्त्यै एव | எசுதியம் செய்யாமலே |
| | | रणाजिः | போர்க்களத்தை |
| | | निर्जगाम | சென்றான். [கோக்கி |

तदा निर्गच्छतस्तस्य रक्षसः सह राक्षसैः । बभूव सुमहाबादः क्षोभयन्निव सागरम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | सागरं इव | சமுத்திரத்தைகவும் |
| रक्षसैः सह | ஆசக்கர்களோடுகூட | क्षोभयन् | கலங்கச்செய்யும் |
| तस्य | அந்த | सुमहान् | பெரிய |
| रक्षसः | ஆசக்கள் | वाचः | சத்தமரனது |
| निर्गच्छतः | செல்லுகையில் | बभूव | உண்டாயிற்று. |

तेन शब्देन विवस्ता वानराणां महाचमूः । द्रुपशैलप्रहरणा योद्धुं समवतिष्ठत ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|-------------|-----------------|---|
| तेन | அந்த | द्रुपशैलप्रहरणा | { மரங்களையும், மலை களையும் ஆயுதமாகக் கொண்டதாய் } |
| शब्देन | சத்தத்தால் | योद्धुं | |
| विवस्ता | நடுநடுக்கிய | समवतिष्ठत | சித்தமாக நின்றது. |
| वानराणां | வானரர்களின் | | |
| महाचमूः | பெரும் சேனை | | |

तेषां युद्धं महारौद्रं सञ्जज्ञे हरिरक्षसाम् । रामरावणयोरथे समभित्यक्तजीविनाम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------------|------------|-----------------------|
| रामरावणयोः अथे | ராமராமருக்காகவும் ராவணனுக்காகவும் | हरिरक्षसां | வானரரகஷஸர் களிடையே |
| समभित्यक्तजीविनां | உயிரை விடத் துணிக் கிருந்த | युद्धं | போர் |
| तेषां | அந்த | महारौद्रं | மிகக் கொடுமையாய் |
| | | सञ्जज्ञे | நிகழ்ந்தது. |

सर्वे ह्यतिबलाः शूराः सर्वे पर्वतसन्निभाः । हरयो राक्षसाश्चैव परस्परजिघांसवः ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|-------------|--|
| सर्वे हि | எல்லோரும் | हरयः च | வானரர்களும் |
| अतिबलाः | மிக பலசாலிகள் ; | राक्षसाः एव | அரக்கர்களும் |
| शूराः | சூரர்கள் ; | परस्पर- | } ஒருவரை யொருவர் ஒழிப்பதில் ஈகக்கம் உடையவர்கள் ; |
| सर्वे | எல்லோரும் | जिघांसवः | |
| पर्वतसन्निभाः | மலைமைய நிகர் த்தவர் கள் ; | | |

तेषां विनर्दतां शब्दः संयुगोऽतितरस्विनाम् । शुश्रुषे सुमहान्क्रोधादन्योन्यमभिगर्जताम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|-------------------|
| संयुगे | போரில் | शुश्रुषे | அந்த |
| श्लोधात् | கொடையேசத்தால் | अतितरस्विनां | மிகப் பலசாலிகளின் |
| अन्योन्यं | ஒருவரை ஒருவர் | शब्दः | சத்தமானது |
| अभिगर्जतां | அதட்டி | सुमहान् | மிகப் பெரிதாய் |
| विनर्दतां | அட்டகாசஞ்செய்யும் | शुश्रुषे | கேட்கப்பட்டது. |

रजश्वारुणवर्णाभं सुभीममभवद्भृशम् । उद्धूतं हरिरक्षोभिः संस्रोथ दिशो दश ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-------------|---------------------------------|
| अरुणवर्णाभं | சென்னிறமுள்ள | हरिरक्षोभिः | வானரர்களாரும் அரக்கர்களாரும் |
| रजः | தூலியானது | उद्धूतं | உண்டான அது |
| सुभीमं | மிகப் பலக்காமமாகவும் | दश दिशः | பத்து திக்குகளையும் |
| भृशं च | அதிகமாகவும் | संस्रोथ | மறைத்துவிட்டது. |
| अभवत् | உண்டாயிற்று. | | |

अन्योन्यं रजसा तेन कौशेयोद्धृतपाण्डुना । संवृतानि च भूतानि ददृशुर्न रणाजिरे ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------|---|-----------|---------------------|
| रणजिरे | போர்க்களத்தில் | रजसा | தூலியால் |
| कौशेयोद्धृत- | } பட்டில் ஸுடப்பட்டது போல் சற்று வெ ளுத்த | भूतानि च | பிராணிகளெல்லாம் |
| पाण्डुना | | ஒத்த | संवृतानि |
| तेन | அந்த | अन्योन्यं | ஒன்றை ஒன்று |
| | | ददृशुः न | பார்க்கமுடியவில்லை. |

न ध्वजा न पताका वा चर्म वा तुरगोऽपि वा । आयुधं स्यन्दनं वाऽपि दृद्रुशे तेन रेणुता॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|--------------|--------------------|
| तेन रेणुता | அந்த தூசுவியல் | चर्म | கவரம் தானாகட்டும் |
| स्यन्दनं अपि वा | தேர் கூட | तुरगः अपि वा | குதிரை தானாகட்டும் |
| दृद्रुशे न | புலப்படவில்லை. | आयुधं वा | ஆயுதம் தானாகட்டும் |
| ध्वजाः | கொடிகள் தானாகட்டும் | न | புலப்படவில்லை. |
| पताकाः वा | நிசான்கள் தானாகட் டும் | | |

शब्दश्च सुमहांस्तेषां नर्दतामभिधावताम् । श्रूयते तुमुले युद्धे न रूपाणि चकाशिरे ॥२२॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|-----------|----------------|
| अभिधावतां | எதிர்த்தொடிக் கொண்டு | तुमुले | குழப்பமான |
| नर्दतां | கொடித்துச் செய்யும் | युद्धे | போரில் |
| तेषां | அவர்களுடைய | सुमहान् | மிகப் பெரிதாய் |
| शब्दः च | சத்தம் மட்டும் | श्रूयते | கேட்கப்பட்டது. |
| | | रूपाणि | உருவங்கள் |
| | | चकाशिरे न | புலப்படவில்லை. |

हरीनेव सुसंकुद्धा हरयो जघ्नुराहवे । राक्षसाश्चापि रक्षांसि निजप्नुस्तिमिरे तदा ॥२३॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|--------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | हरीन् एव | வானர்களைவே |
| आहवे | போரில் | जानुः | வதைத்தார்கள். |
| तिमिरे | இருளில் | राक्षसाः च | அரக்கர்களுக்கும் |
| हरयः | வானர்கள் | रक्षांसि अपि | அரக்கர்களைவே |
| सुसंकुद्धाः | மிகக்கொபமடைந் தவர்களாய் | निजप्नुः | வதைத்தார்கள். |

पराशैव विनिघ्नन्तः स्वांश्च वानरराक्षसाः । रुधिराद्रौ तदा चकुर्महीं पङ्कानुलेपनाम् ॥२४॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|-----------------|-------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | महीं | பூமியை |
| वानरराक्षसाः | வானரர்களும் அரக்கர்களும் | रुधिराद्रौ | ரத்தத்தால் கலிந்த தாகவும் |
| स्वान् च | தம் இனத்தார்களை | पङ्कानुलेपनां च | செஞ்சூல் பூசப்பட்ட தாகவும் |
| परान् एव | சத்தூக்களையும் [யும் | चकुः | செய்தார்கள். |
| विनिघ्नन्तः | கொன்றுகொண்டு | | |

ततस्तु रुधिरौघेण सिक्तं व्यपगतं रजः । शरीरशवसङ्कीर्णा बभूव च वसुन्धरा ॥ २५ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | व्यपगतं | அடக்கியதாயிற்று. |
| रुधिरौघेण | ரத்தப்பிரவாகத்தால் | वसुन्धरा च | பூமியும் |
| सिक्तं | கலிந்த | शरीरशवसङ्कीर्णा | பிணங்களால் நிகழ்த்த |
| रजः पु | தூசியும் | बभूव | இருக்கிறது. [தாய் |

द्रुमशक्तिशिलामாசैर्गदापरिवतोमरैः । हरयो राक्षसाश्चैव जघ्नुरन्योन्यमोजसा ॥ २६ ॥

| | | | |
|------------------------------|---|----------------------|--|
| हरयः च | வானரர்களும் | गदापरिव- } तोमरैः | கதைகள், உழலைத் தடிகள், தேரமரங்கள் இவைகளாவும் |
| राक्षसाः एव | அரக்கர்களும் | अन्योन्यं | ஒருவரையொருவர் |
| ओजसा | போரில் அஸ்தரவித் கையில் தேர்ச்சியால் | जघ्नुः | அடித்தார்கள். |
| द्रुमशक्ति- } शिलामासैः } | மரங்கள், சட்டிகள், கற்பாறைகள், கத்தி கள் இவைகளாவும் | | |

बाहुभिः पश्चात्परैर्युध्यन्तः पर्वतोपमाः । हरयो भीमकर्माणो राक्षसाञ्जघ्नुराहवे ॥ २७ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|-------------|--------------------------|
| बाहवः | போரில் | युध्यन्तः | போர்ப்புரிபலர்களால் |
| भीमकर्माणः | பயக்கரமான தொ ழில் புரிபவர்களும் | पश्चात्परैः | உழலைத்தடிகளை நிகர்த்த |
| पर्वतोपमाः | மலைமைய நிகர்த்தவர் களுமான் | बाहुभिः | கைகளால் |
| हरयः | வானரர்கள் | राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| | | जघ्नुः | புடைத்தார்கள். |

राक्षसास्त्वपि संकुद्धाः प्रासतोमरपाणयः । कपीचिजघ्निरै तत्र शस्त्रैः परमदारुणैः ॥ २८ ॥

| | | | |
|----------------|--|------------|-----------------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | संकुद्धाः | மிகச்சினங்கொண்ட வர்களால் |
| प्रासतोमरपाणयः | { கத்தி, கோமாம், இவைகளைக் கையில் ஏகதியவர்களால் | परमदारुणैः | மிகக்கொடிய |
| राक्षसाः अपि | ராக்கடவர்களும் | शस्त्रैः | படைக்கலங்களால் |
| | | कपीच तु | வானரர்களையும் |
| | | निजघ्निरै | வதைத்தார்கள். |

अकम्पनः सुसंकुद्धो राक्षसानां चमूपतिः । संहप्यति तान्सर्वाश्चाक्षसान्भीमविक्रमान् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-----------|-------------------------|
| राक्षसानां | அரக்கர்களனுடைய | तान् | அந்த |
| चमूपतिः | சேனைத்தலைவனுடைய | राक्षसान् | அரக்கர்கள் |
| अकम्पनः | அகம்பனன் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| सुसंकुद्धः | மிகச்சினங்கொண்ட வனாகி | संहप्यति | உதலாகப்படுத்தி ளுள். |
| भीमविक्रमान् | மகாவல்லமையடைந்த | | |

हरयस्त्वपि रक्षांसि महाद्रुममहाश्वभिः । विदारयन्त्यभिक्रम्य शस्त्राण्याच्छिद्य वीर्यतः ॥

| | | | |
|----------------------------|--|-------------|-----------------------------|
| हरयः तु | வானரர்களும் | वीर्यतः अपि | சாமர்த்தியத்தாலே யே |
| महाद्रुम- } महाश्वभिः } | பெரும்மரங்கள், பெ ரும் கற்பாறைகள் இவைகளைக்கொண்டு | शस्त्राणि | படைக்கலங்களை |
| रक्षांसि | அரக்கர்களை | आच्छिद्य | பிடுக்கிக்கொண்டு |
| अभिक्रम्य | மேல்விழுந்து தாக்கி | विदारयन्ति | கொறுக்கித்தள்ளி ளுர்கள். |

एतस्मिन्नन्तरे वीरा हरयः कुमुदो नरः । मैन्द्रश्च द्विविदः क्रुद्धाश्चक्रुर्वेगमनुत्तमम् ॥३१॥

| | | | |
|-----------------|----------------|-------------|-------------------|
| एतस्मिन् अन्तरे | இந்த சமயத்தில் | द्विविदः च | நிலிந்தனும் |
| हरयः | வானர | क्रुद्धाः | கொண்டெழுந்தவர் |
| वीराः | சூரர்களாகிய | | களாய் |
| कुमुदः | குமுதனும் | अनुत्तमं | ஒப்புயர்வில்லாத |
| नरः | நளனும் | वेगं चक्रुः | சாமர் த்தியத்தைக் |
| मैन्द्रः | மேந்தந்தனும் | | காட்டினார்கள். |

ते तु दृक्षैर्महावेगा राक्षसानां चमूमुखे । कदनं सुमहच्चक्रुर्लीलाया इतिवृथयाः ॥ ३२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------|---------------|
| महावेगाः | மகா ஆற்றலுடைய | दृक्षः | மாத்களால் |
| ते | அந்த | लीलाया तु | லீலையாட்டாகவே |
| इतिवृथयाः | வானரச்சேனைத்தலை | सुमहत् | பெரும் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களின்[வர்கள் | कदनं | நாசத்தை |
| चमूमुखे | பாண்டமுனையில் | चक्रुः | செய்தனர். |

ममन्धू राक्षसान्सर्वे वानरा गणशो भृशम् ॥ ३३ ॥

| | | | |
|----------------|------------|---------|---------------|
| ममन्धू | மமந்தூ | गणशः | கட்டக்கட்டமாக |
| राक्षसान्सर्वे | வானரர்கள் | भृशो | அதிகமாய் |
| वानरा | வானரர்கள் | ममन्धुः | வதைத்தார்கள். |
| सर्वे | எல்லோரும் | | |
| राक्षसान् | அரக்கர்களை | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 16854



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 2179

पदपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தாறுவது வர்க்கம். ॥ ५६ ॥

अकम्पनवधः—அகம்பன வதம்.

तद्दृष्ट्वा सुमहत्कर्म कृतं वानरसत्तमैः । क्रोधमाहारयामास युधि तीव्रपकम्पनः ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------------|--------------|
| अकम्पनः | அகம்பனன் | दृष्ट्वा | கண்ணுற்ற |
| वानरसत्तमैः | வானரசைத்தமர்களால் | युधि | போர்ல் |
| कृतं | புரியப்பட்ட | तीव्रं | அடக்கா |
| तत् | அந்த | क्रोधे आहारयामास | ஆத்திரக்கொண் |
| सुमहत् कर्म | அரிய செயலை | | டான். |

क्रोधमूर्च्छितरूपस्तु धुन्वन्परमकार्मुकम् । दृष्ट्वा तु कर्म शत्रूणां सारथिं वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------------|------------------|------------|-----------------|
| शत्रूणां | சத்ருக்களுடைய | धुन्वन् तु | நாடுணற்றி ஒளி |
| कर्म | தொழிலை | | செய்துகொண்டே |
| दृष्ट्वा तु | பார்த்ததுமே | सारथिं | தேர்ப்பாக்கிணப் |
| क्रोधमूर्च्छितरूपः | கொபத்தால் மெய் | | பார்த்து |
| | பறந்த அகன் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| परमकार्मुकं | உத்தமமானவையில்லை | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| | | | மொழிந்தான் : |

तत्रैव तावच्चरितं रथं प्रापय सारथे । यत्रैते बहवो घ्नन्ति सुबहुब्राह्मसात्रणे ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|--------------------|
| சாரथே | "சாரதியே! | சுபஹூந் | பலவராயும் |
| ரथे | பேரரிஷ் | घ्नन्ति | கொல்லுகின்றாரர்களோ |
| बहवः | அநீனகர்களாகிய | तस एव | அவ்விடத்திற்கே |
| एते | இவர்கள் | तावत् | முதலில் |
| यत्र | எவ்விடத்தில் | त्वस्ति | வேகமாய் |
| राक्षसान् | அரக்கர்கள் | रथं प्रापय | ரதத்தை செலுத்து. |

एतेऽत्र बलवन्तो हि भीमकायाश्च वानराः । द्रुमशैलप्रहरणास्तिष्ठन्ति प्रमुखे मम ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------|----------------|------------------|-------------------|
| मम | "எனது | भीमकायाः च | பேருடலுடையவர்க |
| प्रमुखे | முன்னிலையில் | वानराः | வானரர்கள் [ஊமான |
| अत्र हि | இவ்விடத்திலேயே | द्रुमशैलप्रहरणाः | மரங்களையும், மலைக |
| एते | இந்த | | ளையும், ஆயுதங்களா |
| बलवन्तः | பலசாலிகளும் | तिष्ठन्ति | கங்கொண்டவர்களாக |
| | | | நிற்கின்றார்கள்: |

एताभिहन्तुमिच्छामि समरश्लाघिनो ब्रह्मम् । एतैः प्रमथितं सर्वं दृश्यते राक्षसं बलम् ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-------------|--------------------|
| एतैः | "இவர்களால் | हि | ஆனபடியால் |
| राक्षसं | ராக்கஸ | अहं | நான் |
| बलं | சேனை | समरश्लाघिनः | பேரரிஷ் பெயர்பெற்ற |
| सर्वं | எல்லாமும் | एतान् | இவர்களை [வர்களான |
| प्रमथितं | அழிக்கப்பட்டதாக | निहन्तु | கொல்ல |
| दृश्यते | காணப்படுகிறது. | इच्छामि | நினைக்கிறேன்." |

ततः प्रजवनाश्वेन रथेन रथिनां वरः । हरीनभ्यहनत्क्रोधाच्छरजालैरकम्पनः ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|---------------------|
| रथिनां | தேரிலிருந்து பேர் | रथेन | ரதத்திலிருந்து |
| | புரிபவர்களுக்கும் | | கொண்டு |
| वरः | கிறந்த | क्रोधात् | கோபாவேசத்தால் |
| अकम्पनः | அகம்பனை | शरजालैः | பாணசமூகங்களால் |
| ततः | அவ்விடத்தில் | हरीन् | வானரர்களை |
| प्रजवनाश्वेन | { மிக்க வேகமுள்ள | अभ्यहनत् | மிகத்துடன் புறுத்தி |
| | குதிரைகளால் | | ஊன். |
| | பூட்டப்பெற்ற | | |

न स्थातुं वानराः शोकः किं पुनर्योद्धमाहवे । अकम्पनशरैर्भयाः सर्वे एव विदुद्रुवुः ॥ ७ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|-------------|------------------|
| आहवे | பேரரிஷ் | कि पुनः | எப்படி முடியும் |
| वानराः | வானரர்கள் | सर्वे एव | எல்லோருமே |
| स्थातुं | எதிர்த்துநிற்க | अकम्पनशरैः | அகம்பனனா |
| शोकः न | முடியவில்லை. | | பாணங்களால் |
| योद्धुं | எதிர்த்துப்போர் | भयाः | கிதறுண்டவர்களால் |
| | புரிய | विदुद्रुवुः | புதற்காட்டியோடத் |
| | | | தலைப்பட்டார்கள். |

तान्मृत्युवशमापन्नानकम्पनवशं गतान् । समीक्ष्य हनुमान् ज्ञातीनुपतस्थे महाबलः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------|--------------------|
| महाबलः | மகா பலவா னுகும் | मृत्युवशं | மரண து வச த்தை |
| हनुमान् | ஹனுமான் | आपन्नान् | அபாடகின் தவர்களாய் |
| ज्ञातीन् | ஆர் த | समीक्ष्य | பார் த்து |
| उपतस्थे | தன்களைத் தந்தர்களை | उपतस्थे | அங்கு வந்து தோன்றி |
| अकम्पनवशं | அகம்பன து வச த்தில் | | இர். |
| गतान् | கிண்கிண்கொண்ட | | |

तं महाप्लवगं दृष्ट्वा सर्वे प्लवगयूथपाः । समेत्य समरे वीराः संहृष्टाः पर्यवारयन् ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|------------|----------------------------|
| वीराः | வீரர்களான | दृष्ट्वा | பார் த்து |
| प्लवगयूथपाः | வானரச்சேனைத் தலைவர்கள் | समरे | போரில் |
| सर्वे | எல்லோரும் | संहृष्टाः | மிகச்சந்தோஷமடைந் தவர்களாய் |
| महाप्लवगं | வானரசர்களின் தந்த | समेत्य | ஒன்றுசேர்ந்து |
| ते | அவரை | पर्यवारयन् | சூழ்ந்து சின்னர்கள். |

अवस्थितं हनुमन्तं ते दृष्ट्वा हरियूथपाः । बभूवुर्बलवन्तो हि बलवन्तमुपाश्रिताः ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|------------|-------------------------|
| ते | அந்த | बलवन्तं | பலவந்தவர்களை |
| हरियूथपाः | வானரச்சேனைத் தலைவர்கள் | उपाश्रिताः | அண்டரிசுப்பவர் |
| अवस्थितं | பக்கலில் வந்துகொண்ட | हि | அதனால் [கனாய் |
| हनुमन्तं | ஹனுமான் | बलवन्तः | ஆதிக்கம் பெற்றவர் கனாய் |
| दृष्ट्वा | பார் த்து | बभूवुः | விளங்கினார்கள். |

अकम्पनस्तु शैलाभं हनुमन्तमवस्थितम् । महेन्द्र इव धाराभिः शरैरभिववर्ष ह ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|-------------------|
| अकम्पनः तु | அகம்பன இன்கொண்ட | महेन्द्रः | மஹேந்திரன் |
| अवस्थितं | அவ்விடம் வந்து | धाराभिः | மலைகளால் |
| शैलाभं | மலைபோன்ற [செய்த | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| हनुमन्तं | ஹனுமான் த்து | शरैः ह | யான்க்கொண்டே |
| | | अभिववर्ष | வந்து த்தான். |

अचिन्तयित्वा बाणौघाञ्छरीरे पतिताञ्छतान् । अकम्पनवधार्थाय मनो दधे महाबलः ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------------|----------------------|
| महाबलः | மகா பலவா னுகும் | अचिन्तयित्वा | பொருட்படுத்தாதது |
| शरीरे | சரீரத்தில் [அவர் | अकम्पनवधार्थाय | அகம்பனனை வதைத் தலில் |
| पतितान् | பாய்ந்த | मनः | மனதை |
| शितान् | கடிக | दधे | கொடுத்தினார். |
| बाणौघान् | பாணமூலக்களைய | | |

स प्रसह्य महातेजा हनुमान्मारुतात्मजः । अभिदुद्राव तद्रक्षः कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥१३॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|------------------------|
| महातेजाः | மகா ஆற்றலுடையவரும் | रक्षः | ஆங்களைக் காக்கிற உலகை |
| मारुतात्मजः | வாயுவின் புதல்வரும் | मेदिनी | நடுங்கச்செய்கின்ற நவர் |
| सः | அந்த [ஆண | कम्पयन् हव | போலாகி |
| हनुमान् | ஹனுமான் | प्रसह्य | மிக வேகங்கொண்டு |
| तव | அந்த | अभिदुद्राव | ஓடினார். |

तस्याभिनर्दमानस्य दीप्यमानस्य तेजसा । वभूव रूपं दुर्धर्षं दीप्तस्यैव विभावसोः ॥१४॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-------------|---------------------------|
| तेजसा | ஒளியால் | दीप्तस्य | கொழுந்துவிட்ட |
| दीप्यमानस्य | ஜ்வலித்துக்கொண்டு இருக்கிறவரும் | विभावसोः हव | டெரியும் அக்னிமீளுடையது |
| अभिनर्दमानस्य | கர்ஜித்துக்கொண்டிருக்கிறவருமான | दुर्धर्षं | போன்றதாய் அணுகவொண்ணாததாய் |
| तस्य रूपं | அவரது உருவம் | वभूव | விளக்கிற்று. |

आत्मानमप्रहरणं हात्वा क्रोधसमन्वितः । शैलमुत्पाटयामास वेगेन हरिपुङ्गवः ॥ १५ ॥

| | | | |
|------------|------------------------|---------------|-----------------------------|
| हरिपुङ्गवः | வானரோத்தமரான அகவர் | हात्वा | நினைத்து |
| आत्मानं | தன்னை | क्रोधसमन्वितः | மிக்ககொபங்கொண்டு |
| अप्रहरणं | ஓராயுதமும் இல்லாதவராய் | वेगेन | வேகுவேகமாக |
| | | शैलं | மலையொன்றை |
| | | उत्पाटयामास | பெயர்த்தெடுத்துக் கொண்டார். |

तं गृहीत्वा महाशैलं पाणिनिकेन मारुतिः । स विनद्य महानादं भ्रामयामास वीर्यवान् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|------------|------------------|
| वीर्यवान् | மகா சரமர்த்திய சாலியும் | तं | அந்த |
| मारुतिः | வாயுவைமந்தருமாகிய | महाशैलं | பெரும் மலையை |
| सः | அவர் | एकेन | ஒரு |
| महानादं | பெரும் கோலத்தை | पाणिना | கையால் |
| विनद्य | இட்டுக்கொண்டு | गृहीत्वा | பிடித்துக்கொண்டு |
| | | भ्रामयामास | சுழற்றினார். |

ततस्तमभिदुद्राव राक्षसेन्द्रमकम्पनम् । पुरा हि नमुचि संख्ये वज्रेणेव पुरन्दरः ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | पुरन्दरः | இந்திரன் |
| तौ | அந்த | वज्रेण | வஜ்ராயுதத்தால் |
| राक्षसेन्द्रं | ராக்ஷஸோத்தமனாகிய | नमुचि हि | நமுசி என்ற |
| अकम्पनं | அகம்பனனை | | அகரணையே |
| पुरा | முற்காலத்தில் | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| संख्ये | போலில் | अभिदुद्राव | தாக்கினார். |

अकम्पनस्तु तद्दृष्ट्वा गिरिशृङ्गं समुद्यतम् । दूरादेव महाबाणैरर्धचन्द्रैर्व्यदायत् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|---------------------|
| अकम्पनः तु | அகம்பணனும் | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| सत् | ஆந்த | दूरत एव | தூரத்திலேயே |
| गिरिशृङ्गं | மலைச்சிகரத்தை | अर्धचन्द्रैः | அர்த்தசந்திரமெனும் |
| समुद्यतं | மேல்நிழலுண்டிததாக | महाबाणैः | சிறந்த பாணங்களால் |
| | | व्यदायत् | விளந்தி, தறிந்தான். |

तत्पரிतामकाशे रक्षोबाणविदारितम् । विशर्णं पतितं दृष्ट्वा हनुमान्कोधमूर्च्छितः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------------|--|----------------|---------------------------|
| हनुमान् | ஹனுமார் | विशीर्णं | சிறி |
| सत् | ஆந்த | पतितं | பூமிமீல் விழுந்ததை |
| परीतामं | பர்வதசிகரத்தை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| आकाशे | ஆகாசத்தில் | रक्षोभूँच्चितः | அளவுகடந்த கோபம் கொண்டார். |
| रक्षोबाण विदारितं | அரக்கனது பாணங்களை ளால் சிதைக்கப்பட்டு | | |

सोऽश्वकर्णं समासाद्य रोषदपान्विता हरिः । तूर्गमुपाडयामास महागिरिमिवोच्छ्रितम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|------------|---------------------------------|
| सः | ஆந்த | उच्छ्रितम् | ஒங்கிவளர்க்குறின்ற |
| हरिः | காணார் | अश्वकर्णं | அசுவகர்ண விஞ்சுதல் |
| रोषदपान्वितः | கேரபமும் செழுக்கும் கொண்டவராய் | समासाद्य | சிட்டி [த்தை |
| महागिरिं | ஹனு மெனும் | तूर्गं | சடக்கென |
| हृत् | பெரு | उपाडयामास | கேளுடன் பிடுக்கிக் கொண்டார். |

तं गृहीत्वा महास्कन्धं सोऽश्वकर्णं महाद्युतिः । महस्य परया प्रीत्या भ्राषयामास संयुगे ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|-------------------------------|
| महाद्युतिः | மகாதேஜஸ்வியாகும் | महास्कन्धं | பெரிய அடிமாத்தோ பிருக்கும் |
| सः | ஆவர் | अश्वकर्णं | அசுவகர்ண விஞ்சுதல் தை |
| संयुगे | பேரில் | गृहीत्वा | எடுத்தக்கொண்டு |
| पत्या | அளவுகடந்த | महस्य | நனகத்துக்கொண் |
| प्रीत्या | உதவா ஹுத்தால் | भ्राषयामास | சுதந்தினார். [3] |
| तं | ஆந்த | | |

प्रभावचूर्खवेगेन प्रभङ्गंस्तरसा द्रुमान् । हनुमान्प्रमुखैर्द्वारैर्द्वारिषत्क्षितिम् ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|-----------|------------------|
| परमकुहूः | மிகச்சினக்கொண்ட | तरसा | வதுவால் |
| हनुमान् | ஹனுமார் | द्रुमान् | விஞ்சுதற்களை |
| प्रभावन् | பாய்ந்து செல்லுகின்ற காரால் | प्रभङ्गन् | முறித்துக்கொண்டு |
| उखेगेन | தொண்டுவெகத்தால் | द्वारैः | காணடிவைப்புகளால் |
| | | क्षितिम् | பூமியை |
| | | द्वारिषत् | விளந்தார். |

गजांश्च सगजारोहान्सरथाच्चयिनस्तथा । जघान हनुमान्भीमान्नाक्षसांश्च पदातिमान् ॥

| | | | |
|--------------|---|-------------|--------------------------|
| भीमान् | ಮಹಾ ಭಕ್ತಿಮಾಣುಷಿಯ | रयिनः | ತೇಜಿಸಿಗ್ರಹಿತವರ್ತಕರೇ |
| हनुमान् | ಋಣುಮಾನ | सरथान् | ಸತಂಕಗ್ರಹಣೆಗೂಡುವುಮ |
| गजान् | ಗಜರೇತಕರೇ | राक्षसान् | ರಾಕ್ಷಸರು |
| सगजारोहान् च | ಬಾಣಿಯಿಂಗೆಯಿತ್ತಿರುತ್ತ ವಾರ್ತಕಗ್ರಹಣೆಗೂಡುವುಮ | पदातिमान् च | ಪದಾತಿಮರೇಯುಮ |
| तथा | ಅಪ್ಪಾಯಿಯೆ | जघान | ಕೊಂದಿತ್ತು, ತಂದೆನಿಗ್ರಹಣೆ. |

तमन्तकमिव क्रुद्धं समरे प्राणहारिणम् । हनुमन्तमभिषेक्ष्य राक्षसा विप्रदुद्रुधुः ॥ २४ ॥

| | | | |
|----------|-----------|----------------|---------------------------------|
| राक्षसाः | ಅರಕರಕರಕರ | प्राणहारिणं | ಒಲಿವಣಿ ವಾಕ್ತುಕಿಂಠ |
| अमन्तकं | ಅಮಂತೆ | तं | ಅಂತೆ |
| इव | ನಿಕರಂತೆ | हनुमन्तं | ಋಣುಮಾನರ |
| समरे | ಪೋರಿಸೆ | अभिषेक्ष्य | ಬಾರಂತೆ |
| क्रुद्धं | ಕಿಣಕಕೊಂಡು | विप्रदुद्रुधुः | ಪ್ರಹರಕಾಡಿದ ಓಡತೆತಣಿ ಪಟ್ಟಾರಕರ. |

तपापतन्तं संक्रुद्धं राक्षसानां भयावहम् । ददर्शाकम्पनो वीरश्चुकोध च ननाद च ॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|---------|--------------------------|
| वीरः | ಕೂರಣುಷಿಯ | आपतन्तं | ತಂಠಿಣಿ ಆಧಿರಂತೆವರು |
| अकम्पनः | ಅಕಮ್ಪನಂ | तं | ಅವಣಿ [ಕಿರವರಣ |
| राक्षसानां | ಅರಕರಕರಗ್ರಹಣೆ | ददर्श | ಕಂಡರಣೆ. |
| भयावहं | ಭಯಾಂತೆ ಕಿಣಕಿಂತೆ ತುಕಕೊಂಡು. | चुकोध च | ಚಿಕ್ಕ ಕಿಣಕಕೊಂಡು ಡಾಣೆ. |
| संक्रुद्धं | ಕೊಪಕಕೊಂಡುಮ | ननाद च | ಕಂಠಿತೆತಾಣೆ. |

स चतुर्दशभिर्बाणैः शितैर्देहविदारणैः । निर्विभेद हनुमन्तं महावीर्यमकम्पनः ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|-----------------------------------|
| सः | ಅಂತೆ | देहविदारणैः | ತೆಕತೆತೆತೆಪಿಣಿಣಕಕ ವಾಣಿಣಕಕಗ್ರಹಣೆ |
| अकम्पनः | ಅಕಮ್ಪನಂ | चतुर्दशभिः | ಚತುರ್ದಶಿಣಿಣಿಣಿ |
| महावीर्यं | ಮಹಾ ವೀರಣುಷಿಯ | बाणैः | ಬಾಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿ |
| हनुमन्तं | ಋಣುಮಾನರ | निर्विभेद | ನಿರ್ವಿಭೆಡೆ. |
| शितैः | ಕೂರಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿ | | |

स तदा पतिविद्धस्तु बर्हीभिः शरवृष्टिभिः । हनुमान्दहशो वीरः परुड इव सानुमान् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|---------------|-----------------------------------|
| सः | ಅಂತೆ | तदा | ಅಪ್ಪೊಪ್ಪುತು |
| वीर- | ವೀರಣುಮ | बर्हीभिः | ಬರ |
| परुडः | ಓಕಕಿ ವಾಣಿಣಿಣಿಣಿ | शरवृष्टिभिः | ಕರವರಕರಕರಣಿಣಿಣಿ |
| सानुमान् इव | ಮಣಿಪೊಂಠವರು ಯುಷಿಯ | निर्विभेदः तु | ನಿರ್ವಿಭೆಡೆ ತು ಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿ |
| हनुमान् | ಋಣುಮಾನರ | दहणे | ದಿಣಕಕಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿಣಿ. |

विरराज महाकायो महावीर्यो महामनाः । पुष्पिताशोकसङ्काशो विभूम इव पावकः ॥२८॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|-------------------------|--|
| महाकायः | பெரிய உடலுற்ற வரும், | पुष्पिताशोक- सङ्काशः | } புஷ்பித்த அசோக மரம்போலவும், புகையின்றி பிரகாசிக் கும் |
| महावीर्यः | மகா வீர்வசாலியும், | विभूमः | |
| महामनाः | அனவுகடந்த கொருக் குற்றவருமான அவர் | पावकः इव विरराज | கொப்புப்போலவும் விளங்கினார். |

ततोऽन्यं वृक्षमुत्पाद्य कृत्वा वेगमनुत्तमम् । शिरस्यभिजयानाशु राक्षसेन्द्रमकम्पनम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|---------------|---------------------|
| ततः | அதன்மேல் | आशु. | சடக்கென |
| अनुत्तमं | ஊப்புயர் கிட்டவாத | उन्पाद्य | கொருடன் பிடுக்கி |
| वेगं | ஆக்கிரகத்தை | राक्षसेन्द्रं | ராஷ்டிரேந்திரமனாகிய |
| कृत्वा | மேற்கொண்டு | अकम्पनं | அகம்பனனை |
| अन्यं | வேறொரு | शिरसि | தலையில் |
| वृक्षं | மரத்தை | अभिजयान | புகடத்தார். |

स वृक्षेण हतस्तेन सक्रोधेन महात्मना । राक्षसो वानरेन्द्रेण पपात च वमार च ॥ ३० ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|---------|-------------------|
| सः | அந்த | तेम | அந்த |
| राक्षसः | அரக்கன் | वृक्षेण | மரத்தால் |
| सक्रोधेन | கொபத்துடனிருக் கும் | हतः | அடிக்கப்பட்டவனாய் |
| महात्मना | அனவுகடந்த ஆற்ற வகடைய | पपात | கிழி விழுந்தான். |
| वानरेन्द्रेण | வானரேந்திரத்தமரால் | च च | தகடினமே |
| | | समार | உயிர் துர்த்தான். |

तं दृष्ट्वा निहतं भूमौ राक्षसेन्द्रमकम्पनम् । व्यथिता राक्षसाः सर्वे क्षितिकम्प इव द्रुमाः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|-------------|------------------|
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| सर्वे | எல்லோரும் | क्षितिकम्पे | பூகம்பத்தில் |
| राक्षसेन्द्रं | ராஷ்டிரேந்திரத்தமனாகிய | द्रुमाः | கிழிபடிகள் |
| तं अकम्पनं | அந்த அகம்பனனை | इव | எப்படியோ |
| भूमौ | பூமியில் | | அப்படியே |
| निहतं | மாண்டு கிடப்பவனாக | व्यथिताः | பிடுக்கினார்கள். |

त्यक्तपहरणाः सर्वे राक्षसास्ते पराजिताः । लङ्कामभिययुस्त्रस्ता वानरैस्तैरभिद्रुताः ॥ ३२ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|------------|---------------------------------|
| ते | அந்த | तेः | அந்த |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | वानरैः | வானர்களால் |
| सर्वे | எல்லோரும் | अभिद्रुताः | அடித்தியடிக்கப்பட்ட வர்களாய் |
| पराजिताः | கொல்லியடைந்தவர் | | |
| लङ्काः | கடுங்குளி [களாய் | लङ्कां | எங்குகைய கொண்டு |
| अभिययुः | ஆயுதங்களை கழுவ கிட்டவர்களாய் | अभिययुः | ஓடவற்றார்கள். |

ते मुक्तकेशाः संभ्रान्ता भगवानाः पराजिताः । सख्यभ्रजैरङ्गैः श्वसन्तो विप्रदुद्रवुः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|---------------|--------------------------------------|
| पराजिताः | தோக்கிபுற்ற அவர்கள் | सख्यभ्रजैः | முடியாத தனத்தால் வியர்வை பெருகும் |
| ते | | भङ्गैः | உடல்களோடு |
| मुक्तकेशाः | தலைபயிர் அவிழ்ந்து புரள | श्वसन्तः | பெருமூச்சு விட்டுக் கொண்டு |
| संभ्रान्ताः | உள்ளம் சிதற | विप्रदुद्रवुः | ஓடி னார்கள். |
| भगवानाः | மாணக்குலைய | | |

अन्योन्यं प्रमथन्पुस्ते विविशुर्नगरं भयात् । पृथुस्तस्ते सुसंमूढाः प्रेक्षमाणा सुहृर्मुहुः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|------------|---|--------------|---------------------------------|
| ते | அவர்கள் | सुहृः सुहृः | கிட்டுகிட்டு |
| अन्योन्यं | ஒருவரை யொருவர் | भयात् | பயத்தால் |
| प्रमथन्पुः | கிட்டுப்பிரியாது உர ய்ந்துகொண்டார்கள். | पृथुस्तः | பின்பறம் |
| सुसंमूढाः | மிகவும் அறிவு கலக்கிய | प्रेक्षमाणाः | திருப்பிப் பார்த்துக் கொண்டே |
| ते | அவர்கள் | नगरं | பட்டணத்திற்குள் |
| | | विविशुः | புகுந்தார்கள். |

तेषु लङ्कां प्रविष्टेषु राक्षसेषु महःबलाः । समेत्य हरयः सर्वे हनुमन्तमपूजयन् ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------|-------------------|
| तेषु | அந்த | हरयः | வானரர்கள் |
| राक्षसेषु | அரக்கர்கள் | सर्वे | எல்லோரும் |
| लङ्कां | லங்கையினுள் | समेत्य | ஒன்றுகூடி |
| प्रविष्टेषु | போய்க்கேசவும் | हनुमन् | நல்லுமாரை |
| महःबलाः | மகாபலித்தரர்கள் | अपूजयन् | கொண்டாடி னார்கள். |

सोऽपि प्रहृष्टस्तान्सर्वान्हरीन्प्रत्यभ्यपूजयत् । हनुमान्सखसंपन्नो यथाहमनुकूलतः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-----------------|----------------|
| सखसम्पन्नः | பேராத் தல்கொண்ட | हरीन् | வானரர்கள் |
| सः | அந்த | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| हनुमान् अपि | நானுமாரும் | यथाहं | அவரவர்க்கேற்ற |
| प्रहृष्टः | சந்தேக அபூமுற்றவராய் | अनुकूलतः | அன்புடன் [வாறு |
| तान् | அந்த | प्रत्यभ्यपूजयन् | கொளர வித்தார். |

विनेदुश्च यथाप्राणं हरयो जितकाशिनः । चक्रपुंश्च पुनस्तत्र समाणानपि राक्षसान् ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------|--------------------|
| जितकाशिनः | வெற்றிகூடிய | तत्र | அங்கிடத்தில் |
| हरयो | வானரர்கள் | समाणान् | குற்றுயிருடனிருந்த |
| यथाप्राणं च | குள்கொண்ட மட்டும் | राक्षसान् अपि | அரக்கர்களையும் |
| विनेदुः | கொல்லிட்டார்கள். | पुनः च | திக்குமங்கும் |
| | | चक्रपुंः | இழுத்தார்கள். |

स वीरशोभाभजन्महाकपिः समेत्य रक्षांसि निहत्य पारुतिः ।

महासुरं भीममभिघ्ननाशनं यथैव विष्णुर्वलिनं चमूमुखे

॥ ३८ ॥

| | | | |
|---------|---------------------|---------------|-----------------------|
| महाकपिः | வரணமேக த் தமரும் | भीमं | பயங்கரமானவனும் |
| मारुतिः | வாயுபடைமக த் தருமரண | अ भिघ्ननाशनं | ச த் தருசம்ஹாராகனும் |
| सः | ஆகாசர் | | மான |
| विष्णुः | விஷ்ணுபடைமகரன் | महासुरं | மகாசூரமேக த் தமரீகை |
| वलिनें | பலியை | भक्षंसि एव | ஆரங்கர்களை யும் [யும் |
| यथा | என்படியேய் ஆப்படியே | समेत्य निहत्य | ஒன்றாய் மடித்து |
| चमूमुखे | படைமுனைமுகம் | वीरशोभां | வீரசக்தியை |
| | | अमज्ज | பெற்றுவிளக்கினார். |

अपूजयन्देवगणास्तदा कपिं स्वयं च रामोऽतिवृक्ष लक्ष्मणः ।

तथैव सुग्रीवमुखाः पुवङ्गमा विभीषणश्चैव महाबलस्तथा

॥ ३९ ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|---------------------|
| तदा | ஆப்பொழுது | सुग्रीवमुखाः | சுகரீவமீக முன்னிட்ட |
| कपिं | வானரரான ஆவரை | पुवङ्गमा: एव | காசரர்களும் |
| देवगणाः | தேவகணங்களும் | तथा एव | ஆப்படியே |
| स्वयं | தேரில் | महाबलः | மகாபலவானாகிய |
| अतिवृक्ष | அதிகபலசா வியாகிய | विभीषणः च | விபிஷணரும் |
| रामः च | ராமரும் | अपूजयन् | புஜித்துகொண்டார் |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும் | | னர்கள். |
| तथा | ஆப்படியே | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे षट्पञ्चाशः सर्गः ॥

आदिता श्लोकाः 16893



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 2218

सतपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேழாவது ஸர்க்கம். ॥ ५७ ॥

प्रहस्तयुद्धम्—பிரஹஸ்த யுத்தம்.

अकम्पनवधं श्रुत्वा क्रुद्धो वै राक्षसेश्वरः । किञ्चिद्दीनमुखश्चापि सचिवांस्तानुदैक्षत ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|---------|--------------------------|
| राक्षसेश्वरः वै | ராஷ்டேசுவரன் எனனை ஆவன் | अपि च | அப்படியிருக்கையி யும் |
| अकम्पनवधं | அகம்பனவதை | दीनमुखः | தாடிய முகத்தனும் |
| श्रुत्वा | கேட்டு [கொளியை | तान् | அந்த |
| किञ्चित् | ஒருவாறு | सचिवान् | மந்திரிகளை |
| क्रुद्धः | கொக்கொண்டவனாகி | उदैक्षत | உயிர்த்து பார்த்தான். |

स तु ध्यात्वा सुहूर्तं तु मन्त्रिभिः संविचार्य च । ततस्तु रावणः पूर्वदिवसे राक्षसाधिपः ॥
पुरीं परिययौ लङ्कां सर्वान्गुल्मानवेक्षितुम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|------------|---|
| राक्षसाधिपः | राक्षसமன்னனாகிய | पूर्वदिवसे | காலையில் |
| सः रावणः तु | அந்த ராவணனும் | गुल्मान् | { राक्षसனுர் த்தம் வைக்கப்பட்டிருக்க கும் சேனைகள் |
| सुहूर्तं तु | சிறிதுநேரம் மட்டும் | सर्वान् | எல்லாவற்றையும் |
| ध्यात्वा | தனக்குள்ளேயே ஆ லோசனை செய்துகிட்டு | अपेक्षितुं | நேரில் பார்க்க |
| ततः | அதன்மேல் | लङ्कां | இலங்கை |
| मन्त्रिभिः तु | மந்திரிகளோடும் | पुरीं | நகரை |
| संविचार्य च | தீர்க்காலோசனை செய்துகிட்டு | परिययौ | சந்தரிவந்தான். |

तां राक्षसगणैर्गुप्तं गुल्मैर्बहुभिरावृताम् । ददर्श नगरीं लङ्कां पताकाध्वजमालिनीम् ॥४॥

| | | | |
|-----------------------|---|---------------|--|
| तां | அந்த | राक्षसगणैः | राक्षसமக்கட்டடங்களை யடங்கிய |
| पताकाध्वज- मालिनीं | { கொடிகளும், சிசான்க ளும் கட்டப்பெற்று விளங்குகின்ற | गुल्मैः | { राक्षसனுர் த்தம் ஆமை க்கப் பட்டுள்ள சே னைகளால் |
| लङ्कां | லங்கை | आवृतां गुप्तं | நிரம்பி சூழிக்கப்பட்ட குக்கிறதாக |
| नगरीं | நகரை | ददर्श | கண்டான். |
| बहुभिः | பல | | |

रुद्रां तु नगरीं दृष्ट्वा रावणो राक्षसेश्वरः । उवाचामर्षतः काले महस्तं युद्धकोविदम् ॥५॥

| | | | |
|--------------|---|-------------|------------------------------------|
| राक्षसेश्वरः | राक्षसமன்னனாகும் | अमर्षतः | பொறுக்கமுடியாத |
| रावणः | ராவணன் | युद्धकोविदं | தால் யுத்தத்தில் சமர்ந்த ஒரு |
| नगरीं | பட்டணத்தை | महस्तं | பிரகஸ்தனைப்பார்ந்து, |
| काले | அக்காலத்தில் | उवाच | பின்வருமாறு ஆக்கு பித்தான் : |
| रुद्रां तु | முற்றுக்கை போடப் பட்டிருக்கிறதாகவும் | | |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | | |

पुरस्योपनिविष्टस्य सहसा पीडितस्य वा । नान्यं युद्धात्प्रपश्यामि मोक्षं युद्धविशारद ॥६॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|--------------|-----------------|
| पुरस्य | “ போரில் வல்லவனை, | पुरस्य | நகரத்திற்கு |
| सहसा | பலா தகரமாக | युद्धात् | யுத்தத்தைத்தவிர |
| पीडितस्य | துன்புறுத்தி | अन्यं | வேறொரு |
| उपनिविष्टस्य वा | முற்றுக்கையிடப்பட்ட குக்கிறதான் | मोक्षं | தப்பு வழியை |
| | | प्रपश्यामि न | காணறியேன். |

अहं वा कुम्भकर्णो वा त्वं वा सेनापतिर्मम । इन्द्रजिह्वा निकुम्भो वा वहेयुर्भारमीदृशम् ॥

| | | | |
|-----------------|----------------|----------|----------------------------------|
| अहं वा | "நானும் | सेनापतिः | சேனாபதியாகிய |
| कुम्भकर्णः वा | கும்பகர்ணனும் | त्वं वा | நீயந்தான் |
| इन्द्रजिह्वा वा | இந்திரஜித்தும் | ईदृशी | இப்படிப்பட்டதாகிய |
| निकुम्भः वा | நிகும்பனும் | भारं | போர் மும்ரமாயிருக்க குமிடத்தை |
| मम | எனது | वहेयुः | அடையத்தக்கவர்கள். |

स त्वं बलमतः शीघ्रमादाय परिगृह्य च । विजयायाभिनिर्वाहि यत्र सर्वे वनौकसः ॥८॥

| | | | |
|----------|-----------------|-------------|--|
| अतः | "ஆகையால் | विजयाय च | வெற்றியொழுவதற் |
| सः | அப்படிப்பட்ட | वनौकसः | வானூக்கள் [காகவெ |
| त्वं | நீ | सर्वे | எல்லோரும் |
| शीघ्रं | உடனே | यत्र | { எவ்விடத்திலிருக்கின் றாகவோ அவ்விடத் திற்கு |
| बलं | கொண்டத்தை | | |
| परिगृह्य | திரட்டி | अभिनिर्वाहि | செல்லு. |
| आदाय | அழைத்துவரவோண்டு | | |

निर्याणादेव ते नूनं चपला हरिवाहिनी । नर्दतां राक्षसेन्द्राणां श्रुत्वा नादं द्रविष्यति ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------------|---------------------|
| चपला | "எந்திரபுத்தியில்லாத | राक्षसेन्द्राणां | ராட்சசேந்திரத்தமர்க |
| हरिवाहिनी | குரங்குப்படை | नादं | சத்தத்தை [ஞடைய |
| ते | உனது | श्रुत्वा | கேட்டு |
| निर्याणात् एव | புறப்பாடாகவோ | नूनं | திச்சையமாய் |
| नर्दतां | அட்டவாகஞ்செய்யும் | द्रविष्यति | ஒடினிடும். |

चपला ह्यविनीताश्च चलचिन्ताश्च वानराः । न सहिष्यन्ति ते नादं सिहनादमिव द्विषाः ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|-------------------------|
| वानराः हि | "வானூக்களோ | द्विषाः | யாணிகள் |
| चपलाः | முன்பின் ஆலோசி யாதவர்கள். | सिहनादं | சிக்காதத்தை |
| अविनीताः च | நல்ல சினைகளை பெறாத தவர்கள். | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| चलचिन्ताः च | { ஒன்றில் முற்றிலும் மனஞ்செலுத்தாத வர்கள். | ते | உனது |
| | | नादं | சூரவாதத்தை |
| | | सहिष्यन्ति न | பொறுக்கமாட்டார் கள். |

विद्रुते च बले तस्मिन्नामः सौमित्रिणा सह । अवशस्ते निरालम्बः प्रहस्त वशमेष्यति ॥

| | | | |
|------------|--------------|-----------|------------------------------------|
| प्रहस्त | "பிரகஸ்த! | निरालम्बः | தான் மட்டும் யிஞ்சி யவனாகி |
| तस्मिन् | அந்த | अवशः | எதொன்றையும் செய்ய யமுடியாதவனாய் |
| बले | கைன்யம் | ते | உனது |
| विद्रुते च | ஒடினிட்டதும் | वशं | வசத்தில் |
| रामः | ராமன் | एष्यति | சிக்கிக்கொள்வான். |
| सौमित्रिणा | சைமீட்ரணோடு | | |
| सह | கூட | | |

आपत्संशयिता श्रेयो न तु निःसंशयीकृता । प्रतिलोमानुलोमं वा यदा नो मन्यसे हितम् ॥

| | | | |
|--------------|--|-------------------------|--|
| आपत् | { "கொரிக்கைக்கு மாறாய் நடைபெறு தலென்பது | श्रेयः | இதற்கு மேம்பட்ட தரம் |
| संशयिता | சந்தேகப்பட்டவேண்டி யதாக | हितं | நன்மை பயப்பதரம் |
| न तु | இல்லவேண்டி. | प्रतिलोमानु- लोमं वा | { என் அபிப்பிராயத் திற்கு எதிரிடையாய் |
| निःसंशयीकृता | { சந்தேகத்திற்கிடையில் லாதவாறு உள்ளால் செய்தாளுடிக் ப்பட்டிருக்கிறது. | यत् | எதை |
| नः | நமக்கு | मन्यसे वा | நீ உத்தேசிக்கின் |

நனை P n

रावणेनैवमुक्तस्तु महस्तो बाहिनीपतिः । राक्षसेन्द्रमुवाचेदपसुरेन्द्रमिवोशनाः ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|----------------|---------------|----------------------------|
| रावणेन | ராவணனால் | असुरेन्द्रं | அசுரேந்திரனைப் பார்த்து |
| पुत्रं | மேற்கண்டவாறு | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| उक्तः | சொல்லப்பட்ட | राक्षसेन्द्रं | ராக்ஷஸமன்னனைப் பார்த்து |
| बाहिनीपतिः | சேனாகுபதியாகிய | इदं | பின்வருமாறு |
| महस्तः तु | பிரகஸ்தனும் | उवाच | மொழிந்தான் : |
| उशनाः | சுக்ராசாசியர் | | |

राजन्मन्त्रितपूर्वं नः कुशलैः सह मन्त्रिभिः । विवादश्चापि नो वृत्तः समवेक्ष्य परस्परम् ॥

| | | | |
|-----------|---|----------------|---|
| राजन् | "அரசே! | वृत्तः | ஏற்பட்டது. |
| नः | நமக்குள் | अपि | ஆயினும் |
| परस्परं | ஒருவரோடொருவர் கலந்து | नः | நமது |
| समवेक्ष्य | தீர்க்காலோசனை செய்து | कुशलैः | சமர்ந்தர்களான |
| विवादः च | { (ஒற்றுமைப்பட்டது) இருவரைப்பட்ட அபிப்பிராயத்தான் | मन्त्रिभिः | மந்திரிகளோடு |
| | | सह | கூட |
| | | मन्त्रिपूर्वम् | { இதைக்கு முந்தியே இவ் விஷயம் தீர்மானிக்க ப்பட்டிருக்கிறது. |

प्रदाने न तु सीतायाः श्रेयो व्यवसितं मया । अपदाने पुनर्युद्धं दृष्टमेतत्तथैव नः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------|--|----------------|---------------------------------------|
| सीतायाः | "சீதையை | व्यवसितं | கொள்ளப்பட்டிருக்க கிறது. |
| प्रक्षी | தீர்ப்பிக்கொடுத்த விடும் விஷயத்தில் | अप्रदाने पुनः | கொடுக்காத விஷயத் அப்படியே [தினும்] |
| श्रेयः तु | நன்மை ஒன்றும் | नः | நமது |
| न | இல்லையென | एतत् युद्धं एव | இந்தப் போர்தான் |
| मया | என்றால் | दृष्टम् | நிச்சயிக்கப்பட்டது. |

सोऽहं दानैश्च मानैश्च सततं पूजितस्त्वया । सान्त्वयैश्च विविधैः काले किं न कुर्यां प्रियं तव ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|-------------------|
| त्वया | "தேவரீரால் | பூஜித: | கௌரவிக்கப்பட்ட |
| सततं | எக்காவத்திலும் | मः | அந்த |
| दानैः च | கொடைகளாலும் | अहं | நான் |
| मानैः च | மரியாதைகளாலும் | तव | தேவரீருக்கு |
| काले | ஏற்றகாலத்தில் | प्रियं | இஷ்டமான |
| विविधैः | பல | किं च | எதைத்தான் |
| सान्त्वैः च | தேறுதல்களாலும் | न कुर्याम् | செய்யாதிருப்பேன்? |

न हि मे जीवितं रक्ष्यं पुत्रदारधनानि वा । त्वं पश्य मां जुहुपन्तं स्वदयं जीवितं युधि ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-----------|----------------------------------|
| मे | "அடியேனுக்கு | स्वदयं | தேவரீர் பொருட்டு |
| जीवितं | உயிர் | जीवितं हि | உயிரையும் |
| रक्ष्यं न | ஒரு பொருளன்று, | जुहुपन्तं | அர்ப்பணஞ்செய்யத் துணர் தவறாய் |
| पुत्रदारधनानि | மக்களும், மனைவியும், தனமும் | मां | என்னை |
| वा | அப்படியே பொரு ளன்று. | त्वं | தேவரீர் |
| युधि | போரில் | पश्य | திருவுளத்தில் பற்று வீராக." |

एवमुक्त्वा तु भर्तारं रावणं वाहिनीपतिः । उवाचेदं वराध्यक्षान्पहस्तः पुरतः स्थितान् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------------|------------------------------|
| वाहिनीपतिः | சேனாபதியாகிய | पुरतः | சந்நிதிகில் |
| पहस्तः | பிரகஸ்தன் | स्थितान् | காத்தாநிற்கின்ற |
| भर्तारं | எஜமானராகிய | वराध्यक्षान् | கௌரத்தலைவர்களைப் பார்த்து |
| रावणं | ராவணனிடம் | इदं | பின்வருமாறு |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | उवाच | கட்டளைபிட்டான் : |
| उक्त्वा तु | கிண்ணப்பிடித்துகொண்டு | | |

समानयत मे शीघ्रं राक्षसानां महद्वचम् ॥ १९ ॥

| | | | |
|------------|--------------|--------|-------------------|
| मे | "எனது | वचं | பல்கலை |
| राक्षसानां | அரக்கர்களின் | शीघ्रं | சுடுதியில் |
| महत् | பெரும் | समानयत | திரட்டிகொடுங்கள். |

महाणशतवेगेन हतानां च रणाजिरे । अथ तृप्यन्तु मांसादाः पक्षिणः काननौकसाम् ॥

| | | | |
|-------------|--|-----------|---------------------------------------|
| रणाजिरे | "போர்க்களத்தில் | हतानां | கொன்று வீழ்த்தப் பட்ட |
| पक्षिणः | பறவைகள் | काननौकसां | குரங்குகளின் |
| अथ च | இப்பொழுதே | मांसादाः | மயிசுக்களைக் கொத் தித்தின்பவைகளாய் |
| महाणशतवेगेन | { எனது நூற்றுக்கணக் கான பாணங்களின் கொடத்தால் | तृप्यन्तु | கலிக்கட்டும் " |

इत्युक्तास्ते महस्तेन बलाध्यक्षाः कृतवराः । बलमुयोजयामासुस्तस्मिन्नाक्षसमन्दिरे ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|------------------------|
| महस्तेन | பிரகஸ்தனை | कृतवराः | பரபசப்புற்றவர்களாய் |
| इति | மேற்கண்டவண்ணம் | तस्मिन् | அந்த |
| उक्ताः | கூறப்பட்ட | राक्षसमन्दिरे | ராட்சஸமன்களில் |
| ते | அந்த | बलं | சேனையை |
| बलाध्यक्षाः | சேனைத்தலைவர்கள் | उयोजयामासुः | சுத்தப்படுத்தினார்கள். |

सा ध्रुव मुहूर्तेन तिग्मनानाविधायुधैः । लङ्का राक्षसवीरैस्तैर्गजैरिव समाकुटा ॥ २२ ॥

| | | | |
|-------------------------|-------------------------------------|-------------|--------------------------|
| सा | அந்த | तैः | அந்த |
| लङ्का | லங்கை | राक्षसवीरैः | அரக்கவீரர்களால் |
| तिग्मनाना- विधायुधैः | கொடிய பலவகை ஆயுதங்களைக் கொண்ட | मुहूर्तेन | சிறிதுபொழுதில் |
| गजैः इव | யானைகளை நிகர்த்த | समाकुटा | எக்கும் பரப்புண்ட தரக |
| | | ध्रुव | ஆயிற்று. |

हुताशनं तर्पयतां ब्राह्मणांश्च नमस्यताम् । आश्वगन्धपतिवहः सुरभिर्पास्तो वनौ ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|----------------|--------------------------|
| मास्तः च | காற்றும் | तर्पयतां | தேறாமஞ்செய்பவர் களின் |
| ब्राह्मणान् | வேதமுணர்ந்தவர் களை | आश्वगन्धपतिवहः | நெய்மணம்கொண்டு |
| नमस्यतां | நமஸ்கரித்து | सुरभिः | கமழ்சின்றதாய் |
| हुताशनं | அக்னியில் | वनौ | விசிற்று. |

स्रजश्च विविधाकारा जग्मुस्त्वभिमन्त्रिताः । सद्ग्रामसज्जाः संहृष्टा धारयन्वाक्षसास्तदा ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-------------|-----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | विविधाकाराः | பலவகை |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | स्रजः | மாலைகளை |
| सद्ग्रामसज्जाः | போருக்குத்தயாராகி | जग्मुः | எடுத்திக்கொண் டார்கள். |
| संहृष्टाः तु | உதனா ஹங்கொண் டவர்களாய் | धारयन् च | ஆணிக் தும் கொண் டார்கள். |
| अभिमन्त्रिताः | வெற்றியக்திரம் ஓகப்பெற்ற | | |

सधनुष्काः क्वचिनो वेगादाप्लुत्य राक्षसाः । रावणं प्रेक्ष्य राजानं महस्ते पर्यवारयन् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|------------|--------------------------|
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | आप्लुत्य | பாய்த்துசென்று |
| सधनुष्काः | விக்கைக் கைபினைத்தி யவர்களாய் | रावणं | ராவண |
| क्वचिनः | கவசம் தரித்தவர் களாய் | राजानं | மன்னனை |
| वेगात् | வேகமாய் | प्रेक्ष्य | கண்டுகொண்டு |
| | | महस्ते | பிரகஸ்தனை |
| | | पर्यवारयन् | முற்றி வலிக்குகினார்கள். |

अथामन्त्र्य च राजानं भेरीमाहृत्य भैरवाम् । आरुरोह रथं दिव्यं महस्तः सज्जकल्पितम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|---------------------|
| प्रहसः | பிரகஸ்தன் | आहृत्य | அஹ்ரூத்ய முழக்கிக் |
| अथ | அப்பொழுது | | கொண்டு |
| राजानं | மன்னலிடம் | सज्जकल्पितं | சித்தமாய்க் கொண்டு |
| आमन्त्र्य च | கிண்டபெற்றுக் | | வந்து சிறுத்தப்பட்ட |
| | கொண்டு | दिव्यं | சிறந்த |
| भैरवां | பயங்கரமான | रथं | ரதத்தில் |
| भेरीं | பேர்முரசை | आरुरोह | ஏறினான். |

हयैर्महाजवैर्युक्तं सम्यक्भूतसुसंयतम् । महाजलदनिर्घोषं साक्षाच्चन्द्रार्कपास्वरम् ॥ २७ ॥

उरगध्वजदुर्धर्षं सुवरुथं स्वपस्करम् । सुवर्गजालसंयुक्तं महसन्तपिव श्रिया ॥ २८ ॥

ततस्तं रथमास्थाय रावणापितशासनः । लङ्काया निययौ तूर्णं बलेन महता ह्वः ॥ २९ ॥

| | | | |
|-----------------------|--------------------|-------------------|---------------------|
| रावणापित-) | ராவணனுள் உத்திரவ | स्वपस्करं | அழகிய சக்கிரங்க |
| शासनः) | ளிக்கப்பெற்ற அவன் | | ஞாலமடும் |
| ततः | அப்பொழுது | सुवर्गजालसंयुक्तं | பொன்சாளரங்கள் |
| महाजवैः | மிக வேகம் படைத்த | | கொண்டதும் |
| हयैः | குதிரைகளால் | श्रिया | சாகதியால் |
| युक्तं | பூட்டப்பெற்றதும் | महसन्तपिव | சிரிக்கிறது போன்றது |
| सम्यक्भूतसुसंयुतं | செந்த பாகர்களால் | | மான |
| | ஒட்டப்பெற்றதும் | तं | அந்த |
| महाजलदनिर्घोषं | பெரும் மோகவொலி | रथं | ரதத்தில் |
| | கொண்டதும் | आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு |
| साक्षाच्चन्द्रार्क-) | சாக்ஷா சந்திரசூர்ய | महता | பெரும் |
| भास्वरं) | ஒளிக்கொண்டதும் | बलेन | படையால் |
| | | ह्वः | சூழப்பெற்றவனாய் |
| उरगध्वजदुर्धर्षं | { அணுகமுடியாத | लङ्कायाः | லங்கையினின்று |
| | { அரவக்கொடி கட்ட | तूर्णं | கிரகவில் |
| | { டப்பெற்றதும் | निययौ | வேளிப்புறப்பட்ட |
| सुवरुथं | அழகிய மேற்கொடிக் | | டரன். |
| | கைகொண்டதும் | | |

ततो हुन्दुभिनिर्घोषः पर्जन्यनिनदोपमः ।

शुभुवे शङ्खशब्दश्च प्रयाते वाहिनीपती

| | |
|-----------------|----------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| वाहिनीपती | செனதிபதி |
| प्रयाते | புறப்பட்டவனின் |
| पर्जन्यनिनदोपमः | மேகமுழக்கத்தை |
| | சிகர்க்கு |

हुन्दुभिनिर्घोषः

பேர்முரசமுழக்க

மும்.

वादित्राणां च निनदः पूरयन्निव सागरम् ॥

॥ ३१ ॥

| | |
|-------------|-----------------|
| सागरं ह्व | கடலையும் |
| पूरयन् | கொந்தளிக்கச் |
| वादित्राणां | வாதிய [செய்யும் |
| निनदः | ஒசையும் |
| शङ्खशब्दः च | சக்கவொலியும் |
| च | ஆகிய எல்லாமும் |
| शुभुवे | கேட்கப்பெற்றது. |

निनदन्तः खरान्योरात्रक्षसा जगुरयतः । भीमरूपा महाकायाः प्रहस्तस्य पुरःसराः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|---------------|-----------------------|
| प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனது | राक्षसाः | அரக்கர்கள் |
| पुरःसराः | அணுகாரர்களும் | घोरान् | பயங்கரமான |
| भीमरूपाः | பயங்கரமான உருவங் கொண்டவர்களும் | खरान् | கொலங்களை |
| महा कायाः | பேருடல்பெற்றவர் களுபரன் | निनदन्तः | இட்டுக்கொண்டு |
| | | अप्रतः जग्मुः | முத்திச் சென்றார்கள். |

नरान्तकः कुम्भहनुर्महानादः समुन्नतः । प्रहस्तसचिवा ह्ये निर्ययुः परिवार्य तम् ॥३३॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|----------|-----------------|
| प्रहस्तसचिवाः | பிரகஸ்தனது மகதிரி மார்தளாகிய | महानादः | மஹானாதனும் |
| एते | இந்த | समुन्नतः | ஸமுன்னதனும் |
| नरान्तकः | நராகதகனும் | त हि | அவனிடேய |
| कुम्भहनुः | கும்பஹனுவும் | परिवार्य | சூழ்ந்துகொண்டு |
| | | निर्ययुः | கிளம்பினார்கள். |

व्यूढेनैव सुघोरेण पूर्वद्वारात्स निर्ययौ । गजयूथनिकाशेन बलेन महता वृतः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|---------------|--------------------------|
| सः | அவன் | महता एव | பெரியதுமான |
| सुघोरेण | மிக்க பயங்கரமான கும் | बलेन | சேனையால் |
| व्यूढेन | அணிலகுத்தபடியே இருக்கிறதன் | वृतः | சூழப்பட்டவனாய் |
| गजयूथनिकाशेन | யானைக்கூட்டத்தை சிகர்க்கதும் | पूर्वद्वारात् | கிழக்குவாயில் வழியாய் |
| | | निर्ययौ | வெளிப்புறப்பட்டான். |

सागरप्रतिभीषेन वृत्स्तेन बलेन सः । प्रहस्तो निर्ययौ तूर्णं कालान्तकयमोपमः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|---------|-----------------|
| कालान्तकयमोपमः | பிரளயகாலத்து யமனை சிகர்த்த | तेन | அந்த |
| सः प्रहस्तः | அந்த பிரகஸ்தன் | बलेन | சென்யத்தால் |
| सागरप्रतिभीषेन | ஸமுத்தரவென்றத தை சிகர்த்த | वृतः | சூழப்பெற்றவனாய் |
| | | तूर्णं | வினாந்து |
| | | निर्ययौ | சென்றான். |

तस्य निर्याणयोषेण राक्षसानां च नर्दताम् । लङ्कायां सर्वभूतानि विनेदुर्विकृतैः स्वरैः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|------------|-----------------|
| तस्य | அவனது | लङ्कायां | இலங்கையில் |
| निर्याणयोषेण | கொலிப்புறப்படும் கொலத்தால் | सर्वभूतानि | பிராணிகளெல்லாம் |
| राक्षसानां | அரக்கர்கள் | विकृतैः | விகாரமான |
| नर्दतां च | காஜிக்கையில் | स्वरैः | சூல்கொண்டு |
| | | विनेदुः | கட்சலிட்டன. |

व्यूभ्रमाकाशमाद्दिश्य मांसशोणितभोजनाः । मण्डनान्यपसव्यानि स्वगाश्चकू रथे प्रति ॥

| | | | |
|----------------------|---|---------------|-------------------|
| मांसशोणित- भोजनाः | } மாங்கத்தையும் சக் ததையும் புசிக்கும் | आकाशं आदिश्य | ஆகாசத்தில் பறந்து |
| खगाः | | रथे प्रति | ரதத்தைசுசுற்றி |
| व्यूभ्रं | பறவைகள் | अपसव्यानि | அப்பசாதகவிணையாய் |
| | நிர்மலமான | मण्डनानि चकूः | வட்டமிட்டன. |

वपन्त्यः पावकज्वालाः शिवा घोरं ववाशिरे । अन्तरिक्षात्पपातोल्का वायुश्च परुषो ववौ ॥

शिवा: शरीकந்
 पावकज्वाला: அர்ஷிஜ்வாலைகளை
 वपन्त्यः வக்கிங்கொண்டு
 घोरं பயங்கரமாக
 ववाशिरे வளைவிட்டன.

अन्तरिक्षात् ஆகாயத்திலிருந்து
 उल्का வால்சூதத்திரம்
 पपात விழுந்தது.
 वायु: व वायும்
 परुष: ववौ கொடியதாய் விசிற்று.

अन्योन्यमभिसंरब्धा ग्रहाश्च न चकाशिरे

॥ ३९ ॥

ग्रहा: च நலக்கிரகங்களும்
 अन्योन्यं ஒன்றுடனொன்று

अभिसंरब्धा: வந்தித்துக்கொண்டு
 चकाशिरे न துன்பத்திருந்தன.

मैशाश्च खरनिर्घोषा रथस्योपरि रक्षसः । ववुषु रुधिरं चास्य सिपिचुश्च पुरःसरान् ॥४०॥

मेवा: च மேகங்களும்
 खरनिर्घोषा: கடுகாவாய் காழிக்
 अस्य தீக்க [காக்கொண்டு
 रक्षसः ஆரக்களது
 रथस्य उपरि ரதத்தின்பேல்

रुधिरं च ரத்தக்கடையும்
 ववुषु: பொழிந்தன.
 पुरःसरान् च முக்சென்றவர்
 कौश्यायुम् கையும
 सिपिचु: நனைத்தன.

केतुमूर्धनि गृध्रोऽस्य निर्लीनो दक्षिणासुखः । तुदह्नुभयतः पार्थ्वं समग्रामहरत्पभाम् ॥४१॥

अस्य இவனது
 केतुमूर्धनि கொடி தலையின்
 गृध्रः குரு கழுகு
 दक्षिणासुखः தெற்கு நோக்கியதாய்
 निर्लीनः உட்கார்ந்துகொண்டு

उ-भयतः पार्थ्वं இருபக்கத்தையும்
 तुदह्नु அலகாக்கொத்தி
 पार्थ्वं அந்தை
 समग्रं முற்றிலும்
 अहरत् கழித்தது.

सारथेर्बहुशशास्य संग्रामपवगाहतः । प्रतोदो न्यपतद्दस्तारसूतस्य हयसादिनः ॥ ४२ ॥

संग्रामं போருக்கு
 भवगाहतः செல்லும்
 अस्य இவனது
 सारथे: { எப்பொழுதும் கூட
 செவ்விரும்பும் கூட்ட
 னியும்

हयसादिनः च குதிகாரைப் செலுத்
 தவதில் வல்லவனு
 सूतस्य சாரதிரினது [மார
 हसात् காலினின்னு
 प्रथेव: சகக்கு
 बहुश: பலமுறை
 न्यपतत् சூழிக்கிழுந்தது.

निर्याणर्थाश्च याऽस्वार्संज्ञास्वरा वसुदुर्लभा । सा ननाश मुहूर्तेन समे च स्वखिता हयाः ॥

अस्य இவனது
 या निर्याणरी: எந்த பிரயாணக்
 கோலானது
 भास्वरा திருபொருத்தியதாக
 वसुदुर्लभा च { மலந்தேவதைகளும்
 சூர விடைக்காரியு
 भासीत् விளக்கியதோ, [காயும்

सा அது
 मुहूर्तेन செவ்வொழுதினே
 ननाश சிந்தனைதது.
 हया: குதிகாரகள்
 समे च சமமான பிரதேசத்
 தினும்
 स्वखिता: இடதிலிருந்தன.

प्रहस्तं त्वभिनिर्यान्तं प्रख्यातबलपौरुषम् । युधि नानाप्रहरणा कपिसेनाऽभ्यवर्तत ॥४४॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|--------------------------------------|
| प्रख्यातबलपौरुषं | { பெயர் பெற்ற ஆற்றலை யும் ஆண்மைமையையும் உடையவனும் } | क पसेना | காபிசேனா |
| | | नानाप्रहरणा | பலவகைப் போர்க்களஞ் விசுவநாடையதரய் |
| अभिनिर्यान्तं तु | எதிர்தேர்ச்சிவருகிறவ | युधि | போளில் |
| प्रहस्तं | பிரகஸ்தனை [ஊமரன | अभ्यवर्तत | எதிர்த்துநின்றது. |

अथ घोषः सुतुमुल्लो हरीणा सपजायत । वृक्षानारुजतां चैव सुवीराण्युहतां शिलाः ॥४५॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|-----------------------------|
| अथ | இப்பொழுது | अगृहतां पव | பெயர்க்கின்றுவர்களஞ் பரண |
| वृक्षान् | மரக்களை | हरीणां | வானரர்களுக்கடைய |
| आरुजतां च | பிடுக்குகின்றவர்க | सुतुमुल्लः | மிகக் குழப்பமான |
| सुवीः | பெரும் [எனம் | घोषः सपजायत | சத்தம் உண்டாபிற்று. |
| शिलाः | பாறைகளை | | |

नदतां राक्षसानां च वानराणां च गर्जताम् । उभे प्रमुदिते सैन्ये रक्षोगणवर्नोकसाम् ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------|------------------------------|
| नदतां | அரக்கர்கள் | उभे प्रमुदिते | ரட்சுஸ்களும், வான |
| राक्षसानां | சப்திக்கைவரினும் | रक्षोगण- | ரர்கள் இவர்களுக்கடைய |
| नदतां च | வானரர்கள் | वर्नोकसां } | இரண்டு சேனைகளும் |
| वानराणां | கர்ஜிக்கைவரினும் | उभे सैन्ये | மிகச் சந்தோஷத்துடன் இருந்தன. |
| गर्जतां च | | प्रमुदिते | |

पेगितानां समर्थानामन्योन्यवधकाङ्क्षणाम् । परस्परं चाहयतां निनादः श्रूयते महान् ॥

| | | | |
|----------------|---|----------|--|
| पेगितानां | பரபரப்புடன் இருந்தவர்களும், | परस्परं | ஒருவரை ஒருவர் (வலுவில் போருக்கு) அழைக்கின்றவர்கள ளுக்கடைய |
| समर्थानां | சமர்த்தயசாலிகளும், | आह्वयतां | சத்தமானது பெரியதாய் |
| अन्यो वध- | ஒருவரை ஒருவர் வதைப்பதில் அவராக கொண்டவர்களுமான | निनादः | கேட்டது. |
| काङ्क्षणां च } | | महान् | |
| | | श्रूयते | |

ततः प्रहस्तः कपिराजवाहिर्नमभिपतस्थे विजयाय दुर्मतिः ।

विद्वद्वेगां च दिवेश तां चम् यथा हृमृषुः शलभो विभावसुम् ॥ ४८ ॥

| | | | |
|----------------|---|----------|------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | तां | அந்த |
| दुर्मतिः | மதிசெட்ட | चम् च | சேனையில் |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன் | हृमृषुः | சாவுசெட்டியவனுடைய |
| कपिराजवाहिर्नी | சகீவனது சேனையை | शलभः | கிட்டில் பூச்சி [அவன் |
| विजयाय | வெற்றிபெறாமெ தைக்கருதி | विभावसुं | கிளக்கில் |
| अङ्गिप्रस्थो | எதிர்த்துச்சென்றான். | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| विद्वद्वेगां | மேன்பேல் உதவாகம் அதிகரித்துகிளக்கும் | दिवेश | புகுந்தான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥

अष्टपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தெட்டாவது ஸர்க்கம். || 54 ||

प्रहस्तवधः—பிரஹஸ்த வதம்.

ततः प्रहस्तं निर्यान्तं दृष्ट्वा भीमपराक्रमम् । उवाच सस्मितं रामो विभीषणपरिन्दमः ॥१॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | निर्यान्तं | வந்துகொண்டிருக்க |
| अरिन्दमः | சத்ருவர் ஹாராகரா | प्रहस्तं | பிரகஸ்தனை [கும் |
| | விய | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | विभीषणं | விபீஷணரைநோக்கி |
| भीमपराक्रमं | மிகமுயற்சியுடைய | सस्मितं | புன்னகையோடு |
| | வனாய் | उवाच | பின்வருமாறு |
| | | | வினாவினார். |

क एष सुमहाकायीं बलेन महता वृतः । आचक्ष्व मे महाबाहो वीर्यवन्तं निशाचरम् ॥२॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|------------------|
| महाबाहो | " மகாபாகுவிவ ! | एषः | இவன் |
| सुमहाकायः | மிகப்பெரிய உடலு | कः | யார் ? |
| | டையவனாயும் | वीर्यवन्तं | வீர்பயானாய் |
| महता | பெரும் | | விளங்கும் |
| बलेन | கைவலத்தால் | निशाचरं | அரக்கனைப்பற்றி |
| वृतः | குழப்பட்டவனாயிருக்க | मे | எனக்கு |
| | கும் | आचक्ष्व | விளக்க விளம்பு." |

राघवस्य वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच विभीषणः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------|--------------|------------|----------------|
| विभीषणः | விபீஷணர் | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| राघवस्य | ஸ்ரீராமருடைய | प्रत्युवाच | பின்வருமாறு |
| वचः | வினாவை | | பதிலுரைத்தார். |

एष सेनापतिस्तस्य प्रहस्तो नाम राक्षसः । लङ्कायां राक्षसेन्द्रस्य त्रिभागवत् वृतः ॥४॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|----------|--------------|
| लङ्कायां | " இலங்கையில் | सेनापतिः | சேனாபதியாகிய |
| तस्य | அந்த | प्रहस्तः | பிரகஸ்தனைன்ற |
| राक्षसेन्द्रस्य | ராக்கஸமன்னனது | नाम | பெயர்பெற்ற |
| त्रिभागवत् | தேசினையில் மூன்றிலொ | राक्षसः | அரக்கன் |
| | ருபாகம் கூட இருக்க | एषः | இவன். |
| | கப்பெற்ற | | |

वीर्यवानस्त्रविच्छूरः परयातश्च पराक्रमे ॥ ५ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|----------|-----------------|
| वीर्यवान् | " வெகு ஆற்றலுடையவன் ; | पराक्रमे | ஆண்மையில் |
| अस्त्रविह | ஆஸ்திரங்களில் | शूरः च | வெகு சூரனை |
| | தொந்தரங்கள் ; | परयातः | பெயர்பெற்றவன்." |

ततः प्रहस्तं निर्पानं भीमं भीमपराक्रमम् । गर्जनं सुपहाकायं राक्षसैरभिसंघ्नम् ॥ ६ ॥
ददर्श महती सेना वानराणां बलीयसाम् । अतिसंजातरोषाणां प्रहस्तमभिगर्जताम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|-------------|------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | भीमपराक्रमं | மிகப் பராக்ரமசாலியும் |
| बलीयसां | பலவலிகளும் | सुमहाकायं | மிகப் பெரிய உடலுடையவனும், |
| अतिसंजातरोषाणां | அதிக ஆகத்திரத்தான் இருப்பவர்களுடைய | राक्षसैः | ஆரக்கர்களுடைய |
| प्रहस्तं | பிரகஸ்தனை கோக்கி | अभसंघ्नं | குழப்பப்பட்டு நுக்கிற வனுமான |
| अभिगर्जतां | ஆரவாரம் செய்கின்ற வர்களுமான | प्रहतां | பிரகஸ்தனை |
| वानराणां | வானரர்களுடைய | गर्जन्तं | அட்டகாரஞ்செய்து கொண்டு |
| महती सेना | பெரும் சேனை | निघ्नन्तं | வந்துகொண்டிருக்கிற |
| भीमं | பயங்கரமான தேரற்ற முடையவனும் | दरशी | கவனித்தனும். [வந்து] |

खड्गशक्त्यृष्टिवाणाश्च शूयानि सुसलानि च । गदाश्च परिघाः प्रासा विविधाश्च परश्वधाः॥
धनुषि च विचित्राणि राक्षसानां जवैषणाम् । प्रहृष्टान्यशमन्त वानरानभिधावताम् ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|-------------|-------------------------|
| खड्गशक्त्यृष्टि- वाणाः च | கத்திகளும், வேல்களும், இருபடிகளும், குருள்ள கத்திகளும், பாணங்களும், | पराश्रवाः च | கோடரிகளும், |
| शूयानि सुसलानि च | சூலங்களும், உலங்கள்களும், | विचित्राणि | பலவகை |
| गदाः च | கடைகளும், | धनुषे च | விடிகளும் |
| परिघाः | உழலைத்தடிகளும், | जवैषिणां | ஜயத்தைக்கேட்காரி |
| प्रासाः | சட்டிகளும், | वानरान् | வானரர்களை |
| विविधाः | பலவகை | अभिधावतां | எதிர்த்துவருகின்ற |
| | | राक्षसानां | ஆரக்கர்களுடைய |
| | | प्रहृष्टानि | கையிலெந்தப்பெற்றவைகளாய் |
| | | अशमन्त | விளங்கின. |

जगुहुः पादपांश्चापि पुष्पतान्वानर्पभाः । शिलाश्च विपुला दीर्घा योद्धकामाः पुत्रङ्गवाः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-----------|-----------------------|
| जगुहुः | யோடு உதனாகக் கொண்ட | विपुलाः | பெரியவைகளும் |
| पादपांश्चापि | வாணரோத்தமர் வானரர்கள் [களாகிய | दीर्घाः च | நீண்டவைகளுமான |
| पुष्पतान् | பூத்திருந்த | शिलाः अपि | கற்பாறைகளையும் |
| यानर्पभाः | மரங்களையும் | जगुहुः | எடுத்துக்கொண்டார்கள். |

तेषामन्योन्यमासाद्य संश्रामः सुपहानभूर् । बहुनामदशहृष्टिं च शरहृष्टिं च वर्षताम् ॥११॥

| | | | |
|--------------|--------------|-----------|----------------|
| अशुहृष्टिं च | கல்லையையும் | अन्योन्यं | ஒருவரை யொருவர் |
| शरहृष्टिं च | சரமாரியையும் | आसाद्य | தாக்கி |
| वर्षतां | பொழிக்கின்ற | संश्रामः | போர் |
| तेषां | அந்த | सुपहान् | மிகப்பெரியதாய் |
| बहुनां | பலருக்கும் | अभूत् | உண்டாயிற்று, |

வஹோ ராக்ஸா யுதே வஹ்யானரயுத்யான | வானரா ராக்ஸாஸ்த்யாபி நிஜஹ்நுஹ்வோ வஹ்ந் || 12 ||

| | | | |
|----------------|-----------------------------|--------------|----------------|
| யுதே | பேராரில் | வஹ: வானரா: | பல வானரர்கள் |
| வஹ: | பல | வஹ்ந் | பல |
| ராக்ஸா: | ஆரக்கர்கள் | ராக்ஸாந் அபி | ஆரக்கர்களையும் |
| வஹ்ந் | பல | நிஜஹ்நு: | கொண்டிருக்கள். |
| வானரயுத்யான் ச | வானரகளைத் தலை வர்களையும் | | |

ஸூலீ: ப்ரமத்யிதா: கேசிர்கேசிச்ச ப்ரமாயுதீ: | ப்ரிவீராஹதா: கேசிர்கேசிச்சித்நா: ப்ரஸ்வபீ: ||

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|--------------------------------|
| கேசிர் | சிலர் | ப்ரிவீ: | உழைத்துக்கொள்ள |
| ஸூலீ: | சூலங்களாலும் | அஹதா: | கொல்லப்பட்டவர்கள். |
| கேசிர் | சிலர் | கேசிர் | சிலர் |
| ப்ரமாயுதீ: ச | சுக்காயுதங்களாலும் | ப்ரஸ்வபீ: | பிரட்டார்களால் |
| ப்ரமத்யிதா: | கொல்லப்பட்டவர்கள். | சித்நா: | இவற்றைத் தள்ளப் பட்டவர்கள். |
| கேசிர் | சிலர் | | |

நிஹ்நுஸாஸா: க்ருதா: கேசிர்ஹிதா த்ரணீதலே | விபிஹ்நுஹ்வா: கேசிர்ஹிதாஸந்நிதா: ||

| | | | |
|-----------|---------------------------|---------------|-----------------------------|
| கேசிர் | சிலர் | ஹிதாஸந்நிதா: | பாணியூச்சியால் கட்டுண்டு |
| நிஹ்நுஸா: | முச்சிலவாதவர்களால் | விபிஹ்நுஹ்வா: | மார்பு பிணக்கால் |
| க்ருதா: | செய்யப்பட்டவர் களையும் | த்ரணீதலே | சூழலில் [களையும் |
| கேசிர் | சிலர் | ஹிதா: | விழுந்தவிட்டவர்கள். |

கேசிர்ஹிதாஹ்வா: ஸ்வபீ: ஸ்குரந்த: ப்ரிதா ஹ்வி | வானரா ராக்ஸா: ஸூலீ: ப்ரிவீராஹதாரிதா: ||

| | | | |
|-----------|-------------------------------------|-------------|---------------------------|
| கேசிர் | சிலர் | ப்ரிவீ: | விடையுறக்களால் |
| வானரா: | வானரர்கள் | அஹதாரிதா: ச | குத்தப்பட்டவர் களையும் |
| ராக்ஸா: | ஆரக்கர்களால் | ஸ்குரந்த: | தட்டித்தொண்டு |
| ஸ்வபீ: | கத்திகளால் | ஹ்வி | சூழலில் |
| ஹிதாஹ்வா: | இரண்டு தண்டாக்கப் பட்டவர்களையும் | ப்ரிதா: | விழுந்தவிட்டவர்கள். |
| ஸூலீ: | சூலங்களால் | | |

வானரீஸ்த்யாபி ஸ்குநீ ராக்ஸாஸீ: ஸமந்த: | பாட்பீரிஸ்த்யாபி ஸ்விஸ்தா வஸுதாதலே || 13 ||

| | | | |
|-----------|---------------------------|------------|-----------------------------------|
| ஸ்குநீ: | மிகச் சிறங்கொண்ட | பாட்பீ: ச | மரங்களாலும், |
| வானரீ: ச | வானரர்களாலும் | ரிஸ்த்யாபி | பிணக்கொண்டவர்களும் |
| ஸமந்த: | எல்லாப்பக்கங்களில் ஆம் | வஸுதாதலே | சூழலில் |
| ராக்ஸாஸீ: | ராக்ஸாக்கப்பட்டவர்கள் | ஸ்விஸ்தா: | பிண்டமாக்கித் தள்ளப்பட்டவர்கள் |

वज्रस्पर्शतलैर्हस्तैर्मृष्टिभिश्च हता भृशम् । वेसुः शोणितमास्येभ्यो विशीर्णदशमेक्षणाः॥१७॥

வஜ்ரச்பர்சுதலையீர்ஹஸ்தையீர்மூஸ்திபிஷ்ச ஹதா ப்ரீஸம் । வேசு: ஶோணிதமாஸ்யேப்யோ விஸீர்ணதஸமேக்ஷணா:॥ 17 ॥

வஜ்ரச்பர்சுதலையீர்: { வஜ்ராயுதத்திற்குச் சமமான உறுதி கொண்ட கால்களாலும், ஹஸ்தை: வககளாலும், மூஸ்திபி: ச முஷ்டிகளாலும், ப்ரீஸம் கடுமையாய்

ஹதா: மொத்தப்பட்டவர்களாய்
விஸீர்ண- } பற்களும், கண்களும்,
தஸமேக்ஷணா: } தெறித்து விழுப
பெற்றவர்களாய்
ஆஸ்யேப்ய: வாயினின்றும்
ஷோணித ரத்தத்தை
வேசு: கக்கினர்கள்.

आर्तिस्वनं च स्वनतां सिंहनादं च नर्दताम् । बभूव तुमुलः शब्दो हरीणां रक्षसां युधि ॥

ஆர்திஸ்வனம் ச ஶ்வனதாம் சிஹநாதம் ச நர்ததாம் । பப்ஹூவ துமுல: ஶப்தோ ஹரீணாம் ரக்ஷஸாம் யுதி ॥

யுதி போரில்
ஆர்திஸ்வனம் அமுறைக்குரலை
ஷ்வனதாம் ச இடுபவர்களுடையவும்
சிஹநாதம் சிங்ககரத்தலை,
நர்ததாம் ச இடுபவர்களுடையவு
மான்

ஹரீணாம் வானர்களுடையவும்,
ரக்ஷஸாம் ஆரக்கர்களுடையவும்
ஷப்த: சத்தமான்
துமுல: கலவாமரக
பப்ஹூவ இருந்தது.

वानरा राक्षसाः क्रुद्धा वीरमार्गमनुव्रताः । विवृत्तनयनाः क्रूराश्चक्रुः कर्माण्यभीतवत् ॥

வானரா ராக்ஷஸா: க்ருத்தா வீரமார்பமனுவ்ரதா: । விவ்ருத்தநயனா: க்ரூராஸ்சக்ரு: கர்மாண்யபிதவத் ॥

வானரா: வானர்களும்
ராக்ஷஸா: ஆரக்கர்களும்
க்ருதா: மிகச்சினக்கொண்ட
வர்களாய்
வீரமார்ப வீரர்களின் அனுஷ
டானங்களை

பிவ்ருத்தநயனா: மேற்கொண்டவர்க
க்ரூரா: கண்கள் கழல [ளாய்
கொடிய தோற்ற
முடையவர்களாய்
அபிதவத் அச்சமின்றி
கர்மாணி அபூர்வச்செயல்களை
சக்ரு: செய்தார்கள்.

आर्तिस्वनं च स्वनतां धावतां स्वपतां पथि । उत्थितान् स्वापतो दृष्ट्वा लब्धकामाः पुवङ्गमाः॥

ஆர்திஸ்வனம் ச ஶ்வனதாம் தாவதாம் சுவபதாம் பதி । உத்திதான் சுவபதோ த்ருஸ்த்வா லப்தகாமா: புவங்கமா:॥

புவங்கமா: வானர்கள்
பதி வழியில்
தாவதாம் மேல்விழுந்து தாக்கி
ஆர்திஸ்வனம் பரிதாபமான குரலை
ஷ்வனதாம் இட்டுக்கொண்டு
சுவபதாம் ச படுத்திருந்தவர்
களுக்கும்
சுவபத: படுக்கையினின்று

உத்திதான் எழுந்தவர்களை
த்ருஸ்த்வா பார்த்து
லப்தகாமா: மனோதம் வகக்கூடப்
பெற்றவர்களாய்
பரிதாபமான குரலை
படுக்கைகளை
பதி எடுத்துக்கொண்டு
சுவபதான்களை நோக்கி
புவங்கமா: ஶூடனர்கள்.

नरान्तकः कुम्भहनुर्महानादः समुन्नतः । एते प्रहस्तसचिवाः सर्वे जघ्नुर्बनौकसः ॥२२॥

நரான்தக: கும்பஹனுர்மஹானாத: சமூந்நத: । ஏதே ப்ரஹஸ்தஸசிவா: சர்வே ஜ஘்நுர் பனூகஸ: ॥ 22 ॥

நரான்தக: நரநாதன்,
கும்பஹனு: சும்பஹனு,
மஹானாத: மஹானாதன்,
சமூந்நத: ஶமூந்நதன் என்ற
இந்த

ப்ரஹஸ்தஸசிவா: பிரகஸ்தமந் திரிகள்
சர்வே எல்லோரும்
பனூகஸ: வானர்களை
ஜ஘்நு: புடைத்தார்கள்.

तेषामापततां शीघ्रं निघ्नतां चापि वानरान् । द्विविदो गिरिशृङ्गेण जघानैकं नरान्तकम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------------|------------------|
| द्विविदः | தீவிரிதன் | एकं | தனிமையாயிருந்த |
| आपततां | எதிர்த் தூவந்து | नरान्तकं | நரர்க்களை |
| वानरान् | வானரர்களை | गिरिशृङ्गेण च | மலைச்சிகரமொன்று |
| निघ्नतां | வதைத்த | शीघ्रं | விரைவில் [வேகியே |
| तेषां अपि | அவர்களுக்கும் | जघान | கொன்றான். |

दुर्मुखः पुनस्तथाय कपिः सन्निपुलद्रुमम् । राक्षसं क्षिप्रहस्तस्तु समुन्नतपथोभयत् ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------------|----------------|
| क्षिप्रहस्तः | கைவிரைகம்படைத்த | समुन्नतं | வெழுந் தநென்ற |
| दुर्मुखः | தூர்முகனென்ற | राक्षसं तु | அரக்களையும் |
| कपिः | வானரன் | सन्निपुलद्रुमं | பெரியமரத்துடன் |
| पुनः | தன்காரியமாய் | उभय | எழுந்த |
| | | अपोधयत् | கொன்றான். |

जाम्बवांस्तु सुसंकुदः प्रवृह्य महतीं शिलाम् । पातयामास तेजस्वी महानादस्य वक्षसि ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-------------|---------------------|
| तेजस्वी | தேஜஸ்வியாகும் | शिलां | கற்பாறையை |
| जाम्बवान् | ஜாம்பவான் | प्रवृह्य तु | தூக்கி தன்காரியமாய் |
| सुसंकुदः | மிகச்சினக்கொண்டவ ராகி | महानादस्य | மகானாதனது |
| महतीं | பெரும் | वक्षसि | மார்பில் |
| | | पातयामास | விசி எறிந்தார். |

अथ कुम्भहनुस्तत्र तारेणासाद्य वीर्यवान् । वृक्षेणाभिहतो मूर्ध्नि प्राणान्मंत्याजयद्रणे ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|------------|-----------|--------------------|
| अथ | அப்பொழுது | मूर्ध्नि | தலையில் |
| रणे | போரில் | वृक्षेण | மரமொன்றால் |
| वीर्यवान् | வீர்யவானான | अभिहतः | புடைக்கப்பட்டவனாய் |
| कुम्भहनुः | கும்பஹனு | तत्र | அங்குடத்தில் |
| तारेण | தாரனால் | प्राणान् | உயிரை |
| आसाद्य | தாக்கி | सभ्याजयत् | தூற்த்தான். |

अमृष्यमाणस्तर्कम् प्रहस्तो रथमास्थितः । चकार कदनं घोरं धनुष्याणिर्वनौकसाम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|---------|---------------|
| प्रहस्तः | பிரஹஸ்தன் | वनौकसां | வானரர்களுக்கு |
| तर्कम् | அத்தொழிலை | घोरं | கடுமையான |
| अमृष्यमाणः | அமீய்காதவனாய் | कदनं | நகர்த்தை |
| धनुष्याणिः | விடலுக்கையுமாய் | चकार | செய்தான். |
| रथमास्थितः | ரதத்திலிருந்த வண்ணமே | | |

आवर्ते इव सञ्जज्ञे उभयोः सेनयोस्तदा । क्षुभितस्याप्रमेयस्य सागरस्येव निस्वनः ॥२८॥

| | | | |
|---------|--------------|------------|---------------------|
| तदा | அப்பொழுது | अप्रमेयस्य | அளவுகடந்த |
| उभयोः | இரு | क्षुभितस्य | கலங்கிவிட்ட |
| सेनयोः | சேனிகளின் | सागरस्य | சமுத்திரத்தினுடையது |
| निस्वनः | சத்தமாதது | | |
| आवर्ते: | நீர்ச்சுழல் | इव | போன்றதாகவும் |
| इव | போன்றதாகவும் | सञ्जज्ञे | உண்டாபிற்று. |

महता हि शरीरेण प्रहस्तो युद्धकोविदः । अर्दधामास संकुद्रो वानरान्परमाहवे ॥ २९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|----------------|-------------------------------|
| युद्धकोविदः | யுத்தத்தில் காமர்த்தி யசாலியாகிய | परमाहवे | பெரும் போரில் |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன் | वानरान् | வானரர்களை |
| संकुद्रः | மிகச்சினங்கொண்ட வஞ்சு | महता शरीरेण हि | பெரும் பாணவர்கட்த் தாலேயே, |
| | | अर्दधामास | தன் புதுத்தினான். |

वानराणां शरीरैश्च राक्षसानां च मेदिनी । बभूव निचिता घोरा पतितैरिव पर्वतैः ॥३०॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|------------|----------------|
| मेदिनी | மூடியானது | पतितैः | சரிந்துகிழுந்த |
| वानराणां च | வானரர்களுடையவும் | पर्वतैः इव | மலைகளைப்போலவே |
| राक्षसानां च | ராட்சஸர்களுடைய யவும் | निचिता | திரம்பிவதாய் |
| | | घोरा | பயங்கரமாய் |
| शरीरैः | சரிர்களால் | बभूव | இருந்தது. |

सा मही रुधिरौघेण प्रच्छन्ना संप्रकाशते । सञ्छन्ना माधवे मासि पलाशैरिव पुष्पितैः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-------------|------------------|
| सा | அந்த | माधवे मासि | வைகாசிமாதத்தில் |
| मही | மூடியானது | पुष्पितैः | பூத்த |
| रुधिरौघेण | ரத்தப்பிசுவாறுத் தால் | पलाशैः | பலாசவிருகட்களால் |
| | | सञ्छन्ना इव | முடிண்டதுபோல |
| प्रच्छन्ना | முடிண்டதாய் | संप्रकाशते | விளங்கியது. |

हतवीरौघवमां तु भद्रायुधमहाद्रुमाम् । शोणितौघमहातोयां यमसागरगामिनीम् ॥ ३२ ॥

यकृत्स्नीहमहापङ्कान् विनिकीर्णान्वशैवलाम् । भिन्नकायशिरोर्मानामङ्गावयवशाद्रुमाम् ॥ ३३ ॥

शृङ्गहंसगणाकीर्णा कङ्कुसारससेविताम् । मेदःफेनसमाकीर्णामार्तस्तनितनिस्वनाम् ॥ ३४ ॥

तां कापुरुषदुस्तारां युद्धभूमिष्यीं नदीम् ॥ ३५ ॥

नदीमिव घनापाये हंससारससेविताम् । राक्षसाः कपिसुर्याश्च तेरुस्तां दुस्तारां नदीम् ॥

यथा पद्मरजोध्वस्तां नलिनीं गजयूषयाः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|------------------------------|--|--|---|
| हतवीरौघवर्मा तु | { மாண்ட வீரர்களின் குவியல்களாகிற கரைகளை அடையதும் | मेरुकेन- } समाकीर्णा } | கொழுப்பாகிய றரை களால் நிறையப் பெற்றதும், |
| भद्रायुध- } महाद्रुमं } | { முறிந்துகிடந்த ஆயுதங்களாகிற விருகநங் களை அடையதும், | आत्मनि- } निस्वना } | குற்றுவிராய் தவிப்ப வர்களின் அழுகையே சத்தமாகவுடையதும், |
| शोणितौघ- } महानोयां } | { சத்தப்பெருக்காகிற கீர்ப்பெருக்கையுடையதும், | कापुरुषदुस्तारां | பயங்கரானிகளால் கடத்தற்கரியதும், |
| यमसागर- } गामिनीं } | { யமனாகிற ஸமுத்ரத்தை நோக்கிக்கொண்டிருந்தும், | युद्धभूमि- } सर्वी- } तां- } नदीं- } | யுத்தபூமி யவுமான அந்த நதியில் |
| यङ्गदी- } महापङ्कां } | { யகுருத், யிளிறுமென்ற ஹிருதயத்தின் இரு புறங்களிலுமுள்ள தகைகளைச் சேருக உடையதும், | राक्षसाः- } घनापाव- } हंसमारस- } सेवितां } | அரக்கர்கள் மழைகாலமுடிவில் அன்னங்களும் அன்றில்களும் விளையாடப்பெற்ற |
| विनिकीर्णान्त- } शैवलां } | { சிதறிக்கிடக்கும் நரம்புகளை பாசியாக உடையதும், | नदीं- } इव- } | நதியில் எவ்வண்ணமோ |
| भिक्षकाय- } शिरोमीनां } | { சிதறிக்கிடக்கும் உடல்களையும், தலைகளையும் மீன்களாகவுடையதும், | तेरुः- } कपिसुख्याः- } गजयूथपाः- } | நீர்தினூர்கள், வானரத்தலைவர்கள் யானையரசுகள் |
| अङ्गावयव- } शाङ्खान् } | { உடல்களினுறப்புக்களை புற்களாக உடையதும், | पद्मरजोध्वस्तान् | தாமரைப்பூந்தாதுகளால் நிரம்பிய |
| गृध्रहंस- } गणाकीर्णां } | { கழுகுகளாகிற அன்னப்பறவைக்கூட்டங்களால் நிறைந்ததும், | नखिनीं- } यथा- } दुस्तारां- } तां- } नदीं- } व- } | தாமரை ஓடையில் எவ்வாறோ அவ்வாறே கடத்தற்கரிய அந்த நதியில் அப்படியே |
| कङ्कसारस- } सेवितां } | { பருந்துகளாகிற அன்றில்களால் நிறையப் பெற்றதும் | | நீர்தினூர்கள். |

ततः सृजन्तं बाणौघान्वहस्तं स्यन्दने स्थितम् । ददर्श तरसा नीलो विनिघ्नन्तं प्लवङ्गमान् ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|-------------|----------------|
| नीलः | நீலன் | बाणौघान् | பானவழங்க்களை |
| ततः | அப்பொழுது | सृजन्तं | பொழிந்துகொண்டு |
| अहस्तं | பிரகஸ்தனை | प्लवङ्गमान् | வானரகளை |
| स्यन्दने स्थितं | சத்தில் இருந்து | विनिघ्नन्तं | வதைக்கின்றவனாக |
| तरसा | ஆற்றலால் [கொண்டு] | ददर्श | கவனித்தான். |

उद्धत इव वायुः खे महद्भ्रवलं बलात् । समीक्ष्याभिद्रुतं युद्धे प्रहस्तो बाहिनीपतिः ॥ ३९ ॥

रथेनादित्यवर्णेन नीलमेवाभिद्रुवे

॥ ४० ॥

| | |
|-------------|---------------------|
| बाहिनीपतिः | சேனாபதியாகிய |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன் |
| खे | ஆகாசத்தில் |
| उद्धतः | புயல் |
| वायुः | காற்று |
| महत् भ्रवलं | பெரும் மேகமண்டலத்தை |
| इव | எப்படியோ அப்படியே |
| युद्धे | போரில் |

| | |
|--------------|---------------------------|
| बलात् | வலுக்கொண்டு |
| अभिद्रुतं | எதிர்த்துவரும் |
| नीलं एव | நீலையே |
| समीक्ष्य | பார்ந்து |
| आदित्यवर्णेन | சூரியனைப்போன்ற நிறமுள்ள |
| रथेन | ரதத்தினிருந்தபடியே |
| अभिद्रुवुवे | எதிர்த்துக்கொண்டுவந்தான். |

स धनुर्धन्विनां श्रेष्ठो विकृष्य परमाहवे । नीलाय व्यसृजद्वाणान्प्रहस्तो बाहिनीपतिः ॥

| | |
|------------|----------------|
| परमाहवे | பெரும்போரில் |
| बाहिनीपतिः | சேனைத்தலைவனும் |
| धन्विनां | வில்லாளிகளும் |
| श्रेष्ठः | சிறந்தவனுமான |
| सः | அந்த |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன், |

| | |
|----------|-------------------|
| धनुः | வில்லை |
| विकृष्य | காணொற்றி |
| नीलाय | நீலனைக்குறிவைத்து |
| वाणान् | கிளைகளை |
| व्यसृजत् | விடுத்தான். |

ते प्राप्य विशिखा नीलं विनिर्भिद्य समाहिताः । महीं जग्मुर्पहावेगा रुषिता इव पन्नगाः ॥

| | |
|----------|-----------------|
| ते | அந்த |
| विशिखाः | பாணங்கள் |
| समाहिताः | ஒன்றுசேர்ந்து |
| महावेगाः | மிக வேகக்கொண்டு |
| नीलं | நீலனை |
| प्राप्य | அடைந்து |

| | |
|-------------|-----------------|
| विनिर्भिद्य | ஊடுருவிக்கொண்டு |
| रुषिताः | சினக்கொண்ட |
| पन्नगाः | சர்ப்பங்கள் |
| इव | போலவே |
| महीं | பூமிக்குள் |
| जग्मुः | சென்றன. |

नीलः शरैरभिहतो निशितैर्ज्वलनोपमैः । स तं परमदुर्धर्मापतन्तं महाकपिः ॥ ४३ ॥

प्रहस्तं ताडयामास वृक्षमुत्पाद्य वीर्यवान्

॥ ४४ ॥

| | |
|------------|---------------------------|
| महाकपिः | வானரர்களுள் முக்யனும் |
| वीर्यवान् | வீரவலானவன் |
| सः | அந்த |
| नीलः | நீலன் |
| निशितैः | கடர்நனவகளுக்கும் |
| ज्वलनोपमैः | அக்னியை நிகர்த்த னவகளுமான |
| शरैः | பாணங்களால் |

| | |
|--------------|--------------------------|
| अभिहतः | அடியுண்டவனாய் |
| परमदुर्धर्मे | செல்லவதற்கு கஷ்டமானவனும் |
| आपतन्तं | எதிர்த்துவருகின்ற |
| सं | அந்த [வனுமான |
| प्रहस्तं | பிரகஸ்தனை |
| वृक्षं | மரமொன்றை |
| उत्पाद्य | பிடுக்கி |
| ताडयामास | புடைத்தான். |

स तेनाभिहतः कुद्धो नद्व्राक्षसपुङ्गवः । वर्षे शश्वर्षाणि पुवङ्गानां चमूपतौ ॥ ४५ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|------------|--------------------|
| तेन | அஃயபஃசா | नदन् | காஜி க்கின் நவனாய் |
| अभिहतः | அஃயபஃசாண்டவனாகிய | पुवङ्गानां | வான வர்க்களின் |
| सः | அந்த | चमूपतौ | சேனாபதியின் மீது |
| राक्षसपुङ्गवः | ராட்சசபுணா தீதமன் | शश्वर्षाणि | சசுவ மரிகளை |
| कुद्धः | கொண்டுகொண்ட | वर्षे | பொழிந்தான். |

तस्य वाणगणान्घोरान्ராक्षसस्य महाबलः । अपारयन्वारयितुं प्रत्यष्टुहान्निर्मीलितः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|-------------------------|
| महाबलः | மகா பலா ராஷியாகும் | वारयितुं | தடுப்பதற்கு |
| तस्य | அந்த [அவன் | अपारयन् | முடியாதவனாய் |
| राक्षसस्य | ராட்சசனானது | निर्मीलितः | கண்களை மூடிக்கொண்டவனாய் |
| घोरान् | கொடிய | प्रत्यष्टुहान् | எதிர்த்துக்கொண்டான். |
| वाणगणान् | வானவர்களை | | |

यथैव गोवृषो वर्षे शारदं शीघ्रमागतम् । एवमेवं प्रहस्तस्य शश्वर्षे दुरासदम् ॥ ४७ ॥

निर्मीलिताक्षः सहसा नीलः सेहे सुदारुणम् ॥ ४८ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|-------------------|----------------------------|
| शीघ्रं | கிரைவென்று | सुदारुणं एव | மிகக் கடுமையாகிருக்கிறதான் |
| आगतं | வந்த | प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனுடைய |
| शारदं | சாரத்காலத்து | शश्वर्षे | பாணவர்களை |
| वर्षे | மழையை | निर्मीलिताक्षः एव | கண்களை மூடிக்கொண்டவனாகவே |
| गोवृषः | கொடுகு | सहसा | ஆற்றலால் |
| यथा एवं | எப்படியோ அப்படியே | सेहे | பொறுத்துக்கொண்டான். |
| नीलः | நீலன் | | |
| दुरासदं | தடுக்கமுடியாதது | | |

रोषितः शश्वर्षेण सालेन महता महान् । मजवान ह्यानीलः प्रहस्तस्य मनोजवान् ॥ ४९ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|-------------------------|
| महान् | பெருமையபெற்றவனும் | सालेन | ஆசிராமமொன்றால் |
| शश्वर्षेण | பாணவாரியால் | प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனுடைய |
| रोषितः | கொபழுட்டப்பட்டவனான | मनोजवान् | மடுகுவிடையாகக் கொண்டும் |
| नीलः | நீலன் | ह्यान् | குதிரைகளை |
| महता | பெரும் | मजवान | உடத்துக்கொன்றான். |

ततः स चापमुद्गृह्य प्रहस्तस्य महाबलः । वभञ्ज तरसा नीलो ननाद च पुनः पुनः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|-----------------------|
| महाबलः | மகா பலம் கொடுக்கைய | वद्गृह्य | கொட்டி |
| सः | அந்த | वभञ्ज | முறித்தெறித்தான். |
| नीलः | நீலன் | ततः | அதன்மேல் |
| तरसा | ஆற்றலால் | पुनः पुनः | பலமுறை |
| प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனுடைய | ननाद च | அட்டகாசமும் செய்தான். |
| चापं | கிண்பை | | |

विधनुस्तु कृतस्तेन प्रहस्तो बाहिनीपतिः । प्रयुञ्ज मुसलं घोरं स्यन्दनादवपुषुष्वे ॥ ५१ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|------------------|
| பாஹினிபதி: | சேனாபதியாகும் | घोरं | உயங்காரமான |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன் | मुसलं | உலக்கைக் குண்டை |
| तेन | ஆவனால் | प्रयुञ्ज | எடுத்துக்கொண்டு |
| विधनुः | விஸ்ஸயிழந்தவனாக | स्यन्दनाव् | ரத்தத்தினின்று |
| कृतः तु | செய்யப்பட்டவர் | अवपुषुष्वे | கீழே குதித்தான். |

ஸகலே

तावुभौ बाहिनीमुख्यौ जातवैरौ तरस्विनौ । स्थितौ क्षतजदिग्धाङ्गौ प्रभिन्नाविव कुञ्जरौ ॥
उल्लिखन्तौ सुतीक्ष्णाभिर्दृष्टाभिरितरेतरम् । सिंहशादूलसदृशौ सिंहशादूलचेष्टितौ ॥ ५३ ॥
विक्रान्तविजयौ वीरौ समरैश्वनिवर्तिनौ । काङ्क्षमाणौ यशः प्राप्तुं वृत्रवासवयोः समौ ॥

| | | | |
|------------------------|--|-----------------|--|
| बाहिनीमुख्यौ | சேனாபதிகளும் | समरैश्व | போர்களில் |
| जातवैरौ | பகையை முதிர்ந்த வர்களும் | अनिवर्तिनौ | பின்வாக்காத |
| तरस्विनौ | மிக ஆற்றலுடையவர் களும் | वीरौ | சூரர்களும் |
| प्रभिन्ना | மதங்கொண்ட | वृत्रवासवयोः | வீரர்களாகலுக்கும் * இந்திரனுக்கும் |
| कुञ्जरौ इव | யானைகள் போன்றவர் களும் | समौ | ஸமமானவர்களிடமான |
| सिंहशादूल- सदृशौ | சிக்கக்களையும் புலி களையும் நிகர்த்தவர் களும் | ती | அந்த |
| सिंहशादूल- चेष्टितौ | சிக்கக்களுடையவும் புலிகளுடையவும் செய்க்கொண்டவர் களும் | उभौ . | இருவர்களும் |
| विक्रान्तविजयौ | சத்தூக்களையடக்கும் வெற்றிகொண்டவர் களும் | यशः प्राप्तुं | கீர்த்தியை அடைய |
| | | काङ्क्षमाणौ | அவாக்கொண்டு |
| | | सुतीक्ष्णाभिः | மிகக் கூரிய |
| | | दृष्टाभिः | கொணர்ப்பாற்களால் |
| | | इतरेतरं | ஒருவனை யொருவன் |
| | | उल्लिखन्तौ | கடித்துக்குத்திக் கொண்டு |
| | | क्षतजदिग्धाङ्गौ | அக்கமெல்லாம் ரத் தம் வழிந்தவர்களால் |
| | | स्थितौ | எதிர் துநின்றார்கள். |

आजघान तदा नीलं ललाटे मुसलेन सः । प्रहस्तः परमायत्तस्तस्य सुस्राव शोणितम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|---------|----------------|
| सः | அந்த | मुसलेन | உலக்கையால் |
| प्रहस्तः | பிரகஸ்தன் | ललाटे | கெற்றியில் |
| तदा | அப்பொழுது | आजघान | புடைத்தான். |
| परमायत्तः | மிகமுயற்சிகொண்ட வனாக | सस्य | அவனுக்கு |
| नीलं | நீலனை | शोणितं | ரத்தம் |
| | | सुस्राव | பெருகலாயிற்று. |

ततः शोणितदिग्बाहुः प्रपृष्ट सुमहातमम् । महत्प्रत्ययोरसि कुद्रो विषसर्ज महाकपिः ॥

| | | | |
|----------------|--|------------|------------|
| शोणितदिग्बाहुः | உடம்பெல்லாம் உத்தம வழியப்பெற்றவனும் | प्रपृष्ट | எடுத்து |
| महाकपिः | வானரர்களில் உத்தம ஊழலாகிய அவன் | महत्प्रत्य | பிரகஸ்தனது |
| कुद्रः | நினங்கொண்டவனாகி | उरसि | மார்பில் |
| सुमहातमं | மிகப்பெரிய மஹிமான்மற | ततः | அப்பொழுது |
| | | विषसर्ज | அடித்தான். |

तपचिन्त्य महारं सः प्रपृष्ट मुसलं महत् । अभिदुद्राव बलिने वन्दाशीलं प्रवङ्गपम् ॥५७॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|-------------------------|
| सः | அவன் | बलिने | பலிநலியாகிய |
| सं महारं | அந்த அடியை | नीलं | நீலநிறன்ற |
| अचिन्त्य | பொருட்படுத்தாது | प्रवङ्गपं | வாணரகிள் |
| महत् | பெரும் | बलात् | கொடுக்கினதிகயத் தால் |
| मुसलं | உலக்கையை | अभिदुद्राव | எதிர்த்தொடினான். |
| प्रपृष्ट | கையில் கொண்டு | | |

तमुग्रवेगं संरन्ध्रमापतन्तं महाकपिः । ततः संश्लेष्य जग्राह महावेगो महाशिलां ॥ ५८ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|-----------|-----------------------------|
| महावेगः | மிகசக்தியுடைய | सं | அவனை |
| महाकपिः | வானரர்களில் சிறந்த வனாகிய அவன் | ततः | அப்பொழுது |
| उग्रवेगं | மிக ஆத்திரங்கொ | संश्लेष्य | பார்த்து |
| संरन्ध्रं | பாபாப்புற்று [ண்டு | महाशिलां | பெரும்பாறை ஒன்றை |
| आपतन्तं | எதிர்த்தொடிவரும் | जग्राह | கையினைடுத்துக் கொண்டான். |

तस्य युद्धाभिकामस्य मृधे मुसलयोचिनः । प्रहस्तस्य शिलां नीलो मूर्ध्नि तूर्णमपातयत् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------------|------------|-----------------|
| नीलः | நீலன் | तस्य | அந்த |
| युद्धाभिकामस्य | யுத்தத்தில் உற்ஸாகம் கொண்டு | प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனது |
| मृधे | பேரில் | मूर्ध्नि | தலையில் |
| मुसलयोचिनः | உலக்கையைக்கொ ண்டு போர் புரிகின்ற | शिलां | கொண்டையை |
| | | तूर्णं | உடன்கொ |
| | | अपातयत् | விதி எறித்தான். |

सा तेन कपिसुख्येन विमुक्ता महती शिला । विभेद बहुधा घोरा प्रहस्तस्य शिरस्तदा ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|------------------|
| कपिसुख्येन | வானரர்களில் சிறந்த | महती | பெரிய |
| तेन | அவனால் | शिला | பாறை |
| मुक्ता | அப்பொழுது | प्रहस्तस्य | பிரகஸ்தனது |
| विमुक्ता | விட்டெதிர்ப்பட்ட | शिरः | தலையை |
| सा | அந்த | बहुधा | பலமுறைண்டவகாரக |
| घोरा | பயங்கரமான | विभेद | பிரகஸ்துகிட்டது. |

स गतासुर्गतश्रीको गतसन्धो गतेन्द्रियः । पपात सहसा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥६१॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-----------|--------------------|
| सः | அவன் | छिन्नमूलः | வேருடல் வெட்டி |
| गतेन्द्रियः | ஐயம்புலன்களும் தடுமாறி | द्रुमः इव | மரம்போலவே |
| गतसन्धः | ஆற்றலொழிந்து | सहसा | திடீரென |
| गतश्रीकः | புகழ்ப்பிந்து | भूमौ | பூமியில் |
| गतासुः | உயிரொழிந்தவனும் | पपात | சாய்ந்து விட்டான். |

प्रभिन्नशिरसस्तस्य बहु सुखाव शोणितम् । शरीरादपि सुखाव गिरेः प्रस्रवणं यथा ॥६२॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|---------------|----------------|
| तस्य | அவனது | सुखाव | பெருகிற்று. |
| प्रभिन्नशिरसः | உடைந்த மண்ணடையி விருந்து | गिरेः | மணியிலிருந்து |
| शोणितम् | சீதம் | प्रस्रवणं यथा | அருளிபோல |
| बहु | அதிகமாய் | शरीरात् अपि | உடலிலிருந்தும் |
| | | सुखाव | பெருகிற்று. |

हते प्रहस्ते नीलेन तदकम्प्यं महद्बलम् । रक्षसामपहृष्टानां लङ्कामभिजगाम ह ॥ ६३ ॥

| | | | |
|-------------|---------------|------------|---|
| हते | நீலனும் | अकम्प्यं ह | இதுவகாரியில் அசைக்க கமுடியாது விளங்கின |
| प्रहस्ते | பிரகஸ்தன் | महत् बलं | பெரும் சேனை |
| हते | கொல்லப்படவும் | लङ्काम् | லங்கையை நோக்கி |
| अपहृष्टानां | உதவாதவொழிந்த | अभिजगाम | திரும்பத்தலைப் பட்டது. |
| रक्षसां | அரக்கர்களுடைய | | |
| हत् | அந்த | | |

न शेकुः समरे स्थातुं निहते वाहिनीपतौ । सेतुबन्धं समासाद्य विकीर्णं सलिलं यथा ॥

| | | | |
|-----------|-------------|-----------|-----------------------|
| वाहिनीपतौ | சேனை தலைவன் | समासाद्य | கிட்டி |
| निहते | மாண்டதும் | सलिलं यथा | வெள்ளம்போலவே |
| सेतुबन्धं | கனரைய | समरे | போரில் |
| विकीर्णं | உடைந்ததாய் | स्थातुं | நிற்க |
| | | शेकुः न | முடியா திருந்தார்கள். |

हते तस्मिन्मूसुर्ये राक्षसास्ते निरुद्यमाः । रक्षःपतिगृहं गत्वा ध्यानमूकत्वमास्थिताः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|--------------|--------------------------------|
| तस्मिन् | அந்த | रक्षःपतिगृहं | அரக்கஸ்தலானது மாளிகைக்கு |
| मूसुर्ये | சேனை தலைவன் | गत्वा | போய்க்கொண்டு |
| हते | மாண்டுவிடவும் | ध्यानमूकत्वे | கிண்தயால் கிணகத்து மெனனத்தை |
| ते राक्षसाः | அந்த அரக்கர்கள் | आस्थिताः | கொண்டுவிட்டார்கள். |
| निरुद्यमाः | ஊக்கமொழிந்தவர் குறாய் | | |

प्राज्ञाः शोकार्णवं तीव्रं निःसंज्ञा इव तेषामवन् ॥ ६६ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|----------------|
| ते | ஆவர்கள் | इव | முற்றிலும் |
| तीव्रं | கொடிய | निःसंज्ञाः | தன்னறிவு இழந்த |
| शोकार्णवं | சேகரக்கடலில் | | வர்களுடைய |
| प्राज्ञाः | முழுகியவர்களாய் | अभवन् | ஆனார்கள். |

ततस्तु नीलो विजयी महाबलः प्रशस्यमानः स्वकृतेन कर्मणा ।

समेत्य रामेण सलक्ष्मणेन च महारूपस्तु वभूव यूथपः ॥ ६७ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|-------------------|
| महाबलः | மகா பலவாய்விடும் | प्रशस्यमानः | புகழ்த்து கொண்டா |
| विजयी | கொற்றிப்பெற்ற | सलक्ष्मणेन | டப்படுகின் தவணும் |
| यूथपः च | சேனை த்தலைவனுடைய | रामेण | சக்தை மனருடனிருக் |
| नीलः | நீலன் | समेत्य | பூசியவோடு [கும் |
| ततः | அப்பொழுது | महारूपः तु | சேர்ந்து |
| स्वकृतेन | தான் செய்த | वभूव | அதிக சக்தைதரவும் |
| कर्मणा तु | செய்தையாசனேய | | அடைந்தவனாகவும் |
| | | | விளங்கினான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे अष्टपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 17008

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 2333

एकोनषष्टितमः सर्गः—ஐம்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ 99 ॥

रावणमकुटभङ्गः—ராவண மகுட் பங்கம் (ராவணனது கிரீடத்தை உடைப்பது.)

तस्मिन्हते राक्षससैन्यपाले भुवङ्गमानामृषभेण युद्धे ।

भीमायुधे सागरतुल्यवेगे विदुद्रवे राक्षसराजसैन्यम् ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|-----------------|---------------------|
| भुवङ्गमानां | வான சர்க்களுக்குள் | भीमायुधे | பயக்கரமான ஆயுதந் |
| रूपभेण | வீரனாகிய அவனும் | सागरतुल्यवेगं | களைக் கொண்டதும் |
| युद्धे | போரில் | राक्षसराजसैन्यं | சமுத்தரத்தை சேர்ந்த |
| तस्मिन् | அந்த | विदुद्रवे | சக்தியடையதமான |
| राक्षससैन्यपाले | ராசுதலசேனாபதிகள் | | ராசுதலமன்னன் |
| हते | மாண்டுவிடவும் | | சேனை |
| | | | புறம் காட்டி ஓடி |
| | | | கிட்டது. |

गत्वाऽथ रक्षोधिपतेः शशंसुः सेनापति पावकसूनुशस्तम् ॥

तच्चापि तेषां वचनं निशम्य रक्षोधिपः क्रोधवशं जगाम ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|------------------|
| अथ | அப்பொழுது | शशंसुः | தேர்னித்தார்கள். |
| गत्वा | போய் | तेषां | அவர்களுடைய |
| रक्षोधिपतेः | ராசுதலமன்னனுக்கு | तत् | அந்த |
| सेनापति अपि | மேனாகிய தினையாரும் | वचनं निशम्य | சொல்லைக் கேட்டு, |
| पावकसूनु- | ஆக்கிரிகுமாரனும் | च | அதனும் |
| शस्तम् | கொண்டாவிடப்பட்ட | रक्षोधिपः | ராசுதலமன்னன் |
| | | क्रोधवशं जगाम | கொபவசம் அடைந் |
| | | | தான். |

संख्ये प्रहस्तं निहतं निशम्य शोकाहितः क्रोधपरीतचेताः ।

उवाच तान्निर्गतयोधमुख्यानिन्द्रो यथा चामरयोधमुख्यान्

॥ ३ ॥

| | | | |
|----------------|---|----------|----------------------------|
| संख्ये | போரில் | நெருதயோ- | ராசமுதையுபோர்வீரர் |
| प्रहस्तं | பிரதஸ்தகளை | मुख्यान् | களைப் பார்த்து |
| निहतं | மாண்டுவிட்டவளுக | इन्द्रः | இந்திரன் |
| निशम्य | அழிந்து | अमरयोध- | போர்வீரர்களான |
| शोकाहितः | சோகத்தால் கொந்து | मुख्यान् | தேவர்களைப் பார்த்து |
| क्रोधपरीतचेताः | { கோபத்தால் பற்றப் பட்ட மனமுடையவ ளாகி | यथा च | எப்படியோ அப்ப டியே |
| तान् | அந்த | उवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |

नावज्ञा रिपवे कार्या यैरिन्द्रबलसूदनः । सूदितः सैन्यपालो मे सानुयात्रः सकुञ्जरः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|------------|--------------------------|
| रिपवे | “சத்துருவிடம் | मे | எனது |
| अवज्ञा | அலக்தகம் | सैन्यपालः | சৈன்யபாலன் |
| न कार्या | கொள்ளக்கூடாது. | सानुयात्रः | பின்வந்த படைகளுட னும் |
| यैः | எந்த அவர்களால் | सकुञ्जरः | பரண்களுடனும் |
| इन्द्रबलसूदनः | இந்திரசேனைகளையும் அழித்த, | सूदितः | அழிக்கப்பட்டான். |

सोऽहं रिपुविनाशाय विजयायाविचारयन् । स्वयमेव गमिष्यामि रणशीर्षं तदद्भुतम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|----------------------|
| सः | “அந்த | अद्भुतं | ஆச்சர்யமான |
| अहं | கான் | रणशीर्षं | போர்முனைக்கு, |
| अविचारयन् | வேறு யோசனை செய் | रिपुविनाशाय | சத்துருக்களை அழித்து |
| स्वयं एव | செய்வேயே [யாது | विजयाय | வெற்றிபெற, |
| तत् | அந்த | गमिष्यामि | செய்வேன். |

अथ तद्वातरानीकं रामं च सहलक्ष्मणम् ।

निर्दहिष्यामि बाणौघैर्वनं दीप्तिरिवाग्निभिः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|---------------|------------------------|
| अथ | “இப்பொழுதே | दीप्तैः | கொழுத்துவிட்டு யும் |
| सहलक्ष्मणं | வசந்தமணிகேசுட ராமனையும் | अग्निभिः | தீயால் |
| रामं | சாமனையும் | वनं | காட்டை |
| तत् | அந்த | इव | எவ்வாறோ அவ்வாறே, |
| रातरानीकं च | வானரசேனைகளையும் | निर्दहिष्यामि | எரித்துவிடுகிறேன்.” |
| बाणौघैः | பாணவருவுங்களால், | | |

स एवमुक्त्वा ज्वलनप्रकाशं रथं तुरङ्गोत्थपराजयुक्तम् ।

प्रकाशमानं वपुषा ज्वलन्तं समारुहोद्दामरराजशत्रुः

॥ ७ ॥

अमरराजशतुः } தேவேந்திரனது
 सः } அவன் [சத்தருவாகிய
 एवं } மேற்கண்டவாறு
 उत्तवा } சொல்லிவிட்டு,
 तुरङ्गोत्तम- } சிறந்த சூதிரையாக
 राजयुक्तं } களரல் பூட்டப்பெற்
 } றதும்

ज्वलनप्रकाशं } அக்னிஸூனிகொண்டு
 ज्वलति } ஜ்வலிக்கின்றதும்
 तपुषा } திருபொருந்தி
 प्रकाशमानं } விளங்குவதுமான
 रथं } ரதத்தில்
 समासोह } எறினும்.

स शङ्खभेरीपणवप्रणादैरास्फोटितश्वेलितसिंहनादैः ।

पुण्यैः स्तवैश्चाप्यभिपूज्यमानस्तदा ययौ राक्षसराजमुख्यः ॥ ८ ॥

राक्षसराजमुख्यः } சிறந்த ராட்சஸமன்
 } னனுதிய
 सः } அவன்
 शङ्खभेरी- } சங்கு, பேரிகை, முரசு
 पणवप्रणादैः } வாந்தியும் இவை
 } களில் முழக்கக்
 } களாலும்

आस्फोटितश्वेलित- } கைக்கொட்டுகளாலும்
 सिंहनादैः च } சூதித்தல்களாலும்
 } கிக்காத்தல்களாலும்
 पुण्यैः } சம்பவமான
 स्तवैः अपि } வெற்றிப்புறம்புப்பாக்க
 } ளாலும்
 अभिपूज्यमानः } கௌரவிக்கப்பெற்ற
 तदा } அப்பொழுது [வனாய்
 ययौ } புறப்பட்டான்.

स शैलजीमूतनिकाशरूपैर्मांसादनैः पावकदीप्तनेत्रैः ।

बभौ वृतो राक्षसराजमुख्यो भूतैर्वृतो रुद्र इवासुरेशः ॥ ९ ॥

असुरेशः } அசுரத்தலைவனும்
 राक्षसराजमुख्यः } சிறந்த ராட்சஸ
 } மன்னனுமாகிய
 सः } அவன்
 शैलजीमूत- } மலைகளையும் மேகக்க
 निकाशरूपैः } ளையும் திகர்த்த உரு
 } வக்களைக்கொண்ட
 } வர்களுக்கும்

पावकदीप्तनेत्रैः } அகன்போல் ஜீவனிக்
 } றும் கண்களுடைய
 } வர்களுமான
 मांसादनैः } அரக்கர்களால்
 वृतः } சூழப்பட்டவனாய்
 भूतैः } ப்ரமதகணங்களால்
 वृतः } சூழப்பட்ட
 रुद्रः इव } சிவபிரான் என
 बभौ } விளக்கினான்.

ततो नगर्याः सहसा महौजा निष्क्रम्य तद्द्वानरसैन्यमुग्रम् ।

महार्णवाभ्रस्तनितं ददर्श समुद्यतं पादपशैलहस्तम् ॥ १० ॥

महौजाः } மகா பராக்கிரமசாலி
 } யாகிய அவன்
 ततः } அப்பொழுது
 नगर्याः } நகரிலிருந்து
 सहसा } வேகமாய்
 निष्क्रम्य } வெளிவந்து
 पादपशैलहस्तं } மடங்கலையும் மலைகளி
 } யும் ஊகயிடுகிற்

समुद्यतं } எதிர்த்து நிற்கிறதும்
 उग्रं } க்ரூரமாய்
 महार्णवाभ्रस्तनितं } பெருங்கடலையும் மேக
 } த்தையும் திகர்த்து
 } உச்சலிடுகிறதுமான
 तद् } அந்த
 वानरसैन्यं } வானரசேனையை
 ददर्श } கண்டான்.

तद्राक्षसानीकमतिप्रचण्डमालोक्य रामो भुजगेन्द्रबाहुः ।
विभीषणं शस्त्रभृतां वरिष्ठेषुवाच सेनानुगतः पृथुर्धाः

॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|----------------------------|
| सेनानुगतः | சேனைகளால் பக்கலி விருக்கப்பெற்றவரும் | अतिप्रचण्डं | மிகப்பயங்கரமான |
| पृथुर्धीः | அழியாப்புக்கும் படைத்தவரும் | राक्षसानीकं | அரக்கப்படைடைய |
| भुजगेन्द्रबाहुः | சர்ப்பக்கல்போல் கிண்ட திருக்கரக்க லையந்தவருமான | आखीक्य | கண்ணுற்று |
| | | शस्त्रभृतां | விசர்களில் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | वरिष्ठं | கிறந்த |
| | | विभीषणं | விபீஷணரைப் பார்த்து |
| तव | அந்த | उवाच | பின்வருமாறு வினா வினா : |

नानापताकाध्वजशस्त्रजुष्टं मासासिशूलायुधशस्त्रजुष्टम् ।
सैन्यं गजेन्द्रोपमनामजुष्टं कस्येदमक्षोभ्यमभीरुजुष्टम्

॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------------------------|---|---------------------------|---|
| नानापताकाध्वज- शस्त्रजुष्टं | பலவித கொடிகளா ளும் திசைகளா ளும் ஆயுதக்களா ளும் கிறைந்து விளக் குகிறதும் | गजेन्द्रोपम- नामजुष्टं | ஐராவதத்திற்குச் சமா னமான பாணிகளு டன் கிறைந்து விளக்குகிறதும் |
| मासासिशूलायुध- शस्त्रजुष्टं | சட்டி, கத்தி, குளாயு தம் முதலிய ஆயுதக் களால் கிறைந்து விளக்குகிறதும் | अभीरुजुष्टं | துணியும் உத்தராவ ளும் கொண்டவர் களைக்கொண்டதும் |
| | | अक्षोभ्ये | கலக்கமுடியாதது |
| | | इदं | இதேதவரும் [மான் சேனை |
| | | सैन्यं | பாருடையது ? |
| | | कस्य | |

ततस्तु रामस्य निशम्य वाक्यं विभीषणः शकसमानवीर्यः ।
शशंस रामस्य बलप्रवेकं महात्मनां राक्षसपुङ्गवानाम्

॥ १३ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|------------------|--------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | महात्मनां | மகாதேவியசரலி களான |
| शकसमानवीर्यः | இந்திரனை நிகர்த்த வீர்யம்பொருத்திய | राक्षसपुङ्गवानां | ராஷ்டிரேஸா த்தமர்களு டைய |
| विभीषणः | விபீஷணர் | बलप्रवेकं तु | சேனைகளில் உத்தம மானதைப்பற்றி |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | शशंस | பின்வருமாறு தெரியப் படுத்தினார் : |
| वाक्यं | சொல்லை | | |
| निशम्य | கேட்டு | | |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | | |

योऽसौ गजस्कन्धगतो महात्मा नवोदिताकौपिताम्रवक्त्रः ।
प्रकम्पयन्नागशिरोऽभ्युपैति ह्यकम्पने त्वेनमवेहि राजन् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------|---|----------------|--|
| राजन् | " சந்திரவர், த் தியரகோ ! | नवोदिताकौपिता- | } இளம் குரியனை நிகர்த்த சிவந்த முதமுடையவனாய் |
| योः | எந்த | ताम्रवक्त्रः | |
| असौ | இவன் | महात्मा तु | மஹா கைதரியசரலி யாய் |
| गजस्कन्धगतः | { யானையினது கழுத் தில் உட்கார்ந்து கொண்டு | अभ्युपैति | வருகிறானே |
| नागशिरः | யானையின் தலையை | एनं | இவனை |
| प्रकम्पयन् | அதிசக்செய்து கொண்டு | अकम्पने हि | அகம்பனென |
| | | अवेहि | கொடுத்துகொள்ளும். |

योऽसौ रथस्थो सृगराजकेतुर्धन्वन्धनुः शक्रधनुःप्रकाशम् ।
करीव भाव्युयविवृत्तदंष्ट्रः स इन्द्रजिन्नाप वरप्रधानः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------------|---|---------------------|-------------------------------------|
| यः | " எந்த | धन्वन् | கானெற்றி இழுத்துக் கொண்டு |
| असौ | இவன் | उग्रविवृत्तदंष्ट्रः | கொடிய கோரைப்பற் சனை காட்டிகொண்டு |
| सृगराजकेतुः | சிம்மறங்கொடி கொண் டவனாய் | हरी इव | யானபோலவே |
| रथस्थः | ரதத்திலிருந்து கொண்டு | भाति | விளக்குகிறானே |
| शक्रधनुःप्रकाशं | இந்திராணதுவில்போல் ஒளியுற்று விளக்கும் | सः | அவன் |
| धनुः | விவளை | वरप्रधानः | வரக்களால் பெருமை பெற்ற |
| | | इन्द्रजिन् नाम | இந்திரஜித்து என்பவன். |

यथैष विन्ध्यास्तमहेन्द्रकल्पो धन्वी रथस्थोऽतिरथोऽतिवीरः ।
विस्फारयंश्चापमतुल्यमानं नाम्नाऽतिकायोऽतिविबुद्धकायः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------------------------------|---|----------------|------------------------------|
| विन्ध्यास्त-) महेन्द्रकल्पः) | " நிந்தியானை, ஆஸ்த மலை, மஹேந்திரமலை இவைகளை நிகர்த்த தவனாய் | अतुल्यमानं | தம்பத்த செருக்குக் கொண்டு |
| धन्वी | விவளையாய் | विस्फारयन् | டக்காரம் செய்கின் றவனாய் |
| अतिरथः | அதிரதனைந் ற | अतिविबुद्धकायः | மிகப் பெரிய உடலுற்றவனாய் |
| अतिवीरः | மஹா ஞானியர் | यः | அவன் இருக்கில் |
| रथस्थः | ரதத்திலிருந்து கொண்ட | एषः व | இவன் தான் [குணே] |
| चापं | விவளை | नाम्ना | பெயரால் |
| | | अतिकायः | அதிகாயனைப் படுபவன். |

योऽसौ नवाकौदितताम्रचक्षुरारुह्य घण्टानिनदप्रणादम् ।
गजं खरं गर्जति वै महात्मा महोदरो नाम स एष वीरः

॥ १७ ॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|-----------------|
| ய: | "எந்த | गजं | யானைமீது |
| महात्मा | மஹாத் ஆற்றலுடைய | भारुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| वीरः | சூரனுடைய | खरं | கர்ணகடோரமாக |
| असौ | இவன் | गर्जति वै | கர்ஜிக்கின்றானே |
| नवाकौदि (-) | இளஞ்சூரியனை கிசுந்த | सः | ஆந்த |
| ताम्रचक्षुः } | த சிவந்த கண்களால் | एषः | இவன் |
| | டைபவனாய் | महोदरः | மஹோதரன் |
| घण्टानिनदप्रणादं | { மணிகள் சுட்டி அழ காக ஒலித்துக் கொண்டிருக்கிற | नाम | என்பவன். |

योऽसौ ह्यं काञ्चनचित्रभाण्डमारुह्य सन्ध्याभ्रगिरिप्रकाशम् ।
प्रासं समुद्यम्य मरीचिनद्धं पिशाच एषोऽशनितुल्यवेगः

॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------------|---|---------------|---|
| ய: | "எந்த | भारुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| असौ | இவன் | मरीचिनद्धं | பளபள வென்று விளக்குகிற |
| काञ्चनचित्रभाण्डं | { பொன்மயமான அழ கிய சூதிரையணி களைபுடைபதும் | प्रासं | சட்டி ஒன்றை |
| सन्ध्याभ्र- } | சரடக்காலமேகம் தன் | समुद्यम्य | ஒங்கிக்கொண்டு |
| गिरिप्रकाशं } | கிய மலைபின் ஒளி கொண்டு விளக்கு கிறதுமான | अशनितुल्यवेगः | { இடிக்குச் சமமான வேகம்கொண்டவ னாய் இருக்கிறானே, |
| हयं | சூதிரையிது | एषः | இவன் |
| | | पिशाचः | பிசாசெனைப் படுவன். |

यथैष शूलं निशितं प्रशुह्य विद्युत्प्रभं किङ्करवन्धवेगम् ।

दृपेन्द्रमास्थाय गिरिप्रकाशमायाति योऽसौ त्रिशिरा यशस्वी

॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------------|---|-------------|---------------------------|
| ய: | "எவன் | गिरिप्रकाशं | மலைபோல் விளங்கும் |
| निशितं | சூரனாதும் | दृपेन्द्रं | எருதரசில் |
| विद्युत्प्रभं च | மின்னல்போல் பிரகா சித்திறதும் | आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு |
| किङ्करवन्धवेगं | { வஜ்ராயுதத்திற்கும் மேலான சக்தியுடை யதுமான | आयाति | வருகிறானே |
| शूलं | சூலத்தை | एषः | இவன் |
| प्रशुह्य | ஏந்திக்கொண்டு | त्रिशिराः | த்ரிசிரஸ் எனப் படுவன். |
| | | यः | எந்த |
| | | असौ | இவன் |
| | | यशस्वी | புகழ்பெற்றவன். |

असौ च जीमूतनिकाशरूपः कुम्भः पृथुव्यूहसुजातवक्षाः ।

समाहितः पञ्चमराजकेतुर्विस्फारयन्भाति धनुर्विधुन्वन्

॥ २० ॥

| | | | |
|---------------------------|--|------------|------------------------|
| जीमूतनिकाशरूपः | " மேகத்தை திகிர்ந்த உருவமுடையவனும் | कुम्भः | சும்பனை எனப்படுபவன் |
| पृथुव्यूह- सुजातवक्षाः | பெருந்து விகாஸமா ன அழகிய மாம்பு டையவனும் | समाहितः | மிக ஊக்கங்கொண்டு |
| | | धनुः | விக்கை |
| पञ्चमराजकेतुः च असौ | அரசாக்கொடியோ ளு அந்த [மரண | विधुन्वन् | நாணெற்றி |
| | | विस्फारयन् | டங்கா ரஞ்செய்து கொண்டு |
| | | भाति | விளங்குகிறான். |

यथैष जाम्बूनदवज्जजुष्टं दीप्तं सधूमं परिवं प्रगृह्य ।

आयाति रक्षोबलकेतुभूतस्त्वसौ निकुम्भाऽद्भुतघोरकर्मा

॥ २१ ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------|-----------------|---|
| यः | " எவன் | निकुम्भः | நிசும்பனை எனப்படு பவன். |
| जाम्बूनदवज्जजुष्टं | பொண்ணும் காவா மு பிழைத்து | असौ | இவன் |
| सधूमं | புகையுடன் | अद्भुतघोरकर्मा | { மிக ஆச்சரியமும் பயங்கரமுமான செயல்கொண்டு |
| दीप्तं च | ஐவலிக்கின்ற | | |
| परिवं | உழலித்தடியை | रक्षोबलकेतुभूतः | { அடிக்கச்சேனைக்கு முக்கியனாய் விளங்குகிறவன். |
| प्रगृह्य | கைப்பற்றி | | |
| आयाति | வருகிறுமினு | | |
| एषः-गु | இவன் தான் | | |

यथैष चापासिशरीरजुष्टं पताकिनं पावकदीप्तरूपम् ।

रथं समास्थाय विभात्युदधौ नरान्तकोऽसौ नगशृङ्गयोधी

॥ २२ ॥

| | | | |
|-----------------------|--|-------------|--|
| यः | " எவன் | समास्थाय | உநீக்கொண்டு |
| चापासि- शरीरजुष्टं | வில், சுத்தி, பாணம் இவைகளின் சமூகக் களால் திறையப்பெற்றதும் | उदधौ: | மிகப்பெருமை பெற்ற வனாய் |
| | | विभाति | விளங்குகிறுமினு |
| पताकिनं | நிசான் களுடன் விளங்குகிறதும் | एषः च | இவன் தான் |
| पावकदीप्तरूपं | { அக்னிபோல் ஐவலிக்கின்ற ஒளிகொண்டதுமான் | नरान्तकः | நர அந்தகனை எனப்படுபவன். |
| | | असौ | இவன் |
| रथं | ரதத்தில் | नगशृङ्गयोधी | { மரங்களையும் மலைச் சிகரங்களையும் கொண்டு போர்ப்புரிபவன். |

यथैष नानाविधयोररूपैर्व्याघ्रोष्टृनागेन्द्रमृगाश्ववन्नैः ।

भूतैर्वृतो भाति विवृत्तनेत्रैः सोऽसौ सुराणामपि दर्पहन्ता

॥ २३ ॥

| | | | |
|---|---|----------------|--------------------------|
| यः | " எந்த | विवृत्तनेत्रैः | சுழலுக்கண்களை யு |
| एषः | இவன் | | டையவைகளுமா ன |
| नानाविधयोररूपैः | { பலவித பலங்கரமான உருக்கொண்டவை களும் | भूतैः | பூதங்களால் |
| व्याघ्रोष्टृनागेन्द्र- मृगाश्ववन्नैः | { புலி, ஓட்டகம், யானை யரசு, மான், குதிரை இவைகள் போல் முகம்கொண்டவை களும் | वृतः | சூழப்பட்டவராய் |
| | | भाति | விளக்குகிறானே |
| | | सः | அந்த |
| | | असौ च | இவன் தான் |
| | | सुराणां अपि | தேவர்களுடையவும |
| | | दर्पहन्ता | செருக்கை அடக்கிய வன். |

यत्नैतदिन्दुभतिषं विभाति छत्रं सितं सूक्ष्मशलाकमय्यम् ।

अत्रैष रक्षोधिपतिर्महात्मा भूतैर्वृतो ह्य इवावभाति

॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|---|-------------|--------------------|
| यत् | " எவ்வீடத்தில் | अत्र | அக்குதரன் |
| इन्दुभतिषं | சந்திரனை நிகர்த்து | एषः | இந்த |
| सितं | வெண்மையற்று விளக்குகிறதும், | महात्मा | நிகர்த்துணியுகொண்ட |
| सूक्ष्मशलाकं | சின்னக்கம்பிகளால் நினைக்கப்பெற்றதும் | रक्षोधिपतिः | ராஷ்டிரமன்னன் |
| अत्रैष | சிறந்த துமைய | भूतैः | பூதகணங்களால் |
| यत् छत्रं | இந்தக் குடை | वृतः | சூழப்பட்ட |
| विभाति | விளக்குகிறதோ | ह्यः | சிகர்பெருமான் |
| | | इव | போல |
| | | अवभाति | விளக்குகிறான். |

असौ किरीटी चलकुण्डलास्यो नगेन्द्रविन्ध्योपमभीमकायः ।

महेन्द्रवैवस्वतदर्पहन्ता रक्षोधिपः सूर्य इवावभाति

॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------------------------|---|-------------------------------|--|
| किरीटी | " கிரீடமணித்தவனும், | रक्षोधिपः | ராஷ்டிரமன்னன் |
| चलकुण्डलास्यः | குண்டலங்களாலும் முடிமுண்டலவனும், | महेन्द्रवैवस्वत- दर्पहन्ता | தேவந்திரனுடைய வும், யானைடையவும் செருக்கை அடக்கி யவன். |
| नगेन्द्रविन्ध्योपम- भीमकायः | { துடியநிலையையும், நிகர்த்தியபலையையும் நிகர்த்த பலங்கரமா ன தேகமுண்டலவ னுமாய | सूर्यः | சூர்யபகவான் |
| | | इव | போலவே |
| | | अवभाति | விளக்கிக்கொண்டு |
| असौ | இந்த | | இருக்கிறான். |

प्रत्युवाच ततो रामो विभीषणपरिन्दमम् । अहो दीप्तो महातेजा रावणो राक्षसेश्वरः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|----------------------|
| रामः | “ श्रीरாமர் | राक्षसेश्वरः | “ ஆரக்கர் வெந்தணுகிய |
| अरिन्दमं | சத் துருக்களை நாசம் | रावणः | ராவணன் |
| | பண்ணும் | महातेजाः | சிறந்த வெற்றித்திரு |
| विभीषणं | விபிஷணனைப் பார்த் | | வழைந்தவனாய் |
| ततः | அப்பொழுது [து | अहो दीप्तः | எப்படி ஒளிகொண்டு |
| प्रत्युवाच | பின் வருமாறு | | விளங்குகிறான். |
| | கொல்லியருளினார்; | | |

आदित्य इव दुष्येक्षो रश्मिभिर्भाति रावणः । सुव्यक्तं लक्ष्ये ह्यस्य रूपं तेजःसमाहृतम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------------|------------------|
| रावणः | “ ராவணன் | भाति | விளங்குகின்றான். |
| रश्मिभिः | கிரணங்களால் | अस्य | இவனது |
| दुष्येक्षः | கண்டுகொண்டு பார்க்க | रूपं | உருவத்தை |
| | முடியாத | तेजःसमाहृतं हि | பரிபூர்ண ஆற்றல் |
| आदित्यः | சூரியபகவான் | | இரண்டதாகவே |
| इव | போலவே | सुव्यक्तं | சந்தேகமற |
| | | लक्ष्ये | எண்ணுகின்றேன். |

अहो वीर्यमहो धैर्यमहो सत्वमहो द्युतिः । अहो राक्षसराजस्य सर्वलक्षणमंयुता ॥ २८ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------------|-----------------|
| अहो वीर्यं | “ ஆ! என்ன வீரம்! | राक्षसराजस्य | ராட்சஸராஜனுக்கு |
| अहो धैर्यं | ஆ! என்ன ஹைரியம்! | सर्वलक्षणमंयुता | அர்வலக்ஷணங்களி |
| अहो सत्वं | ஆ! என்ன பலம்! | | வழைப்பு |
| अहो द्युतिः | ஆ! என்ன ஒளி! | अहो | விபக்கத்தக்கதே! |

देवदानववीराणां वपुर्नैवंविधं भवेत् । यादृशं राक्षसेन्द्रस्य वपुरेतत्प्रकाशते ॥ २९ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|----------------|--------------|
| राक्षसेन्द्रस्य | “ ராட்சஸமன்னனது | एवंविधं | இப்படிப்பட்ட |
| एतत् | இந்த | वपुः | உரு |
| वपुः | உரு | देवदानववीराणां | தேவதானவவீரர் |
| यादृशं | எப்படிப்பட்டதாய் | | கருக்கும் |
| प्रकाशते | விளங்குகிறதோ | न भवेत् | இராது. |

सर्वे पर्वतसङ्घाताः सर्वे पर्वतयोधिनः । सर्वे दीप्तायुधधरा योधाश्चास्य महोजसः ॥ ३० ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------------|---------------------|
| अस्य | “ இவனது | सर्वे | எல்லோரும் |
| महोजसः | மிக ஒளிகொண்டு | पर्वतसङ्घाताः | பல்களை தீகர்த்தவர் |
| | விளக்கும் | | கள், |
| योधाः | போர்வீரர்கள் | सर्वे | எல்லோரும் |
| सर्वे च | எல்லோரும் | दीप्तायुधधराः | { இவளிக்கும் ஆயுதங் |
| पर्वतयोधिनः | { மலைகளையும் பொ | | களைக் கைப்பற்றிய |
| | குதிப் போர்புரிய | | வர்கள். |
| | வல்லவர்கள், | | |

भाति राक्षसराजोऽसौ मदीसैर्भीमविक्रमैः । भूतैः परिवृत्तस्तीक्ष्णैर्देहवद्भिरिवान्तकः ॥३१॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|------------------------|
| भसौ | "இந்த | देहवन्तिः | சிறந்த வடிவமுற்றவர்கள் |
| राक्षसराजः | ராக்ஷஸராஜன் | | களுமான |
| मदीसैः | மீசைகொண்டு | भूतैः | பூதங்களால் |
| तीक्ष्णैः | பரபரப்புற்று கிளக்சூகிரவர்களும் | परिवृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| | } பயங்கரமான காலடிவைப்புக்களையுடையவர்களும் | अन्तकः | யமன் |
| भीमविक्रमैः | | इव | போலவே |
| | | भाति | காணப்படுகிறான். |

दिष्ट्वाऽयमद्य पापात्मा मम दृष्टिपथं गतः । अद्य क्रोधं विमोक्ष्यामि सीताहरणसंभवम् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|---------------|--------------------------------------|
| पापात्मा | "கொடும்பூவியாகிய | सीताहरणसंभवम् | சீதையைத் திருடியதால் உண்டாயிருக்கும் |
| अयं | இவன் | क्रोधं | கினத்தை |
| दिष्ट्वा | தெய்வநீனமாய் | अद्य | இப்பொழுது |
| अद्य | இப்பொழுது | विमोक्ष्यामि | போக்கிக்கொள்ளப் போகிறேன். |
| मम | எனது | | |
| दृष्टिपथं गतः | கண்களுக்குப் புலனுணர். | | |

एवमुक्त्वा ततो रामो धनुरादाय वीर्यवान् । लक्ष्मणानुचरस्तस्थौ समुद्रत्य शरोत्तमम् ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|--------------------------|
| वीर्यवान् | வீரரும் | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| लक्ष्मणानुचरः | } லக்ஷ்மணன் பக்கலில் இருக்கப்பெற்றவருமாகிய | धनुः | கோதண்டத்தை |
| | | रामः | समुद्रत्य |
| ततः | புரீராமர் | शरोत्तमम् | உயர்ந்த பாணங்களில் ஒன்றை |
| एवं | அப்பொழுது | भादाय | தொடுத்து |
| | "மேற்கண்டவாறு | तस्थौ | சித்தமாயிருந்தார். |

ततः स स्तोत्रिपतिर्महात्मा रक्षांसि तान्याह महाबलानि ।

द्वारेषु चर्यागृहगोपुरेषु सुनिर्वृतास्तिष्ठत निर्विशङ्काः

॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|--|-----------------------|---|
| सः | அந்த | द्वारेषु | } 'மதில்வாயில்களிலும், காலச்செய்யும் படர் களுக்கென்று கட்டப்பட்டுள்ள வீடுகளிலும், கோபுரங்களிலும், |
| महात्मा | மகா பராக்ரமசாலியாகிய | चर्यागृह- गोपुरेषु | |
| स्तोत्रिपतिः | ராக்ஷஸமன்னன் | निर्विशङ्काः | |
| ततः | அப்பொழுது | सुनिर्वृताः | } மனக்கவலைவும் கொஞ்சமேனாயில்லாதவர்களாகவும், காத்திருங்கள். |
| महाबलानि | மகா பலம்பெருந்திய | तिष्ठत | |
| रक्षांसि | அந்த | | |
| आह | அரக்கர்களைப்பார்த்து பின்வருமாறு ஆக்குபித்தான் : | | |

इहागतं मां सहितं भवद्विर्वनौकसश्छिद्रमिदं विदित्वा ।
शून्यां पुरीं दुष्प्रसहां प्रपथ्य प्रधर्षयेयुः सहसा समेताः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|--------------|----------------------------|
| மா் | என்னை | கிட் | அவசரத்தை |
| भवद्भिः | உக்கிரனாடு | विदिवा | அறிக் துகொண்டு |
| सहितं | கூடி | वनौक्यः | வானரர்கள் |
| आगतं | வந்திருப்பவனாகவும் | समेताः | ஒன்றுசேர்க் து |
| दुष्प्रसहां | அணு அமுடி யாத | सहसा | வலுக்கொண்டு |
| पुरीं | நகரை | इह | இவ்விடத்தில் |
| शून्यां | ஒருவருடில்லாத தரகவும் | प्रपथ्य | உருவழித்து |
| इव | இந்த | प्रधर्षयेयुः | நாகம் விளைவிப்பார் கள். |

विसर्जयित्वा सहितांस्ततस्त्वान्मतेषु रक्षःसु यथानियोगम् ।
व्यदारयद्धानरसागरोद्यं महाज्ञपः पूर्णमिवार्णवौघम् ॥ ३६ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-----------|--------------------------------|
| मतेषु | சிறந்த | रक्षःसु | அதன்மேல் |
| रक्षःसु | அரக்கர்கள் விஷயத்தில் | महाज्ञपः | ஒரு பெருமீன் |
| यथानियोगे | அப்படியாய் நியமித்துவிட்டு | पूर्ण | நிறைந்துள்ள |
| सहितान् | பக்களிலிருந்து | अर्णवौघ | சமுத்திரப்பிரயாகத் தை |
| तान् | அவர்களை | इह | எப்படியோ அப்படியே |
| विसर्जयित्वा | விடைகொடுத்தனுப் பிட்டு | व्यदारयद् | வானரசாகப்பிரயாக கத்தை |
| | | व्यदारयद् | பிரிக் துகொண்டு புகுத்தான். |

तमापतन्तं सहसा समीक्ष्य दीप्तिषुचापं युधि राक्षसेन्द्रम् ।
महत्समुत्पाद्य महीधराम्यं हुद्राव रक्षोधिपतिं हरीशः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|-------------|------------------------------|
| हरीशः | வானரமன்னன் | सहसा | சுடுதலில் |
| युधि | பேரில் | महत् | பெரும் |
| दीप्तिषुचापं | இவ்விக்கும் கணிகொ டுத்த விவ்லுடன் | महीधराम्यं | மஹிசுகாமொன்றை |
| आपतन्तं | எதிர்த்துநிற்கும் | समुत्पाद्य | பெயர்,த்தெடுத்தான் கொண்டு |
| सं | அந்த | रक्षोधिपतिं | ராகதவமன்னனை |
| राक्षसेन्द्रं | ராகதவமன்னனை | हुद्राव | எதிர்த்துதடியானான். |
| समीक्ष्य | பார்ந்து | | |

तच्छैलशृङ्गं बहुवृक्षसानुं प्रपृथ्व चिक्षेप निशाचराय ।

तमापतन्तं सहसा समीक्ष्य विभेदं वाणैस्तपनीयपुद्गैः ॥ ३८ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|--------------|-------------------------------|
| बहुवृक्षसानुं | கந்தம்புறங்களில் பல விருவூக்களை யுடைய | आपतन्तं | மேல் விழ வரும் |
| सम् | அந்த | सं समीक्ष्य | அதைப் பார்த்து |
| शैलशृङ्गं | மலைச்சிகரத்தை | तपनीयपुद्गैः | பொன்பிடியற்ற |
| प्रपृथ्व | உயர்த்துக்கி | वाणैः | பாணங்களால் |
| निशाचराय | அரக்கன் பிள்ளை | सहसा | தசநேரமே |
| चिक्षेप | விசை ஏறித்தான். | विभेदं | அதைப் பிளந்து விழுந்திடுவான். |

तस्मिन्प्रदोत्तमसानुवृक्षे शृङ्गे विक्रिणे पतिते पृथिव्याम् ।

महाहिकल्पं शरमन्तकामं समाददे राक्षसलोकनाथः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|--------------------------|---|------------|--|
| राक्षसलोकनाथः | இராக்கஸங்கூட்ட மன்னன் | पृथिव्यां | பூமியில் |
| तस्मिन् | அந்த | पतिते | விழுந்தபின்னர் |
| प्रदोत्तम- सानुवृक्षे | உயர்த்து சிறந்த விருவூக்களிடர்ந்த தாழ்வுகளை யுடைய | महाहिकल्पं | பெரும்பாம்பை நிகர்த்ததும் |
| शृङ्गे | மலைச்சிகரம் | शरमन्तकामं | சமீப நிகர்த்ததும் |
| विक्रिणे | சிதறுண்டு | शरं | பாணமொன்றை [எகையில் எடுத்துக் கொண்டான். |

स तं गृहीत्वाऽनिलतुल्यवेगं सविस्फुल्लिङ्गज्वलनप्रकाशम् ।

वाणं महेन्द्राशानितुल्यवेगं चिक्षेप सुग्रीववधाय रुष्टः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|-------------|---------------------------|
| सः | அவன் | वाणं | பாணத்தை |
| अनिलतुल्यवेगं | வாயுவை நிகர்த்த வேகத்தொண்டதும் | गृहीत्वा | எகப்பற்றி |
| सविस्फुल्लिङ्ग- ज्वलनप्रकाशं | பெருநிகர்த்துக்கும் அக்னியை நிகர்த்ததும் | रुष्टः | பிளக்கொண்டவனாகி |
| महेन्द्राशि- तुल्यवेगं | தேவந்திரனது வஜ்ராயுதத்திற்குச் சமமான சக்தி கொண்டதான | तं | அதை |
| | | सुग्रीववधाय | சகீரனை வதைக்கும் பொருட்டு |
| | | चिक्षेप | விடுத்தான். |

स सायको रावणवाहुमुक्तः शक्राशनिप्रख्यवपुः शितायः ।

सुग्रीवमासाद्य विभेदं वेगाद्देहिता क्रौञ्चपिवोमशक्तिः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------------------|--|----------------|-------------------------------|
| शक्रानि- प्रख्यवपुः | இந்திரனது வஜ்ராயுதத்தை நிகர்த்த உருக்கொண்டதும் | रावणवाहुमुक्तः | சாவணனது எகயால் விடப்பட்டதுமான |
| शितायः | சூரிய முனை யுள்ளதும் | सः | அந்த |
| | | सायकः | பாணமானது |

| | | | |
|------------|-------------------------------|---------|------------------|
| गुहेरिता | முறைக்கடவுள் போடப்பட்ட | इय | எவ்வண்ணமோ ஆய் |
| उग्रशक्तिः | மிகப்பெருமைபெற்ற கொல்லுதல் | सुधीवं | சுதீவனை [வண்ணமோ |
| वीर्यं | கொள்ளுச்சபர்வதத் தை | भासाद्य | ஆடைத்து |
| | | वेगान् | திறமைமயால் |
| | | विभेद | துளைத்துவிட்டது. |

स सायकार्तो विपरीतचेताः कूजन्यृथिव्यां निपपात वीरः ।

तं प्रेक्ष्य भूमौ पतितं विसृजं नेदुः महृष्टा युधि यातुधानाः

॥ ४२ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-----------|----------------------------|
| सः | ஆந்த | युधि | போயில் |
| वीरः | வீரன் | ते | ஆவனை |
| सायकार्तः | பாணந்தால் மிக்க கொல்லுண்டவனுய் | विसृजं | முச்சுவையடைத்து தவரவில் |
| विपरीतचेताः | மதிசலத்தில் | भूमौ | விழுந்து விட்டவளுக |
| कूजन् | கதறிக்கொண்டு | पतितं | பார்த்து |
| पृथिव्यां | பூமியில் | प्रेक्ष्य | மதிசூக்கிகொண்டவர் களாய் |
| निपपात | விழுந்து விட்டான். | महृष्टाः | ஆர்ப்பரித்தார்கள். |
| यातुधानाः | ஆரக்கர்கள் | नेदुः | |

ततो गवाक्षो गवयः सुदंष्ट्रस्तथार्षभो ज्योतिमुखो नभश्च ।

शैलान्समुद्यम्य विवृद्धकायाः प्रदुद्वुस्तं प्रति राक्षसेन्द्रम्

॥ ४३ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------------|------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | नभः च | நபனும் |
| विवृद्धकायाः | பெருமுடல் படைக்க | शैलान् | மலைகளை |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனும் [ப்பெற்ற | समुद्यम्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| गवयः | கவயனும் | तं | அந்த |
| सुदंष्ट्रः | சுடந்தம்சுடந்தனும் | राक्षसेन्द्रं प्रति | ரக்ஷசன்னை எதிர்த்து |
| अर्षभः तथा | அர்ஷபனும் | प्रदुद्वुस्तं | தாக்கினார்கள். |
| ज्योतिमुखः | ஜ்யோதிமுகனும் | | |

तेषां महारान् स चकार मोघान्क्षोधिपो वाणगणैः शितायैः ।

तान्वानरेन्द्रानपि वाणजाकैर्विभेदं जाम्बूनदचित्रपुङ्खैः

॥ ४४ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------------------|----------------------------------|
| रक्षोधिपः | ரக்ஷோதிமன்னன் | सः | அவன் |
| तेषां | அவர்களுடைய | जाम्बूनदचित्रपुङ्खैः | கொண்டமயமாய் ஆழ கிய முனைகளுற்ற |
| महामान् | அழகனை | वाणजालैः | பாணசூழ்க்களால் |
| शितायैः | சூரியமுனைகளுற்ற | तान् | அந்த |
| वाणगणैः | பாணசூழ்க்களால் | वामरेन्द्रान् अपि | வாமரேந்திரத்தமர்களை |
| मोघान् | ஹீனரணவகளை | विभेद | துளைத்தான். [யும் |
| चकार | செய்து விட்டான். | | |

ते वानरेन्द्रास्त्रिदशारिवाणैर्भिन्ना निपेतुर्भुवि भीमकायाः ।
ततस्तु तद्धानरसैन्यमुग्रं प्रच्छादयामास स बाणजालैः ॥ ४५ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|---------------|------------------|
| भीमकायाः | பெருமுடல் படைக் | ततः | அதன்மேல் |
| ते | அந்த [கப்பெற்ற | सः | அவன் |
| वानरेन्द्राः | வானரோத்தமர்கள் | बाणजालैः तु | பாணவரிசைகளால் |
| त्रिदशारिवाणैः | தேவசக்தானுலின் பாணங்களால் | | லேயே |
| भिन्नाः | பிளவுண்டவர்களால் | तद् | அந்த |
| भुवि | பூமியில் | उग्रं | பயங்கரமான |
| निपेतुः | சிழுந்துவிட்டார்கள், | वानरसैन्यं | வானரச்சேனையை |
| | | प्रच्छादयामास | மறைத்துவிட்டான். |

ते वध्यमानाः पतिताः प्रवीरा नानघमाना भयशल्यविद्धाः ।

शास्त्रामृगा रावणसायकातां जम्बुः शरण्यं शरणं स रामम् ॥ ४६ ॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|--|
| ते | அந்த | भयशल्यविद्धाः | { பயமாகிற அம்புமுனைகளால் சூத்தப்பட்டவர்களால் |
| प्रवीराः | பிரவிர்த்திபெற்ற சூரர்களான | पतिताः | தேரல்லியடைந்து |
| शास्त्रामृगाः | வானரர்கள் | नानघमानाः | கதறிக்கொண்டு |
| रावणसायकातां | { ராவணனது பாணங்களால் நொவுண்டாகப்பட்டவர்களால் | शरण्यं | யாரும் புகுமிடமாகிய |
| वध्यमानाः | புடைக்கப்பட்டு | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| | | शरणं | தஞ்சமாய் |
| | | जम्बुः स | அடைந்தார்கள். |

ततो महात्मा सन्धुर्धनुष्मानादाय रामः सहसा जगाम ।

तं लक्ष्मणः प्राञ्जलिरभ्युपेत्य उवाच वाक्यं परमार्थयुक्तम् ॥ ४७ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|---------------|---------------------|
| धनुष्मान् | விடவிரண்டும் | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிபந்தம் செய்து |
| महात्मा | மகாத்மாவமான | | கொண்டு |
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | परमार्थयुक्तं | பெருக்காரியத்தில் |
| ततः | அதனால் | | தான் முன்வந்து நிற் |
| सहसा | தகவறமே | तं अभ्युपेत्य | அவரைக் கிட்டி [சும் |
| धनुः आदाय | கொடுத்ததை, தகைப் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| जगाम | புறப்பட்டார். [பற்றி | उवाच | பின்வருமாறு |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | | மொழிந்தார் : |

कामार्थं सुपर्याप्तो वधायास्य दुरात्मनः ।

विधमिष्याम्यहं नीचमनुजानीहि मां प्रभो ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-------------|-------------------|
| कार्यं | "அண்ணா! | अहं | நான் |
| प्रभो | பிரபுவே! | नीचं | அஃபளுகிய இலகி |
| दुरात्मनः | தாண்டனாகிய | विधमिष्यामि | என்திளிடுவேன். |
| अस्य | இவனது | मां | அடியேனுக்கு |
| वधाय | வதைக்கு | कामं | திருளுள் முய்க்கு |
| सुपर्याप्तः | முற்றிலும் போது | अनुजानीहि | அனுமதித்தருள |
| | மானவனாகிய | | வேண்டும். |

तमब्रवीन्महातेजा राघः सत्यपराक्रमः

॥ ४९ ॥

மஹாதேஜா: மகா ஆற்றலுடைய
வரும்
சத்யபராஈம: உண்மைபான் ஆண்
மைப்புத்தவருபான்

ராம: ஸ்ரீராமர்
ந் அவரைப்பார்ந்து
அவரீந் பின்வருமாறு திரு
வாய்மலர்ந்தருளிணர்:

गच्छ यत्रपरश्वपि भव लक्षणं संयुगे । रावणो हि महावीर्यो रणेऽद्भुतपराक्रमः ॥ ५० ॥

சஈமண "ஸக்தமணு!
गच्छ நீயே போய்வா.
संयुगे போரில்
यत्रपर: च வெகு ஐரக்கிரமையு
டலிருப்பவனாய்
भव இரு
हि ஏனெனில்

ராவண: ராவணன்
महावीर्य: வெகு வீரமுள்ள
अपि அடிகாடுகூட [வன்.
रणे போரில்
अद्भुतपराक्रम: { இதுவரையில் பார்ந்து
ராத பரக்கிரமம் ப
டைக்கப்பெற்றவன்.

त्रैलोक्येनापि संकुदो दुष्प्रसहो न संशयः

॥ ५१ ॥

சங்குட: அபி "மிகக் கிளக்கொண்ட
வனாய் ஆவன். ஆகில்

त्रैलोक्येन முடிவாகமும் செந்து
வந்தாலும்
दुष्प्रसह: ஆடக்கூடியாதவன்.
संशय: न இது சிச்சயம்.

तस्य छिद्राणि मार्गस्य स्वच्छिद्राणि च लक्ष्य । चक्षुषा धनुषा यत्राद्रक्षात्मानं समाहितः ॥

तस्य "அவனது
छिद्राणि குறைகளை
मार्गस्य கவனித்ததி.
स्वच्छिद्राणि च உந்து குறைகளையும்
लक्ष्य உள்ளபடி ஞாபகத்
தில் வைத்துக்கொள்.

समाहित: பதட்டமென்பதில்லா
தவனாய்
यत्रात् உக்கிரத்தாலும்,
चक्षुषा தேகணாலும்,
धनुषा எலிமாலும்,
आत्मानं உன்னை
रक्ष காப்பார்நிக்கொள்.

राघवस्य वचः श्रुत्वा परिष्वज्याभिपूज्य च । अभिवाद्य ततो रामं ययौ सौमित्रिराह्वयम् ॥

சுமித்ரி: ஸரஸ்வதணர்
राघवस्य ஸ்ரீராமருடைய
वच: உத்திரவை
ध्रुवा கேட்டு
ततो அதனாய்
रामं ஸ்ரீராமரை

परिष्वज्य திருவடிகளில்
ஸ்பர்சித்து
अभिपूज्य च தனக்காததிற்காகப்
புகழ்ந்துவிட்டு
अभिवाद्य மமஸ்காரம்செய்து
आह्वयं போருக்கு
ययौ சென்றார்.

स रावणं वारणहस्तबाहुर्ददर्श दीप्तो यत्भीमचापम् ।
पच्छादयन्तं शरच्छृङ्खलैस्तान्वानरान्भिन्नविकीर्णदेहान् ॥ ५४ ॥

| | | |
|--|---|---|
| <p>वासहस्तबाहुः { वाணைத்து தூதிகளைக்கண் டோன்ற கைகளைபு ளைய</p> | <p>சாந் வானரான்</p> | <p>அந்த வானரர்களை</p> |
| <p>सः दीप्तोयत्- } भीमचापं }</p> | <p>ஆவள் இவர்க்கில் தனும் உ.வ ர தீ தூக்கப்பட்டதும் பயங்கரமான துமான வில்லைபு ளையவனும்</p> | <p>மினவிகிரிண்டேஹந் { காயம்பட்டு உருப்பு கள் முதிந்த தேகங்க ளையு ளையவர்களாய்</p> |
| <p>शरच्छृङ्खलैः</p> | <p>சரமரரிவரிளைகளால்</p> | <p>पच्छादयन्तं रावणं वदर्शं</p> |
| | | <p>உறுக்கொண்டிருக்கிற வனுமான ராவணனை கண்டார்.</p> |

तपालोचय महातेजाः हनुमान्मास्तात्मजः । निवार्य शरजालानि प्रदुद्राव स रावणम् ॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| <p>महातेजाः मास्तात्मजः सः हनुमान्</p> | <p>மகா ஆற்றல் கொண்ட டவரும் வாயுமந்தருமாகிய அந்த நனுமான்</p> | <p>तं रावणं आलोचय शरजालानि निवार्य प्रदुद्राव</p> | <p>அந்த ராவணனை டோக்குவைத்து பாணவருகங்களை தடுத்துக்கொண்டு ஓடூர்.</p> |
|---|---|--|--|

रथं तस्य समासाद्य भुजसुर्यम्प दक्षिणम् । त्रासयन्रावणं धीमान्हनुमान्वाचयमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--|--|--|--|
| <p>धीमान् हनुमान् तस्य रथं समासाद्य दक्षिणं भुजं</p> | <p>தண்ணிறவானராகிய நனுமான் அவனது ரதத்தை அடைந்து வலது கையை</p> | <p>उचम्य रावणं सासयन् वाचयं अब्रवीत्</p> | <p>ஒங்கி ராவணனை பயமுறுத்திக்கொ ண்டு ஒரு கொல்லை பின்வருமாறு மொழிந்தார்.</p> |
|--|--|--|--|

देवदानवगन्धर्वैर्यक्षैश्च सह राक्षसैः । अवध्यत्वं त्वया प्राप्तं वानरेभ्यस्तु ते भयम् ॥ ५७ ॥

| | | | |
|---|---|---|--|
| <p>देवदानव- } गन्धर्वैः } राक्षसैः सह यक्षैः च त्वया</p> | <p>“ தேவர்கள் தானவர்க ளும், கந்தர்வர்கள் இவர்களாலும் ஆரக்கர்களோடு கூட யக்ஷர்களாலும், தான் உன்னால்</p> | <p>अवध्यत्वं प्राप्तं ते भयं वानरेभ्यः तु</p> | <p>மரணமீண்ட அடைவப்பட்டிருக் கிறது. உனக்கு ஆபத்த வானரர்களிடமிருந்து தான்.</p> |
|---|---|---|--|

एष मे दक्षिणी बाहुः पञ्चशाखः समुद्यतः । विधमिष्यति ते देहाद्भूवात्मानं चिरोपितम् ॥

| | | | |
|----------|------------------------|------------|------------------------|
| மே | “கனது | தே | உணது |
| पञ्चशाखः | ஐந்து கிரங்களை யுடையது | देहात् | உடலினின்றும் |
| | யிதும் | विधमिष्यति | வெகுநேரமாய் |
| समुद्यतः | உயர்த்துக்கொண்ட | | கடவேழிருந்த |
| एषः | இந்த [கமாள | भूवात्मानं | சித்திர்பந்திரில் மூழ் |
| दक्षिणः | வலது | | கிய சித்தத்தை |
| बाहुः | கை | विधमिष्यति | சிதற மறதினிடும்.” |

श्रुत्वा हनुमतो वाक्यं रावणो भीमविक्रमः । संरक्तनयनः क्रोधादिदं वचनमब्रवीत् ॥५९॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|--------------------|
| भीमविक्रमः | அகிசய ஆற்ற துண்டய | क्रोधात् | கோபத்தால் |
| रावणः | ராவணன் | संरक्तनयनः | கண்கள் சிவந்தவனாகி |
| हनुमतः | ஹனுமாளின் | इदं | யின்வரும் |
| वाक्यं | சொல்லை | वचनं | சொல்லை |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अब्रवीत् | மொழிந்தான் : |

क्षिप्रं प्रहर निःशङ्कं स्थिरां कीर्तिमवाप्नुहि । तनस्त्वां ज्ञातविक्रान्तं नाशयिष्यामि वानर ॥

| | | | |
|----------|--------------|-----------------|---|
| वानर | “கூரக்கே! | अवाप्नुहि | அடைவாய். |
| निःशङ्कं | அச்சமின்றி | तनः | அதன்மேல் |
| क्षिप्रं | இப்போதே | ज्ञातविक्रान्तं | { வல்லகை & தீத்தகையை தெய்க்கண்டு கொள் எப்பட்ட |
| प्रहर | ஓர் அறை அறை. | त्वां | உன்னை |
| स्थिरां | நீடித்த | नाशयिष्यामि | ஒழித்தவிடுவேன்”. |
| कीर्ति | புகழை. | | |

रावणस्य वचः श्रुत्वा वायुसूनुर्वचोऽब्रवीत् । महत् हि मया पूर्वमक्षं स्मर सुतं तव ॥६१॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|----------|-----------------------------|
| वायुसूनुः | வாயுபுத்தல்வர் | मया | என்னால் |
| रावणस्य | ராவணனது | महत् | கீழ்த்தப்பட்ட |
| वचः | சொல்லை | तव | உணது |
| श्रुत्वा | கேட்டு | सुतं | புத்தல்வரை |
| वचः | ஓருசொல்லை | अक्षं हि | அக்சனியே |
| अब्रवीत् | யின்வரும்மூன்று மொழிந்தான்: | स्मर | ஐய்பொழுது களை சிந்தொன்.” |
| पूर्वं | “இசந்தமுந்தி | | |

एवमुक्तो महातेजा रावणो राक्षसेश्वरः । आजघानानिलसुतं तलेनोरसि वीर्यवान् ॥६२॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|----------|------------------|
| महातेजाः | வெகுநல்லமைக அமைந்தவனும் | एवं | போர்கண்டவண்ணம் |
| वीर्यवान् | வீரயவானும் | अकः | சொல்லப்பட்டவனாகி |
| राक्षसेश्वरः | ராக்ஷஸன் னனும் மரகிய | अनिलसुतं | மருதிகைய |
| | | तलेन | உள்ளக்கையால் |
| रावणः | ராவணன் | उरसि | மார்பில் |
| | | आजघान | புடைத்தான். |

स तलाभिहतस्तेन चचाल च मुहुर्मुहुः । स्थित्वा मुहुर्ते तेजस्वी स्वैर्यं कृत्वा महामतिः ॥
आजधानाभिसंकुद्धस्तलेनैवामरद्विषम् ॥ ६४ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|-------------|---------------------------------|
| तेन | அவனால் | तेजस्वी | அவரானந்தை பொறுக்கமாட்டா, அவராகி |
| सुहुः सुहुः | விட்டு விட்டு | अभिसंकुद्धः | பிரகச் சினம்முண்டவராய் |
| तलाभिहतः | உள்ளங்கையால் அடிக்கப்பட்ட | स्वैर्यं | ஆண்மையை |
| सः च | அவரும் | कृत्वा | மேற்கொண்டு |
| चचाल | வெப்பதறிஞர். | अमरद्विष एव | தேவசத்தூருவையும் |
| महामतिः | பேரிவானராகிய | तलेन | உள்ளங்கையால் |
| मुहुर्ते | சிறிதுநேரம் [அவர் | आजधान | புடைத்தார். |
| स्थित्वा | நிலைகத்துநின்ற | | |

ततस्तलेनाभिहतो वानरेण महात्मना । दशश्रीवः समाधूतो यथा भूमिचलेऽचलः ॥३५॥

| | | | |
|----------|-----------------|---------|-------------------|
| महात्मना | பேரிவடிபடைக்கப் | ततः | அதனால் |
| वानरेण | வானரால் [பெற்ற | भूमिचले | பூகம்பத்தில் |
| तलेन | உள்ளங்கையால் | अचलः | ஓர் மலை |
| अभिहतः | புடைக்கப்பட்ட | यथा | எப்படியோ அப்படியே |
| दशश्रीवः | சாவணன் | समाधूतः | உதறல்கொண்டான். |

संशामे तं तथा दृष्ट्वा रावणं तलताडितम् । ऋषयो वानराः सिद्धा नेदुर्देवाः सहासुरैः ॥

| | | | |
|---------|---|----------|--|
| ऋषयः | ரிஷிகளும் | तं | அந்த |
| वानराः | வானரர்களும், | रावणं | சாவணனை |
| सिद्धाः | சித்தர்களும், | तथा | அவ்வாறு |
| असुरैः | { துந்திரன், வருணன், அக்னி முதலிய தேவத்தலைவர்களோடு | तलताडितं | உள்ளங்கையால் அடிக்கப்பட்டவரும் கவனித்து |
| सह | சுட | दृष्ट्वा | { ஒருவரோடொருவர் புகுந்து பேசிக் கொண்டார்கள். |
| देवाः | தேவர்களும் | नेदुः | |
| संशामे | பேசில் | | |

अथाश्वास्य महातेजा रावणो वाक्पमव्रवीत् । साधु वानर वीर्येण श्लाघनीयोऽसि मे रिपुः ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|-----------|-------------------|
| अथ | அப்பொழுது | वानर | "குரங்கே! |
| महातेजाः | மகா ஆற்றலுடைய | साधु | பேஷ்! |
| रावणः | சாவணன் | वीर्येण | பார்க்கிரமத்தால் |
| अश्वास्य | தெளிந்தெழுந்து | मे | எனது |
| वाक्प | ஒரு சொல்லை | रिपुः | சத்துருவாகிய நீ |
| मव्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தான் : | श्लाघनीयः | கொண்டாடத்தக்கவ |
| | | अति | இருக்கின்றனை. [ஊக |

रावणेनैवमुक्तस्तु मारुतिर्वाक्यपत्रवात् । धिगस्तु माय वीर्येण यस्त्वं जीवहि रावण ॥७४॥

रावणेन राவணனால்
 तु இவ்வியதயத்தில்
 एवं மேற்கண்டவாறு
 उक्तः சொல்லப்பட்ட
 मारुतिः மாருதி
 वाक्यं ஒரு சொல்லை
 भवतीन् பின்வருமாறு
 பொழிந்தார்;

रावण "राவணா!
 यः எந்த
 त्वं நீ
 जीवति तु நீண்டமுடிருடனிருக்க
 मय एतन् [கிறபடியால்
 वीर्येण வீர்யத்தை (ஆர்வம்)
 धिक् भन्तु பழிக்கவேண்டும்.

सकृत् पहरेदानीं दुर्बुद्धे किं विकल्पसे । नतस्त्वां मायिका मुष्टिर्न विष्यति यमक्षयम् ॥

दुर्बुद्धे "தர்புத்தியுள்ள
 ਕਿ ஏன்
 विकल्पसे தற்புகழ்ச்சிசெய்து
 கொண்டுமின் தலை?
 इदानीं இப்பொழுது
 तु இன்னும்
 सकृत् ஒரு தடவை

प्रहर अறை.
 ततः அதன்மேல்
 मायिका எனது
 मुष्टिः முத்தி.
 त्वां உன்னை
 यमक्षयं न विष्यति { யமையது மாளிக்கைக்கு
 கொண்டுபோய் சேர்
 க்கப்போகிறது."

ततो मारुतिवाक्येन क्रोधस्तस्य तदाऽज्वलत् । संरक्तनयनो यवान्मुष्टिमुचम्य दक्षिणम् ॥

पातयामास वेगेन वानरोऽरसि वीर्यवान्
 तदा अप்பொழுது
 मारुतिवाक्येन மாருதி சொல்லால்
 तस्य அவனுக்கு
 क्रोधः கினம்
 अज्वलत् பொக்கிவிட்டது.
 ततः அதனால்
 वीर्यवान् வீர்யவானான அவன்
 संरक्तनयनः கண்கள் சிவந்தவனாகி

॥ ७१ ॥
 दक्षिणं வலது
 मुष्टिं முத்தியை
 उचम्य ஒக்கி
 वानरोरसि வாணரின் மார்பில்
 पलात् தன்னுடையன்ற வறுக்
 वेगेन கொண்டு
 पातयामास சடுமையால்
 अक्षतान्.

हनुमान्क्षसि व्यूढे संचचाल हतः पुनः

हनुमान् ஹனுமார்
 व्यूढे அகன்ற
 क्षसि மார்பில்

॥ ७२ ॥
 हतः தட்டிக்கொண்டவரால்
 पुनः மறுபடியும்
 संचचाल கைக்கொள்ளார்.

विह्वलं तु तदा दृष्ट्वा हनुमन्तं महाबलम् । रथेनातिरथः शीघ्रं नीलं प्रति समभ्यगात् ॥

अतिरथः அதிரதனால் அவன்
 तदा अप்பொழுது
 महाबलं மகாபலசாலியாயி
 हनुमन्तं ஹனுமாவை
 विह्वलं கலங்கிவிற்றகின் தவரால்

दृष्ट्वा பார்த்து
 शीघ्रं உடனே
 रथेन तु சதத்திலிருந்தவன்
 नीलं प्रति நீலனை நோக்கி [ணமே
 समभ्यगात् சென்றான்.

राक्षसानामधिपतिर्दशमीवः प्रतापवान् । पञ्चगप्रतिवैभीषैः परमर्मातिभेदिभिः ॥ ७४ ॥

शरैरादीपयामास नीलं हरिचमूपतिम्

॥ ७५ ॥

| | |
|---------------|-----------------------------------|
| प्रतापवान् | பிரதாபசாலியர் |
| राक्षसानां | ராட்சசங்கள் |
| अधिपतिः | மன்னனுமாயினர் |
| दशमीवः | தசமீவன் |
| पञ्चगप्रतिभैः | சரீர்ப்பங்களை நிகர்த்த வைகளும் |
| भीमैः | பலங்கரமானவை களும் |

| | |
|-----------------------|--|
| परमर्माति- भेदिभिः | சத்தூறுக்களின் மர்ம ஸ்தானங்களைப் பின்க்கும் தன்மை வாய்க்தவைகளு பாணத்தொடர் [மர்ம வாணசேனாபதியான நீலனை கொண்டிருந்தார். |
| शरैः | |
| हरिचमूपति | |
| नीलं | |
| आदीपयामास | |

स शरौघसमायस्तो नीलः कपिचमूपतिः । करणैकेन शैलाम् रक्षोधिपतयेऽसृजत् ॥ ७६ ॥

| | |
|------------|-----------------------------------|
| कपिचमूपतिः | காபிசமூபதி வான |
| सः | அந்த |
| नीलः | நீலன் |
| शरौघसमायसः | பாணசமூகத்தால் கொவிழிசூப்பவனாகி |

| | |
|-------------|-----------------------------|
| एकेन | ஒரு |
| करणेन | கைபால் |
| शैलाम् | மலைச்சிகரமொன்றை |
| रक्षोधिपतये | அரக்கமன்னனைக் குறிவைத்து |
| असृजत् | எறிந்தான். |

हनुमानपि तेजस्वी समाश्वस्तो महामनाः । विप्रेक्षमाणो युद्धेषुः सरोषमिदमववीत् ॥ ७७ ॥
नीलेन सह संयुक्तं रावणं राक्षसेश्वरम् । अन्येन युध्यमानस्य न युक्तमभिधावनम् ॥ ७८ ॥

| | |
|--------------|-----------------------------|
| तेजस्वी | மகா பரக்கிரமசாலி யும் |
| महामनाः | பெரும்புகழ்பெற்ற வருமான |
| हनुमान् अपि | ஹனுமாரும் |
| समाश्वसः | சிரமம் தீர்த்தவராகி |
| युद्धेषुः | போரில் எண்ணக் கொண்டவராய் |
| राक्षसेश्वरं | ராட்சஸமன்னனும் |
| रावणं | ராவணனை |
| नीलेन | நீலனொடு |
| सह | கூட |

| | |
|---------------|---|
| संयुक्तं | போர்புரிந்துகொண் டிருக்கின்றவனாய் |
| विप्रेक्षमाणः | பார்த்து |
| सरोषे | மிக்ககோபத்துடன் |
| इदं | பின் வருமாறு |
| अववीत् | எகினார். |
| युध्यमानस्य | “ஒருவனுடன் போர் புரிந்துகொண்ட ருக்கும் உணக்கு வேறொருவனொடு போர்புரிதென்பது தகுதியன்று.” |
| अनेन | |
| अभिधावनं | |
| युक्तं न | |

रावणोऽपि महातेजास्तच्छूङ्क्षं सप्तभिः शरैः । आजघान सुतीक्ष्णार्थैस्तद्विकीर्णं पपात् ह ॥

| | |
|-----------------|---------------|
| महातेजाः | மிக ஆற்றலுடைய |
| रावणोऽपि | ராவணனும் |
| सुतीक्ष्णार्थैः | மிகக்கூரான |
| सप्तभिः | ஏழு |
| शरैः | பாணங்களை |

| | |
|----------|---------------|
| नष्टं | அந்த சிகரத்தை |
| आजघान | பிளந்தான். |
| नष्टं | ஆதாயம் |
| विकीर्णं | சிதறண்டு |
| पपात् | விழுந்தது. |

तद्विकीर्णं गिरेः शृङ्गं दृष्ट्वा हरिचमूपतिः । कालाशिरिव जज्वाल कौपेन परवीरहा॥८०॥

| | | | |
|------------|----------------------------|----------|-----------------|
| पस्वीरहा | சத்ருகிரீரங்களை நுழைக்கும் | विकीर्णं | ஆளரகிலிட்ட, தரக |
| हरिचमूपतिः | கொண்ட சிறைஞாட திவாளன் | शृङ्गा | கண்டு |
| गिरेः | மலைமீது [அவன்] | कौपेन | கொபத்தால் |
| तत् | அந்த | कालाशिः | பிரளயகாலத்தி |
| शृङ्गं | கிடைக்கை | इव | போலவே |
| | | जज्वाल | கொதித்தான். |

सोऽश्वकर्णान्धवान्सालांश्चूतांश्चापि सुपुष्पितान् । अन्यांश्च विविधान्दक्षान्क्षेत्रक्षिपेप संयुगे॥

| | | | |
|-------------|------------------------|--------------|-------------------|
| सः | அந்த | सुपुष्पितान् | பூக்கள் நிறைந்த |
| नीलः | நீலன் | चूतान् च | மாடாக்களையும் |
| संयुगे | போரில் | अन्यान् | மற்றுமுள்ள |
| अश्वकर्णान् | அசுவகர்ணனிரிசூதங்களை | विविधान् | பலவகை |
| धवान् | தவங்களையும், [நீலனும்] | सुक्षान् च | மாக்களையும் |
| सालान् अपि | ஆச்சு மாக்களையும், | क्षिपेप | விட்டு எறித்தான். |

स तान्दक्षान्समासाद्य प्रतिचिच्छेद रावणः । अभयवपत्सुधारेण शर्वपेण पावकिम्॥८२॥

| | | | |
|---------------|------------------------|---------|---------------------|
| रावणः | ராவணன் | पावकिं | அகன்பகவான் புதல் |
| तान् | அந்த | | வந்தீது (நீலன்மீது) |
| वृक्षान् | விரிசூதங்களை | सुधारेण | மிகக் கடுமையான |
| समासाद्य | எதிர்த்து | शर्वपेण | பாணவர்க்கத்தால் |
| प्रतिचिच्छेद् | வெட்டி த்தன்விரிசூதம். | अभयवपत् | அஞ்சித்தான். |
| सः | அவன் | | |

अभिवृष्टः शरीरेण मेघेनेव महाचलः । ह्रस्वं कृत्वा तदा रूपं ध्वजाये निपपात ह ॥८३॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------|----------------------------|
| महाचलः | ஓர் பெரும்மலை | रूपं | உருவத்தை |
| मेघेन | மேகத்தால் | ह्रस्व | மிகச் சிறியதாய் |
| इव | எப்படியோ அப்படியே | कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| शरीरेण | சரமரியால் | ध्वजाये | தவஜத்தின் ஹனியில் |
| अभिवृष्टः | பொழியப்பட்ட | निपपात | போய் உட்கார்த்து விட்டான். |
| | அவன் | | |
| तदा | அப்பொழுது | ह | ஊன்! |

पावकात्मजमालोक्य ध्वजाये समुपस्थितम् । जज्वाल रावणः कौधात्ततो नीलो ननाद च॥

| | | | |
|------------|----------------------|--------|----------------|
| ध्वजाये | தவஜத்தின் ஹனியில் | कौषान् | கொபத்தால் |
| पावकात्मजं | நீலனை | जज्वाल | கொதித்தான். |
| समुपस्थितं | உட்கார்த்திருக்கின்ற | ततः च | அப்பொழுதே |
| | வருக | नीलः | நீலன் |
| मालोक्य | பார் க்க | ननाद | ஆலக்தப்பூசலிட் |
| रावणः | ராவணன் | | டான். |

ध्वजाग्रे धनुषश्चाग्रे किरिटाग्रे च तं हरिम् । लक्ष्मणोऽथ हनुमांश्च दृष्ट्वा रामश्च विस्मिताः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|--------------------------|
| हनुमान् च | ஹனுமாளும், | किरीटाग्रे च | கிரீடத் திருச்சிறியிலும் |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணனும், | तं हरिं | அந்த வானரனை |
| रामः च | ஸ்ரீராமரும் | अथ | அப்பொழுது |
| ध्वजाग्रे | கொடி தூளியிலும் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| धनुषः | விடில்லின் | विस्मिताः | சூச்சர்யமடைந்தார் |
| अग्रे च | முனையிலும் | | கள். |

रावणोऽपि महातेजाः कपिलाश्वविस्मितः । अस्त्रपाहास्यामास दीप्तमाग्नेयमद्भुतम् ॥८६॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|---------------------|
| महातेजाः | மகர் பராக்கரமசாஸி | वोसं | ஐவஸி, த் துக்கொண்டி |
| रावणः अपि | ராவணனும் [யாகிய | आग्नेयं | ஆக்கிணைய |
| कपिलाश्व- | காஸரணின் சாமர்த்ய | मखं | அஃதிர நிதை |
| विस्मितः | த்திணைச்சரியம் அ | आहारवामास | ஊடியிலெடுத்துக் |
| | டைத்தவனாகி | | கொண்டான். |
| अद्भुतं | அத்புதமானதும் | | |

ततस्ते चुकुशुहृष्टा लब्धलक्षाः प्रवङ्गमाः । नीललाघवसंभ्रान्तं दृष्ट्वा रावणमाहवे ॥ ८७ ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------|------------|---------------------|
| ते हवङ्गमाः | அந்த வானரர்கள் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| आहवे | பொலில் | ततः | அதனால் |
| रावणं | ராவணனை | लब्धलक्षाः | சந்திதாவுச்செய்தியை |
| | நிலைந்து சாமர்த்தியத் | | யடைந்தவர்களாகி |
| नीललाघवसंभ्रान्तं | தால் தடுமாற்றமடை | हृष्टाः | மகிழ்ந்து |
| | ந்தவனாக | चुकुशुः | சூரவாசித்தார்கள். |

वानराणां च नादेन संरब्धौ रावणस्तदा । संभ्रमाविष्टहृदयो न किञ्चित्प्रत्यपद्यत ॥८८॥

| | | | |
|----------|---------------|-------------------|------------------------|
| वदा | அப்பொழுது | संभ्रमाविष्टहृदयः | உள்ளம் கலவரத் |
| रावणः | ராவணன் | | தால் கலங்க |
| वानराणां | வானரர்களின் | किञ्चित् | எதைதயும் |
| नादेन च | ஆரவாரத்தாலும் | प्रत्यपद्यत न | செய்யத்தே,கரியா திருந் |
| संरब्धौ | கிடைத்தவனாய் | | தான். |

आग्नेयेनाथ संयुक्तं गृहीत्वा रावणः शरम् । ध्वजशीर्षस्थितं नीलमुद्गस्रत निशाचरः ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------------|---------------------|
| निशाचरः | அரக்கனாகிய | शरं | பாணத்தை |
| रावणः | ராவணன் | गृहीत्वा | எடுத்துக்கொண்டு |
| अथ | அப்பொழுது | ध्वजशीर्षस्थितं | கொடியின் தூளியிலும் |
| आग्नेयेन | ஆக்கிணையால் | | ட்கார்த்திருந்த |
| | மந்திரத்தால் | नीले | நிலனை |
| संयुक्तं | அயிபந்திக்கப்பட்ட | उद्गस्रत | உற்றுப்பார்த்தான். |

॥ ९० ॥

| | | | |
|--|-------------------|--------|-----------------|
| ततांऽब्रवीन्महातेजा रावणो राक्षसेश्वरः | | शतः | அப்பொழுது |
| महातेजाः | மிக ஆற்றல்கொண்ட | अवनीन् | வின் வருமாறு பொ |
| राक्षसेश्वरः | ராக்கஸையன் னனாகிய | | ழிந்தான் : |
| रावणः | ராவணன் | | |

कपे लाघवंयुक्तोऽसि मायया पर्याऽनया । जीवितं खलु रक्षस्व यदि शक्तोऽसि वानर ॥

கபே * குரங்கே!
 अनया இத்த
 परया பிகுத்த
 मायया மாயையினால்
 लाघवयुक्तः சாமர் தகையத்துடன்
 விளங்குகின்ற தவணை
 अशि நீரிருக்கின்ற நிலை.

वानर குரங்கே!
 शक्तः திறமைமையுடையவனாக
 खलु உன்னபடி
 अशि यदि நீரிருக்கின்றநிலை
 जीवितं பிராணனை [என்னால்
 रक्षस्व காப்பாற்றிக்கொள்.

तानि तान्यात्मरूपाणि सृजसि त्वपनेकशः । तथापि त्वां मया मुक्तः सायकोऽश्वप्रयोजितः॥
 जीवितं परिरक्षन्तं जीविताञ्जशयिष्यति ॥ ९३ ॥

स्व *ஐ
 अनेकशः பலவாறு
 तानि तानि அப்போதைக்கப்ப
 போது வேண்டிய
 आत्मरूपाणि உனது உருவங்களை
 सृजसि ஏடுத்துக்கொள்கின்ற
 तया अपि அப்படியெல்லாமிருப்ப
 मया என்னால் [பிறும்
 अश्वप्रयोजितः அஸ்திரமந்திரந்தால்
 அபிமந்திரிக்கப்பட்டு

मुक्तः விடுக்கப்பட்ட
 सायकः பாணமானது
 जीवितं பிராணனை
 परिरक्षन्तं {கிரமப்பட்டுக்காய்
 பாற்றிக்கொண்டிருந்
 தும்
 त्वां உன்னை
 जीवितान् பிராணனினின்று
 अशयिष्यति பிரித்தகிடப்ப
 போகிறது."

एवमुक्त्वा महाबाहु रावणो राक्षसेश्वरः । संघाय वाणमस्त्रेण चमूपतिमताडयन् ॥ ९४ ॥

महाबाहुः மஹாபாகுவும்
 राक्षसेश्वरः ராக்ஷஸமன்னனு
 रावणः ராவணன் [மாகிய
 एवं மேற்கண்டவாறு
 उक्त्वा சொல்லிவிட்டு

अस्त्रेण அஸ்திரத்தொடு
 वाणं பாணத்தை
 संघाय தொடுத்த
 चमूपति செனுபதையை
 अताडयन् தாக்கினான்.

सोऽश्वयुक्तेन वाणेन नीलो वक्षसि ताडितः । निर्दहमानः सहसा निपपात महीतले ॥

सः नीलः அந்த நீலன்
 वक्षसि மார்பில்
 अश्वयुक्तेन அஸ்திரத்துடன் விள
 वाणेन பாணத்தால் [க்தும்
 ताडितः அடியுண்டு

निर्दहमानः உனதுமையே தோவு
 படுகின்றவனாகி
 सहसा திடீரென
 महीतले தரையில்
 निपपात விழுந்தாவிட்டான்.

पितृमाहात्म्यसंयोगादात्मनश्चापि तेजसा । जानुभ्यामपतद्भूमौ न च प्राणैर्व्यपृज्यत ॥

पितृमाहात्म्य- } தந்தையின் பற்றின
 संयोगान् च } விஞ்ஞந்தமையா ளுடன்
 आत्मनः தனது
 तेजसा अपि சிறமையேடுருகை
 भूमौ பூமியில் [பாறும்

जानुभ्यां ? முதுகைவளைய படிந்
 अपतत् ? தாக்கொண்டு விழுந்
 त्तां. தான்.
 प्राणैः व्यपृज्यत न च மறந்திவிட்டுப் பிரிய
 வில்லை.

विसंज्ञं वानरं दृष्ट्वा दशग्रीवो रणोःसुकः । रथेनाम्बुदनादेन सौमित्रिमभिदुद्रुवे ॥ ९७ ॥
 आसाद्य रणमध्ये तु वारयित्वा स्थितो ज्वलन् । धनुर्विस्फारयामास कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|--------------|--------------------------------|
| दशग्रीवः | சாசுவணன் | अभिदुद्रुवे | வரிசைந்துசென் றுன். |
| वानरं | வானரரீன (கீலகை) | रणमध्ये | போர்க்களத்தின் |
| वारयित्वा | அடக்கவிட்டு | | நடுவில் |
| विसंज्ञं | பிரக்கஞ்சுத்திருக்கிற வனாக | आसाद्य | வந்துசெர்ந்து |
| दृष्ट्वा | கண்டு | स्थितः | உறுதியாய் நின்று |
| रणोःसुकः | போரில் ஆசைகொண்ட டவனுய் | मेदिनी | பூமியை [கொண்டு |
| अम्बुदनादेन | மேகவொலிகொண்ட | कम्पयन् | நடுக்கச்செய்கிறவன் |
| रथेन | ரதத்திலிருந்து கொண்டே | इव | போல் |
| सौमित्रि | வசந்தமணசை நோக்கி | ज्वलन् तु | பரபரப்புற்றவனாகவே |
| | | धनुः | கில்லை |
| | | विस्फारयामास | நானேற்றி டக்காரஞ் செய்தான். |

तमाह सौमित्रिरदीनसत्र्यो विस्फारयन्तं धनुषमेयम् ।
 अभ्येहि मामेव निशाचरेन्द्र न वानरांस्त्वं प्रतियोद्धुमर्हः ॥ ९९ ॥

| | | | |
|--------------|--|--------------|---------------------------------------|
| अदीनसत्र्यः | சனியா ஆற்றல் | आह | பின்வருமாறு |
| सौमित्रिः | வசந்தமணர் [கொண்ட | निशाचरेन्द्र | சொன்னார்: |
| अप्रमेयं | அளவுகடந்த மகிமை வாய்ந்தவனும் | मां एव | “அரக்கமன்னா! |
| धनुः | கில்லை | अभ्येहि | என்னையே |
| विस्फारयन्तं | டக்காரஞ்செய்து கொண்டிருக்கிறவ னுமான் | इव | எதிர்த்துப்போர்புரி. |
| तं | அவனைப்பார்ந்து | वानरान् | நீ |
| | | प्रतियोद्धुं | வானரர்களை |
| | | अर्हः न | எதிர்த்துப்போர்புரிய வற்றவனாகாய்.” |

स तस्य वाक्यं प्रतिपूर्णघोषं ज्याशब्दमुग्रं च निशम्य राजा ।
 आसाद्य सौमित्रिमवस्थितं तं कौपान्वितो वाक्यमुवाच रक्षः ॥ १०० ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|----------------------------|
| रक्षः | அரக்கனாகிய | ज्याशब्दं च | நாணிகொலிவையும |
| सः | அந்த | निशम्य | கேட்டு |
| राजा | மன்னவன் | कौपान्वितः | கோபம் மூண்டவனுய் |
| तस्य | அவரது | अवस्थितं | நித்தமாய் நிற்கின்ற |
| वाक्यं | பொழிவையும் | तं | அந்த |
| प्रतिपूर्णघोषं | எங்கும் நிகழ்ந்த ஒலி யுடன் கிளக்கியதும் | सौमित्रि आसाद्य | வசந்தமணசை க்கிட்டி |
| उवाच | பயக்காமலிருக்கிற னுமான் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| | | उवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |

दृष्ट्वाऽसि मे राघव दृष्टिर्मां प्राप्नोऽन्तर्गामी विपरीतबुद्धिः ।

अस्मिन्क्षणे यास्यसि मृत्युदेशं संसाद्यमानो मम बाणजालैः ॥ १०१ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-------------|---------------------------------------|
| राघव | “ ஸகந்தமணு ! | क्षणे | கொடியில் |
| दृष्ट्वा | தெய்வா தீண்டாய் | मम | எனது |
| विपरीतबुद्धिः | புத்தி தடுமாறி | बाणजालैः | பாணக் கட்டக்களால் |
| अन्तर्गामी | சாவுகிடைய நீ | संसाद्यमानः | மாய்த்துச் சாய்க்கப் படுகின்றவனுகி |
| । | எனது | मृत्युदेशं | யமனது புரிக்கு |
| दृष्टिर्मां | பார்வைமீள் | यास्यसि | போய்த் செர்ப |
| प्राप्तः असि | சிக்கிக்கொண்டு | | போகின்றாய்.” |
| अस्मिन् | இந்த [கிட்டகை. | | |

तमाह सौमित्रिर्विस्मयानो गर्जन्तमुद्भुत्तशिताम्वदंशम् ।

राजन्न गर्जन्ति महामभावा विकृत्यसे पापकृतां वरिष्ठ ॥ १०२ ॥

| | | | |
|---------------------|--|------------|--|
| सौमित्रिः | ஸகந்தமணர் | पापकृतां | “ பாவிசன்குக்குள் |
| गर्जन्तं | அட்டகாசம் செய்து | वरिष्ठ | { தலைவனென பட்டப் பெயர் கொண்டு விளங்கும் |
| | கொண்டிருக்கிறவனும் | राजन् | அரசர்! |
| उद्भुत्तशिताम्वदंशं | { நீண்ட கூரான முனை களைபுடைய கோரப் பற்களுடனிருக்கின் றவனுமான | महामभावाः | { உண்கையான பராக் கொடும் படைக்கப் பெற்றவர்கள் |
| तं | அவனைப்பார்த்து | गर्जन्ति न | வாயால் அளக்கமாட் டார்கள். |
| अविस्मयानः | ஸகந்தமம் செய்யாத வராய் | विकृत्यसे | தீயோ தற்புகழ்ச்சி செய் துகொள்கின்றனை. |
| आह | சின் வருமானது மொழிந்தார்: | | |

जानामि वीर्यं तव राक्षसेन्द्र वलं प्रतापं च पराक्रमं च ।

अवस्थितोऽहं शरचापपाणिरागच्छ किं मोघविकृत्यनेन ॥ १०३ ॥

| | | | |
|--------------|--|---------------|--|
| राक्षसेन्द्र | “ அரசக்கலைந்தனை ! | जानामि | என் வல்கு அறிசெய்தீ. |
| तव | உனது | मोघविकृत्यनेन | இவ்வறி போருமைமான தற்புகழ்ச்சியால் |
| वलं | ஆற்றலையும் | किं | ஆவதென்ன ? |
| वीर्यं | ஆண்மைமையையும் | अहं | என் |
| पराक्रमं च | { எதிரிகளின் முண்டின் து போர்புரியும் வல் மைமையையும் | शरचापपाणिः | அம்பையும் வில்லையும் கைவினைத்தியவனும் |
| प्रतापं च | பெருமைமையையும் | अवस्थितः | இற்கின்றேன். |
| | | आगच्छ | போரிட வருவாய்! |

स एवमुक्तः कुपितः ससर्ज रक्षोधिपः सप्त शरान्सुपुङ्गवान् ।

तांलक्ष्मणः काञ्चनचित्रपुङ्खैश्चिच्छेद् वाणैर्निशिताग्रधारैः

॥ १०४ ॥

| | | | |
|-------------|----------------|----------------|--------------------|
| புவே | இவ்வான் | लक्ष्मणः | ஸக்தம்மணர் |
| वक्तः | சொல்லப்பட்ட | काञ्चन- | } டிராண்டயமான அழகு |
| सः | ஆந்த | चित्रपुङ्खैः | |
| रक्षोधिपः | இராக்ஷஸமன்னன் | निशिताग्रधारैः | கூரிய முனைகளுடன் |
| कुपितः | கொண்டிருந்த | वाणैः | பாணங்களால் [மரண |
| सुपुङ्गवान् | சூர்மையான முனை | तान् | அவைகளை |
| सप्त | ஏழு [யந்த | चिच्छेद् | முறித்தெறிந்தார். |
| शरान् | பாணங்களை | | |
| ससर्ज | கிடுத்தான். | | |

तान्मेक्षमाणः सहसा निकृत्ताभिकृत्तभोगानिव पन्नगेन्द्रान् ।

लङ्केश्वरः क्रोधवशं जगाम ससर्ज चान्यान्निशितान्पृष्कान्

॥ १०५ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|---------------|------------------|
| लङ्केश्वरः | இலக்கைமன்னன் | मेक्षमाणः | பார்த்துக்கொண்டு |
| तान् | அவைகளை | क्रोधवशं जगाम | கொபத்திற்கடிமை |
| सहसा | ஏககாலத்தில் | | யானான். |
| निकृत्तभोगान् | உடலறுபட்ட | चान्यान् | வேறு |
| पन्नगेन्द्रान् | சிறந்த பாம்புகளை | निशितान् | கூரான |
| ऽव | போலவே | पृष्कान् च | பாணங்களையும் |
| निकृत्तान् | அறுபட்டுவிழுந்த வைகளாய் | ससर्ज | கிடுத்தான். |

स वाणवर्षे तु वर्षे तीव्रं रामानुजः कार्मुकसंपयुक्तम् ।

क्षुरार्धचन्द्रोत्तமகர்ணிமழை: शरांश्च चिच्छेद् न चुक्षुभे च

॥ १०६ ॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------|-----------------------|---|
| रामानुजः | ஸ்ரீராமரின் தம்பிரிவா | क्षुरार्धचन्द्रोत्तम- | } சுதாரம், அர்த்தசுந் |
| सः | ஆவர் [கிய | कर्णिमழை: | |
| कार्मुकसंपयुक्तम् | கொண்டத்தில் முனைக்கப்பட்ட | | சிரம், உத்தமகர்ணி, பல்லம் என்கிற பாணங்களால் |
| तीव्रं तु | கொடுமை செய்பார் | शान् च | பாணங்களையெல்லாம் |
| वाणवर्षे | காமாநிகைய | चिच्छेद् | முறித்துத் தள்ளினார். |
| वर्षे | பொழிந்தார். | चुक्षुभे च | கஷங்காமனுமிருந்தார். |

स वाणजालान्यथ तानि तानि मोघानि पश्यंस्त्रिदशारिराजः ।

विसिम्पिये लक्ष्मणलाघवेन पुनश्च वाणांनिशितान्मुषोच

॥ १०७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|---------------|---|
| सः | ஆந்த | मोघानि | கீண்டோனவைக |
| त्रिदशारिराजः | தேவசத்ருத்தகரின் | पश्यन् | கண்டு [வாசக |
| तानि तानि | ஆந்தந்த [மன்னன் | लक्ष्मणलाघवेन | } ஸக்தம்மணருடைய சாமர்த்தியத்தை கினைத்து |
| वाणजालानि | பாணஜாலங்களை | | |

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|-------------|
| अथ | அப்பொழுது | निशितान् | கூரிய |
| विक्षिप्तियं | ஆதர்யங்கிணை | वाणान् | பாணங்களை |
| पुनः च | பின்னும் [டான். | मुमोच | விடுத்தான். |

स लक्ष्मणश्चाशु शराच्छिताग्रान्महेन्द्रवज्राशनितुल्यवेगान् ।

संधाय चापे ज्वलनप्रकाशान्ससर्ज रक्षोधिपतेर्वधाय

॥ १०८ ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|----------------|--|
| सः | அந்த | ज्वलनप्रकाशान् | { செழுப்புப்போல் பிர காக்கின் நவைகளு மாள பாணங்களை வில்லில் வீணாவில் தொடுத்து பாசூவைமண்ணை வதவைய உத்தேசித்து விடுத்தார். |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும் | वरान् | |
| शिताग्रान् | கூரிய முனைகளுள்ள னவும் | चापे | வில்லில் |
| महेन्द्रवज्राशि- तुल्यवेगान् | { தேவீவந் திர ஹ்ணைய வஜ்ராயுதத்தையும் இடிமையுமே போன்ற சக்தி படைக்கப் பெற்றவைகளுமே | आशु | வீணாவில் |
| | | | संधाय |
| | | रक्षोधिपतः | பாசூவைமண்ணை |
| | | वधाय | வதவைய உத்தேசித்து |
| | | ससर्ज | விடுத்தார். |

स तान्प्रचिच्छेद् हि राक्षसेन्द्रश्छिन्वा च तांलक्ष्मणमाजघान ।

शरेण कालाग्निसमप्रभेण स्वयम्भुदत्तेन ललाटेदेशे

॥ १०९ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|-----------------------|---|
| सः | அந்த | कालाग्नि- समप्रभेण | { பிரளயகாலத்திற்குச் சமமான தூளி கொண்டதும் பிரம்பிதவரால் அளி ச்சுப்பட்டதுமான பாணமொன்றால் லக்ஷ்மணரை செற்றியபிரதேசத்தில் அடித்தான். |
| राक्षसेन्द्रः | அரக்கரிணைநகன் | स्वयम्भुदत्तेन | |
| तान् हि | அவைகளையும் | शरेण | பாணமொன்றால் |
| प्रचिच्छेद् | முறித்துத்தள்ளி னும். | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| च | அவைகளை யெல்லாம் | ललाटेदेशे | செற்றியபிரதேசத்தில் |
| छिन्वा | செறித்துத்தள்ளி விட்டு | आजघान | அடித்தான். |

स लक्ष्मणो रावणसायकात्क्षिचाल चापं शिथिलं मगृह्य ।

पुनश्च संज्ञां प्रतिलभ्य कुच्छ्राच्चिच्छेद् चापं विदशेन्द्रशयोः

॥ ११० ॥

| | | | |
|-------------|---|----------------|------------------------------|
| सः | அந்த | संज्ञां | தனத்தினை |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | प्रतिलभ्य | உடைந்து |
| रावणसायकान् | { ராவணனது பாணத் தால் நோவுண்டவ ராகி | शिथिलं | ரெலியிருந்த |
| चचाल | | கலங்கினார். | चापं |
| पुनः च | என்றாலும் | मगृह्य | உறுசிகாய்ப்பற்றித் கொண்டு |
| कुच्छ्राण् | வெகு கஷ்டத்தின் மேல் | विदशेन्द्रशयोः | இந்திரனின் சத்திரவி |
| | | चापं | வில்லை [எது |
| | | चिच्छेद् | முறித்துத்தள்ளினார். |

निकृत्तचापं त्रिभिराजघान वाणैस्तदा दाशरथिः शितायै ।

स सायकातो विचचाल राजा कुच्छाच संज्ञां पुनराससाद ॥ १११ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|---------|------------------|
| दाशरथिः | வசந்தமணர் | राजा च | மன்னனாரும் |
| तदा | அப்பொழுது | सायकातः | பாணங்களால் நோ |
| निकृत्तचापं | முறிபட்ட கில்லுட னிடுக்கும் அவனை | विचचाल | வுண்டவனாய் |
| शितायैः | சுறிய முனை கனத்த | कुच्छाच | துடித்தான். |
| त्रिभिः | மூன்று | संज्ञां | மிகப்பிரயாசையின் |
| चापैः | பாணங்களால் | पुनः | மேல் |
| आजघान | அடித்தார். | आससाद | பிரக்களஞ்சைய |
| सः | அந்த | | மீளவும் |
| | | | ஆடைத்தான். |

स कृत्तचापः शरताडितश्च मेदाद्रंगात्रो रुधिरावसिक्तः ।

जयाह शक्तिं समुद्रयशक्तिः स्वयम्भुदत्तां युधि देवशत्रुः ॥ ११२ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|----------------|--|
| देवशत्रुः | தேவர்களின் சத்ருவும் | मेदाद्रंगः | { உடம்பெல்லாம் கியர் |
| समुद्रयशक्तिः | மகா பிரதித்தியெற்ற சக்திமாமூமான | रुधिरावसिक्तः | { கையால் நனைந்தவ னாகவும் |
| सः च | அவனும் | स्वयम्भुदत्तां | { உடம்பெல்லாம் சத் தத்தால் நனைந்த |
| युधि | போரில் | शक्तिं | { வனாகவுமாசி |
| कृत्तचापः | முறிபட்ட கில்லுடை யவனாகவும் | जयाह | { பிரமீதேவரால் கொ டுக்கப்பட்ட |
| शरताडितः | பாணத்தால் யுண்ட வனாகவும் | | { சக்தியாய்த தந்த எடுத்ததுக்கொண் டான். |

स तां विधूमानलसन्निकाशां वित्रासिनीं वानरवाहिनीनाम् ।

चिक्षेप शक्तिं तरसा ज्वलन्तीं सौमित्रये राक्षसराष्ट्रनाथः ॥ ११३ ॥

| | | | |
|-------------------------|---------------------------------|------------|-----------------------------|
| राक्षसराष्ट्रनाथः | அகக்கொட்டுவந்த னாகிய | विक्षासिनी | வெளுண்டோடத் செய்கிற தமனை |
| सः | அவன் | तां | அந்த |
| विधूमानल- सन्निकाशां | { புணையற்ற அக்ஷிணய கிசுத்து | शक्तिं | சக்தியை |
| ज्वलन्तीं | { ஜ்வாலையுடன் கிசு குசிறதும் | सौमित्रये | வசந்தமணரை க்ருதி மையத்து |
| वानरवाहिनीनां | வானரவேகைகளை | तरसा | வினாவாக |
| | | चिक्षेप | கிடுத்தான். |

तामापतन्तीं भस्तानुजोऽश्वैर्जघान वाणैश्च हुताग्निकल्पैः ।

तथाऽपि सा तस्य विवेश शक्तिर्वाइन्वरं दाशरथेर्विशालम् ॥ ११४ ॥

| | | | |
|------------|---|----------|------------------|
| भरतानुजः | பரதரீயன் தம்பியானு மகர் | जवान | தடுத்தார். |
| हुताशिकलैः | { தேறாமஞ்செய்யப் பட்ட அக்னிகை சிகர்த்த | तथा अपि | அப்படியிருந்தும் |
| उग्रैः | கிறந்த | सा | அந்த |
| वापैः च | பரணய்களாலும் | शक्तिः | சக்தி |
| आपतन्ती | தண்ணீர் கொக்கிவரும் | तस्य | அந்த |
| तां | அதை | शशरभैः | சக்தி மணமுடைய |
| | | विशालं | அகன்ற |
| | | बाह्वतरं | மார்பில் |
| | | विश | கைத்தூவிட்டது. |

स शक्तिमान्छक्तिस्माहतः सन्मुहुः प्रज्वाल रघुपर्वारः ।

तं विह्वलन्तं सहसाऽभ्युपेत्य जग्माह राजा तरसा भुजाभ्याम् ॥ ११५ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|------------|----------------|
| शक्तिमान् | சக்திமாளும் | राजा | மன்னானும் அவன் |
| रघुपर्वारः | ரகுசுவர்த்தில் உத்தம வீரருமாகிய | विह्वलन्तं | பிரச்சுழிமுற்ற |
| सः | அவர் | ने | அவரை [கிடந்த |
| शक्तिसमाहतः सन् | சக்தியால் அடியுண்ட வராய் ஆகி | सहसा | புண்ணகையுடன் |
| मुहुः | ஓசு கொடிப்பொழுது | अभ्युपेत्य | கிட்டி |
| प्रज्वाल | மீட்டியபுகிவிட்டார். | भुजाभ्यां | இருகரங்களாலும் |
| | | तरसा | வலுவ்க்கொண்டு |
| | | जग्माह | கூக்கலுற்றான். |

हिमवान्मन्दरो मेरुखैलोक्यं वा सहामरैः । शक्यं भुजाभ्यामुद्धर्तुं न संख्ये भरतानुजः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-----------|---------------------------------|
| हिमवान् | இமயமலை | उद्धर्तुं | பெயர்த்து வேறிடத் தில் வைக்க |
| मन्दराः | மந்தரமலை | शक्यं | சாத்தயாளாறு |
| मेरुः | மேருமலை | संख्ये | பொசில் [மகலாம். |
| खैलोक्यं | நிலையுள்ளும் | भरतानुजः | பரதரீய தம்பியானு மகர் |
| अमरैः सह वा | தேவர்களைகூட என்றாலும் | न | சாத்தியமாதரிருந் தார். |
| भुजाभ्यां | அவரை இருகரங்க ளாலும் | | |

शक्त्या ब्राह्मण्यापि सौमित्रिस्ताडितस्तु स्तनान्तरे ।

विष्णोर्चिन्त्यं स्वं भागमात्मानं प्रत्यनुस्मरत् ॥ ११७ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------------|----------------|---------------------------------|
| सौमित्रिः स्नान्तरे | சக்தியை மார்பில் | स्वं तु | அவர்க்குமட்டுமே |
| ब्राह्मणा | பிரம்மணரை அடிகை வகையாகக் கொண்ட | विष्णोः | விஷ்ணுபகவானின் |
| शक्त्या | சக்தியினால் | भागं | அங்காளகிற |
| ताडितः अपि | அடிக்கப்பட்டவரளி ருக்கையில் | आत्मानं | பிறகிக்குணத்தை |
| अचिन्त्यं | ஓத்தகண்டியைத்தன என்ற ஊற்றத்தியதும் | प्रत्यनुस्मरत् | மீட்டித்துக்கொண் டிருந்தார். |

ततो दानवदर्पणं सौमित्रिं देवकण्ठकः । तं पीडयित्वा बाहुभ्यामभ्युर्द्ध्वनेऽभवत् ॥११८॥
अथैवं वैष्णवं भागं मानुषं देहमास्थितम् । विसंज्ञं लक्ष्मणं दृष्ट्वा रावणो विस्मितोऽभवत् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|------------|-------------------------------|
| देवकण्ठकः | தேவசுத்ருவாசிய | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| रावणः | ராவணன் | विसंज्ञं | பிரக்ஞை இழந்திருக் கிறவராக |
| एवं | இப்படியாய் | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| वैष्णवं भागं | விக்ஷணவின் அம்ச பரணயமும் | बाहुभ्यां | இரு கரங்களாலும் |
| मानुषं | மானிட | पीडयित्वा | அசைத்துப்பார்ந்து கிட்டு |
| देहं | உருவத்தை | उर्द्ध्वने | நாக்கும் விஷயத்தில் |
| आस्थितं | எடுத்துவைத்திருக்கிற வரும் | अभ्युः | வல்லமையற்றவனாக |
| दानवदर्पणं | அசுரர்களின் செருக் கை ஒழிப்பவரும் | अभवत् | இருந்தான். |
| सौमित्रिं | சுமித்திராதேவியின் புதல்வருமான | ततः | அதனால் |
| तं | அந்த | अथ | அப்பொழுது |
| | | विस्मितः | ஆச்சர்யமடைந்தவ யானானான். |
| | | अभवत् | இருந் |

अथ वायुसुतः क्रुद्धो रावणं समभिद्रवत् । आजघानोरसि क्रुद्धो वज्रकल्पेन मुष्टिना ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|-------------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | क्रुद्धः | கொடுக்கொண்டிருந்த அவர் |
| वायुसुतः | வானுமார் | वज्रकल्पेन. | வஜ்ரகல்தத்தை சிகர்த்த |
| क्रुद्धः | மிகச் சினக்கொண்ட வராசு | मुष्टिना | முஷ்டியால் |
| रावणं | ராவணனை | वरसि | மார்பில் |
| समभिद्रवत् | கொக்கி எதிர்த்து ஓடினார். | आजघान | குத்தினார். |

तेन मुष्टिप्रहारेण रावणो राक्षसेश्वरः । जानुभ्यामपतद्भूमौ चचाल च पपात च ॥१२१॥

| | | | |
|----------------|---------------------|--------|-------------------|
| तेन | அந்த | भूमौ | தரையில் |
| मुष्टिप्रहारेण | முஷ்டியின் குத்தால் | अपवत् | சாய்ந்துவிட்டான். |
| राक्षसेश्वरः | ராக்ஷசமன்னனுடைய | चचाल | மதிகலங்கினான். |
| रावणः च | ராவணனும் | पपात च | மானமுயிழந்தான். |
| जानुभ्यां | முழந்தான்களை மடித் | | |

आस्थैः स नेत्रश्रवणैर्ववा

| | | | |
|--------------|---|--------------|------------|
| सः | ச | श्रवणैः | சுரத்தத்தை |
| आस्थैः | | नेत्रश्रवणैः | அதிகமரல் |
| नेत्रश्रवणैः | | | க்கினான். |

विघूर्णमानो निथेष्ठो रथोपस्थ उपाविशत् । विमंज्ञो मूर्च्छितश्चासीन्न च स्थानं समालभत् ॥

निथேஷ்ட: எதுவும் செய்யமுடியாதவனாகி
 விघूर्ணமான: புரண்டுக்கொண்டு
 ரथோபஸ்த: ரதத்தின் பங்களில்
 உபாவிஸத்: கிடந்தான்.
 மூர்ச்சித: ஐம்புலன்களின் சக்தி
 குன்றியவனாய்

विमंज्ञः च विघूर्णमानो
 मूर्च्छितश्चासीन्न च स्थानं
 समालभत् न

பிரக்ஞை இழந்தவனாயும்
 ஆஸிவிட்டான்...
 எதிரிகளின் தாக்குதலை
 அடக்கும் சக்தியையும்
 அடைவாதிருந்தான்.

विसंज्ञे रावणं दृष्ट्वा समरे भीमविक्रमम् । ऋषयो वानराः सर्वे नेदुर्देवाः सवासवाः ॥

भीमविक्रमम् அளவுகடந்த ஆண்மைபுற்ற
 रावणं ராவணனை
 समरे போரில்
 विपक्षे பிரக்ஞையற்றுக் கிடப்பவனாகி
 दृष्ट्वा கண்டு

ऋषयः वानराः सवासवाः
 देवाः सर्वे नेदुः

ரீஷிகளும்
 வானரர்களும்
 இரதிர ஐஸ்விட்ட
 தெய்வர்கள்
 எல்லோரும்
 களங்கிப்பற்று ஆரவாரம்
 செய்தார்கள்.

हनुमानपि तेजस्वी लक्ष्मणं रावणादितम् ।

तेजस्वी பரக்கிரமசாலியாகிய
 हनुमान् ஹனுமார்
 रावणादितं ராவணனால் அடிக்கப்பட்ட

लक्ष्मणं अपि अந்த
 लक्ष्मणं अपि लக்ஷ்மணனாரையும்

वायुमनोः सुहृत्वेन भक्त्या परमया च सः ।

वायुमनोः वायுனின் புதல்வராகிய
 सः வானரனுடைய
 सुहृत्वेन கல்வனாண்மைத்தாலும்
 च அதேகருகூட
 परमया வரவேடத்திருவந்த
 மகிம

अनयद्राघवाभ्यां बाहुभ्यां परिगृह्य तम् ॥

बाहुभ्यां இருகைகளாலும்
 परिगृह्य தாக்கி எடுத்து
 राघवाभ्यां ஸ்ரீராமரது சன்னிதனைத்திற்கு
 अनयत् கொண்டுவர
 சேர்த்தார்.

शत्रूणामप्रकम्प्योऽपि लघुन्वमगमत्कपेः ॥

भक्त्या பக்தியாலும்
 शत्रूणां சத்ருக்களுக்கு
 भक्त्या असाசக்கமுடியாதவ
 सः अपि அவரும் [ராமிருந்த
 लघुन्वं லேசானிருக்கும்
 तन्ममस्य தன்மைமைய
 भगवत् மடைத்தார்.

तं समुत्सृज्य सा शक्तिः सौमित्रिं युधि दुर्जयम् । रावणस्य रथे तस्मिन्स्थानं पुनरुपागता ॥

सा शक्तिः அந்த சக்தி
 युधि போரில்
 दुर्जयम् வெல்லமுடியாத
 तं அந்த
 सौमित्रिं லக்ஷ்மணனை
 समुत्सृज्य விட்டுவிட்டு

रावणस्य ராவணனது
 तस्मिन् அந்த
 रथे ரதத்தில்
 स्थानं தனதுகுப்பிடத்திற்கு
 पुनः மறுபடியும்
 उपागता போய்ச்சேர்ந்தது.

आश्वस्तश्च विशल्यश्च लक्ष्मणः शत्रुसूदनः । विष्णोर्भागममीमांस्यमात्मानं प्रत्यनुस्सरन् ॥

| | | | |
|------------|--|------------------|------------------------------|
| शत्रुसूदनः | சத்ருக்களை ஒழிக்கும் | आत्मानं | தனது ஸ்வரூபத்தை |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | प्रत्यनुस्सरन् च | ஸ்பரிக்கின்ற வராகவே |
| अमीमांस्यं | { எவ்வித ஆராய்ச்சி யாலும் உன்னைய ஆறியமுடியாத | आश्वस्तः | நற்ச்சை தெளிந்தவ ராவினர். |
| विष्णोः | | विष्णोः | புண் ஆறியவர் |
| भागं | அம்சமாகிய | | ஆயினர். |

रावणोऽपि महातेजाः प्राप्य संज्ञां महाहवे । आददे निशितान्वाणाञ्छयाह च महद्भुः ॥

| | | | |
|-----------|---------------|----------|-------------------------|
| महातेजाः | மகா ஆற்றலுடைய | धनुः | வில்லை |
| रावणः अपि | ராவணனும் | जघाह | எடுத்துக்கொண்ட டான். |
| महाहवे | பெரும் போரில் | निशितान् | தூறிய |
| संज्ञां | பிரக்ஞையை | वाणान् च | பாணங்களை யும் |
| प्राप्य | ஆடைந்து | आददे | தொடுத்தான். |
| महद्भुः | கிறந்த | | |

निपातितमहावीरां वानराणां महाचमूम् । न्यहनत् स च संकुद्रो वानराणां महाचमूम् ॥

| | | | |
|--------------------------|--|------------|--------------------------------|
| सः | அவன் | महाचमूम् | பெரும் சேனைமையுமும் |
| संकुद्रः | மிகச்சினங்கொண்ட வனாகி | वानराणां | வானரர்களுடைய |
| वानराणां | வானரர்களுடைய | महाचमूम् च | பெரும் சேனை எல்லா வற்றையும் |
| निपातित- } महावीरां } | கின்னபின்னமாகக் பட்ட மகா வீரர் களை யுடைய | | |
| | | न्यहनत् | தாத்தி அடித்தான். |

ते हन्यमाना रौद्रेण क्षिप्रहस्तेन रक्षसा । राघवं शरणं जग्मुः प्रजापतिमिव प्रजाः ॥१३१॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| ते | அவர்கள் | प्रजाः | பிரஜைகள் |
| रौद्रेण | கொடியவனும் | प्रजापति | பிரம்மதேவரை |
| क्षिप्रहस्तेन | கைவரகவம் பெற்ற வனுமான் | इव | எப்படியோ அப்படி வே |
| रक्षसा | அரக்கனும் | राघवं | ஸ்ரீராமரிடம் |
| हन्यमानाः | நறிமீக்கப்படுகின்ற வர்களாய் | शरणं जग्मुः | சரணாய்ப் போய்ச் சேர்ந்தார்கள். |

राघवोऽपि रणे दृष्ट्वा कर्म रौद्रस्य रक्षसः । धनुः सज्यमुपादाय चापीकरविभूषितम् ॥ १३३ ॥

| | | | |
|-----------|-------------|---------------|----------------------------|
| राघवः अपि | ஸ்ரீராமரும் | कर्म | செயலை |
| रणे | போரில் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| रौद्रस्य | கொடிய | आपीकरविभूषितं | பொண்ணுலகுற்று விளக்கும் |
| रक्षसः | அரக்களின் | | |

| | |
|--------|-----------------|
| धनुः | கோதண்டத்தை |
| पश्यं | நாளைநீறி |
| उपादाय | வைதக்துக்கொண்டு |
| समरे | போரில் |
| दूरं | குரனூதிய |

| | |
|------------|--------------------------------------|
| रावणं | ராவணனை |
| शय्यं | சுத்திலிருக்கின்ற வனாக |
| अभिद्रुवाव | தூரத்திலிருந்தவண் ணமே பார்த்தார். |

निपातितमहावीरां द्रवन्ती वानरीं चमूम् । राघवस्तु रणे दृष्ट्वा रावणं समभिद्रवत् ॥

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமர் |
| रणे | போரில் |
| वानरीं चमूम् तु | வானரசேனையையும் கிழைவிழ்த்தப்பட்ட |
| निपातितमहावीरां | மொழும் விசர்களையு டையதாய் |

| | |
|------------|--------------------------------|
| द्रवन्ती | வெருண்டு ஓடுகிற தரய் |
| दृष्ट्वा | பார்த்து |
| रावणं | ராவணனை |
| समभिद्रवत् | எதிரிநோக்கிக்கொல்ல வந்தார். |

अथैनमुपसंगम्य हनुमान्वाक्यमब्रवीत् । मम पृष्ठं समाख्या राक्षसं शास्तुमर्हसि ॥ १३५ ॥

| | |
|-----------|----------------------------|
| अथ | அப்பொழுது |
| हनुमान् | ஹனுமார் |
| एनं | இவரை |
| उपसङ्गम्य | கிட்டி |
| वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தார். |

| | |
|---------|-------------------------|
| मम | * அடியையனது |
| पृष्ठं | பிடரியின் |
| समाख्या | ஏறிக்கொண்டு |
| राक्षसं | அரக்களை |
| शास्तुं | கொல்ல |
| अर्हसि | திருவுளக்கொள் விசாக. |

विष्णुर्यथा गरुत्मन्तं बलवन्तं समाहितः । तच्छ्रुत्वा राघवो वाक्यं वायुपुत्रेण भाषितम् ॥

आरुरोह महाशूरी बलवन्तं महाकपिम् ॥ १३७ ॥

| | |
|-------------|-----------------------|
| समाहितः | சிறு மனத்தின ராகிய |
| महाशूरीः | மகா குரரான |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் |
| वायुपुत्रेण | ஹனுமாரினால் |
| भाषितं | சொல்லப்பட்ட |
| सत् | அந்த |
| वाक्यं | விண்ணப்பத்தை |
| श्रुत्वा | பெருமைப்படுத்தி |

| | |
|------------|-------------------------|
| बलवन्तं | மகா பலசாலியாகிய |
| महाकपिं | வானகுரத்தமரின் மீது, |
| विष्णुः | விஷ்ணுவகவான் |
| बलवन्तं | பலசாலியாகிய |
| गरुत्मन्तं | குரடகவானின்மீது |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| आरुरोह | எறிக்கொண்டார். |

रथस्य रावणं संख्ये ददर्श मनुजाधिपः ॥ १३८ ॥

| | |
|-------------|-----------------------|
| * मनुजाधिपः | மானிட மன்னனான அவர் |
| रथस्य | ரதத்திலிருக்கும் |

| | |
|--------|------------------|
| रावणं | ராவணனை |
| संख्ये | போரில் |
| ददर्श | கண்முன் கண்டார். |

तमालोक्य महातेजाः प्रदुद्राव स राघवः । वैरोचनिमिव क्रुद्धो विष्णुरभ्युद्यतायुधः ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------------|---|
| महातेजाः | மிக ஆற்றலுடைய | अभ्युद्यतायुधः | { ஆர்வத்தை சித்த மாய உயரவைத்தவ ராகி |
| सः | அந்த | विष्णुः | விஷ்ணுபகவான் |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | वैरोचनि | பரிச்சக்சிரவர் த்தியை |
| ते | அவனை | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| भालोक्य | கண்டு | प्रदुद्राव | எதிர்த்துக்கொண்டுள்ளார். |
| क्रुद्धः | கொடுங்கொண்டவராய் | | |

ज्याशब्दमकरोत्तीव्रं वज्रनिष्पेषनिस्वनम् । गिरा गम्भीरया रामो राक्षसेन्द्रमुवाच ह ॥

| | | | |
|--------------------|---|---------------|---------------------|
| ज्याशब्दं | காதலேசையை | गिरा | கொற்கொண்டு |
| वीमं | கடுமையாய் | राक्षसेन्द्रं | ராக்ஷஸமன்னனைப் |
| वज्रनिष्पेषनिस्वनं | இடி இடிப்பதுபோன்ற ஒலியுடையதாய் | | பார்த்து |
| अकरोत् | செய்தார். | उवाच | * பின்வருமாறு திரு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | வாய்மலர்ந்தருளிணர். |
| गम्भीरया | { உணர்ந்திராததும் உணர்ந்திருக்கவே ண்டியதுமாயிய பொ ருண்டக்கிய | ह | காண்! |

तिष्ठ तिष्ठ मम त्वं हि कृत्वा विप्रियर्माहशम् । क नु राक्षसशार्दूल गतो मोक्षमवाप्स्यसि ॥

| | | | |
|---------------|--|------------|--------------------------------------|
| राक्षसशार्दूल | " யாவருக்கும் புணியா யிருக்கும் அரக்க! | विप्रिये | அபகாரத்தை |
| तिष्ठ तिष्ठ | இரு! இரு! | कृत्वा | செய்துகிட்டிடு |
| त्वं | நீ | क गतः नु | எங்கு சென்றுதான் |
| मम हि | எனக்கே | मोक्षं | அதற்கெற்ற சிவாஷ்யரி ன்று தப்புதலை |
| ईदृशं | இவ்விதமான | अवाप्स्यसि | அடைவாய்? |

यदीन्द्रवैवस्वतभास्कुरान्वा स्वयम्भुवैश्वानरशङ्कुरान्वा ।
गमिष्यसि त्वं दश वा दिशोऽथवा तथाऽपि मे नाद्य गतो विमोक्ष्यसे ॥

| | | | |
|-----------------------------------|--|---------------|--|
| मे | " எனது | अथवा | அப்படியின்றி |
| गतः | கட்புலனுக்கிட்ட | दश | பத்து |
| त्वं | நீ | दिशः वा | திக்குகளில் என்கே தானாகட்டும் |
| अद्य | இப்பொழுது | गमिष्यसि यदि | ஓயப் புகுக்கிடுகின் றும் என்றாலும்; |
| इन्द्रवैवस्वत- भास्कुरान् वा | { இந்திரன், யமன், சூரி யன் இவர்களிடத் தில் தானாகட்டும். | तथा अपि | அப்பொதுக்கூட |
| स्वयम्भुवैश्वानर- शङ्कुरान् वा | { பிரமதேவர், அக்னி, சிவபெருமான் இவர் களிடத்தில் தானு கட்டும். | विमोक्ष्यसे न | உயிர்த்தப்பி இராய். |

यश्चैव शक्त्याऽभिहतस्त्वयाऽद्य इच्छन्विषादं सहसाऽभ्युपेतः ।

स एव रक्षोगणराज मृत्युः सपुत्रदारस्य तवाद्य युद्धे

॥ १४३ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|--------------|---------------------|
| ரக்ஷோணராஜ | "அரக்கரின் தலைமார் ! | இரண, ரா | தன் மதினாபிஷ்டமாய் |
| ய: | எவன் | | ஏற்றுக்கொள்கிறாடு; |
| அடிய | இப்பொழுது | ச: எவ | ஆவனே |
| சுவய | உன்னால் | அடிய | இப்பொழுது |
| சகசா | கருக்கெடை எண்ணாது | யுद्धे | போரில் |
| சாக்ய | சத்தி எனும் ஆஸ்தி | सपुत्रदारस्य | புத்திரர்கள், பனைவி |
| | ரத்தைதக்கொண்டு | | மார்கள் உள்ளிட்ட |
| अभिहतः * | அடிக்கப்பட்டானே; | तव च | எனக்கு |
| विषादं | பிரக்கூறு தப்பி | मृत्युः | எட்டாக |
| | கிருத்தலை | अभ्युपेतः | ஏற்பட்டுவிட்டான். |

एतेन चाल्यद्भुतदर्शनानि शरैर्जनस्थानकृतालयानि ।

चतुर्दशान्यात्तवरायुधानि रक्षःसहस्राणि निष्पृष्टितानि

॥ १४४ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-----------------|-----------------------|
| एतेन च | "இந்த 'எண்ணூல்தான் | जनस्थान- | குளங்களைத் தவிர |
| अद्भुत- | | कृतालयानि } | |
| दर्शनानि } | மிக்க ஆச்சரியமான | चतुर्दशानि } | கொண்டவர்களும்தான் |
| | உருக்கொண்டவர்க | रक्षःसहस्राणि } | பதினான்காயிரம் |
| | ளும், | शरैः } | அரக்கர்கள் |
| आत्तवरायुधानि | { சிறந்த ஆயுதக்களைக் | निष्पृष्टितानि | பாணக்களால் |
| | கைகொண்டு திரவர்க | | கிருக்கப்பட்டார்கள்." |
| | ளும்; | | |

राघवस्य वचः श्रुत्वा राक्षसेन्द्रो महाकपिम् ।

आजघान शरैस्ताक्ष्णैः कालानलशिखोपमैः

वायुपुत्रं महावीर्यं वहन्तं राघवं रणे ॥

॥ १४५ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|------------------|--------------------|
| राक्षसेन्द्रः | இராஷ்டிரசேனையேந்தன் | महाकपि | வானர்கள் ஆத்தம |
| राघवस्य | ஸ்ரீராமரது | | கும், |
| वचः | சொல்லி | महावीर्यं | மகா சக்திமாலையாகிய |
| श्रुत्वा | கேட்டு | वायुपुत्रं | தூண்கார |
| रणे | போரில் | कालानल- | பிரளயத்தீர்ஜனாகி |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | शिखोपमैः } | கைய திகர்த்த |
| वहन्तं | தாக்கிக்கொண்டு | तीक्ष्णैः शरैः } | செட்ட சரையினால் |
| | விளங்கும் | आजघान | உடித்தான். |

राक्षसेनाह्वे तस्य ताडितस्यापि सायकैः ।

स्वभावतेजोयुक्तस्य भूयस्तेजोऽभ्यवर्धत ॥

तस्य भपि

तेजः

भूयः

अभ्यवर्धत

போரில் *

அரக்கனால்

பாணக்களால்

அடிக்கப்பட்டவரும்

பிரணிக்ருணமாய் தே

ஜனமடல் விளக்

கியவருமாயின

அடிக்கிக் கொன்றால்

தேஜஸ்

முன்னீ ஜமதிகமாய்

ஒங்கிவளர்ந்து

விளக்கிற்று.

ततो रामो महातेजा रावणेन कृतव्रणम् । दृष्ट्वा पुक्वशादूलं कोपस्य वशमेयिवान् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-------------|---------------|
| महातेजाः | அவனான தந்தை என் ளனவும் சகியாதவ | कृतव्रणं | புண்பட்டவராக |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [சகிய | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| पुक्वशादूलं | வாஷாடீர தத்தமரை | ततः | அக்காரணத்தால் |
| रावणेन | ராவணனால் | कोपस्य | கோபத்திற்கு |
| | | वशं एयिवान् | பரவசமாயினார். |

तस्याभिसंक्रम्य रथं सचक्रं साश्वध्वजच्छत्रमहापताकम् ।

ससारथिं साशनिशूलखड्गं रामः प्रचिच्छेद् शरैः सुपुङ्खैः ॥ १४८ ॥

| | | | |
|------------------------------|--|---------------|----------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | ससारथिं | சாரதியுடன் கூடவும் |
| तस्य रथं | அவனது ரதத்தை | साशनिशूलखड्गं | அசனி எனும் ஆயுதம் |
| सचक्रं | சக்கிரங்களோடு கூடவும் | | குலம், கத்தி இலை களோடுகூடவும் |
| साश्वध्वजच्छत्र- महापताकं | குதிரைகள், கொடி கள், குலம், சிறந்த நிசான்கள் இலை களோடுகூடவும் | सुपुङ्खैः | கரிய கூர்களுந் த |
| | | शरैः | கணிகளால் |
| | | अभिसंक्रम्य | புடைத்து |
| | | प्रचिच्छेद् | முறித்தெறிந்தார். |

अथेन्द्रशत्रुं तरसा जघान रावणेन वज्राशनिसन्निभेन ।

भुजान्तरे व्यूहसुजातरूपे वज्रेण मेरुं भगवानिवेन्द्रः ॥ १४९ ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------------------|----------------|------------------------|
| अथ | அதன்மேல் | भुजान्तरे | மார்பில் |
| इन्द्रशत्रुं | இந்திரனது சக்ருவா சிய அவனை | इन्द्रः भगवान् | இந்திரபகவான் |
| वज्राशनिसन्निभेन | வஜ்ராயுதத்தையும் இடிமையும்கொண்ட | वज्रेण | வஜ்ராயுதத்தால் |
| रावणेन | பாண்டிரைஞால் | मेरुं | மேருமையை |
| व्यूहसुजातरूपे | உறுதியற்றதும் பெரு த்திருக்கிறதமான | इव | எவ்வண்ணமே அவ்வண்ணமே |
| | | तरसा | ஆத்திரத்தோடு |
| | | जघान | அடித்தார். |

यो वज्रपाताशनिसन्निपातान्न चुक्षुभे नापि चचाल राजा ।

स रामवाणाभिहतो भृशार्थश्चचाल चापं च सुमोच वीरः ॥ १५० ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|--------------|---------------------------------------|
| यः | அந்த | सः वीरः च | அந்த வீரனே |
| राजा | அரசன் | रामवाणाभिहतः | ஸ்ரீராமரது பாணத் தால் அடிபண்டவனாகி |
| वज्रपाताशनि- सन्निपातान् | வஜ்ராயுதத்தின் அடி மையும் இடியின் விழ்ச்சியானும் | भृशार्थः | மிகவும் கொவரல் வருந்தியவனாய் |
| चुक्षुभे न | களங்கா திருந்தானே | चचाल | உதறல்கொண்டான். |
| चचाल अपि न | அசையாதுமிருந் தானே | चापं | வில்லை |
| | | सुमोच | கழுவிட்டான். |

तं विह्वलन्तं प्रसमीक्ष्य रामः समाद्दे दीप्तपथार्थचन्द्रम् ।

तेनार्कवर्णं सहसा किरीटं चिच्छेद् रक्षोधिपतेर्महात्मा

॥ १५१ ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|----------------------|
| अथ | இப்பொழுது | अथचन्द्रं | அர் த்தசுந்திரமெனும் |
| महत्मा | மகா தீமா வான | समाद्दे | பாணத்தைத் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तेन | தொடுத்தார். |
| तं | அவனை | रक्षोधिपोः | அதைக்கொண்டு |
| विह्वलन्तं | { விவரம் செய்யத் தெரியாது தவிக்கின்றவனும் | अर्कवर्णं | அரக்கமன்னனானது |
| प्रसमीक्ष्य | கவனித்து | किरीटं | சூரியனது ஒளி |
| दीप्तं | இவளிக்கின்ற | सहसा | கொண்டு விளங்கும் |
| | | चिच्छेद् | மசூடத்தை |
| | | | புண்ணைக்கொண்டு |
| | | | உடைத்தெறித்தார். |

तं निर्विषाशीविषसन्निकाशं शान्ताचिपं सूर्यमिवामकाशम् ।

गतश्रियं कृत्किरीटकूटमुवाच रामो युधि राक्षसेन्द्रम्

॥ १५२ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|---------------|---------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | कृत्किरीटकूटं | கிரீடம் முறிப்பட்டு |
| युधि | போரில் | | அவமதிக்கப்பட்டு |
| निर्विषाशीविष-} | விஷமொழிந்த பாம்பு | गतश्रियं | புகழிழந்து விட்டவனு |
| सन्निकाशं } | போலிருக்கின்றவனும் | सं | அந்த [மாகிய |
| शान्ताचिपं | சிரைங்காற்று | राक्षसेन्द्रं | ராட்சஸமன்னனைப் |
| अप्रकाशं | ஒளியில்லாத | | பார்த்து |
| सूर्यं | சூரியனை | उवाच | யின்வருமாறு அரு |
| इव | போலிருக்கிறவனும் | | கிச்செய்தார் : |

कृतं त्वया कर्म महत्सुभीमं हतपवीरश्च कृतस्त्वयाऽहम् ।

तस्मात्परिश्रान्त इव व्यवस्य न त्वां शरैर्मत्सुवशं नयामि

॥ १५३ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|----------------|---------------------|
| त्वया | உன்னால் | कृतः | ஆக்கப்பட்டிருக்கி |
| महत् | பெரும் | तस्मात् | ஆகையால் [தேன். |
| सुभीमं | மிகடையன்காமரண | परिश्रान्तः इव | ஈ முற்றிலும் களைத் |
| कर्म | தொழில் | | திருக்கிரும் என்பதை |
| कृतं | செய்யப்பட்டது. | व्यवस्य | சிரைமரிகொண்டு |
| अहं च | நானும் | त्वां | உன்னை |
| भव्या | உன்னால் | सुसुवशं | எமனது வசத்திற்கு |
| | | शरैः | பாணங்களால் |
| हतपवीरः | { கிறந்த போர்வீரர் | नयामि न | { இப்பொழுது அனும் |
| | கனில் வலியடக்கப் | | பாமல் விட்டிருக்கி |
| | பட்டவனும் | | தேன். |

गच्छानुजानामि रणादितस्त्वं प्रविश्य रात्रिञ्चरराज लङ्काम् ।

आश्वस्य निर्याहि रथी च धन्वी तदा बलं द्रक्ष्यसि मे रथस्थः ॥ १५४ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|------------|---------------------------|
| रात्रिञ्चरराज स्त्वं | " சிவசுரமன்னு! நீ | रथी | ரதத்திலிருப்பவனாயும் |
| रणादितः | போரில் பிசுத்துண்டாய் பட்டிருக்கின்றான். | धन्वी च | கிற்பற்றியவனாகவும் |
| अनुजानामि | போகவிடை கொடுக்கிறேன். | निर्याहि | 'திரும்பிவா. |
| गच्छ | திரும்பிச்செல். | तथा | ஆப்பொழுது |
| लङ्कां | இலங்கையை | रथस्थः | ரதத்திலிருக்கும் நீ |
| प्रविश्य | ஆடைந்து | मे | எனது |
| आश्वस्य | சளைப்பையாற்றிக் கொண்டு | बलं | சக்தியை |
| | | द्रक्ष्यसि | உள்ளாய். கண்டறி காய்." |

स एवमुक्तो हतदर्पहर्षो निकृत्तचापः स हताश्वसूतः ।

शरादितः कुत्तमहाकिरीटो विवेश लङ्कां सहसा स राजा ॥ १५५ ॥

| | | | |
|---------------------|---|-------------|--|
| सः | ஆவன் | सः | ஆவன் |
| निकृत्तचापः | முறிக்கப்பட்ட கில்லை புடைபவனாயும் | हतदर्पहर्षः | { செருக்கும் உத்ஸாஹ மும் ஒழித்தவனாயு மாயினான். |
| हताश्वसूतः | { கொல்லப்பட்ட குதிரைகளையும் சாரதையை புழுடைபவனாயும் | सः | ஆந்த |
| कुत्तमहा- किरीटः | { உடைத்துப்போடப் பட்ட புகழ்படைத்த கிரீடமுடையவனாயும் | राजा | மன்னன் |
| शरादितः | பாணங்களால் திராவு படுபவனாயுமாயினான். | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| | | उक्तः | சொல்லப்பட்டவனாய் |
| | | सहसा | தகாதனமே |
| | | लङ्कां | இலங்கைக்கு |
| | | विवेश | போய்க்கேசுந்தான். |

तस्मिन्प्रविष्टे रजनीचरेन्द्रे महाबले दानवदेवशत्रौ ।

हरीन विशल्यान सह लक्ष्मणेन चकार रामः परमाह्वाने

॥ १५६ ॥

| | | | |
|---------------|--|--------------|--|
| दानवदेवशत्रौ | தசுரர்களுக்கும் தே வர்களுக்கும் சத்ருவும் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| महाबले | மிக ஆற்றலுடையவ னாயும் | लक्ष्मणेन सह | லக்ஷ்மணரோடுகூட |
| रजनीचरेन्द्रे | சிவசுவேந்தனு | हरीन् | வானரர்களை |
| तस्मिन् | ஆவன் [மாதிரி] | परमाह्वाने | பெரும்பேரர்முனையில் |
| प्रविष्टे | திரும்பிப்போய்ச் சேர்த்தபிறகு | विशल्यान् | { மண ஏக்கமென்பதே என்னவ ஷரில்லாத வர்களாய் |
| | | चकार | செய்தருளினார். |

तस्मिन् प्रभिन्ने त्रिदशेन्द्रशक्तौ शुभासुग भूतगणा दिवश्च ।
ससागराः सर्पिणहोरागाश्च तथैव भूम्यम्बुचराश्च हृष्टाः ॥ १५७ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------------|-----------------|---|
| त्रिदशेन्द्रशक्तौ | தேசத்திரதந்த்ருவா: சிவ | सर्पिणहोरागाः | { சிவதிரிசையுள் மதேஹார கர்க்களைபும் உள் கிட்ட டவைகளுமான் दिवः च திக்தேதவணைகளுமும் तथा एव அங்கவணைமே |
| प्रभिन्ने | தொல்லியடைத்து விட்டுவை | दिवः च | |
| शुभासुगः | சுதவர்களுமும் தேவா கலைவர்களுமும்; | भूम्यम्बुचराः च | { நிலத்தினும் நீரினும் உள் ள பிசிரணிகள் ससागराः எல்லாமும் हृष्टाः களிப்புற்றன. |
| भूतगणाः च | பூதகணகர்களும்; | हृष्टाः | |
| ससागराः | சமுத்திரக்களைபுள் கிட்டவைகளுமும்; | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे एकानपष्टितमः सर्गः ॥

आहितः श्लोकः 17165

युद्धकाण्डे आहितः श्लोकः 2590



पष्टितमः सर्गः—अनुपतावतु णर्ककम् ॥ ६० ॥

कुंभकर्णप्रयोधनम्—कुम्भकर्णवैश्वानरी लीलितककच्छेद्यवतु.

स प्रविश्य पुरीं लङ्कां रामबाणभयादितः । भगदपस्तदा राजा वभूव व्यथितेन्द्रियः ॥ १ ॥

| | | | | | |
|------|--------|-----------------|---|------------------------------------|------------------------|
| सः | அந்த | रामबाण- | } रामபாணவெணை भयादितः } தயக்கென்றவ लङ्कां இலங்கை पुरीं நகரில் प्रविश्य புழுந்து तदा அப்பொழுது | भगदपः | செருக்கொழிந்த வனாய் |
| राजा | மன்னன் | व्यथितेन्द्रियः | | குதப்பிய புலனுடைய வயினை. [வனாய் | |

मातङ्ग इव सिंहेन गरुडेनेव पन्नगः । अभिभूतोऽथवद्राजा राघवेण महात्मना ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------|---------------|
| मातङ्गः | மயக்கன் | पन्नगः | நர் சத்ப்பம் |
| महात्मना | மகாத்மனாய சிவ | सिंहेन | சுருடபகவானால் |
| राघवेण | ரூராமராமல் | इव | எவ்வண்ணமே |
| मातङ्गः | மாயக்கன் | अभिभूतः | அவ்வண்ணமேயும் |
| सिंहः | சிங்கநகரன் | | கொட்டமடக்கல் |
| एव | எவ்வண்ணமே | | பட்டவனாக |
| | அங்கவணைமேயும் | अभवत् | ஆயினன். |

ब्रह्मदण्डप्रकाशानां विद्युत्सदृशवर्षसाम् । स्रग्वापववाणानां विव्यथे राक्षसेश्वरः ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------------------|---|-------------|-------------------|
| राक्षसेश्वरः | இராசக்ஷஸர் கலை | राषववाणानां | ஸ்ரீ ராஷவாணா |
| ब्रह्मदण्डप्रकाशानां | சிவபெருமானை சிகர்த்தவகளுக்கும் | | பரணக்கலை |
| विद्युत्सदृशवर्षसाम् | { மின்னலை சிகர்த்த ஒளிமிகைண்டவக ளுமான | स्रग् | சிகைந்து விகைந்து |
| | | विव्यथे | உள்ள முருகினான். |

स काञ्चनमयं दिव्यमाश्रित्य परमासनम् । विप्रेक्षमाणो रक्षांसि रावणो वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|--------------|
| सः रावणः | அந்த ராவணன் | रक्षांसि | ராசக்ஷஸர்களை |
| काञ्चनमयं | பொன்மயமானதும் | विप्रेक्षमाणः | பார்த்து |
| दिव्यं | சிறந்ததுமான | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| परमासनं | எளிமடசனத்தில் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| आश्रित्य | அமர்ந்து | | சொன்னான்: |

सर्वं तत्स्वत्तु मे मोघं यत्तप्तं परमं तपः । यत्समानो महेंद्रेण मानुषेणास्मि निर्जितः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|-----------------------|
| महेंद्रेण | *மகேந்திரனுக்கு | परमं तपः | சிறந்த தவம் |
| समानः | ஒப்பானவனான | यत् | எதுவோ |
| अस्मि | நான் | मे | எனது |
| मानुषेण | மானிடனால் | तत् सर्वं | அது எல்லாமும் |
| निर्जितः | வெல்லப்பட்டேன் | अतु | முற்றிலும் |
| यत् | எங்கிற காரணத்தால் | मोघम् | விபர்த்தமாவகிவிட்டது. |
| तप्तं | செய்திருந்த | | |

इदं तद्दृश्यणो घोरं वाक्यं मामभ्युपस्थितम् । मानुषेभ्यो विजानीहि भयं त्वमिति तत्तथा ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-----------|-----------------|
| मानुषेभ्यः | * மானிடர்களை மிருந்து | तत् | அப்பொழுது |
| भयं | பயத்தை | दृश्यणः | பிரம்மதேவரின் |
| त्वं | நீ | घोरं | கடுமையான |
| विजानीहि | கவனத்தில் வைத்துக் கொள்வாயாக | वाक्यं | நியமனம் |
| इति | என்ற | तत् | அது |
| इदं | இது | मां भभि | என் விஷயத்தில் |
| | | तथा | சொல்லியவண்ணமே |
| | | उपस्थितम् | பளித்துவிட்டது. |

देवदानवगन्धर्वैर्षक्षराक्षसपद्मैः । अवध्यत्वं मया प्राप्तं मानुषेभ्यो न याचितम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------------|--|------------|--------------------|
| देवदानवगन्धर्वैः | { * தேவர்கள், அசுரர்கள், கந்தர்வர்கள் இவர்களாலும் | मया | என்னால் |
| षक्षराक्षसपद्मैः | { யக்ஷர்கள், ராசக்ஷஸர்கள், பகைக்கர்கள் இவர்களாலும் | प्राप्तं | அடையப்பட்டது. |
| अवध्यत्वं | முடியவில்லை | मानुषेभ्यः | மானிடர்களைமிருந்து |
| | | याचिनं न | பாசிக்கப்படாது |
| | | | விட்டுவிடப்பட்டது. |

विदितं मानुषं मन्ये रावं दशरथात्मजम् । इक्ष्वाकुकुलनाथेन अनरण्येन यत्पुरा ॥ ८ ॥
 उत्पत्स्यते हि महेशे पुरुषो राक्षसाधम । यस्त्वां सपुत्रं सामात्यं सवलं साश्वसारथिम् ॥
 निहनिष्यति सङ्ग्रामे त्वां कुलाधम दुर्मते ॥ १० ॥

ஊ { "சரி, சரி, இப்பொழுதுதான் தர்பாகத் திற்கு வருகிறது; தசரதனின் மகனாகிய ராமனை, இக்ஷ்வாகுகுலநாதனாகிய அனரண்யனும் புரா முன்னொருகால் 'அரக்கப்பந்திரே! குலத்தின் பெயரைக் கெடுக்கும் தீய எண்ணமுடைய எந்த [வனே! மானிடன் போலில் உண்ணையும்

சபுத் புதல்வர்களோடு கூடவும்
 சாமாத்யம் மந்திரிகளோடுகூடவும்
 சவல் வேலைகளோடு கூடவும்
 சாஸ்வர்தி { குதிரைகளோடும் ணர்திகளோடும் கூடவும்
 நிகநிஷ்யதி து கொல்லப் போகிறானே அவன்
 மஹேஷை என்ன குலத்தில் உண்டாகப்போகின் என்கிற இதில் [முன்' அறிவிக்கப்பட்ட மானிடனாக நான் இப்பொழுது அந்திரேன்.

शशोऽहं वेदवत्या च यदा सा धर्षिता पुरा । सेवं सीता महाभागा जाता जनकनन्दिनी ॥

புரா "முன்னொருகால்
 யதா எப்பொழுது
 சா அவன்
 ஧ர்ஷிதா { என்னால் சீண்டப்பட்ட டனனோ அப்பொழுது
 வேதவத்யா வேதவதி என்ற அவளால்

சஹ் என்
 சாஸ: சடுக்கப்பட்டேன்.
 ஜனகநந்நிநி ஜனகின் மகனாய்
 மஹாபாஶா பெரிமூலில் வாய்த்த
 ஜாதா பிறந்து [வளாய்
 சீதா விரைதனை விளக்கும்
 ஹ்யே துடன்
 சா ச அகனே.

उमा नन्दीश्वरश्चापि रेम्भा वरुणकन्यका । यथोक्तास्तपसा प्राप्तं न विथ्या कृषिभाषितम् ॥

உமா "பார்வதியும்
 நந்நிசுவரனும்
 ரேம்பா சம்பையும்
 வரணகந்யகா வ வருணனின் மகனும்
 தபஸா மனவேதனையால்
 யதோக்தா: என்த வேண்டினார் நமோ அது

பாஸ் விடைத்தளித்தது.
 க்ஷிபாஸி { வேதங்களின் துட்டம் அறிந்தவர்களின் சொல்
 பஸி வித்யா ந போய்யா இல்லவே இல்லை.

एतदेवाभ्युपागम्य यत्नं कर्तुमिहार्ह्य । राक्षसाश्चापि तिष्ठन्तु चर्यागोपुरमूर्धसु ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-------------------|--|
| एतत् एव | “ இதை இப்படியே | राक्षसाः | ஆர்க்கர்கள் |
| अभ्युपागम्य | தெரிந்துகொண்டு | | காவற்காரர்களுக்கு |
| अपि च | இருக்கக்கூடியும் கூட | चर्यागोपुरमूर्धसु | { என்று கட்டப்பட்ட விடுத்திகளிலும் போய் ரங்கனிலும் சிகளிலும் |
| इह | இப்பொழுது | तिष्ठन्तु | காத்துவரட்டும். |
| यत्नं | விடா முயற்சி | | |
| कर्तुं अर्ह्य | செய்யக்கூட விரும்ப | | |

स चाप्रतिगमर्भारो देवदानवदर्वहा । ब्रह्मशापाभिभूतस्तु कुम्भकर्णो विबोधयताम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------------|---|-------------------------------|--|
| अप्रतिगमर्भारः | “ திகழ்ந்த அண்ணாதி வாளும் | ब्रह्मशापाभि- भूतः तु | பிரம்மரின் சாபத்தால் சிறுமைபட்டிருக்கின் றவனுள்ள |
| देवदानवदर्वहा | { தேவர்கள், அசுரர்கள் இவர்களில் கொட் டத்தை அடக்குகிற வனும் | सः कुम्भकर्णः च विबोधयताम् | அந்தக்கும்பகர்ணனும் எழுப்புகிடப்பட்ட டும்.” |

स पराजितमात्मानं प्रहस्यं च निपूदितम् । ज्ञात्वा रक्षोबलं भीममादिदेश महाबलः ॥

| | | | |
|----------|---------------|------------|--------------------------------|
| महाबलः | மிக ஆற்றலுடைய | निपूदितं च | கொல்லப்பட்டவனாக |
| सः | அவன் | ज्ञात्वा | கித்தித்து [வும் |
| आत्मानं | தன்னை | भीमं | பயங்கரமான |
| पराजितं | தோல்வியடைந்தவ | रक्षोबलं | ஆர்க்கரிணைமையப் பார்த்து |
| प्रहस्यं | பிரதிசுத்தனை | आदिदेश | பின்வருமாறு கட்டளைபிட்டான்: |

द्वारेषु यत्नः क्रियतां प्राकारधाभिरुद्यताम् । निद्रावशसमाविष्टः कुम्भकर्णो विबोधयताम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------------------|--|
| द्वारेषु | “ வாய்க்களில் | अभिरुद्यतां | ஆடையாப்பட்டும். |
| यत्नः | ஊக்கமாயிருத்தல் | निद्रावश- समाविष्टः | { நித்திரைக்கூட்பட்டு முழுக்கிடக்கும் |
| क्रियतां | பற்றப்பட்டும். | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| प्राकारः च | பதித்தவரும் | विबोधयताम् | எழுப்பப்பட்டும். |

सुखं स्वपिति निश्चिन्तः कालोपहतचेतनः । नव पद् सप्त चाष्टौ च यासीन्स्वपिति राक्षसः ॥

| | | | |
|-------------------|---|---------|-----------------------|
| राक्षसः | “ ஆர்க்கனாகும் இவன் | नव | ஒன்பது |
| कालोपहत- चेतनः | { கீழ்பால் பற்றப்பட்ட ஆத்திரவையுடையவ னும் | पद् | -புது |
| निश्चिन्तः | கவலைபற்றவனாகும் | सप्त | ஏழு |
| सुखं | ஆவணிஷ்டப்படி | अष्टौ च | எட்டு |
| स्वपिति | ஆங்குகின்னும். | मातन् च | மரணக்கணக்குகளா கவே |
| | | स्वपिति | ஆங்குகின்னும். |

மந்ரீ க்ருவா ப்ஸுமோஸ்யமிதஸ்து நவமே஽ஹி । த் து வோபயத ஶிப்ரீ கும்பகர்ணீ மஹாவலம் ॥

அய் " இவன்
 இஃ " இவ்வைந்திரிந்தி
 நவமே " இவ்வைந்திரிந்தி
 அஹி து " இவ்வைந்திரிந்தி
 மந்ரீ " இவ்வைந்திரிந்தி
 க்ருவா " இவ்வைந்திரிந்தி

மந்ரீ " இவ்வைந்திரிந்தி
 து " இவ்வைந்திரிந்தி
 மஹாவலம் " இவ்வைந்திரிந்தி
 த் து " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஶிப்ரீ " இவ்வைந்திரிந்தி
 வோபயத " இவ்வைந்திரிந்தி

ச து சங்க்யே மஹாவாஹு: ககூட: சர்வரக்ஷசாமு | வானராஜாஜபுத்ரீ ச ஶிப்ரமேவ வஶிப்யதி ॥

சர்வரக்ஷா " அரக்கர்களைக் கிண
 ககூட: " பிரதானமும்
 மஹாவாஹு: " தெரள்கவரி படைத்த
 ச: து " இவ்வைந்திரிந்தி

வானராஜாஜபுத்ரீ " வானராஜாஜபுத்ரீ
 ச " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஶிப்ரமேவ " இவ்வைந்திரிந்தி
 வஶிப்யதி " இவ்வைந்திரிந்தி

ஏப கெது: பர: சங்க்யே முக்யோ வ சர்வரக்ஷசாமு | கும்பகர்ண: சதா சேனே மூஹா ப்ராம்யசுசே ரத: ॥

ஏப: " இவ்வைந்திரிந்தி
 கும்பகர்ண: " கும்பகர்ணன்
 சங்க்யே " போசில்
 பர: " எக்வே குக்கும
 கெது: " உத்தமன்.
 சர்வரக்ஷா வ " அரக்கர்களைக் கிண

கும்பகர்ண: " கும்பகர்ணன்
 சதா " இவ்வைந்திரிந்தி
 சேனே " இவ்வைந்திரிந்தி
 மூஹா " இவ்வைந்திரிந்தி
 ப்ராம்யசுசே " இவ்வைந்திரிந்தி
 ரத: " இவ்வைந்திரிந்தி

ராமேண ஹி நிரஸ்தஸ்ய சங்க்யே஽ஸிந்ஸுடாரணே | ப்ரஶிப்யதி ந மெ ஶோக: கும்பகர்ணே விவோபிதே ॥

கும்பகர்ணே " கும்பகர்ணன்
 விவோபிதே " எழுப்பப்பட்ட
 ப்ரஶிப்யதி " இவ்வைந்திரிந்தி
 ந " இவ்வைந்திரிந்தி
 மெ " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஶோக: " இவ்வைந்திரிந்தி
 கும்பகர்ணே " இவ்வைந்திரிந்தி

ராமேண " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஹி " இவ்வைந்திரிந்தி
 நிரஸ்தஸ்ய " இவ்வைந்திரிந்தி
 சங்க்யே " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஽ஸிந்ஸுடாரணே " இவ்வைந்திரிந்தி
 ப்ரஶிப்யதி " இவ்வைந்திரிந்தி
 ந " இவ்வைந்திரிந்தி
 மெ " இவ்வைந்திரிந்தி
 ஶோக: " இவ்வைந்திரிந்தி
 கும்பகர்ணே " இவ்வைந்திரிந்தி

கி் கரிஷ்யாம்யஹ் தேந சக்ரதுல்யவலேந ஹி | இஹ்ரீஷே வ்யசனே ப்ராநே யோ ந சாஶ்யாய கல்பதே ॥

ய: " எந்த இவன்
 சாஶ்யாய " உதவி புரிவதற்கு
 கல்பதே ந " வற்படா திருக்கின்
 ஹி " இவ்வைந்திரிந்தி
 கி் கரிஷ்யாமி " இவ்வைந்திரிந்தி

இஹ்ரீஷே " இவ்வைந்திரிந்தி
 வ்யசனே " இவ்வைந்திரிந்தி
 ப்ராநே " இவ்வைந்திரிந்தி
 யோ " இவ்வைந்திரிந்தி
 ந " இவ்வைந்திரிந்தி
 சாஶ்யாய " இவ்வைந்திரிந்தி
 கல்பதே " இவ்வைந்திரிந்தி

ते तु तद्वचनं श्रुत्वा राक्षसेन्द्रस्य राक्षसाः । जम्भुः परमत्भ्रान्ताः कुम्भकर्णनिवेशनम् ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|------------------|---------------------|
| ते राक्षसाः | ஆந்த ஆரக்கர்கள் | परमत्भ्रान्ताः | மிகப்பரபாப்புத்தவர் |
| राक्षसेन्द्रस्य | ராட்சஸேந்திரன் | कुम्भकर्णनिवेशनं | கும்பகர்ணனது |
| तन् | அந்த | | மாளிகைக்கு |
| वचनं | சொல்லை | जम्भुः | சென்றர்கள். |
| श्रुत्वा तु | கேட்டதுமே | | |

ते रावणसमादिष्टा मांसशोणितभोजनाः । गन्धमाल्यांस्तथा भक्ष्यानादाय सहसा ययुः ॥
 मृगान् मद्यस्य च घटान् घोरान् क्षतजमेव च । आसाद्य च गृहं तस्य प्रविश्य च नृपाज्ञया ॥
 तां प्रविश्य महाद्वारां सर्वतो योजनायताम् । कुम्भकर्णगुहां रम्यां सर्वगन्धप्रवाहिनीम् ॥
 कुम्भकर्णस्य निश्वासादवधूता महाबलाः । प्रतिष्ठमानाः कृच्छ्रेण यत्रात्मविविशुर्गुहाम् ॥

| | | | |
|----------------------|--|--------------------|--|
| रावणसमादिष्टाः | ராவுணனால் ஆக்ஷா பிக்கப்பட்டவர்களும் | सर्वतोः | எல்லாப் பக்கங்களிலும் |
| मांसशोणित- भोजनाः | மாம்சத்தையும் ரத் தந்தையும் உண வாய்க்கொண்ட | योजनायतां | ஒரு யோஜனை நீண்டதும் |
| महाबलाः | மகா பலசாலிகளுமான | सर्वगन्धप्रवाहिनीं | எல்லாம் நறுமணம் கமழ்கின்றதும் |
| ते | அவர்கள் | रम्यां च | அழகுவாய்ந்ததுமான |
| नृपाज्ञया | மன்னரின் ஆக்களு பையக்கொண்டு | तां | அந்த |
| गन्धमाल्यान् तथा | வாஸனைத் திரவியல் களையும் பூக்கள் களையும் | कुम्भकर्णगुहां | கும்பகர்ணன் ரித் திரைகொள்ளும் மண்டபத்தில் |
| भक्ष्यान् | உணவுகளையும் | प्रविश्य | புகுந்து |
| घोरान् | பயங்கரமான | कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது |
| मृगान् च | விலக்குகளையும் | निश्वासात् | மூச்சுக்காற்றால் |
| मद्यस्य घटान् च | கன்க்குடங்களையும் | अवधूताः | நிலையாய் நிற்க முடி யாத தடுமாற்றம் ஆண்டந்தவர்களாய் |
| क्षतक्षं पुर | இரத்தத்தையும் | कृच्छ्रेण | மிகப் பிரயாசை கொண்டு |
| आदाय | எடுத்துக்கொண்டு | प्रतिष्ठमानाः | உறுதியாய் நிற்கின் வர்களாகி |
| सहसा | விரைவில் | यत्रात् | மிக வளக்கத்தால் |
| ययुः | சென்றார்கள். | गुहां | மண்டபத்தினுள் |
| तस्य | அவனது | प्रविश्युः | போய்ச் சென்றார் கள். |
| गृहं च | ஆரண்மனைக்கு | | |
| आसाद्य | போய்ச்சேர்ந்து | | |
| प्रविश्य | துழந்து | | |
| महाद्वारं | பெரியவாயில்கள் | | |

तां प्रविश्य गुहां रम्यां शुभां काञ्चनकुट्टिमाम् । ददृशुर्नैर्ऋतव्याघ्रं शयानं भीमदर्शनम् ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|-------------------------------|
| काञ्चनकुट्टिमां | { பிரான்னுலும் கந்த னா லும் இனையுக்கப் பெந்து ஒளிபுடன் கிளக்கிக் கொண்டு அழகரவிருக்கின்ற அந்த உதங்கும் மண்டபத் தில் | प्रविश्य | புகுந்து, |
| शुभां | | भीमदर्शनं | பயங்கரமான |
| रम्यां | | शयानं | தொற்றமுடையவனும் |
| तां | | नैर्ऋतव्याघ्रं | தாக்கிம்கொண்டிருக் கும |
| गुहां | | ददृशुः | சாக்கவம்புலியை கண்டார்கள். |

ते तु ते विकृतं सुप्तं विकीर्णमिव पर्वतम् । कुम्भकर्णं महानिद्रं सहिताः प्रत्यबोधयन् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|--------------|---|
| ते | அவர்கள் | विकृतं | இதுவரைவில்லுருவரு க்குயில்லாதபடியாய் |
| विकीर्णं | தனித்து வந்து கிடக்கும் | महानिद्रं | பெரும் தூக்கக் |
| पर्वतं इव | மலைபோலவே | ते | அந்த [காரணிய |
| सुप्तं | படுத்துக்கிடப் பவனும் | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| | | सहिताः तु | ஒன் துசெய்து |
| | | प्रत्यबोधयन् | எழுப்பலானார்கள். |

ऊर्ध्वरोमाञ्चिततनुं श्वसन्तमिव पद्मगम् । त्रासयन्तं महाश्वसैः शयानं भीमदर्शनम् ॥
 भीमनासापुटं ते तु पातालविपुलाननम् । शय्यायां न्यस्तसर्वाङ्गं मेदोरुधिरगन्धिनम् ॥
 काञ्चनाङ्गदनद्वाङ्गं किरीटिनमरिन्दमम् । ददृशुर्नैर्ऋतव्याघ्रं कुम्भकर्णं महाबलम् ॥३२॥

| | | | |
|--------------------------|---|-----------------------|---|
| तं | அந்த | शयानं | படுத்துக்குக்கிறவனாக வும் |
| अरिन्दमं | சந்ருக்களை அடக்க வல்ல | भीमनासापुटं | { பயங்கரமான முக்குக் துவாசக்களை யுடைய கண்கவும் |
| महाबलं | மதுவா பலசரளியும் | पातालविपुलाननं | ஆழ்து அகன்ற வர ையுடையவனாகவும் |
| नैर्ऋतव्याघ्रं | சாக்கவம்புலியான கிய | शय्यायां | படுக்கையில் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | न्यस्तसर्वाङ्गं | { எல்லா உருப்புகளின் சுவடுகளுடன் கிளக் குக்கிறவனாகவும் |
| ऊर्ध्वरोमाञ्चित- तनुं | } நேராக வளர்ந்த உரோமத்தொடர் மூடப்பட்ட தேக முடையவனாகவும் | मेदोरुधिर- गन्धिनं | } காயம் சத்தம் இவை களின் சாற்றத்தொ டிருக்கிறவனாகவும் |
| पद्मगं इव | | மாமணப் போல் | |
| श्वसन्ते | பொருபுக்கொழிந்தவ னாகவும் | किरीटिनं तु | கிரீடத்தை தரித்தவ னாகவும் |
| महाश्वसैः | பெரும் குதட்டை களால் | ददृशुः | கவனித்தார்கள். |
| त्रासयन्तं | வலையுடைய பயிப்படுத் தலின் தவனாகவும் | | |
| शयानं | பயங்கரமான தொற்ற முடையவனும் | | |

ततश्चकुम्भहात्पानः कुम्भकर्णाग्रतस्तदा । पांसानां मेरुसङ्काशं राशिं परमतीर्थम् ॥ ३३ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|--------------|--|
| तदा | அப்பொழுது | மாலை | மாம்கங்கலின் |
| மஹாபான: | மிக ஆந்தரூடைய அவர்கள் | மேரூசங்காசம் | மேரூசங்காசம் சிகரத்த |
| ततः | அவ்விடத்தில் | राशिं | குலியலை |
| कुम्भकर्णाग्रतः | கும்பகர்ணன் முன் பாக | परमतीर्थम् | மிகத்திருத்தியை விளை சிகரமும் வண்ணமாத வைத்தார்கள். |

मृगाणां महिषाणां च वराहाणां च सञ्चयान् । चकुनैर्ऋतशर्दूला राशिमन्नस्य चान्तुतम् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|----------|----------------|
| नैर्ऋतशर्दूला: | இரகநீர் தீர்ந்தவர் கள் | सञ्चयान् | குலியல்களையும் |
| मृगाणां | மாண்களுடையவர் | भन्नस्य | அன்னத்தினது |
| महिषाणां च | ஊருடையவரும் | अन्तु | அந்துதமான் |
| वराहाणां च | வண்டிகளுடையவரும் | राशिं च | குலியலையும் |
| | | चकु: | வைத்தார்கள். |

ततः शोणितकुम्भांश्च मद्यानि विविधानि च । पुरस्तात्कुम्भकर्णस्य चक्रुस्त्रिदशशत्रवः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-----------------|-------------------------------|
| त्रिदशशत्रवः | தேவசத்தருக்களைய அவர்கள் | शोणितकुम्भान् च | சத்தம் சிறந்த குடங்களையும் |
| ततः | அப்பொழுது | विविधानि | பற்பல |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனுடைய | मद्यानि च | மதுபங்களையும் |
| पुरस्तात् | முன்னிலையில் | चक्रु: | வைத்தார்கள். |

लिलिपुश्च परार्थेन चन्दनेन परंतपम् । दिव्यैराच्छादयामासुर्पाल्यैर्गन्धैः सुगन्धिभिः ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------------|---------------|-----------------------------|
| परंतपं | சந்ருக்களை தழிக்க அடிக்கும் அவளை | गन्धैः | வாஸனைத் திரவியங்க ளாலும் |
| परार्थेन | சிறந்த | सुगन्धिभिः | சுவாசனம் அமழும் |
| चन्दनेन | சந்தனைத்தாலும் | दिव्यैः | சிறந்த |
| लिलिपुः | புசினார்கள். | माल्यैः च | மலர்களாலும் |
| | | आच्छादयामासुः | அளக்கரித்தார்கள். |

धूपं सुगन्धं ससृजुस्तुष्टुश्च परन्तपम् । जलदा इव चोन्नेदुर्यातुधानास्ततस्ततः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|-------------------------------------|
| यातुधानाः | அடக்கர்கள் | परंतपं | சந்ருக்களை தழிக்க அடிக்கும் அவளை |
| ततः ततः | நாற்புறமும் | तुष्टुः च | தேரத்திரம் பண்ணி னார்கள். |
| सुगन्धं | நிவ்ய பரிமீனமுன்ன | जलदाः इव | மேகங்கள் போல |
| धूपं | ஊபந்தை | उन्नेदुः च | கர்ஜிக்கவும் கர்ஜித் தார்கள். |
| ससृजुः | காட்டினார்கள். | | |

शशाङ्कसदृशप्रभान् । तुमुलं युगपचापि विनेदुश्चाप्यवर्षिताः ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-------------------|---|----------|-------------------------------|
| शशाङ्कसदृशप्रभान् | சங்ககிரீவா சீகரித் தூயிடு காந முந்நா மிண கிரமுல் | वर्षिताः | ஆத் திரக் கெடாண்டவர் கனரய் |
| शशाङ्क अपि | சங்ககிரீவாபும் | युगपत् च | ஒன் ஓடுசர்க் தூ |
| आपूरयामासुः | வாநிணுர்கன் | तुमुलं च | உந்ந த குரலிட்டும் |
| अपि | இன் னும் | विनेदुः | கந் திருர்கன் |

नेदुरास्फोटयामासुश्चिक्षिपुस्ते निशाचराः । कुम्भकर्णविशोवाथि चक्रुस्ते विपुलं स्वनम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|-------------------|-------------------------------|
| ते | அந்த | ते | அவர்கள் |
| निशाचराः | அசுர்கர்கள் | कुम्भकर्णविशोवाथि | கும்பகர்ணன் விழிப் பதற்காக |
| आस्फोटयामासुः | கைகலைத்தட்டி னுர் கள். | विपुलं | பெரும் |
| नेदुः | கவிரமுப்பினுர்கன். | स्वनं | கந்தையும் |
| चिक्षिपुः | அடித்தார்கள். | चक्रुः | இட்டார்கள். |

सशङ्खभेरीपणवप्रगादमास्फोटितक्ष्वेत्तितभिहनादम् ।

दिशो द्रवन्तस्त्रिदिवं किरन्तः श्रुत्वा विहङ्गाः सहसा निपेतुः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|----------|---------------------------|
| विहङ्गाः | பறவைகள் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| सशङ्खभेरी- पणवप्रगादं | சங்கம், பேரி, பண வம், இவைகளின் முழக்கத்தொடு கடிய | दिशः | எல்லா சீத்க்குகள் னும் |
| आस्फोटितक्ष्वेत्तित- भिहनादं | கைகலைத்தட்டி வசத் தந்நதயும், கத்தா டும் கத்தந்நதயும், இக்கதா தந்நதயும் | द्रवन्तः | தடுகின்றவைகளாய் |
| | | त्रिदिवं | ஆகாயத்தை |
| | | किरन्तः | கிட்டிக் கெண்டி |
| | | सहसा | எகனா தீகிள் |
| | | निपेतुः | மறைத்தது செய்த கொண்டன. |

यदा भृशार्तेनिर्दयंहात्मा न कुम्भकर्णां वृषुषे प्रसुप्तः ।

ततो मुमुण्ठीमुसत्यानि सर्वे रक्षोगणास्ते जशृङ्गदाथ ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------|--|-----------|----------------------------------|
| ते | அந்த | निर्दयः | சத்தக்கனரம் |
| रक्षोगणाः | பாசுக்கலைக் கட்டிகள் | यदा | எப்பொழுது |
| सर्वे | எல்லோரும் | वृषुषे न | எழுந்திராதிருந் |
| महात्मा | பெருமூட ஊடைய | ततः | உப்பொழுது [தானே] |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | मुमुण्ठीः | முமுண்ட ஊடும் அயு தக்கலையும், |
| प्रसुप्तः | { அடுத்த உதாரணம் கொண்டிருக்கின்ற வாணய் | मुसत्यानि | தமுப்பவர்க்கைகளை |
| भृशार्तेः | பிகத் தர்க்கலைடா தர்க கனரம் | गशाः च | கைகலையும், [யும், |
| | | जशृङ्गदाथ | கைகலிடுகடுந் தன் கொண்டார்கள். |

तं शैलशृङ्गैर्भुसलैर्गदाभिर्वृक्षैस्तलैर्मुद्गरमुष्टिभिश्च ।

सुखप्रसुप्तं भुवि कुम्भकर्णं रक्षांस्युदयाणि तदा निजघ्नुः

॥ ४२ ॥

ததா அப்பொழுது
 भुवि உலகில்
 सुखप्रसुप्तं திசிலிந்தையாய்
 नन्कु உறங்கும்
 तं அந்த
 कुम्भकर्णं சும்பகர்ணனை
 उदयाणि பலக்காரபரண
 रक्षांसि அரசுக்கர்கள்

शैलशृङ्गैः மலைச்சிகரக்களையுடும்,
 भुसलैः உலக்கைகளையுடும்,
 गदाभिः கடைக்களையுடும்,
 वृक्षैः மரக்களையுடும்,
 तलैः உள்ளக்கைகளையுடும்,
 मुद्गरमुष्टिभिः च தடிக்களையுடும்,
 मुष्टिभिः च முட்டிக்களையுடும்,
 निजघ्नुः அடித்தார்கள்.

तस्य निश्वासवातेन कुम्भकर्णस्य रक्षसः ।

राक्षसा बलवन्तोऽपि स्थातुं नाशक्रुवन्पुरः ॥

राक्षसाः அரசுக்கர்கள்
 बलवन्तः अपि பலமுள்ளவர்களுடைய
 रुन्तपोதினும்
 तस्य रक्षसः அந்த அரசுக்களுடைய
 कुम्भकर्णस्य சும்பகர்ணனது

निश्वासवातेन முச்சக்கரந்ருல்
 पुरः எதிரில்
 स्थातुं (தடுமாழுது) நிற்க
 अशक्नुवन् न வல்லபையற்றவர்
 कणांशूरकः கணானூர்கள்.

ततः परिहिता गाढं राक्षसा भीमविक्रमाः

॥ ४४ ॥

ततः அப்பொழுது
 भीमविक्रमाः மிக ஆற்றலுடைய
 राक्षसाः அரசுக்கர்கள்

गाढं கொடுக்கி
 परिहिताः சூழ்ந்துகொண்டு
 விட்டார்கள்.

मृदङ्गपणवान्भेरीः शङ्खकुम्भगणांस्तदा ।

दश राक्षससाहस्रा युगपत्पर्यवादयन् ॥ ४५ ॥

दश राक्षससाहस्राः பதினாசிரம் அரசுக்கர்கள்
 मृदङ्गपणवान् சீருதங்கக்களையும்
 पणववास्तथक्कणायुम् பணவவாத்தங்க்களையும்
 भेरीः பேசிக்களையும்

शङ्खकुम्भगणान् { சங்கக்கள் கடங்கள்
 இணங்குகளின் அணை
 கக்களையும்
 तदा அப்பொழுது
 युगपत् ஏககாலத்தில் எல்லோர்
 रुमाय் ருமாய்
 पर्यवादयन् முழுக்கினூர்கள்.

नीलाञ्जनचयाकारास्ते तु ते प्रत्यबोधयन् ।

अभिघ्नन्तो नदन्तश्च नैव संविविदे तु सः ॥

नीलाञ्जन- } கரிய அஞ்ஞனபகையை
 चयाकाराः } சிகரத்தவர்களைய
 ते அவர்கள்
 अभिघ्नन्तः तु அடிக்கின்றவர்
 कणायुम् களாயும்

नदन्तः च கர்ஜிக்கில் நவர்களைய
 ते அவனை [யும்
 प्रत्यबोधयन् எழுப்பமுயன்றார்கள்.
 सः तु அவனோ
 संविविदे न एव லிழித்துக்கொள்ள
 वेयसिले, வேயசிலை.

यदा चैनं न शेकुस्ते प्रतिबोधयितुं तदा । ततो गुरुतरं यत्र दारुणं समुपाक्रमन् ॥ ४७ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-------------|-----------------|
| சே | அவர்கள் | ततः | அதனால் |
| एनं | இவனை | गुरुतरं | இன் னும்திகமாய் |
| प्रतिबोधयितुं | எழுப்ப | दारुणं | பயங்கரமான |
| यदा | எப்பொழுது | यत्र | முயற்சியை |
| शेकुः न | முடியவில்லை யோ | समुपाक्रमन् | போதொண்டார்கள். |
| तदा च | அப்பொழுதே | | |

अश्वानुष्ठान्खरान्नामाङ्गधनुर्दण्डकशाङ्कुशैः । भेरीशङ्खसुदङ्गाश्च सर्वप्राणैरवाद्यन् ॥ ४८ ॥

| | | | |
|---------|---|--------------------------|--|
| अश्वान् | குதிரைகளையும், | जनुः | அடித்து ஒட்டினார்கள். |
| उष्टान् | நுட்டகங்களையும், | भेरीशङ्ख- सुदङ्गान् च | பேரிகை, சங்கம், மிசு தக்கம் இவைகளையும், |
| खरान् | கோடுவதகமுனைகளையாணைகளையும், [யும், | सर्वप्राणैः | |
| नागान् | தடகளாலும், சாட் டைகளாலும், ஆக் குசங்களாலும் | अवाद्यन् | முடிக்கினார்கள். |

निजधनुश्चास्य गात्राणि महाकाष्ठकटङ्करैः । सुदरैर्मुसलैश्चैव सर्वप्राणसमुद्यतैः ॥ ४९ ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------------|------------------|-----------------------------------|
| अस्य | இவனு | महाकाष्ठकटङ्करैः | பெருக்கட்டைகளின் சமுதக்களாலும் |
| गात्राणि | அவயவங்களை | सुदरैः च | தடகளாலும் |
| सर्वप्राणसमुद्यतैः | முழுபலத்தொண்டி உயர்ந்தப்பட்ட | मुसलैः एव | உதக்கைகளாலும் |
| | | निजधनुः | புகடத்தார்கள். |

तेन शब्देन महता लङ्का समभिपूरिता । सपर्वतवना सर्वा सोऽपि नैव प्रबुध्यते ॥ ५० ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|--------------|------------------|
| तेन | அந்த | सर्वा | எல்லாமும் |
| महता शब्देन | பெரும் சத்தத்தால் | समभिपूरिता | கொம்பினைட்டது. |
| सपर्वतवना | பர்வதங்களையும் வன ங்களையுமுள்ளிட்ட | अपि | குமீனும் |
| लङ्का | இலங்கைநகர் | सः एव | இவன் மட்டும் |
| | | प्रबुध्यते न | தன்னிழக்கவில்லை. |

ततः सहस्रं भेरीणां युगपत्समहन्यत । मृष्टकाञ्चनकोणानामासक्तानां समन्ततः ॥ ५१ ॥

| | | | |
|-------------------------|--|---------|-----------------|
| ततः | அதன்மேல் | भेरीणां | பேரிகைகளின் |
| समन्ततः | எந்நபுதங்கடிகளும் | सहस्रं | அதிகமானது |
| आसक्तानां | கும்பலாய் வைக்கப் பட்டவைகளும் | युगपत् | எககாலத்தில் |
| मृष्टकाञ्चन- कोणानां | கள்ள பொன்னுலாண் குணிக்களை யுடைவா வாயகமுள்ளவை | समहन्यत | அடிக்கப்பட்டது. |

एवमध्यतिनिद्रस्तु यदा नैव प्रबुध्यते । शापस्य वशमापन्नस्ततः क्रुद्धा निशाचराः ॥५२॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-----------------|--------------------|
| शापस्य | சாபத்திற்கு | प्रबुध्यते न एव | விழித்துக்கொள்ளா |
| वशं भापन्नः | வசப்பட்டவனாய் | | மலிந்துந், தாடுனா, |
| एवं | இப்படி | ततः | அப்பொழுது |
| धतिनिद्रः अपि | அதிகவிக்காரியின்றி | निशाचराः | அடக்கர்கள் |
| | உறவாணுகவே | क्रुद्धाः | நிகர்க்கொண்டவர்கள் |
| यदा | எப்பொழுது | | டார்கள். |

महाक्रोधसमादिष्टाः सर्वे भीमपराक्रमाः । तद्रक्षो बोधयिष्यन्तश्चक्रुरन्ये पराक्रमम् ॥ ५३ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|--------------|-----------------|
| भीमपराक्रमाः | மிகபார்க்கொண்ட | ततः | அந்த |
| अन्ये | வேறுசிலர் [படைத்த | रक्षः | அடக்கனை |
| सर्वे | எல்லோரும் | बोधयिष्यन्तः | எழுப்புகின்றவர் |
| महाक्रोधसमादिष्टाः | பெருக்கொபந்தால் | पराक्रमं | முயற்சியை [கொள் |
| | மெய்மதந்தவர்களை | चक्रुः | பற்றினார்கள். |

अन्ये भेरीः समाजघ्नान्ये चकुर्महास्वनम् । केशानन्ये प्रलुपुः कर्णान्ये दशन्ति च ॥

| | | | |
|----------|----------------|----------|----------------------|
| अन्ये | சிலர் | अन्ये | வேறுசிலர் |
| भेरीः | பேரிகளை | केशान् | தலைமயிர்களை |
| समाजघ्नः | அடிமந்தார்கள். | प्रलुपुः | இழுத்தார்கள். |
| अन्ये | வேறுசிலர் | अन्ये | வேறுசிலர் |
| महास्वनं | பெருக்கூச்சை | कर्णौ | இருகாதுகளை |
| चक्रुः | இட்டார்கள். | दशन्ति च | அடிக்கவும் கடித்தார் |
| | | | கள். |

उदकुम्भशतानन्ये समसिञ्चन्त कर्णयोः

| | |
|--------------|--------------------|
| अन्ये | வேறுசிலர் |
| उदकुम्भशतान् | நீர்நிலைந்த குடங்க |
| | ளின் அனைக்களை |

॥ ५५ ॥

| | |
|------------|----------------|
| कर्णयोः | இருகாதுகளிலும் |
| समसिञ्चन्त | ஊற்றினார்கள். |

अन्ये च वलिनस्तस्य कूटमुद्गरपाणयः । मूर्ध्नि वक्षसि गात्रेषु पातयन्कूटमुद्गरान् ॥ ५६ ॥

| | | | |
|----------------|--|--------------|---------------------|
| यलिनः | பலசார்க்கொண்ட | मूर्ध्नि | தலைமீறும், |
| अन्ये च | வேறுசிலரும் | वक्षसि | மார்பிலும், |
| कूटमुद्गरपाणयः | { கூடம், முத்தகம் எனும் ஆயுதங்களைக் கையிடுகொண்டவர் | गात्रेषु | அடியவங்கொள்ளும் |
| तस्य | அவனது [கொள் | कूटमुद्गरान् | கூடம், முத்தகம் எ |
| | | | னும் ஆயுதங்களை |
| | | पातयन् | ஒக்கிப்போட்டார்கள். |

रज्जुबन्धनवद्धामिः शतश्रीभिश्च सर्वतः । वध्यमानो महाकायो न प्राबुध्यत राक्षसः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-------------|-----------------|
| सर्वतः | எங்கும் | शतश्रीभिः च | ச,தக்களி எனும் |
| रज्जुबन्धन-) | கயிறறுக்கட்டுகொள் | | |
| वद्धामिः } | உறுதியாய்க் கட்டிப் | | |
| | பட்டுள்ள | | ஆயுதக்கொள்ளும், |

வயமான: துன்புறுத்தப்பட்டு
கின்றவனுடம்,
மஹாகாய: பெருமகிழ்வையவனு
மாவ

ராக: அரக்கன்
பாபுயத ந விழித்துக்கொண்ட
கில்கை.

वारणानां सहस्रं तु शरीरेऽस्य प्रभावितम् । विनेदुश्च सहस्राणि राक्षसानां त्रयोदश ॥

ச: இவனது
शरीरे உடலில்
वारणानां யான்களின்
सहस्रं ஆயிரமானது

प्रभावितं तु ஒட்டவும்பட்டது.
राक्षसानां அரக்கர்களின்
त्रयोदश सहस्राणि பதின்மூவாயிரவர்
विनेदु: च கூச்சலுமிட்டார்கள்.

अथ खिन्नेषु रक्ष:सु यत्नेन महता शनैः । कुम्भकर्णस्ततो बुद्ध: स्पर्शं परमबुध्यत ॥५९॥

शनै: ஒன்றின் பின் ஒன்றாய்
महता பெரும்
यत्नेन முயற்சியால்
रक्ष:सु அரக்கர்கள்
खिन्नेषु अथ சேர்ந்துகிட்டபின்னர்
तत: அப்பொழுது

कुम्भकर्ण: கும்பகர்ணன்
बुद्ध: தூக்கத்தினின்றும்
स्पर्शं விழித்துக்கொண்டு
पर: ஏதோ கொஞ்சம்
स्पर्शं अबुध्यत தடவிக்கொடுப்பதாக
எண்ணினான்.

स पात्यमानैर्गिरिशृङ्गवृक्षैरचिन्तयंस्तान्विपुलान्प्रहारान् ।

निद्राक्षयात्क्षुद्रयपीडितश्च विजृम्भमाण: सहस्रोत्थपात ॥ ६० ॥

ச: அவன்
पात्यमानै: விழ்த்தப்பட்ட
गिरिशृङ्गवृक्षै: மலைச்சிகரங்கள் மரங்
கள் இவைகளால்
तान् அந்த
विपुलान् பெரும்
प्रहारान् அடிக்களை
अचिन्तयन् கவனியாதவனாய்

क्षुद्रयपीडित: பசியாகிற கோவால்
पीडित்கப்பட்டவனாய்
निद्राक्षयात् தித்திரையின் கடுகில்
பக்கத்தால்
विजृम्भमाण: च கொட்டாவிவிட்டுக்
கொண்டே
सहस्रा முரட்டுத்தனமாய்
उत्थपात எழுந்து உட்கார்ந்தான்.

स नागभोगाचलशृङ्गकल्पौ निक्षिप्य बाहु गिरिशृङ्गसारी ।

विवृत्य वक्त्रं बडवास्तुखामं निशाचरोऽसौ विकृतं जन्मभे ॥ ६१ ॥

ச: அந்த
भसौ இரக
निशाचर: அரக்கன்
नागभोगाचल- } பாம்புகளின் உடல்
शृङ्गकल्पौ } களையும் மலைச்சிகரங்
களையும் நிகர்த்தனவ
அருடம்
गिरिशृङ्गसारी { பர்வதச்சிகரங்களின்
வழிகொண்டனவ
அருமான

बाहु கைகளை
निक्षिप्य உதறிக்கொண்டு
बडवास्तुखामं நடவார்களின்
வாயை நிகர்த்த
वक्त्रं வாயை
विवृत्य கிரித்துக்கொண்டு
विकृतं அவலசூழ்ணமாய்
जन्मभे கொட்டாவிவிட்டான்.

तस्य जाजृम्भमाणस्य वक्त्रं पातालसन्निभम् । ददृशे मेरुशृङ्गाये दिवाकर इवोदितः ॥

जाजृम्भमाणस्य
கொட்டாவினிடும்
तस्य
அவனது
पातालसन्निभं
பாதாளத்தை நிகர்த்த
वक्त्रं
வாய் வனது

मेरुशृङ्गाये
மேருமலைக்கிகரத்தி
उदितः
உதித்த [அச்கியில்
दिवाकरः इव
சூரியனென
ददृशे
தொன்றிற்று.

स जृम्भमाणोऽतिबलः प्रतिबुद्धो निशाचरः । निश्वासश्चास्य संज्ञे पर्वतादिव मारुतः ॥

सः
அந்த
अतिबलः
அதிலைகாணியாகிய
निशाचरः
அரசர்கள்
जृम्भमाणः
கொட்டாவினிடும்
प्रतिबुद्धः
நன்கு விழித்துக்
கொண்டான்.

अस्य
இவனது
निश्वासः च
சூசக்காற்றும்
मारुतः
காற்றானது
पर्वतात्
பர்வதத்தினின்றும்
इव
வந்தாலெப்படியோ
अप्यप्येव
அப்படியே
संज्ञे
உண்டாயிற்று.

रूपमुत्तिष्ठतस्तस्य कुम्भकर्णस्य तद्भौ । तपान्ते सबलाकस्य मेघस्येव विवर्षतः ॥ ६४ ॥

उत्तिष्ठतः
எழுந்துவின்ற
तस्य
அந்த
कुम्भकर्णस्य
கும்பகர்ணனது
तव रूपं
அந்த ரூபம்
तपान्ते
கொடைகாலத்தின்
முடிவில்

विवर्षतः
மழைபொழியும்
सबलाकस्य
கொக்குகளுடன்
मेघस्य
மேகத்திற்கு
इव
நிகராய்
वभौ
விளங்கிற்று.

ततः स कालसङ्काश उत्पतन् समुद्देशत

ततः
அப்பொழுது
कालसङ्काशः सः
காலனை நிகர்த்த அவன்

॥ ६५ ॥

उत्पतन्
தூள் ளிக்கொண்டு
समुद्देशत
விழித்துப்பார்த்தான்.

तस्य दीप्ताग्निसदृशे विद्युत्सदृशवर्चसी । ददृशाते महानेत्रे दीप्ताग्निव महाग्रहौ ॥ ६६ ॥

तस्य
அவனுடைய
दीप्ताग्निसदृशे
கொழுந்துவிட்டெரி
யும் அக்னிக்ஞ்சுடைய
னமானவைகளுடைய
विद्युत्सदृशवर्चसी
மின்னறுக்கொப்
பான காந்தியின்
வைகளுடைய

महानेत्रे
கண்களிரண்டும்
दीप्तौ
பாபிகளாகிய
महाग्रहौ
இருமகாம்கிரகங்களை
(சனி, அங்காரகன்
இவர்களை)
इव
போல்
ददृशाते
தொன்றின.

ततस्त्वदर्शयन्सर्वान्भक्ष्यांश्च विविधान्वहून् । वराहान्महिषांश्चैव स वभक्ष महाबलः ॥ ६७ ॥

ततः
அப்பொழுது
विविधान्
பலவகை
बहून् भक्ष्यान् च
கணக்கற்ற உணவுக
वराहान्
பன்றிகளையும் [னையும்
महिषान्
எருமைகளையும்

सर्वान् एव
எல்லாவற்றையும்
भक्षयन्
சுட்டிக்காட்டினார்கள்.
महाबलः
மகா பலசாலியாகிய
सः तु
அவனும்
वभक्ष
தின்றான்.

अदन्वुभुक्षितो मांसं शोणितं तृपितः पिबन् । मेदःकुम्भांश्च मयं च पपौ शक्ररिपुस्तदा ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------------|---------------------|
| शक्ररिपुः | இந்திரசக்ருவாகிய | पिबन् | குடித்து |
| बुभुक्षितः | பசித்தவனாய் [அவன் | तदा | அதன்மேல் |
| मांसं | மாட்டித்தை | मेदःकुम्भान् च | நெடமுப்புக்கள் திறை |
| अदन् | தின்னு | | ந்த சூம்பங்களையும் |
| तृपितः | தரகமெடுத்தவனாய் | मयं च | மதவத்தையும் |
| शोणितं | சத்தத்தை | पपौ | குடித்தொழித்தான். |

ततस्तृप्त इति ज्ञात्वा समुत्पेतुर्निशाचराः । शिरोभिश्च प्रणम्येनं सर्वतः पर्यवारयन् ॥६९॥

| | | | |
|------------|------------------------|------------|-------------------|
| निशाचराः | ஆசுக்கர்கள் | एनं | இவனை |
| ततः | அப்பொழுது | शिरोभिः | முடிமனைத்தாழ்த்தி |
| तृप्तः | 'பசிதீர்ந்ததுவிட்டான்' | प्रणम्य च | நமஸ்கரித்துவிட்டு |
| इति | என்று | सर्वतः | நாற்புறமும் |
| ज्ञात्वा | கவனித்தறிந்து | पर्यवारयन् | சூழ்ந்துகொண்டார் |
| समुत्पेतुः | அவனைக்கீட்டினார்கள். | | கள். |

निद्राऽविशदनेत्रस्तु कलुषीकृतलोचनः । चारयन्सर्वतो दृष्टिं तान्दृश्यं निशाचरान् ॥७०॥

| | | | |
|-----------------------|--|----------------|--------------------------|
| निद्राऽविशदनेत्रः | { தூக்கத்தால் முற்றி லுற்றிறகாக்கண்களை உடையவனும் களங்கிக்கிடந்த கண்க ளையுடையவனுமான அவன் | सर्वतः | எல்லாப்பக்கங்களி லும் |
| कलुषीकृत- लोचनः तु | | दृष्टिं चारयन् | பார்க்கின்றவனாய் |
| | | तान् | அந்த |
| | | निशाचरान् | சீசாசுக்களை |
| | | दृश्यं | கண்டான். |

स सर्वान्सान्त्वयामास नैर्ऋतान्नैर्वृतर्षभः । बोधनाद्विस्मितश्चापि राक्षसान्दिदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|-------------------|
| नैर्ऋतर्षभः | இராசநெய்தல தந்தம் | अपि च | என்றாலும் |
| सः | அவன் | बोधमान् | சமூபலியதால் |
| नैर्ऋतान् | இராசநெய்தலர்கள் | विस्मितः | விவசயம் விளக்காதவ |
| सर्वान् | எல்லோரையும் | राक्षसान् | ஆசுக்களைப் [னாய் |
| | | | பார்த்து |
| सान्त्वयामास | முதமெடுக்கிறான். | इदं | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | கொழிந்தான் : |

किमर्थमहमादृत्यं भवद्भिः प्रतिबोधितः । कश्चित्सुकुशलं राज्ञो भयं वा नेह विद्यते ॥७२॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--|
| अहं | “நான்” | इह | இப்பொழுது |
| भवद्भिः | உங்களால் | भयं वा | எந்த ஒரு சக்கடமும் |
| आदृत्यं | ஆலாபிக்கொண்டு | विद्यते न | ஏற்படவில்லை என்றும் |
| किमर्थं | ஏன் | सुकुशलं | ஸர்வப்பிரகாரத்தி லும் கேட்கமென்றும் |
| प्रतिबोधितः | எழுப்பப்பட்டேன் P | कश्चिद् | நான் தினைக்கிறேன். |
| राज्ञः | மன்னருக்கு | | |

अथवा ध्रुवमन्येभ्यो भयं परमुपस्थितम् । यदर्थमेवं स्वरितैर्भवद्भिः प्रतियोधितः ॥ ७३ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------|-------------|--------------------------|
| अथवा | "இப்படி யிருக்கமுடி யாது. | प्रतियोधितः | எழுப்பப்பட்டிருக்கிறேன். |
| स्वरितैः | பாபாப்புற்ற | अन्येभ्यः | பிறர்க்கிடமிருந்து |
| भवद्भिः | உக்களால் | परं | பெரும் |
| एवं | இப்படியாய் | भयं | ஆபத்து |
| यदर्थं | ஏதோ ஒரு காரண மாய் | उपस्थितं | உண்டாயிருக்கிறது. |
| | | ध्रुवम् | இது திண்ணம். |

अथ राक्षसराजस्य भयमुत्पाटयाम्यहम् । पातयिष्ये महेन्द्रं वा शतयिष्ये तथाऽनलम् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|----------------------------|
| अहं | "நான் | महेन्द्रं वा | இந்திரனாக இருந்தாலும் அவனை |
| अथ | இப்பொழுதே | पातयिष्ये | விழ்த்துகிறேன். |
| राक्षसराजस्य | அரக்கமன்னனது | अनलं तथा | அக்னியாயிருந்தாலும் அவனை |
| भयं | சங்கடத்தை | शतयिष्ये | அகித்துகிறேன். |
| उत्पाटयामि | வேருடன் ஒழிப்பேன். | | |

न ह्यल्पकारणे सुप्तं बोधयिष्यति मां गुरुः । तदारूपातार्थतत्त्वेन मत्प्रबोधनकारणम् ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------|-----------------|-------------------------|
| गुरुः | "ஆண்ணா | तत् | ஆகையால் |
| सुप्तं | தூங்கும் | मत्प्रबोधनकारणं | என்னை எழுப்பிய காரணத்தை |
| मां | என்னை | अर्थतत्त्वेन | உள்ளபடி எதையும் விடாமல் |
| अल्पकारणे | விஷயம் அல்பமா யிருக்கையில் | आख्यात | சொல்லுங்கள்." |
| बोधयिष्यति न हि | எழுப்பவேமாட்டார். | | |

एवं ब्रुवाणं संरब्धं कुम्भकर्णमरिन्दमम् । यूषाक्षः सचिवो राज्ञः कृताञ्जलिस्वाच ह ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|-------------------------|
| राज्ञः | மன்னனது | ब्रुवाणं | பேசும் |
| सचिवः | மந்திரியாகிய | कुम्भकर्णं | சும்பகர்ணனைப் பார்த்து |
| यूषाक्षः | யூபாக்ஷனென்பவன் | कृताञ्जलिः | கைகப்பிக்கொண்டு |
| अरिन्दमं | சத்ருளும்ஊராகளும் | इवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |
| संरब्धं ह | மிகக் கலவாமடைந்து | | |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | |

न नो देवकृतं किञ्चिद्भयमस्ति कदाचन । मानुषाञ्चो भयं राजंस्तुमुलं संप्रवाधते ॥७७॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|---------------------|
| राजन् | "அரசே! | मानुषाच्च | ஓர் மனிதனிடமிருந்து |
| नः | நமக்கு | तुमुलं | அலுந்துவமான |
| देवकृतं | தேவர்களால் விளைவும் | भयं | சங்கடம் |
| भयं | சங்கடம் | नः | நம்மை |
| किञ्चिद् | எதுவும் | संप्रवाधते | பாதிக்கின்றது. |
| कदाचन | எப்போதும் | | |
| अस्ति न | இல்லை. | | |

न दैत्यदानवेभ्यो वा भयमस्ति हि तादृशम् । यादृशं मानुषं राजन्भयमस्मानुपस्थितम् ॥

राजन् " அரசர்!
 मानुष ஓர் மனிதனால் உண்
 भय தீங்கு [பாஷ
 यादृशं எப்படிப்பட்டதாய்
 अस्मान् கம்மை
 उपस्थितं அணு சிந்திடுக்கிறதேதர,

तादृशं அப்படிப்பட்டதாயிய
 भयं हि தீங்கு என்பதே
 दैत्यदानवेभ्यः } தேவர்களிடமிருந்தும்
 वा } அசுரர்களிடமிருந்
 तुम्हम्
 अस्ति न உண்டாகவில்லை.

वानरैः पर्वताकारैर्लङ्क्यं परिवारिता । सीताहरणसन्तप्ताद्रामान्स्तुमुञ्चं भयम् ॥ ७९ ॥

पर्वताकारैः " பரிகாசம் போன்ற
 உருவமுடைய
 वानरैः வானரர்களால்
 इयं இந்த
 लङ्का இலங்கைநகர்
 परिवारिता சூழ்ந்துகொள்ளப்
 பட்டிருக்கிறது.

सीताहरण-} சீதைகையத் திருடிய
 संतप्ता, } காரணத்தால் மிகச்
 சினங்கொண்ட
 रामान् ராமனிடமிருந்து
 नः கமக்கு
 भयं சங்கடம்
 तुमुलम् அணந்தாமாயிருக்
 கிறது.

एकेन वानरेणेयं पूर्वं दग्धा महापुरी । कुमारो निहतश्चाक्षः सानुयात्रः सकुञ्जरः ॥ ८० ॥

पूर्वं " இதற்குமுந்தி
 वानरेण குரங்கு
 एकेन ஒன்றால்
 कुमारः भक्षः குமாரனாகிய அகஷன்
 सानुयात्रः பரிவாரக்களுடனும்
 सकुञ्जरः யானைகளுடனும்

निहतः கொல்லப்பட்டான்.
 च இத்தடல்
 इयं இந்த
 महापुरी சிறந்த நகரமும்
 दग्धा தீயிட்டுச் கொளுத்தப்
 பட்டது.

स्वयं रक्षोधिपश्चापि पौलस्त्या देवकण्टकः । मृतेऽतिसंयुगे मुक्ता रामेणादित्यतेनसा ॥

पौलस्त्यः " புலஸ்தியவம்சத்தின்
 பிரந்தவரும்
 देवकण्टकः च தேவகந்ருவமாகிய
 रक्षोधिपः अपि ராஷ்டிரமன்னருள்
 கூட
 अतिसंयुगे கடும்போரில்
 मृते மரணத்தருவாரில்

आदित्यतेनसा சூர்யனது சேக
 வைபுடைய
 रामेण ராமனால்
 स्वयं தானே (விடுவதற்கை
 யாய்)
 मुक्तः விடைகொடுத்துத்
 சிறப்பப்பட்டான்.

यच्च देवैः कृतो राजा नापि दैत्यैर्न दानवैः । कृतः स इह रामेण विमुक्तः प्राणसंशयात् ॥

सः राजा " அந்த மன்னர்
 इह இப்பொழுது
 प्राणसंशयात् நிலைவிழக்க போகும்
 रामेण ஆபத்திலிருந்தவரை
 विमुक्तः कृतः ராமனால் [ராமல்
 यत् விடுவதால் மீட்டினால்

देवैः தேவர்களாலும்
 कृतः न செய்யப்படவில்லை.
 दैत्यैः வாதவர்களாலும்
 न செய்யப்படவில்லை.
 दानवैः अपि தானவர்களாலும்
 न செய்யப்படவில்லை."

स यूपाक्षवचः श्रुत्वा भ्रातृर्युधि पराजयम् । कुम्भकर्णो विवृत्ताक्षो यूपाक्षमिदमवधीत् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|--------------|------------------------------|
| ச: கும்பகர்ண: | அந்தக் கும்பகர்ணன் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| युधि | போரில் | विवृत्ताक्षः | கண்களைச் சுழற்றிக் கொண்டு |
| भ्रातुः | தகையனது | यूपाक्षे | யூபா கந்தனைப்பார் த்து |
| पराजयं | தொல்லைபடப்பற்றிய | इदं | பின்வருமாறு |
| यूपाक्षवचः | யூபா கந்தனைது சொல்லை | अवधीत् | மொழிந்தான்: |

सर्वमयैव यूपाक्ष हरिसैन्यं सलक्ष्मणम् । राघवं च रणे हत्वा पश्चाद्दृश्यामि रावणम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|--------------|
| यूपाक्ष | “ யூபா கந்தா ! | रणे | போரில் |
| अथ एव | இராமனைத்தினெய்யே | हत्वा | கொன்றுவிட்டு |
| सलक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனோடுகூட | पश्चात् | பின்னர் |
| भामं | ராமனையும் | राघवं | ராவணரை |
| सः | என்னை | दृश्यामि | காண்பேன். |
| हरिसैन्यं च | சூரகங்குப்படையையும் | | |

राक्षसोस्तर்பयिष्यामि हरीणां मांसशोणितैः । रामलक्ष्मणयोश्चापि स्वयं पास्यामि शोणितम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|---------------|------------------------|
| हरीणां च | “ சூரகங்குகளுடைய | रामलक्ष्मणयोः | ராமலக்ஷ்மணர்க ளுடைய |
| मांसशोणितैः | மாம்சங்களையும் சந்த தங்களையும் | शोणितं अपि | சந்தத்தையும் |
| राक्षसान् | இராமலக்ஷ்மணர்களை | स्वयं च | நரனே |
| तर्पयिष्यामि | திருப்திசெய்வேன். | पास्यामि | பருகுவேன்.” |

तत्तस्य वाक्यं ब्रुवतो निशम्य सगर्वितं रोषविवृद्धदोषम् ।
महोदरो नैर्ऋतयोधमुख्यः कृताञ्जलिर्वाक्यमिदं वभाषे ॥ ८६ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------------------|---------------|------------------|
| नैर्ऋतयोधमुख्यः | அரக்கர்ப்படைத் தலைவனுரை | तस्य | அவனுடைய |
| महोदरः | மகோதரன் | तत्र | அந்த |
| सगर्वितं | கர்வத்தோடும் | वाक्यं निशम्य | சொல்லைக் கேட்டு, |
| रोषविवृद्धदोषं | கோபம் மூண்ட தர்ப் புத்தியுடையவராய் | कृताञ्जलिः | கைக ப்பிக்கொண்டு |
| ब्रुवतः | பேசும் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| | | इदं | பின்வருமாறு |
| | | वभाषे | மொழிந்தான் : |

रावणस्य वचः श्रुत्वा गुणदोषो विमृश्य च । पश्चादपि महाबाहो शत्रून्युधि विजेष्यसि ॥

| | | | |
|----------|----------------|-------------|------------------------|
| महाबाहो | “ மகாபாகுவே ! | विमृश्य च | ஆராய்த்து நிரீர்மானித் |
| रावणस्य | ராவணனது | पश्चात् अपि | பிறகே [தும்] |
| वचः | சொல்லை | युधि | போரில் |
| श्रुत्वा | செவிக்கொண்டும் | शत्रून् | சத்ருக்களை |
| गुणदोषो | நன்மைதீமைகளை | विजेष्यसि | ஐயிப்பீராக. |

त्वदर्शनपरं तावद्भ्रातरं द्रष्टुमर्हसि

॥ ८८ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------|------------------|
| त्वदर्शनपरं | { "உம்மைக்காண ஆவ ளுடன் துடித்துக் கொண்டிருக்கிற தலைமயனான " | तावद् | முதலில் |
| भ्रातरं | | दष्टुं | காண |
| | | मर्हसि | திருவுணர்பற்றுவி |
| | | | ரக. " |

महोदरवचः श्रुत्वा राक्षसैः परिवारितः । कुम्भकर्णो महातेजाः संप्रतस्थे महाबलः ॥८९॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|----------------|
| महाबलः | மகா ஆற்றலுடைய | महोदरवचः | மகோதரனது |
| | வலனும் | श्रुत्वा | கேட்டு [சொல்லி |
| महातेजाः | மகா ஆண்மையுடைய | राक्षसैः | ஆரக்கர்களால் |
| | வலமான | परिवारितः | சூழப்பட்டவனும் |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | संप्रतस्थे | செல்லலுற்றுண். |

तं समुत्थाप्य भीमाक्षं भीमरूपपराक्रमम् । राक्षसास्त्वरिता जग्मुर्दशधीवनिवेशनम् ॥९०॥

| | | | |
|----------|---|---------------|-----------------|
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | तं | அவனை |
| भीमाक्षं | பயங்கரமான கண்க | समुत्थाप्य | எழுப்பினிட்டு |
| | ளுற்றவனும், | त्वरिताः | பரபரப்புற்றவர்க |
| भीमरूप- | } பயங்கரமான உருவ மும் பராக்ரமமும் படைக்கப்பெற்றவ ளுமான் | दशधीवनिवेशनं | எளிய |
| पराक्रमं | | தசதீவநிவெசனம் | जग्मुः |

ततो गत्वा दक्षधीवमासीनं परमासने । ऊर्चुर्बद्धाङ्गलिपुटाः सर्वे एव निशाचराः ॥९१॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------------|------------------|
| निशाचराः | ஆரக்கர்கள் | भासीनं | விநிழல்க்கும் |
| सर्वे एव | எல்லோரும் | दक्षधीव | தசகண்டனைப் |
| गत्वा | சென்று | | பார்க்கு |
| ततः | அப்பொழுது | बद्धाङ्गलिपुटाः | கைகப்பியவர்களாய் |
| परमासने | கிம்பாலனத்தில் | ऊर्चुः | பின்வருமாறு |
| | | | சொன்னார்கள் : |

प्रबुद्धः कुम्भकर्णोऽयं भ्राता ते राक्षसर्षभ । कथं तत्रैव निर्यातु द्रक्ष्यस्येनमिहागतम् ॥९२॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------|-------------------|
| राक्षसर्षभ | "ராஷ்டிரேஸ்தமரே ! | तस एव | அங்கடத்திற்கே |
| ते | தேவரீரது | निर्यातु | எழுந்தருளட்டுமோ ? |
| भ्राता | ஸோதரராகிய | एव | இவரை |
| अयं | இந்த | इह | இங்கு |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணர் | आगतं | வந்தவராய் |
| प्रबुद्धः | விழிந்துக்கொண்டார். | दृष्यसि | பார்க்கப்போகிறீர் |
| कथं | எப்படி உத்திரவு ? | | கனா ? " |

रावणस्त्वन्वीद्धृष्टो राक्षसांस्तानुपस्थितान् । द्रुमेनपिहेच्छामि यथान्यायं च पूज्यताम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-----------|---------------------|
| रावणः तु | ரா வணனும் | पुनं | “ இவனை |
| हृष्टः | களிப்புற்றவனாய் | इह च | இங்கேயே |
| उपस्थितान् | வந்திருந்த | द्रष्टुं | பார்க்க |
| तान् राक्षसान् | அந்த ஆக்கக் களைப் பார்த்து | इच्छामि | விரும்புகிறேன். |
| अमवीत् | பின் வருமாறு ஆக்களை இட்டான் : | यथान्यायं | ஏற்றபடி. |
| | | पूज्यताम् | கவனிக்கப்படட்டும்.” |

तथेत्युक्त्वा तु ते सर्वे पुनरागम्य राक्षसाः । कुम्भकर्णमिदं वाक्यमूचू रावणचोदिताः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|------------|---------------------------|
| रावणचोदिताः | ரா வணனும் ஆற்றா பிக்கப்பட்ட | उक्त्वा तु | சொல்லிவிட்டு |
| ते | அந்த | पुनः | மீண்டும் |
| राक्षसाः | ஆக்கர்கள் | आगम्य | வந்து |
| सर्वे | எல்லோரும் | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனைப் பார்த்து |
| तथा | “ அப்படியே செய்கி ளேயும்” | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| इति | என்று | इदं | பின் வருமாறு |
| | | कथुः | மொழிந்தார்கள் : |

द्रष्टुं त्वां काङ्क्षते राजा सर्वराक्षसपुङ्गवः । गमने नियतां युद्धिभ्रातरं संप्रहर्षय ॥ ९५ ॥

| | | | |
|-------------------|--|------------|---------------------------|
| सर्वराक्षसपुङ्गवः | “எல்லா ராக்களையர்களு க்கும் இறைவனாகிய | गमने | போவதில் |
| राजा | மன்னர் | युद्धिः | திருவுள்ளம் |
| त्वां | தேவரீரை | नियतां | கொள்ளப்படட்டும். |
| द्रष्टुं | காண | आतंरं | தமையனார |
| काङ्क्षते | விரும்புகிறார். | संप्रहर्षय | களிப்புறச் செய்கிறாக.” |

कुम्भकर्णस्तु दुर्धरो भ्रातुराज्ञाय शासनम् । तथेत्युक्त्वा महाबाहुः शयनादुत्पपात ह ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|-----------|--------------------|
| दुर्धरः | பாவராவும் எதிர் பார்க்கவொண்ணு | आज्ञाय | சிரமேற்கொண்டு |
| महाबाहुः | வீரனாகிய | तथा | “ அப்படியே |
| कुम्भकर्णः तु | கும்பகர்ணனும் | इति | என்று [செய்கிறேன்” |
| भ्रातुः | தமையனாறு | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| शासनं | ஆக்களுகைய | शयनात् | படுக்கையினின்று |
| | | उत्पपात ह | எழுந்தான். |

प्रक्षाल्य वदनं हृष्टः स्नातः परमभूषितः । पिपासुस्त्वरयामास पानं बलसमीरणम् ॥ ९७ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|-----------|----------------------------|
| हृष्टः | உதவாகக்கொண்ட | पिपासुः | தாகக்கொண்டவனாய் |
| वदनं | வாயை [அவன் | बलसमीरणं | பலத்தை அதிகப் படுத்தும் |
| प्रक्षाल्य | கொப்பளித்தலம்பி | | |
| स्नातः | ஸ்நானம்செய்து | पानं | குடியிலுக்காக |
| परमभूषितः | நன்கு அலக்கரித்துக் கொண்டவனாகி, | स्वरयामास | துரிதப்படுத்தினான். |

तवस्ते त्वरितास्तस्य राक्षसा रावगाज्ञया । मद्यकुम्भांश्च विविधान् क्षिप्रमेवोपहारयन् ॥

ततः अப்பொழுது
 ते அந்த
 राक्षसाः அடக்கர்கள்
 रावगाज्ञया च ராவணனது ஆக்ஷைநு
 என்றபடியாலும்
 त्वरिताः வேகமுற்றவர்களால்

विविधान् பலவித
 मद्यकुम्भान् கள்கும்பங்களை
 क्षिप्रं एव சுடுகிரியையே
 तस्य அவனுக்கு
 उपहारयन् கொண்டு வந்து
 கொடுத்தார்கள்.

॥ ९९ ॥

प्रहर्षणार्थं मनसो दीप्ताभ्यो दीप्तलोचनः । पीत्वा घटसहस्रे द्वे गमनायोपचक्रमे । ईपत्समुत्कटो मत्तस्तेजोवत्समन्वितः ॥ १०० ॥

दीप्ताभ्यः பரிபரிப்பான
 முகமுண்டயவனும்
 दीप्तलोचनः பரிபரி கொண்ட
 கண்களுடையவனும்
 तेजोवत्- } ஆண்மைபுடைய
 समन्वितः } படைக்கப்பெற்றவ
 னுடைய ஆவன்
 मनसः மனதிற்கு

प्रहर्षणार्थं உத்தரமுற்ற
 द्वे घटसहस्रे இரண்டாயிரம் குடங்
 पीत्वा யருகிவிட்டு [கொ
 मत्तः வெறுகொண்டு
 ईपत्समुत्कटः சீறிது தீமிகொண்
 डவனாய்
 गमनाय उपचक्रमे புறப்பட்டுச் செல்ல
 னுற்றான்.

॥ १०१ ॥

कुम्भकर्णो बभौ हृष्टः कालान्तक्यमोपमः ।

हृष्टः உத்தராகங்கொண்ட
 कुम्भकर्णः கும்பகர்ணன்
 भ्रातुः स भवनं गच्छन्नशोगणसमन्वितः ।
 सः कुम्भकर्णः அந்தக் கும்பகர்ணன்
 भ्रातुः தமையனானது
 भवनं மாளிகைக்கு
 रक्षोगणसमन्वितः ராக்ஷஸக்கூட்டங்க
 ணோடுகூட

कालान्तक्यमोपमः காலந்தீய மயனை சிகர்த்
 தவனாய்
 बभौ விளங்கினான்.
 कुम्भकर्णः पदन्यासैरकम्पयत मेदिनीम् ॥
 गच्छन् செல்கின் தவனாய்
 पदन्यासैः அடிவைப்புதவரால்
 मेदिनी பூமியை
 अकम्पयत அசீர்த்து சடுக்கச்
 செய்தான்.

स राजमार्गं वपुषा प्रकाशयन् सहस्ररश्मिधरणीभिवांशुभिः ।

जगाम तत्राञ्जलिमालया वृतः शतक्रतुर्गैहपिव स्वयंभुवः ॥ १०३ ॥

सः அவன்
 वपुषा தேகவெளியால்
 राजमार्गं ராஜமார் க்கக்கை
 सहस्ररश्मिः சுதிரவன்
 अंशुभिः கிரணங்களால்
 धरणी பூமியை
 इव எவ்வாறே அவ்வாறே
 प्रकाशयन् இலங்கச்செய்து
 கொண்டி

तस्य உக்கு
 अञ्जलिमालया உயிர் அக்களின்
 வரிசையால்
 वृतः கெளரவிக்கப்பட்ட
 शतक्रतुः இச்சிறை [வனாய்
 स्वयंभुवः சீர்த்தீதவரானது
 गैहपिव மாளிகைக்கு
 इव எப்படியோ அப்ப
 जगाम சென்றான். [டியே

तं राजमार्गस्थमभिघ्नघातिनं वनौकसस्यो सहसा वह्निः स्थिताः ।
दृष्ट्वाऽप्रमेयं गिरिशङ्खकल्पं वितत्रसुस्ते हरियूथपालाः ॥ १०४ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|---------------|-------------------------|
| वह्निः स्थिताः | வெஹ்னிபில் தீற்கின்ற | गिरिशङ्खकल्पं | மலைச்சிகர த்னத நிகர் த் |
| ते | அந்த | तं | தவனுமரன |
| हरियूथपालाः | வானரசேனைத் தலைவர் | सहसा | அவனை |
| ते | அந்த [கனும்] | राजमार्गस्थं | வேகமாய் |
| वनौकसः | வானரசர்களும் | दृष्ट्वा | ராஜாதி திரிவில் செல்ல |
| अभिघ्नघातिनं | அத்ருசம்வாரசகனும் | वितत्रसुः | மண்டு [கனும்] |
| अप्रमेयं | வண்ணவும் முடியாத | | வெருண்டேர் டினூர் |
| | தவனும் | | கள். |

केचिच्छरण्यं शरणं स रामं व्रजन्ति केचिद्व्यथिताः पतन्ति ।

केचिदिशः स व्यथिताः प्रयान्ति केचिद्भयार्ता भुवि शेरते स ॥ १०५ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|-------------|---------------------|
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் |
| शरण्यं | தீனரகங்கராகிய | व्यथिताः | அறிவு குழம்பியவர் |
| रामं | ஸ்ரீராமரிடம் | दिशः | திக்குகளில் [களாய்] |
| शरणं व्रजन्ति स | சரணமடைந்தார்கள். | प्रयान्ति स | ஓடினார்கள். |
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் |
| व्यथिताः | மனக்கலங்கியவர் | भयार्ताः | திதினுற்றவர்களாய் |
| | களாய் | भुवि | தரைவில் |
| पतन्ति | கீழ்விழுந்தார்கள். | शेरते स | விழுந்தார்கள். |

तमद्रिशङ्खप्रतिमं किराटिनं स्पृशन्तमादित्यमिवात्मतेजसा ।

वनौकसः प्रेक्ष्य विवृद्धमद्भुतं भयार्दिता दुद्रुविरे ततस्ततः ॥ १०६ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------|------------|--------------------|
| वनौकसः | வானரசர்கள் | विवृद्धं | பேருருவமுற்றவனும், |
| किराटिनं | கிரீடம் புனைந்தவனும் | अद्भुतं | அபூர்வத்தோற்ற |
| अद्रिशङ्खप्रतिमं | மலைச்சிகர முடியைய | | முற்றவனுமரன |
| | சிகரத்தவனும் | तं | அவனை |
| आत्मतेजसा | தனது ஒளிமால் | प्रेक्ष्य | பார்த்து |
| आदित्यं | சூரியனை | भयार्दिताः | பயபிடித்தர்களாய் |
| स्पृशन्ते इव | தகைக்கின்றவன் | ततस्ततः | அக்குறிக்கும் |
| | போன்றவனும், | दुद्रुविरे | ஓடினார்கள். |

इत्याप्यं श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे षष्ठितमः सर्गः ॥

एकपिहितमः सर्गः — अथपत्तेश्वरावतु लोकात्म ॥ २१ ॥

श्रीरामाय कुम्भकर्णवर्णनम्— श्रीरामரிடம் சும்பகர்ணனை வர்ணிப்பது.

ततो रामो महातेजा धनुरादाय वीरवान् । किरीटिनं महाकायं कुम्भकर्णं ददर्श ह ॥१॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|---------------------|
| महातेजाः | மகா தேஜஸ்வியும் | आदाय | கையிலெடுக்கும் |
| वीरवान् | வீரவசுவியமாகிய | | கொண்டு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | महाकायं | பேருடலமைந்தவனும் |
| ततः | அப்பொழுது | किरीटिनं | கிரீடம் புனைந்தவனான |
| धनुः | விடையை | कुम्भकर्णं | சும்பகர்ணனை [மான |
| | | ददर्श ह | கண்ணுற்றார். |

तं दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं पर्वताकारदर्शनम् । क्रममाणमिवाकाशं पुरा नारायणं प्रभुम् ॥ २ ॥

सतोयाम्बुदसङ्काशं काञ्चनाङ्गदभूषणम् ॥ ३ ॥

दृष्ट्वा पुनः प्रदुद्राव वानराणां महाचमूः ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-------------------|--------------------|
| वानराणां | வானரர்களின் | सतोयाम्बुदसङ्काशं | நீருண்ட மேகத்தை |
| महाचमूः | பேருஞ்சேனை | | நிகர்த்தவனும், |
| पर्वताकारदर्शनं | மலையை நிகர்த்த தேர் | काञ्चनाङ्गदभूषणं | கொந்தோள்வளைகள் |
| | ற்றம்பெற்றவனும் | | அணிந்தவனும், |
| पुरा | முன்காலத்தில் | राक्षसश्रेष्ठं | ராஷ்டிரஸாத்தமனான |
| आकाशं | ஆகாசத்தில் | | மாகிய |
| क्रममाणं | அடிவைத்த | तं | அவனை |
| प्रभुम् | அர்வசுத்தராகிய | पुनः | மீண்டும் மீண்டும் |
| नारायणं | நாராயணரை | दृष्ट्वा दृष्ट्वा | பார்த்துப்பார்த்து |
| इव | போன்றிருப்பவனும், | प्रदुद्राव | எக்குமொடிற்று. |

विद्रुतां वाहिनीं दृष्ट्वा वर्धमानं च राक्षसम् । सविस्मयमिदं रामो विभीषणमुवाच ह ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|----------|-----------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| विद्रुतां | ஒடின | विभीषणं | விபிஷணரை நோக்கி |
| वाहिनीं | சேனையையும் | सविस्मयं | ஆச்சரியத்தடன் |
| वर्धमानं | ஒங்கி வளர்ந்திருக்கின்றவனான | इदं | பின்வருமாறு |
| राक्षसं च | அரக்கனையும் | उवाच ह | வினாவினார்: |

कोऽसौ पर्वतसङ्काशः किरीटी हरिलोचनः । लङ्कायां दृश्यते वीर सविद्युदिव तोयदः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|----------|-----------------|
| वीर | * வீர ! | सविद्युव | மின்னல்களுடன் |
| लङ्कायां | லங்கைகாவில் | | கடிய |
| पर्वतसङ्काशः | மலையை நிகர்த்தவனாய் | तोयदः इव | போகம்போன்றவனாய் |
| किरीटी | கிரீடம் புனைந்தவனாய் | दृश्यते | ஒருவன் காண்கின் |
| हरिलोचनः | கடிலாநிறக் கண்களான | वती | துவன் . [நானே, |
| | வையவனாய் | कः | யாவன் ? |

पृथिव्याः केतुभूतोऽसौ महान्कोऽत्र दृश्यते । यं दृष्ट्वा वानराः सर्वे विद्वन्ति ततस्ततः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|-------------------|
| असौ | " இவன் " | अत्र | இங்கு |
| पृथिव्याः | புவியிருள் | दृश्यते | காணப்படுகிறான். |
| एकः | தனித்த அபூர்வனாய் | यं | எவனோ அவனை |
| महान् | பெருந்தோற்றமுடைய | सर्वे वानराः | எல்லா வானரர்களும் |
| | பவனாய் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| केतुभूतः | தலைமையாய் விளங்கு | ततःस्ततः | ஆங்காங்கு |
| | பவனாய் | विद्वन्ति | ஒருமின்றர்கள். |

आचक्ष्व मे महान्कोऽसौ रक्षो वा यदि वाऽसुरः । न पर्यवधिं भूतं दृष्टपूर्वं कदाचन ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------------|-----------------------|
| मे | " எனக்கு " | असुरः | அசுரனு ? |
| आचक्ष्व | விளக்கவுரை. | एवंविधं | இப்படிப்பட்டதாகிய |
| महान् | பெருமகாரமுத்த | भूतं | பிராணியொன்று |
| असौ | இவன் | कदाचन | எக்காலத்திலும் |
| कः | பாவன் ? | मया | என்னால் |
| रक्षः वा | அரக்கனு ? | दृष्टपूर्वं न | பார்க்கப்பட்டதில்லை." |
| यदि वा | இன்றேல் | | |

स पृष्टो राजपुत्रेण रामेणाक्लिष्टकर्मणा । विभीषणो महाप्राज्ञः काकुत्स्थमिदमवधीत् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|------------------|
| अक्लिष्टकर्मणा | அனாயசமாய் எனது | सः | அந்த |
| | பும் செய்வவல்ல | महाप्राज्ञः | துண்ணறிவாளராகிய |
| राजपुत्रेण | சகரவர்த்தி திருமக | विभीषणः | கிரிவகணர் |
| | னாரை | काकुत्स्थं | சூரமரைப்பார்த்து |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | इदं | பின்வருமாறு |
| पृष्टः | வினாசப்பட்ட | अवधीत् | புகன்றார் : |

येन वैवस्वतो युद्धे वासवश्च पराजितः । सैष विश्वसः पुत्रः कुम्भकर्णः प्रतापवान् ॥१०॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|-------------------|
| येन | " எவனால் " | सः | அந்த |
| वैवस्वतः | எம்ன் | पुत्रः | இவன் |
| युद्धे | போரில் | विश्वसः | விசுவஸரின் |
| पराजितः | முறியடிக்கப்பட்ட | पुत्रः | புதல்வனும் |
| वासवः | இந்திரனும் [டானோ, | प्रतापवान् | பிரதாபசலியமுமாகிய |
| च | அப்படியே முறியடிக்க | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணனை |
| | கப்பட்டானோ, | | பவன். |

अस्य प्रमाणात्सदृशो राक्षसोऽन्यो न विद्यते ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------|------------|-----------|-----------|
| अस्य | " இவனது " | अन्यः | வேறொரு |
| प्रमाणान् | ஆகுகிறபொழு | राक्षसः | இராக்ஷஸன் |
| तदृशां | ஒத்த | न विद्यते | இல்லை. |

एतेन देव युधि दानवाश्च यज्ञा भुजङ्गाः पिशिताशनाश्च ।
गन्धर्वविद्याधरकिन्नराश्च सहस्रशो राघव संपभन्नाः ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------|---------------|--------------------|----------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | भुजङ्गाः | பாசர்களும் |
| एतेन | இவனால் | पिशिताशनाः च | இராசநாஸர்களும் |
| युधि | போதில் | गन्धर्वविद्याधर-) | கந்தர்வர்களும், கித் |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான | किन्नराः च) | யாதார்களும், கின் |
| देवाः | தேவர்களும் | | னர்களும் |
| दानवाः च | தானவர்களும் | संपभन्नाः | முடியுக்கப்பட்டார் |
| यज्ञाः | யசுதர்களும் | | கண். |

शूल्पाणि विरुपाक्षं कुम्भकर्णं महाबलम् । हन्तुं न शोकुस्त्रिदशाः कालोऽयमिति मोहिताः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|---------|------------------|
| त्रिदशाः | “தேவர்கள் | अयं | ‘இவன் |
| शूल्पाणि | சூலாயுதத்தைக்கொண்டு | कालः | காலநேரமாகித்தாவா |
| | சேந்தியவனும் | | கிய நூதரன்’ |
| विरुपाक्षं | விரகாசக்கண்களுடைய | इति | என்று |
| | வனும் | मोहिताः | பிராந்திகொண்டு |
| महाबलं | மகா பலசாலியுமாகிய | हन्तुं | கொல்ல |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | न शोकुः | முடியவில்லை. |

प्रकृत्या ह्येष तेजस्वी कुम्भकर्णो महाबलः । अन्येषां राक्षसेन्द्राणां वरदानकृते बलम् ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------------|---------------|
| एषः | “இந்த | अन्येषां | இதர |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | राक्षसेन्द्राणां हि | ராசநாஸர்களின் |
| प्रकृत्या | பிறவிபிலேயே | | களுக்கேகொண்ட |
| तेजस्वी | ஆண்மை படைக்கப் | बलं | பலமாதது |
| | பெற்றவன். | वरदानकृतम् | வரம்பெற்றதால் |
| महाबलः | மகா பராக்ரமசாலி. | | கொண்டது. |

एतेन जातमात्रेण क्षुधातेन महात्मना । भक्षितानि सहस्राणि सत्वानां सुबहूनि ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-----------|-----------------|
| जातमात्रेण | “பிறந்தவுடனேயே | सत्वानां | பிராணிகளின் |
| क्षुधातेन | பசிப்படுகிறவனிட | सुबहूनि | சுலகிலைக்கொ |
| एतेन | இந்த | सहस्राणि | ஆயிரக்கண் |
| महात्मना अपि | பெரிய ஆதீராவானை | भक्षितानि | கிழுக்கப்பட்டன. |
| | தான் | | |

तेषु संभक्ष्यमाणेषु प्रजा भयनिर्पीडिताः । यान्ति स्म शरणं शकं तपस्यर्थं न्यवेदयन् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|---------------|-------------------|
| तेषु | “அவைகண் | शकं | சூர்திரளிடம் |
| संभक्ष्यमाणेषु | கிழுக்கக்கூடாது | शरणं या स्त आ | சுலையுருத்தர்கள். |
| | படும்பொழுது | तं | கந்த |
| प्रजाः | பிரான்கள் | अर्थं अपि | கிவையந்தையும் |
| भयनिर्पीडिताः | கிழிக்கொண்டவர் | न्यवेदयन् | கொண்டுகொண் |
| | களாய் | | டார்கள். |

स कुम्भकर्ण कुपितो महेन्द्रो जघान वज्रेण शितेन वज्री ।

स शक्रवज्राभिहतो महात्मा चचाल कोपाच्च भृशं ननाद ॥ १७ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|----------------|-----------------------------------|
| सः | “ அந்த | शक्रवज्राभिहतः | இந்திரனது வஜ்ராயுதத்தால் அடியுண்ட |
| वज्री | வஜ்ராயுதமேந்திய வனுகிய | महात्मा | பெரும் பிராணி யாகிய |
| महेन्द्रः | இந்திரனும் | सः च | அவனும் |
| कुपितः | கொபங்கொண்டு | चचाल | கடுக்கங்கொண்டான். |
| कुम्भकर्ण | கும்பகர்ணன் | कोपाच्च | கொபத்தால் |
| शितेन | சூரிய | भृशं | உரக்க |
| वज्रेण | வஜ்ராயுதத்தால் | ननाद | கூச்சலிட்டான். |
| जघान | புடைத்தான். | | |

तस्य नानद्यमानस्य कुम्भकर्णस्य धीमतः । श्रुत्वाऽतिनादं विव्रस्ता भूयो भूमिर्वितत्रसे ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|------------------|
| तस्य | “ அந்த | भूमिः | உலகம் |
| धीमतः | புத்தியானுகிய | अतिनादं | கடுக்கச்சலை |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணன் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| नानद्यमानस्य | கூச்சலிடும்பொழுது | भूयः | இன்னும் அதிகமாய் |
| विव्रस्ता | பயங்கொண்டிருந்த | वितत्रसे | கடுக்கக்கிற்று. |

तत्र कोषान्महेन्द्रस्य कुम्भकर्णो महावलः । विकृष्यैरावतादन्तं जघानोरसि वासवम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|---------|----------------------------|
| तत्र | “ அப்பொழுது | दन्तं | தந்தமொன்றை |
| महावलः | மகாவலனாகிய | विकृष्य | முறித்தெடுத்துக் கொண்டு |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | वासवं | இந்திரனை |
| कोपाच्च | கொபத்தால் | उरसि | மார்பில் |
| महेन्द्रस्य | தேவேந்திரனது | जघान | புடைத்தான். |
| ऐरावताच्च | ஐராவதயானிட மிருந்து | | |

कुम्भकर्णमहारातो विज्ज्वान् स वासवः । ततो विषेदुः सहसा देवब्रह्मर्षिदानवाः ॥ २० ॥

| | | | |
|------------------|--|---------------------|--|
| सः | “ அந்த | ततः | அப்பொழுது |
| वासवः | இந்திரன் | देवब्रह्मर्षिदानवाः | { தேவர்களும், பிரம்ம ரிஷிகளும், தானவர்களுநர், |
| कुम्भकर्णमहारातः | { கும்பகர்ணனது அடி உரல் பிண்டமுண்டவ னும் | सहसा | ஏககாலத்தில் |
| विज्ज्वान् | தறித்தான். | विषेदुः | வருத்தங்கொண் டார்கள். |

प्रजाभिः सह शक्रश्च ययौ स्थानं स्वयंभुवः । कुम्भकर्णस्य दौरात्म्यं शशंसुस्ते प्रजापतेः ॥
प्रजानां भक्षणं चापि देवानां चापि ध्वणम् । आश्रमध्वंसनं चापि परस्त्रीहरणं तथा ॥

| | |
|--------------|----------------|
| शकः च | "இந்திரனும் |
| प्रजाभिः | பிரஜைகளை |
| सह | கூட |
| स्वयंभुवः | • பிரம்மதேவரது |
| स्थानं | நகருக்கு |
| पथौ | எகிலான். |
| ते | அவர்கள் |
| प्रजापतेः | பிரம்மதேவரிடம் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது |
| प्रजानां | பிரஜைகளை |
| भक्षणं | தின்றலைபும் |

| | |
|----------------------|-----------------------------------|
| देवानां | தேவர்களை |
| धर्मं च | புடைத்தலையும் |
| आश्रमध्वंसनं अपि | ஆசிரமங்களை அழித் தலையும் |
| परस्त्रीदृष्ट्यं तथा | பிறர் மனைகிகளைக் கவர்ந்தலையும் |
| अपि च | இன்னும் வேறான |
| दौरात्म्यं अपि | அடாத துஷ்டச் செயலையும் |
| अपि च | இன்னும் இப்படியும் |
| शशंसुः | முறைபிட்டுக்கொண் டார்கள்: |

एवं प्रजा यदि त्वेष भक्षयिष्यति नित्यशः । अचिरेणैव कालेन शून्यो लोको भविष्यति ॥

| | |
|-----------------|--------------------------|
| एषः | "இவன் |
| नित्यशः | நாடொழும் |
| एवं | இப்படியாய் |
| प्रजाः | பிரஜைகளை |
| भक्षयिष्यति यदि | தின்றதுவருவானே யாகில் |

| | |
|-----------|---------------|
| अचिरेण | சிறிது |
| कालेन एव | நாளத்தினேயே |
| लोकः | உலகம் |
| शून्यः तु | கிர்ந்தவர்களே |
| भविष्यति | ஆகிவிடும்." |

वासवस्य वचः श्रुत्वा सर्वलोकपितामहः । रक्षास्यावाहयामास कुम्भकर्णं ददर्श ह ॥२४॥

| | |
|----------------|---|
| सर्वलोकपितामहः | { "எல்லா லோகத்திற் கும் பாட்டனாகிய அவர் |
| वासवस्य | இந்திரனது |
| वचः | சொல்லுக்கு |

| | |
|--------------|---------------------|
| श्रुत्वा | திருச்செவி சாய்த்து |
| रक्षासि | அரட்சர்களை |
| आवाहयामास | கரவழைத்தார். |
| कुम्भकर्णं ह | கும்பகர்ணனையும் |
| ददर्श | கண்ணுற்றார். |

कुम्भकर्णं समीक्ष्यैव वितत्रास प्रजापतिः । दृष्ट्वा विश्वास्य चैवेदं स्वयंभूर्दिमन्नर्वात् ॥

| | |
|-------------|-----------------|
| प्रजापतिः | "பிரஜாநாதராகிய |
| स्वयंभूः एव | பிரம்மதேவரும் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| समीक्ष्य | பார்ந்து |
| वितत्रास | திகில்கொண்டார். |

| | |
|------------|---------------------------------|
| दृष्ट्वा च | பார்த்ததோ |
| इदं एव | இதை உ (தேவர்கள் சொன்னதையும்) |
| विश्वास्य | பெருமைப்படுத்தி |
| इदं | இக்கருவரை |
| अवर्षात् | எரித்தார்: |

ध्रुवं लोकविनाशाय पौलस्त्येनासि निर्मितः । तस्मात्स्वप्नप्रभृति मृतकल्पः शयिष्यसे ॥

| | |
|--------------|----------------------------------|
| लोकविनाशाय | "உலக அழிவின் பொருட்டு |
| पौलस्त्येन | பொளஸ்தியரால் |
| निर्मितः असि | உண்டாக்கப்பட்டிருந் தீன்றீர். |
| ध्रुवं | இது திசையால் |

| | |
|-------------|-----------------|
| तस्मान् | ஆகையால் |
| अप्यप्रभृति | இதுமுதல் |
| मृतकल्पः | செத்தவனாக |
| त्वं | ஈ [கொப்பாய் |
| शयिष्यसे | தாங்கக்கடவாய்." |

ब्रह्मशापाभिभूतोऽथ निपपातायतः प्रभोः । ततः परमसंभ्रान्तो रावणो वाक्यमब्रवीत् ॥

अथ
ब्रह्मशापाभिभूतः
प्रभोः

“அப்பொழுது
பிரம்மதேவரது
சாபத்தால் பற்றப்
பட்டவனாய்
சர்வசக்தராகிய

अमृतः
निपपात
विवृद्धः काञ्चनो वृक्षः फलकाले निकृत्यते

प्रजापते
काञ्चनः
वृक्षः
विवृद्धः
फलकाले

அமரது
ஸந்திதியில்
விழுந்து விட்டான்.
“பிரம்மதேவரே!
சம்புக
மரம்
நன்கு வளர்க்கப்பட்டு
பலன்பெறும்

न मिथ्यावचनश्च त्वं स्वप्स्यत्येष न संशयः ।

स्वप्
मिथ्यावचनः न

एषः
स्वप्स्यति
संशयः न
तथा तु

रावणस्य वचः श्रुत्वा स्वयंभूरिदमब्रवीत् ॥ ३० ॥

स्वयंभूः
रावणस्य
वचः

शयिता ह्येष षण्मासानेकाहं जागरिष्यति । एकेनाहा त्वसौ वीरश्वरन्भूमिं बुभुक्षितः ॥ ३२ ॥

व्यात्तास्यो भक्षयेद्लोकान् संक्रुद्ध इव पावकः

एषः हि
षण्मासान्
शयिता
एकाहं
जागरिष्यति
वीरः
असौ
एकेन अहा तु
बुभुक्षितः

“இவனுள்
ஆறுபாத்க்கள்
துக்குவான்.
ஒரு நாள்
விழ்த்திருப்பான்.
வீரனாகிய
இவன்
அந்த ஒரு நாளிலே
பசிமுண்டவனாய்

ततः
रावणः
परमसंभ्रान्तः
वाक्यं
अब्रवीत्

அப்பொழுது
ராவணன்
மிகப் பதறியவனாய்
ஒரு வார்த்தையை
பின்வருமாறு வின்
ணப்பித்துக்கொண்
டான் :

न नसारं स्वकं न्याय्यं शम्भुमेवं प्रजापते ॥

निकृत्ये
एवं
स्वकं
नसारं
शम्भुं
न्याय्यं न

வெட்டப்படுகிறது.
இப்படியே
தேவிரது
பேரளகிய அவனை
சரிக்க
தகரது.

कालस्तु क्रियतामस्य शयने जागरे तथा ॥

अस्य
शयने
जागर
कालः
क्रियताम्

இவனுக்கு
துக்கவிஷயத்திலும்,
விழிப்புவிஷயத்தி
லும்
குறிப்பிட்ட காலம்
ஒன்று
விதித்தருளப்பட்ட
தும்.”

॥ ३० ॥

श्रुत्वा
इदं
अब्रवीत्

கேட்டு
பின்வருமாறு
புகன்றருளினார் :

एकेनाहा त्वसौ वीरश्वरन्भूमिं बुभुक्षितः ॥ ३२ ॥

भूमिं
चक्र
व्यात्तास्यः
संक्रुद्धः
पावकः इव
लोकान्
भक्षयेत्

பூமியில்
சஞ்சரிக்கின் றவனாய்
வாயைத்திறந்து
கொண்டு
சினக்கொண்டு
அக்னிபோன் றவனாய்
ஊந்துக்களை
விழுங்கித்தின் று
வருவான்.

सोऽसौ व्यसनमापन्नः कुम्भकर्णमवोधयत् । स्वत्याक्रमभीतश्च राजा संप्रति रावणः ॥३३॥

| | | | |
|-----------------|---|--------------|--------------------------------------|
| स्वत्याक्रமமீத: | { "தேவரீரது பராக் கிரமத்தால் திகில் கொண்ட | சம்பதி | இப்பொழுது |
| ச: | அந்த | வ்யஸனம் ஆபன: | சங்கடத்தில் ஆகப்பட்ட புருப்பவனாய் |
| அசௌ | இந்த | ச | அதனால் |
| ராவண: | ராவண | கும்பகர்ண | கும்பகர்ணனை |
| ராஜா | மன்னன் | அவোধயத் | எழுப்பியிருக்கிறான். |

स एष निर्गतो वीरः शिविराज्ञीमविक्रमः । वानरान् भृशसंकुद्धो भक्षयन् परिधावति ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|-------------|--|
| भीमविक्रम: | " பயக்கரப்பிரதரபம் படைத்தவனாகிய | निर्गतः | வெளிப்புறப்பட்டவ னாய் |
| ச: | அந்த | भृशसंकुद्धः | நிகர்சென்றுகொண்டு |
| एष: | இந்த | वानरान् | வானரர்களை |
| वीरः | வீரன் (கும்பகர்ணன்) | भक्षयन् | ஒழிப்பதற்காக |
| शिविरात् | விடுதியிலிருந்து | परिधावति | வினாந்து சென்றுகொ ண்டிருக்கின்றான். |

कुम्भकर्ण समीक्ष्यैव हरयोऽथ प्रविद्रुताः । कथमेनं रणे क्रुद्धं वारयिष्यन्ति वानराः ॥३५॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|--------------|---------------------------|
| हरयः | " வானரர்கள் | रणे | போரில் |
| अथ | இப்பொழுது | क्रुद्धं | கொபமடைந்த |
| कुम्भकर्ण | கும்பகர்ணனை | एनं | இவனை |
| समीक्ष्य एव | கண்டமாத்திரத்தி லேயே | वानराः | வானரர்கள் |
| प्रविद्रुताः | ஒட்டமெடுத்துவிட் டார்கள். | कथं | எவ்வளம் |
| | | वारयिष्यन्ति | எதிர்க்கப்போகின்ற னரோ? |

उच्यन्तां वानराः सर्वे यन्त्रमेतत्समुच्छ्रितम् । इति विज्ञाय हरयो भविष्यन्तीह निर्भयाः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------|--------------------|
| वानराः | " வானரர்கள் | उच्यन्तां | சொல்லப்பட |
| सर्वे | எல்லோரும் | इति | தீய்ப்பு [வேண்டும் |
| इह | இப்பொழுது | हरयः | வானரர்கள் |
| एतत् | ' இது | विज्ञाय | எண்ணிக்கொண்டு |
| समुच्छ्रितं | ஒழிவிவைந்த | निर्भयाः | பயரற்றவர்களாய் |
| यन्त्रं | ஓர் இயந்திரம் என்று | भविष्यति | நிகழ்பார்கள்." |

विभीषणवचः श्रुत्वा हेतुमत्सुमुखेरितम् । उवाच राघवो वाक्यं नीलं सेनापति तदा ॥३७॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|---------|---------------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | शुवा | திருச்செவி சாய்த்து |
| हेतुमत् | யுத்தமானதும் | तदा | கப்பொழுது [விட்டு |
| सुमुखेरितं | இனிமையாய்ச் சொல் லப்பட்டதுமான | सेनापति | சேனாதிபதியாகிய |
| विभीषणवचः | விபீஷணரது | नीलं | நீலப்பார்த்து |
| | வார்த்தைகளு | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| | | उवाच | பின்வருமாறு அருளிச்செய்தார்: |

गच्छ सैन्यानि सर्वाणि व्यूहं तिष्ठस्व पावके । द्वाराण्यादाय लङ्कायाश्चर्याश्चाप्यथ संकमान् ॥

| | | | |
|----------|----------------------|------------|---------------------|
| पावके | “ அகன்றியுத்த, சீல ! | द्वाराणि | கோட்டைவாயில் |
| गच्छ | நீ புறப்பட்டுப்போய் | | களிலும் |
| सर्वाणि | எல்லா | चर्याः अपि | கோட்டைக்கடுத்த கா |
| सैन्यानि | ஸசன்யக்களையும் | | யல் விடுத்திகளிலும் |
| व्यूहं | அணியுகுத்து | संकमान् मथ | அகழிப்பாலங்களி |
| आदाय | அடைந்துக்கொண்டு | | லும் |
| लङ्कायाः | இலங்கையினது | तिष्ठस्व | காத்து நில. |

शैलशृङ्गाणि वृक्षाश्च शिलाश्चाप्युपसंहर । तिष्ठन्तु वानराः सर्वे सायुधाः शैलपाणयः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-----------|---------------------|
| शैलशृङ्गाणि च | “ மலைச்சிகரங்களையும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| वृक्षान् अपि | மரங்களையும் | सायुधाः | போர்க்கருவி கொண் |
| शिलाः च | பாறைகளையும் | | டவர்களாய் |
| उपसंहर | சேகரித்துவைப்பாய். | शैलपाणयः | மலைகளைக் கையிலெந் |
| वानराः | வானரர்கள் | | தியவர்களாய் |
| | | तिष्ठन्तु | காத்துநிற்கட்டும்.” |

राधवेण समादिष्टो नीलो हरिचमूपतिः । शशास वानरानीकं यथावत्कपिकुञ्जरः ॥ ४० ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|-----------------|
| राधवेण | ஸ்ரீராமரால் | नीलः | நீலன் |
| समादिष्टः | ஆக்குமாசிக்கப்பட்ட | यथावत् | அப்படியே |
| हरिचमूपतिः | வானரசேனாபதியும் | वानरानीकं | வானரசேனைக்கு |
| कपिकुञ्जरः | வானரோத்தமனு | शशास | கட்டளைவிட்டான். |
| | பாகிய | | |

ततो गवाक्षः शरभो हनुमानद्गदस्तथा । शैलशृङ्गाणि शैलाभा गृहीत्वा द्वारमभ्ययुः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|-------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | शरभः यथा | அங்கத்தலும் |
| शैलाभाः | மலையை திகர்த்தவர் | शैलशृङ्गाणि | மலைச்சிகரங்களை |
| | களான | गृहीत्वा | எடுத்துக்கொண்டு |
| गवाक्षः | கவாக்ஷனும் | द्वारं | கோட்டைவாயிலுக்கு |
| शरभः | சரபனுய் | अभ्ययुः | வந்தனர். |
| हनुमान् | ஹனுமா லும் | | |

रामवाक्यमुपश्रुत्य हरयो जितकाशिनः । पादपैर्दयन्वीरा वानराः परवाहिनीम् ॥ ४२ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|----------------------|
| जितकाशिनः | எப்பொழுதும் வெ | उपश्रुत्य | கேடிகொண்டு |
| | ந்நிபெற்று விளக்கும் | पादपैः | மடக்கினோடு |
| हरयोः | வானரர்களும் | परवाहिनीं | சத்ருசேனையை |
| वीराः | ஞாயக்களான | | கோக்கி |
| वानराः | வானரர்களும் | अर्धयन् | புறப்பட்டுச்சென்றார் |
| रामवाक्यं | ஸ்ரீராமரது ஆங்கு | | கள். |
| | வாய | | |

ततो हरीणां तदनीकमुग्रं रराज शैलोचतद्दृष्टहस्तम् ।
गिरेः सर्षापानुगतं यथैव महन्महाम्भोधरजाञ्जमुग्रम्

॥ ४३ ॥

| | | | |
|---------------------------|---|--------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सर्षापानुगतं | தாழ்வாளானைகள் கற்றி |
| हरीणां | வானரர்களின் | तत् | அங்க [நிற்கிற துணை |
| उग्रं | பயங்கரமானதும் | अनीकं | சேலையானது |
| शैलोचत- } दृष्टहस्तं } | மலைகளை உடர்ந்திட்டு பிரந்த அழகியவை களுடையதும் | महन् | நிமிர்ந்தும் |
| गिरेः | மலைகளின் (கடுவலை மலைகளின்) | उग्रं | பயங்கரமானதுமான |
| | | महाभोधरजालं | காந்தொலிமண்டலம் |
| | | यथा एव | எனவே |
| | | रराज | விளங்கிற்று. |

इत्थार्थे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे एकपष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकः 17314

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकः 2639

द्विपष्टितमः सर्गः—அறுபத்திரண்டாவது ஸர்க்கம் ॥ ४३ ॥

कुम्भकर्णसाल्वनम्—கும்பகர்ணனை சமாதானப்படுத்துவது.

स तु राक्षसशार्दूलो निद्रामदसमाकुलः । राजमार्गं श्रिया जुष्टं ययौ विपुलविक्रमः ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|--|---------------|---------------------------|
| राक्षसशार्दूलः | இராக்ஷஸப்புலிமரம் | सः तु | அவனும் (கும்பகர்ண னம்) |
| विपुलविक्रमः | பெரும் பிரதாப காணியும் | श्रिया जुष्टं | திடுபொருத்திய |
| निद्रामदसमाकुलः | { தூக்கத்தாலும் குடி நிவந்தியாலும் கலங்க கொடுப்பவனுமான | राजमार्गं | ராஜமிகழி |
| | | ययौ | சென்றான். |

राक्षसानां सहस्रैश्च वृतः परमदुर्जयः । गृहेभ्यः पुण्यवर्षेण कार्यमाणस्तदा ययौ ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-------------|------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | वृतः | சூழப்பட்டவனும் |
| परमदुर्जयः | பிரக வெல்லநிற்கியவனு கிய அவன் | गृहेभ्यः | கூடுகளைக்குறித்து |
| राक्षसानां | ஆரக்கர்களின் | पुण्यवर्षेण | ஊர்வாள் |
| सहस्रैः | அடுக்கக்களால் | कार्यमाणः च | தீவதக்கப்பட்டவ னும் |
| | | ययौ | சென்றான். |

स हेमजालविततं भानुभास्वरदर्शनम् । ददर्श विपुलं रम्यं राक्षसेन्द्रनिवेशनम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------------|--|---------------------|---------------------------|
| सः | அவன் | विपुलं | பிரதாபமானதும் |
| हेमजालविततं | வெள்ளை காளாக்கம் ஊட்டிக்கப்பெற்றதும் | रम्यं | அழகியதுமான |
| भानुभास्वरदर्शनं | { சூரியன் போன்ற பிரகா சுக்கும் சேர்ந்தபு ண்டையதும் | राक्षसेन्द्रनिवेशनं | ராக்ஷஸமன்னனது மரணிகையை |
| | | ददर्श | கண்டான். |

स तत्तदा सूर्य इवाभ्रजालं प्रविश्य रक्षोऽधिपतेर्निवेशम् ।
ददर्श दूरैऽभ्रजवासनस्थं स्वयंभुवं शक्र इवासनस्थम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|--------------------|
| सः | ஆவன் | दूरे | திரிந்து தூரத்தில் |
| रक्षोऽधिपतेः | ராக்கூஸமல் ஊனது | आसनस्थं | ஆஸனத்தில் வீற்றி |
| तत् | அந்த | अभ्रजं | தமையனூரை [ருக்குப் |
| निवेशी | அரண்மனைக்குள் | शक्रः | இந்திரன் |
| सूर्यः | சூரியன் | आसनस्थं | ஆஸனத்தினமர்ந்தி |
| अभ्रजालं | கோகமண்டலத்தினுள் | | ருக்கும் |
| इव | எப்படியோ அப்படி | स्वयंभुवं | பிரம்மதேவரை |
| प्रविश्य | புகுந்து | इव | எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| तदा | அப்பொழுது | इदं | கண்டான். |

भ्रातुः स भवनं गच्छन्नशोगणसमन्वितम् । कुम्भकर्णः पदन्यासैरकम्पयत् मेदिनीम् ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-----------|------------------|
| सः | அந்த | भवनं | மாணிகையில் |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | गच्छन् | செல்கின்றவனாய் |
| रक्षोगणसमन्वितं | ராக்கூஸக்கூட்டங்கள் | पदन्यासैः | காலடிவைப்புகளால் |
| | சிறைந்த | मेदिनी | பூமியை |
| भ्रातुः | நகையனூரது | अकम्पयत् | அதிர்ச்செய்தான். |

सोऽभिगम्य गृहं भ्रातुः कक्ष्यामभिविगाह्य च । ददर्शोद्दिग्मासीनं विमाने पुष्पके गुरुम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------|---------------------|
| सः | ஆவன் | पुष्पके | புஷ்பக |
| भ्रातुः | தமையனூரது | विमाने | விமானத்தில் |
| गृहं | மாணிகையில் | आसीनं | உட்கார்ந்திருக்கும் |
| अभिगम्य | சென்று | गुरुं | தமையனூரை |
| कक्ष्यां | கட்டுவரிசையை | उद्दिशं | மணக்கைக்கமுற்றவ |
| अभिविगाह्य च | தாண்டிச்சென்றும் | दर्श | கவனித்தான். [ராய் |

अथ दृष्ट्वा दशग्रीवः कुम्भकर्णमुपास्थितम् । तूर्णमुत्थाय संहृष्टः सन्निकर्षमुपानयत् ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|-----------------|
| अथ | அப்பொழுது | संहृष्टः | களிக்கொண்டு |
| दशग्रीवः | தசகண்டன் | तूर्णं | சடக்கொன |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | उपाय | எழுந்து |
| उपस्थितं | வந்துவிட்டவனாக | सन्निकर्ष | சமீபத்திற்கு |
| दृष्ट्वा | கவனித்து | उपानयत् | அழைத்துவந்தான். |

अथासीनस्य पर्यङ्के कुम्भकर्णो महाबलः । भ्रातुर्वचन्दे चरणौ किं कृत्यामिति चाब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------|------------------|
| अथ | அப்பொழுது | चरणौ | பாதங்களில் |
| महाबलः | மகா பலசாலியாகிய | ववादे | தண்டனிட்டான். |
| कुम्भकर्णोः | கும்பகர்ணன் | किं | "என |
| पर्यङ्के | ஆஸனத்தில் | कृत्यं | செய்யப்படவேண்ட |
| आसीनस्य | அமர்ந்திருக்கும் | इति च | என்றும் [டிபுது |
| भ्रातुः | தமையனூரது | अब्रवीत् | விரிண்பாடித்துக் |
| | | | கொண்டான். |

उत्पत्य चैनं मुदितो रावणः परिप्लवजे । स भ्रात्रा संपरिप्लवक्तो यथावचाभिनन्दितः ॥

रावणः रा. வணன்
 मुदितः களிப்புந் தவனாய்
 उत्पत्य தான் கிடுபெழுந்து
 एनं च இவனையும்
 परिप्लवजे கட்டித் தழுவித்
 கொண்டான்.

आशा தமயனாரால்
 संपरिप्लवक्तः ஆளிக்கனம்செய்து
 யோன் னப்பட்டவ
 னாய்
 यथावत् முறைப்படி
 अभिनन्दितः च கொண்டாடவும்
 பட்டான்.

कुम्भकर्णः शुभं दिव्यं प्रतिपेदे वरासनम्

॥ १० ॥

कुम्भकर्णः கும்பகர்ணன்
 दिव्यं அழகானதும் [மீனா
 शुभं பிரகாசிக்கின்றது-

वरासनं செந்த ஆஸனமென
 நில
 प्रतिपेदे அடர்ந்தான்.

स तदासनमाश्रित्य कुम्भकर्णो महाबलः । संरक्तनयनः कोपाद्रावणं वाचयन्नवात् ॥११॥

सः அந்த
 महाबलः மகா பலசாலியாகிய
 कुम्भकर्णः கும்பகர்ணன்
 वाचयन् அந்த
 आसनं ஆஸனத்தில்
 आश्रित्य அடர்ந்து

कोपात् கோபத்தால்
 संरक्तनयनः கண்கள் சிவந்தவனாகி
 रावणं ராவணனைப்பார்,த்து
 वाचयन् ஒரு சொல்லை
 अन्नवात् விண்ணப்பித்துக்
 கொண்டான்:

किमर्थमहमादृत्य त्वया राजन्निबोधितः । शंस कस्माद्भयं तेऽस्ति कोऽय भेतो भविष्यति ॥

राजन् * அரசரே!
 अहं நான்
 किमर्थं எக்காரணமாய்
 त्वया தேவரீரால்
 आदृत्य ஆவல்கொண்டு
 विबोधितः எழுப்பப்பட்டேன்?
 शंस புகன் தருளுகும்.

कस्मात् எவனிடமிருந்து
 ते தேவரீருக்கு
 भयं கந்தமாதது
 अस्ति உண்டானிருக்கிறது?
 कोऽय தீப்பொழுது
 कः எவன்
 भेतो மரித்த பிரணமாய்
 भविष्यति ஆகப்படுவானென்று

न मे वीर्ये वले तुल्यस्त्रिषु लोकेषु विद्यते । यदीन्द्रात्ते भयं राजन् यदि वा ते स्वयंभुवः ॥

राजन् * மன்னரே!
 ते தேவரீருக்கு
 भयं ஆபத்து
 इन्द्रात् यदि இந் திரைவிடமிருந்து
 यदि वा) பிரணமதேவனிடமிருந்து
) தரவீனும் சரி

वीर्ये வீரத்திலும்,
 वले பலத்திலும்
 मे எனக்கு
 इन्द्रात् திரைவிடமிருந்து,
 त्रिषु மூன்று
 लोकेषु உலகங்களிலும்
 न विद्यते இல்லை "

भ्रातरं रावणः कुर्वं कुम्भकर्णमवस्थितम् । ईषतु परिवृत्ताभ्यां नेत्राभ्यां वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------------|----------------|---------------|--------------------|
| रावणः | ராவணன் | भ्रातरं | தம்பியர சிய |
| कुर्वं | கோபங்கொண்டு | कुम्भकर्णं तु | கும்பகர்ணனை கோக்கி |
| ईषतु | கிறிது | वाक्यं | ஒரு சொழியை |
| परिवृत्ताभ्यां | சுழலும் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| नेत्राभ्यां | கண்களுடன் | | |
| अवस्थितं | நின்றிருக்கும் | | புகன்றான் : |

अद्य ते सुमहान् कालः शयानस्य महाबल । सुखितस्त्वं न जानीषे मम रामकृतं भयम् ॥

| | | | |
|---------|---|----------|------------------|
| महाबल | "மகா பலசாலியே! | सुखितः | சுகமாயிருக்கின்ற |
| अद्य | இப்பொழுது | त्वं | நீ |
| ते | நீ | मम | எனக்கு |
| शयानस्य | படுத்துறங்கி | रामकृतं | ராமனால் விளைந்த |
| कालः | காலமானது | भयं | சங்கடத்தை |
| सुमहान् | { அனைக விசேஷ சம் பலங்களைக்கொண் டாகிறது. | न जानीषे | அறியாய். |

एष दाशरथी रामः सुग्रीवसहितो बली । समुद्रं सबलस्तीर्त्वा मूलं नः परिक्रन्तति ॥१६॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-------------|--------------------------|
| दाशरथिः | "தசரதனின் புத்ர னாகிய | सबलः | சேனைகளுடன் |
| एषः | இந்த | समुद्रं | கடலை [கடலும் |
| बली | பலசாலியாகிய | तीर्त्वा | தாண்டிவந்து |
| रामः | ராமன் | नः | எமது |
| सुग्रीवसहितः | சுக்ரீவனுடன் கடலும் | मूलं | மூலம் |
| | | परिक्रन्तति | அறுத்து வருகின் ருள். |

हन्त पश्यस्य लङ्कायां वनान्युपवनानि च । सेतुना सुखमागम्य वानरैर्कार्णवीकृतम् ॥१७॥

| | | | |
|-----------|-------------|---------------------|----------------------------------|
| हन्त | "ஐயோ! | सेतुना | அணைகயக்கொண்டு |
| लङ्कायां | இலங்கையில் | सुखं | அனுயாசமாய் |
| वनानि | காடுகளையும் | आगम्य | வந்து |
| उपवनानि च | சோலைகளையும் | वानरैर्कार्णवीकृतम् | ஓரே குறங்குக் கடலை கொட்டினது. |
| पश्यस्य | பாராய். | | |

ये रक्षसां मुख्यतमा हतास्ते वानरैर्धुधि । लङ्का तावन्महाबाहो बालवृद्धावशेषिता ॥१८॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------------------|---|
| रक्षसां | அரக்கர்களால் | हताः | வதைக்கப்பட்டனர். |
| ये | எவர்கள் | महाबाहो | மகாபாகுவே! |
| मुख्यतमाः | மிகச் சிறந்தவர்களோ | तावत् | இப்பொழுது |
| ते | அவர்கள் | लङ्का | இலங்கை |
| धुधि | பொலில் | बालवृद्धाव- शेषिता | { குழர்வகைகளும் கிழ வர்களும் மிஞ்சிய தாக்கப்பட்டது. |
| वानरैः | குறங்குகளால் | | |

वानराणां क्षयं युद्धे न पश्यामि कदाचन ॥ १९ ॥

யுद्धே
வானராणा
क्षयं

"போரில்
வானரர்களுக்கும்
அழிவை

कदाचन
न पश्यामि

எவ்விதத்திலும்
நான் அறிகிறேன்.

न चापि वानरा युद्धे जितपूर्वाः कदाचन ॥ २० ॥

யுद्धே
வானரா: ச

"போரில்
வானரர்களோ

कदाचन अपि
जितपूर्वाः न

ஒருதரமேனும்
முன்பு ஜித்க்கப்பட
வில்லை.

तदेतद्भयमुत्पन्नं त्रायस्वेषां महाबल । नाशय त्वमिमानय तदर्थं बोधिनो भवान् ॥ २१ ॥

மஹாபல
தந்
एतत्
भयं
वश्यं
इमां
त्रायस्व

"மகா பலசாலியே!
அப்படிப்பட்டதாகிய
இந்த
சங்கடமானது
உண்டாயிருக்கிறது;
இதை, (இலங்கையை)
காப்பாற்றுவாய்.

त्वं
अथ
इमान्
नाशय
तदर्थं
भवान्
बोधितः

ஈ
இப்பொழுது
இவர்களை
ஒழிக்கவேண்டும்.
அதற்காகத்தான்
ஈ
எழுப்பப்பட்டாய்.

शत्रुणा रुद्रनगरं युद्धे हतसुहृज्जनम् ॥ २२ ॥

सर्वक्षपितकोशं च स त्वमभ्यवपद्य माम् । त्रायस्वेषां पुरीं लङ्कां वानवृद्धावशेषिताम् ॥

ச:
त्वं
मां
युद्धे
शत्रुणा
रुद्रनगरं

"அந்த
ஈ
என்னை
போரில்
சத்ருவால்
முற்றுக்கொடப்பட்ட
நகரமுடையவனாகவும்

हतसुहृज्जनं

{ பறிகொடுத்த உதவி
யாளர்களைமுடையவ
னாகவும்.

सर्वक्षपितकोशं च
अभ्यवपद्य
इमां
षालवृद्धावशेषितां
लङ्कां
पुरीं
वायस्व

{ முற்றிலும் காலியான
சகலானுடையமுடையவ
னாகவும்
மனதிற்கொள்வாயாக
இந்த
குழக்கங்களும், சிபு
வர்களும் மிஞ்சிய
இலங்கை
நகரை
காப்பாடாத.

भ्रातुरर्थे महाबाहो कुरु कर्म सुदुष्करम् । मयैवं नोक्तपूर्वो हि कश्चिद्भ्रातः परंतप ॥ २४ ॥

மஹாபாஹோ
भ्रातुः अर्थे
सुदुष्करं
कर्म
कुरु
परंतप

"மகாபாஹுவே!
தனமயனுக்காக
அரிய
செயலை
புரிவாயாக.
சத்ருக்களை தடுக்க
அடிக்கும்

भ्रातः
मया
एवं
उक्तपूर्वः न हि
कश्चिन्

தம்பி!
என்னால்
இவ்விதம்
ஈ இதைமுன் சொல்
வப்படவில்லை என
நான் எண்ணுகிறேன்.

त्वय्यस्ति तु मम स्नेहः परा संभावना च मे । देवासुरेषु युद्धेषु बहुशो राक्षसर्षभ ॥ २५ ॥
त्वया देवाः प्रतिव्यूह्य निर्जिताश्वासुरा युधि ॥ २६ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|-------------------------------------|
| மம | "எனக்கு | त्वया | உன்னால் |
| त्वयि तु | உன்னிடமே | देवासुरेषु | தேவர்களில் |
| स्नेहः | அன்பானது | युद्धेषु | போர்களில் |
| अस्ति | விளங்குகிறது. | देवाः | தேவர்கள் |
| मे | எனது | प्रतिव्यूह्य | எதிர்த்தூரின்று |
| परा | எதிலும் மேம்பட்ட | निर्जिताः | ஐரக்கப்பட்டிருக்கிறார்கள். |
| संभावना | வெகுமானமும் | युधि | போரில் |
| च | அப்படியே உன்னிடம் | असुराः | அசுரர்களும் |
| | விளக்கிற்று | च | அப்படியே ஐரக்கப்பட்டிருக்கிறார்கள். |
| राक्षसर्षभ | ராக்ஷஸர்ஷபம்! | | |
| बहुशः | அநேகந்தடவை | | |

तदेतत्सर्वमातिष्ठ वीर्यं भीमपराक्रम । न हि ते सर्वभूतेषु दृश्यते सदृशो बली ॥ २७ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|--------------|------------------|
| भीमपराक्रम | "பயங்கரப்பிரதாபம் படைத்தவனை! | आतिष्ठ | கைக்கொள்வாயாக. |
| त्व | அந்த | सर्वभूतेषु | எல்லப்பிராணி |
| एतत् | இந்த | ते | உனக்கு [களிலும்] |
| वीर्यं | வீர்யம் | सदृशः | சமானனாகிய |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் | बली | பலகாலி |
| | | दृश्यते न हि | காணப்படவேயில்லை. |

कुर्वन् मे प्रियहितमेतदुत्तमं यथाप्रियं प्रियरण वान्धवप्रिय ।

स्वतेजसा विधम सपन्नवाहिनीं शरद्वनं पवन इवोद्यतो महान् ॥ २८ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|--------------|-------------------------|
| प्रियरण | "போராவல்கொள் போனை! | उद्यतः | சுழன்று கிளம்பும் |
| वान्धवप्रिय | தனமவனிடம் வாசனை வ்யமுடையவனை! | महान् | பெரிய |
| यथाप्रियं | விரும்பினதும் | पवनः | காற்றானது |
| मे | எனக்கு | शरद्वनं | சரத்காஸத்திய மேகத்தை |
| प्रियहितं | இந்தவாறு தம் நன் மை பயப்பதுமாகிய | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| उत्तमं एतत् | நிறந்த இதை | स्वतेजसा | உனது ஆந்தரால் |
| कुर्वन् | செய்வாயாக. | सपन्नवाहिनीं | சத்ருநீசனைகைய |
| | | विधम | ஊக்கிடுவாயாக. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाण्डे

युद्धकाण्डे द्विषष्टितमः सर्गः ॥

त्रिपष्टितमः सर्गः—அறுபத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம் || 63 ||

कुम्भकर्णोपदेशः—கும்பகர்ணனது உபதேசம்.

तस्य राक्षसराजस्य निशम्य परिदेवितम् । कुम्भकर्णो वभाषेदं वचनं प्रजहास च ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|----------------|---------|--------------|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | निशम्य | கேட்டு |
| तस्य | அந்த | प्रजहास | நகைகொண்டான். |
| राक्षसराजस्य | இராசுதஸக்கேசமா | इदं | பின்வரும் |
| | எது | वचनं च | மொழியையும் |
| परिदेवितं | பரிதாபமொழியை | वभाषे | புகன்றான் : |

दृष्टो दोषो हि योऽस्माभिः पुरा मन्त्रविनिर्णये । हितेष्वनभिरक्तेन सोऽयमासादितस्त्वया ॥

| | | | |
|-----------------|--------------|------------|-------------------|
| पुरा | “முன்பு | दृष्टः | உத்தேசிக்கப் |
| मन्त्रविनिर्णये | மந்திராலோசனை | सः | அந்த [பட்டதோ |
| | செய்தபொழுது | अयं हि | இதுதான் |
| अस्माभिः | எங்களால் | हितेषु | யுத்தகிரியங்களில் |
| यः | எந்த | अनभिरक्तेन | சுடுபடாத |
| दोषः | தீப்பயல் | त्वया | உன்னால் |
| | | आसादितः | ஆடையப்பட்டது. |

शीघ्रं खल्वभ्युपेतं त्वां फलं पापस्य कर्मणः । निरयेष्वेव पतनं यथा दुष्कृतकर्मणः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|---------------|---------------|
| दुष्कृतकर्मणः | “கொடும்பாபச்செயல் | पापस्य | பாப |
| | புரிந்தவனுக்கு | कर्मणः | செயலின் |
| निरयेषु | நரலங்களில் | पतनं | சூழத்தானது |
| फलं | அனுபவித்தல் | त्वां | உனக்கு |
| यथा | எல்லண்ணமே | शीघ्रं एव | சடுகிரியையே |
| | ஆய்வண்ணமே | अभ्युपेतं खलु | கிட்டகிட்டதே! |

प्रथमं वै महाराज कृत्यमेतदचिन्तितम् । केवलं वीर्यदर्पेण नानुबन्धो विचारितः ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------------------------|--|-------------|-------------------|
| महाराज | “மகாராஜரே! | अचिन्तितं | சுமோசிக்கப்பட |
| प्रथमं | முன்பே | | வில்லை. |
| एतत् | இந்த | अनुबन्धः वै | மேக்மேலும் திரிசை |
| “कृतं | காரியம் | | யும் பயனும் |
| वीर्यदर्पेण- } केवलं } | வீர்யத்தைதரும்செருக் கையக்கொண்டு மாத்திரம் | विचारितः न | எண்ணப்படவில்லை. |

यः पश्चात्पूर्वकार्याणि कुर्याद्भ्रम्यमास्थितः । पूर्वं चापरकार्याणि न स वेद नयानयो ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|------------|-------------------------------|
| यः | “எவன் | ாபகாரியாணி | பின் செய்யவேண்டிய |
| ऐश्वर्यं | யாவுருக்கும் மேலம் புட்டடை | पूर्व च | முன்னரும் [வகைகளை |
| आस्थितः | கொண்டவனுப் | कुर्यात् | செய்வானோ, |
| पूर्वकार्याणि | முன் செய்யவேண்டிய யவைகளை | सः | அவன் |
| पश्चात् | பின்னரும் | नयानयो | நன்னெறி, தீநெறி இரண்டையும் |
| | | वेद न | அறிந்தவனல்லன். |

देशकालविहीनानि कर्माणि विपरीतवत् । क्रियमाणानि दुष्यन्ति हवीष्यप्रयतेष्विव ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------|-----------|-----------------------|
| देशकाल- विहीनानि | ஏற்ற இடம், ஏற்ற காலம் இல்லாத | अवश्येषु | பத்தியற்றவர்கள் விஷ |
| विपरीतवत् | விபரீதமாய் | हवीषि | யாகங்கள் [யத்தில் |
| क्रियमाणानि | செய்யப்படும் | इव | எப்படியோ, அப்படியே |
| कर्माणि | காரியங்கள் | दुष्यन्ति | தொடருமுறுகின்றன. |

त्रयाणां पञ्चधा योगं कर्मणां यः प्रपद्यते । सचिवैः समयं कृत्वा स सभ्ये वर्तते पथि ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-------------|-------------------------------------|
| यः | எவன் | पञ्चधा योगं | ஐவகையான சம்பந்த |
| सचिवैः | மந்திரிகளோடு | | தந்தை † |
| समयं | நிச்சயமான சித்தாக் தந்தை | प्रपद्यते | நன்கு கடைப்பிடித் தொழுதுகின்றானோ |
| कृत्वा | செய்து, | सः | அவன் |
| तयाणां कर्मणां | மூலவகை விளைகளுக் கும் | सभ्ये पथि | நல்ல நெறியில் |
| | | वर्तते | நிற்கின்றான். |

* அதாவது : 1. தனது வல்லமையேறிட்டிருக்கையில் தனது சத்ருவுடன் சண்டைக்குச் செல்லுதல். 2. தனது வல்லமையும் சத்ரு வல்லமையும் ஒத்திருக்கையில் அவனுடன் சமாதானம் செய்துகொள்ளுதல். 3. தனது வல்லமை சத்ரு வல்லமைக்கு சிறிப்பிட்டிருக்கையில் சத்ருவுக்கு ஏதாவது கொடுத்த வணங்கிப் போதல் என்பன.

† அதாவது : 1. ஒரு காரியத்திலிதற்குமுன் அதை எப்படி ஆரம்பிக்கிற தென்று பார்த்தல்; இது ஆரம்பியாயம். 2. அக்காரியத்தை நடத்தத் தன்னிடம் ஆட்சனும் பொருளும் போதுயாவகைகளாக இருக்கின்றனவாவென்று ஆலோசித்தல்; இது புருஷநிலை சம்பந்தம். 3. தான் ஆரம்பிக்கும் காரியம் இடத்திற்கும் காலத்திற்கும் ஒத்திருக்கி; தானென்று ஆரம்பித்து பார்த்தல்; இது தேசகால விபாகம். 4. ஆரம்பித்து நடத்தாமல் ஏதாவது நடுவில் வாழுவண்டா னால் அதைச் சரிப்படுத்தும் வகை பார்த்தல்; இது வினிபாதப் பிரதீகாரம். 5. காரியத்தின் முடிந்ததுக்கொள்ளும் வகை பார்த்தல்; இது காரியத்தி என்பன.

यथागमं च यो राजा समयं विचिकीर्षति । बुध्यते सचिवान् बुद्ध्या सुहृदशानुपश्यति ॥

धर्ममर्थं च कामं च सर्वान्वा रक्षसां पते । भजेत पुरुषः काले श्रीणि इन्द्रानि वा पुनः ॥

रक्षसां
या
राजा
यथाममं
समपं
विचिकीर्षति
सचिवान्
सुहृदः च
अपुपश्यति
सुहृद्या च

"ஆரக்கரர்களின்
வேந்தை !
எந்த
மன்னன்
சாஸ்திர நூற்படி
இத்தரந்தக்கதை
வெய்ய நினைக்கின்
மந்திரிகளையும் [ரூபேன]
உற்றவர்களையும்
அநுசரிக்கின்றாரேனென,
எவபுத்திரையக்
கொண்டும்

वृषाने
पुरुषः च
धर्मं
अर्थं च
कामं वा
दुःइहानि पुनः
सीणि
सर्वान् वा
काले
मन्ते

திர்பரளிக்கின்றேனென
அந்த
புருடன் தான்
தர்மத்தைதயோ
அர்த்தத்தைதயோ
காமத்தைதயோ
புரண்டுகளைபுடையோ
பூண்டுகளை
எல்லாவற்றையுடையோ
எந்த காலத்தில்
பெறுகிறான்.

त्रिषु चैतेषु यच्छ्रेष्ठं भुत्वा तन्नावबुध्यते । राजा वा राजमात्रो वा व्यर्थं तस्य बहुश्रुतम् ॥

राजा
वा
राजमात्रः
त्रिषु
पुत्रेषु
यत्
श्रेष्ठं

"ஆரசேனென
அல்லவது
ஆரசனைத் தாரந்த
காரேனென
முய்வகையரவ
இவைகளில்,
(வினைகளில்)
எது
சிறந்ததே,தர,

तत्र
भुत्वा
भावबुध्यते न
वा
तस्य
बहुश्रुतं
व्यर्थं च

அதை
கொட்டு
மனதில் கவர்க்கத்
கொண்டால் மல் னூருக்
கின்றான்
என்றால்
அவனைத்
வெகுநூற்கல்வி
கேனை!

उपप्रधानं सान्त्वं वा भेदं काले च विक्रमम् । योगं च रक्षसां श्रेष्ठ तावुभौ च नयानयो ॥

काले धर्मार्थकामान् यः समन्त्रय सचिवैः सह ।
रक्षसां
श्रेष्ठ
लोके
काले
यः
सान्त्वं
उपप्रधानं
भेदं वा
विक्रमं च
योगं च
सां

“ஆரக்கரர்களுள்
உத்தமரே !
உலகில்
எந்தகாலத்தில்
எவனெனருவன்
ஸாஸ்திரபாயத்தைதயும்
தரவேறுபாயத்தைதயும்,
பேதேதாயாயத்தைதயும்,
தண்டனைபாயத்தைத
யும்,
ஆரம்போபாயம் முத
லிய ஐவகை சமந்த
க்கையார்,
அந்த

निषेवेतात्मवांल्लोके न स व्यसनपाप्नुवान् ॥
उभौ
नयानयो
धर्मार्थकामान्
काले
सचिवैः सह
समन्त्रय
निषेवेत
आत्मवान्
सः च
रक्षसां
आनुयान् न

இரண்ட
நயனரே
களையும்
தர்மத்தைதயும், அர்த
தத்தைதயும், காமத்
தையும்
தக்க காலத்தில்
மந்திரிகளுடன் கூட
ஆசைகெத்த
கடைப்பிட்டுத்தொழுது
காரேனென,
புத்திரானுகூலிய
அவனே
அந்ததை
அனுயான்தான்.

हितानुबन्धमालोच्य कार्याकार्यविहात्मनः । राजा सहार्थतस्वज्ञैः सचिवैः स हि जीवति ॥

| | | | |
|-------------|---|---------------|---|
| इह | "இவ்வுலகில் | अर्थतस्वज्ञैः | { விஷயங்களின் உண்மைகளை உள்ளடக்க உணர்ந்த |
| कार्याकार्य | செய்யத்தக்கவைதயும், செய்யத்தகாதனாதயும் | सचिवैः सह | மந்திரிகளுடன் கூட |
| आत्मनः | தனக்கு | आलोच्य | நிச்சயித்தநிற்கு |
| हितानुबन्ध | { மேன்மேலும் கன்மை பயக்கும் காரியத் தொடர்ணாயும் | सः | எவனோ அந்த |
| | | राजा हि | மன்னனே |
| | | जीवति | கமராய்வாழ்கின்றான். |

अनभिज्ञाय शास्त्रार्थान् पुरुषाः पशुबुद्धयः । प्रागल्भ्याद्भक्तुमिच्छन्ति मन्त्रेष्वभ्यन्तरीकृताः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|----------------|----------------------|
| पशुबुद्धयः | "மிருகபுத்திகொண்ட | मन्त्रेषु | ஆலோசனை விஷயங் |
| पुरुषाः | புருஷர்கள் | | களில் |
| शास्त्रार्थान् | சாஸ்திரவிஷயங்களை | अभ्यन्तरीकृताः | அமர் ததப்பட்டவர்க |
| अनभिज्ञाय | உணராது | वस्तु | எடுத்துப்பேச [ளாய் |
| प्रागल्भ्यात् | படாபிடையத்தால் | इच्छन्ति | வினும்புகின்றார்கள். |

अशास्त्रविदुषां तेषां न कार्यमहितं वचः । अर्थशास्त्रानभिज्ञानां विपुलां श्रियमिच्छताम् ॥

| | | | |
|------------------------|---------------------------|----------|---------------------|
| अशास्त्रविदुषां | "சாஸ்திர முணராத வர்களும் | इच्छतां | வினும்புகின்றவர்களு |
| | | | மான |
| अर्थशास्त्रानभिज्ञानां | விஷயவிதிகளையறியாதவர்களும் | तेषां | அவர்களுடைய |
| | | अहिनं | தீமை பயக்கும் |
| विपुलां | பெரும் | वचः | கொல் |
| श्रियं | செல்வமொன்றை | कार्यं न | கொள்ளத்தக்கதன்று. |

अहितं च हिताकारं धाष्टर्याज्जल्पन्ति ये नराः । अवैश्य मन्त्रवाखास्ते कर्तव्याः कृत्यदूषणाः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|-------------|--------------------|
| ये | "எந்த | कृत्यदूषणाः | காரியத்தைப் பாழ் |
| नराः | புருஷர்கள் | | படுத்திவிடும் |
| हिताकारं | நலிதமெனத்தேதான் | ते | அவர்கள் |
| अहितं च | தீயனையதும் [நாம் | अवैश्य | கவனித்து |
| धाष्टर्यान् | வாதரியமாய் | मन्त्रवाखाः | { ஆலோசனைமில் புறக் |
| जल्पन्ति | எடுத்துரைக்கின் றார்கள் | कर्तव्याः | கணிக்கத் தக்கவர்க |
| | | | கள். |

विनाशयन्तो भतारं सहिताः शत्रुभिर्बुधैः । विपरीतानि कृत्यानि कारयन्तीह मन्त्रिणः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|----------------------|
| इह | "இவ்வுலகில் | भतारं | எனதுமானனுக்கு |
| मन्त्रिणः | மந்திரிகள் | विनाशयन्तः | துரோகம் புரிபவர் |
| बुधैः | புத்திமன்களாகிய | विपरीतानि | விதிராத [களாய் |
| शत्रुभिः | சத்ருமகளைரடு | कृत्यानि | காரியங்களை |
| सहिताः | சேர்ந்தவர்களாய் | कारयन्ति | செய்விக்கின்றார்கள். |

तान्भर्ता मित्रसङ्काशानपित्रान्मन्त्रनिर्णये । व्यवहारेण जानीयात्सचिवानुपसंहितान् ॥

| | | | |
|----------------|------------------|---------------|---------------------------|
| भर्ता | "ஊர் வட்டார வான் | मन्त्रनिर्णये | ஆறிலை சித்திர லிச்சயிசிக் |
| मित्रसङ्काशान् | மித்ரர்கள் போலி | | குக்காலை |
| | | | குத்து |
| अमितान् | சத்ருக்களாக | व्यवहारेण | விவகாரத்தால் (விவத |
| उपसंहितान् | கூடவிருக்கும் | | யங்களைக் கொல்லும் |
| तान् | அந்த | | பாதிசியால்) |
| सचिवान् | மந்திரிகளை | जानीयात् | கண்டுக்கொள்ள |
| | | | வேண்டும். |

चपलस्येह कृत्यानि सहसाऽनुप्रधावतः । छिद्रमन्ये प्रपद्यन्ते कौञ्चस्य स्वमिव द्विजाः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|-------------|---------------------|
| इह | "இப்புளியில் | छिद्रं | சந்திரமாய் |
| सहसा | ஆறிலை சிறையில் | द्विजाः | புறவையர்கள் |
| अनुप्रधावतः | இறங்கும் | कौञ्चस्य | கஞ்சா நஞ்சுகிரியில் |
| चपलस्य | சப்பலசித்தனாகிய | सं | ஊர் சந்திரத்தை |
| | ஒருவனுடைய | इव | எப்படியும் |
| कृत्यानि | காரியங்களை | | அப்படியே |
| अन्ये | பிறர்கள் (சத்ருக்கள்) | प्रपद्यन्ते | அடைகின்றார்கள். |

यो हि शत्रुमभिज्ञाय नात्मानमभिरक्षति । अवाप्नोति हि साऽनर्थान्स्थानाच्च व्यपरोष्यते ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|------------------|
| यः | "எவன் | सः | உவன் |
| शत्रुं | சத்ருவை | अनर्थान् हि | அநாதங்களையே |
| अभिज्ञाय हि | தெரிந்துகொண்டும் | अवाप्नोति | அடைகிறான். |
| आत्मानं | தன்னை | स्थानान् च | பதனிலின்றும் |
| अभिरक्षति न | ரகபித்துக்கொள் | व्यपरोष्यते | கீழ்த்தள்ளப்பட்ட |
| | ளா திருக்கின்றாடு | | வனுகின்றான். |

यदुक्तमिह ते पूर्वं क्रियतामनुजेन च । तदेव नो हितं कार्यं यदिच्छसि च तत्कुरु ॥२१॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------|------------------------|
| ते | "தேவர்களுக்கு | नः | நமக்கு |
| पूर्वं | முன்பு | हितं | நன்மை பயக்கும் |
| अनुजेन च | தம்பிரயாலும் | कार्यं | செயல் |
| इह | இவ்வியலத்தில் | यत् | எதை |
| यत् | எது | इच्छति | தேவர்க்கு விரும்புகின் |
| उक्तं | கொல்லப்பட்டதோ | | நீரோ |
| तत् एव | அதுதான் | तत् च | அதை |
| क्रियतां. | செய்யப்படவேண்டும். | कुरु | செய்க்கா. |

तच्च श्रुत्वा दशमीवः कुम्भकर्णस्य भाषितम् । भृकुटिं चैव सञ्चक्रे कुट्टयैनमभाषत ॥२२॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|------------------|---------------------|
| दशमीवः तु | தசமண்டலே | कुट्टः | கோபக்கொண்டவ |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | | றாய் |
| तत् | அந்த | भृकुटिं सञ्चक्रे | புருவம் செறித்தரலை. |
| भाषितं श्रुत्वा | கொல்லைக் கேட்டு | एव एव | துவலை கேள்க்கியும் |
| च च | தசமண்டலோ | अभाषत | பின்வருவது |
| | | | மொழிந்தான்: |

मान्यो गुरुरिवाचार्यः किं मां स्वमनुशाससि । किमेवं वावृणुषं कृत्वा काले युक्तं विधीयताम्॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------------|-----------------|
| गुरः | “தனமயனார் | एष | இவ்வீதம் |
| भाचार्यः इव | ஆசிரியரென | वावृणुषं कृत्वा | நானோகப் பேசின |
| मान्यः | கௌரவிக்கத்தக்கவர். | किं | என்ன பயன் ? |
| स्व | ஈ | काले | இக்காலத்தில் |
| मां | எனக்கு [கையோ ? | युक्तं | உக்தமாதானது |
| अनुशाससि किं | உபதேசிக்கின்ற- | विधीयताम् | செய்யப்பட்டும். |

विभ्रमाश्रितमोहाद्वा वलवीर्याश्रयेण वा । नाभिपन्नपिदानीं यद्व्यर्थास्तस्य पुनः कथाः ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------|------------|------------------------------------|
| विभ्रमात् | “காமகோட்டையில்” அவசரத்தாலோ, | अभिपन्नं न | முன் செய்துமுடிக்கப் படவில்லையோ |
| श्रितमोहात् वा | புத்திமயக்கத்தாலோ | इदानीं | இப்பொழுது |
| वलवीर्याश्रयेण वा | ஆற்றலுமரண்மையும் | पुनः | மீளவும் |
| | கொண்டிருப்பதாலோ | तस्य | அதனுடைய |
| यत् | எதொன்று | कथाः | வயவலுராகங்கள் |
| | | व्यर्थाः | கீளுநாவய. |

अस्मिन्काले तु ययुक्तं तदिदानीं विधीयताम् । गतं तु नानुशोचन्ति गतं तु गतमेव हि॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|-------------------------------|
| अस्मिन् काले | “இந்த சமயத்தில் | गतं | சென்றது |
| यत् | எது | गतं एव तु | சென்றதேதான். |
| युक्तं | ஏற்றதோ | हि | ஆதலால் |
| तत् तु | அதுதான் | गतं तु | கடந்ததைக்குறித்து |
| इदानीं | இப்பொழுது | अनुशोचन्ति न | பெரியோர்கள் வருந் தார்கள். |
| विधीयतां | செய்யப்படவேண்டும். | | |

ममापनयज्ञं दोषं विक्रमेण समीकुरु । यदि खल्वस्ति मे स्नेहो विक्रमं वाऽवगच्छसि ॥
यदि वा कार्यमेतत्ते हृदि कार्यतमं मतम् ॥ २७ ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|--------------------------------|
| ते | “உனக்கு | कार्यतमं | அவச்யம் செய்யத் |
| मे | என்னிடம் | हृदि | மனதில் [தக்கதாக |
| खलु | உண்மையான | मत् यदि वा | தொன்றிலும் |
| स्नेहः | அன்பு | मम | எனது |
| अस्ति यदि | இருப்பினும் | अपनयज्ञं | பிழையான நடத்தை யால் விளைந்த |
| विक्रमे | விலபராக்ரமத்தை | दोषं | குறைவைய |
| अवगच्छसि वा | ஈ உள்ளபடி அதிர்ந்து கொண்டிருப்பினும் | विक्रमेण | பராக்ரமங்கொண்டு |
| एतत् | இந்த | समीकुरु | ஈ சரிப்படுத்து |
| कार्यं | கார்யமாதானது | | விடுவாயாக. |

स सुहृद्यो विपन्नार्थं दीनमभ्यवपश्यते । स बन्धुषोपनीतेषु साहाय्यायोपकल्पते ॥ २८ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|--------------------|--------------------|
| ய: | "எவன் | சுஹ்ரு | உற்ற ஆகினைவன். |
| विपन्नार्थं | காரியங்கள் நாசமுற்று | यः | எவன் |
| दीने | கலங்கித்தவிக்கும் | अनीतेषु | அக்கிரமக்காரர்கள் |
| | ஒருவனை | | விஷயத்திலும் |
| अभ्यवपश्यते | ஆகரிக்கிறதினாலு | साहाय्याय उपकल्पते | உதவிபுரிகிறதினாலு, |
| सः | அவன் | यः | அவன் |
| | | बन्धुः | உறவினன்." |

तमयैवं ब्रुवाणं तु वचने धीरदारुणम् । रुष्टोऽयमिति विज्ञाय शनैः श्रद्धणमुवाच ह ॥ २९ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|----------|-------------------|
| अथ | அப்பொழுது | रुष्टः | கேட்பவனாகக் கண்டு |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | விட்டான்" |
| वचने | சொல்லி | इति | என்று |
| धीरदारुणं | தேரியமரகவும் | विज्ञाय | அறிந்துகொண்டு |
| | கடுமையாகவும் | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| ब्रुवाणं | சொல்லும் | शनैः | மெதுவாய் |
| तं | அவனை | श्रद्धणं | இன்கையாய் |
| अयं | "இவன் | उवाच ह | பேசுவாற்றான். |

अतीव हि समाश्रय्य भ्रातरं क्षुभितेन्द्रियम् । कुम्भकर्णः शनैर्वाक्ये वभाषे परिसान्त्वयन् ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------|---------------|-----------------|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | परिसान्त्वयन् | தேற்றாவுசெய்யவ |
| भ्रातरं | தமையனானார் | शनैः | ஆமைதிராக [னும் |
| अतीव | மிக | वाक्ये | ஒரு சொல்லி |
| क्षुभितेन्द्रियं हि | புலன் பதறியவராயும் | वभाषे | பின்வகுமாறு |
| समाश्रय्य | கவனித்து | | எனம்பலுற்றான் : |

अलं राक्षसराजेन्द्र सन्तापमुपपद्य ते । रोषं च संपरित्यज्य स्वस्थो भवितुर्भवेत्सि ॥ ३१ ॥

| | | | |
|--------------------|--------------------------|----------------|-----------------------------|
| राक्षसराजेन्द्र | "ராக்ஷஸமன்னர் கோமானே! | संपरित्यज्य | விட்டொழித்து |
| ते | தேவரின்கு | स्वस्थः च | சீமந்திகொண்டவ |
| सन्तापं उपपद्य अलं | ஸந்தாபம் கொண்டது | | ராக்ஷ |
| रोषं | கேட்பத்தை [பேரடும். | भवितुं भवेत्सि | தேவரின்கு உக்க வேண்டும். |

नैतन्मनसि कर्तव्यं मयि जीवति पार्थिव । तमहं नाशयिष्यामि यत्कृते परितप्यसे ॥ ३२ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|-------------------|
| पार्थिव | "மன்னவரே! | यत्कृते | எவன் காரணமாய் |
| मयि | நான் | परितप्यसे | மனவேதனைபுறுகின் |
| जीवति | உயிடுகின்றிருக்கையில் | | நிரேர |
| एतत् | ஐதேவன்டும் | तं | அவனை |
| मनसि | மனதில் | अहं | நான் |
| कर्तव्यं म | கொள்ளத்தக்கதன்டும். | नाशयिष्यामि | அழித்துவிடுவேன்." |

अवश्यं तु हितं वाच्यं सर्वावस्थं मया तव । वन्धुभावादभिहितं भ्रातृस्नेहाच्च पार्थिव ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------------|-------------------|
| मया | "என்னால் | पार्थिव | வேந்தரே! |
| तव | தேவரீருக்கு | वन्धुभावात् | உறவின் பரன்மையால் |
| सर्वावस्थं | எப்பிரகாரத்திலும் | भ्रातृस्नेहात् च | ஆம் |
| हितं | நலிதமானது | अभिहितम् | ஸநேஹாதரவாஞ்சை |
| भवस्यं | அவச்யமாய் | | யானும் |
| वाच्यं तु | சொல்லக்கடவையே. | | இது சொல்லப் |
| | | | பட்டது. |

सदृशं यत्तु कालेऽस्मिन्कर्तुं स्निग्धेन बन्धुना । शत्रूणां कदनं पश्य क्रियमाणं मया रणे ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-----------|---------------------|
| स्निग्धेन | "வாஞ்சையுள்ள | शत्रूणां | (அந்த) சத்ருக்களின் |
| बन्धुना | ஸநேஹாதரனும் | कदनं तु | அழிவையே |
| अस्मिन् | இந்த | मया | என்னால் |
| काले | காலத்தில் | रणे | போரில் |
| यत् | எதென்று | क्रियमाणं | புரியப்படுவதாய் |
| कर्तुं सदृशं | செய்யத் தக்கதே, | पश्य | தேவரீர் காண்பிராக. |

अद्य पश्य महाबाहो मया समरमूर्धनि । हते रामे सह भ्रात्रा द्रवन्तीं परवाहिनीम् ॥३५॥

| | | | |
|------------|--------------|-------------|-----------------|
| महाबाहो | "மஹாபாஹுவே! | भ्रात्रा सह | தம்பிரியோடுகூட |
| अद्य | இப்பொழுது | हते | மாய்க்கப்படவும் |
| समरमूर्धनि | போர்முனையில் | परवाहिनीं | சத்ருவேளையை |
| मया | என்னால் | द्रवन्तीं | ஓடுகின்றதாயும் |
| रामे | ராமன் | पश्य | பார்ப்பீர். |

अद्य रामस्य तद्दृष्ट्वा मयाऽऽनीतं रणाच्छिरः । सुग्री भव महाबाहो सीता भवतु दुःखिता ॥

| | | | |
|---------|----------------|----------|---------------------|
| महाबाहो | "வீரரே! | शिरः | தலையை |
| अद्य | இப்பொழுது | दृष्ट्वा | கண்டபின்னர் |
| मया | என்னால் | सुग्री | சசமுற்றவராய் |
| रणात् | போரிட்டு | भव | தேவரீர் இருப்பிராக. |
| आनीतं | கொண்டுவரப்பட்ட | सीता | லீதை |
| रामस्य | ராமனது | दुःखिता | சோகமுற்றவளாய் |
| तः | அந்த | भवतु | ஆகட்டும். |

अद्य रामस्य पश्यन्तु निधनं सुमहत्प्रियम् । लङ्कायां राक्षसाः सर्वे ये ते निहतबान्धवाः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|----------|------------|
| लङ्कायां | "இலங்கையில் | अद्य | இப்பொழுது |
| ये | எந்த | सुमहत | மிக |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | प्रियं | பிரியமான |
| निहतबान्धवाः | பந்துக்களைப் பறி கொடுத்தவர்களோ | रामस्य | ராமனது |
| ते | அவர்கள் | निधनं | மரணத்தை |
| सर्वे | எல்லோரும் | पश्यन्तु | கண்டார்கள் |
| | | | காணட்டும். |

अथ शोकपरीतानां स्वबन्धुवधकारणात् । शत्रोर्युधि विनाशेन करोम्यासूयप्रमार्जनम् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|--|--------------------|--------------|--------------------|
| अथ | "இப்பொழுது | स्वबन्धुवध-) | தனது உறவினரின் |
| • | | कारणात्) | மாணசியித்தமாய் |
| युधि | போரில் | शोकपरीतानां | சோகத்தால் தவிப் |
| | | | பவர்களின் |
| शतोः | சற்றுதின் | आसप्रमार्जनं | கண்ணீர்ப்பெருக்கை |
| | | करोमि | சிக்கவிடுகின்றேன். |
| विनाशेन | அழிவால் | | |
| अथ पर्वतसङ्काशं समूर्यमिव तोयदम् । विकीर्णं पश्य समरे सुग्रीवं प्रवगोत्तमम् ॥ ३९ ॥ | | | |
| पर्वतसङ्काशं | "மலைமைய சிகர் த்தவ | सुग्रीवं | சுகிரீவனை |
| | ணம் | अथ | இப்பொழுது |
| समूर्यं | சூர்யனோடுகூடிய | समरे | போரில் |
| तोयदं इव | மேகம் போன்றவணும் | विकीर्णं | சேதக்கப்பட்டவனுய் |
| प्रवगोत्तमं | வாணிரே த்தவணுமா | पश्य | காண்பிராக. |
| | செய | | |

कथं त्वं राक्षसैरेभिर्मया च परिरक्षितः । जियांसुभिर्दाशरथि वध्यसे त्वमिहानय ॥ ४० ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------|-----------------|
| त्वं | "தேவரீர் | अनय | குத்தமற்றவரே! |
| दाशरथि | தசரதன் பிள்ளையை | इह | இப்பொழுது |
| जियांसुभिः | கொல்ல ஆவல் | त्वं | தேவரீர் |
| एभिः | இந்த [கொண்ட | कथं | எப்படி |
| राक्षसैः | ராஷ்டிரைகளாலும் | वध्यसे | அவனால் வதைக்கப் |
| मया च | அடியேனாலும் | | படுவீர்? |
| परिरक्षितः | குழந்தை காக்கப் | | |
| | பெற்றிருக்கிறீர். | | |

अथ पूर्वं हते तेन मयि त्वां हन्ति राघवः । नाहमात्मनि सन्तापं गच्छेयं राक्षसाधिप ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|----------------|
| राक्षसाधिप | "ராஷ்டிரமன்னு! | त्वां | தேவரீரை |
| पूर्वं | முதலில் | हन्ति | கொல்லான். |
| मयि | மான் | अहं | என் |
| तेन | அவனால் | आत्मनि | என் விடயத்தில் |
| हते अथ | கொல்லப்பட்ட பிறகே | सन्तापं | துயரை |
| राघवः | ராமன் | न गच्छेयम् | கடைபிடிக்க. |

कामं त्विदानीमपि मां व्यादिश स्वं परन्तप । न परः श्रेणीयस्ते युद्धापातुल्यविक्रम ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|------------|----------------|
| अतुल्यविक्रम | "ஒப்பற்ற பிரதாய | युद्धाय | போருக்கு |
| | சாசியே! | व्यादिश | அனுப்புவிதாக. |
| कामं | இதெல்லாமிருக் | परन्तप | சற்றுமற்றாரகடி |
| | கட்டும். | परः | மற்றொருவன் |
| स्वं | தேவரீர் | ते | தேவரீரால் |
| इदानीं तु | இக்கணமே | श्रेणीयः न | அனுப்பப்படக் |
| मां अपि | என்னையே | | கடாது. |

अहमुत्सादयिष्यामि शत्रूंस्तव महाबल

॥ ४३ ॥

महाबलं "மகாபலம் படைத்
தவறோ!

शत्रून् सत्क्रुत्तकैः
उत्सादयिष्यामि अறவே அழித்துக்கிடு
கின்றேன்.

अहं तव
நான்
தேவரீரது

यदि शक्रो यदि यमो यदि पावकमारुतौ ।

तानहं योधयिष्यामि कुबेरवरुणाक्षपि ॥४४॥

शक्रः यदि "இந்திரனுக்கிருந்தா
லும் சரி

कुबेरवरुणौ कुபேரனும் வரூணனும்
மாயிருந்தாலும் சரி

यमः यदि यमனுக்கிருந்தாலுமாகரி

तान् अपि அவர்களையும்

पावकमारुतौ यदि அக்னிபும் வாயுவும்
யிருந்தாலும் சரி

अहं योधयिष्यामि நான்
எதிர்த்துப்போரிடு
வேன்.

गिरिमात्रशरीरस्य शितशुलभरस्य मे । नर्दतस्तीक्ष्णदंष्ट्रस्य विभीषाञ्च पुरन्दरः ॥ ४५ ॥

गिरिमात्रशरीरस्य "மலைப்போன்ற தேகம்
கொண்டவனும்

मे நான்

शितशुलभरस्य கூரிய சூலாயுதமெந்தி
யவனும்

नर्दतः கர்ஜனை யிடுகையில்

तीक्ष्णदंष्ट्रस्य கொடும் கோரப்பற்
களுற்றவனுமான

पुरन्दरः च இத்திரனும்

विभीषात् செஞ்சமஞ்சவான்.

अथ वा त्यक्तशस्त्रस्य मुद्रतस्तरसा रिपून् । न मे प्रतिमुखे स्थातुं कथिच्छक्तो जिनीविपुः ॥

अथ वा "அந்திருக்கட்டும்.

प्रतिमुखे எதிரில்

त्यक्तशस्त्रस्य ஆயுதங்களை அகத்தி

स्थातुं நிற்க

तरसा பலத்தால்

जिनीविपुः உயிரோடிருக்க

रिपून् சத்ருக்களை

ஆசைகொண்ட

मुद्रतः பிண்டமாக்கும்

कश्चित् எவனும்

मे எனக்கு

शक्तः न வல்லவனாகான்.

नैव शक्त्या न गद्या नासिना निशितैः शरैः । हस्तौभ्यामेव संख्यो हनिष्याम्यपि वज्रिणम् ॥

शक्त्या एव न "வேலாயுதத்தாலும்
மல்ல;

हस्तभ्यां एव இருகரங்களாலே

संख्यः தகைத்தவனாய்

गद्या न கையாலும்மல்ல;

वज्रिणं अपि வஜ்ராயுதம் பிடித்தவ
னையும் இத்திரனையும்

असिना சுத்தியாலும்

हनिष्यामि கொண்டு வீழ்த்து

निशितैः शरैः கூரியபாணங்களாலும்

मे நான்

न அல்ல.

வேன்.

यदि मे सुष्टिवेगं स राघवोऽय सहिष्यते । ततः पास्यन्ति वाणौघा हृधिरं राघवस्य तु ॥

सः राघवः "அந்த ராமன்

ततः அதன்பிறகே

अस्य இப்பொழுது

वाणौघाः சரஜாலங்கள்

मे எனது

राघवस्य ராமனின்

सुष्टिवेगं तु முஷ்டிவேகத்தையும்

हृधिरं சத்தத்தை

सहिष्यते यदि பொறுப்பானேயானால்

पास्यन्ति குடிக்கப்படுகின்றனர்.

अचिन्तयित्वा बाणौघान्धिरं राघवस्य च । लक्ष्मणस्य च पास्यामि चिरकालं विपासितः॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|------------------|
| चिरकालं | "வெகுநாளாகவும் | राघवस्य च | சரமணனுடையவும், |
| विपासितः | தாமஸிடய்கொண்ட | लक्ष्मणस्य च | லக்ஷ்மணனுடையவும் |
| बाणौघान् | கணைபாசிகளை [காண் | धिरं | சத்தத்தை |
| अचिन्तयित्वा | கொருட்படுத்தாது | पास्यामि | பருகுவேன். |

चिन्तया बाध्यसे राजन्किमर्थं मयि तिष्ठति । सोऽहं शत्रुविनाशाय तव निर्यातुमुद्यतः ॥

| | | | |
|---------|-----------------|------------------|---------------------|
| राजन् | "மன்னவரே! | बाध्यसे | தான் புறுகின்றீர்? |
| मयि | அடியேன் | सः अहं | அந்த நான் |
| तिष्ठति | காத்தாநிற்கவில் | तव | தேவரீர்தா |
| किमर्थं | என் | शत्रुविनाशाय | சத்ருக்களையழிக்க |
| चिन्तया | சிந்தையால் | निर्यातुं उद्यतः | புறப்பட்டுவிட்டேன். |

मुख्यं रामाद्भयं राजन्हनिष्यामीह संयुगे । राघवं लक्ष्मणं चैव सुग्रीवं च महाबलम् ॥

हनुमन्तं च रक्षोघ्नं लङ्का येन प्रदीपिता

॥ ५१ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|--------------------|
| राजन् | "அரசரே! | येन | எவனால் |
| रामात् | சரமஸிடத்திலிருந்து | लङ्का | லங்கை |
| भयं | பயத்தை | प्रदीपिता | கொளுத்தப்பட்ட |
| मुख्यं | கிட்டெடாழிப்பீராக. | | தோ அந்த |
| संयुगे | போரில் | रक्षोघ्नं | அரக்கர்களை மாய்த்த |
| राघवं | சரமணியும் | महाबलं | மகாபலசாலியாகிய |
| लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணனையும் | हनुमन्तं च | ஹனுமணியும் |
| सुग्रीवं च | சுகரீலனையும், | इह युधे | இப்பொழுதே |
| | | हनिष्यामि | கொன்றுவிடுவேன். |

हरीश्र्वापि हनिष्यामि संयुगे समवस्थितान् ।

असाधारणमिच्छामि तव दातुं महयशः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------|-----------------|
| संयुगे | "போரில் | तव | தேவரீருக்கு |
| समवस्थितान् | எதிர்த்துநிற்கின்ற | असाधारणं | இதரர்களுக்குக் |
| हरीन् अपि | குரங்குகளையும் | महन् | பெரும் [கிட்டாத |
| हनिष्यामि | கொன்றுவிடுகின் | यशः | புகழை |
| | றேன். | दातुं | விளைவிக்க |
| च | அதனால் | इच्छामि | எடுப்புகிறேன். |

यदि चेन्द्राद्भयं राजन्यदि वाऽपि स्वयम्भुवः । तस्येऽहं नाशयिष्यामि नैशं तप इवांशुमान् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|------------------|
| राजन् | "மன்னவரே! | तद् भवि | அதையும் |
| ते | தேவரீருக்கு | अंशुमान् | அசுவன் |
| इन्द्रात् | இந்திரனிடத்தி | नैशं | இரணின் |
| भयं | ஆயத்தம் [விருந்து | तसः | இருளை |
| यदि च | இருந்தாலும் சரி | इव | எவ்வண்ணமோ |
| स्वयम्भुवः | பிரம்மதேவரிட | अहं | நான் [அவ்வண்ணமே |
| | யிருந்து | नाशयिष्यामि | குறித்துவிடுகின் |
| यदि वा | இருந்தாலும் சரி | | றேன். |

अपि देवाः शयिष्यन्ते कुद्रे पयि महीतले । यमं च शययिष्यामि भक्षयिष्यामि पावकम् ॥
आदित्यं पातयिष्यामि सनक्षत्रं महीतले

॥ ५४ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|--------------|----------------------|
| मयि | " நான் | शययिष्यामि | கொட்டமடக்கிவிடு |
| कुद्रे | கோபங்கொண்டு | पावकं | ஆக்னிகையையும் [வேன், |
| | விடின் | भक्षयिष्यामि | விழுங்குகிடுவேன், |
| देवाः अपि | தேவர்களுக்கும் | आदित्यं च | சூரியனையும் |
| महीतले | பூமியில் | सनक्षत्रं | நகரத்திரங்களுடன் |
| शयिष्यन्ते | விழுத்தப்படுபவர்கள், | महीतले | பூமியில் |
| यमं च | எய்யையும் | पातयिष्यामि | விழுத்துவேன், |

शतक्रतुं वधिष्यामि पास्यामि बरुणालयम् । पर्वताञ्चूर्णयिष्यामि दारयिष्यामि मेदिनीम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|------------------|
| शतक्रतुं | " ஐந்திரனை | पर्वतान् | மலைகளை |
| वधिष्यामि | பாய்த்துவிடுவேன், | चूर्णयिष्यामि | துகரைக்கிடுவேன், |
| बरुणालयं | கடலை | मेदिनीं | பூமியை |
| पास्यामि | பருகுவேன். | दारयिष्यामि | பினத்துவிடுவேன், |

दीर्घकालं प्रसुप्तस्य कुम्भकर्णस्य विक्रमम् । अद्य पश्यन्तु भूतानि भक्ष्यमाणानि सर्वशः ॥

| | | | |
|--------------|----------------|---------------|--------------------|
| दीर्घकालं | " நீண்டகாலம் | अद्य | இப்பொழுது |
| प्रसुप्तस्य | உறங்கிக்கிடத்த | भक्ष्यमाणानि | விழுங்கப்படும் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | सर्वशः भूतानि | எல்லாப்பிராணிகளும் |
| विक्रमं | பிரதாபத்தை | पश्यन्तु | பார்க்கட்டும். |

नन्विदं त्रिदिवं सर्वमाहारस्य न पूर्यते

॥ ५७ ॥

| | | | |
|----------|-------------|-----------|--------------|
| ननु | " இப்பொழுது | सर्वं | எல்லாமும் |
| इदं | இந்த | आहारस्य | ஆகாரத்திற்கு |
| त्रिदिवं | முடியலகு | पूर्यते न | பொதாது. |

वधेन ते दाशरथेः सुखाई सुखं समाहृतुमहं व्रजामि ।

निहत्य रामं सह लक्ष्मणेन खादामि सर्वान्हरियूथमुख्यान्

॥ ५८ ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------------|------------------------------|
| अहं | " நான் | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனோடு |
| दाशरथेः | ராசனது | सह | கூட |
| वधेन | வதையால் | रामं | ராமனையும் |
| ते | தேவர்களுக்கு | हरियूथमुख्यान् | வானரங்களைத்தலை வர்கள் |
| सुखाई | பாக்கியத்திற்கு | | |
| | கொடுத்துவைத்த | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| सुखं | சுகத்தை | निहत्य | கொன்று |
| सनाहृतुं | விளைவிக்க | खादामि | மென்று விழுங்கு கிடுறேன். |
| व्रजामि | இதேரெல்கின்றேன். | | |

रमस्य कामं पिव चाश्ववाष्णीं कुरुष्व कृत्यानि विनीयतां ज्वरः ।

मयाऽथ रामे गमिते यमक्षये चिराय सीता वशगा भविष्यति ॥ ४९ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|---------------|---------------------|
| காம் | “யதேசனையாய் | मया | என்னால் |
| रमस्य | இன்பம் அனுபவிப்பதும். | अथ | இப்பொழுது |
| अश्ववाष्णीं च | சிறந்த மத்யந்தையும | रामे | ராமன் |
| पिव | பருகும். | यमक्षयं | எமனது விடுதிக்கு |
| कृत्यानि | செய்யவேண்டிய அனுகூ | गमिते | அனுப்பப்பட்டுவிடின |
| कुरुष्व | செய்யும். [வல்களை | सीता | சீதை |
| ज्वरः | மனக்கவலை | चिराय | கடைகியாய் |
| विनीयतां | விட்டுவழிக்கப் பட்டும். | वशगा भविष्यति | வசப்பட்டுவிடுவான்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे त्रिपष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 17401

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 2726

चतुःपष्टितमः सर्गः—अथपத்துநான்காவது ஸர்க்கம். ॥ ௪௯ ॥

महोदरेण कुम्भकर्णमर्त्सिनम्—மஹோதரன் சும்பகர்ணனையதட்டுவது.

तदुक्तमविकायस्य बलिना बाहुशालिनः । कुम्भकर्णस्य वचने श्रुशोवाच महोदरः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|----------------|-----------------|
| महोदरः | மஹோதரன் | कुम्भकर्णस्य | சும்பகர்ணனது |
| अविकायस्य | பெரும் உடலுடைய வனும் | सत् | உந்த |
| बाहुशालिनः | பெருங்கைகளைவாய்ந்த வனும் | उक्तं श्रुत्वा | சொல்லைத் கேட்டு |
| वचने | | वचने | ஒரு சொல்லை |
| श्रुशोवाच | | उवाच | சின் வருமாறு |

कुम्भकर्ण कुले जातो धृष्टः प्राकृतदर्शनः । अवलिप्तो न शक्नोपि कृत्यं सर्वत्र वेदितुम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------|-------------------|--------------------|
| कुम्भकर्ण | “சும்பகர்ணனே! | अवलिप्तः | செருக்குத் தலைக்கே |
| कुले | நற்குலத்திற் | सर्वत्र | எங்குமாய்க் கிர் |
| जातः | பிறந்தவரும் | कृत्यं | செய்யவேண்டியதை |
| धृष्टः | அதிசப்பிரஸங்கியும் | वेदितुं न शक्नोपि | உந்த வல்லாதிர். |
| प्राकृतदर्शनः | ஆற்பரிணக்கமுடைய வரும் | | |

न हि राजा न जानीते कुम्भकर्णं नयानयो । त्वं तु कैशोरकाद्भृष्टः केवलं वक्तुमिच्छसि ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-----------------|----------------------------------|
| कुम्भकर्णं | “சும்பகர்ணனே! | त्वं तु | நீரை |
| राजा हि | மன்னனே | धृष्टः | அதிசப்பிரஸங்கியாய் |
| नयानयो | நீதி அநீதிகள் ஸ்ரீரண் னடையும் | कैशोरकान् केवलं | கேசரன்மே திறயின்னைத் தனத்தால் |
| न जानीते न | அறிவாதவரல்லர். | वक्तुं | எடுத்துரைக்க |
| | | इच्छसि | தனிநீர். |

स्थानं वृद्धिं च हानिं च देशकालविभागवित् । आत्मनश्च परेषां च बुध्यते राक्षसर्षभः ॥

| | | | |
|-------------------------|---|----------------------------------|---|
| देशकाल- विभागवित् | "எற்ற இடம் என்ற காலம் இவைகளை புணர்ந்த | परेषां च वृद्धिं च हानिं च | சத்ருக்களுடையவும் ஆதிக்கத்தையும் குறைவையும் |
| राक्षसर्षभः आत्मनः च | ராஷ்டிரத்தலைவர் தன் னுடையவும் | स्थानं बुध्यते | ஒத்த நிலையையும் அறிந்திருக்கின்றார். |

यत्त्वशयं बलवता कर्तुं प्राकृतबुद्धिना । अनुपासितवृद्धेन कः कुर्यात्सादृशं बुधः ॥ ५ ॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| बलवता अनुपासितवृद्धेन प्राकृतबुद्धिना तु कर्तुं | "பலவா னும் பெரியோர் சினையு பெறுதலனுமாகிய அற்புத்தியோன் ஆளுகுகூட செய்ய | यत् अशयं सादृशं बुधः कः कुर्यात् | எது தகாததோ அப்படிப்பட்டதை புத்தியானாகிய எவன் செய்வான் ? |
|--|--|---|--|

यांस्तु धर्मार्थकापांस्त्वं ब्रवीषि पृथगाश्रयान् । अनुबोद्धुं स्वभावे तान्नाहि लक्षणमस्ति ते ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| त्वं यान् धर्मार्थकामान् पृथगाश्रयान् ब्रवीषि | "நீர் எத்த தர்மம், அர்த்தம், கா மம் இவைகளை வெவ்வேறு காலத்திற் சூரியவைகளாக உரைத்தீரே. | तान् स्वभावे अनुबोद्धुं ते तु लक्षणं अस्ति न हि | அவைகளை உண்மையில் அறிய தேவீருக்கோ யோக்யதை இல்லையே. |
|---|--|--|--|

कर्म चैव हि सर्वेषां कारणानां प्रयोजनम् । श्रेयः पार्थीयसां चात्र फलं भवति कर्मणाम् ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| सर्वेषां कारणानां हि प्रयोजनं कर्म एव फलं | "எல்லா உத்தேசங்களையும் முடிவிடாது செய்கையே. இவ்வுலகில் | पार्थीयसां कर्मणां च श्रेयः फलं च भवति | மிகப்பாப செயல்களுக்கும் நல்ல பலனும் கிடைக்கிறது. |
|---|--|--|--|

निःश्रेयसफलावेव धर्मार्थावितरावपि । अधर्मानर्थयोः प्राप्तिः फलं च प्रत्यवायिकम् ॥८॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| इत्थौ धर्मार्थे अपि निःश्रेयसफलो एव | எற்ற தர்மம், அர்த்தம் இரண்டும் நற்பயன்களையே கொண்டவைகள். | अधर्मानर्थयोः प्राप्तिः फलं च प्रत्यवायिकं | அதர்மம், அனர்த்தம் இவ்விஷயங்களில் நீய பலனும் கிடைக்கிறது. |
|---|---|---|---|

ऐहलौकिकपारत्रं कर्म पुंभिर्निषेव्यते । कर्माण्यपि तु कल्याणि लभते काममास्थितः ॥

| | | | |
|----------------|---|-------------|--------------------|
| புமி: | “புருஷர்களால் | காமம் | காமபுருஷர் தீர்த்த |
| ऐहलौकिकपारत्रं | { இவ்வுலகுக்குகந்த தும், அவ்வுலகுக் குகந்த துமரான | आस्थितः तु | கைக்கொண்ட ஒருவ |
| कर्म | | कल्याणि | நன்மை [ஆம்] |
| निषेव्यते | செயலானது | कर्मेणि अपि | பயன்களையே |
| | நடத்தப்படுகிறது. | लभते | அடைகிறான். |

तत्र क्लृप्तमिदं राज्ञा हृदि कार्यं मतं च नः । शत्रौ हि साहसं यस्यात्किमिवात्रापनीयताम् ॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|-------------------|
| तत्र | “அவ்விய்யத்தில் | मतं च | சம்மதமே. |
| राज्ञा | மன்னவரால் | शत्रौ | சத்தருவிய்யத்தில் |
| हृदि | மனதில் | साहसं | அடாத செயல் |
| क्लृप्तं | கொள்ளப்பட்ட | स्यात् यत् | எற்படுமானால் |
| इदं | இந்த | अस | இதில் |
| कार्यं | காரியம் | किं इव | என்னதான் |
| नः हि | நமக்கும் | अपनीयताम् | குறைந்ததுகிடும்? |

एकस्यैवाभियाने तु हेतुर्यः प्रकृतस्त्वया । तत्राप्यनुपपन्नं ते वक्ष्यामि यदसाधु च ॥११॥

| | | | |
|----------|--|-------------|------------------|
| स्वया | “உம்மால் | तत्र अपि | அவ்விய்யத்திலும் |
| एकस्य एव | { ஒருவனாகவே எதிர்த் துப்போரிடுவதில் | असाधु | பொருத்தாதது |
| अभियाने | | यत् तु | எதுவே அதையும் |
| यः | எந்த | अनुपपन्नं च | தகாததையும் |
| हेतुः | காரணம் (தன்பலம்) | ते | உனக்கு |
| प्रकृतः | எடுத்ததுக்காட்டப் பட்டதோ | वक्ष्यामि | எடுத்துரைப்பேன். |

येन पूर्वं जनस्थाने बहवोऽतिवला हताः । राक्षसा राघवं ते त्वं कथमेको जयिष्यसि ॥

| | | | |
|----------|-----------------|----------|-----------------|
| पूर्वं | “முன்பு | हताः | கொல்லப்பட்டார் |
| जनस्थाने | இனஸ்தானத்தில் | तं राघवं | அந்த ராமனை [கனோ |
| येन | எவனால் | त्वं | நீ |
| अतिवलाः | அதிபலசாலிகளாகிய | एकः | ஒருவனாய் |
| बहवः | பல | कथं | எக்டனம் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | जयिष्यसि | வேந்திகொள்வாய்? |

ये पुरा निर्जितास्तेन जनस्थाने महौजसः । राक्षसांस्तान्पुरे सर्वान्भीतानद्यापि पश्यसि ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-----------|-------------------|
| पुरा | “முன்பு | तान् | அந்த |
| तेन | அவனால் | राक्षसान् | அரக்கர்கள் |
| जनस्थाने | இனஸ்தானத்தில் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| महौजसः | மகாவீரதாபசாலி | अद्यपि | இப்போதும் |
| ये | எவர்கள் [கனான | भीतान् | திகில்கொண்டவர்க |
| निर्जिताः | முறியடிக்கப்பட்டார் கனோ | पुरे | பட்டணத்தில் [எவய் |
| | | पश्यसि | பார்க்கின்றீர்! |

तं सिंहमिव संक्रुद्धं रामं दशरथात्मजम् । सर्पं सुप्तमिवाबुध्य प्रबोधयितुमिच्छसि ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|-----------------|
| சங்குடி | " சினங்கொண்ட | சர்ப் | நாகத்தை |
| सिंहं इव | சிக்கம்போன்ற | इव | எப்படியோ அப்படி |
| दशरथात्मजं | தசரதன் பிள்ளையான | आबुध्य | சீண்டி. |
| तं रामं | அந்த ராமனை | प्रबोधयितुं | எழுப்ப |
| सुप्तं | துங்குமின்ற | इच्छसि | துணிகின்றனை. |

ज्वलन्तं तेजसा नित्यं क्रोधेन च दुरासदम् । कस्तं पृत्युमिवासह्यमासादयितुमर्हति ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|------------|----------------------|
| तेजसा | " பிரகாசத்தாலும் | मृत्युं इव | எமன்போன்றது |
| क्रोधेन च | கோபத்தாலும் | अमर्हं | அசந்நயமாளவலு |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | सं | அவனை [மான |
| ज्वलन्तं | ஜ்வலிப்பவனும் | कः | எவன் |
| दुरासदम् | கிட்ட அணுகமுடியாதவனும் | आसादयितुं | எதிர்க்க |
| | | अर्हति | சக்தனாயிருக்கிறான் ? |

संशयस्थमिदं सर्वं शत्रोः प्रतिसमासने । एकस्य गमनं तत्र न हि मे रोचते भृशम् ॥ .

| | | | |
|-------------|------------------------|---------|-------------------|
| शत्रोः | " சந்தருவை | एकस्य | அங்கு |
| प्रतिसमासने | எதிர்த்துப்போராடுவதில் | गमनं हि | ஒருவன் போதலென்பதே |
| इदं | இந்த | मे | எனக்கு |
| सर्वं | எல்லாமும் | भृशं | பிகவும் |
| संशयस्थं | ஆபத்திற்கிடமாவதே. | न रोचते | பிடித்ததாயில்லை. |

हीनार्थः सुप्तमृद्दार्थं कां रिपुं प्राकृतं यथा । निश्चित्य जीवितस्यागे वशमानेतुमिच्छति ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|------------|-----------------------|
| हीनार्थः | " குறைந்த உபகாரை | निश्चित्य | நிச்சயங்கொண்டு |
| कः | எவன் [கொஞ்சன் | प्राकृतं | பாம்புருஷனை |
| सुप्तमृद्दार्थं | நினைந்த உபகாரைக் கருவின் | यथा | எப்படியோ அப்படியே |
| रिपुं | எதருவை | वशं आनेतुं | தன்வசப்படுத்த |
| जीवितस्यागे | உயிர் மரப்பதில் | इच्छति | துணிர்த்தவனாகின்றான். |

यस्य नास्ति मनुष्येषु सदृशा राक्षसोत्तम । कथमाशंससे योद्धुं तुल्येनेन्द्रविष्वतोः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------------|------------------------------|
| राक्षसोत्तम | " ராஷ்டிரேஸாத் தம ! | इन्द्रविष्वतोः | இந்திரனுக்கும் சூரியனுக்கும் |
| यस्य | எவனுக்கு | तुल्येन | சமனான அவினேடு |
| सदृशः | சமமானவன் | योद्धुं | போர்ப்பரிய |
| मनुष्येषु | மனுஷ்யர்களில் | कथं | எகவனம் |
| अस्ति न | இல்லைபோ | आशंससे | நினைக்கின்றனை ? |

एवमुक्त्वा तु संरब्धः कुम्भकर्णो महोदरः । उवाच रक्षसां मध्ये रावणं लोकरावणम् ॥

संरब्धः सिனங்கொண்ட
மஹோதர: மகோதரன்
कुम्भकर्णो तु கும்பகர்ணனைப்
பார்ந்து
एवं மேற்கண்டவாறு
उक्त्वा சொல்லினிட்டு
रक्षसां ஆரங்கர்களின்

मध्ये மத்தியில்
लोकरावणं உலகத்தவையே கதற
• வாடிக்கும்
रावणं ராவணனைப்பார்ந்து
उवाच (சின்வருமாறு
சொன்னான் :

लब्धा पुनस्त्वं वैदेहीं किमर्थं संभजल्पसि । यदाचलसि तदा सीता वशगा ते भविष्यति ॥

एवं "தேவீர்
वैदेहीं வலிதையை
लब्धा पुनः அடைந்த பின்னர்
किमर्थं காதற்காக
संभजल्पसि பேசிக்கொண்டிருக்
கிதிர் ?

इच्छसि यदि தேவீர் இஷ்டம்
கொண்டால்
तदा அப்பொழுது
सीता வலிதை
ते தேவீருக்கு
वशगा भविष्यति வசப்பட்டுவிடுவான்.

एष्टुः कश्चिदुपायो मे सीतोपस्थानकारकः । रुचिरश्चेत्स्वया बुद्ध्या राक्षसेश्वर तं शृणु ॥

सीतोपस्थानकारकः "வலிதையை வசப்படு
தும்படி யான
कश्चिद् ஓர்
उपायः உபாயம்
स्वया எனது
बुद्ध्या புத்தியைக்கொண்டு
मे என்னால்

एष्टुः கண்டுபிடிக்கப்
பட்டது.
राक्षसेश्वर ராக்ஷஸமன்னு!
रुचिरः चेत् திருவுளமிருக்கு
• மாணல்
तं அதை
शृणु கேட்டருள்கிராக.

अहं द्विजिह्वः संहारी कुम्भकर्णो वितर्दनः । पञ्च रामवधायैते नियान्तीत्यवोधय ॥२२॥

अहं "நான்
द्विजिह्वः தனிஜிஹ்வன்
संहारी சம்ஹாரதி
कुम्भकर्णो கும்பகர்ணர்
वितर्दनः விதர்த்தனன்
एते இந்நக

पञ्च ஐவர்கள்
रामवधाय रामவதைக்காக
नियान्ति செக்கின்றனர்
इति எனது
अवोधय தெகீர் சொன்னீர்
களாக.

ततो गत्वा वयं युद्धं दास्यामस्तस्य यत्नतः । जेष्यामो यदि ते शत्रून्तोपायैः कृत्यमस्ति नः ॥

ततः "அங்கு
वयं நாங்கள்
गत्वा சென்று
• यत्नतः முயற்சிகொண்டு
तस्य அவனுக்கு
युद्धं போரை
दास्यामः தருவென்றோம்.

ते தேவீரது
शत्रून् சத்திரக்களை
जेस्यामः यदि அடித்தவிடுவோமா
उपायैः உபாயங்களால் [வில்
नः நமக்கு
कृत्यं ஆகவேண்டியது
अस्ति न இல்லை. [இன்றாம்

अथ जीवति नः शत्रुर्वयं च कृतसंयुगाः । ततस्तदभिपत्स्यामि मनसा यत्समीक्षितम् ॥

வய் "நாங்கள்
 கृतச்யுగా: ச போர்புலித் தும்
 ந: மமது
 சது: சத்தாரு
 ஜீவதி பிழைத்திருக்கின்றான்
 தத: காண்முல்

अथ अப்பொழுது
 यत् எது
 मनसा மனதால்
 समीक्षितं உத்தேசிக்கப்பட்ட
 तत् அதை [தொ,
 अभिपत्स्यामि: கைக்கொள்வேம்

वयं युद्धादिहेष्यामो रुधिरेण समुक्षिताः । विदार्य स्वतनुं वाणै रामनामाङ्कितैः शितैः ॥

வய் "நாங்கள்
 युद्धात् போரில்லிந்து
 रामनामाङ्कितै: ராமன் பெயர்கொண்ட
 शितै: वाणै: கூரிய பாணக்களால்
 स्वतनुं எக்களது சீரத்தை

विदार्य தீறிக்கொண்டு
 रुधिरेण ரத்தத்தால்
 समुक्षिताः நனைத்தவர்களாய்
 इह இங்கு
 एष्याम: வருகின்றோம்.

भक्षितो राघवोऽस्माभिर्लक्ष्मणश्चेति वादिनः । तव पादौ ग्रहीष्यामस्त्वं नः कामं प्रपूरय ॥

भक्षानि: "எங்களால்
 राघव: ராமன்
 भक्षित: விழுக்கப்பட்டான்,
 लक्ष्मण: லக்ஷ்மணனும்
 च அப்படியே விழுக்கப்
 பட்டான்
 इति என்று

वादिन: சொல்லுகின்றவர்
 तव தேவரீரது [களாய்
 पादौ ग्रहीष्याम: பாதங்களில் தண்ட
 नः தேவரீர் [விடுகிறோம்.
 कामं எக்களது
 प्रपूरय பின்வரும் இஷ்டத்தை
 பூர்த்திசெய்வீராக.

ततोऽवधोषय पुरे गजस्कन्धेन पार्थिव । इतो रामः सह भ्रात्रा ससैन्य इति सर्वतः ॥

पार्थिव "மன்னவரே!
 तत: அச்சமயத்தில்
 पुरे பட்டணத்தில்
 गजस्कन्धेन யானையேறிய ஒரு
 , வளைக்கொண்டு
 राम: "ராமன்
 भ्रात्रा सह தம்பியோடுகூடவும்

ससैन्य: கைசன்யக்களோடு
 கூடவும்
 इत: கொல்லப்பட்டான்
 इति என்று
 सर्वत: எங்கும்
 अवधोषय பிரகாசப்படுத்து
 வீராக.

प्रीतो नाम ततो भूत्वा भृत्यानां स्वमरिन्दम् । भोगांश्च परिवारांश्च कामांश्च वसु द्रापय ॥

भ र्न्दम् "சத்ருசம்ஹராக!
 तत: அச்சமயம்
 स्वं தேவரீர்
 प्रीत: नाम திருப்திகொண்டவர்
 போல

भूत्वा இருந்துகொண்டு
 भृत्यानां பணியாளர்களுக்கு
 भोगान् च போகவஸ்துக்களையும்
 परिवारान् च வாழனக்களையும்
 कामान् விரும்பியவைகளையும்

| | | | |
|----------|-------------------|---------|------------------|
| ॐसु च | தீரவியற்கைகடியும் | पये च | சூய வகைகளையும் |
| वीराणां | வீரர்களுக்கும் | दापय | கொடுக்கச்செய்வீ |
| वासंसि | வன் திரங்களை யும் | | ராசு* |
| माह्वामि | புஷ்பங்களை யும். | स्वये च | தேவரீரும் |
| अनुलेपनं | பூச்செய்யும் | सुरितः | சந்திரைஷங்கொண்டு |
| योधेभ्यः | படர்களுக்கு | ततः | அப்பொழுது |
| बहु | மிகுந்த | विष | சூடிப்பிராக. |

ततोऽस्मिन्बहुर्लभूते कौलीने सर्वतो गते । भक्षितः समुद्रायां राक्षसैरिति विश्रुते ॥३०॥
प्रविश्याश्वास्य चापि त्वं सीतां रहसि सान्त्वय । धनधान्यैश्च कामैश्च स्वैर्धनां प्रलोभय ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|-------------------|
| ततः | * அப்பொழுது | सीतां अपि | வீதைகயிடமே |
| रामः | ராமன் | रहसि | சகரந்தத்தில் |
| समुद्रतः | நண்பர்களைகொடுகட | प्रविशय | சென்று |
| राक्षसैः | ஆசுக்கர்கொடல் | आश्वास्य | தேந்தரவுபடுத்தி |
| भक्षितः | கிழுக்கப்பட்டான் | सान्त्वय | நல்வார்த்தை புகல் |
| इति | என்ற | | விராக. |
| अस्मिन् | இந்த | पुनां | புனைய |
| विश्रुते | பிரவரித்தபரண | धनधान्यैः च | தனதானயங்கனாலும் |
| कौलीने | வதந்தியரணது | कामैः च | இஷ்டவஸ்துகள் |
| सर्वतः गते | எங்கும் பரவி | | கனாலும் |
| बहुर्लभूते | பிரகாமரணவுடன் | स्वैः च | சுதனங்கனாலும் |
| त्वं च | தேவரீரும் | प्रलोभय | பயக்கிவிடும். |

अनयोपधया राजन्भयशोकानुबन्धया । अकामा त्वद्दशं सीता नष्टनाथा गमिष्यति ॥३१॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|-------------------|-----------------------|
| राजन् | * ஆசிரிசு! | अकामा | எஞ்சும்பயிலலா திருந்த |
| भनया | இந்த | सीता | வீதை |
| भयशोकानुबन्धया | திசைவரும், தோஷக் | नष्टनाथा | * நஷ்டித்தவனாய் |
| | கையையும் கிணைகிக்கும் | त्वद्दशं गमिष्यति | தேவரீருக்கு வசப்பட்ட |
| उपधया | கபடோபாயத்தால் | | இக்டுவான். |

रञ्जनीयं हि भर्तारं विनष्टमवगम्य सा । नैराश्यात्स्त्रालघुत्वाच्च त्वद्दशं प्रतिपत्स्यते ॥३२॥

| | | | |
|-----------|------------|------------------------|----------------------|
| सा | * ஆவன் | नैराश्यात् | தீருந்த ஆகைப்பொழிந்த |
| रञ्जनीयं | காதலித்த | | தலையாலும் |
| * भर्तारं | கணவனை | स्त्रालघुत्वात् च | ஸ்திரீகாபல்யத் * |
| विनष्टं | மாண்டவளுக | | தாலும் |
| अवगम्य च | அறிந்ததுபோ | त्वद्दशं प्रतिपत्स्यते | தேவரீருக்கு வசப்பட்ட |
| | | | இக்டுவான். |

सा पुरा सुखसंवृद्धा सुखाहं दुःखकशिता । त्वय्यधीनं सुखं ज्ञात्वा सर्वथोपगमिष्यति ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-------------|-----------------|
| पुरा | " முன்பு | दुःखकशिता | ககத்தால் வராதது |
| सुखसंवृद्धा | செல்வமாய் வளர்ந்தவனும் | सुखं | பட்டவளரகி |
| सुखाहं | சகத்திற்கு உரியவனான | त्वयि अधीनं | சகத்தை |
| सा | மான் | ज्ञात्वा | உனததீனமாய் |
| | | सर्वथा | கவனித்து |
| | | उपगमिष्यति | எவ்விதத்திலும் |
| | | | கிட்டிவிடுவான். |

एतत्सुनीतं मम दर्शनेन रामं हि दृष्ट्वैव भवेदनर्थः ।

इहैव ते सेत्स्यति मोत्सुको भूर्महान्बुद्धेन सुखस्य लाभः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|----------------|
| मम | " எனது | मा मुः | தேவரீர் இருக்க |
| दर्शनेन | அறிபரையத்தால் | मयुद्धेन | வேண்டாம். |
| एतत् हि | இதுதான் | सुखस्य | போரின்நிலைய, |
| सुनीतं | நலமாயிருக்கின்றது. | महान् | சகத்தினது |
| रामं | ராமனை | लाभः | பெரும் |
| दृष्ट्वा एव | கண்டபின்னரே | इह एव | ஊபமானது |
| भवनर्थः | தீங்கு | ते | இவ்விடத்திலேயே |
| भवेत् | விளைவளம். | सेत्स्यति | தேவரீருக்கு |
| उत्सुकः | சஞ்சலமுற்றவராய் | | சித்திக்குய். |

अदृष्टैर्नयो ह्यनवाप्तसंशयो रिपूनबुद्धेन जयन्नराधिपः ।

यशश्च पुण्यं च महन्महीपते श्रियं च कीर्तिं च चिरं समश्नुते ॥ ३६ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------|--------------------|
| महीपते | " மன்னவரே! | जयस् | ஆதிக்கின்றவனாய் |
| नराधिपः | ஓர் அரசன் | महन् | பெரும் |
| अदृष्टैर्नयो | கண்டதில்லாத கண் | यशः च | புகழையும் |
| अनवाप्तसंशयः च | வெறுத்தும் பாராத | पुण्यं च | சகத்தையும் |
| रिपून् | வனாயும் | कीर्तिं | நிண்ட |
| मयुद्धेन हि | ஆபத்தெதுவுமடை | श्रियं च | சம்பத்தையும் |
| | யாதவனாயும் | चिरं | வெகுநாளம் |
| | சத்ருக்களை | समश्नुते | அனுபவிக்கின்றான்." |
| | போரின்நிலைய | | |

इत्यापि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे चतुःपष्ठितमः सर्गः ॥



विद्विधानामशुद्धीनां राज्ञा पण्डितमानिनाम् । शृण्वता सादितमिदं त्वद्विधानां महोदर ॥

| | | | |
|---------------|--|-------------|-------------------------|
| महोदर | "மஹோதர] | विद्विधानां | உன்பேரன்றவர்க |
| विद्विधानां | உதவர்க்களாகளும் | शृण्वता | சென்கொற்றும் [ஊக்கு |
| अशुद्धीनां | மனாடவர்களும் | राज्ञा | மன்னனும் |
| पण्डितमानिनां | { எல்லாம் தெரிந்தவர் களாய் பாவித்தவர் களுமான | इदं | இது |
| | | सादितम् | இக்கதியடையப் பட்டது. |

युद्धे कापुरुषैर्नित्यं भवद्भिः प्रियवादिभिः । राजानमनुगच्छद्भिः कृत्यमेतद्भिः सादितम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------------|-----------------------------|
| प्रियवादिभिः | பிரியவாய்ப் பேசு | भवद्भिः | உக்களால் |
| राजानं | மன்னனை | युद्धे | "போரில் |
| नित्यं | எக்காலத்திலும் | एतद् कृत्यं हि | இந்த கதிதான் |
| अनुगच्छद्भिः | ஒத்தபுடும் | सादितम् | கொண்டுவந்து விடப்பட்டது. |
| कापुरुषैः | அற்பபுருடர்களாகிய | | |

राजशेषा कृता लङ्का क्षीणः कोशो बलं हतम् । राजानमिषसाद्य सुहृच्चिह्नमित्रकम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|--------------|----------------------|
| इमं राजानं | "இந்த மன்னனை | कोशः | கொடை |
| आसाद्य | அண்டி | क्षीणः | காலியானது. |
| लङ्का | இலங்கையானது | बलं | செனையும் |
| राजशेषा | ராஜன்மாதீரம் மிஞ்சியதாய் | हतं | அழிந்தது. |
| कृता | உக்களால் செய்யப் பட்டது. | सुहृच्चिह्नं | நண்பர்களாய்நடிக்கும் |
| | | अमित्रकम् | சத்ருவர்க்கம் இது. |

एष निर्याम्यहं युद्धमुद्यतः शत्रुनिर्जये । दुर्नयं भवतामथ समीकर्तुमिहाहवे ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|---------------------------|
| अहं | "நான் | शत्रुनिर्जये | சத்துருவை ஜெயிப்ப கில் |
| अथ | இப்பொழுது | उद्यतः | முயற்சிக்கொண்டவ னாய் |
| इह | இந்த | युद्धं | போருக்கு |
| आहवे | போரில் | एषः | இதோ |
| भवतां | உக்களது | निर्यामि | செல்லுகின்றேன்." |
| दुर्नयं | அட்டிழியத்தை | | |
| समीकर्तुं | சரிப்படுத்த | | |

एवमुक्तवतो वाक्यं कुम्भकर्णस्य धीमतः । प्रत्युवाच ततो वाक्यं महसन्राक्षसाधिपः ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|--------------|------------|-----------------|
| धीमतः | தீமனான | महसन् | கனகத்து |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணன் | ततः | அப்பொழுது |
| एवं | பேற்கண்ட | वाक्यं | வார்த்தைபொன்றை |
| वाक्यं | சொல்லை | प्रत्युवाच | பின்வருமாறு |
| उक्तवतः | கொண்டொழுது | | |
| राक्षसाधिपः | ராட்சஸமன்னன் | | தீமனாய்வார்த்தை |

महोदरोज्यं रामात्तु परिव्रसो न संशयः । न हि रोचयते तात युद्धं युद्धविशारद ॥१०॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|---------------------|
| तात | "அப்பா! | परिव्रसः | பயம் துணிப்டரன். |
| युद्धविशारद | கொடில் வல்லீவனை! | संशयः न | இதில் சந்தேகமில்லை. |
| अर्थ | இந்த | हि | ஆதலால் |
| महोदरः | மகிகா தரன் | युद्धं तु | யுத்தத்தைதய |
| रामात् | ராமனிடம் | न रोचयते | அவன் விரும்பவில்லை. |

कश्चिन्मे त्वत्सप्तो नास्ति सौहृदेन बलेन च । गच्छ शत्रुवधाय त्वं कुम्भकर्णं जयाय च ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|-------------------|
| मे | "எனக்கு | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ண! |
| सौहृदेन | அன்பினாலும் | त्वं | நீ |
| बलेन च | பலத்தினாலும் | शत्रुवधाय | சத்ருக்களை அழிக்க |
| त्वत्सप्तः | உனக்கு நிகரானவன் | | வும் |
| कश्चित् | ஒருவன் | जयाय च | வெற்றிகொள்ளவும் |
| नास्ति न | இல்லை. | गच्छ | சென்றுவராய். |

शयानः शत्रुनाशार्थं भवान्संबोधितो मया । अयं हि कालः सुहृदां राक्षसानामरिन्दम ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|------------|------------------|
| शयानः | "ஆரிந்தம்! | मया | என்னால் |
| भवान् | உறக்கிக்கொண்டே. | संबोधितः | எழுப்பப்பட்டாய். |
| शत्रुनाशार्थं | சத்ருக்களை வதைப்பதற்காக | सुहृदां | உற்றவர்களை |
| | | राक्षसानां | அடக்கினதற்கு |
| | | अयं हि | இதுதான் |
| | | कालः | ஐந்தகாலம். |

तद्गच्छ शूलमादाय पाशहस्त इवान्तकः । वानरान् राजपुत्री च भक्षयादित्यनेज्यौ ॥१३॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------------|--------------------|
| तद् | "ஆகையால் | गच्छ | சென்றாய். |
| शूलं | குவாயுதத்தை | वानान् | குத்துகொடிய |
| आदाय | எடுத்துக்கொண்டு | भक्षयादित्यनेज्यौ | குடிமக்கள் தன் |
| पाशहस्तः | பாசக்கயிற்றை கையி | | கொண்ட |
| | லோத்திய | राजपुत्री च | ராதகுமாரிக்கு உயர் |
| अन्तकः | யமன் | | சொடியம் |
| इव | போன்றவனாய் | भक्षय | பசித்தகொடுவாய். |

समालोचय तु ते रूपं विद्रविष्यन्ति वानराः । रामलक्ष्मणयोश्चापि हृदये मस्फुरिष्यतः ॥

| | | | |
|----------------|--------------|---------------|---------------------|
| वानराः | "வானரர்கள் | रामलक्ष्मणयोः | ராமலக்ஷ்மணர்களுக்கு |
| ते | உனது | | ஊழியர். |
| *रूपं | உருவத்தை | हृदये अपि च | ஊழியர்களும் |
| समालोचय तु | கண்டதுபோ | मस्फुरिष्यतः | அடக்கப்படுகின்ற |
| विद्रविष्यन्ति | வெருண்டோ | | தவம். |
| | விடுவார்கள். | | |

एवमुक्त्वा महाराजः कुम्भकर्णं महाबलम् । पुनर्जातिमिवात्मानं मेने राक्षसपुङ्गवः ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|--------------|------------------|
| महाराजः | மக: ராஜரூபிய | ईत्वा | கூறியீட்டு, |
| राक्षसपुङ्गवः | ராக்ஷஸீஸா தகவல் | आत्मानं | தன்னை |
| महाबलं | மகர பலராளியாகிய | पुनर्जाति इव | செத்துப்பிழைத்தவ |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனைப் | | ஐகரீவ |
| | பார்த்து | मेने | எண்ணிக்கொண் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | டான். |

कुम्भकर्णबलाभिज्ञो जानंस्तस्य पराक्रमम् । वभूव मुदितो राजा शशाङ्क इव निर्मलः ॥

| | | | |
|-----------------------------|-----------------------------------|-----------|------------------|
| कुम्भकर्ण- } बलाभिज्ञः } | கும்பகர்ணனது பலத் தை நன்கறிந்த | जानन् | நினைத்து |
| राजा | மன்னன் | मुदितः | சந்தேசமயங்கொண்ட |
| तस्य | அவனது | निर्मलः | கனக்கமற்ற [வனாய் |
| पराक्रमं | பரக்கிரமத்தை | शशाङ्क इव | சந்திரனை |
| | | वभूव | விளங்கினான். |

इत्येवमुक्तः संहृष्टो निर्जगाम महाबलः

| | | | |
|----------|---------------------------|----------|-----------------|
| हृति एवं | மேற்கண்டவாறு | संहृष्टः | உந்ணா ஹும் கொண் |
| उक्तः | சொல்லப்பட்ட | | டவனாய் |
| महाबलः | மகர பலராளியாகிய (அவன்) | निर्जगाम | செல்ல ஹற்றான். |

राज्ञस्तु वचनं श्रुत्वा कुम्भकर्णः समुद्यतः । आददे निशितं शूलं वेगाच्छत्रुनिवर्हणम् ॥

सर्वकालायसं दीप्तं तप्तकाञ्चनभूषणम् । इन्द्राशनिसमं भीमं वज्रप्रतिमगौरवम् ॥ १९ ॥

देवदानवगन्धर्वयक्षकिञ्जरसूदनम् । रक्तमाल्यं महाधाम स्वतश्चोद्गतपावकम् ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------------|------------------------------------|--|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | भीमं | பலக்கரமானதும் |
| राज्ञः | அரசனது | वज्रप्रतिमगौरवं | இடியை நிகர்த்த மகி மை வாய்த்ததும் |
| वचनं | சொல்லை | देवदानवगन्धर्व- यक्षकिञ्जरसूदनं | } தேவர்கள், ஆசார் கள், யக்ஷர்கள், கிள் னார்கள் இவர்களை சொதந்ததும் |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | रक्तमाल्यं | செவ்விய புக்கமரலை கொண்டதும் |
| वु | அப்பொழுது | महाधाम | மிக ஒளிபொருந்தி யதும் |
| समुद्यतः | முயற்சிக்கொண்டவ ளய் | स्वतः | தன்னிடமிருந்து |
| शत्रुनिवर्हणं | சத்ருக்களை ஒழிப்ப தும் | उद्गतपावकं च | நெருப்பைக் கக்குகி |
| सर्वकालायसं | முற்றிலும் கறந்த இரும்பாலானதும் | निशितं | கூரிய [றதுமான |
| दीप्तं | ஐவலிக்கின்றதும் | शूलं | குலாயுதத்தை |
| तप्तकाञ्चनभूषणं | சுத்தப்பொன்னணி பூண்டதும் | वेगात् | வேகமாய் |
| इन्द्राशनिसमं | இந்திரனது கஜ்ஜா யுதத்தை நிகர்த்த | आददे | எடுத்துக்கொண்டான். |

रक्षसामहितं सर्वं शत्रुपक्षं निषूदय -

रक्षसां अहितं शत्रुपक्षं "அரக்கர்களுக்கும் தீக்குபுரிந்த சத்ருவர்க்கம்"

॥ २६ ॥

सर्वे- निषूदय एतन्नाशयந்தையும் ஹந்தஞ்செய்துவிடுவா யாக. ௭

अथासनात्समुत्पत्य स्रजं मणिकृतान्तराम् । आवबन्ध महातेजाः कुम्भकर्णस्य रावणः ॥

महातेजाः रावणः भय आसनात् समुत्पत्य மகா ப்ரதாபகாலியா ராவணன் [சிய அப்பொழுது ஆஸனத்திலிருந்து எழுந்து,

मणिकृतान्तरां स्रजं कुम्भकर्णस्य आवबन्ध மணிகள் நடுவில் பதிக கப்பெற்ற ஐராத்தை சும்பகர்ணனுக்கு ஆட்பணை.

अङ्गदान्यङ्गुलीवेष्टान्वराण्याभरणानि च । हारं च शशिसङ्काशमावबन्ध महात्मनः ॥२८॥

अङ्गदानि अङ्गुलीवेष्टान् वराणि आभरणानि च தேரன்வளைகளை யும் மோதிரங்களை யும் சிறந்த ஆபரணக்களையும்

शशिसङ्काशं हारं च महात्मनः आबबन्ध சந்திரனை நிகர்த்த ஹர் மாரையை யும் பேராற்றல்படைத்த அவனுக்கு ஆட்பணை.

दिव्यानि च सुगन्धीनि माल्यदामानि रावणः । श्रोत्रे चासङ्गयामास श्रीमती चास्य कुण्डले ॥

रावणः दिव्यानि सुगन्धीनि च माल्यदामानि च श्रोत्रे ராவணன் சிறந்த நறுமணக்கமழும் மல்தாமரைகளை யும் காதுகளில்

श्रीमती कुण्डले च अस्य आसङ्गयामास ஒளிபிலக்கும் இரகுண்டலக்களை யும் இவனுக்கு அணிவித்தான்.

काञ्चनाङ्गदकेयूरनिष्काभरणभूषितः । कुम्भकर्णो वृद्धकर्णः सुहुतोऽग्निरिवावभौ ॥३०॥

वृद्धकर्णः कुम्भकर्णः काञ्चनाङ्गदकेयूर- निष्काभरणभूषितः பெரும்காதுபடைத்த சும்பகர்ணன் பொன் கைவளை தேர ன்வளை முதலிய சிறந்த ஆபரணங்கள் ளுண்டவனாய்

सुहुतः अग्निः इव आभौ நன்கு ஆஹுதிசெய்யப்பட்ட அக்னிபோல ஆன க்கினான்.

श्रोणीसूत्रेण महता मेचकेन व्यराजत । अमृतोत्पादने नद्यो भुजङ्गेनेव मन्दरः ॥ ३१ ॥

महता मेचकेन श्रोणीसूत्रेण नद्यः சிறந்ததும் கரியதுமான அணாநூலினால் சுற்றி அணியப் பெற்ற அவன்

अमृतोत्पादने भुजङ्गेन मन्दरः इव व्यराजत அமிருதம் கடைந்த பொழுது பரம்பரம்(காக்கியால்) மந்தரமலை எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமோ விளக்கினான்.

स काञ्चनं भारसहं निवातं विद्युन्मयं दीप्तमिवात्मभासा ।

आवध्यमानः कवचं रराजे संध्याभ्रसंवीत इवाद्रिराजः

॥ ३२ ॥

ச: ஆவன்
 काञ्चनं பொருள் குண ன னுமும்
 भारसहं தரக்குறையைத் தரங்கு
 விவாதம் காற்றும் உட்புகாத
 भासभासा इव அதன் ஒலியினாலேயே
 विदुष्यमं பின்னதாகாந்தி
 கொண்டு

दीप्तं துவளிப்பதுமான
 कवचं கவசத்தை
 आवध्यमानः தரித்தவனும்,
 संख्याअसेवीतः மரணிக்காலத்தியமே
 अद्विराजः கத்தரல் களியப்பெற்ற
 इव இவ்வாறே
 राज எவ்வண்ணமோ அவ்
 விவங்கினான்.
 விவங்கினான்.

सर्वाभरणसर्वाङ्गः शूलपाणिः स राक्षसः । त्रिविक्रमकृतोत्साहो नारायण इवावभौ ॥३३॥

सर्वाभरणसर्वाङ्गः { எல்லா ஆபரணங்களும்
 शूलपाणिः { மும் பல ஆபரணங்
 सः राक्षसः { கள் அணிந்தவனும்
 अर्कत आर्ककण, குறையைத் தரக்கேள்
 தியவனுமான

त्रिविक्रमः) திரிவிக்கமாவதாவத்
 कृतोत्साहः) தில் உத்தராகங்கொ
 नारायणः इव மறாணியும்
 अवभौ விவங்கினான்.

भ्रातरं संपरिष्वज्य कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । प्रणम्य शिरसा तस्मै संप्रतस्थे महाबलः ॥

महाबलः மகாபலகாலியாகிய
 भ्रातरं தமையனை [ஆவன்
 संपरिष्वज्य இணக்கக் கட்டித்
 தழுவிக்கொண்டு

अभिप्रदक्षिणं कृत्वा வலம்புக்க
 तस्मै அவனுக்கு
 शिरसा முகத்தாழ்த்தி
 प्रणम्य च நமஸ்கீர்த்திட்டு
 संप्रतस्थे புறப்பட்டான்.

निष्पतन्तं महाकायं महानादं महाबलम् । तपाशीभिः प्रशस्ताभिः प्रेषयामास रावणः ॥

रावणः ராவணன்
 महाकायं பெருமுடனுற்றவனும்
 महानादं பேரொலி கொண்ட
 महाबलं வனும்
 மிக்க பலகாலியான

निष्पतन्तं புறப்பட்டதென
 तं அவனை [கின்ற
 प्रशस्ताभिः சிறந்த
 भाशीभिः ஆசிரமார்த்திகொண்டு
 प्रेषयामास கழிவனுப்பினான்.

शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषैः सैन्यैश्चापि वरायुधैः । तं गजैश्च तुरङ्गैश्च स्यन्दनैश्चाम्बुदस्वनैः ॥३६॥

अनुजसुर्महात्मानं रथिनो रथिनां वरम्
 महामानं பேராற்றல்கொண்ட
 रथिनां ரதத்தினிருந்த போர்
 वरं तं உற்பவர்களுள்
 रथिनः உந்தாமன அவனை
 शङ्खदुन्दुभि-) சங்கங்களையும், முக
 निर्घोषैः) களையும் ஒலியால்
 कणैश्च

॥ ३७ ॥
 वरायुधैः च சிறந்த ஆயுதத்தால்
 सैन्यैः अपि) சேனர்களோடும்
 गजैः च) மான்களோடும்
 तुरङ्गैः च குதிரைகளோடும்
 अम्बुदस्वनैः) மேகம்போல் ஒலிக்
 स्यन्दनैः च) கக்களோடும்
 अनुजसुः) பின் தொடர்ந்து
 சென்றார்கள்.

सर्वैरुष्टैः खरैरश्वैः सिंहद्विपमृगद्विजैः । अनुजग्मुश्च तं योरं कुम्भकर्णं महाबलम् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------------------|---|
| घोरैः | பயங்கரமானவர்கள் | खरैः | கேரடிகளையும் குரங்குகளையும் |
| महाबलं | மகாபலசாலிகளும் | अश्वैः | குதிரைகளையும் |
| तं | அந்த | सिंहद्विपमृग- द्विजैः च | சிங்கங்கள், பாண்டுகள், மான்கள், பகழிகள் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | अनुजग्मुः | இவைகளைகளும் பிண்டுதரடர்ந்த சென்றவர்கள். |
| सर्वैः | பாம்புகளைகளும் | | |
| वष्टैः | ஊட்டகக்களைகளும் | | |

स पुण्यवैश्वकीर्यमाणो घृतातपत्रः शितशूलपाणिः ।

मदोस्कटः शोणितगन्धमत्तो विनिर्घयो दानवदेवशत्रुः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|----------------|--|-------------|--------------------------|
| शितशूलपाणिः | கரிய சூலாயுதத்தைக் கையில் தரித்தவனும் | सः | அவன் |
| मदोस्कटः | சிறிற் மூண்டவனும் | पुण्यवैः | புத்தொலகிகளால் |
| शोणितगन्धमत्तः | சத்தவெறியால் மதம் கொண்டவனும் | अवकीर्यमाणः | நூலப்பெற்றவனும் |
| दानवदेवशत्रुः | { அசுரர்களுக்கும் தேவர்களுக்கும் சத்திரியமான | घृतातपत्रः | சூடைபிடிக்கப் பெற்றவனும் |
| | | विनिर्घयो | சென்றான். |

पदातयश्च बह्वो महानादा महाबलाः । अन्वयू राक्षसा भीमा भीमाक्षाः शस्त्रपाणयः ॥

रक्ताक्षाः सुमहाकाया नीलाञ्जनचयोपमाः । शूल्यानुवम्य खड्गांश्च निशितांश्च परश्वधान् ॥

बहुव्यापांश्च परिधान्मदाश्च मुसलानि च । तालस्कन्धांश्च विपुलान्क्षेपणीयान्दुरासदान् ॥

| | | | |
|------------------------|----------------------------------|---------------|---------------------------------|
| महानादाः | பேரொலி கொண்டவர்களும் | शूलान् | சூலக்களையும் |
| महाबलाः | மகாபலசாலிகளும் | खड्गान् च | கத்திகளையும் |
| भीमाः | பயங்கரமானவர்களும் | निशितान् | கரிய |
| भीमाक्षाः | அஞ்சத்தக்க கண்கள் அடைந்தவர்களும் | परश्वधान् च | கேரடிகளையும் |
| शस्त्रपाणयः | ஆயுதத்தாங்கியவர்களும் | बहुव्यामान् | மிக நீண்ட |
| रक्ताक्षाः | சிவந்த கண்கள் கொண்டவர்களும் | परिवान् च | உழலைத்தழகளையும் |
| सुमहाकायाः | மிகப்பெரிய உடலையடைந்தவர்களும் | गदाः च | கதைகளையும் |
| नीलाञ्जन- चयोपमाः च | கருமை மலையை நிகர் த்தவர்களுமான் | मुसलानि च | உலக்கைகளையும் |
| बहुवः | அனைக | विपुलान् | பெரிய |
| राक्षसाः | அரக்க | तालस्कन्धान् | பனைமர த் தூண்டுகளை |
| पदातयः | காலாட்படைகள் | दुरासदान् | கொடிய [யும் |
| | | क्षेपणीयान् च | வேல்களையும் |
| | | उराम्य | உயர் த்திர்பிடித்தூக்க |
| | | अन्वयुः | கொண்டு பின்பற்றிச் சென்றவர்கள். |

अथान्यद्वपुरादाय दारुणं वीरदर्शनम् । निष्पवान महातेजाः कुम्भकर्णो महाबलः ॥४३॥
 धनुःशतपरीणाहः स पद्च्छतसमुच्छ्रितः । रौद्रः शकटचक्राक्षो महापर्वतसन्निभः ॥ ४४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|--------------------|---|
| महातेजाः | மகர ஆண்மைமுடைய வனும் | आशय | கொண்டு |
| महाबलः | மகர ஆற்றலுடையவ னுள்ள | धनुःशतपरीणाहः | நூறு கில்லைய அகன்றவனும் |
| सः | அந்த | पद्च्छतसमुच्छ्रितः | அதுநூறின் அளவு உயர்ந்தவனும் |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | शकटचक्राक्षः | { வண்டிச்சக்கரங்கள் போன்ற கண்களு டையவனும் |
| अथ | அப்பொழுது | महापर्वतसन्निभः | பெரும் பர்வதத்தை நிகர்த்தவனும் |
| दारुणं | கீரூரமானதும் | रौद्रः | மிகப்பயங்கரனும் |
| वीरदर्शनं | பயங்கரமான தேர்ந்த முடையதுமான | निष्पवान | செல்லுன். |
| अन्यत् | வேறு | | |
| धनुः | உருவத்தை | | |

सन्निपत्य च रक्षांसि दग्धशैलोपमो महान् । कुम्भकर्णो महाबलः पदसन्निदपर्ववीनु ॥४५॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|------------|-----------------|
| दग्धशैलोपमः | எரிந்த மலைமயப் போன்றவனும் | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| महान् | பெருத்தவனும் | रक्षांसि | அரக்கர்களை |
| महाबलः | பெரிய வாய்கொண்ட வனுள்ள | सन्निपत्य | அணுகி |
| | | पदसन्नि च | நடைத்துக்கொண்டே |
| | | इदं | பின்வருமாறு |
| | | अववीत् | பொழிந்தான். |

अथ वानरमुख्यानां तानि यूथानि भागशः । निर्दहिस्यामि संक्रुद्धः शत्रुभानिव पावकः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|---------------|----------------------------|
| अथ | “ இப்பொழுது | पावकः | பெரும்பு |
| संक्रुद्धः | கொடும்பெரிக்கண்டவன் | शत्रुभान् | என் துன்பிகள் |
| वानरमुख्यानां | கிறந்த வானரங்களின் | इदं | என்காட்டு தம்காட்டு |
| तानि | அந்த | निर्दहिस्यामि | பொத்திக்கிடப் போகிறேன். |
| यूथानि | கூட்டங்களை | | |
| भागशः | அணி அணியாக | | |

नापराध्यन्ति मे कामं वानरा वनचारिणः । जातिरस्मद्विधानां सा पुरोवानविभूषणम् ॥

| | | | |
|---------------|--|------------------------|--|
| मे | “ எனக்கு | सा | அந்த |
| वनचारिणः | வனவாசிகளாகிய | जातिः | குறியானது |
| वानराः | குரக்குகள் | अस्मद्विधां | என்னை நமக்களின் |
| अपराध्यन्ति न | குற்றம்செய்தனவர்கள், அதன்போல் கிண்புறி கமந்தாமதில் நய வில்லை. | पुरोवान- विभूषणम्) | { கம்பமுக்காலன்க குக்கு அணிகளைய புன்னது. |

पुरीधस्य मूलं तु राघवः सहलक्षणः । हते तस्मिन्हतं सर्वं तं वधिष्यामि संयुगे ॥४८॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|----------------|
| पुरीधस्य | “நகரின் முற்றுகைக்கு | வधिष्यामि | கொன்றுவிடுகின் |
| सहलक्षणः | லக்ஷணங்கொடுக்கடி | | றென். |
| राघवः तु | ராமன் தான் | तस्मिन् | அவன் |
| मूलं | ஆதிகாரணம். | हते | மரணமடையும் |
| संयुगे | போரில் | सर्वं | எல்லாம் |
| तं | அவனை | हाम् | அழிந்ததாகும். |

एवं तस्य ब्रुवाणस्य कुम्भकर्णस्य राक्षसाः । नादं चकुर्महाघोरं कम्पयन्त इवार्णवम् ॥४९॥

| | | | |
|--------------|--------------|-----------|--------------------|
| तस्य | அந்த | अर्णवं इव | சமுத்தரத்தையுமே |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணன் | कम्पयन्तः | அதிசங்கொய்கின்றவர் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | களாய் |
| ब्रुवाणस्य | மொழிகையில் | महाघोरं | மிக்கபயங்கரமாய் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள், | नादं चकुः | கர்ஜித்தனர். |

तस्य निष्पततस्तूर्णं कुम्भकर्णस्य धीमतः । बभूवुर्घोररूपाणि निमित्तानि समन्ततः ॥५०॥

| | | | |
|--------------|------------------------|------------|-----------------|
| तस्य | அந்த | घोररूपाणि | மிக்க பயங்கரமான |
| धीमतः | புத்தியானாகிய | निमित्तानि | அபசகுணங்கள் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணன் | समन्ततः | எந்நபுறத்திலும் |
| र्णं | விசுவாய் | बभूवुः | தோன்றலாயின. |
| निष्पततः | சென்றுகொண்டிருக்கையில் | | |

उल्काशनियुता मेघा बभूवुर्गर्दभारुणाः । ससागरवना चैव वसुधा समकम्पत ॥ ५१ ॥

| | | | |
|----------------------|--|----------|---------------------------------|
| मेघाः | மேகங்கள் | बभूवुः | இருந்தன. |
| गर्दभारुणाः | கழுதைபோல் சரம்பல் நிறமுற்றவைகளாயும் | वसुधा एव | பூமியும் |
| उल्काशनि- युताः च | கொள்ளிக்கட்டை, இடி இவைகளையு டையவைகளாயும் | ससागरवना | சமுத்தரங்களோடும் காடுகளோடும் |
| | | समकम्पत | அசைந்தாடிற்று. |

घोररूपाः शिवा नेदुः सञ्वालकवल्गैर्मुखैः । मण्डलान्यपसव्यानि ववन्धुश्च विहङ्गयाः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|-------------|--------------|
| शिवाः | நரிகள் | नेदुः | ஊனையிட்டன. |
| सञ्वालकवल्गैः | ஜ்வாலகம்பளங்கள் கொடுக்கடி | विहङ्गयाः च | பறவைகளும் |
| मुखैः | வாய்களுடன் | अपसव्यानि | அப்ரதகறிணமான |
| घोररूपाः | பயத்தை விளைவிக்கின்றவைகளாய் | मण्डलानि | மண்டலங்களை |
| | | ववन्धुः | இட்டன. |

निष्पपात च मालेव गृध्रोऽस्य पथि गच्छतः । प्रास्फुरन्नयने चास्य सव्यो बाहुश्च कम्पते॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|---------------|
| गच्छतः | சென்றுகொண்டிருக்க | अस्य | இவனுடைய |
| अस्य | இவனுக்கு [கும் | सव्यः | இடது |
| पथि | வழியில் | बाहुः च | கைகளும் |
| माला | ஒர் மாலை | कम्पते | சுடித்தது. |
| इव | போல் | च | அப்படியே இடது |
| गृध्रः | கழுஞ் சூண்டி | नयने च | கண்ணும் |
| निष्पपात | மேல் விழுந்தது. | प्रास्फुरन् | சுடித்தது. |

निष्पपात तदा चोल्का ज्वलन्ती भीमनिखना ।

आदित्यो निष्पभश्चासीन्न प्रवाति सुखोऽनिलः

॥ ५४ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------------|-----------|--------------|
| तदा | அப்பொழுது | आदित्यः च | சூரியனும் |
| उल्का | காலநிலக்கந்திரமானது | निष्पभः | ஒளியற்றவனும் |
| ज्वलन्ती | ஜ்வாலிக்கொண்டு | आसीन् | இருந்தான். |
| भीमनिखना | பயங்கரமான இரைச் சூண்டித்தாய் | अनिलः च | காற்றும் |
| निष्पपात | கீழ் விழுந்தது. | सुखः | அமைதியாய் |
| | | प्रवाति च | வீசவில்லை. |

अचिन्तयन्महोत्पातानुत्थितान्नोमहर्षणान् । निर्ययौ कुम्भकर्णस्तु कृतान्तबलचोदितः॥५५॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------|-------------|---------------------------|
| कुम्भकर्णः तु | கும்பகர்ணனும் | महोत्पातान् | பெரும் ஆச்சுருகைக் கலை |
| कृतान्तबलचोदितः | எமனது சக்திக்காட் பட்டவனும் | अचिन्तयन् | பொருட்படுத்தாதவ னும் |
| उत्थितान् | தேன்றிய | निर्ययौ | சென்றுகொண்டிருந் தான். |
| रोमहर्षणान् | மயிர்க்கூச்செறிவிக்க கும் | | |

स लङ्घयित्वा प्राकारं पद्भ्यां पर्वतसन्निभः । दृदर्शाभ्रघनप्रख्यं वानरानीकमद्भुतम् ॥५६॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------------|----------------------------------|
| पर्वतसन्निभः | பர்வதநிலைநிகர்த் | अभ्रघनप्रख्यं | ஆகாயத்தின் போகல் கலை நிகர்த்த |
| सः | ஆவன் [கவனன | अद्भुतं | ஆச்சரியகரமான |
| पद्भ्यां | கால்களால் | वानरानीकं | வானரத்தெரிசுவை |
| प्राकारं | மதிலை | ददर्श | கண்ணுற்றான். |
| लङ्घयित्वा | தாண்டி | | |

ते दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं वानराः पर्वतोपमम् । वायुनुन्ना इव घना ययुः सर्वा दिशस्तदा ॥५७॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|---------------------|
| ते | அந்த | सर्वाः | எல்லா |
| वानराः | வானரர்கள் | दिशः | திக்குகளிலும் |
| पर्वतोपमं | பர்வதநிலைநிகர்த்த | वायुनुन्नाः | காற்றினால் கலைக்கக் |
| राक्षसश्रेष्ठं | ராட்சஸனோத்தமனை | घनाः | மேகங்கள் [பட்ட |
| तदा | அப்பொழுது | इव | போல |
| दृष्ट्वा | பார்த்துவிட்டு | ययुः | ஓடித்தலைப்பட்டன. |

तद्दानरानीकमतिप्रचण्डं दिशो द्रवद्विन्नमिवाभ्रजालम् ।

स कुम्भकर्णः समवेक्ष्य हर्षान्नाद भूयो घनवद्वनामः

॥ ५८ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|---------------------|
| घनामः | மேகத்தை நிகர்த்த | असजालं इव | மேகமண்டலத்தைப் |
| सः | அந்த | दिशः | திக்குகளில் [மேகம்] |
| कुम्भकर्णः | சும்பகர்ணன் | द्रव | ஓடுகிறதாய் |
| तत् | அந்த | समवेक्ष्य | பார்த்து |
| अतिप्रचण्डं | அதிகப்பக்கரமான | हर्षात् | சந்தோஷத்தால் |
| वानरानीकं | வானரச்சேனைமை | घनवत् | மேகம்போல் |
| भिन्नं | கலந்தோடும் | भूयः | மிகவும் |
| | | ननाद | கர்த்தரன். |

ते तस्य घोरं निनदं निशम्य यथा निनादं दिवि वारिदस्य ।

पेतुर्धरण्यां बहवः प्लवङ्गा निकृत्तमूला इव सालवृक्षाः

॥ ५९ ॥

| | | | |
|-----------|-------------|--------------|-----------------------|
| ते | அந்த | घोरं | பயக்கரமான |
| बहवः | கணக்கற்ற | निनदं | கர்ஜிணையை |
| प्लवङ्गाः | வானரசர்கள், | निशम्य | கேட்டு |
| दिवि | ஆகாயத்தில் | निकृत्तमूलाः | வேறுத்துத் தள்ளப் |
| वारिदस्य | மேகத்தில் | सालवृक्षाः | ஆச்சாரமாகக் [பட்ட] |
| निनादं | ஒலியை | इव | என |
| यथा | நிகர்த்த | धरण्यां | தரையில் |
| तस्य | அவனது | पेतुः | விழுந்து விட்டார்கள். |

विपुलपरिपवान्स कुम्भकर्णो रिपुनिधनाय विनिःसृतो महात्मा ।

कपिगणभयमाददत्सुभीमं प्रभुरिव किङ्करदण्डवान्युगान्ते

॥ ६० ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------------|----------------|--------------------------------------|
| विपुलपरिपवाद् | பெரும் வழுவித்தடி யைக்கொண்டவனும் | युगान्ता | ப்ரணயகாலத்தில் |
| महात्मा | மிக்க ஆற்றல்படைத் | किङ्कराण्यवान् | கிணத்ததைச் செய்ய வல்ல தண்டமேந்திய |
| सः | அந்த [கவலுமான] | प्रभुः | ப்ரபு (எமதர்மராஜன்) |
| कुम्भकर्णः | சும்பகர்ணன் | इव | எப்படியோ |
| रिपुनिधनाय | சத்ரையை வதைக்க | | ஆப்படியே |
| विनिःसृतः | வெளிவந்தவனாய் | सुभीमं | மிக அதிகமாய் |
| कपिगणभयं | வானரச்கூட்டங்களு க்கு தகவல் | आदत् | வினைவித்தரன். |

इत्यापि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे पञ्चषष्टितमः सर्गः ॥

पट्टपठितमः सर्गः—அடிபத்தாறுவது ஸர்க்கம் || ६६ ||

कुम्भकर्णयुद्धम्—கும்பகர்ண யுத்தம்.

स लङ्घयित्वा प्राकारं गिरिकूटोपमां महान् । निर्ययौ नगराचूर्णं कुम्भकर्णो महाबलः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|------------|---------------------|
| गिरिकूटोपमाः | மலைச்சிகர த்னைத திகர் த்து | प्राकारं | மதிலை |
| महान् | பெருத்தவனும் | लङ्घयित्वा | தாண்டி |
| महाबलः | மகா பலசாலியுமான | नगरान् | நகரிலின் று |
| सः कुम्भकर्णोः | அந்த கும்பகர்ணன் | चूर्णं | பிணை வில் |
| | | निर्ययौ | வந்த திரங்கி, தான். |

स ननाद महानादं समुद्रमभिनादयन् । जनयन्निव निर्घातान्विधपन्निव पर्वतान् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-----------|------------------------------|
| सः | அவன் | समुद्रं | சமுத்திர த்னைத |
| निर्घातान् | இடி களை | अभिनादयन् | எதிரொலியிடத் செய்துகொண்டு |
| जनयन् इव | இடிக்கின்றவன் | महानादं | பெருக்கொண்டெய்தல் |
| पर्वतान् | மலைகளை [பொருள்] | ननाद | முடிக்கினான். |
| विधमन् इव | வந்தி உருட்டுகின்ற வன்போலும், | | |

तमवध्यं मघवता यमेन वरुणेन वा । प्रेक्ष्य भीमाक्षमायान्तं वानरा विप्रदुद्रुवुः ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|----------------|------------------------|
| भीमाक्षं | பயக்கரமான கண் கணையுடையவனும் | वरुणेन वा | வருணனும் சரி |
| आयान्तं | எதிர்த்து வந்துகின்ற | अवध्यं | கொலைமுடியாதவ |
| तं | அவனை [வனுமான] | प्रेक्ष्य | கவனித்து [இய] |
| मघवता | இந்திரனுடனாக்சரி | वानराः | வானரர்கள் |
| यमेन | யமனும் சரி | विप्रदुद्रुवुः | கொண்டெட்டாடனர் கண். |

तांस्तु विप्रदुतान्दृष्ट्वा वालिपुत्रोऽद्भुतोऽब्रवीत् । नलं नीलं गवाक्षं च कुमुदं च महाबलम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|-----------------------------|
| वालिपुत्रः | வாலிபுத்தலனாகிய | महाबलं | மகா பலசாலிய |
| अद्भुतः | அக்கதன் | कुमुदं च | குமுதனையும் |
| तान् | அந்த | विप्रदुतान् | குடிவயர்களாக |
| नलं | நளனையும், | इष्ट्वा | கண்டு |
| नीलं तु | நீலனையும், | अब्रवीत् | பின் உருமாறு புகன்றான் : |
| गवाक्षं च | கவாக்ஷனையும், | | |

आत्मानमत्र विस्मृत्य वीर्याण्यभिजनानि च । क्व गच्छथ भयत्रस्ताः प्राकृता हरयो यथा ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|------------|----------------------|
| अत्र | "இப்பொழுது | प्राकृताः | ஸாதாரண |
| वीर्याणि | பிரதாபங்களையும், | हरयः | குரங்குகள் |
| अभिजनानि | குடிப்பெருமைகளை யும் | यथा | போல |
| आत्मानं च | தன்னை யுமே | भयत्रस्ताः | பயத்தால் நடுக்கியவர் |
| विस्मृत्य | பறந்து | क्व | எங்கு [கவாய்] |
| | | गच्छथ | குடுகின்றீர்கள் ? |

साधु सौम्या निवर्तध्वं किं प्राणान्परिरक्षथ । नात्र युद्धाय वै रक्षो महतीयं विभीषिका ॥

साधु "வெகு நன்று!
 सौम्या: புண்பயமாண்டுகளை!
 निवर्तध्वं திரும்பிவிடுங்கள்;
 प्राणान् உயிரை
 परिरक्षथ किं காத்துக்கொள்கின்
 தீர்க்கலော?

युद्धाय போருக்கு
 अत्र न ஆற்றமாட்டாத
 ह्यं இது
 महती பெரும்
 विभीषिका वै பயமுறுத்தும்
 யந்திரமே.

महतीमुत्थितामेनां राक्षसानां विभीषिकाम् ।

उत्थिता "தேதான் நியிருக்கும்
 एनां राक्षसानां ஆந்த ஆர்க்கர்களு
 महती பெரிய
 विभीषिकां பிஷணாயந்திரத்தை

विक्रवाद्द्विभिव्यापो निवर्तध्वं पुवङ्गमाः ॥

विक्रमात् பலங்கொண்டு
 विभिव्यापः வந்திவிடுகொள்.
 पुवङ्गमाः ஓவாணர்க்களை!
 निवर्तध्वम् திரும்பிவிடுங்கள்.

कृच्छ्रेण तु समाध्यास्य सङ्गम्य च ततस्ततः ।

हस्यः வானார்கள்
 ततस्ततः ஆக்காக்கு
 सङ्गम्य च தயக்கி பின்னர்
 कृच्छ्रेण மிகச் சிரமப்பட்டு
 समाध्यास्य மணத்தேறி
 तु அப்பொழுது

वृक्षाद्रिहस्ता हरयः संपतस्थु रणाजिरम् ॥

वृक्षाद्रिहस्ता: { மரக்களையும், மலைக
 னையும் கையிலேந்தி
 யவர்களாய்
 रणाजिरं போர்க்களத்திற்கு
 संपतस्थु: புறப்பட்டுவந்தனர்.

ते निवृत्त्य तु संक्रुद्धाः कुम्भकर्णं वनौकसः ।

संक्रुद्धा: கோபங்கொண்டிருந்த
 ते वनौकसः ஆந்த வானார்கள்
 निवृत्त्य तु வந்துசேர்ந்தவுடன்
 परमक्रुद्धा: மிகச்சினம் மூண்ட
 வர்களாய்

निजन्तुः परमक्रुद्धाः समदा इव कुञ्जराः ॥

कुम्भकर्णं கும்பகர்ணனை
 समदा: மதங்கொண்ட
 कुञ्जराः யானைகள்
 इव போல
 निजन्तुः தாக்கினார்கள்.

प्रांशुभिर्गिरिशृङ्गैश्च शिलाभिश्च महाबलः ।

मह बलः மகா பலவானாகிய
 प्रांशुभिः உயர்ந்த [அவன்
 गिरिशृङ्गैः மலைச் சிகரங்களாலும்
 शिलाभिः च சுத்பாறைகளாலும்

पादपैः पुष्पितायैश्च हन्यमानो न कम्पते ॥

पुष्पितायै: பூத்த துணிகளுற்ற
 पादपैः च மரங்களாலும்
 हन्यमानः च அடிக்கப்பட்டுவரு
 कम्पते न அவையா திருந்தாகி.

तस्य गात्रेषु पतिता भियन्ते शतशः शिलाः ।

तस्य அவனது
 गात्रेषु அடியலங்களில்
 पतिता: விழுந்த
 शिलाः சுத்பாறைகள்
 शतशः அநேகம் துண்டுகளாக

पादपाः पुष्पितायाश्च भग्नाः पेतुर्महीतले ॥

भियन्ते சிதறிவிட்டன.
 पुष्पितायाः பூத்த துணிகளுற்ற
 पादपाः च மரங்களும்
 भग्नाः முறிந்தவைகளாய்
 महीतले பூமியில்
 पंतु: விழுந்த விட்டன.

सोऽपि सैन्यानि संक्रुद्धो वानराणां महौजसाम् । धमन्ध परमायत्तो वनान्यग्निरिवोत्थितः॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|-----------------|
| ச: அபி | அவ்வனும் | வானராणा் | வானரர்களின் |
| சங்குஹ: | கொப்பக்கொண்டவ | சैन्यानि | சேனைகளை |
| | னும் | अग्नि: | கெழுப்பானது |
| परमायत्त: | மிக்க உணக்கங்கொ | उत्थित: | மூண்டு |
| | ண்டு, | वनानि इव | காடுகளை எவ்வண்ண |
| महौजसां | மிக்க பிரதரபம் | | மேட அவ்வண்ணமே |
| | படைத்த | ममथ | நாசமரக்கினுண். |

लोहितार्द्रास्तु बहवः शेरते वानर्षभाः । निरस्ताः पतिता भूमौ तास्रपुण्या इव द्रुमाः ॥

| | | | |
|---------------|------------------|--------------|--------------------|
| बहवः तु | பல பல | पतिताः | விழுந்து |
| वानर्षभाः | வானரோத்தமர்கள் | तास्रपुण्याः | சொல்கிய புஷ்பங்கள் |
| निरस्ताः | தாக்கப்பட்டு | | செறித்த |
| लोहितार्द्राः | சூடுதீவழித்தவர்க | द्रुमाः इव | மரங்கள் போன்றவர் |
| | ளாய் | | களாய் |
| भूमौ | பூமியில் | शेरते | கிடங்கர்கள். |

लङ्कयन्तः प्रधावन्तो वानरा नावलोकयन् ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|--------------------|
| वानराः | வானரர்கள் | अवलोकयन् न | நுண் டும் தெரன்றது |
| लङ्कयन्तः | தாவி | | திகைத்தனர். |
| प्रधावन्तः | சூடுகின் றவர்களாய் | | |

केचित्समुद्रे पतिताः केचिद्रगनमाश्रिताः । वध्यमानास्तु ते शीरा राक्षसेन बलीयसा ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|----------|----------------|
| बलीयसा | மிசைப் பழம்படைத்த | समुद्रे | சமுத்திரத்தில் |
| राक्षसेन | அரக்கனுண் | पतिताः | விழுந்தார்கள். |
| वध्यमानाः | புடைக்கப்பட்ட | केचिन् | சிலர் |
| ते शीराः | அந்த வீரர்கள் | रगनं तु | சூரயத்திரேய |
| केचित् | சிலர் | आश्रिताः | சென்றார்கள். |

सागरं येन ते तीर्णाः पथा तेन प्रदुद्रुवुः ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------|--------------|--------------|-------------------|
| ते | அவர்கள் | तीर्णाः | தாண்டுவந்தார்களோ, |
| येन पथा | எவ்வழியாக | तेन | உவந்தாகவே |
| सागरं | சமுத்திரத்தை | प्रदुद्रुवुः | நுடவிட்டார்கள். |

ते स्थलानि तथा निम्नं विषण्णवदनाः भयात् । वृक्षा वृक्षान्समारुढाः केचित्पर्वतमाश्रिताः॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|-------------------|
| ते | அந்த | निम्नं | பள்ளத்தாக்கிலும் |
| वृक्षाः | காடிய்கள் | वृक्षान् | விழுந்தவர்களிலும் |
| भयात् | பயத்தால் | समारुढाः | எறிக்கொண்டார்கள். |
| विषण्णवदनाः | காடிய முகத்தர் | केचित् | சிலர் |
| स्थलानि | மேடுகளிலும் [களாய், | पर्वतं | மலையில் |
| तथा | அவ்வழியே | आश्रिताः | எறிவிட்டார்கள். |

ममञ्जुरर्णवे केचिद्गुहाः केचित्समाश्रिताः । निषेदुः पुवगाः केचित्केचिन्नैवावतस्थिरे ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|--------------------------------------|
| केचित् | சிலர் | केचित् | சில |
| अर्णवे | சமுத்திரத்தில் | पुवगाः | வானரர்கள் |
| ममञ्जुः | முடிபுலிகள். | निषेदुः | கிழை உட்கார்த்து |
| केचित् | சிலர் | केचित् | சிலர் [கிட்டார்கள். |
| गुहाः | குகைகளுக்கும் | अवतस्थिरे न एव | ஹிடமும் நிகையில்கொள்ளாதிருந்தார்கள். |
| समाश्रिताः | புது அகொண்டார்கள். | | |

केचिद्भूमौ निपतिताः केचित्सुप्ता मृता इव । तान्समीक्ष्याद्भ्रतो भ्रान्तान्वा नरानिदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|----------|-------------|
| केचित् | சிலர் | अद्भ्रतः | அங்கதன் |
| भूमौ | பூமியில் | भ्रान् | முறிபட்ட |
| निपतिताः | விழுந்தார்கள். | तान् | அந்த |
| केचित् | சிலர் | वातान् | வானரர்களை |
| मृताः इव | செத்தவர்கள்போன்றவர்களாய் | समीक्ष्य | பார்த்து |
| सुप्ताः | படுத்துக்கிடந்தார்கள். | इदं | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | புகன்றான்: |

अवतिष्ठत युध्याधो निवर्तध्वं पुवङ्गमाः । भ्रानानां वो न पश्यामि परिगम्य महीषिमाम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|--------------------|
| अवतिष्ठत | பொதுக்கள். | ॥ २१ ॥ | |
| निवर्तध्वं | திரும்பிவிடுங்கள். | परिगम्य | சுற்றித்திரிந்தும் |
| युध्यामः | சரம் போர்புலியோம். | स्थानं | புகலிடத்தை |
| भ्रानानां | முறிபட்ட | न पश्यामि | அறியவில். |
| वः | உங்களுக்கு | प्राणान् | உயிரை |
| इमां महीं | இந்தப் பூமியை " | किं परिक्षय | காத்துக்கொள்கின் |
| | | सर्वे | யாவரும் [நிற்கமா ? |
| | | निवर्तध्वम् | திரும்பிவிடுங்கள். |

निरायुधानां द्रवतामसङ्गतिपौरुषाः । दारा ह्यपहसिष्यन्ति स वै यातस्तु जीविनाम् ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|--------------------------------|
| असङ्गतिपौरुषाः | { "தடைபடாத மனமும் பாசகரமுடும் படைத்தவர்களை ! | दाराः | பணைவிடார்கள் |
| निरायुधानां | போர்க்கருளிகளை போட்டுவிட்டு | अपहसिष्यन्ति हि | பரிசளிப்பார்களை ! |
| द्रवतां | ஓடுகின்றவர்களின் | सः तु | அதுவும் |
| | | जीविनां | உயிர்வைத்திருக்கும் உங்களுக்கு |
| | | घातः वै | மாண்புராயமே. |

कुलेषु जाताः सर्वे स्म विस्तीर्णेषु महत्सु च । क गच्छथ भयत्रस्ता हरयः प्राकृता यथा॥

| | | | |
|----------------|-----------------|------------|-------------------|
| महत्सु | " சிறந்ததும் | प्राकृताः | வாதாரண |
| विस्तीर्णेषु च | நிகழ்ந்ததுமாவ | हरयः यथा | குரங்குகள்போல |
| कुलेषु | நற்குலங்களில் | भयत्रस्ताः | பயத்தால் நடுக்கிய |
| जाताः | உதித்தவர்களான | क | எங்கு [வர்களாய் |
| सर्वे | நீங்கள் யாவரும் | गच्छथ म | ஓடுகின்றநீர்கள் ? |

अनार्याः खलु यद्गीतास्वत्त्वा वीर्यं प्रधावत ॥ २४ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|-------------|
| वीर्यं | " பாரக்ரமத்தை | यत् | ஆதனால் |
| खलुवा | விட்டுப் பிழித்து | अनार्याः | சனர்களே. |
| भीताः | பயந்தவர்களாய் | खलु | ஆ! அதிலென்ன |
| प्रधावत | குடுகின் தீர்கள். | | சந்தேகம். |

विकल्पनानि वो यानि तदा वै जनसंसदि । तानि वः क नु यातानि सोदश्राणि महान्ति च ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-----------|------------------|
| तदा | " அப்பொழுது | वः | உங்களது |
| जनसंसदि | ஜனங்களின் சம்பரில் | सोदश्राणि | பெருணாவாய்க்கத்த |
| वः | உங்களது | महान्ति | நீண்ட |
| विकल्पनानि | விண் தற்புகழ்ச்சிகள் | तानि | அனைவரும் |
| यानि वै | எனவையினோ, அந்த | क नु च | எரிசூதான் |
| | | यातानि | போவீனவோ? |

भीरुपवादाः श्रूयन्ते यस्तु जीवति विकृतः । मार्गः सत्पुरुषर्जुष्टः सेव्यतां त्यज्यतां भयम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|----------------------|
| वः | " எவன் | सत्पुरुषैः | ஸற்று என்களால் |
| विकृतः | திரஸ்கரிக்கப்பட்டு | जुष्टः | சைப்பற்றப்பட்ட |
| जीवति | உயிர்வைத்திருக்கின் | मार्गः | மர்க்கம் |
| तु | அப்பொழுது [ஒரேனு] | सेव्यतां | கொள்ளப்படட்டும். |
| भीरुपवादाः | பயங்காரி என்ற | भयं | பயபாஷத |
| | வதத்திகள் | त्यज्यताम् | விட்டுத் தீக்கப்பட்ட |
| श्रूयन्ते | கேட்கப்படுகின்றன. | | டும். |

श्यामहेऽथ निहताः पृथिव्यामल्पजीविताः । दुष्पापं ब्रह्मलोकं वा प्राप्नुमो युधि सूदिताः ॥

| | | | |
|-------------|--|---------------|-----------------------------|
| अल्पजीविताः | { " அன்பாயுள் படைத் கப்பெற்றவர்களான தரம் | युधि | போரில் |
| निहताः | கொல்லப்பட்டு | सूदिताः अथ | அழிக்கப்பட்டவர் கனாதலால் |
| पृथिव्यां | தலையில் | दुष्पापं | பெருத்தீர்தீய |
| श्यामहे | விழ்த்துகிடப்போம். | ब्रह्मलोकं वा | பிரம்மலோகத்தையும் |
| | | प्राप्नुमः | கடைக்கோம். |

संप्राप्तुयामः कीर्तिं वा निहत्वा शत्रुमाह्वये । जीविनं वीरलोकस्य मोक्षयामो वसु वानराः ॥

| | | | |
|----------------|--------------|-----------|----------------|
| आह्वये | " போரில் | वानराः | வானர்களே! |
| शत्रुं वा | சத்ருவைஉடவது | वीरलोकस्य | வீரலோகத்திற்கு |
| निहत्वा | கொன்ற | यसु | விளையசிய |
| कीर्तिं | புகழை | जीविनं | உயினை |
| संप्राप्तुयामः | அடைக்கோம். | नोक्षयामः | விடுகோம். |

न कुम्भकर्णः काकुत्स्थं दृष्ट्वा जीवन्नामिष्यति । दीप्यमानमिवासाद्य पतन्नो ज्वलनं यथा ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|------------|--------------------|
| दीप्यमानं | "கொழுநன் தூவிட்டுடொரி யும் | इव | அங்கை எண் வையிடு |
| ज्वलनं | கொருப்பணா | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணனான் |
| भासाद्य | கிட்டு | काकुत्स्थं | கூகூதஸ்தம் |
| पतन्नः | விட்டுந் பூச்சி | दृष्ट्वा | கண்டு |
| यथा | எவ்வண்ணையிடுமா | जीवन् | உயிருடையவனாய் |
| | | गमिष्यति न | திரும்பொன்றட்டான். |

पलायनेन चोद्दिष्टाः प्राणाक्षामहे वयम् । एकेन बहवो भया यशो नाशं गमिष्यति ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|---------------|------------------------------------|
| एकेन | "தனித்த ஒருவனாய் | पलायनेन | ஓட்டக்கொண்டு |
| उद्दिष्टाः | குறிக்கப்பட்ட | प्राणा | உயிரை |
| भयाः | முறியடிக்கப்பட்டவர் கவரளி | रक्षामहे च | ரக்சித்தகொள்கின் றேளும் என்ருல் |
| बहवः | பலராகிய | यशः | புகழானது |
| वयं | நாம் | नाशं गमिष्यति | அழிந்துவிடும்." |

एवं ब्रुवाणं तं शूरमद्भदं कनकाद्भदम् । द्रवमाणास्ततो वाक्यमूचुः शूरविगर्हितम् ॥३१॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|------------------------------|
| इवमाणाः | ஓடுபவர்கள் | अद्भुतं | அக்கநனைப்பார் த்து |
| एवं | இவ்வீதம் | ततः | அப்பொழுது |
| ब्रुवाणं | சொல்லுநர் | शूरविगर्हितं | வீரர்களுக்கூப்பழிப் |
| कनकाद्भदं | பொன்வளைபூண்ட | वाक्यं | ஒரு சொல்லை [பாசிய |
| शूरं | வீரனாகிய | उचुः | பின்வருமாறு சொன் னார்கள்: |
| तं | அந்த | | |

कृतं नः कदनं घोरं कुम्भकर्णेन रक्षसा । न स्थानकालो गच्छामो दयितं जीवितं हि नः॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|------------------------------|
| रक्षसा | "அரக்கனாகிய | स्थानकालः न | சிற்பதற்கு ஏற்ற சமயமன்று. |
| कुम्भकर्णेन | கும்பகர்ணனாய் | गच्छामः | போய்வருகிறோம். |
| नः | எங்களுக்கு | नः | எங்களுக்கு |
| घोरे | பயங்கரமான | जीवितं हि | உயிர்களை |
| कदनं | தூறியதை | दयितम् | பிகப்பிடுவதானது." |
| कृतं | என்கொளிக்கப்பட்டது. | | |

एतावदुक्त्वा वचनं सर्वं ते भोजिरे दिशः । भीमं भीमाक्षमायान्तं दृष्ट्वा वानरयूथपाः॥३२॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|-------------------|
| ते | அந்த | भीमं | பயங்கரனாய் |
| वानरयूथपाः | வானரத்தலைவர்கள் | आयान्तं | எதிர்த்துவரும் |
| सर्वं | பாவமும் | भीमाक्षं | பயங்கரக்கண்ணருற்ற |
| एतावत् | இவ்வீதமாய் | दृष्ट्वा | கிணைந்து [அவனை |
| वचनं | வார்த்தைகளை | दिशः | தெருவனையெங்கி |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | भोजिरे | புகழினால். |

द्रवमाणास्तु ते वीरा अङ्गதென வலிமுலா: । சாந்த்வைவானுமான்சு தத: சரவ் திவர்திதா: ॥ 34 ॥

| | | | |
|-------------|---------------|--------------|-----------------------|
| द्रवमाणाः | ஆங்கதென | अङ्गदेन | ஆங்கதெனல் |
| वीराः | வலி முலா | साम्यैः च | சேந்திரவரங்கொருங் |
| ते वलीमुखाः | ஆங்க வலி முலா | | கண ஓயல் |
| सर्वे तु | எல்லா முலா | अनुमतिः च एव | எல்லா எ ஆங்கதென ஓயல் |
| ततः | அப்பொழுது | निवर्तिताः | திருந்துப்பட்டார்கள். |

महर्षमुपनीताश्च वालिपुत्रेण धीमता । आज्ञाप्रतीक्षास्तस्थुश्च सर्वे वानरयूथपाः ॥ 35 ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-------------------|-----------------------|
| महर्षमुपनीताः | வாணர தீவிரவர்கள் | महर्ष उपनीताः | உதவா, தாம் விரிவடிக் |
| सर्वे च | எல்லோருங் | | கொட்டவர்களாய் |
| धीमता | தீமரானபு | आज्ञाप्रतीक्षाः च | உத்திரவிற்குக் காத்து |
| वालिपुत्रेण | ஆங்கதெனல் | | நிற்பவர்களாகவே |
| | | तस्थुः | நின்றார்கள். |

ऋषभशरभमैन्द्रभुञ्जनीलाः कुमुदमुपेणगवाक्षरम्भताराः ।

द्विविदपनसवायुपुत्रमुख्यास्त्वरिततराभिमुखं रणं प्रयाताः ॥ 36 ॥

| | | | |
|---------------------------------|--|--------------------------------|---|
| द्विविदपनस- वायुपुत्रमुख्याः | உத்தபர்களான ஆவி விதன், பானஸன், ஓய ஓயமார் என்மவர்க ளும், | कुमुदमुपेण- गवाक्षरम्भताराः | குமுதன், ஆகவே ணன், கவ: சதன், ரம்பன், தரன் இ வர்களும் |
| | | | |
| ऋषभश- मैन्द्रभुञ्जनीलाः | ரிஷபன், சரபன், கமல்தன், ஓயிரன், நிலன் இவர்களும், | रणं | போருக்கு |
| | | प्रयाताः | செல்லவாயினர். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे षष्पष्ठितमः सर्गः ॥

आदिनः श्लोकाः 17533



युद्धकाण्डे आदिनः श्लोकाः 2858

सप्तपष्ठितमः सर्गः—अथपठितेष्टकाण्डे लोकावलिः ॥ २३ ॥

कुम्भकर्णवधः—कुम्भकर्ण वधम्.

ते निवृत्ता महाकायाः श्रुत्वाऽङ्गदवचस्तदा । नैष्ठिकीं बुद्धिमादाय सर्वे संयामकाङ्क्षिणः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------------|---------------|
| अङ्गदवचः | ஆங்கதெனது சொல்லை | तदा | அப்பொழுது |
| शुष्वा | செட்டு | नैष्ठिकीं | நெடியவை |
| निवृत्ताः | திருந்திவக்குவிரந்த | बुद्धिं | புத்திவை |
| महाकायाः | மேலு-க்கொண்ட | भाषाय | கொண்டி |
| ते | அவர்கள் | संयामकाङ्क्षिणः | பொருக்கு ஆவல் |
| सर्वे | எல்லோரும் | | கொண்டவர்கள். |

समुद्रारितवीर्यांश्च समारोपितविक्रमाः । पर्यवस्थापिता वाक्यैरह्नुदेन बलीमुखाः ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------------------|-------------------------------------|
| வலிமுखा: | வானரர்கள் | சமுதிரிவிவியா: | பாசகாமம் காட்டுத்துச் சொல்லப்பட்டது |
| அஹ்னுதேன | அக்கதனனால் | சமாரோபித- விக்ரமா: ச | பிரதாயம் முண்டலர் களாய் |
| வாக்யை: | நல்லவாற்றை, தகவர் | பர்வஸ்தாபிதா: | உறுதிக்கொள்கிக்கப் பட்டனர். |

கொண்டு

प्रयातांश्च गता हर्षे मरणे कृतनिश्चयाः । चक्रुः सुतुमुलं युद्धं वानरास्त्यक्तजीविताः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------|----------|-----------------------|
| प्रयाता: | முன்பு ஐர உ | एपे मता: | உதவரகங்கொண்ட வர்களாய் |
| वानरा: च | வானரர்களும் | सुतुमुलं | மிகக் கலவாமான |
| त्यक्तजीविता: | உயிரை மதியாது | युद्धं | போரை |
| मरणे | மரணத்தில் | चक्रुः | இடலாடினர். |
| कृतनिश्चया: | உறுதிக்கொண்டவர்க ளாய் | | |

अथ वृक्षान्महाकायाः सानूनि सुमहान्ति च । वानरास्तूर्णमुद्यम्य कुम्भकर्णमभिद्रुताः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|----------------|
| अथ | அப்பொழுது | सानूनि च | குன்றுகளையும் |
| महाकाया: | பெருத்த தேகமுற்ற | उद्यम्य | உயர்த்துக்கி |
| वानरा: | வானரர்கள் | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| वृक्षान् | மரங்களையும், | तूर्णं | விசைந்து |
| सुमहान्ति | மிகப் பெரிவ | अभिद्रुता: | தாக்கினார்கள். |

स कुम्भकर्णः संक्रुद्धो गदासुद्यम्य वीर्यवान् । अर्दयन्सुमहाकायः समन्ताद्वाक्षिपद्रिपून् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-----------|--------------------|
| वीर्यवान् | வீரவசாயியும் | गदां | கதைதைய |
| सुमहाकायः | பெருஞ்சீரம்பெற்ற வனுமான் | उद्यम्य | தூக்கி |
| सः | அந்த | रिपून् | சத்ருக்களை |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | अर्दयन् | துன்புறுத்துபவனால் |
| संक्रुद्धः | மிகச் சினங்கொண்ட | समन्तान् | எதற்புறமும் |
| | | वाक्षिपन् | கி, தற அடித்தான். |

शतानि सप्त चाष्टौ च सहस्राणि च वानराः । प्रकीर्णाः शेरते भूमौ कुम्भकर्णेन पोथिताः ॥

| | | | |
|-------------------------|---|-------------|-----------------|
| वानरा: | வானரர்கள் | कुम्भकर्णेन | கும்பகர்ணனால் |
| सप्त च अष्टौ च शतानि | எழுது நறுக்கணக்காகவும், எண் ணூற்றுக்கணக்காகவும் | पोथिता: | மடிக்கப்பட்டவர் |
| सहस्राणि च | ஆசிரக்கணக்காகவும் | भूमौ | தலையில் [களாய் |
| | | प्रकीर्णाः | கி, தறுண்டு |
| | | शेरते | கிடத்தார்கள். |

षोडशाष्टौ च दश च विंशतिशतैर्यव च । परिक्षिप्य च बाहुभ्यां स्वादन्विपरिधावति ॥

भक्षयन्भृशसंक्रुद्धो गरुडः पन्नगानिव ॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|---------------------|
| भृगुसकुन्दः | பிகர் சினக்கொண்ட | एषमान इव | பாப்புக்களை எவ்வாறே |
| अष्टौ च | எட்டும் [அவன் | | ஆவ்வாறே |
| दश च | பத்தும் | वाहुभ्यां च | இருகைகளாலும் |
| षोडश च | பதினாலும் | परिक्षिप्य | சேர்த்திழுத்து |
| विशत् एव | இருபதும் | खादन् | பென்று |
| विशत् तथा | முப்பதுமாக | भक्षयन् | தின்னுகொண்டு |
| गरुडः | கருடன் | विपरिधावन | கற்றித்திரிந்தான். |

कुक्षेण च समाश्वस्ताः संगम्य च ततस्ततः । वृक्षाद्रिहस्ता हरयन्तस्थुः सद्ग्राममूर्धनि॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|------------------|--------------------|
| हरयः च | வானரர்களை | समाश्वस्ताः | மனர்தேறியவர்களாய் |
| सद्ग्राममूर्धनि | பேர்முனையின் | | மரங்களையும் மனைகளை |
| ततस्ततः | ஆக்காக்கு | वृक्षाद्रिहस्ताः | யும் கையிலேந்திய |
| सङ्गम्य | தயக்கிநின்ற | | வர்களாய் |
| कुक्षेण च | பிகர் சிரமப்பட்டு | तस्थुः | நின்றனர். |

ततः पर्वतमुत्पाद्य द्विविदः पुवर्गर्षभः । दुद्राव गिरिशृङ्गाभं विलम्ब इव तोषदः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | गिरिशृङ्गाभं | மலைச்சிகரத்தை நிகர் |
| पुवर्गर्षभः | வானரோத்தமனாகிய | | த்த ஆவளை நோக்கி |
| द्विविदः | தவிவிதன் | विलम्बः | கனியும் |
| पर्वतं | மலையொன்றை | तोषदः इव | மேகம் என |
| उत्पाद्य | பெயர்த்துக்கொண்டு | दुद्राव | நடனான். |

तं समुत्पत्य चिक्षेप कुम्भकर्णस्य वानरः । तमप्राप्तो महाशैलस्तस्य सैन्धवपतत्तदा ॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-----------|-----------------|
| वानरः | வானரன் | महाशैलः | பெரும் மலையாகிய |
| समुत्पत्य | மேல் தூக்கி | तं | உவளை [அது |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணன்மீது | अप्राप्तः | கிட்டாததாய் |
| तं | அதை | तस्य | அவனது |
| चिक्षेप | ஊசினான். | सैन्धव | கான்யத்திலு |
| तदा | அப்பொழுது | अपतत् | விழுந்தவிட்டது. |

मपदांश्चान्वाजांश्चापि रथांश्चैव नगोत्तमः । तानि चान्यानि रथांसि पुनश्चान्वाहिरेः शिरः॥

उत्पाद्य द्विविदो वेगान्ममर्द पुवर्गर्षभः

॥ १२ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|----------|-------------------|
| नगोत्तमः | அப்பெருமனை | द्विविदः | தவிவிதன் |
| अश्वान् च | குதிகைகளையும், | पुनः च | மீண்டும் |
| राजान् अपि | யானைகளையும், | अपतत् | விழுது |
| रथान् च | ரதங்களையும், | गिरिः | மலையின் |
| तानि एव | அனைவர்களையும் | शिरः | சிகரமொன்றை |
| अन्यानि | இன்னும் மற்ற | उत्पाद्य | பெயர்த்துக்கொண்டு |
| रथांसि च | அரக்கர்களையும் | वेगान् | ஆத்திரக்கொண்டு |
| ममर्द | பிண்டமளக்கியது. | ममर्द | சின்னாபின்ன |
| पुवर्गर्षभः | வானரோத்தமனாகிய | | மக்கினான். |

तच्छैलशृङ्गाभिहतं हताश्वं हतसारथि । रक्षसां रुधिरहृत्त्रेण वभूवायोधनं महत् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------------|----------------|---------------------|
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | हताश्वं | குதிரைகளை மீழ்த்த |
| महत | பெரும் | | தும் |
| आयोधनं | போர்ப்படை | हतसारथि | பாடர்கள் மாண்ட தும் |
| तच्छैलशृङ्गाभिहतं | அந்த மலைச்சிகரத் தால் தாக்கப்பட்ட | रुधिरहृत्त्रेण | ரத்தம் தேய்ந்தது |
| | | वभूव | ஆனது. [மாய் |

रथिनो वानरेन्द्राणां शरैः कालान्तकोपमैः । शिरांसि नदतां जहुः सहस्रा भीमनिस्वनाः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------|----------------|-------------------------|
| रथिनः | ரதகிரர்களும் | नदतां | கர்ஜிக்கும் |
| भीमनिस्वनाः | பேரினச் சரஸ் கொண்டு | वानरेन्द्राणां | வானரோத்தமர் |
| कालान्तकोपमैः | நிரதயகரணமணுக் கொப்பான | शिरांसि | தலைகளை [களின் |
| शरैः | பாணங்களால் | सहस्रा | லிரைந்து |
| | | जहुः | அறுத்துத் தள்ளி னன். |

वानराश्च महात्मानः समुत्पात्य महाद्रुमान् । रथान्श्वानाजानुष्टान्राक्षसान्भ्यसूदयन् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|------------------------|
| महात्मानः | பேராற்றல் படைத்த | गजान् | யானைகளை யும் |
| वानराः | வானர்கள் | अश्वान् | குதிரைகளை யும் |
| महाद्रुमान् | பெரும் மாக்களை | उष्टान् | ஓட்டக்கங்களை யும் |
| समुत्पात्य | பிடுக்கிக்கொண்டு | राक्षसान् च | அரக்கர்களையும் |
| रथान् | ரதங்களையும் | अभ्यसूदयन् | தவிர்ப்பமாக்கினார்கள். |

हनुमाञ्छैलशृङ्गाणि वृक्षाश्च विविधान्वहन् । वर्षे कुम्भकर्णस्य शिरस्यम्बरमास्थितः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------------|--------------|
| हनुमान् | ஹனுமார் | वहन् | கணக்கற்ற |
| अम्बरं | ஆகாயத்தில் | वृक्षान् च | மாங்களை யும் |
| आस्थितः | இருந்துகொண்டு | कुम्भकर्णस्य | சும்பகர்ணனது |
| शैलशृङ्गाणि | மலைச்சிகரங்களை யும் | शिरसि | தலைசில் |
| विविधान् | பலவகை | वर्षे | வரஷித்தார். |

तानि पर्वतशृङ्गाणि शूलेन स विभेद ह । वभञ्ज वृक्षवर्षे च कुम्भकर्णो महाबलः ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|--------------|--------------------------|
| सः | அந்த | शूलेन | குலாயுத்தத்தம் கொண்டு |
| महाबलः | மகாபலசாலியாகிய | विभेद | பிளந்து தள்ளினான். |
| कुम्भकर्णः | சும்பகர்ணன் | वृक्षवर्षे च | மாவரஷத்தையும் |
| तानि | அந்த | वभञ्ज | முறித்துத்தள்ளினான் |
| पर्वतशृङ्गाणि | மலைச்சிகரங்களை | ह | காண்! |

ततो हरीणां तदनीकमुद्यं दृष्ट्वा शूलं निशितं मृष्टम् ।

तस्थौ ततोऽस्यापततः पुरस्तान्महीधराय हनुमान्प्रशुभम् ॥ १९ ॥

॥ १९ ॥

சன: ஆர்ப்பொழுது
 நிசித சூல் குறையுத த்லத
 ப்முடி கைகங்கொண்டு
 ஹரிபா வானவர்கலில்
 சன ஆர்த
 உய் க்முடிமரண
 ஹனிக் கைகங்கொண்டு
 ஹுடவ வெருட்டினுண்.

சன: அக்கமயம்
 ஹனுமந ஹனுமந
 சரிவரய் மலிக்கிக்கொண்டு
 ப்முடி கைகங்கொண்டு
 அபநவ: வசிர்த்துயாகுத
 அசு அகலக
 பூர்மந புல்க்கொண்டு
 சஸி கைகங்கொண்டு.

ச குम्भकर्णं कुपितो जघान वेगेन शैल्योत्तमभीमकायम् ।

ச சூழ்மே தன தடாஹிமூதே மெடாஹிமூதே ஹிமாவாசக:

|| 20 ||

ச: ஆவன்
 குபித: கோபங்கொண்டவராய்
 சீலோத்தம- } மலிக்கொண்டு
 ஹிமகாய் } பெருந்தேகம் படை
 த்தவகைய
 கும்கர்ணம் } சும்பகர்ணம்
 வேகென } ஆத்திரக்கொண்டு
 ஜகான } அகலக்தார்.

ச: ஆவன்
 நென அகலக
 அஹிமூத: ஹனுமந
 மெடாஹிமூத: ஹிமாவாசகமும்
 சீலோத்தமமும்
 ஹிமாவாசக: அத்தம் அழித்தவகைய
 தடா அப்பொழுது
 சூழ்மே அகலக்தார்.

ச शूलमाविध्य तडित्प्रकाशं गिरिं यथा प्रज्वलितायमृद्धम् ।

சாஹந்தரே மாரூதிமாவாசகம் குஹிஷலம் கோஹிமாவாசகமாய

|| 21 ||

ச: ஆவன்
 தஹிமகாசம் } மின்னொளி கொண்டு
 ம: ஹிலிதாமுத்தம் } இவாசகமும் உச்சிக்
 கொடுமுடி களை
 புண்டய
 கிரி யதா } மலிக்கொண்டு
 சூல் } குறையுத த்லத
 ஹாவித்ய } கழறி

ம: ஹித } ஹனுமந
 வஹந்தரே } மாரூதி
 குஹி: } கண் முகக்கடவுள்
 தமாவாசக } கரிட கொண்டு
 கோ } கொண்டு
 அபல } மலிக்கொண்டு
 ஹி } மலிக்கொண்டு
 மாவாசக } மலிக்கொண்டு
 மாவாசக } மலிக்கொண்டு

ச शूलनिभिन्नमहाभुजान्तरः प्रविह्वलः कोणितमुद्गमन्मुखात् ।

நனாத ஹிமம் ஹனுமநஹிமாவாசகம் பூர்மமேயஸ்தானிதஸ்யநாபமம்

|| 22 ||

மஹாஹிமே } மலிக்கொண்டு
 ச: ஆர்த
 ஹனுமந } ஹனுமந
 ஹிமாவாசக- } குறையுத த்லத
 மஹா ஜாந்தர: } பெரும் மலிக்கொண்டு
 மலிக்கொண்டு
 ப்ரவிஹல: } மலிக்கொண்டு

சுவாந } மலிக்கொண்டு
 கோணித } மலிக்கொண்டு
 வஹந } க்முடிமரணம்
 பூர்மமேய- } மலிக்கொண்டு
 மலிக்கொண்டு } இவாசகமும்
 ஹிம } மலிக்கொண்டு
 மலிக்கொண்டு } மலிக்கொண்டு

ततो विनेदुः सहसा महृष्टा रक्षोगणास्तं व्यथितं समीक्ष्य ।

पुवङ्गमास्तु व्यथिता भयार्ताः पदुद्भुः संवति कुम्भकर्णात्

॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|-----------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सहसा | முழுபலத்தோடும் |
| रक्षोगणाः | இராக்ஷஸ்க்கட்டட்கள் | विनेदुः | ஆரவாரித்தாரர்கள். |
| सं | அவரை | पुवङ्गमाः तु | வானரர்களோட |
| व्यथितं | தன்பயடைந்தவராய் | व्यथिताः | துக்கங்கொண்டவர்க |
| समीक्ष्य | கவனித்து | संवति | பொரிந்து ளாய் |
| महृष्टाः | ஆளந்தகங்கொண்ட | कुम्भकर्णात् | கும்பகர்ணனிடம் |
| | வர்களாய் | भयार्ताः | பயபிடித்தர்களாய் |
| | | पदुद्भुः | ஒட்டம்பிடித்தாரர்கள். |

ततस्तु नीलो बलवान्पर्यवस्थापयन्बलम् । प्रविचिक्षेप शैलायं कुम्भकर्णाय धीमते ॥ २४ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|-----------------|
| ततः तु | அப்பொழுதே | शैलायं | மலைச்சிகரமொன்றை |
| बलवान् | பலவானவராய் | धीमते | தீமனாகிய |
| नीलः | நீலன் | कुम्भकर्णाय | கும்பகர்ணன்மீது |
| बलं | கொண்டபலம் செய்து | प्रविचिक्षेप | வீசி அறைந்தான். |
| पर्यवस्थापयन् | ஒடரதுகிணக்கச்- | | |

तपापतन्तं संमेक्ष्य मुष्टिनाऽभिजघान ह । मुष्टिप्रहाराभिहतं तच्छैलायं व्यशीर्यत ॥ २५ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|--------------------|------------------|
| तपापतन्तं | மேல் விழவரும் | तस्य शैलायं | அந்த மலைச்சிகரம் |
| सं | அதை | मुष्टिप्रहाराभिहतं | முஷ்டிக்குத்தால் |
| संमेक्ष्य | பார்த்து | | தாக்கப்பட்டு |
| मुष्टिना | முஷ்டியால் | व्यशीर्यत | பொடிப்பொடியா |
| अभिजघान | எதிர்த்துக்குத்தினான். | ह | காண்! படிற்று |

सविस्फुलिङ्गं सञ्चालं निपपात महीतले

॥ २६ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|---------|------------------|
| सविस्फुलिङ्गं | செருப்புப்பொறி | सञ्चालं | ஆவாள்களோடும் அது |
| | கொண்டும் | महीतले | பூமிமீது |
| | | निपपात | விழுந்தது. |

ऋषभः शरभो नीला गवाक्षो गन्धमादनः ।

पञ्च वानरशार्दूलाः कुम्भकर्णमुपाद्रवन् ॥

| | | | |
|------|--------|------------|-------------------|
| ऋषभः | சிஷபன் | गवाक्षः | கவாக்ஷன் |
| शरभः | சரபன் | गन्धमादनः | கந்தமாதனன் என்ற |
| नीलः | நீலன் | पञ्च | ஐவர்கள் |
| | | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனைமேலாக் |
| | | उपाद्रवन् | முடினார்கள். |

शैलैर्दृक्षैस्तलैः पारैर्मुष्टिभिश्च महावज्राः । कुम्भकर्णं महाकायं सर्वतोऽभिप्रदुद्बुः ॥ २८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|---------------|-----------------|
| महावज्राः | மகாபவஜர வித்தகா சிய ஆவர்கள் | पारैः | கரல்களா லும் |
| शैलैः | பசைகளா லும் | मुष्टिभिः च | முஷ்டிகளா லும் |
| दृक्षैः | மட டிகளா லும் | महाकायं | பெருஞ்சரீரமுற்ற |
| तलैः | உள்ளய்க்கைகளா லும் | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| | | सर्वतः | எந்நபுறமும் |
| | | अभिप्रदुद्बुः | அபிபுடூட்கள். |

स्पर्शानिव महारांस्तान्वेदयानो न विच्यथे । कृपमं तु महावेगं वाद्भ्यां परिपस्वजे ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|------------------|
| तान् | ஆந்த | विच्यथे न | துண்புறவிக்கை: |
| महारां | ஆரகளை | महावेगं | பெருவேகம்படைத்த |
| स्पर्शान् इव | ஊர்வனபோல் | कृपमं तु | கிவபனை யோ வெணில் |
| वेदयानः | வினைக்கின் மனலும் | वाद्भ्यां | வீடுகைகளால் |
| | | परिपस्वजे | கட்புக்கொண்டான். |

कुम्भकर्णभुजाभ्यां तु पीडितो वानरर्षभः । निपपातर्षभो भीमः प्रमुखाद्वान्तशोणितः ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------------------|-------------|--------------------------|
| भीमः | பயக்கரண | पीडितः | கசக்குண்டவனும் |
| वानरर्षभः | வானரோத்தாரண | प्रमुखान् | வாயினின் து |
| कृपमः तु | கிவபனும் | वान्तशोणितः | உத்தசுதை கக்குபவ னும் |
| कुम्भकर्णभुजाभ्यां | கும்பகர்ணனது இரு கைகளால் | निपपात | கிடுகு விழ்த்தான். |

मुष्टिना शरभं हत्वा जानुना नीलमाह्वे । आजमान गवाक्षं तु तन्देनेन्द्रिपुस्तदा ॥३१॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|------------|--------------|
| इन्द्ररिपुः | இந்திரசத்ருவாகிய அவன் | जानुना | முழக்கைகளால் |
| शरभं | சரபையுடைய | नीलं | நீலையுடைய |
| हत्वा | அப்பொழுது | हत्वा | புடைத்து |
| आह्वे | பொசில் | रसेन | உள்ளக்கையால் |
| मुष्टिना | முஷ்டியினால் | गवाक्षं तु | கவாக்ஷையால் |
| शरभं | சரபையுடைய | आजमान | அரைத்தான். |

पादेनाभ्यहनकुदस्तरसा गन्धमादनम् । दत्तमहारव्यथिता मुमुहुः शोणितोक्षिताः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|---------------|--------------------------------|
| कुदः | கொடுக்கொண்ட அவன் | दत्तमहार-) | கொடுக்கப்பட்ட அடி |
| पादेन | காலால் | व्यथिताः) | களால் துன்பக்கொ ண்ட அவர்கள் |
| गन्धमादनं | கந்தாமனனை | शोणितोक्षिताः | உத்தசுதையுடைய களால் |
| तरसा | வலுக்கொண்டி | मुमुहुः | முச்சுசுபடைந்தனர். |
| अभ्यहनत् | உடைத்தான். | | |

निपेतुस्ते तु मेदिन्यां निकृत्ता इव किशुकाः ॥ ३३ ॥

तेषु वानरमुख्येषु पतितेषु महात्मसु । वानराणां सहस्राणि कुम्भकर्णं मद्भुवुः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------------|---------------------|
| ते | அவர்கள் | महामसु | மகா ஆற்றல் உடைய |
| निकृत्ताः | வெட்டித்தள்ளப் | पतितेषु तु | பெற்ற |
| | பட்ட | वानरमुख्येषु | வானரத்தலைவர்கள் |
| किशुकाः इव | பலா சமரங்களிப்போல | पतितेषु तु | கிழி விழுந்தவுடனே |
| मेदि-यां | பூமியில் | वानराणां | வானரர்களின் |
| निपेतुः | சாய்ந்து விட்டார்கள். | सहस्राणि | ஆயிரத்தவர்கள் |
| तेषु | அந்த | कुम्भकर्णं | சும்பகர்ணனை |
| | | मद्भुवुः | எதிர்த்தொடினார்கள். |

तं शैलमिव शैलाभाः सर्वे ते पुवर्गर्षभाः । समारुह्य समुत्पत्य ददंशुश्च महाबलाः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|--------------|---------------|
| शैलाभाः | மலைகளை சிகர்த்தவர்கள் | सर्वे | எல்லோரும் |
| | களும்த | शैलं इव | மலைபோன்றவனுன |
| महाबलाः च | மகாபலகாலிகளுமான | तं समुत्पत्य | அவன்மீது தாவி |
| ते | அந்த | समारुह्य | எறி |
| पुवर्गर्षभाः | வானரோத்தமர்கள் | ददंशुः | கடித்தார்கள். |

तं नखैर्दशनैश्चापि मुष्टिभिर्जानुभिस्तथा । कुम्भकर्णं महाकायं ते जघ्नुः पुवर्गर्षभाः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|--------------|----------------|-------------|-----------------------|
| ते | அந்த | नखैः च | நகங்களாலும் |
| पुवर्गर्षभाः | வானரோத்தமர்கள் | दशनैः अपि | பற்களாலும் |
| ते | அந்த | मुष्टिभिः | முஷ்டிகளாலும் |
| महाकायं | சீரம் பெருத்தவ | जानुभिः तथा | முழந்தாள்களாலும் |
| कुम्भकर्णं | சும்பகர்ணனை [ன | जघ्नुः | துள் புறுத்தினார்கள். |

स वानरसहस्रैस्तराचितः पर्वतोपमः । रराज राक्षसव्याघ्रो गिरिरात्मरुद्धैरिव ॥ ३७ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|-----------------|
| पर्वतोपमः | பர்வதாசாரணிய | आचितः | மொய்க்கப்பெற்றவ |
| सः | அந்த | आत्मरुद्धैः | மரங்களால் [னய் |
| राक्षसव्याघ्रः | அரக்கப்புவி | गिरिः इव | மலை எவ்வண்ணமோ |
| तैः | அந்த | | அவ்வண்ணமே |
| वानरसहस्रैः | ஆயிரக வானரர்களால் | राज | விளங்கினான். |

बाहुभ्यां वानरान्सर्वान्प्रमृश सुमहाबलः । भक्षयामास संक्रुद्धो गरुडः पन्नगानिव ॥ ३८ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|------------------|
| सुमहाबलः | மிகப்பலகாலிகிய | प्रमृश | பிடித்திழுத்த |
| | அவன் | गरुडः | கருடன் |
| संक्रुद्धः | மிகச்சினங்கொண்டு | पन्नगान् इव | பாம்புகளை எவ்வண் |
| वानरान् | வானரர்கள் | | ணமோ அவ்வண்ணமே |
| सर्वान् | எல்லோரையும் | भक्षयामास | விழுங்கினான். |
| बाहुभ्यां | ஸகங்களால் | | |

प्रक्षिप्ताः कुम्भकर्णेन वज्रे पाताळसन्निभे । नासापुटाभ्यां निर्जम्बुः कर्णाभ्यां चैव वानराः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|--------------------------------------|
| कुम्भकर्णेन | கும்பகர்ணனால் | नासापुटाभ्यां | இருமுகக்குத்துவாரக் கனிகினின்றும் |
| पाताळसन्निभे | பாதாளத்தை நிகர்த்த | कर्णाभ्यां एव | இருகரதுகனிகினின்றும் மரக |
| वज्रे | வாய்க்குள் | निर्जम्बुः | வெளிவந்துவிட்டார் கன். |
| प्रक्षिप्ताः | தள்ளப்பட்ட | | |
| वानराः च | வானரர்களை | | |

भक्षयन्भृशसंकुடो हरीन्पर्वतसन्निभः । न जज्ञे पर्वताग्राणां निपातं राक्षसोत्तमः ॥ ४० ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|---------------|------------------|
| पर्वतसन्निभः | மலைமைய நிகர்த்த | हरीन् | வானரர்களை |
| राक्षसोत्तमः | ராக்ஷஸோத்தமனாகிய ஆவன் | भक्षयन् | விரும்பிக்கொண்டே |
| भृशसंकुदः | மிகத்தினங்கொண்ட வனம் | पर्वताग्राणां | மலைச்சிகரங்களின் |
| | | निपातं | மேல்விழுதலை |
| | | न जज्ञे | உணரா திருந்தான். |

वभञ्ज वानरान् सर्वान् संकुदो राक्षसोत्तमः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|---------|----------------|
| संकुदः | கோபம்முண்ட | वानरान् | வானரர்கள் |
| राक्षसोत्तमः | ராக்ஷஸோத்தமனாகிய ஆவன் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| | | वभञ्ज | முறியடித்தான். |

मांसशोणितसंक्षेदां भूमिं कुर्वन्स राक्षसः । चचार हरिसैन्येषु कालाग्रिवि मूर्च्छितः ॥

| | | | |
|-------------------------|---|--------------|--|
| सः | அந்த | कुर्वन् | செய்துகொண்டு |
| राक्षसः | ஆரக்கன் | हरिसैन्येषु | வானரசேனையடங்க ளில் |
| भूमिं | பூமியை | मूर्च्छितः | முண்டதான |
| मांसशोणित- संक्षेदां | மாம்பாக்களுக்கும், சத்த மும் பெருக்குண்ட தரம் | कालाग्रिः इव | பிரளயகாலாக்ஷி என சற்றித்தேரிந்தான். |
| | | चचार | |

वज्रहस्तो यथा शक्रः पाशहस्त इवान्तकः । शूलहस्तो वभौ संख्ये कुम्भकर्णो मदावलः ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|-----------|------------------------------|
| संख्ये | போலில் | शक्रः यथा | துக்கிரன் போலவும் |
| शूलहस्तः | கையில் சூலாயுதமேல் | पाशहस्तः | பாசக்களித்தற கையில் கொண்ட |
| मदावलः | மகா பலவானான [திய] | अन्तकः इव | எமன் போலவும் |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | वभौ | விளக்கினான். |
| वज्रहस्तः | வஜ்ராயுதத்தைக் கையிலேந்திய | | |

यथा शुष्काण्यरण्यानि शीघ्रे दहति पावकः । तथा वानरसैन्यानि कुम्भकर्णो विनिर्दहत् ॥

| | | | |
|----------|---------------|--------------|--------------|
| पावकः | கெடுப்பு | दहति | எரிக்கிறதோ |
| शीघ्रे | கொடைகாலத்தில் | तथा | ஆப்படியே |
| शुष्काणि | உலர்ந்த | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| अरण्यानि | காடுகளை | वानरसैन्यानि | வானரசேனையகளை |
| यथा | எப்படிய | विनिर्दहत् | எரித்தான். |

ततस्ते बध्यमानास्तु हतयूथा विनायकाः । वानरा भयसंविष्टा विनेदुर्विस्वरं भृशम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|----------------------|
| ततः | அச்சபயம் | विनायकाः च | தலைவர்களைவிடும் தும் |
| ते | அந்த | भयसंविष्टाः | பயபீடிதர்களாய் |
| वानराः | வானரர்கள் | भृशं | பெரிதாயும் |
| बध्यमानाः | புடைசெகப்பட்டவர்க | विस्वरं | விசுவராயும் |
| हतयूथाः तु | அணிசூலைத்தும் [வாய் | विनेदुः | பூசலிட்டனர். |

अनेकशो बध्यमानाः कुम्भकर्णेन वानराः । राघवं शरणं जगुर्व्यथिताः खिन्नचेतसः ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|--------------------|
| कुम्भकर्णेन | கும்பகர்ணனால் | व्यथिताः | துன்புற்றவர்களாய் |
| अनेकशः | பலப்பலராக | खिन्नचेतसः | அறிவுகுழம்பியவர்க |
| बध्यमानाः | புடைக்கப்படும் | राघवं | ரீராமரிடம் [வாய் |
| वानराः | வானரர்கள் | शरणं जगुः | சரண்புகுந்தார்கள். |

प्रभशान्वानरान्दृष्ट्वा वज्रहस्तसुतात्मजः । अभ्यधावत वेगेन कुम्भकर्णं महाहवे ॥ ४७ ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------|------------|-------------------------------------|
| वज्रहस्तसुतात्मजः | இத்திரன் பேரன் அக்கதன் | प्रभशान् | முறியடிக்கப்பட்ட கண்டு [வர்களாய் |
| महाहवे | பெரும் போலில் | दृष्ट्वा | கும்பகர்ணனை நோக்கி |
| वानरान् | வானரர்களை | कुम्भकर्णं | ஆத்திரக்கொண்டு |
| | | वेगेन | எதிர்த்து ஓடினான். |
| | | अभ्यधावत | |

शैलशृङ्गं महद्रुक्ष विन्दश्च मुहुर्मुहुः । त्रासयन्राक्षसान्सर्वान्कुम्भकर्णपदानुगान् ॥ ४८ ॥

चिक्षेप शैलशिखरं कुम्भकर्णस्य मूर्धनि ॥ ४९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|-----------------|
| महत् | பெரும் | सर्वान् | பாவலரையும் |
| शैलशृङ्गं | மலைச்சிகரமொன்றை | त्रासयन् च | வெருளச்செய்து |
| रुक्ष | வகக்கொண்டு | | கொண்டும் |
| मुहुः मुहुः | அடிக்கடி | कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது |
| विन्दन् | காண்தீத்கொண்டும் | मूर्धनि | தலையில் |
| कुम्भकर्ण- | கும்பகர்ணனைத் | शैलशिखरं | மலைச்சிகரத்தை |
| पदानुगान्) | தொடர்ந்துவரும் | चिक्षेप | போட்டுடைத்தான். |
| राक्षसान् | அரக்கர்கள் | | |

स तेनाभिहतोऽत्यर्थं गिरिशृङ्गेण मूर्धनि । कुम्भकर्णः प्रज्वाल कोपेन महता तदा ॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------|----------------|
| सः कुम्भकर्णः | அந்த கும்பகர்ணன் | अभिहतः | தாங்குண்டவராய் |
| तेन | அந்த | तदा | அப்பொழுது |
| गिरिशृङ्गेण | மலைச்சிகரத்தால் | महता | பெரும் |
| मूर्धनि | தலையில் | कोपेन | கோபத்தால் |
| अत्यर्थं | மிக | प्रज्वाल | ஓவளித்தான். |

सोऽभ्यधावत् वेगेन बालिपुत्रपर्वणः । कुम्भकर्णो महानादस्त्रासयन्सर्ववानरान् ॥५१॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|------------------|
| ச: | அந்த | சாமயந் | பிரணத்செய்து |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | | கொண்டு |
| अमर्षणः | அமர்ஷணம் | வேகந் | ஆந்திரங்கொண்டு |
| महानादः | பேபிராஸிகொண்டு | बालिपुत्र | வாலிபுத்ரனை |
| सर्ववानरान् | எல்லா வானரர்களை | अभ्यधावत् | எதிர்த்தொடினான். |

शुलं ससर्ज वै रोपाद्भूदे स महाबलः ॥ ५२ ॥

| | | | |
|--------|--------------|-------|--------------|
| சஹாவல: | மகாபலவானானிய | भडूदे | அங்கதலரிடம் |
| सः वै | அவனும் | शुलं | சூலாயுதத்தை |
| रोपात् | கொபத்தால் | ससर्ज | எதிர்த்தான். |

तमापतन्तं बुद्ध्या तु युद्धमार्गविशारदः । लाधवान्मोचयामास बलवान्वानरपथः ॥५३॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|----------|-----------------------|
| युद्धमार्गविशारदः | யுத்தப்பயிற்சியில் | तं | அதை, |
| | தேர்ந்த | बुद्ध्या | அண்ணறிவுகொண்டு |
| बलवान् | பலவானிய | लाधवान् | உயர்த்தியத்தால் |
| वानरपथः तु | வானரோத்தமனும் | मोचयामास | தப்பவித்துக்கொண்டான். |
| आपतन्तं | மேல்விழவரும் | | |

उत्पत्य चैनं सहसा तलेनोरस्यताडयत् । स तेनाभिहतः कोपात्प्रमुहोद्वाचलोपमः ॥५४॥

| | | | |
|---------|----------------|---------|-------------------------|
| सहसा | ஸஹாஸ்து | तन | அவனும் |
| उत्पत्य | தாவிக்குதித்து | उरसि | மார்பில் |
| तलेन | உள்ளங்கையால் | अभिहतः | அகற்றப்பட்டது |
| एनं | இவனை (அரக்கனை) | अचलोपमः | பங்கதத்திற்கு சமனானானிய |
| उरसि | மார்பில் | सः | அவன் |
| कोपात् | கொபத்தோடு | प्रमुहो | முஹிதனாகொண்டான். |
| अवाडयत् | அவற்றத்தான். | | |

स लब्धसंज्ञो बलवान्मुष्टिमावर्त्य राक्षसः । अपहासेन चिक्षेप विसंज्ञः स पपात ह ॥५५॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------|-----------------|
| सः | அந்த | आवर्त्य | சுழற்சி |
| बलवान् | பலவானானிய | चिक्षेप | கிட்டுக்கினான். |
| राक्षसः | அரக்கன் | सः | அவன் (அக்கதன்) |
| लब्धसंज्ञः | பிரக்கூறுயுற்றவனும் | विसंज्ञः | விசங்கையற்ற |
| अपहासेन | பரிஹாஸத்தால் | पपात | பிழைத்தான். |
| मुष्टिं | முஷ்டியை | ह | கண்! |

तस्मिन्पुवगशार्दूले विसंज्ञे पतिते भुवि । तच्छूलं समुपादाय सुर्यावमभिदुद्रुवे ॥ ५६ ॥

| | | | |
|----------------------|-----------------|-------------|------------------|
| तस्मिन् पुवगशार्दूले | அந்த வானரோத் | तत् शूलं | அந்தச் சூலத்தை. |
| भुवि | பூமியில் [தரம்] | समुपादाय | எடுத்துக்கொண்டு |
| विसंज्ञे | பிரக்கூறுயுற்ற | सुषीवे | கங்கையை |
| पतिते | விழவும், | अभिदुद्रुवे | எதிர்த்தொடினான். |

तमापन्नं संवेक्ष्य कुम्भकर्णं महाबलम् । उत्पन्नं तदा वीरः सुग्रीवो वानराधिपः ॥५७॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | महाबलं | மகா பலசாலியாகிய |
| वीरः | வீரனும் | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| वानराधिपः | வானரமன்னனும் | आपन्नं | எதிர்த்துவருகின்ற |
| सुग्रीवः | சுகிரீவன் [மாமிய | संवेक्ष्य | பார்த்து [வளைய |
| ते | அந்த | उत्पन्नं | உயரக்கொம்பினான். |

पर्वताग्रं समुत्क्षिप्य समाविध्य महाकपिः । अभिदुद्राव वेगेन कुम्भकर्णं महाबलम् ॥५८॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|------------|-----------------|
| महाकपिः | மான்மீரத்தயானும் அவன் | महाबलं | மகா பலசாலியாகிய |
| पर्वताग्रं | மலைச்சிகரமொன்றை | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| समुत्क्षिप्य | பெயர்க்கொடுத்து | वेगेन | ஆக்கிரமாய் |
| समाविध्य | சூழ்நிற்கொண்டு | अभिदुद्राव | எதிர்த்தான். |

तमापन्नं संवेक्ष्य कुम्भकर्णः पुवङ्गमम् । तस्थौ विकृतसर्वाङ्गो वानरेन्द्रसमुन्मुखः ॥५९॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------------|--|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | वानरेन्द्रसमुन्मुखः | வானரமன்னனும் எதிர்ப்புகளாய் |
| ते | அந்த | विकृतसर्वाङ्गः | { எல்லா அங்கங்களையும் புயங்கரமாகச்செய்துகொண்டவனாய் யினான். |
| पुवङ्गमं | வானரனை | तस्थौ | |
| आपन्नं | எதிர்த்துவருபவனாய் | | |
| संवेक्ष्य | பார்த்து | | |

कपिशोणितदिग्धाङ्गं भक्षयन्तं पुवङ्गमान् । कुम्भकर्णं स्थितं दृष्ट्वा सुग्रीवो वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------------------|--|----------|-----------------------|
| सुग्रीवः | சுகிரீவன் | स्थितं | இருப்பவனாய் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| पुवङ्गमान् भक्षयन्तं | வானரர்களைத் தின்றது | वाक्यं | ஒருசொல்லை |
| कपिशोणित- दिग्धाङ्गं | { வானரத்தம் அங்கம் எல்லாம் வழிந்தவனாக | अब्रवीत् | யின்வருமாறு சொன்னான். |

पतिताश्च त्वया वीराः कृतं कर्म सुदुष्करम् । भक्षितानि च सैन्यानि प्राप्तं ते परमं यशः ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|-----------------|
| त्वया | “உன்னால் | सैन्यानि | சேனைகள் |
| वीराः च | வீரர்களும் | भक्षितानि | கிழிக்கப்பட்டன. |
| पतिताः | கீழ்த்தப்பட்டார்கள். | ते | உனக்கு |
| सुदुष्करं | எவராலும் செய்வ | परमं | பெரும் |
| कर्म | செயல் [தற்கரிய | यशः च | புகழும் |
| कृतं | செய்யப்பட்டது. | प्राप्तम् | கிழ்ச்சிட்டது. |

त्यज तद्दानरानीकं प्राकृतैः किं करिष्यसि । सहस्रैकनिपातं मे पर्वतस्यास्य राक्षस ॥६२॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|---------------|-----------------|
| तत् दानरानीकं | “அந்த வானரனை | राक्षस | அரக்க! |
| त्यज् | கிட்டுகிடு. [கை | मे | எனது |
| प्राकृतैः | சாமான்யர்களை | अस्य पर्वतस्य | இந்த மலைநிலைய |
| किं करिष्यसि | யாது.செய்யப் பொய்கின்றீ | एकनिपातं | ஒரே ஒரு அரைவை |
| | | सहस्र | சகித்துப்பார்”. |

तद्वाक्यं हरिराजस्य सन्वधैर्यसमन्वितम् । भ्रुत्वा राक्षसशार्दूलः कुम्भकर्णोऽब्रवीद्ब्रुवः ॥ ६३ ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------------|----------|-----------------------------|
| राक्षसशार्दूलः | இராசசூலாப்புலியா சீய | सन् | அந்த |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | वाक्यं | கொல்கை |
| हरिराजस्य | ஹரராமன் னனது | भ्रुत्वा | கேட்டு |
| सन्वधैर्यसमन्वितं | ஆந்திரும் ஆண்டும் யும் பொதிந்த | अब्रुवः | நூருசொல்கை |
| | | अब्रवीत् | பின் வருமாறு புகள் குண்: |

प्रजापतेस्तु पौत्रस्त्वं तथैवर्षरजःसुतः । श्रुतपौरुषसंपन्नः कस्माद्दर्शसि वानर ॥ ६४ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|-------------------|---------------------------------|
| वानर | * சூரங்கே! | श्रुतपौरुषसंपन्नः | சூர் போல பிரதாபம் சீமந்தவன். |
| स्वं तु | தீயோ- | तथा एव | ஆப்படிக்கே குக்க |
| प्रजापतेः | பிரம்மரின் | कस्मात् | எதற்காக |
| पौत्रः | பேரன்; | दर्शसि | குணிக்கென்றகொள்கிற |
| वर्षरजःसुतः | சீமந்தரஜினில் புதரன்; | | |

स कुम्भकर्णस्य वचो निशम्य व्याविध्य शैलं सहसा मुमोच ।
तेनाजघानोरसि कुम्भकर्णं शैलेन वज्राशनिर्निभेन ॥ ६५ ॥

| | | | |
|----------------|---|-----------------|---------------------------------------|
| सः | அவன், (கக்கீவன்) | तेन | அந்த |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | वज्राशनिर्निभेन | வஜ்ராயகக்கிரகும் தீபக்தும் சமரணமான |
| वचः निशम्य | கொல்கைக் கேட்டு, | शैलेन | மலைமால் |
| शैलं | மலைமால் | कुम्भकर्णो | கும்பகர்ணனது |
| सहसा व्याविध्य | பிழைமாய்த் சுழிந்தி | उरसि | மார்பில் |
| मुमोच | அடிக்கூம்பவண்ணம் பிடித்துக்கொண்டான். | आजघान | அடித்தான். |

तच्छैलशृङ्गं सहसा विशीर्णं भुजान्तरे तस्य तदा विशाले ।
ततो विषेदुः सहसा भुवङ्गा रसोगणाश्चापि मुदा विनेदुः ॥ ६६ ॥

| | | | |
|-----------|----------------|---------------|----------------------|
| तदा- | அப்பொழுது | ततः | அதனால் |
| तत् | அந்த | भुङ्गाः | புணர்ர்கள் |
| शैलशृङ्गं | மலைச்சிகரமானது | विषेदुः | துக்கித்தனர். |
| तस्य | அவனது | रसोगणाः च अपि | உரக்கர்களைக்கொண்கில் |
| विशाले | விசிந்த | मुदा | சகிதரடித்தரம் |
| भुजान्तरे | மார்பில் | सहसा | புன்னகைகொண்டு |
| सहसा | வருவால் | विनेदुः | சூரவாசித்தனர். |
| विशीर्णं | பொடிமாயிபது. | | |

स शैलशृङ्गाभिहतश्चुकोप ननाद कोपाच्च विवृत्य वक्त्रम् ।
व्याविध्य शूलं च तद्विष्पकाशं चिक्षेप ह्यृक्षपतेर्वधाय ॥ ६७ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|--------------|-------------------|
| सः | அவன் | तद्विष्पकाशं | மின்னலொளி |
| शैलशृङ्गाभिहतः | மலைச்சிகரத்தால் அடி | | கொண்ட |
| चुकोप | சினந்தான். [புண்டு] | शूलं च | குலாயுதத்தையும் |
| कोपात् | சினத்தால் | व्याविध्य | சுழற்றி |
| वक्त्रं | வாயை | ह्यृक्षपतेः | வாணரக்கரையுமென |
| विवृत्य च | திறந்துகொண்டும் | वधाय | வதத்திற்காக [எின் |
| ननाद | கத்தினான், | चिक्षेपं | எடுத்தான். |

तकुम्भकर्णस्य भुजप्रविद्धं शूलं शितं काञ्चनधामजुष्टम् ।

क्षिप्रं समुत्पत्य निगृह्य दोर्भ्यां वभञ्ज वेगेन सुतोऽनिलस्य ॥ ६८ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------------|-----------|--------------------|
| अनिलस्य सुतः | மாருதி | शूलं | குலத்தை |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | क्षिप्रं | கிரைந்து |
| भुजप्रविद्धं | கரங்களால் விடுவிக் கப்பட்டதும் | समुत्पत्य | தாவி |
| काञ्चनधामजुष्टं | பொன்னொளிகொண் | दोर्भ्यां | இரு கைகளால் |
| शितं | கூரியதுமான [டதும் | निगृह्य | பிடித்திழுத்து |
| सत् | அந்த | वेगेन | ஆத்திரத்தால் |
| | | वभञ्ज | முறிக்க ஆற்றினார். |

कृतं भारसहस्रस्य शूलं कालायसं महत् । वभञ्ज जानुन्यारोप्य प्रहृष्टः पुत्रवर्षभः ॥ ६९ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------------|-----------|-------------------|
| पुत्रवर्षभः | ஹனுமார் | शूलं | குலாயுதத்தை |
| भारसहस्रस्य कृतं | ஆயிரபார எனட உள்ளதும் | प्रहृष्टः | உத்ஸாகங்கொண்டு |
| कालायसं | கலப்பு இரப்பாளான | जानुनि | முழக்காலில் |
| महत् | கூரியதுமான [தும் | आरोप्य | கொடுத்து |
| | | वभञ्ज | முறித்துவிட்டார். |

शूलं भयं हनुमता दृष्ट्वा वानरवाहिनी । हृष्टा ननाद बहुशः सर्वतश्चापि दुद्रुषे ॥ ७० ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|--------------------|
| वानरवाहिनी | வானரச்சேனை | हृष्टा | ஆனந்தமுற்றதாய் |
| शूलं | குலாயுதத்தை | बहुशः | பலவாறாய் |
| हनुमता | ஹனுமாரால் | ननाद | கூச்சலிட்டது. |
| भयं | முறிக்கப்பட்டதாக | सर्वतः अपि | காற்புறமும் |
| दृष्ट्वा | கண்டு | दुद्रुषे च | ஒடிவும் திரிந்தது. |

सिंहनादं च ते चक्रुः प्रहृष्टा वनगोचराः । मारुतिं पूजयांचक्रुर्दृष्ट्वा शूलं तथागतम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|--------------|-------------------|
| ते वनगोचराः | அந்த வானரர்கள் | सिंहनादं | சிக்கநாதத்தை |
| शूलं | குலத்தை | चक्रुः | செய்தார்கள். |
| तथागतं | அவ்விதமாகியதாய் | मारुतिं च | ஆளுகவேண்டியவையும் |
| दृष्ट्वा | கண்டது | पूजयांचक्रुः | கொள்ளித்துங்கொண் |
| प्रहृष्टाः | ஹந்தேதாய் முற்றவை களாய் | | டாடினார்கள். |

कालायसं भारतदहससार्ं शूलं शरस्मूर्धसमानकान्तिम् ।

भयं सपीक्ष्य ममभे क्षणेन हृष्टा विनेदुः पुत्रगाः समन्तात् ॥ ७२ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|----------|--------------------|
| புவா: | கால சர்கல் | क्षणेन | ஒரு நொடிப்பொழுது |
| कालायसं | காலத்த இறுதிப்பொழுது | ममभे | பலா தகராழாய் [தில் |
| | னதும் | भयं | முறிக்கப்பட்டதாக |
| भारतदहससार्ं | ஆயிரம் பாசர் | सपीक्ष्य | உணர்ந்து |
| | எனையுள்ளதும் | हृष्टा: | உள்ளம்பூரித்தவர்க |
| शरस्मूर्ध- | சரத்தலைத்திய சூரிய | | ளாய் |
| समानकान्ति) | கிள கிளர்ந்த சூரிய | समन्तान् | நாற்புறக்களிறும் |
| | கொண்டதுமள | विदुः | பேரினரத்தகலிட்டார் |
| शूलं | சூலாயுதத்தை | | கள். |

स तत्तदा भयमवेक्ष्य शूलं चुकोप रक्षोधिपतिर्महात्मा ।

उत्पात्य लङ्कामपथात्स शूलं जवान सुभीक्ष्णुपेत्य तेन ॥ ७३ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|-------------------|
| महात्मा | பெரும் பிரதானியான | सः | அவன் |
| रक्षोधिपतिः | சரத்தலைத்தலைவனான | लङ्कामलपात् | லங்கையைத்தார்த்த |
| सः | அவன் | | மகிழப்பகையினின்று |
| तदा | அப்பொழுது | शूलं | கொடுமுடி யொன்றை |
| तत् | அந்த | उत्पात्य | பெயர்ச்செய்தது |
| शूलं | சூலத்தை | सुभीक्ष्णं | சுக்ரிவகை |
| भयं | முறிக்கப்பட்டதாய் | उपेत्य | கிட்ட |
| भवेक्ष्य | கவனித்து | तेन | அதனால் |
| चुकोप | கிளந்தான். | जवान | படைசீதன். |

स शैलशृङ्गाभिहतो विमंज्ञः पथात् भूधौ युधि वानरेन्द्रः ।

तं मेक्ष्य भूधौ पतितं विमंज्ञं नेदुः महृष्टास्त्वथ यातुधानाः ॥ ७४ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|--------------|------------------|
| वानरेन्द्रः | காலாய மன்னசூரிய | यातुधानाः तु | அதற்க்கு ஒரு |
| सः | அவன் | तं | அவனை |
| युधि | பெயரில் | विमंज्ञं | கொஞ்சநேரத்து |
| शैलशृङ्गाभिहतः | மலைமுடியால் தாக்கப் | भूमौ | பூமியில் |
| | பட்டு | पतितं | கழுந்தவிட்டவனால் |
| विमंज्ञः | உணர்வற்றவனாய் | भेक्ष्य | சென்றித்த |
| भूमौ | தரைமீது | मरुथः | கனிவகண்டவர் |
| पथात् | விழுந்தகலிட்டான். | | களாய் |
| अथ | அப்பொழுது | नेदुः | சூய்யர் தகர்கல். |

तमभ्युपेत्याद्भूतघोरवीर्यं स कुम्भकर्णो युधि वानरेन्द्रम् ।

जहार सुग्रीवमभिपृष्ट्य यथाऽनिलो मेघप्रतिपवण्डः

॥ ७५ ॥

| | | | |
|--------------|---|-----------------|--------------------|
| ச: கும்கர்ண: | அந்தக் கும்பகர்ணன் | அப்யுபேத | கிட்டி |
| அநுததிரவீரீ | { ஆச்சர்யமும் பயக்கா முதலான வீரமும் படைத்தவனும் | அபிபுஷ்ட | ஆக்கிக்கொண்டு |
| வானரேந்ரீ | வானரமன்னனுமான | அதிபவண்ட: அனில: | பெரும் புயற்காற்று |
| சீ | அந்த | மே | மேகத்தை |
| சுரீவீ | அகீவரீ | யதா | எவ்வண்ணமுதலா |
| யுதி | பேரில் | ஜஹர் | எடுத்துச்சென்றான். |

स तं महामेघनिकाशरूपमुत्पाठ्य गच्छन्युधि कुम्भकर्णः ।

रराज मेरुप्रतिमानरूपो मेरुर्धयाऽभ्युच्छिन्नघोरशुङ्गः

॥ ७६ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-----------------------|--------------------------------|
| மேரூபதி மானரூப: | மேருமலைமைய நிகர்த்த உருவமுடையவனான | उत्पाठ्य | வாரி எடுத்துக் கொண்டு |
| ச: | அந்த | गच्छन् | செல்லின்றவனாய் |
| கும்கர்ண: | கும்பகர்ணன் | अभ्युच्छिन्नघोरशुङ्गः | உயர்ந்த பயக்காமான சிகரமுற்ற |
| மஹமேவநிகாசரூப | பெரும் மேகத்தை நிக ர்த்த தோற்றமுடைய | मेरु: | மேருமலை |
| தீ | அவனை | यथा | பேரவ |
| யுதி | பேரில் | रराज | விளங்கினான். |

ततस्तमुत्पाठ्य जगाम वीरः संस्तूयमानो युधि राक्षसेन्द्रैः ।

शृण्वन्निनादं त्रिदशालयानां पुवङ्गराजप्रद्विस्मितानाम्

॥ ७७ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|-------------------|---|
| ச: வீர: | அப்பொழுது | पुवङ्गराजप्रद्वि- | } வானரமன்னன் பிடி யுண்டதால் ஆச்சர்ய க்கொண்ட |
| தீ | வீரனான | विस्मितानां | |
| उत्पाठ्य | அவனை | त्रिदशालयानां | விண்ணுலகத்தவர் களின் |
| युधि | எடுத்துக்கொண்டு | निनादं | ஸம்பாஷணையை |
| राक्षसेन्द्रैः | பேர்விஷயத்தில் | शृण्वन् | கேட்டுக்கொண்டே |
| संस्तूयमानः | ராஜதலைமீது கனல் | जगाम | சென்றுகொண்டிருந் தான். |
| | சொகித்துக்கொண் டாடப்படுகின்றவனாய் | | |

ततस्तथादाय तदा स मेने हरीन्द्रमिन्द्रोपमिन्द्रवीर्यः ।

अस्मिन्हृते सर्वमिदं हृतं स्यात्सरायवं सैन्यमिनीन्द्रशत्रुः

॥ ७८ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|-------------------|
| ஹ்ரீவீரீ: | இந்திரனதுபோன்ற | तदा | அப்பொழுது |
| ஹ்ரீவீரீ: | வீர்பக்கொண்டவனும் | अस्मिन्हृते | இந்திரனை நிகர்த்த |
| ச: | இந்திரனது சத்ருவ | हरीन्द्र | வானரத்தலைவனு |
| ச: | அவன் [மரகிய | | மரகிய |

| | | | |
|---------|-----------------------------------|------------|--------------------------------|
| ते | அவனை | सराधवं | சாகவனுள் ளிட்ட |
| आवाय | கையில் பற்றிக் கொண்டு | किंच | சேனை |
| अस्मिन् | " இவன் | सर्वे | எல்லா மும் |
| हते | கிறைப்படுத்துத்தப்பட்டு விடின் | हते | கிறைப்படுத்துத்தப்பட்ட தாய் |
| ततः | அதனால் | स्यात् इति | ஆகும் " என்று |
| इदं | இந்த | मेने | எண்ணிக்கொண் டான். |

विद्वतां वाहिनीं दृष्ट्वा वानराणां ततस्ततः । कुम्भकर्णेन सुग्रीवं गृहीतं चापि वानरम् ॥

हनुमांश्चिन्तयामास मतिमान्मारुतात्मजः । एवं गृहीते सुग्रीवे किं कर्तव्यं मया भवेत् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|--------------|--------------------------------|
| मतिमान् | தண்ணறிவாள சாகிய | विद्वतां अपि | தேர் ளிட்ட தரகவும் |
| मारुतात्मजः | வா யுபுதல்வராகிய | दृष्ट्वा | கண்டு |
| हनुमान् | ஆளுச்சேனையர், | चिन्तयामास | பின் வருமாறு சிந்திக்க |
| वानरं | வானரனாகிய | एवं | " இவ்வீதம் [வாதினர்: |
| सुग्रीवं | சுகரீவனை | सुग्रीवे | சுகரீவன் |
| कुम्भकर्णेन | கும்பகர்ணனால் | गृहीते | கிரஹிக்கப்பட்ட |
| गृहीते च | எடுத்துப்போகப்பட்ட டதரகவும் | मया | என்னால் [பொழுது |
| वानराणां | வானரர்களின் | कर्तव्यं | செய்துமுடிக்கப்பட வேண்டியது |
| वाहिनीं | சேனையை | किं भवेत् | யாது ? |
| ततः ततः | அங்குமிக்குமாயி | | |

यद्वै न्यार्यं मया कर्तुं तत्करिष्यामि सर्वथा । भूत्वा पर्वतसङ्काशो नात्राविष्यामि राक्षसम् ॥

| | | | |
|----------|---------------|----------------|----------------------------------|
| यन् | " எனது | करिष्यामि | செய்து கொடுவேன். |
| मया | என்னால் | पर्वतसङ्काशः | பர்வதத்தை சிகர்த்த |
| कर्तुं | செய்துமுடிக்க | भूत्वा | ஆகி [வனம் |
| न्यार्यं | தங்கடிகா | राक्षसं | தரக்களை |
| सन् वै | அதைதயே | नात्राविष्यामि | தகம்மைம் செய்து கொடுக்கிறேன். |
| सर्वथा | எப்படி யும் | | |

मया हते संयति कुम्भकर्णे महाबले सुष्टिविकीर्णदेहे ।

विमोचिरे वानरपाथिवे च भवन्तु हृष्टाः प्रवगाः समस्ताः

॥ ८२ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------------------|------------|-----------------------------|
| मया | " என்னால் | वानरपाथिवे | வானரபாதின் |
| संयति | பொலிஸ் | विमोचिरे च | விடுவிக்கப்பட்டவும் |
| महाबले | மகர்பலனாகிய | प्रवगाः | காணர்கள் |
| कुम्भकर्णे | கும்பகர்ணன் | समस्ताः | யாவரும் |
| हते | புடைக்கப்பட்டு | हृष्टाः | ஸந்தேகமம் கொண் டவர்களாய் |
| सुष्टिविकीर्णदेहे | முடிக்கக்குத்தால் கேதம் சித்தமும் | भवन्तु | ஆகட்டும். |

अथवा स्वयमप्येष मोक्षं प्राप्स्यति पार्थिवः । गृहीतोऽयं यदि भवेत्तु द्वैः सामुरोरगैः ॥

अथवा " अல்திருக்கட்டும் ;
 अयं இந்த
 पार्थिवः अपि மன்னரோ
 सामुरोरगैः " ஆசாரர்களும் நாகர்
 கருமுதன் கிட்ட
 तिद्वैः " தேவர்களால்

गृहीतः " சீரநிற்கப்பட்ட
 भवेत् यदि " ஆயினும் [டவாசக
 स्वयं " தானாகவே
 एषः " இடேதா
 मोक्षं प्राप्स्यति " விடுவித்துக்
 கொள்வார்.

मन्ये न तावदात्मानं बुध्यते वानराधिपः । कैलप्रहाराभिहतः कुम्भकणेन संयुगे ॥ ८४ ॥

वानराधिपः " வானரமன்னர்
 संयुगे " போரில்
 कुम्भकणेन " சும்பகண்ணால்
 कैलप्रहाराभिहतः " கலைபில் அடிபட்டு
 தாக்கப்பட்டவராய்

तावत् " இப்பொழுது
 आत्मानं " தன்னையும்
 बुध्यते न " உணரவில்லை என்று
 मन्ये " நினைக்கிறேன்.

अयं गृह्णात्सुग्रीवो लब्धसंज्ञो महाहवे । आत्मनो वानराणां च यत्पथ्ये तत्करिष्यति ॥

अयं " இந்த
 सुग्रीवः " சுகிரீவர்
 गृह्णात् " சிறிது நேரத்திற்
 लब्धसंज्ञः " பிரக்கண்ணப்பற்றவாரி
 महाहवे " போரில்

आत्मनः " தனக்கும்
 वानराणां च " வானரர்களுக்கும்
 यत् " எது
 पथ्ये " ஹிதமானதோ
 तत् करिष्यति " அதைத் செய்வார்.

मया तु मोक्षितस्यास्य सुग्रीवस्य महात्मनः । अर्पतिश्च भवेत्कष्टा कीर्तिनाशश्च शाश्वतः ॥

मया " என்னால்
 महात्मनः " மஹாத்மாவாகிய
 अस्मि " இந்த
 सुग्रीवस्य " சுகிரீவர்
 मोक्षितस्य तु " விடுவிக்கப்பட்டவரோ

कष्टा " அஸஹ்யமான
 अर्पतिः " அபீ தியும்
 भवेत् " ஏற்படலாம்.
 कीर्तिनाशः च " கீர்த்தியின் அழிவுமும்
 शाश्वतः च " நிச்சயமே.

तस्मान्गृह्णते काङ्क्षित्वै विक्रमं पार्थिवस्य तु । भिन्नं च वानरानीकं तावदाश्वासयाम्यहम् ॥

तस्मात् " ஆகையால்.
 गृह्णते " சிறிதுநேரம்
 पार्थिवस्य " மன்னராகைய
 विक्रमं " பரக்கிரமத்தை
 काङ्क्षित्वै " எதிர்பார்த்துக்
 கொண்டு முக்கிறேன்

तावत् तु " அதற்குள்ளே
 भिन्नं " வெறித்திடாடும்
 वानरानीकं च " வானரச்சேனையையும்
 अहं " நான்
 आश्वासयामि " தேற்றாவுபடுத்துகி
 ரேன் "

इत्येवं चिन्तयित्वा तु हनुमान्मास्तात्मजः । भूयस्स्तम्भयामास वानराणां महाचमूम् ॥

मास्ततामजः " வாய்ப்புகள்வாய்க்கிய
 हनुमान् " ஹனுமார்
 इति एवं " மேற்கண்டவாறு
 चिन्तयित्वा " சிந்தனைசெய்துகிட்டு

तु " அப்பொழுது
 वानराणां " வானரசர்களின்
 महाचमूम् " பெரும் சேனையை
 भूयः " பலவாறாய்
 स्तम्भयामास " நீண்டகொள்விர்த்தார்.

स कुम्भकर्णोऽथ विवेश लङ्कां स्फुरन्तमादाय महाकर्पि तम् ।

विमानचर्यागृहगोपुरस्थैः पुष्पाभ्यधैरवकीर्यमाणः

॥ ८९ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|----------------------|
| ச: | அந்த | विमानचर्यागृह- | } விமானங்களிலும் கா |
| कुम्भकर्णः | குப்பாக்கரணம் | गोपुरस्थैः | |
| अथ | அப்பொழுது | पुष्पाभ्यधैः | சிறந்த புஷ்பவர்களால் |
| स्फुरन्त | சுரங்குரீ | अवकीर्यमाणः | அவகீர்த்துக்கொண்ட |
| तं | அந்த | लङ्कां | லங்கா |
| महाकर्पि | மகாகரீர சந்தமரீர | विवेश | விசேஷ |
| आदाय | அடுத்த தந்தையாண்டு | | |

राजमार्गोद्वेषस्तु सिच्यमानः शनैः शनैः ।

राजमार्गस्य शीतत्वान्मंज्ञामाप महावलः ॥

| | | | |
|----------------------|---|--------------|-----------------------|
| महावलः | மகா பலவா லீயா குய் ஆவன் (சகரீரவன்) | सिच्यमानः तु | சிக்கையாடுகின்றவ ளும் |
| राजमार्गस्य | ராஜமரீ திரின் | शनैः शनैः | சனேசம் சனேச |
| शीतत्वान् | சூனீர்ச்சுவர ளும் | सज्ञां | பிரக்கஞ |
| राजमार्गोद्वे- षः | } பொரிகள், சந்தமம், ளும் இவைகளின் வர்வர்களாலும் | आप | தெள்க்கான். |

ततः स संज्ञामुपलभ्य कृच्छ्राद्वलीयसस्तस्य भुजान्तरस्थः ।

अवेक्षमाणः पुरराजमार्गं विचिन्तयामास मुहुर्महात्मा

॥ ९१ ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|-------------------|
| महामा | பேராற்றல் படைத்த | तस्य | அவனது |
| सः | ஆவன் | भुजान्तरस्थः | புஜாந்தரின் கடுவே |
| ततः | அப்பொழுது | | சிக்கிக்கொண்டு |
| कृच्छ्रात् | கிரமப்பட்டு | पुरराजमार्गं | புரரீ ராஜமரீ தைய |
| सज्ञां | தெளிகை | अवेक्षमाणः | அண்பக ளும் |
| उपलभ्य | ஆடைந்து, | मुहुः | மென்மே ளும் |
| वलीयसः | பிக பணாளியாவ | विचिन्तयामास | சிக் திக்கொ ளன். |

एवं गृहीतेन कथं नु नाम शक्यं मया संप्रति कर्तुमद्य ।

तथा करिष्यामि यथा हरीणां भविष्यतीष्टं च हितं च कार्यम्

॥ ९२ ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------|----------------|
| एवं | இவ்வாறு | हरीणां | ஹரீரீக ளுக்கு |
| गृहीतेन | கிரஹிக்கப்பட்ட | यथा च | எப்படியாவின் |
| मया | என்னால் | इष्टं | இஷ்டமும் |
| अद्य | இப்பொழுது | हितं च | ஹிதம் யமாக |
| संप्रति कर्तुं | பிரதிசெய்ய | भविष्यति | புஷ்யமீ |
| कथं नु | எப்படி த்தான் | तथा | அப்படியே |
| शक्यं | சா த்யமாகும் ? | कार्यं | காரியத்தை |
| नाम | } இதுக்கொ ளுமிருக்கப் பிம்; ஒரு கை பார் த் துவிடுகிறேன். | करिष्यामि | கரிக்கின்றேன். |

ततः कराग्रैः सहसा समेत्य राजा हरीणापपरेन्द्रशत्रुम् ।
खरैश्च कर्णो दशनैश्च नासां ददश पाशेषु च कुम्भकर्णम् ॥ ९३ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------|----------|---|
| हरीणां | வரணர்களின் | खरैः | கடரான |
| राजा | மன்னன் | कराग्रैः | நகங்களால் |
| ततः | அப்பொழுது | कर्णो च | இரு காதுகளையும் |
| अमरेन्द्रशत्रुं | தேவெந்திரசத்ரு வாகிய | दशनैः | பற்களால் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | नासां च | மூக்கையும் |
| सहसा | வசூலாய் | पाशेषु च | ஸிலாம்புதாங்களிலும் |
| समेत्य | எட்டி | ददश | கின்றி, அடித்துக் காய ப்படுத்தினான். |

स कुम्भकर्णो हतकर्णनासो विदारितस्तेन विमर्दितश्च ।
रोषाभिभूतः क्षतजाद्रिगात्रः सुग्रीवमाविध्य पिपेप भूमौ ॥ ९४ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|------------------|-----------------------------|
| सः | அந்த | क्षतजाद्रिगात्रः | சத்தத்தால் தேகம் நனைந்து |
| कुम्भर्णोः | கும்பகர்ணன் | रोषाभिभूतः | ஆக்காரம் மூண்ட |
| तेन | அவனால் | सुग्रीवं | சகீவனை [வளைய] |
| विदारितः | பிராண்டப்பட்டும் | आविध्य | சுழற்றி |
| विमर्दितः च | தூன்புதுத்தப்பட்டும் | भूमौ | தவையில் |
| हतकर्णनासः | காதுகளும் மூக்கு மழிந்து | पिपेप | தேய்த்தான். |

स भूतले भीमवलाभिषिष्टः सुरारिभिस्तरिहिन्यमानः ।
जगाम खं वेगवद्भ्युपेत्य पुनश्च रामेण समाजगाम ॥ ९५ ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|---------------------|
| सः | அவன் | अमिहिन्यमानः | புடைக்கப்பட்டவனாய் |
| भूतले | பூமிமீல் | खं | ஆகாயத்தில் |
| भीमवलाभिषिष्टः | பெரும்பலகா வியாகிய அவனால் தேய்க்கப் | वेगवत् | விசை வுடன் |
| वैः | அந்த [பட்டவனாய்] | अभ्युपेत्य जगाम | கிளம்பிக் சென்றான். |
| सुरारिभिः | தேவசத்ருக்களால் (அரக்கர்களால்) | पुनः च | மீளவும் |
| | | रामेण | ஸ்ரீராமருடன் |
| | | समाजगाम | சேர்ந்துகின்றான். |

कर्णनासाविहीनस्तु कुम्भकर्णो महाबलः । रराज शोणितैः सिक्तो गिरिः प्रस्रवणैरिव ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|------------|---------------------------|
| कर्णनासाविहीनः | காதுகளையும் மூக்கை யுமிழந்த | गिरिः | நனைந்தவனாய் |
| महाबलः | மகாபலகா வியாகிய | प्रस्रवणैः | ஓர் மலை |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | इव | மலையருளிகளால் |
| शोणितैः | அப்பொழுது | | எய்வண்ணாமே ஆய் வண்ணாமே |
| | சத்தத்தால் | रराज | கிளங்கினான். |

शोणितार्द्रो महाकायो राक्षसो भीषणिक्रमः । युद्धायाधिष्ठुवो भूयो मनश्चक्रे महाबलः ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|-----------|---------------|
| महाकायः | கொழுடல் / கடைக்காய் கொத்தவலுதல் | राक्षसः | ஆரக்கன் |
| महाबलः | மகாபலகரணியம் | भूयो | பீளவும் |
| भीषणिक्रमः | பயங்கரவாநாபமுத்த வலுதல் | युद्धाय | போரை |
| शोणितार्द्रः | சூடுகிவழிந்தவலு தான் | अधिष्ठुवः | கொக்கி |
| | | मनः | மனசை |
| | | चक्रे | செய்துக்கொண். |

अमर्षाच्छोणितोद्गारी शुशुभे रावणानुजः । नीलाञ्जनचयप्रणयः सर्वेभ्य इव तोयदः ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------|--------------------|--------------------------------|
| नीलाञ्जनचयप्रणयः | கரிய கமலகிரைய கிரந்த | शोणितोद्गारी | சூடுக்கொடுக்க கங்கு பவலுதல் |
| रावणानुजः | ராவணன் தம்பி கும்பகர்ணன் | सर्वेभ्यः | மாத் கொடுக்க கொண்ட |
| अमर्षान् | கொபத்தால் | तोयदः इव शुशुभे | போகும்போல் பிரகாசித்தான். |

गते तु तस्मिन्सुरराजशत्रुः क्रोधान्प्रदुद्राव रणाय भूयः ।

अनायुधोऽस्मीति विचिन्त्य रौद्रो पारं तदा मुद्रमाससाद ॥ ९९ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|-----------|---------------------|
| रौद्रः | பயங்கரனான | तदा | அப்பொழுது |
| सुरराजशत्रुः | தேவேந்திரசத்ருவா கிய ஆவன், | अनायुधः | அயுதமிடாதவனாக |
| तस्मिन् गते तु | சகரீவன் சென்று விட்டவுடன் | अस्मि | இருக்கின்றேன் |
| क्रोधान् | கொபத்தால் | इति | என்று |
| भूयः | பீளவும் | विचिन्त्य | எண்ணி |
| रणाय प्रदुद्राव | போகிட ஓடினான். | घोरं | பலத்தாயின |
| | | मुद्रं | முத்தாயுதம்நுண்கூர் |
| | | आससाद | கொடுக்கொண்டான். |

ततः स पुर्याः सहसा महौजा निष्क्रम्य तद्गानरसैन्यमुद्रम् ।

तेनैव रूपेण बभञ्ज रुष्टः महारमुष्ट्या च पदेन सद्यः ॥ १०० ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------------|--------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सद्यः | உடனடியும் |
| महौजाः | மஹா பிரதாபம் கொண்ட | रुष्टः | கொபம் கொண்டவ னாய் |
| सः | ஆவன் | तत् | அது |
| तेन | ஆந்த | उभं | பலத்தாயின |
| रूपेण एव | உருவத்தையேனையே | गानरसैन्य | கானரசேனைகைய |
| सहसा | வினாந்த | महारमुष्ट्या | மஹாமுத்தாயுதம் யாலும் |
| पुर्याः | ககரிக்கின்றது | पदेन च | காலாலும் |
| निष्क्रम्य | கொளியின்றது | बभञ्ज | முதியடித்தான். |

वभक्ष रक्षो युधि कुम्भकर्णः प्रजा युगान्ताग्निरिव मदीप्तः । ॥ १०१ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------|---------------|
| रक्षः | அரக்கனான | प्रजाः | பிரானாகளை |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | इव | ஏவ்வண்ணதோ |
| मदीप्तः | ஜீவாஹியுடன் மூண்ட | युधि | பேரில் |
| युगान्ताग्निः | பிரணயகாலாக்களி | वभक्ष | விழுங்கினான். |

बुभुक्षितः शोणितमांसगृध्रः पविश्य तद्धानसैन्यमुग्रम्

चखाद रक्षांसि हरीन्पिशाचानृक्षांश्च मोहाद्युधि कुम्भकर्णः । ॥ १०२ ॥

| | | | |
|-----------------|---|------------|-------------------|
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | धानसैन्यं | வானரசர்களைத் தான் |
| बुभुक्षितः | பசிமெடுத்தவனாய் | पविश्य | புழுத்து |
| शोणितमांसगृध्रः | { ரத்தத்திலும் மாம்சத்திலும் குணசகொண்டவனாய் | हरीन् | கானரர்களையும் |
| युधि | பேரில் | नृक्षान् | சரிகளையும் |
| सर्व | அந்த | मोहान् | வெறிமயக்கந்தால் |
| इयं | பயங்கரமான | रक्षीभि | அரக்கர்களையும் |
| | | पिशाचान् च | பிசாசர்களையும் |
| | | चखाद | மென்று தின்றான். |

यथैव मृत्युर्हस्ते युगान्ते स भक्षयामास हरींश्च मुख्यान् ॥ १०३ ॥

| | | | |
|----------|-------------------------|-----------|---------------|
| मृत्युः | எமன் | सः च | அவனும் |
| युगान्ते | பிரணயகாலத்தில் | मुख्यान् | சிறந்த |
| यथा | எப்படி | हरीन् | வானரர்களை |
| हस्ते एव | அழிக்கின்றோடு, எப்படியே | भक्षयामास | விழுங்கினான். |

एकं द्वे श्रीन्बहून्कुदो वानरान्सह राक्षसैः । समादायैकहस्तेन प्रचिक्षेप त्वरन्मुखे ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|-------------------|
| कुदः | கோபங்கொண்ட ஆவன் | एकहस्तेन | ஒரு கையால் |
| वानरान् | வானரர்களை | समादाय- | வாரியிழுத்து, |
| राक्षसैः सह | அரக்கர்களோடுகூட | त्वरन् | அரிதமாய் |
| एकं | ஒன்றும் | मुखे | வாயில் |
| द्वे श्रीन् | இரண்டும் மூன்றும் | प्रचिक्षेप | பேட்டுக்கொண்டான். |
| बहून् | பலவுமாய் | | |

संप्रस्रवंस्तदा मेदः शोणितं च महाबलः । वध्यमानो नगेन्द्राग्रैर्भक्षयामास वानरान् ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|----------------|--------------------|
| महाबलः | மகரபலசாலியாகு | नगेन्द्राग्रैः | பெரும் பர்வதசிகரம் |
| तदा | அப்பொழுது [மவன் | वध्यमानः च | புடைக்கப்படுகின்ற |
| मेदः | கொழுப்பையும் | वानरान् | வானரர்களை |
| शोणितं | ரத்தத்தையும் | भक्षयामास | தின்றான். |
| संप्रस्रवन् | பெருகச்செய்து கொண்டு | | |

ते भक्ष्यमाणा हरयो रावं जम्बुस्तदा मणिम् ॥ १०६ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------|---------------|
| ते | அந்த | மணி | புகழிடமாசிய |
| भक्ष्यमाणाः | தின்னவாப்படுகின்ற | रा। | பூரீராமரை |
| हरयः | வானவர்கள் | जम्बुः | அடைந்தார்கள். |
| तदा | அப்பொழுது | | |

कुम्भकर्णा भृशं क्रुद्धः कवान्खादन्प्रधावति ॥ १०७ ॥

| | | | |
|-------------|-------------|----------|-------------------|
| कुम्भकर्णाः | கும்பகர்ணன் | कर्वात् | வானவர்களை |
| भृशं | மிக | खादन् | தின்றுகொண்டே |
| क्रुद्धः | கிணங்கொண்டு | प्रधावति | ஓடி நீகிரிந்தான். |

शतानि सप्त चाष्टौ च विशन्निशत्तथैव च । संप्रिविषज्य बाहुभ्यां खादन्विपरिधावति ॥

| | | | |
|---------|--------------|--------------|---------------|
| सप्त च | ஏழாகவும் | बाहुभ्यां | இரு கைகளால் |
| अष्टौ च | எட்டாகவும் | संप्रिविषज्य | சொந்த அன்கி |
| विशन् | இருபதாகவும் | खादन् | தின்றுகொண்டு |
| निशत् | முப்பதாகவும் | विपरिधावति | அக்குமிக்கும் |
| शतानि च | நூறுகளும் | | அகிந்தான். |

मेदोवसाशोणितद्विभगात्रः कर्णावसक्तप्रथितान्त्रमालः ।

ववर्ष शूलानि सुतीक्ष्णदंष्ट्रः कालो युगान्तस्थ इव मवृद्धः ॥ १०९ ॥

| | | | |
|-------------------|--|-------------------|-----------------------------------|
| सुतीक्ष्णदंष्ट्रः | மிகக் கூரிய கோணாய் பற்களுடைய அகலன் | कर्णावसक्त- | காதல்களில் பிணைந்து |
| मेदोवसाशोणित- | கொழுப்பு, வலன், ரத்தம் இவைகளால் பூச்சுண்ட உடலுற்ற வனாய் | प्रथितान्त्रमालाः | தொக்கிய நாம்பு பாலைகுண்டையனாய் |
| द्विभगात्रः | | युगान्तस्थः | யுகாంతத்தில் |
| | | मवृद्धः | பேருருவக்கொண்ட |
| | | कालः इव | எமன் என |
| | | शूलानि | துலங்களை |
| | | ववर्ष | வாடித்தான். |

तस्मिन्काले सुमित्रायाः पुत्रः परबलादेनः । चकार लक्ष्मणः क्रुद्धो युद्धं परपुरजयः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|----------|-----------------|
| तस्मिन् | அந்த | चकार | சத்தூகரை வெல்பவ |
| काले | காலத்தில் | परपुरजयः | துவான |
| सुमित्रायाः | சுமித்ராய்க்குரிய | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| पुत्रः | புதல்வரும் | क्रुद्धः | கிணங்கொண்டவராய் |
| परबलादेनः | சத்தூபலத்தையழிய் பவரும் | युद्धं | யுத்தம் |
| | | चकार | புரிந்தார். |

स कुम्भकर्णस्य शराञ्चर्चरीरे सप्त वीर्यवान् । निवसानाद्दे वाणान्विससर्ज च लक्ष्मणः॥

| | | | |
|--------------|--------------|------------|--------------|
| सः | அந்த | सप्त शरान् | ஏழு பானங்களை |
| वीर्यवान् | வீரீயவர்களை | निवसान | எட்டினார்; |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | च | தின்னும் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | वाणान् | பானங்களை |
| शरैरे | சரிந்ததில் | भावद् | தொடுத்தார்; |
| | | विनसज् | கிடுத்தார். |

पीड्यमानस्तदस्त्रं तु विशेषं तत्स राक्षसः । ततश्चुकोप बलवान्सुमित्रानन्दवर्धनः ॥ ११२ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|--------------------|---|
| தரஸ் | அவருடைய அஸ்திரம் | पीड्यमानः तु | துன்புறுத்தி துகிறவனான ய் மட்டும் ஆனான். |
| विशेषं | மகா மகிமை வாய்ந்த | ततः | அதனால் |
| तव | ஆளுகை [தது. | बलवान् | பலசாலியாகிய |
| सः | அந்த | सुमित्रानन्दवर्धनः | சக்திமணர் |
| राक्षसः | அரக்கன் | चुकोप | கொடமடைந்தார். |

अथास्य कवचं शुभ्रं जाम्बूनदमयं शुभम् । प्रच्छादयामास शरैः सन्ध्याभ्रमिव मारुतः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | कवचं | கவசத்தையும் |
| शरैः | பாணங்களால் | मारुतः | காற்று |
| अस्य | இவனது | सन्ध्याभ्रं | மாலைக்காலத்திய மேகத்தை |
| जाम्बूनदमयं | தங்கமயமான தம் | इव | எவ்வண்ணமோ ஆவ்வண்ணமே |
| शुभ्रं | ஒளிபொருந்திய தும் | प्रच्छादयामास | மறைத்தார். |
| शुभं | அழகிய தாமரை | | |

नीलाञ्जनचयप्रख्यः शरैः काञ्चनभूषणैः । अपीड्यमानः शुशुभे मेघैः सूर्य इवांशुमान् ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|----------|------------------------|
| काञ्चनभूषणैः | பொன் பூஷணங்களால் | मेघैः | மேகங்களால் |
| अपीड्यमानः | அலைக்கீர்க்கப்பட்ட அவன் | अंशुमान् | இரணங்களுடன்கூடிய |
| शरैः | பாணங்களால் | सूर्यः | சூரியன் |
| नीलाञ्जनचयप्रख्यः | கரியமைப்புகளைய நிகர்த்தவனாய் | इव | எவ்வண்ணமோ ஆவ்வண்ணமே |
| | | शुशुभे | கிவங்கினான். |

ततः स राक्षसो भीमः सुमित्रानन्दवर्धनम् । सावज्ञमेव प्रोवाच वाक्यं मेघौघनिस्वनः ॥

| | | | |
|--------------|--|--------------------|---------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सुमित्रानन्दवर्धनं | சக்திமணரைப் பார்த்து |
| सः | அந்த | सावज्ञं एव | என்னமாதலே |
| भीमः | பயக்கரான | वाक्यं | ஒரு வார்த்தையை |
| राक्षसः | அரக்கன் | प्रोवाच | பின்வருமாறு புகன்றான்: |
| मेघौघनिस्वनः | { மேகக்கூட்டங்களின் இடிமொழையுடைய வனாகி | | |

अन्तकस्याप्यकर्णेन युधि जेतारमाह्वे । युध्यता मामर्भातेन ख्यापिता वीरता त्वया ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------|-------------------------------|
| युधि | "போரில் | युध्यता | போர்ப்புரியும் |
| अन्तकस्य अपि | எமனையும் | त्वया | உன்னால் |
| अकर्णेन | அனுகரமாய் | आह्वे | யுத்தத்தில் |
| जेतारं | வென்ற | वीरता | வீரத்தன்மைமையானது |
| मां | என்னிடம் | ख्यापिता | பிரகித்தப்படுத்தப் பட்டது. |
| अर्भातेन | பயமின்னாதவனாய் | | |

प्रगृहीतायुधस्येह मृत्योरिव महासृषे । निष्टन्नप्यमृतः पूज्यः किमु युद्धप्रदायकः ॥११७॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|---------------|-----------------------|
| इह महासृषे | "இப்பொழுதே மரிகில் | निष्टन् अपि | கிற்பயனாக |
| प्रगृहीतायुधस्य | ஆயுதங்கள் கைக்க | | இருப்பினும் |
| | கொண்டு | पूज्यः | சிலா கிண்கத்தக்கவன் ; |
| मृत्योः इव | எமன்றோஸ் திருக்க | युद्धप्रदायकः | போரிடுபவன் |
| | கும் (எனது) | किमु | சொல்லவும் |
| अमृतः | முன்னிலையில் | | வேண்டுமோ? |

ऐरावतं समारूढो वृतः सर्वापरैः प्रभुः । नैव शकोऽपि समरे स्थितपूर्वः कदाचन ॥११८॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------------|----------------|
| ऐरावतं | "ஐராவதத்தின் பீட | शकः अपि | இக்கிரஹம்-கட |
| समारूढः | எறிபவனும் | समरे | போரில் |
| सर्वापरैः | தேவர்கள் யாவராலும் | कदाचन | ஒரு கடவைமேலும் |
| वृतः | சூழப்பட்டவனும் | स्थितपूर्वः न एव | முன்பு வின்றதே |
| प्रभुः | எல்லா வல்லவனுமான | | யில்லை. |

अथ त्वयाऽहं सौमित्रे बालेनापि पराक्रमैः । तोषितो मन्तुमिच्छामि त्वापनुज्ञाप्य राघवम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|----------------------|
| सौमित्रे | "வசந்தமணியே! | तोषितः | சந்தேஃ உம் கிண்கிண்க |
| अथ | இப்பொழுது | | கப்பட்டேன். |
| बालेन अपि | குழந்தையாயிருக்க | त्वां | உனக்கு |
| | தரலும் | अनुज्ञाप्य | கிடைகொடுத்து |
| त्वया | உன்னால் | राघवं | ராமனிடம் [கிட்டு |
| पराक्रमैः | பீரதரபங்களால் | मन्तुं | போக |
| अहं | நான் | इच्छामि | கிறும்புகிறேன். |

यत्तु वीर्यबलोत्साहैस्तोषितोऽहं रणे त्वया । राममेवैकमिच्छामि हन्तुं यस्मिन्हने इतम् ॥

| | | | |
|-----------------|---|---------|-------------------|
| रणे | "போரில் | यस्मिन् | எவன் |
| अहं | நான் | इते | கொல்லப்படல் |
| त्वया | உன்னால் | इतं | கொல்லப்பட்டதாக |
| | | | ஆகுமோ-உத்த |
| वीर्यबलोत्साहैः | { ஆண்மைமயலும், ஆற்றலாலும், உற்சாகத்தாலும் | रामं | ராமன் |
| तोषितः यत्तु | கனிப்பிக்கப்பெற்றது | एक एव | ஒருவனிடே |
| | எனது-இருந்ததாலும் | हन्तुं | கொல்ல |
| | | इच्छामि | கிறும்புகின்றேன். |

रामे मयाऽत्र निहते येऽन्ये स्वास्थन्ति संयुगे । तानहं बोधयिष्यामि स्वबलेन प्रमाथितः ॥

| | | | |
|--------|----------------|-------------|-------------------|
| अत्र | "இப்பொழுது | स्वास्थन्ति | சுவாஸ்தியில் |
| मया | என்னால் | तान् | அவர்களை |
| संयुगे | போரில் | प्रमाथितः | தவம்சாரக்கும் |
| रामे | ராமன் | स्वबलेन | எனது சேவையைக் |
| निहते | கொல்லப்பட்டான் | | கொண்டு |
| अन्ये | மற்ற | अहं | நான் |
| ये | எவர்கள் | बोधयिष्यामि | போரிடச்செய்வேன்." |

इत्युक्तवाक्यं तदक्षः शोवाच स्तुतिसंहितम् । मृधे चोरतरं वाक्यं सौमित्रिः महसन्निव ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|----------|-------------------|
| சௌமித்ரி: | வசுந்தமணர் | तन् | அந்த |
| इति | பேற்கண்டவாறு | रक्षः | ஆரக்களைப்பார்க்கு |
| स्तुतिसंहितं | புகழ்ச்சியுடன்கூடிய தாய் | महसन् इव | புன்னகையற்றவராய் |
| चोरतरं | கொடியதாய் | मृधे | பேர்விஷயத்தில் |
| उक्तवाक्यं | வார்த்தைகள் மொழிகள் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| | | शोवाच | பின்வருமாறு |

புகண்ணர்:

यस्त्वं शक्रादिभिर्देवैरसह्यः प्राप्य पौरुषम् । तत्सत्यं नान्यथा वीर इष्टोऽद्य पराक्रमः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|----------------|
| यः | “எந்த அந்த | सत्यं | உண்மையே; |
| त्वं | நீ | अप्यथा न | மாறல்ல; |
| शक्रादिभिः | இந்திரன் முதலிய | वीर | வீர! |
| देवैः | தேவர்களால் | अथ | இப்பொழுது |
| पौरुषं प्राप्य | பராக்கரம்கொண்டார் | ते पराक्रमः | உளது பராக்கரம் |
| असह्यः | வெல்லமுடியாதவன் | इष्टः | காணப்பட்டது.” |
| तत् | என்பது | | |

एष दाशरथी रामस्तिष्ठत्यद्रिरिवाचलः । इति श्रुत्वा ह्यनादृत्य लक्ष्मणं स निशाचरः ॥

अतिक्रम्य च सौमित्रिं कुम्भकर्णो महाबलः । राममेवाभिदुद्राव दारयन्निव मेदिनीम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|--------------|--------------------|
| दाशरथिः | “தசரதரின் திருமக | सः | அந்த |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [ஊராகிய | कुम्भकर्णः च | கும்பகர்ணனுள் |
| एषः | இதோ | सौमित्रिं | சுமித்ராதேவியின் |
| अद्रिः इव | மலையொப்ப | | புதல்வராகிய |
| अचलः | அசையாது | लक्ष्मणं | வசுந்தமணரை |
| तिष्ठति | நின்றுகொண்டிருக்க கின்றார்.” | अनादृत्य | பொருட்படுத்தாது |
| इति | என்பதை | अतिक्रम्य | தாண்டிச்சென்று |
| श्रुत्वा हि | கேட்டதுமே | मेदिनीं | பூமியை |
| महाबलः | மகா பலசாலியும் | दारयन् इव | பிணக்கின்றவன் போல் |
| निशाचरः | நிசாசரனுமாகிய | राम एव | ஸ்ரீராமரையே |
| | | अभिदुद्राव | எதிர்த்தொடினான். |

अथ दाशरथी रामो रौद्रमुखं प्रयोजनम् । कुम्भकर्णस्य हृदये ससर्ज निशिताञ्छरान् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|----------|---------------|
| अथ | அப்பொழுது | रीद्रं | க்ரூரமாய் |
| दाशरथिः | தசரதரின் திருமகனான | प्रयोजनं | ஆய்மந்திரித்த |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अस्य | அஸ்கரத்தையும் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | निशितान् | கூரிய |
| हृदये | மார்பில் | शरान् | பாணக்களையும் |
| | | ससर्ज | விடுத்தார். |

तस्य रामेण विद्वस्य सहसाभिप्रायतः । अङ्गारपित्राः कुदस्य सुखान्निश्वेरचिपः ॥

| | | | |
|------------|----------------|---------------|---------------|
| रामेण | சூரி ராமரால் | तस्य | அவனது |
| विद्वस्य | எய்யப்பட்டு | सुखान् | முனத்தினின்று |
| कुदस्य | கொடங்கொண்டு | अङ्गारपित्राः | தனவிரைகள் த்த |
| सहसा | விசைவாய் | अचिपः | நுவலகைகள் |
| अभिप्रायतः | எதிர்த்துவரும் | निश्वेरः | கொள்விரைந்தன. |

रामास्त्रविद्धो घोरं वै नद्वक्त्रसपुङ्गवः । अभ्यधावत संकुदो हरीन्विद्रावयन्रणे ॥१२८॥

| | | | |
|-----------------|---|------------|----------------------------|
| रामासपुङ्गवः | ராமாவிரை த்தமறவன் அவன் | संकुदः | கொடங்கொண்டவ |
| रामास्त्रविद्धः | சூரி ராமரால் பாணக்க வால் அடியுண்டவனாய் | रणे | போரில் [ராய்] |
| घोरे वै | மிகக் பயக்கரமாக | हरीन् | வானரர்களை |
| नद्वक् | எத்தமிட்டுக்கொண்டு | विद्रावयन् | கொளுட்டிக்கொண்டு |
| | | अभ्यधावत | எதிர்த்திதாடிவான் தான். |

तस्योरसि निमग्राश्च शरा बर्हिणवाससः । रेजुनीलाद्रिकटके वृत्यन्त इव बर्हिणः ॥१२९॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|--------------|------------------|
| तस्य | அவனது | शराः | பாணங்கள் |
| उरसि | மார்பில் | नीलाद्रिकटके | கருநிலையின் தாழ் |
| निमग्राः | பாய்த்த | वृत्यन्तः | ஆடும் [வகையில்] |
| बर्हिणवाससः च | மயில்தொகை கட்டப் பெற்ற | बर्हिणः इव | மயில்கொளை |
| | | रेजुः | விளக்களை. |

हस्ताच्चापि परिभ्रष्टा पपातोर्व्यां महागदा । आयुधानि च सर्वाणि विमार्कीर्यन्त भूतले ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|----------------|----------------|
| महागदा च अपि | பெருங்கைதாயும் | आयुधानि | ஆயுதங்கள் |
| हस्तात् | கைகளினின்று | सर्वाणि च | எல்லாமூலும் |
| परिभ्रष्टा | சுழுவளி | भूतले | பூமியில் |
| उर्व्यां पपात | பூமியில் விழுந்ததா. | विमार्कीर्यन्त | சுழுவளிமுந்தன. |

स निरायुधमात्मानं यदा मेने महाबलः । सुष्टिभ्यां चरणाभ्यां च चकार कदनं महत् ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-------------|-------------------|
| महाबलः | மகாபலகா விபாலன் | सुष्टिभ्यां | இருமுதுக்தனராலும் |
| सः | அவன் | चरणाभ्यां च | இருகால்களாலும் |
| आत्मानं | தன்னை | महत् | பெரும் |
| निरायुधं | ஆயுதமற்றவனாய் | कदनं | தகம்புத்தை |
| मेने यदा | அநிந்தவலையில் | चकार | கலை வித்தான். |

स वाणैरुतिविद्धाङ्गः क्षतजेन समुक्षितः । रुधिरं प्रतिसुखाव गिरिः प्रसवणं यथा ॥१३२॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|----------|---------------|
| सः | அவன் | रुधिरं | சூர்நீர்தை |
| वाणैः | பாணங்களால் | गिरिः | புறம்பில் |
| अतिविद्धाङ्गः | அங்கங்கலில் அடியுண்டவனாய் | प्रसवणं | அருவிவை |
| क्षतजेन | எத்தத்தால் | यथा | எவ்வண்ணமே |
| समुक्षितः | கலைந்தவனாய். | प्रसुखाव | அவ்வண்ணமே |
| | | | பெருக்கினான். |

स तीक्ष्णं च कोपेन रुधिरं च मूर्च्छितः । वानरान् राक्षसा तु शान्त्वा दन्वि परिधावति ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|-----------------|
| ச: | ஆவன் | வானஸந் | வானரர்களை யும் |
| तीक्ष्णं | கொடும் | ராஜஸந் | ஆரக்கர்களை யும் |
| कोपेन च | கொபத்தரலும் | रुधाव् | காடிக்களை யும் |
| रुधिरं च | ரத்தத்தரலும் | खादन् | தின்னுக்கொண்டு |
| मूर्च्छितः | கொழிதலைக்கொழிய | विपरिधावति | ஆலைத்தான். |

अथ शृङ्गं समाविश्य भीमं भीमपराक्रमः । विक्षेप राघमुद्दिश्य बलवानन्तकोपमः ॥१३४॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|---------------|---------------------|
| भीमपराक्रमः | பயங்கராப்ராதரப முற்றலிலும் | भीमं | பெரும் |
| बलवान् | பலவாலியும் | शृङ्गं | மலைச்சிகரமொன்றை |
| अन्तकोपमः | எமனை நிகர்த்தலலும் மான ஆவன் | समाविश्य | சுழந்தி |
| अथ | அப்பொழுது | राघं उद्दिश्य | ஸ்ரீராமரைக்குறித்து |
| | | विक्षेप | எறிந்தான். |

अप्राप्तमन्तरा रामः सप्तभिस्तैरजिह्वगैः । चिच्छेद् रामो धर्मात्मा शैलशृङ्गं महत्तदा ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------|------------------|
| रामः | அபிராமராகிய | तैः | ஆந்த |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவான | सप्तभिः | ஏழு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अजिह्वगैः | பாணக்களைக்கொண்டு |
| तदा | அப்பொழுது | अन्तरा | கடுவிலேயே, |
| महत् | பெரும் | अप्राप्तं | கிட்டவாராதபடி. |
| शैलशृङ्गं | மலைச்சிகரத்தை | चिच्छेद् | கிடைத்தவிட்டார். |

ततस्तु रामो धर्मात्मा तस्य वर्म महत्तदा । शरैः काञ्चनचित्राङ्गैश्चिच्छेद् पुरुषर्षभः ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------------|--------------------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | महत् | பெரும் |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவும் | वर्मं | கவசத்தை |
| पुरुषर्षभः | புருஷபாத்மலுமா | काञ्चनचित्राङ्गैः | பொண்ணுல் அழகிய உருப்புக்களை யுடைய |
| रामः तु | ஸ்ரீராமரும் [கிய | शरैः | பாணக்களால் |
| तदा | அப்பொழுது | चिच्छेद् | முறித்தெறிந்தார். |
| तस्य | அவனது | | |

तन्मेरुशिवराकारं द्योतमानमिव श्रिया । द्वे शते वानरेन्द्राणां पतमानमपातयन् ॥१३७॥

| | | | |
|---------------|----------------------------------|----------------|----------------------|
| मेरुशिखराकारं | மேரூஷிகராகாரத்தை நிகர்த்ததும் | तव | அது (கவசம்) |
| श्रिया | காந்தியால் | पतमानं | கிழேவிழுகின்றதாய் |
| द्योतमानं इव | நன்கு பிரகாசிக்கின் நதுமாகிய | वानरेन्द्राणां | வானரோத்தமர் களின் |
| | | द्वे शते | இருநூற்றவர்களை |
| | | अपातयन् | வீழ்த்திவிட்டது. |

तस्मिन्काले स धर्मात्मा लक्षणो वाक्यमत्र वीत् । कुम्भकर्णवधे युक्तो योगान्परिसृशन्वहन्॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|--------------|
| तरिசுந் | அந்த | யுக: | நீலிரஞ்சய் |
| काले | காலத்திலே | युग | கால |
| धर्मात्मा | தர்மம் தர்மம் வாசிய | योगान् | உபாயங்களை |
| सः | அந்த | परिसृशन् | கொடுப்பவராய் |
| लक्षणः | லக்ஷணம் | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| कुम्भकर्णवधे | கும்கர்ணவதின் | अवधीन् | பின்வருமாறு |
| | எனதரிலே | | மொழிக்தார்: |

नैवायं वानरान् राज्ञापि जानाति राक्षसान् । मत्तः शोषितगन्धेन स्वान्परांश्च खादति॥

| | | | |
|---------------|----------------|-------------|---------------------|
| राजन् | “மன்னவரே! | शोषितगन्धेन | சத்தவாற்றத்தால் |
| अयं एव | இவரேனா | मत्तः | கொடுக்காண்டவனாய் |
| वानरान् एव | வானரர்களையும் | स्वान् | தன் இனத்தார்களை |
| जानाति न | அறியவில்லை. | परां च | புறக்களையும் [யும் |
| राक्षसान् अपि | ஆரக்கர்களையும் | खादति | தின்முக்கொண்டிருக்க |
| न | அறியவில்லை. | | கொடுக்க. |

साध्वेनमधिरोहन्तु सर्वे ते वानरर्षभाः । पुथपाश्च यथा पुरुषास्तिष्ठन्स्य समन्तः ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------------|-------------------|
| ते | “அந்த | मुण्याः पूथपाः च | பெரியான சேனைத்தலை |
| वानरर्षभाः | வானரோத்தமர்கள் | | வர்கள் கண்ணம் |
| सर्वे | எல்லோரும் | अस्य | இவனுக்கு |
| एते | இவற்றீது | समन्तः | எல்லாக்கಡிலும் |
| अधिरोहन्तु | ஏறட்டும். | सावु | ஊக்காதவாய் |
| यथा | அன்வண்ணமே | तिष्ठन्तु | நிற்கட்டும். |

अप्ययं दुर्मतिः काले गुरुभारमधीडितः । मपत्नराक्षसो भूमौ नान्यान्दृश्यान्पुवङ्गमान् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|------------|----------------------|
| काले | “அச்சமயத்திலே | भूमौ | பூமியில் |
| अयं | இந்த | मपत्न | என்றாகின்றவனாய் |
| दुर्मतिः | மனையனாகிய | अस्यान् | மற்ற |
| राक्षसः अपि | ஆரக்கனும் | पुवङ्गमान् | கொடுக்களை |
| गुरुभारमधीडितः | பெரும்பாசத்தால் | अपान् न | கொடுக்காதிருப்பான்.” |
| | அழுக்கப்பட்டவனாகி | | |

तस्यं तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रस्य धीमतः । ते समाह्वयहुं ह्यः कुम्भकर्णं पुवङ्गमाः ॥१४२॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|----------------|
| ते | அந்த | वचनं | கொழிபய |
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| धीमतः | புத்திமையனாகிய | ह्यः | கவிக்கொண்டவர் |
| तस्य | அந்த | | கனாய் |
| राजपुत्रस्य | ராஜபுத்திரரால் | कुम्भकर्णं | கும்கர்ணம்மீது |
| तान् | அந்த | अमाह्वयः | எழிஞ்சிகள். |

कुम्भकर्णस्तु संकुद्धः समाखुडः पुवङ्गवैः । व्यधूनयत्तान्वेगेन दुष्टहस्ताव हस्तिपान् ॥ १४३ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------|------------------|
| ஹவங்குமே: | கும்பகர்ணன் | சுகுஹரீ | ஐயத்தயானையானது |
| समाखुडः | ஏதப்பெற்ற | हस्तिपान् | யானையப்பாக்களை |
| कुम्भकर्णोः तु | கும்பகர்ணனேனிலவரி | इव | எவ்வண்ணமே, |
| संकुद्धः | கொடுக்கொண்டவ | | அவ்வண்ணமே |
| तान् | அவர்களை | वेगेन | வினாந்து |
| | | व्यधूनयत् | உதறித்தள்ளினான். |

तान्दृष्ट्वा निर्धुतान् रामो दृष्टोऽयमिति राक्षसः । समुत्पपात वेगेन धनुस्तपमाददे ॥ १४४ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|---------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दृष्टः | அவ்வடங் |
| तान् | அவர்களை | इति | என்று நினைத்து |
| निर्धुतान् | உதறித்தள்ளப்பட்ட | वेगेन | ஆக்கிரத்துடன் |
| | வர்களாய் | समुत्पपात | தூள் கரியெழுந்தார். |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | उत्तमं | சிறந்த |
| अयं | இந்த | धनुः | கில்லை |
| राक्षसः | அரக்கன் | आददे | ஊகப்பற்றினார். |

क्रौञ्चान्निक्षण्यो वीरो निर्दहन्निव चक्षुषा । राघवो राक्षसं रोषादभिदुद्राव वेगितः ॥

यूयवान् हर्षयन् सर्वान् कुम्भकर्णभयार्दितान् ॥ १४५ ॥

| | | | |
|---------------------------|---------------------------------------|------------|-------------------------------|
| वीरः | வீரராகிய | यूयवान् | சேகனைத்தலைவர்கள் |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| क्रौञ्चान्निक्षण्यः | கொடித்தால் கண்கள் | हर्षयन् | உத்தராகப்படுத்திக் |
| | கிவந்தவராய் | | கொண்டு |
| चक्षुषा | கண்ணால் | राक्षसं | அரக்கரை |
| निर्दहन् इव | எரிப்பவர்போலாகி | रोषात् | கொடுத்துடன் |
| कुम्भकर्ण- भयार्दितान् | கும்பகர்ணனிடம் பயங்கொண்டவர் களை | वेगितः | வினாந்து |
| | | अभिदुद्राव | எதிர்த்துக் கொல்ல ஆற்றார். |

स चापमादाय भुजङ्गकल्पं दृडज्यमुग्रं तपनीयचित्रम् ।

हरीन्समाधास्य समुत्पपात रामो निवद्धोत्तमतृणवाणः ॥ १४६ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------------------|--------------------------------------|
| सः | அந்த | चापं | கில்லை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | आदाय | ஊக்கிக்கொண்டு |
| भुजङ्गकल्पं | சர்ப்பத்திற்கொப்பா | निवद्धोत्तम- तृणवाणः | சிறந்த அம்பறுத்து ணியில் பரணங்களை |
| | ஊதும் | | போட்டுக்கொண்டு |
| दृडज्यं | அறுநூறுநூற்றதும் | हरीन् | வானரர்களை |
| तपनीयचित्रं | பொன்கொண்டு | समाधास्य | தேற்றியிட்டு |
| | அழகியதாய் | समुत्पपात | வதியில் வின்றார். |
| उग्रं | பயங்கரமுடான | | |

स वानरगणैस्सैस्तु वृत्तः परमदुर्जेयः । लक्ष्मणानुचरो रायः संमतस्थे महाबलः ॥ १४७ ॥

| | | | |
|------------------|---|----------|------------------|
| परमदुर्जेयः | விவிலந்திகரீய | वै: | அந்த |
| महाबलः | மகாபலவரீயம் | वानरणैः | வானரக்கட்டல் |
| लक्ष्मणानुचरो तु | லக்ஷ்மணர் கூடலிருக்க கம்பிபித்தவமுதலான | वृत्तः | குழம்பட்டவராய் |
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | संमतस्थे | அருகில் வந்தார். |

स ददर्श महात्मानं किरीटिनपरिदमम् । शोणितानुसर्वाङ्गं कुम्भकर्णं महाबलम् ॥ १४८ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-------------------|---|
| सः | அவர் | किरीटिन | கிரீடம் புனைந்தவனும் |
| महात्मानं | மேருருவம் படைத்த வனும் | शोणितानुसर्वाङ्गं | { எல்லா அவயவங்களும் ஆகும் சத்தம் தேவயந்தவனுமான |
| अभिदमं | சத்ருக்களை யடக்கும் | कुम्भकर्णं | குப்பகர்ணனை |
| महाबलं | மகாபலவரீயம் | इदं | பார்த்தார். |

सर्वान्समभिधावन्तं यथा रुष्टं दिशागजम् । मार्गमाणं हरीन्कुट्टं राक्षसैः परिवारितम् ॥

विन्ध्यमन्दरसङ्घाशं काञ्चनाङ्गदभूषणम् । सखन्तं रुधिरं वक्रादूर्ध्वमेवपिवोल्यितम् ॥

जिह्वया परिलिखन्तं शोणितं शोणितेश्वरम् । सूदनं वानरानाकं कालान्तकयमोपमम् ॥

तं दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं प्रदीप्तानलवर्चसम् । विस्फारयामास तदा कार्मुकं पुरुषपथः ॥ १५२ ॥

| | | | |
|--------------------------|---|-------------------|---|
| पुरुषपथः | புருஷபாதத்தையாலும் | सखन्तं | கக்குபவனும் |
| तदा | அப்பொழுது [அவர், | जिह्वया | காக்கினால் |
| रुष्टं | சினங்கொண்ட | शोणितं | சத்தத்தை |
| दिशागजम् | திக்கஜம் | परिलिखन्तं | கக்கிக்கொண்டிருப்ப வனும் |
| यः | என | शोणितेश्वरं | சத்தம் போன்றவன் அருடைவனும் |
| सर्वान् | யாவனாயர் | कालान्तकमोरसं | காலாந்தகத்தை யமனை கிசுத்து |
| समभिधावन्तं | சாதிர்ந்திதாடுபவனும் | वानरानाकं | வானரச்சினைவைய |
| कुट्टं | கிளங்கொண்டு | सूदनं | சூடன்பவனும் |
| हरीन् | வானரர்களை | प्रदीप्तानलवर्चसं | { திட்டுத்தகிட்டு யுட்க்கனியை கிசுத்த நுளிபுடைய வனுமான |
| मार्गमाणं | மேடுபுறானும் | तं | அந்த |
| राक्षसैः | ஆசுக்கர்களால் | राक्षसपथं | அந்த விளாத்தமனை |
| परिवारितं | குழம்பட்டவரால் | पुरुष | பார்த்து |
| विन्ध्यमन्दर- सङ्घाशं | விந்நியமண்டலமும் மேருமலைமையாம் விவந்தமையாம் | कार्मुक | கிசுலை |
| काञ्चनाङ्गदभूषणं | பொக்கோள்களை கன் சூடனிடமும் | विस्फारयामास | விவிரிப்பிட்டு கிசுத்தார். |
| रुधिरं | இளம்பரி | | |
| वोल्यितं इव | வலியிடுதல் போல | | |
| वक्रादूर्ध्व | வாகிசுத்து | | |
| एव | மத்தத்தை | | |

स तस्य चापनिर्घोषात्कुपितो राक्षसर्षभः । अमृष्यमाणस्तं घोषमभिद्रुद्राव राघवम् ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|--------------|--------------------|
| सः | அந்த | तं | அந்த |
| राक्षसर्षभः | ராசுஷஸேவாத்தமன் | घोषं | ஒலியை |
| तस्य | அவரது | अमृष्यमाणः | பொறுக்காதவனாய் |
| चापनिर्घोषात् | கிழிசேவாசபரல் | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| कुपितः | கேடபக்கொண்டு | अभिद्रुद्राव | எதிர்த்தேதாடினான். |

ततस्तु वातोद्धतमेघकल्पं भुजङ्गराजोत्तमभोगवाहुम् ।

तमापतन्तं धरणीधराभमुवाच रामो युधि कुम्भकर्णम् ॥ १५४ ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|-------------|-----------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | युधि | போரில் |
| तवः | உய்ப்பொழுது | आपतन्तं तु | எதிர்த்துவருகின்ற |
| धरणीधरामं | மண்ணையடிகர்ந்தவனும் | | வனுமான் |
| भुजङ्गराजोत्तम- भोगवाहुं | சிறந்த ஆதிசேவனை டிகர்ந்த கைகளை மைந் தவனும் | तं | அந்த |
| | | कुम्भकर्णम् | கும்பகர்ணனைப் பார்ந்து |
| वातोद्धतमेघकल्पं | காற்றினால் மேக துண்ட மேகத்தை டிகர்ந்து | उवाच | பின் வருமாறு புகன்றார் : |

आगच्छ रक्षोधिप मा विषादमवस्थितोऽहं प्रगृहीतचापः ।

अवेहि मां शक्रसपन्न रामं मया सुहृताद्भविता विचेताः ॥ १५५ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|-----------|-----------------------|
| रक्षोधिप | “அரக்கத்தலைவ ! | रामं | ராமன் (என்று) |
| विषादं | சிரமம் | अवेहि | அறிவாயாக. |
| मा आगच्छ | உருகிடு. | शक्रसपन्न | இந்திரசத்ருகை ! |
| अहं | நான் | सुहृतां | சிறிதுநேரத்தில் |
| प्रगृहीतचापः | விலகிக்கொண்டு | मया | என்னால் |
| अवस्थितः | எதிர்பார்ந்து நிற்கின் | विचेताः | பிரக்ஷைமுடிமுந்தவனாய் |
| मां | என்னை [நேன். | भविता | ஆகிவிடுவாய்.” |

रामोऽयमिति विज्ञाय जहास विकृतस्वनम् । अभ्यधावत संक्रुद्धो हरीन्विद्रावयन्रणे ॥

पातयन्निव सर्वेषां हृदयानि वनौकसाम् ॥ १५६ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|------------|--------------------------------|
| संक्रुद्धः | டிகச்சினந்த அவன் (கும்பகர்ணன்) | वनौकसां | வானரர்கள் |
| अथ रामः | “ இவன் ராமன் ” | सर्वेषां | பாவர்சனனுடயவும் |
| इति | என்று | हृदयानि | ஒய்குதயக்களை |
| विज्ञाय | அறிந்து | पातयन् इव | பிளக்கச்செய்கின்ற வன்போலாய் |
| विकृतस्वनं | அவலக்ஷணக்குர ளும் | हरीन् | வானரர்களை |
| जहास | கிரித்தான். [டன் | विद्रावयन् | வெருட்டிக்கொண்டு |
| रणे | போரில் | अभ्यधावत | எதிர்த்தான். |

पहस्य विकृतं भीमं स मेघस्तनितोपपम् ।

சஃ அந்த
 महातेजा: போராந்தல் படைத்த
 कुम्भकर्णः சும்பகர்ணன்
 विकृतं விகரமாய்
 भीमं பயங்கரமாய்

नाहं विराधो विज्ञेयो न कबन्धः खरो न च ।

அஃ "நான்
 विराधः வீராதனாய்
 विज्ञेयः न நினைக்கப்படக் கூடாது.
 कबन्धः கபந்தனாயும்
 न நினைக்கப்படக்
 खरः கரனாகவும் [கடாது.
 न நினைக்கப்படக் கூடாது.

पश्य मे मुद्गरं घोरं सर्वकालायसं महत् ।

மே "எனது
 सर्वकालायसं முழு இரும்பாண்டன
 महत् பெரியதும்
 घोरं பயங்கரமானதுமான
 मुद्गरं முத்திரையுத தலை
 पश्य பாராய்.

विकर्णनास इति मां नावज्ञातुं त्वमर्हसि । स्वल्पाऽपि हि न मे पीडा कर्णनासाविनाशनानु॥

மா "என்னை
 विकर्णनासः "காதுகளும் மூக்கும்
 इति என்று [இழந்தவன்
 त्वं நீ
 अवज्ञातुं அறியாமல் அறியா
 अर्हसि न கூடாது.

दर्शयेद्वाकुशादूर्ध्वं वीर्यं गात्रेषु मे लघु ।

दर्शयवाकुशादूर्ध्वं "இகழ்வாகுவும்சய்
 मे எனது [புலியே!
 गात्रेषु அவயனங்கொண்ட
 लघु கொஞ்சம்
 वीर्यं வீரதாய் தலை

कुम्भकर्णो महातेजा राघवं वाक्यमब्रवीत् ॥

மேக இடக்கு நிகராய்
 महस्य சிரித்துவிட்டு
 राघवं ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து
 वाक्यं ஒரு சொல்லை
 अब्रवीत् பின்வருமாறு
 சொன்னான்:

न वाल्या न च मारीचः कुम्भकर्णोऽहमागतः॥

வாலி வாலியாகவும்
 न நினைக்கப்படக் கூடாது.
 मारीचः च மாரசனாகவும்
 न நினைக்கப்படக் கூடாது.
 आगतः வந்திருக்கும்
 अहं च நானே
 कुम्भकर्णः சும்பகர்ணன்.

अनेन निर्मिता देवा दानवाश्च पुरा मया ॥

अनेन च இதனால்தான்
 पुरा முன்பு இருந்தால்
 देवा: தேவர்களும்
 दानवा: அசுரர்களும்
 मया என்னால்
 निर्मिता: முற்படிக்கப்பட்டார்
 கள்.

विकर्णनासा इति मां नावज्ञातुं त्वमर्हसि । स्वल्पाऽपि हि न मे पीडा कर्णनासाविनाशनानु॥

हि "என்னால்
 कर्णनासाविनाशनानु "காதுகளும் மூக்கும்
 - "கொண்டால்
 स्वल्पा अपि கொஞ்சம்கூட
 पीडा கொடாமல்
 मे न எனக்கு துன்பம்

ततस्त्वां भक्षयिष्यामि दृष्ट्वांरूपविक्रमम् ॥

दर्शय காட்டுவாயாக
 ततः அதன்மேல்
 दृष्ट्वांरूपविक्रमं ஆண்டவனுமாந்தலும்
 त्वां भक्षयिष्यामि உன்னை புசிப்பேன் "

स कुम्भकर्णस्य वचो निशम्य रामः सुपुङ्गवान्विससर्ज वाणान् ।

तैराहतो वज्रसमप्रवेगे न चुक्षुभे न व्यथते सुरारिः

॥ १६२ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|----------------------|
| ச: ராம: | அந்த ஸ்ரீராமர் | வஜ்ரசமப்ரவே: | வஜ்ரசமப்ரதத்தை நிகர் |
| कुम्भकर्णस्य | சும்பகர்ணனது | तै: | த்த வேகம் படைத்த |
| वचः निशम्य | வார் தனதையக்கேட்டு | आहतः | அவைகளால் |
| सुपुङ्गवान् | கூரிய தானிகளுற்ற | सुरारिः | அடியுண்ட |
| वाणान् | பாணங்களை | चुक्षुभे न | தேவசத்த (சும்பகர் |
| विससर्ज | விடுத்தார். | व्यथते न | சலிக்கலில்லை; [ணன்] |
| | | | பிண்டயுறவில்லை. |

यैः सायकैः सालवरा निकृत्ता वाली इतो वानरपुङ्गवश्च ।

ते कुम्भकर्णस्य तदा शरीरे वज्रोपमा न व्यथयापचक्रुः

॥ १६३ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------------|-------------------|
| यैः सायकैः | எந்தக் கணைகளால் | वज्रोपमा: | வஜ்ரசமப்ரதத்தை |
| सालवरा: | சிறந்த ஆச்சாரங்கள் | तै: | அவைகள் [நிகர் த்த |
| निकृत्ता: | அறுத்துச் சாய்க்கப்பட்டனவே | तदा | அப்பொழுது |
| वाली च | வாரணத்தமனாகிய | कुम्भकर्णस्य | சும்பகர்ணனது |
| इतः | வரலியும் | शरीरे | சரீரத்தில் |
| | வதைக்கப்பட்டானே | व्यथयापचक्रुः न | பிண்டயுண்டாக்க |
| | | | வில்லை. |

स वारिधारा इव सायकांस्तान्पिक्वच्छरीरेण महेन्द्रशत्रुः ।

जघान रामस्य शरप्रवेगं व्याविध्य तं मुद्गरमुग्रवेगम्

॥ १६४ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------|----------------|
| महेन्द्रशत्रुः | தேவெந்திரசத்தரு | तं | அந்த |
| सः | அவன் [வாகிய] | शरप्रवेगं | பயங்கரவேகமுற்ற |
| ताम् सायकान् | அந்த பாணங்களை | मुद्गरं | முக்கராயுதத்தை |
| वारिधारा: | ஐவயர்வதங்களை | व्याविध्य | கழற்றி |
| इव | எவ்வாறே, அங் | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| शरीरेण | சரீரத்தில் [வாறே | शरप्रवेगं | பாணநிகரத்தை |
| पिबन् | பருகிக்கொண்டு | जघान | தரக்கொண். |

ततस्तु रक्षः क्षतजानुलिप्तं विश्वासने देवमहाचमूनाम् ।

विख्याध तं मुद्गरमुग्रवेगं विद्रावयामास चमूं हरीणाम्

॥ १६५ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|--------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | उग्रवेगं | கொடியவேகம் |
| देवमहाचमूनां | சிறந்த தேவகளை | तं | கொண்ட |
| विशासने | கணையும் | मुद्गरं | அந்த |
| क्षतजानुलिप्तं | வெருட்டியடித்தவ | विख्याध | முக்கராயுதத்தை |
| | னும் | हरीणां | விசியடித்தான். |
| रक्षः तु | ரத்தம் தேவந்தவனு | चमूं | வானரர்களின் |
| | பாண | विद्रावयामास | சேகிணைய |
| | அரக்கனும் | | வெருட்டி ஓட்டினான். |

वायव्यमादाय ततो वराहं रामः प्रचिक्षेप निशाचराय ।

समुद्रं तेन जघान बाहुं स कृत्वाहुस्तुमुलं ननाद्

॥ १६६ ॥

| | | | |
|------------|---|-----------|---------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तेन | அந்தனால் |
| ततः | அப்பொழுது | समुद्रं | முக்கராயுதத்தோடு |
| वायव्यं | வாயுமந்திரத்தால் அபிமந்திரிக்கப்பட்ட | बाहुं | கை வுன்றை [கடிய |
| वराहं | ஓர் சிறந்த ஆஸ்திரத் | जघान | அறுத்தார். |
| आदाय | தொடுத்த [கை | सः | அவன் |
| निशाचराय | அரக்கன்பீது | कृत्वाहुः | கையறுக்கப்பட்டவ |
| प्रचिक्षेप | விடுத்தார். | स्तुमुलं | நிகப்பெரியதாய் [ஓய் |
| | | ननाद् | கச்சலிட்டான். |

स तस्य बाहुर्गिरिशृङ्गकल्पः समुद्रो राघवबाणकृत्तः ।

पपात तस्मिन्हरिराजसैन्ये जघान तां वानरवाहिनीं च

॥ १६७ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|---------------|------------------|
| तस्य | அவனது | हरिमन् | அந்த |
| सः बाहुः | அந்தக் கை | हरिराजसैन्ये | சகர்வனது கையத் |
| समुद्रः | முக்கராயுதத்துடன் | | தில் |
| राघवबाणकृत्तः | ஸ்ரீராமரது பாணத் | पपात | வீழ்த்தது. |
| | தால் அறுப்புண்டு | तां | அந்த |
| गिरिशृङ्गकल्पः | பர்வதசிகரத்தை | वानरवाहिनीं च | வானரச்சேனையையும் |
| | விசுத்ததால் | जघान | மாய்த்தது. |

ते वानरा भयहतावशेषाः पर्यन्तमाश्रित्य तदा विषण्णाः ।

प्रवेपिताङ्गं ददृशुः सुघोरं नरेन्द्रक्षोधिपसन्निपातम् ।

॥ १६८ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------------|---|
| भयहतावशेषाः | தாக்கி மாய்க்கப்பட்டு | सुघोरं | மிகக்கடுமையான |
| ते | அந்த [எஞ்சிய | नरेन्द्रक्षोधिप- | புருஷோத்தமருக்கும் ராசாஸைத்தலைவனுக் கும் நடந்த போரை |
| वानराः | வானரர்கள் | सन्निपातं | |
| तदा | அப்பொழுது | प्रवेपिताङ्गं | உடலெடுக்க |
| पर्यन्तं | ஓர்ப்பிரதேசத்திற்கு | दृशुः | பார்த்துக்கொண்ட |
| आश्रित्य | சென்று | | ருந்தனர். |
| विषण्णाः | வருத்தமுற்றவர்களால் | | |

स कुम्भकर्णोऽस्त्रनिकृत्तबाहुर्दहाशिकृत्ताश्च इवाचलेन्द्रः

उत्पाटयामास करेण वृक्षं ततोऽभिदुद्राव रणे नरेन्द्रम्

॥ १६९ ॥

| | | | |
|--------------------|------------------|-------------|---------------------|
| सः | அந்த | करेण | ஓர் கையால் |
| कुम्भकर्णः | சும்பகர்ணன் | ततः | அப்பொழுது |
| निकृत्ताश्च | கொம்பெயர்க்கப் | वृक्षं | மரமொன்றை |
| महान् | பெரிய [பட்ட | उत्पाटयामास | நிடுக்கிக்கொண்டான். |
| अचलेन्द्रः इव | மலையாகபோல் | नरेन्द्रं | புருஷோத்தமரை |
| अस्त्रनिकृत्तबाहुः | ஆஸ்திரத்தால் கைய | रणे | போரில் |
| | றுப்புண்டவனாகி | अभिदुद्राव | எதிர்த்தான். |

स तस्य बाहुं सहसालवृक्षं समुद्यते पञ्चगभोगकल्पम् ।

ऐन्द्रास्त्रयुक्तेन जघान रामो बाणेन जाम्बूनदचित्रितेन

॥ १७० ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|---------------------|---|
| ச: ராம: | அந்த ஸ்ரீராமர் | ऐन्द्रास्त्रयुक्तेन | இந்திரமந்திரத்தால் அபிரமந்திரிக்கப்பட்ட டகும் |
| तस्य | அவனது | जाम्बूनदचित्रितेन | |
| समुद्यते | உயர் த்தப்பட்டதும் | बाणेन | பாணத்தால் |
| पञ्चगभोगकर्त्रा | சர்ப்ப உட்கை நிகர்த்த | जघान | அறுத்தார். |
| बाहुं | கைகைய [துமரன் | | |
| सहसालवृक्षं | ஸாலலிநுகந்த துடன் கூட | | |

स कुम्भकर्णस्य भुजो निकृत्तः पपात भूमौ गिरिसन्निकाशः ।

विवेष्टमानोऽभिजघान वृक्षाञ्छैलान्छिलान् बानरराक्षसांश्च

॥ १७१ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------------|---------------------------------|
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனது | विवेष्टमानः | தான் ளிப்புரளுகின்ற |
| स: | அந்த | वृक्षान् | மரங்களையும் [தரய் |
| निकृत्तः | அறுக்கப்பட்ட | शैलान् | மலைகளையும் |
| भुजः- | கையானது | शिलाः | பாறைகளையும் |
| भूमौ | பூமியில் | बानरराक्षसान् च | வானரர்களையும் அரக்கர்களையும் |
| गिरिसन्निकाशः | மலைகைய நிகர்த்து | अभिजघान | மேல தித்தாக்கியது. |
| पपात | விழுந்தது. | | |

तं छिन्नबाहुं समवेक्ष्य रामः समापतन्तं सहसा नदन्तम् ।

हावर्धचन्द्रौ निशितौ प्रगृह्य चिच्छेद पादौ युधि राक्षसस्य

॥ १७२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|-------------|---------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | निशितौ | கூரிய |
| तं | அவனை | द्वौ | இரண்டு |
| छिन्नबाहुं | கைகையறுந்து | वर्धचन्द्रौ | அந்தசந்தர்பாணங் கடுத்து [களை |
| नदन्तं | கத்திக்கொண்டு | प्रगृह्य | பொசில் |
| सहसा | கிணர்ந்து | युधि | போரில் |
| समापतन्तं | எதிர்த்துவருகின்ற வளைய | राक्षसस्य | ராஷஸனது |
| समवेक्ष्य | கவனித்து | पादौ | இருகால்களையும் |
| | | चिच्छेद | அறுத்துத் தள்ளினார். |

तौ तस्य पादौ प्रदिशो दिशश्च गिरीन्गुहाश्चैव महार्णवं च ।

लङ्कां च सेनां कपिराक्षसानां विनादयन्तौ विनिपेतुश्च

॥ १७३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------------|--------------------------|
| तस्य | அவனது | महार्णवं च | பெரும் கடலையும் |
| तौ | அந்த | लङ्कां च | இலங்கையையும் |
| पादौ | இருகால்களும் | कपिराक्षसानां | காணரா கடிணர் |
| दिशः | திக்குகளையும் | सेनां च | சேனையையும் [களின் |
| प्रदिशः च | விதிக்குகளையும் | विनादयन्तौ | ஊரையிடச்செய்து கொண்டு |
| गिरीन् च | மலைகளையும் | विनिपेतुः | கீழே விழுந்தனர். |
| गुहाः एव | குகைகளையும் | | |

निकृत्तवाहुर्विनिकृत्तपादो विदार्य वक्त्रं बहवामुखाभम् ।
दुद्राव राणं सहसाऽभिगर्जेन्नाहुर्वथा चन्द्रमिवान्तरिक्षे ॥ १७४ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|------------|-----------------------|
| निकृत्तवाहुः - | கைகளை நுட்பிட்ட அகலன் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| विनिकृत्तपादः | கால்களுமெடுபட்ட | अन्तरिक्षे | ஆகாயத்தில் |
| | வண்ப | राहुः | ராகு |
| बहवामुखाभं | வடவா கனியின் | चन्द्रं | சந்திரனை |
| | முகத்தை திகர்த்த | वथा | எவ்வண்ணமோ, |
| वक्त्रं | வாயை | इव | அவ்வண்ணமே |
| विदार्य | விரித்தா | सहसा | விசைந்து |
| अभिगर्जेन् | வாழித்துநெகிசாண்டு | दुद्राव | எதிர்த்து நகர்த்தான். |

अपूर्यत्तस्य मुखं शितायै रामः शरैर्हेमपिनद्धपुङ्खैः ।
स पूर्णवक्त्रो न शशाक वक्तुं चुकृज कृच्छ्रेण मुमाह चापि ॥ १७५ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------|--------------|-----------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | पूर्णवक्त्रः | முழுத்த வாயற்றவர் |
| तस्य मुखं | அவனது வாயை | वक्तुं | பேச [ண்ப] |
| शितायैः | கரிய தூனிகளுற்ற | शशाक न | முடியவில்லை. |
| हेमपिनद्धपुङ्खैः | பெயர்ச்சிறி பூண்ட | कृच्छ्रेण | பிச்செய்த தூட்டன் |
| शरैः | கணைகளால் | चुकृज | கீச்சென் துகத்தினுள். |
| अपूर्यत् | நிரப்பினார்: | अपि च | பின்னரோ |
| सः | அவன் | मुमाह | முர்க்கையற்றான். |

अथाददे सूर्यमरीचिकल्पं स ब्रह्मदण्डान्तककालकल्पम् ।
अरिष्टमैन्द्रं निशितं सुपुङ्खं रामः शरं मारुततुल्यवेगम् ॥ १७६ ॥

| | | | |
|------------------------------|--|----------------|-----------------------------------|
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | निशितं | கரியதும் |
| सूर्यमरीचिकल्पं | சூரியசிரணங்களாகக் கொப்பாண்டதும் | सुपुंखं | பெயர்ச்சுறள்ளதும் |
| ब्रह्मदण्डान्तक- कालकल्पं | பிரம்மதண்டத்தையும் வயலையும், முத்திராரையும் திகர்த்ததும் | मारुततुल्यवेगं | காற்றை திகர்த்த வேக கன்கொண்டதுமான |
| अरिष्टं | கொடியதும் | शरं | தீர்திர அஸ்திரத்தை |
| | | अथ | அப்பொழுது |
| | | आददे | எடுத்தார். |

तं वज्रजाम्बूनदचारुपुङ्खं भदीससूर्यज्वलनप्रकाशम् ।
महेन्द्रवज्राशनितुल्यवेगं रामः प्रचिक्षेप निशाचराय ॥ १७७ ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|--------------------------------|--|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | महेन्द्रवज्राशनि- तुल्यवेगं | இந்திரனது வஜ்ராயுதத்தையும், ஜீபையை யுட திகர்த்த வேக முற்றதுமான |
| वज्रजाम्बूनद- चारुपुङ्खं | வைரமுடும் தங்கமுடும் மிளறக்கப்பெற்று அழகிய பிடியற்றதும் | तं | அதை (கணையை) |
| भदीससूर्यज्वलन- प्रकाशं | தங்கமும் சூரியனுடைய வாயும், அகனியுடைய வும் ஒளிவொண்டதும் | निशाचराय | அரக்கன் பீது |
| | | प्रचिक्षेप | விடுத்தார். |

स सायको राघवबाहुचोदितो दिशः स्वभासा दश संपकाशयन् ।

सधूमवैश्वानरदीप्तदर्शनो जगाम शक्राशनिवीर्यविक्रमः

॥ १७८ ॥

| | | | |
|----------------|--|---------------|--|
| राघवबाहुचोदितः | ஸ்ரீராமரது கையால் கிடுக்கப்பட்டதும் | दश | பத்து |
| शक्राशि- | இந்திரன் துவஜராயுத த்திற்குச் சமமான ன வீர்யமுடைய கிளை யும் கொண்ட துமான் | दिशः | திக்குகளை |
| वीर्यविक्रमः | | संपकाशयन् | இலங்கச்செய்து கொண்டு |
| सः | அந்த | सधूमवैश्वानर- | புகையுடன் கூடிய அக் |
| सायकः | பாணமானது | दीप्तदर्शनः | ளினைய நிகர்த்து ஜ்வ ளிக்கும் தோற்றமு டையதாய் |
| स्वभासा | அதன் து காத்தியால் | जगाम | சென்றது. |

स तन्महापर्वतकूटसन्निभं विवृत्तदंष्ट्रं चलचारुकुण्डलम् ।

चकर्त रक्षोधिपतेः शिरस्तथा यथैव वृत्रस्य पुरा पुरंदरः

॥ १७९ ॥

| | | | |
|--------------------|---|----------|-----------------------|
| सः | அந்த (பாணமானது) | तन् | அந்த |
| रक्षोधिपतेः | ராக்ஷஸத்தலைவனது | शिरः | கிரைவை |
| महापर्वतकूटसन्निभं | பெரும் பர்வதகிரைத் திற்கு நிகரானதும் | पुरा | முன்னொருகால் |
| विवृत्तदंष्ट्रं | கெளரியில் வீண்ட பற் களுற்றதும் | पुरन्दरः | இந்திரன் |
| चलचारुकुण्डलं | ஆடும் அழகிய குண் டல்களுற்றதுமான் | वृत्रस्य | விரூத்ராகரணுடைய தை |
| तथा | | यथा एव | எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| | | चकर्त | அறுத்துத்தள்ளியது. |

तद्रामबाणाभिहतं पपात रक्षःशिरः पर्वतसन्निकाशम् ।

वभञ्ज चर्यागृहगोपुराणि प्राकारमुच्चं तमपातयच्च

॥ १८० ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|------------------|--------------------------------------|
| तन् | அந்த | चर्यागृहगोपुराणि | கரைய்கிடுகிகளையும் கோபுரங்களையும் |
| रक्षःशिरः | ராக்ஷஸனு தலை | वभञ्ज | இடித்துத் தள்ளியது. |
| रामबाणाभिहतं | ஸ்ரீராமரது பாணத் தால் அறுப்புண்டு | उच्चं | உன்னதமான |
| पर्वतसन्निकाशं | படுகையை நீகர்த்து | तं | அந்த |
| पपात | கிழுந்தது. | प्राकारं च | மதற்கலகாரயும் |
| | | धरातयत् | கீழ்த்திவிட்டது. |

तच्चातिकायं हिमवत्प्रकाशं रक्षस्ततस्तोयनिधौ पपात ।

आहान्वरान्वानवरान्भुजङ्गान्मर्मदं भूमिं च तदा विवेश

॥ १८१ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | पपात | கீழ்த்தான். |
| अतिकायं | பெருடலுற்றவனும் | व्रान् आहान् | பெரும் முதலைகளையும் |
| हिमवत्प्रकाशं | ஹிமவடகையை நிகர்த்த | भीनवान् | பெரும் மீன்களையும் |
| तन् | அந்த [வனுமான் | भुजङ्गान् च | பாம்புகளையும் |
| रक्षः च | அரக்கனும் | मर्मदं | மொதிரணம். |
| सोपनिधौ | சமுத்திரத்தில் | ततः | பின்னர் |
| | | भूमिं विवेश | பூமிக்குள் சென்றான். |

तस्मिन्हते ब्राह्मणदेवज्ञौ महाबले संयति कुम्भकर्णे ।
चचाल भूर्भूमिधराश्च सर्वे हर्षाच्च देवास्तुमुञ्चं पणोदुः

॥ १८२ ॥

| | | | |
|-----------------|---|------------|------------------|
| तस्मिन् | அந்த | भूः | பூமியும் |
| ब्राह्मणदेवज्ञौ | { பிராமணர்களுக்கும் தேவர்களுக்கும் ரத்ருவாசிய | सर्वे | எல்லா |
| महाबले | மகாபலம்மீயவா | भूमिधराः च | பர்வதங்களும் |
| कुम्भकर्णे | கும்பகர்ணன் | चचाल | அவாவற்றன. |
| संयति | பேரில் | हर्षाच्च | ஸந்தோஷத்தால் |
| हते | மறண்ட அளவில் | देवाः च | தேவர்களும் |
| | | तुमुञ्चं | மிக அதிகமாய் |
| | | पणोदुः | ஆரவாரித்தார்கள். |

ततस्तु देवर्षिपहर्षिपन्नगाः सुराश्च भूतानि सुपर्णगुहकाः ।
सयक्षगन्धर्वगणा नभोगताः महर्षिता शयपनाक्रमेण

॥ १८३ ॥

| | | | |
|---------------------------|------------------------------------|-----------------|------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | सुपर्णगुहकाः तु | சுபர்ணர்களுக்கும் குழந்தைகளுக்கும் |
| देवर्षिपहर्षि- पन्नगाः | { தேவரிஷிகளும் பகர்ஷிகளும் பன்னகர் | नभोगताः | ஆகாயத்திலிருந்து கொண்டு |
| सुराः च | தேவர்களும் [களும் | शयपनाक्रमेण | ஸீரமரது பிரதாபத்தால் |
| भूतानि | பூதங்களும் | महर्षिताः | ஆனந்தநிகண்டார் கள். |
| सयक्षगन्धर्वगणाः | யக்ஷர்களும் கந்தர்வர்களுமுள்ளிட்ட | | |

ततस्तु ते तस्य वधेन भूरिणा मनस्विनो नैर्ऋतराजवान्धवाः ।
विनेदुस्सर्व्वथिता रघूत्तमं हरिं समीक्ष्यैव यथा सुरादिताः

॥ १८४ ॥

| | | | |
|---------------------------|---------------------------------------|-----------|------------------------------------|
| तैः | அப்பொழுது | वथिताः | துன்புற்றவர்களாய் |
| ते | அந்த | हरिं | ஸ்ரீமக விஷ்ணுவான |
| मनस्विनः | பிடிவாதஸ்வபாவமுள்ளவர்களான | रघूत्तमं | ஸ்ரீராமரை |
| नैर्ऋतराज- वान्धवाः तु | { அரக்கத்தலைவனிடத்தில் ஆன்புடையவர் | समीक्ष्य | நினைத்து |
| तस्य | அவனுடைய [கன் | सुरादिताः | தேவர்களால் துன்புறுத்தப்பட்டவர்கள் |
| भूरिणा | அஸுறியமான | यथा एव | எப்படியோ அப்படியே |
| वधेन | வாநையால் | उच्चैः | உரக்க |
| | | विनेदुः | கொச்சலிட்டார்கள். |

स देवलोकस्य तयो निहत्य सूर्यो यथा राहुमुखाद्विमुक्तः ।
तथा व्यभासीञ्जवि वानरौषे निहत्य रामो युधि कुम्भकर्णम्

॥ १८५ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|-----------------------|
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | यथा तथा | எல்லாருடைய ஆவாறு |
| राहुमुखात् | ராஹுவாசியின் தா | युधि | பேரில் |
| विमुक्तः | விடுபட்ட | कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை |
| सूर्यः | சூரியன் | निहत्य | கொன்று |
| देवलोकस्य | தேவலோகத்தின் | युधि वानरौषे | பூமியில் வானரக்கூட் |
| तमः निहत्य | திருவிட்டு | व्यभासीत् | விளங்கினார். [டத்தில் |

महर्षीयुर्वहवस्तु वानराः प्रबुद्धपद्मप्रतिभैरिवाननैः ।

अपूजयन्राघवमिष्टभागिनं हते रिपौ भीमबले दुरासदे

॥ १८६ ॥

| | | | |
|----------------------|--------------------------|------------|---------------------------------|
| महवः | கணக்கற்ற | आननैः इव | முகங்களுடனேயே |
| वानराः तु | வானரர்களும் | प्रहृषं | அடக்காக் களிப்பை |
| भीमबले | பயங்கரமான பலசர லியும் | ईयुः | அடைந்தார்கள். |
| दुरासदे | வெல்லற்கரியவனு | इष्टभागिनं | இஷ்டம் திறைதேறப் பெற்ற |
| रिपौ | சுத்கு [மான | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| हते | மரண்டவுடன் | अपूजयन् | கொளவித்துக்கொ ண்டாடினார்கள். |
| प्रबुद्धपद्मप्रतिभैः | அறிந்த தாமரை மணிபோன்ற | | |

स कुम्भकर्णं सुरसङ्घमर्दनं महत्सु युद्धेषु पराजितश्रमम् ।

ननन्द इत्वा भरताग्रजो रणे महासुरं वृत्रमिवामराधिपः

॥ १८७ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------|-------------|---------------------------------|
| सः | அந்த | पराजितश्रमं | அனாயசமாய் |
| भरताग्रजः | ஸ்ரீராமர் | इत्वा | கொண்டு |
| महत्सु | பெரும் | अमराधिपः | இந்திரன் |
| युद्धेषु | போர்களில் | महासुरं | அஸுரோத்தமனாகிய விஞ்சுராஸுரனை |
| सुरसङ्घमर्दनं | தேவக்கூட்டங்களை கொன்ற | वृत्रं इव | கொண்டு எப்படி போ அப்படியே |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | ननन्द | ஆனந்தக்கொண்டார். |
| रणे | போரில் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 17720



युद्धकाण्डे आदितुः श्लोकाः 3045

अष्टषष्ठितमः सर्गः—अथपत्तोट्टावतु षर्ककम्. ॥ ६८ ॥

रावणप्रलापः—रावणाननु पिरलापम्.

कुम्भकर्णं हतं दृष्ट्वा राघवेण महात्मना । राक्षसा राक्षसेन्द्राय रावणाय न्यवेदयन् ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------|----------------------------------|
| राक्षसाः | அசுரர்கள் | दृष्ट्वा | கண்டு |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | राक्षसेन्द्राय | ராட்சஸேந்திரனுக்கிய |
| महात्मना | மகாத்மாவாகிய | रावणाय | ராவணனுக்கு |
| राघवेण | ஸ்ரீராமரால் | न्यवेदयन् | பின்வருமாறு தெரி வித்தார்கள். |
| हतं | கொல்லப்பட்டதாய் | | |

राजन्स कालसङ्काशः संयुक्तः कालकर्मणा । विद्राव्य वानरीं सेनां भक्षयित्वा च वानरान् ॥

भक्षयित्वा मुहूर्ते च प्रशान्तो रामतेजसा । कायेनार्धप्रविष्टेन समुद्रं भीमदर्शनम् ॥ ३ ॥

निकृत्तकण्डोरुभुजो विक्रमरुधिरं बहु । रुध्वा द्वारं शरीरेण लङ्कायाः पर्वतोपमः ॥ ४ ॥
कुम्भकर्णस्तव भ्राता काकुत्स्थशरपीडितः । लगण्डभूतो विकृतो दावदग्ध इव द्रुमः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------------------|--|----------------|---------------------------------|
| राजन् | “ அரசரே ! | रुधिरं | சத்தத்தை |
| कालसङ्काशः | எமனை நிகர்ந்தவரும் | विक्रम | பெருக்கிக்கொண்டு |
| कालकर्मणा संयुक्तः | சாவுகிட்டியவரும் | पर्वतोपमः | மலைக்கொப்பாய் |
| तव | தேவரீரது | लगण्डभूतः | பிண்டமாய் ஆகி |
| भ्राता | தம்பியுமாகிய | दावदग्धः | காட்டுத்தீயால் ஏரிக்க ப்பட்ட |
| सः कुम्भकर्णीः | அந்த சும்பகர்ணர் | द्रुमः इव | விருக்தம்போல் |
| वानरी सेनां | வானரகிணையை | विकृतः | உருக்குலைந்தவராய் |
| विद्राव्य | வெருட்டியும் | लङ्कायाः | லங்கையின் |
| सुहृत् | கிறிதுகாலம் | द्वारं | வாயிலை |
| प्रतपिषा | வாட்டியும் | शरीरेण | சரித்தால் |
| वानरान् | வானரர்களை | रुध्वा | தகைத்து |
| भक्षयित्वा च | தின் றும் | भीमदर्शनं | பயங்கரத்தோற்ற முற்ற |
| च | பின்னர் | समुद्रं | சமுத்தரத்தில் |
| काकुत्स्थशरपीडितः | காகுதனது கிண்களால் பிண்டயுற்று | अर्धप्रविष्टेन | பாதிமுழுசிய |
| निकृत्तकण्डोरु- भुजः | அறுபட்ட கழுத்தை யும் கால்களையும் கைகளையுமுடையவ ராய் | कायेन | சரித்தூடன் |
| बहु | அதிகமான | रामतेजसा | ராமனது பிரதாபத் தால் |
| | | प्रशान्तः | மாண்டுவிட்டார்.” |

तं श्रुत्वा निहतं संख्ये कुम्भकर्णं महाबलम् । रावणः शोकसन्तप्तो मुमोह च पपात च ॥

| | | | |
|------------|-------------|-------------|------------------------------|
| रावणः | ராவணன் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| संख्ये | போரில் | च च | தகடினமே |
| महाबलं | பலசாலியாகிய | शोक संतप्तः | சோகத்தால் தயிக்கின்றவனாய் |
| तं | அந்த | मुमोह | மூர்ச்சையற்றவனாய் |
| कुम्भकर्णं | சும்பகர்ணனை | पपात | விழ்ந்துவிட்டான். |
| निहतं | மாண்டவனாய் | | |

पितृव्यं निहतं श्रुत्वा देवान्तकनरान्तकौ । विशिराश्वातिकायश्च रुद्रुः शोकपीडिताः ॥

| | | | |
|------------------|------------------------------|------------|----------------------------------|
| देवान्तकनरान्तकौ | தேவாந்தகனும் நராக் தகனும் | निहतं | மாண்டவராய் |
| विशिराः च | திரிசிரஸும | श्रुत्वा | கேட்டு |
| अतिक्रुयः च | அதிகாயனும் | शोकपीडिताः | சோகத்தால் தயிக்கின் றவர்களாய் |
| विपुत्रे | கிறிய தகப்பனரை | रुद्रुः | அமுத்தர்கள். |

भातरं निहतं श्रुत्वा रामेणाहिष्कर्मणा । महोदरमहापाथौ शोकाक्रान्तौ बभूवतुः ॥ ८ ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| महोदर- महापाथौ } भातरं अहिष्कर्मणा | மகோதரனும் மகாபாற் சுவனும் பாரசுவை எவையும அனாயாச மாய்ச் செய்வவல்ல | रमेण निहतं श्रुत्वा शोकाक्रान्तौ बभूवतुः | ஸ்ரீராமரால் மரண்டவனாய் கேட்டு சோகம் மேலிட்டவர் ஆணர்கள். [களாய் |
|---|--|--|--|

ततः कृच्छ्रात्समासाद्य संज्ञां राक्षसपुङ्गवः । कुम्भकर्णवधादीनां विललाप स रावणः ॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| ततः राक्षसपुङ्गवः सः रावणः कृच्छ्रात् संज्ञां | ஆனந்தரம் ராஷ்டிரே த்தமனுகிய அந்த ராவணன் வெகு சிரமப்பட்டி பிரக்களுவைய | समासाद्य कुम्भकर्णवधात् दीनः विललाप | அடைந்து கும்பகர்ணனின் வதைபரால் பரிதரிக்கத்தக்கவனாய் பின்வருமாறு புலம்பி ணை: |
|--|---|--|--|

हा वीर रिपुर्दृष्ट्वा कुम्भकर्ण महाबल । त्वं मां विहाय वै देवाद्यातोऽसि यमसादनम् ॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| हा वीर रिपुर्दृष्ट्वा महाबल कुम्भकर्ण | "அய்யேர! கூரனே! சத்ருக்களின் செருக் கைச் சிதைப்பவனே! பேராற்றல் பெற்ற கும்பகர்ண! [வனே! | त्वं मां विहाय दैवात् यमसादनं यातः असि वै | நீ என்னை விட்டுவிட்டு தெய்வவசமாய் எமர்களுக்கு சென்றனையே. |
|---|--|--|---|

मम शल्यमनुद्धृत्य बान्धवानां महाबल । शत्रुसैन्यं प्रताप्यैकस्त्वं मां संत्यज्य गच्छसि ॥

| | | | |
|-------|--------------------------|---|---|
| महाबल | "பேராற்றல் கொண் டவனே! | शल्यं अनुद्धृत्य त्वं मां संत्यज्य एकः गच्छसि | மனவே தனை வைய அகற்றாது நீ என்னை விட்டுவிட்டு தனியாய் கெல்கின் தனை. |
|-------|--------------------------|---|---|

इदानीं खल्वहं नास्मि यस्य मे दक्षिणो भुजः । पतितो यं समाश्रित्य न विभेमि सुरासुरात् ॥

| | | | |
|--|--|---|---|
| इदानीं यं समाश्रित्य सुरासुरात् विभेमि न यस्य मे | "எவனை ஆசிரயமாய்க்கொண்டு தேவாசுரர்களிடத்தி னின்ற பயமடைவாதிருந் தேனே, எந்த எனக்கு | पतितो दक्षिणः भुजः पतितः अहं खलु इदानीं न अस्मि | வலது கையாசிருந்தாரனே, அவன் மாண்டுவிட்டான். நானும் இப்பொழுது உயிருடனிருக்கப் போவதில்லை. |
|--|--|---|---|

कथमेवंविधो वीरो देवदानवदर्पहा । कालाग्रिरुद्रप्रतिमो रणे रामेण वै हतः ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------------------|--|---------|------------------|
| देवदानव- दर्पहा | “ தேவர்கள் தும், அக ரர்கள் தும், செரும் கையடக்கியவனும் | वीरः | ஞாயிறுமர் வர் |
| कालाग्रि- रुद्रप्रतिमः | எமன், அக்னி, ருத் ரன் இவர்களை சிகர்த்தவனும் | एवंविधः | இப்படிப்பட்டவன் |
| | | रणे | போரில் |
| | | रामेण | ராமனால் |
| | | कथं वै | எப்படித்தான் |
| | | हतः | கொல்லப்பட்டானே ? |

यस्य ते वज्रनिष्पेषो न कुर्याद्व्यसने सदा । स कथं रामवाणार्तः प्रभुशोऽसि महीतले ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|--|
| यस्य | “ யந்த | सः कथं | அந்த நீ எக்கணம் |
| ते | உனக்கு | रामवाणार्तः | ராமன் து பாணத்தால் பிண்டியுண்டவனாய் |
| सदा | எக்காலத்திலும் | महीतले | பூமியில் |
| वज्रनिष्पेषः | வஜ்ராயுதத்தின் | प्रभुसः असि | நெடுக்குடியில் கொண் டனை ? |
| व्यसने | தீங்கை [தாக்கலும் | | |
| न कुर्यात् | செய்யாதே | | |

एते देवगणाः सार्धमृषिभिर्गगने स्थिताः । निहतं त्वां रणे दृष्ट्वा निनदन्ति प्रहृषिताः ॥

| | | | |
|---------------|---------------|------------|--------------------------|
| एते | “ இந்த | त्वां | உன்னை |
| देवगणाः | தேவகணங்கள் | निहतं | மாண்டவனாக |
| ऋषिभिः सार्धं | ரிஷிகளோடுகூட | दृष्ट्वा | கண்டு |
| गगने | ஆகாயத்தில் | प्रहृषिताः | ஆனந்தக்கொண்டவர் களாய் |
| स्थिताः | இருந்துகொண்டு | निनदन्ति | ஆரவாரிக்கின்றார்கள். |
| रणे | போரில் | | |

ध्रुवमथैव संहृष्टा लब्धलक्षाः पुवङ्गमाः । आरोक्ष्यन्ति हि दुर्गाणि लङ्काद्वाराणि सर्वशः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|---------------|-------------------|
| ध्रुवङ्गमाः | “ வானர்கள் | लङ्काद्वाराणि | இலங்கைவாயில்களும் |
| लब्धलक्षाः | உத்தேசம் நிறைவேற ப்பெற்று | दुर्गाणि | அகிற்கலிலும் |
| संहृष्टाः | உற்வாகக்கொண்ட வர்களாய் | सर्वशः हि | எக்குமே |
| अथ एव | இக்கணத்திலேயே | आरोक्ष्यन्ति | ஏறிப்புதுவார்கள். |
| | | ध्रुवम् | ஐயமில்லை. |

राज्येन नास्ति मे कार्यं किं करिष्यामि सीतया । कुम्भकर्णविहीनस्य जीविते नास्ति मे रतिः ॥

| | | | |
|---------|---------------------------|---------------|------------------------------|
| राज्येन | “ கும்பகர்ணனைத் துறந்த | किं करिष्यामि | யாது கொள்ளப் போகின்றேன் ? |
| मे | எனக்கு | मे | எனக்கு |
| राज्येन | ராஜ்யத்தால் | जीविते | உயிரிலும் |
| कार्यं | ஆவதென்றும் | रतिः | உவகை |
| अस्ति न | இல்லை. | अस्ति न | இல்லை. |
| सीतया | சீதையாலும் | | |

यद्यहं भ्रातृहन्तारं त इन्मि युधि राघवम् । ननु मे मरणं श्रेयो न चेद् व्यर्थजीवितम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------------|--------------|
| अहं | " நான் | मे | எனக்கு |
| भ्रातृहन्तारं | தம்பியைக் கொன்ற | मरणं | மரணம் |
| राघवं | ராமனை | श्रेयः | மேலானது. |
| युधि | போரில் | इदं | இந்த |
| इन्मि न यदि | கொல்லவில்லை எனில் | व्यर्थजीविनं च | வீணுயிரோ |
| ननु | உப்பொழுது | न | மேலானதன் து. |

अथैव तं गमिष्यामि देशं यत्रानुजो मम । न हि भ्रातृन्समुत्सृज्य क्षणं जीवितमुत्सहे ॥

| | | | |
|-------|------------------|------------|---------------------|
| यत्र | " எனக்கு | गमिष्यामि | செல்லுவேன். |
| मम | எனது | भ्रातृन् | சகோதரர்களை |
| अनुजः | தம்பி சென்றானே ; | समुत्सृज्य | விட்டுப்பிரிந்து |
| तं | அந்த | क्षणं हि | ஒரு கணக்கூட |
| देशं | இடத்திற்கு | जीवितुं | உயிரோடிருக்க |
| अथ एव | இக்கணமே | उत्सहे न | நான் விருப்பவில்லை. |

देवा हि मां हसिष्यन्ति दृष्ट्वा पूर्वापकारिणम् । कथमिन्द्रं जयिष्यामि कुम्भकर्ण इते त्वयि ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-----------|--------------------|
| देवाः हि | " தேவர்களோ | त्वयि | நீ |
| पूर्वापकारिणं | முன்பு தீக்குழிந்த | इते | மாண்டுவிட்டபின்னர் |
| मां दृष्ट्वा | என்னைப்பார்த்து | इन्द्रं | இந்திரனை |
| हसिष्यन्ति | சிரிப்பார்கள். | कथं | எவ்வாறு |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ண! | जयिष्यामि | இனிநான் ஜயிப்பேன். |

तदिदं मामनुप्राप्तं विभीषणवचः शुभम् । यद्ज्ञानान्मया तस्य न युहीतं महात्मनः ॥२१॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|--------------|----------------|
| मया | " எனனால் | तम् | அந்த |
| अज्ञानात् | மடமைபால் | इदं | இந்த |
| महात्मनः | மகாத்மாவாகிய | शुभं | நல்லான |
| तस्य | அவனது | विभीषणवचः | விபிஷணனது |
| यत् | எதொன்று | | உபதேசம் |
| युहीतं न | மனதில் கொள்ளப் படவில்லையா | मां | எனக்கு |
| | | अनुप्राप्तम् | பளித்தவிட்டது. |

विभीषणवचो यावत्कुम्भकर्णप्रहस्तयोः । विनाशोऽयं समुत्पन्नो मां शीडयति दारुणः ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------------------------|--------|------------------------------|
| विभीषणवचः यावत् | " விபிஷணனது சொற்படியே | दारुणः | கொடிய |
| कुम्भकर्णप्रहस्तयोः | கும்பகர்ணனுக்கும் சிரகஸ்தனுக்கும் | अयं | இது |
| विनाशः | அழிவு | मां | என்னை |
| समुत्पन्नः | சென்றது. | शीडयति | வெட்கமுற்றச்செய் கின்றது. |

तस्यायं कर्मणः प्राप्तो विपाको मम शोकदः । यन्मया धार्मिकः श्रौषान्तस्य निरस्तो विभीषणः ॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------|---------------------------|
| मया | "என் கருள் | तस्य | அந்த |
| धार्मिकः | நாற்பாடு கருள் | कर्मणः | செயலின் |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமாத் தூயமான | शोकदः | அக்கதனைத் தீர்த்து விடும் |
| सः | அந்த | विपाकः | முடிவாகிய [கூம் |
| विभीषणः | விபிஷணன் | अयं | இது |
| निरस्तः | வெருட்டப்பட்டான். | मम | எனக்கு |
| यत् | ஆதலால் | प्राप्तः | கிட்டு விட்டது." |

इति बहुविधमाकुलान्तरात्मा कृपणपतीव विलप्य कुम्भकर्णम् ।
न्यपतदथ दशाननो भृशार्तस्त्वपनुजमिन्द्ररिपुं हतं विदिश्या ॥ २४ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------------|---------------------------|
| दशाननः | தசகண்டன் | बहुविधं | பலவாறாய் |
| इन्द्ररिपुं | இந்திரசத்ருவுடம் | अतीव | மிகவும் |
| अनुजं | தம்பிபுமுகிய | कृपणं | தீனமாய் |
| ते | இந்த | आकुलान्तरात्मा | உள்ளக்கொக்கியவனாகிய |
| हतं | மாண்ட | विलप्य | புலம்பிகிட்டு |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனை | अथ | பின்னர் |
| विदिश्या | நினைத்து | न्यपसत् | கிட்டு சாய்த்து விட்டான். |
| भृशार्तः | மிகக் தயிப்பவனாய் | | |
| इति | மேற்கண்டவாறு | | |

इत्यर्पे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे अष्टषष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 17744

युद्धकाण्डे भादिनः श्लोकाः 3069

एकोनसप्ततितमः सर्गः—अथपद्मोत्थानपद्मवत्तु एतच्छोकम् ॥ ६२ ॥

नरान्तकवधः—கரண்தகவதம்.

एवं विलपमानस्य रावणस्य दुरात्मनः । श्रुत्वा शोकाभितप्तस्य त्रिजिरा वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|----------------|
| दुरात्मनः | தூயாத் தமாவாகிய | त्रिजिराः | திரிகிரஸ் |
| रावणस्य | ராவணன் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| शोकाभितप्तस्य | சொகத்தான் தபித்த | वाक्यं | ஒரு சொல்லை |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | अब्रवीत् | பின்வருமாறு சொ |
| विलपमानस्य | புலம்புகையில் | | ழிந்தான்: |

एवमेव महावीर्यो हतो नस्तातमध्यमः । न तु सत्पुरुषा राजन्विलपन्ति यथा भवान् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|--------------------------|
| नः | "என்கனது | राजन् | மன்னவரே! |
| महावीर्यः | மகாவீர்புராணியாகிய | भवान् | தேவரீர் |
| सातमध्यमः | நடுக்கத்தை | यथा | (எவ்வாறோ, அவ்வாறு) போன்ற |
| हतः | மாண்டுவிட்டான். | सत्पुरुषाः | சான்றோர்கள் |
| एवं एव तु | அப்படியே இவ்வாறு | विलपन्ति न | புலம்புமட்டார்கள். |

नूनं त्रिभुवनस्यापि पर्याप्तस्त्वमसि प्रभो । स कस्मात्प्राकृत इव शोचस्यात्मानपीडितम् ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|-------------|------------------|
| प्रभो | " பிரப்புலே ! | सः | அந்த தேவரீர் |
| खं | தேவரீர் | कस्मात् | எதற்காக |
| त्रिभुवनस्य अपि | மூன்றுவகத்திற்கும் | प्राकृतः इव | சாமான்யன்போல* |
| पर्याप्तः असि | போதுமானவர். | आत्मानं | தன்னைப்பற்றி |
| नूनं | அப்படி யிருக்க | ईदृशं | இவ்விதம் |
| | | शोचसि | வருந்துகின்றீர். |

ब्रह्मदत्ताऽस्ति ते शक्तिः कवचः सायको धनुः । सहस्रवरसंयुक्तो रथो मेघस्वनो महान् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|-----------------|--|
| ते | " தேவரீருக்கு | धनुः | வில்லும் |
| ब्रह्मदत्ता | பிரம்மதேவரால் அளிக்கப்பட்ட | सहस्रवरसंयुक्तः | { ஆனைகம் கோவேறு சமூகைதகன் பூட்டி. யதம் |
| शक्तिः | சக்தியாய்தம் | मेघस्वनः | மேகவொசைகொண் |
| अस्ति | இருக்கின்றது. | महान् | பெரியதுமான [டதும் |
| कवचः | கவசமும் | रथः | ரதமும்(இருக்கின்றன). |
| सायकः | பாணமும், | | |

त्वयाऽसकृद्विशस्त्रेण विशस्ता देवदानवाः । स सर्वायुधसंपन्नो राघवं शास्तुमर्हसि ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|-----------------|--|
| असकृत् | " பலதடவை | सः | அந்த தேவரீர் |
| त्वया | தேவரீரால் | सर्वायुधसंपन्नः | எல்லா ஆயுதங்களை யும் கைக்கொண்டவராய் |
| विशस्त्रेण | ஆயுதமில்லாது | राघवं | ராமனை |
| देवदानवाः | தேவதாரர்கள் | शास्तु | கொல்ல |
| विशस्ताः | துன்புறுத்தப் பட்டனர். | अर्हसि | கடவீர். |

कामं तिष्ठ महाराज निर्गमिष्याम्यहं रणम् । उद्धरिष्यामि ते शत्रून्गरुडः पन्नगानिव ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|---------------------------|
| कामं | " அதிருக்கட்டும். | ते | தேவரீரது |
| महाराज | மன்னவரே ! | शत्रून् | சத்ருக்களை |
| तिष्ठ | தேவரீர் இருங்கள். | पन्नगान् | பாம்புகளை |
| अहं | நான் | गरुडः इव | கருடன் எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| रणं | போருக்கு | उद्धरिष्यामि | களைந்துகிடுவேன். |
| निर्गमिष्यामि | சென்றுவருகின்றேன். | | |

शम्बरो देवराजेन नरको विष्णुना यथा । तथाऽद्य शयिता रामो मया युधि निपातितः ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|----------|-------------------|
| देवराजेन | " தேவேந்திரனால் | अद्य | இப்பொழுது |
| शम्बरो | சம்பராசரனும் | युधि | போரில் |
| विष्णुना | மகாவிஷ்ணுவால் | रामः | ராமனும் |
| नरकः | நரகாசரனும் | मया | என்னால் |
| यथा तथा | எப்படியோ அப்படி யே | निपातितः | கொல்லப்பட்டிடு |
| | | शयिता | சாய்ந்துகிடுவான். |

श्रुत्वा त्रिशिरसो वाक्यं रावणो राक्षसाधिपः । पुनर्जातधिवात्मानं मन्यते कालचोदितः ।

| | | | |
|-------------|------------------------|--------------|----------------|
| காலச்சோதित: | காலஞ்சூக்யமும் கிடீழ்ப | श्रुत्वा | கேட்டு |
| राक्षसाधिपः | ராட்சஸமகன் அனாமிய | आस्मानं | தன்னை |
| रावणः | ராவணன் | पुनर्जातं इव | இறந்துபிழைத்தவ |
| त्रिशिरसः | திரிசிரஸின் | मन्यते | எண்ணிக்கொண் |
| वाक्यं | சொல்லை | | டான். |

श्रुत्वा त्रिशिरसो वाक्यं देवान्तकनरान्तकौ । अतिकायश्च तेजस्वी बभूवुर्बुद्धहर्षिताः ॥

| | | | |
|------------------|------------------------------|---------------|------------------------------|
| देवान्तकनरान्तकौ | தேவாந்தகனும் நராத் தகனும் | वाक्यं | சொல்லை |
| तेजस्वी | பிரதாபசரீரியான | श्रुत्वा | கேட்டு |
| अतिकायः च | அதிகாயனும் | बुद्धहर्षिताः | போருக்லாகக்கொ ண்டவர்களாய் |
| त्रिशिरसः | திரிசிரஸினுடைய | बभूवुः. | ஆனார்கள். |

ततोऽहमहमित्येव गर्जन्तो नैर्ऋतर्षभाः । रावणस्य सुता वीराः शक्रतुल्यपराक्रमाः ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------|--------------------|-------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | रावणस्य | ராவணனது |
| अहं अहं | 'நான் நான்' | सुताः | புதல்வர்கள் ; |
| इति | என்று | शक्रतुल्यपराक्रमाः | இந்திரனுடைய வீர்யம் படைத்த |
| गर्जन्तः | கர்ஜிப்பவர்களும் | वीराः | வீரர்கள் ; |
| नैर्ऋतर्षभाः एव | நாக்ஷத்ரேஸரத்தமர் களுடைய | | |

अन्तरिक्षगताः सर्वे सर्वे मायाविशारदाः । सर्वे त्रिदशदर्पणाः सर्वे च रणदुर्जयाः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|---------------|----------------------------------|
| सर्वे | யாவரும் | त्रिदशदर्पणाः | தேவர்கொருக்கை சுதைத்தவர்கள் ; |
| अन्तरिक्षगताः | ஆகாயத்தில் ஸஞ்சரிப் | सर्वे च | யாவரும் |
| सर्वे | யாவரும் [பவர்கள் ; | रणदुर्जयाः | போரில் வெல்லுதற் கரியர்கள் ; |
| मायाविशारदाः | மாயாநிபுணர்கள் ; | | |
| सर्वे | யாவரும் | | |

सर्वे सुबलसंपन्नाः सर्वे विस्तीर्णकीर्तयः । सर्वे समरमासाद्य न श्रूयन्ते पराजिताः ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------|----------------|---------------------------------|
| सर्वे | யாவரும் | सगन्धर्वैः | கந்தர்வர்களுள் ளிடவும் |
| सुबलसम्पन्नाः | மேலான படைமுற்றவர் கள் ; | सकिन्नरमहोरगैः | கின்னரர், மகோரகர் உள்ளிடவும் |
| सर्वे | யாவரும் | देवैः वापि | தேவர்களாலும் |
| विस्तीर्णकीर्तयः | பாணிய புரூப்பெற்ற | पराजिताः | தோல்வியடைந்தவர் களாய் |
| सर्वे | யாவரும் [வர்கள் ; | श्रूयन्ते न | கேட்கப்படவில்லை. |
| समर | அமருக்கு | | |
| भासाद्य | சென்று | | |

सर्वे च विदुषो वीराः सर्वे युद्धविशास्दाः । सर्वे प्रवविज्ञानाः सर्वे लब्धवरास्तथा ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|---------------|------------------|
| सर्वे | யாவரும் | सर्वे तथा | யாவரும் |
| विदुषः | கற்றுணர்ந்த | प्रवविज्ञानाः | மேம்பட்ட அறிவி |
| वीराः | ஞார்க்கள்; | सर्वे च | யாவரும் [ணர்கள்; |
| सर्वे | யாவரும் | लब्धवराः | காக்கள் பெற்றவர் |
| युद्धविशास्दाः | சமர்நிபுணர்கள்; | | கள். |

स तैस्तदा भास्करतुल्यवर्चसैः सुतैर्वृतः शत्रुबलप्रपर्दनैः ।

राज राजा मघवान्यथाऽपरैर्वृतो महादानवदर्पनाशनैः ॥ १५ ॥

॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|--------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | महादानव- | அசுரோரத்தமர்களின் |
| सः | அந்த | दर्पनाशनैः) | செருக்கைக்குலைக் |
| राजा | மன்னவன் | | கும் |
| भास्करतुल्यवर्चसैः | ஞாயினுக்கு நிகரான | अमरैः | தேவர்களால் |
| | ஒளிகொண்டவரும் | वृतः | குழப்பெற்ற |
| शत्रुबलप्रपर्दनैः | சத்ருகேனைகளையழிப் | मघवान् यथा | இந்திரன் எவ்வாறோ |
| तैः | அந்த [பார்களுமான | | அவ்வாறு |
| सुतैः | புதல்வர்களால் | राज | விளக்கினான். |
| वृतः | குழப்பட்டவனாய் | | |

स पुत्रान्संपरिष्वज्य भूषयित्वा च भूषणैः । आशीर्भिश्च प्रशस्ताभिः प्रेषयामास संयुगे ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-------------|-----------------|
| सः | அவன் | भूषयित्वा च | அகங்கரித்தும் |
| पुत्रान् | புதல்வர்களை | प्रशस्ताभिः | சிறந்த |
| संपरिष्वज्य च | ஆலிக்கனம் செய்து | आशीर्भिः | ஆசிக்கொற்கள் |
| | கொண்டும் | संयुगे | பொர்நிமித்தமாய் |
| भूषणैः | ஆபரணங்களால் | प्रेषयामास | வழியனுப்பினான். |

युद्धोन्मत्तं च मत्तं च भ्रातरौ चापि रावणः । रक्षणार्थं कुमारानां प्रेषयामास संयुगे ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|------------|-----------------|
| रावणः | ராவணன் | मत्तं च | மத்தனையும் |
| अपि च | இன்னும் | संयुगे | போரில் |
| भ्रातरौ | சகோதரர்களான | कुमारानां | குமாரர்களின் |
| युद्धोन्मत्तं च | யுத்தோன்மத்தனையும், | रक्षणार्थं | பாதுகாப்பிற்காக |
| | | प्रेषयामास | அனுப்பினான். |

तैऽभिवाद्य महात्मानं रावणं रिपुरावणम् । कृत्वा प्रदक्षिणं चैव महाकायाः प्रतस्थिरे ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------------------|---------------------|
| महाकायाः | பெருந்தேகமுற்ற | रावणं | ராவணனை |
| तैः | அவர்கள் | अभिवाद्य च | தண்டனிட்டும் |
| रिपुरावणं | சத்ருக்களைக்கதற | प्रदक्षिणं कृत्वा एव | வலம்வந்தும் |
| | வடிக்கும் | प्रतस्थिरे | புறப்பட்ட சித்தமாயி |
| महात्मानं | பேராற்றல் படைத்த | | னர். |

सर्वोपधीभिर्गन्धैश्च समालभ्य महाबलाः । निर्जग्मुर्नैर्ऋतश्रेष्ठाः षडेते युद्धकाङ्क्षिणः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|-------------|---------------------|
| महाबलाः | மகா பலரா லிராளும் | सर्वोपधीभिः | பல ஓணலத திரஸங்கம் |
| युद्धकाक्षिणः | போராவல் கொண்ட | | ளர ளும் |
| एते | இந்த [வர்களுபாவ | गन्धैः च | சந்தணக்களர ளும் |
| नैर्ऋतश्रेष्ठाः | நாஹயெஸா த்தயர்கள் | समालभ्य | பூசிக்கொண்டு |
| षट् | ஆறுவர்களும் | निर्जग्मुः | செல்லு ளுந்ருர்கள். |

त्रिशिराश्चातिकायश्च देवान्तकनरान्तकौ । महोदरमहापाश्वीं निर्जग्मुः कालबोदिताः ॥

| | | | |
|------------|----------------------|---|---------------------------------------|
| कालबोदिताः | காலுங்காலம் கொடுக்கி | महोदरमहापाश्वीं निर्जग्मुः कालबोदिताः ॥ | மஹோதரமஹாபாஷ்வீ னிர்ஜகமு: காலவோதிதா: ॥ |
| | யவர்களான | देवान्तकनरान्तकौ च | இதவாந்தகனும் நராக் |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸும், | महोदरमहापाश्वीं च | தகனும் |
| अतिकायः | அதிகாயனும், | | மஹோதரனும், மகா |
| | | | பாச்சுவனும் |
| | | निर्जग्मुः | கிளப்பலாணர்கள். |

ततः सुदर्शनं नाम नीलजीमूतसन्निभम् । ऐरावतकुले जातमारुह महोदरः ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|-----------------|--------------------|
| महोदरः | மஹோதரன் | नीलजीमूतसन्निभं | கருடோகத்தை நிகர்த் |
| ततः | அப்பொழுது | | ததுமாண |
| ऐरावतकुले जातं | ஐராவதமாளையம்சத் | सुदर्शनं नाम | சுதர்சனம் என்ற |
| | தில் பிறந்தனும் | | யானைமீது |
| | | आरुह | ஏறிக்கொண்டான். |

सर्वायुधसमायुक्तं तूणीभिश्च खलङ्कृतम् । रराज गजमास्थाय सविनेवास्तमूर्धनि ॥ २२ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|-----------|-----------------|
| सर्वायुधसमायुक्तं | எல்லா ஆயுதங்களும் | आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு |
| | கட்டப்பெற்றனும் | असमूर्धनि | அஸ்தமனைச்சீசரத் |
| तूणीभिः | ஆம்புலுத்தூணிகளால் | सविता | சூர்யன் [தில் |
| खलङ्कृतं च | அலக்கரிக்கப்பட்டது | इव | எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| गवं | யானைமீது [மான் | रराज | கிளக்கினான். |

हयोत्तमसमायुक्तं सर्वायुधसमाकुलम् । आरुहोह रथश्रेष्ठं त्रिशिरा रावणात्मजः ॥ २३ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------|-----------------|--------------------|
| रावणात्मजः | ராவணனின் புதல்வ | सर्वायुधसमाकुलं | ஆயுதங்களெல்லா ளும் |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் [ஐகிய | | திரப்பியதுமான |
| हयोत्तमसमायुक्तं | கிறந்த சூசினர்கள் | रथश्रेष्ठं | சிறந்த ரதத்தில் |
| | பூட்டப்பெற்றனும் | आरुहोह | ஏறிக்கொண்டான். |

त्रिशिरा रथमास्थाय विरराज धनुर्धरः । सविन्दुदुलकः शैलाद्ये सेन्द्रचाप इवाम्बुदः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|--------------|---------------------|
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் | सविन्दुदुलकः | { பின்னல்கருட ளும், |
| धनुर्धरः | கிளக்கித்தி | | எறிக்கொண்டிருந் |
| रथ | ரதத்தில் | सेन्द्रचापः | னும் கூடியதும் |
| आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு | | இந்திரதனுஸுடன் |
| शैलाद्ये | மலைக்கிடையத்தில் | अम्बुदः इव | கூடியதீமான |
| | | | மேகம் எவ்வாறோ, |
| | | विरराज | அவ்வாறே |
| | | | கிளக்கினான். |

त्रिभिः किरीटैः शुशुभे त्रिशिराः स रथोत्तमे । हिमवानिव कैलेन्द्रस्त्रिभिः काञ्चनपर्यतैः ॥

| | | | |
|------------|---------------|---------------|---------------|
| रथोत्तमे | சிறந்த தேரில் | हिमवान् | இமவான் |
| सः | அந்த | त्रिभिः | மூன்று |
| त्रिशिराः | தீரிகிரை, | काञ्चनपर्यतैः | பொன்முன்றுகளை |
| त्रिभिः | மூன்று | इव | எவ்வண்ணமோ |
| किरीटैः | கிரீடங்களால் | | அவ்வண்ணமே |
| कैलेन्द्रः | பர்வதராஜனாகிய | शुशुभे | விளங்கினான். |

अतिकायोऽपि तेजस्वी राक्षसेन्द्रसुतस्तदा । आरुरोह रथश्रेष्ठं श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् ॥२६॥
सुचक्राक्षं सुसंयुक्तं खनुकर्षं सुकूबरम् । तूणीवाणासनैर्दीप्तं प्रासासिपरिघाकुलम् ॥२७॥

| | | | |
|------------------|----------------------|-------------------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | खनुकर्षं | நல்ல துகத்தடி களு |
| तेजस्वी | பிரதாபசாலியும் | | டன்கடியதும் |
| सर्वधनुष्मतां | எல்லா வில்லாளிகளுக்க | सुकूबरं | அழகிய ஏற்காதுடன் |
| | குன்றும் | | கடியதும் |
| श्रेष्ठः | சிறந்தவனும் | तूणीवाणासनैः | அம்புருத்தூணிகளா |
| राक्षसेन्द्रसुतः | ராக்ஷஸமன்னனின் | | தும் விற்களா தும் |
| | புதல்வனுமாகிய | वीरं | விளங்குவதும் |
| अतिकायः अपि | அதிகாயனும் | प्रासासिपरिघाकुलं | சட்டர்கள், கத்திகள், |
| सुचक्राक्षं | அழகிய சக்கரங்களும் | | உழலைத்தடிகள், |
| | அச்சமமைந்ததும் | रथश्रेष्ठं | இவைகளுடன் கடி |
| सुसंयुक्तं | மிக உறுதியானதும் | आरुरोह | யதமான |
| | | | சிறந்த ரதமொன்றில் |
| | | | ஏறிக்கொண்டான். |

स काञ्चनविचित्रेण मकुटेन विराजता । भूषणैश्च वभौ मेरुः किरणैश्चि भासयन् ॥२८॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|--------|---------------|
| सः | அவன் | किरणैः | கிரணங்களால் |
| काञ्चनविचित्रेण | பொன்னுலையைக்கப் | भासयन् | பிரகாசிக்கும் |
| | பெற்ற | मेरुः | மேருபர்வதம் |
| विराजता | பிரகாசிக்கின்றதான | इव | பொல |
| मकुटेन | கிரீடத்தாலும் | वभौ | திகழ்ந்தான். |
| भूषणैः च | பூஷணங்களாலும் | | |

स रराज रथे तस्मिन् राजसूनुर्भहावलः । वृता नैर्ऋतशार्दूलैर्वज्रपाणिस्वामरैः ॥ २९ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------|-----------|----------------|
| तस्मिन् | அந்த | वृताः | சூழப்பட்டவனும் |
| रथे | ரதத்தில் | अमरैः | தேவர்களால் |
| सः | அந்த | वज्रपाणिः | இந்திரன் |
| महावली | மகாபலசாலியாகிய | इव | எவ்வண்ணமோ |
| राजसूनुः | ராஜசூனார் | | அவ்வண்ணமே |
| नैर्ऋतशार्दूलैः | இராக்ஷஸோத்தமர் | रराज | விளங்கினான். |
| | களால் | | |

हयमुच्चैःश्रवःप्रख्यं श्वेतं कनकभूषणम् । मनोजवं महाकायमारोह नरान्तकः ॥ ३० ॥

| | | | |
|--------------------|---|-----------------|----------------|
| नरान्तकः | நரான்தகன் | मनोजवं | மனோஜவகன்கொண் |
| उच्चैःश्रवःप्रख्यं | { இந்திரனது குதிரை யான உச்சைச்சரவ னை நிகர்த்ததும் | महाकायं | மேலமுடனுற்றது |
| श्वेतं | | विवन्नामयानतாம் | मासिक्य |
| कनकभूषणं | பொன்னுபரணங்கள் | हयं | ஒரு குதிரைமீது |
| | சூண்டதும் | आरोह | ஏறிக்கொண்டான். |

गृहीत्वा मासमुल्काभं विरराज नरान्तकः । शक्तिमादाय तेजस्वी गुहः शिखिगतो यथा ॥

| | | | |
|----------|------------------------|---------|----------------------|
| नरान्तकः | நரான்தகன் | शिखिगतः | மயில்மீது வீற்றிருக் |
| उल्काभं | எறிக்கொள் கரியை | तेजस्वी | கும |
| प्राप्तं | ஓர் சுட்டியை [நிகர்த்த | गुहः | தேஜஸ்வியாகிய |
| गृहीत्वा | கைக்கொண்டு | यथा | வண்முகமுர்ந்தி |
| शक्ति | வேலாயுதத்தை | विरराज | எவ்வாறோ, அவ்வாறே |
| आदाय | ஏந்தி | | விளக்கினான். |

देवान्तकः समादाय परिघं वज्रभूषणम् । परिगुह गिरि दोभ्यां वपुर्विष्णोर्विडम्बयन् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|---------------------|
| देवान्तकः | தேவான்தகன் | गिरि | மலையை (மந்தரகிரி |
| वज्रभूषणं | வைரக்கற்களால் | परिगुह | ையை) |
| परिघं | அலக்கரிக்கப்பெற்ற | विष्णोः | தூக்கிக்கொண்டுவின்ற |
| समादाय | உழலைத்தடியென்றை | वपुः | பூரணர விஷ்ணுவின் |
| दोभ्यां | கைக்கொண்டு, | विडम्बयन् | தோர் உத்தை [எனது |
| | கைகளால் | | கொத்ததுவீக்கினான். |

महापार्श्वो महाकायो गदामादाय वीर्यवान् । विरराज गदापाणिः कुबेर इव संयुगे ॥ ३३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------|-----------------|
| महाकायः | மேலமுடனுற்றவனும் | गदापाणिः | கதைகையக்கையமேலே |
| वीर्यवान् | வீர்யகாஸியுமான | कुबेरः | திய |
| महापार्श्वः | மகாபார்க்வன் | इव | குப்பென் |
| गदां | கதைகைய | विरराज | எம்வண்ணமோ அவ் |
| आदाय | கைக்கொண்டு, | | வண்ணமே |
| संयुगे | போரில் | | விளக்கினான். |

प्रतस्थिरे महात्मानो वलैरप्रतिमैर्वृताः

॥ ३४ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|----------------------|
| महात्मानः | மேலானந்தல் கொண்ட | वैः | படைகளால் |
| | ஆவர்கள், | वृताः | குழம்பு மட்டவர்களால் |
| अप्रतिमैः | ஒன்றற்ற | प्रतस्थिरे | புறப்பட்டார்கள். |

तान्मजैश्च तुरङ्गैश्च रथैश्चाम्बुदनिस्वनैः । अनुजमुर्महात्मानो राक्षसाः पवरायुधाः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------------|----------------|-------------------------------|
| महात्मानः | பிக்க ஆற்றல்கொண்ட டவர்களும் | गजैः च | யானைகளைக்கும் |
| पवरायुधाः | சிறந்த ஆயுதங்களைக் கைக்கொண்டவர்க | तुरङ्गैः च | குதிரைகளைக்கும் |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் (எருமான அவர்களை | अम्बुदनिस्वनैः | மேகமேகைகொண்ட ரதங்களைக்கும் |
| तान् | | रथैः च | பிண்டுதொடர்க்கு |
| | | अनुजमुः | புறப்பட்டவர். |

ते विरेजुर्महात्मानः कुमाराः सूर्यवर्चसः । किरीटिनः श्रिया जुष्टा ग्रहा दीप्ता इवाम्बरे ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|-------------------|
| महामानः | பிக்கபலசாஸிகளும் | जुष्टाः | விளக்குபவர்களும் |
| सूर्यवर्चसः | சூர்யவொளிகொண்ட வர்களும் | ते | அந்த [மான |
| किरीटिनः | மகுடாப்புணைந்தவர் களும் | कुमाराः | குமாரர்கள் |
| | | अम्बरे | ஆகாயத்தில் |
| श्रिया | கார்த்திகொண்டு | दीप्ताः | ஜ்வலிக்கும் |
| | | ग्रहाः इव | கிரஹங்கள்போல |
| | | विरेजुः | பிரகாசித்தார்கள். |

प्रगृहीता वभौ तेषां शस्त्राणामावलिः सिता । शारदाभ्रमतीकाशा हंसावलिर्बिम्बरे ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------------|----------|--------------------------|
| तेषां | அவர்களால் | भावलिः | வரிசையானது |
| प्रगृहीता | கொள்ளப்பட்டிருந்த | अम्बरे | ஆகாயத்தில் |
| शारदाभ्रमतीकाशा | சாத்காலத்தியமேகத் த்தை நிகர்ந்து | हंसावलिः | அன்னப்பறவைகளின் வரிசை |
| सिता | வெண்ணையான | इव | எவ்வாறோ, அவ்வாறே |
| शस्त्राणां | சஸ்திரங்களின் | वभौ | திகழ்ந்தது. |

मरणं वाऽपि निश्चित्य शत्रूणां वा पराजयम् ॥ ३८ ॥

इति कृत्वा मैत्रिं वीरा निजम्बुः संयुगार्थिनः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|------------------------------------|
| संयुगार्थिनः | போர் வல்கொண்ட | मतिं कृत्वा | தீர்க்கவேண்டுகளை செய்து, |
| वीराः | சூரர்களான அவர்கள் | निश्चित्य | ஐயமிதத் தீர்மானத் தீர்க்குவந்து |
| मरणं अपि वा | மரணமென்றாலும் சரி | निजम्बुः | வெளிப்புறப்பட்டார் கள். |
| शत्रूणां | சத்ருக்களின் | | |
| पराजयं वा | தோல்வியென்றாலும் | | |
| इति | என்பதில் [சரி, | | |

जगर्जुश्च प्रणेदुश्च विक्षिपुश्चापि सायकान् । जगृहुश्चापि ते वीरा निर्यान्तो युद्धदुर्मदाः ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|-----------|-------------------|
| युद्धदुर्मदाः | போர்மதம் தலைக்கேறி | अपि च | இன்னும் |
| ते | அந்த [யவர்களான | प्रणेदुः | பேரிசைச்சலிட்டார் |
| वीराः | வீரர்கள் | अपि च | மேலும் [கள். |
| निर्यान्तः | செல்கின்றவர்களாய் | विक्षिपुः | வைதார்கள். |
| जगर्जुः | கிங்கநாதம் செய்தார் கள். | सायकान् च | பாணிகளை யும் |
| | | जगृहुः च | கைப்பற்றினார்கள். |

क्ष्वेलितास्फोटनिन्दैश्च च வசுந்வரா । ரக்ஷஸா பிஹ்நாடீஷ் புஸ்கோடேவ ததாஸ்மரம் ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|------------|----------------------------|
| வசுந்வரா ச | பூமியும் | ரக்ஷஸர் ச | ஆகாயமும் |
| क्ष्वेलिता- स्फोटनिन्दैः | குதியல்களுடையவுள் கைதட்டுதல்களுடை யவுள் சத்தங்களால் | ரக்ஷஸா | ஆரக்கர்களின் |
| चचा र | ஆதிர்க்தது. | पिहनादैः | கிங்கலாதங்களால் |
| तरा | ஆப்பொழுது | पुस्फोट इव | வெடிப்புதுபோலிருந் தது. |

तेऽभिनिष्क्रम्य मुदिता राक्षसेन्द्रा महाबलाः । ददृशुर्वांशनीकं समुद्यतशिलानगम् ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|----------------|---------------------------------------|
| ते | ஆந்த | अभिनिष्क्रम्य | சென்றது |
| महाबलाः | மகாபலசாலிகளாகிய | समुद्यतशिलानगं | உயர்த்தியமகிகளையும் பாக்களையுமுடைய |
| राक्षसेन्द्राः | ராக்ஷஸேந்திரத்தலைவர்கள் | वांशनीकं | வாணரசு சேணையை |
| मुदिताः | சந்தேகாவகங்கொண்டு | दृशुः | கண்டார்கள். |

हरयोऽपि महात्मानो ददृशुर्नैर्ऋतं बलम् । हस्त्यश्वयसंवाघं किङ्किणीशतनादितम् ॥४३॥
नीलजीमूतसङ्काशं समुद्यतपहायुधम् । दीप्तानलरविप्रख्यैः सर्वतो नैर्ऋतैर्ऋतम् ॥ ४४ ॥

| | | | |
|------------------|---|--------------------------|---|
| महात्मानः | மகா ஆற்றல்கொண்ட வர்களாகிய | समुद्यतमहायुधं | உயர்த்தப்படித்த சிறந்த ஆயுதங்களை முடையதம் |
| हरयः अपि | வாணரர்களும் | दीप्तानल- रविप्रख्यैः | தொழுந்துவிட்டெரி யும் ஆக்கினையும் |
| हस्त्यश्वयसंवाघं | யானை, குதிரை, தேர் ஹவைகளால் சிறைந் ததம் | नैर्ऋतैः | குரியனையும் சிகர்ந்த ராக்ஷஸர்களால் |
| किङ्किणीशतमादितं | அனுகம சதங்கைகள் ஒலிக்கப்பெற்றதும் | सर्वतो | எங்கும் |
| नीलजीमूतसङ्काशं | கரிய மேகங்களை சிகர்ந்ததும் | युते | குதப்பட்டிருக்கிறது |
| | | नैर्ऋतैः | ஆரக்க [மான |
| | | बलं | படையை |
| | | दृशुः | கண்டார்கள். |

तद्गुप्ता बलमायान्तं लब्धरक्षाः पुवङ्गमाः । समुद्यतमहाशैलाः संपणेदुर्महाबलाः ॥ ४५ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-----------------|---|
| महाबलाः | மகாபலசாலிகளாகிய | दुग्धा | பார்க்து |
| पुवङ्गमाः | வாணபர்கள் | लब्धरक्षाः | என்ற வசந்யம் கிடைத் தவர்களால் |
| सर्वं | ஆந்த | समुद्यतमहाशैलाः | உயர்த்தப்பட்ட பெரும் மகிகளைமுடைய வர்களாகி |
| बलं | படையை | संपणेदुः | ஆரவாரம் செய்தார் கள். |
| भायान्तं | எதிர்த்துயருகின்ற தாய் | | |

अमृष्यमाणा रक्षांसि प्रतिनर्दन्ति वानराः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|----------|------------|---------------|---------------------------------|
| வானரா: | வானரர்கள் | अमृष्यमाणा: | பொருதவர்களாய் |
| रक्षांसि | அரக்கர்களை | प्रतिनर्दन्ति | எதிர்ப்புழக்கமிட்டு டார்கள். |

ततः समुद्रघृष्टवं निशम्य रक्षोगणा वानरयूथपानाम् ।
अमृष्यमाणाः पार्ष्णमुग्रं महाबला भीमतरं विनेदुः ॥ ४७ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-------------|-------------------------------|
| महाबलाः | மகாபலசரணிகளான | उग्रं | கொடியதான |
| रक्षोगणाः | அரக்கக்கூட்டங்கள் | पार्ष्ण | சத்ருக்களின் சந்தேக உத்ததை |
| ततः | அப்பொழுது | अमृष्यमाणाः | பொருதவர்களாய் |
| वानरयूथपानां | வானரசேனைத்தலைவர் | भीमतरं | மீக்காயக்கரமான |
| समुद्रघृष्टवं | பேர்சைச்சலை [களின் | विनेदुः | இரைச்சலிட்டனர். |
| निशम्य | கேட்டு | | |

ते राक्षसबलं घोरं प्रविश्य हरियूथपाः । विचेरुह्यतैः शैलैर्नगाः शिखरिणो यथा ॥४८॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|--------------------------|
| ते | அந்த | शैलैः | மலைகளுடன் |
| हरियूथपाः | வானரசேனைத்தலை | शिखरिणः | கொடுமுடிகளைக் கொண்ட |
| घोरं | பயங்கரமான [வர்கள், | नगाः यथा | மலைகள் போன்றவர் களாய் |
| राक्षसबलं | அரக்கச்சேனைக்குள் | विचेरुः | சஞ்சரிக்கலாயினர். |
| प्रविश्य | புகுந்து | | |
| उच्यते: | உயர்ந்தப்பட்ட | | |

केचिदाकाशमाविश्य केचिदुर्व्यां पुवङ्गमाः । रक्षःसैन्येषु संक्रुद्धाश्चेर्द्धुमशिलायुधाः ॥४९॥

द्रुमांश्च विपुलस्कन्धान्पृह्य वानरपुङ्गवाः ॥ ५० ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|----------------------------|
| केचित् | சில | वानरपुङ्गवाः | வானரோத்தமர்கள் |
| द्रुमशिलायुधाः | { மரங்களையும் மலைகளை யும் ஆயுதமாய்க் கொண்ட | संकुद्धाः | சினம் பூண்டு |
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | विपुलस्कन्धान् | பெருங்களைகளுற்ற மரங்களை |
| आकाशं | ஆகாயத்தில் | द्रुमान् | எடுத்துக்கொண்டு |
| प्रविश्य | புகுந்தும் | पृह्य | பூதியில் [களிலும் |
| केचित् | சில | उर्व्यां | ராமநாமசன்யம்- |
| | | रक्षःसैन्येषु च | சஞ்சரித்தவர்கள். |
| | | चेरुः | |

समुद्रमभवद्वोरं रक्षोवानरसंकुलम् ॥ ५१ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------------|-------|------------|
| रक्षोवानरसंकुलं | அரக்கர்களும் வான ரர்களும் கைகலந்த | सुदं | புத்தமாளது |
| सर्व | அந்த | घोरं | பயங்கரமாய் |
| | | अभवत् | இருந்தது. |

ते पादपशिलाशैलैश्चक्रुष्टिमनूपमाम् । वाणौघैर्वार्यमाणाश्च हरयो भीमविक्रमाः ॥ ५२ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--------------------|
| भीमविक्रमाः | பயங்கரப்பிரதரப | पादपशिला- | பாதங்களாலும், பாறை |
| ते | அந்த [வாலிகளான | शैलैः च | களாலும், மலைகளால் |
| हरयः | வானரர்கள் | | ஆக |
| वाणौघैः | பாணசமூகங்களால் | अनूपमां | ஒப்பற்ற |
| वार्यमाणाः | தடைபடுகின்றவர்கள் | वृष्टिं | வர்ஷத்தை |
| | களால் | चक्रुः | பொழிந்தார்கள். |

सिंहनादान्विनेदुश्च रणे वानरराक्षसाः । शिलाभिश्चूर्णयामासुर्यात्तुधानान्पुवङ्गमाः ॥ ५३ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|--------------|----------------------|
| रणे | போரில் | पुवङ्गमाः | வானரர்கள் |
| वानरराक्षसाः च | வானரர்களும் அரசர்கள்களும் | यातुधानाञ्च | அரசர்களை |
| सिंहनादान् | சிங்கநாதங்களை | शिलाभिः | பாறைகளால் |
| विनेदुः | முழக்கினார்கள். | चूर्णयामासुः | பொருக்குவித்தார்கள். |

निजघ्नुः संयुगे क्रुद्धाः कवचाभरणावृतान् । केचिद्रथगतान्वीरान्गजवाजिगतानपि ॥ ५४ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|----------|----------------------|
| क्रुद्धाः | கொபங்கொண்ட | रथगतान् | ரதத்தின்மீதிருக் |
| केचिन् | சிலர் | वीरान् | வீரர்களையும் [கின்ற |
| संयुगे | போரில் | गजवाजि- | யானமீதும், குதிரை |
| कवचाभरणावृतान् | கவசங்களும் ஆபரணங்களும் பூண்டு | गान् अपि | மீதும் இருந்தவர்களை |
| | | निजघ्नुः | புடைத்தார்கள். [யும் |

निजघ्नुः सहसाऽऽपुत्य यातुधानान्पुवङ्गमाः । शैलशृङ्गाचिताङ्गाश्च मुष्टिभिर्वान्तलोचनाः ॥

| | | | |
|--------------------|---|---------------|----------------------|
| पुवङ्गमाः | வானரர்கள் | वान्तलोचनाः च | கீழிகள் விதூங்கியவர் |
| शैलशृङ्गाचिताङ्गाः | { மலைச்சிகரங்களால் தாக்கப்பெற்ற அங்கங்களையுடையவர்களையும் | सहसा | விசைத்து [களாய்மாடி |
| | | आपुत्य | தாக்கி |
| | | यातुधानान् | அரசர்களை |
| मुष्टिभिः | முத்தடி.களால் | निजघ्नुः | வரைய்புடைத்தார்கள். |

चेरुः पेतुश्च नेदुश्च तत्र राक्षसपुङ्गवाः । राक्षसाश्च शरैस्तीक्ष्णैर्विभिदुः कपिकुञ्जरान् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|--------------|---------------|
| राक्षसपुङ्गवाः | இராகுதலையாத்தமர் | राक्षसाः च | அரசர்கள்களும் |
| तत्र | அப்பொழுது [கள் | कपिकुञ्जरान् | வானரத்தமர்களை |
| चेरुः | திரிந்தார்கள். | तीक्ष्णैः | கூரிய |
| पेतुः च | விழுந்தார்கள். | शरैः | பாணங்களால் |
| नेदुः च | ஆரவாரத்தொழிந்தார்கள். | विभिदुः | பிளந்தார்கள். |

शुलभुद्रखड्गैश्च जघ्नुः प्रासैश्च शक्तिभिः । अन्वोन्यं पातयामासुः परस्परजयैषिणः ॥ ५७ ॥

रिपुशोणितदिग्धाङ्गास्तत्र वानरराक्षसाः । ततः शैलैश्च खड्गैश्च विस्ष्टैर्हरिराक्षसैः ॥ ५८ ॥

सुहृतेनावृता भूमिरभवच्छोणितापृता । विकीर्णपर्वताकारै रक्षोभिररिमर्दनैः ॥ ५९ ॥

आसीद्वसुमती पूर्णा तदा युद्धमदान्वितैः ॥ ६० ॥

| | |
|----------------------|--|
| तत्र | அப்பொழுது |
| वानरराक्षसाः | வானரர்களும், ராக்ஷ ஸர்களும் |
| शैलैः च | மலைகளாலும் |
| खड्गैः च | கத்திகளாலும் |
| शुलभुद्रखड्गैः च | { குலங்களாலும், முத் காங்களாலும், பட் டாக்கத்திகளாலும் |
| प्रासैः | சட்டிகளாலும் |
| शक्तिभिः च | * வேல்களாலும் |
| जघ्नुः | தாக்கினார்கள். |
| परस्परजयैषिणः | { ஒருவரைவொருவர் தூயிக்க விருப்புவிண் றவர்களாய் |
| रिपुशोणितदिग्धाङ्गाः | சத்ருக்களின் சத்தத் தில் சூழ்கியவராய் |
| अन्वोन्यं | ஒருவரைவொருவர் |
| पातयामासुः | ஹிழ்த்தினார்கள். |
| ततः | அப்பொழுது |

आक्षिप्ताः क्षिप्यमाणाश्च भग्नशूलाश्च वानरैः । पुनरङ्गैस्तथा चक्रुरासन्ना युद्धमद्भुतम् ॥

| | |
|----------------|------------------------------------|
| वानरैः | வானரர்களால் |
| आक्षिप्ताः च | இழுக்கப்பட்டவர் களும், |
| क्षिप्यमाणाः च | எறியப்பட்டவர்களும் |
| भग्नशूलाः तथा | குலங்கள் முறிக்கப் பட்டவர்களும் |

वानरान्वानरैरेव जघ्नुस्ते रजनीचराः । राक्षसान्ராक्षसैरेव जघ्नुस्ते वानरा अपि ॥ ६२ ॥-

| | |
|-----------|-----------------------|
| ते | அந்த |
| रजनीचराः | அரக்கர்கள் |
| वानरान् * | வானரர்களை |
| वानरैः एव | வானரர்களைக்கொண் டே |
| जघ्नुः | புடைத்தார்கள். |

| | |
|--------------------|-----------------------------------|
| हरिराक्षसैः | வானரர்களாலும் ரா க்ஷஸர்களாலும் |
| विस्ष्टैः | விடுக்கப்பட்ட ஆவை களால் |
| सुहृतेन | கிறிதுநேரத்தில் |
| भूमिः | தரையானது |
| आवृता | மறைக்கப்பட்டதாய் |
| शोणितापृता | குருதிபெருகியதாய் |
| अभवत् | ஆனது. |
| विकीर्णपर्वताकारैः | சிதந்த மலைகளை நிகர்த்தவர்களும் |
| अरिमर्दनैः | சத்ருசம்ஹாரகர் களும் |
| युद्धमदान्वितैः | போர்மதம் கொண்ட வர்களும் |
| रक्षोभिः | அரக்கர்களால் |
| वसुमती | பூமியானது |
| तदा | அப்பொழுது |
| पूर्णा | நிரம்பியதாய் |
| आसीत् | ஆயிற்று. |

| | |
|-------------|---------------|
| अङ्गैः पुनः | அங்கங்களாலேயே |
| आसन्नाः | எதிர்த்து |
| अद्भुतां | ஆச்சர்யமான |
| युद्धं | போரை |
| चक्रुः | செய்தார்கள். |

| | |
|-------------|------------------------|
| ते | அந்த |
| वानराः अपि | வானர்களும் |
| राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| राक्षसैः एव | அரக்கர்களைக்கொண் டே |
| जघ्नुः | புடைத்தார்கள். |

आक्षिप्य च शिलास्तेषां निजघ्नू राक्षसा हरीन् ।
तेषां चाच्छिद्य शस्त्राणि जघ्नू रक्षांसि वानराः

॥ ६३ ॥

राक्षसाः ஆரக்கர்கள்
 हरीन् வானரர்களை
 तेषां அவர்களுடைய
 शिलाः च பாறைகளையே
 आक्षिप्य பிடுங்கிக்கொண்டு
 निजघ्नूः நையப்புடைத்தார்கள்.

वानराः வானரர்கள்
 रक्षांसि ஆரக்கர்களை
 तेषां அவர்களுடைய
 शस्त्राणि च ஆயுதங்களையே
 आच्छिद्य பிடுங்கிக்கொண்டு
 जघ्नूः புடைத்தார்கள்.

निजघ्नूः शैलशूलास्त्रैर्विभिदुश्च परस्परम् । सिंहनादान्विनेदुश्च रणे वानरराक्षसाः ॥ ६४ ॥

रणे போரில்
 वानरराक्षसाः வானரர்களும் ராக்ஷ
 ணர்களும்
 शैलशूलास्त्रैः { மலைகளாலும், சூலக்க
 ளாலும், அஸ்திரக்க
 ளாலும்

निजघ्नूः தாக்கிக்கொண்டார்
 கள்.
 परस्परं ஒருவரைபொருவர்
 विभिदुः च கிழித்துக்கொண்டார்
 கள்.
 सिंहनादान् च சிங்கநாதங்களையுட
 विनेदुः முழுக்கினார்கள்.

छिन्नवर्मतनुव्राणा राक्षसा वानरैर्हताः । रुधिरं प्रभृतास्तत्र रससारमिव द्रुमाः ॥ ६५ ॥

तत्र அப்பொழுது
 राक्षसाः ஆரக்கர்கள்
 वानरैः வானரர்களால்
 हताः புடைக்கப்பட்டு
 छिन्नवर्म- { உடலைக்காக்கும் கவ
 तनुव्राणाः { சங்களையிழந்தவர்
 களால்

रुधिरं ரத்தத்தை,
 द्रुमाः மரங்கள்
 रससारं பால்பெருக்கை
 इव எவ்வண்ணமோ, அவ்
 வண்ணமே,
 प्रभृताः பெருக்கினார்கள்.

रथेन च रथं चापि वारणेनैव वारणम् ॥ ६६ ॥

हयेन च हयं केचिन्नजघ्नूर्वानरा रणे । प्रहृष्टमनसः सर्वे प्रगृहीतमनश्शिलाः ॥ ६७ ॥

रणे போரில்
 वानराः வானரர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 प्रहृष्टमनसः மனஉத்தராகன்கொண்
 டவர்களால்
 प्रगृहीतमनःशिलाः மனோநிலைகளை வைக்க
 கொண்டவர்களால்
 रथेन ஒரு ரதத்தால்
 रथं च மற்றொரு ரதத்தையும்

वारणेन ஓர் யானையால்
 वारणं एव மற்றொர் யானையை
 अपि च இன்னும் [யும்
 केचित् சிலர்
 हयेन ஒரு குதிரையால்
 हयं च மற்றொரு குதிரை
 யையும்
 निजघ्नूः மோதிப்புடைத்தார்
 கள்.

हरयो राक्षसाञ्जन्तुर्मैथ बहुशाखिभिः । तद्युद्धमभवद्दोरं रक्षोवानरसङ्कुलम् ॥ ६८ ॥

| | | | |
|------------|----------------|----------------|--------------------------------------|
| हरयः | வானரர்கள் | रक्षोवानरसकुलं | ராஷ்டிரங்களும் வானரர்களும் எனக்கலந்த |
| बहुशाखिभिः | பல கிளைகளுற்ற | तत् | அந்த |
| द्रुमैः च | மரக்களாலும் | युद्धं | யுத்தமானது |
| राक्षसान् | அரக்கர்களை | घोरं | பயங்கரமாக |
| जन्तुः | தாக்கினூர்கள். | अभवत् | இருந்தது. |

धुरप्रैरर्धचन्द्रैश्च भल्लैश्च निशितैः शरैः । राक्षसा वानरेन्द्राणां चिच्छिदुः पादपाञ्छिलाः॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------------|-----------------------------|
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | अर्धचन्द्रैः च | அர்த்தசந்திர பாணங்களாலும் |
| वानरेन्द्राणां | வானரேந்திரர்களு | निशितैः | கூரிய |
| पादगान् | மடங்களையும் [டைய | भल्लैः शरैः च | பல்லபாணங்களாலும் |
| शिलाः | பாறைகளையும் | चिच्छिदुः | துண்டித்து வீழ்த்தினார்கள். |
| धुरप्रैः | சூரபர பாணங்க | | |
| | ளாலும் | | |

विकीर्णैः पर्वताग्रैश्च द्रुपैश्छिन्नैश्च संयुगे । हतैश्च कपिरक्षोभिर्दुर्गमा वसुधाऽभवत् ॥ ७० ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|---------------|-------------------|
| संयुगे | போரில் | हतैः | மாண்டுவிடந்த |
| विकीर्णैः | செறிக்கிடந்த | कपिरक्षोभिः च | வானர அரக்கர்களால் |
| पर्वताग्रैः च | மலைச்சிகரங்களாலும் | वसुधा | பூமியானது [லும் |
| छिन्नैः | முறித்துவிடந்த | दुर्गमा | புக முடியாததாய் |
| द्रुपैः च | மரங்களாலும் | अभवत् | இருந்தது. |

ते वानरा गर्वितहृष्टचेष्टाः संग्राममासाद्य भयं विमुच्य ।

युद्धं तु सर्वे सह राक्षसैस्तैर्नानायुवाश्चकुरदीनसत्त्वाः

॥ ७१ ॥

| | | | |
|--------------|--|--------------------|--|
| अदीनसत्त्वाः | சலிய ஆற்றல் கொண்ட | संग्रामं | போரை |
| ते | அந்த | आसाद्य | கொண்டு |
| वानराः | வானரர்கள் | गर्वितहृष्टचेष्टाः | { செருக்கும் உதவாத மும் கொண்ட செயலுற்றவர்களாய் |
| सर्वे तु | எல்லோரும் | तैः | அந்த |
| नानायुवाः | { பல போர்க்களுவிட ளைக்கொண்டவர் களாய் | राक्षसैः | அரக்கர்களோடு |
| भयं | பயத்தை | सह | கூட |
| विमुच्य | விட்டொழித்து | युद्धं | போரை |
| | | चक्रुः | செய்தார்கள். |

तस्मिन्प्रवृत्ते तुमुले विमर्दे प्रहृष्यमाणेषु वलीमुखेषु ।
निपात्यमानेषु च राक्षसेषु महर्षयो देवगणाश्च नेदुः

॥ ७२ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|-----------------|----------------|
| तस्मिन् | அந்த | राक्षसेषु | அரக்கர்கள் |
| तुमुले | மிகக்குல்லவாமான | निपात्यमानेषु च | வீழ்த்தப்படுகை |
| विमर्दे | போர் | | யிலும் |
| प्रवृत्ते | நடக்குகால் | महर्षयः | மகரிஷிகளும் |
| वलीमुखेषु | வானரர்கள் | देवगणाः च | தேவர்கள்களும் |
| प्रहृष्यमाणेषु | உந்ஸாகமுறுகையிலும் | नेदुः | ஆரவாரித்தனர். |

ततो हयं मास्ततुल्यवेगमाख्य शक्तिं निशितां प्रमृद्य ।
नरान्तको वानरराजसैन्यं महार्णवं मीन इवाविवेश

॥ ७३ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|---------------|-----------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | शक्तिं | சக்தியாயுத்ததை |
| नरान्तकः | நரந்தகன் | प्रमृद्य | சைக்கொண்டு |
| मास्ततुल्यवेगं | காற்றை நிகர்த்த வேகம் படைத்த | वानरराजसैन्यं | வானரமன்னனது சைன்யத்திற்குள் |
| हयं | குதிரையிது | मीनः | மீன் |
| आख्य | ஏறிக்கொண்டு | महार्णवं इव | பெரிய கடலுள் ஏவ |
| निशितां | கூரிய | आविवेश | வாரே ஆவ்வாரே புகுந்தான். |

स वानरान्सप्त शतानि वीरः प्रासेन दक्षिणेन विनिर्विभेद् ।
एकक्षणेनेन्द्ररिषुर्महात्मा जघान सैन्यं हरिपुङ्गवानाम्

॥ ७४ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|-------------------|
| वीरः | சூரனும் | प्रासेन | சட்டியால் |
| इन्द्ररिषुः | இந்திரசக்சுவும் | विनिर्विभेद् | குத்தினான். |
| महात्मा | பேராற்றல்கொண்ட | हरिपुङ्गवानां | வாரேரத்தமர் |
| सः | அவன் [வனுமான் | | களின் |
| सप्त शतानि | எழுநூறு | सैन्यं | சைன்யத்தை |
| वानरान् | வானரர்களை | एकक्षणेन | ஒரு க்ஷணத்திலேயே |
| दीक्षेन | ஆவ்விக்கும் | जघान | புடைத்துவிட்டான். |

ददृशुश्च महात्मानं हयपृष्ठे प्रतिष्ठितम् । चरन्तं हरिसैन्येषु विद्याधरमहर्षयः ॥ ७५ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------|-------------|------------------|
| विद्याधरमहर्षयः | வித்யாதரர்களும் மகரிஷிகளும் | प्रतिष्ठितं | இருப்பவனாய் |
| महात्मानं | மகாத்மாவாகிய | हरिसैन्येषु | வானரசைன்யங்களில் |
| हयपृष्ठे | குதிரையிது [அவளை | चरन्तं च | திரிபவனாக |
| | | ददृशुः | பார்த்தார்கள். |

स तस्य ददृशे मार्गो मांसशोणितकर्दमः । पतितैः पर्वताकारैर्वानरैरभिसंवृतः ॥ ७६ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|-----------------|--|
| तस्य | அயனது | वानरैः | வானர்கள்வால் |
| सः | அந்த | अभिसंवृतः | முடுண்டு |
| मार्गः | மர்க்கபானது | मांसशोणितकर्दमः | { பாம்ஸய்களாலும் ரத்தத்தாலும் சேறும் ற்றதாய் |
| पतितैः | ஊழந்துகிடந்த | ददृशे | காணப்பட்டது. |
| पर्वताकारैः | மலைகளை நிகர்ந்த தோற்றமுடைய | | |

यावद्विक्रमितुं बुद्धिं चक्रुः पृथगपुङ्गवाः । तावदेतन्नतिक्रम्य निर्विभेद नरान्तकः ॥ ७७ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------|------------------|
| नरान्तकः | நரந்தகன் | सावत् | அதற்குள் |
| यावत् | எதற்குள் | पुतान् | இவர்களை |
| पृथगपुङ्गवाः | வானசோத்தமர்கள் | अतिक्रम्य | ஆகாமித்து |
| विक्रमितुं | வகிர்ந்துத்தாக்க | निर्विभेद | பிளந்துகிட்டான். |
| बुद्धिं चक्रुः | கிளைத்தார்களோ, | | |

उवलन्तं प्रासमुद्यम्य सद्भ्यामाग्रे नरान्तकः । ददाह हरिसैन्यानि वनानीव विभावसुः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|-----------------|
| नरान्तकः | நரந்தகன் | हरिसैन्यानि | வானர சேனையங்களை |
| संभ्रामाग्रे | பேர்முனையில் | विभावसुः | அக்னிபகவான் |
| उवलन्तं | ஐவலிக்கும் | वनानि | காடுகளை |
| प्रासं | சட்டியை | इव | எவ்வாறோ அவ்வாறே |
| उद्यम्य | உடர்த்திக்கொண்டு | ददाह | எரித்தான். |

यावदुत्पादयामासुर्वृक्षाञ्छैलान्वनौकसः । तावत्प्रासहताः पेतुर्वज्रकृत्ता इवाचलाः ॥ ७८ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|-------------|------------------------------|
| वनौकसः | வானர்கள் | वज्रकृत्ताः | வஜ்ராயுதத்தால் |
| वृक्षान् | மரங்களையும் | | சிறைதக்கப்பட்ட |
| शैलान् | மலைகளையும் | अचलाः इव | மலைகள்போல |
| उत्पादयामासुः | பெயர்த்தெடுப்பதற் குள் | पेतुः | கீழே சுயந்துவிட் டவர்கள். |
| यावत् तावत् | | | |
| प्रासहताः | சட்டியால் தாக்கப்பட் டவர்களாய் | | |

दिक्षु सर्वासु बलवान्विचचार नरान्तकः । प्रमृद्नन्सर्वतो युद्धे प्रावृत्काले यथाऽनिलः ॥

| | | | |
|----------|----------------|--------------|-------------------------------|
| बलवान् | பலசாலியாகிய | प्रमृद्नन् | தவம்மைச் செய்பவ |
| नरान्तकः | நரந்தகன் | प्रावृत्काले | வர்க்காலத்தில் [ஐய் காற்று |
| युद्धे | போரில் | अनिलः | எப்படியோ |
| दिक्षु | திக்குகள் | यथा | அப்படியே |
| सर्वासु | எல்லாவற்றிலும் | विचचार | திரிந்தான். |
| सर्वतः | எனையும் | | |

न शेकुर्धावितुं वीरा न स्यातुं स्पन्दितुं भयात् ।
उत्पन्नं स्थितं यान्तं सर्वान्विव्याध वीर्यवान्

॥ ८१ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------|------------------|
| वीराः | ஞானர்கள் (வானர்கள்) | वीर्यवान् | வீர்ப்பவரானாகும் |
| भयात् | திக்கிலால் | उत्पन्नं | ஆவன் (ஆரக்கன்) |
| धावितुं | ஓடவும் | स्थितं | தாவதின் நடைதயம் |
| शेकुः न | முடியவில்லை; | यान्तं | கிற்கின் நடைதயம் |
| स्यातुं | கிற்கவும், | सर्वान् | செல்கின் நடைதயம் |
| स्पन्दितुं | ஆசையவும், | विषाध | யாவற்றையம் |
| न | முடியவில்லை. | | தாக்கினான். |

एकेनान्तककल्पेन प्रासेनादित्यतेजसा । भिन्नानि हरिसैन्यानि निपेतुर्धरणीतले ॥ ८२ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|------------------|
| हरिसैन्यानि | வானரச் சைன்யங்கள் | प्रासेन | சட்டியையக்கொண்டு |
| अन्तककल्पेन | எமனை நிகர்த்த | भिन्नानि | பிளக்கப்பட்டவர் |
| एकेन | தனித்த ஒருவனால் | धरणीतले | பூமியில் [களாய் |
| आदित्यतेजसा | ஞாய்வொளிக்கொண்ட | निपेतुः | கிழந்தார்கள். |

वज्रनिष्पेषसदृशं प्रासस्याभिनिपातनम् । न शेकुर्वानराः सोढुं ते विनेदुर्महास्वनम् ॥ ८३ ॥

| | | | |
|------------------|---------------------|----------|---------------|
| वानराः | வானர்கள் | सोढुं | சகிக்க |
| प्रासस्य | சட்டியின் | शेकुः न | முடியவில்லை. |
| वज्रनिष्पेषसदृशं | வஜ்ராயுதத்தின் | ते | ஆவர்கள் |
| अभिनिपातनं | வீழ்ச்சிக்கொப்பாசிய | महास्वनं | பேரீரைச்சலாய் |
| | தரக்குதலை | विनेदुः | கிணுர்கள். |

पततां हरिवीराणां रूपाणि प्रचकाशिरे । वज्रभिन्नायकूटानां शैलानां पततामिव ॥ ८४ ॥

| | | | |
|--------------------|--|------------|-----------------------|
| पततां | பீழ்க்கிழந்த | पततां | கீழ்சாயும் |
| हरिवीराणां | வானரவீரர்களின் | शैलानां | மலைகளுடைய உருவங் |
| रूपाणि | உருவங்கள் | इव | கள் |
| वज्रभिन्नायकूटानां | { வஜ்ராயுதத்தால் பிளப்புண்ட கிடை சமூகங்களுற்று | प्रचकाशिरे | எவ்வீதமோ அவ்வீத மே |

ये तु पूर्व महात्मानः कुम्भकर्णेन पातिताः । ते स्वस्था वानरश्रेष्ठाः सुग्रीवमुपतस्थिरे ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------------|-------------------|
| ये | ஆம்பகர்ணனால் | ते | அந்த |
| कुम्भकर्णेन | எந்த | वानरश्रेष्ठाः तु | வானரோத்தமர்களும்த |
| ये | மகா ஆற்றலமைந்த | स्वस्थाः | ஸ்வபாவநிலைமைக்கு |
| महात्मानः | முன்பு [வர்கள் | | வந்தவர்களாய் |
| पूर्व | வீழ்த்தப்பட்டார் | सुग्रीव | சுகரீவனை |
| पातिताः | கண்டார் | उपतस्थिरे | கிட்டினார்கள். |

विप्रेक्षमाणः सुग्रीवो ददर्श हरिवाहिनीम् । नरान्तकभयव्रस्तां विद्वन्तीमितस्ततः ॥ ८६ ॥

| | | | |
|-------------------|--|---------------|---------------------|
| सुग्रीवः | சுகரீவன் | विप्रेक्षमाणः | கவனித்து |
| हरिवाहिनीं | வானரச்சேனையை | इतस्ततः | இங்குமங்கும் |
| नरान्तकभयव्रस्तां | { நரான்தகவிரிடம் பயத் தால் திகில்கொண்ட தாய் | विद्वन्ती | சித்தி ஓடுகின்றதாய் |
| | | दर्श | பார்த்தான். |

विद्वतां वाहिनीं दृष्ट्वा स ददर्श नरान्तकम् । गृहीतपासपायान्तं ह्यपृष्टे प्रतिष्ठितम् ॥ ८७ ॥

| | | | |
|----------|-------------|-------------|-------------------|
| सः | அவன் | ह्यपृष्टे | குதிரைமீது |
| वाहिनीं | சேனையை | प्रतिष्ठितं | எறிக்கொண்டு |
| विद्वतां | ஓடினதாய் | गृहीतपासं | எட்டியைக்கொண்டு |
| दृष्ट्वा | கண்டு பின் | पायान्तं | எதிர்த்துவருகிறவ |
| नरान्तकं | நரான்தகவிரை | दर्श | கவனித்தான். [ஸம்] |

अथोवाच महातेजाः सुग्रीवो वानराधिपः । कुमारमङ्गदं वीरं शक्रतुल्यपराक्रमम् ॥ ८८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-------------------|------------------------------------|
| महातेजाः | மகா ஆற்றல்கொண்ட வனும் | शक्रतुल्यपराक्रमं | இந்திரனுக்கொப்பான பாக்காம்கொண்ட |
| वानराधिपः | வானரமன்னனுமாகிய | वीरं | ஔரணமாகிய |
| सुग्रीवः | சுகரீவன் | अङ्गदं | அங்கதனைப்பார்த்து |
| अथ | அப்பொழுது | उवाच | பின்வருமாறு கட்ட ளையிட்டான்: |
| कुमारं | புதல்வனும் | | |

गच्छ त्वं राक्षसं वीरो योऽसौ तुरगमास्थितः । क्षोभयन्तं हरिवलं क्षिप्रं प्राणैर्वियोजय ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|-------------------|
| त्वं गच्छ | " நீ சென்றுவா. | हरिवलं | வானரச்சேனையை |
| यः | எந்த | क्षोभयन्तं | கலக்கும் |
| असौ | இந்த | राक्षसं | ஆக்களை |
| वीरः | வீரன் | क्षिप्रं | கிரைவில் |
| तुरग | குதிரைமீது | प्राणैः वियोजय | உயிர்வாக்கிவிடுவா |
| मास्थितः | கிற்றிருக்கின்றானே | | யாக." |

स भर्तुर्वचनं श्रुत्वा निष्पатаद्भद्रस्ततः । अनीकान्मेघसङ्काशान्मेघानीकादिवांशुमान् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|------------------------|
| सः | அந்த | अनीकान् | சேனையினின்று |
| अङ्गदः | அங்கதன் | अंशुमान् | சூரியபகவான் |
| स्ततः | அப்பொழுது | मेघानीकान् | மேகப்படலத்தி லின்று |
| भर्तुः | தலைவரது | इय | எவ்விதமோ ஆய்வி தமே |
| वचनं | கட்டளையை | निष्पत | வெளியார்ந்தான். |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | | |
| मेघसङ्काशात् | மேகத்தை திகர்த்த | | |

शैलसङ्घातसङ्काशो हरीणाद्युत्तमोऽद्भुदः । राजाद्भुदसङ्घः सधातुरिव पर्वतः ॥ ९१ ॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|--------------|
| हरीणां | வானரர்களுள் | अद्भुदसङ्घः | தேரர்வளைகள் |
| उत्तमः | உத்தமனும் | सधातुः | அடர்ந்தவனும் |
| शैलसङ्घातसङ्काशः | மலைப்பிளப்பை சிகர்த் த தேரத்தமுண்டய வனுமான | पर्वतः इव | கடைய |
| अद्भुदः | | அங்கதன் | राज |

निरायुधो महातेजाः केवलं नखदंष्ट्रवान् । नरान्तकमधिक्रम्य वालिपुत्रोऽज्रवीचुः ॥ ९२ ॥

| | | | |
|----------------------------|--|-----------|---------------------------|
| महातेजाः | பிக்க ஆற்றல்கொண்ட | नरान्तके | நராதகளை |
| वालिपुत्रः | வாலிகைமந்தன் | अभिक्रम्य | எதிர்த்து |
| निरायुधः | ஆயுதமேந்தாத | वचः | நூறு சொல்லை |
| नखदंष्ट्रवान् } केवलं } | நகம்களையும், பற்களை யும் மாத்கிரம் கொ ண்டு | अज्रवीचुः | பிகைவருமாறு புகன்றான்: |

तिष्ठ किं प्राकृतैरेभिर्हरिभिस्त्वं करिष्यसि । अस्मिन्वज्रसमस्पर्शं प्राप्तं क्षिप ममोरसि ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|---------------|--------------------|
| तिष्ठ | “சுற்றுப் பொறு, | मम | எனது |
| एभिः | இந்த | अस्मिन् | இந்த |
| प्राकृतैः | பாமர | उरसि | மார்பில் |
| हरिभिः | குரக்குகளுடன் | वज्रसमस्पर्शं | வஜ்ராயுதத்தை திகர் |
| त्वं | நீ | | த்த வலிகொண்ட |
| करिष्यसि किं | செய்யப்போவ தென்ன? | प्राप्तं | சட்டையை |
| | | क्षिप | எறிவாய்.” |

अद्भुदस्य वचः श्रुत्वा प्रचुक्रोध नरान्तकः । सन्दश्य दशनैरोष्ठं विनिश्चस्य भुजङ्गवत् ॥ ९५ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|------------|------------------|
| कुवः | கொபங்கொண்டிருந்த வனும் | ओष्ठं | உதட்டை |
| नरान्तकः | மாண்டர்களுக்கு பிசுதியுவுமான | सदृश्य | சுடிந்து |
| अद्भुदस्य | நராத்கள் | वालिपुत्रे | வாலிபுதல்வனுடைய |
| वचः | அங்கதனுண்டய | अद्भुदं | அங்கதளை |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अभिगम्य | கிட்டி |
| दशनैः | பற்களால் | भुजङ्गवत् | சர்ப்பம்போல் |
| | | विनिश्चस्य | பெருமூச்செறிந்து |
| | | प्रचुक्रोध | கடுகடுத்தான். |

प्रासं समाविध्य तदाऽद्भुदाय समुज्ज्वलन्तं सहस्रोत्ससर्ज ।

स वालिपुत्रोरसि वज्रकल्पे बभूव भग्नो न्यपतच्च भूमौ

॥ ९६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------|---------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | वज्रकल्पे | வஜ்ரகல்பத்தனது |
| समुज्ज्वलन्तं | ஐவளிக்ஞம் | वालिपुत्रोरसि | வாலிபுத்ரானது |
| प्रासं | சட்டியை | भग्नः | முறிவுண்டதாய் |
| सामविध्य | சமுதீ | बभूव | ஆனது; |
| अद्भुदाय | அடங்கதன்மீது | भूमौ च | பூமியிலும், |
| सहसा | வினாந்து | न्यपतत् | விழுந்துகிட்டது. |
| उत्ससर्ज | எறிந்தான். | | |
| सः | அது | | |

तं प्रासमालोक्य तदा विभ्रमं सुपर्णकुचोरगभोगकल्पम् ।

तलं समुद्यम्य स वालिपुत्रस्तुरङ्गம் तस्य जघान मूर्ध्नि

॥ ९७ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|-----------|---------------|
| तदा | அப்பொழுது | विभ्रमं | முறிவுண்டதாய் |
| सः | அந்த | आलोक्य | பார்த்து |
| वालिपुत्रः | வாலிபுத்ரன் | तलं | உள்ளக்கையை |
| तं | அந்த | समुद्यम्य | ஓங்கி |
| प्रासं | சட்டியை | तस्य | அவனது |
| सुपर्णकुचो(रा-) | கருடபகவானால் ஆண் | तुरङ्गम् | குதிரையை |
| भोगकल्पं | கிண்ட சுப்பத்தின் | मूर्ध्नि | தலையில் |
| | உட்கை நிகர்த்து | जघान | அறைந்தான். |

निमग्नतालुः स्फुटिताक्षितारो निष्क्रान्तजिह्वोऽचलसंनिकाशः ।

स तस्य वाजी निपपात भूमौ तल्पप्रहारेण विशीर्णमूर्धा

॥ ९८ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-------------------|---------------------|
| तस्य | அவனது | निमग्नतालुः | கடைவாய் நகங்கி |
| अचलसंनिकाशः | மலையை நிகர்த்த | स्फुटिताक्षितारः | கருவிழிகள் தெறித்து |
| सः वाजी | அந்தக் குதிரை | निष्क्रान्तजिह्वः | நாக்கு மிதுங்கி |
| तल्पप्रहारेण | உள்ளக்கையறையால் | भूमौ | பூமியில் |
| विशीर्णमूर्धा | பண்டையுடைத்து, | निपपात | சாய்த்தது. |

नरान्तकः क्रोधवशं जगाम हतं तुरङ्गं पतितं निरीक्ष्य ।

स मुष्टिमुद्यम्य महाप्रभावो जघान शीर्षं युधि वालिपुत्रम्

॥ ९९ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|------------|------------------|
| युधि | போதில் | महाप्रभावः | மிக மகிமைவாய்ந்த |
| नरान्तकः | நரரந்தகன் | सः | அவன் |
| तुरङ्गं | குதிரையை | मुष्टि | முஷ்டியை |
| हतं | மாண்டு | उद्यम्य | உயர்த்தி |
| पतितं | விழுந்ததாய் | वालिपुत्रं | வாலிபுத்ரன்வளை |
| निरीक्ष्य | கண்டு | शीर्षं | சிரவரில் |
| क्रोधवशं जगाम | கோபம் மூண்டான். | जघान | புடைத்தான். |

अथाद्गदो मुष्टिविभिन्नमूर्धा सुखाव तीव्रं रुधिरं भृशोष्णम् ।

मुहुर्विज्ज्वाल मुमोह चापि संज्ञां समासाद्य विसिधिमये च ॥ १०० ॥

| | | | |
|---------------------|-----------------------------------|---------------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | मुहुः | மிகவும் |
| अद्गदः | அக்கதன் | विज्ज्वाल | தபித்தான். |
| मुष्टिविभिन्नमूर्धा | முஷ்டியால் தலை பின் வுண்டவனாகி | च च | அக்கணமே |
| भृशोष्णं | மிகக்கொதிப்புண்ட | मुमोह | உணர்விறுந்தான். |
| रुधिरं | ரத்தத்தை | संज्ञां | தெளிவை |
| तीव्रं | அதிகமாய் | समासाद्य | • அடைந்து |
| सुखाव | ஒழுக்கினான். | विसिधिमये अपि | ஆச்சர்யமும் கொண் டான். |

अथाद्गदो वज्रसमानवेगं संवत्ये मुष्टिं गिरिशृङ्गकल्पम् ।

निपातयामास तदा महात्मा नरान्तकस्योरसि वालिपुत्रः ॥ १०१ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|--------------|--|
| अथ | பின்னர் | मुष्टिं | முஷ்டியை |
| वालिपुत्रः | வாலிபுத்தவனும் | वज्रसमानवेगं | வஜ்ரசாயுதத்தை நிகர் த்தவேகமுற்றதாய் |
| महात्मा | பேராற்றல்கொண்ட | संवत्ये | கழற்றி |
| अद्गदः | அக்கதன் [வனுமாகிய | नरान्तकस्य | நரான்தகனுடைய |
| तदा | அப்பொழுது | उरसि | மார்பில் |
| गिरिशृङ्गकल्पं | மலைச்சிகரத்தை நிகர் த்த | निपातयामास | விழுத்தினான். |

स मुष्टिनिष्पिष्टविभिन्नवक्ष्णा ज्वालावपच्छोणितदिग्धगात्रः ।

नरान्तको भूमितले पपात यथाऽचलो वज्रनिपातभयः ॥ १०२ ॥

| | | | |
|-------------------------------------|---|--------------|---|
| सः नरान्तकः | அந்த நரான்தகன் . | वज्रनिपातभयः | வஜ்ரசாயுதத்தின் விழு க்கொல்ல பின்வுண்ட |
| मुष्टिनिष्पिष्ट- विभिन्नवक्ष्णाः | } முஷ்டியின் புடைப் பால் மார்பு பின்வு ண்டவனாய் | अचलः | மலை |
| ज्वालावम- च्छोणितदिग्धगात्रः | } ஜுவாலையுடன் பொம் கிய ரத்தத்தால் தேகம் நனைத்தவனாய் | यथा | எப்படியோ, அப்படி வே |
| | | भूमितले | பூமிநிலைக்கத்தில் |
| | | पपात | விழுக்குமாப்த்து விட் டான். |

अथान्तरिक्षे त्रिदशोत्तमानां वनौकसां चैव महाप्रणादः ।

बभूव तस्मिन्निहतेऽयवीरे नरान्तके वालिसुतेन संख्ये ॥ १०३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------------|-------------------|
| अथ | அப்பொழுது | निहते | மாண்டவளவில் |
| संख्ये | பேரில் | अन्तरिक्षे | ஆகாயத்தில் |
| वालिसुतेन | வாலிசுனைத்தனும் | त्रिदशोत्तमानां च | தேவர்களுடையவும் |
| अयवीरे | சிறந்தவீரனாகிய | वनौकसां एव | வானரசர்களுடையவும் |
| तस्मिन् | அந்த | महाप्रणादः | பேரொலியானது |
| नरान्तके | நரான்தகன் | बभूव | உண்டாவிற்று. |

अथाङ्गदो राममनःप्रहर्षणं सुदुष्करं तत्कृत्वान्हि विक्रमम् ।
 विसिम्भिये सोऽप्यतिवीर्यधिक्रमः पुनश्च युद्धे स बभूव हर्षितः ॥ १०४ ॥

| | | | |
|-----------------|--|------------|---------------------|
| अतिवीर्यविक्रमः | அதிக ஆண்மைப்பு மேற்ற ஆண்மைத்த | विक्रमं | விரச்செயலை |
| सः | அந்த | सुलवान् | செய்து முடித்தவனாய் |
| अङ्गदः हि | அங்கதனும் | विसिम्भिये | கர்வங்கொண்டான். |
| सुदुष्करं | செயற்கரியதும் | सः | அவன் |
| राममनः- | ஸ்ரீராமரது மனதிற்கு ஸந்தோஷம் விரை கிப்பதுமான | अथ | அப்பொழுது |
| प्रहर्षणं अपि | | पुनः च | மீண்டும் |
| तत् | அந்த | युद्धे | போரில் |
| | | हर्षितः | உதஸாகங்கொண்ட |
| | | बभूव | ஆயினான். [வனாய் |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

युद्धकाण्डे एकोनसप्ततितमः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 17848

युद्धकाण्डे भादितः श्लोकाः 3273



सप्ततितमः सर्गः—எழுபதாவது ஸர்க்கம். ॥ ७० ॥

देवान्तकादिबधः—தேவாந்தகன் முதலியவர்களின் வதம்.

नरान्तकं हतं दृष्ट्वा चुक्रुशुनैर्ऋतर्षभाः । देवान्तकस्त्रिमूर्धा च पौलस्त्यश्च महोदरः ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-----------|-----------------|
| नैर्ऋतर्षभाः | நாஊர்ணைத்தவர் களாகிய | महोदरः च | மதேவரதரனும் |
| देवान्तकः | தேவாந்தகனும் | नरान्तकं | நரான்தகனை |
| पौलस्त्यः | புலஸ்தவம்சத்தவனா | हतं | மாண்டவனாய் |
| त्रिमूर्धा च | த்சிரமூர் [கிய | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| | | चुक्रुशुः | ஆவறியழுதார்கள். |

आरूढो मेघसङ्काशो वारणेन्द्रं महोदरः । बालिपुत्रं महावीर्यमभिदुद्राव वीर्यवान् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|-----------------|
| आरूढो | மேகக்காச விரைத்த | महोदरः | மதேவரதரன் |
| मेघसङ्काशो | சிறந்த மாண்பீது | महावीर्यं | மகாவீர்யசாலியான |
| वारणेन्द्रं | வீற்றிருந்த | बालिपुत्रं | வாலிபுத்தலவனை |
| आरूढः | விரைத்தவன் | अभिदुद्राव | எதிர்த்தான். |
| वीर्यवान् | | | |

भ्रातृव्यसनसन्तप्तस्तथा देवान्तको बली । आदाय परिवं दीप्तवद्भद्रं समभिद्रवन् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------------|-------------------------------------|------------|---------------|
| बली | பலவானாகிய | दीप्तं | ஐவலிக்கும் |
| देवान्तकः तथा | தேவாந்தகனும் | परिवं | உழுதெத்தடிபைய |
| भ्रातृव्यसनसन्तप्तः | சகோதரனின் மரண த்தால் தனித்தவனாய் | आदाय | கைக்கொண்டு |
| | | अङ्गदं | அங்கதனை |
| | | समभिद्रवन् | எதிர்த்தான். |

ரथமாதியசङ्காசं युक्तं परमवाजिभिः । आस्थाय त्रिशिरा वीरो बालिपुत्रमथाभ्ययात् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|--------------------|
| वीरः | வீரனாகிய | आदित्यसङ्कासं | சூரியனை நிகர்த்தது |
| त्रिशिराः अथ | திரிகிரஸும் | रथं | ரதத்தில் [மரண |
| परमवाजिभिः | சிறந்த சூதிரைகளால் | आस्थाय | எறிக்கொண்டு |
| युक्तं | பூட்டப்பெற்றதும் | बालिपुत्रं | அயங்கதனை |
| | | अभ्ययात् | எதிர்த்தான். |

स त्रिभिर्देवदर्पणैर्नैर्कैर्नैर्भद्रतः । वृक्षमुत्पाटयामास महावित्पमङ्गदः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|--------------------|
| सः | அந்த | त्रिभिः | மூவர்களால் |
| अङ्गदः | அங்கதன் | अभद्रतः | எறிக்கப்பட்டவனாய் |
| देवदर्पणैः | தேவர்கள் செருக்கை | महावित्पं | பெருங்கிளைகளுற்ற |
| | கிதைத்த | वृक्षं | மரமொன்றை |
| नैर्कैर्नैः | நாகையிலைத்தமர்கள் | उत्पाटयामास | பெயர்க்கெடுத்தான். |

देवान्तकाय तं वीरश्चिक्षेप सहसाऽङ्गदः । महावृक्षं महाशाखं शको दीप्तमिवाशनिम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------|-------------------|------------|------------------|
| वीरः | சூரனாகிய | तं | அந்த |
| अङ्गदः | அங்கதன் | महाशाखं | பெருங்கிளைகளுற்ற |
| शकः | இந்திரன் | महावृक्षं | பெரும்விருகைத்தை |
| वीक्षं | இவளிக்கும் | देवान्तकाय | தேவாந்தகன்மீது |
| अशानिं | வஜ்ராயுதத்தை | सहसा | வினைந்து |
| इव | எனவாடுற, அய்வாடுற | चिक्षेप | எறித்தான். |

त्रिशिरास्तं प्रचिच्छेद शरैराशीविषोपमैः । स वृक्षं कुत्तमालोक्य उत्पपात तदाङ्गदः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------|---------------------|
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் | अङ्गदः | அங்கதன் |
| तं | அதை | तदा | அப்பொழுது |
| आशीविषोपमैः | சர்ப்பங்களை நிகர்த்த | वृक्षं | மரத்தை |
| शरैः | பரணங்களால் | कुत्तं | துண்டிக்கப்பட்டதாய் |
| प्रचिच्छेद | துண்டித்தெறித்தான். | आलोक्य | கண்டு |
| सः | அந்த | उत्पपात | துள்ளியெழுந்தான். |

सं वर्षं ततो वृक्षाञ्छैलांश्च कपिकुञ्जरः । तान्प्रचिच्छेद संकुद्धत्रिशिरा निशितैः शरैः ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|---------------------|
| सः | அந்த | त्रिशिराः | திரிகிரஸ் |
| कपिकुञ्जरः | காணடுரத்தமன் | संकुद्धः | கொடங்கொண்டு, |
| ततः | அப்பொழுது | निशितैः | கூரிய |
| वृक्षान् | மரங்களையும் | शरैः | பரணங்களால் |
| शैलान् च | மலைகளையும் | तान् | அவைகளை |
| वर्षं | பெய்திர்த்தான் | प्रचिच्छेद | துண்டித்தெறித்தான். |

परिघाघेण तान्वृक्षान्वभञ्ज च सुरान्तकः । त्रिशिराश्चाङ्गदं वीरमभिदुद्राव सायकैः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|-------------|
| सुरान्तकः च | தேவாந்தகனும் | त्रिशिराः च | திரிசிரஸும் |
| तान्व | அந்த | वीर | வீரனாகிய |
| वृक्षान्व | விந்நகழங்களை | अङ्गदं | அங்கதனை |
| परिघाघेण | உழலைத்தடியால் | सायकैः | பாணங்களால் |
| भञ्ज | முறித்தெறிந்தான். | अभिदुद्राव | தாக்கினான். |

गजेन समभिद्रुत्य वालिपुत्रं महोदरः । जघानोरसि संकुद्धस्तोमरैर्वज्रसन्निभैः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|----------------|--------------|---------------------------|
| महोदरः | மகோதரன் | उरसि | மார்பில் |
| वालिपुत्रं | வாலிபுத்தல்வனை | वज्रसन्निभैः | வஜ்ரசாயுதத்தை நிகர்ந்த |
| गजेन | யானையுடன் | तोमरैः | தோமரங்களால் |
| समभिद्रुत्य | கிட்டி | जघान | தாக்கினான். |
| संकुद्धः | கோபங்கொண்டு | | |

देवान्तकश्च संकुद्धः परिवेण तदाऽङ्गदम् । उपगम्याभिहत्याशु व्यपचक्राम वेगवान् ॥ ११ ॥

| | | | |
|-------------|--------------|------------|----------------|
| देवान्तकः च | தேவாந்தகனும் | परिवेण | உழலைத்தடியால் |
| संकुद्धः | கோபங்கொண்டு | आशु | விரைவில் |
| तदा | அப்பொழுது | अभिहत्या | தாக்கினிட்டு |
| अङ्गदं | அங்கதனை | वेगवान् | வேகமுற்றவனாய் |
| उपगम्य | கிட்டி | व्यपचक्राम | பின் சென்றான். |

स त्रिभिर्नैर्ऋतश्रेष्ठैर्युगपत्समभिद्रुतः । न विव्यथे महातेजा वालिपुत्रः प्रतापवान् ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-----------------|------------------------------------|
| सः | அந்த | त्रिभिः | மூன்று |
| महातेजाः | ஆண்மை யிருந்தவ னும் | नैर्ऋतश्रेष्ठैः | ராஊதஸைத்தமர்க ளாகாவத்தில் [னால் |
| प्रतापवान् | ஆற்றல்கொண்டவனு | युगपत् | தாக்கப்பட்டவனாய் |
| वालिपुत्रः | வாலிபுத்தல்வன் [மான் | समभिद्रुतः | கலக்கமுறவில்லை. |
| | | विव्यथे न | |

स वेगवान्महावेगं कृत्वा परमदुर्जयः । तलेन भृशमुत्पत्य जघानास्य महागजम् ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------|---------------|
| परमदुर्जयः | வெல்லற்கரியனும் | तलेन | உள்ளக்கையால் |
| वेगवान् | வேகசாலியுமாகிய | भृशं | பிக |
| सः | அவன் | उत्पत्य | ஒக்கி |
| महावेगं | பெரும் வேகத்தை | अस्य | இவனது |
| कृत्वा | கொண்டு | महागजं | பெரும் யானையை |
| | | जघान | அறைந்தான். |

तस्य तेन प्रहारेण नागराजस्य संयुगे । पैतुल्लोचने तस्य विननाद स वारणः ॥ १४ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|--------|---------------------|
| संयुगे | போரில் | लोचने | கண்களிரண்டும் |
| तस्य | இவனது | पैतुः | பிதுக்கிவிழுந்தனர். |
| तेन प्रहारेण | அந்த அறையால் | सः | அந்த |
| तस्य | அந்த | वारणः | யானை |
| नागराजस्य | கிறந்த யானையினு டைய | विननाद | விழிபட்டது. |

विषाणं चास्य निष्कृष्य वालिपुत्रो महाबलः । देवान्तकमभिप्लुत्य ताडयामास संयुगे ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|------------------|
| செயுगे | போரில் | निष्कृष्य | பிடுங்கிக்கொண்டு |
| महाबलः | பலசாலியாகிய | अभिप्लुत्य | தாக்கிவிடும்படி |
| वालिपुत्रः | வாலிபுத்தல்வன் | देवान्तकं | தேவாந்தகனை |
| अस्य | இதனது | ताडयामास | புடைத்தான். |
| विषाणं च | தந்தத்தையும் | | |

स विह्वलितसर्वाङ्गो वातोद्भूत इव द्रुमः । लाक्षारससवर्णं च सुस्राव रुधिरं सुखात् ॥१६॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------------|----------------|------------------|
| सः | அவன் | सुखात् | வாயினின்றும் |
| वातोद्भूतः | காற்றால் ஆகியுண்ட | लाक्षारससवर्णं | செம்பஞ்சுக்குழம் |
| द्रुमः इव | மரம்போல | | பைப் போன்ற |
| विह्वलितसर्वाङ्गः | எல்லா அங்கங்களும் தளர்ந்தவனும் | रुधिरं च | ரத்தத்தையும் |
| | | सुस्राव | கக்கினான். |

अथाश्वस्य महातेजाः कुच्छ्रादेवान्तको बली । आविध्य परिवं घोरमाजघान तदाऽङ्गदम् ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------|-------------|
| अथ | பின்னர் | घोरं | பயங்கரமான |
| महातेजाः | ஆண்மை மிகுந்தவ | परिवं | உழலைத்தடியை |
| बली | பலசாலியுமான [ஊம் | आविध्य | சுழற்றி |
| देवान्तकः | தேவாந்தகன் | तदा | அப்பொழுது |
| कुच्छ्रात् | மிகச்சிரமப்பட்டு | अङ्गदं | அக்கதனை |
| आश्वस्य | களைப்பு நீக்கி | आजघान | தாக்கினான். |

परिधाभिहतथापि वानरेन्द्रात्मजस्तदा । जानुभ्यां पतितो भूमौ पुनरेवात्पपात ह ॥१८॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------|-----------|---------------|
| तदा | அப்பொழுது | जानुभ्यां | முழந்தாளிட்டு |
| परिधाभिहतः | உழலைத்தடியாலடிக்க ப்பிபற்ற | भूमौ | பூமியில் |
| वानरेन्द्रात्मजः | அக்கதனும் | पतितः | விழுந்தவனும் |
| च अपि | | पुनः एव | மீளவும் |
| | | उत्पपात ह | எழுந்தான். |

तद्युत्पतन्तं त्रिशिरास्त्रिभिर्वाणैरजिह्वगैः । घोरैर्हरिपतेः पुत्रं ललाटेऽभिजघान ह ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------|------------|---------------|---------------------------|
| त्रिशिराः | திரிசிரஸ் | अजिह्वगैः | மொரகப் பாயவல்ல வைகளும் |
| उत्पतन्तं | எழும் | घोरेः | கொடிய யவைகளுநீர் |
| ह | அந்த | त्रिभिः वाणैः | முன்று பரண்களால் |
| हरिपतेः | வாரிபின் | ललाटे | கொற்றியில் |
| पुत्रं | புத்தல்வனை | अभिजघान ह | அடித்தான். |

ततोऽद्भन् परिशिसं त्रिभिर्नैर्ऋतपुङ्गवैः । हनुमानपि विज्ञाय नीलश्यापि प्रतस्थतुः ॥ २० ॥

| | | | |
|-------------|--------------|----------------|------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | नैर्ऋतपुङ्गवैः | நான்கணைத்தவர் களால் |
| हनुमान् भवि | ஆளுசனையரும், | परिशिसं | சூழப்பட்டவனும் |
| नीलः च भवि | நீலனும் | विज्ञाय | அறிந்து |
| भङ्गवै | அங்கதனை | प्रतस्थतुः | புறப்பட்டிவந்தார்கள். |
| त्रिभिः | மூன்று | | |

तत्रिक्षेप शैलाय नीलस्त्रिशिरसे तदा । तद्रावणसुतो धीमान्विभेद निशितैः शरैः ॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | रावणसुतः | ராவணன் மகந்தனும் |
| नीलः | நீலன் | तदा | அப்பொழுது |
| त्रिशिरसे | திரிகிரவின்மீது | सर्व | அனை |
| शैलाय | மலைக்கிரமொன்றை | निशितैः | கடைய |
| क्षेप | விசினான். | शरैः | பாணங்களால் |
| धीमान् | புத்திமானாகிய | विभेद | பிளந்து விட்டான். |

तद्राणशतनिभिन्नं विदारितशिलातलम् । सविस्फुलिङ्गं सज्वालं निपपात गिरेः शिरः ॥ २२ ॥

| | | | |
|-----------------------|--------------------------------------|---------------|---------------------------|
| तद्राणशत- निभिन्नं | அவனது அனைக பாணங்களால் தாக்கப்பட்ட | शिरः | கிராம் |
| विदारितशिलातलं | பெரும் பாறைகளும் | सविस्फुलिङ्गं | செருப்புப்பொறி யுடனும் |
| गिरेः | மலை [பிளவுண்ட] | सज्वालं | ஐவாடையுடனும் |
| | | निपपात | கீழ்விழுந்தது. |

ततो जृम्भितमालोक्य हर्षाद्देवान्तकस्तदा । परिषेणाभिद्राव मारुतात्मजमाहवे ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|-------------------|
| ततः | பின்னர் | मारुतात्मजं | ஆளுசனையரை |
| देवान्तकः | தேவாந்தகன் | आहोष्य | பார்த்து |
| आहवे | பேரில் | तदा | அப்பொழுது |
| हर्षान् | சந்தேசம்தந்தால் | परिषेण | உழலைத்தடியுடன் |
| जृम्भितं | துள்ளியெழுந்த | अभिद्राव | எதிர்த்தேரடினான். |

तमापतन्तमुत्प्लुत्य हनुमान् मारुतात्मजः । आजघान तदा मूर्ध्नि वज्रकल्पेन मुष्टिना ॥ २४ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | उत्प्लुत्य | தாவி |
| मारुतात्मजः | வாயுபுதல்வனாகிய | मूर्ध्नि | தலையில் |
| हनुमान् | ஹனுமார் | वज्रकल्पेन | வஜ்ராயுதத்தை |
| आपतन्तं | எதிர்த்துவரும் | मुष्टिना | முஷ்டியால் [கிரத்த |
| तं | அவனை | आजघान | புடைத்தார். |

शिरसि प्रहरन्वीरस्तदा वापुसुतो बली । नादेनाकम्बपथैव राक्षसान् स महाकपिः ॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------------|--------------------|
| वीरः | கூரரும் | शिरसि | சிரசில் |
| बली | பலவா ளும் | प्रहरन् | புடைத்துக்கொண்டு |
| वापुसुतः | வாய்ப்புதல்வரூமுடைய | नादेन | காஜனை யால் |
| सः महाकपिः | அந்த வானகோத்தமர் | राक्षसान् च पूव | ஆகக் கற்கொண்டிலா |
| तदा | அப்பொழுது | अकम्बपथ | கடிகம்பெயர்ப்பாதம் |

स मुष्टिनिषिष्टविकीर्णमूर्धा निर्वान्तदन्तासिविकम्बिजिह्वः ।

देवान्तको राक्षसराजमूर्धुर्गतासुख्यो सहसा पपात ॥ २६ ॥

| | | | |
|------------------|------------------------------------|-------------------|--------------------------------------|
| सः | அந்த | निर्वान्तदन्तासि- | பற்களும் கண்களும் பித்துக்கி னாய் |
| राक्षसराजमूर्धुः | ராவணன் புதல்வ | विकम्बिजिह्वः | |
| देवास्तकः | தேவாந்தகன் | मतासुः | மரித்தவரூய் [தொக்கி |
| मुष्टिनिषिष्ट- | முஷ்டியின் குத்தால் மண்டை சிதறி | वर्धा | பூமியில் |
| विकीर्णमूर्धा | | सहसा | சடக்கென |
| | | पपात | சாய்ந்தான். |

तस्मिन्हते राक्षसयोधमुख्ये महाबले संयति देवसत्रौ ।

कुद्दस्त्रिमूर्धा निशिताग्रमुग्रं वर्षं नीलोरसि बाणवर्षम् ॥ २७ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|------------|---------------------|
| संयति | போயில் | कुद्द | தீரிகில் |
| देवसत्रौ | தேவசத்ருவும் | नीलोरसि | சினக்கொண்டு |
| महाबले | மகாபலகாலியும் | वर्षं | நீலனது மரத்தில் |
| राक्षसयोधमुख्ये | ராஷ்டணவீரர்களும் | निशिताग्रं | பலங்கராமன தும் |
| | சிறந்தவனுமான | बाणवर्षम् | கூசிய துணிகளூற்றிது |
| तस्मिन् | அவன் | वर्षं | சரமர சீமைய [மரண |
| हते | மானவும் | | வர்ப்பித்தான். |

महोदरस्तु संक्रुद्धः कुञ्जरं पर्वतोपपम् । भूयः समधिख्याशु मन्दरं रश्मिवानिव ॥ २८ ॥

ततो बाणमयं वर्षं नीलस्योरस्यपातयत् । गिरी वर्षं तद्विचक्रन्वापवानिव तोषदः ॥ २९ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|------------|--|
| महोदरः तु | மதேநரதர ளும் | वरसि | பார்களில் |
| संकुद्धः | பிகக்கிணந்து | बाणमयं | சரமயமான |
| धाशु | விசை வில் | वर्षं | பாரிணய |
| भूयः | மீளவும் | गिरी | பர்வதத்தில் |
| पर्वतोपपम् | பரணைய சிகர்த்த | तद्विचक्र- | பின்னற்கட்டகாளை யும், வானவில்லையும் |
| कुञ्जरं | யானைபொன்றில் | वापवान् | |
| रश्मिवान् | கதிரவன் | तोषदः | மேகம் |
| मन्दरं | மந்தரமலையில் | वर्षं | மழையை |
| इव | எவ்விதமோ அவ் விதமே | इव | எப்படியோ அப்ப |
| समधिख्या | எறிக்கொண்டு | ततः | அப்பொழுது [மேக |
| नीलस्य | நீலனது | अपवान् | பொழிந்தான். |

ततः शरौघैरभिवर्ष्यमाणो विभिन्नगात्रः कपिसैन्यपालः ।

नीलो बभूवाथ निस्पृष्टाश्रो विष्टम्भितस्तेन महाबलेन

॥ ३० ॥

| | |
|-----------------|-------------------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| कपिसैन्यपालः | காணரக்கோணத் தலைவனும் |
| निस्पृष्टाश्रयः | தேகக்கட்டளைமந்த |
| नीलः | நீலன் [வனுவான] |
| महाबलेन | மகா பலசாலியான |

| | |
|---------------|-------------------|
| तेन | அவனால் |
| शरौघैः | பாண வர் வங்கனால் |
| अभिवर्ष्यमाणः | வர்வறிக்கப்பட்டு |
| विभिन्नगात्रः | உடல் பிளவுண்டு |
| विष्टम्भितः | திசைதத்து நின்றவ |
| बभूव | இருந்தான். [னும்] |

ततस्तु नीलः प्रतिलभ्य संज्ञां शैलं समुत्पाद्य सवृक्षपण्डम् ।

ततः समुत्पत्य भृशोभवेगो महोदरं तेन जघान मूर्ध्नि

॥ ३१ ॥

| | |
|--------------|----------------------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| नीलः | நீலனும் |
| संज्ञां | தெளிவை |
| प्रतिलभ्य | அடைந்து |
| सवृक्षपण्डम् | மாக்கூட்டக்களேரடு கூடிய |
| शैलं | மலையொன்றை |
| समुत्पाद्य | பிடுக்கிக்கொண்டு |

| | |
|-----------|--------------------------------|
| ततः | அவ்வீடத்தினின்றும் |
| समुत्पत्य | தள்ளியெழுந்து |
| भृशोभवेगः | மிகப் பயக்காமான வேகக்கொண்டு |
| महोदरं | மகோதரனை |
| तेन | அதனால் |
| मूर्ध्नि | தலையில் |
| जघान | புடைத்தான். |

ततः स शैलेन्द्रनिपातभग्नो महोदरस्तेन महाद्विपेन ।

विषोयितो भूमितले गतासुः पपात वज्राभिहतो यथाऽद्रिः

॥ ३२ ॥

| | |
|---------------------|--|
| ततः | அப்பொழுது |
| सः | அந்த |
| महोदरः | மகோதரன் |
| शैलेन्द्रनिपातभग्नः | மாலையின் விழுச்சி வால் தாக்கப்பட்டு |
| तेन | அந்த |
| महाद्विपेन | பெரும் பாணையுடன் |
| विषोयितः | மந்திக்கப்பட்டவ னும் |

| | |
|------------|----------------------------|
| गतासुः | மரித்தவனாகி |
| वज्राभिहतः | வஜ்ராயுதத்தால் அடியுண்ட |
| अद्रिः | பர்வதம் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| भूमितले | பூமிப்பரதேசத்தில் |
| पपात | சாய்ந்துவிட்டான். |

पितृव्यं निहतं दृष्ट्वा त्रिशिराश्चापमाददे । हनुमन्तं च संकुद्रो विव्याथ निशितैः शरैः ॥

| | |
|-----------|---------------|
| त्रिशिराः | திரிசிரஸ் |
| पितृव्यं | சிறிய தந்தையை |
| निहतं | மாண்டவனும் |
| दृष्ट्वा | கண்டு |
| आपं | வில்லை |
| आददे | கைக்கொண்டான். |

| | |
|------------|--------------|
| संकुद्रः | மிகச்சினந்து |
| हनुमन्तं च | ஹனுமானாரயும் |
| निशितैः | கூரிய |
| शरैः | பாணங்களால் |
| विव्याथ | எய்தனன். |

स वायुसूनुः कुपितश्चिक्षेप शिखरं गिरेः । त्रिशिरास्तच्छरैस्तीक्ष्णैर्विभेद बहुधा बली ॥

| | | | |
|--------------|-------------|-----------|---------------------|
| सः वायुसूनुः | அந்த மாரூகி | त्रिशिराः | திரிகிரஸ் |
| कुपितः | கிணக்கு | तत् | அதை |
| गिरेः | மலையினது | तीक्ष्णैः | கூரிய |
| शिखरं | சிகரமொன்றை | शरैः | கண்களால் |
| चिक्षेप | வீசிணர். | बहुधा | பலவாக |
| बली | பலசாலியாகிய | विभेद | துண்டித்துவிட்டான். |

तद्वयर्थे शिखरं दृष्ट्वा द्रुमवर्षे महाकपिः । विससर्ज रणे तस्मिन् रावणस्य सुतं प्रति ॥३५॥

| | | | |
|----------|--------------|------------|--------------------------|
| महाकपिः | வானரோத்தமரான | रणे | போரில் |
| तत् | அந்த [அவர் | रावणस्य | ராவணனது |
| शिखरं | சிகரத்தை | सुतं प्रति | குமாரனைக் குறி வைத்து |
| व्यर्थं | வீணானதாய் | द्रुमवर्षे | மரமாரியை |
| दृष्ट्वा | கண்டு | विससर्ज | விடுத்தார். |
| तस्मिन् | அந்த | | |

तमापतन्तमाकाशे द्रुमवर्षे प्रतापवान् । त्रिशिरा निशितैर्वाणैश्चिच्छेद च ननाद च ॥३६॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|-------------------|
| प्रतापवान् | பிரதாபசாலியாகிய | द्रुमवर्षे च | விருகட வர்ஷத்தை |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் | निशितैः | கூரிய |
| आकाशे | ஆகாசத்தில் | वाणैः | கண்களால் |
| आपतन्तं | மேல் விழவரும் | चिच्छेद | குறித்துவிட்டான். |
| च | அந்த | ननाद च | காணியுவிட்டான். |

ततो हनुमानुत्प्लुत्य हयांश्चिशिरसस्तदा । विददार नखैः क्रुद्धो गजेन्द्रं मृगराडिव ॥३७॥

| | | | |
|------------|--------------|-----------|-------------------|
| ततः | அதனால் | चिशिरसः | திரிகிரஸின் |
| कुर्वः | கிணக்குகொண்ட | हयान् | குதிகாக்களை |
| हनुमान् | அனுமார் | मृगराड् | ஊர் சிக்கம் |
| तदा | அப்பொழுது | गजेन्द्रं | பானையை |
| उत्प्लुत्य | தாவிக்கொம்பி | इव | எல்லாறே, அங்காறே |
| नखैः | நகங்களால் | विददार | சீழ்த்துவிட்டார். |

अथ शक्ति समादाय कालरात्रिमिवान्तकः । चिक्षेपानिलपुत्राय त्रिशिरा रावणात्मजः ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|----------------|
| अथ | அப்பொழுது | इव | போல |
| रावणात्मजः | ராவணன் புதல்வன | शक्ति | சக்தியாகக்கூட |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் [கிய | समादाय | கைக்கொண்டு |
| कालरात्रि | காலராத் திரிபின் | अनिलपुत्राय | மாரூகியின்மீது |
| अन्तकः | எமன் | चिक्षेप | விடுத்தான். |

दिवः क्षिप्तामिवोल्कां तां शक्तिं क्षिप्तामसङ्गताम् । गृहीत्वा हरिशार्दूलो वभञ्ज च ननाद च ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-----------|------------------------|
| हरिशार्दूलः | ஹரிசார்டூலர் அலர் | असङ्गतां | அசங்கதா |
| दिवः | ஆகாயத்தினின்று | क्षिप्तां | எறியப்பட்ட |
| क्षिप्तां | எறியப்பட்ட | शक्तिं च | சக்தியாயுதத்தை |
| उल्कां | கொள்ளிக்கட்டை | गृहीत्वा | கைப்பற்றி |
| इव | போன்றதான | वभञ्ज | முறித்துவிட்டார். |
| तां | அந்த | ननाद च | கிங்கராதமும் செய்தார். |

तां दृष्ट्वा घोरसङ्काशां शक्तिं भग्नां हनूमता । महृष्ट्वा वानरगणा विनेदुर्जलदा इव ॥ ४० ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-----------------|-----------------|
| वानरगणाः | வானரசமூகங்கள் | भग्नां दृष्ट्वा | முறிபட்டதாய் |
| घोरसङ्काशां | பயங்கரத்தொற்ற | महृष्ट्वाः | கவனித்து |
| तां | அந்த [முற்ற | अलदाः इव | ஆனந்தக்கொண்டவர் |
| शक्तिं | சக்தியை | विनेदुः | களாய் |
| हनूमता | அனுமாரால் | | மேகக்கள்போல் |
| | | | கர்ஜித்தனர் |

ततः खड्गं समुद्यम्य त्रिशिरा राक्षसोत्तमः । निजघान तदा व्यूढे वायुपुत्रस्य वक्षसि ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|--------------|-------------------|
| ततः | அனந்தரம் | वायुपुत्रस्य | வாயுபுத்தல்வருடைய |
| राक्षसोत्तमः | ராஷஸனோத்தமனாகிய | व्यूढे | விசாலமான |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் | वक्षसि | மார்பில் |
| खड्गं | கத்தியை | तदा | அப்பொழுது |
| समुद्यम्य | ஒங்கி | निजघान | நாட்டினான். |

खड्गप्रहाराभिहतो हनूपाण पास्त्यात्मजः । आजघान त्रिशिरसं तलेनोरसि वीर्यवान् ॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|--------------|
| वीर्यवान् | வீரயவானும் | तलेन | உள்ளக்கையால் |
| पास्त्यात्मजः | வாயுபுத்தல்வருமாதிய | त्रिशिरसं | திரிகிரஸை |
| हनूपाण् | அனுமார் | उरसि | மார்பில் |
| खड्गप्रहाराभिहतः | கத்தியின் வெட்டால் நரக்கப்பட்டவராய் | आजघान | அறைந்தார். |

स तलाभिहतस्तेन सूस्ताहस्तायुधो ब्रुवि । निपपात महातेजास्त्रिशिरास्त्यक्तचेतनः ॥ ४३ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|---------------|-------------------------------|
| महातेजाः | ஆற்றல் மிகுந்த | त्यक्तचेतनः | உணர்விழந்து |
| सः | அந்த | सन्तहस्तायुधः | கைகளிலிருந்து ஆயுதங்கள் நழுவி |
| त्रिशिराः | திரிகிரஸ் | मुवि | பூமியில் |
| तेन | அவரால் | निपपात | விழ்ந்துவிட்டான். |
| तलाभिहतः | உள்ளக்கையால் அறையுண்டவராய் | | |

स तस्य पततः खड्गं समाच्छिद्य महाकपिः । ननाद् गिरिसङ्काशस्त्रायन् सर्वनैर्कतान् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|---------------|
| सः | ஆந்த | समाच्छिद्य | கைப்பற்றி |
| गिरिसङ्काशः | மலைமைய நிகர், தந்த | सर्वनैर्कतान् | எல்லா ஆரக்கள் |
| महाकपिः | வானரோத்தமர் | | கனையும் |
| पततः | விழுதும் | स्त्रायन् | பயமுறுத்திக் |
| तस्य | அவனது | | கொண்டு |
| खड्गं | கத்தியை | ननाद् | காஜித்தார். |

अमृष्यमाणस्तं घोषमुत्पपात निशाचरः । उत्पत्य च हनुमन्तं ताडयामास मुष्टिना ॥४५॥

| | | | |
|------------|--------------|------------|--------------|
| निशाचरः | ஆரக்கன் | उत्पत्य | எழுந்த |
| ते घोषं | ஆந்த நாத்ததை | हनुमन्तं च | அனுமாரையும் |
| अमृष्यमाणः | பொருதவனாய் | मुष्टिना | முத்திரையால் |
| उत्पपात | எழுந்தான். | ताडयामास | சுத்திரான். |

तेन मुष्टिप्रहारेण संचुकोप महाकपिः । कुपितश्च निजयाह किरीटे राक्षसर्षभम् ॥
हनुमान् रोषताम्राक्षो राक्षसं परवीरहा ॥ ४६ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|---------------|-----------------------------|
| परवीरहा | சத்ருசம்ஹாரகரும் | कुपितः | கொபக்கொண்ட |
| महाकपिः च | வானரோத்தமரு மாகும் | | அவர் |
| हनुमान् | அனுமார் | रोषताम्राक्षः | கொபத்தால் கண்கள் சுவந்து |
| तेन | ஆந்த | राक्षसर्षभं | நாகத்தையாத்தம |
| मुष्टिप्रहारेण | முத்திரையின் சூத்தால் | राक्षसं | காக்களை [இசிய |
| संचुकोप | சினந்தார். | किरीटे | கிரீடத்திலு |
| | | निजयाह | பதிவரை. |

स तस्य शीर्षाण्यसिना शितेन किरीटजुष्टानि सकुण्डलानि ।
क्रुद्धः प्रविच्छेद सुतोऽनिलस्य त्वष्टुः सुतस्येव शिरांसि शकः ॥ ४७ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|-------------|--------------------------------|
| क्रुद्धः | கிரைக்கொண்ட | शितेन | சரிய |
| सः | ஆந்த | असिना | கத்தியால் |
| अनिलस्य | வாய்புகவானது | शकः | இத்திரன் |
| सुतः | புதல்வர் | त्वष्टुः | தவஷ்டாவின் |
| तस्य | அவனது | सुतस्य | புதலரின் (கிருத்தார கரனின்) |
| किरीटजुष्टानि | முகுடங்கள் புனைந்த கைகளும் | शिरांसि | தலைகளை |
| सकुण्डलानि | சூண்டலமணிர்த்தவை களுமான் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| शीर्षाणि | தலைகளை | प्रविच्छेद् | அறுத்துத்தள் கிரை. |

तान्यायताक्षाय्यगसन्निभानि प्रदीप्तवैश्वानरलोचनानि ।

पेतुः शिरांसीन्द्ररिषोर्धरण्यां ज्योतीषि मुक्तानि यथाऽर्कमागात् ॥ ४८ ॥

| | | | |
|--|---|--|---|
| इन्द्ररिषोः तानि आयताक्षायि अगसन्निभानि प्रदीप्तवैश्वानर- लोचनानि | இந்திரசத்ருகின் அந்த பெரும் கருவிழிக ளுற்றவைகளும் மலைகளை லிகர் த்தவை களும் ஜ்வலிகேகும் அக்னி போன்ற கண்களுந் றவைகளுமான | शिरांसि अर्कमागात् मुक्तानि ज्योतीषि यथा धरण्यां पेतुः | தகைகள் சூர்யமர்க்கத்தினிள் று (அகாயத்தினிள்று) சிதறிய ககத்திரங்கள் போல் பூநியில் விழுந்தன. |
|--|---|--|---|

तस्मिन् हते देवरिषौ विशीषे हनूमता शक्रपराक्रमेण ।

नेदुः पुवङ्गाः प्रचचाल भूमी रक्षांस्यथो द्दुद्विरे समन्तात् ॥ ४९ ॥

| | | | |
|---|--|---|--|
| देवरिषौ तस्मिन् विशीषे शक्रपराक्रमेण हनूमता हते पुवङ्गाः | தேவசத்ருவாகிய அந்த திரிசிரஸ் இந்திரனது பிரதாபம் கொண்ட ஆளுசனையரால் மாண்டவளவில் வானர்கள் | नेदुः भूमिः प्रचचाल अथ रक्षांसि समन्तात् द्दुद्विरे | ஆரகாரித்தரர்கள். பூமி அனைத்தது. அப்பொழுது ஆரக்கர்கள் சுற்றுறத்திலும் ஒடினார்கள். |
|---|--|---|--|

हतं विशिरसं दृष्ट्वा तथैव च महोदरम् । हतौ प्रेक्ष्य दुराथसौ देवान्तकनरान्तकौ ॥ ५० ॥

चुकोप परमामर्षी मत्तो राक्षसपुङ्गवः । जग्राहाविष्मती घोरां गदां सर्वायसी शुभाम् ॥

हेमपट्टपरिक्षिप्तां मांसशोणितफेनिलाम् । विराजमानां वपुषा शत्रुशोणितरञ्जिताम् ॥ ५२ ॥

तेजसा संमदीभायां रक्तमाल्यविभूषिताम् । ऐरावतमहापद्मसार्वभौमभयावहाम् ॥ ५३ ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| राक्षसपुङ्गवः मत्तः विशिरसं हतं दृष्ट्वा तथा महोदरं च दुराथसौ देवान्तक- नरान्तकौ एव हतौ प्रेक्ष्य परमामर्षी | காசுத்தேவாத்தமனாகிய மத்தன் திரிசிரஸ்னை மாண்டவனாகக் கண்டு அப்படியே மகோதரனையும் மாண்டவனாகக்கண்டு வெல்லத்தகிய தேவாந்தகனையும் காந்தகனையும் மாண்டவர்களாய் கண்டு மிகப்பொருதவனாய் | चुकोप भक्तिमर्षी घोरां सर्वायसी शुभां हेमपट्टपरिक्षिप्तां मांसशोणित- फेनिलां वपुषा विराजमानां | கிணம் மூண்டான். ஜ்வாலைகளுடன் கடியதும் பயங்கரமானதும் முழு இரும்பாலான அழகியதும் [தூர் பொற்பட்டங்கள் பிணைக்கப்பட்டதும் மாந்தகனானும், ரத்தத்தானும் பூச கண்டதும் ஒளிகொண்டு பிரகாசிக்கின்றதும் |
|---|--|--|--|

स वेगवान् वेगवद्भ्युपेत्य तं राक्षसं वानरवीरमुख्यः ।
संवर्त्य मुष्टिं सहसा जघान बाह्वन्तरे शैलनिकाशरूपः ॥ ५९ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|------------|-------------|
| ச: | அந்த | வேகவ் | வேகத்தூடன் |
| वेगवान् | வேகவாலியாகிய | अभ्युपेत्य | கிட்டி |
| शैलनिकाशरूपः | மலைமைய நிகர்த்த உருவமுடைய | मुष्टिं | முத்தடியை |
| वानरवीरमुख्यः | வானரவீரத்தலைவர் | संवर्त्य | சுழற்றி |
| तं | அந்த | बाह्वन्तरे | மார்பில் |
| राक्षसं | அரக்கனை | सहसा | வலுக்கொண்டு |
| | | जघान | சுத்தினான். |

स कृत्तमूलः सहसेव वृक्षः क्षितौ पपात क्षतजोक्षिताङ्गः ।
तां चास्य घोरां यमदण्डकल्पां गदां प्रगृह्याशु तदा ननाद ॥ ६० ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------------------|---------------|------------------------|
| ச: | அவன் (அரக்கன்) | क्ष्य | இவனுடைய |
| कृत्तमूलः | வேரறுக்கப்பட்ட | यमदण्ड कल्पां | எமதண்டத்தை நிகர்த்த |
| वृक्षः इव | மரம்போலவே | घोरां | பயங்கரமான |
| क्षितौ | பூமியில் | तां | அந்த |
| क्षतजोक्षिताङ्गः | அக்கங்கள் ரத்தத் தால் நனைந்தவனும் | गदां च | கதைமையபும் |
| सहसा | சுடக்கொ | आशु | வெடுக்கொ |
| पपात | விழ்ந்தான். | प्रगृह्य | பிடுக்கிக்கொண்டு |
| तदा | அப்பொழுது | ननाद | கர்ஜித்தார். |

सुहृत्भासीत्स गतासुकल्पः प्रत्यागतात्मा सहसा सुरारिः ।
उत्पत्य सन्ध्याभ्रसमानवर्णस्तं वारिराजात्मजभाजघान ॥ ६१ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------------------|----------------|----------------|
| सन्ध्याभ्रसमानवर्णः | மலைமேகத்தை நிகர்த்த நிறமுடைய | सहसा | திடீரென |
| सुरारिः | தேவசத்ருவான | प्रत्यागतात्मा | உணர்வுற்றவனும் |
| सः | அவன் | उत्पत्य | தூர்னிவெழுந்து |
| गतासुकल्पः | யறித்தவனை நிகர்த்து | सं | அந்த |
| सुहृत् | சிறிதுகாலம் | वारिराजात्मजं | வருணபுதல்வனை |
| भासीत् | இருந்தான். | भाजघान | புடைத்தான். |

स मूर्च्छिता भूमितले पपात सुहृत्सुत्पत्य पुनः ससंज्ञः ।

तामेव तस्याद्रिवराद्रिकल्पां गदां समाधिष्य जघान संख्ये ॥ ६२ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------------|---|
| संख्ये | பேரில் | उत्पत्य | கிளம்பி |
| सः | அவன் | तस्य | அவனுடைய |
| मूर्च्छिता | மூர்க்கையுண்டவனும் | तां | அந்த |
| भूमितले | பூமியிதேசத்தில் | अद्रिवराद्रिकल्पां | பெரும் மரக்களையும் மலைகளையும் நிகர்த்த |
| सुहृत् | சிறிதுகாலம் | गदां एव | கதைமையபும் |
| पपात | விழுந்துகிடந்தான். | समाधिष्य | சுழற்றி |
| पुनः | மீளவும் | जघान | புடைத்தான். |
| ससंज्ञः | பிரக்கனையுற்றவனும் | | |

सा तस्य रौद्रा समुपेत्य देहं रौद्रस्य देवाध्वरविप्रशवोः ।

विभेद वक्षः क्षतज्ञं च भूरि सुस्राव धात्वੰभ इन्द्रिराजः

॥ ६३ ॥

| | | | |
|------------------------|---|------------|--------------------------|
| ரீடா | பயக்கரமான | வழி: | மர்ச்சை |
| ஸா | அது (கதை) | விபேத | பிரித்தது. |
| தேவாध्वर- विप्रशवो: | தேவர்களுக்கும், வர் கக்களுக்கும் பிராம் மணர்களுக்கும் சத் ம்முள்ளனர் (ருவான) | भूरि | அதிகமான |
| रौद्रस्य | மூடூணை (ருவான) | क्षतज्ञं च | சத்தந்தையும் |
| तस्य | அவனுடைய | भद्रिराजः | தூரிமவரன் |
| देहं | தேகத்தை | धात्वंभः | நானிரீகை |
| समुपेत्य | தாக்கி | इन्द्र | எவ்வண்ணமே, அவ் வண்ணமே |
| | | सुस्राव | பெருக்கிறது. |

सोऽभिदुद्राव वेगेन गदां तस्य महात्मनः

॥ ६४ ॥

| | | | |
|---------|----------------|------------|-------------------|
| महाःमनः | பெருந்தேகமுடைய | वेगेन | ஆந்திரத்துடன் |
| तस्य | அவனது | सः | அவன் (ரிஷபன்) |
| गदां | கதைகைய | अभिदुद्राव | எதிர்த்தேரடினான். |

गृहीत्वा तां गदां भीमामाविध्य च पुनः पुनः । मत्तानीकं महात्माने जघान रणमूर्धनि ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|--------------------|
| रणमूर्धनि | போர்முனையில் | पुनः पुनः च | மீண்டும், மீண்டும் |
| तां | அந்த | आविध्य | சூழ்ந்தி |
| भीमां | பயக்கரமான | महात्माने | பெருடல் படைத்த |
| गदां | கதைகைய | मत्तानीकं | மதராபாச்சுவனை |
| गृहीत्वा | கைக்கொண்டு | जघान | புடைத்தான். |

स स्वया गद्या भद्रो विशीर्णदशनेक्षणः । निपपात ततो मत्तो बज्राहत इवाचलः ॥६६॥

| | | | |
|-------|---------------|------------------|-----------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | विशीर्णदशनेक्षणः | பற்களும் கண்களும் தெறித்தவனாய் |
| सः | அந்த | बज्राहतः | வஜ்ராயுதத்தால் |
| मत्तः | மதராபாச்சுவன் | अचलः | மலை [அடிபுண்ட |
| स्वया | தனது | इव | இவ்வ |
| गद्या | கதையால் | निपपात | கீழே கொடுத்து கிட்டான். |
| भद्रः | நாக்கப்பட்டு | | |

विशीर्णनयने भूमौ गतसच्चे गतायुषि । पतिते राक्षसे तस्मिन्विद्रुतं राक्षसं बलम् ॥६७॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|----------------|
| तस्मिन् | அந்த | भूमौ | பூமியில் |
| राक्षसे | அரக்கன் | पतिते | காய்த்தவான்கள் |
| विशीर्णनयने | கண்கள் பிதுங்கி | राक्षसे | அரக்க |
| गतसच्चे | ஆற்றலிழந்து | बलं | பேரலை |
| गतायुषि | உயிரிழந்து | विद्रुतम् | ஊடறுந்திடுகி. |

तस्मिन्हते भ्रातरि रावणस्य तन्नैर्ऋतानां बलमर्णवाभम् ।
त्यक्तायुधं केवलजीवितार्थं दुद्राव भिन्नार्णवसन्निकाशम् ॥ ६८ ॥

रावणस्य रावணனது
भ्रातरि பிராதாவான
तस्मिन् அவன்
हते மாண்டவனவில்
तत् அந்த
नैर्ऋतानां அரக்கர்களின்
अर्णवाभं கடலை நிகர்த்த

बलं சேனையானது
त्यक्तायुधं ஆயுதங்களை எறிந்து விட்டு
केवलजीवितार्थं உயிர்மாத்திரமிருந்தால் போதுமென்று
भिन्नार्णवसन्निकाशं கரை பிளந்த கடலை நிகர்த்ததாய்
दुद्राव சிதறி ஒடிற்று.

इत्यापें श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
युद्धकाण्डे सप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 17916

युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 3241

इत्यापें श्रीमद्रामायणे द्वाविंशोऽहि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்வீதம் சூதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் வந்ரிதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்திரண்டாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



॥ शुद्धिपत्रम् ॥

| पृष्ठम् | सर्गम् | श्लोकम् | पादम् | पक्ति | अशुद्धम् | सुशुद्धम् |
|---------|--------|---------|-------|-------|-------------------|----------------|
| 39 | 4 | 114 | 2 | .. | फेनौ वैर्नृत्यन्त | फेनौ वैर्नृत |
| 91 | 13 | 6 | .. | 2 | शक्तौः | शक्तौ |
| 129 | 18 | 16 | .. | 1 | ଠେଣୁ ଶୁକ ଶଙ୍ଖ | ଠେଣୁ ଶୁକ |
| 253 | 32 | 12 | .. | 2 | आदिष्टं | आदिष्टं |
| 255 | 32 | 21 | 1 | .. | चरिव्यामिति | चरिव्यामी |
| 288 | 37 | 3 | 1 | .. | पनसस्तदा | पनसस्तथा |
| 336 | 42 | 13 | .. | 2 | विविधानि | विविधान् |
| 377 | 47 | 1 | .. | 2 | ररक्षु | ररक्षुः |
| 432 | 54 | 4 | 1 | .. | शूरो | शूरा |
| 458 | 57 | 22 | .. | 2 | मुहूर्तन | मुहूर्तेन |
| 459 | .. | 29 | 2 | .. | महता वृत्तः | महताऽऽवृ |
| 469 | 58 | 32 | 1 | 1 | महाद्रुमं | महाद्रुमां |
| 473 | 58 | 59 | .. | 2 | सून्नि | सून्नि |
| 502 | 59 | 114 | 1 | .. | भरतानुजोऽथै | भरतानुजोः |
| 512 | 59 | 154 | .. | 2 | तथा | तदा |
| 537 | 61 | 12 | 1 | 1 | देव | देवा |
| 553 | 63 | 20 | 2 | .. | व्यपरोप्यते | व्यवरोप्यते |
| 555 | 63 | 28 | 2 | .. | नीतेयु | नीतेषु |
| 563 | 64 | 13 | .. | 2 | अद्यापि | अद्यापि |
| 574 | 65 | 32 | 2 | .. | रराजे | रराज |
| 584 | 66 | 20 | 2 | .. | परिगम्य | परिक्रम्य |
| 589 | 67 | 7-8 | .. | 2 | विपरिधावत् | विपरिधाव |
| 609 | 67 | 109 | .. | 2 | प्रथितान्त्रमालाः | प्रथितान्त्रम् |
| 640 | 69 | 49 | .. | 1 | प्रविश्य | आविश्य |
| 656 | 70 | 21 | .. | 2 | निशितः | निशितैः |



